



हिन्दी

# विश्वकोष

श्री सत्यस्यन्तीय गान नन्दिर, कृष्णपुर

बंमहा विश्वकोषके सम्पादक

श्रीमगिन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहाशय

विद्याम-वर्द्धि, सव्यसाधर, सव्यसिन्धुवर्द्धि एव, चार, व, एव

तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा सहमित ।

नवम भाग

[ ट-शैलिबिम्ब ]

## THE ENCYCLOPÆDIA INDICA

VOL. IX.

COMPILED WITH THE HELP OF INDIA EXPERTS

BY

MAGENDRANATH VASU Prāchyavidyāmahārāja.

Siddhānta-vārdhī, Śabda-ratnākara, Tattva-chintāmaṇī, M. B. A. &

Comptes of the Bengal Encyclopedia; the late Editor of Bangiya Sāhitya Parichay

and Khyatika Patrika; author of Castes & Sects of Bengal, Mayura

Māzja Archaeological Survey Reports and Modern Buddhism;

Hon. Archaeological Secretary Indian Research Society

Member of the Philological Committee, Asiatic

Society of Bengal; &c. &c. &c.

— 0 —

Printed by P. C. Bose at the Visvakosha Press

Published by

Magendranath Vasu and Visvanath Vasu

8 Visvakosha Lane, Faplineer, Calcutta

1925.



हिन्दी

# विषुवकोष

(प्रथम भाग)

ट

ट-संस्कृत शौर हिन्दो अक्षरमन्त्रमालाका आधारकी शौर ट वर्णिका पञ्चमा अक्षर। इसका उच्चारण म्यान् मूर्ध्नी है। उच्चारणमें धाम्यकारपयस्य मूर्ध्नागर्ध द्वारा सिद्धाका मध्यभाग म्यो शौर बाह्यपयस्य विराम, म्यास शौर अशोच है। म्यासका म्यासमें दक्षिणस्थितिमें (दक्षिण नितम्बमें) इसका म्यास किया जाता है। इसका आकार इस प्रकार है—“ट”। इस अक्षरमें कृषि, यम शौर वायुका निहाय मान है।

तन्मध्ये मतमे इसके प्याय वा वाचक शब्द २७ हैं—  
टकार, कपालो, सोमिय, शिखरो, धनि, सुकुम्भ, विमदा, इषो, वैश्वो, माधवो, दद्याद्भक्त, पर्यन्त्र, जरा, मूर्ति पुनर्मैत्र, उद्वलति, धनुः, बिदा, प्रमोदा, विमला कटि, शक्रा, गिरि, महाधनुः प्राणान्ना सुमुख शौर मधुन।  
कामभेदुतन्मध्ये मतमे टकारका अत्य—यद्य एष पयस्य सुशुभो, योऽटिष्यु कृताकार, पश्येदस्य पश्यमानकुम्भ, विगुणोपेत विगविममणित शौर विविन्दुपुत्र है।

इसका ध्यान करनेमें प्रमोदको सिद्ध होता है।  
ध्यान—“शक्रो पुत्रवर्धनां एवंशक्तिप्रदायुः।  
इत्यारुणकापुत्रं सर्वैश्वर्यवर्धनाय ॥  
एतौकवर्षं विद्यां कृतास्तेषुनी पराम्।  
एवंशक्रा वदकां यत्रत्र इत्यत्र कवेरु ॥”

( ५४० )

इस सम्बन्धी ध्यानपूर्वक दृग्द्वार अपनेमें प्रमोदसिद्धि होती है।

साध्यके प्रारम्भमें इसका विन्यास करनेमें ऐद होता है।

ट ( म० खी० ) टक्-ठ । १ करह, तारियलका शोपड़ा । ( पु० ) २ वासन । ३ पाट चतुर्बाँध, शीशई भाग । ४ निःस्वम शब्द ।

टंका ( हि० खि० ) १ खोन पादि जड़ कर जोड़ा जाना । २ सोया खाना, निमाईमें सुहना । ३ सो कर चेटकाया जाना । ४ रौतोका तेज होना । ५ पहिल होना लिया जाना, दर्ज किया जाना । ६ मिक, चली पादि रंदा जाना, कूटना ।

टंका ( हि० पु० ) १ पुराने समयकी एक ताम जो एक तोलेके समान मात्रो जानो या । २ तबिका एक पुराना मिठा टका । ३ एक प्रकारका मक्का ।

टंकाई ( हि० पु० ) १ टोचनेको क्रिया । २ टोचनेको मजदूरी ।

टंका ( हि० खि० ) १ टोचने गिनवाना । २ मिला कर लयवाना । ३ खुरदुरा कराना, कुटाना । ४ मिला कर लयवाना ।

टंका ( हि० खि० ) विट्टीको जूँच कराना ।

टंकारना ( हि० खि० ) पतञ्जिका ताम कर धनि उत्पन्न



करना, धनुषको डोरो खींच कर आवाज करना ।

टंको ( हिं० स्त्री० ) १ योगागकी एक रागिणी । २ पानी-का छोटासा कुंड जो ढोवाव उठा कर बनाया जाता है, चौबच्चा, टांका । ३ ( Tank ) वह वरतन जिसमें ज्वादे पानी समाना हो, टब ।

टंकोर ( हिं० पु० ) टंकार देखो ।

टंकोरना ( हिं० क्रि० ) १ पतञ्जिका तान कर शब्द उत्पन्न करना, धनुषको डोरो खींच कर आवाज करना । २ ठोकर लगाना । ३ क्रिमो वसुको जोरसे टकरानेके लिए तर्जनी वा मध्यमा ऊंगलीको कुण्डलो बना कर उसकी नोकको अंगुठेसे दबा कर जोरसे छोड़ना ।

टंकोरी ( हिं० स्त्री० ) वह छोटा तराजू जिससे सोना चाँदी आदि तौला जाता है, काँटा ।

टंगड़ी ( हिं० स्त्री० ) घुटनेसे ले कर एँडी तकका भाग टांग ।

टंगना ( हिं० क्रि० ) १ लटकाना । २ फाँसो पर चढ़ना, फाँसो लटकना । ३ कपड़े आदि रखे जानेके लिये वंधो हुई रस्सो, अलगनी । ४ लुलाछीको उठौना टांगी जानेकी रस्सी ।

टंगरी ( हिं० स्त्री० ) टंगड़ी देखो ।

टंगा ( हिं० पु० ) मूँज ।

टंगघंट ( हिं० पु० ) पूजा पाठका भारी आलम्बर, सिंथा आलम्बर ।

टंगा ( हिं० पु० ) १ प्रपंच, बखेड़ा, खटराग । २ उप-द्रव, हलचल, टहना फसाद । ३ भगड़ा, लडाई, कलह ।

टंडर ( अ० पु० ) १ किसी दूसरेसे कुछ काम करने या कोई माल किसी नियत दर पर बेचने या खरीदनेका इकरारनामा । २ अदालतका वह आम्नापत्र जिसके द्वारा कोई मनुष्य किसीके प्रति अपना देना अदालतमें दाखिल करे ।

टंडल ( हिं० पु० ) मजदूरोंका जमादार या मेट ।

टँडिया ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारका गहना जो बाँहमें पहना जाता है । यह अन्नके आकारका होता लेकिन उससे भारी और बिना घुँडीका होता है, टाँड़, बड़ँटा ।

टँडुलिया ( हिं० स्त्री० ) काटिदार वन चौलाई । वह माग और शोध दोनोंके काममें आती है ।

टँडैल ( हिं० पु० ) टंडल देखो ।

टंसरी ( हिं० स्त्री० ) एक वीणा ।

टक ( हिं० स्त्री० ) १ खिर हट्टि, गड़ो हुई नजर । २ बड़े तराजूका चौखूँटा पलड़ा जिस पर लकड़ी आदि रख कर तौला जाता है ।

टकटकी ( हिं० स्त्री० ) खिर हट्टि, गड़ो हुई नजर ।

टकटोना ( हिं० क्रि० ) टकटोलना देखो ।

टकटोलना ( हिं० क्रि० ) हाथसे छू कर पता लगाना, टटोलना ।

टकटोहन ( हिं० पु० ) स्पृश, छूनेकी क्रिया ।

टकतन्वी ( स० स्त्री० ) आर्याका एक प्राचीन वाद्ययन्त्र मितारके टहका एक प्राचीन वाजा ।

टकवोडा ( हिं० पु० ) वह मेट जो किसान विवाहादि के अवसर पर जमींदारको देते हैं, मधवच, शादिया ।

टकराना ( हिं० क्रि० ) १ जोरसे एक दूसरेमें ठोकर लगाना, जोरसे भिड़ना । २ कार्यसिद्धिकी आशासे कई स्थानों पर कई बार आना जाना, घूमना ।

टकरी ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारका घृत्त ।

टकसरा ( हिं० पु० ) आसाम, चटगाँव और बर्मामें होने-वाला एक प्रकारका बाँस ।

टकसाल ( हिं० स्त्री० ) १ ( स० ) टहशाला शब्दका अपभ्रंश रूप ) मुद्रा प्रसृत होनेका कार्यालय, सिक्के बनने या ढलनेका कारखाना, वह स्थान जहाँ रुपये, पैसे आदि बनाये जाते हैं ।

अति प्राचीनकालसे भारतवर्षमें सोने चाँदी और ताँबे आदिके सिक्के व्यवहृत होते आये हैं । नाना-स्थानोंमें प्राचीन हिन्दू-राजाओंके नामाङ्कित बहुत सिक्के मिले हैं । उन सिक्कोंका आकार, परिमाण, विशुद्धता आदि अति विषष्ट है । उनके देखनेसे सहजसे प्रतीत होता है कि, तत्कालिक नरपतिगण राजकीय टकसालोंमें अपने अपने राज्यके लिये सिक्के बनवाते थे । अलेक-सन्दरके समयसे लगा कर अर्थशास्त्रके अधिकार समय तक भारतवर्षमें कोई श्रुति नहीं कि कितने प्रकारके सिक्के चले हैं । मूल्य, परिमाण, आकार और गठनका पारिपाक्य प्रायः भिन्न भिन्न होता था । मुद्रा देखो ।

राजाओंके सिवा और किसीके भी सिक्के बनानेका

पश्चिम न बा। राजकीय टखसालीमें गिणियम  
 हाथमें एक एक सिद्धा बनाते थे। कहना बिबुस है  
 कि प्राचीन बिन्दु राधादेवे ममबडे ब्रितने मो सिद्धे  
 पागे मय ई बनका मोना बा चांदो पति बिबुस जोने  
 पर मो उनको बनाबट उतने उमदा नहीं है कीकि वह  
 हाथमें बनाया जाता था। मभवतः पूरुसुरतोबी  
 तरख उनका मचब हो नहीं था रिसा मामूम  
 पड़ता है।

पञ्चमन्दरके धाममण्डे बाट पञ्चाय घोर पप्रगलि  
 स्थानमें, उनके द्वारा स्थापित नमरेके धाममण्डा  
 पीर-पञ्चरोमें सिद्धे पद्धित करवाते थे। परन्तो धामम  
 कतामच पोच घोर देवीय दोनों हो मावाप व्यनहार  
 करते थे।

सुनन मखाटने सिद्धोको क्वरुसुरतोके विषयमें  
 काजो उचति की जो। भारतवर्षमें बूटो हुई सुबर्षरागि  
 दिदी घोर पागरेको राजकीय टखसालीमें सुमसुमागी  
 सिद्धोंमें परिषत हो कर देय देयमें प्रचलित हुई।  
 कहना पञ्चस है कि सुगल मखाटोके ममबडे ही  
 भारतवर्षमें बहुविस्त्रल स्थानमें दिदीकी टखसालके  
 सिद्धे प्रचलित हुए थे।

बाइसाय पञ्चवरने समथमें सुगल साध्याणके ३२  
 मयरीमें टखसालो ची। उन टखसालीमें जिन जिन  
 स्थानोंमें सिद्धे होने से सिद्धे बनाय जाते थे उनका  
 मोचे कनेक किया जाता है।

१म। दिदी, बङ्गाल, गुजरातम्य पञ्चमटाबाट  
 घोर काहुल, इन चार स्थानोंको टखसालीमें स्वर्ष रीय  
 घोर ताव्य इन तीन प्रकारको धातुपोंके सिद्धे बनते थे।

२४। इन्हाबाट, धामप, कळम, सुरत, पटना  
 काङ्गीर, काहोर सुसुतान घोर तापुा इन दस स्थानों  
 की टखसालीमें सिद्धे चांदो घोर तबिके सिद्धे  
 बनते थे।

२५। पञ्चमैर, पयोजा, पाटक, पञ्चवर, बदाय,  
 बनारस, माहूर, बडिया पाटन, जोनपुर कासमर,  
 हरिदा, बिष्णार, विडवा, कास्यो म्नासियर गोरखपुर,  
 कसामूर, लखनौ, माण्डू, नाग, सरहिन्दू गियासकोट,  
 कटीक, पञ्चारनपुर, सारङ्गपुर, धमल, कजोन घोर रतमू

गड (रबपुनपुर)—इन उनतोस नमरीको टखसालीमें  
 तबिके सिद्धे बनते थे।

इन टखसालीमें जितने कर्मचारो, गिण्यो घोर मत्र-  
 दूर भादि इतने थे, उनके नाम घोर काम मवेपने कहे  
 जाते हैं।

१। दुरोगा—टखसालके कार्यालयके रूपके प्रबन्धके  
 कार्यका परिद्वान करमेवासा। सब विषयोंमें निपुण घोर  
 तोखइति तथा न्यायपर व्यक्तिकी र्शेने पद पर निपुण  
 सिद्धे जाते थे।

२। बरॉप—स्वर्षपीसक ये स्वर्ष-रीयादिकी  
 बिबुसताकी परीचा किया करते थे। इन पर सिद्धेका  
 उन्क्यायस्वर्ष निर्मर करना था, इसकिए इस पद पर  
 सुनिपुण घोर न्यायपर व्यक्तिकी निपुण सिद्धे जाते थे।

३। धामिग—दुरोगाका मडकारी।

४। सुगरिण—दैनन्दिन व्ययका हिसाब रखनेवाला।

५। मत्राजन—सोना, चांदो घोर तबिका कुरोद कर  
 टखसालमें र्शेनेवासा।

६। कोपाञ्चक—धाय-व्यय घोर कामका हिसाब  
 रखनेवाला।

७। (महाजन)को कोडू कर उपरोक्त सभी कर्म  
 चारो धाइदो धर्वात् १म से कोषे कर्मचारियोंमें गिने  
 जाते थे।

८। तोला—सिद्धेको शरीरकोके माप तोलनेवाला।

९। धातु नकालीवाला—मिच स्वर्ष, रीय घोर ताव्य  
 को गला मका कर सहर बनानेवाला।

१०। मिच स्वर्ष रीयादिकी पञ्चतिया बनानेवाला—  
 मरायको इनको बनार् हुई चकतियो को कच्छा नमध-  
 नेके विद्योचन करानेका धतुमति देता था। मिथित उन  
 चकतियो को मोहा घोर ईटके चूर्णमें कपरीको धायमें  
 बसा कर बहानेवा जाता था।

११। बिबुस धातु नकालीवाला—यह धाइदो उपरोक्त  
 विद्योचित चकतियोंको गन्ना कर सहर बनाता है।

१२। बराव—बहरको काट कर सिद्धेके धाकार घोर  
 मापका टुकड़े बनानेवाला।

१३। कोटकार—ईकात कोड़े पर विच घोर पञ्चर  
 पादि बौद कर सिद्धेके सिद्धे टांका बनानेवाला।

कम्पनीके अधिष्ठत सभी स्थानोंमें चनाने लगा ।

१७८७ ई०में टाका और घटनाको टकसालमें घंट कर दी गई । इसके बाद मुर्शिदाबादकी टकसालभी उठ गई ।

उस समय भी काशी, फरकावाट, बरेली, इलाहाबाद, गोरखपुर आदि नगरोंमें स्थानीय व्यवहारके लिए सिकके बनते थे । किन्तु बहुत जगह टकसालके कर्मचारियोंके असद्व्यवहारसे सिकके का सून्य घटने लगा । गवर्मेण्ट यथासाध्य चेष्टा करने पर भी उसका निराकरण न कर सकी ।

ईसाकी १८वीं शताब्दीके प्रारम्भमें ही कम्पनीके अधिष्ठत विस्तीर्ण प्रदेशमें एक तरहके सिकके चलाने का प्रसङ्ग छिड़ा । कुछ भी हो, नवाधिष्ठत और कारट राज्योंमें नये नये सिकके चलने लगे ।

पुराने सिकोंकी गला कर नये सिकके बनानेके लिए सागर, अजमेर आदि स्थानोंमें भी टकसालें स्थापित की गई थीं ।

फिलहाल समग्र भारतवर्षमें सिकका, फरकावादी, गोरखपुरी, वालाशाही आदि भिन्न भिन्न रूपोंका अस्तित्व उठ कर सर्वत्र १८० अथवा (द्रय) वजनका रूपया प्रचलित हुआ है । १८३५ ई०में मद्राजकी टकसाल उठ गई और उसकी मशीनें आदि सब कलकत्ते और बम्बईको टकसालमें पहुँचाई गईं । इसके बाद कलकत्ता और बम्बईको टकसालमें ही समस्त भारतवर्षके १५ सुदरा बनने लगे और अन्यान्य टकसालें फिजूल रहना कर उठा दी गईं । इस समय बम्बई और कलकत्तेमें ही रूपये-पैसे बनते हैं । दोनों जगहके रूपये आदि एक ही प्रकारके होते हैं ।

इनके सिवा बहुतसे कारट और मित्र राजाओंकी राजधानीमें टकसालें हैं । उन टकसालोंमें स्थानीय प्रदेशोंके लिए रूपये आदि बनते हैं ।

२ प्रामाणिक वस्तु, असल चीज ।

टकसालो (हि० वि०) १ टकसाल-सम्बन्धी, टकसालका ।  
२ टकसालका बना हुआ, मरा, चोखा । ३ सर्व-सम्मत, माना हुआ । ४ परोक्षित, प्रामाणिक, जँचा हुआ, पका । (पु०) ५ वह जो टकसालकी देख भाल करता हो, टकसालका मालिक ।

टकहार ( हि० वि० ) जो वेश्याघोमें खराब हो ।

टका ( हि० पु० ) १ रूपया, चाँदाको पुरानी सुदरा । २ दो पैसके बराबर ताँबेकी एक सुदरा, अधमरा, दो पैसे । ३ धन, द्रव्य, रूपया, पैसा । ४ तोन तोलेकी तोन, आधो कटाँकका मान । ५ मवा सेरके बराबरको एक तोन जो गढ़वालमें प्रचलित है ।

टकार ( हि० वि० ) टकाही देगो ।

टकाटको ( हि० स्त्री० ) टकटई देगो ।

टकातोप ( हि० स्त्री० ) जहाजों पर रखी जानेवाली एक प्रकारकी तोप ।

टकाना ( हि० क्रि० ) टँकाना देगो ।

टकार ( सं० पु० ) टकरूपे कारः । ट, ट स्वरूप अक्षर ।

टकासी ( हि० स्त्री० ) १ दो पैसों प्रति रूपयेका सूद । २

हरएक मनुष्यसे टकके हिमावसे लिये जानिका चन्दा ।

टकाही ( हि० वि० ) टकहार देगो ।

टको ( हि० स्त्री० ) टकटई देगो ।

टकुआ ( हि० पु० ) १ चरखिमें लगा हुआ एक प्रकारका सूत्रा । इस पर सूत काता और लपेटा जाता है, तकला । २ चरखोंमें लोहेका एक पुरजा जिससे विनीला निकाली जाती है । ३ वह तागा जो छोटे तराजू या काँटेके पलछोंमें ढंथा होता है ।

टकुजी ( हि० स्त्री० ) १ टाँकी, एक प्रकारका औजार जिसे पत्थर काटा जाता है । २ नकाशी बनानेके काममें आनेवाला एक प्रकारका लोहेका औजार जो पेचकशकी तरह होता है । ३ एवा पेटुका नाम ।

टकैत ( हि० वि० ) जिसे रूपये पैसे हों, धनी ।

टकोर ( हि० स्त्री० ) १ आघात, प्रहार, हलकी चोट ।

२ वह चोट जो नगाड़े पर पूजाके समय की जाती है ।

३ नगाड़ेकी आवाज । ४ धनुषको कसो हुई पतञ्जिका खींच वा तान कर छोड़नेका शब्द, धनुषकी डोरो खींचनेको भाषाज, टङ्कार । ५ दवा भरो हुई गरम पोटलो-

की किसी अङ्ग पर रह रह कर कुसानेकी क्रिया, सेंक ।

६ खट्टी वस्तु खानेके कारण दाँतोंकी टोस, चमक । ७ तीक्ष्णता, तीतापन, चरपराहट ।

टकोरना ( हि० क्रि० ) १ टोकर, लगाना । २ वजाना,

घोट लगाना । ३ सेंकना ।

टकीरा ( हि० पु० ) नगाड़े का आघात, उड़ने की चोट ।  
 टकीरी ( हि० स्त्री० ) बड़ छोटा तराजू जिसमें मोना  
 पाटि तोना जाता है छोटा कौटा ।  
 टक ( स० पु० ) टक्क एक प्रयोदादिखात् लपकाओपम् ।  
 टक-विशेष, एक देशका नाम ।  
 टकदेश ( स० पु० ) टकका इति नाम्ना स्यात् देशः,  
 कर्मका० । पश्चात्तन् चन्द्रमासा चौर विपाया नदीके  
 मध्यवर्ती प्राचीन जनपद-विशेष । राजतरङ्गिणीमें टक  
 देशकी पुर्वर ( गुजरात ) राज्यके अन्तर्गत लिखा है ।  
 टकजालि किमो समयमें चम्पक प्रतापयामिनी चौर भाँरे  
 पश्चात्तमें राज्य करती थी । चीन-परिव्राजक हुएनचुवाङ्गने  
 टक राज्यका तथा उसमें परिचित मिशिरकुमका उल्लेख  
 किया है । उनमें सेकमें यह राज्य विपायाके पश्चिमो  
 किनारे पड़ता है । यहाँको कसीन कर्मरा भी । सोना  
 चाँदी, ताँबा और मोटा बरिष्ठ मिश्रता का । जनबायु  
 लुण्ठ वा, माक माक लूपाका इत मदा बना रहता था ।  
 सोम बड़े कामकाजी तथा पाइसी थे, इन भीमोंका  
 पहनावा नाम रेशमी वस्त्र था । टककी राजधानी  
 याकनने १७१६ मी पश्चात् ३ मील उत्तर-पश्चिममें  
 पश्चिमत थी । हुएनचुवाङ्गके लेखमें पता चलता है कि  
 इन समय टकमें बौद्धधम का उत्तमा प्रभाव नहीं था ।  
 सेकन १० महाराम थे । यहाँके भीम चम्पक प्रातिपद्य  
 थे । यहाँ तक कि वे अतिविद्यानामें पागलुओं और  
 दोनहीन यासियोंकी सेवा श्रुषुषा किया करते थे ।  
 टकदेशीय ( स० पु० ) टकदेशीय मन्व इति च ।  
 १ बासुलूयाक, बकपा नामका अंग । ( हि० ) २ टक-  
 देशोत्पन्न, टकदेशका ।  
 टकर ( हि० स्त्री० ) १ दो वस्तुके बीचमें एक दू-३में  
 मिलन, ठोकर । २ लड़ाई, भिड़ना, झुकाविका । ३  
 किमो कड़ो वस्तु पर सिर पटकनेका आघात । ४ अति,  
 दानि, मुकमान ।  
 टकारिका—चन्द्रकटाक्ष भोजनवर्माके पत्रयगपुके शिखा  
 लेखमें लिखा हुआ एक प्राचीन नगर । उस निविष्ट  
 मतमें यह नगर कायस्थ-निवासभूत इस्तीम नगरमें मन्वमें  
 प्रधान तथा बाम्नाम्ब कायस्थके चान्दिपुरय वास्तुका वास  
 स्थान था ।

टकना ( हि० पु० ) पादपत्र, पैरका गहा ।  
 टकन ( स० पु० ) मात्राहत्ममें तिरह भेदात्मक मन्वविशेष  
 मातृक गणनेमें एक । इसमें आकार और पविठावो  
 दिक्ताके विषयमें इन्द्रोपम्यमें इस प्रकार लिखा है,  
 यथा—( १११ ) १ गिव, ( १११ ) २ गयो, ( १११ ) ३ दिन  
 पति, ( १११ ) ४ नुरपति ( १११ ) ५ शेष ( १११ )  
 ६ पति ( १११ ) ७ करोज ( १११ ) ८ जाता ( १११ )  
 ९ अति, ( १११ ) १० अन्त ( १११ ) ११ ध्रुव, ( १११ )  
 १२ अर्ध, ( १११ ) १३ यालिखर ।  
 टकर ( सं० पु० ) टः टकच चारविशेष गर इव । १ टकच  
 चार, मोहागा । २ निनाम कौड़ा । ३ तगरका पैठ ।  
 ( हि० ) ४ केकराच, पैसा, भोगा ।  
 टकरनोड़ा ( हि० पु० ) लहन्नाका एक खेन । इसमें कुछ  
 खोटाया बिना करके जमा देते हैं फिर एक कौड़ोमें लक  
 मारते हैं ।  
 टगरा ( हि० वि० ) भोगा, पैसा लागता ।  
 टपरना ( हि० स्त्री० ) १ चित्तमें लया पाटिका लपव  
 बीना, प्रदयका पिचन जाना । २ धो, चरनी पाटिका  
 गर्मके कारण दूब बीना पिचलना ।  
 टशराना ( हि० स्त्री० ) दूब खरना पिचलाना ।  
 टड ( स० पु० ) टड-लम् । १ शीघ्र, श्रोत्र गुप्ता ।  
 २ शीघ्र, प्रजाना । ३ अत्र तन्ववार । ४ पावदारन फल  
 काटीका चोजार, टकी । ( स्त्री० ) ५ अत्र, अति ।  
 ६ परिभाषाविशेष, एक गोम ओ चार मासिकी होती है  
 कोई, कोई इने २४ रत्नीकी मानते हैं ।  
 ( पु०-स्त्री० ) ७ मानकविद्य, नीला बंध, धाँर ।  
 ८ अति, कुदाक । ९ दय, पसिमान । १० परशु  
 कुम्हाड़ी चरमा ।  
 टकरा ( हि० संज्ञेय च संज्ञेय पुंलिङ्गत्वं ) ( हा वच २  
 ल० ) ११ राजात्म एक बड़ा थाम ।  
 “तीत कथाय मन्वु संवसारण्डप्रुड” ( उग्रानुव १८ )  
 १२ परलका प्रान्तभाग । १३ परलका उचल  
 प्रन्ना, पहाड़की चोटो । १४ बिटोरी प्रान्त भाग  
 पतरका कडा हुआ दुखड़ा । १५ रागविशेष म मूर्ध  
 अलिखा एक राय । यह जो, मरेश चौर कान्पुःके  
 शीघमें बना है । इसमें कीमल करवम जलना है और  
 इसका अरमम इस प्रकार है—

वा, ऋ, ग, म, प, ध, नि । ( मणीतर ० )

१६ म्यान । १७ कांटेदार पेंड । इसमें वेत्र या कैचके बराबर फल लगते हैं । १८ टङ्गलचार, सुहागा । १९ नियम म्यान वा बाट । इसमें धातुकी तीन कर टकमान में बिक्रं बनानेके लिये देते हैं । २० सुडा, मिका । २१ २१; रत्तीके बराबर मोतीकी एक तोल । २२ घुटनेमें ले कर ऐंछी तकका अड्ड, टोंग । २३ रजतसुडा । २४ पापाणदारण ।

टङ्क ( तोड़ )—१ राजपूतानेके अन्तर्गत एक ऐंग्रेजी राज्य । इसका थोडा भाग तो राजपूतानेमें और थोडा मध्यभारत में पडता है । राजपूतानेमें केवल यही एक राज्य सुसंरक्षित राजासे शासित होता है । यह राज्य परस्पर विच्छिन्न ६ विभागोंमें बंटा हुआ है, यथा—राजपूतानेके टङ्क, अलीगढ़ रामपुर तथा मध्य भारतके निर्भर, पिरवा, चपरा और मिगोन्न है । यह अक्षा २३° ५२' से २६° २८' उ० और देशांश ७४° १३' से ७०° ५७' पू०में अवस्थित है । इसका क्षेत्रफल २५५३ वर्गमील है, जिनमेंसे १११४ राजपूतानेमें और १४३९ मध्य भारतमें हैं । इसका राजस्व प्रायः १२ लाख रुपये है । राज्यमें जहा तन्नां बनी भाडियोंने टके हुए छोटे छोटे पहाड देखे जाते हैं । चिन्नौर नामक पहाड ही सबसे बड़ा है । इसकी ऊँचाई समुद्रपट्टमें लगभग १८८० फुट है । यों तो राज्यभरमें अनेक नदियाँ प्रवाहित हैं, पर बनास और पार्वती नदी ही सबसे बड़ी है । बाढ़के समयमें ये दो नदियाँ बहुत भोपपरूप धारण कर लेती हैं । १८७५ ई०में उक्त नदियोंमें जो बाढ़ आई थी उससे हजारों ग्राम तथा घर बह गये थे, बहुतोंको जान चली गई थी । इनके मिवा मागो, मोहड, गभोर, वेरच आदि भी कई एक छोटी नदियाँ बहती हैं । यहाका जलवायु शुष्क तथा स्वास्थ्यकर है ।

टङ्कके अधिपति बीनर सम्राटयके पठान हैं । सम्राट महम्मदशाह गाजिके राजत्वकालमें तालखान नामक कोई पठान अपना वासभूमि कैशरको छोड़ कर रोहिलखण्डके सैन्य विभागमें चले आये । इनके पुत्र जैयतछाने सुरादावाटमें थोड़ी भूसम्पत्ति प्राप्त की । १७६८ ई०में जैयतके पुत्र टङ्कराज्यके स्थापनकर्ता विख्यात अमीरखाने जन्मग्रहण किया ।

अमीरने सबसे पहले थोड़ेसे अन्धकारोंको ले कर सैनिकवृत्ति अवलम्बन की । क्रमशः जब इनको शक्ति कुछ बढ़ी, तब १०८८ ई०में उन्होंने गगवन्दाराव छोलकरके सेनापति जो काग मिन्धिया, पेंगवा और पंगरिजीके बिक्रम लड़ाई टान दी ।

१८०६ ई०में छोलकरने अमीरको टङ्क राज्य दे कर उनसे अपना पिण्ड छुहाया । इसके बाद अमीरखाने परन्पर विवादमें पृथक्त जयपुर और जोधपुरके दोनों राजाओंकी क्रमशः सहायता ले कर दोनोंका राज्य तहम नहम कर डाला । उनकी दुर्दलित सैन्यने दोनोंका राज्य नष्टा । १८०८ ई०में उन्होंने ४० हजार आवागोही लेकर नागपुरकी ओर यात्रा की । रास्तेमें २५ हजार पिण्डांगे उनके टलनेमें मिल गये । जब पंगरिज गवर्मेण्टने उनकी इस कामसे सना किया, तब उनके सेनापतिने राजपूताना नोट कर नष्ट मार मचा दी ।

१८१० ई०में मार्किम आफ इटिंसने विद्यार्थियोंको दमन करनेकी इच्छामें अमीरकी छोलकर-प्रदत्त राज्यमें स्थापित करनेकी विचाग और उन्हें सैन्यदलकी सहायता देनेके लिये आदेश दिया । प्रतिवाद करना निष्कल समझ कर अमीर सहमत हो गये । उनकी अधिकांश युद्धमामग्री इटिंस सरकारने खरोद ली । अलीगढ़, रामपुर विभाग और रामपुर की उन्हें दे दिये गये । १८३५ ई०में अमीरकी मृत्यु, १८ ।

बाद उनके पुत्र वजीर महम्मदशाह तथा उनके बाद वजीर महम्मदके पुत्र महम्मद अलीखाने टङ्कके नवाब हुए । इन्होंने किसी सामन्त राजाके परिवारको धन्याय अथवा चारमें धान्य दिया था, इसीसे पंगरिजने उन्हें राज्य-स्युन कर उनके पुत्र महम्मद इनाहिस अलीखाने को नवाबके पद पर अभिषिक्त किया । इनका पूरा नाम अमीन अल-दौला वजीर अल-मुल्क नवाब सर इफोज महम्मद इनाहोम अलीखाने वहादुर मौलज जङ्ग जी०सी०एस०आई० जो०सो०आई०ई० है । नवाबको कर नहीं देना पड़ता । इन्हें १७ तोपोंकी सलामी मिलती है । ये ८२ तोपें, २४० गोलन्दाज सैन्य, ४४३ अन्वारीही और १०४६ पदातिक सैन्य रखते हैं ।

इस राज्यमें ग्राम और शहर मिला कर कुल १२८४

कगति है। लोकम क्या प्राय २०१२०१ है जिनमें  
 सेकड़ें ८० पर्यात् २२२५२२ जिन्में सेकड़ें १६ पर्यात्  
 ४१०८० सुसमान पौर ६६२६ हैं। यहाँके पवि  
 कांग सुसमान सुको सभ्यतायके हैं। इस राज्यमें ब्राह्मण  
 महाजन वमार पठान मीना गुजर पौर गिह प्रातिभि  
 समुच्च रहते हैं। राजपूताना परमनेके मोम साधारण  
 जिन्दी, मारवाडी पौर उर्दू भाषा तथा मध्यभारतके  
 लोग माछमो बोधते हैं। यहाँके पविबाय पविबायो  
 कपक हैं। यहाँके उत्पन्न गन्धमें गिह बाजरा चना पौर  
 सुन्धी है। कपाम पौर पत्रोम मो यहाँ बहुत उप  
 बाई जातो है।

इस राज्यके सम्य यं भागमें सुतोका कपडा पधुत  
 होता है। यहाँ कूट पौर शराबका कारखाना मो है।

इस राज्यमें पनात्र, कपाम पर्यीय, समई पौर सुतो  
 कपडको रकतमो जौतो पौर सुनै सुनै देसमें नमक,  
 जौतो चाबन तमाकू पौर मोडेरी घामटमो जौतो  
 है। इस राज्यमें ४२ मोन तक पको मडक पौर ४०  
 मोन तक कको मनुक मई है। उद्ये प्रयपुर जानेको  
 मडक ही मवने प्रदान है।

नवाब पौर उनके पत्रकारी बहीरि तथा एक समाधि  
 विचार कार्य चलाया जाता है। उक्त समाधि किबल ४  
 महन्व रहते हैं। उटिय गवर्नेरके नियमातुमार यहाँ  
 का मो शासनकार्य चलता है। नवाबके सिवा पौर  
 सुनैको अन्य टक टेमिका पविचार नहीं है।

यहाँ १ पधतान १ पौपतानव पौर ६ सरकारी  
 डाकघर हैं।

१ राजपूतानेके पूर्व उद्य राज्यका सबसे बडा पर  
 मना। यह पचा २५ ३२ मे २६ २८ ८० पौर नेगा ०  
 ०२ ३१ से ०५ १ २ ० में पवस्थित है। इसका मूरि  
 भाग ६०४ वर्ग मील है। उत्तर पधिमके पतिरिध इसके  
 चारी पौर अयपुर राज्य है। यहाँको प्रधान नदी बगाम  
 पौर इसको शाखा मायो तथा मोरू है। इसमें एक  
 महर पौर २५८ ग्राम नमरी हैं। यहाँको लोचस प्या  
 प्राय ८२०६ है। प्रवाट है कि यह परगना पड़ने  
 डीरी जिनके चलगत था। १२वीं शताब्दीके मध्य माठवीं  
 नामके एक बौद्धान राजपूतने इसे टपन किया। एक  
 101 IX 3

वरके ममयमें अयपुरके मानमि इने इस पर चपना पवि  
 कार कमाया जिन्नु बोके ममयके बादको यह रायसिंह  
 मिथोटियके पविचारमें था मया। पीछे यह परमना  
 १६८६ मे १००० ई० तक डार राजपूतके पबोन रहा।  
 जब यह मरुपुरके मवादे अयमि इके पविचारभुक्त बुया  
 तब अयपुर, चोलवर पौर मिन्धिया रके पानिके लिए  
 थापमें लडने लगी। अन्तमें यह १८०५ ई०में उटिय  
 गवर्नेरके राज नमा पौर उर्धमें फिर अयपुरके राजा  
 को ममपं कविया। १८०६ ई०में राजाने यह परमना  
 पमीरजाको दे दिया। तमोसे यह उर्धके उत्तराधि  
 कारीने पबोन चला था रहा है। यहाँको प्रधान उपत्र  
 क्वार, बाजरा गिह चना तिन पौर कवाम है। प्राय  
 प्राय १०० लाख कपडेने पवित्रको है।

१ राजपूतानेके चलगत एक उद्य राज्यको राज  
 बानी। यह पचा २६ १० ८० पौर द्या ० ०१ ४८  
 पू० बगाम लडेके दो भोक्त दसिच पौर अयपुर महरने  
 ६० मील तथा नेवमो बाननेसे १६ मील उत्तर-पूर्वमें  
 पवस्थित है। नवरका पधतन बडा है तथा चारी पौर  
 प्राचोरने चिरा है। प्रवाट है, कि १६४१ ई०में मोना  
 नामक किमी ब्राह्मणने इसे स्थापित किया था। इसके  
 दसिच भूमगड नामका बिना पौर पूर्वमें धमरवाकी  
 शास्त्री है। यहाँको लोचम क्या प्राय १८०४८ है  
 त्रिभमें सेकड़ें ११ सुसमान पौर ४४मे पवित्र जिन्नु  
 तथा कुटू मुरो मुरी जाति है। यहाँ दय मामान  
 क्लम तथा एक कार्पडूम एक कासागर पौर एक  
 बिबिक्तान्य है।

उद्यक (म० पु०) उद्यरते उद्यक वम् ३ शार्श कन्। रकत  
 मुडा चानेका बिडा कपया।

उद्यकवति (म० पु०) उद्यकवति पति ६ तत्। कुरका  
 ध्वक उद्यकालका मानिक।

उद्यकाल (म० प्बो०) उद्यकाल माना, ६ तत्। मुद्रा  
 मर, उद्यकाल पर।

उद्यटोक (स पु०) उद्य १५ टोकते टोक-क। गिह,  
 महाटेम।

उद्यन (म० पु०) उद्यन्य, प्रयोटराटियात् चत् 1 १  
 चारविगिय सुबागा। इसके ज्वाय-वाचनक, माकतो

रज, लोहश्लेषण, रसशोधन, टङ्गणचार, टङ्गणचार, रसाधिक, लोहद्रावी, रसध, सुभग, रङ्गद, वत्तुल, कनक, चार, मलिन, धातुवन्नम, मालतीतोरसभव, द्रावी, द्रावक, लोहशुद्धिकारक और स्वर्णपाचक है। इसकी गुण—कटु, लघु, कफ, श्यावराटि विष, काश और श्वासनाशक, अग्नि तथा वातपित्तनाशक और रुच है। इसकी शोधन-प्रणाली वैद्यक ग्रन्थमें इस प्रकार लिखी है—शस्त्र द्वारा भावना दे कर चूर्ण करनेसे यह सब कामोंमें प्रयोग किया जा सकता है।

“अम्लेन भादित चूर्ण सर्वकार्येषु योजयेत्।” ( वैद्यक )

पहले टङ्गण काञ्चिक अम्लमें डालते हैं, बाद अम्लसे निकाल कर एक दिन रौद्रमें भावना देने पड़ती है, पीछे नरसूत्र गोसूत्रके साथ मिला कर एक दिन रख छोड़ते हैं। इसके बाद उसे जंजीरी नीचके रसमें डाल कर और फिर उसमेंसे निकालते हैं, तब उसे नारियलके पात्रमें मिर्च चूर्ण मिला कर शीतल जलसे प्रक्षालन करते हैं। ऐसा करनेसे टङ्गण विशुद्ध होता है और सब कामोंमें इसका प्रयोग किया जा सकता है। यह अग्निकर, रुच, कफनाशक, रोचन और लघु है। २ धातुको चीजमें टांका मार कर जोड़ लगानेका कार्य, टांका लगानेका काम। ३ अश्वमेद, घोड़ेको एक जाति। “टङ्गणखरखरन्नाण्डितं हरितालगाशुलेन।” ( काठम्बरी )

४ देशविशेष, एक देश जिसका नाम हृहक्षंडितामें कोङ्कण आदिके माय आया है। ( उद्दसहिता १४१२ )  
टङ्गणादिवटी—वैद्यकोक्त श्रौषधविशेष। प्रस्तुत-प्रणाली—सुहागेका फूला, सींठ, गन्धक, पारद, विष, मरिच, इनको बराबर बराबर चूर्ण कर गटारके रसमें घोंटना चाहिये, फिर चनेके बराबर गोलियाँ बना कर सेवन करना चाहिये। यह शीघ्र अग्निदीप्तिकर है।

टङ्गुनल ( स० पु० ) आस्र, आम।

टङ्गुपति ( स० पु० ) टङ्गुम्य पति, ह-तत्। टकमानका अधिपति।

टङ्गुपाणि—उड़ोसाका एक ग्राम। यह भुवनेश्वर-मन्दिरके चारों ओरके ४५ पुरुजिनोंमेंसे एक है तथा कुण्डलेश्वरके समीप पुरो जानिके रास्ते पर अवस्थित है। किसी किसीका मत है, कि जेठपरिक्रमके समय यात्रियोंको इस स्थानका भोग दशन करना चाहिये।

टङ्गवत् ( स० पु० ) टङ्ग अस्त्यर्थं मत्तुप् मस्य वः। पर्वत-भेट, एक पहाड़ जिसका नाम वाल्मीकीय रामायणमें आया है। “टंकवन्तं शिखरिणं वन्दे प्रथमं गिरिम्।”

( रामा० ३।५।४४ )

टङ्गविज्ञान ( स० स्त्री० ) टङ्गस्य विज्ञानं, ह-तत्। नाना-देशीय और नानाकालीन टङ्ग परिज्ञानार्थं विद्या, भिन्न भिन्न देशों और बहुत पुराने समयकी टङ्ग जाननेकी विद्या। सुदा देखो।

टङ्गविशोधन ( स० स्त्री० ) टङ्गस्य विशोधनं, ह-तत्। मुद्राविशुद्धिसम्पादन, सिक्केको परिष्कार करनेकी क्रिया।

टङ्गशाला ( स० स्त्री० ) टङ्गस्य शाला, ह-तत्। टकसाल। टकसाल देखो।

टङ्गा ( स० स्त्री० ) टङ्ग-अच-टाप्। १ जङ्गा, जाँघ। २ ताराटेवी। “टंकारकारिणी टीका टंका टंकारिणी तथा।” ( तारासहस्रनाम )

३ रागिणीविशेष, सम्पूर्ण जातिको एक रागिणी। यह विषदज और आदि सूक्तनायुक्त होती है। सुवर्ण वर्णा विशेषविधुरा रागिणी अपने घरमें आ कर नलिनी-दलशय्यामें निद्रित कान्तको विपन्नचित्त देख कर गान करनेसे टङ्गा संज्ञा होती है। अनुमत्के अनुमार इसका स्वरयाम इस प्रकार है—स रे ग म प ध नि स।

टङ्गानक ( स० पु० ) टङ्ग क्रोधं आनयति उद्धीपयति। टङ्ग-अन्-णिच् खुल। ब्रह्मदारु, सहतूत।

टङ्गार ( स० पु० ) टं चित्त-विक्रान्तिं करोति ह-कर्मण्यु। १ विस्मय। २ शिञ्जिनीधनि, ठन ठन शब्द जो किसी कसे रूप तार आदि पर उँगुली मारनेमें होता है। ३ धनुषको कसो हुई पतञ्जिका खींच कर छोड़नेका शब्द, वह शब्द जो धनुषको कसो हुई डोरो पर बाण रख कर खींचनेसे होता है।

“टंकारवृत्तकफोला टीकनीया महातटा।” ( काशीख० २९।६६ )

४ धातु पर आघात लगनेका शब्द, ठनाका, भनकार। ५ कोर्त्ति, प्रसिद्धि, नाम।

टङ्गारकारिणी ( स० स्त्री० ) टङ्गारस्य कारिणी, ह-णिनि-डोप्। ताराटेवी।

“टंकारकारिणी टीका टंका टंकारिणी तथा।”

( तारासहस्रनाम )

द्वारी (स० श्लो०) दृढ अक्षरति अन्तर्निषि पञ्च तत्त-  
 कोषम् । हृद्यमेत, एक पंख । इमन्ती पत्तियां नन्वी  
 तरी शोती है । फूमन्तं भेदये इमन्ती कर्तुं जातियां  
 है । किसीमें काम फूम किसीमें गुणाती शोः किसीमें  
 मर्कट फूम लगते हैं । अत्र फूम भङ्ग जाति तत्र कोटे  
 कोटे फर्कीं गुच्छे शकते हैं । इमन्ते फणका गुण-  
 वातयेषु, शोष शोः अदरथवातायक तिल दीपन शौर  
 मङ्ग है ।

द्विजा (स० श्लो०) यन्मन्त्रिय, एक प्रकारका शीशार  
 क्रिमये पत्तार काटा जाता है टांको शिनी ।

द्विज (स० श्लो०) दृष्ट-ज । १ उच्चिजित । २ बह,  
 जो मिया मया जो । ३ मन्दित, बहुपकी डोरीका मन्द  
 किया हुआ ।

“बाह्य न च संश्लिप्तं न निर्मितं बोधान्तरं स्वावत ।” (उद्भट)

दृष्ट (स० पु० श्लो०) दृष्ट प्रयोदरादित्वात् माह ।  
 १ ज्ञानि, कुदाह । २ परत, परता । ३ बड़ा जीव ।  
 ४ दृष्टान् सुहागा । ५ परिमाणविगीय चार मायिकी एक  
 तोन ।

दृष्ट (स० पु० श्लो०) दृष्ट-प्रयोदरादि० माह । दृष्ट-  
 सुहागा ।

दृष्टरैरी—द्विबाहु, दृष्ट शब्दके पन्नागतं हृदिय शासन-  
 धोन एक पास । यह पचा० ८ १४ च० पोर दिसा०  
 ०१ ११ पू०में अवस्थित है । सूर्यरिमाच ८८ एकड़ शौर  
 शोषन प्या प्राय १०२१ है । यह पदने पोर्तुगोल  
 शौर उषका बासम्यान बा । चात्रबन यहाँ रोमन  
 शासनिक रहते है ।

दृष्टि (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्टि—हुकप्रदेशके पेशावर जिलेके धन्वर्गत चारमह  
 तहसीलका एक शहर । यह पचा० २३ १० स० पौर  
 दिसा० ०१ ३२ पू०के मध्य पेशावर शहरके ३८ मील  
 की दूरी पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्राय ८०८३ है ।  
 प्यात नामकी नदी शहरके पश्चिम हो कर प्रवाहित है ।  
 चित्रियायो मुहम्मदशहरे प्यान है ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।

दृष्ट (स० श्लो०) दृष्ट चिन्नि प्रयोदा० माह । दृष्ट  
 विदेय पात्त ।



मंख्या प्रायः ४१०४५ है। अधिवासियोंमें अधिकांश मुसलमान है। इस तालुकमें इमी नामका एक गहर और ३५ ग्राम लगते हैं। इसके उत्तममें पार्वत्य भूमि और दक्षिणमें मलकाली पहाड़ है। यहाँ प्रधान उपज धान, ईख, गेहूँ, जौ, बाजरा, ज्वार और तिल है।

३ मिन्धुप्रदेशमें कराची जिलेके अन्तर्गत उक्त ट्टा तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४ ४५' उ० और देशा० ६७°५८ पू० पर मिन्धु नदीके दाहिने किनारेमें ७ मील पश्चिम और कराचीमें ५० मील पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १००८३ है।

पहले नगरकी चारों दिशाओं मिन्धु नदीके जलसे ज्ञात होती थी। अब भी बाढ़के वाट बहुतसी भोल और खाड़ीमें जल रह जाता है और उस जलसे वायु दूषित हो कर च्वर प्लेग टिफॉयड रोग उत्पादन करती है। इन्हीं सब कारणोंसे यहाँका जलवायु अस्वास्थ्यकर है।

मिन्धु-पञ्चाङ्ग-टिफॉयड-रैलवेके जंक्शनसे १३ मील दूर यह नगर पड़ता है। इसका मध्यवर्ती बहुत सुन्दर और सुगम है। यहाँ एक सुवर्तियारका और तथादरका आफिस तथा एक थाना है। इसके मित्रा सरकारी-विद्यालय, डाकघर, दानव्यभोपधालय और एक कारागार है। मसोपवर्ती माकली पर्वत पर प्रसिद्ध कब्रिस्तान है और इसके मसोप ही फौजदारों अदालत और डिप्टिकमिन्शरका बड़ा है।

१८वीं शताब्दीके पहले ट्टा बहुजनकी एक वाणिज्य शिल्पादियुक्त एक बड़ा नगर था। १६८८ ई०के पूर्व एक भोपण महामारोसे इसके प्रायः ८० हजार अधिवासियोंकी जान गई थी। १७४२ ई०में जब पारस्यके राजा नादिरशाह ट्टाप्रदेशको घाये थे, तब वहाँ ४० हजार ताँती, २० हजार अन्धान् शिल्पजोवी और ६० हजार दूसरे अधिवासो वास करते थे। किन्तु भारतीय नौ सेनादलके कप्तान (Captain) जे उड अनुमान करते हैं, कि १८३७ ई०में ट्टाक अधिवासी १० हजारसे अधिक नहो थे। ट्टाका वाणिज्य और शिल्प पहलेकी तुलनामें नाम मात्र है। अभी साधारण कपड़ा और क्रीट तैयार होती है, किन्तु सैन्येष्टकी प्रतिशो गितासे उसका भो धीरे धीरे ज्ञान होता जा रहा है। आमदनीमें अनाज,

धो, चीनो और रेशम तथा रक्ततोमें कपास, रेशमो कपड़ा और चमड़ा प्रधान है।

ट्टा नगरमें वस्तुतो प्राचीन कोतियां विद्यमान हैं, जिनमेंमें यहाँका दुर्ग और जुमा-मस्जिद प्रधान है। यह नगर अत्यन्त प्राचीन है। १५५५ ई०में पोर्तुगोज लखतानि इस नगरको नष्टा था। १५५१ ई०में अकबरने मिन्धुप्रदेश पर शाकसगर्त समय इसे नहम नहम कर डाला था।

जब शाहजहान् जहान्गोरके निकटमें भागा था, तब उन्हीने ट्टाको मस्जिदमें उपसना का थी। इस सन्-प्रतामें उन्हीने ८ लाख रुपये खर्च करके यहाँ जुमा-मस्जिद बनवाई थी। यहाँके लोगोंने चन्दा संग्रह कर तथा गवर्मेण्टसे कुछ सहायता ले कर इस मस्जिदकी मरम्मत को जिधमें यह और भी अधिक सुन्दर देख पड़ती है। ट्टाके निकट साफ्फो पर्वत पर बहुविश्लोण और प्राचीन विद्यान कब्रिस्तान है।

ट्टो (हिं० स्त्री०) १ ट्टर देश। २ चिक, परदा, चित्त-मन। ३ आठ रोक आटिके निये खडो की जानेवाली पतनी टोवार। ४ पाखाना। ५ वातातमें ले जानेका फुलवारोका तगगा। ६ शंशुग पादिको घेने चटाई जानेके निये वांसको फटियो आटिकी बनी हुई टोवार। ट्टर (मं० पु०) ट्ट, इत्यन्वयार्थं राति रा क भेरोका शब्द, तुरहीकी आवाज।

ट्टू (हिं० पु०) १ छोटे आकारका घोडा, टांगन २ निद्रान्द्रिय।

टठिया (हिं० स्त्री०) टाटी देनी।

टडिया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका गहना जो बांहमें पहना जाता है। यह अन्तके आकारका होता है परन्तु उसमें मोटा और बिना छुंढोका होता है।

टण (हिं० पु०) टणा देनी।

टण्डुक (मं० पु०) पोतलीध।

टन (हिं० स्त्री०) बड़ शब्द जो धातुखण्ड पर आघात पहनेसे उत्पन्न होता है, टनकार, भनकार।

टन (अं० पु०) अष्टाईस मनके लगभगको एक अंगरेजी तौल।

उत्पन्ना ( हि० लि० ) १ टन टन बन्ना । २ गरमी  
 नयनेके कारण सिमं ददं होना ।  
 उत्पन्न ( हि० लो० ) घण्टा चलनेका शब्द ।  
 उत्पन्ना ( हि० लि० ) लक्ष्य बन्ना ।  
 उत्पन्न ( हि० पु० ) तन्त्र मन्त्र, होना जादू ।  
 उत्पन्ना ( हि० लि० ) त्रिसती शिवा तोत्र श्री, जो सुभा  
 न जो लक्ष्य, लडा ।  
 उत्प ( हि० पु० ) १ योनि, मन । २ यह सोनका टुकड़ा  
 जो सिरोकी योनिके बीचमें लिखका रहता है ।  
 उत्पन्न ( हि० लो० ) बराबर घण्टा चलनेका शब्द ।  
 उत्पी ( हि० लो० ) टना देने ।  
 उत्पेन ( प० लो० ) कमीन या सिरो पड़ाइ पादिने  
 जोसे जो कर गया हुआ राफा, सुरग ।  
 उत्प ( हि० लो० ) १ यह कपड़ेका परदा या चोहार  
 जो जोड़ी, बिटन उत्पन्न या इसी प्रकारकी लुनी यात्रि  
 योनि बना रहता है । कन दरा । २ यह कनरो जो लट  
 जानेवाले न पके ऊपरमें लमी रहती है । ( पु० ) ३ पानी  
 रक्तनेका एक बड़ा भरतन जिसका आकार भौंदमा होता  
 है । ४ डिबरोका हुमाबदार पीच बनानेका योजन ।  
 ( लो० ) ५ बिमो जोरके जठाल गिर जानेका शब्द ।  
 ६ बूँद बूँद उत्पन्ननेका शब्द ।  
 उत्पक ( हि० लो० ) १ उत्पन्ननेका भाव । २ बूँद बूँद  
 गिरनेका शब्द । ३ उपर उपर कर होनेवाला ददं ।  
 उत्पन्ना ( हि० लि० ) १ बिमो तरलपदाकेका शिष्टके  
 रूपमें छोड़ा छोड़ा कर गिरना 'पू', रचना । २ पके हुए  
 पत्तका आधसे आध गिरना । ३ ऊपरसे मचका पतित  
 होना टूट पड़ना । ४ पबिचताये कोरें मात्र प्रकट  
 होना । ५ मोस पाकवित होना, बल पड़ना किसतना ।  
 ६ लोका संयोगकी ओर प्रवृत्त होना । ७ बाव हवादि  
 में कारण शरीरमें छोड़ा होना चिकनना टोस मारना ।  
 ८ दहमें पावाना ला कर गिरना ।  
 उत्पका ( हि० पु० ) १ बूँद बूँद गिरनेका भाव २ उत्पेकी  
 हुई वस्तु, रधान । ३ एक कर आधसे आध गिरा हुआ  
 पत्त । ४ यह छोटा जो उपर उपर लततो हो टोस । ५  
 प्रवेगियके शूरका एक रोग शूरपका ।  
 उत्पका उत्पेकी ( हि० लो० ) १ बूँदा बूँदो । २ बिमो

वस्तुकी मात्र करनेकेबिने संतुषीका एक पर एक टटना ।  
 १ एकके बाद दूसरेका मरना । ( लि० ) ३ भूना मचका,  
 एक आध, बहुत बाड़ा ।  
 उत्पन्ना ( हि० लि० ) १ सुधाना । २ परक लताला,  
 सुधाना ।  
 उत्पकाच ( हि० पु० ) उत्पन्ननेका भाव या क्रिया ।  
 उत्पना ( हि० लि० ) १ निराहार रहना बिना आधे पीप  
 पड़ा रहना । २ धर्य बिमो दूसरेको आधमें बैठे रहना ।  
 ३ पाच्छादिन करना, ठाकना ।  
 उत्पन्ना ( हि० पु० ) बड़ाका परना एक रजिस्टर । इसमें  
 समुद्रयामके समय तूफान यर्मों पादिका रिकार रहता  
 है ।  
 उत्पना ( हि० पु० ) जहाजी पर काममें आनेवाला एक  
 बड़े मोरिका लन ।  
 उत्पत्त ( हि० लि० लि० ) १ बराबर उत्पत्त शब्दके साथ ।  
 २ कन्दो कन्दो, भट्ट भट्ट ।  
 उत्पना ( हि० लि० ) १ निराहार रहना, पड़ा रहने देना ।  
 २ निप्रयोजन बैठेप रहना ।  
 उत्पर ( हि० पु० ) छाजन, छप्पर ।  
 उत्प्या ( हि० पु० ) १ गतिवुत्र वस्तुके बीचमें भूमिका लय  
 लक्षण कर जाती हुई वस्तुका बीच बीचमें टिकान । २  
 लडाक, बूद पाँट पनांग । ३ नियत दूरी, सुकरा  
 पासना । ४ यह विस्तृत भूमि जो दो स्थानोंके बीचमें  
 पड़ती हो । ५ छोटा भूविभाग परगनेका हिस्सा । ६ पल्ल,  
 पर्व । ७ दूर दूरकी पराव बिनाई । ८ बट उड़ाना जहाँ  
 पापकी ने जानेवाले जहाज बटने जति है । ९ पाकके  
 जोरमें जमनेवाला बड़ा । १० एक प्रकारका दुज या  
 बाँटा ।  
 उत्प ( प० पु० ) १ नींदके पाकारका एक लुका भरतन  
 जो पानी रहनेके काममें पाता है २ एक वा बिनी  
 दूसरे लके स्थान पर लटकाये जानेका लय ।  
 उत्पकी ( हि० लो० ) बिमो प्रकारकी बीपना करनेका  
 एक छोटा मयाड़ा, उगाड़, गिहा ।  
 उत्पत्त ( प० लो० ) एक चोड़की गाड़ी जिसे सकारी  
 करनेवाला पपल हाथमें धरिता है ।  
 उत्पेकी ( हि० लो० ) एक भरतन ।

उनका अन्तर्निहित धर्मभाव जाग्रत हो गया। १८५५ ई०के एप्रिल मासमें वे अपने रोजनामचें भगवान्से प्रार्थना करनेकी बात लिख गये हैं। युद्धके भोषण दृश्यसे अपने मनको हटानेके लिए उन्होंने ग्रन्थरचनामें मन लगाया। इस सिकष्टिपोलके विषयमें उन्होंने जो तीन ग्रन्थ लिखे हैं, उनमें एक तरफ जैसा वास्तव जीवनका सुन्दर चित्र है, दूसरी ओर वैसा ही प्रकृतिके सौन्दर्यका मधुर वर्णन है। युद्ध करना अन्याय है, इस बातको उन्होंने बड़े जोरके साथ लिखा था, जिसके लिए सम्राट् जारने उन्हें सेण्ट पिटर्सबर्गको नोट आनेको आज्ञा दे यो। इस बात उन्होंने फिर युद्धकेतमें पदापण नहीं किया।

टलस्टय नये भावोंको ले कर देश लौटे। युद्धकी बोध-लताको वाते याद करके उनका मन बड़ा खिन्न हुआ। परन्तु सेनासे, जो मृत्युका अवहेलना कर वीरत्वके साथ अपना कर्तव्य पालन करतो है, उनका प्रेम हो गया। स्वार्थपर सम्भ्रान्त वंशीयोंके चरित्रके साथ सेनिकोंकी तुलना करके, उन्होंने सेनिकोंमें ही श्रेष्ठता पाई। सेण्ट पिटर्सबर्गमें उनकी रचनाकी ख्याति पहलीसे ही थी। अब सभीने आदरके साथ उनको अभ्यर्थना की। सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टुर्गनिनने टलस्टयको छातोसे लगा लिया और निमन्त्रण-पूर्वक उन्हें अपने घर ले गये। समाजमें सर्वत्र उनका सम्मान होने लगा। टलस्टयने युद्धके जोषनका जो वर्णन अपने ग्रन्थमें दिया था, उस पर सभी मुग्ध हो गये थे। राजधानीके प्रधान प्रधान राजकर्म-चारिण भी टलस्टयको निमन्त्रण दे दे कर जमाने लगे। इन आदर अभ्यर्थनाओंसे टलस्टयका माधु भाव जाता रहा। वे पुनः विलास और आनन्दके स्त्रोतमें बहने लगे। परन्तु इतने पर भी उन्हें भ्रान्ति न मिली। वे सत्यपथके यात्री थे—मन उनका सर्वदा मल्लके अन्वेषणमें लगा रहता था। यही कारण था जो रूसियाको राजधानीके साहित्यिकीमें, जो सत्यकी अपेक्षा चिरानुगत प्रथाको ही अधिक सम्मानकी दृष्टिमें देखते थे, उनका वस्तुतः अधिक दिनों तक स्वार्थी न रहा। विशेषतः टुर्गनिनके साथ उनका मतभेद बहुत ही बढ़ गया। परन्तु स्टेट नामक एक कविसे उनकी आजीवन मित्रता निभी थी।

इस प्रकारसे टलस्टयको पारिपार्श्विक अवस्थासे

अच्छा हो गई। उस समय रूसियाकी मिहामन पर रय अनेकसन्दर बैठे थे (१८५५ ई०)। सम्राट् (२य) अनेकसन्दरने जनसाधारणको हितके लिए टलस्टयको अधिकतर क्षमता देनेका प्रयास किया। इसमें सम्भ्रान्त-वंशीय और उच्चपदस्थ व्यक्तियोंके वाधा उपस्थित करने पर भी, रूसियाके अधिकांश लोगोंने उनको मतका समर्थन किया। इस समय बहुतसे लेखकोंने जनसाधारणके लिए लेखनो धारण की थी। परन्तु टलस्टयको द्वारा साधारणके लिए जैसा प्रयत्न हुआ, वैसा और किसीमें भी न हुआ। उन्होंने Polikoushka नामक एक ग्रन्थमें दासभावापन्न कृषकोंकी सम्पूर्ण दुर्दशाका वर्णन बड़ी खूबोंके साथ किया। उन्होंने कृषकोंको उन्नतिके लिए उन्हें शिक्षित बनानेका संकल्प किया। किन्तु वे स्वयं शिक्षा-प्रणालीके विषयमें कुछ जानते न थे; इसलिये जर्मनीमें जा कर इस विषयकी शिक्षा प्राप्त करनेका निश्चय किया।

टलस्टय १८५७ से १८६१ ई०के भीतर इटली, जर्मनी, फ्रान्स आदि नाना देशोंमें घूम आये। १८६१ ई०में वे अपने ग्राममें पहुँचे। प्रथम ही उन्होंने अपनी विपुल सम्पत्तिके अथवा जितने दासभावापन्न कृषक थे, सबको मुक्त कर दिया। उनको समाधारण वदान्यताको देख कर सभी विस्मित हुए। उनकी इस महत्त्वकायका अनुसरण कर रूसियाके सम्राट्ने वहाँके समस्त कृषकोंको स्वाधोनता दे दी। जर्मनीमें जिस प्रणालीके ग्राम्य विद्यालय हैं, टलस्टयने उसी प्रणालीको प्रवर्तन करने, चाहा। किण्डर-गाड न-प्रथाका अनुसरण कर उन्होंने उस प्रायः पलियानामें एक विद्यालय खोला। वे शिक्षाके विषयमें सम्पूर्ण स्वाधोनतावादी थे। इसलिये उनके विद्यालयमें छात्रोंके लिए कोई वेतन निर्दिष्ट नहीं हुआ, छात्र चाहे जिस समय आते और चले जाते थे तथा चाहे जिस विषयको शिक्षा लेना चाहें ले सकते थे। उनके विद्यालयमें किमोकी भो कसो प्रकारकी सजा न दी जाती थी। टलस्टय स्वयं चित्राङ्कनविद्या, रुद्दीत और वाइबेल्सका इतिहास पढ़ते थे। १८६२ ई०के अक्टोबर मासमें राजकीय परिदर्शकोंने उनके विद्यालयके विषयमें इस प्रकार अपना अभिमत प्रकट किया,—

"आठवट् टकर्टयका कार्य विधिय करहि साव उर्ध्व चोग्र है। मित्रा विभागकी चोरसे उर्ध्व सहायता पडुवाला उचित है। उनके सम्पूर्ण मतेसे हमारा दिक्क नहीं है, तथापि प्राणा की का मरती है कि कुछ विषयमें से चपन्य मत परिवर्तन करे।" शिपोक भाष्यसे यवर्मप्यने सहायता देना ती दूर रहा उनके कार्यमें बिन्न जानना शक्य कर दिया। टकर्टय मो जाना कारकीसे ज्ञान्य हो गये से, त्रिमका प्रमान तारक या नडुकीको विधिय उचति न होना। दो रूप चना कर, बादमें उर्ध्वसे विचारकय बन्द कर दिया।

इसके बाद ये समाज-तन्त्र-वादका प्रचार करने लगे। इनके मतसे जनसाधारण हो सब कुछ है—उच्योपीके योगीकी कोई बदल नहीं। उनका कहना था कि पढ़ने लिखनेसे ही मनुष्यका चरित्र गठन होता हो ऐसा नहीं है। इन्होंने साधारणके नियममें लिखा था—कि साधारण लोगमें से, उच्योपीको पर्येचा अधिकतर वलित, फापोन, व्यापरापण, दयालु और प्रयोजनीय स्थिति पाये जाते हैं। वे हमारे विचारकयमें था कर मित्रा लेख, यह ठोक नहीं। हमको ही चाहिये कि हम उनके पास जा कर मित्रा प्रबल करें। यह बात कसोकी यमिकीमें प्रचारित वाचीके समान है।

इन कामोंके करनेके कारण टकर्टयकी सिखन शक्ति घट गई। किन्तु विवाद होनेके बाद उनको भी, उर्ध्व सिखनेमें बहुत कुछ सहायता पडुवाती लगी। उन मजोयसो मजिस्त्राके प्रयत्नसे टकर्टयका हृदय पुनः नूतन मार्गसे मजोबित हुआ। इस नये उच्यमके उर्ध्वने से पर्येच्य दन्त्र सिधे (१) War and Peace, (२) Anna Karenina इन दो कर्णोंके ही टकर्टयका नाम हमीसाके शिप धमर कर दिया है। इनको जीवनी लिखनेमार्गे रोमो रोसाका कहना है कि इन दो कर्णोंका प्रभाव पाश्चिमत युगके यूरोपीय साहित्यके सर्वत्र ही कीड़ा बहुत पाया जाता है। १८६४ ई०में टकर्टयके चपने मित्र फिटको निना था—मि त्रिम काम (उपस्थास सिधना)-को इस समय कर रहा है उनमें कितने परिवर्तनकी बदलत है, उनको तुम कहना भी नहीं कर सकत। मि त्रिमके चरित्रको खोज रहा है, उनके

जीवनमें क्या क्या हो सकता है उस नियममें कितने भी बातें मोच कर उच्यममेंसे कुछ बाँट लेना बड़ा कठिन काम है।"

टकर्टय कविचार्य और सम्पत्तिको व्यवसाय शिप तरक तरकसे बदोबस्त करनी लगे। बिनाइके बाद उर्ध्वने इस नियममें एक बिडो लिपी हो त्रिममें इस नियमको चपनो यमिधता प्रकट हो गी—"मिने एक पाबिन्धार बिना है, जो मोत्र हो तुमसे कह गा। गुमाफ्रा, नायब, परिवर्तक चादि मित्र कविचार्यमें थापा पडुवाते हैं। उन सबको बिदा कर दो। खुद दिनसे दय बसे तक सोते रहो। उच्य कर देखना तुम्हारा कोई काम बिगड़ा नहीं है।"

१८६४ ई०में जब ये चपने मित्र फिटके घर से, तब दुर्गमिनेके काय इनका भीतरत विवाद हुआ था—यहाँ तक कि इनकेदुखकी मोरत था कुसी की। इनो बीचमें टकर्टयके चपनो साहित्य-शास्त्रमें मन लगया। इनके War and Peace नामक प्रथम महाकाव्य समझा जाता है। उसमें मित्र फिटके चरित्रमें दन्त्रकारने मानो चपना ही लिख लीच दिया है। इनो प्रकार Anna Karenina में Levin के चरित्रमें मो टकर्टय नजर पाते हैं।

इन दिनों टकर्टयने फिर पाष्यन करना शक्य किया। यीहूमापाकी मित्रांसे हो ये पवित्र समय देने लगे। दय मजाफका पाष्यन करने करनी ये शोध नहरके सुर्वा पर सुध हो गये और उनके प्रथीका कसो मागामें अनुवाद कर हाया। १८७१ ई०में इनके दो पुत्र और मोसोका दिवात हो गया। इस मोसके समय इन्होंने कारकैक पड़ा था और उसके कुछ साख्ता पाई थी। फिर मून यद्दीसे कारकैक पढ़नेके शिप ये चित्र भाया मोखने लगे। इन शान्तिके दिनोंमें इन्होंने दुर्गमिनेके पुनः मित्रता कर ली।

परन्तु इतना लिखने पर भी उर्ध्व चानन्द प्राप्त न हुआ। उर्ध्वने लिखा है (Confessions 1879)—'मिने उमर पत्र तक पचाय तक नहीं पडु हो है—मिने पत्र करना था—सुभ पर मो भोग प्रेम रखती से। मिने बात-बची उर्ध्व है; मिने सम्पत्ति भी पच्छी है, सुयय

है, स्वास्थ्य अच्छा है, नैतिक और दैहिक शक्ति भी काफी है। मैं कपकोंको तरह बोना और काटना जानता हूँ। दश घण्टे तक स्थिरचित्तसे काम करने पर भी मुझे क्लान्ति नहीं मालूम पड़ती। किन्तु सहसा मेरे जीवनकी गति रुक गई। मैं खाम प्रखाम ले सकता हूँ, खा सकता हूँ, सो सकता हूँ, परन्तु यह तो जीवन नहीं है। मुझे अब किसी बातकी इच्छा नहीं है। इच्छा करने की भी कुछ नहीं है। और तो क्या, मत्व जाननेकी वासना भी नहीं है। मैं गहरके पास आ चुका हूँ—मृत्युके सिवा, मेरे सामने और कुछ भी नहीं है। मैं इतना सुखी होने पर भी समझ रहा हूँ, कि जीनेसे कोई लाभ नहीं है। न मानूँ मर्कौन मुझे मृत्युकी ओर खींचे लिये जा रहा है।”

इसके बाद एक दिन टलस्टय पर भगवान्की कृपा हुई। आप निरवृत्त हैं—एक दिन (वसन्तऋतुमें) मैं अर्कला जंगलमें बैठा हुआ पत्तोंकी सरस ध्वनि सुन रहा था—अपने जीवनके अन्तिम तीन वर्षके दुःखोंकी याद कर रहा था—भगवान्की अनुसन्धान, आनन्दमें उतावलेमें पतन इत्यादि बहुतसी बातोंको उधेडबुन कर रहा था। सहसा मैंने देखा, कि जिस समय मैं भगवान् पर विश्वास करता हूँ, उसी समय मालूम होता है कि मैं जीवित हूँ। भगवान्का स्मरण करते ही हृदयमें आनन्दका स्रोत बह चला। चारों ओरके सम्पूर्ण पदार्थ मजबूतसे दीखने लगे—सब सार्थक मालूम पड़ने लगे। परन्तु जिस मुहूर्तसे अविश्वासने हृदय पर अधिकार जमा लिया, उसी समयसे जीवनकी गति रुक गई। तो बतलाओ मैं क्या ढूँढ रहा हूँ? भीतरसे न मालूम किमीने कहा—उसको ढूँढ रहे हो, जिसके बिना मनुष्य जी नहीं सकता। भगवान्की जानना और जीवित रहना, दोनों एकही बात है। क्योंकि भगवान् ही जीवन है। तबसे फिर मुझे अश्रकारमें नहीं जाना पड़ा।”

जीवनकी साधनामें आनन्द पानेके लिए इन्होंने शोक चार्चकी सम्पूर्ण आचार-पद्धतिकी अपनाना चाहा, परन्तु वास्तव आचारकी ये युक्ति वा हृदय किसीसे भी न मान सके। विभीषतः उक्त धर्म-सम्प्रदाय दूसरे धर्म-सम्प्रदायोंसे

परस्पर विवाद-विसम्वाद करता और युद्ध एवं प्राण-दण्डका अनुमोदन करता था, इसलिए ये हमसे वास्तव निकल आये। इन्होंने ईसाके उपदेशमेंसे निम्नलिखित वाक्य ग्रहण किये—

- ( १ ) क्रोध न करना।
- ( २ ) व्यभिचार न करना।
- ( ३ ) गपथ न करना।
- ( ४ ) दुःख वा कष्टकी प्राप्तिसे न रोचना।
- ( ५ ) मनुष्यसे शत्रुता न करना।

और एक उपदेशमें उन्होंने उक्त वाक्योंका मार पाया यथा ‘भगवान् और अपने पड़ोसियों पर उतना ही प्रेम करो, जितना तुम अपने पर करते हो।’

धर्म-जीवनमें उत्पत्ति प्राप्त करनेके लिए स्वावलम्बी और सरल-स्वभावी होनेकी आवश्यकता समझ टलस्टय कपकोंको जीवनयात्रा-प्रणालीका अनुकरण करने लगे। बहुत सबरे विचित्रिसे उठ कर ये खेतोंमें जाते और शस्यदि काटते और रोपते थे। अपने पहननेका लूता स्वयं बना सकें, इसके लिए उन्होंने चमारका काम भी मोखा। इस तरह सुबहसे शाम तक ये कठोर परिश्रम करते थे। मरतता तो इनके जीवनका व्रत ही गया। ये आहार-व्यवहारमें संयत हो गये—मांसाहार छोड़ कर निरामिश्रभोजी बन गये। यहाँ तक कि माटक-यैखी-भुक्त होनेके कारण उन्होंने तम्बाकू पीना भी छोड़ दिया।

परन्तु इतना करने पर भी वे अपनेकी कपकोंके समान न बना सके। टलस्टय इस बातकी समझते थे, कि किमान दिन भर काम करनेके बाद अपनी छोटी-सी भैंसपडोमें जा कर बहुत दुःख भोगते हैं, और वे शामको प्रासादमें जा कर आरामसे सोते हैं। टलस्टयने अब वस्तु-वाञ्छव वा लौक-समाजमें जाना आना प्रायः छोड़ दिया। “अर्थही अनर्थोंका मूल है” ऐसा समझ कर हमारे राम-कृष्ण परमहंसको तरह उन्होंने उसका स्पर्श करना छोड़ दिया।

१८८० ई०में लोकगणनाके समय गवर्मेण्ट टलस्टयकी सहायता पहुँचानेके लिए आमन्त्रण दिया। टलस्टयने देखा, इस मोके पर वे अनायास ही जनसाधारणकी अवस्थाका परिचान कर सकते हैं,

इसलिए मैं राखी हो गई। इससे बाद कसियाजे साधारण खोलेकी जिप मम मेदी दरिद्रताको लक्ष्मीने अपनी पालिशि देखा उससे उनका इदय निमग्नन सिधल गया। "इनि क्या करना चाहिये" यीयक सुनिताका मैं लक्ष्मीने लोकापनाके समयकी सम्पूर्ण अनिग्रता प्रकट कर दी। यन्तमें एक दिन लक्ष्मीने अपनी खोको अपनी कमरमें तुका कर कहा—"बनसम्पत्तिके अधिकारको मैं पाप समझना ह। इन्सिय मैंने अपनी अज्ञिगत अधिकारको छोड़ देनाक नियम किया है।" १८८८ ई०में लक्ष्मीने अपनी सम्पत्ति खो पोर सुत्रकी दे दी। इससे लक्ष्मीने अपनी सम्पत्तिको लक्ष्मीकी चिन्तासे छोटे सिध गर्द।

इसके बाद लक्ष्मीने अपनी सम्पत्ति गति विज्ञानीको कीवनीकित करमें लगा दो। विमान लोग शराब पीना छोड़ दे और राइ हाथ लक्ष्मीने अधिकार प्राप्त हो इन विपत्तिके पनेक प्रयत्न मी किये।

१८८९-९० ई०में जो भीषण दुर्मिच बुधा था उसमें टलेमियने अर्थ तथा लक्ष्मीने परिवारके लोगोंमें लतातार कार्य किया था।

कसियाजे प्रतिष्ठित ईसाई चार्च पर आक्रमण कर निके कारण पर संभ्रदायने लक्ष्मीने प्रकट कर दिया था (१८०१ ई०की २२ फरवरीके आदिमागुषार) १८९० ई०की २० नवम्बरको जिमोनिवा रोगसे इनकी मृत्यु हो गई।

अतुंम टलेमियने जो सबसे पचन Nonresistance या अहिंस परमशुवीम नीतिको प्रचार किया था। मज्जाभा सोइलदास करमचन्द मान्योके साथ इनका पत्रपरवहार होता था। मज्जाभा मान्योकी ये लक्ष्मीकी इच्छिसे दिवने धि।  
सोइलदास करमचन्द पन्थी थेना।

टलेमी (असमी)—पोकके एक प्रसिध ज्योतिषिद सजितप्र पौर भौगोलिक पण्डित। इनका पसदी नाम था सडियम टलेमिबास। ये १९८ ई०में मिमरमें प्रादुर्भूत हुए थे पौर लक्ष्मीने १९१ ई०में ये कीर्तित धि। इससे निवा जनको कीर्तनीके विषयमें विविध कुक मानस नहीं बुधा है, किन्तु लक्ष्मीने द्वारा रचित ज्योतिष पौर मृगोक्षपेठनी कनेक सुप्रसिध अथ मी सौत्रक है जो बहुकाल पर्यन्त समय मुरोप पौर अरब आदि देशोंमें प्रकान्त और धर्मोत्प ह कामको मई है। लक्ष्मीने ब्रह्माण्डके विषयमें जो

मत प्रचार किया था वह अभी तक 'टलेमीका मत' इन नामसे प्रसिध है। इनके मतसे, पृथिवी ब्रह्माण्डके मध्य स्थानमें पवकित है तथा सूर्य, चन्द्र, यह पौर नक्षत्र समन्वित ज्योतिषसमष्टिके २४ अर्द्धमें एक बार पृथिवीके चारों तरफ आवर्तन करता है। टलेमीने पृथ्वीको गतिसे विषयमें एक नये मतका तथा चन्द्रका सुझावरन प्रकार का (Evolution) आविष्कार किया था। इनके मतमें विषेपक्ष कुक नहीं है, लक्ष्मीने निके ज्योतिषकीकी प्रसक्त गतिविधिको जो बैज्ञानिक प्रकाशीसे प्रमाणित करनेकी चेष्टा की मई है। इसमें सबसे भारी बन्धु मिरोका जो पृथ्वी परबलान बतलाया गया है। मिरीके अणु लक्ष्मीने कुक इलाका पदाथे जन है, उससे बाद बाहुरागिभे मर पौर बाहुरागिभे बाद त्रिजोरगि है। तेज का अन्तिके बाद इकर नामक सूत्र पदाथे पनला कानमें ब्याप्त है। इस इयत्के भीतर का बाहर बहुम प्यक अणु मर-मचउल पृथिवीके चारों तरफ बहुल दूर पर लक्ष्मीने परि परबलान करते हैं। इन स्थितिं एक एक ज्योतिषक पवकित है जो सूरके आवर्तनके नाम पृथिवीके चारों तरफ आवर्तित होते हैं। इन स्थितिंके भीतर चन्द्रमण्डलके पवकान-प्रारमें पृथिवी मवापेक्षा निचटवर्ती है लक्ष्मीने बुध, शुक सूर्य मङ्गल, इन्स्यति गनि पौर लक्ष्मीका प्रारमचक्रन यकाक्रमसे दूरवर्ती हैं। टलेमीके परवर्ती ज्योतिषिदोंने ज्ञानिपात भतिको व्याख्यासे लिए पूर्णमान नबम मचक्रनकी तथा दिवारामिनी ज्ञान इधि परमभ्रनेके लिए दृश्य मण्डलको अग्रना की है। यह दृश्य मण्डल जो २४ अर्द्धमें पूर्णसे अधिककी पौर एक बार आवर्तित होता है तथा अपनी गतिसे हाथ अन्त्याम मण्डलीमें गति उत्पन्न करता है। इसको प्रारमम मोबिलि (Primum mobile) पर्यात गतिका आदिकारक कहते हैं। किन्तु टलेमी मताबलानको ज्योतिषिदोंने इन मण्डलोंकी अन्त्याम करने मी प्रसक्त बतलाये जो सूत्र पौर विग्रह ब्याख्या नहीं कर मते हैं। ये सूत्र गतिको ज्ञान इधि परमभ्रनेके लिए पृथिवीको श्याचिन मण्डलके अन्त्ये पायर्में पवकित बतलाते धि। सूत्र पंच ब्राह्मण निचटवर्ती होने पर पृथ्वी गति इधि पौर दूरवर्ती होने पर गति ज्ञान होता

है। ग्रहों की वक्र और विपरोत गतिको समझानेके लिए कहा जाता था कि, ये अपने अपने स्तरमें एक स्थिर बिन्दुके चारों तरफ वृत्तपथमें परिभ्रमण करते हैं तथा उसी अवस्थामें अपने आत्यय-स्तरमण्डलकी गतिके द्वारा पृथिवीके चारो तरफ भ्रमित होते हैं। स्तरस्य वृत्तके भीतरके अर्द्धांशमें अवस्थित होने पर ग्रहकी गति एक तरफ और बाह्यके अर्द्धांशमें अवस्थित होने पर दूसरी तरफ हुआ करती है। इस तरह नाना प्रकारके जटिल और दुर्बोध नियमोंकी कल्पना द्वारा ज्योतिष्कविषयक तत्त्वोंकी व्याख्या होने लगी। अन्तमें कोपानिकस ने उक्त भ्रान्त सिद्धान्तोंका ठच्छेद कर जगत्सम्बन्धी विग्रह मतका आविष्कार किया। अब तक जो टलेमीका मत अभ्रान्त समझा जाता रहा, वह अब भ्रान्त प्रमाणित हो गया।

टलेमीके फलित ज्योतिषसम्बन्धी ग्रन्थ भी सर्वत्र आदरके साथ गृह्यते हुए थी।

ज्योतिषकी तरह, टलेमीके द्वारा प्रणीत भूगोल शास्त्र भी इसका १५वीं शताब्दी तक सर्वोत्कृष्ट समझे जाते थे। इन्होंने पूर्व-पूर्व भौगोलिकोंके मतका उत्कर्ष साधन और परिवर्तन कर तात्कालिक पृथिवीखण्डका विवरण २२ मानचित्रों सहित लिखा था। टलेमीने पश्चिमके किनारोद्दीपमें लगा पूर्वमें भारतवर्षके पूर्वस्थ श्याम, मलय और चीन तक तथा उत्तरमें नर्वेसे लगा कर दक्षिणके निरक्षरेखा तक आविष्कार किया था। इन्होंने अपने भूगोल शास्त्रको ८ अध्यायोंमें विभक्त करके क्रमशः पश्चिमसे पूर्व तक समस्त जनपदोंका वर्णन किया है। इसके सिवा प्रत्येक स्थानका ऊँचांतर और देशान्तर भी लिखा है। टलेमी केनारोद्दीपसे देशान्तरकी गणना करते हैं और निरक्षरेखाकी ओर भी १०° अंश दक्षिणमें स्थापित करते हैं। इनके अज्ञात और देशांश कहीं कहीं गलत हैं। ये अपने भूगोलको १८०° अर्थात् गोलाके वतते हैं, वास्तवमें वह १२०°से ज्यादा नहीं है।

टलेमी फिलाडेल्फास्—टलेमी (सिटार)-के कनिष्ठ पुत्र, टलेमी इनकी उपाधि थी और फिलाडेल्फास् अर्थात् भ्रातृप्रिय इनका नाम था। इन्होंने ईस्वीसे २८५ वर्ष पहले पिलसिंहासन पर बैठते ही अपने दो सही दरोंको हत्या की थी; इसीलिए लोगोंने इनकी फिला

डेल्फास् अर्थात् भ्रातृप्रिय यह विद्वुपात्मक उपाधि दी थी। पिताके सामने ही राजकार्यको पर्यालोचना करते थे। किसीके मतसे, ईस्वीसे २८७ वर्ष पहले ये योनराज्य पद पर अभिषिक्त हुए थे। वे वाणिज्य और विद्याके वास्तविक उपाहृदाता थे। इन्होंने भी दिसीनि-सियासकी भारतपरिदर्शनार्थ भेजा था। भूमध्यस्थ और लोहित-सागरमें टलेमीकी सैकड़ों नावें बहती थीं। हरमोसवन्दर पर विपत्ति पडनेके कारण वेरेनिसमें वन्दर स्थापित करनेके लिए इन्होंने एक फौज भेजी थी। वहाँ भारतीय वाणिज्य-पोत निरापदमें रहते थे। इस नवीन मार्गमें क्रमशः वाणिज्य वृद्धि होने लगी। अल्कसन्ड्रिया नगरो भी उस समय समधिक औसम्पन्न और प्रसिद्ध हो गई। इन्होंने अपने प्रधान ग्रन्थाधारक दिमित्रियाम्के अनुरोधसे अरीस्तिथा नामक एक यहूदी पण्डितको जेरुसालीम भेजा और वहाँके प्रधान याजकको एक वाइवेलकी पोथी और १२ हिभापियोंके भेजनेके लिए अनुरोध किया। इन्हींके समयमें हिब्रु वाइवेल यीकभाषामें अनुवादित हुआ था।

टलेमी फिलाडेल्फास्ने वर्तमान सुयेज-नहरके निकटवर्ती आरसेनासे लगा कर नोलनदके पेलुसियाक शाखा तक एक नहर खुदवाई थी। इसीसे २४६ वर्ष पहले इनकी मृत्यु हुई थी।

टलेमी यूयारगेटिस—टलेमी फिलाडेल्फास्के पुत्र और उत्तराधिकारी। इन्होंने सिरिया और साइलेशियाकी बहुतसी जमीन अपने राज्यमें मिला ली थी। इनके दिग्विजयके समय शत्रुओंने मौका पा कर इजिप्ट पर चढ़ाई कर दी थी, किन्तु इनके आ जानेसे यह विद्रोह-हानि शीघ्र ही निर्वापित हो गई थी। अन्तियोककी पत्नी इनकी बहन थीं। बहनकी मृत्यु होने पर इन्होंने उसका बदला सुकानेके लिये अन्तियोकके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की थी। इन्होंने अपने सुशानके प्रतापसे 'यूयारगेटिस' अर्थात् 'परोपकारो'की उपाधि पाई थी। ईस्वीसे २२१ वर्ष पहले इनके पुत्रने इनकी जहर दे कर मार डाला था। इनके पुत्रका नाम था टलेमी फिलोपिलम अर्थात् पितृहन्ता, इस दुर्घटने पितामाता तथा अन्यान्य आक्षीयवर्गोंका विषप्रयोगसे विनाश कर पितृ-

सिंहामन अधिकार किया था। यहूदी जाति उनको प्रतिष्ठा प्रिय हुई थी; ईसाई २०३ वर्ष पहले इनकी मजू हुई।

सि० १नेल्ले मन्त्रे उपरीक टलेमी राजापीके राजत्व काकर्म मिसरवासियेनि पाठकोपुत्र (पटना) तक प्रति मान किया था।

टलेमी शोधर—मिसरमेंके अनुयायनयत्नमें इनका तुरमय कामसे बर्चन है। इनकी उपाधि शोधर अर्थात् गुरुरसक थी। साधारण लोग इनको सिंगासका पुत्र कहते थे, किन्तु माकिदनीय लोग इनको क्रिस्टिय शौर मिस्रका पुत्र समझते थे। बादमें इनको माताके अन्ध से देखा हुआ था, तब इनके पिताने उनको सींगसको समर्पण कर दिया था।

टलेमी पहले महाशौर अलेक्जन्दरके एक सेनापति थे, इस कार्यमें इन्होंने बड़े ज्ञाति काम की जो। अलेक्जन्दरको लज्जुके बाद इजिप्ट राज्य टलेमीके इष्टमत हुआ, उस समय इजिप्ट पीकसाभ्यान्धके अधीन रहने पर भी टलेमीने इसे कायौन कर लिया। अलेक्जन्दरने क्रिपोसेनेसको इजिप्टका शासपति नियुक्त किया था। टलेमीने उसका विनाश कर राज्य अधिकार कर लिया। इनके पास बहुत धन था, उस धर्यके बसके टलेमीने क्रमशः लिबिया और अरबका कुछ भाग अधिकार कर लिया।

ईसाई ३२१ वर्ष पहले पारदिकामने इजिप्ट पर शासनक किया था, किन्तु वे शासकार्य न हो सके थे। उनको लज्जुके बाद टलेमी सिरो-सिरिया, फिनिकोया, जुदिदा और साइप्रसकी अधिकार कर बैठे। अलेक्जन्दरानगरमें इनकी राजधानी स्थापित हुई। यहाँ इन्होंने दीनमाहिषीके शमीसेके लिए अन्दर पर एक बड़ा पालीकगृह बनवाया। यूरोपके समस्त शासक्यपदाय यहाँ हो कर एशियाके भागाकार्यमें जाने लगे।

इसके बाद टलेमीने नीलनदीके एक बड़े नहर खुदवाई, जो भूमध्यसागरसे मिली है। इस नहर को कन्नाई ३५ मील, विस्तार १०० फुट और गहराई १० फुट है।

टलेमीके समयमें अलेक्जन्दरियाकी सृष्ट-अधिकारी

स्थाति दिग् दिगन्तमें स्थापित थी। इनके समयमें पार्थ-सारथीके यहूदी लोग लज्जु की नहर अलेक्जन्दरिया नगरमें जा बसे थे। टलेमी कीक शौर मिसरदेशगामि योंको एक धर्मशुद्धमें वाचनेके लिये यज्ञवान् हुए थे। इन्होंने अनुभवसे यहूदियोंमें अलेक्जन्दरियानगरमें अथ सिध शौर कुपिटर देवका मन्दिर बना सके थे।

ईसाई २२३ वर्ष पहले टलेमीने इजिप्टक स्वाग किया। ये जब तक जीवित रहे, तब तब राज्यको उन्नतिके लिये इन्होंने बराबर प्रयत्न किये। ये विद्योभाषाके शौर विज्ञानप्रिय कह कर प्रसिद्ध थे। एजिप्टिशरको कल्याय युक्तिमेंके साथ इनका विवाह हुआ था। उनके गर्भसे अनेक पुत्र होने पर मा ये अपने अगिष्ठ पुत्र टलेमीके खिलाड़ेकपासको राज्य दे गये थे।

टलेमी (चि० पु०) बौधका एक मंद।

टलेमी (स० पु०) आश्वरवका मन्त्रान्तगत अतोय नर्ग,

ट ठ ड ड क—इन पाँच बर्षका समूह।

टलाई (चि० जो०) व्यर्थ चूमना।

टस (चि० खी०) १ टबकनीका मन्द। २ कपड़े

पादिके फटनेका मन्द, मसकने की आवाज।

टसक (चि० जो०) उच्च उच्च कर होनेका दर्द टोम,

ससक।

टसकना (चि० लि०) १ किसी बड़ी वस्तुका स्थान परि

वर्तन होना, इटना, खिसकना। २ उच्च उच्च कर

पौड़ा होना, डीम मारना। ३ प्रभावित होना।

टसकाना (चि० लि०) किसी भारो चीजको जगहसे

इटना, खिसकाना।

टसर (चि० पु०) उच्च देना।

टसकन—पञ्चावभासे एक हिन्दी कवि। इन्होंने

पाण्डवीको यज्ञकथा संकलित हिन्दीमें अनुवाद की है।

टसना (चि० पु०) पतनी शाका, पतकी छाक।

टसनी (चि० जो०) पतनी कासी।

टसरवडा (चि० पु०) उच्च या तकसेके उतारा हुआ अथ

अपेक्षितका आठका टुकड़ा।

टसल (चि० खी०) १ उच्च, विवा, विदमत। २ नीलरी,

आकरो कामधर्मा।

टसलना (चि० लि०) १ मंद गतिसे समक करना,



धीरे धीरे चलना । २ हवा खाना मार करना । ३ पर लोका गमन करना, मर जाना ।

टहलनी ( हिं० स्त्री० ) १ टापी, मजदूरनी, लौंडी । २ बत्ती उसकानेके लिये चिरागमें पड़ी चुई लकड़ी ।

टहलाना ( हिं० क्रि० ) १ धीरे धीरे चलाना, घुमाना, फिराना । २ हवा खिलाना, मार कराना । ३ हटा देना, दूर करना ।

टहलुआ ( हिं० पु० ) सेवक, टहल करनेवाला, चाकर ।

टहलुई ( हिं० स्त्री० ) १ टापी, लौंडी । २ चिरागकी बत्ती उसकानेकी लकड़ी ।

टहलुवा ( हिं० पु० ) टहलुआ देना ।

टहनू ( हिं० पु० ) नौकार, चाकर, सेवक ।

टहका ( हिं० पु० ) १ पड़नी । २ चमत्कार-पूर्ण उक्ति, सुटकुला ।

टहोका ( हिं० पु० ) भटकना, धका ।

टा ( सं० स्त्री० ) टलति प्रलये भूकम्पादे वा टल-डा-टाप् । पृथिवी ।

टाइटिल पेज ( अं० पु० ) पुस्तकके ऊपरका पृष्ठ । इस पर पुस्तक और ग्रन्थकारका नाम कुछ बड़े अक्षरोंमें प्रकित रहता है ।

टाइप ( अं० पु० ) कटिका अक्षर जो सीसिका बना होता है ।

टाइप कास्टिंग मशीन ( अं० स्त्री० ) यह कल जिससे कटिके अक्षर टाले जाते हैं ।

टाइप-मोल्ड ( अं० पु० ) यह साँचा जिसमें कटिके अक्षर टाले जाते हैं ।

टाइप-गैटर ( अं० पु० ) एक कल । इसमें कागज रख कर टाइपकेसे अक्षर छाप सकते हैं ।

टाइफायड ज्वर ( अं० पु० ) एक प्रकारका विषेला और प्राणनाशक ज्वर । ज्वर शब्दमें आन्त्रिक ज्वर देखो ।

टाइफोन ( अं० पु० ) चीनके समुद्रमें तथा उसके आसपास बरसातके चार महीनोंमें आनेवाला तूफान ।

टाइम ( अं० पु० ) काल, समय, वक्त ।

टाइम-टेबुल ( अं० पु० ) १ भिन्न भिन्न कार्योंके लिये निश्चित समय लिखे रहनेका विवरणपत्र । २ रेल संबंधी कागज । इसमें रेल-गाड़ीके पहुँचने और छूटनेका समय लिखा रहता है ।

टाइमपोम ( अं० स्त्री० ) चढोका एक भेद । यह बजती नहीं कं बल सूर्योके द्वारा समय बनाती है ।

टाइ ( अं० स्त्री० ) अंगरेजी पहनावेमें कानरकी ऊपर गाठ दे कर बांधी जानेकी कपड़ेकी पट्टी ।

टाउन ( अं० पु० ) शहर, कस्बा ।

टाउनम्यूटी ( अं० स्त्री० ) बुंगी, पौट्टी ।

टाउनहॉल ( अं० पु० ) किसी नगरका सार्वजनिक भवन । इसमें नगरकी मफाई रोगनी आर्टिक प्रबंध-कर्मियोंकी मभाण होती है ।

टांक ( हिं० स्त्री० ) १ चार आंगेकी एक तोल । इसका प्रचार जोखरिगेमें है । २ निष्वायट । ३ कलमकी नोक, मेखनोका उद्ग । ४ पर्चाम मेरुं बराबरकी एक प्राचीन तोल । इसमें धनुषकी शक्तिकी योग्यता को

जाती थी । प्राचीन समयमें इस तोलका उद्गुग धनुष की डोरीमें बांध कर लटका दिया जाता था । जितने घटखर बांधनेमें धनुषकी डोरी अपने पूरे विचाघ पर पहुँच जाती थी, उस धनुषकी उतनी ही टांकका मम-भरत था । ५ अम्बाज, जांच, आंक । ६ हिम्बेडारिका हिस्सा, बखरा ।

टांकना ( हिं० क्रि० ) १ कील काटि डीक कर एक वस्तुकी दूसरी वस्तुसे मिलाना । २ मिनार्डके दाग जोड़ना । ३ मिनार्डके द्वारा एक वस्तुकी छिरे वस्तुमें अँटकाना । ४ कूटना, रटना । ५ रेतो तैज करना । ६ स्मरण रखनेके लिये कागज पर लिख लेना, दर्ज करना, चढ़ाना । ७ खाना, उडा जाना, चट कर जाना । ८ अनुचित रूपसे रुपया पैसा आदि ले लेना, मार लेना ।

टांकली ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी डिरनी जिससे अहाजका पाल लपेटा जाता है ।

टांका ( हिं० पु० ) १ जोड़ मिलानेवाली कील । २ सिनार्डका अलग अलग भाग, डोभ । ३ सिलार्ड, सीवन । ४ चिप्पी, चकती । ५ वह सिलार्ड जो शरीर

परके घाव या कटे हुए स्थान पर की जाती है । ६ घातुओंकी जोड़नेका मसाला । ७ लोहेकी कील, पत्थर काटनेकी चौड़ी छेनी । ८ हीज, चहवधा । ९ पानी रखनेका बड़ा बरतन, कौडाल ।

टांकाटुक ( हिं० वि० ) जो तीलमें डीक निकली, बजनमें पूरा पूरा ।

टोकी (हि० श्री०) १ पत्थर मढ़नेका यन्त्र । २ खाट कर बनाया हुआ ढिंटा । ३ एक प्रकारका ढोङ्गा । ४ गरमो या मूत्र निकाला जाने । ५ शरीरका दाँत, दाँता । ६ छोटा शीला चट्टनका । ७ पानी रखनेका बड़ा बरतन, बरतना ।

टोकीबन्द (हि० बि०) जिसमें कमी हुए पत्थर दोनों ओर मढ़नेवाली चीन्हेके द्वारा एक दूसरेसे खूब जुड़े हों । टॉम (हि० श्री०) १ लकड़ीकी लकड़ी से कर पड़ने तकका पत्र या मूटमें ले कर पड़ने तकका भाग । २ कुम्होका एक टेंक । ३ चतुर्थांश, चौथाई भाग ।

टॉगन (हि० पु०) कम ऊँचाईका ढोङ्गा, पहाड़ी टट्टू । टॉयना (हि० बि०) १ जिसमें बलुकी सूखी मसुमि इस प्रकार बाँधना कि उसका मय भाग भीचेड़ी ओर लटकता रहे, लटकाना । २ फाँसी बड़ाना फाँसी लटकाना ।

टॉगा (हि० पु०) १ बड़ी कुम्हड़ी । २ घोड़े या बैलसे खींचे जानेवाले एक प्रकारकी गाड़ी । इसमें सवारों प्रायः पीछेकी ओर ही मुँह करके बैठती है । इस गाड़ीके दूर उधर लटकनेका मय भी बहुत कम रहता है, क्योंकि इसमें भीचेका भाग जमीनसे मटा रहता है । यह प्रायः पहाड़ी वास्तुके लिये बहुत कामदायक होती है ।

टॉगानोचन (हि० श्री०) नीचे लुटाना, नीचाताना ।

टॉगुन (हि० श्री०) मानस मादीमें तैयार होनेवाला एक प्रकारका पदार्थ । इसमें दाने बहुत बारीक और पीसे रहने होते हैं । यह मरीच मनुष्यीके खानेके काममें आता है ।

टॉच (हि० श्री०) १ टूटनेका काम जिमाङ्गनेवाली बात । २ टॉका, सिफारि, होम । यह टुकड़ा को किसी फटे हुए कपड़े या और किसी बस्तुका छिद बन्द करनेके लिये टाँका जाय सकती ।

टॉचना (हि० बि०) १ टॉचना, सीना । २ काटना, काटना, कोनना ।

टॉची (हि० श्री०) १ कपड़ेको वह कच्ची पतली सेडी जिसमें व्यापारों रुपये भर कर कमरमें बाँध लेते हैं, दिवानो । २ धाँसी ।

टॉय (हि० बि०) १ बजोर लड़ा । २ डफ़, छटपुट, मजबूत ।

टॉड (हि० श्री०) १ पीत्र पसबान रखनेका पाटन, पर बनी । २ मयान । यह दो या चार चपोंसे योगसे बनाया जाता है । खपरमें खाट या तम्बो बिहारें रहते हैं जिस पर बैठ कर गड़का खेतकी रम्बानी करते हैं । ३ एक प्रकारका मड़ना जिसे लियार् बाहु पर पहनते हैं, टॉडिया । (पु०) ४ समूह, डेर, राशि । ५ समूह, पत्रि । ६ धरिबी पत्रि । (श्री०) ७ ब लोको मही । ८ शुभो पर लड्डिको चोट, टोना ।

टॉङ्गा (हि० पु०) १ बनजारिके बिक्री खादिका मुचक, बरने । २ व्यापारियोंके मानकी बचान । ३ व्यापारिकोंका मुगड़ । ४ परिचार कुटुम्ब । ५ गरीब खादिकी पसल की मुकदाल पट्टुखानियाला एक प्रकारका ढोङ्गा ।

टॉयटीय (हि० श्री०) १ पमिय शब्द कहुरे कोलो, टें टें । २ प्रताप बचवाद ।

टॉस (हि० श्री०) हाथ या पैरके बहुत देर तक चिक्कड़े रहनेके कारण लोकीका तनाव । इसमें यद्यपि बहुत पीड़ा होती है लेकिन वह बहुत कम काल तक ठहरतो है ।

टाथी—बहुमते कोबोम परगना जिनके पन्नामं बरिच खाट उपनिभागका एक शहर । यह पन्ना २० ३३ ७० पौर देखा ० ८८ ३३ पू०के मध्य यमुनाके किनारे अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः १०८८ है यहाँ सरकारी हाई-स्कूल, बालिका-विद्यालय और दातव्य चिकित्सा नय है । यह नगर स्वास्थ्यकर है । यहाँ मर्तिरियाका प्रकीप नहीं देखा जाता । यहाँके राजा बसन्तदायक व शत्रु हैं । खरियेण शाहीनाथ राय बाराणसीके एक कम्बो शीको मङ्क प्रभुत कर गये हैं । इस नगरमें चन्दे पण्डे मङ्क प्रभुत होते हैं । यह बामन व्यवसायका किन्द्रस्थान है । यहाँ १८८६ ई०में मुनिमण्डितो स्थापित हुई है ।

टाकू (हि० पु०) टकुपा तबना, टिकुरी ।

टाह (स० श्री०) टाहोन तहसेन निवृत्त । मण्डनियेय एक प्रकारकी मराठ । यह मराठ जोल केधके रहने तैयार होते हैं । इसको बारह भेद हैं—पानक, द्रास माचक, बखर, तान पिचक, माथीक, टाह मादीक शरिय और मारिचिनज के प्रकारके मय हैं । बारहके प्रकारके मयका नाम टाह है । पहले म्यारह प्रकारके

मद्य पोनेसे प्रायश्चित्त किया जा सकता है, इसका प्रायश्चित्त तीन दिन उपवास मात्र है।

“श्राद्धेधुतंरुषर्ज्जरपनसदेव नो रसः।

मद्योजातन्तु पीरता तं व्रपहाच्युधेत् द्विजोत्तमः।”

(पुराण) मद्य देगो।

टाङ्कमाधीक (सं० ली०) मद्यविशेष, एक प्रकारको शराव। यह मद्य शतावारो टङ्कमूलका रस और पद्ममधु द्वारा एकत्र कर बनाया जाता है।

“शतादरी टंकमूलं लक्ष्मणपद्ममेव च।

मधुना सह सन्धानात् टंकमाधीकमीरितं।” (तन्त्र)

टाङ्कर (सं० पु०) टङ्कस्यदं टाङ्कं गति रा-क। स्त्रीच्छा-चारो, रण्डीबाज।

टाङ्गाडल—१ पूर्वीय बङ्गालके मेमनसिंह जिलेका एक उप-विभाग। यह अक्षा० २३° ५७' से २४° ४८' उ० और देशा० ८८° ४०' से ८०° १४' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण १०६१ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ८७०२३८ है। इसके तीन और पुलिनमय भूभाग और गेप पूर्व की और मधुपुर नामका जङ्गल है। इसमें टाङ्गाडल शहर तथा २०३० ग्राम लगते हैं। इसमें समीप सुवर्ण-खाली नामक स्थानमें एक बड़ा बाजार है।

२ पूर्वीय बङ्गालके मेमनसिंह जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २४° १५' उ० और देशा० ८८° ५७' पू०के मध्य यमुनाकी एक शाखा लोहजङ्गतोर पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १६६६६ है। यहां दो उच्चशैलीके विद्यालय हैं, जो स्थानीय लोगोंकी देख भालमें हैं। यह वाणिज्यका केन्द्रस्थल है। १८८७ ई०में स्यूनिस्पानिटो स्थापित हुई।

टाट (हिं० पु०) १ विछाने, परदा डालने आदिके कामोंमें आनिवाला एक प्रकारका मोटा कपड़ा। यह मन या पटुएकी रस्सियोंका बुना होता है। २ विरादरो, कुल। ३ वह विछावन जिस पर साङ्गकार बैठते हैं, महाजनकी गद्दी। (वि०) ४ कसा हुआ, जकाड़ा हुआ।

टाटवाकोजूता (हिं० पु०) कामदार बटिया नूता।

टाटर (हिं० पु०) १ टटर, टटो। २ खोपडो, कपान।

टाटरिक एसिड (अं० पु०) इसलोका लुक, इसलोका सत।

टाटा—मिन्सुपेट्रेगका एक नगर। यह १४८५ ई०में सोमोयवंशके चौदहवें राजा जाम मन्दमने स्थापित हुआ है। यह नगर मिन्सु नदीके किनारे समुद्रसे १३० कौम दूर पर्वतके ऊपर अवस्थित है। वर्षाकालमें इसके निवाटवर्ती बहुतमे प्रेट्रेग जलमग्न हो जाते हैं। यह होपकी नार्थ मानूम पड़ता है। यहांकी मड़के अग्रगन्त और अपरिष्कार हैं। किन्तु यहांके मकान अच्छे अच्छे टोख पड़ते हैं। इसके चारों ओरकी जमीन उर्वरा है।

टटा देगो।

टाटा (जमगेदजो)—भारतवर्षके गौरव-स्वरूप एक प्रधान वणिक। ताता देगो।

टॉड (जिम्स कर्नल) “राजस्थान” नामक प्रसिद्ध इतिहास-ग्रन्थके लेखक और राजनीतिविद। १७८२ ई०, तारीख २० मार्चकी इसलिडटन नामक स्थानमें इनका जन्म हुआ था। १७८८ ई०में इनके चाचा मि० पार्टिक हिटचेने इन्हें इट इण्डियन कम्पनीके अधीन कैडेटको नौकरी लगा दी। १७८८ ई०के मार्च महौनेमें, बद्रालमें आ कर ये दूसरो यूरोपीय मेनामें शामिल हो गये। १८०१ ई०में ये नौकरी ले कर दिल्ली गये और वहाँ उन्हें एक पुरानी नहरकी जरोब करनेका भार प्राप्त हुआ। १८०५ ई०में ये सिन्धिया-राज्यमें ब्रिटिशदूतके सहकारो नियुक्त हुए। सन १८१२से १७ ई० तक ये सर्वदा प्रतत्स्व-विषयक संवादादि संग्रह करते रहे। राजपूत जातिके साथ वनिष्टतामें मिल कर उनका जातीय इतिहास बनाना इनके जीवनका व्रत था। १८१५ ई०में कर्नल टॉडने एक मानचित्र बना कर गवर्नर जनरलको दिया, जिसमें सबसे पहले उन्होंने ‘मध्यभारत’ शब्दका व्यवहार किया था और वहाँके कुछ करदराज्योंको ले कर उक्त भौगोलिक अंशका दिग्दर्शन कराया था। इनके उपदेशानुसार मध्यभारतके करदराज्योंके साथ राजनैतिक सम्बन्ध स्थिर करनेके लिये एक एजेंसी स्थापित की गई। टॉड साहबकी राजपूतानाके बहुतसे स्थानोंसे परिचय था। १८१७ ई०में जब लाड’ हेटिंस पिण्डारियोंके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी, उस समय इन्होंने उनको बहुत कुछ सहायता पहुंचाई थी। इन्होंने पिण्डारो-युद्धमें अपनी इच्छामें ब्रिटिश-शक्तिको सन्वाद देनेका भार ग्रहण किया था।

गवर्नर जनरलने इन्हें इस चापको प्रयत्न को है।

१८१८ ई०में राजपूतानेके साम्राज्य त्रिखण्ड गण्डके पत्तौन मिहनापूर्वक रहनेको राजे को गये पौर माघ को दौड़ साहब पश्चिम राजपूतानेके राजनीतिक कृत निपुण को गये। वे राजपूतजातिके पश्चिम विभागभाजन को गये थे। कार्यभार पञ्च बरनेके बाद एक वर्षके भीतर इन्होंने यहाँ स्वयमायसीकापो उन्नति को गई थी पौर लरीव तोल को उबाह पाँच दिनके कम गये थे।

१८२५ ई०में त्रिम समय विषय जिसमें राजपूताना परि वर्गन करके पाये थे उस समय उन्को ने सुना था कि दौड़ साहबने राजपूतानाको जैसा उन्नति को है, वैसा पौर जिलेमें भी लड़ों को दौड़ साहब राजपूत राजा-पो को इतना नेच नरामे लेते थे, कि बन्दुकोंको समझें पञ्च मसला पो कि दौड़ साहब गायद भूष लीते कोते। इस प्रकारके प्रयत्नके लक्ष्य किसे जानि पर दौड़ साहबने प्राय छोड़ दिया। जोसे गवर्नरको मालूम को गया कि दौड़ साहब मजसुब को राजपूतो के द्वितीये बन्धु थे वैधमनकोते थे।

१८२३ ई०में दौड़ साहब इन्डिने इन्फैण्ट्री लीड गये। इन्ने जीवन्तु शेष भाग राजपूतानेमें मर गये जोत पन्थादि प्रकाशित करकेमें व्यय हुआ था। रॉयल एमिगण्डिक मोसाइटोमें इन्फैण्ट्री राजपूतानेके विषयमें कई एक निबन्ध पढ़े थे पौर कुछ दिन उस मसाले लाइज रियन निबन्ध थे।

१८२० ई०में इन्होंने मिन्निषाके पुराने फरामीसी सेनापति काठपण्ड को बयान साब सुनाकात को। १८२५ ई० तारीख १० नवम्बरको, ५१ वर्षको उमरमें थायने लन्दनके डाक्टर ड ड (बुबको) कन्थाका पानि पढ़ने किया। थायने एक कन्था पौर दो पुत्र थे।

दौड़ साहबने रॉयल एमिगण्डिक मोसाइटोकी पहिचानमें प्रयत्न विषयक पनीच निबन्ध प्रकाशित कराये थे। १८३६ ई०में भारतको राजनीतिक विषयको पानीचनार्थे लिए डाकम पॉर फोल्कमें विचारपर्यं को बेइक हुई को, लममें सि० गेंडने पण्डिभ भारतको राज नीतिक विषयमें एक सुझाव मन्थव पंथ किया था।

थायका नाम केवल "राजस्थान" को धरत रक्ते गा।

यद्यपि पिनडान पीतिहासिक दृष्टिसे थायने पन्थी बचतकी मूनी निबन्ध रकी है तथापि थायने ने २०-शेको पौर उन्नको चारा इस पन्थको उपादेय बनाने रक्तेगे। १८२८ ई०में थायका "पण्डिभ-भारत मन्थन" नामक पौर एक पन्थ लन्दनके प्रकाशित हुआ है।

टाङ्क ( वि० स्को ) एक पकारका यन्त्रा को मुद्रा पर पढ़ना जाता है, टांड बन्धु था।

टाङ्कर ( वि० स्को ) एक पचोटा नाम।

टाण्डा - १ बुधप्रदेशके पौराणिक जिलेको एक तहसील। यह पचा० २६८ से २६४० उ० पौर रेखा ८२ २० से ८२८ पू० में अवस्थित है। इसका मूपरिमाण ३६३ बग मोल पौर लोकोम पन्था प्राय २४८७१० है। इस तहसीलमें ताल गहर पौर ०२५ घाम लगते हैं। तहसीलको कुछ जमीन गोगरा ( चर्वा ) लनेके बिलारे इन्होंने कारक तर पौर लोको है पौर लमम प्राय नहीं लगती है। लोकोम लको जमीन बहुत चर्वा है पौर काको पनात्र लपक करती है। जहाँ भोजकी पचिबा हुएमें लन कीचनेमें विगीव लुबिवा है।

२ बुधप्रदेशके पौराणिक जिलेको जमी नामको लक्ष्मीका एक गहर। यह पचा० २६१४ ८० पौर रेखा ८२ ४ पू०के मन्थ लोकरा लडी बिलारे अवस्थित है। लोकोम पन्था प्राय १८८३१ है। यह गहर पचक रोडिन लक्ष्मि केचिने पचबगपुर लुगनेमें १२ मोल दूर पड़ता है। १८वीं शताब्दीके पन्थ पचबके लक्ष्मि लाइत पन्थो लानि इस लक्ष्मीके बहुत उन्नति को तथा कई एक राज्य भजन बनाये। उस समय यह नगर तरङ्क तरङ्के लपके बुननेका भारतपणमें एक प्रधान केन्द्र सिता जाता था। पश्चिमिकाके मोयल लुङ्कलुङ्के समयमेंको यहाँका वाणिज्य कुछ जोन जोत पाया है। पात्र भी यहाँ ११००से पचिब वरके बन्दे हैं। जामलको नामका मन्थम लपड़ा यहाँका प्रसिद्ध है। इस लक्ष्मीके लक्ष्मि तोल विधानप है।

३ ( तांडा ) पूर्वीय बङ्गालके मालडङ्क जिलेका एक प्राचीन नगर। यह मोङ्के निबन्ध गन्धुके लुमने बिलारे अवस्थित था। मोङ्क लक्ष्मि ल लोने पर १४ काठ लक्ष यहाँ लुङ्कलुङ्की राजपानो थे। यह लक्ष्मी पर स्थापित हुआ था, इसका पूरा पण्ड नहीं लगता है। गायद यह

स्थान पगला नदीगर्भमें विलीन हो गया है। अभी भी उस स्थानमें एक ग्राम टाण्डा या टांडा नामसे पुारा जाता है। बङ्गालके इतिहास-लेखक स्ट्यूर्ट माहबका कथन है, कि गौड नगर जनशून्य होनेके ११ वर्ष पहले बङ्गालके ग्रेप अफगान राजा मुल्कीमान शाह करराणोने १२६४ ई०में टाण्डा नगरमें बङ्गालको राजधानी स्थापित की। सुगल-सम्राट् अकबरके समयमें टाण्डा नगर सुम-सुद और बङ्गालके नवाबोंका वासस्थान था। १६६० ई०में निद्रोही सुजाशाह औरइजिप्तके सेनापति मोरखुमलाके भयसे राजमहलसे टाण्डा नगरको भाग आये थे और पोछे युद्धमें पराजित हुए। इसके बाद सुगलीने राजमहल और टाकामें बङ्गालकी राजधानी स्थापन की थी।

४ दुकाप्रदेशके रामपुर राज्यकी सुभार तइसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८°५८' ३०" और देशा० ७८° ५७' ३०"के मध्य सुरादावादेमें नैनीतालके पथ पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७८२३ है। यहाँ बच्चार जातिका वास अधिक है। इस नगरमें एक चिकित्सालय और एक विद्यालय है।

टाण्डा-उरमार -पञ्जाबके होशियारपुर जिलेके अन्तर्गत वस्य तइसीलके शहर। ये दोनों शहर एक दूसरेसे प्राध मीलकी दूरी पर पडता है और अक्षा० ३१°४०' ७०" और देशा० ७५°३८' ५०"में अवस्थित है। दोनोंकी मिश्रित लोकसंख्या प्रायः १०२४७ है। यहाँ सखी सरवर नामक एक साधुका मठ है। १८६७ ई०में म्युनिसिपालिटी स्थापित हुई है। यहाँ म्युनिसिपल बोर्डके अधीन एक ऐम्प्लोवर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और एक सरकारो चिकित्सालय है।

टान ( हिं० स्त्री० ) १ विस्तृति, फैलाव, खिंचाव । २ खींचनेकी क्रिया, खींच । ३ साँपके दाँत लगनेका एक प्रकार। इसमें दाँत घँसता नहीं केवल छीलता या खुरीच डालता हुआ निकल जाता है । ४ सितारके परटे पर उँगलिकी रख कर इस प्रकार खींचनेकी क्रिया जिमसे राधके सभी स्वर निकल आवें । (पु०) ५ मचान, टाँड़ । टानना ( हिं० क्ति० ) खींचना, तानना ।

टाप ( हिं० स्त्री० ) १ बोडके पैरका निचला भाग । २ वह शब्द जो चलते समय बोडके पैरसे होता है । ३

मछली एकएनिका भावा । यह वेंत या और किसी पेड़की लचीली टहनियाँका बना होता है । ४ सुरगियोंके बंद करनेका भावा । ५ पनांगके पायेका तलभाग । यह भाग पृथ्वीसे लगा रहता और इसका घेरा उभरा रहता है ।

टापड़ ( हिं० पु० ) ऊपर भेदान ।

टापदार ( हिं० वि० ) जिमके ऊपर या नीचेका छोर कुछ फैला हुआ हो ।

टापना ( हिं० क्ति० ) १ धोटीका पैर पटकना । २ इधर उधर घुमा फिरना, टकर मारना । ३ निष्प्रयोजन इधर उधर फिरना । ४ झूटना, उछलना । ५ निराहार पडा रहना । ६ व्यर्थ प्रतीक्षा करना, व्यर्थ किमी दूसरेकी आशा करना । ७ पचात्ताप करना, पश्ताना, झाय मलना ।

टापर ( हिं० पु० ) टट पाटिको मवारो ।

टापा ( हिं० पु० ) १ टप्पा, मैदान । २ वह विस्तृत भूमि जहाँ कोई चीज उगती न हो, उजाड़ मैदान । ३ झूट, फाँट, फलांग । ४ एक टोकरा जिमसे कोई वस्तु टाँकी या बंद की जाय ।

टाप् ( हिं० पु० ) चारों ओरसे घेरा हुआ भूखंड, होप ।

टावर ( हिं० पु० ) लडुका, बालक ।

टावू ( हिं० पु० ) रस्मोकी वनी हुई एक प्रकारको जाली जो कटोरिके पाकारको होती है। काम करते समय बैलोंकी घारे खानसे टाँकने लिये यह उनके मुँह पर लगा दिया जाता है, जावा ।

टामन ( हिं० पु० ) तन्वविधि, टोटका ।

टार ( मं० पु० ) टां पृथ्वीं ऋच्छति ऋ-अण् । १ तुरफ, घोड़ा । २ लड़, गाड़, लौड़ा । ३ रद्द, वह मनुष्य जो स्त्री पुरुषका संयोग करा देता हो, कुटना, टलाल ।

टार ( हिं० पु० ) १ राशि, ठेर, पुञ्ज । ( स्त्री० ) २ टाल टल ।

टारन ( हिं० पु० ) १ टालने या मरकानेकी वस्तु । २ कोविडूममें पड़ा हुआ लकड़ोका ढंडा । इससे ईख चलाई या हिलाई जाता है ।

टारपोडी ( अं० पु० ) पानीके भीतर हो कर चलानेवाला जंगी जहाज ।

टान ( हिं० स्त्री० ) १ भारी राशि, ऊँचा ढेर, गंज । २ लकड़ी, भुस आदिको बड़ो ढूकान । ३ धैलाइके पहि-

बेबा जिनारा। ४ टाकनेबा माव। ५ झूठा बादा। ६ माव घेन, चापि पादिनि सभेमें बाबेनेबा एक बटा। (पु०) ० कुठना टमास।

टाकटम (हि० फो०) सबदक देवो।

टाकना (हि० जि०) १ बटाना, बिसकाता मरकाना। २ धनुषजित कर देना, मगा देना। ३ दूर करना, मिटाना। ४ निगत समझवे घोर पागेबा समय ठह राना सुकतमे करना। ५ समय म्यतोत करना मुझ रना। ६ ठस ठस करना, न मानना। ७ किसी कार्यके स बन्धमें हथ प्रकारको बानि कहना जिनमें बह न करना पड़े। ८ किसी कार्यको पूरा करनिको मिया पाया देना पात्र बनबा झूठ बादा करना। ९ किसी मनुष्यको निराय करके भीड़ना। १० पणटना, घेरना। ११ बचा खाना, तरह दे खाना।

टाकमटाक (हि० फो०) टाकदक देवो।

टाकम टाक (हि० जि०-बि०) चापि पात्र, निष्ठा निष्प।

टाकमटम (हि० पु०) बचाना।

टाका (हि० बि०) पर्व पाबा।

टाको (हि० फो०) १ बह घटा को माव बेल पादिनि मजेमें बाबी आतो है। २ तोन बरवेसे कामको बडिया। ३ एक प्रकारका बाबा। ४ पाबा कप्या, पन्थो।

टाको (हि० पु०) १ जाबमें मिलनेबाना एक प्रकारका योग्यम। इसकी लकड़ो हमारतो पादिनि काममें पातो है। टाको (दरकुपातो) - घुरोके नत्र आगरके हुमके मझाहनि। इतनोमें बारगामो नगरके किसी सम्मान्य परिवारमें इनका ब्रह्म हुआ बा। इनके पितानि बहुत दिनों तक सासनाके राजाके बिक्रिटीका काम किया था। इनको माता निवापठिन मो सम्मान्य शौर्या के माव धनिट सम्बन्धमें पावह थीं। निपनके धामनकतोदीह माव माननेके शत्रुका विवाह उपस्थित होने पर वे सम्पत्ति-व्युत्त किये गये। टाकोके पिता भी धामनेमें निवासित हुए थे। टाको कम समय कोटे बचे थे।

१५३२ ई०में टाको अपनी माताके माव निपनके रह कर अठ्ठई नामक गुरोय सम्प्रदायके निकट विद्याभ्यास करने लगे। बाल्यावस्थामें ही टाकोको हु

१५३२ ई०में टाको अपनी माताके माव निपनके रह कर अठ्ठई नामक गुरोय सम्प्रदायके निकट विद्याभ्यास करने लगे। बाल्यावस्थामें ही टाकोको हु

आ बिकाग घोर सभे-भाबीको प्रबलता देख कर मन उन पर कुछ हो गये। घाठ बरवेको समरने ही टाको का नाम प्रसिद्ध हो गया। इनके कुछ दिन बाद ये अपने निवासित पितासे मिलनेके लिए रोम नगरमें पहुँचे। इनके पिताके दुःखका तब समय पारतवार न था। १५३६ ई०में उन्हें सम्वाद मिला कि उनकी माताको धुम्बू हो गई है। टाकोके पितानि कष्ट, कि "सम्पत्ति पानेको चाहावे मामने अपने बहलको विप दे कर मार डाला है।" मन्सुख हो टाकोने अभी अपनी माकी सम्पत्ति भोग न पाई थी।

१५३० ई०में टाकोके पितानि घरबिनीको राज बटनेमें काम करना स्वीकार कर लिया। टाको दिनमें बहुत हो खूबसूरत थे—वे घरबिनीको राजकुमारो मिरियाके खेनने घोर पढ़ने निश्चयके साक्षा हो गये। तब समय घरबिनी विद्या, शिल्प और मोन्द्य-बर्षाका एक बेन्द बन गया था। इसलिये टाको बेगोर-बोवनेमें विद्यासिद्धा और काव्यमनामोचनको परिदृष्टानमें परिबर्द्धित होने लगे।

१५६० ई०में जब इनके पिता भिनिकने पाये, तब कहाँ टाको सबके पादर घोर गौरवके प्राप्त हो गये। इनके पिताके हृदयमें कबि मान रहनेके कारण उन्हें पढ़ा दुःख ठठाना पड़ा था, इसलिये वे बालक टाकोको तब माग भी बिरत करनेके लिए यथामात्र चेष्टा करने लगे। उन्होंने अपने पुत्र टाकोको जानू न पढ़ानेके लिए पट्टया भीत्र दिया। परन्तु कहाँ तब युवकने व्यवहार माफका अध्ययन छोड़ कर काव्य घोर दय न पढ़ना शुरू कर दिया।

१५६२ ई०के शेष मानमें टाकोने "रिनको" नामका एक काव्य लिखा। इस काव्यमें ऐसे सुन्दर भाव घोर हृदयका समावेश किया गया था, कि लोगोंने उन्हें इस युवका एक प्रसिद्ध कवि मान लिया और उनको सम्म बना ली।

१५६६ ई०में टाकोने किनावार दुर्बमें प्रथम पदाप क किया। यहाँ रह कर इतनी बेसा वय उपार्जन किया बेसा वा तबसे पबिब कह भी पाया। एक तो वे विद्वान् समाजप्रिय सुन्दर युवक थे, दूसरे उनकी प्यारिता चा। घोर खेल सह थीं। इसलिये तदापेक्षा इतनीका राज

सभामें इनकीं टासो खातिर तैय्यार रह्ये । लुक्रोचिया और लिओनारा नामकी दो राजकन्या, जो अविवाहिता और टासोमें १० वर्ष उमरमें बड़ी थीं, उनकी छोर एक तरहसे खातिरदारो करने लगी । टासो राजकुमारो लिओनाराके प्रेसमें पड़ गये थे । उस प्रेसकी सुप्रसिद्ध ज्ञानोकी मूर्ति अब भी उनके काथालीकमें प्रकाशमान है । १५८५ में ७० ई. तक इनकी जीवनका सर्वापेक्षा सुखमय समय था । १५६६ ई.में इनके पिताजी नया ही गई, जिसमें इनका भावप्रवण हृदय गीकानून टूटा था ।

१५७० ई.में वे काउन्सिल महीदयके साथ पारो नगरमें भ्रमण करने गये । वे इहाँ निर्भिक और स्पष्टवक्ता थे, इसलिये काउन्सिलके साथ बनती थी । दूसरे वर्ष वे फ्रान्समें फेरारा गये और वहाँ डिउकके यथोक्त भाष्य करने लगे । परवर्ती चार वर्षोंमें इन्होंने "ग्रामेनिया" और "जुरुसानिम सुक्ति" नामकी दो ऊँचे ढगक ग्रन्थ बनाये । "ग्रामेनिया" किनानोंकी जीवनियोंके आधार पर नाट्यकी तीर पर लिखा गया था, किन्तु उसमें गीति कविताको गुणसा और तटानीन्तन इटलीका भाव मौजूद था । पर वर्ती दो सौ वर्ष तक जा भाव काव्य और नाटक इटलीके लिखे गये थे, उसमेंसे अधिकांश ग्रन्थोंमें हमें "ग्रामेनिया" का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । इसलिए उचैत : टासोको अष्ट और प्रयोजनीय रचना कह सकतें हैं ।

"जुरुसानिमी निवारारट" का प्रभाव यूरोपीय साहित्य पर और भी अधिक पड़ा है । यह ग्रन्थ उस युगका महाकाव्य समझा जाता है । इस ग्रन्थके कारण ही इनका नाम वादमोकि व्याम, होमर, भाजिल आदिके साथ लिया जाता है । टासोने इकतीस वर्षकी उमरके यह महाकाव्य समाप्त किया था । इस ग्रन्थकी समाप्तिके साथ ही उनकी जीवनका सर्वोत्कृष्ट भाग व्यतीत हुआ था । इसके बाद इन्हें दुःखोंनि घेर लिया । टासोने "जुरुसानिमी" महाकाव्य स्वयं न छाप कर, इटलीके प्रधान प्रधान लोगीके पास समालोचनायें भेज दियीं । फिर क्या था ; नाना सुनिकी नाना मत । कोई कहने लगे कि और भी संघत बनानेकी जरूरत है,

किसे करमाया कि जहाँ उम्मे और भी कवित्वमय बनाना चाहिए इत्यादि । टासोने भाजिलके पाठके पर इन महाकाव्यको बनना को थी । उन्होंने किसीके कर्ममें कुछ परिवर्तन करना उचित न समझा । १५८५में इन्होंने "काव्यकी गीति" नामका छिपे मन्त्रकी रचना की थी, उसमें अनुसार इन्हें भी बनना पड़ा ।

इस महाकाव्यमें गुरुके साथ बनना कर इनके धर्मभावके प्रति हमारे मनकी पाकष्ट करनेकी चेष्टा की जाने पर भी यद्यपि नायकके रूपमें हम भावप्रवण रिनाल्टोको, विपण्य टानके इका और धीरकृपय मुसलमानोंको ग्रहण करते हैं । सुटगे यामि टाने ईसाइयोंमें किन तरह विश्वासवा बोध योग्य और फिर वह जैसे विफल मनोरथ करते, हम विषयकी भी धर हम महाकाव्यकी रचना की गई है । अन्तमें यामि टा एक ईसाइ वार पर सामक्ये गये और उससे प्रेसमें पड़ कर उनमें ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया । और हमारी कोरिडाने किम तरह अपने प्रणयोंके साथ नुक करते करते प्राण टिये और अन्तिम समयमें क्रैम ईसाई धर्मकी शपनाया, किम तरह चारनेनिदाने दुःखोंका साक्षात् दिवा, इन्दादि घटनाओंकी पढ़ने पठने पायाण-हृदयोंकी गति भा भर घाता है । ईसाजी मानहवीं शताब्दीमें हम महाकाव्यमें नागोकी मदिसा ऊँचे स्तरमें गये । महाकाव्यी शताब्दीमें "जुरुसानिमी" महाकाव्यके गायकोंके नाम यूरोपमें घर घर उच्चारित और समालोचित होते थे ।

टासोके ग्रन्थोंके तटानीन्तन समालोचकगण उन्हे इतना तन्न करने लगे कि फिर वे कान्त और उन्माद-भावापन्न हो गये । जुरुसानिमी महाकाव्यको उस समय तक उन्होंने छपया नहीं था । इसी अँचमें वे फ्लोरेंसमें धार्य ग्रहण करने के लिए वातचोत कर रहे थे । इसमें फेराराके डिउक अत्यन्त क्रुद्ध हुए ; उन्हीने नीचा इस समय यदि टासो फ्लोरेंस जायेंगे, तो "जुरुसानिमी" महाकाव्य वहाके शासनकर्ता मेडिसीके नाम समर्पित किया जायगा । परिणाम यह होगा कि राज तक फेराराके डिउकाने जो उनका भरण-पोषण किया, उसका उन्हें कुछ प्रतिदान न मिलेगा । इसा बोचने ( १५७५-

०० ई०में) टामोका स्थापना बहुत ही विरहने लगा। राजसभाके लोग इनके विरह जाने प्रकारके पड़्युक्त रहने लगे। इस समय टामो उन्मादग्रस्त हो गये थे। उन्हें जब देखा गया मान्य होता था, कि किराराके डिटक मायद उनको इत्यादि करते थे। एक दिन ये किसानके धर्ममें पैदल हो अपने बदनके घर पहुँचे।

इसके कुछ दिन बाद फिर उन्हें किरारा भोटनेको धावा मिली। परन्तु इनका रोग उपग्रस्त न हुआ। १५०८ ई०में ये फिर भाग गए। सेंटम्बर मासमें नागा द्वीपमें घूमते हुए ये पैदल ही टूरिन नगरके तोरक पर आ पहुँचे। किसानके डिटकमें इनका बड़ा घाटर सम्भार किया। इसके बाद टामो जहाँ जाने भय नहीं उनका बचान होने लगा। परन्तु लोके ही दिनों में ये समाजके गाराज हो गये और किराराको भोटनेके लिए पत्रव्यवहार करने लगे। किराराके डिटक जिस समय तोररी नगर अपना विकास कर रहे थे, उस समय टामो किरारा पहुँचे। परन्तु यहाँ भी अपनेसे परवर्तित समझ, इतना उपद्रव करने लगे कि सबके लिए कर एक उन्मादागारमें भेज दिया। १५०८ ई० में मासके लमा का १५८६ ई०को सुधारके मास तक इस कम पावनधानिमें रहना पड़ा था।

कुछ महीने वहाँ रहनेके बाद ही, उन्हें बन्धुव्याधियों के घाने पर लम्बे मास साक्षात् करने और व्यवहार करनेकी अनुमति मिल गई। इस समय ये जाना प्रकार की रचनाधर्मि मद्युक्त थे। इन दिनों ये कविता पत्रिक न लिखते थे, किन्तु दार्शनिक भाषोचनाका विषय लिखा करते थे। उन्मादागारमें मंत्र देने पर मो इच्छाके लोग इनको रचनाकी कदर करते थे। १५०९ ई०में श्रीवसासेम काथके सप्टेम्बर मास इय कर प्रकाशित हो गये परन्तु प्रकाशकोंने इनको अनुमति न ली और न संशोधन करने को ही अक्षरत समझी। एक वर्षके मोतर इस प्रथमके घात से स्तरण निश्चय गये। १५०९ ई०में क्लोरेण्डके दो बिहान् "श्रीवसासेम"में जाना प्रकारके टोप दिखाने लगे। किन्तु टामोने इन प्रतिपादोका उत्तर देने अग्रमात्रके और स वत मावासे दिया था उसे पढ़ कर हम उन्हें किसी तरह मा पागत नहीं समझ सकते। परन्तु टामोको

पागलपानिमें पवस्थिति एक समझाका विषय हो जाता है। ई इतना पत्रक लोकार करना पड़ेगा कि टामो में तपेह विचार बुद्धि रहने पर, उनसमकालीन के परभाव न करते थे। टामोने राजसभामें रज कर इतने तपेहोंक पाई थी तो मो लोने परने दोनो मानकोंको पार्स और मण्डपाके डिटकको लोचनी दिना दो।

१५०६ ई०में मण्डपाके डिटकके अनुरोधने ये उन्मादागारके छोड़ दिये गये। जहाँ लोमाने इनको सम्पूर्णता को। इनके बाद ये कुछ दिन मण्डपाके रहे और फिर नागा स्थानोंमें घूमने लगे। किसी भी जगह ये फिर न रह सकते थे। जहाँ जाते थे वहाँ इनका घाटर होता था। परन्तु ये इन तरहका प्रत्याहार करते थे, कि वरके मानकोंको रने" पर्यन्त मंत्र देनेके लिए बाध होना पड़ता था इस तरह अन्तिम पत्रकारि प्रतिभाके मरुतुम महाकवि इन्वीके उपहास-पात्र हो गये।

१५०२ ई०में पहलम क्लेमेण्डको पोपका पद मिला। क्लेमेण्ड और लम्बे मतोने टामोका घाटर बहुतनेके लिए स्तम्भक्य हो गये। १५०८ ई०में लम्बे पामन्धरके पन्तु मार रोम पहुँचे। टामो रोममें कविमन्दाट का सुकट पश्य कर ही ऐसा प्रस्थान हुआ। किन्तु पोपके मतोनेके योग्य ही जानेके कारण नेशा हो न सका। पोप साहब ने टामोके लिए सुवहरेका क्लोवस्टा कर दिया और उनका वैदिक सम्पत्तिमें कुछ धाय उन्हें प्राप्त हो ऐसी व्यवस्था करा दो। टामोके दुःखामिग्र लीवनेमें पानन्द का चौक प्रकाश दिपलाई दिया।

१५०९ ई० मार्च २१ पपोसको सेण्ट जोसेफिपो में टामोको पन्तु हुई। इस समय इनकी उमर ५१ वर्षकी थी परन्तु इनकी पानके बीम वर्षोंकी रचनाधर्मि विषय कुछ प्रतिमा इन्वीकेर न हुई थी। टामोने अपने जीवनमें बड़े बड़े दुःख पाये थे। यद्यपि कारण है कि पात्र हम उनका कथन करते हुए भी महागुमति और मोति प्रकट किया करते हैं।

टिपरा (प० पु०) विरिटाके योगसे बना हुआ किसी औपम्यका कर।

टिपरा पायोदान (प० पु०) बड़ मोहके मासका पत्र जो सुत्र पर समाया जाता है।



टिचर ओपियाई ( अ० पु० ) अफोमना अर्क ।  
 टिचर काडिमम ( अ० पु० ) इलायचीका अर्क ।  
 टिचर स्टोल ( अ० पु० ) फीनाटके मारका अर्क ।  
 टिंड ( हि० पु० ) एक प्रकारको बेल । इसमें ककटोके जैसे गोल गोल फल लगते हैं । फल तरकारोके काममें आता है ।  
 टिंडा ( हि० पु० ) टिड देखो ।  
 टिंडर ( हि० पु० ) रहटमें लगी हुई हुईडिया ।  
 टिंडसी ( हि० स्त्री० ) टिड नामकी तरकारो ।  
 टिंडो ( हि० स्त्री० ) १ इनकी पकड़ कर टवानेवाली मुठिया । २ जाता घुमानेका खूँटा ।  
 टिक ( हि० पु० ) टिकर, लिहा, पृथा ।  
 टिकई ( हि० स्त्री० ) वह गाय जिसके माथे पर सफेद टोका हो ।  
 टिकट ( अ० पु० ) १ प्रमाणपत्रके रूपमें दिये जानेका कागजका टुकड़ा । यह किसी प्रकारका महसूल, भाडा, कर या फीस चुकानेवालेको दिया जाता है । २ अधिकांश पत्र जिसके द्वारा मनुष्य कहीं आ जा सकता है । ३ किसी कार्यकर्त्ताओंके ऊपर लगाये जानेका कर, फीस या महसूल ।  
 टिकटिक ( हि० स्त्री० ) १ यह शब्द जो घोड़ोंकी हॉकनेके लिए सुँहसे किया जाता है । २ घड़ोके बजनेका शब्द ।  
 टिकटिको ( हि० स्त्री० ) १ लकड़ियोंका ढाँचा जो तीन लकड़ियोंकी तिरछी करनेसे बनता है । इससे अपराधियोंके हाथ पैर बांध कर उनके शरीर पर बेत या कोडे लगाये जाते हैं । २ ऊँचो तिपाई, टिकठी । ३ सारे भारतमें मिलनेवाली एक प्रकारकी चिड़िया । इसको लम्बाई लगभग आठ नौ अंगुलका होती है और इसका रंग भूरा और कुछ लाली लिए होता है । जाड़ेमें यह प्रायः जलाशयोंके किनारेकी भाँटियोंमें घोंसला लगती है । यह एक वारमें चार अंडे देती है ।  
 टिकठी ( हि० स्त्री० ) १ टिकटिकी देखो । २ एक तरहकी ऊँची तिपाई । इस पर अपराधियोंकी खडा करके उनके गलेमें फासोल फाँटा लगाया जाता है । ३ तीन ऊँचे पाँव लगे हुए काठका आसन, तिपाई । ४ दो लकड़ियोंका बना हुआ ढाँचा जिस पर बुना हुआ कपडा

फँसाया जाता है । यह कपड़े की चौड़ाईके समान फँस सकता है ।  
 टिकड़ा ( हि० पु० ) १ किसी वस्तुका चक्राकार अंश, चिपटा गोल टुकड़ा । २ एक तरफकी मामूली रोटी ।  
 टिकड़ी ( हि० स्त्री० ) छोटा टिकड़ा ।  
 टिकना ( हि० क्रि० ) १ टहरना, उँरा करना, मुकाम करना । २ तलहटके रूपमें नीचे बैठ जाना । ३ म्यायो रचना कुछ दिनों तक चनना । ४ स्थित रहना, ठहरना, इधर उधर न गिरना ।  
 टिकली ( हि० स्त्री० ) १ छोटी टिकिया । २ एक प्रकारकी टिकिया जो काँच या पथीको बनो होती है । स्त्रियों शृंगार करनेके लिये इसे अपने ननाट पर चिपकती हैं, मितारा, चमको । ३ छोटा टोका, छोटी वेटी । ४ एक प्रकारका औजार जिससे सूत काता जाता है ।  
 टिकम ( अ० पु० ) कर, महसूल ।  
 टिक्राज ( हि० वि० ) कुछ दिनों तक काम देनेवाला, टिकनेवाला ।  
 टिकाना ( हि० स्त्री० ) १ टिकने या ठहरनेका भाव । २ ठहरनेका स्थान, पडाव, चट्टी ।  
 टिकाना ( हि० क्रि० ) १ निवासस्थान देना, ठहराना । २ स्थित करना, अडाना, ठहराना ।  
 टिकानी ( हि० स्त्री० ) घँजनो डाल कर रस्सीसे बांधी जानेकी छकड़ा गाढोको लकड़िया ।  
 टिकारी—गया जिलेके अन्तर्गत एक जमींदारो । यह अक्षा० २४° ५६' ४०" और देशा० ८४° ५०' ५०"के मध्य गया नगरोसे १५ मील उत्तर पश्चिममें मुरहर नदीके किनारे अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ६४३० है । यहाँ म्युनिसिपालिटो है । प्रति अधिवासीको ४/३ तीन आनेके हिसाबसे टैफ देना पड़ता है ।  
 यहाँके मद्योका दुर्ग उल्लेखयोग्य है । शत्रुके आक्रमणसे नगरकी रक्षा करनेके लिये टिकारो-राजाओंने इस दुर्गको बनाया है । दुर्गप्राचीरकी मोरचामें तोप रखनेका स्थान और चारों ओर नाना कटो हुई है ।  
 इतिहास—यहाँका राजवंश अत्यन्त अप्राचीन नहीं है । नाटिरशाहके आक्रमणके बाद मुगल-शासनको विशुद्धला न्यून हो जाने पर वर्त्तमान राजवंशके पूर्व-

पुत्र भीमि तथा मादुमाव पुत्रा । वरुनि शि २५३ एक  
 मामास्य त्रसीदार यः । उनसे पुत्र सुन्दरनि इने बट्ट  
 विहारने सुहादार पनोवरीयोको महाराष्ट्रेने विरह  
 महायता पद्म पाईयो तथा पटनाने बिरोध दमनने  
 मकनता भी प्राप्त कोयो । पत सुहादारको पोरने  
 इन् 'राजा को उपाधि मिनी । राजा सुन्दरनि क  
 एक माहमी पोर यी । उरुनि लक्ष्मीमें धर्मो मय्यति  
 को बहुत दृढ उरुनि कः हायो । कोड़े को दिनीके मन्त्र  
 उरुनि पोकड़ी मन्त्रत एखिन मिनाबर, दम्पनाएर  
 पाट्टो पोर पहारा तथा धमराधु पोर माहरी परमनेटा  
 पवित्रांग पयने राज्यमें मिना निवा । इम क मिना उरुनि  
 विहार पोर रामगुरुं जना स्थानमें भो पण्ट उरुनि  
 पाईयो । पलास उरुनि के एक जमादारने उनका प्राय  
 नाम किया । सुन्दरके तोन पुत्र यी - बुनियादनि क फतेह  
 नि क पोर निहाननि क । कोरि कोरि कहते हैं कि ये  
 तीनों सुन्दरके भतीजे यी पोर उरुनि देवम ज्येष्ठ बुनि  
 पादनि इको दत्तकपुत्र बनन किया या ।

बुनियादनि क शाक्तियि यः । पट्टरुने मय  
 उनका पच्छा मद्राव या । उरुनि पानुगय श्रीवार कर  
 बट्टनेकोरि एक एक निवा । कइ एक जनाधमारुणामि  
 के हाव लगा । पत या कर कुामिमपनी बहुत बियाव  
 पोर उरुनि बुनियादनि क तथा उनने दोनी भाईको  
 पटने बुनका कर मार डाका । उन पटनाये कुठ पदने  
 बुनियादनि इके एक पुत्र हुआ था । कुामिमपनीने  
 हम छोटे बच्चेको मार जाननेके निचे एक पादमी  
 भिजा । बिन्नु रामने पुत्रको बगानेके निचे उरुने एक  
 उरुनेको टोकरांमें रख कर बुनियादके प्रधान जमेश्वरी  
 दमोन्नि इके निरुट भिज दिया । बन्नाको लज्जारे तब  
 दमोन्ने राजपुत्रको बहुत मावधानने रक्षा को यो । इस  
 राजकुमारका नाम मिश्रित्नुनि क या । मितारवायउ  
 शासनकालमें मिश्रित्नुनिने पगने भ्रमण मय्यति की  
 यो जामा को । पगने ली लावर ( Mr. L. ) अब  
 विहारके बनेट्टर दू. तब मिश्रित्नुनिने पुन पगना  
 पूर्व मय्यति लगा निको टोकरांने 'महाराज का उपाधि  
 पाई । बंदोबस्तकरार भा उरु 'महाराज' कहा करती  
 को । लक्ष्मी बिनेके बीजहन नामक स्थानमें अब

विरोध हुआ तब मिश्रित्नुने ममैय पगनीको  
 रक्षा को यो । उरुनि गयामि टिकारी तब जमने गनेके  
 ऊपर एक बडा पुत्र बनया पोर धम गयामि एक उरु  
 मरोबर मोटवाका था । उनके पदने टिकारी राज्यको  
 पाय हुगो बट्ट गई यो । १८५० ई०में ये परमोको  
 निधा ।

उनके बड़े पुत्र दिनारायण ४१, पाने तथा छोटे  
 पुत्र मोटनारायणनि इने ४५, पानेको मय्यति पाई ।  
 १८४३ ई० के १० नवम्बरमें दिनारायणको 'महाराज'  
 को उपाधि तथा लाड 'बाई' ज्येमे मलट मिनी यो । ये  
 नेदिभ्रमण पोर धार्मिक यी । ये पगने महर्षि'को  
 महाराजो दम्भित्नुमारो पर राज्यका धार भौप कर  
 पाय पटनेमें गुराके बिन्दो मयय म्यतोत करने पगे ।  
 लमो स्थान पर १८५१ ई०में उनको मृत्यु हुई ।

दम्भित्नुमारोके जुगामने राज्यको उरुनि चरम  
 मोमा तब पहुँच गई यो । तथा राजा भी बहुत सुयने  
 रहती यी । उरुनि पतिभी धनुमति ने कर अपने भतीजे  
 रामकृष्णि इको दत्तकपुत्र पदप किया पोर निहान  
 नि इके उत्तराधिकारिने उनका भविष्यका दावा  
 कायम रखनेके निचे एक एक निपया निवा का ।

१८०० ई०में रामकृष्णि क उत्तराधिकारा हुए । १८  
 १८०१ ई० में महाराज'को उपाधि तथा कटिय गवर्मेण्ट  
 ने ११०० रु० मृत्युको निनपत मिनी । १७९९ वर्षमें  
 उन एक दूधरा पधिकार मिना, त्रिमने उनको पालन  
 पदाननेमें जामेको धारमकता न रही, दिन्नु १८०१  
 ई०में उनको मृत्यु हो गई । ये जैजाराटके पलायन  
 पयोधा नामक स्थानमें तथा मया बिनेके धर्मशास्त्रा  
 नामक स्थानमें एक बड़ा मन्दिर निमाच कर  
 मये हैं ।

मोटनारायणके भो कोरि ममान न यो । उनको मृत्यु  
 के बाद उनको दो रानी पगमिपकुमारो पोर राजा  
 मोनिनकुमारोने पगने गयामेका भारो मय्यति डा बरा  
 बर बराब भ गमि कट यो । मोनिनकुमारने पगने  
 भतीजे पगत शारायणि इको दत्तकपुत्र बनया ।  
 उरुका देवादेयो पगमे बट्टुमारान भा एर दत्तकपुत्र  
 पदप किया । पगपने पगे वैशिक मय्यति पर दावा

क्रिया। अश्वमेधकुमारोके दत्तकपुत्रने भी मातृसम्पत्ति पर अपना अधिकार जमाया।

महाराणी इन्द्रजित्कुमारोने रामेश्वर, द्वारका आदि तोर्यस्थानोंमें पर्यटन कर वृन्दावनधाममें १८७८ ई०को प्राणत्याग किया। उनके १८७७ ई०के इच्छापत्र के अनुसार उनकी पुत्रवधु महाराणी राजरूपकुमारो के रूपमें सम्पत्तिको अधिकारिणी हुई।

महाराणी इन्द्रजित्कुमारोने दो तीन लाख रुपये खर्च करके पटने और वृन्दावनमें दो बड़े बड़े टेवालय निर्माण किये हैं। उन्होंने सिपाहो विद्रोहके समय अपने अधिकारभक्त कलकत्ते ज्ञानिका पण्डित्यत भनूयाचको निरापट रक्वा था। विधवा राजरूपकुमारोके भी कोई पुत्र न था। उनकी एकमात्र कन्या राधाकिशोरो उत्तराधिकारी हुई। महाराणी राजरूपकुमारो अत्यन्त दान-शीला थीं। उनके यत्से टिकारी-गण्यके नाना स्थानोंमें प्रतिष्ठिशाला और विद्यालय स्थापित हुए हैं, जिनमें प्रति वर्ष तीस हजार रुपये देने पड़ते हैं।

१८८८ ई०में राधेश्वरो एक पुत्ररत्नको कोड़ इम लोकेसे चल बसो। लड़केका नाम था महाराजकुमार गोपालशरणनारायण मिहं। इनकी नावानयो तक टिकारो राज्यका ८ आना हिस्सा कोर्ट आफ वार्डको देखे रहने रहा। १८०४ ई०में जब ये राजगहो पर बैठे, तब इन्होंने बहुत अच्छे अच्छे काम कर दिखलाये। चाकन्द महालमें जाहू और जमु नहर काटोईगई जिसे जमीन पहलसे बहुत चर्बरा हो गई, साथ साथ एक लाख रुपयेको भाय भो बढ गई। यहाकी हैमन्तिका फसल ही प्रधान है।

इस राज्यको भाय लगभग तेरह लाख रुपयेको है और गवर्मेण्टको लगभग दो लाख रुपये करमें देने पड़ते हैं।

२ गया जिलेका एक शहर। यह अक्षां २४°५६' ७० और देशां ८४°५०' पू०के मध्य सुरङ्गर नदीके किनारे गया शहरसे १६ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ६४२७ है। इस शहरको भाय ६७०० रु० और व्यय ६१०० रु० है।

टिकाव ( हि० पु० ) १ स्थिति ठहराव । २ स्थिरता । ३ यात्रियोंके ठहरनेका स्थान, पड़ाव ।

टिक्रिया ( हि० स्त्री० ) १ चक्राकार छोटी मोटी वस्तु गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा । २ वह चिपटा गोल टुकड़ा जो कोयलेकी बुकनीकी किमो लमीलो चीजमें मान कर बनाया जाता है। यह चिलम परकी भाग सुलानेके काममें आती है ३ एक प्रकारकी गोल चिपटो मिठाई । ४ बाहर मिरा निकला हुआ वरतनके मचिका ऊपरो भाग । ५ रोटीका एक भेद, लिटो । ६ लमाट, माथा । ७ वह वस्ती जो माघि पर लगाई जाती है । ८ वह चिह्न या खड्डोरेखा जो उँगलोमें चूना, रंग या और कोई वस्तु पीत कर बनाई ज तो है । अनपढ़ लोगोंको जब रोजाना लेन देनकी वस्तुका हिमाव रखना होता है, तो वे इस प्रकारके चिह्न प्रायः दोधर पर बनाते हैं।

टिकुरा ( हि० पु० ) भोटा, टोला ।

टिकुरी ( हि० स्त्री० ) सूत कातनेकी फिरकी, टिकलो ।

टिकुला ( हि० पु० ) टिकरा देवो ।

टिकुली ( हि० स्त्री० ) टिकर देवो ।

टिकेत ( हि० पु० ) १ राजाका उत्तराधिकारो कुमार, युवराज । २ अधिष्ठाता, सरदार ।

टिकैताय—लखनऊके नवाब आमफउद्दौलाके दीवान । ये अत्यन्त विद्योत्साहो और १७७७ मे १७८७ ई० तक विद्यमान थे। इन्दोके कवि मागर, गिरधर और वेणोकवि इन तीनों कवियोंने स्वीकार किया है कि, उन्हें टिकैत-रायसे बहुत कुछ सहायता मिली है। इनके नामका बाराबंकोके पास एक नगर भी है जो टिकैतनगर कहलाता है।

टिकोर ( हि० स्त्री० ) टिकोर देवो ।

टिकड ( हि० पु० ) १ खड़ी टिकिया । २ मेकी हुई रोटी, लिटो । ३ मालपूवा ।

टिका ( हि० पु० ) १ सूँगफलीके घोषिका एक रोग । २ स्मरण, सुध, याद । ३ उँगलोमें रंग आदि लगा कर बनाया हुआ खड़ा चिह्न ।

टिको ( हि० स्त्री० ) १ टिकिया । २ लिटो, वाटी । ३ विन्दो । ४ गोल टीका । ५ तागकी बूटो । ६ उँगलिमें गोला चूना या रंग आदि पीत कर दीवार पर बनाई हुई खड़ी रेखा या चिह्न ।

टिखटिख ( हि० स्त्री० ) टिकटिक देखो ।

टिपडना ( हि० लि० ) टिपडना, गणना ।  
 टिपडाना ( हि० लि० ) टिपडाना ।  
 टिपड ( घ० बि० ) १ प्रचलन तैयार होना । २ उद्यत, मुद्रीट ।  
 टिपडारना ( हि० लि० ) टिप टिप शब्द बरने क्रमो पद्यो बोलना ।  
 टिपड ( स० पु० ) टिपडस्यन्तस्य भणति भव-ड । पञ्चविधिय, टिपडरो नामना पद्यो ।  
 टिपडक ( स० पु० ) टिपड शब्दो ऋत् । टिपड केने ।  
 टिपड ( स० लि० ) स व्यापिय, १०० नामवचना एक टिपड माना गया है ।  
 टिपड ( हि० पु० ) एक पद्यो नाम ।  
 टिपडरो ( हि० लि० ) एक प्रकारकी छोटी बड़िया को प्रायः पानीके बिनारनेमें डूबाये जाती है । इसका सफाई काम, भरदन सफेद, पर चित्तकरी, पोठ शैरी र नको पीर पीच कायी होना है । इसको बोको बड़ ई कोतो है । बड़ा जाता है कि रातको यह अपने दोरी वीर ऊपर बरके पित मोतो है क्वीकि जने यह भय मगा रहता है कि सायद पाकाय न टूट पड़े ।  
 टिपड ( हि० पु० ) टिपड केने ।  
 टिपडारो ( हि० पु० ) १ पिडाबट, योरगुल । २ बन्दन, रोना पोटना ।  
 टिपड ( स० पु०-लि० ) टिपडस्यन्तस्य भणति भव-ड । १ पञ्चविधिय टिपड पद्यो । इसके पयाय—टिपडक पीर टिपडक । द्वितीये निय इसको मांस-भक्ष्य निय है । २ बयोदय मन्मथारोय इन्द्राय, दामवक्रिय सिरुधे मन्मथारके एक दैवका नाम को इन्द्रका यज्ञ, या । भगवान्ने सायाद्युय प्रारथ कर इसको मारा था । ( बरहसु० ६० ब ) ३ बहबके मभारतस्य दामवक्रिय बदनकी ममाको रचा करमिनामा एक पशुरका नाम ( भाग १।१।१६ )  
 टिपडक ( स० पु० ) टिपड शब्दो ऋत् । टिपडक टिपड ।  
 टिपडा ( हि० पु० ) पञ्चक एक प्रकारका बीडा । इसको मन्मथे लगमम चार पांच थ गुणको होती है । १ मने मने यह कई प्रकारका होता है ।

टिपडो ( हि० लि० ) एक प्रकारका उड़नेवाला कीडा । यह टम बांध कर चलता है और रातके पिड पोथो पीर फमकी बड़ो दानि पडुंकाता है । जिन समय यह टम बांध कर ऊपरमें उड़ता है उस समय आकाश काम बादल को घटाये ममान टोल पडता है । ये हजार हिंडु हजार कोस तककी मन्मथे पाया करती है । अहां ये जाती है बहांकी फमकी मड करती जाती है । ये पहाडको क दगा तथा ऐमिमानेमें रहतो पीर चालुमें पडे पारती है । पञ्चकामे उत्तराय पीर एगियाके टलियो भागेमें ये कई बार जाती पाती है इन्हीके उत्पत्तमे बहांको फमक चम्बी तरह होने मही पाती है ।  
 टिपडिगा ( हि० बि० ) चक्र टिपडिगा ।  
 टिपडिना ( स० लि० ) १ चक्र गिरोपिका अल विरिमका पिकु टाकीन । २ कमीका फोका ।  
 टिपडिग ( स० पु० ) ब्रह्मविधिय, टि डा, डेडुमो । इस के पयाय—रोमयस्य, तिन्दिग सुनिनिधित पीर तिन्दिग है । इसका गुण—रोसक मीदक, पित्तरोषा, धम्मरोनायक सुपोतन, भातन कस पीर मूलन है ।  
 टिप ( हि० लि० ) मीव काटनेका एक प्रकार ।  
 टिपटि ( हि० लि० ) बूट बूट गिरनेका शब्द ।  
 टिपडाना ( हि० लि० ) १ दबडाना, मिमडाना । २ पीरे थोरे प्रकार करडाना पिडडाना ।  
 टिपडार ( हि० पु० ) मुकुटक प्रकारको एक डोयो । इस में कमगोको तरह तीन गांधार्य एक सिरे पर पीर बगलमें निबडी होतो है ।  
 टिपु ( हि० पु० ) १ पमिमान, घम ड गुमान गुरु । २ पाण्ड्य, पाण्ड्यर ।  
 टिपु ( हि० लि० ) टिपु केने ।  
 टिपु ( स० पु० ) १ व्याघ्रा डोका । २ अमकुचनी, ब्रह्मपत्री ।  
 टिपु ( स० लि० ) व्याघ्रा, डोका ।  
 टिपु ( हि० लि० ) १ बह बिड को लंगडोमें रंग पादि पोच कर बनाया जाता है । २ नायकी बुटी ।  
 टिपु ( घ० लि० ) पयरीके टोपडरका अलपान ।  
 टिपु ( हि० लि० ) पहाडकी छोटी कोटी ।  
 टिपडिमाना ( हि० लि० ) १ कक प्रकारका मन्द

मन्द जनना । २ भिल्लमिलाना । ३ मरणासन्न होना,  
मरनेके निकट होना ।

टिमाक ( हिं० स्त्री० ) सिंगार, वनाव, ठमक ।

टिर ( हिं० स्त्री० ) टर देना ।

टिरफिस ( हिं० स्त्री० ) प्रतिवाद, विरोध ।

टिन्टिगाना ( हिं० क्रि० ) दस्त आना ।

टिलवा ( हिं० पु० ) १ गठीला और टेढा मेढा लकड़ोका  
टुकड़ा । २ नाटा आटमो । ३ चापलूस श्रादमी ।

टिलेहू ( हिं० पु० ) सुमावा, जावा आदि टापुआमें  
मिलनेवाला एक प्रकारका नैवला । इसका सिर सूअरके  
सैसा और पूँछ बहुत छोटी होती है ।

टिन्ना ( हिं० पु० ) धक्का, टकीर, चोट ।

टिन्नेनवीसो ( हिं० स्त्री० ) १ निहलट सेवा, नीच सेवा ।  
२ अर्थका काम, निठला काम । ३ होला इवालो,  
बहाना ।

टिसुआ ( हिं० पु० ) आसू ।

टिहुकना ( हिं० क्रि० ) १ ठिठकना । चौकना ।

टिहुनी ( हिं० स्त्री० ) १ घटना । २ कोहनी ।

टो ( मं० स्त्री० ) मयूक वर्ण ।

टोंड ( हिं० पु० ) रङ्गमें वांछनेकी हँडिया ।

टोंडसो ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी बिल । यह कक-  
डीकी गतिको होती और इसमें गोल फल लगते हैं ।  
इन फलोंको तरकारी बनती है ।

टोंडा ( हिं० पु० ) वह खूँटा जिससे जाँता घुमाया  
जाना है ।

टोका ( हिं० स्त्री० ) १ एक प्रकारका सैनिका गहना  
जो गलेमें पहना जाता है । २ माथेमें पहननेका सैनिका  
एक गहना ।

टोका ( हिं० पु० ) वह खम्भा जो किसी बोझको रोकनेके  
लिये नीचेसे लगाया जाय, टाँड़, खम्भा ।

टोका ( सं० स्त्री० ) टोकते गम्यते बुध्यते वानया टोका-  
व्रथर्वे कटाप् च । १ व्याख्याग्रन्थ, किसी वाक्य या  
पदका अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य ।

टोका ( हिं० पु० ) १ वह चिह्न जिसे गीले चन्दन, केसर  
आदिसे मसूक वाहु आदि अर्घों पर सांप्रदायिक सहित  
वा शोभाके लिये लगाते हैं, तिलक । २ विवाह-सम्बन्ध

स्थिर करनेकी एक रीति । इसमें कन्धा परकी लोम  
वरुण माथेमें दहो यज्ञत आदिका टोका लगाने और  
कृक दृश्य उभक साथ देते हैं । ३ माथेका वह भाग  
जो दोनों भौंके बीचमें होता है । ४ चंद्र मनुष्य, शिरो-  
मणि । ५ राजमिहामन पर प्रतिष्ठा, राज्याभिषेक, गहो ।  
६ राजाका वह पुत्र जो इनके सरनेके बाद गहो पर  
बैठे, युवराज । ७ आधिपत्यका चिह्न, प्रधानताको छाप ।  
८ वह भेंट जो आमामो राजाको देते हैं । ९ माथे पर  
पहननेका एक आभूषण । १० ब्रह्मोंके माथेका मध्य-  
भाग जहाँ भँवगे होते हैं । ११ विद्म, दाग, घन्ना ।  
१२ शीतला रोगमें बचानेके लिये उभके चेष या  
रसको ल कर किसी शरीरमें सूख्योने शुभा कर प्रविष्ट  
करनेकी क्रिया । इसका व्यवहार विशेष कर शीतला  
रोगमें बचानेके लिये हो इस रोगमें बहुत पहनेसे चला  
आ रहा है । मनुष्य और गोक शरीरमें शीतला रोगके  
कारण जो पीप वा रस निजलता है उभकी लं कर  
प्राचीन कालमें टोका लगाया जाता था । उसी पीप वा  
रसकी बोज वा नोर कहते हैं । प्राचीन आर्य ऋषि  
योग भी अच्छी तरह जानते थे, कि गो-नोरका टोका  
ही निगपट है । मनुष्यके नोर द्वारा टोका देना मानो  
शीतला रोगको बुनाना है । कई बार तो इससे कितनों-  
की जानें चले गई हैं । गो-नोरके टोकमें वह भय  
नहीं है । यद्यपि इसमें भी यदि शरीरमें गो वसन्त का  
रस मिल जाता है, मगर उसका प्रकोप मनुष्य-वसन्तके  
जैसा भोषण नहीं है । यहाँ तक कि शीतला रोग  
रोकनेको जो इसमें शक्ति है वह मनुष्य-नोरसे किसी  
अंशमें कम नहीं है ।

शीतलाके नौकी रक्तके साथ मिश्रित कराना ही  
टोका लगानेका उद्देश्य है । इसका सञ्चार कई प्रकारसे  
होता है । शरीरके किसी स्थानमें अस्त्र द्वारा क्षत करके  
उसमें वसन्त ( शीतला )-का रस देना ही टोका लगाना  
हूँगा । सवराचर बाहु और हाथमें ही टोका लगाया जाता  
है । चमड़ेको छेद करनेके लिये सूई वा तेज छुरो ही  
काममें आते हैं । संयान आदि असभ्य लोग अस्त्रसे क्षत  
करनेके बदले आगसे शरीरमें ३।४ फफोले डाल कर उभके  
फूटने पर शीतलाका नीर प्रविष्ट करते हैं । फलतः

इसमें टीका लगानेका एक काम नहीं होता बरं उसमें पथिक हो जाता है।

कुछ दिन पहले तक हम मोनोंके समयमें मनुष्य-भोर द्वारा टीका लगाया जाता था जिसे टैगो टीका कहते थे। वर्तमान प्रथाओंमें मो-भोर द्वारा जो टीका लगाया जाता है उसे पट्टेकी टीका कहते हैं। टैगो टीकामें जत स्थान बहुत जल्द सूज जाता है जब विषमें घाता है। और अभी अभी भारे शरीरमें शोथका निष्पन्न पातो है। टैगो टीका निम्नेसे सब तक टोका सूज न आता, तब तक अपने परिहारके सभी कोम दवाचारमें रहते हैं, निरामिय घाति हैं और कड़ा नहीं पधारते हैं अर्थात् शोथका रोग होने पर जो सब नियम पालन करने पड़ते हैं वही सब रहते भी करने पड़ते। मनुष्यका रोग। दवाचारमें टैगो टीका ज्विम बसन्तर्ष विना और कुछ नहीं है। गो भोरका टीका छिनेमें से सब बहोर नियम पालन नहीं करने पड़ते।

घ गरेको टीका मो-बसन्त नामक बसन्त खाति शरीरमें न स्थापित हो आतो है। मसूरिकाके माघ यदि बसन्ती सुजना का खाद्य, तो बसन्ती माराजक घक्ति बहुत सामान्य और अन्य कट्टायाक है। सन्धति दवा टीका इस टैगोमें प्रचलित हुआ है। सबसेपेछने मनुष्य भोर द्वारा टीका लगानेको प्रथा उभा दो है। और समस्त प्रधान प्रधान नगरोंमें भी-भोरद्वारा टीका लगानेका सिद्ध स्थान स्थापित कर दिया है। इन सब स्थानोंमें अनेक विधित मोम शर्षिमें टीका लगानेके विधि भिन्न जाती हैं। इनके विषे जिनोको कुछ पर्यन्त नहीं पड़ता है। एक कर्षोंमें साधारणतः जलित माघ या बहनेका भोर ने कर प्रत्यक्ष भावने टोका लगाया जाता है। अथवा ज्वामोंमें सबसेपेछ द्वारा सन्धित भोर भिन्न आता है। कहना नहीं पड़ेगा कि टीका लगानेको प्रथा दिनों दिन जितनी ही बढ़ती जा रही है जतनी ही शोथका रोगने अत-स-ध्या धमनी जाती है।

पट्टेकीमें टीका लगानेको वैक्सिनेशन (Vaccination) कहते हैं। इसका अर्थ है वैक्सिनाया पर्याप्त गो बसन्तरोगको मनुष्यके शरीरमें संस्थापित करना। जवने पट्टेकी जेनर ( Jenner ) नामक एक ब्रिटेनियनने इस

महोपकारो विषयको यूरोपमें निवाया। १८०८ ईमें एशियमें परीक्षासक्य निम्नलिखित करै एक विषय जन साधारणमें प्रथाय किये—

१ गो-बसन्तरोगको मनुष्यके शरीरमें संस्थापित करनेसे उसे शोथका निष्पन्नके डर नहीं रहता। २ जोके शरीरमें बसन्तरोगके प्रथाका एक घोर प्रकारकी फु मो निष्पन्नतो है जो देखनेमें ठोका वसन्तकी तरह लमती है। पत-उसके भोरमें टीका लगानेसे शोथका रोग होनेका डर बना हो रहता है। ३ दुबिधा दिन कर सभी समय नियुक्त अथवाय द्वारा गो-भोरका टीका लगाया जा सकता है। ४ एक मनुष्यको गो-भोरका टीका टि कर धमके मोरसे दूसरीको घोर फिर धमके मोरसे तीसरीको हयो प्रकार बहुतसे मोरोंमें इसका मन्वार कर सकते हैं। अन्तिम मनुष्यको भी इसका बीसा ही परम पड़ेगा कैसा पचनेको गो भोरका टीका लेनेसे पड़ता है।

टीका लगाने समय निम्नलिखित बड़े विषयों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। घास घासमें बसन्त रोगका प्रादुर्भाव न रहे तो छोटे छोटे दुर्बल बच्चोंको टीका लगानेकी जरूरत नहीं। पेटमें दबं होता हो, अथवा किमो प्रकारका ज्वर रोग हो या कर्षभूज, पीया और कुष्ठिमें लताप मानम पड़ता हो, तो टीका लगाना उचित नहीं है। परन्तु देना जाता है, कि एक वर्षसे कम उमरके बच्चे ही विषय कर शोथका रोगने पाहाना होती हैं। इसविधि बच्चा यदि सुख और मजबूत हो, तो कुछ छोड़ी उमरमें ही टीका लगाना उचित है। डा० मिटन ( Dr Seaton ) का कहना है कि बच्चे बड़े नगरोंमें स्थ-स्थाय रहन गियको १११ महीनेमें ही टीका लगाना चाहिये। परे जाहान दुर्बल गियको २११ महीनेमें एक टीका लगानेका जब तक बिलकुल अनुप युक्त न हो, तब तक सभी बच्चोंको ३ महीनेमें टीका लगाना कर्षण्य है।

सुख और सबल बच्चे उन्निट टैगोसे भोर घटक करना उचित है। परन्तु भोर कुछ प्रथा रहता है। अथवा टोकेके पतने मोरसे टीका लगाना अच्छा नहीं। पथिक उमरके बालक घोर शानिहाबी परेसा जन उमरके बच्चेका जो भोर लभु है। नियोजनः खावे,

वती, चिकने और परिष्कार चमड़े वाले वस्त्रों के शरीर में ही सर्वोत्कृष्ट नीर पाया जाता है। साथ साथ यही नीर ले कर टोका लगाना ही प्रशस्त है। यदि उस तरहका वस्त्र न पाया जाय तो अन्त में रचित नीर में ही टोका लगाना पड़ता है। लेकिन यह जरूरी है कि प्रच्छन्न नीर जब तक न मिले, तब तक टोका बन्द रखना ही उचित है। एक परिष्कृत ततको कुछ चौर कर उसमें जो रस निकलता है, उसमें थोड़ा मनुष्योंको टोका लगा सकते हैं और भविष्य में थोड़ा मनुष्योंको टोका लगाने के लिये हाथी दाँतको बने हुए लीकके मुँह में रस लगा कर जो काम चल सकता है।

टोका किस तरह से लगाया जाता है, अब उसका संनिग विवरण यहाँ दिया जाता है। वादका ऊपरी भाग ही टोका लगाने की उपयुक्त स्थान है। इस स्थान के चमड़े को खोच कर उसे एक परिष्कार सुतीला योजन स्वच्छित छुरीके मुँह में कुछ टिका करके बंध देते हैं। वाद चमड़े को छोड़ देने पर वह नीर छिद्र स्थान पर रुक जाता है। फलतः चमड़े में योजन प्रवेश और शोधित कराना ही टोका लगानेका उद्देश्य है। एक स्थान पर टोका लगानेसे यदि वह न उठे, तो इस भागड़ाकी ड्र करके लिये प्रत्येक वादु पर ३ इंचकी दूरी पर कमसे कम तीन जगह टोका लगाना कर्त्तव्य है। मौकमें यदि नीर सूख गया ही, तो उसे पहने उद्य जल या वाष्पमें डाल कर सलाइके मुँह तक लगाये रखना चाहिये। बहुतेरे डाक्टर चमड़ेको समान्तर भावमें और छोटे आर्ड करके चौर देते हैं। कोई तो जेबल दुश्मनो भर भागमें अनेक बार भेद कर ही उनमें नीर लगा देते हैं। फिर अनेक डाक्टर ऐसे भी हैं जो भिन्ने हुए स्थानके चमड़ेको आर्ड करके काट डालते हैं। यथोक्त प्रकारका टोका लगाना ही डॉ० सिटनके मतसे सर्वोत्कृष्ट है। अच्छी तरहसे टोका लगाये जाने पर वह स्थान २३ दिनमें सूज जाता है। ३४ दिनमें लाल और कठिन हो जाता है और ५४ दिनमें इसके मध्यभाग पर कुछ सफेद फुंसो निकल आते हैं। इससे पीप निकलता है। आठवें दिनमें टोका ठोक प्रदम्या पर आ जाता है। नवें और दशवें दिनमें इसके चारों ओर लाल हो

का सूजन पड़ जाता है और ग्यारहवें दिनमें यह फुंसों में घोर भी फैल जाती है, मगर साथ भागही सूजन कुछ कम जाती है। चारों ओरके फुंसों हुए व्यागका घेरा लग भग १ इंचसे ३ इंच तक ही जाता है। यदि तेरहवें या चौदहवें दिनमें यह फुंसा सूजने लगता है और एक मनाइके भीतर एक टुक पर गिट पाया है। अर्थात् पचाप दिनमें ज्यादा जोरा रहने लगे पाता है। यदि यह स्थान गोल, पानोवन लोमगुन्य यह निम्न और विन्दुमय वा सूर्प आकार का होता है।

टोका लेने पर प्रायः जो चारों ओर कम्पना, पाकघट्ट की वियुक्तता और घमनभी गिराया फूलना आदि वादु द्रव देते प्रतीते हैं। यद्यपि वे मध्य उपद्रव उतने कटकर नहीं हैं, तो भी शरीरमें एक प्रकारकी घोरा मालूम पड़ती है। टोकेके प्राकृतिक उपसमापन के लिये चिकित्सा की जरूरत नहीं पड़ती। कभी तो टोका बहुत समय तक रह जाता और कभी शीघ्र ही सूज जाता है। जो टोका अच्छी तरहसे उठ कर नियमित रूपसे सूज जाय, वही वमन्तनिवारक है, अन्यथा इस टोका कोई फल नहीं।

प्रायः देखा जाता है, कि टोका कई जगह अधिकतर नहीं उठता है। इसकी कई एक कारण भी सकते हैं। पहला टोका लगानेवाले विशेष अभिज्ञ नहीं हैं और उपयुक्त परिमाणमें नोरका प्रयोग नहीं करते, दूसरा नारका अनुपयोगिता, तीसरा यंत्र और संस्कृताका अभाव। इसमें अनेक समय टोकाके निकलन नहीं होने पर भी यह अभिप्रेत फलोत्पादन नहीं करता। चौथा बहुत पुराने नीरका व्यवहार।

डॉ० सिटन साहबने परीक्षा करके कहा है, कि पूर्णरूपसे टोका लेनेका फल असम्पूर्ण टोकेकी अपेक्षा ३० गुण वमन्तनिवारक है और सबसे निरुद्ध टोका भा टोका नहीं लेनेकी अपेक्षा ४७ गुण वमन्तनिवारक है। और भी देखा गया है, कि टोका लेनेके बाद भी यदि शीतला रोग हो जाय, तो वह उतना मारामक नहीं होता तथा आरोग्य होने पर शरीरकी उतना विक्षत नहीं कर डालता।

एकवार टोका लिये जानेके बाद कितने दिन तक

६-६ की यक्ति रहती है, यह पात्र तक स्थिर नहीं हुआ है। जो कुछ हो, उस देना जाता है कि एक बार समस्त प्रोक्षित व्यक्ति फिरसे जो बभ्रुतोगाक्रान्त होते हैं तो यथातः हर वर्ष वर्ष में टोका लेना लयित है। टोकाके पक्षी तरह नहीं। हमने पर फिर भी टोका लेना पक्षुता है। कोई कोई डाक्टर तो हर तीसरे वर्ष में या हमने जो कम दिनों में टोका लेनेको समझा देते हैं।

टोकाके नीर लेना बहुत ही महत्वपूर्ण काम है। जिस बच्चेको टीतनाके नीर लिया जाय वह यदि छोटी ही पचवा उपर्युक्त पादि रोगोंमें प्राक्रान्त हो, तो बच्चे सब रोग हजारी बालकोंमें जिनके टोका लगाया जाता है, वैसे ज्ञाति है। एवो कारण सबने पहले लड़कियों माता पिताको कोई न कामका रोग है वा नहीं मनोमूर्ति ज्ञान कर लेने चाहिये। फिर कोई डाक्टर कहते हैं कि टोका दाएँ पक्षि मन्त्रादि नहीं होती।

मनुष्य पीर लेके बभ्रुतोगाके विषयमें मतभेद है। ३०-३५ वर्ष के हैं कि यह वयसमें पक्षी रोग है। परीक्षा करके देखा गया है, कि गौकी मनुष्य नीर द्वारा टोका लगानेसे उसे टीतना रोग हुआ है और पीछे उसको टीतनाका नीर से कर टोका लगानेसे प्रकृत जो नीरको मारने पसन्द हुआ है। यतः मनुष्य पीर जो टीना का टीतना रोग एक ही है। छोड़ें पादि भी इस रोगमें प्राक्रान्त होते हैं। छोड़ें कि नोरसे टोका लगाना भी मो-पीर मरीचा पसन्द है। कैलुचिपुतानके जटिलों में एक प्रकारका टीतना रोग था है। मिथिल विषयता यह है कि उस पक्षिकामें जो इसका प्रतिपादन करते हैं वा पृथ वेते हैं वे पक्षिकामें बभ्रुतोगाके प्राक्रान्त नहीं होती। भारतवर्षमें टोकाका प्रकार च गरीबी मायनकाम-में हुआ है।

प्राचीन कालमें भारतवर्षी गौ नीर पीर मनुष्य-पीर टीनामें किन्हीं एकके द्वारा कौनों लुकिना देवते टोका लगाते थे। इसके विषयमें बभ्रुतोगाके ज्ञान है—

‘बभ्रुतोगावर्षिके वाप्ये बभ्रुतोगा।’

तत्र बभ्रुतोगावर्षिके वाप्ये बभ्रुतोगा।

बभ्रुतोगे च बभ्रुतोगे बभ्रुतोगे च।

तत्र बभ्रुतोगे बभ्रुतोगे बभ्रुतोगे च।

(बभ्रुतोगे इत वाप्ये बभ्रुतोगे)

हेतुके ध्यानमें यहवा मनुष्यके बभ्रुतोगाके टीतना निवृत्तनी है, उससे हमको गंधके पदमायमें से कर मादुमूलमें प्रविष्ट करना चाहिये। यद्यपि वादुमूलमें जो रक्त निवृत्तनी, उससे साथ यह रक्त निकल कर एकोटकण्ठ उत्पादन करता है।

११ विद्युति, पर्यंका बिकरण, आद्या।

टोकाकार (स + पु + ) टोका करोति क-पञ्च । आद्या का यह जो हिमो प्रत्यया पूर्व विद्यता हो।

टोटा (दि + पु + ) उता हैमो।

टोपन—मुपमिह चंयंज वेपानिज्ज । १८२-१८३ में पाय में बहने कालमें नगरके निकटवर्ती एक छोटेने गाँवमें इनका जन्म हुआ था। टोपनके विनामाता पक्षक टरिद्रि है। टरिद्रिनाके कारण वे पुत्रको पढ़ानेमें पसन्द थे। इसलिए छोड़ीरी च बनेको पढ़ा कर उन्हें गिषा बन्ध कर देना पड़ी। गाँवका पचकाको पत्नी गोरनीय देव कर, बहुत छोटी उमरमें जो टोपन मूल छोड़ कर मैना विनायमें किसे काम पर भरने को गये।

जो जड़ विद्याके पक्षक गुप्त तस्वीका आविष्कार करनेके लिए उत्पन्न हुए थे उन्हें ये सब काम क्यों पसन्द नगने लगे ? कुछ दिनों बाद उन्होंने यह काम छोड़ दिया और सबके एक चारमानेमें काम करते हुए सन्तुष्टिका काम कोषमें गये। इन पक्षिकामें उन्हें ज्यादा दिन न रहना पड़ा कुछ ही दिनोंमें वे एक कार चानिसे काममें विधेय मन्त्रपत्र हो गये और मोक्ष जो सबे परकी है कि कल्पानेमें इन्द्रोनिवर निवृत्त हो गये। टोपन बड़े मध्याने साथ तीन बय तक इस कामको करते रहे। इस समय इनको काय कुम्भगतने कारण सबे हरको रत्न कल्पानेको विधेय नाम हुआ था। १८४० ई०में इन्धमादाके कुम्भगत सब कामिज प्रतिष्ठित हुआ कामिजके पक्षिकामें टोपनका चतुर्नोय बुधियायके देव कर उन्हें एक पक्षिकामें प्रोक्षित निवृत्त किया। कुम्भगत-उड-कामिज ही टोपनका प्रथम जन्मके देव कायके है। यही प्रविष्ट रत्नयनित् कुम्भगतके साथ टोपनको मित्रता हुई जो पीर परी रह कर उन्होंने बड़े परिश्रमके साथ पदाय विद्या-पक्षिकामें नामा पञ्जात पक्षिका आविष्कार कर जगतमें प्रजाति पाई।



वर्ष भर अध्यापकोंका कार्य करनेसे टोण्डलका ज्ञान और भी बढ गया। वे विज्ञानशालनको इच्छामे जर्मनी चल दिये। प्रिय मित्र फेड्लैण्ड भी इनके साथ गये थे। टानो मित्रोनि सारवर्ग विश्वविद्यालयके प्रसिद्ध अध्यापकोंके पास कुछ दिन रह कर अध्ययन किया। पोके उन्हेने स्वाधीनभावसे वैज्ञानिक तत्त्वोंका अनुसन्धान और चिन्ता करनेका निश्चय किया। वूनसेन आदि प्रसिद्ध अध्यापकगण वैदेशिक छात्रयुगलकी प्रतिभाकी देख कर विस्मित हुए थे, उन्हें यह खोकार कर पडा था कि अल्पायाम और अल्प समयमें दुर्गह वैज्ञानिक विषयोंकी सम्पूर्णतया सोख लेना, केवलमात्र आइरीस युवक टोण्डलके लिए ही सम्भवपर था। विश्वविद्यालयको पढाई समाप्त कर ये वालिनस्य सुप्रसिद्ध मैगनस परीक्षागारमें स्वाधीनतापूर्वक नाना वैज्ञानिक गवेषणाओंके लिए नियुक्त हुए। इनकी इस ममयकी अनुसन्धान और चिन्ताओंके फलसे ही इनके जीवनकी महती कीर्ति थी। इनके द्वारा आविष्कृत सुम्बक और आलोक-विज्ञानके सत्य आधुनिक विज्ञानकी अतुलनीय सम्पत्ति है, इस बातकी सभी स्वीकार करते हैं।

१८५१ ई०में टोण्डल जर्मनीसे स्वदेशकी लौट आये स्वदेशकी विज्ञान-मण्डलीमें ये विशेष आदरके साथ सम्मानित हुए थे और नाना वैज्ञानिक समालोचकोंसे इन्हे नाना सम्मानसूचक उपाधियाँ प्राप्त हुई थीं। कुछ दिनोंमें ये सुप्रसिद्ध "रायल इनस्टिटयूशन"में जड़-विज्ञानके आचार्य पद पर नियुक्त हो गये और विख्यात वैज्ञानिक फेड्लैण्डके पदत्यागके बाद उनके स्थान पर तत्त्वावधारकताका कार्य करने लगे।

चार वर्ष तक इङ्ग्लैण्डमें उपर्युक्त कार्योंमें नियुक्त रह कर १८५६ ई०में ये सुइजरलैण्ड चल दिये। सुइजरलैण्डके पार्वत्यप्रदेशस्व वर्षकी गतिका निर्णय करना तथा कठिन तुपारराशिका तरल पदार्थवत् प्रवाहित होनेके यथार्थ कारणको खोज करना, यही इनका उद्देश था। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सक्वलो टोण्डलके साथ थे और भौषण जनहोन पार्वत्य प्रदेशमें वैज्ञानिक वस्तुके परिदर्शन-कार्यमें सहायता पहुँचाया करते थे। कुछ टिन परिदर्शनादि करनेके बाद टोण्डलने स्वदेश

लौट कर तुपारराशिकी गतिकी सम्बन्धमें एक सम्पूर्ण नूतन पुस्तक लिख डाली। इस पुस्तकमें गतिकी सम्बन्धमें जितने भी कारण दिखलाये गये थे, आजकल वे सब विज्ञान सम्मत माने जाते हैं।

१८७२ ई०में टोण्डल अमेरिका पहुँचे। विज्ञानानुरागो मार्कीनीने प्रत्येक नगरमें इनकी विशेष अभ्यर्थना की थी। अमेरिका-भ्रमणके समय आप निश्चिन्त न थे; युक्तराज्यके प्रधान प्रधान नगरोंमें आपने विविध वैज्ञानिक विषयोंकी वक्तृताएँ दी थीं। इन वक्तृताओंमेंसे २५।३० तो लिपिवद्ध हैं और उनको भाषा अत्यन्त सरल है। विज्ञानसे सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति भी सहजमें वैज्ञानिक तत्त्वोंको समझ सकता है। टोण्डल केवल अपनी बुद्धिचिन्तिकी चरमोन्नति कर ज्ञान न होते थे, किन्तु जिससे विज्ञानानुरागो प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति स्वाधीन चिन्ता और गवेषणा द्वारा विज्ञानको पुष्टि कर सकें, उसके भी उपाय निकालते थे तथा दरिद्र वैज्ञानिकोंको हर एक विषयमें सहाय देते थे। अमेरिकामें आपने वक्तृता द्वाारा शकताओंकी पूर्तिके लिए कुछ छोड़ कर अवशिष्ट रूपोंसे अमेरिकाके कलौम्बिया कालेजमें एक छात्र-वृत्तिकी स्थापना कर आये। अमेरिकामें स्वाधीन भावसे चिन्ता और वैज्ञानिक अनुसन्धान करनेवाले योग्य छात्रोंकी अब भी यह वृत्ति दी जाती है।

अमेरिकासे स्वदेश लौट कर अध्यापक टोण्डल ताप-निवारणके विषयमें नाना प्रकार अनुसन्धान करनेमें नियुक्त हुए, और छोड़े छो दिनोंमें इस विषयमें अपना स्वाधान मत प्रकट किया इससे उनको ख्याति और भी बढ गई थी।

१८७६ ई०में ५६ वर्षकी अवस्थामें टोण्डलने लार्ड क्लडहामिल्टनकी प्रथमा दुहितिका पाणिग्रहण किया। इनका दाम्पत्य-जीवन बड़े सुखसे बीता। ज्यादा उम्रमें विवाह करनेसे प्रायः गार्हस्थ्य शान्तिभङ्ग होनेका डर रहता है, किन्तु इनका श्रेष्ठ जीवन बड़े आनन्दसे बीता था। यह टोण्डलने करोड़ बीस बाईस वैज्ञानिक ग्रन्थ लिखे हैं। इनका प्रत्येक ग्रन्थ सुन्दर और सरल है। सरल भाषामें ग्रन्थ लिखना, यह उनका एक प्रधान गुण

या घोर हम शुद्ध के कारण ही माबारक पाठकों के वि-  
पादरघोष में है।

अरायतु ही धर टीपूजनि शीप श्रीवर्गमें कुछ शरी-  
रिह कट पाया था। हमने मन्वुवर्ग शीर विद्विषयानि  
लोका था, हम टीपूजनि ध्यापक टोपूजको पच कुट  
कारा नहीं मिन सक्तता। परन्तु एक धाक्स्मिक कारणसे  
टोपूजको मारु हो गई। कुछ दिनोंके से माना प्रहारकी  
पोगाधीसे तत्कालक पा रहे थे, किन्तु चिकित्सकीय परा  
मयसे शारीरिक यन्त्रबादिसे निवारणार्थ नियमित रूपसे  
"भलक्रेट पाय मसनेमियम" काममें आते थे घोर पलित्त  
दूर करनीके निय आनी कभी दो एक मूट "होरन मोराप"  
ये मिया करते थे। एक दिन टोपूजको ज्योनि मूल्य  
ग्यादा "होरन" मिया दी जिससे उनको मृत्यु हो  
गई।

बहुतोंका कहना है, कि टोपूज ईश्वरको सत्ता पर  
विश्वास न करने से घोर न उनको ईसाई धर्म पर विगेष  
जवा हो गी। माइसेलमें लिखित "मिराजम" पाठिके  
बिबद लंघनी चलागिये पन्नी मोग इन्हें ईसाई धर्म का  
विरोधी समझते थे। चम्बोइकी डी० सो० एक०  
दवाबि पदच करते समय टोपूजकी धाम्निहताके  
निवर्धन किन्न लडा था किन्तु कोई पापलत कार्यकारो  
न हुई। टोपूजका कहना था कि "उच्छूङ्गन इच्छा  
पांका मोतिडे कपनी द्वारा हमन करन। मनुष्यका प्रथम  
कार्य है एक पापमहसिबो जो जितना हमन करेगी  
से उतनी ही पापमकारिबि निवृत्तकी होवेगी।"

टीन ( प० सु० ) १ एक रामायणिक श्रावु। मनु देवी। २  
मोईकी पतनी चहर जिस पर रतिका कनई की हुई  
रहती है। ३ मोईकी पतनी चरका बना हुआ बरतन।  
टीप ( हि० खी० ) १ दबाव, दार। २ इच्छा प्रहार।  
३ मचकी पिदाई। ४ टकार, भगि, शोर मन्द। ५  
घोरकी तान। ६ दूध घोर पानीका मोरा। ७ स्मरण  
रक्नेके लिये बिनी बालकी टाँक लंघनी क्रिया, मोट।  
८ दशादित्र। ९ डू डो, बिह। १० धम्मनी, मीनाका एक  
भाग। ११ म श्रीपू का एक दिन। १२ टिप्यन, कुङ्गना।  
१३ मच लकोर को मिया पल्लरकी टोपारमें ईटोंके  
कोड़ोंमें मचाया है कर महर्षिसे बनाई जाती है। १४

हाथीके शरीर पर लेप करनेको घोषण। १५ महाजनका  
एक कामज। इस पर वे धम्मके समय व्याजके बदलेमें  
मनाज खाति देने का इतरार सिखा लेते हैं।

टोपटाप ( हि० खी० ) दिवाबट ठाठ बाट।  
टीपन ( हि० खी० ) गाँठ, टाँका बहा।  
टोपना ( हि० कि० ) १ चापना, मसक्तता। २ इसका  
प्रहार करना घोर घोर टोबना। ३ खंचे स्वर्षे गाना,  
घोरही तान देना। ४ पंडित चर मिया, दत्र कर लेना,  
लिपु मना। ५ गजोकिडे विलमें दो पत्तीके एक पत्ता  
बोतना।

टीपू शाह—पाकटके एक प्रसिद्ध सुलतमान फकीर।  
इन्होंने मामामुमार मीमूके शासनकालमें प्रसिद्ध टीपू  
सुलतानका नामकरण हुआ था। टीपू सुलतानके पिता  
ईदरपनी हमको चम्बल भक्ति करते थे। पच मी टीपू  
शाहको कन्न पर बहुतसे फकीर भाया करते हैं। कर्नाटो  
भाषांमें टीपू शब्दका पच व्याप होता है।

टीपू सुलतान—मैमूरके राजा ईदरपनीके पुत्र। १७४८  
ई०में इनका लक्ष हुआ था। जिस समय मच्छेरापनी  
मराठो मीनाकी महायतासे ईदरपनीके बिबद मुच  
घोषणा की थी जिस समय ईदरपनी १०० चम्बोदि-  
यो की माय रघोर रात्रिमें शत्रुको भयसे भाग गये थे,  
उम समय टीपूको उम्य जुम ८ वर्षकी थी। ईदरपनीके  
परिश्रमका भाव टीपू भी महाप्राप्ति द्वारा कहे  
क्रिये मये थे। ईदरपनीको माय निवृत्तरा को ज्ञानी  
पर से हट गये थे। देरअन्ने देली।

जिस समय टीपूको उम्य १० वर्षकी थी, घोर ईदरके  
साय प घे जोंका शोर मुच चम रडा था, इस समय  
मुचक टीपू माइम मिया सहित मराजके चारों तरफ  
भूट मचा रही थी।

१७८०में प घे जोंक ईदरपनीके बिबद चलाकारक  
करने पर ईदरपनीने टीपू सुलतानको ५००० टैलन घोर  
१००० चराराको मीनाके माय कर्मन सेनोकी रोहनेके  
मिय भेजा था। ६ मीमूरकी इन्होंने कर्मन सेनो पर  
पात्रमय सिखा था इनके पात्रमयसे भोग हो कर  
प घे जनेनालयक ईदरने मलरोसे महायता मीनो  
की। उमक बाद ईदरपनी कन्न महादयपनीकी याहित

करनेके लिए आर्काटकी तरफ गये थे, उस समय टीपूने बन्दोवाम अनरोध किया था। उस समय टीपूके रणनी-पुण्य और कार्यकुशलताको देख कर अंग्रेजसेनानायक तक चमत्कृत हो गये थे। तिस दिन अंग्रेजसेनानायक आरनीकी तरफ गये, उस दिन हैदरने बहुतसो सेना टिक कर टीपूकी आरनो भेज दिया। आरनीमें हैदरका मुख्य अड्डा था। अंग्रेजसेनापति सर आयार कुटका सोल्लिए आरनो पर विग्रह लच्च था। १७८२ ई०में २री जूनको सेनापतिने आरनोके पास शिविर स्थापित किया। इस समय मौका देख कर टीपू अंग्रेजो सेना पर गोला बरभाने लगे। अंग्रेजो फौज घबरा गई। उस दिन टीपूकी जे जय हुई। सर आयार कुटको मद्राजमें पृष्ठप्रदर्शन करनेके लिए वाञ्छ होना पडा। २० नवम्बरको कर्नल हस्बर्टोनने पोनानीको तरफ सेना चलाई। टीपूने फरासीसो-सेनानायक लालिके साथ वृटिशसेना पर आक्रमण किया था। इस समय वे सर्वदा ही रणक्षेत्रमें रहते थे।

७ दिसम्बरको वीरवर हैदरअलोंने अपने तस्वुमें प्राणत्याग किया, उस समय चारों तरफ विपद् देख कर पूर्णिया और कृष्णराव नामक दोनों मन्त्रियोंने उनकी मृत्युसंवाद प्रकट नहीं होने दिया। हैदरके द्वितीय पुत्र अबदुल करीमको यह बात किसी तरह मालूम पड गई, वे दो सेनापतियोंकी सहायतासे पिट्टसिंहासन अधिकार करनेके लिए पडयन्त्र रचने लगे। किन्तु विपन्न मन्त्रियोंके कीशलसे शीघ्र ही पडयन्त्र प्रकट हो गया दोनों मन्त्रियोंने यथासमय विश्वस्त अनुचरके जरिये टीपूको पिशा का मृत्युसंवाद भेजा। टीपूको ११ तारोखको यह संवाद मिला था, देगे न कर शीघ्रही वे (१७८३ ई०की २री जनवरीको) पिट्टशिविरमें आ पहुँचे। उस समय तक भी सबको हैदरको मृत्युका समाचार नहीं मालूम हुआ था। टीपूने शामकी प्रधान प्रधान कर्मचारियोंको बुना कर एक सभा को। सभामें वे मन्त्रि वेशमें साधारण एक गलोचे पर बैठे थे। उनकी अवस्था देख कर सभी लोग चौंक पड़े। शीघ्र ही सबको हैदरअलौका मृत्युसंवाद मालूम हो गया। असाखीने टीपूको मसनद पर बैसनेके लिए अनुरोध किया किन्तु सूचतुर टीपूने

अतिगद्य पिट्टगोक प्रकट करके उन अनुरोधकी रजा करनेमें अवमर्षता दिखाई देना सूचतुर मन्त्रियोंके कीशलसे टीपू सुलतान हो गये।



टीपू सुलतान।

हैदरअलौके मृत्युसंवादको सुन कर अंग्रेज लोग महिसुर-राज्य पर आक्रमण करनेके लिए अभिनन्धि करने लगे, किन्तु अंग्रेज-राजपुरुषोंके मतभेदके कारण उन्होंने मौका और सुभोता खो दिया। टीपूने सुलतान हो कर प्रथमतः युद्धविग्रहमें मन न दिया था; उन्होंने कर्णाटकसे अपना तमाम दनवल हटा लिया, पश्चिम की तरफ सिर्फ एक दल फरासीसो सेना रही। जैशिमने सर आयार कुटको फिर मद्राज भेजा, किन्तु वृद्धसेनापतिने रोग और पथकष्टके कारण मार्गमें ही लोलामंवरण को। फरासीसो-सेनानायक वूसो भारतमें आये और १० अप्रीलको उन्होंने कुदालूरमें फरासीसो सेनाका आधिपत्य ग्रहण किया। समय पर टीपूकी सहायता पहुंचानेकी बात थी, उस समय अंग्रेजोंकी अवस्था बड़ी सङ्कटजनक थी। इसके थोड़ेही दिन बाद इंग्लैण्ड और फ्रान्समें एक सन्धि स्थापित हुई। वूसीने जो सेना टीपूके कार्यमें लगा रखी थी, अंग्रेजोंसे सन्धि हो जानेसे उसको हटा लिया।



टीपूके विरुद्ध प्रत्यक्षारण कर मर्के, बरन उन्हें, नाना फुडनवीसके साथ जो लन्देनि अभिमन्त्रि को गो, वर भी कोह देनी पड्यो। टोपूने जब देखा कि, क्रमग उनके सबविरुद्ध हुए जा रहे हैं, तब वे भी क्रमग, उक्त जिन लोने लगे।

वे अपने राज्यके पसिमवामो हिन्दु शेर ईसाइयोंको सुसलमान धर्ममें दोषित करने लगे। कोहगरे 'हजारी' पत्रिचामियोंको एकद कर हलोंनि उनको टामत्व गृहना में बह किया: सभी भीत और चकित हुए। कोह भी इनके विरुद्ध कुछ बात कहनेके लिए माहसो नहीं हुआ। १७८५ ई०में टोपूने अपने राज्यके उत्तरदिशि पर टटि डालो। उनको सेनाने वृत्त टिनसे मराठामे युद्ध नहीं किया था: महाराष्ट्रराजकी मोमान्त्वित घटम स्वक हिन्दु-प्रजा सुसलमान धर्ममें टालित हुई गो, इसलिये उनका सेनाटल काफो घट गया। इस समयमें धमत्याग-को अपेक्षा प्राणत्याग करना योग्य समझ कर वृत्तमें ब्राह्मणानि आत्मत्याग कर ली थी। इसमें नानाफुडनवाम अत्यन्त विचन्द्रित हुए थे। उन्होंने देखा कि, निजाममे महायता लेना पड्या है। टोपूने जिन तरहको सेना संग्रह की है और वर भी फरासीसी सेनानायकके द्वारा गिचित हुई है, ऐसी टगामें उन पर आक्रमण करना महज नात नहीं है। नानाफुडनवोसने अ यो जामि महा-यता मांगा। किन्तु मद्रलूरकी मन्त्रिके अनुसार वे मध्यस्थ रहनेके लिए बाध्य थे, इसलिये नानाफुडनवोसने माहाय्य-प्रार्थी हो कर यातगिरके पास निजाम और वरारके माधोजी भोसलेसे सुलाकात को। यथा परस्परमें टोपूके विरुद्ध युद्धघोषणा और मद्रिसूर राज्य विभाग कर लेनेके लिए एक मन्त्रिपत्र स्थिर हुआ।

१७८६ ई०में टोपूने न सालूम क्या सोच कर उन लोमिसे मन्त्रिकी प्रार्थना की। १७८७ ई०में मन्त्रिपत्र पर हस्ताक्षर किये गये। मराठोंका कुछ राज्य और आठनि धापिम भिले। टोपू भी ४५ लाख रुपये देनेके लिए राजो हुए जिनमें ३० लाख रुपये नगद और बाकीके रुपये एक वर्षमें देनेका नियय हुआ। टोपूने क्या सहसा ऐसी मन्त्रि की थी, तत्कालीन किसी भी इतिहासमें इसका जिक्र नहीं है और न टोपू ही कुछ निश्चय गये हैं। किन्तु

यह मन्त्रि जगादा दिन तक नहीं रहो: निजामके साथ फिर घनका भगडा मरन लो गयो। १७८८ ई० तक निजाम और टोपू सुलतानमें परस्पर युद्ध चलता रहा था। उक्त वर्षके प्रन्तमें निजामके पास मण्डूर-सरकार समर्पण कर देनेके लिए वरि पाटने कमान सेनापोयेनी भेजा। पहले कुछ बह होनेके सम्भावना ही थी, किन्तु निजामने मण्डूर समर्पण करनेमें कुछ भी आपत्ति नहीं की। समन्वितजनको मन्त्रिके अनुसार, देर घोर टोपूने निजाम का जितना भूभाग अधिग्रह किया था, निजामने उनसे पुनरुत्तारके लिए अंग्रेज मध्यमन्त्रमें सेना प्रार्थना की। इतनेमें भी मन्त्रि न हो कर अन्तिम टोपू सुलतानके पास प्रार्थनाके लिए निजाम एक पुरान घट्ट हथियार दे कर उनके पास एक पूत भेजा। इतने जा कर देखा कि, दिन दिन अंग्रेज लोग लम्बाराज्य हुए जा रहे हैं, इसमें आगे कम अपने धर्म और मानदो रक्षा भी न कर सकेंगे। यह परस्पर एकतासुवने बह हो कर अन्तरालके लिए उनके विरुद्ध हम मोगोंको प्रत्यक्षारण करना चाहिये। मचतुर टोपू सुलतान वैवाहिकसुवने बह हो कर मित्रता स्थापन करनेके लिए मध्यम हुए। किन्तु निजामने उनका यह प्रस्ताव पचास किया। वे नाच धरमें लक्ष्मी देनेके लिए राजो न हुए। अथ फिर वास्पर घोर गतता हो गई। टोपूने समन्वितजनको मन्त्रिको निजामने दोषा-वह ठहराया: क्योंकि उनमें टोपूका नाम और लम्बता स्वीकृत नहीं हुई थी। इधर इन्वैण्डके राजपूरुयाने निश्चय किया कि, भारतमें अ य जाका गतिज्ञानताके विषयमें प्रवणशत रहनेको जरूरत नहीं: इसलिये टोपू भी युद्धका आयोजन करने लगे।

मद्रलूरकी मन्त्रिके अनुसार त्रिवाङ्गुराज्य अंग्रेजोंके आश्रित है, ऐसा स्थिर हुआ। त्रिवाङ्गुर-राजने उन समय चोलन्दाजोसे कोरङ्गनूर और आधाकाट नामके दो नगर खरोटे थे। टोपू उन दो नगरोंको मांग बैठे; उन्होंने कहलवा भेजा कि, 'जब वे दोनों नगर हमारे आश्रित कोचीन-राजके अधिकारभूक हैं, तब चोलन्दाज लोग उमें किसी हालतमें भी वेच नहीं सकते। घटे नाट कर्ष-वालिसने त्रिवाङ्गुराजके पक्षका समर्थन करनेके लिए मद्राजके अंग्रेज-पक्षक हलैण्ड माहसको अनुमति दो,

खिन्तु इस बातको न मान कर वे त्रिबाहुर राजने कपडे मांग बैठे ।

त्रिबाहुर-राजने पहले पौर समुद्र मज्जबर्तो पपने राग्यको उत्तर भीमाका दुर्ग तुड़वा दिया । यह तब टीपू त्रिबाहुर जय करनीक लिए विजय प्रयत्न कर रहे थे, यह तब त्रिबाहुर गंगुल दुर्ग का बिधो मो तरफने गलुके पानेका माय नहीं था । यह मोका देव कर टीपूने देना कहाई ।

१०८० ई०के २८ दिमम्बरको रकोले त्रिबाहुर पर पाहमल किया । मद्राज मवर्गेय उसका कुछ मो प्रति बाह न कर मका । त्रिबाहुर राज्य पर पाहमल होनेका मन्दाप दा का नामाफुलनीपने टापूके बिहड बुध करने के लिए १०८० ई०के मार्च मासमें प पेशीने मन्धि कर मो । जुलाई मासमें निजामके माह मो ठमो पमिप्रायसे मन्धि हुई । बड़े नाट कर्नवालिसने मद्राराजके सेनापति मिहोत्र पर भीय परिपालनका भार दिया । १०८० ई०की २६वो मईको १३०० लुटन नेना के कर प पेश-सेनापति त्रिबिनापकीके बन टिजे । २१ जुलाईको सेनाने कोयम्बारादमें लपकित हो कर कुछ दुर्ग पर बला कर लिया । मिहोत्रके मोतर हो भीतर पालघाटचेरी पौर त्रिन्दिगुल प पेशीके पबिकार में था मया । यह वह बिपुलबाहिनी महिपूरको भीमा पर लपकित हुई । टीपू सुल्तान भी त्रिबिना नहीं थे, उन्होंने बिपुल बिक्रमसे राजकी मति रोख कर प पेश सेनापति कर्नेल जारड पर पाहमल किया । प पेश सेनापतिको पीठ दिवा कर भाग जाना पडा । वहां तो वे प भी देना टीपूका कुछ करन मका पर लख मल धार लपकनमें जल ल हास्टकिने टीपूके सेनापति दुबेन पेशीको परास्त कर दिया ।

दर महाराष्ट-सेनाने हम्पदका प पेशी सेनाके पाह मिल करके टीपूके पन्थ सेनापति बटरडन प्रमाम् पौर कुतुब लुटानीकी पराजित कर धारधार दुर्ग पबि-कार कर लिवा, दर निजाम सेनाबहित कपालदुर्ग पौर बहादुरबन्द पबिकार करनेकी पपनर हुए, इकी हकार पारी पेशने पाकाल हो कर भा इफरतिपु टीपू बिना तरड बिबिन्न नहीं हुए । वे पचप पटल काहक-

ने भाग लजपोला पचमखल कर म्पुकी गतिको रोकरने ली । बड़े नाट कर्नवालिसने अब देखा कि टीपू मद्रज में बयोभूत नहीं होगे पौर उनको बग जगना भी पामाम्प बात नहीं है तब कर्नेल जय हो कुदचितमें पबतरण किया । वे महिपूरको गिरिघाट सुमनोघाट पार गये, बहादि लखने कोयलने धगनूर धारा का । वहां टीपूके माह पौरतर बुध होने ली । १०८१ ई० २० मार्चको रातको म्पुपेशने पकम्पात् दुर्ग पाहमल किया । निजामकी प्राब १०००० सेना था कर लार्ड कर्नवालिसको माप मिल गई । बड़े नाटने ठम मजतो नेनाके माह श्रीगपलनकोतरड बाठा ली । प पेश-सेनापति पबबरकम्पे लखने माह टेनेका पपनर हुए । इस विषय बिपटके समय टीपूने अब देना कि मद्रा गति लकके बिहड था रही है त्रिमका प्रतिरोध करना लखनी हैमियतसे बाहर है तब वे पपने ममदा सेना को पकन करके राजधानीके रजाय धकवान् हुए । १३ पपेशको बरिधेरा मामक ब्यानमें म्पुपेशीके माह भीपथ पपेश हुए ।

१३ पपेशकी रातको बड़े नाटने दुर्ग पबिकार करने ली बिटा ली । १४ पपेशको दुपहरके समय पौर तर बुधके बाट टीपू पराजित हुए । खिन्तु नाट कर्न वालिसके जयनामसे विजय कुछ नाम नहीं हुआ । लन को सेनाका रमन निबट यई इमलिए लख देकि लोटना पडा । इस समय भीका दा कर टोप में लनको मानवाङ्किया पौर भपकार लुट लिया ।

उस समय बड़े नाट बड़े लडटने पर पवे । उस समय यदि प पेश सेनापति कर्नल मिटल, परहराम राव दाग परिपालित महाराष्ट नेनाके माह था कर महायता न करने तो गावद ठम पमिपालनसे बिभोट कर न पाले । कुछ भी का, दूनरी बाग्के बुधसे मो कुछ पल नहीं हुआ । पचको बाग टीपूकी पारी तरडके पाह म्प करनीक पमिप्रायने परगुरामराव पार कर्नल मिटल न बहम म्पद सेना जे कर लख पबिम निजामने पपनी पौर प पेशी सेना नि कर उत्तर-पूर्व तथा लार्ड कर्नवालिसने महाराष्ट पौर हरिपञ्चके माह मज्जमान पाहमल किया ।

टीपू भी महीसाहसे उनके प्रतिरोधमें विशेष यत्नवान् हुए। उन्होंने अपने प्रधान प्रधान सेनापतियोंको राज्य और सम्मानकी रक्षाके लिये उत्तेजित करके उपस्थित वीरव्रतमें नियुक्त किया।

इधर लार्ड कर्नवालिसने असीम माहससे नन्दोदुर्ग, सुवर्णदुर्ग, रायकोट आदि दुर्गोंको जय किया।

१७८२ ई०के जनवरी महीनेमें कर्नवालिस निजाम और महाराष्ट्रसेनाके साथ मिले और ५ फरवरीकी औरङ्गपत्तनमें उपस्थित हुए। ६ फरवरीकी बम्बईके अंग्रेज सेनापति जनरल आक्षरक्रव्हेने आ कर उनका साथ दिया। ३तने दिन बाद टीपू विचलित हुए, उनके पिताने कहा था "टीपू राज्यकी रक्षा न कर सकेगा।" अब वह बात इनको याद आई। इस समय टीपूने अपने एक मित्रसे कहा था कि, "हम अंग्रेजोंको देख कर नहीं डरते, पर हमारी हीनहारकी सोच कर हमें डर लगता है।"

२४ फरवरीको सुलतानने लेफ्टेनाण्ट चामारम् नामक एक वन्दी अंग्रेज-सेनापतिके जरिये सन्धिका प्रस्ताव करा कर लार्ड कर्नवालिसके पास भेजा। पहले बड़े लाट सन्धिके प्रस्ताव पर सहमत न हुए। अन्तमें कोडगके राजाका सुभेता सोच कर सहमत हुए। कोडग के राजाने जनरल आक्षरक्रव्हेको काफी सहायता दी थी। तथा वे टीपूकी प्रतिजिधांसा वृत्तिसे भी अत्यन्त डरते थे। कुछ ही ही, इस समय कोडगके राजाके लिए ही सन्धि हुई। २६ तारीखको टीपूने अपने दो पुत्रोंको अंग्रेज-शिविरमें भेजा। अंग्रेज पक्षकी सभी लोगोंने महामहामदन और सम्मानकी साथ सुलतानके पुत्रोंका अभिनन्दन किया। सन्धिपत्रके अनुसार टीपूकी दोनो पुत्र अंग्रेज शिविरमें ही रहें। १८ मार्चको सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हुए। टीपूने अपना आधा राज्य छोड़ दिया, जिसमेंसे मलवार, कोडग और वारमहल अंग्रेजोंके हिस्सेमें आया। इसके सिवा युद्धव्ययके हिसाबमें टीपूने ३३ लाख रुपया देना मजूर किया, जिसमें आधा नगद और आधा एक वर्षको भीतर देनेका वायदा हुआ। निजाम और महाराष्ट्रने अपने अपने राज्यके निकटवर्ती भाग लिए।

इसके बाद ४१५ वर्ष तक विशेष कुछ गड़बड़ी नहीं हुई। टीपूने राज्यकी उन्नति और प्रजाकी सुखसमृद्धिके लिये अनेक प्रयत्न किया था। इस समय उन्होंने नाना देशोंमें बहुत अर्थ व्यय करके अमंख्य फारसी, संस्कृत और दक्षिणात्यकी स्थानोय भाषाओंमें लिखित बहुत प्रकारकी हस्तलिपि संग्रह की थी।

१७८८ ई०में निजामके तथा महाराष्ट्रके सेनापतिगण गुमभावसे टीपूके साथ पह्यन्त्र करने लगे। टीपूने भी पूर्वीक सन्धिसे अपना अत्यन्त अपमान समझा था। अब तक वे मौका ढूँढ रहे थे, किन्तु अब उक्त सेनापतियोंकी प्ररोचनासे उत्तेजित हो गये।

अंग्रेजोंकी इस पह्यन्त्रका ज्ञान मालूम ही गया। १७८८ ई०के १७ मईको लार्ड मर्गिंटन गवर्नर जनरल ही कर आये। टीपू सुलतानकी गतिविधि पर उनकी पहले दृष्टि पड़ी। उस समय यूरोपमें अंग्रेज और फ्रांसियोंमें वीरतर युद्ध ही रहा था। इसलिये टीपू भारतमें आया हुई फ्रांसोसी सेनाकी सहाय ही हस्तगत करने लगे। फ्रांसोसी कर्मचारिगण टीपूकी देशीय सेनाको अच्छो तरह युद्धकी शिक्षा देने लगे। टीपूने अपने नौसेनापक्षको माहाय्यार्थ मरिचगहरमें फ्रांसोसी शासनकर्ता जनरल मन्टारटिककी ३०,००० सेनाके लिये लिख भेजा। हैद्राबादमें फ्रांसोसी सेनानायक सूमी रेमण्ड १५,००० सेना ले कर ठहरे हुए थे, वे भी जायकान्तमें टीपूकी सहायता करनेको सहमत हुए। इधर मिन्धिया-राज्यमें फ्रांसोसी वीर डो-बडन ४०,००० सेना और ४५० तोपे ले कर अपेक्षा कर रहे थे। वे भी जातोय गोरखकी रक्षाय अंग्रेजोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये उत्थत थे।

लार्ड मर्गिंटनने अंगरेजोंका विपद नजदीक आता देख मन्टालके प्रधान अंगरेज सेनापति लाई चारिसकी हुकम दिया कि वे बहुत जल्द सेनाकी ले कर औरङ्गपत्तनकी ओर रवाना हो जाय।

उस समय मन्टालमें केवल ८००० सेनाये थीं। वहाँका कीपागार भी बिलकुल खालो था। अतः मन्टालके अपासरोके इस समय टीपूसे युद्ध ठान देना उचित न समझा। किन्तु बड़े लाटने उन सबोंकी युक्ति न सुन

कर धोत्र जो मरमरमया करमे का कादेश दिया। इधर उक्ताने वैदरपणेके मन्त्री मानिर कम सुम्नको ( मौर पाममको ) टोपुके विवह उक्त जित किया।

इस समय मन्त्रीको भेदोपिगत इतिहास उक्तित प। इह मारतमें पा काय इसका कोई पता नहीं। उम्मे मन्त्रीमें भीष्ट ही काईकाय करमेके पमिमायमे बड़े काटने पवने मारि कर्मके पार्यर विविमन्त्रि ( भावो इतिहास चाप विनिगदल )को ३३ दन पदातिक पौर ३००० मिपायी दे कर मन्त्रात्र मित्र दिया। पाकिर टीपू के भाव एक मीमांसा करनके लिये से स्वय मन्त्रात्र पदु है। कर्मके होमदल बड़े लाटका पत्र पा कर पदमे हीने टोपूक पाम करते मने से। इस पत्रमें यको लिखा गया था कि जिनमे परामोकिर्षिने टोपूका कुछ मन्त्रम न रहे।

टोपूने कर्मके साथ सुनावात नहीं की। कर्मके मन्त्रा कि 'पयेकोक साथ पदमे को धन्वि हुई है, वही कहित है। इस मयेक मन्त्रमें पदमे इमिया ही मित्र है।' इधर उक्ताने परायोयी मन्त्रमें पदको सेना मित्रके लिय तथा पदमानके राजा कमानयाइको भारतमें पा कर कम हुइकी बीपना करमेके लिय पदगोप किया।

टीपूको पिसा मरोमा का कि पदसीमोग्ग मोत्र ही इतिहास करके भारतमें पदापेक करेगी पौर तो क्या जेदोपिगतमे ही लनका पदमवहार कम रहा था। किसी तरह एक पत्र उनके मन्त्रुकीके हाथ पड़ गया। पयेकोमि तुरकिपदानके सुनतानमे पद मित्रका कर टोपूको होमियाए को जानिको कहा। किन्तु टोपूने उस पर श्चुसिप मो न किया। १८८८ ई० ११ फरवरीको २१००० पयेकी सेना पौर १०००० मित्रामकी सेना केडरमें कप्त ही। इधर पदम उक्तुपदमे जनरल हार्ट पोर हाटनिंके पयोन ६००० मन्त्र पदमर को रही थी। १३ मार्चको जनरल हरिस कमरु पा पदुके। १६ मार्चको काङ्गारायका मोमा पर महादोर नामके कान पर पौरतर बुइ हुआ। इस हुइमें टोपूको २००० सेना नष्ट हो गई।

पय सुवतान पयमी पुनो हुई सेना मे कर प्रबल

पराक्रममे मन्त्रुकी पतिरोके लिय पयसर हुए। २० मार्चका मामकको मामक कान पर टीपूको सेना परा जित हो गई। इस पराजयमे टोपू मो मोत पौर मन्त्री लाइ को गने से पिताको पिटाइक बाकी मानो लक्ष्मण पयसरमें उनके स्पृतिपट पर उदय होमे लगे। वे तुरंत ही राजधानीको मोट पावे। यहाँ पा कर सुना कि कर्मके बहुतसे कर्म पारो उनके विवह पदुपय कर रहे हैं। इस समय से पौर मो इताय हो गये। किन्तो किर्षिने कर्मके पुन पयेकीमे लम्बि करमेके लिय कहा। पदमे तो वे लम्बि करमेके लिय कुछ कुछ गात्रो मो हुइ से, पर अब सुना कि, पयेके सेनापति हरिस सुसीका नामके काईरी नदोके एक गुड टोपूको पार कर चुके हैं पौर मोत्र ही के पौरहुपतान पर बहाई करेगी, तब उनके हुइदमें पदमेके प्रस्तावने स्रान नहीं पाया। इधर हाट हरिमने—सेनाको रसद निवटो जा रही है देख कर तुरंत ही पौरहुपतान पर बाना कर दिया। पयेकीमि भारतकर्ममें सेना मोपय युद्ध कर्मो मो नहीं किया था। ६ पयेमेसे युद्ध मारक हुआ। तोही दिन टोपूने— न मानू मन्त्रा मोच कर—पदमेका प्रस्ताव कर मेजा। किन्तु पयेके सेनापति हरिस २ करोड़ रुपये पौर भावा राज्य मांग बैठे। इसके प्रत्युत्तरमें टोपूने कर्मकी मन्त्रा कि—'इस वृत्ति प्रस्तावको स्वीकार करमेको पयेका बीरो की भाति पदु की माप्यनीय है। हम बीरके पुत्र हैं, सोरो को तरह पयमे सम्मान रचा करना जानते हैं।' उस दिन इको ने पयमे प्रवान प्रवान कमान पौर कर्मकारियो को सुना कर कहा—'घात्र इस पयमे जानीय सम्मान पौर धर्मको रक्षाए पाक विमन्न न करेगी। जो इस कावमे इरती की, ये धमी इस कानमे प्रवान करे।'।

सुवतानके लडाइ मने कपलमे समो प्राको को ममता काइ कर पौरतर हुइमें प्रवृत्त हुए। पयेको ने भारतमें सेना मोपय युद्ध न देखा था पौर न सुना ही था। इस युद्धमें दोनो पयको कितनो सेना नष्ट हुई इसकी कीई खमार नहीं। २री मईको पुन तोडरनेको त कारिया हुई। ३रो मईको पार हजार सेना गङ्गाके को पार कर पुग को तोडने लगे। टोपू सुवतान स्वय बीरकेपमें



सज कर टुंग को रक्षा करने लगे। किन्तु टीपू पर विधाता हो उलटते थे, उनको सब चेष्टाओं अर्थ हुईं। अधिकार दुर्ग वासो सायंकालके प्रारम्भमें आत्मसमर्पण करने लगे। दुर्गमें प्रवेश कर शत्रुओं ने देखा तो वीर टीपू सुलतानकी अपने सम्मान और गौरवके रक्षार्थ शय्या पर हमेशाके लिए सोते पाया। कोई कोई कहते हैं कि, जिस समय टीपू दुर्ग-रक्षार्थ स्वयं युद्ध कर रहे थे, उस समय पो छेसे किमी व्यक्तिने गुप्तभावसे उनको मार दिया था।

कुछ भो हो, अंग्रेज सेनापतिने वीरमदसे आज दुर्गमें और प्रपत्तनके दुर्गमें प्रवेश किया। यथासमय मझासमारोहसे मुसलमान-प्रशालुभा। टीपू सुलतानकी मृत-देह समाधिस्थ की गई। वीरनादसे अंग्रेजोंको तोषे टीपूके सम्मान और और प्रपत्तनविजयकी घोषणा करने लगीं। साथ ही महिसूरसे जणस्थायी मुसलमान राजत्वका भो अन्त हुआ।

इस युद्धमें जयलाम करके बडे लाट मनिंटन वेलिम्नि उपाधिसे विभूषित हुए। इसी नामसे ये भारत-इतिहासमें प्रसिद्ध हैं। और प्रपत्तनदुर्ग जय करके अंग्रेजोंने नगद २ करोड़ रुपये, ८२८ तोपें, ४२४०० पोतल और लोहेके गोले तथा ६५०० मन बारूद पाई थी।

लालबाग नामक उद्यानमें हैदरके समाधि-मन्दिरमें टीपूकी कब्र हुई। टीपू अत्यन्त अत्याचारो, चञ्चल और अस्थिर प्रकृति होने पर भी इनमें बहुतसे सद्गुण थे। ये नित्य नवीन पसंद करते थे। इनके प्रासादसे बहुतसे संस्कृत ग्रन्थ, कुरानोंका अनुवाद और हिन्दुस्तान विशेषतः मुगल-साम्राज्यके इतिहास-मूलक बहुतसी हस्त लिपियाँ मिली हैं, जो कलकत्तेके पुस्तकालयमें सुरक्षित रखे गई हैं। वे देशीय शिल्प और पण्डितोंका विशेष समादर करते थे।

टीपू सिर्फ पुस्तक-अंग्रह करके ही ज्ञान्त नहीं हुए थे। ये स्वयं भो विद्वान् थे इन्होंने फारसी भाषामें दो ग्रन्थ भो लिखे हैं—एकका नाम है “फरमान बनाम अलीराजा” और दूसरेका “फत-एल् मजाहिदीन।” इसके सिवा ये अपने जीवनकी बहुतसी घटनायें लिख गये हैं।

टीपूका परिवारवर्ग पहले ब्रह्मरमें स्थानान्तरित हुआ था, किन्तु उससे इष्टिग गवर्मिण्टका सुभौता न हुआ, इसलिए सब कलकत्तेमें लाये गये। इस समय टीपूके वरानके सभी लोग इष्टिग गवर्मिण्टकी इच्छा पाते हैं और कलकत्तेके रसापगला वा टालोगञ्ज नामक स्थानमें रहते हैं।

टीवा ( हि० पु० ) टोला, भोटा।

टोम ( अ० स्त्री० ) खेलनेवालोंका दल।

टोमटाम ( हि० स्त्री० ) १ वनाव, मिंगार, मजावट। २ पाखंड, तडक भडक।

टोला ( हि० पु० ) १ पृथ्वीका तलमें ऊँचा भाग, भोटा। २ मट्टो या बालूका ऊँचा ढेर। ३ छोटी पहाड़ी।

टोस ( हि० स्त्री० ) ठहर ठहर कर होनेवाली पीड़ा, असक चसक।

टोसना ( हि० स्त्री० ) ठहर ठहर कर दृष्ट उठना, कसक होना।

टुंगना ( हि० स्त्री० ) १ कुतरना, कीमल पत्तियोंको दातसे काटना। २ कुतर कर चवाना।

टुंच ( हि० वि० ) झुट तुच्छ, टुप्पा।

टुटा ( हि० वि० ) जिसके हाथ न हों, लूला।

टुंड ( हि० पु० ) १ छिन्न इत्त. वृक्ष पेड़ जिसको डाल टहनो कट गई हों, टूँठ। २ पत्तियोंसे रहित वृत्त, विना पत्तेका पेड़। ३ कटा हुआ ज्ञान, लूला। ४ एक प्रकारका प्रेत। प्रवाद है कि यह प्रेत बोडें पर चढ़ कर अपना कटा हुआ सिर प्रागे रख कर रातकी निकलता है।

टुंडा ( हि० वि० ) १ टूँठा, जिसमें डाल टहनो न हो। २ जिसके हाथ न हों, लूला, लुंजा। ३ एक सींगका बेल, डूँडा। ( पु० ) ४ वृक्ष मनुष्य जिसके हाथ कट गये हों, लूला आदमी। ५ एक सींगका बेल।

टुंडो ( हि० स्त्री० ) १ सुदक, भुजा, बाहुदंड। ( वि० ) २ लूला जिसे हाथ न हों।

टुइयाँ ( हि० स्त्री० ) १ तोतेकी एक नीच जाति, सुग्गी। इसकी चोंच पीली और गरदन बैंगनी रंगकी होती है। ( वि० ) २ नाटा, डौना।

टुइल ( अ० स्त्री० ) एक तरहका सूती कपड़ा। यह

बहुत सुनावम होतो है पोर दुनके पच्छे पच्छे कुती,  
 कसोत्र रखादि बनसि है।  
 टुक (हि० वि०) किरिन्तु तनिक अर, घोड़ा।  
 टुकड़वा (हि० पु०) १ बर पर रोटीका टुकड़ा मांयि  
 बान्ना पादमो भिगारा। (वि०) २ तुच्छ नोच। ३  
 पक्कना निर्धन बहुत गरीब, कगाल।  
 टुकड़महारि (हि० पु०) १ टुकड़मवा रेनो (प्लो०)  
 २ टुकड़ा मालिनेका काम।  
 टुकड़तोड़ (हि० पु०) पयायित मनुष्य बड़ पादमो  
 मो दूमरीका दिवा बुधा टुकड़ा का कर रहता है।  
 टुकड़ा (हि० पु०) १ कण्ट किर पग रखा। २ किर  
 पादिसे बाप बिमल पग भाग बिग्या। ३ रोटीका  
 टुकड़ा घाम भोर।  
 टुकड़ी (हि० प्लो०) १ कण्ट, कटा टुकड़ा। २ कण्ट  
 का टुकड़ा, घाम। ३ मसुदाइ मडनो। ४ पण  
 पलियोका दल मुइ प्रता। ५ मेभाका एक भाग।  
 टुकरी (हि० प्लो०) डान्नी रेना।  
 टुकरी (हि० प्लो०) १ एक कण्टा जो मज्जमरी तरकका  
 होना है। २ टुकरी।  
 टुकना (हि० वि०) १ मुँहमें रक कर धीर रीति  
 कुँवना बुभना। २ लुगामी काना, पाग करना।  
 टुका (हि० वि०) तुच्छ नोच।  
 टुका (हि० पु०) गराध रेनो।  
 टुकरी (हि० प्लो०) भारीको पतनी लनो, छोटी टोटी।  
 टुकुरिया (हि० वि०) कोड़ी पूँजीका कम  
 पोकातका।  
 टुकुर (हि० पु०) कोटी वंडुडी, कोटी कास्ता।  
 टुकुर (हि० प्लो०) १ पण्ट, कोठी बाकी। (वि०)  
 २ चरेना। ३ कमजोर दुबलापतना।  
 टुकुरा (हि० प्लो०) कमसे मड़ा बुधा एक बाजा।  
 टुकी (हि० प्लो०) १ नामि, टोटी। २ टुकुरी डनो।  
 टुकुरक (म० पु०) टुकुर, एकव्ययण्ड कायति कं-क।  
 १ पयौबिधोय, एक किरिवाका नाम। २ प्लोनाकडल  
 सोनापाठा पानु। ३ कण पलिगडल काका काका  
 विड़। (प्लो०) ४ टुकुरोडल (वि०)। ५ पण्ट, घोड़ा।  
 ६ कुर, कडोर।

टुकुरा (म० प्लो०) १ टुकुरोडल। २ पाठ।  
 टुकुरा (हि० पु०) एक प्रकारका योग। इसमें मूयस्त्रान  
 पदिइ होत पोर हमसे साइ धातु मो गिरता है।  
 टुकुरो (हि० प्लो०) घाम जो पससलो तुकमान अर।  
 माना एक परदार घोड़ा।  
 टुकुरा (हि० पु०) डालका प्रथमान टुकुरोका पयना  
 बिस्सा।  
 टुकुरो (हि० प्लो०) टुकुरोका पयका भाग तिमको  
 पलियां छोटी पोरसुनावम रोतो है।  
 टुकुरा (म० प्लो०) ताममूको हच, सुमको।  
 टुका (हि० पु०) एक सयनेका नाम।  
 टुका (हि० पु०) वड़ रनोट जो बगये पाने पर नि  
 दो जाती है।  
 टुरा (हि० पु०) कण टुकुरा, डनो दाना।  
 टुरा (हि० पु०) पूरको बहान पोर पासाममें जोने  
 दाना एक प्रकारका बम।  
 टुरका (हि० वि०) टुकुरा रेनो।  
 टुरा (हि० प्लो०) सुदनागं ने बाबु निकलनेका गण्ड, पान  
 नीबी पाबाक।  
 टुरा (हि० वि०) १ कोमल पलियांको दांतके काटना,  
 कुतरना। २ कुतर कर पचाना।  
 टुरा (हि० पु०) १ मण्डल सको, टिड्डे पादि कोड़ोंके  
 मुक्क पानी निकलो दूर दो पतको मसिबा। ये दालको  
 तरइ पतको होतो हैं। ये एक बँसा कर रक पादि  
 चुसने हैं। २ वड़ पतका पचयव जो ओ गिड, दान  
 पादिको दानमें दानके कोयर्क मिरे पर निकला रहता  
 है, मो म, मो सुर।  
 टुरा (हि० प्लो०) १ रूँ रेनो। २ नामि टाड़ी। ३  
 गात्रर मूनी पादिको मोत्र। ४ कियो मनुको दूर तक  
 निकलो दूर नोक।  
 टुरा (हि० पु०) कण्ट टुकुरा।  
 टुरा (हि० पु०) १ कण्ट, टुकुरा। २ रोटीका टुकुरा।  
 ३ रोटीके अर मामीमें एक भाग। ४ भिगा, भोच।  
 टुरा (हि० प्लो०) १ टुरा कर पयग जो मडा बुधा  
 पंग कण्ट टुरा। २ टुराकेका नाम। ३ मूयने कुरा  
 बुधा वड़ गण्ड या बाक जो पदिसे किराए पर निव  
 दिया जाता है।

टूटना ( हि० क्रि० ) १ खण्डित होना, भग्न होना टुकड़े टुकड़े होना । २ किसी अङ्ग के जोड़का उखड़ जाना । ३ चलते हुए क्रमका भङ्ग होना, मिलासिना बंट होना जागे न रहना । ४ भूषटना, भुक्तना । ५ टल बांधकर आना पिल पड़ना । ६ आक्रमण करना एकशरणा घावा करना । ७ अकस्मात् प्राप्त होना, हठात् कहो में आ जाना । ८ प्रयत्न होना, अलग होना । ९ किसी स्थानका गत के अतिकारमें जाना १० चोण होना, टूटना पड़ना । ११ फलोंका एकत्र करना । १२ शरीरमें टूट होना । १३ निर्वन होना, कंगाल होना । १४ बंट हो जाना । १५ ज्ञान होना, टोटा या घाटा होना । १६ कपड़ेकी धाँसी पड़ना वस्त्र न होना ।

टूटा ( हि० वि० ) १ भग्न, खण्डित, टुकड़े किया हुआ । २ क्षीण, गिथिल कमजोर, दुबला । ३ धनहीन, दरिद्र, कंगाल ।

टूमोटी ( हि० स्त्री० ) चुंगो ।

टूम ( हि० स्त्री० ) १ धाम्भूषण, गहना । २ सुन्दर स्त्री, सुवस्त्रात औरत । ३ धनो स्त्री, मालदार औरत । ४ चालाक और चतुर मनुष्य । ५ धका भटका । ६ व्यह, ताना ।

टूरनासेण्ड ( अ० पु० ) इनाम मिलनेवाला एक खेल ।

टूसा ( हि० पु० ) खण्ड, टुकड़ा ।

टूमो ( हि० स्त्री० ) जो फल अच्छी तरह दिला न हो, कनी ।

टें ( हि० स्त्री० ) तीतकी बीली ।

टेंकिका ( हि० स्त्री० ) तालका एक भेट ।

टेंगड़ा ( हि० पु० ) टेंगा डेनो ।

टेंगला ( हि० स्त्री० ) टेंगरा मछली ।

टेंगर ( हि० स्त्री० ) टेंगा डीको तरहको एक मछली । यह टेंगरमें कुछ बड़ा होती है ।

टेंगरा ( हि० स्त्री० ) भागवर्षके अनेक स्थानोंमें विद्यमान कर अवध, विहार और बंगालके उत्तरके जलाशयोंमें पाई जानेवाली एक प्रकारकी मछली, ( *Macrones vittatus* ) इसकी गरदन शरीरके सब अङ्गोंमें बड़ी और पीछेकी पल्लो होती है । इसके शरीरमें सोडरा नहीं होता और सुँडके किनारे मन्दी मूँके होती है ।

इस मछलीके कई भेद होते हैं । सर्वोक्ति शरीरमें लोच कांटे होते हैं, दो अंगल बगलमें और एक पोठमें । जब यह झुड़ ही कर मनुष्योंको विधतो है तो बहुत देर तक वे टट में बचेन रहते हैं । सबसे बड़ी विलक्षणता इस मछलीमें यह है कि यह सुँडमें गुनगुनाहटके जैसा एक प्रकारका शब्द निकालती है । इनके मांसा और शायतनमें बहुत विमिश्रता है । कोई कोई ४।५ इंच और कोई ८।१० इंच लम्बी होती है । मन्दाजको टेंगरा मछली काली किन्तु बंगालकी रूपयके ममान मफेद रङ्गकी होती है । इसका स्वाद बहुत बढ़िया होता है ।

टेंबुना ( हि० पु० ) घुटना ।

टेंबुनो ( हि० स्त्री० ) टेंबुना डेनो ।

टेंट ( हि० स्त्री० ) १ ऊपर पर पड़ी हुई धोतीको मडलाकार ऐंठन । इसमें मनुष्य कभी कभी कपया पैमा भी रखते हैं । २ कपासको ट्रेण्ड । ३ करोन । ४ एशियाई शरीर पर एक प्रकारका घाव । वह घाव देखनेमें तो सूखा मानूस पड़ता है, पर उसमेंमें समय समय पर रक्त बहा करता है ।

टेंटड ( हि० पु० ) टेंड डेनो ।

टेंटर ( हि० पु० ) आँखके डेने परका उभरा हुआ मांस जो रोग या चोटके कारण होता हो ।

टेंटा ( हि० पु० ) एक बड़ा पल्लो । इसकी चौंच एक विलम्बकी और पैर डेढ़ हाथ तक ऊँचे होते हैं । इसके समूचे शरीरका वण चितकवरा पर चौंच काली होती है ।

टेंटार ( हि० पु० ) टेंटा डेनो ।

टेंटी ( हि० स्त्री० ) १ करील । २ करीलका फल, कचड़ा ।

टेंटु, ( हि० पु० ) श्लोनाक, मोनापाठा ।

टेंटुवा ( हि० पु० ) १ गला, घेंटू । २ अंगूठा ।

टेंटे ( हि० स्त्री० ) १ तीतकी बीली । २ वर्षकी बकबाद, हुज्जत ।

टेंड ( हि० स्त्री० ) टेंड डेनो ।

टेंडको ( हि० स्त्री० ) १ वह वस्तु जो किसी वस्तुकी लुटकने या गिरनेमें बचानेके लिये उसके नीचे लगे रहती है । २ तानिको डण्डोंमें लगे हुई लुनाईकी एक लकड़ी ।

यह समस्त देहनिधि मगई जानो है त्रिभिर्नामा त्रयोम पर न गिरे ।

देह ( वि० स्त्री० ) १ त्रिभि भागी बन्धुको पड़ाप या टिकाए रहनेका प्रथा चाँद, घम । २ महार, पीठनी को पात्र । ३ पात्र, पत्रमय । ४ बँठनेका अर्था बन्धुता । ५ दहन कर्म, यह, दठ बिद । ६ मन्धर, पाटन, धान । ७ धार इ व गाये जलिका मोतम पर भायो । ८ छोटी पहाड़ी, अर्था टीका

देहचन्द्र—सर्वरहस्यवापा एक लिप्युक्ति, इससे विनाका नम जपराम था । इहनि छ मास में युगवर्ष इरक नामक पत्रकी रचना की है । इन ग्रन्थमें पादिने पत्र तक कामका इतिहास भरा है । ये पालमगीरके जमशेहि विद्यमान हैं ।

देहचन्द्र मुगी—एक लिप्युक्ति । इसका जनिता मन्धरीय नाम बनारस का । अथिब जोनि पर भो इनको बनाई हुई सभी विनाके इहमें हैं । यों तो इसनि बहुत सी रिताके रही हैं, परर पररने मुहाबरीके रिताके "बहार व जान" पोर "नबानि सन मानिरे" मगइर हैं । "सभी रिताके १०६८ ई०में पोर दूसरी १८२२ ई०में ली गई है । यह दो पुस्तकके सिवाये "पञ्चताम प्रदरत" नामक एक पोः भी पुस्तक बना गये हैं ।

देहन ( वि० पु० ) किसी मारी चीजको टिकाए रखनेके लिये लकड़े कीबिने मगई जानेशकी बन्धु, पटहन रोह ।

देहना ( वि० क्रि० ) १ महार मिला पायव बनाना । २ ठहराना । ३ महारिद लिये घामना । ४ हाबका महारा मिला । ५ एक प्रकारका प्रयोग जान बनाना ।

देहनी ( वि० स्त्री० ) देहन देनी ।

देहर ( वि० पु० ) १ टीका अर्था घुम । २ छोटी पहाड़ी ।

देहरी ( वि० स्त्री० ) देहा रनी ।

देहनी ( वि० स्त्री० ) यह ग्रन्थ त्रिभिने कोई पात्र समई या गिराई जानी है ।

देहान ( वि० पु० ) १ देह, चाँद भम । २ अर्था बन्धुता या भभा । इस पर दोभा दाँडवाना परना बोला यह कर कुछ काम तक पाराम मिला है, परम होडा ।

देहाना ( वि० क्रि० ) १ किसी बन्धुको ने ज्ञानमें लडाए टिनेके लिये घामना । २ महारा टिनेके लिये घामना ।

देहानी ( वि० स्त्री० ) यह लोनेको लीन जो पवित्रे को रोहनेके लिये लगे रहती है जिसे ।

देही ( वि० पु० ) १ प्रतिष्ठा पर दृढ़ रहनेवाला । २ पुरा पदी, बटो त्रिरी ।

देहुषा ( वि० पु० ) १ कने रूप घृतको लपेटनेका चरये का तबना । २ यह वन्धु त्रिभिने कोई चीज महार जाती है । ३ मगईको उपर ठहराये रहनेको एक मन्धरी । यह सभी समयमें काम पातो है अब इहने एक पवित्रा निहान लिया जाता है ।

देहुरो ( वि० स्त्री० ) १ यह सूया त्रिभिने फिरको लयो रहती है । इसमें घुमनेके लिये दूर दूर का घुम पत्र पर निपटना जाना है, मून जाननेका तबना । २ रफो "ट रिवा तबना । ३ तागा लोचने पोर निहाननेका चमारोना सूया । ४ मूर्ति बनानेकाजाना एक पोजार । इसने ने मूर्ति का तब मार पोर विरना काने है । ५ लुनाइकी एक फिरकी । यह किसकी डाइना एक हो पर मारुनगा कर बनाई जाती है पोर इसकी मोहनमें समय परमाया रहता है । ६ मालारको मगई जो गोप कामका रहना बनानेक काममें पातो है । इसने तार लोच कर फटा टिया जाता है ।

देहनी—सम्प्रापक सप्याम त्रिनामगत इसी नामकी प्रयो दारो लहमोमका एक महार । यह पचा० १८ १० १० पोर टेमा० ८४ १४ पु० इह रोइने ५ मोमको दूरो पर पवन्धित है । देहनी राज्यके प्राचीन पधियति रघुनाथ देवक आरकमें कोई कोई इने रघुनाथपुरम्भो कहते हैं । मोहम ल्या प्राय ०५१० है । वर्तमान मन्धर के राज्याभिषेककी यादगारोमें यहा टाकनहान बनाना गया है ।

देचिन ( प० पु० ) एक प्रकारका चाँद । इसमें एक पोर माया पोर दूसरी पोर धिब पोर टिबरो जोतो है ।

देह ( वि० पु० ) १ बहना देहापन । २ लटपटी पिक पाबड़ ।

देहबईना ( वि० स्त्री० ) बन्धु देहा केडोम ।

देहा ( वि० स्त्री० ) १ यह कुटिल जो एक मोहन म

गया हो। २ जो समानान्तर न गये हो, तिरछा। ३

कठिन, मुश्किल, पेचीला। ४ उदात्त, उग्र, उज्ज्वल।

टेढ़ई ( हिं० स्त्री० ) वक्रता, टेढ़ापन।

टेढ़ापन ( हिं० पुं० ) टेढ़ाई देवो।

टेढ़े ( हिं० क्लि०-वि० ) पेचीला।

टेना ( हिं० क्लि० ) १ तज करनेके लिये रगड़ना। २ मूढ़के बानोंको खड़ा करनेके लिये रेंठना।

टेनिस ( अ० पुं० ) गेंदका एक खेल।

टेनिसन ( लॉर्ड अलफ्रेड )—१८वीं शताब्दीके सर्वश्रेष्ठ अंग्रेज कवि। १८०८ ई० ता० ३ अगस्तको निनरूनन

गायक अल्फ्रेड मोरिसो नामक स्थानमें आपका जन्म हुआ था। आप अपने पितामाताके १० पुत्रपुत्रियोंमें चतुर्थे पुत्र थे। आपके पितामह जॉर्ज टेनिसनने, जो पार्लियामेंटमें सदस्य थे, अपने पुत्रको त्याग दिया था, इस कारण कविके पिताको अपने जोधनमें अपने ही कोशिशमें धनोपासन करना पड़ा था। लिनकलनगायक ग्युग्नामला भूमि, छोटी छोटी नदियों और वन, उपवन आदिकी प्राकृतिक शोभाको देखते देखते बचपनमें ही टेनिसनमें कवि-प्रतिभा जाग उठी थी। यही कारण है कि आपने बाल्यावस्थामें ही कविता बनाना प्रारम्भ कर दिया।

१८१५ ई०को बड़े दिनकी कुष्ठरोगके बाद आप लाउघके विद्यालयमें भर्ती हुए। इस विद्यालयमें पांच वर्ष अध्ययन करनेके बाद आप मोरिसो की लौट आये और अपने पिताके पास पढ़ने लगे। आपके पिता स्वर्गीय धर्मसम्प्रदायके एक उच्चस्थानके प्रोफेसर थे—उनके स्कूलमें नाना प्रकारके ग्रन्थोंमें परिपूर्ण एक पाठाला था। यहाँ रहते समय बालक टेनिसनका साहित्यक साधक इतना घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था, कि कवि वाचनका सृष्टि संवाद सुन कर आप अत्यन्त दुःखित हुए थे। अपने वनमें जा कर एक काष्ठके ऊपर खोद दिया—“वाचन आज मर गये।” टेनिसनको पहलसे ही साहित्य-चर्चाका शौक था। बारह वर्षकी उम्रमें आपने ६०० पंक्तियोंका एक महाकाव्य रचा था, चौदह वर्षकी अवस्थामें अमिताभर कन्दमें एक नष्टक लिखा था। ये दोनों ग्रन्थ आपने उस समय रचें थे। टेनिसन-परिवार श्रीसत्तुमें समुद्रके किनारे रहा था, इस कारण

कविकी बाल्यकालमें ही समुद्रकी शोभा पसन्द थी। कवि एवं समालोचक मि० फ्रिज गेरन्डने ठीक जा कहा है कि “आपका कविकी स्वाभाविक प्रति लिनकलन-गायकके प्राकृतिक मौल्यमें ही प्राप्त हुई है।”

१८२७ ई०में प्रोफेसर, चार्ल्स और एलफ्रेड इन दोनों टेनिसन भ्राताभ्रातृनि मिल कर एक मास “दो भाइयोंकी कवितावली” इस नाममें एक पुस्तक निकाली। चार्ल्स और एलफ्रेड की कविताएँ अत्यन्त हीनके कारण पुस्तक का नाम “दो भाइयोंकी कवितावली” रखा गया था इस पुस्तककी वेब कर इतने बड़े पाठक लाभ उठाया था। मिण्टनके विश्वविद्यालय महाकाव्य “पराडाइस लॉट”के रचनेमें कुल ५ पाठ्य प्राप्त हुए थे, इसकी तुलनामें टेनिसनका लाभ बहुत ज्यादा है।

१८०८ ई०के ३० अगस्तके दिन चार्ल्स और एलफ्रेड अंग्रेजके ट्रिनिटि कालेजमें प्रवेशिका परीक्षामें उत्तीर्ण हुए। दोनों भाई जरा नाजुक प्रकृतिके थे, पहले ये किमोंसे मित्रता न कर सके थे। किन्तु अब कुछ ही दिनोंमें इनको कई एक प्रतिभासम्पन्न युवकोंसे मित्रता हो गई, जिनमें ड्रेड, लॉर्ड हाफटन, जेम्स स्पेडिं, डब्ल्यू० एडवर्ड टमसन, एडवर्ड फिज्जेरल्ड आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यक्ति भी थे। १८२८ ई०के जून मासमें “टिमबुकटू” नामकी कविता पर टेनिसनकी चान्सेलरका पदक प्रप्त हुआ था। इसी समय आपने कुछ गीत-कविताएँ लिखी थीं जो कि प्रशंसनीय हैं। १८३० ई०में इनमेंसे कुछ कविताएँ प्रकाशित हुईं। कवि वाचनकी सृष्टिके बाद छ वर्ष तक अंग्रेज जातिकी काव्यरमका आस्ता नहोँ मिला था, अब इसी वर्षके युवक कविके काव्यालोकसे परिचित हो लोग अपनेकी धन्य समझने लगे। नवीन कविका कल्पनाके सुकुमार भाव, कन्दकी मधुर गति और चित्रकलाका अपूर्व समावेश देख कर सब ममत्त गये कि इङ्ग्लैण्डमें फिर एक प्रतिभावान् कविका अभ्युदय हुआ। तदानीन्तन सुप्रसिद्ध कवि कोलरिजने आपकी कविताओंकी बहुत ही प्रशंसा की, साथ ही जहाँ जहाँ कन्दपतन हुआ था, उसका भी दिग्दर्शन करा दिया।

१८३० ई०में टेनिसन और एलफ्रेड दोनों अंग्रेज



मेरी' नामक एक नाटक प्रकाशित किया, सर हेनरो आरमिडने इसका अभिनय किया था। १८७३ ई०में 'हेरल्ड' और १८७८ ई०में 'The Revenge' प्रकाशित हुआ। १८८३ ई०में ग्लाडस्टोनके साथ आप भ्रमणकी निकले। इसके बाद ग्लाडस्टोनने प्रधान मन्त्रीकी हैसियतसे आपको लार्डकी उपाधि दी। १८८४ ई०में आपका ऐतिहासिक नाटक "Becket" प्रकाशित हुआ। १८८२ ई०में 'अकबरका स्वप्न' नामक एक बहुत ही बमटा कविता प्रकाशित हुई। १८८२ ई० ता० ६ अक्टोबरकी रातकी ८४ वर्षकी अवस्थामें आपको मृत्यु हो गई।

टैनी ( हि० स्त्री० ) छोटी छँगलो।

टैपारा ( हि० पु० ) टिपारा देखो।

टैबुल ( अ० पु० ) मेज।

टैम ( हि० स्त्री० ) १ दीपकको ज्योति; दीपको गौ। ( पु० ) २ समय, वक्त।

टैमन ( हि० पु० ) सपका एक मेद।

टैमा ( हि० पु० ) छोटी अटिया जो कटे हुए चारकी बनाई जाती है।

टैर ( हि० स्त्री० ) १ गानमें ऊंचा स्वर, तान, टीप।

२ पुकारनेको आवाज, बुनाहट। ३ निर्वाह, गुजर।

टैर—मैनपुरी जिलेके एक कवि। ये १८३१ ई०में जन्म ग्रहण किया था।

टैरक ( सं० त्रि० ) केकर पृषोदरादित्वात् साधुः। वक्रवचु, ऐं चा, भेंगा। इसके पर्याय—वलिर, केकर और केदर है।

टैरना ( हि० क्रि० ) १ तान लगाना जोरसे गाना। २ पुकारना, बुलाना। ३ दूरा करना, निबाहना। ४ व्यतीत करना, बिताना, गुजारना।

टैरवा ( हि० पु० ) हुक्केको नलो।

टैरा ( हि० पु० ) १ अंजोलका पेड़, टैरा। २ वृक्षस्तम्भ, धड़, तना। ३ शाखा। ( वि० ) ४ ऐं चालाना, टैप।

टैराकोटा ( अ० पु० ) १ पकी हुई मटोके जैसा रङ्ग, घूंटकोछिया रङ्ग। २ पकी हुई मटो। इससे मूलियां, इमारतमें लगानेके लिये बेलवूटे आदि बनते हैं।

टैरो ( हि० स्त्री० ) १ पतलो शाखा, टहनो। २ वक्र

मृत्वा जिनसे दरः बुना जातो है। ३ एक पोधा। इसकी कनिया रङ्गने और चमड़ा सिभानेके काममें पातो है। ३ वक्रमको कनो।

टैरो ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारका सरसो, लनटो।

टैलिग्राफ ( अ० पु० ) यह शब्द tele और grapho

इन दो शोक शब्दोंसे उत्पन्न हुआ है; इसका मौलिक अर्थ है दूरनिधि। जिनमें किसी यन्त्राटिक द्वारा बहुत दूर तक इशारेसे संवाद आदि भेजे जाते हैं, उसको टैलिग्राफ ( वा तार ) कहते हैं। बहुत प्राचीनकालमें अग्निके द्वारा मटोनादि बहुत दूरवर्ती स्थान तक भेजे जाते थे। उसके बाद इस कामके लिये नाना प्रकारकी पताका, लालटेन, नौलोचिराग आदि दृश्यमान चिह्न तथा बन्दूककी आवाज, भेरीध्वनि, घड़ी आदि टक्कावाद्य व्यवहृत होने लगे। जिन चिह्न द्वारा मञ्जित किया जाता था, उसका अर्थ पहलें ही दोनों पक्षवालोंको मालूम रहता था। इसलिए इन मञ्जितों द्वारा कुछ निर्दिष्ट संख्याके सिवा और कुछ अभिप्राय व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिलहाल विजनी है द्वारा ही सर्वत्र टैलिग्राफ कार्य सम्पन्न हुआ है, इसका द्वारा हर एक तरहका संवाद आतंगीत्र बहुत दूर तक स्पष्टरूपसे भेजा जाता है। इसका विवरण नाटिनवातावृद्ध अन्धमें देखो।

यद्यपि ताड़ितवार्तावहके द्वारा संवाद भेजनेके उपाय अति आधुनिक है, किन्तु सङ्केत द्वारा निर्दिष्ट संख्यक संक्षिप्त अभिप्राय दूरस्थानमें व्यक्त करनेकी प्रथा बहुत प्राचीन है। इसकी प्रायः ६ठी शताब्दीमें पहली शतुके आगमनको जतलानेके लिए उच्चस्थान पर अग्निके निशान देनेकी प्रथाका उल्लेख पाया जाता है। एस्कि लम् द्वारा वर्णित आगामेम्ननके वृत्तान्तके पढ़नेसे मालूम होता है कि, द्रयनगरकी ध्वंससंवाद श्रेणीवत् अनलमाला द्वारा बहु दूरस्थ शीसमें विज्ञापित हुआ था। यही टैलिग्राफ द्वारा संवाद-प्रेरणकी सर्वापेक्षा प्राचीनतम घटना है। स्काटलैण्डमें एक गुच्छे काठकी अग्निसे अश्रेणोंके आनेकी आशङ्का, दोनोंकी जलनेसे यथार्थ आगमन और बराबर बराबर चार अग्नि जलनेसे शतुश्रेणोंकी संख्या बहुत ज्यादा है—पिसा मालूम होता था। रातको इस तरहकी अग्नि

बहुत दूरसे दिखाई देती थी और दिनको पूरे दिनों हमारे सामने पड़ जाती थी । प्रखलित समानता हर एक पर हमारा विचार कर घबरा एक बार दिया कर और फिर दिखा कर हमारे किये जाते थे । यही महोत्सव बड़े मंगल पादिके द्वारा पाचार निर्देश करनेकी प्रथा थी । १८८७ ई० में इन्होंने डाक्टर रबाट हुक (Dr Robert Hoak) जिसे स्तम्भारि पर बड़े बड़े पंचरीको प्रतिष्ठति एक बार दूरसे स बाद भोजनेका एक तरकीब निखाना रातकी पंचरीके बड़े बुकने धानोक द्वारा महोत्सवपन करनेका तरीका निखाना । फलनः उन पंचरीको पाका एक लोम समझ नहीं पाते थे । इसके पाय २० वर्ष बाद पाल्पुलने (J. L. Moulton) द्वारा महोत्सवकी भाँतिका एक उपाय उद्घाटन किया ; किन्तु यीही इन दोनोंके जोड़े भी अधिक दिन तक नहीं रहते । १८८३ वा १८८४ ई० में सि० चारि ( M. Chapple ) जिसे टेलिवाफका आविष्कार किया था वही इस समय फरासीसी गवर्नरके द्वारा वहाँ प्रचलित हुआ था । इसका पाचार एक घण्टे T की भाँतिका था । इसलिये वही कभी भीम इसको दो टेलिवाफ मो कड़ा करते हैं । एक सीधी गड़ी हुई लकड़ीके कोर पर दूसरी एक पाकी लकड़ीके दोनों कोरी पर दो लकड़ियाँ और लगी होती है इन लकड़ीके टा क्रीका रन्धीके बीच कर नागाफय पवम्पायों में रक्ता जा सकता है । इस तरकीबे प्रायः २३३ प्रकारके मित्र मित्र पाकारों द्वारा २३३ प्रकारके द्वारा किये जाते थे । इन हमारे नि पचार वा पड़ एक गन्द वा बाक्य लगी हो सकते थे । गन्द वा बाक्य पुस्तकोंमें लिखे रहते थे और महोत्सवकार स प्नाके पाचारने समझा पर्ये नगाना पड़ता था । फरासीसी विद्वानके समय इन टेलिवाफके द्वारा बहुत समय न बाद भोजि जाते थे । दूर बीचकी सहायताके बिना पालि न्धि जाते थे । बिसे होशने एक तरकीब किड दिवाये जाने पर लगे समय परबती होशने भी बड़े बिड दिवाया जाता था, समये फिर अन्य खानमें—इसे तब शोभ पति दूरबती खानमें बाद पड़ च जाय करता था ।

इसमें कुछ संख्याएँ निर्दिष्ट थीं । प्रबन्ध संख्याका एकवर्ध पर्ये पुस्तकमें लिखा रहता था जो पाचनकतानुसार टुकड़े बना पड़ता था ।

सि० गेम्बलने टेलिवाफमें एक बड़े काठकी सोल्टके कर प्रभोत्सवमें कर दरवाजे स बुक होते थे । ये किवाडू इच्छानुसार कोसे और बन्द किये जा सकते थे । इनको माना प्रकारने खोलने और बन्द करनेको पवम्पायोंके द्वारा माना प्रकारके महोत्सविये पचरादि उचित होते थे ।

१८८६ ई० में पचरी पचन इच्छानुसारमें लण्डनमें होकर तब टेलिवाफ लाइन स्थापित हुई थी । यह टेलिवाफ गियोके टेलिवाफका ईपत्तुप्यान्तर मात्र था । कहा जाता है कि इससे द्वारा ० मिण्टमें होकरसे लण्डनको संवाद भेजा जाता था । १८९६ ई० तक ऐसा टेलिवाफ ही व्यवहृत होता था ।

इसके बाद बहुतोंने नानाकप परिवर्तन वा लक्षण साधन करके नाना प्रकारकी तरकीबीका निखालना शक किया । फरासीसी लोग इस समयमें एक खुटो पर दो या तीन हत्तियाँ लगा कर टेलिवाफ करते थे ।

पूर्वोक्त नाना प्रकारके सहेनीका पनेक प्रकारके परिवर्तन करके सम प्य प्रकारके टेलिवाफ इच्छानुसार और दूरीयमें प्रचलित हुए थे । इस प्रकारके महोत्सविके दूरक सहायिके साथ स बाद पादान प्रभोत्सवमें पवम्पायोंकी सहायता था । बहुत समय इसको पाचनकता पति पचरिहाये हो जाता थी । जपानमें महोत्सव करने के लिये प्रधानत नाना वर्षोंके मित्र मित्र पाकारोंको पनाकाय व्यवहृत हुआ करता थी । खानभानके टेलिवाफकी तरह उसमें भी स प्ना पादि निर्दिष्ट थी और पर्ये पुस्तक द्वारा पर्येजा निरव होता था । १८८८ ई० में इन्होंने फ्रांस में वेना विमानमें एक पुस्तक लिखी । उसमें प्रायः ४० लाख महोत्सव द्वारा प्रकट करनेको तरकीब लिखा थी । किन्तु यदि कोई न बाद एक ३०० न प्प्याने बाहर होता तो उस टेलिवाफने क्षाय नहीं चलता था । यह टेलिवाफ मर होम प्पुल्लम ( Sir Horn Popham ) ने बनाया द्वारा पचरि विर करनेको प्रकाशनाई । इन्हीं न तब महोत्सव दिवरक बिड कर एक पुस्तक खनकतोका भोजो । यदि यह पुस्तक



नगहनमें परिवर्धित और मंस्कृत हो कर कपो थो ।

कुछ भी हो, ऐसे टेलिग्राफ बहुत समय सज्ज और मविधाजनक होने पर भी कभी कभी अस्यष्ट और अकर्मण्य हो जाता था । वायुराशि कुम्भकामय होनेसे दूरस्थ मङ्कित दीखता नहीं था । बहुत दूरके शब्द आदि भी सुनाई नहीं पड़ते थे । रम्भोसे दूरस्थ स्थानका घण्टा बजा कर तथा जल वा वायुपूर्ण नलमयोग करके मङ्कित किगे जाते थे । किन्तु ऐसा टेलिग्राफ बहुत समय अमभव हो जाता था । आखिर ताडित अर्थात् विजलीका आविष्कार और धातुके तारों द्वारा इसका अतिगोचर स्थानान्तरमें परिचालनव्यवहार आविष्कृत होने पर टेलिग्राफका युग परिवर्तन हुआ । फिलहाल सर्वत्र इसी तरीकेसे टेलिग्राफ होता है । वेतारके टेलिग्राफका भी आविष्कार हो गया है ।

ताडितवार्तावह और वेतारका तार देखो ।

टेलिग्राम (अ० पु०) वह संवाद जो तारके द्वारा भेजा जाता है ।

टेलिफोन (अ० पु०) यह शब्द शोक टेलि=दूर और फोनो=श्रवण करना, इन दो शब्दोंमें उत्पन्न हुआ है । इसका अर्थ दूर-श्रवणयन्त्र है, अर्थात् जिसके द्वारा दूरसे सुना जाय वह यन्त्र ।

दो बाम, कागज वा टाँके चोंगाका एक तरफसे कागज, चाम या धातुकी पत्ती द्वारा आच्छादित करके मध्यस्थलमें एक लम्बा सूत वा तार बाँध दें । इस तरहके दो चोंगोंमेंसे एकमें वात करनेसे दूरमें वह ह्वह्व सुनाई पड़ती है । द्वितीय चोंगको कान पर रखना चाहिये । यह एक प्रकारका सरल टेलिफोन है । इसमें थोड़ा दूर तककी वात सुनाई पड़ती है, पर ज्यादा होनेसे शब्द अस्यष्ट हो जाते हैं । इसका नासिकास्वर होता है । नीचे ताडितप्रवाह द्वारा जो टेलिफोन होता है, उसका मंत्रमें वर्णन किया जाता है ।

एक चम्बुकदण्डके ऊपर रेशमादि अपरिचालक सूत्रमण्डित ताँबिका तार लपेट कर उस तारके दानो छोर एक तरफ दो बन्धनी स्फुके माथ कसे होते हैं । पीछे वह तार लपेटा हुआ चुम्बक एक नलके बीचमें स्थापित होता है और उसके किनारे एक बहुत पतली लोहेकी पत्ती

चुम्बकके अति निकट वह रहती है । लोहेकी पत्ती काष्ठके चोंगके भीतर चारो तरफसे कमा होता है तथा उसको बीचमें चुम्बकको दूरमें तरफ खूना रहता है ।

टेलिफोन द्वारा वातचोत करनेके लिए हम तारके दो बन्धनोंको जरूरत होता है, एक कहनेका और दूसरा सुननेका । प्रथमतः उक्त दोनों नलकी रेशममण्डित ताँबेके तारसे संयुक्त करना होगा । एक चुम्बक पर लपेटे हुए ताँबेके तारके एक छोरको उक्त बन्धनोंके द्वारा एक लम्बे तारके साथ संयुक्त करके दूसरेको एक स्क्रूमें कस देना चाहिये । अन्य दो स्क्रूओंको या तो अन्य तार द्वारा परस्पर संयुक्त करें या प्रत्येकको छुद्र तार द्वारा पृथिवीके साथ संयुक्त कर दें । इनमेंसे एक चोंगसे मुँह लगा कर वात कहनेसे अन्य व्यक्ति दूसरे चोंगमें कान लगा कर ह्वह्व शब्द सुन सकता है । इसमें कण्ठस्वर अनेकागमें चीण और डेपत् नासिकासुरकी भाँति हो जाने पर भी बहुत दूरसे पूर्वपरिचित स्वर मालूम हो सकता है और वात भी ममभो जा सकता है । सागरमध्यस्थ तार द्वारा प्रायः ६०७० मील तथा स्थलभागस्थ ऊपरके तार द्वारा प्रायः २०० मील तकनी दूरीमें दो मनुष्य आपसमें वातचोत कर सकते हैं । यह वैज्ञानिक आविष्कार अतीव आश्चर्यजनक है ।

अब विम तरह दूरवर्ती नलमें प्रतिरूप शब्द उत्पन्न होता है, उसका श्रवण लिखा जाता है । शब्द वायुराशिका कम्पन मात्र है । शब्द देना । मुखसे निकली हुई शब्द-तरङ्ग चोंगके मध्यस्थित वायुराशिको कम्पित करती है और उसके घात प्रतिघातसे नलमें लग्न सूक्ष्म लोहेकी पत्तियाँ भी स्पन्दित हुआ करती है । इस प्रकारका स्पन्दन लोहेकी पत्तियोंका एक बार आगे और एकबार पीछे हटनेके सिवा और कुछ नहीं है । यह स्पन्दन इतना द्रुत और अल्पदूरव्यापी है कि हम उसको देख नहीं सकते । कुछ भी हो इस तरहके स्पन्दनके कारण निकटस्थ चुम्बकदण्डकी शक्ति एक बार घास और एक बार ढुँधि होती है तथा चुम्बकके चारो तरफको तार कुछ नीचे एक बार एक तरफ और एक बार दूसरी तरफ ताडित स्रोत उत्पन्न होता है । चुम्बक देखो । यह ताडित-प्रवाह तार द्वारा दूरस्थ स्थान पर पहुँचता है और

वहाँ पुष्प-दण्डकी पारों तारकी कुण्डीमें प्रभावित हो कर एक बार पुष्पकी वृद्धि हो जाय और एक बार उच्छिन्नता है। इसलिये उससे पालकी भोजनी पत्तियाँ एक बार पश्चिम और एक बार प्रायः प्रोत्ते पाहल हो कर अन्दर होती रहती हैं यह अन्दर की ओर होने पर भी प्रथम नन्दी पत्तियोंके अन्दर प्रकृत्य होने में हीनतर होता है, किन्तु अतुल्य अर्थ उत्पन्न करता है।

बहुत समय सुधीर्षि लिए पुष्पकी खान पर मोह-दण्ड दिया जाता है और ताड़ितकोपके माय मनुष्य तर्कके समको चलाये पुष्पके परिचय दिया जाता है।

हिंसी तारमें प्रति चीन ताड़ितप्रवाहकी पक्षकीर्षि लिये टैलियोन व्यवहृत होता है। टैलियोनके तारका ताड़ितप्रवाह साधारण ताड़ित सात्त्विक तारके प्रवाहकी अपेक्षा बहुत मोड़ा होता है। किन्तु उत्तममें भी टैलियोनमें अथवा करके मोह अर्थ उत्पन्न होता है। इसलिये कल तारके पाम टैलियोनका तार उत्तममें लय में विपरीत ताड़ितप्रवाह उत्पन्न होकर ठक् ठक् अर्थ उत्पन्न होता है।

१८०५ ई.में मि. बर्ने टैलियोनका आविष्कार किया था। १८०७ ई.में जर्मन राष्ममें पहले पदम टैलियोन प्रचलित हुआ था। किन्तु टैलियोनका बहुत प्रचार ही गया है। क्या विचारत और क्या हिन्दू ध्यान, सबके बड़े बड़े मयारमें धनवान् लोग अपने अपने मन्त्रालयोंमें टैलियोन-यन्त्र लगाते हैं। इससे करिये बहुत बान्धोसे विद्याके सिद्धा अथवा समी मन्त्राद मंत्रे का लक्ष्मी है। हर हर टैलियोनसे बात कहनेके लिए एक मकानमें प्रवेश मकान तक तार नहीं रहना पड़ता। एक मकानमें टैलियोनका तार एक साधारण टैलियोन आविष्कर्म मनुष्य रहता है वहाँ पर इच्छामनुष्य कोई मोहो मकानोंके टैलियोन द्वारा साक्षात् करके लिए मनुष्य हो सकता है। बड़े बड़े मयारोंमें इसी तरह टैलियोनमें तार जोड़े जाते हैं।

देवी (दि० पु०) सामान्य अक्षर लिखने और अक्षरों में जोनेवाला मन्त्रिये पाचारका एक विद्। इसका लक्ष्यो नाम और अक्षर होता है।

देव (दि० प्रो०) धम्मस आदत, बान।  
 देवको (दि० प्रो०) १ नाचका यह छोटा पान जो मय पानके अग्रमें रहता है। २ बामको यह लक्ष्यो जो दोनी कोरी पर कुछ मूत्र तत्र चिरो रहतो है। सुनाहा हाँडोमें इसे इनलिये लगाते हैं कि तागा गिमें न पावे।  
 देवा (दि० पु०) १ ब्रह्मदेवी, अक्षरकुण्डी। २ मय पत्र। इसमें विवाहको मितो लि, चढ़ी पादि लिखो रहती हैं। विवाहके कुछ पहले गई लक्ष्योने यहाँ से शकुलने मात्र इस अक्षरको भी कर लक्ष्योके पिनाको देता है।

देवू (दि० पु०) १ पपागका फूल हाथका फूल। २ पपागका पेड़। ३ लक्ष्योका एक लक्ष्य। इसमें छोटे छोटे लक्ष्ये विषय-दशमोको तोन लक्ष्यो और मिहोका पुतला उभा कर कुछ गति रूप दरवाजे दरवाजे भूमते हैं। इसी तरह वे हीन टिन तक घूमा जाती हैं और मोमोसे जो कुछ मिहो मिमोसे उमने से मिहोई और लाया करीरते हैं। अन्तिम टिन से होए हुए खेतों पर जाते और अन्तिम तरहके खेक मयारत इत्यादि करती हैं। बाद मिहोई नावा आपममें नाँट कर मयको हर लीट जाती हैं।

देवो-१ सुभ्रमदेवके अन्तर्गत एक देवीय राष्म। यह अथवा १० ई. में १११८ ई. और देवा ७० ई. में ७८ ई. २४ ई. में प्रचलित है। सुव्रिमान ४२०० पय हीन है। इसमें उत्तरमें पञ्जाब राष्म और मयार राष्म तथा तिम्बत, पून और दक्षिणमें मयुवाल जिला तथा पश्चिममें देवराष्ट्र है। राष्मका पश्चिममें विरिन्द्रजने पाह्ला नित है। अन्तिम अर्थे पहाड़की जाँचारी मनुष्यके २०००० पुटने से कर २०००० पुट तक है। राष्ममें गङ्गा और यमुना दोनों नदी प्रचलित हैं। यहाँ यन्त्र भावोरेवी नामसे प्रसिद्ध है। यह दक्षिण-पश्चिमसे ही कर दक्षिण पूर्व होता है देवप्रयागके समीप पनकतम्बालि जा मिलो है। अन्तर्पूछे पहाड़के पश्चिम हो कर मयुवा नदी बहती है। यह दक्षिण पश्चिम होता है देव राष्मकी पूर्वोप मोमाको जलो गई है। उक्त देव प्रसिद्ध मन्त्रिकोंके लक्ष्ये अन्तर्गते समीप समलोको भी। गङ्गीकी प्रसिद्ध तीर्थस्थानोंमें गिम्बे जाती हैं।

यहाँके जङ्गलमें बाघ, चीता, भालू, हरिन तथा तरछ तरछके भँडे पाये जाते हैं। आनन्दा गढ़वाल जिलेकी सी है।

गढ़वाल जिलेके इतिहासकी ही इस राज्यका प्राचीन इतिहास कह सकते हैं। एक नौ वंशके राजा टोनी टिंग के शासनकार्य चलते थे। प्रथम गंगानामक अन्तिम राजा गोरखायुद्धमें काम आये। लेकिन १८५६ ई०में नेपाल-युद्धके ममाय होने पर उनके लड़के सुदर्शनगान्धने छटिशगवर्षमें वर्तमान टेहरी राज्य प्राप्त किया। मनु सन्तानवन्के गढ़में सुदर्शनगान्धने अंगरेजोंकी खासो मदद दी थी। १८५८ ई०में इनका देहान्त हुआ। बाद इसके दत्तकपुत्र भवानोगाह राज्यके अधिकारी हुए। इनके एक सनद तथा दत्तकपुत्र ग्रहण करनेका अधिकार मिला था। १८७२ ई०में इनके स्वर्गवास होने पर इनके लड़के प्रतापगान्ध १८८७ ई०में मिहानगरुट हुए। बाद १८८४ ई०में राजा कोर्तिगान्धने टेहरीका मिहानगर सुगोभित किया। इन्होंने नेपालके महाराज जङ्गबहादुरकी पोतीकी ब्याहा था। वे KCSI. उपाधिसे भूषित थे। वर्तमान राजाका नाम नरेन्द्रगान्ध है।

राज्यमें कुल २४५६ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी बड़ा नहीं है। लोकसंख्या प्रायः २६८८८५ है। नैकडे ८८ हिन्दूकी संख्या है। राज्य भरमें केवल एक ही तहसील है।

धान और गेहूँ यहाँकी प्रधान उपज है। राज्यके पश्चिम कुछ चाय भी उपजाई जाती है। यहाँसे देवदार, घी, धान और आलूकी रफ्तानी होती तथा दूसरे दूसरे देशोंमें चीनी, नमक, लोहे, पोतलके बरतन, दाल, ममाली और तेलका आमदनो होती है।

राज्यमें केवल राजाकी ही पूरा जमता है। विचार-कार्य वजीरके अधीन है। राजस्व आदिका मामला एक तहसिलदार और तीन डिप्टी-क्लेकरसे नै होती है। तृतीय अंगोके दो मजिस्ट्रेट देव प्रयाग और कोर्तिनगरमें रहते हैं। हिमोय अंगोकी सामान्य जमता-प्राप्त डिप्टी कनेक्टरके साथ और प्रथम अंगोकी वजीर तथा एक मजिस्ट्रेटके साथ है। सत्युदग केवल राजासे ही दिया जाता है। दीवानी मुकदमा डिप्टी-क्लेकरके

इजलासमें पेश होता है। सभी मुकदमोंकी अपील राजा सुनते हैं। राज्यको आय ३०४०००) रु०की है।

राजाकी ११३ पदाधिकार्य और २ तोपें रखनेका अधिकार है। राज्य भरमें केवल दो अस्पताल और एक कारागार है।

० उक्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० ३०°२३' उ० और देशा० ७८°३२' पू०के मध्य भागोंमें तथा गेलिन्द्र नदीके मध्यम स्थान पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३३८० है। यह शहर समुद्रपृष्ठसे २२७८ फुट ऊँचा है। यहाँ गर्मी बहुत पड़ती है। इस समय राजा गढ़से ८ मील दूर प्रतापनगरमें जा कर रहते हैं। अटालत चिप्रिक्वाल्य और स्कूलके मिश्रा यहाँ अनेक मन्दिर तथा धर्मशालायें भी हैं।

टैमरनियर (जियान वैपिट्टा)—प्रसिद्ध यूरोपीय पर्यटक। वे सुगल-साम्राज्यके जेप युगमें भारत-भ्रमणके लिए आये थे। इनके भ्रमणवृत्तान्तमें उस युगके अनेक ऐतिहासिक तथ्य मान्य हो सकते हैं।

टैमरनियरका जन्म १६०५ ई०में मोन्द्युंके अमर निकेतन पारिस नगरीमें हुआ था। इनके पिता एक फ्लेमिंग गिस्पीके घोरभजात थे और उन्होंने देगभ्रमणमें ही अपना जीवन बिताया था। टैमरनियरने भी पिताका आदर्श सामने रख कर पन्द्रह वर्षकी उम्रमें ही पितासे आजा नी कर देगभ्रमण प्रारम्भ कर दिया। प्रथमतः आपने यूरोपके भिन्न भिन्न स्थानोंमें परिभ्रमण किया और फिर दो फारामोसो सभ्रान्त व्यक्तियोंके अधीन काम करते हुए आप पाष्यदेशकी तरफ चल दिये। १६३० ई०के दिसम्बर महीनेसे आपका भ्रमण शुरु हुआ था। रोजमवर्ग, डे सडेन, मियेना, कनस्तान्तिनोपल आदि स्थानोंमें भ्रमण करनेके बाद आपने उक्त फारामीनी सञ्जनोंका साथ छोड़ दिया। पीछे एक्विजिरोयम, ताव्रिज, इस्याहन, वोगादाद, आलोपो और स्काण्डारुन आदि स्थानोंमें घूमते हुए आप १६३३ ई०में समुद्रके रास्ते रोम नगरीमें उपस्थित हुए। १६३८ ई०में आप दूसरी बार भ्रमणके लिये निकले। इस बार आपने मार्सेलिससे नी कर स्काण्डारुन तक भ्रमण किया। पीछे आप सिरिया पार हो कर इस्याहन और फारमके



टैन ( हिं० स्त्री० ) चमड़ा सिम्हानिके काममें आनिवाली एक प्रकारकी घास।

टोआ ( हिं० पुं० ) गत्त, गट्टा।

टोइयां ( हिं० स्त्री० ) तोतेकी एक जाति। इसकी चोंच पीली और कंठसे ले कर चोंच तक सारा भाग बैंगनी होता है, तोती।

टोडे ( हिं० स्त्री० ) एक गिरहसे दूसरे गिरह तकका भाग, पौर।

टोंगा ( हिं० पुं० ) टाँग देखा।

टोंगू ( हिं० पुं० ) फौलनेवाली एक भाडी। इसकी छालके रेशोंसे रस्सी बनाई जाती है, जितो, जक।

टोंचना ( हिं० क्रि० ) चुभाना, गडाना।

टोट ( हिं० स्त्री० ) चोंच, ठोर।

टोट्टा ( हिं० पुं० ) १ वह वस्तु जिसका आकार चिह्नियोंकी चोंच जैसा हो। २ चोंचके आकारमें गडे हुए काठके टुकड़े। ये डेढ दो हाथ लंबे होते हैं और दीवार परकी छाजनकी सहारा टेनेके लिये लगाए जाते हैं। ३ वह नली जो पानी आदि ढालनेके लिये बरतनमें लगी रहती है।

टोट्टी ( हिं० स्त्री० ) १ भारोमें लगी हुई नली, तुलतुली। २ पशुओंका शृथन।

टोक ( हिं० पुं० ) १ उच्चारण किया हुआ अक्षर। ( स्त्री० ) २ प्रश्न आदि द्वारा किसी कार्यमें बाधा, पूछ ताछ। ३ खराब दृष्टिका प्रभाव, नजर।

टोकना ( हिं० क्रि० ) १ प्रश्न आदि करके किसी कार्यमें बाधा डालना, बीचमें बोल उठना। २ बुरी दृष्टि डालना, नजर लगाना। ३ एक प्रहलवानकी दूसरेसे लडनेके लिये कहना, झलकारना।

टोकनो ( हिं० स्त्री० ) १ टोकरो, डलिया। २ पानो रखनेका छोटा बरतन ३ बटलोई, देगची।

टोकरा ( हिं० पुं० ) खाँचा, डला, भावा।

टोकरी ( हिं० स्त्री० ) १ छोटा डला, भाँपी, भूपोलो। बटलोई, देगची।

टोकवा ( हिं० पुं० ) नटखट लडका।

टोकमी ( हिं० स्त्री० ) नारियलकी आधी खोपडी।

टोका ( हिं० पुं० ) उर्दकी फसलकी हानि पहुँचानेवाला एक कोड़ा।

टोट ( हिं० पुं० ) टोटा देखा।

टोटका ( हिं० पुं० ) १ तान्त्रिक प्रयोग, यंत्र मंत्र टोना, लटका। २ वह काली हाँडी जो खेतमें फसलकी नजरसे बचानेके लिये रखी जाती है।

टोटकेहाई ( हिं० स्त्री० ) जादू करनेवाली।

टोटल ( अ० पुं० ) जमा, ठीक, जोड़।

टोटा ( हिं० पुं० ) १ बॉनका खंड। २ मोमबत्तीका जलनेसे बचा हुआ टुकड़ा। ३ कारतूस। ४ एक प्रकारकी आतशबाजी। ५ घाटा, हानि, रुकसान। ६ अभाव, कमी।

टोडरमल—१ सम्राट् अकबरके खनामप्रसिद्ध राजसूत्रमन्त्रि और अत्यंतम सेनापति। इनका जन्म १५२३ ई०को अयोध्याके अन्तर्गत लाहूरपुर नामक स्थानमें हुआ था। मासिर-उल-उमराके मतानुसार इनका जन्मस्थान लाहौरमें था। इनके पिताका नाम भगवतीदास था। इनकी थोड़ी अवस्थामें ही इनके पिताका देहान्त हुआ। माता अत्यन्त कष्टसे इनका पालन पोषण करने लगीं। पितृ-वियोगके कुछ समय बाद इन्होंने सम्राट् के निकट एक उपयुक्त कार्य पानेकी प्रार्थना की। सम्राट् ने इनके गुणग्रामसे संतुष्ट हो कर इन्हें एक मुहरिर्की पद पर नियुक्त किया, परन्तु कार्यकोशलसे ये शीघ्रही उच्चपद पर प्रतिष्ठित हुए।

८७२ हिजरीमें जब सम्राट् ने खानिमानके विरुद्ध युद्धयात्रा की तब टोडरमल सम्राट् के अधीन सैनिक विभागमें काम करते थे। सम्राट् के राजत्वके अठारहवें वर्ष अर्थात् १५७४ ई०में गुजरातके अधिकृत होने पर वहाँके भूपरिमाण निर्धारण और आभ्यन्तरोण बन्दोबस्त करनेके लिये टोडरमल ही नियुक्त हुए। इसके दूसरे वर्षमें पटनाके विजयकालमें इन्होंने बहुत जमता दिखलाई थी और सम्राट् के आदेशानुसार ये सुनिमखाँके साथ बङ्ग-देशकी गये थे। इस समय बङ्गदेशमें दाउदखाँ विद्रोही हो उठे थे। उनको दमन करनेके लिये ही सुनिमखाँ और टोडरमल वहाँ भेजे गये। युद्धमें टोडरमलने असीम उल्हाह और विक्रम दिखलाते हुए विजय प्राप्त की। इस युद्धमें सेनापति खाँ आलम मारे गये तथा सुनिमखाँका घोड़ा अत्यन्त भयभीत

को करं सनको किये हुए भाग बना। परन्तु टोडरमल इससे तनिक भी इतीहास न हुए, न चायर्ष माहमके भाग शत्रुओंको पराजय किया। इसके बाद ये वज्र पौर सङ्गोमाका राजस्य प्रथम कर सम्राट के दरबारमें जा पहुँचे। फिर सो इन्होंने आज्ञाकारके सङ्कारो रूपमें बहूदियको जा कर पड़नेको नाई दाहटकीको पराजित किया। ११०१ ई० की १री मार्चको मुगल मारोके युद्धमें भी टोडरमलने पवनी सप्तताका पूरा परिचय दिया था। जब टोडरमलने सुना कि दाहटने सम्राट पञ्चदशका शासन संपन्न कर इरिपुर नामक स्थानमें से न्यायालय स्थापन किया है तो वे शीघ्र ही वर्तमानके जिला, पा परगनाको बन दिवे। सुनोमवाँ यहाँ था कर बनने लगे। दाहटने राजा को भी कि सम्राट को सेना जिनसे लड़ीमा पविय न कर मके बीमा की कार्य कराना पात्रिप परन्तु इजिपामवाँ लड़ा नामक एक सुकनमानने सम्राट सेनाको एक सङ्घ राधा दियना दिया था। इनो राजसे सुनीमवाँ गन्तव्य स्थानकी जगहमें समर्थ हुए। लड़ाईमें दाहट पराजित हो कर भाग गया। टोडरमल समझा दीक्षा करके हुए महबको जा पड़ूँ। दाहट कटकर निकट भौंज न पड़ करके फिर भी लड़नेके लिए प्रयत्न हुए। जब टोडरमलको यह खबर मिली तो इन्होंने सुनीमवाँको शीघ्र ही सनसे मिलनेके लिए एक पत्र लिख भेजा। यज्ञानमय सुनोम भी पढ़ूँ मने 'होनीकी सेना एकजित हो कर कटकर भी पौर पागे बढ़ी। यहाँ पर दाहटके साथ एक सन्धि हुई। ११०६ ई० में टोडरमल दूसरी बार गुजरातको भेजे गये। अब ये पञ्चमदाबाद नामक स्थानमें बजीरवाँके भाग सम्राट के चायर्षका प्रथम कर लड़े थे, तब सुत्रपञ्जर हूँकेको सत्सङ्गामि मार पनी गुलाको इनके विरुद्ध हो उठे। बजीरवाँ टोडरमलको युद्धमें पात्रपपहच करकेका भादेय किया। किन्तु टोडरमलने इस भादेयको पनुभार काम न करके पञ्चमदाबादके ११ कोन दूर बीनकोया नामक स्थान पर जा कर बिदेहीके परामर्शदाता पौर प्रधान महापहच सुत्रपञ्जरको पक्षो तरह परास्त किया।

इनो अब, सम्राट ने टोडरमलको बजीरके पद पर

नियुक्त किया। इस समयसे वे राजा टोडरमल नामसे सम्मानित होने लगे।

अब सम्राट को मामूम हुआ कि सुत्रपञ्जरकी मृत्यु हो गई है। परन्तु बिद्रोहियोंने वज्र पौर बिहार पर पक्षि कर बना लिया है तो उन्होंने टोडरमल पौर आदिक पान्की पतहपुर मिशरोने बिहारको प्रथान करनेके लिये एक पत्र लिख भेजा। सुत्रिप पनी पौर महबद मसुम वाँ सनको मदद देनेके लिये नियुक्त हुए। महबद मसुमवाँने १००० सुशिक्षित पञ्चारोही सैन्य से कर टोडरमलको मददमें गये लेकिन इनके मर्ममें बिद्रोहान्त्रि प्रचलतो थी। राजाने यह ज्ञान कर मसुमवाँको जिनो तरह पवने पयोनेमें रक्ष किया मन्को किन्तु यह सम्राट इन्होंने सम्राट को जना दिया।

बहुदेगके बिद्रोहियण सुत्रेरेके निकट एक स्थान स्थापन कर रहने लगे। राजा टोडरमलने पवने दुर्गमें विद्यासधानकलाको प्रायश्च समझ कर प्रकाशमानके सुत्र न करके सुत्रेरेके दुर्गमें पात्रप लिया। दुर्गके क्षेत्रार्थके समय हुमायूँ करमिनी पौर तरफानदिवाग नामक दो सेनापति बिद्रोहियोंके साथ मिल गये। पत्रिप दिन पञ्चरोध किये जाने पर दुर्गमें समदका पभाव होने लगा। टोडरमल इससे तनिक भी चिन्तित न हो कर माहमके साथ दुर्गकी रक्षा करने लगे। योत्रको राज्यको सहायताके लिये बहुतसी सेनाएँ पा पड़ूँ। बिद्रोहियण क्षिण भिन्न हो गये। मसुम इ स्थानको दक्षिण बिहार पौर पञ्चमदादुर पटनाको पौर भाग गये। टोडरमल पौर आदिकवाँ महमका पाना करत हुए बिहार पड़ूँ। मसुम एक लड़ाईमें पराजित हो कर लड़ीमाकी पौर भाग गये। इसी तरह टोडरमलने दक्षिण बिहारको दिदी साम्राज्यके पतनार्थ कर किया।

८८० बिजलीमें टोडरमल सेवान्ते पद पर नियुक्त हुए। इस वर्षमें इन्होंने राजस्यसम्बन्धमें एक नया नियम निश्चाला। इसो नये नियमके लिये राजा टोडरमलने पैंकी प्रमिदि प्रात्र की है; इस समय टोडरमलने सुत्रा सन्ध्यामें भी बहुत कुरकुर किया था। इन्होंने पार पञ्जरकी मोहरे प्रचलित कीं। इस पार पञ्जर

की मोहरोंके मूल्य भी चार प्रकारके थे जैसे - ४००) ३६०, ३५५, और ३५०) मूल्य। इस समय तीन प्रकार के रुपये भी प्रचलित हुए जिनका मूल्य क्रमशः ४०, ३८ और ३८, रखा गया था। पहले हिन्दू मोहरों पर राजकीय हिसाब हिन्दी भाषामें लिखा करते थे। टोडरमलने नियम चलाया कि अबसे समस्त राजकार्य उर्दू भाषामें लिखे जायेंगे। तभीसे वाध्य हो कर 'अर्थ-पार्जनके लिए हिन्दूगण उर्दू भाषा सोखने लगे। सुसलमान ऐतिहासिकोंने स्वीकार किया है - टोडरमलसे ही उर्दू भाषाको बहुत कुछ उन्नति हुई है।

एक क्षत्रिय बहुत दिनोंसे टोडरमल को अत्यन्त घृणा-दृष्टिसे देखता आ रहा था, यहाँ तक कि उसने एक बार इन्हें मार डालनेको भी चेष्टा की थी। १५८५ ई०को एकदिन रात्रिकालमें उसने टोडरमल पर अस्त्राघात किया। सोभाग्यवस उस आघातसे टोडरमलका कोई विशेष अनिष्ट न हुआ। वह नराधम उसी समय पकड़ा गया और मार डाला गया।

युसुफजाइयोंको दमन करनेके लिए राजा वीरबल भेजे गये थे। परन्तु वे उन्हें वशीभूत तो क्या करते आप स्वयं उन लोगोंसे मार डाले गये। घोरवनकी सृष्ट्युकी प्रतिहिंसा लेने और युसुफजाइयोंको सम्पूर्णरूपसे वशीभूत करनेके लिये टोडरमल प्रधान सेनापति मानसिंहके साथ १५८८ ई०में भेजे गये। १५८० ई०में अकबर जब काश्मीरकी पधारे थे, तब लाहौरको रक्षाका भार राजा टोडरमल ही पर नौपा गया था।

इस समय टोडरमल बृद्ध हो गये थे। तथा राजकीय कार्यके शुरुतरे परियमसे इनका शरीर क्रमशः दुर्बल होता जा रहा था। इसी लिए राजकार्यसे छुटकारा पा कर धर्मचर्चामें जीवनका अवशिष्ट काल वितानेके लिए इन्होंने सम्राटसे प्रार्थना की। लेकिन सम्राटने सन्मति तो दे दी, मगर बहुत अमिच्छासे। टोडरमल जब हरिद्वारमें रहते थे, तब सम्राटने इन्हें फिर बुला भेजा। टोडरको आनकी तनिक भी इच्छा न थी, किन्तु सम्राटको आज्ञा पालन करनेके लिये ये आनकी वाध्य हुए। जो कुछ हो, इन्होंने १८८८ हिजरीमें गङ्गातीर पर प्राणत्याग किया।

राजा टोडरमलका चरित्र अत्यन्त महत् और उदार था। सम्राट अकबरके शुभानुध्यायियोंमें टोडरमल को प्रधान गिने जाते थे। इनको कार्यदक्षताके प्रभावसे अकबरके राज्यमें बहुतसे सुनियम और सुश्रुतला स्थापित हुई थीं। सम्राटके प्रधान सभामदोंमें अतुलफजल और मानसिंह सरोखे राजा टोडरमलके नामसे कौन नहीं परिचित है? वे अपने गुणसे चार हजार सेनाओंके अधिपति हो गये थे। राजस्व-नियमके स्थापनके जैसा ये निपुण थे, वैसा इनका साहस भी असीम था।

अतुलफजल टोडरमलके कष्टर विद्घोषो थे। किन्तु जब वे सम्राटके सामने टोडरमलको शिकायत करते, तब सम्राट उत्तर देते थे कि 'टोडरमल जैसे प्रभुभक्त और विश्वासो व्यक्तिको कदापि पृथक् नहीं कर सकते।' अन्तमें अतुलफजल भी राजा टोडरमलके कार्यदक्षता, स्ववादिता और साहसको यथेष्ट प्रशंसा करने लगे थे एवं धर्मसम्बन्धमें अन्वविश्वामी कह कर उनको निन्दा करते थे।

राजा टोडरमल एक कष्टर हिन्दू थे। वे प्रतिदिन नियमितरूपसे बहुतसी देवमूर्तियोंको अर्चना करते तथा पूजादि किये बिना किसी कार्यमें हाथ नहीं डालते थे। सम्राटके माय पंजाब जाते समय एक दिन जहदोंमें उनको एक देवमूर्ति कहीं गिर पड़ी; इस कारण उन्होंने कई दिन तक उपवास किया था, वे चिन्ताके मार कुछ भी खाते पीते नहीं थे। अन्तमें सम्राटने अत्यन्त कष्टसे उनका मानसिक दुःख दूर किया।

पहले हिन्दूगण कर दिये बिना किसी तरहका धर्मनुष्ठान नहीं कर सकते थे। अकबरने राजा टोडरमलके आदेशसे उक्त कर तथा जिजिया कर उदास लिये उठा दिया।

कर वसूल होनेका कोई निर्धारित नियम नहीं रहनेसे प्रजा और जमोदार दोनोंको अत्यन्त कष्ट भिलना पड़ता था। राजा टोडरमलको सहायतासे अकबरने क्षति-विषयमें नये नियम निकाले। प्राचीन हिन्दूरीतिके अनुसार अकबरके राजस्व नियम बनाये गये थे। पहले भूमिका परिमाण निर्णय कर, बाद जमीनसे जितने

परम लयक शीरो प्रसङ्ग मूलका तीवरा भाग रात्रकर  
 निवारित कृपा । पङ्क्ति पञ्च प्रति बर्षे शुद्धिवा परिमाण  
 निषय चरके छत्र कल्पने कर बभूव कर्म लगा । किन्तु  
 इसमें प्रज्ञाको बहुत कर होता था । इसलिये पञ्चमें न्य  
 वर्षके निचे प्रज्ञाके मात्र प्रयोग व दीवन्त कर दो गई ।  
 राजा टोडरमलजी बहुत प्रयत्नसे इस तरकशा नियम  
 स्थापन कराया गया था । इस नियमसे प्रज्ञाको पठित  
 सुविधा होती थी । बङ्गदेशक प्रायः सभी ज्ञापको व मासमें  
 राजा टोडरमलका नाम परिचित है । राजप्रमद प्रन्दो  
 मदाह निचे जो तलका नाम विख्यातगीय है । वे पवित्र  
 कुलके थे । जोहि जोहि मूलने एक पञ्चाशो कडा करती  
 है किन्तु पञ्चाशमें एकका पूर्वभाव था ।

इन्हीं प री भाषामें भागवतपुराण कमुवाट किया  
 था । नानि मन्त्रमें भी इनको बहुतसा कविताएँ  
 देखनेमें आती हैं ।

राजा टोडरमलका नाम जोहि जोहि 'ताडरमल' लिखा  
 करते हैं । सेकिल टोडरमल नामक मस्तक पञ्चमें  
 'टोडरमल' नाम देया जाता है । टोडरमलने इस  
 उद्दु मस्तक पञ्चको रचना की है । यह पञ्च तीन  
 पञ्चमें विभक्त है—बर्मभाष्य, स्वातिय पौर वैपक ।  
 बर्मभाष्यपञ्च में फिर पाचार काल पौर म्बदहार  
 निषय इस भाषापरि विभक्त ।

> म्बदह भाष्यपञ्चके एक मभाष्य । उस मभय से  
 बहुत प्रसिद्ध है ।

टोडरमल पण्डित—दिग्गजर जैन मन्त्रदायक सुप्रसिद्ध  
 विद्वान् पौर पञ्चकार । इनको आति श्रद्धे ममान जैन  
 पौर निवाचकाल प्रपुत्र था । ये वि० म० १८२४ तक  
 विद्यमान थे । जैन ११ को वर्षमें से पञ्चमें से इतना  
 काम कर गये थे कि इन कर पावर्ष होता है । इनको  
 रचनाके जैन मभाष्यका तत्त्वज्ञानका कडा कृपा ब्रवाह  
 पुनः प्रवाहित होने लगा है । अहाँ बर्म विद्यालको चर्चा  
 करना वैश्व मस्तक का प्राप्तके विद्वान्के किन्हीं में या  
 बर्ष पापको कृपामे भाचारण हिन्दी ज्ञाननेरामे योग  
 भी बर्मतन्त्रीके विद्वान् बनने लगे । मुना ज्ञाना है कि  
 प्रपुत्र राजप्रमद टोडाक परमपञ्चमें इनको बर्ष रचना  
 केने द्वेष कर इनके परिचारकने निवाहका भार अपने

अपर मे कर इनको गोम्बदहार" नामक पञ्चको हिन्दी  
 टोडा रचनेके लिए बाध्य किया था जेवान बमरपञ्चमें  
 इनको कर तरफने निश्चित कर दिया था । जैन दाय मने  
 ये पञ्चाचारण विद्वान् थे । इन्हीं प्रधान जैन पञ्चमोषट  
 भाषाको विस्तृत टोडा रचा है जो ज्ञप भी चुकी है  
 इसको पृष्ठनम्या मभाष्य १००० है । इनके साय जो  
 म्बदहार पञ्चकारको टोडा रचा है, जिसको पौत्र  
 मप्या ४१ प्रकार है । इन पञ्चमें जोध पौर बर्मविद्याल  
 का विस्तृत विवेचन है । इनका मूला पञ्च विमोक्ष  
 मारकपतिवा है इसमें श्रीममतः पनुवार मूयोक्ष पौर  
 ममानका बर्मन है । इसको श्रीबर्मपञ्चा मभाष्य १०१२  
 प्रकार कीया । तीवरा पञ्च गुह म्बद्व्यामिह्वन मस्तक  
 पाप्मानुभाष्यको कविता ( अर्थात् टोडा ) है । इसमें  
 बहुत ही कृदपचारो पाष्वाभिक्त उपदेश है । द्वेष दो पञ्च  
 पञ्च है—१ सुप्रचार्यनिष्ठु पाय हिन्दी कविताका पौर २  
 मोक्षमार्ग प्रकाशक । इनमेंसे पञ्चमे पञ्चको ती पञ्चन  
 दीनदामकामनीकात्मन पून किया था, परन्तु मूला  
 पञ्च मोक्षमार्ग प्रकाशक पञ्चा जो है । यह पञ्च कप चुका  
 है पृष्ठ १०० है । यह पञ्च तलका विस्तृत मस्तक है ।  
 इनके पढ़नेसे मानूस होता है कि यदि टोडरमल  
 उदाहयता तक जेने, तो जैनमाहिम्नको परनेह पपुर्ष  
 रजने पञ्चकृत कर आते । इनके पञ्चको भाषा अदपुरके  
 बने हुए ममान पञ्चमें मरन, यह पीर माय है । इन्हीं  
 पञ्चके मन्त्राचरण पाठमें जो पञ्चमे पञ्च दिने हैं, उन  
 में ममान होता है कि, पाय कविता भी पञ्चको बना  
 लकते थे ।

टोडा ( वि० पु० ) दोवारमें मङ्गे कूरे व दो जो बङ्गे कूरे  
 काज्म भी मङ्गारा दिनेके निचे लनाया जाता है टोडा ।

टोडा—मोक्षगिरिको एक पाठम्य भाति । ये कुछ अर्धे  
 मीतवाका भेज जानने पौर उनके पूषके पञ्चमे गुजर  
 करने हैं । द्वेषे दो इनको मन्त्रि वा भापटाट है ।  
 इनको रचन मचन पाचारण विद्यानेको भाति है, पर  
 ये जेनेरारके बर्ममें रचना पञ्चमान ममानने हैं ।

इनको पञ्चोंका टैगिक्त कायें तन ममानके रनेही  
 बनना पौर वैश्व विद्याम करना है । सुप्रीपदीने पा  
 कर इनमें क्बिचारण। बचार किया है । जैना वि का



जो शर्ट कहते हैं—“टोडा जाति दिनोदिन दुर्बल होती जाती है, जिसका कारण यूरोपीयों द्वारा प्रवर्तित कुम्भित व्याधि और अमितपान प्रया है।” सबसुच ही वहिर्जगत्के संस्पर्शसे इस जातिको उदङ्ग रोगने घेर लिया है। बहुतेका कहना है, कि टोडारमणियोंका चरित्र अत्यन्त हीन है; परन्तु यह बात यूरोपियोंके आवासस्थानके निकटवर्ती ग्रामोंमें ही पाई जाती है, सर्वत्र नहीं।

वर्तमान समयमें टोडा लोग तामिल भाषा बोलते हैं। कोई कोई तामिल भाषा लिख भी सकते हैं। टोडा पुरुष साधारणतः हठकट्टे, उँची नाकवाले और सभोले कदके होते हैं। ये लोग लोहेकी गरम सींकेसे कान्हे पर नाना प्रकारके चिह्न बनाते हैं। इनका विश्वास है कि ऐसा करनेसे महिष दीहनकार्य अच्छी तरह किया जा सकता है। गर्भवती स्त्रियाँ पाँचवें मासमें हाथको कड़ो पर चिह्न करती हैं। टोडा स्त्रियोंका सौन्दर्य बहुत शोर्छे दिन रहता है। इसीलिए स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुष अधिकतर सुन्दर होते हैं। स्त्री-पुरुष सब मफेद कपड़े पहनते हैं। ऋतुमती स्त्रियोंके शरीर पर एक प्रकारका चिह्न रहता है।

टोडाओंके वासस्थानका नाम ‘माण्ड’ है। माण्डमें छोटी छोटी मिट्टीकी कूटीर और गोशालाएँ रहते हैं। डा० रिभर्सका अनुमान है कि टोडा मलवारकी किसी जातिकी ब्राह्म हो सकती है। परन्तु इस अनुमानको कोई भित्ति नहीं है।

ये लोग महिषदहनके साथ ग्रामसे ग्रामान्तरमें भ्रमण किया करते हैं। एक ग्रामकी शस्त्र-सम्पद जब निभट जाती है, तब इन्हें दूसरे ग्राममें जाना पडता है। महिषादि सम्पत्तिके ऊपर इनका निजस्व स्वत्व है; किन्तु जमीन तमाम ग्रामवासियोंके अधीन होती है, किसी एक व्यक्तिकी नहीं। जमीनको कोई बेच भी नहीं सकता।

टोडा लोग सामाजिक हिसाबसे दो भागोंमें विभक्त हैं—एक देवलया और दूसरे तारसेरजहल। इन दोनों अंगियोंमें परस्पर विवाह नहीं होता। पहली अंगीमें पंकी लोग हैं, जो ब्राह्मणोंके समान समझे जाते हैं। और दूसरी अंगीमें पंकान, कुडान, केन्न और टोड़ी

नामकी चार शाखाएँ हैं। कोई भी पंकी स्त्री तारसेरजहलके पाम नहीं जा सकती, किन्तु तारसेरजहल स्त्रियाँ पंकीयोंके पाम जा सकती हैं। प्रथम रजोदर्शन होनेके बाद बालिकाओंका एक व्रलिष्ठ पुरुषसे संयोग कराया जाता है।

इनमें एक स्त्री कई पति ग्रहण कर सकती है। एक भाईकी स्त्रीके साथ अन्य भाई भी सहवास किया करते हैं। मन्तानका कोन पिता है, इस बातका निर्णय बड़ा कौतुकावह है। गर्भके सातवें मासमें एक उत्सव होता है, इसमें जो व्यक्ति गर्भवतीके हाथमें एक कृत्रिम धनुर्वाण देता है, वही गर्भस्य मन्तानका पिता समझा जाता है। साधारणतः बड़ा भाई ही धनुर्वाण देता है। जब तक सब भाई एक साथ रहते हैं, तब तक सभी भाई बालकके पितृत्वका दावा रखते हैं; किन्तु जब एक ही स्त्रीके स्वामिगण विभिन्न वंशीय हो जाते हैं, तब धनुर्वाण प्रदान करनेवाला व्यक्ति, सिर्फ गर्भस्य पिता ही नहीं बल्कि उसके बाद जितने भी बच्चे होंगे, सबका पिता माना जाता है। यदि मसयान्तरमें अन्य कोई व्यक्ति गर्भिणीको धनुर्वाण प्रदान करे, तो वह व्यक्ति पिता समझा जायगा। टोडोंमें अब भी पुरुषोंको अपेक्षा स्त्रियोंकी संख्या कम है। इसलिए बहुतेको अनुमान है कि ये लोग कन्याओंकी सावरमें ह। मार डालते हैं। जिस तरह दो भाई मिल कर एक स्त्रीके साथ विवाह कर सकते हैं, उसी तरह चाहे तो वे बहुतसो स्त्रियोंका भी पाणिग्रहण कर सकते हैं।

इनका नाच बड़े अद्भुत ढंगका है। स्त्रियाँ नाचमें शामिल नहीं होतीं। सात आठ पुरुष एक दूसरेका हाथ पकड़े हुए गोल हो कर खड़े हो जाते हैं और फिर “श्री—हाक” “श्री—हाक” कह कर चिन्तते और सब एक साथ तालसे पैर पटकते हुए घूमा करते हैं। यह इनका आनन्दोत्सव नहीं, बल्कि ऋत्युत्सव है। किशोके मरने पर ये ऋतु व्यक्तिको ले कर एक गाँवसे दूसरे गाँव जाते हैं और प्रत्येक ग्राममें ऊपर लिखे अनुसार सुरटेको घेर कर ईश्वरका नाम लेते हैं। ग्रामकी प्रदक्षिणा समाप्त होने पर सुरदा गाँवमें लाया जाता है और सम्पूर्ण तैजस अश्वत्थारदिके साथ घरमें ही

समकी इच्छा-होती है। जिसका इस प्रयामि कुछ परिवर्तन हो गया है। अब कुट्टर और प्रख्याति सुरमि के साथ मन्दीमृत नवी की जाती नमिज लसके जमानेके निवे एक थ्यारी कुट्टर बनाई जाती है। सब निम कर जो दो एक तैजसपर सेते हैं, मात्र वही कुट्टरके माह बनाया जाता है। मन्दाहके बाप सुवच मोम मिज कर ८१० मदिपीको मारते हैं और कियों सुर बांज कर रीते हैं। इनमें सिखा नामती नही और सुवच गाने नही। ये मस-मच्छी कुछ नही खाने और इमीनिए मन्म, भोजके निवे लनका बच मी नही करती।

इस प्रकार मच्छे निवा इनमें और कोई भी कलव नहीं होता। और तो क्या बिबाहमें भी कोई कलव नहीं होता। पितामाता मिज कर निघय कर सेते हैं कि इस अपनो कल्याका ब्याह तुम्हारे सुखके माय करेगि। वन, इसके बाद किमो दिन कल्या खामीके घर आ कर रहने लगते हैं। इनमें लडकीका ब्याह १५ वर्षकी उम्रमें और लडकेका ८१० वर्षका उम्रमें होता है।

दोहा भीम-राजपुतानेके अयपुर राज्यके अन्तर्गत एक महार। यह पचा २६ ११ वं और देहा ०६ ६८ पू० के मज अयपुर शहरमें ६२ मोमको दूरो पर अवस्थित है। लोक-नख्या प्रायः ६६२८ है। शहरमें शिवन ८ क्लम हैं।

दोही (हि० खो) १ शक्तिकी एक मेट। इसमें गामिका ममय १० दण्डमें १६ दण्ड तक है। इसका अरधाम इस प्रकार है—म र म म प च नि म म नि च प म ग ग म र न। र म नि न नि च च नि म र ग र न नि च। प म ग म म र ग र स र नि म नि च म र र त म प च च प। म ग म ग र म नि म र र म नि च च च नि म। अनुमतेके मतानुसार इसका अरधाम यह है—म प च नि म र म म प च न र म र म म प च नि म। इधे पन्थ च अतिको शक्तिको मानते हैं। इसमें एक मज्जम और तीर मज्जमके मिखा शिव भव स्वर जोमन होते हैं। यह मौरव राजको खो है। इसका रूप इस प्रकार है—बाह्रमें बीबा निवे हुए पिचके बिरहमें गाने के मरीर वर मदिद बल के और पांच बहुत सुन्दर है। २ चार मात्राओंका एक तान। इसमें

२ पाघत और २ खामो रहते हैं। इसका तबसिका खोम यी है—

+ बिनु, वा सिदिन, र त्रिगता, सिदिन, वा।  
+ पयवा धंदा, केटे निदा केटे धा।

दोमहाई (हि० खो) १ जादू बनानेवाली खो, मन्त्र रगानेवाली। २ खो खो मन्त्र और भयङ्क खूब करती है।

दोमहाया (हि० पु०) वह मनुष्य जो टोना करना जो, जादू करनिवाला पादमी।

टोना (हि० पु०) १ मन्त्र तन्त्रका प्रयोग, जादू। २ विबाहके अन्तर्में माये खानिका एक मोत। ३ एक मिशारो शिष्टिया।

टोनाहाई (हि० खो) दोमहाई इन्ने।

टोप (हि० पु०) १ बड़ो टोपो निरका बड़ा पहनावा। २ गिरफ्तार कोड़को वह टोपो जो लड़ाईके समय बिरफो रखाके निवे पहनो जाता है कीट, झूट। ३ खोख गिनाफ। ४ च गुज्जाना, च गनो वर पहिननेको कोड़ या पोतनकी एक टोपो। इने दरजो लोग खोनि समय एक च गनीमें पहन वते हैं।

टोपन (हि० पु०) टाकरा।

टोपा (हि० पु०) बड़ो टोपो।

टोपो (हि० खो) १ मन्त्रक पाच्छादन वस्तु गिर परखा पहनावा। २ गजसुकुट, ताज। ३ कोई गोन वस्तु जिसका पाकार गोन और महरा जो, खटोरो। ४ बन्दूकका पहनावा। ५ मिशारो जानवरके सुंघ पर बर्दाई खानेकी दौलो। ६ निरुद्धा अगला माग, सुपारा।

टोपोदार (हि० वि०) टोपो लगी हुई।

टोपोबाना (हि० पु०) १ टोपो पहना हुआ पादमी। २ अहमदशाह और नादिरशाहको मेनाके निवाहा। ये नाम टोपिया पहन कर भारतवर्ष पावे के और टोपोबारी कहनाते थे। ३ अ गौत्र या यूरोपियन जो इट (Italy) जयामि हैं।

टोर (हि० खो) नमककी अक्षरोंको खान कर निबाह नेने पर बचा हुआ मोरीकी मछोका पानी। इने बिर उबान और खान कर मोय निबाना जाता है।

टोरा ( हि० पु० ) वह तराजू जिससे जुलाहे सूत तौलते हैं।

टोरा ( हि० पु० ) अरहरका छिन्नके सहित खड़ा टाना जो तैयार को हुई दालमें रह जाते हैं।

टोल—१ चतुपाठी, संस्कृत विद्याशिक्षाका स्थान। यदि कोई जीवनको उन्नति करना चाहे तो सबसे पहले विद्या-शिक्षाकी आवश्यकता है। जिस समाजके मनुष्य जिनके ही शिक्षित हैं, वे उतने ही समार और आत्माको उन्नति कर सकते हैं। एकमात्र विद्याशिक्षा ही सब प्रकारकी उन्नतिका मूल है। प्रत्येक सभ्य जातिके मनुष्योंमें विद्याशिक्षाकी व्यवस्था एक न एक प्रकारको निर्धारित है। हम लोगोंके देशमें भी विद्याशिक्षाका स्थान टोल है। कबसे यह टोल-प्रथा प्रचलित हुई है, उसका निर्णय करना अत्यन्त कठिन है। किंतु थोड़े विवेचना कर देखनेसे स्पष्ट ही अनुमान किया जाता है, कि यह ब्रह्मचर्यका अंशमात्र है। जबसे हम लोगोंके देशमें ब्रह्मचर्यप्रथा बिलकुल अस्तमित हो गई है, तभीसे यह टोल प्रथा प्रवृत्तित हो गई है, इसमें शक भी नहीं है। ब्रह्मचर्यके अभावसे ही हम लोगोंके देशमें प्रकृत शिक्षा और उन्नतिका अभाव हो गया है।

पूर्व समयमें तोनों वर्णके बालक किस तरह गुरुद्वारमें रह कर विद्यार्जन करते थे, इस विषयको स्थिर करनेमें ब्रह्मचर्यके विषयको आलोचना करने आवश्यक है।

भारतमें जब हिन्दूधर्मका पूर्ण विकास तथा वर्णाश्रमविभाग था, तब गुरु और विद्यार्थी किस प्रकार परिचालित होते थे, उसीको देखना चाहिये।

तीनों वर्णके बालक उपनयनके बाद गुरुद्वारमें आ कर रहते थे। उपनयनकाल ब्राह्मणका आठ, क्षत्रियका ग्यारह और वैश्यका बारह वर्षे निर्दिष्ट था। यथासमय बालकगण उपनीत हो कर पितामाता और आत्मीय स्वजनोंसे कुछ कुछ भिन्ना हो गुरुद्वारमें जाते थे। गुरुद्वारमें वे कौनसी शिक्षा प्राप्त करते थे तथा किस आदर्शसे उनका हृदय संगठित होता था, उसके विषयमें मनुने यों कहा है—

“उपनीय गुरुः शिक्षयन् शिष्येच्छौचमादितः ।  
आचारमग्निकार्येषु सन्ध्यापासनमेव च ॥” ( मनु२।६६ )

गुरु उपनयनके बाद शिष्यको मंत्रमें पढ़ने शौच, आचार, अग्निकार्य और सन्ध्यापासनाकी शिक्षा देते।

बालकका हृदय नवनीतको नाई सुक्रीमन है। लहकपनमें वह जिस भावमें परिचालित किया जायगा युवावस्थामें भी वह उसी भाव गठित होगा तथा उसीके अनुसार कार्य-प्रणाली जीवनके भावि-शुभाशुभ उत्पन्न करेगी। इसी अवस्थामें बालकको विविध मावधानीमें विद्या शिक्षा देने आवश्यक है। केवल बचतमी पुस्तकोंको कण्ठस्थ कर लेनेका नाम विद्याशिक्षा नहीं है। जिस विद्याके पढ़नेमें मनुष्य देवभाव धारण कर ले और श्रेय गुणशिक्षे आधार हो जावे वही प्रकृत विद्या-शिक्षा है। गुरु लोग वही शिक्षा छात्रको देते थे। वे जानते थे, कि छात्रोंके अन्तःकरणको निर्मूल नहीं करानेमें आन्तर और वाञ्छविद्यका पूर्ण प्रतिबिम्ब उभर पर नहीं पड़ सकता और विशुद्ध मत्तका स्फूर्ण नहीं होनेसे उसमें ज्ञानात्मिका वृत्ति उत्पन्न नहीं हो सकती है। इसी कारण ज्ञानोपदेशके पढ़ने मानसिक निर्मूलता आवश्यक है। यह निर्मूलता एकमात्र शौचके अधीन है। शौच भी दो तरहका है, बाह्य और आन्तर। मृदादि द्वारा बाह्यशौच और मानसिक मलशुद्धि आन्तर-शौच है। वे दोनों प्रकारके शौच सम्पन्न हो जानेसे हृदयमें ज्ञानज्योतिका विकास होता है। इसी कारण आर्य ऋषिगण वेदाध्ययनके पहलेही शौचशिक्षा देते थे। अभी उस शिक्षाका केसा दुर्दिन हो आया है। शिक्षक वा छात्र शौच किसे कहते हैं, वह भी नहीं जानते तथा जाननेको कोशिश भी नहीं करते हैं। शौचशिक्षाके समाप्त होने पर आर्य ऋषिगण आचार शिक्षा देते थे। गुरुके प्रति शिष्यका कैसा व्यवहार होना चाहिये तथा इस अवस्थामें किस द्रव्यको सेवा और किस विषयका परित्याग करना चाहिये इसके विषयकी शिक्षाका नाम आचारशिक्षा है।

ब्रह्मचारोको समावर्तनकाल तक निम्नोक्त विधि और निषेधका पालन करना चाहिये।

विधि। पहले इन्द्रियजय, प्रतिदिन जल, पुष्प, गोमय ( गोबर ), कुश, समिध आदि साहरण, सट् ब्राह्मणोंके घरसे माधुकरौ वृत्तिके अनुसार भिन्नासधंध, आन,

देवता अथि घोर पित्रतर्पण द्विभार्याकी पूजा मन्त्रा  
बन्धन, साय पातर्हिमि वेदगत सुदके निशुट सब  
प्रकारको बिनति, सुदके प्रति पित्रवत् भक्ति, सुदका  
प्रमत्ततामाधन, सुदजनकी प्रति मन्थान ।

निवेद—मनु मांस, गन्ध, मन्थ विविध रसास इत्य  
पाचोहि वा, मवाङ्गमें तेलमदन, दिनमें मयन, चर्म-  
पाचुका घोर ह्रस्ववहार विषयमित्तास नोष नोम,  
छोषहृत् यज, मोत माघ, चन्द्रादिदोहा (पासा),  
नोमीके साध उवाचनह दुर्गिभ प्रयोम दुसरे पर  
दोषारीयध, मिन्वाचयन मन्द चर्मिप्राय, स्तिरीको पत्र  
लोचन वा पासिदुम दुसरेका रनिटाचयन चोरकम  
एक बार दिनमें घोर एक बार रात्रिमें मोत्रन । एक  
विधि घोर निदिशकक प्रनियम पावन कर ह्रस्वपारी  
को म यतीश्वर हो कर वेदादि शास्त्र पढ़ना चाहिये ।  
वास्तवके विचयेनको विद्याभोज नोनेका उपयोगी  
बननाको धाचारका सुदय प्रयोजन है ।

प्राचीन ज्ञानमें जो अथि त्रितनी शिष्यस श्या बढ़ाति  
सि के तनमें जो प्रथान गिनि ज्ञाते थे । ज्ञानको म क्या  
चनुसार उनको मो उपाधि रहता था । उबी उपाधिसि  
के चित्तमें शिष्यको पढ़ाते हैं, यह मास माफ मानून जो  
जाता था । इसी निवेद कथ्य दि अथि कुत्रपति कर  
जाते थे—

सुवीको दकघरघ चोदुम्बदनादपोरन्त ।

अनाशरवति विरक्तिं स वै कुत्रपतिः स्वयः ॥ ( मनु )

जो दस हजार मुनिको पचादि द्वारा पानन कर  
पढ़ाते थे, उन्हें कुत्रपतिको उपाधि मिलती थी । उस  
समय प्रत्येक अथि अपने माध्यके चनुसार शिष्यको  
रक्षते घोर उन्हें पढ़ाते थे । जबसे नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य  
को प्रथा पट्टत्र हो गई, तबसे शिष्याका भार पढ़नेको  
गई, ब्राह्मणोंके हाथमें हो रहा तमोसे प्रसन्न शिष्याका  
नोप हो गया है । यमो उद्यमयनह बाद तोनों बलके  
बालक सुदयनमें जा कर अध्ययन ममान करके जो  
घरको सोट पाने गते हैं, पर कोई कठिन नियम कायम  
न रहना, चरनतिका सुलवान पारध हो गया । इस  
समय पर किशन एक हो निश्चय रह गया है । यमो इस  
नोगाधि देयमें जो टोन वषाको प्रवर्तित है, जममें सुद

माध्याह्निकार कर एक छात्रको पाचारदि ठे कर शिष्या  
शिष्या २४ हैं किन्तु पक्षीको गार्ई पाचारान्त्रिको शिष्या  
कुछ मो नहीं दो ज्ञाते है । पात्रकन बिज्रातोय शिष्याके  
प्रवचनमें इस तरहकी प्रथा प्रायः नोपमो हो गई है ।  
पहले ऐसा कोई घाम नहीं था, बर्रा २४ टोन न  
रहे । यमो १९१३ यामोंमें चनुसन्धान करने पर  
एक पात्र टोन देखनेमें जाता है जब भी बिज्रातमाक्षी  
परिचालित है । यत्नमान समयमें टोनको ऐसे दुर  
बन्धा देख कर पढ़नेको तरन जिनमें यह प्रथा पर भी  
प्रचलित रहे इसके निचे गर्भमें गृहके पञ्चायक घोर छात्र  
को हृत्ति देनेकी व्यवस्था कर दा गई है । देयके प्रनो  
घोर शानियेमें मो कोई कोई टोन ज्ञान कर पढ़ने  
को गार्ई जिनमें न स्मृत शिष्या प्रनयिन को उनके सिधे  
बनवान् रूप हैं । पात्रकन भारतवर्षके कई देयोंमें टोन  
संस्थापित हुआ है । किन्तु शिष्याप्रथाको बिज्रातोय  
नियमानुसार चन्द्रादि जाती है पढ़नेको गार्ई कुछ भी  
नहीं है । इस लोकोके देयमें जैमो शिष्याप्रथाको  
प्रचलित हो घोर जो कुछ रह भी गई है उससे माधुम  
होता है कि किनो दूरतो मन्थत्रातिमें यमो प्रथा प्रच  
लित नहीं है । बिना पर्यको सहायतामें कारि धाचक  
शास्त्रवित् पण्डित् को ज्ञाये, ऐसे प्रथा किमो ज्ञानिमें  
न भी घोर न है । इस लोकाका धर्मबन्धन विच हो  
जानिने इस तरहका सुन्दर नियम बिसुन हो गया है ।  
घोरे घोरे शानियेमें जिस तरह इस प्रथाकोका धादर  
देया जाता है, उनमें बहुत बन्द इसका उचित होमिओ  
पञ्चायका है ।

१ कुटोर, भौपड़ो ।

- टोन ( वि० पत्ता० ) १ मण्डनो, ममूर, जन्वा । ( पु० )
- २ मन्थूर्ण कानिका एक राग । इससे गानेका समय २३  
दृश्यमें भी कर २० दृश्य तक है ।
- टोन ( य० पु० ) मङ्गलका मङ्गल सु गो ।
- टोना ( वि० पु० ) १ मङ्गला, बड़ी बयोका एक भाग ।
- २ संमत्ताको मोड़ कर पोके निशकनी दुई हड्डोके  
मारनेकी छिगा, ठुग । ३ पत्तर या ईटका टुकड़ा,  
गोड़ा । ४ वेत पादिको चोटका पड़ा हुआ चिद । ५  
बड़ी कीड़ी, कीड़ा, टण्वा । ६ सुको पर क बंको चोट ।

टोलिया ( हिं० स्त्री० ) टोनी, छोटा महला ।  
 टोनी ( हिं० स्त्री० ) १ बस्तीका छोटा भाग । २ समूह, भूखण्ड, जग्या, मण्डली । ३ पत्थरकी चौकीर पटिया, मिन ।  
 ४ पृथ्वीय हिमालय मिकिम और आसाममें मिलनेवाला एक प्रकारका वंस । यह बांस कुछ कुछ पेड़ोंमें मिलता चुलना है । इसके बड़े बड़े मजबूत टोकने बनते हैं । इससे अच्छी अच्छी चटाइयाँ भी बनाई जाती हैं । इसका दूषण नाम नाल और पत्तीक है ।  
 टोलो धनवा ( हिं० पु० ) एक प्रकारको घाम जो धानकी तरह होती है । इसके पत्ते बहुत नरम होते और इन्हें चावसे खाते हैं । कहीं कहीं गरीब मनुष्य इसके सबेगो दाने भी खाते हैं ।  
 टोवा ( हिं० पु० ) पानीकी गहराई नापनेवाला मापनी । यह हमीगा गलही पर बैठा रहता है ।  
 टोह ( हिं० स्त्री० ) १ अन्वेषण, खोज, ढूँढ़, तलाश । २ देखभाल, खबर ।  
 टोहना ( हिं० क्रि० ) अन्वेषण करना, तलाश करना, खोजना, पता लगाना ।  
 टोहाटाडे ( हिं० स्त्री० ) १ अन्वेषण तलाश, ढूँढ़, छान-बीन । २ देखभाल, खबर ।  
 टोहिया ( हिं० वि० ) १ अन्वेषण करनेवाला, ढूँढ़नेवाला । २ जासूस, भेटिया ।  
 टोहो ( हिं० वि० ) अन्वेषण करनेवाला, ढूँढ़नेवाला, पता लगानेवाला ।  
 टोम ( हिं० स्त्री० ) एक नदी । तमसा देखो ।  
 टोनहाल ( हिं० पु० ) टाठनहाल देखो ।  
 टुह ( अं० पु० ) लोहिका सफरी सन्दूक ।  
 टुम्प ( अं० पु० ) ताम्रके खेनका एक रङ्ग । यह दूसरे रङ्गोंके बड़ेसे बड़े पत्रकी काटनेके लिये मान लिया जाता है, हुक्का रङ्ग । २ टुम्पका खेल ।  
 ट्राइटस्की—सुप्रसिद्ध जर्मन राजनोतिविद् और ऐतिहासिक । जिन चिन्ता वीरिणीकी युक्ति, तर्क और उचितजनाके फलसे वर्तमान जर्मनजानिके हृदयमें विजिगीषा और रण-लिप्ताका सञ्चार हुआ था, उनमें ट्राइटस्कीकी अन्यतम समझना चाहिए । इतिहासके अध्यापक, प्रजा-सभाके प्रतिनिधि और संवादपत्रोंके लेखक बन कर आप

दीर्घकाल तक जर्मनोंको जातीयता और उसके लिए दिग्विजय-साधनके अवश्य कर्तव्यताका प्रचार कर गये हैं ।

१८३४ ई०में ट्रेमडेनगरमें ट्राइटस्कीका जन्म हुआ था । बाल्यकालमें ही आपके चरित्रमें विरोधत्व उचित हुआ था । चार वर्षकी अवस्था में विद्यार्थक समय ही आपकी प्रानार्जनको जमताका यथेष्ट विकास हुआ था । आठ वर्षकी उम्रमें आप विद्यालयमें भरते किये गये । थोड़े ही दिनोंमें आप महारठियोंमें सर्वोच्च छात्र गिने जाने लगे । यही जो उम्रमें इन्हें रणरङ्गाका शौक हो गया । आपने बड़े आग्रहमें शोक भाषा सीखी । आप अपने पिताके युद्धवेगमें मज्जित हो कर होमर-वर्णित युद्धोंका पुनः पुनः अभिनय किया करते थे । बारह वर्षकी उम्रमें आप ट्रेमडेनके उच्च विद्यालयमें प्रविष्ट हुए और शीघ्र ही महारठियोंमें प्रधान हो गये । सत्र वर्षकी अवस्थामें आप योम्पनाके माघ वर्षकी प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण हो गये । यहाँ पढ़ने समय ही आपके हृदयमें अपरिमित देशभक्ति जाग्रत हो गई । विद्यालय छोड़ने समय पुरस्कार-वितरण-सभामें आपने स्वरचित एक कविता पढ़ी थी, जिसमें जातीय सम्मानको रक्षाके लिए वैर-साधनद्वारा मनुष्यत्व प्राप्त करनेके लिए समय जर्मन जातिको प्रस्तुत करनेके लिए उक्ताहित किया था ।

इसके बाद उच्चशिक्षा प्राप्त करनेके लिए पहले आप Bohn विश्वविद्यालयमें प्रविष्ट हुए और वहाँके प्रसिद्ध इतिहास अध्यापक Dahlmann के साथ आपका विशेष परिचय हो गया । जर्मन-माम्नाज्यकी प्रतिष्ठा उस समय भी भविष्यके गर्भमें थी । प्रसिद्ध जर्मन राजनोतिज्ञ उल्लमान इनके गुरु थे । उन्होंने जर्मनोंको एकताके सूत्रमें आवद्ध हो कर जातीय संगठनके लिए इन्हें उक्ताहित किया । इस समय आपकी कर्णपोड़ा वृद्धिगत थी, इस लिए अध्यापकोंकी बहुसंखी वक्तवताएँ आपके कर्ण-गोचर न हुईं । वोन् विश्वविद्यालयसे आप लीपजिकके विश्वविद्यालयमें गये । परन्तु कुछ दिन रह कर आप फिर वोन् लौट आये और व्यवहारशास्त्र, राष्ट्रीय इतिहास आदिका अध्ययन करने लगे । इसी समय आपको Boehon प्रणीत ग्रन्थके "राष्ट्रगति का ही नामाकार है"

ऐसे मतसे परिचय हुआ। आपका भी ऐसा ही मत था।  
 १८२४ ई०में जब कि आप बीसवर्षके युवक के  
 ओपजिक विद्याविद्यालयके डाक्टरकी उपाधि प्राप्त  
 हुई। इसके बाद आप अजापकपदकी प्राप्ति गतिनवर्ग  
 पहुँचे। यहाँ आपने अरिष्टित हो अवितापत्र प्रकाशित  
 किये। इसमें भी अज्ञानताको एकताके छिपे लक्ष्य बना  
 दो गई थी। अन्ततः आप ओपजिकके अजापक जुने  
 नये और रहने कायमें आपने जीवन बिता दिया।

आपने अजापकके प्रासनके ही जन्मनीके एकल-  
 म साधनपुत्र प्राप्त का प्रचार किया था। १८३४ ई०में  
 आपको बेडिन राज्यके अस्तंत प्राइवाम-विद्याविद्यालय  
 में प्रतिरिक्त अजापकका पद मिला। दोस्तपत्र असादा-  
 इनके मुहके समय आपने अपना ऐसा मत प्रचारित  
 किया था, कि उक्त दोनी राज्य प्रुधियां मिला दिये  
 जाय और जन्म नीचे छोटे छोटे राष्ट्रीका विरोध कर  
 साजान्त स गठन किया जाय। इस पर आपको पिताने  
 आपका मुच तक देखना हीड दिया। लक्ष कासिन्नकी  
 साक्षिक अज्ञेयाके माय मिल गये तत्र आप अजापकी  
 से दृष्टीका दे कर एक स बादपत्रका अस्थादन करने  
 लगे।

१८४० ई०में आपकी एक-विद्याविद्यालयमें अजापक  
 निवृत्त हुए। पीछे आप आरुडिन्नवर्गमें अजापक हुए।  
 यहाँ आपने प्राइमोपुधियाके मुहके समय आरीकी  
 उन्नाहित किया था। १८०१ ई०में आप जर्मन रोसहय  
 नामक महासभाले प्रतिनिधि निवाचित हुए और बहुत  
 पद्यान पाया। १८०८ ई०में, अगातार अद्यतन रूप तक  
 परिचय करनेके बाद आपने "उद्योगीयें अतादीका  
 जर्मन-वलिदान"का प्रथम अण्ट प्रकाशित किया।  
 इसका पाँचवाँ अण्ट १८०४ ई में निकला था। अन्त  
 अण्ट निर्यत छिपते आप बीमार पड़ गये और १८२४  
 ई०के अघेच ज्ञानमें आपका दीक्षान्त हो गया।

शाम (च० जी०) बड़े बड़े नवरोमें एक प्रकारकी  
 लम्बी सार्डी ओ नीडकी बिको हुई परती पर चल्ती है।  
 इसका आविष्कार सबसे पहले इंग्लैण्डमें १८४० ई०की  
 हुआ था। यह यह भारतवर्ष तथा दूसरे दूसरे देशोंके  
 बड़े नवरोकी हर एक पक्षीमें चलने लगी है। यह

बहुत कुछ ऐश्याहीके मिमते लुप्तो है। किन्तु  
 दोमीमें फल वज्रो है, कि ऐश्याहीका बाय दाप चलतो  
 और इसकाको विचरोके ओरके चलाई जाती है। पहले  
 इसमें लोड्डे लगते थे, परन्तु बेचन विचरोकोके द्वारा बहुत  
 विषये चर्चातु अण्टमें २०मि २१ सोसके इसात्रके चलतो  
 है। विचरो पहले हायलोमीमें चलतो है। लसी डायनो  
 मोमें विद्युत्को गति कात्ममें नामिके लिये तार लगी रहती  
 है। हरएक इसके पक्षी अन्तमें छोटी रहतो है। यहाँ  
 छोटी लपके विद्युत्-तारमें लगी रहतो है। बिननीटा  
 अन्त लगेनेहीके गाडो आपके प्राप चर्चने लगती है। इस  
 में चिकी प्रकारको लस नहीं है अन्त विद्युत्के प्रवाह  
 को अचारप करनेके लिये गाडोके पक्षी अन्तमें एका  
 बन्नामा बना रहता है। लसी चर्चको अन्तमें गाडो  
 विद्युत् गतिके चर्चमें चलतो है। हरएक गाडोमें फल  
 और विचरेक कासके दो अण्ट रहती है। हरएक अण्टमें  
 टिक्ट बॉटमिके लिये एक एक जर्मचारी रहता लिये  
 कानडक्टर (Conductor) कहती है। एकके सिवा गाडो  
 अन्तमें लिये एक डायनर रहता है। ऐश्याहीकी तरह  
 एकका स्टेशन दूर दूरमें नहीं रहता है। यहाँ कई दग  
 पाँच आदमो एक जगह लुटे रहती लसी अन्त पर ठहर  
 जातो है। हरएक अण्टमें पचास साठ पादमोके लस नहीं  
 बँडते है। इसमें लमो लमो जीवन नष्ट होमिका भो हर  
 रहता है। विचरोको गति अचिक पक्षी पक्षका और  
 दूसरे कारकोके अण्टमें पाम लगी देखा गया है और अब  
 विद्युत्का प्रवाह कुछ भी न रहता तथा तारमें लमो  
 हुई छोनी लमने अन्तको जातो है, तो लमो लमो  
 यह अण्टो लाननेके डट कर अन्तोन पर गिर जाती  
 है। भारतवर्षमें यह प्रायः विद्युत्-तारमें लगी हुई  
 छोनी दाराको चल्ती है। किन्तु यूरोप आदि देशोंमें  
 विद्युत्-प्रवाहकी अन्तमें भीतर अघवा अण्ट  
 को कर एक लगी लगी गई है लिये और अण्ट  
 (open circuit) कहती है। यह हरएक गाडोमें  
 अण्ट रहती है। एक अण्टमें अन्त एक ही इसगाडो  
 नहीं रहती अन्त प्रक्येक लमो और अण्टके लिये कई  
 एक निहित लो हुई रहती है। अब इसगाडो नहीं  
 लो, तत्र कई बड़े अण्टमें अण्टमें अण्टमें लमो लमो

जाने पानिमें बहुत अनुविधा होती थी और मायका  
 १४ बहुत खर्च भी करने पड़ते थे, किन्तु स्वयं इसका  
 आविष्कार ही गया है, तबसे बहुत छोटे घरमें  
 अर्थात् छह सात घंटेमें ही क्या गरम या अमीर सभो  
 दो चार कीमतके आमानोंमें चने जाते हैं। रेन्गाडीकी  
 नाईं इसमें कीई निश्चित समय नहीं रहता, यरन् हर  
 एक मइक और गलीमें सब और जिम स्थान पर इच्छा  
 होती, उर्मा जगह इस पर चट कर घानट लूटने है।  
 आसकन यह भारतवर्षके बड़े बड़े ट्रेनोंमें चल्ने लगे  
 है, गया—मन्दाज गजपुताना, बरकन, चटणाम,  
 पञ्जाब, बम्बई प्रदेग, बम्बई शहर बरमा, फन

कता, फानपुर, मध्यप्रदेग, विन्डपुन, लोचिन, धोन्पुर,  
 धीराजी, शालियावाड, जयपुर, जोधपुर, फरको,  
 कानारा इत्यादि।

ट्रे उमाके ( घं० पु० ) बने या मेशे हुए मान पर लगाये  
 जानिका चिन्न, लाप।

ट्रे टिम मशीन ( घं० घ्यो० ) एक प्रकारकी छोटी फन।  
 इसको एकही घाटमें घेरने चल्ता और हाइसे उभ-  
 रने काममें रगता जाता है। इसमें दोटोको तस्वीरें  
 बहुत स्पष्ट और उत्तम टपना हैं और काम बहुत जल्दा-  
 से होता जाता है।

ट्रेन ( घं० घ्यो० ) १ रेन्गाडीमें सले हुए गादियोंकी  
 गंठि। २ रेन्गाडी।

# ठ

ठ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमानामा तेरहवां अक्षर,  
 टवर्गका द्वितीय वर्ण। इसका उच्चारणस्थान सूर्हा है।  
 अर्द्धमात्रा समयमें इस वर्णका उच्चारण होता है। इसमें  
 उच्चारणमें आभ्यन्तरप्रयत्न, जिह्वा-मध्य द्वारा सूर्धस्थान  
 स्पर्ग और वाह्यप्रयत्न, विचार नाम, प्रवोप और महा-  
 प्राण है। साहजिकान्यायमें टलिप जातुके न्यास करमा  
 होता है। इसको निवृत्त-प्रणाली इस प्रकार है—“ठ”।  
 इस टकारके रूप, चन्द्र और अग्नि सर्वदा प्रयस्थान  
 करते हैं।

यह मीकरूपिणा कुण्डली, पीतवियुक्ताजार, त्रिगुणयुक्त,  
 पञ्चदेवात्मक, पदप्राणमय त्रियन्तु और विगर्हियुक्त।

इसमें ३१ वाचक शब्द हैं—शून्य, मन्त्रगे, वोज,  
 परिने, नाइलो छया, यनज, नन्दन, जिह्वा, सुनन्द,  
 वर्णक, सुवा यत्तुन, क्तान, यजि, अन्त, चन्द्रमण्डल,  
 टसजा, अन्तुम्भाव, देवभज, हृत्डनि, एकपाद, विभूति,  
 ननाट मय भिवरु, हृपन्न, नमिने, विष्णु, मछेय,  
 ग्रामणे और गगो। ( गनानन्द ) काव्यके प्रारम्भमें इसका  
 प्रयोग करनेके दुःख होता है। पद्यका आदिमें इस शब्द-  
 का विन्यास करनेमें शोभा होना है। ( १५० १० टी० )

ठ। मं० पु० ) ठ-रूपोदरादि० साधु. वा ठयने ठी साहुन  
 कात्-उ। १ शिव महादेव। २ महाध्वनि। ३ चन्द्र-  
 मण्डल। ४ मण्डल। ५ गृह्य। ६ लोकगोचर, इन्द्रिय-  
 प्राहर वसु।

ठंठ ( हिं० वि० ) जिमकी डाल और पत्तियों सूख कर  
 वा और किसी प्रकारसे गिर गये हों, ठूँठा, सूखा।

ठंठाना ( हिं० क्ति० ) ठनठाना देना।

ठंठार ( हिं० वि० ) रिक्त खाली, छूँछा।

ठंठी ( हिं० स्त्री० ) १ टाना पीटनेके बाद बालमें लगा  
 हुआ अनाज। ( वि० ) २ जिमसे बच्चा और दूध पाने-  
 की सम्भावना न हो।

इस वर्णकी अविष्टावो देवीका ध्यान करके इस  
 वर्णका टग बार जप करनेके साधक गोत्र हो अभांठ  
 नाम कर सकता है। इसका ध्यान—

“ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि श्लुष्व मन्थनने।  
 पूषचन्द्रप्रभा देवीं विवस्वर्षलेक्षणाम् ॥  
 सुटनी पौडशमुनां त्रमेधापर्ययो दासु।  
 पूर्व थात्ता शस्त्रसर्पा तन्मन्त्र दशवा उपेव ॥” (वर्णेदातन्त्र)  
 यह देवो पूषचन्द्रकी भांति प्रभामे युक्त, प्रस्कृतिन  
 पञ्चकी तरङ्ग नयनीवाली, सुन्दरो, पौडगहस्ता और धम  
 कामाय मोचटायिनी है।

कारवितुत्वमें इनका स्वरूप इस प्रकार लिखा है --

ठंड ( हि० स्त्री० ) ठंड रेको ।  
 ठंडक ( हि० स्त्री० ) ठंड रेको ।  
 ठंडा ( हि० बि० ) ठंडा रेका ।  
 ठंड ( हि० स्त्री० ) शीत, सरदो, ब्राह्मी ।  
 ठंडर ( हि० स्त्री० ) ठंडा रेको ।  
 ठंडक ( हि० स्त्री० ) १ सन्तानका प्रभाव शीत सरदो ।  
 २ तापकी कमी, तरी । ३ ज्वर, प्रसवता तपको । ४  
 किसो प्रकारके रोग या सप्टिकको शक्ति ।  
 ठंडा ( हि० बि० ) १ शीतक मर्त । २ बुद्धि कृपा  
 युता कृपा । ३ श्वाहरहित शान्त । ४ जिसे कामो  
 शीतल न होना हो नामर्त, ननु मक । ५ श्मशेर शान्त,  
 भीर । ६ सदाशोक, सुष्ट, मन्द । विरोध न करनेवाका  
 को अपने शिष्यायत धन कर भी कुछ नहीं बोलता हो ।  
 ७ ठण्ड, प्रसन्न, सुख । ८ निर्योष्ट, सत मग कृपा ।  
 ९० जिसमें कमक दमक न हो को मङ्गकोक न हो  
 वैरीनक ।  
 ठंडारि ( हि० स्त्री० ) १ शरीरकी गरमी शान्त करनेवाकी  
 दवा । शीत दवायकी, बककू, चरपुत्रि पादिके शोच,  
 गुलाबकी एणकू, गोसमिच पादिको एकमें योग कर  
 ठंडारि बनाई जाती है । २ तिष्ठि, शीम  
 ठंडामुग्धा ( हि० पु० ) बिना तापके शोभा चांदो  
 चंद्रिकाकी शोभा ।  
 ठंडी ( हि० बि० ) ठंडा रेको ।  
 ठंड ( हि० स्त्री० ) १ शीतकी शान्त, वह पावाय को एक  
 मनु पर पुनरो मनुकी शीतमेंसे होता है । ( बि० ) २  
 शान्त, शीतका । ( पु० ) ३ चरपुत्रिकी बनाई या  
 मृत्ता । शर्ममें शकीमका निवास नना कर के कती है ।  
 ठंडक ( हि० स्त्री० ) प्रसन्न, बधिक, ममका टटा ।  
 ठंडकना ( हि० बि० ) १ सप्टिकना । २ ठंडकना,  
 पाटना ।  
 ठंडकिया ( हि० बि० ) ठंडा करनेवाका तबहार कर  
 निवाका, दूधको ।  
 ठंडकोपा ( हि० पु० ) १ एक प्रकारको करतल । २ वह  
 को करतल बना कर श्वायि दरवाजे शीतल संगता हो ।  
 ३ एक छोटी लक ।  
 ठंडार ( व० पु० ) ठंडा कर । ठंडा करके, 'ठ'

पकर । "ठंडारं वषट्कारायि ।" (शामनेतुन०)  
 ठंडार सुहातो ( हि० स्त्री० ) दूधको प्रसन्नके लिये बनी  
 जानेवाली बात, सुयामद ।  
 ठंडारायत ( हि० स्त्री० ) ठंडारायत रेको ।  
 ठंडारायन ( हि० स्त्री० ) ठंडारायि स्त्री, श्वाभिनी मान  
 क्लिन । २ चतियको स्त्री, चन्नाको । ३ नाइका स्त्री,  
 नाइन नाउन ।  
 ठंडारि ( हि० स्त्री० ) १ श्वाभिपय सरदारो प्रधानता ।  
 २ श्वाकरका अधिकार । ३ राज्य रियासत । ४ सत्ता,  
 महत्व बहपय ।  
 ठंडारो ( हि० स्त्री० ) १ सरदारको स्त्री, कमोदारको  
 शोला । २ शमी । ३ श्वाभिपरो मानकलिन । ४ चतियको  
 स्त्री, चन्नापी ।  
 ठंडाराय ( हि० पु० ) श्वाभिपको एक शक्ति ।  
 ठंडारायत ( हि० स्त्री० ) १ श्वाभिपय, सरदारो २ राज्य,  
 रियासत ।  
 ठंडारो ( हि० स्त्री० ) वह लकड़ो जिससे श्वाका को  
 जातो है ।  
 ठंडर ( हि० स्त्री० ) ठंडा रेको ।  
 ठंडर ( व० पु० ) १ देवप्रतिमा, देवताकी मूर्ति । २ श्वा  
 कोकी एक सपाधि । ३ देवदिकवत् पूजनीय व्यक्ति वह  
 मनुष्य जिसका सन्धान देवता शीत ब्राह्मणके श्रेमा किया  
 जाय । "इरावनावधोगतः शीतवत् सुभरठंडरः ।" (अमल००)  
 ठंड ( हि० पु० ) १ वह मनुष्य को शोषा दे कर पुनरोका  
 बन करके करता है, सुखना दे कर शोभाका मान कोनने  
 वाला । ठंडा शीत शर्ममें बहुत धक है । ठंडा लवरददो  
 सुपरीका मान करके करता पर उग पनेके प्रकारको शर्मता  
 करके शर्मना काम निजान लेता है । भारतवर्षमें ठंडका  
 एक प्रयत्न संघटायना हो गया था कि पु विनिवम केप्लि  
 कके समय यह सम्प्रदाय सदाके लिये शोष कर दिया गया ।  
 बुद्धाचारनकाकने हो ये भारतवर्षके सर्वत्र म्यान हुए  
 थे । हिमाचलके कुमारिका तथा धामामके सुश्रुत तब  
 सभी श्वाको के शर्मामें इन ठंडारो का नाम था । वह  
 शर्मके शर्मलकाकने प्रकार २०० ठंडारो शर्मामें शर्मदण्ड  
 कृपा था । श्वाकी शीत शर्मामें शर्मामें कोई श्वापरिविन  
 व्यक्ति धाम न पाने पाने इनके श्वापरिविनको शर्मामें



कर दिया जाता था। ठगों के दलमें हिन्दु सुसलमान दोनों ही रहते थे, हिन्दुओं की उपास्यदेवी काली थी।

ठगों में प्रवाद है कि—ये दिल्लीके निकटस्थ प्रदेशवासी सुसलमान-धर्मावलम्बी ममजातिमें उत्पन्न हैं। कालक्रमसे ये सुसलमानधर्म की छोड़ कर कालिका देवीकी उपासना करने लगे। इनकी प्रथम-उत्पत्तिके विषयमें वंशपरम्परागत ऐसा प्रवाद चला आ रहा है कि,—किसी समय एक दुर्घर्ष असुरके माघ कालिका-देवीका युद्ध हुआ। युद्धमें कालीने खड़ावातसे असुरके टुकड़े कर डाले। किन्तु असुर रक्तधोज था, इस लिए उसके भूतल-पतित प्रत्येक रक्तविन्दुसे तुल्य वन-शाली एक एक असुर उत्पन्न होने लगा। कालीने उन सब असुरोंकी भी काट डाला, फिर उनके रक्तसे असंख्य दानव उत्पन्न होने लगे। अन्तमें कालीने सोचा कि, इस तरह जितने काटे जायगे उतने ही अधिक दानवोंकी उत्पत्ति होगी। उन्होंने दो वीरोंकी सृष्टि करके उनको उत्तरीय-निर्मित फांस प्रदान की। उन फांसेंके जरिये दोनों वीर असुरोंकी मारने लगे। इससे रक्त न गिरनेके कारण असुरोंका उत्पन्न होना बंद ही गया, धीरे धीरे समस्त असुर मारे गये। कालीदेवीने दोनों वीरों पर सन्तुष्ट हो कर वे फांसें उन्हें ही दे दी और पुत्रपौत्रादिक्रमसे उसीके जरिये जीविकानिर्वाह करेगे—ऐसा वर दिया। रक्त दोनों वीर ही ठगोंके आदिपुरुष थे। प्रवादानुसार ठग लोग वंशशुक्रमसे नरहत्या-व्यवसायी हो गये और मध्यभारतसे लगा कर दक्षिणात्यके कुछ दूर तक फैल गये। ये नाना स्थानोंमें भिन्न भिन्न सम्राट्वायमें निरीह प्रजाकी तरह क्षुपि आदि जीविका अवलम्बन करके रहते थे। किन्तु सर्वदा चारों तरफ इनके गुप्तचर रहते थे, जो कहां निराश्रय पथिक जा रहा है, इसकी खोज रखते थे। ठगोंमें एक साधारण सङ्घटित था, जिससे वे परस्परको पहिचान लिया करते थे। वस्तुतः समय ये लोग दल बंध कर अत्याधिक संख्यामें निकलते थे और छद्मवेशमें रह कर मौका देख पथिकोंका सब नाश करते थे। प्रथमतः ये लोग पथिकोंसे इस ढंगसे पेश आते थे कि, जिससे पथिक किसी भी तरह इनकी पहिचान नहीं सकते थे। पीछे मौका पाते ही असावधानी दृश्यां

उन चर्भागोंकी गर्नेमें फांसी डेर मार डालते थे। अनन्तर उसका सर्वस्व लूट कर उसकी लाशको ऐसी जगह गाड़ देते थे कि, उसका किसी तरह पता नहीं बन सकता था। जिन लोगोंकी मारनेमें उनकी जड़ो खोज होनेकी सम्भावना नहीं या जिनके न मिननेमें लोग उनकी भागारुपा ममके, ऐसे लोग महजजहोमें ठगोंके चक्रमें पड़ कर जान खो बैठते थे। अशकागप्राम सैनिक या प्रभुका अर्थादियाहक भृत्य या ठगोंके कवचमें पहते थे। किन्तु ठग लोग स्त्री, कवि गद्गाजनवाहक, धोबो, तनी, भाङ्गु-वाल, नट आदि नीच जातिवालोंको अप्रथा मजूर, फकीर और भिखारियोंकी कभी नहीं मारते थे। इनकी एक प्रकार माहूँतिक भाषा थी जिसे दूसरा कोई नहीं समझना था। इनके ठगोंमें उपयोगितानुसार कार्य नेता होता था, कोई-राजगौरकी भुलाया दे कर अभिषेक स्थानपर ले आता था, कोई गलेमें फांसी लगा कर मारता था, कोई गुप्तचरका काम करता और कोई गड़गना खीट कर लाशको गाड़ता था। दल और माहूसी ठग लुण्ठित द्रव्यका अंश पाते थे।

ठगोंमें साधारण दम्पुकी तरह सिर्फ दम्पुत्तिके द्वारा ही पारस्परिक सम्बन्ध नहीं था। ये भलीभांति समाजसङ्गठन करके भिन्न भिन्न जातियोंके माघ एकत्र घास करते तथा पुरुषातुल्यमिकनरहत्या और चौर्य द्वारा जीविकानिर्वाह करते थे। इनका विश्वास था, कि इसमें इनकी पाप नहीं नगना, वरन् नरहत्या-व्यवसाय ही उनका मूलकर्म है। इसलिये जो जितना निष्ठ-राचरण करके निराश्रय पथिकोंको मारता था, वह उतना ही प्रशंसनीय और कालिकादेवीका प्रियपात्र समझा जाता था। वास्तवमें इन पाखण्डी नार-कियोंके हृदयमें जरा भी धर्मभय वा अनुत्ताप नहीं था। इसलिये इस तरहकी निर्दय भोषण नरहत्या करनेमें इनके हृदयमें तनिक चोट भी न लगती थी। किन्तु आश्चर्य है, ये नरपिशाच लोग भी इस तरहके बोधस्य कार्यके लिए निकलते समय अपनी उपास्यदेवी भवानोंकी पूजा कर उनकी प्रीति और आशोकको कामना करते थे। इस प्रकारके पैशाचिक कार्यमें भी अर्थ-लोभसे उनको प्रोत्साहित करने तथा कालीदेवीकी पूजा

कारके निचे उरोहित ब्राह्मणोंका मो घमान गयो । गिताल दुष्कर्मी ब्राह्मि भी अपने परिवारबर्गके अपने दुष्कर्मीको द्विधा रक्षता के उन्नयने किमीको मो अपने तरह पनप्यबाबन्धो नहीं बनना चाहता । किन्तु इतनेमें जोक इतने उन्नयी गोनियो । ये मोय बचपनेने जो नरुकोंको नरहत्याको सिखा देते थे । युद्धकालमें बालब्रह्मण चरुपमें घुमा करते थे । फिर उनको परिष्कीकी जाय दिखाई आने लगे । ये ठहरे कि राज निरुत्तने ये और परिष्कीको भुलावा लेने तथा अन्य कार्यमें उनको मदायता करते थे । अन्तमें जब ये योग्य हो जाते, तब इनके चोबमें कीविकानिवाहके लिए एक मात्र धवन वन पामी दो आने लगे । इस कार्यमें दीक्षित करनेके समय एक लक्ष्य होता था और दोषा गुह काभीकी पुत्रा करके उनको बचान पर दोषा-निष्कट से कर समको काभीको प्रमादो एक प्रकारका गुह विष्णु सेने थे । प्रवाद है—इस प्रमादो गुहको अन्ति प्रति भीषण भी, इसके पानिसे जो बह एक पहा ठग हो जाता था ।

इस भोग इतने चतुराई और निपुणताके साथ परना काम बनाने के कि काभी के पक्ष में नहो जाते थे । ये विचारको जो प्रचुर लक्ष्य के कर भाग गया करते थे । मध्यभारतके पनेक स्थानों में विशेषतः पश्चिमप्रान्तमें पश्चिमाय मदार राजबन्धुवारीने निरक्षर इतके बपुर्षमें अपने का करते थे, पैना नहीं, पश्चिम लक्ष ठहरे और अन्य अन्तमें विष्णु तक्ष निरामितरूपसे मिलता था । बहूत ने ही पायका प्रकट पन्ना सम्राज कर अपने राज्यमें इनकी रक्षा करते थे । इनके साथ एक मर्त रक्षती थी कि, ये उन प्रदेशके अन्तर नरहत्या न कर लेंगे । इसनिचे अन्य स्थानोंमें पश्चिदि जाने पर कोई भी पनपुष्ट नहो होता था । अतोदार, महाजन, दूकानदार, मोदी पादि अतो पर्यन्तोपने इनके पचपातो होते थे । उनो द्यार्मि ठगकी कटि कर निबानना पस्यत कठिन कार्य था । पर्याचारके उरने कोई भी इनके कुछ बहना नहीं था । इस प्रकारभारतबर्षके विष्णोर्षे भूधाम पर एक गुप्त प लक्षकाल वैपटक्ष चल रहा था । पश्चि पक्षको काममें बह निरामित रूप था ।

जिस तरह यह लक्ष्याकार्य होता था, उसमें प्रति तब जितने लोग इतने ही द्वारा अर्थ कानि से इसको कोई समार नहीं । कोई कोई कहते हैं कि, प्रायः १०००० पादमे प्रतिवर्ष ठहरे द्वारा मरि जाते थे । बह सख्या पस्यत यविक और पसावनीय मात्र म पड़ने पर मोः को प्रमाण मिल रही है उसने पक्ष मान्यम होता है ।

१०८८ ई०में इस ज्ययाचारका काल प प्रोज लक्ष मेंपड़े काचंगोरह हुआ । १२२० ई०में दोषाबन्धे नामा कानिसे कूर्तेमें १० नामों मिली थी । १२१० ई०में अमान घोमानके प्रयत्नने गर्भमेंपुत्रको मारुम हुआ कि, मारतवर्षका कोई भी स्थान ठहरेके गुह्य नहीं है । इस गुप्त प पाचारका दमन करनेके लिए गर्भमेंपुत्रने एक नया विभाग होता । इस उग निवारक विभाषमें अमचारितव्य परराबिर्षको प्रकोमन दे कर ठगीको भोग करके उनको पक्षकने लगे । क्या म पक्षी राज्य पोर क्या देगोय राज्य सन्तु इय वीमभ्य अन्ति पत्याचारको निवारणके लिए वदपरिस्तर हो कर पक्षेज मर्भमेंपुत्रने ८ वर्ष तक मगालार प्रवय किया था जिस में ईदगाद, मागर पोर अन्नपुरमें प्रायः २००० ठग पक्षके गये थे और इनका श्राय हुआ था । इनमेंने १४६० पान्नी जम्बाने परपार्थमें पश्चिमुख हुए विहर्षे १२२२ पादमियोंको प्रायदण्ड ८०८को दिग्निबान्ना, ७०की पात्रोबन कारावास ६८२को निर्दिष्टकाम तक कारावास पोर १को सुदकारा हुआ था तथा ११ पादमी भाग गये थे ३१ पादमी विचारकालमें दो मर गये थे और बाकी २३० पादमियोंने राजाको तरफ गवाही दी थी । पामीदार इनको पामी की होंतो थी । एक दक्षिणतमेंने बिसे बिसेने २०० तक मर जम्बा को जो पक्ष लोकार किया था ।

ठगीकी ग्वायोपात्रित उल्लिखारा कोविकानियोंके करनेकी सिखा देनके लिए अन्नपुरमें मन्त्र कर्मपानिमें एक कार्यलय स्थापित हुआ, जहां पर ठगीके बर्षों और पुषकोंको अन्न पोर लूतेके लक्ष्य बुझने तथा मन्त्र बनाने की सिखा जाने लगे । १२६० ई०के मोतर भोगा कर्षी था जस हो गया, बहो भी समझा नाम लुप्तमें न

• A. S. C. Journal, 1916.

आता था। लाई वेष्टिकके शासनकालमें भारतवर्षमें सतोदाहको तरह यह भी एक भीषणकाण्ड दमित हुआ। ठग-निवारक-विभागके कर्मचारियोंको पुलिस और विचारक दोनों प्रकारकी ही क्षमता दी गई थी। कोई ठग अभियुक्त होने पर प्रकाश्य भावसे उसका विचार होता था। कहना फजूल है कि, उक्त विभागके कर्मचारियोंकी कार्यक्षमता, कठोररूपसे कर्तव्य-परायणता और तत्परताके कारण शोध ही बहुतसे ठग पकड़े गये, तथा नाना स्थानोंमें बहुतायतसे लोगों सिनने लगे। इस तरहसे उक्त विभागने अविचल उत्साह, अदम्य साहस और अविश्रान्त अध्यवसायकी सहायतासे कठोर कानूनीके द्वार। शोध ही ठगोंका निवारण करके पथिकोंको निश्चिन्त कर दिया। गौरवकी साथ ठग-विभागने अपना कार्य समाप्त करके अवसर ले लिया।

२ प्रतारक, धोखेवाज।

ठगण ( स० क्रि० ) पाँच मात्राओंका एक गण। इसको ८ उपभेद हैं।

ठगना ( हि० क्रि० ) १ छल और धूर्त्तासे दूसरेका धन छीनना। २ धूर्त्ता करना, छल करना। ३ उचितसे ज्यादा कीमत लेना, सौदा बेचनेमें बेईमानी करना। ४ प्रतापित होना, धोखा खाना। ५ आश्चर्यमें स्तब्ध होना, चक्रमें आना, टंग रहना।

ठगनी ( हि० स्त्री० ) १ ठगकी स्त्री। २ वह स्त्री जो दूसरेको भुलावेमें डाल कर उसका माल छीनती है। ३ धूर्त्ता स्त्री। ४ कुटनी।

ठगपना ( हि० पु० ) १ ठगनेका भाव या काम। २ धूर्त्ता, छल, चालाकी।

ठगमूरो ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी विपैली जड़ी वृद्धे। पूर्व समयमें ठग इसी जड़ीसे पथिकोंको बेहोश करके उसका धन लूट लेते थे।

ठगमोदक ( हि० पु० ) ठगलड्डू।

ठगलाड्डू ( हि० पु० ) नगीली या बेहोशी करनेवाली चीजकी वनो हुई मिठाई। पूर्व समय ठग इसी तरहके लड्डूको पासमें रखते थे। जब कोई पथिक मिलता तो वे किसी बहानेसे आपना मड्डू उसे खिला देते थे और थोड़ी देरके बाद जब वह नियासे बेहोश हो जाता था तो वे उसके पामके सब माल ले लेते थे।

ठगवाना ( हि० क्रि० ) दूसरेसे धोखा दिलवाना।

ठगविद्या ( हि० स्त्री० ) धूर्त्ता, धोखेवाजो, छल।

ठगाठगी ( हि० स्त्री० ) धूर्त्ता, धोखेवाजो।

ठगिन ( हि० स्त्री० ) १ वह औरत जो धोखा दे कर दूसरेका धन लूट लेती है। २ ठगकी स्त्री। ३ धूर्त्ता स्त्री, चालवाज औरत।

ठगिनो ( हि० स्त्री० ) ठगिन देखो।

ठगिया ( हि० पु० ) ठग देखो।

ठगी ( हि० स्त्री० ) १ ठगका काम। २ ठगनेका भाव। ३ धूर्त्ता, चालवाजो।

ठगरो ( हि० स्त्री० ) मोहित करनेका प्रयोग, वह शक्ति जिससे दूसरेका होंग हवाग जाता रहता है।

ठट ( हि० पु० ) १ समूह, पुंज, भाड़, पंक्ति। २ रचना, सजावट, बनाव।

ठटकीला ( हि० वि० ) जिसमें चमक दमक हो, सजीला, तड़क भड़कवाला।

ठटना ( हि० क्रि० ) १ स्थिर करना, ठहराना। २ सजाना, तैयार करना। ३ आरम्भ करना, छेड़ना। ४ सुसज्जित होना, तैयार होना। ५ खडा रहना, उटना, अड़ना।

ठटनि ( हि० स्त्री० ) रचना, सजावट, बनाव।

ठटया ( हि० पु० ) एक जंगली जानवरका नाम।

ठटरो ( हि० स्त्री० ) १ अस्थिपंजर, हड्डियोंका टाँचा। २ वह जाल जिसमें घास भूसा आदि रखा जाता है, खरिया खड़िया। ३ किसी पदार्थका टाँचा। ४ वह रथी जिस पर सुरटा उठाया जाता है, अरथी।

ठट ( हि० पु० ) समूह, भुंड, भोड़।

ठटो ( हि० स्त्री० ) अस्थिपंजर, ठटरी।

ठटई ( हि० स्त्री० ) दिल्लीकी, हँसी।

ठट्टा ( हि० पु० ) उपहास, हँसो।

ठठ ( हि० पु० ) ठठ देखो।

ठठरो ( हि० स्त्री० ) ठठरी देखो।

ठठाना ( हि० क्रि० ) १ आघात लगाना, ठोकना, पीटना। २ अट्टहास करना, जोरसे हँसना।

ठठेरमंजारिका ( हि० स्त्री० ) ठठरेकी विष्ठी। यह विष्ठी रातदिन बरतन पोटे जानसे न ता कुछ डरती और न किसी अच्छे शब्द पर मोहित होती है।

ठठेरा ( हि० पु० ) १ बज्र को धातु पीट पीट कर बरतन बनाता है। ठठेरा। २ प्याज बाजरेका ठ ठन।

ठठेरा—एक हिन्दूजाति। तमिष पौर पोतलके बरतन बनाता तथा वेचना को इन लोमीको लपजीमिका है। ठठेरा पौर ठठेरा दोनो एक ही श्रेणीके पदार्थन हैं। मि० नेमकिरडका कहना है, कि ठठेरा तमिष, टोन पौर जर्मनी पादिकी मन्दा कर तरफ तरफके बरतन बनाते हैं पौर ठठेरा जर्मनी मन्दा बरतनमें पोप चढ़ाते तथा वेचन बूटे लम्बा कृति हैं। किन्तु बड़गोला मन्दा है, कि ठठेरे लोम केवल पदमथ्य प्रातिभे कपटुक टोन, रंगी पादिभे गहना मनाते हैं। मिरजापुरके ठठेरा कहते हैं, कि एन लोमीका पादिम वास बड़ानमें था। मयमग लोन चार पुख्य रूप कि भे लोम गात्रावाट त्रिभुजे नसोरगद्धमें था कर इम बने हैं। लम्बनकाके ठठेरे जपनेकी चरित्र-संयं इत्य बतलाते हैं। एन लोमीका कहना है कि परगुदासने कब जमलकी चरित्ररहित कर खाना था तमी ठठेरेके एक मर्मबनी चरित्राकोने कामाउसु-कविने वषां धाक्य लिया था। समके मर्मले जो मन्तान उत्पन्न हुई बट ठठेरा कहलाने लगे। भि लोन चपना पादिम वास लक्ष्मणसेके रतनमदमें बनलाते हैं। बनारसके ठठेरे यज्ञोपवीत पहनते पौर चरित्र तथा वैश्वके बाद चपना जो स्थान समझते हैं।

इन लोमीका विवाह समानन पमांनभियोगा होता है। विधवा विवाहको प्रथा भी जाती है। मजाबोर, पांच पोद, मयबनो तथा खानो इन लोमीका उपान्य देवी हैं। ये लोम ब्राह्मण शास्त्रपूत पौर इनवारिके यथा वैचन पक्षी रनोई पाते हैं पौर बको लसी ज्ञानमें ग्या लक्ष्मी यदि लभोकी जातिभेके किनोने बनाई ही। सुभपपर नगर, लक्ष्मणाबाद, गाइजहागपुर, इनाहाबाद, अमीरी बनारस, मिरजापुर, बन्धी, धाबमबक, गीपडा, प्रतापगढ़ पादि टिमोमें ये चरित्र म प्यामें पाये जाते हैं।

ठठेरो ( हि० खी० ) १ ठठेराकी स्त्री। २ ठठेरेका काम बरतन बनातेका काम।

ठठोन ( हि० पु० ) १ निनोदभिय, टिड्डोवाक। २ छप हान, ईमी।

ठठोकी ( हि० खी० ) छपहाक, ईको, टिनको।

ठठिया ( हि० पु० ) एक प्रकारका नैचा त्रिभुको निगाकी चिन्तुन लक्षी होती है।

ठठ्या ( हि० पु० ) १ रीढ़, पमनो। २ पतङ्गमें लामो हुई लक्षी समानी।

ठठिया ( हि० खी० ) बाठको लक्षो सोपनी।

ठठेरीराम—हिन्दीके एक पद्यके कवि। इनकी कविता बड़ो रो भरम पौर मन्त्रिपूर्ण होती थी। लदाहरबायं एक लोभे ही जाती है—

“बसुप्रण बारे कय बंकाक कृपा कर कर किंए गिहक।  
 बंटी बोर किश किन टिक बाम सुनावो कीवोराक।  
 लोहाको शिक बरामी नाम मयबनी सुकपीवाक।  
 पूवाकी लव रीति बनार्ई एके करिवा करो विवाक।  
 शिबिर दूर कर डान दिवाको परमें दीपक दीनो वाक।  
 बहावमारके बर बरकए समन सनदके सुन्दर बहाक।  
 एन सुन मीर सीब धाम मको शन राखी भी सुकटाव।  
 रेके डीरीराम सुम्बानी किन्तारकपी की इतिराक।”

ठन ( हि० खी० ) एक शब्द जो बिनी धातु पर पाषात पड़नेसे जाता है।

ठनक ( हि० खी० ) १ बूढ़का इत्यादिका शब्द। २ ठहर ठहर कर होनेवाला दर्द, असह्य, टीम।

ठनक्य ( हि० खि० ) १ ठन ठन शब्द करना। २ ठहर ठहर कर पोड़ा होना।

ठनका ( हि० पु० ) १ धातु छप्ट पादि पर पाषात पड़ने का शब्द। २ पाषात, ठोसर। ३ ठहर ठहर कर होने वाली पीड़ा।

ठनखाना ( हि० खि० ) बज्राना, शब्द निकालना।

ठनकार ( हि० पु० ) धातुबण्डके बजानेका शब्द।

ठनगल ( हि० पु० ) बह बट जो सुरम्बार पानेवासी विवाह पाणि मङ्गल पद्यमरो पर करते हैं।

ठनठन ( हि० खि० ) धातुबण्डके बजानेका शब्द।

ठनठनवोपान ( हि० पु० ) १ यज्ञ बलु जिसके भीतर कुछ भी न हो, निःसार बणु। २ निर्बल मनुष्य परीर पादमो।

ठनठनाना ( हि० खि० ) बज्राना, पाषात निकालना।

ठनता ( हि० खि० ) १ पमुहित होना, समारम्भ होना, किङ्कना। २ निमित्त होना, स्थिर होना तथा होना।

२ प्रयुक्त होना, ठहरना, जमना । ४ उद्यत होना, सुस्त होना ।

ठनमनना ( हिं० क्रि० ) ठनमनना देखो ।

ठनाका ( हिं० पु० ) ठनकार, ठनठन शब्द ।

ठनाठन ( हिं० क्रि० ) भनकारके साथ ।

ठपना ( हिं० क्रि० ) १ आरम्भ करना, छेड़ना । २ समाप्त करना, अच्छी तरहसे करना । ३ निश्चित करना, पक्का करना । ४ प्रयुक्त करना, लगाना, नियोजित करना । ५ ठनना । ६ मनमें दृढ़ होना । ७ स्थापित करना ठहराना । ८ स्थित होना, जमना । ९ लगना, प्रयुक्त होना ।

ठप्पा ( हिं० पु० ) १ लकड़ी धातु मट्टे आदिका खण्ड । इस पर किमी प्रकारकी आकृति इस प्रकार खुदी रहती है कि उसे किसी वस्तु पर रख कर दवानसे दूसरी वस्तु पर भी वही आकृति बन जाती है, साँचा । २ छाप । ३ वह साँचा जिससे गोटे पट्टे पर बेल बूटे उभारे जाते हैं । ४ छाप, नक़्श । ५ एक प्रकारका चौड़ा नक्काशीदार गोटा ।

ठमक ( हिं० स्त्री० ) १ रुकावट । २ चलनेमें हाव भाव, लचक ।

ठमकना ( हिं० क्रि० ) १ चलते चलते रुक जाना । २ लचकके साथ चलना ।

ठमकाना ( हिं० क्रि० ) ठहराना, रोकना ।

ठमकारना ( हिं० क्रि० ) ठमकाना ।

ठरना ( हिं० क्रि० ) १ अत्यन्त शीत लगनेसे ठिठुरना । २ अत्यन्त ठण्ड पड़ना ।

ठरी ( हिं० पु० ) १ मोटा सूत । २ वह बड़ी ईंट जो अच्छी तरह पकी न हो । ३ महुँवेको निकलत शराब । ४ अंगियाका बन्द, तनी । ५ एक प्रकारका जूता । ६ भद्र शोर बँडोल मोती ।

ठरी ( हिं० स्त्री० ) १ धानके बोज जिनके अंकुर उठे हुए न हों । २ बिना अंकुर उठे हुए धानको बीआई ।

ठवनि ( हिं० स्त्री० ) एक स्थिति, बँठक । २ सुद्रा, आसन ।

ठयर ( हिं० पु० ) गैर देखो ।

ठस ( हिं० वि० ) १ कठिन, ठोस, कड़ा । २ जिसके भीतर

का भाग खाली न हो, भीतरसे भरा हुआ । ३ जिसको बुनावट बहुत घनी हो, गाठा, गफ । ४ दृढ़, मजबूत । ५ गुरु, भारी । ६ निष्क्रिय, सुस्त मट्टर । ७ जो कुछ खोटा होनेके कारण ठीक आवाज न दे । ८ सम्पन्न, धनाढ्य । ९ कृपण, कंजूस । १० हठी, जिद्दी ।

ठसक ( हिं० स्त्री० ) १ अभिमानपूर्ण चेष्टा, नखरा । २ दर्प, गुमान, शान ।

ठसकदार ( हिं० वि० ) १ घमण्डी, शान करनेवाला । २ जिसमें खूब तड़क भड़क हो ।

ठसका ( हिं० पु० ) १ सखी खाँसो । २ ठोकर, धक्का ।

ठसाठस ( हिं० क्रि०-वि० ) अच्छी तरहसे परिपूर्ण किया हुआ, खूब कस कर भरा हुआ, खचाखच ।

ठसना ( हिं० पु० ) १ छोटी रुखानो जो नक्काशी बनानेके काममें आती है । २ गर्वपूर्ण चेष्टा, नखरा । ३ अहङ्कार, घमण्ड, शान, गुमान । ४ ठाट वाट, वह

जिसमें तड़क भड़क हो । ५ सुद्रा, आसन ।

ठसक ( हिं० स्त्री० ) नगारे वजनेका शब्द ।

ठहरा ( हिं० क्रि० ) धोईका बोलना । २ घण्टेका बजना, ठनठनाना ।

ठहर ( हिं० पु० ) १ ठोर, स्थान, जगह । ३ वह स्थान जो रसोईके लिये मट्टेसे लीपा गया हो, चौका । ३ रोई घरमें मट्टीकी लिपाई, पोताई ।

ठहरना ( हिं० क्रि० ) १ गतिमें न होना, रुकना, थमना । २ विश्राम करना, कुछ काल तकके लिये आराम करना । ३ स्थित रहना, इधर उधर होना । ४ स्थिर रहना, टिका रहना । ५ बहुत दिन तक रहना, जल्दी खराब न होना, चलना । ६ क्षुब्ध जलकी स्थिर होने देना, पानी आदिका हिलना डोलना बँट करना,

धिराना । ७ प्रतीक्षा करना, आसरा देखना । ८ रुकना, थमना । ९ निश्चित होना, पक्का होना, तै पाना ।

ठहराई ( हिं० स्त्री० ) १ स्थिर करानेकी क्रिया । २ स्थिर करानेकी मजदूरी । ३ अधिकार, कला ।

ठहराज ( हिं० वि० ) १ नियत समयके पहले नष्ट नहीं होना, ठहरनेवाला । २ दृढ़, मजबूत, टिकाऊ ।

ठहराना ( हिं० क्रि० ) १ गति बँट करना, चलनेसे रोकना । २ विश्राम करना, टिकाना । ३ टिकाना,

गिरने न देना, घनाता। ४ खिर रखना, सनबिचन न होने देना। ५ किसी कामको रोचना, ब ट करना। ६ निमित्त करना, ते करना।

ठहराव ( हि० पु० ) १ खिरता, ठहरनेका भाव। २ निवारण निषय सुकररो।

ठहरोतो ( हि० स्त्री० ) वह प्रतिका को बिनाहर्म सेन देनके विषयमें की जाती है।

ठहाका ( हि० पु० ) पट्टावाय, जोरलौ होसो।

ठी ( हि० पु० ) १ बन्दूककी धामाक। २ ठीव देको।

ठीई ( हि० स्त्री० ) १ खान जगह। २ तई। ३ समीप निवृत्त, पास।

ठीई ( हि० स्त्री० ) ठई देयो। १ निवृत्त, समीप, पास।

ठीव ( हि० वि० ) १ नीरम जियका रम रूख गया हो। २ को दूब न दितो हो।

ठीवै ( हि० स्त्री० ) १ खान ठोड, जगह। २ निवृत्त, पास। ३ वह शब्द जो बन्दूक बूटनेसे होता है।

ठीव ( हि० पु०-स्त्री० ) खान जगह ठिकाना। यह शब्द प्रायः मुनिजमें ही खानबार होता है, परन्तु टिको मिरठ धारि खानमिं हने खोजिना मानते हैं।

ठीवना ( हि० क्रि० ) १ बन्दूकके प्रविष्ट करना दबा कर चुमाना। २ जोरसे मरना। ३ ठन ठन शब्दसे साथ धामना।

ठाकुर ( हि० पु० ) १ देवमुक्ति देनता। ईश्वर, परमेश्वर, भगवान्। २ पूज्यध्वजि। पविठाना, नायक सरदार। ३ जमींदार, गाँवका मालिक। ४ अत्रियोंको उपाधि। ५ धामो, मालिक। ६ माइयोको उपाधि आवित।

ठाकुर—१ एक हिन्दू कवि। कोई तो हर्षे पतहपुर जिकेके पसनी धामका भाट बतनाते हैं और कोई बुन्देलखण्डके कायक। १६३१ ई० में इनका जन्म हुआ था और वे कुछ शब्द प्रायके समय तक (१०१८ ई०) जीवित रहि। इनके विषयमें बुन्देलखण्डमें दनाकहानो है कि बुन्देला लोग जब गोमार्दे विचारी बहादुरको जन्मा करमके जिये खवपुरमें एकज हुए थे, तब ठाकुर कविने उन कीर्तिके पास एक कविता मिस भिजो थी। जिनका पद्यका शरण थी था— 'कहिजे मुनिज की कहु न दिया' ० इमर्थ

पानिके सावजी के मोम पुरत तितर बितर हो गये। विचारी बहादुरको यह बात मानम होने पर उन्होंने इनकी कविताको खूब प्रशंसा की और हर्षे यथेष्ट पुरस्कार दे बिदा किया।

२ इस नामके और एक कवि हो गये हैं जो १०२० ई०में विद्यमान थे और जिन्होंने "ठाकुरदास" तथा विचारी मतमईकी टीका रची है।

ठाकुरगाँव—१ बहालके पन्तगत दीनाजपुर जिनका उत्तरोय उपबिभाज। यह पचा० २५ ४० से २६ २३' ४०' और देशा० ८८ २' ३०' से १८' ५०'में अवस्थित है। मूपरिमात्र ११०१ वर्गमोम है। उपविभायके दक्षिण बहुतसो नदियाँ बहती हैं। लोकसंख्या लगभग ५३१०८६ है। इसमें १८८० घाम जवते हैं। यह एक भी नहीं है। कामानगरमें एक बठियाँ मन्दिर है।

२ उक्त उपविभायका महर। यह पचा० २६ ३' ४०' और देशा० ८८ २६' ५०' पर लगन मदेके बिनारी अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १६१८ है। यहाँ एक छोटा कायागार है जहाँ बिकर १८ केदो रके जाते हैं।

ठाकुरदास—हिन्दुकी ये पन्थके कवि हो गये हैं। इनके पिताका नाम सुमान मिश्र था। वे जातिके कायक थे और परचारोमें रहते थे। मध्ययु १८८०में इनका जन्म और १८९३में देहान्त हुआ था। इनकी भक्तिपद्य की कविता इनको सुझानेसे और शरद होती थी, कि परचारो-मिथने एक बार हर्षे कविट पारितोषिक दिया था। यों तो इनकी समी कविताएँ एकने एक बढ़ कर हैं, पर यहाँ संक्षेप एक ही देते हैं—

"असु की कवरी बार बगारो।  
 दीनदाव दीनबुवनजन है बह विरर निहारो।  
 नजामन पे हुवा कीनी मान कैल ही लारो।  
 माइ मार नम कण्ड हुगतो बाधे कियो मिलाठो।  
 कण्ड कोड शिराफुड बारी ईक दूक कर बारो।  
 नरन बरीकिय रक्षा कीनी कक इरुचन मारो।  
 इश्वरानिज दुव हरो इराना नलने इरा निवारो।  
 ठाकुरदास शक परचन को बाधो काहे विचारो०"

० श्री हरिना पितृविह बरौम नामक मन्थके ११२ वृत्त में ही यह है।

ठाकुरद्वारा ( हिं० पु० ) १ देवालय देवस्थान । २ पुस्तक-पोस्तमधाम, पुणेमें जगन्नाथका मन्दिर ।

ठाकुरद्वारा—युक्तप्रदेशके सुरादावाट जिलान्तर्गत इमो नामकी तहसीलका एक शहर । यह अक्षा० २८° १०' ४०" और देशा० ७८° ५२' ५०" पर सुगादावाट शहरसे २७ मील उत्तरमें अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ६१११ है । यह शहर मुहम्मदशाहकी शासन-कालमें (१७१८-४८ ई०) बसाया गया था । १८०५ ई०में पिण्डारी-नामक अमोरखानि इसे लूटा था । यहां एक तहसीली, पुलिस स्टेशन, अस्पताल और American Methodist mission की एक शाखा है ।

ठाकुरप्रसाद ( हिं० पु० ) १ नैवेश । २ भाटी और आश्विनके मध्यमें होनेवाला एक प्रकारका धान ।

ठाकुरप्रसाद खतो—हिन्दीके एक धुरंधर तथा निष्कण्ट विद्वान् । इनका जन्म मन् १८६५को कागोमें हुआ था । स्वनामधन्य बाबू विश्वेश्वरप्रसाद जो कागोके सरकारी कोषागारमें जेड क्लर्क रहे, इनके पिता थे । हिन्दी तथा फारसीमें इनको अच्छी पठ थी । अंग्रेजोंमें इन्होंने १८८५ ई०में कलकत्ता युनिवर्सिटीको इंटरिम परीक्षा पास की थी । इट्रिम होने पर भी अंग्रेजोंमें इनका पूरा टक्कल था । पिताके मरने पर कई पटीं पर काम करने वा टये पुलिसके कोषाध्यक्ष बना टिये गये । पुलिस-विभागमें इन्होंने कई वर्ष कार्य किए तथा कई अच्छे प्रगमापत्र भी प्राप्त किये थे । अन्तमें इनकी रुचि इस ओरसे हट गई और ये अपने समय पढ़ने लिखनेमें व्यतीत करने लगे : 'लखनऊकी नयाबी' नामकी पुस्तक इन्होंने लिखी हुई है । भूगर्भ विद्या, ज्योतिष और उत्तर-ध्रुवकी यात्राके लेख पर इन्हें काशी-नागरी प्रचारिणी सभासे चाँदीके तीन पदक मिले थे ।

कपड़े बुननेमें भी ये बड़े मिह हस्त थे । इस विषय पर इन्होंने 'देभोय करवा' नामकी एक पुस्तक भी लिखी है । इन्होंने 'विनोदवाटिका' तथा 'जमींदार' नामका पत्र कुछ काल तकके लिए निकाला था । दिनों दिन कपड़ा मीनेका मशीनोंका प्रचार बढ़ते देखे ये उसके माधारण द्रोप दूर करनेके विषय पर 'जगत् व्यापारिक पदार्थ कोप'-नामक एक-सप्तस और उपयोगी ग्रन्थ लिख

गये है । इसके लिए सरकारकी ओरसे इन्हें १०००० रुकी सहायता मिली थी ।

ये बड़े मिननमार, मग्नचित चोर हंसमुख थे । हिन्दुओंमें व्यापार सम्बन्धी पुस्तकोंको लिख कर ये इतने प्रसिद्ध हो गये है ।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी—संस्कृतके एक विद्वान् । रायबरेली जिलेके किशनगढपुरमें इनका जन्म था । १८०२ ई०में इनका जन्म हुआ था । 'रमचन्द्रोदय' नामक संस्कृत ग्रन्थ इन्होंने बनाया हुआ है । इनके पास भाषा-साहित्यका अच्छा पुस्तकालय था ।

ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी—ये भी एक अच्छे विद्वान् थे । इनको जन्मभूमि सीरा जिलेके अर्नागजमे थी । १८८३ ई०में ये विद्यमान थे । इन्होंने 'चन्द्रगेश्वर' काव्यकी रचना की है ।

ठाकुरप्रसाद मिश्र—अवध देगालागत पगामीके एक ब्राह्मण कवि । इनकी कविता बड़ी शोजसिन्धी और मरस ज्ञोती थी । ये महागण मानसिंह अयोध्या-नरेशके यहां रहते थे । इनकी एक कविता नोचि देी जाती है ।

“भाजे भुक्तदंठके प्राण चोट बाजे

धीर सुदरी धरेर सुनें मटरी कंदरी ।

सुगठ टान सेन मैं ट शंसे धीर

बाधन हभागन बजग कंठे चोपरी ॥

पंडित प्रधीन कहे मानसिंह भूरति कमान पै

अरोपत तो तीगो तीर केशरी ।

निषके ससेटे गज बाकके लपेटे लवा

तैसे भूले भूलल ककतनकी गहरी ॥”

ठाकुरवाडी ( हि० स्त्री० ) देवालय, मन्दिर ।

ठाकुरराम—हिन्दीके एक कवि ।

ठाकुरवश—कलकत्ताके विख्यात ब्राह्मणवंशसंभूत सम्प्रान्त पीरानी गोठी । ये अंगरेजोंसे यद्यपि सम्मानित होते थे । इसमेंसे किसी किसीको अंगरेजोंसे 'महाराज'-की उपाधि मिली है । ये अपनेको भटनारायण-वंशके महात्मा हारिकानाय ठाकुर, प्रमन्नकुमार ठाकुर, वतलाती है । इस वंशमें महर्षि देविन्द्रनाथ ठाकुर, महाराज यतीन्द्रमोहन ठाकुर, राजा गीरोन्द्रमोहन ठाकुर प्रभृतिने जन्मग्रहण किया है । पीराली देखो ।

ठाकुरसिंघा ( वि० स्त्री० ) १ देवताका पूजन । २ किसी मन्दिरमें देवताके नामसे उजमने को फुई मय्यति ।  
 ठाकुरी ( वि० स्त्री० ) आभित्य, पाविष्य डकुराई ।  
 ठाकुरीय य—निपासका एक पराक्रान्त राजवंश ।

लिच्छविराज गिबदेवके राजवंशकाकर्म महासामन्त च'शुभमां पाविभूत हुए। येही ठाकुरो-राजवंश गये प्रथम पुत्रवत् । अपने शोम्बरीयगुहने ये विन्तीच' जनपदके पचीम्वर हुए। लिच्छविराजका प्राधान्य लोकार करने पर ये एक पराक्रान्त आधीन राज को गये थे। निपासके पाव'तोय व शावलोके मतमें १००० क्षत्रियदाम्नें चणोत् ६० मतमें १०१ वर्षे पहले च शुभमां राजगणे पर बैठे थे पोर उनके पहले विज्जमादिह्य निपास आ कर कहाँ अपना सम्बन्ध बना पाये थे। क्रिष्ट, शौरभूष प्रथति प्रकतत्व विदूके मतानुसार च'शुभमां ६१८ ई०में राज्य करते थे। क्रिष्टु एक पाव'तीय व शावली पोर प्रकतत्वविदुका मत मसोबोमने श्रीमा नाम्म नहीं पड़ता है।

श्रीकामादिप्रेत गिलासेखके अनुसार च शुभमां पोर लिच्छविराज गिबदेव दोनों समसामयिक हैं। वर लेख ११६ न प्यक पतिदिष्ट सम्बन्धमें सुदा मण है। एक युरोपीय प्रकतत्वविदोने उन पाइको शुभ सम्बन्धपापक पोर उनके बाद च शुभमा प्रथतिके गिलासेखमें जो पाइ है उसे च'प' सम्बन्धपापकके जेदा लिख किया है।

हर्षवर्धनके समय चीनपरिभाषक युएनचुयाहने निपास को याता की थी। उन्होंने लिखा है, कि महाद्वानो च'शुभमा उनके बहुत पहले इस लोकमें चल बसे हैं। पाव' तोयक शावलीमें निपा है, कि च शुभमान ६८ वर्ष तक राज्य बिद्या या उनके राज्याभिषेकक पहले विज्जमादिह्य निपास या कर अपना सम्बन्ध प्रकतित कर गये हैं। क्रिष्ट प्रथति पुराविदोने पाव'तीय च शावलोके पाइवर पर उन विज्जमादिह्यको च'प' बतनाया है। अब एक ब'शावलोके मतमें च शुभमानि ६८ वर्ष राज्य बिद्या है पोर उनके पहले सम्बन्ध प्रकतित हुआ था तदा च'प'के समसामयिक चीन परिभाषकक अनुसार उनके निपास जार्निके पहले

ही च शुभमांको मृत्यु हो चुकी थी तो अब लयव है, कि च'प'देवके निपासका सम्बन्ध प्रचार हुआ हो चीनपरि भाषक युएनचुयाह ६१० ई०का १०वीं करबरोको निपास गये थे। निपासमें च शुभमाके समयके जो बहुतसे गिना सेक पाविभूत हुए हैं, उनमें १८ पोर ४१ पाइ सुदे हुए हैं। युरोपीय पुराविदोने उन पाइको च'प'-सम्बन्ध प्रापक माना है। डाकर कुकर पोर क्रिष्ट साइयके मतमें ६०१ ई०की ६००में च'प' सम्बन्ध प्रारंभ हुआ है। अतएव उनके मतमें च शुभमा ( ६०६ + १८ ) = ६२४ ई०में बिय मान है, क्रिष्टु चीनपरिभाषकका च'प'नाके अनुसार ६३० ई०के पहले हो च शुभमाको मृत्यु हुई थी। ऐसी हान्यमें च शुभमाके गिनासेख बचित पाइको च'प' सम्बन्धप्रापक नहीं मान सकती है।

पहले च शुभमाके समसामयिक गिबदेवका जो सम्बन्ध प्रकित गिनासेख पाया गया है वह गक-सम्बन्धपापक है तथा च शुभमाके गिनासेखके पाइको शुभसम्बन्ध प्रापक मान भी तो कोई च'प्युक्ति नहीं। ११८ ई०में चन्द्रगुप्तने विज्जमादिह्य शुभसम्बन्ध प्रचार किया है। च'प'ने निपासके लिच्छवि राजकन्या कुमादेवोके विवाह किया था। गुप्तवंशके देखा। इसमें कुछ भी मन्देह नहीं, कि विवाह करके ही निपासमें अपना सम्बन्ध प्रचार कर पाये हों। इस गिबदेवके गिलासेखके अनुसार ११६ ( गक ) सम्बन्ध चणोत् १८४ ई०में च शुभमाका पराक्रम गिनासमें बहुत बढ़ा बढ़ा था। उनमें पहने ही ( पचात् ११८ + १४० = २५८ ई०के कुछ पहले ) ने महाप्राजको च'प'चिने भूषित हुए थे।

च शुभमाके बाद उस वंशमें चीन चीन राजा हुए उनका विषय परिषय सामयिक गिनाकनकर्म भी नहीं पाया जाता है। प्राव तोयक शावलोके मतमें च शुभमाके बाद उनके पुत्र कतवमा कतवमाके बाद श्रमय' भीमा कु'न, मन्देव, मोरदेव, चन्देवुदेव, नीन्देव, वर देव, शूरदेव, बईमानदेव, शुभकामदेव, भीमदेव, लक्ष्मीकामदेव पोर जयकामदेवने राजा होने गये।

From a copy preserved in the Indian Museum, Vol. 11, p. 161 and Dr. Hoerners's Synchrotable Table in Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1889, p. 1.

See Pagan's Ancient Geography of India, p. 164. + Birkner's Note on the twenty-three inscriptions from Nepal, p. 45 and Dece's Inscriptions of the Gupta Kings.



अन्तिम राजाके कोड़े पुत्र न रहने के कारण उनकी मृत्युके बाद नवाकोटके ठाकुरों वंश गोय भास्करदेव राज्यसिंहासन पर बैठे। उनके बाद यथाक्रम वनदेव, पद्मदेव, नागार्जुनदेव और शङ्करदेव राजा हुए। शङ्करदेवकी मृत्युके बाद अशुवर्माके वंश गोय और एक शाशासुक्त वामदेव राज्यसिंहासन पर आरूढ हुए। उनके बाद पुताटिक्रमसे वामदेव, हर्षदेव, मठाशिवदेव, मानदेव, नरसिंहदेव, नन्ददेव, रुद्रदेव, शिवदेव, अश्विदेव, अभयप्रथ और आनन्दमद राजा कहलाये। आनन्दमदके समयमें कर्णाटक वंशीय नान्यदेवने नेपाल राज्य पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकारमें लीया। इसी समयसे ठाकुरों वंशका राज्य जता रहा। अब भी नेपालके अनेक स्थानोंमें ठाकुरों वंशका नाम है। उनको अबस्था हीने हीने पर भी वे अपनेको राजवंशीयके जैसा सम्मानित और गौरवान्वित समझते हैं।

ठाट ( हि० पु० ) १ लकड़ों या बंसको फटिरीका बना हुआ परदा। २ टाँचा, पंजर। ३ वेद्य, विन्यास, शृङ्गार, रचना, सजावट। ४ आडम्बर, दिखावट, धूमधाम। ५ आगम, सुख, मजा। ६ प्रकार, शैली, ढंग, तरीका। ७ आयोजन, सामान, तैयारी। ८ सामग्री, सामान। ९ युक्ति, उपाय। १० कुत्तीमें खड़े होनेका ढंग, पेंतरा। ११ कवूतर या सुरगीका प्रसन्नतामें पर भाडनेका ढंग। १२ सितारका तार। १३ समूह, झुंड। १४ वह मांसका पिण्ड जो बैल या साँढका गरदनके ऊपर रहता है, कूबड़।

ठाटना ( हि० क्रि० ) १ निर्मित करना, संयोजित करना, बनाना। २ अनुष्ठान करना, ठानना। ३ सुसज्जित करना, सजाना, सँवारना।

ठाटवंदो ( हि० स्त्री० ) छपर या परदे आदि बनानेका काम, ठाट, टहर।

ठाटशाट ( हि० पु० ) १ सजावट, बनावट, सजवज। २ आडम्बर, दिखावट, तहक भड़क।

ठाटर ( हि० पु० ) १ ठाट, टहर, पट्टी। २ ठटरी, पंजर। ३ टाँचा। ४ टहरसो कतरा जिस पर कवूतर आदि बैठते हैं। ५ शृङ्गार, सजावट, बनावट।

ठाटर—भविष्यत्रयखण्ड-वर्षित स्वर्गभूमिके मध्यभागमें

काशीमें एक योजन पश्चिममें अवस्थित एक प्राचीन ग्राम। मुसलमानराजाके समय यहाँ बहुतसे ठठरे या कठरे रहते थे इसी कारण ग्रामका नाम ठाटर पडा है। यहाँके राजा भूमिहार जातिके थे। गुलाबमिह नामक एक मनुष्यने मुसलमानोंको भगा कर यहाँ पर कुछ काल तक राज्य किया था। यहाँका कीटगढ़ उन्हींका बनाया हुआ है। उनके बाद गौतमगोत्रोय राजपूतोंने इसे अपने अधिकारमें लाया। अभी पूर्व सन्धि लुप्त हो गई है। आजकल यहाँ केवल रूपकोंका वास है।

( ब्रह्मव० ५७ २३७ २४६ )

ठाटर ( हि० पु० ) नदीका गहरा स्थान जहाँ बस या लगी न लगती हो।

ठाडा—काशीके पश्चिम नन्दा नदीके तीर पर अवस्थित एक ग्राम। यहाँ हिन्दू और मुसलमानोंमें प्रमत्तान लड़ाई हुई थी। ( ब्रह्मव० ५७ २३-२४ )

ठाडा ( हि० पु० ) खेतको एक प्रकारकी जोताई।

ठाडेखरी—एक प्रकारके संन्यासो। ये दिनरात खड़े रहते हैं और इसी अवस्थामें भोजन इत्यादि सब काम करते हैं। सामनेमें किसी चीजका सहारा मिल जानेसे ही ये सो जाते हैं।

ठान ( हि० स्त्री० ) १ अनुष्ठान, समारंभ, कामका शुरु होना। २ कार्य शुरु किया हुआ काम। ३ दृढसंकल्प, पक्का इगदा। ४ चेष्टा, अंदाज।

ठानना ( हि० क्रि० ) १ अनुष्ठित करना, किसी काम को सुस्त दोसे शुरु करना। २ स्थिर करना, दृढसंकल्प करना, पक्का करना।

ठाार ( हि० पु० ) १ अत्यन्त शीत, गहरी सरदो। २ हिम, पाला।

ठाल ( हि० स्त्री० ) १ जीविकाका अभाव, बेकारी। २ अवकाश, फुरसत।

ठाला ( हि० पु० ) १ किसी प्रकारके रोजगारका न रहना। २ जीविकाका अभाव, रुपये पैसोंकी कमी।

ठाली ( हि० वि० ) १ रक्त, खाली, बेकाम।

ठाव ( हि० स्त्री० ) ठाव देखो।

ठासा ( हि० पु० ) लोहारोंका एक यन्त्र। इससे वे मंकीर्ण स्थानमें लोहेको कोर सिकालते और उभारते हैं।

ठाईरूपक ( हि० पु० ) माला मालापोका मूठ मञ्जा पञ्च तन्मः । इमं पोर पाङ्का चोतामं बहूत योङ्का चमन है ।

ठिंगना ( हि० वि० ) बम लुचार्का कोटे कण्का नाट । ठिब ( हि० लो० ) धानुको इरुका चटा द्वा पा छोटा टु, बङ्का जो किरन जोङ्क मगमिडे कानमं पात है चिकती ।

ठिक्कोर ( वि० लो० ) लुचुं डीकई पादिने पाबटादिन मूमि, बब लपोन जर्षा पवङ्के ठीकई पादि बवतने पडे रो ।

ठिबाई ( हि० लो० ) पालके जम कर ठीक ठीक बैठ नीका भाव ।

ठिकाना ( हि० पु० ) १ पाल मेर जगइ पना २ निवास स्थान, ठरनेको मयक । ३ पाचमस्थान, निबाइ कानेका ठोर । ४ प्रमाण ठीक । ५ प्रबन्ध पापोनन ६ दीवस्त । ७ गाराबार, पल, बट । ( हि० ) ८ श्वित करना ठरगना, पङ्काना ।

ठिकरना ( हि० हि० ) १ मतिमें पठानु बड ज्ञाना पठ टम इर आना । २ पक्षिज डाना मदिमना म डोलना ।

ठिकरा ( हि० हि० ) पक्षिज डोलने म कुबिन कन, प्राङ्के पङ्कना ।

ठिरना ( हि० हि० ) ठिगा रेगो ।

ठिनचना ( हि० हि० ) १ कोटे छोटे लङ्कोका ठरर इर कर रीनेक चोमा मण्क निजानना । २ ठनचने रोना, नेनेका मवरा करना ।

ठिर ( हि० लो० ) कठिन मोन गङ्को मरटी ।

ठिरना ( हि० हि० ) पक्षिजगोलने म कुबिन कन प्राङ्के पङ्कना ।

ठिपना ( हि० हि० ) १ बलपूर्वक जिमो पोर बदावा आना, ठेका आना । बलपूर्वक बटना मुबना, चँलना ।

ठिपना ( हि० लो० ) मगरो, घोटा चटा ।

ठिपुपा ( हि० वि० ) निजना, निक्कना, चँ चाय ।

ठिमो ( हि० लो० ) ठिगा रेगो ।

ठिगरो ( हि० लो० ) निक्क इरगाइ बङ्गाइ ।

ठोक ( हि० वि० ) १ सामाजिक क्विन मय । २ बङ्गुड

पञ्चा, मुनमिय । ३ गइ गरी । ४ जिममें कष्ट लुटि न हो पञ्चा, दुःखना । ५ पञ्चो मइ बैठ ज्ञानिपाना, जो डोना न हो । ६ मय निह मोका, ७ निटिट जिममें पुष्ट फर्क न पडे । निविन मिय पङ्का । ( पु० ) ८ हड़ बान पडे बात । ९ मिर प्रबन्ध, पङ्का पायो इन बन्धोबप । ११ योग, जोङ्क, डेरन मोजान ।

ठेकठाक ( हि० पु० ) १ निमित्त प्रबन्ध, बन्धोबप । २ श्रीबिबाका प्रबन्ध, डेर डिजाना । ३ निमित्त ठरगाव । ( वि० ) ४ प्रमुन, बम कर तैवार ।

ठीकडा ( हि० पु० ) मोषण कपो ।

ठीकरा ( हि० पु० ) १ मगोडे बरननका टटा फूटा ट कडा । २ भोगपास, पुरना बरतन । ३ भिषागब, भांय मोगिबका बरतन ।

ठीकरो ( हि० लो० ) १ मगोडे बरननका टूटा फूटा ट कडा । २ चट बमु निरन्धो चोत्र । ३ चिमन पर रवे ज्ञानका मगोका तना । ४ विविधा योनिका ठमरा द्वा तम लुच्य ।

ठीका ( हि० पु० ) १ कुच का पादि म मनेमें डिमोइ किमो कामकी पूरा कानेका जिषा । २ किमो बमुका कुच कानक किये कूनै करर म मर्गे वर मीः नेन कि मय मय बमुना पामदनी बमुन नरवे पोर कुच पवन मुषाका काट कर बगबर मानिकको नेता ज्ञान इबारा ।

ठीकदार ( हि० पु० ) बब जो मोका देता हो ।

ठीका ( हि० पु० ) डेर रेगो ।

ठीको ( हि० लो० ) हँसाका मण्ड ।

ठीके ( हि० लो० ) दिनदिनाइका मण्ड ।

ठीका ( हि० पु० ) १ लङ्काका कूटा जिमि लोकर, बङ्गई पादि जमाममें गा । रगने है । इमका घोडाना भाग जमोनेके ज्ञान रहना है जिम पर है बमुपाङ्का रग कर पोटेने लटा होवने है । २ बङ्गईका लङ्को पारन का कूटा । इममें है लङ्कोको जम कर गङ्गा कर दिने पोर बरना है । ३ बोरनेका ज पा स्थान कैटी लो । ४ मोमा कण ।

ठुठ ( हि० पु० ) १ मय इव मुरा द्वा पिय । २ बर मनुष्य जिमका कब बटा हो, मना ।

टुकना ( हि० क्रि० ) १ आघात मड़ना, चोट देना, पिटना । २ चोटमे धँसना गड़ना । ३ ताड़ित होना मर खाना । ४ परान्त होना, झारना । ५ घटा लगना तुकमान होना । ६ पैरसे वेड़ो पड़ना । ७ टाखिल होना ।

टुकवाना ( हि० क्रि० ) १ टोक मारना नात मारना । २ खराब जान कर पैरसे पटाना ।

टुकवाना ( हि० क्रि० ) १ किसी दूसरेमे ठोकनेका काम कराना । २ गड़वाना, धँसवाना । ३ प्रमंग करना ।

टुकडो ( हि० स्त्री० ) १ चिबुक, टोटी । २ भूना दुधा टाना, ठोरी ।

टुकठन ( हि० पु० ) १ धातुके टुकडोके चननेका शब्द । २ छोटे छोटे लटकते ठर ठरके रोनेका शब्द ।

टुकक ( हि० वि० ) नखरेवाजी ठमक भरी ।

टुकक टुकक ( हि० क्रि० वि० ) छोटे छोटे वझकि जैसा फुटकते या रड़ रड़ कर कटते हुए ।

टुककना ( हि० क्रि० ) १ कटते हुए चलना । २ पैरसे कुंधर वजाते हुए चलना ।

टुककारना ( हि० क्रि० ) शयका देना, झटका देना ।

टुककी ( हि० स्त्री० ) १ शयका, झटका । २ रुकावट । ३ छोटी खगे प्रगे । नाटी, कोटे डोलकी ।

टुकरी ( हि० स्त्री० ) १ छोटासा गीत । इसमें चार सावाका ताल लगता है, दो ताल और दो फाँक । इसको बोलो इस प्रकार है—

+	०	१	०
(१) धेधा,	किटि,	नेवा	किटि ::
(२) तावाकि	सुन्	धा	यूना ::
(३) धाक	धिन्	धेधा,	गेटिन ::
(४) धागे,	धिन्धिन्,	धागे,	धिन्धिन् ::

२ गप, अफवाह । ( सगीनरत्ना० )

टुगियाना ( हि० क्रि० ) सगदोमे टिडुगना ।

टुगी ( हि० स्त्री० ) भूना दुधा टाना जो भूतने पर न खिले ।

टुसकना ( हि० क्रि० ) टुसकी मारना ।

टुसकी ( हि० स्त्री० ) टुम शब्द करके पादनेको क्रिया ।

टुमना ( हि० क्रि० ) १ कम कर भरा जाना । २ मुद्रिकन-ने घुमना ।

टुमवाना ( हि० क्रि० ) १ कम कर भरवाना । २ जोरमे घुमवाना ।

टुमाना ( हि० क्रि० ) १ कम दर भरवाना । २ जोरमे घुमवाना । ३ अच्छी तरह विमाना ।

टुंग ( हि० स्त्री० ) १ चीच, टाग । २ चौबका प्रकार । ३ टोना ।

टुंगा ( हि० पु० ) दूध देनी ।

टुंठ ( हि० पु० ) १ एक बृह, सुषा पेड़ । २ कटा हुआ चाय, टुंड । ३ ज्वार, जारै, देव सादिकी फसल जो नट करनेवाला एक पीटा ।

टुंठा ( हि० वि० ) १ जिममें पत्तियां और टहनियां न हों । २ कटे हुए पायका, नूला ।

टुंठी ( हि० स्त्री० ) फसल काट लिये जाने पर खेतमें बची हुई मृती ।

टुंसना ( हि० क्रि० ) टुंसना देनी ।

टुंसा ( हि० पु० ) टेंगा देनी ।

टुन ( हि० पु० ) पटवोकी टैटी कील । इस पर ये गड़ने पंठका कर उठें गूँठते हैं ।

टुमना ( हि० क्रि० ) १ अच्छी तरह भर देना । २ घुं-डना, जोरमे घुमाना । ३ पेट भर कर खाना ।

टुगना ( हि० वि० ) जिमको ऊँ चारु कम हो, नाटा ।

टुंगा ( हि० पु० ) १ अगूठा । २ निरुद्धिय । ३ मोटा, डंडा, गडका । ४ चुंगोका महसून ।

टुंगुर ( हि० पु० ) नटवट सवेगियोके गनेमें बांध दिये जानेका काठका लंबा कुंदा ।

टुंवा ( हि० पु० ) टेंगा देनी ।

टुंठ ( हि० स्त्री० ) टोटी देनी ।

टुंठो ( हि० स्त्री० ) १ कानको मैल । २ वह वस्तु जिमसे कानका छेद बंद किया जाता है । ३ वह वस्तु जिमसे गींगी बीतल सादिका मुंह बंद किया जाता है, काग ।

टुंपो ( हि० स्त्री० ) ठेठी देवा ।

टुक ( हि० स्त्री० ) १ महारा, चीठगनेको चोज । २ टुक, चांड । ३ वह वस्तु जिमसे देनेमे दोनी वस्तु लकड़ कर बैठ जाय और तनिक भी हिलने डोलने न पावे, पखड ।

४ घंटा, तथा । ५ पनात्र रनेका टहियां पादिने सिग  
 बुपा खात । ६ चोत्रो की एर बाव । ७ वर चकनो जो  
 दूटे कूटे बरतनेमें लगी रहतो है । ८ एक प्रकारको  
 मोटो महताबी । ९ बड़ो या काठोको मामो ।

ठेकना ( हि० लि० ) १ पायां सेना सहाय सेना । २  
 टिकना रचना ठहरना ।

ठेकना हांस ( हि० पु० ) बंगाल घोर पामाममें जोने  
 बाना एक प्रकारका वान । यह काजल तथा चटोरे  
 पादिसे बनानेके काममें पाता है ।

ठेका ( हि० पु० ) १ धोठपनेको वस्तु ठेक । २ बंठक  
 पट्टा । ३ लबनेमें बाँधी । ४ जोशकी ताक । ५ ठोकर,  
 चक्का । ६ मीछ देखी ।

ठेकाई ( हि० स्त्री० ) काले हागियेको चपाई ।

ठेकी ( हि० पु० ) सहाय, ठेक ।

ठेकनो ( हि० स्त्री० ) बड़ नकड़ो जिसे सहाय को  
 आते है ।

ठेक ( हि० लि० ) १ लिप्ट, बिल्कुल । २ दूर प्राप्तिम ।  
 निश्चिन्त, निश्चिन्त बाव । ३ साधारण बोली । ४ धारण,  
 एक ।

ठेप ( हि० स्त्री० ) १ चंटोमें ममा जनि नायक सोमि  
 चालीका बड़ा दुबड़ा । ( पु० ) २ दोपक चिराय ।

ठेपो ( हि० स्त्री० ) बड़ वस्तु जिन्से यीमो या मोतमका  
 मुह बंद किया जाता है, काग ।

ठेकना ( हि० लि० ) १ कना, दुबेकना ।

ठेका ( हि० पु० ) १ पायांका पाघात, ठकर, चक्का । २  
 मनुष्यके ठपेसी जानिबी एक प्रकारकी माफो । ३ दिखनी  
 नदीमें लगीके सहारे चलनेवाली नाव । ४ बकम  
 चक्का, मोड़में एकके उपर एकका बिरना ।

ठेकाटेन ( हि० स्त्री० ) बड़तने मनुषीका एकके उपर  
 धूमके गिरना ।

ठेक ( हि० स्त्री० ) पाघात चोट ठोकर ।

ठेकना ( हि० लि० ) ठरना देखो ।

ठेकमठेक ( हि० लि०-वि० ) बिना पाकीके जहाजोका  
 चक्का ।

ठेकी ( हि० स्त्री० ) दरवाजाका पत्रोको चलनें गफो  
 ईर कीटीसी लकड़ो ।

ठेको ( हि० स्त्री० ) मारो हुई ईक ।

ठेकर ( हि० पु० ) मोड़की आनिका एक सहा फल ।  
 अब यह इपनेके माह लवाला जाना है तो एर प्रकार  
 का इकवा दीना र व तैयार होता है ।

ठेकाई ( हि० स्त्री० ) ठरवाई देखो ।

ठीक ( हि० स्त्री० ) १ प्रकार पाघात । २ टरीके सत  
 ठोकर ठस करनेकी लकड़ो ।

ठोका ( हि० लि० ) १ पाघात पड़ पाता प्रकार करना  
 पोठना । २ ठोकर मारना मारना पोठना । ३ गाड़ना ।

४ पीग करना, दाखिल करना दायर करना । ५  
 थैङ्गियेके लकड़का काठमें डालना । ६ तबना चक्का ।  
 ७ कवाला लड़ना । ८ कटबुटाया कटपट करना ।  
 ९ व्यवधाना काज मारना ।

ठोग ( हि० स्त्री० ) १ चोंच । २ चोंचका प्रकार । ३  
 च गुणोको ठोकर, कटका ।

ठोगना ( हि० लि० ) १ चोंचके पाघात पड़ना ।

२ च गुणोके ठोकर मारना ।

ठोठा ( हि० पु० ) ज्वाल, बाजरा घोर ईशको नुचमान  
 पड़ जानेवाला एक लीड़ा ।

ठोकना ( हि० पु० ) पामकी गुड़कीका पावरण ।

ठोकना ( हि० लि० ) ठेकना देखो ।

ठोकर ( हि० स्त्री० ) १ चलने समय किने लकड़ो वस्तुके  
 पेरनेमें चोट लगना ठेक । २ पदोंमें पड़ा हुआ समरा  
 फर । ३ पैर वा जूतिका मारो पाघात । ४ लड़ा पहाट,  
 चक्का । जूतके सामनेका भाग । ५ कुजोका एक पिस ।

ठोकरो ( हि० स्त्री० ) यह गाय जिसे बचा दिने कई  
 महीने हो चुके हैं । ऐसी गायका बूध गाड़ा घोर मोडा  
 होता है ।

ठोकरना ( हि० पु० ) ठेकरा देखो ।

ठोट ( हि० लि० ) लड़, मुच, गावदो ।

ठोड़ी ( हि० स्त्री० ) बिजुक दाफो, दुब्बो ।

ठोड़ो ( हि० स्त्री० ) ठोड़ी देखो ।

ठोप ( हि० पु० ) बिन्दु वृद्ध ।

ठोर ( हि० पु० ) एक प्रकारको सिट्टाई ।

ठोना ( हि० पु० ) १ पैरम बिरनेवालीका एक पोत्रार, यह  
 लकड़ोको चोचोर छोटी प्यरोके रूपमें होता है । २  
 मनुष्य, पादमी ।

डोस ( हि० वि० ) १ जिसका मध्य भाग खाली न हो, जो पोला या खोखला न हो । २ टट्ट, मजवूत । ( पु० ) ३ ईर्ष्या डाह, कुढ़न ।  
डोसा ( हि० पु० ) भंगूठा ।

डोका ( हि० पु० ) पानी जमा होनेका गड्ढा । किसान इसी गड्ढेका पानी दौरोसे ऊपर उनीच कर जमीन सींचते हैं ।  
डोर ( हि० पु० ) स्थान, जगह, ठिकाना । २ भवसर चात, टाव, मौका ।

## ड

ड—संस्कृत और हिन्दी वर्गमालाका तीरहवाँ वरञ्जनवर्ण और ट-वर्गका तीसरा अक्षर । इसके उच्चारणमें आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामध्य द्वारा मूढ़स्थान स्पर्श और वाह्यप्रयत्न संवार, नाद, घोष एवं श्रव्यप्राण लगता है । मातृकान्यासमें दक्षिणपादशुल्फमें न्यास होता है ।

वर्णोद्धारतन्त्रमें इसकी लेखनप्रणाली डम प्रकार लिखी है—“ड” । इस अक्षरमें लक्ष्मी, सरस्वती और भवानो मर्बटा वास करते हैं । यह ब्रह्मरूप और महाशक्ति मात्रा कहा गया है ।

वर्णोद्धारतन्त्रमें इसके वाचक शब्द लिखे हैं; यथा—  
स्मृति, टारुक, निन्दिपिणो, योगिनी, प्रिय, कीमारी, गङ्कर, त्रास, त्रिवक्र, नदक, ध्वनि, दुरूह, जटिलो, भीमा, द्विजिह्व, पृथिवी, सतो, कीरगिरि, क्षमा, कान्ति, नाभि, लोचन ।

डमका स्वरूप—यह सदा त्रिगुणयुक्त, पञ्च देवमय, पञ्च प्राणमय, त्रिशक्ति एषं त्रिविन्दुयुक्त, चतुर्ज्ञानमय, आत्मतत्त्वयुक्त और पौतविव्युक्तताकार है । (कामधेनुतन्त्र)  
इसका ध्यान—

‘जवासिन्दूरसंकाशा वरामयकरा पराम् ।  
त्रिनेत्रां वरदा नित्यां परमीक्षप्रदायिनीं ॥  
एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपा तन्मन्त्रं दक्षधा जपेत् ॥’

( वर्णोद्धारतन्त्र )

इसका वर्ण जवा और सिन्दूरसदृश है । यह अभय-प्रदायक, त्रिनेत्र, वरदायक, नित्य और ब्रह्मरूप है । इसका ध्यान करके जप करनेसे साधक शीघ्र ही अभीष्ट प्राप्त कर सकता है ।

पयको आदिमें डमका विन्यास किया जाता है ।

“उः शोभा हो विशेषा” (शुक्ल० १० टी०)

ड ( सं० पु० ) उद्यते उड्डोद्यते भक्तानां हृदयाकाशे यः ।  
डी बाहुलकात् ड । १ शिष, महादेव । २ शब्द, आवाज ।  
३ त्रास, डर । ४ वाहवाग्नि ( स्त्री० ) ङकिनी ।

डं क ( हि० पु० ) १ वह विपैला काँटा जो भिड, विच्छ्र मधुमक्खो आदि कोडीके पीछेमें रहता है । जब वे गुम्फते तो इसी कटिकी जीवोंके शरीरमें चुभा देते हैं । भिड मधुमक्खो आदि उड़नेवाले कोडेका काँटा नल्लोके रूपमें होता है । इसी जो कर विपको गाँठसे विप निकल कर चुमे हुए स्थानमें प्रवेश करता है । यह काँटा सिर्फ माटा कीडोंको होता है । २ निव कलमकी जीभा । ३ वह स्थान जहाँ डंक मारा गया हो ।

डं कदार ( हि० वि० ) जिसके डंक हो, डंकवाला ।

डंका ( हि० पु० ) १ ताँवे या लोहेके बरतनों पर चमडा मढ़ कर बनाया हुआ एक प्रकारका बाजा । पूर्व समय यह लड़ाईके स्थानमें बजाया जाता था । २ वह निग्रत घाट जहाँ जहाज आ कर ठहरता है ।

डंकिनी ( हि० स्त्री ) ङकिनी देखो ।

डंको ( हि० स्त्री० ) १ कुशीका एक पेंच । मल्लभंकी एक कसरत ।

डं कुर ( हि० पु० ) एक पुराना बाजा ।

डंग ( हि० पु० ) अधपका कुहारा ।

डंगम ( हि० पु० ) एक पेटका नाम । यह दारजिलिङ्गके आसपास तथा खुसियाकी पहाड़ियोंमें बहुत पाया जाता है । इसके पत्ते प्रति वर्ष जाड़ेको मौसिममें भड़ जाते

है। इसकी मड़ली बहुत मजबूत होती है।  
 डगर ( हि० पु० ) मखी, शोयाया।  
 डंगरी ( हि० खी० ) १ लम्बी लकड़ी, डामरी। एक प्रकार की खुदक, कारन। २ पूर्ववत् विनालय सिक्किम, भूटानमें लगा कर चढ़ाव तक होनेवाला एक प्रकारका मोटा बेंत। इसमेंसे बहुत पक्की पक्की छड़ियां और छंके निकालते हैं। इससे टोखरी भी बनाये जाते हैं।  
 डमारा ( हि० पु० ) बड़ मजबूतता को किसान लोग घेतकी ओताई शोपाईमें एक दूसरेको देते हैं, डंड़।  
 डगुवर ( य० पु० ) एक प्रकारका खर। इसमें शरीर पर बसले पड़ जाते हैं।  
 डंगोरी ( हि० खी० ) एक पड़। इसका काठ बहुत मजबूत और बमबदार होता है। यह भासाम और बहारमें बहुत उपजता है।  
 डठल ( हि० पु० ) छोटे दीर्घको पैड़ी और शाखा।  
 डंठो ( हि० खी० ) डठल।  
 डड ( हि० पु० ) १ साठी, मोटा। २ बाहु दख बाहु। एक प्रकारका प्यासाम जो हाथ पीरके पकींके बस पट पड़ कर बिना जाता है।  
 डंड ( हि० पु० ) डंड देना।  
 डंडपेल ( हि० पु० ) १ बड़ जो खूब डंड समता को, बसरती, पकसवान्। २ बसवान् मनुष्य।  
 डडल ( हि० खी० ) ब माक और बरममें मिलनेवालो एक प्रकारकी मज्जो। यह सामन १८ डड लम्बो होती है। यह हमेशा पानीके खपर पपनी पाके निचाप कर त रती है।  
 डंडवाय ( हि० पु० ) १ बहुत दूर तक बिष्टान खड़ी दीवार। २ दक्षिणकी बाहु इकिनेया।  
 डंडवारी ( हि० खी० ) किसी जगहको घेरनेके लिये जमीनकी काम कींकी दीवार।  
 डंडहर ( हि० खी० ) बड़ा, मज्जामरत और बरममें मिलनेवालो एक प्रकारकी मज्जो। इसको बम्बई नयमन १ डड तक होती है।  
 डंडहरी ( हि० खी० ) पासाम बड़ा ल और लड़ीमा और दक्षिण भारतकी नदियोंमें पाई जानेवाली एक प्रकारकी छोटी मज्जो।

डंडहिवा ( हि० पु० ) बौलीकी पोट पर छदे हुए दो बोरोंको फसाए रखनेका एक लडा।  
 डला ( हि० पु० ) १ लकड़ी या बांसका सीधा मज्जा दुकड़ा। २ साठी, मोटा। ३ चारदीवारी, डांड।  
 डडायेसो ( हि० खी० ) छोटे छोटे मड़कीका एक खेन।  
 डडान ( हि० पु० ) दुन्दुभि, अकार।  
 डंडिया ( हि० खी० ) एक प्रकारकी साड़ी जिसमें कैल नुटकी ल को मकीरे बना कर टोकी गई हो। २ गीड़ के दीर्घकी लम्बी चीक। ( १० ) १ बड़ जो खर जोसल करता हो।  
 डंडियागा ( हि० खी० ) दो जपड़ोकी लंबाईके जिनारी को एकमें सीमा।  
 डडी ( हि० खी० ) १ छोटी पतनी लम्बी लकड़ी। २ सुठिया, डया, दया। ३ तराजूकी सोधी लकड़ी। इसीमें रकियां लटका कर पकड़े बन्नी रहते हैं। ४ पत्ता फूल या फल लगा हुआ मज्जा डडल, भास। ५ पत्रके लोकेका लम्बा छिया। ६ हरमि मारका फूल। ७ पकाड़ी पर बनेवालो एक प्रकारकी सवारी। यह डंडमें बन्नी हुई भीखीकी धाकारको होती है, भन्पा। ८ सिद्धिद्वय। ९ बड़ मज्जारी को दख चारख करता था। ( नि० ) १० जो एक दूसरेसे मज्जा लगात हो, पुसलखोर।  
 डंडीर ( हि० खी० ) सोधा रेखा।  
 डडोरना ( हि० खी० ) ठुठना, बसल पुसल कर खोजना।  
 डडोव ( हि० पु० ) दखल देना।  
 डडेल ( य० पु० ) १ बसरत करनेको लोड़े या लकड़ी को लुकी, रखके दोनों धिरे लकी तरह गोक होती है। इसको जामने से खर तागत है। २ इस प्रकारके लुके की जानेवाली बसरत।  
 डडकपा ( हि० पु० ) बातका एक रोम, गडिया।  
 डडकपायान ( हि० पु० ) बात का लकड़ीके दो दुकड़ों को मिलानेके लिये एक प्रकारका जोड़। यह जोड़ बहुत बड़ होता और खींचनेके भी लगीं लकड़का है।  
 डडकोल ( हि० नि० ) बसल बसराया हुआ।  
 डड ( हि० पु० ) १ जड़को मज्जूर, लस। २ बड़ जाम

जहा ड'कं जुमा ही या सांप आदि विषेसे कीडोका टांत जुमा ही ।

ड'सना ( हिं० क्रि० ) उधना देखो ।

डक ( हिं० पु० ) १ एक प्रकारका पतला भफेट टाट ।

२ एक प्रकारका मोटा कपड़ा ।

डकई ( हिं० स्त्री० ) केलिकी एक जाति ।

डकरा ( हिं० पु० ) काली मट्टी ।

डकराना ( हिं० क्रि० ) बेल या मैसिका बोलना ।

डकार ( सं० पु० ) डकारप्रत्ययः, ड स्वरूप वर्ण, ड अक्षर ।

डकार ( हिं० स्त्री० ) १ सुगन्धे निकला वायुका उद्गार ।

२ वाघ सिंह आदिको गरज, दहाह, गुरीश्ट ।

डकारना ( हिं० क्रि० ) १ डकार लेना । २ हजम करना,

पचा जाना । ३ वाघ सिंह आदिका गरजना, टहंडना ।

डकिकि—उर्दकै एक प्रसिद्ध कवि । ये अमोर मनसूर

सामानीके पुत्र हितोय अमोरनहके टांवारमें रहते थे ।

उर्दकैके अनुरोधसे इन्होंने 'शाहनामा' लिखना आरम्भ कर

दिया था । लेकिन उसे समाप्त करनेके पहले ही ये

अपने एक भूत्वके साथसे मार डाले गये । इनका रचना

प्रायः ८८० ई०में साहित्य होता है ।

डकैत ( हिं० पु० ) बलपूर्वक दूसरेका माल छीननेवाला

लुटेरा ।

डकैती ( हिं० पु० ) डकैतका काम, लूट मार, छापा ।

डकीत ( हिं० पु० ) वह जो सामुद्रिक, ज्योतिष आदिका

ढोंग रवता हो, भड्डरो । इनकी एक पृथक् जाति है ।

ये अपनेको ब्राह्मण बतलाते हैं, पर ब्राह्मण उन्हें नीच

समझते हैं ।

डकारी ( हिं० स्त्री० ) चाण्डालकी टक्का, चाण्डालकी

एक टोल ।

डग ( हिं० पु० ) १ कदम, फाल । २ उतनी दूरी जितनी

पर एक स्थानसे दूसरे कदम पड़े, पैँड ।

डगडगाना ( हिं० क्रि० ) हिलना, काँपना डोलना ।

डगडीर ( हिं० वि० ) चलायमान, हिलनेवाला ।

डगण ( सं० पु० ) छन्दोग्न्योक्त पाँच भागोंमें विभक्त गण-

विशेष । यथा ( ऽऽ गज १ ) ( ऽऽ रथ २ ) ( ऽऽ

अश्व ३ ) ( ऽऽ पदाति ४ ) ( ऽऽ पत्ति ५ )

डगमगाना ( हिं० क्रि० ) १ धर उधर हिलना डोलना,

दरधराना लडखडाना । २ विचलित होना, किर्मी बाँध

पर काशम न रहना ।

डगर ( हिं० स्त्री० ) मार्ग, रास्ता, पथ, पैँडा ।

डगरी ( हिं० पु० ) १ मार्ग, रास्ता । २ टोकरा, छिछना

वरतन डालरा ।

डगाना ( हिं० क्रि० ) टिगाना देगी ।

डगरी ( हिं० पु० ) १ एगिया और आफ्रिकाके बहुतसे

भागोंमें मिलनेवाला एक प्रकारका मांसाहारो पशु । यह

रानकी कभी कभी गिरारने लिये बाहर निकलता है

और कुत्ते बत्तोरके बघों आदिकी उठा कर ले भागता

है । इसके सुगन्ध दो भेद है, चित्तीवाला और धारोवाला ।

इसका पिछला भाग बहुत छोटा और आगेका भाग भारो

होता है । कर्भ पर खडे खडे बान होते हैं । इसके

ढाँन बहुत तेज होते हैं । कक्ष जाता है कि यह प्रायः

कर्ममें गडे हुए सुरटेकी निजान कर खाता है । २ एक

प्रकारका दुबला घोडा, जिसे पैर बहुत लम्बे लम्बे

होते हैं ।

डग्गा ( हिं० पु० ) दुबला पतला घोडा ।

डङ्गा ( हिं० स्त्री० ) डमिच्यव्यक्तगण्टं कायति के क-टाप् ।

१ दुन्दुभिधनि । यह बाजा मनुष्योंको सचेत करनेके

लिये धजाया जाता है । ० टिकारा ।

डङ्गरो ( हिं० स्त्री० ) डं भयं गिरति नाशयति गृ-अच्

पृथो० साधुः गोरा० डीप् । लनाफल एक प्रकारकी

काकडी । इसके पर्याय—डाङ्गरो, टोर्षीवाक, डङ्गरो,

डङ्गरो, नामगुण्टी और गजदन्तफला है । इसका गुण

शीतल, रुचिकारक, टाह, पित्त, अस्त्रदीप, अग्नि, जाड्य

और मूत्ररोधदोषनाशक, तर्पण और गौल्य है ।

डट ( हिं० पु० ) १ चिह्न, निशाना ।

डटाना ( हिं० क्रि० ) १ स्थिर रहना, अडना । २ सांगे होना,

ठू जाना, भिडना ।

डटाना ( हिं० क्रि० ) १ मटाना, मिडाना । २ एक

वस्तुकी दूमरी वस्तु द्वारा आगेकी और ठेलना । ३ खड़ा

करना, जमाना ।

डटाई ( हिं० स्त्री० ) १ डटानेका भाव । २ डटानेको

मजदूरी ।

डटा ( हिं० पु० ) १ हुक्का निचा, टेरभा । २ गट्टी,

धामं । १ बड़ी मीन । ४ तथा जिसमें छोट बापों जाती है साया ।  
 बड़बो ( हि० स्त्री० ) मझकीया एक मेदा ।  
 बड़ा-रा ( हि० वि० ) १ जिसके बड़ों को दांतवाला ।  
 २ जिसके बड़ों को ।  
 बड़ियल ( हि० वि० ) बाड़ीवाला, जिसके बड़ों को ।  
 बड़मसरा ( स० पु० ) मसरा बियल, एक मझकी ।  
 डपट ( हि० स्त्री० ) १ छोट, छिड़की । २ तेज, दीड,  
 भरपट पास ।  
 डपटना ( हि० हि० ) १ बडोर पारने बोलना छोटना ।  
 २ तेज दौडना ।  
 डपोरसप ( हि० पु० ) १ धर्मकी अपनो बड़ाई करने  
 वाला हींग बर्तनेवाला । २ वह जो देखनेमें सुवच  
 को पर ललकी बुद्धि बर्ताकीवी ज्ञान पड़े ।  
 डपू ( हि० वि० ) बहुत मोटा, बहुत बडा ।  
 डप ( हि० पु० ) एक प्रकारका बड़ा बाजा । इस पर  
 चमड़ा मड़ा होता है और लकड़ीने बजाया जाता है  
 डपना । २ लाननी बार्डीका बाजा । चड ।  
 डपर ( हि० पु० ) जहाजका एक तरफका पास ।  
 डपका ( हि० पु० ) १ डप नामका बाजा २ जातिभेद ।  
 लक्षण देनो ।  
 डपनी ( हि० स्त्री० ) छोटा डप, चंडरो ।  
 डपलकी हि० पु० ) डपनी देनो ।  
 डपारी ( हि० पु० ) वह जो डपका बजाता हो । सुघर्म  
 मानोको एक जाति डपका बजाती तथा चमड़ेके मर्द  
 हुए बार्डीकी मरफत करतो है ।  
 डव ( हि० पु० ) १ दीना मीन । २ वह चमड़ा जिससे  
 कृपा बनाया जाता है ।  
 डवलना ( हि० हि० ) १ किसी बातको चहरको बडोरोके  
 पाकारका गहरा बनाना । २ पीड़ा दीना दीव मारना ।  
 ३ मँगवाना ।  
 डवकीडा ( हि० वि० ) पांसेमें बाया हुआ, डवडवाका  
 हुआ ।  
 डवडवाका ( हि० हि० ) धनुष्य कीना, पांसेने पांथ  
 भर धाना ।  
 डवरा ( हि० पु० ) १ पानी जमा रहनेका सभ्य और कम

गहराका मड़ा लुप्ट, बीज । ४ छेत जोते जानेमें  
 कूटा हुआ बीना ।  
 डवरो ( हि० स्त्री० ) छोटा मड़ा ।  
 डवल ( स० वि० ) १ दोवार । दोहरा ( पु० ) २ चर्चको  
 राजका घेसा ।  
 डवलगेटो ( स० स्त्री० ) पावरोटी ।  
 डवलसिध ( स० वि० ) दीहरी पत्ती ।  
 डवना ( हि० पु० ) कुचक, मडोका पुरका ।  
 डवनी ( हि० हि० ) १ मग करना बीरना डुबाना ।  
 २ लट करना बिगाड़ना ।  
 डव्या ( हि० पु० ) १ कोई लोम या सुभुरो चौके रखी  
 जानेका छजनदार छोटा महरा बरतन । २ रिसमाकोकी  
 एक लोटो ।  
 डव्यू ( हि० पु० ) लटोरेके पाकारका एक बरतन । इसमें  
 डंकी लगे रहतो है और मोज रम्यादिमें यह कोई  
 चोख परीमनेके काममें पाता है ।  
 डवका ( हि० पु० ) वह पानी को कुपसे तुरन्त निकाला  
 गया हो ।  
 डवकोरो ( हि० स्त्री० ) चदरकी पोडोकी बरी । यह  
 बिना तसे हुए कड़ीमें हास दो जाती है ।  
 डव ( स० पु० ) ३ नीचयोगिनाम् मीतिं माति-भा-व ।  
 तपसहर जातिबियेय । ब्रह्मैवर्तपुण्यके मतसे इस  
 जातिकी उत्पत्ति छोट पोर चापान्तीयो हुई है ।  
 डव देना ।  
 डवर ( स० स्त्री० ) छ भांसे पथ मरं पावन छैन मानेन  
 मर पन्पावन १-तत् । १ मयसे पलायन, भरीड ।  
 डवसे पर्याय—श्यामिका, विद्रव और डिव्य है । ( पु० )  
 छिन भवेन मरो घृतिरिव घन, बहुवी० । २ परब्रह्मादि  
 भव । ३ पप्रब्रह्म, छपद्रव इलचल । डवसे पर्याय  
 विद्रव, डिव्य, विद्रव और डामर है ।  
 डवरो ( स० पु० ) डवर-रचिन । छोटा ठक, लपूरी ।  
 डवड ( स० पु० ) डमिन्मयाडव्यं श्रुष्टति डम-न-डु ।  
 १ पन्पावन १-तत् । ३ ॥ १ ॥ इति श्लेषे च विद्यातनात् साधु ।  
 १ चापबियेय, एक बाजा । इसका पाकार बीचमें  
 पत्तना और दीनी मिराकी और बराबर चौड़ा होता  
 जाता है । इसके दीनी छिरो पर चमड़ा मड़ा होता है ।



इसके बीचमें एक डोरी बन्धी रहती रहती है। डोरीके दोनों सिरों पर दो कीड़ियां टो बँधे रहती हैं। बीचमें पकड़ कर जब यह हिलाना जाना है तो कीड़ियां चमड़े पर पड़ती हैं और गूथ होता है। बन्दर भालू आदि के लिए मदारों इसे अपने साथ रखता है। यह बाजा गिवजीकी बहुत प्रिय है।

गिवजीके हाथमें यह बाजा हमेशा रहता है।

“त्रिग्रह-उमरुका” ( गिवजान ) २ वह वस्तु जो बीचमें पतली हो और दोनों ओर बराबर चौड़ी होनी गई हो। ३ ३२ लघु वर्ण युक्त एक प्रकारका टण्डक-वृत्त। ४ विम्बय, नाज्जुव।

उमरुका ( मं० स्त्री० ) उमरुक कन् स्त्रियां टार। तन्वी-रु सुद्राभे ट, एक प्रकारका आम्र।

उमरुमध्य ( मं० पु० ) उमरु इव मध्य यस्य वृत्तौ०। योजक, जमीनका वह संकीर्ण भाग जो दो बड़े बड़े खण्डोंकी मिलाता हो।

उमरुयन्त्र ( हिं० पु० ) एक प्रकारका यन्त्र। इसमें चर्क खोचि जाते और सिंगरफका पारा, कपूर, नीसाटार आदि उड़ाने जाते हैं। यह दो घड़ोंका सुह मिलाते और कपड़मटो द्वारा बनता है। जोहनसे जिस वस्तुका अर्थ बुझाना होता है उसे पानीके साथ एक घड़े में गूथ देते हैं और तब दोनों घड़ोंका सुह जोड़ दिया जाता है। तब दोनों घुंटे हुए घड़े इस प्रकार अट्टा कर रहे जाते हैं कि एक घड़ा आंच पर और दूसरा ठण्डी जगह पर रहता है। गर्मी लगनेसे वस्तु मिश्रित जलका वाष्प उड़ कर दूसरे घड़े में जा टपकता है। वाष्पका जन ही उम वस्तुका अर्थ है। जो बड़ा नीचे रहना है उससे पेट्टेमें आंच लगती है और ऊपरके घड़ेके पेट्टेकी भीगा हुआ कपड़ा आदि रख कर ठण्डी रखते हैं। जब नीचेके घड़ेमें गर्मी लगती है तो सिंगरसे पारा उड़ कर ऊपरके घड़ेके पेट्टेमें लम जाता है।

उमसार—पूर्य बंगालका एक प्राचीन ग्राम।

( म० प्रथमं० १९, २३ )

उम्फ—एक प्रकारका प्राचीन बाजा। यह लकड़से गोल बड़े मेंहने पर चमड़ा मढ़ कर बसाया जाता है। युक्त-प्रदेशमें इसका व्यवहार अधिक है।

उम्बर ( मं० पु० ) उप-घरन्। १ समूह। २ आवीजन, आडम्बर, धूमधाम। ‘अत्रासुडे ऋषिध्याने प्रमते मेघ उम्बरः।’ ( जगन्पथ ) ३ धातुदत्त कुमारके एक अनुचरका नाम। ‘उम्बराउम्बर’ चंद्र देवों घाटा महामने।’

( भा० १।१० अ० ) ४ विस्तार। ५ विलास ६ एक प्रकारका चँदीवा, चटरहत्त।

उयन ( मं० स्त्री० ) डीयते आकाशमार्गं गम्यते अर्धन डि करणे ल्युट्। १ कार्गिय, वानरको डोना। २ नभी-गति, उद्वान, उदरका क्रिया।

उर ( हिं० पु० ) १ भय, भीति, चाप, शंका। २ आगंजा, घनिष्टकी भावना, अर्द्धगा।

उरना ( हिं० स्त्री० ) १ भयभीत होना, खोफ करना। २ आगंजा करना, अर्द्धगा करना।

उरपना ( हिं० स्त्री० ) भयभीत होना, उरना।

उरदोक ( हिं० वि० ) भोक, कायर, जो बहुत उर खाता हो।

उराना ( हिं० स्त्री० ) भयभीत करना, उर दिखाना, खोफ दिखाना।

उरावना ( हिं० वि० ) भयानक, भयंकर।

उगावा ( हिं० पु० ) फलदार पेड़ोंमें बंधी हुई एक लम्बी जो चिड़ियोंका चढ़ानेके निये लगी रहती है। इसमें एक लम्बी रस्सी बंधी होती है।

उगे ( हिं० स्त्री० ) उली देखो।

उगेस ( हिं० वि० ) जिसमें गाखा हो, उारवाना, उहनो टार।

उन ( हिं० पु० ) १ खण्ड, अंग, टुकड़ा। ( स्त्री० ) २ भील। ३ काश्मीरकी एक भील।

उलई ( हिं० स्त्री० ) उलिया उेनो।

उलना ( हिं० स्त्री० ) डाना जाना, पढ़ना।

उलवा ( हिं० पु० ) उदा देवो।

उलवाना ( हिं० स्त्री० ) उलनेका काम किसी दूसरेसे कराना।

उला ( हिं० पु० ) १ खण्ड, टुकड़ा। २ वाँस इत्यादिकी फट्टियोंका बनाया हुआ बरतन, दौरा, टोकरा।

उली ( हिं० स्त्री० ) खण्ड, छोटा टुकड़ा। २ सुपारी। ३ उलिया।

इसदोस—इसका यथावत् नाम जैम्स ब्रॉन्स डेलोन रामसे  
 डायम ब्रास 'थोर प्रथम मारशियम' थाफ डलहौसी (Ja-  
 mes Andrew Broun Ramsay tenth Earl and  
 first marquis of Dalhousie) । १८१२ ई०को २२वीं  
 प्रमोन्नको इसको जन्म हुआ था । ये वार्डिङ्गटनमायायस्य  
 खानसाठनके डोनको उत्तराधिकारिकोके द्वितीय पुत्र  
 थे । इन्हीं पक्षके इतरे विधानधर्म शिष्या प्राप्त को थी  
 थीके प्रकथकोड विद्वान्शिक्षानलये स्नातकपार्थ फानिधर्म  
 अध्ययन करके १८३८ ई०में एम०ए० उत्पत्ति प्राप्त किया  
 था । पद्यज टी मडोदरोबी मध्य, केनिथे कार्थ १८३२  
 ई०में ये साइड रामसे (Lord Ramsay) नामसे प्रविष्ट  
 हुए । इन्हीं पेटेंटके मन्त्रिमार्थे कुछ दिन कार्य  
 किया था । पीछे ये माधतवर्षके गवर्नर जनरल ( बड़े  
 मार) नियुक्त हुए थे । इन्हीं १८४८ ई०को १२वीं  
 जनवरीको कार्य भार प्रथम थोर १८५६ ई०को २८वीं  
 फरवरीको कार्य परिष्कार किया था ।

१८७० ई०के पक्षमें मादवातण्ड वार्डिङ्ग भारतवर्ष में  
 पक्षे खानि पर डलहौसीने था कर भारतका शासनभार  
 प्रथम किया । लव ये इस देशमें पाये थे तब भारत  
 राष्ट्रमें किसी तरहको विमुक्तता नहीं थी । समस्त  
 प्रदेशोंमें एक प्रकार सुन्मयान्ति विराजमान थी । किन्तु  
 प्रकथमात् सुन्मतानमें एक शिष्यका उदय हुआ । १८४४  
 ई०में समस्तमन्त्री मृत्यु होनेसे उनमें पुत्र मूलराज सुन्-  
 मतानके डीवान चुने मर्गे । ये ३० साल बचपे थोर निव  
 मित कर प्रदान करके, इस प्रत पर साइडोदरवारने  
 इसको डोकान मनोनीत किया था । मूलराज अत्यन्त  
 शास्त्री थे वे अधीनताको अपेक्षा शत्रुको संयत्कर  
 समस्त कर शुपुत्रुप स्वाधोन होनेका मोक्षा ठहरे ली ।  
 इस समय साइडोदरवारमें बड़े विमुक्तता उत्पन्न थी ।  
 प्रधान प्रधान मामलोंमें परन्तु बाधकिक एकता शिन  
 कुल न थी । मूलराजने साइडोदर को मन्त्र किये हुए ३०  
 साल बचपे पथका नियमित कर कुछ मो नहीं भेजा ।  
 इसका अन्तोपकरण लक्ष्य हेतुके लिए प्रधान मन्त्री नाम-  
 मि इर्न मूलराजको साइडोदर पार्थके लिए पाठान किया  
 तथा यदि मूलराज सङ्ग्रह न पार्थ, तो उनको नम  
 पूर्वक मर्तिके लिए एक दम सेना भेजी थी । इतर

मूलराज मो नियत न थे, वे नियतको पाठान प्राप्त  
 कर पथकोसे तबार थे । साइडोदर सेना था कर उप-  
 खित होने पर मूलराजके साथ एक युद्ध हुआ ।

युद्धमें मूलराजने विजय प्राप्त की । उनमें वृष्टि  
 गधर्मके मधरल को कर दोनों पक्षमें एक सन्धि बन्ना  
 दो । सन्धिके निबन्ध मूलराजको पसन्द न होनेसे लर्का  
 ने रिसिडकेके पास सुन्मतानको डीवानो बोड़ देनेकी  
 प्रस्तावक थी थोर साथ शिन दिया कि दोबानो  
 बोड़ देनेको बात साधारणको मान्य न होने पावे ।  
 रिसिडकेके माग्नि मादने पाएके पथुगोबको रक्षा करेने  
 सेना शिन भेजा ।

१८४८ ई०की ६ डी मार्चको सर फ्रेडेरिक कार्थ  
 (Sir Frederic Carr) रिसिडके को कर साइडोदर  
 पथे । मूलराजका पदव्यय किया रथनेके लिये माग्-  
 निने उनसे कहा । किन्तु माग्निका प्रस्ताव लर्काने  
 पाया नहीं किया । लगे रिसिडकेके मन्त्रिमार्थे मूल  
 राजका इच्छाका पथ किया थोर मन्त्रिमार्थे द्वारा मर्-  
 मन्त्र को मया ।

पार्थिक इको डीवान नियुक्त कर सुन्मतान भेजा गया ।  
 उनके माध धर्मिण (Agnes) थोर पथडरमन् (Ander-  
 son) नामको पथ पत्र नाम शरी भी गये १८ प्रमोन्न  
 को ये सेना सहित सुन्मतानके खिसेके पास एकत्रमें  
 पक्षे गये । मूलराज वहां पार्थ थोर उनके माध  
 मात्तु करके २० वर्षों तक लर्काने लिए राजा हो गये ।  
 दूसरे दिन सुदरने वस्त पार्थिक थोर पूर्वकथित से  
 पथेकथम थारियनि ने दल गुवा सेनाके साथ युद्धमें  
 प्रवेश किया । अब ये युद्धपरिष्कारके नेतृके लपरने जा रहे  
 थे, तब मूलराजके एक मेनिडने महना पथपर को कर  
 पथगिण मादको बरका मर कर बोड़के गिरा लिया  
 थोर तरवारने उन पर को गडरी चोट की किन्तु साइड  
 को विनाश करकेके पक्षे को नष्ट परिष्कारि गिर गया ।  
 मूलराजने इस लटनमें किसी प्रकारका हथके व न कर  
 पथने पाठान पामकामको थोर लोड़ा लोड़ा दिया ।  
 इसके बाद मूलराजके कुछ मैनिडोंने पथपरमन पर  
 बाधा किया थोर उनको सुदके तरह मर्गा लोड़ कर  
 प्रस्ताव किया । धर्मिणके कुछ युद्ध को कर मर्कोसे

रेसिडेण्ट साहबको सब हाल लिख भेजा तथा मूलराजको उनको निर्दोषित प्रमाण और दीपियोंकी आवह करनेके लिखा। मूलराजने जवाब दिया कि, "हम इस पत्रके अनुसार कार्य करनेमें सम्पूर्ण अचम हैं।"

मूलराजका प्रथम उद्देश्य कुछ भो हो, पर अब वे प्रकाश्यरूपसे विद्रोही हो गये। ता० १८ को मूलराजने अंग्रेजोंके यानवाहनादि सब छीन लिये। अंग्रेज पक्षने भागनेका कोई उपाय न देख कर एडगामें ही आश्रय ग्रहण किया। उनको भरोसा था कि, ३४ दिनमें ही लाहोरसे सेना आ कर उनकी रक्षा करेगी। किन्तु उनकी यह आशा मुकुलमें ही सूत्र गई। लाहोरके गोलन्दाजोंने युद्ध करना असोकार किया। ता० २० को सायंकालके समय खासिंह, ८। १० सैनिक कुछ सुन्ती और अंग्रेजोंके कुछ नौकरों तथा कर्मचारियोंके सिवा अन्यान्य सभी लोगोंने अंग्रेजोंका पक्ष छोड़ दिया। उन लोगोंने जीवनको कुछ आशा न देख कर मूलराजकी अधीनता स्वीकार करके सन्धिका प्रस्ताव किया। मूलराजने उनकी चले जानेके लिये कहलवा भेजा, किन्तु उनकी सेना इतनी उत्तेजित थी कि, वह रक्तपातके भिवा किमी तरह भी सन्तुष्ट न थी। जब खासिंह आदि चले जा रहे थे, तब मुलतानके सैनिकगण घोर रवसे उन पर टूट पड़े। खासिंहको कैद और अंग्रेज-कर्मचारियोंका मार डाला। मूलराजने सैनिकोंको पुरस्कार दिया।

रेसिडेण्ट साहबको दो दिन बाद विद्रोह-संवाद मालूम हुआ। उन्होंने पहली सीचा था कि, मूलराज इस विद्रोहमें शामिल नहीं हैं। इसलिये उन्होंने कुछ सैनिकोंको भेज दिया। ता० २३ को समस्त संवाद अवगत हो कर वे समझ गये कि, यह युद्ध सङ्गर्ष नहीं निवटेगा। लाहोर-दरवारकी सेनाने अंग्रेजोंके साथ विश्वासघातकता की है, यह संवाद पा कर रेसिडेण्ट कारी साहब मुलतानमें अंग्रेजी सेना भेजनेके लिये राजी न हुए। किन्तु अङ्गरेजोंको सहायताके बिना सिख-सर्दारगण मूलराजको किसी तरह भी बध न कर सकेंगे, इस धारणासे लाहोर-दरवारके अङ्गरेजी सेना भेजनेके लिये रेसिडेण्टको बार बार अनुरोध करने पर कारी

साहब अङ्गरेजी सेना भेजनेके लिये राजी हो गये। उन्होंने सिमलामें प्रधानसेनापति लार्ड गाफको इस आशयका एक पत्र भेजा कि—'इतिहास-ग्रामित भारतके सुनामको रक्षा और राजनीतिक स्वार्थ साधनोद्देशसे लाहोर-दरवार की सेनाके अभावमें भो जिससे अङ्गरेजी सेना मुलतानके दुर्ग और नगर पर अधिकार कर सके, ऐसो एक दल सेना शीघ्र ही भेज देना उचित है।' किन्तु लार्ड-गाफने उस समय सेना न भेजी। मन्त्रिमन्त्रिभित्त गवर्नरजनरल साहबको भी यहो राय थी। इसलिये युद्धयात्रामें विलम्ब ही गया।

इधर अगुनिठ साहबने सुख हो कर लाहोरका विद्रोह-संवाद और लेफ्टेनन्ट एडवर्ड्स साहबको सहायतार्थ शीघ्र आनेके लिये लिख भेजा। एडवर्ड्स साहब उस पत्रको पा कर अधीनस्थ सैन्य संग्रह करके मुलतानकी तरफ अग्रसर हुए। उन्होंने लिइषा नामक स्थानमें पहुँच कर शिविर स्थापित किया। इस स्थानमें एक पत्र पा कर उनके मनमें सिखोंकी विश्वस्तता पर सन्देह हुआ। इस समय उन्होंने संवाद पाया कि, मूलराज चन्द्रभागा नदी पार ही कर लिइषाको तरफ अग्रसर हो रहे हैं। एडवर्ड्स साहबने उस समय सिन्धुनद पार ही कर गिरिङ्ग-दुर्गमें आश्रय लिया। इस स्थान पर सेनापति कर्टलैण्डने कुछ मुसलमान-सेनाके साथ आ कर उनका साथ दिया। क्रमशः अङ्गरेजोंकी सेना बढ़ने लगी।

बडवलपुरके नवाब शतद्रु नदी पार हो कर मुलतान आक्रमण करनेकी उद्यत हुए। अङ्गरेजी सेनाने आ कर देरागाजोखी घेर लिया। मूलराजने जलालखी पर इस प्रदेशका शासन भार छोड़ दिया था। जलालके प्रधान शत्रु वराखीने अङ्गरेजोंके साथ मिल कर जलाल पर आक्रमण किया। जलालखी पराजित हो कर भाग गये। देरागाजोखी अङ्गरेजोंके हस्तगत हो गया। इसके बाद केनेरी नामक स्थान पर युद्ध हुआ, उस युद्धमें भो अङ्गरेज पक्षने विजय पाई। किनेरीके युद्धके बाद बहुतेसे सिख सर्दार अङ्गरेजोंका पक्ष ग्रहण करने लगे, मूलराजने अत्यन्त भीत हो कर दुर्गमें आश्रय लिया। एडवर्ड्स पुनः पुनः विजय लाभ करनेके कारण अत्यन्त उत्साहके।

मात्र सुपनाम पर पाकमय करनेकी परंपरा हुए ।  
 नाम धामके पाम होनी पछिमें एक छोटा बुध हुआ ।  
 पुरीकी ही तरह मेना बहुत थ्यादा को । कुछ टेर बाद  
 मूलराजने बुधकालने प्रस्थान किया । तनके सेवामाम  
 मंतिमो तनके इच्छाका पसुकरव किया । पट्टेज  
 लोग तनका घोडा करते हुए मुक्तान-दुर्गके पाम तक  
 पहुंचे । एडमंडम माइबने दुर्गको घोष की चबरोष  
 करना चाहिये - एम पागयकी एक बिहो रिसिडेण्टके  
 पाम सेकी । डलहौसी घोर मि० याक तम समय तक  
 मो दुर्गकी घेतिके पचपती न थी किन्तु तनके पन पानेने  
 पहने की रिसिडेण्ट माइब दुर्ग चबरोष करनेके जिसे  
 मुक्तानकी चबरा दे चुके थे घोर तदनुसार प्रवन्ध मो कर  
 चुके थे । इसलिए डलहौसीने रिसिडेण्टकी समता घोर  
 पात्रकी पचपु रक्खनेके जिसे तनके प्रस्तावमें समति दे  
 दी । २४ जुलाईको इह उभाइके माघ मुक्तान दुर्ग  
 चबरोष करनेके लिए मेनागत सुरमने बुध पाया की ।  
 बधुमपुरके लेक माइबके पचीन १००० प्याटे घोर  
 १८०० पामागेकी तथा राजा गिरमि इके पचीन ८०८  
 प्याटे घोर ३३८२ पामागेकी मित्र मेना मुक्तान चब-  
 रोषके लिए परमर हुई । आर्टसेण्ट एडमंडम, से  
 जर घोर गिरमि इके पचीन बधुम प्याक मेनाने मुक्तान  
 घेर किया । मूलराज बहुत डर गये । उन्होंने हटनेवरी  
 घोर तनके मित्र महापात्र दिक्कोपति इकी धामसमर्पण  
 करनेका विचार किया । किन्तु इमो समय एक अजीब  
 घटनाके तनके विचारको महमा पकट दिया । पट्टेज  
 घोर दशोपनिशके पछिके सिद्धिं विद्रोहके लक्ष्य दिखाई  
 निचे । जात्रादिमें गिरमि इके विता हवसि ब विद्रोही  
 को गये । मूलराजके हृदयमें नूतन पायाका पट्टर  
 उदित हुआ ।

० बिह्वरको दुर्ग पर पाकमय किया गया । गिर  
 मित्र पची तक तनका नामक खानमें ठहरें हुए थे । १३  
 मईव्वरको उन्होंने मुक्तानमें परंपरा को कर तनका  
 कथका पालपापोके नामके बरनेके लिए पादेय दिया ।  
 यह महाद सुन कर प घेज मेनापतिवोंने परामय करके  
 टिको नामक खानमें दीके लौटनेका निश्चय किया वहाँ  
 पहुंच कर वे प्रधान मेनापतिको भेजे हुई मेनाकी बाट  
 देखने लगे ।

गिरमिइने मूलराजका माव देनेका प्रस्ताव करके  
 तनके पाम दूत भेजा, पर मूलराज गिरमिइका पूरो नर  
 विस्वाम न कर सके । उन्होंने पचप जाई, पर तो मो  
 मूलराजके मन्देइ मूलने पूर न हुआ । पाकिर गिरमि इ-  
 ने कहा कि तनको मेनाको कुछ पचिम घेतन देनेके से  
 जात्रादिमें आ कर पचके पिनका साह टेंगे । मूल-  
 राजने एक मोका चाहते न आने दिया गिरमि इने पच  
 पनेयमें जा तर नरा सिखबुध प्रस्थान कर दिया ।

प घेजके चबरोष छोड़ कर चने जाने पर मूलराज  
 निश्चिन्त नहीं हुए थे । वे समझने थे कि प घेज नाम  
 पुन विद्युत तनका घोर पचिबतर लक्षे मात्र दुर्ग पर  
 पाकमय करेगे । इतनि एतनि दुर्ग को मन्वत करारें  
 घोर मेना म पद करनेकी घोषिया करने लगे । मित्र  
 तनके को मनुष्ट नहीं हुए, वकंति बानुनके दोस्त  
 माइबघ घोर कन्दाहारके महारीके महावता देनेके लिए  
 निष्क सेवा ।

इस प घेज लोग मो दुर्ग अय करनेके न तरह  
 तरहकी तरकोरे मोच रही थी । जिनके तनको बिटा छन  
 वती को इमके लिए वे काफो उपकरणोंका मयज मो  
 कर रही थी । जमया बम्बई घोर ब गानके कई टन मेना  
 पा कर उपस्थित हुई । पचिक समय नट न कर पट्टेज  
 मेनापतिने १० दिनव्वरको मुना दुर्ग पर पाकमय  
 करनेके लिए पाठिय दिया । बाई को पावामने दुर्गके  
 कई एक खान टूट जाने पर मूलराजने डर कर धाम-  
 समयकका प्रस्ताव किया । पट्टेज मेनापतिने तनके  
 बिना घत के धामसमर्पण करनेके लिए कहा । किन्तु  
 पहने आगे न को जर मूलराज पाकरका करने लगी ।

कुछ दिन बोट गये । किन्तु इधके क्या होता ? बाहर  
 पचीम धर लड़े थे, तनको मेना बहुत थोड़ी थी । रात  
 दिन दिन निरव नाम कर रकें हैं । वे तनको हटा  
 नहीं सकते । जमया तनका माइम पच होने लमा । तथा  
 पाकर न छेप कर १८६८ ई०के जनवरी महीनेमें मूल-  
 राजने धामसमर्पण किया । पट्टेजोंने दुर्ग पर पचि  
 कार कर लिया । काहोरीमें मूलराजका विचार हुआ;  
 विचारमें वे दोयो प्रमाचित हुए घोर निर्वाहित किये  
 गये ।

इधर क्वत्रिमि'हका विद्रोहानन क्रमशः प्रवृत्तित होने लगा। २४ अक्टूबरको पैगावरको समस्त मिखमेना विद्रोही हो गई। सेजर लारन्स उनको दमन न कर सकनेके कारण प्राणभयसे कोहाट भाग गये। कोहाटके शासनकर्ता दोस्त महम्मदके भाई सुलतान महम्मद थे। उन्होंने पैगावर विभागके किसी स्थानके बटले सेजर लारन्स, उनकी स्त्री और उनके सहाकारी मि० वाडर्डको क्वत्रिमिहके हाथ बंध दिया। क्वत्रिमिह विद्रोही थे।

जेरसिंहने अङ्गरेजोंका पक्ष छोड़ दिया है इस संवादसे इलहौसी अत्यन्त भयभीत हो गये। उन्होंने सोचा कि भिक्षुने एकत्र हो कर अंगरेजोंके विरुद्ध पुनः रणाङ्गणमें अवतीर्ण होनेका विचार किया है। यदि ऐसा ही हुआ, तो इटिगभवर्षण्ट पर बड़े भारी विपत्तयाने वाली है। अङ्गरेजराज्यको रक्षा करने ही, तो अभीसे पूरा सावधानी रखनी चाहिये। ऐसा विचार कर वे उत्तरपश्चिम प्रदेशकी तरफ चल दिये और प्रधान सेनापति गाफ साहबको फिरोजपुरमें सैन्य समावेश करनेके लिए परामर्श दे गये। लार्ड गाफ अब उदासीन न रह सके, वे स्वयं युद्धमें व्याप्त हुए और शोध ही चंद्रभागा की तरफ उन्होंने एक दम सेना भेज दी। उक्त नदीके वाम तट पर प्रायः १२ मील दूर रामनगर नामक स्थानमें जेरसिंह ठहरे हुए थे। इस स्थानसे उनकी हटानेके लिए चेष्टा की गई। युद्धमें जेरसिंहको ही जय हुई। अङ्गरेज-पक्षके जनरल डेविलक और क्विटरटन निरुत्त हुए। पोछे सर जोसेफ थैकवेन और लार्ड गाफ टीनोने मिल कर जेरसिंहको सेना पर आक्रमण किया, किन्तु उनकी विशेष कुछ चति नहीं कर सके।

१८४८ ई०को १२ जनवरीको लार्ड गाफ डिहिन नामक स्थान पर उपस्थित हुए, यहाँ आ कर उन्होंने देखा कि पास ही मिख-सेना ठहरी हुई है। शत्रुओंकी अवस्थाको अच्छी तरह जाननेके लिए उन्होंने कसूल नामक स्थानको जाना विचार, इसी समय कुछ लोग खालसा ग्रामके सामने आ कर अंग्रेजों पर गोलियाँ बरसाने लगे। लार्ड गाफने उनकी डरानेके लिए कुछ तोपों दाग कर आवाज करवाई, पर इससे कुछ फल न हुआ। सिखोंकी तरफसे असंख्य गोलियोंने आ कर उन-

का जवाब दिया। अब गाफ समझ गये कि विपक्षी लोग युद्ध करनेको तयार हैं। उन्होंने भी मैनिनोंको युद्धके लिए तयार होनेको आदेश दिया। इससे घाट ही वह प्रसिद्ध चिनियनवालाका युद्ध हुआ। १८४८ ई०को १५ जनवरीका दिन मिखोंका चिरम्बरणोय है। इस युद्धमें जेरसिंहको सेनाने जैसा अभीम साहस, अमित नेत्र और प्रबल पराक्रम दिखलाया था, वह अपाधारण है। वास्तवमें इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी पराजय हुई थी। उस युद्धके बाद गाफको सेना अत्यन्त निरुत्साहित हो गई। इस युद्धमें तुककू, पेनिकुटक आदि कई एक सेनापति भी प्रायः २४००० सेना मारी गये थे। सिखोंने अङ्गरेजोंके ४ तोपें तथा ८ पताकाठं कौन ली थीं। यह करती करती रात हो गई थी, रात्रिके जेपांगमें सिख लोग मुहल्लेकी छोड़ कर चले गये थे, इसी लिए शत्रु अङ्गरेज ऐतिहासिकोंने इस युद्धका फल अमीमांभित बतलाया है। इसके बादसे ही जेरसिंहके अट्ट पर शत्रुको दृष्टि पड़ी। २१ फरवरीको सिखसेना गुजरातमें उपस्थित हुई। लार्ड गाफने वहाँ जा कर उन पर आक्रमण किया। अङ्गरेजोंको जय हुई। अङ्गरेजोंका अट्ट अति सुप्रसन्न था, इसीलिए वे इस युद्धमें जयनाभ करनेमें समर्थ हुए थे। बड़ेलाट इलहौसोने भी इस बातका माना है। उन्होंने लिखा है—'इंग्लैंडके अनुपहसे ही अङ्गरेजी सेना इस तरह जय प्राप्त करनेमें समर्थ हुई। २१ फरवरीको युद्ध भारतमें अङ्गरेजोंके युद्धके इतिहासमें चिरम्बरणोय है।' चिनियनवालाके युद्धके उपरान्त उन जैमीने भयभीत हो कर इलहौसोसे सेना माँगाई थीं, किन्तु उस सेना आनेकीसे पहले ही गुजरातके युद्धमें लार्ड गाफने उनके प्रणष्ट गौरवका उद्धार कर दिया। जेरसिंह वितस्ताके उस पार भाग गये। उन्होंने पुनः युद्ध करनेका सङ्कल्प छोड़ दिया और पहले सेजर लारन्सको जो कैद कर रक्का था, उनके हारा वे अङ्गरेज-गवर्णमें अघोषिता स्वीकार करनेका उपाय सोचने लगे।

इसके बाद, पञ्जाब शासनके विषयमें क्या होना चाहिये, इलहौसोने पहले ही इसका निश्चय कर रक्का था, सुतरां उसको प्रकट करनेमें ज़रा भी देर न लगे।

श्रीधरों का फोर को म'वाय मेका मेका । मेकाराज एन कोयमि वसे परिभारमें मोबध्मि हो उठे । इसीपमि व का सुख इमियाके लिए ड ब गया । इसहीसेमी जाहोर दरबारको कहलना मेका कि, मिश-राज्यका पना हो गया । इसीपमि वकी उभय वस पमय सिधे म्वा-व म'यो हो । दरबारके सदस्यमि इसहीसेके प्रस्थाप पर कुछ पापति नहीं की । म्मोपमि वकी बिना पपरव के दण्ड कृपा, यह कलहोसीको जतलाने पर मो कीई काम होता बा या नहीं मन्दे ड बा । कुछ मी हो, एक मन्मिय सिखा म्मा, जिन पर महाराज इसीपमि वके प्रस्थापर कायके मते (१०) म्म १८२८) । इस सन्मियपमि निम्नलिखित १ नियम लिखे थे—

(१) महाराज इसीपमि वके पञ्चाबका कलह इमियाके सिधे परिभाग किया ।

(२) राजसन्मयि हट्टिमगममें प्मके पचीन हुई ।

(३) कोहिनूर इहमै पञ्ची रासीके मसक पर सुयोमित कृपा ।

(४) गवर्नर-जनरल को काम मनोरीत करेसे, वही इसीप रकेसे ।

(५) 'महाराज इसीपमि व कडापुर' यह नाम उन का मायसीवन रहैगा । से यकीचित मानके साब क्य जत होगि तथा ३ लाखसे ज्यादा पौर १ लाखसे कम कपये उधे म्मकाके सिखा करेसे ।

२८ मार्चको जाइ इसहीसेमी निम्नलिखित प्रायय का एक जोयबापत्र प्रचारित किया—

"भारतगममें प्मके पचसे जोयका की हो कि गव-में प्मको पच पचिब राज्य विजयको इच्छा नहीं है पौर पच तक उन प्रतिश्रुत वाक्यकी रखा हुई थी । पच भी गवमें प्मको राज्य-परिभारकी इच्छा नहीं है । किन्तु पचको निरापदता पौर जिनका मार उन पर है, उनकी प्मार्थ रखा करनीके लिए गवमें प्म बाध है । इस उधे इच्छे तथा बिना कारण मुहविपडने राज्यकी रखा करनेके लिए जिन मोमोंका कलह पचिपति शासन नहीं कर सकत, बिसे प्रकाशका दण्ड भी जिनको कपौकनने विरत बा भीत नहीं कर सकता पौर बिसे प्रचारकी भी मित्रता जिनको श्राजिने नहीं रन सकतै, उनको

तम्बुर्ब प्मके पचीन करनीके लिए भारतके गवर्नर जन रलको बाध होना पड़ा है । इसलिये गवर्नर जनरल मवार दरतें हैं पौर इसके द्वारा जोयका करतें हैं कि, पञ्चाब-राज्य हो गया वीव महाराज इसीपमि व कडापुर का पचीनका समस्त प्रदेश पचसे भारत-साम्राज्यके पना मंत कृपा ।" पचम, सिब और सिबजुद हैतो ।

बिबियनबाका-सुडका स माट इहमै पञ्च पञ्च उने पर कपसीके प्राप समो काम चारी सर चालम निपियरको निनापति बना कर भारत म्मकेनेके लिए डिरैक्टरीके पुन पुन पञ्चरीक करने की । डिरैक्टरीके इच्छा न होते हुए मो जनको निवृत्त किया । किन्तु उनकोसे नेपि बरको घमतासे बड़ी हर्षा रकतें थि । भारत पा जाने पर इसहीसे पौर निपियर दोनोमें मनोबिभार होमे बना ; एक वर्षके भीतर ही भीतर यह मनोमात्मिय पम्पल बहमूल हो गया । पञ्चाबमें इनका प्रकाश विवादका मूकपात कृपा । काय पदायति खरीदनेमें पतिरिब मत्ता लमनेके कारण इसहीसेमी निपियरकीका रैतन पटा दिया बा । इससे पञ्चाबके मैनिकोंमें भावो बिरोध की शुरुवा हो रही हो । इस पर चालम निपियरने गवर्नर-जनरल पचका कृमि कोयिसकी पञ्चमति बिना लिए गवमें प्मके नियम व इकर दिवै । इसहीसे उच समय कसुप्रमात्रा कर रहे थि । इससे बाद बिरोधकी धामडा देय निपियरने ६६ संख्याक टीगीय पदाति सेगिनी की काम-कृत कर दिया । इसहीसेने पच द्वारा इस विषयमें पचमयति प्रकट की किन्तु प्रबन्धक विषयको उधेने पचमें नहीं छोड़ा, इन विषयमें मत्तामत प्रकट करके सिडेडरो द्वारा बिना विभायके पचकृपान्क उन रलको निपयमातुसार पच मो भेक दिया । यह पच तीव्र तिरकारमे मरा कृपा था इस पचमें निम्नलिखित भाब पमिप्यत बा —'मिनापतिमें को पञ्चाबके काम चालीकी पादेय दिया है, उससे मन्मि-समाबिहित गवर्नर-जनरल ककल कृपित पौर पचकृपु हुए हैं । मन्मि-के लिए उनको लुचिन किया जाता है कि, भारतके सेजिनीके मत्ता बा रैतनके परिवत नके विषयमें कौ मो भी पचका कर्षा न हो—यदि थि कौई पादेय दे, तो गवर्नर जन-रल कभो मो उन पर मन्मति नहीं देगी । इस विषयमें

आदिगं ट्रेनिंगी चमता एकं साठ सुप्रिम गवर्मेण्टकी ही प्रामा है। वे इसमें किमी भी तरङ्ग चमता प्रकट नहीं कर सकते, इस पत्रके पानेके बाद सर चान्दम नेपियर-इन्स्टीफा दे कर १८५१ ई०में इन्लीगड चले गये।

पञ्चावकी गहवही पृगे तरङ्ग गात्त ही भी न पाई थी कि, इतनेमें दूमरी ओर फिर रणदुन्दुभि वज उठी। ब्रह्मदेगके राजाके साथ जो सन्धि हुई थी, उसमें एक नियम था कि, इटिग प्रजा ब्रह्मदेगके बंटरमें वेवटके वाणिज्य कर मर्गे। उनत्रोमोके समय १८५१ ई०में कुछ वणिकों और वाणिज्य-जहाजके अध्यक्षोंने कलकत्ता की एक आवेदनपत्र इस आशयका भेजा कि—रंगूनके शासनकर्ता अङ्गरेज वणिकों पर अत्याचार कर रहे हैं, जिससे व्यवसायकी बड़ी भारी हानि हो रही है। चति-पूर्ति करानेके लिए ली-सेनापति नेमवाट एक दल सेनामहित रंगून भेजे गये। गवर्नर जनरलने उनमें कह दिया कि, 'पहले आप रंगूनके शासनकर्ताके पास जा कर समस्त विषयको सँक्षेपसे कहें, यदि वे चति-पूर्ति न करें, तो आप वापिस चले आवें।' किन्तु मामला सड़जमें नय हो जायगा, इसमें सन्देह था, इसलिए डलहोमीने लैमवाटके साथ दोनों गवर्मेण्ट की मित्रताकी रक्षाके लिए रंगूनके शासनकर्ताकी दम-धुन करनेके लिए ब्रह्मदेशके राजाके नाम एक पत्र लिख दिया और सेनापतिकी आज्ञा दी कि 'यदि रंगूनमें चतिपूर्ति न हो, तो इस पत्रकी ब्रह्मके राजाके पास भेजा देना।' नवम्बरके मासके अन्तमें वे रंगून पहुँचे और २८ तारीखकी उन्होंने कलकत्ताको कौन्सिलको लिखा कि, 'रंगूनके शासनकर्ताके विरुद्ध जो अभियोग लड़ाया गया है, वास्तवमें वह अभियोग उम्की अपेक्षा बहुत गुरुतर है, इसलिए मैं उक्त शासनकर्ताके किमी विषयका उल्लेख न कर ब्रह्म-राजाके पास उस पत्रकी भेजा हूँ।' डलहोमीने सेनापतिके कार्यको पूरी तरहसे अनुमोदना की और कहा कि, स्थानिय शासनकर्ताके साथ वादानुवाद न करके लैमवाटने बुद्धिमत्ताका ही परिचय दिया है, किन्तु सड़मा युद्ध न होने पावे इस विषयमें उनको सावधान कर दिया गया। सम्भव है ब्रह्मके राजा पत्रका उत्तर न दे, अथवा अंग्रेजीके

गभ्तावमें सड़मंत न हों, इसलिए गवर्नर-जनरलने यह नियय किया कि, जिसमें इस चतिटकी सहने वा सहमा युद्धमें व्यापत न होना पड़े, उसके लिए मोलसेनको द्विन दो नदियामें ब्रह्मदेगमें वाणिज्यतगे ज्ञानी पातो है, उन दो नदोको खरना आवश्यक है। १८५२ ई०की १ला जनवरीको आशामे उत्तर आया कि, रंगूनमें दूमरे शासनकर्ता निगुक्त हुए हैं और उपयुक्त चतिपूर्तिके लिए उन पर आदिग है। ली-सेनापतिने इस संवादमें अत्यन्त उल्काहित ही कर नशोन प्रतिनिधिमें समस्त विषयका उल्लेख करनेके लिए फिमावोर्प तथा अन्य-कर्मचारियोंको भेजा। किन्तु उन्होंने जो भी चाय, कार्यमें उसका विपरीत प्रथा। उन लोगोंने रंगून पहुँच कर वहाँके शासनकर्तामें मुलाकात करनी चाही: उनको कहा गया कि, 'शासनकर्ता मो. रहे' है, इस समय मुलाकात नहीं हो सकती।' अङ्गरेजोंने मन्भवत इस प्रकारके उत्तरमें सन्तुष्ट न हो कर किमी प्रकारकी चमता प्रकट को होगी, और इसी लिए उन्हें अपमानित ही कर नाट आना पड़ा। इस अपमानका बदला लेनेके लिए ही लैमवाटके आदिगानुसार फिमाकीर्नने आवा राज्यका एक जहाज रोक लिया। इसमें समरानल प्रजलिन ही उठा। १० जनवरीको प्रकाश्य रूपसे शत्रुता-चरणका प्रारम्भ हुआ। लैमवाट संवाद देनेके लिए कलकत्ते आ गये। डलहोमीने उस समय ब्रह्मराजको निम्नलिखित समका एक पत्र लिखा:—

(१) ब्रह्मराज रंगूनके वर्तमान शासनकर्ताके कार्यका अनुमोदन नहीं करें और इटिग-कर्मचारियों पर जो अत्याचार हुए हैं, उसके लिए दुःख प्रकट करें।

(२) दो कप्तानों पर अत्याचार और अङ्गरेज वणिकों को अर्थ हानिके कारण आवााराज चतिपूर्ति स्वरूपे गवर्मेण्टकी १० लाख रुपये देवें।

(३) गान्दावूकी सन्धिके अनुसार एक एजेण्ट रंगूनमें रहेंगे और ब्रह्मराजकी प्रजाभाव उनका यथोचित सम्मान करेगी।

(४) रंगूनके वर्तमान शासनकर्ताको स्थानान्तरित करना पड़ेगा। उपरोक्त नियमों पर सम्मति और १२ अप्रीलसे पहले उसके अनुसार कार्य न करनेसे युद्ध होगा।

रथि पक्षे धामा पक्ष पर राजाने पत्रके पत्रमार  
 कार्य नहीं किया। दोनों पक्षमें कुछही तैयारियां होनी  
 लगी। कलकत्तेके विनायति महत्तरन २८ मार्चको  
 रवाना हो कर २ अप्रेलको ईराककी नदोके किनारे मो  
 विनाके प्रधान अधिकारी पहिलसे मिले। मद्रासके  
 बीर ब्रह्म एन विना अपसर हुई। गड्डरनने मोम  
 से मार्गागान पर आक्रमण करके उन पर कब्जा  
 कर लिया। ११ अप्रेलको पंधेको सेना रंगूनमें  
 उतर कर अपसर होने लगी। छतनी बोटों बहुत बाधा  
 भेजेको प्रतिरक्ष कर १० मईको पानडा अधिकार कर  
 लिया। पानडाके दुबसे ब्रह्मवासियोंके जाफे साक्षम  
 दिखाया जा। कुछ मो हो पुना पुनः बर्जित हो कर मो  
 ब्रह्मवासिमक मोत न हुए और २६ मईको मार्गागानके  
 पुनद्वारके लिए कतवन्द्य हो कर समित तत्रसे पंधेक  
 सेना पर आक्रमण किया। अर्थात् इस दुबमें मो के अथ  
 नाम न कर मई में, पर तो मी इन लोगोंके प्रमा  
 नित कर दिया जा कि, वे अथबमें पंधेकोके समोभूत  
 नहीं होते। इन लोगोंको करानेके लिए राजधानी धामा  
 पक्षका अमरपुर पर आक्रमण करनेकी कबजा हुई।  
 ब्रह्मण डारसेटन प्रोम तक ना कर अधिकारियोंका काफे  
 तुकबान कर पाये। इससे भी मम लोग नहीं डरे यह  
 टिप्प कर इनहीको अर्थ २० सुकारकी रंगून पक्ष से। इस  
 दिन तक बड़ा ठहर कर छतनी अधिकतर सेना अ पक्ष  
 करके विपुल पाबोजनसे ब्रह्मण प्रलुत होनेके लिए परा  
 मय दिया। ८ अक्टोबरको पंधेक-बन्धु पुन प्रोमकी  
 तरफ उभरीत हुआ। ब्रह्मवासियोंने इन क्षानमें खिरी  
 तरफकी बाधा नहीं पक्ष पाई। पंधेको सेना अमरपुर अब  
 नाम करने लगे। उन लोगोंके पक्ष अधिकार कर लिया।  
 गड्डरन बोटोंसे विनाके साक मीकर विनाके नवा अंश  
 कर ब्रह्म रंगून पक्ष पाये। ब्रह्मवासियोंने कुछ दिन  
 बाद पेशू अधिकार कर पानडा ब्रह्मण कर ली। विनाके  
 उनके आक्रमणमें बाधा देनेके लिए गड्डरनसे सेना  
 मानी। विनायति सहायताके लिए निवृत्त। मार्चमें ब्रह्म  
 सेनाके कुछ दिन तक उनको रोका रक्ता। ११तमें ब्रह्म  
 काही पेशूके भाग लये। पेशूकिर पंधेकोके हाथ पक्ष  
 १० दिनकारकी बलहीदोंने पेशू अधिकारका सहाय पा

कर निवृत्तचित्त चोपचापत्र प्रचारित किया —  
 "ब्रह्मराजक अर्मचारियोंके द्वारा कटिय प्रजाकां  
 जेहा अपमान और अनिष्ट हुआ है धामा दरवार  
 बसकी प्रतिपूर्ति देनेमें पक्षोहन होनेके कारण मयनेर  
 अनरनने पक्षबन्धु सेनाको बरूच करना विचार है।  
 इससे लिए उपब्रह्मण दुर्ग और नगरी पर आक्रमण हुआ  
 जा। बहुत खानेने ब्रह्म-सेना मय मई के और पेशू प्रदेश  
 पंधेकोके अधिकारमें पड़ा है। भारत अर्धमेंछके म्याव  
 और उपब्रह्म दावेकी धामा राजने प्रयास किया है, अति  
 पूर्तिके लिए उनको काफे मोका दिया गया था, पर  
 छतनी तदनुसार कार्य नहीं किया। तथा उनसे राज्य-  
 विनायको निवारण करनेके लिए वे अथबमय समोभूत  
 नहीं हुए। अतएव अतिविपक्षकी प्रतिपूर्ति होके सन्धि  
 को शान्तिके लिए सम्मिल-समाहित मयनेर अनरनने यह  
 निश्चय किया है कि, धामाके पेशू प्रदेश-कटिय अर्धमेंछके  
 अधिकारमें पाया। इन प्रदेशमें ब्रह्म-सेना पक्षुचने पर ब्रह्म  
 मोम की शूरोभूत होगी, विभिन्न विमायोंकी शासन  
 करनेके लिए मोम ही पंधेक अर्मचारी नियुक्त होंगे।  
 मन्त्रिमन्त्रित मयनेर अनरन पेशूके अधिकारियोंको  
 कटिय नवमेंटकी प्रयोगता ओकार करनेके लिए आदेश  
 देने हैं अतिपूर्ति होनेके बाद मयनेर अनरन ब्रह्मदेशमें  
 और भी विजयको रक्का नहीं करते तथा होना राज्यकी  
 मय, ताका नाग चाहते हैं। किन्तु यदि ब्रह्मण राजा अन्ध-  
 गबमेंछके साक अपने पूर्व मित्रताके संबंध न हों पक्षका  
 यदि पंधेको द्वारा अधिकतर प्रदेशमें प्रयासि जायें,  
 तो मयनेर अनरन अपने अमताका पुनः प्रयोग करेगी।  
 उनका राज्य सम्पूर्ण रूपसे विभक्त तथा राजा और  
 राज्य ग निर्वासित होगा।"

ईराककी नदोका सुक्ष पंधेक छेनिकों द्वारा पक्ष  
 कुछ होनेके साथ प्रयत्नके अभावके कारण ब्रह्मराजधानीमें  
 पक्षाल पक्ष गया। इस राजा पक्षाल पक्षिव हो उठे।  
 उनके भाईने उनके पक्ष पर बंध कर पंधेकोके मन्त्रि कर  
 निजा प्रत्याव कर भेजा। १८२३ ई.को ४ अप्रेलको  
 कटिय और ब्रह्म-अधिकारण सन्धिके निवृत्त पक्षचारित  
 करनेके लिए मोम मयनेर एकत्र हुए। इनकोसेनाकी  
 चोपचाके अनुसार ही राजप्रतिनिधिद्वारे सन्धिपत्र पर



हस्ताक्षर करना मजूर किया, सिर्फ पोगूकी प्रान्तसोमा मिद नामक स्थान निर्दिष्ट न करके प्रोमके पास जा कुछ नौचेक कोई स्थान निर्धारित करना चाहता। डलहोमीके पास आवेदन भेजा गया, वे सम्मत हो गये। आबाराज-प्रति-निधियोंने कहा कि, जिस पर प्रदेश अर्पण करनेको बात लिखी है, ऐसे मन्धिपत्रमें राजा हस्ताक्षर नहीं कर सकते। इस पर उनको चले जानिके लिए कहा गया, तथा पुनः प्रचण्डतर युद्ध होगा ऐसा अनुमान होने लगा। किन्तु ब्रह्मराजने सब कुछ स्वीकार करके डलहोमीके पास एक पत्रमें भेज दिया। डलहोमीने इस पत्रको ही मन्धिपत्रके रूपमें ग्रहण कर सन्तुष्ट हुए। १८५३ ई०की ३० जूनको साधारण विज्ञापन द्वारा मन्धि पत्र प्रचारित हुआ।

डलहोमी सावं भीमचमताके अत्यन्त पक्षपाती थे। उन्होंने ब्रिटिश-गवर्मेंटको भारतका सर्वोत्तम तथा भारतके छोटे छोटे राजोंको क्रमशः ब्रिटिश-साम्राज्यमें शामिल करनेका निश्चय कर लिया था। इस उद्देश्यको कार्यमें परिणत करनेके लिए उन्होंने १८४८ ई०में सतारा राज्यको ब्रिटिशशासनमें शामिल कर लिया। सताराका राजा अपुत्रक थे; किन्तु मृत्युके पहले उन्होंने शास्त्रानुसार एक पोष्यपुत्र ग्रहण किया था। नियमानुसार वह पोष्यपुत्र ही राज्यका उत्तराधिकारी था, किन्तु डलहोमीने कहा - "सतारा ब्रिटिश-साम्राज्यका अधीन राज्य है, सताराके राजा ब्रिटिश-गवर्मेंटके बिना अनुमोदन किये पोष्यपुत्र ग्रहण नहीं कर सकते, करनेसे वह अशुभ है। ब्रिटिश गवर्मेंटकी अनुमति बिना ही पोष्य पुत्र ग्रहण किया गया है, इसलिए यह बालक राज्यका अधिकारी नहीं हो सकता। अतएव सताराके देशीय राजत्वका अन्त हुआ।

१८५२ ई०में करौलीके राजाकी मृत्यु हुई। इस राज्यको विलुप्त करनेके लिये डलहोमीको इच्छा हुई; परन्तु डिक्रेटोरोंने उनके इस प्रस्तावको मञ्जूर न किया। करौलीके राजाकी भो निःसन्तान अवस्थामें मृत्यु हुई थी और उन्होंने बिना डलहोमीको आज्ञा लिये ही पोष्य-पुत्र ग्रहण किया था। सताराको तरह इस राज्यको भी डलहोमीने ग्रहण करना चाहता, पर यह मिला राज्य

था, नकि अधीन राज्य, इसलिए डिक्रेटोरोंने करौली-राज्यका अस्तित्व लोप नहीं किया।

कुछ भी हो, डलहोमी देशीयराज्योंका ग्रहण करनेसे निवृत्त न हुए, वे अवसर ढूँढने लगे। अथकी बार भाँसी राज्यमें सुभोता मिला। १८३५ ई० में भाँसीके राजा बाबा गङ्गाधरराव देवलोक सिधारे। इन्होंने मृत्युसे १ दिन पहले एक दत्तकपुत्र ग्रहण किया था। किन्तु डलहोमीने भाँसी-राज्य अङ्गरेज साम्राज्य-भुक्त हुआ तथा राजनेतिक नियमके अनुसार उक्त साम्राज्य-भुक्त ही रहेगा, ऐसा निश्चय कर १८५४ ई०में निम्न-लिखित मन्तव्य डिक्रेटोरोंके पास भेजा—

‘ब्रिटिशगवर्मेंटके करट और अधीन राज्य भाँसीके राजाने मृत्युके एक दिन पहले एक पोष्यपुत्र ग्रहण किया था। इस राज्यमें पहले जो एक वटना हुई थी, उसके अनुसार हमने निश्चय किया है कि, यह पोष्यपुत्र ग्रहण सङ्गत नहीं है—इसके द्वारा दत्तक पुत्रको राज्य शासनका अधिकार नहीं हो सकता तथा इस राज्यके राजाकी वा पूर्ववर्ती राजाओंकी सन्तानादि न होनेसे यह राज्य ब्रिटिश-साम्राज्यमें शामिल किया जाता है।’ विधवा रानीने युक्ति दिखा कर डलहोमीके आदेशके विरुद्ध आवेदन किया। किन्तु उससे कुछ भी नतोजा न निकला, सताराकी भाँति भाँसीका नाम भी देशीय राज्यमें पीसे विलुप्त हो गया।

डलहोमीकी संयोजन नौतिको जब कर्णपक्षियोंने द्वितीय बार अनुमोदन किया, तब उन्हें बड़ो खुशी हुई। अथकी बार उन्होंने महाराष्ट्र-प्रेदेशका वृहत्तर राज्य विलुप्त कर दिया। नागपुरके राजा रघुजी भोंसलेकी १८५३ ई०के ११ दिसम्बरको मृत्यु हुई। उनका कोई पुत्र वा निकटसम्बन्धी नहीं था और न उन्होंने कोई दत्तकपुत्र ही ग्रहण किया था। इस राज्यको ग्रहण करते समय डलहोमीने निम्नलिखित मन्तव्य प्रकट किया था,—

‘इस राज्यके (नागपुरके) राजा उत्तराधिकारी न रख कर मर गये, इसलिए यह राज्य पुनः ब्रिटिशगवर्मेंटके हस्तगत हुआ है, जो अधिकार हस्तगत हैं उसको हस्तान्तरित करना उचित नहीं, क्योंकि द्वितीय बार इस सत्वकी छोड़ना न्याय और विचारानु-

सार ठीक नहीं तथा राजनीति में अनुसार इस सत्यको छोड़ देना सर्वतोभाषी अपवित्र है।

साईं इच्छोसीने मानो वीरवीर राजाओं में प्रभुत्वकी दास करनेके लिए ही इस देशमें पदार्पण किया था कि विषय इस राजाओंको जो इच्छिपराज्यमें शामिल कर शान्त न हुए। उन्होंने ईद (आराधने निजामको कुछ विमाम छोड़नेके लिए बाध किया तथा सुदूर दक्षिण भागमें कर्नाट और तमिल राज्यको इच्छिपराज्यमें शामिल कर लिया। उत्तराखण्डमें पेशवा बाजीराव पित्रा सन्धुत हो कर वार्षिक ८०,००० रुपयेको उचित पा रहे थे। १८११ ई०में उनको सख्खु, जोनेके कारण उनके पुत्र नागसाहबने एक हतियेके लिए शर्मनाको किन्तु इच्छोसीने हतिये को बंद कर दी।

इतने पर भी इच्छोसीने राज्य विपासा नहीं मितो कि पलमें पयोध्या-राज्य प्राप्त करनेको बन्धुक हुए। पक्षको बार उन्होंने एक नदी बना ली। १०६१ ई०में सुभासरोसनि का शक्ये पयोध्याका पुनरुद्धार पाया था। १८०६ तक बंगाल एक राज्यका शासन करने पा रहे हैं। पक्षकोके पास सिक्काके कारण उनको किमो तरहके सुशादिमें स्थापित नहीं होना पड़ता था। पक्षो धार्मिक शासनकर्तागण समग्र पक्षमें पक्षकोके प्रजापीड़क हो गये थे। सिख सिख यवन राजनरकोने उनमें राज्यमें सुदुर्गता स्थापित करनेके निम्ने पुनः पुनः पनुरोच किया था। पलमें साईं वारिष्ठे लय पयोध्या का कर बहाके शासनकर्ताको दो वर्षके भीतर अपने राज्यमें सुप्रबन्ध करनेके लिए विधीय रूपसे आह पाये थे। इस समय काचित पक्षो पयोध्याके शासनकर्ता थे। वे वारिष्ठेके इरानिये विपक्षित न हुए और न उन्होंने राज्यमें कोई सुप्रबन्ध हो किया। साईं इच्छोसी गव नर बनरल हो कर पाये। उन्होंने निरिद्ध स्यतोत समर होरी ही तन्नामोन ऐसिष्टिप मि० सिन्धुमानको राज्य परिष्कारपूर्वक समस्त विषय सलो मीतिज्ञान कर कतकामिके लिए लिख भेजा। १८१२ ई०को सिन्धुमानने इच्छोसीको लिखा कि, राज्यमें पक्षाचारके कारण नवाब काजिद पक्षीके विरुद्ध प्रेमा पमिदोव उपक्षित हुआ है, समझा एक अचर भी पक्षिपक्षित

नहीं है—पमिदोमको मात्रा समये भी क्या है। प्रजा-साधारण सभी साधन रूपसे पक्षेक सर्वमंख इगा प्रतिष्ठ होनेकी इच्छा करती है। इस विषयमें राज ब योयोको इच्छा हो सबसे पक्षिच पावो जाती है।

इच्छोसीको यद्यपि उसी समय इस राज्यको पक्षिख कोव करनेकी इच्छा थी तथापि ब्रह्मदेशके साथ सुदूर और पारश्वराज्यके साथ शत्रुताको धारणहोने से अपने उत्पन्नके पनुसार कार्य न कर सके। इसी समय एक शैसोका भारत-प्रामनकात्त निबटनेकी बुधा। उन्होंने डिरेक्टरोंको लिख भेजा कि,—“यदि पाव नोतोकी इच्छा हो तो मैं पोर कुछ दिन भारतमें रह कर पयोध्याके विषयमें पाप कांग प्रेमा सिद्धान्त निर्धारित करे इसको कार्यमें परिष्कृत कर शत्रु” डिरेक्टरोंने पानन्दके साथ इस प्रस्तावको म पूर कर दिया और पयोध्या पक्षके पक्षपाती हो कर कार्यका पूर्व भार इच्छोसी पर सीप दिया। पक्षके पयोध्याके साथ जो सन्धि हुई थी उसका श्रेय करके पयोध्या इच्छिप साम्राज्यमें शामिल कर ली गई। १८०१ पोर १८०० ई०में पयोध्याके साथ पक्ष कोको दो सन्धि हुई थी। पूर्व सन्धिके अनुसार नवान्धर्म कारिदोके पदमगानुमार राज्यकी शोडि करींते इस शत्रु पर पयोध्याका पक्षीय इच्छिप-गर्भमें पक्षो को प्राप हुआ। दूसरी सन्धिके नियम यह था कि यदि सुनिष-मने राज्य-शासन न हो, तो पक्षेक-कर्मचारी इच्छिपित प्रयोगका शासन मार पक्ष कर सुप्रबन्ध करींते तथा स्थापितरिख पक्षेक पयोध्याके राजकोषमें पक्षुभेगा। शैश्व रवाके लिए वारिष्ठे १६,००,००० रुपये पक्षेक सर्वमंख को देने पड़ते यह भी उक्त सन्धिमें लिखा था। किन्तु डिरेक्टरोंने इस पक्षका पनुमोदन नहीं किया। स्थिति पक्षेक रक्षके लिए नवाबने उनको राज्यका पक्षीय पक्षके हो दे दिया था। इस पक्षेक सिवा एक सन्धिके पक्षेक किमो भी पक्षको डिरेक्टरोंने पक्षाग्र नहीं किया था।

इस प्रकारका सन्धयपक्षेक होते हुए भी इच्छिपयवमें अपने पयोध्याराज्य पर कब्जा कर लिया। इच्छोसीमें ऐसिष्टिप पाउडामको निष्काशिन धारणका एक पक्ष लिखा, नाउडाम-पक्षेक समर सन्धय है, राजा पयोध्याके नवान्ध १८३० ई०को सन्धिके बात बड़ेमें। ऐसिष्टि



इन्होंने भारतीय बलिबा पर पदार्थ जिया था । पयो  
 भाषी माथापुमावने पविचारमुख करमिने लिए इनका  
 कबत हृदय हृमिता अपनम्यन करमिने तमिक मो  
 विश्वित नहीं हुआ था । इन्होंने बहुतसे मन्त्रादीना मो  
 प्रमुष्ठान किया था परन्तु वे समन्वयके पञ्चाङ्ग पागेनि  
 कृषे हुए हैं । एकचन्द्रमण्डिके विगिय पञ्चपाती होमके  
 कारण उनका सुवय स्फुर्तिको प्राप्त न हो सका । कुछ भी  
 हो, बहुतके पदके पितृकामिकीने इनको एक श्रेष्ठ  
 राजनोतिकुपय बतलाया है । किन्तु भारतयो पर इन्होंने  
 विगिय पञ्चाङ्ग किया था और ये ही परवर्ती मिणको  
 विशेष ( गहर ) से मूल कारण थे इसमें कुछ मो  
 पक्ष कि नहीं है । डिरेक्टरीका नाम से कर पयोजा पर  
 पविचार करमि समय इन्होंने जो सम्यका पपनाय किया  
 था, समये इनको मन्त्रनिष्ठा पर सन्देह होता है ।

इनके समयमें कम्पनको शासनरीतिका एक प्रधान  
 परिवर्तन हुआ था । १८२१ ई०के २० पयम्तको  
 पार्थमिष्य समामि विरीकृत हुआ कि अब तक पान्ना  
 मेष्य कीर्ति नबोन धादेय न से, तब तक इन्धेष्टिपरी  
 को पत्रा और कम्पनको पविष्ठन राज्य इन्धेष्टिपरीके  
 प्रतिनिधिपक्षक कम्पनके ही शासनाधोन रहेगा । कोडे  
 को दिनमें कुछ परिवर्तन होमा इस धामने कम्पनीके  
 लक्षविचारविर्गिने डिरेक्टरीको म प्या बदा कर २५ को  
 बगह १२ कर दिये । इन १२ डिरेक्टरीमें दो को रासी  
 पुर्मेगे और १ पविचारिको द्या निमुक्त होगी । इससे  
 माय हो और एक नियम हुआ कि, पहले डिरेक्टरमय  
 विगिय विगिय पञ्चिकीको भारतके पविष्टेष्ट्य भार्जन और  
 मिथिन सर्वेष्टिके कार्यमें नियुक्त करते थे पश्चिमे पिता  
 निवम हुआ कि साधारणके प्रतियोगी परोका द्वारा लक्ष  
 पद पर कर्मचारी निमुक्त होगी । उच्चकोमीके समयमें जो  
 वेष्टनाम्य मन्त्ररके पदकी खति हुई ।

इसके ( न० ह्यो ) १ रंशादिनिर्मित पावविधये कोन  
 रंशादिको पहियो का बना हुआ बरतन, इका, दौरा ।  
 किसी जतमें दोरिमें खाद्य पदार्थ लपकीत और मज्ज ही  
 कर मन्त्रादीको दान देना चाहिए ।

"विचनय पञ्चविडे इवके वरुवर्तुते ।  
 लभोर्गं धीरसी ॥" शीवहारं नरोहरं ॥" ( मन्त्रीशु ) -

२. बायसीरुषी एक राजाका नाम ।  
 "शकुन्तलम् प्रवासेविले वरुणे नाम रेविकम्"  
 ( रामना० ३१० )  
 उल्लाचार्ये—निवन्ध म पक्ष मानसिय सुदृढके एक प्रसिद्ध  
 टोकाकार । ये बालिके ही ज्ञान थे । एतके पिताका नाम  
 भारत था ।  
 उर्वक ( हि० पु० ) एक रेने ।  
 उदित से० पु० ) १ साठमय युग साठका बना हुआ युग ।  
 "विष्णु कावचना इती वलिवलमयसे युवा" ( इन्द्रना० )  
 २ प्रुनवाचि स प्रामेद ।  
 ' इन्द्रवन्दाः एकव्यक्तिरापिनो इन्द्रादित्यपरिवारम् ।"  
 ( वशिष्ठवर्णन )

उस ( हि० श्री० ) १ मयविगिय, एक प्रकारको गराव ।  
 २ एकछे वीके इन्होंने ताराको छोरी जोतो । ३ कपडू  
 पादिका बह विनारा अहाँ लम्बाई समान हो, छोरे ।  
 उमन ( हि० श्री० ) उमनेको जिया या भाव । २ उमने  
 का डग ।  
 उमना ( हि० शि० ) १ साँव धादि विपेक्षे कोही का  
 साठना । २ रंके मारना ।  
 उरधना ( हि० शि० ) उरना केवा ।  
 उमाना ( हि० शि० ) दौतने कटधाना ।  
 उषकना ( हि० शि० ) १ उष करना, घोषा देना, ठमना ।  
 २ लम्बाना । ३ बिलपना, निवाय करना । ४ बिलपत  
 करना पैमाना बितरणना । ५ गरबना, ६ कारना ।  
 उद्वहना ( हि० शि० ) १ मड करना, गंभाना । २  
 वधित होना, ठमा जाना । ३ उष करना, घोषा देना ।  
 उद्वहना ( हि० वि० ) १ उद्वहनाता हुआ ताजा डरा  
 मरा । २ प्रमुञ्जित प्रमथ, धानपित्त । ३ टटका, ताजा  
 तुलनाका ।  
 उद्वहना ( हि० शि० ) १ लङ्गहाना डरायत होना ।  
 २ उषक होना सुम होना ।  
 उद्वहना ( हि० पु० ) प्रमुञ्जता, प्रमथता, ताजयो ।  
 उद्वन ( हि० पु० ) १ पक्ष पर, लंका । ( श्री० ) २ उषक,  
 दाह ।  
 उद्वना ( हि० शि० ) १ मरम होना, दम्ब होना, उषना ।  
 २ दंय करना, लुटना, विदुना । ३ मनाय करना,  
 दुःख पहुँचाना ।

उद्धर ( हि० स्त्री० ) १ पथ, मार्ग, रास्ता । ३ आकाश-  
गद्गा ।

उद्धरना ( हि० क्लि० ) भ्रमण करना, चलना, फिरना ।

उद्दालना ( सं० स्त्री० ) डाहलभूमि, चित्तराज्यका दूसरा  
नाम । उद्दाल देगो ।

उद्ध ( सं० पु० ) दहति तापयति सर्वगरीरं दह कु ।  
मृगवाटयस्व । ३१ ३१८ । इति सूत्रेण निपातनात् माधुः ।  
१ वृषविशेष, लकृच, उद्धहर । इसके पर्याय — लकृच और  
निकच है । इसका गुण — गुरु, विटोप और शक्रपुटि-  
कारक है । लडव देगो । २ वद्धहर ।

उद्ध ( सं० पु० ) पृषो० माधुः । दह देगो ।

उडा ( सं० स्त्री० ) डोड स्त्रियां टाए । डाकिनो, डाइन ।

उडा ( हि० पु० ) गितारकी गतिका एक बीन ।

उडाइन ( हि० स्त्री० ) १ भूतनी, राक्षसी चुड़ैल । २ वह  
औरत जिसको दृष्टि आदिके प्रभावसे वर्षा मर जाने है ।  
३ मुराव और श्वीफनाक औरत ।

उडाईकर ( सं० पु० ) १ कार्य-संचालक, वक्त्र जो इला-  
जाम करता हो । २ गति उत्पन्न करनेवाला मशीनका  
एक पुर्जा ।

उडाईकरो ( सं० स्त्री० ) एक पुस्तक जिसमें किमी किमी  
नगर या देगके प्रधान प्रधान मनुष्योंकी सूची बच्चर  
क्रमसे हो ।

उडाई ( सं० पु० ) १ पासा । २ टप्पा, सांचा । ३ रङ्ग ।  
डाईप्रेस ( सं० स्त्री० ) वह कल जिसमें टम्बर हुए अक्षर  
उद्ययि जाते हैं ।

डाईक ( हि० स्त्री० ) कागजकी तरह पतला तांब या  
चाँदीका पत्तर ।

डाईगर ( हि० पु० ) १ चौपाया, टोर । २ एक नीच  
जातिका नाम । ( वि० ) ३ रुग्ण, दुबला-पतला । ४  
सूर्य, जहू ।

डाईगा ( हि० पु० ) जहाजके मस्तूलमें आही लगाई हुई  
घरन जिम पर रस्सियाँ फँलाई जाती हैं ।

डाईट ( हि० स्त्री० ) १ वग, दाव, दबाव । २ क्रोधका  
गण्ट डपट, धड़की ।

डाईटना ( हि० क्लि० ) क्रोधपूर्वक कर्कश स्वर कहना,  
हपटना ।

डाईड ( हि० पु० ) १ उल्ला, मोधी लकड़ी । २ गटक ।

३ वह लम्बा उँडा जिसमें नाव खिरे जाते हैं, चम्पू ।

४ चंकुगका इला । ५ रोडकी कटो । ६ ऊँची

उठाई सूई सड़ोव जमीन जो बहुत दूर तक पनबी देखा-

का तरह चली गई हो, ऊँची मैट । ७ क्रम ऊँचाई में

डावार जो आठ आठिके निचे उठाई जाती है । ८ ऊँचा

खान, छोटा मीठा । ९ मैड । १० समुद्रका टालुषा

देखाना खिलारा । ११ मोमा, हट । १२ जड़त कडा

हप्रा मैटान । १३ घण्टाघर, जुरमाना । १४ सुकमान

का बदन, धरजाना । १५ उडा, दस ।

डाईडना ( हि० क्लि० ) अर्थदण्ड देना, चुगमाना करना ।

डाईटर ( हि० पु० ) वाजरीकी सूई की फसनके काट

निये जाने पर खेतमें रङ्ग जाती है ।

डाईटा ( हि० पु० ) १ उड्या, हट । २ गटक । ३ चाम

का लम्बा उल्ला जिसमें नाव खिरे जाते हैं । ३ मोमा,

हट ।

डाईडमँडा ( हि० पु० ) १ परस्पर घबलत मामोअ मगाव ।

२ भगडा, टण्डा ।

डाईडगहल ( हि० पु० ) बहालमें मिमनवाना एक प्रकार-

का भाष ।

डाईडो ( हि० स्त्री० ) १ लम्बा पतला छाठ । २ लम्बा

हला । ३ पलड़े बन्ने रहनेका तालूकी मोधी लकड़ी ।

४ पतली गावा, टहना । ५ फूल या फल लगा हुआ

लम्बा डंडल । ६ वे चार मोधी लकड़ियों या डोरीकी

मडों जो हिंडोलेमें लगे रहती हैं । ७ जुलाहोंकी

चरखोंकी घबनीमें डाली जानिकी लकड़ी । ८ पीतल

लगा हुआ गहनाईकी लकड़ी । ९ वह आदमी जो

डाईड खेता है । १० चालमी मनुष्य । ११ मर्यादा,

इज्जत । १२ वह स्थान जहाँ चिड़ियाँ आ कर बैठ करती

हैं । १३ फूलके नोचिका वह भाग जो लम्बा और पतला

होता हो । १४ पालकीके दोनों और निकली हुए लंबे

डंडे । कदार इन्हींमें कंधा लगा कर चलते हैं । १५

पालकी । १६ पहाड़ी मवारो, भयान ।

डाईव ( हि० पु० ) दलदलमें होनेवाला एक प्रकारका

नरकट ।

डाईवरा ( हि० स्त्री० ) पुत्र, लडका, बेटा ।

डॉक्टरो ( डि • लो • ) पुस्तो कल्या, रेडी ।  
 डॉक्टर ( डि • सु • ) बाबका बन्ना ।  
 डॉक्टोर ( डि • सि • ) चण्ड, विचरित ।  
 डॉक्टर ( डि • सु • ) १. द्रुतासुके व्यास इ टोसिडे एक ।  
 इममें १. पारदातके बाद १ गुण्य होता है ।  
 डॉम ( डि • सु • ) १ बड़ा मन्थक टम । २. मनेशियोंको  
 दुम्ह दिनेवासी एक मन्तो ।  
 डॉमर ( डि • सु • ) इमनीका बोज, बिपा ।  
 डॉम ( डि • लो • ) १ बड़ खान जहाँ चोड़ि गाड़ी पादि  
 बूदते जाते हैं । २. सरकारको पीरके बिदियोंके धामे  
 जानिबी स्थलसा । १ बिडोपती । ३. बमन, लछटी, ली ।  
 डॉक ( प • सु • ) १ समुद्रके किनारेका बड़ खान जहाँ  
 लहाज, पा कर ठहरता है । २. लौनामबी बोनी ।  
 डॉक—बिन्दीके एक प्रभित धरि । इनका दूकरा नाम  
 चाव है । क्विसम्बन्धीय र्थोंमें बहुतनो कबिताये चोड़ि  
 बोनीमें लिखी हैं । यदाहरबाब एक लीके दो जातो है—  
 "नो दूकराके बाकी तै बडीकर जन ।  
 वही डाक दूक बाकीरिब परेई कधी न जाव इ चाव रैनो ।  
 डाकखाना ( डि • सु • ) बड़ खान जहाँ मनुष्य मिल मिल  
 खामि पर भेकनेके लिये बिडोपती पादि चोड़ते हैं ।  
 पीर बहलिये पाई हुई बिदिया लीमीको बट्टे जातो है ।  
 डाक विभागकी प्रया पकलन प्राधुनिक नहीं है ।  
 पहले राजा अपने राजकीय कार्योंकी सुविधाके लिये डाक  
 प्यादा रखते थे । वे न बादशाहके पचादि में कर बहुत  
 निजेके एक खानमें दूकराको जाते पीर फिर बहलिये दूकरा  
 पादमी उन सर परोंको से कर दूकरो बनव जाता था ।  
 इमो तरह योई की समयमें बहुत दूर दूर देमोंमें संवाद  
 पड़ जाये जाते थे । यहाँ तक कि भारतवर्षमें पीर  
 पमेरिकाके भिन्नीकोवासी प्राचीन ज्ञातियोंमें मो इलो  
 तरहमें स बादके पादान प्रधानका निधम प्रचलित था ।  
 रोमशासक्यकी सचबिधे समय बहाँ मो पनेक तरहके  
 डाकविभाग थे जिन्हें (Carpus publicus) कहते  
 थे ।  
 ११वीं शताब्दीकी प्रारम्भमें डाक-विभाग स्थापित  
 हुआ । १०वीं शताब्दीको प्रारम्भके राजा ११वीं शताब्दी  
 समयमें एक विभागमें बहुत बहलिये हुई । १८वीं

शताब्दीकी फरासीसी बिद्वाने समयमें प्राणकी माधारण  
 मनुष्योंमें ली डाक-प्रया प्रचलित हो गई थी ।  
 १११६ ई•में फ्रियाके राजाके पहरोपदे प्रांज  
 (Franz Von Thun) पीर टैक्सिम (Taxis) ने मार्य  
 जलिक डाकविभाग स्थापन किया । पहले लन्दों में प्रुये  
 न्म पीर मियानामि स बाद पार्थुनिके लिए बहुतने  
 डाककर निर्माच किये । समय लन्दोंके पहले बहुत  
 पूरखित निपन्म पीर मिनिम-तक डाकविभाग स्थापित  
 हुआ था ।  
 १६वीं शताब्दीमें शेरशाहके पहले चोड़ि का डाक तथा  
 दिहोकर पकवरके पहले मुगल शासक्यके समय प्यागो  
 में चोड़ि हो समयमें स बाद में जानिके लिए डाक-विभाग  
 स्थापित हुआ । काफोर्षा नामक एक मुमनमानने इनि  
 वासमें निधा है, बादशाह पकवरमें ली सब नये  
 निबम बसाये जन्मिसे 'डाकमेबका' को एक चोड़ि बढोप्य  
 है । खान खान पर लनका पकडा था । " अनुकपकक  
 की पाहन-पकवरोंमें लिखा है, मियदा भिवाठके  
 पबिवासी थे । वे जन्ममें बड़े निज थे । बहुत दूरके  
 चोड़ि की समयमें स बाद का देते थे । लतम गुजबरीमें  
 मो लनको यिनती थी ।  
 १६ गल्लके राजा १६ मसम्बके समय में टन्डितनमें  
 डाकविभाग स्थापित हुआ । बुधिमाल यिन्के मन्विलके  
 समयमें डाककी पत्तामग्नता प गरीजों में मन्विल रूपके  
 सपनलि थी । इही समयमें डाककी लकति पारम्भ हुई ।  
 १८वीं शताब्दीको पमेरिकाके बुधराण्यमें डाक  
 प्रचलित हुआ ।  
 डाकके वाकिन्व स्थलचोयिन्के पनेक सपकार लीने  
 पर ली पहले बकिन्व गुण इककी प्रयोक्त्रीयता सपनलि  
 कर न सधे ।  
 १८वीं शताब्दीके मज्जभागमें डाक विभागकी बहुत  
 लुच बहलिये ली गई । पहले डाक-विभागके राजा पीर  
 राजपुर्वकोंको ली सुविधा थी । सब क्या राजा क्या प्रजा  
 लमो एकसा सपकार पाते हैं । डाकके लीनेके वाकि-  
 न्यानिमें लीना काम हुआ है बड़ बर्षान्तीत है ।  
 १८०० ई•में राजपेण्ड जिन्ने एक डाक लीनेकी

दूरोको चिट्ठो होने पर भी सिर्फ एक पेन्स खर्च दे कर भेजनेको सम्मति अंगरेजोंसे लो। यूरोपके दूसरे दूसरे देशोंमें भी थोड़े ही समयमें सभीने राठलैण्ड-इलका पक्ष अवलम्बन किया। भारतके अंगरेज शासनकर्त्ता बड़े लाट डलहौसीने यहाँ सबसे पहले सार्वजनिक डाक-विभाग स्थापन किया।

१८७० ई०में अष्ट्रियासे सबसे पहले पोस्टकार्ड प्रचलित हुआ। बाद वह भी बहुत थोड़े दिनोंमें ही जगत्के समस्त सभ्य देशोंमें चलाया गया।

पहले देश बंदर्क अनुसार डाकखर्च भी लगता था। १८७४ ई०में जबसे आन्तरजातिक डाक-सम्मेलन (International Postal Union) स्थापित हुआ, तबसे विदेशको चिट्ठो भेजनेमें खर्चकी जो गड़बड़ो थी वह जाती रही।

अभी सभी सुसभ्य देशोंके प्रधान प्रधान नगरों और ग्रामोंमें डाकघर स्थापित हो गया है। डाकसे सब लोगोंको समान सुविधा मिलने पर भी डाक विभाग देशके राजके अधीन है।

डाकगाड़ी (हि० स्त्रो०) चिट्ठी पत्ती ले जानेको रेलगाड़ी इसका इन्तजाम सरकारको औरसे है। यह और गाड़ियोंसे तेज चलतो है। अधिक महसूल ले कर इसमें आदमी भी बैठे जाते हैं।

डाकघर (हि० पु०) डाकखाना देखो।

डाकना (हि० स्त्रो०) १ उलटो करना, कौ करना। २ लांघना, फाँटना, कूटना।

डाकवगला (हि० पु०) एक स्थानसे दूसरे स्थान जानेमें रालपुत्रियों या भ्रमणकारियोंके सुविधार्थ और विश्रामार्थ घर। इस्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें इन प्रकारके घर स्थान स्थान पर बने थे। रेल होनेके पहले इन्हीं स्थानों पर डाक ली जाती और बदली जाती थी।

डाकसुंगो (हि० पु०) वह पुरुष जिसके हाथ डाकघर का इन्तजाम हो, पोस्टमास्टर।

डाकार (हि० पु०) सूखे हुए तालावोंको चिटको हुई मट्टी।

डाकग्रथ (हि० स्त्रो०) डाकका खर्च, डाक महसूल।

डाका (हि० पु०) किमीका धन कीलनेका आक्रमण, बटमारी।

डाकाजनी (हि० स्त्रो०) डकैतो करनेका काम, बटमारी।

डाकिन (हि० स्त्रो०) डाकिनी देखो।

डाकिनो (स० स्त्रो०) डाय भयदानाय अक्रति व्रतित-डाय अक्र-इनि वा डाकानां समूहः इति डाक इनि। अहादिम्यइनिर्वकडयः। पा १।२।५० गार्तिक। १ कालोके एक गणका नाम।

“सादेश हाकिनीनाम् विद्वानां विक्रोदिभिः।” (ब्रह्मपु०)

२ पिशाचो, यह किसो मनुष्यको देखनेसे हो उसका अनिष्ट करतो है। ३ स्त्रोविशेष, डाइन। ४ शिव और पार्वतीका अनुवर। इसको संहार-शक्तिका अंग-विशेष कहा जाता है। यह मारण, वशीकरण प्रभृति कार्योंका तथा उनके मन्त्र का उपास्य देवता है।

“डाकिनी शाकिनी भूतप्रेतवेतालासृष्टाः।” (काशीन ३० अ०)

भोटदेशवासो अभी भी डाकिनीको उपासना करते हैं।

डाकी (हि० स्त्रो०) १ उलटो, कौ, वमन। (पु०) २ पैटू, बहुत खानेवाला।

डाकू (हि० पु०) १ वह जो वस्तुपूर्वक दूसरेका माल लूट लेता है, लुटेरा, बटमार। २ वह जो बहुत खाता हो, पैटू।

डाकैट (अ० पु०) किसी पत्रका सारांश, चिट्ठोका खुलासा।

डाकीत—एक ब्राह्मण जाति। ये लोग कहीं डाकीत कहीं भदरी कहीं भडलो, कहीं जोतगो, कहीं दिसन्वी, कहीं जोषो, कहीं शनिश्चरिया, कहीं ग्रहविप्र, कहीं ज्योतिषीजी, कहीं नक्षत्रजीवो और कहीं घावरियां कहलाते हैं। प्रवाद है कि, ब्राह्मणके वोये व भडलो नामकी एक शूद्रके संयोगसे जो सन्तान उत्पन्न हुई वह डाकीत वा भदरी कहलाई। आज कल जैसे अन्य ब्राह्मणगण मन्दिरोंके पुजारो हैं, तैसे ही ये डाकीत लोगभी शनिदेवके मन्दिरके पुजारी हैं।

यथार्थमें यह जाति एक ऋषिको सन्तान है। महा-भारतके अनुशासनपर्वमें लिखा है कि भृगुजीके गुणोंके समान च्यवन, वज्रशोर्ष, शुचि, शक्र, बरेण्य और विभु-सवन ये सात उनके पुत्र पैदा हुए। इन्हीं शक्राचार्यके वंशमें एक ऋषि हो गये हैं और उन्हीं एकके वंशमें

डाकीर है। पहले से लोग डका कहनाते से बाद डका  
डका कहातेकहाते डाकीर कहनाते लगे है।

डाकीर ( डि० पु० ) विष्णु मयान्, डाकीर । यह शब्द  
विष्णु गुणधर्म प्रयोग किया जाता है।

डाक्टर ( च० पु० ) १ अध्यापक, विद्वान् याचार्य ।  
२ चिकित्सक, वैद्य, डकीर ।

डाक्टरी ( डि० स्त्री० ) १ चिकित्साशास्त्र, वैद्यक-विद्या ।  
२ पाठ्यालय पाठशाला ।

डाक्टर ( डि० पु० ) डाक्टर देखो ।

डाया ( डि० पु० ) वह डंडा जिससे नगरा बनाया जाता  
है सोय ।

डागुर ( डि० पु० ) डांटोकी एक जाति ।

डाङ्गल ( स० स्त्री० ) चपटा घोर धासोका शब्द ।

डाङ्गरो ( स० स्त्री० ) डाङ्गरो प्योद० माधु । दोसकर्वटो ।

डाङ्गाग्राम—हरमहादेव चलागत करमगोविन्दे १ कोस  
उत्तरी पश्चिम एक धाम । ( सि० प्रथम० प० ११२३ )

डाट ( डि० स्त्री० ) १ टेक चाँड़ । २ वह वस्तु जिससे  
कीरे छिंट बंद किया जाता है । ३ वह वस्तु जिससे  
सोतम्पका सुख बंद किया जाता है, काग ।

डाटना ( डि० स्त्री० ) १ एक पदाङ्को दूसरे पदाङ पर  
जोरसे दबाना । २ टेकना, चाँड़ नाना । ३ बिन्दु बंद  
करना, सुख बंद करना । ४ कर बंद करना, पच्छो तरह  
हुवेक्या । ५ दमि भर खाना, बस कर खाना । ६  
डडाना, मिडाना ।

डाङ ( डि० स्त्री० ) १ बीमङ्ग, दाङ् । २ बट पादि डङ्कोकी  
अर्थात् जो मीचेकी घोर कटकती रहती है, बरोब ।

डाङ्गा ( डि० स्त्री० ) १ दाबानल, वनकी धाम । २ धाम ।  
३ ताप, दाह, प्रथल ।

डाङ्गी ( डि० स्त्री० ) १ चिनुक, ठुङ्गी । २ चिनुक थीर  
गण्डकान परके सोम, दाङ्गो ।

डाम ( डि० स्त्री० ) १ डाम नामकी बस । २ कच्चा नारि  
बन । ३ परतला तलवार म्कटवानीको बसके या मोटे  
बपकेको चौकी पको ।

डामक ( डि० स्त्री० ) डामक देखो ।

डामर ( डि० पु० ) १ मीथो जमोन । २ मत, पोखरी,  
नङ्गी, गङ्गा । ३ डाम बोमि घोर बुकी करनका बर

तल चिमनयो । ४ अपरिस्वार बस, मेला पालो । ( सि० )  
५ मटमेका गदला ।

डामा ( डि० पु० ) डमा देखो ।

डामी ( डि० स्त्री० ) कटो हूर धाम ।

डाम ( डि० पु० ) १ एक प्रकारका कुम् । २ कुम् ।  
३ धामनखरी, धामका मोर । ४ कच्चा नारियल ।

डामक ( डि० स्त्री० ) ताजा, टटका ।

डामका ( डि० पु० ) मचान, माका ।

डामर ( स० पु० ) १ महादेवकथित तन्त्रशास्त्रविषय ।  
२ तन्त्रकी बंध्या, ३ तन्त्र नाम घोर प्रोक्तसंस्था धाराकी

तन्त्रमें इन प्रकार लिखो है, १ बोगडामर—इसको प्रोक्त  
संस्था २१२२३ है । २ शिवडामर—इसको प्रोक्तसंस्था

११०० है । ३ दुर्गाडामर—इसको प्रोक्तसंस्था ११२० है  
है । ४ नारकतडामर—इसकी प्रोक्तसंस्था ८८०६ है ।

५ ब्रह्मडामर—इसको प्रोक्तसंस्था ७१०२ है । मन्त्र-  
डामर—इसकी प्रोक्तसंस्था ६००६ है । धाराहीतम् देखो ।

६ धामडार । ७ धर्म पाडम्बर अडकाट ।

“रतिनखिते कथिते कुमुदामि विचित्रिदिक्कडकाधरे ।”

( मीठकोमिन् १२/१२ )

४ शोडकविषय, पुर्णसे शुभाशुभ माननेके लिए  
बनाए जानेवाले चक्रमिति एक ।

“एवमे निरिच्छेद्य वन्द्यः शोडक डामरः ।” ( ब्रह्मवैवर्त )

५ शितपाकविषय, ६८ वेदपान मोरकमिति एक ।  
६ कुम्, जन्मन ।

डामर ( डि० पु० ) १ साक डङ्का मोद, रात । २ एक  
प्रकारका मोद । इसका पौड हचिमि पचिमी घाटके  
पहाडो पर मिलता है । कटरा देखो ।

३ छोटे मधुमन्त्रिकीके कर्मके निबन्धनवाना एक  
प्रकारका कसीका रात । ४ इस तरहका रात बनानेवाली  
छोटी मधुमन्त्रकी ।

डामन ( डि० स्त्री० ) १ सोनल पर्वत धारागार, कच्चा  
भरके किये छोट । २ देग निकालाका दण्ड । भारत  
वर्षमें च गोरोको सरकार लन पपराबिर्वीको च डमन  
डामुमें मिया करतो है जो कुच भारी पपराब करत है ।  
कमी दण्डको डामन कहत है ।

डामाडोल ( डि० स्त्री० ) धाराडोल देखो ।



ढाय'ढाय ( हिं० क्रि०-वि० ) व्यर्थ इधरसे उधर, व्यर्थ धूल खानते हुए ।

ढायन ( हिं० स्त्री० ) १ पिशाचिनी, डाकिनी । २ कुरूप स्त्री, वदसूरत औरत ।

ढायनाढी ( अं० पु० ) विजली उत्पन्न करनेवाली एक प्रकारका छोटा एन्जिन ।

ढायमण्डकट ( अं० पु० ) हीरेकीसी काट, डामल काट ।

ढायमण्ड हारवर (Diamond Harbour)—१ बङ्गालके अन्तर्गत २४ परगने जिलेका एक उपविभाग । यह अक्षा० २१' ३१" से २२' २१" उ० और देशा० ८८' २' से ८८' ३१" पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण १२८३ वर्ग मील है, जिनमेंसे ८०७ वर्ग मील तक सुन्दरवन व्याप्त है । इस उपविभागमें ढायमण्ड-हारवर, देवीपुर, बांकीपुर, काव्यी और मयुरापुर नामक ५ थाने हैं । ३ दोवानी और ३ फौजदारी अदालतमें विचारकार्य सम्पन्न होता है । विख्यात सागरहीप इसी उपविभागके अन्तर्गत है । १८६४ ई०के तूफानमें यहाँके बहुतसे अधिवासिथीकी मृत्यु हुई थी । प्रायः ५६२५ अधिवासियोंमें केवल १४८८ मनुष्योंकी जान बची थी । १८६६ ई०के दुर्भिक्षमें भी बहुत लोग मरे थे । कलकत्तेसे ढायमण्ड-हारवर तक रेलपथ हो जानेसे इधरकी दुरवस्था बहुत कुछ जाती रही । अभी यहाँकी लोकसंख्या प्रायः ४६०७४८ है । इसमें १५७५ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है ।

२ बङ्गालके अन्तर्गत २४ परगने जिलेके ढायमण्ड-हारवर उपविभागका प्रधान स्थान और एक विख्यात बन्दर । इसी स्थानके नामानुसार उपविभागका नाम पड़ा है । ढायमण्ड-हारवर शब्दका अर्थ (ढायमण्ड = छोटा, हारवर = बन्दर) उल्लूक बन्दर है । यह अक्षा० २२' १०" उ० और देशा० ८८' १२" पू० पर भागीरथीके बाँधे किनारे अवस्थित है । पहले यहाँ इष्ट इण्डिया कम्पनीके जहाज रहते थे । अभी यहाँ एक टेलिग्राफ आफिस और फोटो-घर है । जो जहाज नदी हो कर प्रतिदिन जाते हैं, बन्दरके मालिक उनमेंसे प्रत्येकका विवरण वीक्षक आदिकी तादाद कलकत्तेमें टेलिग्राफ द्वारा जाता है । कलकत्तेके टेलिग्राफ गजटमें वह प्रतिदिन प्रकाशित हो

जाता है । जो कुछ हो, अभी यह समृद्धशाली स्थान हो गया है । प्राचीन चित्रमिसे एक कत्रिस्तान विद्यमान है । रेलपथके द्वारा यह कलकत्तेसे ३८ मील दूर है । यह रेलपथ कलकत्ते और साउथ इष्टर्ण बङ्गाल एंटे रेलपथके मोनापुर स्टेशनसे निकला है । यह कलकत्तेसे पैदल ३० मील और नदी द्वारा ४१ मील दूर पडता है ।

ढायरी ( अं० स्त्री० ) दिनचर्या, रोजनामचा ।

ढायल ( अं० पु० ) घडोका चेहरा, जहाँ अंक बने होते हैं और सूत्रियाँ घूमती हैं ।

ढाथस ( अं० पु० ) किसी समाका ऊँचा स्थान जहाँ प्रभापतिका आसन रखा जाता है ।

ढार ( हिं० स्त्री० ) १ डलिया, टोकरा । २ शाखा डाल । ३ एक प्रकारकी खूंटो जो फानूस जलानेके लिये दोवार में लगाई जाती है ।

ढारना ( हिं० क्रि० ) ढलना देखो ।

ढारियास ( हिं० पु० ) बावून बन्दरकी एक जाति ।

ढाल ( हिं० स्त्री० ) १ शाखा, शाख । २ दोवारमें लगे हुए एक प्रकारकी खूंटो जो फानूस जलानेके लिये दोवारमें लगाई जाते हैं । ३ तलवारका फल । ४ मध्यभारत और मारवाड़में पहने जानेका एक प्रकारका गहना । ५ डलिया, चँगरो । ६ डलियेमें सजा कर किसीके यहाँ भेजो जानेवाली खाने पीनेकी वस्तु । ७ विवाहके समय बरकी औरसे । बधूकी दिये जानेका कपड़ा और गहना ।

ढालना ( हिं० क्रि० ) १ नीचे गिराना, छोड़ना, फेंकना । २ छोड़ना, ऊपरसे गिराना । ३ स्थित या मिश्रित करना रखना, मिलाना । ४ प्रविष्ट करना, भीतर डुबेड़ना । ५ परिवर्तन करना, सुधिन लेना, सुना देना । ६ चित्रित करना, अङ्कित करना, लगाना । ७ विस्तृत कर रखना, फैलाना । ८ शरीर पर धारण करना, पहनना । ९ सौंपना, भार देना । १० गर्भपात करना, पेट गिराना । ११ उपयोग करना, लगाना । १२ वमन करना, करना । १३ स्त्रीकी तरह रखना ।

ढालफिन ( अं० पु० ) एक प्रकारकी बाल मच्छली ।

हाडर ( च० पु० ) तोन चपते दो पानिसे बराबर चम  
बिक्काका एक बिक्का ।

हाडी ( हि० जो० ) १ शीकर, बंगरो । २ एक एक या  
पानि दोनबी बटु जो डनिधामे सजा कर बिनीरि यश।

हाडी ( हि० पु० ) १ पिठम । २ बावो देगो ।

हाडरो ( हि० पु० ) पुनो बिडा ।

हाडरो ( हि० जो० ) कान्ना, बेटो ।

हाड ( हि० पु० ) चमारोका एक यन्त्र । इससे बड़-चम-  
हुंटे मोतरका कम्प साज करटा है ।

हाडन ( हि० पु० ) बिक्कावन बिडोना, बिडार ।

हाडना ( हि० लि० ) बौखाना, बिक्काना ।

हाडनो ( हि० जो० ) चारपाई एक म. खाट ।

हाड ( हि० जो० ) ; ईर्ष्या होय जनन ।

हाडना ( हि० लि० ) बिक्क करना, सताना, जमाना ।

हाडिर देसपति - मिन्धप्रदेशके एक बिन्धू राजा । ममप  
मिन्धुदेस, मुलतान घोर मिन्धुबुद्धवर्ती बहुत बुरतकदा

प्रदेश इनके पविक्कारते था । इनके राजवतने पइसे पाबी  
योग मिन्धुप्रदेश पर शासन कर कूट मयाते तडा

जिये घोर बर्षाको ब्रेद कर-से करी से । हाडिरके  
राज्यकालमें उनके राज्यके पन्धर्मत देवस म दरमें पर

बियोका एक कजाब भूट मया था । परबियाके कसकी  
पतिपुतिके लिए ताका करमे पर हाडिरने बराब दिया -

"देवस हमारे राज्यके पन्धर्मत नहीं है, इसलिये  
इसके लिए हम बिबेकार नहीं ।" इस पर परबियाने

पइसे एकबस सेना भेती, जो पराजित घोर निहत हो  
गई । इधर बाद ७११ ई०में बमोरके शासनकालमें बडो

मारी सेनाके पाप चपते मतीने महबुद बैन् क्रासिमको  
हाडिरके बिबद बुडाय भेजा । बैन् क्रासिमने पर कर  
पइसे बी देवन शासनच चौदू पत्रिकार किया ।  
इसके बाद महबुद बैन् क्रासिम द्वारा परिबानिम  
बिन्धी घरेबी सेना निरुन (बतमान ईदराबाद) पादि  
नगरोंको जितनेके लिए उभारको तरुण चपमर होने लगे ।  
हाडिरने चपते स्पेड पुत्र, अयनि हकी बहुत म्यक  
भेगके साथ भेजा, किन्तु इनमें पारप्यने चीर भो  
२००० चन्नारोको सेनाने था कर महबुद बैन् क्रासिमका

साध दिया ; इसलिये कयमि हकी बाब जो कर  
भागना पड़ा । महबुद राजबानो चोरोरको तरुण

चपमर होने लगे । अब बी बार हाडिरने चमपु सेना भे  
कर जो अनजने बैन् क्रासिमके बिबद पन्नवारच किया ।

बनको तरुणसे उस समय १०,००० सेना बुद कर रचो  
यो । बैन् क्रासिम एक सुदृढ़ स्थानमें पायपनी कर चाम

रना करने लगे । बहुत दिन तक युद हुआ । पाविर  
एक दिन हाडिर स्वय हायोके पोठ पर युद करती करती

बिपसके मोर्चे बिद हो गये । उनके हाथीने मो कम  
चमय एक कसते हुए पायवे गोसेवे पाहत हो कर बिगने

निबटल नदीमें प्रवेश किया । इस पतकिंत बिपदमें  
समस्त सेना बिच बिच हो गई । इसके बाद राजाने चौदू

पर मवार जो कर चपनी सेनाको पुनः उन्हाहित करनी  
घोर सुदृढ़कालमें कानिको बहुत बिडा को पर सब स्वय हुई ।

वे क्षय युद करके मारे गये । मिशरान नदी दहाहाबके  
महबुती रावर दुर्गके पाम यह युद हुआ था । पराजित

बेगमि भाग कर राबर युयमें पायव लिया । हाडिरके पुत्र  
अयनि घ घोर बिबका रामो रानीबाईने युयको रचाके

निय जो ज्ञानमे कोमिय करकेको ज्ञान लो । पानु  
हाडिरके बिगदा मन्कोने अयनि हकी इस युयको कोइ

कर हाडनाबाद पायव सेनिका परामम दिया

राजका दुर्ग बैन् क्रासिमके कब्जेमें था मया । दुर्ग-  
बानो राजपुत-सेनाने कोबनका पाया कोइ कर शय पा-

के बीच मापच वेगके प्रवेश किया घोर युद करती क ते  
प्राच त्याग किया । रानीने कई एक कत्यानी मजित

घनकमें प्रवेश किया । बिबवी मुमममान नेनाने पुनू के  
पन्नवारो पुद्व मन्का मा डाना घोर जिया तका

बाबकीको ब्रेद कर लिया । इसके बाद महबुद बैन्  
क्रासिमने हाडनाबाद बय किया । अयनि घ घरेसेने जो

कमका रसवभार १६ सेनापतिवोंको सुपुट करके जामो  
पर चके मये से ।

हाडिरको दो कत्यापनि माताके पाप देइकान लडो  
किया था । ये महबुद बैन् क्रासिमके पायकेद हुई । मह

बुदने इन दोनोंका पन्नाबनामलय सोदके टेल कर  
पन्नीकाको रपहार सेनका विचार किया । दोनों कन्पोका  
को ताकासिक राजबानो दामस्थान नगरमें पन्नीका

घान्तिके सामने लाई गईं। उनमेंसे बड़ोने करण स्वर्मे कहा—“धर्मावनार। हम आपके लायक नहीं है, महामहदेवन् काशिमने पड़े ही हमारा धर्मनाम कर डाला है।” खलीफा इस बातकी सुन कर अत्यन्त क्रुद्ध हुए, उन्हें सत्यामत्यका विचार विना किये ही महामहदेवन्कासिमकी चामकी घैलोमें भर लानेका आदेश दे दिया। उनका आदेश प्रतिपालित हुआ और यथामसय पर वेन कासिमकी मृतदेह खलीफाके सामने लाई गई राजकुमारोने पिटगवुकी मृतदेहको देख कर कहा—“इतने दिन बाद हमारे अमोटमिदि हुईं। मैंने मिया क़ह कर अपने कुलोच्छेदकारो इस दुष्टके प्राणन ग करवाये है।” इस तरह डाहिरकी कन्धाअंने पिटनिधनकी प्रतिहिंसा साधन की।

डाङ्क ( हिं० पु० ) टिटिहरीके आकारका एक पत्तो। यह सदा जलाशयोंके निकट पाया जाता है।

डिङ्गल ( हिं० वि० ) १ दूषित, छृणित नीच, अधम, पाभर। ( स्त्री० ) २ राजप्रतानेकी एक भाषा। इसमें भाट और चारण काश तथा वंशावली आदि लिखते हैं।

डिङ्गसा ( हिं० पु० ) खमिया पर्वत तथा चटगाव और वरमाकी पहाड़ियों पर होनेवाला एक प्रकारका पेड़। इससे एक प्रकारका समटा गोंद या राल निकलतो है। तारपीनका तेल भी इससे निकलता है।

डिङ्गस ( हिं० पु० ) एक प्रकारकी तरकारो।

डिडमी ( हिं० स्त्री० ) टिंडया टिंडवी नामकी तरकारो।

डिडिमी ( हिं० स्त्री० ) डिडिम देखो।

डिडिया ( हिं० वि० ) १ पाखण्डो, जो आडम्बर रचता हो। २ अभिमानो, घमंडी।

डिडिआलो ( हिं० स्त्री० ) मध्यभारत तथा दक्षिणमें होनेवाला एक पेड़। इसमेंसे एक प्रकारका गोंद निकलता है। गोंद हींगके तरह मृगी रोगमें दिया जाता है। इसमें घाव जल्दो सूखता है और मक्खियाँ बैठने नहीं पाती।

डिडिी ( हिं० स्त्री० ) १ सींगीका धका। २ आक्रमण घावा, झपट।

डिडिगन ( अं० पु० ) वह वाक्य जो लिखनेके लिए बोला जाय, इसका।

डिडिी ( अं० स्त्री० ) १ आशा, पुत्र। २ जीतकी आशा। डिडगनरो ( अं० स्त्री० ) गण्डकोप।

डिडिना ( हिं० क्रि० ) १ प्रतिज्ञा छोड़ना, अपनी बात पर कायम न रहना। २ स्थान परित्याग करना, जगड़ छोड़ना हिलना, टनना।

डिडिरो ( अं० स्त्री० ) १ विश्वविद्यालयका परीक्षामें उत्तीर्ण होनेकी उपाधि। २ समकोणका  $\frac{1}{2}$  भाग, अंग, कला। ३ ग्यालयका वह फसला जिसके द्वारा मढ़नेवाले पत्तोंमें किसीकी कोई एक मिलता है।

डिडिरोदार ( अं० पु० ) वह मनुष्य जिसके पलमें अटालनको डिडिरो हुई हो।

डिडिवा ( हिं० पु० ) एक पत्तोका नाम।

डिडिना ( हिं० क्रि० ) १ जगड़में डटना, खसकाना, डर काना। २ विचलित करना, बात पर कायम न रहना।

डिडिा ( हिं० स्त्री० ) १ तालाव, पोखरा। २ शिमत, साहस।

डिडिार ( मं० पु० ) डडर एपो० माधुः। १ डडर, मोटा आदमी, मोटामा। २ धूर्त, बदमाश, ठग। ३ क्षेत्र, फोकना। ४ वन, जंगल। ५ श्वक, राम. गुलाम।

डिडिि—वम्बई प्रदेशके प्रस्तर्गत सिन्धु प्रदेशमें खैरपुर राज्यका एक दुर्ग। यह अक्षा० २६° ५२' उ० और देशा० ६८° ४०' पू०में अवस्थित है। यहां जल बहुत मिलता है।

डिडििक्वि ( अं० पु० ) गुमचर भेंटिया, जामूस।

डिडिार ( हिं० वि० ) आश्वयाना, जिमें सुभाई दे।

डिडिोहरी ( हिं० स्त्री० ) एक जहनी पेड़के फलका बीज। इसको तारिमें पिरोकर छोटे छोटे लडकियोंकी पहनाने हैं। कहा जाता है कि इसमें उन्हें दूरमेंको दृष्टि नहीं लगती है।

डिडिोना ( हिं० पु० ) काजलका टीका। स्त्रियाँ लडकोंके मस्तक पर नजरमें बचानेके लिये वह लगा देती हैं।

डिडिका ( अं० स्त्री० ) यौवनकालजात रोगभेद, सुडौंसा।

“यौवने दिडिकास्तेव विशेषाच्छेदं हितं।” ( सुश्रु० )

इस रोगमें वमन विशेष उपकारो है। धन्या, वच, लोभ और कुछ अथवा रोध, वध, मन्धव और मर्दप एकत्र करके प्रलेप देनेसे यह रोग आरोग्य होता है।

दिर्घ ( वि० पु० ) अक्षरान्तं कर्तव्यत्वात् एक प्रकारका धान।

दिहवा ( वि० पु० ) एक प्रकारका धान जो अक्षरान्तं तैयार होता है।

दिह्विमा स० पु० ) प्रकृत्यो कोका पत्नी। अक्षरान्तं।

दिह्विम ( स० पु० ) दिह्वीति शब्द माति मा ह। माधु-  
भेद पाथीन नामका एक वाना, दिह्विमिने, इमड  
गिया। १ लक्ष्मणपत्न्युत्तर।

दिह्विमिद्वयोर्ध ( स० पु० ) दिह्विपुराधीन तीर्थ विधेय।

दिह्विर ( स० पु० ) दिह्विर इयो० साह। १ समुद्र  
किन। २ पानीका भाग।

दिह्विरमोदक ( स० स्त्री० ) दिह्विर इव मोदक मोदि  
पुन। १ शम्भुन, माकर। २ मङ्गलन।

दिह्विर्य ( स० पु० ) दिह्विर्य इयो० साह। दिह्विर्य  
इह टिङ या टिङयो नामको तरकारो। इसका शुभ-  
द्विदशरक भेदक और विपत्तिसंशान्तक मोतन  
नामक एक भूदक और अमरीनायक है। (आयुर्वेद)

दितिका ( स० स्त्री० ) बाजरीग।

दिव्य ( स० पु० ) १ आदमय जलो काठका बना बाजी।

"दिव्य बाजरीग इत्येव शब्दस्य अर्थः" (उपनिषद्)  
२ एक प्रकारका मोदक म प्राग्व्यविधेय। ३ विद्येय  
नक्षत्रस्य सुवय।

"दिव्ये सुवा विद्वान् सुमर, विद्वेदः ॥  
दिव्ये सुवा विद्वान् सुमर, विद्वेदः ॥"  
( ब्रह्मसूत्रा० टीका )

दिव्यमय सुवा, विद्वान् सुमर, विद्वेदमय और सर्व  
शास्त्रविद्येय विद्वान् सुवयको दिव्य कहते हैं।

दिव्यो ( स० पु० ) सुवकारो महायक नायक।

दिव्यजित ( स० पु० ) चरोहर, अमानन, तद्वकोल।

दिव्यद्विपट्ट ( स० पु० ) विभाग, सुवकमा मरिजा।

दिव्यो ( स० स्त्री० ) माधुर्य, सुदाम, अशीर।

दिव्योमा ( स० पु० ) विद्यामन्त्रविनी योष्यताका प्रसाध  
पत्र समद।

दिव्यमय—१ पाशाम्बे पत्तगत नखिमपुर जिलेका  
एक उपविभाग। यह अक्षा० २० ० से २०  
२२ ० और देशा० ८६ २० से ८६ २ ० पू० में

अवस्थित है। भूपरिमाण ३२५८ वर्ग मील है। यह उप  
विभाग अक्षयुक्त नदीके दोनो किनारे बना हुआ है और  
इसके तीन ओर पहाड़ हैं। लोकसंख्या लगभग २८५२-  
०२ है। इसमें १ शहर और ८०० ग्राम पंचायत हैं।

२ यह उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २०  
२८ ० और देशा० ८६ ३२ पू० दिक्क नदीके बायें  
किनारे अवस्थित है। इसके चारों ओर पहाड़ हैं जिनका  
उच्च श्रेणी यथा है। यहां कतना साको पत्ताज नदी  
उत्पत्ता है कि लोग यथो तरह सुकर कर मछि। शहरमें  
एक कारागार मिर्जा अस्पताल शिडिकन वृत्तन और  
एक हाई स्कूल है। १८०० ई० में यहां म्युनिसिपैलिटी  
भी स्थापित हो गई है।

दिव्या ( वि० स्त्री० ) छोटा समुद्र, छोटा दिव्या।

दिव्या टाँकरो ( वि० स्त्री० ) कुम्होका एक पेश। यह पेश  
उस समय दिव्या जाता है जब विपयो कमर पर होता है  
और उसका दृक्ता हाथ कमरमें लिपटा होता है। इसमें  
विपयोको टाँकने काबसे छोड़का बायें हाथ कमरके  
पामने टकने काब तक लीपते हुए और बायें हाथसे  
कमरके पकड़ते हुए बायें पैरसे मोतगे टाँक मार कर  
गिराते हैं।

दिव्येचर ( स० पु० ) १ नक्षत्रोत्तराश्रय। २ मानको  
रपतनाके मङ्गलना रचना, कहते।

दिव्या ( वि० पु० ) १ छोटा समुद्र, दिव्या। २ एकगाड़ी  
का एक कमरा। ३ पनकोसे दृक्को बीमारो। यह  
बीमारो प्रायः छोटे छोटे बच्चोंको हुआ करता है।

द्विम ( स० पु० ) द्विम-क। इयत्काम्य रूप नाटकका  
एक भेद। इसमें माया, इन्द्रजाल, नुईएँ और जोष  
पादिका समावेश विधेय रूपसे होता है। यह रीतिरस-  
प्रधान होता है और इसमें चार पात्र होती हैं। सबसे  
प्रायक देवता, अम्बर्य यक, रच या मङ्गोरग होती हैं। इसमें  
मूर्तों तथा विद्याकाकी लोका दिखाई जाते हैं। शान्त,  
हास्य और शृङ्गार ये तीनोंरस इसमें वर्जनीय हैं। अन्य  
तीनों रस प्रदोष होना आवश्यक है। (काश्मि०-र०)  
नाटक देखो।

द्विमविनी ( वि० स्त्री० ) लक्ष्मीके बन्धन जानेका एक  
प्रकारका नाम, कुम्हो।

डिम्बरेज (अं० पु०) १ वह हर्जा जो धन्द्वागर्भे जहाजके ज्यादा ठहरनेमें लगता है। २ वह हर्जा जो स्टेशन पर आए हुए सालके अधिक दिन पड़े रहनेके कारण पानि-वाल्कीसे देना पटना है।

डिमाई (अं० स्त्री०) कागजकी एक माप जो १८ × २२ इंच होती है।

डिम्ब (सं० पु०) डिव-वज् । १ भय, डर । २ कलल, गर्भा-शयन रज और वीर्यको एक अवस्था । इसमें एक पतली भिन्नोसा बन जाती है और यह कललके वाद होती है । ३ कुपकुम फेफड़ा । ४ डमर, भयसे पनायन, भगडे । ५ भयध्वनि, हलचल । ६ अण्ड, अंडा । ७ प्रीक्षा, पिलही । ८ विप्रव, उपद्रव । ९ कोड़ेका छोटा वच्चा ।

डिम्बक (सं० पु०) डिम्बक देखो ।

डिम्बज (सं० पु०) डिम्बात् जायते डिम्ब-जन-ड । अण्डज, वन जिसकी उत्पत्ति अंडेसे हो ।

डिम्बाहव (सं० स्त्री०) डिम्बं भयध्वनियुक्तं आहवं, कर्मधा० । सामान्य युद्ध, ऐसी लड़ाई जिसमें राजा आदि सम्मिलित न हों ।

‘डिम्बाहवहतानात्र विद्युता पार्यवेन च ।’ (मनु ५।१५)

इस डिम्बाहवमें सरनेमें केवल एक दिनका अग्रीच होता है ।

डिम्बिका (सं० स्त्री०) डिम्ब-गुल्-टाप् । १ कामुकी, मद-माते स्त्री । २ जलविस्व, जलकी परछाई । ३ शोणाक वृक्ष, सोनापाठा ।

डिम्ब (सं० पु०) डिम्ब-अच् । १ गिण, बच्छा । २ मूर्ख ।

डिम्बक (सं० पु०) डिम्ब स्वार्थे कन् । १ बालक । २ शाल्वदेगाधिपति ब्रह्मदत्तका पुत्र । हरिवंशमें इस प्रकार लिखा है—

शाल्वनगरमें ब्रह्मदत्त नामके एक परम दयालु नरपति थे । उनकी परम रूपवती और असामान्यगुणशालिनी दो भार्याएँ थीं । ब्रह्मदत्तने पुत्रके लिए महिषीहयके साथ एकायचित्तसे दस वर्ष तक महादेवकी आराधना की ।

महादेवने इनकी आराधनासे प्रसन्न हो कर एक दिन रातकी स्वप्नमें दर्शन दिये और कहा—‘राजन् । तुम्हारी आराधनासे मुझे अत्यन्त प्रीति हुई है, अब तुम वर मागो । राजाने उत्तर दिया—‘भगवन् । दो रानियों-

के गर्भसे दो पुत्र उत्पन्न हों—यज्ञो मेरो प्रायना है ।’ भगवान् ‘तथास्तु’ कह कर अन्तर्हित हो गये और नर-पतिनी निद्रामग्न हो गई ।

कालक्रममें रानियोंके गर्भमें शरणाके प्रसादसे दो महा-वीर्य पुत्र उत्पन्न हुए । नृपतिने बड़े का नाम रज्जु हंस और कनिष्ठका डिम्बक ।

क्रमशः हंस और डिम्बकको तपस्या तो अभिनाया हुई । दोनों जिनसे अग्नि उत्पन्न हुए थे, उन्हीं गङ्गा-यो आराधनाके लिए डिम्बालयप्रस्थ पर जा कर तपस्या करने लगे । इनका सुख उद्देश्य था—वीर्य और अमृत-वनमें वे सर्व प्रधान हों ।

महादेव इन ही तपस्यामें मन्तुष्ट हो का वहाँ उप-स्थित हुए और उन्हींके वर मंगनेको तन्ना । दोनोंने कहा—‘भगवन् । यदि आप मन्तुष्ट हुए हों, तो हमें यह वर दीजिये कि, देवता, असुर रत्न, गन्धर्व और दानवोंमेंसे कोई भी हमें परास्त न कर सके । दूसरी प्रायना यह है कि, रुद्रास्त्रमसुष्टय हमें संग्रहीत कर सकें । अन्यान्य जितने अस्त्र और कवच आदि हैं, उन पर हमारा अधिकार हो और हम लोग जब युद्धयात्रा करें, तब दो महा-भूत हमारी सहायता करें ।’ महादेवने तथास्तु कह कर अज्ञीकार कर लिया तथा भूतप्रधान कुण्डोदर और विरूपाक्षको बुला कर कहा—‘वल्ल विरूपाक्ष और कुण्डोदर । तुम भूतोंमें चोट दो । जब ये दोनों वीर युद्धयात्रा करेंगे, तब तुम दोनों इनको सहायता करना ।’

इस तरहसे ये महादेवका प्रसाद पा कर देव-दानव आदिके अजेय हो गये ।

एक दिन हंस और डिम्बक घोड़े पर नवार सौ कर गिकार खेलने निकले । बहुशसे शृग, श्याम और सिंहीका मंहार कर वे चान्त हो गये । पिपासा दूर करनेके लिये वे एक सरोवरके किनारे पहुँचे, वहाँ पर उन्हींने सरोवरमें स्नान कर पद्मके शृगान और पत्र भोजन करके आन्ति दूर को । उस सरोवरके किनारे ब्राह्मणगण मध्याह्नकालोचित वेदगान कर रहे थे । उन्हींने उन ब्राह्मणोंसे कहा—‘आप लोग इस यज्ञको समाप्त करके हमारे आनयकी चलिसे, हमारे पिता राज-स्य यज्ञमें प्रवृत्त हुए हैं, हम दिग्विजयके लिये निकले हैं,

त्रिभुवनमें हम लोगों को पराजित कर सके। ऐसा घोर कोई भी नहीं है। हमने महादेवने समस्त पक्ष से मिले हैं। चाय लोभ निपट समझिये कि, कोई भी यज्ञ, हम दोनों को पराजित न कर सकेगा।”

सुनिमी ने उत्तर दिया—“रात्रन्। यदि विमा हो है, तो हम धन्य हो गिये। सजित चायने पानयको चलेनी बिन्दु धमो हम हमो स्थानमें रहते।” हमने बाद दोनों घोर मरोबरके उत्तर तोर पर गये, वहां गिबो के माब भगवान् दुर्वासा नाम करते थे। उनको ध्यानस्थ देख कर मोरदय विचारने लगे—“यह कृपाय पक्षधारी बनये छ महाभूत कोन है ? यह स्थानम जोड़ कर यह कोनसा पाचम पक्षम बिबा है ? यह स्थानम को तो धर्मिक घोर धर्मको में चो छ है, यह स्थान ही मयच्छ है यह स्थान ही मयच्छीको का जीवन घोर माता है। जो मूठ धर्म यह स्थानमको जोड़ कर पक्ष पाचम पक्ष करता है वह तो क्यात विहतलय घोर महाभूत है। हमारी समझने यह मयच्छ तपस्वी निक्र ध्यानके हलने लोमो को छोटा देता होगा। ये त्रिन तरहकी घोर मूठ बिबाधमि पाच्छम हैं, हमने मामूम होता है हम पर मयच्छयोग करना पड़ेगा। कोनसा मुकं हम दुर्मतियो का उपदेडा है, वह भी महा मामूम पड़ता। इस तरहकी बिना करनी हुए दोनों महासा लम पतोन्द्रिय दुर्वासाके धामने उपस्थित हो कर बोधभावसे कहने लगे—“ब्राह्मण। हम देख रहे हैं, तुम्हें विन्दुम बिताहितका धान लगे है। तुम यह क्या कार्य कर रहे हो ? तुमने जिसका पानय किया है वह कोनसा पाचम है ? तुमने यह स्थानमको जोड़ कर यह कोनसा पाचम पक्षम किया है ? क्या ही मामूम पड़ता है कि घोरतर दम्भ को इसका भूल कारण है। हमें मामूम होता है कि हम सबका माय करते, समको मयच्छम जानी। तुम कय नष्ट हुए हो, घोरो को भी नष्ट करने में प्रवृत्त हो, क्या कोई तुम पर धामन करने वाला नहीं है ? हम कहते हैं मानवान् हीको। यह सब जोड़ कर मीत्र को मर्षी बनो, पक्षयजना पनुष्ठान करो जिससे लगे प्राण कर सको, मार्गको मनुष्यके सिद्धे परम बुधाप्य है।”

दुर्वासाने इन बातोंको सुन इन पर ऐसी दृष्टि गिये थी कि, मानो दोनों से माय तज बना टिये। मानो त्रिनोक मय्य हो गये। उनही रोपायनेत्रमि खपतिहय को कहा—“तुम्हारा शोध को निपात हो, निपात हो तुम यहनि शोध को दूर की जायो, विलम्ब मत करो। हम समस्त खपतियो का दम्भ कर सकने हैं, बिन्दु हम यतिवमानमको हैं हम बिधीका संनिष्ट नहीं करनी मृतनाम मयवान् हो तुम लोमो को इसका पक्ष पक्षा रीं।” इतना कह कर वे बहबि प्रस्थान करनेको उद्यत हुए। यह देख कर दोनों घोरोने उनका हाथ पकड़ लिया घोर मूठद्विधे उनको कौपीन द्विध कर डाली। यह देख कर पक्ष्य यति सब भागमें लगे। धनन्तर व स घोर द्विधकने स्थानमें रित हो कर महाशोषसे मर्षिये के मिथ्य कमपत्तु, दाहमय हिदय, दृष्ट घोर पातममूठ को द्विध द्विध कर दिया। इस वद दुर्वासा पक्ष्यम पपमानित हो कर चौकपक्षे पास पड़ने घोर लमसे पपना सब धाम कह सुनाया। शोच्यने सब उपाय लुन कर कहा—“मीत्र ही हम इसका प्रतिविधान करेंगे।”

इसके बाद व स घोर द्विधकने राजसूयपक्षके निर चौकपक्षके पास दूत मका। चौकपक्षने इनके पक्षम पाइ लको देख कर शोध हो मुष्यर्प इतना भाङ्गान किया।

मार्गमें दोनों दक्षिण घोर सुभ हुआ। शोच्य व स व घाय घोर सात्विक द्विधकने माब घोरतर सुभ करने लगे। चौकपक्ष व सको मयच्छ दूर से गये। हम रयधे उत्तर पड़े घोर कातोयज्जदमं का कर चौकपक्षके माय घोरतर सुभ करने लगे। इवर द्विधक व स चौकपक्ष द्वारा मारा गया, यह सुन कर सुभ जोड़ दिया घोर यलुगर्भ प्रियमयूषक पपनी जिन्ना कस्याटन करके प्राणनाम किया। इस पक्षमद्वारा पापके द्विधक घोर नरक हो गये थे। (हरिवंश ११५।१२)

द्विधक ( स० लो० ) द्विध दम्भ पक्ष । मनुष्यके शुभा यम निष्पन्न करनेका पक्ष ।

द्विधक ( व० त्रि० ) त्रिसंकी उपपत्ति पक्षसे हो ।

द्विधा ( स० लो० ) द्विध-द्वय । पति मिथ्य, मोहका वधा ।

डिल (हिं० पु०) १ मीनी भूमिमें उगनेवाली एक प्रकारकी घास, मोया । २ जनका लच्छा ।

डिलिवरो ( अ० स्त्री० ) डाकाखानोंमें आई हुई चिट्ठियां, पारसली, मनीआर्डियोंका वितरण ।

डिल्ला (सं० पु०) १ इन्द्रविशिप, एक प्रकारका वर्णवृत्त । इसके प्रत्येक चरणमें १६ मात्राएँ और अन्तमें भगण होता है । २ एक वर्णवृत्तका नाम । इसके प्रत्येक चरणमें दो सगण होते हैं ।

डिल्ला हि० पु०) ककुस्य, वैलीके कंधे पर उठा हुआ कूबडा ।

डिसमिस ( अ० पु० ) १ च्युत, बराबान्त । २ खारिज ।

डिस्ट्रिब्यूट करना ( अ० क्रि० ) आपिखानोंमें कम्पोज किये हुए टाइपोंकी क्रमोंमें अपने स्थान पर रख देना ।

डिहरी (हिं० स्त्री०) १ ६००० गांठोंका एक मान । इसके अनुसार कालीनोंका दास लगाया जाता है । २ अनाज रखनेका कच्ची मट्टीका एक बड़ा बरतन ।

डोंग ( हिं० स्त्री० ) अभिमानकी बात, लक्ष्मी चौड़ी बात, अपना बढाईकी भूठी बात ।

डोंक ( हिं० स्त्री० ) मौतियाविन्द, जाला ।

डोंग—मध्यभारतमें राजपूतानेके अन्तर्गत भरतपुर राज्यका एक नगर । यह अक्षा २७ २८' ७" और देशा ७७ २०' पू० भरतपुरसे २० मील और मथुरासे २२ मीलकी दूरी पर अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः १५४०८ है । यहाँ एक दुर्ग है । यह नगर चारों ओर जलाभूमिसे घिरा है । इसलिये वर्षमें अधिकतर समयको शत्रुके लिये दुर्ग मर रहता है । अङ्गरेजोंके अधिकारमें आनेके पहले इसका दुर्ग अत्यन्त दुर्ग्य था । अब भी मथुरासे २४ मील पश्चिममें उसका भग्नावशेष विद्यमान है । उस दुर्गमें भगनराजप्रसाद आज भी देखा जाता है । इसकी गठन-प्रणाली अत्यन्त दृढ़ और सुन्दर है तथा इसके मन्थ प्राचाराटि मनोहर और सुष्ठु शिल्पकार्य युक्त चित्तोंसे चिह्नित है । यह नगर बहुत प्राचीन है । बहुतसे पुराणादिमें इसका उल्लेख है । १७७६ ई०में नजाफखाने यह नगर जाटोंसे जीता था । किन्तु उनकी शक्तिके बाद यह नगर पुनः भरतपुरके राजाके हाथ लगा । १८०४ ई०के ११ नवम्बरका जब अंगरेजोंसे सैनाने होलकरका अनुसरण कर

उमे पराम्त किया. तब उसकी बहुतसी सैनाने डोंगमें दुर्गमें आश्रय लिया था । जनरल फ्रेंजर (General Fraser) ने परिचालित अङ्गरेजोंसे सैनाने डोंगमें घेर लिया । एक मासमें अधिक घेरे जानेके बाद १८०४ ई०के २४ दिसम्बरको यहाँका दुर्ग और नगर अङ्गरेजोंके अधिकारमें आ गया । डोंग नगरका राजप्रसाद मौल्य और शिल्पने पुण्यके लिये विख्यात है । बुटनाने इने यहाँका दुर्ग बनाया था । भरतपुर दुर्ग अधिकृत होने पर डोंग का सुदृढ नगर-प्राचीर तोड़ डाला गया । भरतपुर देगो । डीठ ( हिं० स्त्री० ) १ दृष्टि, नजर । २ देखनेकी शक्ति । ३ ध्यान, सूझ ।

डोठमथ ( हिं० पु० ) १ इन्द्रजाल नजरबन्दी । २ इन्द्रजाल करनेवाला, जादूगर ।

डोतर ( सं० त्रि० ) डो-कृत्त, तत क्षरप् । अनुगामी, जो दूसरोंका जादोसे पीटा करता हो ।

डोन ( सं० स्त्री० ) डी भावे क । १ पत्तियोंकी गति, उड़ान, ऊपर नीचे आदि इसके २६ भेद किये गये हैं । यगपति देगो । २ आगम शास्त्र ।

"दामरे दमरे चीने श्रुं काली विलासके ।" ( उ उ ता १० )

डोनडोनक ( सं० स्त्री० ) डीनेन मह डोनकं । पत्तियोंकी गति । डोनावडोनक ( सं० स्त्री० ) डीनेन मह भवडोनक । पत्तियोंकी गति ।

डोमडोम ( हिं० पु० ) १ अङ्गार, छेँठ, ठसक । २ आडप्यार, धूमधाम ठाठवाट ।

डोल ( हिं० पु० ) १ शरीरका विस्तार, कद । २ शरीर, टेह । ३ व्यक्ति, प्राणी, मनुष्य ।

डोजा ( हिं० पु० ) पश्चिमोत्तर भारतमें मिलनेवाला एक प्रकारका नरकट ।

डाङ ( फा० पु० ) १ भावाटो, गाँव, बस्ती । २ भग्नावशेष, उजड़ें हुए गाँवका टोला, खुण्डहर । ३ ग्राम देवता ।

डाङदारो ( हिं० स्त्री० ) जतोदारोंका एक तरहका हक । इसमें वे अपनी जमाने बँच सकते हैं । खरोटार उनको गाँवका कोई अश देता है जिससे उनका निर्वाह हो ।

डुक ( हिं० पु० ) दुँसा, सुका ।

डुकिया ( हिं० स्त्री० ) डोकिया देगो ।

डुकियाना ( हिं० क्रि० ) डुँसा लगाना, सुका जमाना ।

डुग्गुमाना ( हि० कि० ) चमड़े की सड़ें हुवे प्रायःको लकड़ीके बजाना ।

डुग्गुनी ( हि० खी० ) एक प्रकारका बाजा, डोमी, सुन्धी ।

डम्पो ( हि० खी० ) टुपटुपी देगो ।

डुङ्गरी ( स० खी० ) लौकी, कद्दू ।

डडुका ( हि० पु० ) एक रोग जो प्रायः घानके पीछेमें हो दुपा करता है ।

डडु ( स० पु० ) हिसुक्त मर्ग, दो सुँडबाणा माँप ।

डुपुम ( स० पु० ) डुपु, मनुभातिना क । मर्षबिगीव, पानोमें रहनेवाला माँप । इसमें बहुत कम बिय होता है, किङ्का माँप, थोड़ा माँप । इसका संस्कृत पर्याय-राजिष्ठ, पुपुम, नागधत् और डुपु है ।

डुपुम ( सं० पु० ) डुपु रिति शब्द जाति ना क । पुत्र वैष्णव छोटा कडू । पयाय—कुश्लोक, शाकुनेय पित्रुष उपायोऽथै उद्ब्रानो, विशाखाय और मयहर ।

डुपु ( हि० पु० ) १ इतिभेद, एक प्रकारका इति । २ पश्चिम, पानोमें रहनेवाला एक पत्तो ।

डुई—इसका असली नाम वा प्राग्निष्ठ जोमेव डुई । भारतवर्षमें फरामीने-पश्चिममें प्रसिद्ध शासनकर्ता और धीमापति । ये फरामी इष्टरहित्य लक्ष्मणेके पत्यतम द्वीकरके सुत थे ।

योडा की लक्ष्मी डुईमें भारतोव फरामीकी पश्चिमके प्रधान महर पूदिपेरोकी मन्त्रिभामे प्रधान सदस्यका पद प्राप्त कर लिया । दस वर्ष इस पदपर कार्य करनेके उपान्त १०१० ई०में ये बन्दनगरको छोड़के पश्चात् निकुल हुए । इस कामको पक्षत दक्षताके नाय करनेसे शोभ हो ये लक्ष्मीके पश्चात् विष्णुसमाज में गये । १०४२ ई०में ये शासनकर्ता निकुल हो कर पूदिपेरो में ली गये । डुई पर एक फरामीको इष्ट रचित्य लक्ष्मीको वापिसपुत्रिके लिए पश्चात्तय चेट्टा करने पर कई दि पीर इसमें इन्हीं काकी सफलता हो पाई थी । किन्तु इस पदको पा कर उनका मन दूमरी तरफ बला गया । वे लक्ष्मीवत पतियव चत्वार्षी पीर चहारी, किन्तु पश्चात्तय प्रतिमामानो थे । पूदिपेरोके शासनकर्ता हो कर वे प्रायःपूर्वमें फरामीको

पश्चिम पीर फरामीकी प्रभाव पदमूक्त करनेके लिए बलवता करन सगे । उस समय इन दोनों कई समय इष्टिय पीर पोपन्दाको भो भो छोटी बन गई थी तथा वापिसपुत्रिके लिए भी वे लोग मूक्त चहुँ कई थे । डुईमें विचार कि वापिसपुत्रिके विषयमें इनके साथ प्रतियोगिता करने के लिये भो पयने उष्टिय हो ल्याये में परिणत न कर सकेगे । इसलिये वे उपान्तयत्तर अनुभवान् करने लगे । लक्ष्मी पयने पम्पत पुत्रि बन पीर नैपुष्पगुणके चहारे शोभ हो देवीय लोकोको रोति मोति जान को पीर देवीय राक्षोकी राक्षमोतिके पन्तपानमें प्रवेय कर मनम्बामना सिद्ध करनेके लिए उपाय निश्चय लिया ।

इस समय सुगलाम्बाव्यका धर्म पक्षधरामी की मया था । इन्हीं लक्ष्मीवत सुखेदारगण अपने अपने पक्षिक्रम प्रदेशोका लक्ष्मी भावसे शासन करते थे और लक्ष्मीवत ली सुखेदारके इष्टान्तका अनुकरण करते थे । मास्त्वमें उस समय सुगल साम्राज्यमें सर्वत्र बिनुडुका फल गई थी । सुख शासनकाल लक्ष्मी वलवान् सुखेदारके प्रायस में पीर सहायतासे पयनी स्वाधीनता प्रपाति करती थी । फरामीको मकरंर दुष्टि भी इस समय पयनी विर पोपित पागा पक्षवती करनेके लिए मवेष्ट हुए । सोमाव्यवय चम्बी सहायमें पीने इस विषयमें उनको यथेष्ट सहायता पहुँचाई । लक्ष्मी सहायतासे डुईने पयनी मनोरथ पूर्ण करनेका उद्यम पीर उत्तम सुवीय निश्चाना । उनको लक्ष्मी भारतवर्ष में हो बना लिया था यह भारतमें जो प्रतियोगिता पीर शिचित हुई थी । बहुतमो भारतोव माया मो थे जानतो थे, इष्टिय लक्ष्मी पयने लामो पीर पश्चिमविषयका मनोभाव प्रकाशन पीर परामय का पय सुनन कर दिया था । इस तरफसे पयनी महामि पोको सहायतासे डुईने फरामीकी राज्य पीर समता उष्टि करनेके उपायोको सुख साधन परिपुष्ट करने लगे ।

१०४४ ई०में यूरोपमें फरामीको पीर पक्षधरामे लक्ष्मीवत प्रवृत्तियत दुपा थाव हो इस क्षेत्रमें ली लोका लक्ष्मीवतमें सुभेद हो गई । लक्ष्मीवत फरामीको रथ पोतके पक्षधर हो कर भारतमें पाये । वे ली फरामीका



चमतावृद्धिके एकांस्तु पत्तंपाती थे ; उन्होंने सोचा था कि, डुप्लेके साथ काम-निर्वाहमें अवतरोण हो कर उद्देश्यको कार्यमें परिणत करेंगे। किन्तु पूँदिचेरो पहुँच कर वे निराश हो गये। पूँदिचेरो पहुँचने पर गवर्नर डुप्लेने उनकी अन्तःकरणसे अभ्यर्थना नहीं की। लावोर्डेनिके प्रति उनकी ईर्ष्या हुई है, इस बातके लक्षण पड़नेसे ही दिखाई देने लगे। डुप्ले आश्चर्य करने लगे कि, यदि उन पर कभी विपत्ति पड़ेगी, तो लावोर्डेनिके उनका स्थान अधिकार कर लेंगे। उन्होंने देखा कि, कुछ आदि उनको अधिकारसीमामें सङ्घटित नहीं होंगे, पञ्चान्तरमें लावोर्डेनिके अनुकूल परामर्श और सैन्य तथा अपने प्रयत्नों द्वारा सहायता करनेके लिए कर्तव्यपत्र उनको आदेश दिया है। लावोर्डेनिके चमतासे ये अत्यन्त ही परतन्त्र हो उठे और क्रमशः उनके साथ शत्रुताचरण करने लगे। इस शत्रुभावने ही लावोर्डेनिके और डुप्लेका सर्वनाश किया तथा प्रतिकूल कार्योंके कारण भारतसे फरासीसी चमता विलुप्त हुई।

कुछ भो हो, लावोर्डेनिके पूर्वसिद्धान्तानुसार १८ सितम्बरको मद्राजके दुर्ग पर चढ़ाई कर दी और २५ तारीखको दुर्ग अधिकार कर लिया। ४४ लाख रुपये देने पर ३ मास बाद फरासीसी सेना मद्राज परित्याग करेगी, इस नियम पर मद्राज दुर्गवासी अंग्रेजोंने लावोर्डेनिके पास आत्मसमर्पण किया। किन्तु डुप्लेने इस सन्धि पर विशेष आपत्ति की। उनका कहना था कि, "मद्राज हमारे शासित प्रदेशके अन्तर्भूक्त है, इस लिए एकमात्र हम ही उस विषयको मोर्मासा कर सकते हैं।" इसी समय आर्कटके नवाबने डुप्लेके पास एक इस आशयका पत्र भेजा कि—“हमारे राज्यमें रह कर हमारी बिना अनुमतिके फरासीसियोंको मद्राज पर आक्रमण करनेका कोई भी हक नहीं था।” डुप्लेने नवाबको उत्तर दिया कि, “उक्त नगर हमारे हस्तगत होते ही हम आपको लौटा देंगे।” इसके बाद डुप्लेने लावोर्डेनिके लिखा कि, “आप मद्राजके दुर्गमें स्थित व्यक्तियोंके साथ सन्धिके किसी नियम पर अपना मत न दें, क्योंकि उक्त विषय पूँदिचेरीके शासनकर्ताका ही विचार्य है। किन्तु इस पत्रके पढ़नेके पहले ही

दुर्ग लोटा देनेको बात एको ही गई थी। लावोर्डेनिके आत्मभर्यादाका ज्ञान यथेष्ट था, जिस नियमको उन्होंने स्वीकार किया था, उसको ताडना उन्होंने होन जनी-चित्त कार्य समझा। डुप्लेको नगर समर्पणके नियम स्थिर करनेको चमता है, इस बातको वे मान न सके, पञ्चान्तरमें उन्होंने डुप्लेको लिख भेजा कि, यद्यपि उनकी नितान्त दाम्भिकता और परम्परके कार्यको प्रतिकूलताके सिवा और कुछ नहीं है। इसमें डुप्ले को धान्य ही गये और लावोर्डेनिके कारागृह कर अपना प्रभुत्व प्रकट करनेको चेष्टा करने लगे। पूँदिचेरो गगर्गमें उन्होंने एक पदवन्त्र रचा, पूँदिचेरोके फरासीसी अधिवासियों द्वारा एक इस आशयका आदेशपत्र लिखवाया कि, 'अर्थ लो कर मद्राज नगर छोड़ देनेसे फरासीसियोंकी ज्ञान होनेको सम्भावना है।' लावोर्डेनिके भी अपना यह दृढ़सङ्कल्प दुर्गको जतनाया कि, हमारी भग्यतिर्गत अनुसार प्रत्येक कार्य न होनेसे हम मद्राज नहीं छोड़ेंगे। इधर डुप्ले अपने उद्देश्यको कार्यमें परिणत करनेके लिये जब तक भनोभाति प्रयत्न न हो सके, तब तक मद्राज जिनमें अंग्रेजोंके हाथ न सोंपा जाय, उनके लिए विविध उपायोंका अवलम्बन करने लगे। इस समय फ्रान्ससे और भी कई एक जहाज आ पहुँचे। डुप्ले और लावोर्डेनिके यदि मिल कर कार्य करती, तो वे अब तक अंग्रेजोंके समस्त स्थान अधिकृत कर सकते थे। अंग्रेजोंके सौभाग्यवश ही उस समय ये आपनो भगड़में फँस गये।

कुछ दिन बाद डुप्ले लावोर्डेनिके प्रस्तावानुसार कार्य करनेके लिए तैयार हुए। लावोर्डेनिके डुप्लेको बात पर विश्वास करके मद्राज परित्याग किया।

उधर आर्कटके नवाब आनवारउद्दीनने अब तक मद्राज अपने हाथमें न आते देख, १०,००० सेनाके साथ अपने पुत्र महाफजलखानेको बलपूर्वक उक्त नगर अधिकार करनेके लिए भेजा। डुप्लेने कूटनीतिका अवलम्बन कर उससे सन्धिका प्रस्ताव किया। सन्धिके प्रस्तावको ले कर डुप्लेके जो दो दूत गये थे, उनको महाफजलखाने कैद कर लिया। डुप्ले इस पर अत्यन्त असन्तुष्ट और क्रुद्ध हुए। रणवाय वज उठा। फरासीसियोंकी बन्दूकोंने

बहुतमी सुपकसेनाने प्राण खो दिये पयगिट सेना भी  
 इतनागः भाग गई। मन्दापञ्चमी पयगो सेनाको एकल  
 करके सेनापुर नामक स्थानमें गिरि स्वामित करकेका  
 हुकम दिया। इस स्थान पर भी मम्मूख घोर पयाव् दोनों  
 तरफसे फरासीको सेना दा रा पान्नाल घोर पराजित हो  
 कर भाग गये।

८ अंश तक एक घुचित कार्बमें प्रवृत्त हुए। उन्होंने  
 मद्राजके दिवयमें आनेहोनेके साथ खो हुई जिसे मो  
 प्रतिष्ठाका धामन नहीं किया। १०४६ ई०अ १० यको  
 बरको चको ने पहरको को घुचित किया कि ८५को  
 समस्त सम्पत्ति फरामीको गवर्नमें पक्षि पञ्चमिने शामिल  
 कर लो गई घोर से यातो बुद्धके कैदिया को तरह रकने  
 जाँडगी या पूर्णद्विगो मेज दिये जायँगी। इससे बाद  
 किमी किनेने माग कर सिप्टेम्बर दुर्गमें पापय किया।  
 तथा पयगिट मोमो को पकड़ कर पूर्णद्विगो मेज लिया  
 गया। माय को मद्राजके पहरज माननकर्ता कैद  
 किये गये।

पय कुर्गे प योको को लपकस-प्रदेशसे सम्पूर्ण क्रांति  
 दूरोमृत करनेके परिश्रमसे सिप्टेम्बर-दुर्गको जपगत  
 करनेको सिद्ध करने लगी। कुर्गेमें मद्राज परिहार  
 कर बर्हा पराडिस नामक एक सुबहारमे पहरामीको  
 शासनस्था निवृत्त किया। कुर्गेके पादेगानुगर डिमिड  
 दुर्ग पर पाकसय करनेके लिये १०० बुरोपोय सेनाके  
 साथ पराडिस पूर्णद्विगोको तरकवा रई से, मार्गमें  
 महापकसर्तनी १०० पयगोको घोर १०० पनातिक  
 सेना से कर लन पर पाकसय किया। कुर्गेमें बबर पारी  
 को बर्हा एक दुन सेना भेज दो। बबर जोर पराडिसको  
 निरापद पूर्णद्विगो से पाई। दिसम्बर मासमें बेरोके  
 पकोन सिप्टेम्बर-दुर्ग परिकार करनेके लिये कुछ  
 सेना पयसर हुई। ८ दिसम्बरको बड फोत्र दुर्गके  
 निरकटवर्ती किसी स्थानको परिक्रम कर बर्हा किया  
 कर रहीं थी कि, इतनेमें महापकसर्तनी घोर मकपद  
 पकोने महमा या कर लन पर पाकसय किया जिसने  
 फरामीकी फोत्र डर कर भाग गई। इस मासिक  
 सन्नाके साथ होनेके पाकसय पाकसयसे दुर्ग पय  
 चार करनेके लिए कुर्गेमें शुभ रीतिसे १०० सेना भेज

दी। किन्तु इन बार भी कुर्गेको पाया पयवतो न  
 हुई। कुर्गे इससे करी मो भोत वा इताय न हुए।  
 लको ने फिर विविध उपाय पयनमन किये। लनके  
 पादेगाने फरामीको सेना मद्राजके निरकटवर्ती नवाब  
 शामिल प्रदेशको कूटन लगे। लकोने यह पकड़ी  
 तरह सुपक लिया था—कि पहरको को मिलतासे  
 विविध कुछ लाभ नहीं—यह माहूस होती हो नवाब  
 पहरकोने फिर कुछ सम्भव न रखेंगे। बहुत  
 कोइ समयमें हो नवाबने साथ फरामीकीको सन्धि  
 हो गई। सिप्टेम्बर दुर्गमें पुनाङ्गन नवाब सेनाके  
 साथ महापकसर्तनी पूर्णद्विगोको भेजे गये। कुर्गेने  
 नवाब सुपको पति फरामीसे पयबर्तना ली। कुर्गे  
 फिर डिमिड दुर्ग परिकार करनेको लपना करने लगे।  
 १०४० ई०को १८वें फरवरीको नवाबको सेना तथा  
 फरामीको सेनाके पयसय हो कर पराडिस पयसर  
 हुए। सोमास्य बगतः इस समय पहरजके  
 महावतय बहरामने एक रच्योत था पयु था।  
 फरामीको सेनाका चार निष्पन्न हुआ, बड मोट पाई।  
 १०४८ ई०में सेना पयबर्तन सुनो गई कि, कुर्गे  
 मोत को डिमिड दुर्ग पर पुन पाकसय करने।  
 इस समय पयके गिरिमें एक विधम पयुधम प्रका  
 दित हुआ। कुर्गे समावमिड धरताने साथ पयके  
 पयोप देवीय सेनाका फरामीको पय पयनमन करने  
 को प्रस्तावित कर रई थे। पयके गर्वनर इन दिवयमें  
 पयचित सतके हुए। कुर्गेने बार बार पराजित होती  
 हुए भी पुन दुर्ग पाकसय करनेके लिए सेना भेजे  
 किन्तु इस बार भी इतनाय न हो सके। १८ जुलाईको  
 पहरामीके कुछ बडो नवाबोंने पा कर सिप्टेम्बरदुर्ग  
 के पास लंगड डाल दिये। पयकेके इनको उचि होती  
 देख नवाब पुन पयकेके मिन गये। पय पयकेके  
 साथही हो कर मिनिन सेना द्वारा पूर्णद्विगो पर लिया।  
 किन्तु कुछ दिन बाद पयकेकी सेना पयरोध छोड़ कर  
 डिमिड-दुर्गमें चको गई। पयकेकी पराजयसे कुर्गे  
 चारो तरक फरामीको प्रभाव चोदित करने लगे। लकीने  
 देवीय राजन्यवर्गको, यहाँ तक कि सुगन मन्नाडके पास  
 भी पयकेकी भीरता निम्न भेकी। इतने पर भी से

जान्त न हुए। सहसा मद्राज हस्तस्थित न हो, इस बातको भी वे पूरे कोशिश करने लगे। किन्तु इसी समय यूरोपमें अंग्रेज और फरामोसियोंको सन्धि होने के कारण यश भी सन्धि हो गई। अंग्रेज मद्राजको पुनः प्राप्त हुए।

युद्धके समय डुप्लेने देखा कि, अति अल्पसंख्यक युरोपीय सेना बहुसंख्यक देशीय सेनाको सहजमें ही पराजित कर सकती है। इससे उनको राज्याधिकारको खालसा और भी बढ गई। देशीय राजा उस समय परस्पर शत्रुताचरणमें व्यापृत थे। उनमेंसे एकका पक्ष ले कर डुप्ले फरामोसो जमनाको विस्तृत करनेमें प्रवृत्त हुए। १७४१ ई०में चान्दसाहबने त्रिचिनपल्लीकी विधवारानीको धोखेमें डाल कर उक्त नगर अधिकार कर लिया था। रघुजी भौसलेने चान्दसाहबको उपयुक्त टण्डू टेनेके लिए त्रिचिनपल्लीको घेर लिया। चान्दसाहबने अपने स्त्री पुर्वीको गुप्तभाषमें डुप्लेके आश्रयमें रख कर रघुजीके सामने आत्मसमर्पण किया, रघुजीने उनको बँट करके सतारा भेज दिया। पहले कड़ा जा चुका है कि, आर्कटके नवाब आनवारउद्दीन् स्वायंमिदिके लिए कभी अंग्रेजों और कभी फरामोसियोंका पक्ष अवलम्बन कर रहे थे। डुप्ले पक्ष उपका बटला लेनेका मौका ढूँढने लगे। मौका भी हाथ आया। जब चान्दसाहबकी स्त्री पुँटोचेरीमें थीं, तब डुप्लेका स्त्रीने उनसे गाढी मित्रता जोड़ ली थी। वे डुप्लेको स्त्रीसे अपने स्वामोकी मुक्तिके प्रार्थना करने लगीं, डुप्लेने अपने स्त्रीसे इस बातको सुन कर सोचा कि, चान्दसाहब आनवारके प्रतिद्वन्द्वी हैं और प्रजाभाषाण आनवारको अपेक्षा चान्दसाहबके अधिक वशमें हैं। चान्दसाहबका कुटकारा होनेसे सभी उनको नवाब रूपमें मानने लगेगे और फरामोसो सेनाको सहायतासे वे सिंहासन अधिकार कर सकेंगे। साथ ही फरामोसियोंका बल भी बढ जायगा। ऐसी कल्पना करके उन्होंने चान्दसाहबकी स्त्रीके द्वारा गुप्तरोतिसे ७ लाख रुपये रघुजीके पास भिजवा दिये; चान्दसाहब मुक्त हो कर पुँटोचेरीके तरफ चल दिये। इसी समय निजाम उल-मुल्कको मृत्यु होनेसे उनके सिंहासनको ले कर अल्पसंख्यक गडबडो होने लगी। उनके दौहित्र मजफरजङ्ग

सिंहासनका दावा करते थे। उनकी राज्य मिलनेको कुछ भी सम्भावना न थी। किन्तु चान्दसाहबने आ कर उनका साथ दिया, और फरामोसो सेना उनका पठपोषण करती है यह बात भी उनमें बाहो। इसी मजफरकी माहम नृश्रा, वे चान्दसाहबके साथ मिल कर आनवारके साथ युद्ध करने लगे। युद्धमें आनवार निरत हुए और उनके पुत्र महाफज कँट कर लिए गये। मजफर और चान्दसाहबने यथाक्रमसे सुवेदार और नवाबकी उपाधि ग्रहण कर आर्कटमें प्रवेश किया। इससे बाद वे पुँटोचेरी पहुँचे, डुप्लेने अपने अभिमन्त्रि पूर्ण करनेके अभिप्रायमें विग्रेष यत्नके साथ उनकी अभ्यर्थना की। चान्दसाहबने पुँटोचेरीके निकटवर्ती २२ गाँव फरामोसियोंको दिये। घोडे ही दिन बाद डुप्लेने चान्दसाहब और मजफरको त्रिचिनपल्ली अवरोध करनेका परामर्श दिया। इस स्थानमें आनवारके पुत्र महम्मदअचोने आश्रय लिया था। चान्दसाहब त्रिचिनपलो न जा कर पहले तञ्जौर चले गये। इस मौके पर नाजिरजङ्ग (मजफरके प्रतिद्वन्द्वी) ने आ कर आर्कट अधिकार कर लिया। चान्दसाहब और मजफरकी इस बात ही खबर भी न थी; डुप्लेने ही पहले उनको नाजिरजङ्गके आक्रमणका संवाद दिया। वे पुँटोचेरीको तरफ अग्रसर हुए।

फरामोसियोंको चान्दसाहब और मजफरका पक्ष अवलम्बन करते देख अंग्रेजोंने भी महम्मदअचोने और नाजिरजङ्गका पक्ष अवलम्बन करना शुरू कर दिया। नाजिरजङ्गको बहुसंख्यक सेनाके साथ मजफर पर आक्रमण करनेके लिए आते देख डुप्लेने मजफर और चान्दको सहायताके लिए कुछ फरामोसो सेना भेजी। किन्तु डुप्लेके साथ मैत्रिक विभागके कर्मचारियोंका उत्तना सहाय न था। किसी अपकाश्य कारणसे फरामोसो सेना युद्धक्षेत्रसे चले दो। मजफरके आत्मसमर्पण करने पर नाजिरजङ्गने उनकी शङ्कनावह किया, चान्दसाहबने साहसके साथ युद्ध करते करते अन्त्यत जा कर आश्रय लिया।

फरामोसो सेनाकी विना युद्ध किये युद्धक्षेत्र छोड़ कर चले आनेसे डुप्ले भविष्यत्में विपत्तिको भागदा करने लगे। वे कौशलसे अपने प्रभावको अक्षुण्ण रखनेके

लिए पत्रवाङ् दृष्ट। पर निरुद्ध करके कुञ्जरी बना  
कि, नाजिरजङ्गको सेना बिद्रोह माबसे शून्य नहीं है।  
कुञ्जरी नाजिरजङ्गके साथ सन्धि करेगी। ऐसा प्रस्ताव  
कर कुञ्जरी उनको पास बुद्ध फूतो को भेजा। कुञ्जरी  
उन फूतीने नाजिरजङ्गको सेना बिद्रोही नो जाय उस  
विषयमें सिद्धा करनेके लिए मो लक्ष दिया। फूत भी  
तटनुद्वय कार्य करके बीट पाये।

नाजिरजङ्गने शाहशये फरासीमियोंको एक वाणिज्य  
हुटी कूट की गई थी। इसका बटना सेमिसे लिए कुञ्जरीने  
१७१० ई०में मसकियतन परिवार करनेके लिए बल  
पवने एक एक सेना भेज दी। उनमें बह आन परिव  
हल कर लिया। मङ्गल्य पानी हर हर प्राग गये। इस  
समय फरासीसियोंके प्रसिद्ध भिनापति सूनिने चान्दसाहबके  
साथ मिल कर गिन्धो-सुगुं हस्तगत कर लिया।

नाजिरजङ्गने फरासीमियोंको छतकार्य के प्रबल भीत  
को कर सन्धि करनेके लिए पुँदिरोको दो फूत भेज  
दिये। कुञ्जरीने निम्नलिखित प्रस्तावानुसार सन्धि करणा  
स कर किया—'मसकियतन सुब किसे जाय, चान्दसाहब  
को च्चांटको नबाब उपाधि मिले तथा मसकियतन  
पौर लक्षे पशोम प्रदेशसमूह फरासीमियोंके हिते जाय।'  
नाजिरजङ्गने लक्ष निबन्धोंमें पावह होना लोकार नहीं  
किया। वे सुबसे लिये तैयार हुए। कुञ्जरीने लक्ष पवान  
सर्वांगिने साथ को पड़पल रचा वा नाजिरजङ्गको समसे  
करा मो वाकिफ न है। कुञ्जरीने टोचे ( Touche )को  
नाजिरजङ्गके साथ सुब करनेके लिए पादेय दिया। कुञ्जरी  
फरासीमी सेनाने नित्रय पाई, नाजिरजङ्ग सार यसे पौर  
मसकियतनको सूरीदारको उपाधि मिली। मसकियतन  
ने मसकियतन पौर लक्षे पशोम प्रदेश-समूह फरासी  
मियोंको तथा २० लाख रुपये कुञ्जरीको दिये। इस समय  
पौर एक निवृत्ति का लड़ी हुई। मसकियतन कुञ्जरी  
कहा—'नाजिरजङ्गके पशोम जो १ मदीर पायके साथ  
पड़पलमें लिय है, वे दावा करते हैं कि उनको उनको  
पवित्रत प्रदेशके लिए कर माफ कर दिया जाय पौर  
नाजिरजङ्गका धन उनमें बाँट दिया जाय। कुञ्जरीने इस  
विषयमें मध्यक हो कर पनेक सादानुवादके बाद एक  
सन्धि कर दी।

इसके बाद कुञ्जरीने पयनेको छप्या गठोसे दलि  
बल भूभागका सुगम प्रतिनिधि बननाया। उनसे  
पादेयानुसार लक्ष प्रदेशका समस्त कर कुञ्जरी करिये  
सुबसे मसकियतन के पास भेजा जाता था तथा पुँदिरोमें  
को सिद्धे बनने से, लक्षसे मिया चन्दा सिद्धे बर्नट प्रदेश  
में नहीं चलते थे। १७११ ई०में मसकियतनके निवृत्त  
होने पर कुञ्जरी मनावतजङ्गको सूरीदार मान कर उनका  
पक्ष समर्थन करने लगी। इस समय मसकियतनको विचिन  
पलोमें ठहरे हुए थे। कुञ्जरीने फरासीमी सेनाके करिये  
उनको हटानेके लिए चान्दसाहबकी परामर्श दिया।  
पशेकीने पसी तथा सिधोका मो पक्ष नहीं लिया था।  
फरासीसियोंके प्रभावने ईर्ष्यान्वित हो कर उन भोगीने  
पक्षी मङ्गल्यतथा पक्ष पक्ष किया। पक्षी कुञ्जरीको सेना  
पाय समो कुञ्जरी पराजित होने लगी। चान्दसाहब  
पाकिर जानने मो जाय को बैठी। चान्दसाहबकी मध्यके  
बाद कुञ्जरीने खय नवाबको उपाधि प्रदान की। कुछ  
दिन बाद वे राजासाहबकी नबाबकी तरफ सफाज  
करने लगी। किन्तु सुरतत्रापक्षीने २००००० रुपये दे  
कर गोप हो कुञ्जरीने नवाबकी उपाधि ले ली। १७१२  
ई०में पशेकी सेनाने फरासीसियोंका गिन्धो-सुगुं प्राय  
मग किया परन्तु पराजित हो कर लसे भागना पड़ा।  
इससे कुञ्जरीके हृदयमें यथेष्ट पाशाका महार हुआ पर  
बाजार नामक जलमें फरासीसीसेनासे विरोधकपने पा  
जित होनेसे कुञ्जरीका पाशाकता लूट गई। कुछ मो हो  
कुञ्जरी विद्रुल हो निवृत्तारित नहीं हुए। लक्षीने देखा कि,  
यह हृद सङ्गठने लक्षी गिन्धोया इसलिये वे सेना म पक्ष  
करने लगी। १७१३ ई०में कुञ्जरीके दुर्भेद्य कौरागसे महा  
राष्ट्र पौर मङ्गल्यरकी सेनामें पशेकीका एक छोड़ कर  
फरासीसियोंका साथ दिया। पुँदिरोमें रचवाप बज  
लक्ष। इस कुञ्जरी लक्षी फरासीसियों पौर लक्षी पशेकी  
को जय होने लगी। १७१४ ई० तक इसी तरफ सुब  
होता रहा।

इस तरफसे कुञ्जरीने दापिबालमें फरासीसि  
योंका प्रभाव पौर परिवार बढ़ता तो जाता था, पर  
परिष्क पक्षेयके कारण कम्पनीको विरोध कुछ नाम  
नहीं हुआ। इसलिये उपरनासे कुञ्जरीको सुब बन्द करनेके

लिए पुनः पुनः आदेश दे रहे थे। यद्यपि डुम्रेका अभि-  
प्राय दूसरा था, तथापि ऊपरवालीके आदेशसे डर कर  
१७५४ ई०के प्रारम्भमें ही उन्होंने मद्राजकी सन्धिका  
पस्ताव भेज दिया। मद्राज-गवर्मेण्टने भी सन्धिके  
पस्तावका अनुमोदन करके नियमादि स्थिर करनेके  
लिए प्रतिनिधि भेज दिया। दोनों पक्षके प्रतिनिधियोंने  
कुछ दिन वादानुवाद करके अपने अपने स्थानको  
प्रस्थान किया।

फरासोसो इष्ट इण्डिया कम्पनोकी डिरेक्टरगण  
डुम्रेसे अत्यन्त असन्तुष्ट थे। वे शान्ति चाहते थे उन  
लोगोंने डुम्रेको अनुपयुक्त समझ कर मि० गडेहू (M  
Godeheu)को पुँदिचेरोका गवर्नर नियुक्त करके  
भेज दिया। गडेहूने १७५४ ई०की २री अगस्तकी  
भारतमें आ कर डुम्रेसे शासनभार ग्रहण किया।  
इसके बाद दो महीने तक डुम्रे पुँदिचेरी नगरमें रहे  
थे। दो महीने तक उन्होंने अपनेकी कर्माटका नवाब  
समझ कर वहाँ ठाट-बाटमे उमदा उमदा पोशाक पहन  
कर भ्रमण किया था।

कुछ भी हो, उन्होंने प्राप्त जा कर यथोपयुक्त  
सम्मान नहीं पाया। इस देशमें रह कर फरासोसो  
राज्यके विस्तारके लिए उन्होंने अपनी निजी-सम्पत्ति  
भी खर्च की थी। फरासोसो गवर्मेण्टने उनकी कुछ भी  
वृत्ति नहीं दी, मिके उनके महाजनोंके हाथसे रिहाई-  
नामा (Letter of protection) का प्रचार करा कर  
उनको रजा की। इन्होंने अपने रुपये वसूल करनेके  
लिए न्यायालयका आश्रय लिया। किन्तु उसको फौसलेसे  
पहले ही इनका देहान्त हो गया।

डुम्रे अत्यन्त प्रतिभाशालो सुदक्ष राजनीतिकुशल  
शासनकर्ता थे। ये अत्यन्त उच्चाकीर्णो, अहङ्कारी और  
पराक्रमप्रिय व्यक्ति थे। चारित्रकी वास्तविक उन्नति पर  
इनका उतना ध्यान नहीं था। इन्होंने फरासोसो राज्य  
विस्तारके लिए सध तरहके उपायोंका अवलम्बन किया  
था। भारतमें फरासोसो अधिकारके साथ डुम्रेके  
नामका चिर-सम्बन्ध है।

डुवकी (हि० स्त्री०) १ डुब्बो, गोता, बुडकी। २ एक  
प्रकारकी विना तलो बरी। यह पीठोको बनो होती  
है। ३ एक प्रकारका बटेर।

डुववाना (हि० क्ति०) डुवानीका काम किमी दूरमें  
कराना।

डुवाना (हि० क्ति०) १ मग्न करना, गोता देना,  
बोरना। २ नष्ट करना, सत्यानाश करना, श्रवाद  
करना।

डुवाव (हि० पु०) अथाह, डूबनेपरको गहराई।

डुवांवा (हि० क्ति०) टभोना देना।

डुब्बी (हि० स्त्री०) डुवकी देना।

डुभकौरी (हि० स्त्री०) एक प्रकारकी विना तलो बरी।  
यह पीठोको बनो होती है आर इसीके भोलमें पकाई  
तथा डुवा कर रखा जाता है।

डुमई (हि० स्त्री०) कठारमें झोनेवाला एक प्रकारका  
चावल।

डुमरावें—१ शाहावाद जिलेके अन्तर्गत एक जमींदारी।  
प्रायः ७५८ वर्गमोल क्षेत्रफल ली कर यह संगठित  
हुआ है।

यहां डुमरावेंके राजवंश रहते है। वे पंमार नामक  
राजपूत कुलोद्भव हैं। उनके पूर्वपुरुष उज्जयिनी नगरमें  
वास करते थे, वहाँसे आ कर वे मध्यभारतमें रहने  
लगे। महाराज सिन्धोलसिंहने सबसे पहले विहारमें  
वास किया। वे अपने पुत्र भोजसिंहको राज्य-शासन  
का भार सौंप गये। भोजसिंहके नामानुसार उनका  
अधिकृत जनदत्त भोजपुर नामसे विख्यात हुआ। काल-  
चक्रसे यह राजवंश कई एक शाखा प्रशाखायोंमें विभक्त  
हो गया। उनमेंसे प्रधान वंश अपने पूर्वपुरुषको राज-  
धानी डुमरावेंमें रहने लगे। एक शाखा बकुर और  
दूसरी शाखा जगदीशपुरमें जा रहने लगीं।

इसी वंशमें राजा नारायणमल्ल उत्पन्न हुए। उन्होंने  
१६०५ ई०में सम्राट् जहाङ्गोरसे राजाकी उपाधि प्राप्त  
की। उनके बाद यथाक्रम बोरवरसाहि, रुद्रप्रतापसाहि,  
मात्वातासाहि, डोविलसाहि, छत्रधारीसिंह और विक्रम-  
जित् सिंह राजशासन कर सुगल बादशाहोंके प्रीति-  
भाजन हुए थे। आलमगौर, फरुखशियर, महम्मदशाह  
और शाहआलमसे उक्त राजाओंने बहुतसे जगौर  
पाई थी।

१७६४ ई०के अक्टूबर मासमें अयोध्याके नवाब सुजा

उद्देश्येणैव मास च मरिचिका जो बृह जिह्वा वा उत्तमं  
जयप्रकाशसि जने चन्द्रिका-मिमांसायश्च ईश्वर मनरोकी  
यस्यै सहायता दी की ।

इसो जलतप्तानि १८१५ ई०के १० मासको बड़े लाट  
मासिस पाँच छिद्रि मने जयप्रकाशसि इसो 'महाराजा  
बहादुर'को उपाधि दी ।

जयप्रकाशसि बाद उनके जोते कामजीप्रसादसि जने  
बहुत कम अवसामि राज्य प्राप्त किया । किन्तु चौके  
टिन बाद ही उनको राज्य जो जानिमे महेन्द्रवर्मासि  
बहादुर १८३३ ई०में हुंमारको राज सि शासन पर अभि-  
षिक्त हुए । इन्हीने नोपास-बुध तथा निपाही विद्वीहके  
समय इन्द्रिय मन्मथकी यथै सहायता को सो । कम  
दोमपुरमें इनके प्राति हुंमारसि इके विद्रोहो होने पर  
महाराज महेन्द्रवर्मासि बोके जो समयमें उके पराजित  
पौर शासित किया था । इन्ही कारकोसि १८०२ ई०में  
इन्द्रिय मन्मथने उके 'महाराज' तथा K. C. S I  
को उपाधि दी । उनके प्रीतिजो १८०३ ई०में राजकुमार  
राधाप्रसाद सि इकी भी 'राजा'को उपाधि मिली थी ।

महाराज राधाप्रसादके यज्ञने सो हुंमारको राज्य  
उच गिषर पर पहुँच गया था । १८८८ ई०में के के  
सो पाट. ४ (K C I E.) बनाये गये थे । इनका  
दिनांक १८८४ ई०में हुआ । इनके मरण पर इनकी श्री  
महाराजी बेनीप्रसादकुँवरी उत्तराधिकारिणी हुई ।  
इन्के इन्द्रिय मन्मथको चार छात्रके पत्रिका रूपसे करमें  
दिये पढ़ते हैं ।

२ याथावाद त्रिभुके पत्तमर्त बकर उपनिवायका  
एक अक्षर । यह पचा० २३ १३' ७० पौर देया० ८३  
८' पू० पर बनकलके ३०० सोमको घूरी पर प्रबलित  
है । भीकल प्या प्राया १०२३६ है । यहाँ हुंमारके  
राजाका राजप्रसाद पौर देया है ।

हुंमार—ब्रह्मरथ बर्चित मोजटोयके पत्तमर्त सिहायमके  
इन्द्रियमायमें प्रबलित एक नगर । (यह बलमान  
हुंमारकेके केला प्रमुमान किया जाता है ।) मन्थ  
ब्रह्मरथके मनेये यहाँ भूमिहार जातिके प्रबल परा  
ज्वाल उदयवन्तसि इका राज्य था । उनकेके न सोय  
निष्कमलि जने यहाँ एक पुन निमाच किया था ।

( न० म० २१ न० )

हुंमुर ( न० पु० ) एक प्रकारका हथ पौर समका फल,  
गूर । यह हथ मारतवर्षमें तथा ब्रह्मदेयमें सब जय  
पाया जाता है । हिमालयके निम्नखानेसे ले कर थामाम-  
के पर्वतसमूह तक यह पिकु समुद्रतटसे ३००० फुटको  
ऊँचाई पर शयति देया गया है ।

मारतवर्षमें कई तरहके गूर होते हैं । यद्यपि  
उनके पिकु तथा अन्न एकसे दोष पड़ते, तो भी आकारमें  
बहुत प्रमेद है । बिसे बिपी जातिके गूरके पत्ते  
पौर फल बहुत बड़े होते तथा पिकु मत्ताकी तरह होता  
है । फिर कितो जातिका पिकु पोपल पिकुके बँसा  
सुघोर्ष पौर मायाप्रगाशासिगिह होता है । किन्तु  
इसका पिकु जितना ही बड़ा होता जाता है उतना ही  
रसके पत्ते पौर फल छोटे होते जाति हैं ।

गूरमें खून नहीं समता । एकको दया सोयने  
गुच्छाका गुच्छा फल निष्कमला है । इसके चढ़ये तथा  
गाभा प्रयाणाके मन्थिखानेसे ही पचिसासि फल  
निष्कमला है । इस देयमें सोर्गाका पिसा विद्यास है कि  
गूरका फल देखनेसे राजा होता है । यह पृथिये तो  
गूरका फल देखनेमें धाता ही नहीं ।

उत्तिद्रुतस्यविदु पछित लोग गूरको पोपल, बरमद  
पाकर पादि इचोके पत्तमर्त मानते हैं । समोकी पिकु  
काक पादि काटनेसे दूधकी तरह कर्षेद एक प्रकारका  
गोंद निष्कमला है । इस गोंदसे रबरके बीसा फदाई  
उत्पन्न होता है । गूरका गोंद कभी कभी घावके उपर  
मरहमको तरह व्यवहृत होता है ।

नीचे चौके प्रकारके विभिन्न जातीके गूरका विषय  
दिया जाता है ।

यक्ष-हुंमुर ( Ficus glomerata )—साधारणतः  
होमकार्यमें इसकी शाखा काम पातो है । इसो कारण  
इसका नाम यक्ष हुंमुर पड़ा है । हिमालय प्रदेश, राज  
पूताना, मध्यभारत बङ्गा, दार्जिलिग, पासाय, ब्रह्म  
देय भादि स्थानोंमें यह पिकु पाया जाता है । जन्ममें  
इसके दूध पचात् गोंदसे एक प्रकारका रबर बनता है ।

इस हथके कसो कसो काक उत्पन्न होता है । यह  
लिया इससे दूधसे पसी पत्रकनेके बिसे मोद प्रसुत करपा  
है ।

लोहरडागुममें यज्ञ डु,स्वरको आलकी सिभा कर एक प्रकारका काला रंग तैयार होता है जिससे कपड़ा रंगाया जाता है। यज्ञ डु,स्वरके पत्ते, मूल छाल और फल सबके सब उपयोग वैद्योमें औषधरूपमें व्यवहृत होते हैं। वे इसकी छालकी विरचक औषध रूपमें तथा घाव आदि घोरके काममें लाते हैं। वाघ तथा बिलाव आदिके काटने पर भी यह विषघ्न माना गया है।

इसका मूलतन्तु आमाशय रोगमें विशेष उपकारी है। बहुतेरे डाक्टरोंका मत है कि मूलतन्तुका रस बहुत तेजस्कर तथा बलकारी औषध है। अधिक काल तक व्यवहार करनेसे यह आश्चर्य फल देता है। पित्तके बढ़ने पर इसकी सुखी पत्तियोंको चूर कर मधुके साथ सेवन करें। आट्किनसन साहब (Atkinson) ने लिखा है—इसके पत्तों पर चेचकके जैसा जो दाग उठ जाते हैं उन्हें दूधमें भिगी कर मधुके साथ सेवन करनेसे शीतला रोगमें उसका दाग शरीर पर नहीं पड़ता है। यह अनेक प्रकारके रजोगे, मूत्ररोग, मेहघटित रोग और कामरोगमें अनेक तरहसे व्यवहृत होता है। अर्श और उदरगम्यरोगमें यज्ञ-डु,स्वरका दूध दिया जाता है। उस दूधमें यदि थोड़ा तिलतैल मिला दें, तो वह घावकी उत्तम मरहम बन जाता है। ताजा मूलरका रस धातुघटित औषधके अनुपानके रूपमें व्यवहृत होता है।

देवकायमें व्यवहृत होनेके कारण इस देशके कितने लोग यज्ञडु,स्वर नहीं खाते। इसका आकार माधारण मूलरकी अपेक्षा कुछ बड़ा, पर उतना सुसवादु नहीं होता। वैशाखमें मात्र तरु फल लगते हैं। नीचे योगोंके लोग कच्चे मूलरकी तरुकारोके साथ खाते हैं। पकने पर समुचा फल छाई सरोखा लाल हो जाता है। अजन्मा और दुर्दिग्के समय बहुतसे लोग इसे खाते हैं।

बकर भेड़े मूलरकी बड़े चावसे खाते हैं। इसके पत्ते हाथो आदिके खाद्य हैं।

मूलरकी लकड़ी अन्तःसारशून्य, लघु तथा जल्दी टूटनेवाली होती है। यदि इसे कुछ समयके लिए जलमें रख छोड़ें तो यह बहुत टिन तक ठहरती है। इसी कारण लोग इसे कुएँके चारों ओर रखते हैं और कहीं

कहीं इसे वेडा तथा जल मीचनेके काममें लाते हैं।

काकडु,स्वर (Ficus hispida)—इसका पेड़ यज्ञ-डु,स्वरकी पेड़से कुछ छोटा होता है और भारतवर्ष में सब जगह तथा मलय, सिंहल, चीन आन्ध्रामन द्वीप, अष्ट्रेलिया आदि स्थानोंमें मिलता है। भारतवर्षमें हिमालय पहाड़ पर यह पेड़ २५०० फुट ऊँचे पर उगता है।

इसको छालमें एक प्रकारकी रसो बनती है। फल, बीज और छाल वमनकारक तथा विरचक है। इसकी शुष्कफलचूर्णकी जलमें मिड कर बम्बई और कोङ्कण प्रदेशमें विदारिका आदिमें प्रयोग देते हैं। दुग्धवतो गाय यदि कम दूध देने लगे, तो इसमें खिलाने से वह दूध देने लगती है। आयुर्वेदोंके मतसे यह दुग्धकर और गर्भस्थ ब्रणके लिए हितकर है।

काकोडुम्बर देवों।

इसके पत्ते आदि पशुओंके खाद्यपदार्थ हैं। लकड़ो जलानेकी मिवा और किमी काममें नहीं आती। चिड़ियाँ इसके बीजको अष्टालिकाकी देवारों पर नै जा कर खाती हैं और जो बीज वही छोड़ देतीं उसमें अष्टालिका पर पड़े उग जाता है। यह पेड़ मकानका बहुत अनिष्ट करता है।

डु,स्वर (Ficus Roxburghii)—यह वृक्ष हिमालय प्रदेशसे ले कर भूटान आसाम, श्रीहट्ट, चट्टग्राम तककी देशोंमें पाया जाता है। यह पेड़ ६०० फुट ऊँचे पर होता देखा गया है। पेड़ सम्भाले कदका होता है। इसका कच्चा फल तरुकारोके साथ व्यवहृत होता है। पकने पर यह कोमल, लाल और सुगन्ध तथा मीठा होता है। बहुतसे लोग पका मूलर खाते हैं। पेड़के नीचे तथा शाखा प्रशाखाओंमें गुच्छाका गुच्छा फल लगता है। शतद्रु नदीके किनारे मूलरकी छालमें एक प्रकारकी मोटी रसो बनती है। इसको लकड़ो किसी काममें नहीं आती। सर्वश्री इसके पत्तोंको बहुत पसन्द करते हैं।

भूडु,स्वर (Ficus heterophylla)—इस जातिकी मूलर लताके आकारमें पैदा होता है। यह भारतवर्ष और ब्रह्मदेशके उष्ण प्रदेशोंमें, चट्टग्राम, तैमासेरिम, सिंहल आदि स्थानोंमें नदीके किनारे उत्पन्न होता

है। स्थानमें हमें हमको बड़े भेद हो गये हैं। हमको पत्तों और मज्ज भोजनमें व्यवहार होता है। बहुतों को सब बहुत बड़ा है। उसका कुछ धनियाँ सब मिठा सब खेचन करके खाए, सब आदि अन्नो जति रहती है।

गुरुरसे पु पुप्य और स्तोत्रपथके पसक पनम शोप होती है। गर्माधान कीर्तियोंकी सहायतासे होता है। पु स्त्री स्त्री बहुत जाता है स्त्री स्त्री कोउको उलपति होती जाती है। ये बीड़े पु परागको गर्म करके गर्म से खाते हैं। ये बीड़े किस प्रकार पराम से खाते हैं, वह जाना नहीं जाता। सेबिन यह निश्चय है कि से पसक खाते हैं और उसीसे गर्माधान होता है तथा लोग बड़ कर पसके रूपमें होते हैं। पसक किसकुल सांसक और सुखा बम होता है। उसको खपरकड़ा बिलखा नहीं होता, बहुत मज्जो मिठो होती है।

इन्दुर—बहुदेवकी चन्द्ररीप मूमायको पनमंत एक प्राचीन नाम। भाष्यबहुदेवधर्म त्रिया है—

एक दिन महादेव उमाके साथ आकाशमार्ग को कर इन्दुरको आ रहे थे। पञ्चम्राट् चन्द्ररीप पर उनको इष्ट पड़ी। यहाँ से मन्त्रीका मुख देख कर विमोहित हो गये और उमक उनको हावसे नीचे गिर पड़ा। उमकको मिरमेंसे पुरुष शब्द होमि लगा। यह देख कर चन्द्ररीपको ब्राह्मण ने दमिबिसे उमककी पूजा करने लगे। इस पर गिन उमकने स तुष्ट हो कर कर दिया। यहाँके सभी मनुष्य धार्मिक, विद्वान्, श्रामी इतनी और मिठोमी होमि।" जिस ज्ञान पर उमक गिरा था वही स्थान कासकमसे इन्दुर या इन्दुर नामसे मयङ्क हो गया है। (म० म० ११ अ०)

इन्दुर (म० श्लो०) इन्दीवृषः।

इन्दि (म० श्लो०) इन्दि इवो० सायुः । इच्छयो, उमको, बहुरं । १ यानविषय, बाहन, सवारी, पसकारी।

इन्दिवा (म० श्लो०) इन्दिरेव वायति के-क । बह्वन्ताकार दमिबिषेय, क उनको आतिवा एक पक्षी।

इन्दी (म० श्लो०) इन्दी मग, भाग्यतोका बहुषा।

इन्दुर ( वि० पु० ) इच्छुर, उच्छुर । २ कोठी पहाड़ी।

इन्दुरगढ़—मध्यप्रदेशके खैरागढ़ सामन्त राज्यका एक शहर। यह पचा० २१ ११' ७" और दिशा० ८० ३६ पू०में मज्ज बहुल नामपुर शिबि द्वारा बम्बईसे ६७० मील की दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८२६ है। यह शहर व्यापारका एक केन्द्र है। यहाँ एक बनाव्यपुर सिद्धिक पञ्चक बालिका स्तूष और एक शोपवास्य है।

इन्दुरपुर—१ राजपूतानेके दक्षिणका एक राज्य। यह पचा० २१ २०' से २७ १ ७" और दिशा० ७१ २२ से ७४ २१ पू०में अवस्थित है। मूपरिमात्र १७५० वर्ग-मील है। इसके उत्तरमें देवाङ्ग या उदयपुर, पूवमें बांसवाड़ा दक्षिणमें देवाकांठा पश्चिमोक्तो रियामतें—मूय बलडाबा और पश्चिममें मन्त्रीकांठाके पनमंत रियासत ईडर या देवाकांठाके पनमंत सुभावादा राज्य है।

राज्य विषयकर परासकीपर्वत-मालाकी शोषाधी से पाच्छादित है। सेबिन लु चार्ड सब जगह बहुत कम है। लु चार्ड लु चार्ड गिनर मसुद्ररुचये १८८१ फुट ऊँचा है। वर्षाकालमें यहाँका इन्द्र दिखनेयोग्य है। जिनर जो इष्ट जालिसे उबर ही पञ्च मसुद्ररीप उमीन भरर भातो है। कन्नडको बड़ा और ही गिराको है। राज्यका दक्षिणी भाग कुछ समतल है और यहीं मात्र बहुजनाकीर्ण तथा सचबिषामी है।

यहाँ ऐलो एक मो नदी नहीं है जो बारहों मास बहती हो। जितनी नदियाँ बहती हैं मी उनमें केवल दो को प्रधान है, माही और मोम। माही नदी राज्य को पूर्वमें बांसवाड़ासे और दक्षिणमें मूयसे दृढक करती है। वर्षाकालमें से होना नदियाँ बड़ी बिमानाकार हो जाती हैं। मोरन नदी राज्यके मध्यमेंसे बहर जाती हुई वज्रगतिसे बहती है। इनके पश्चात्ता बादर, मात्रम और बाजोव पन्थ होती छोटी नदियाँ हैं। इस प्रान्त में आभाविक भीक तो नहीं है, पर अन्नम ताकाबोका मी कमो नको है। सबसे बड़ा ताकाब मी पयानर राज धामीमें है। रैन रियामतके बिषो भायसे जो कर नहीं गते है। राज्यान्तर्गतमें कोई पक्षी लड़क भी नहीं है और जो एक ही है मी से केवल एक ही दो मोन तक



राजधानीसे बीस-चौर कोठी तक गई है। जैय सभी मार्ग कच्चे हैं।

जिम प्रकार और प्रान्तों में छोड़ों को सवारी काममें लाई जाती है, उसी प्रकार इस प्रान्त में बैलकों। पर यह सवारी भारतके अन्य प्रान्तों में हीय ममको जाती है। यहाका जलवायु अप्रैलसे जून तक गर्म और शुष्क, पर सितम्बर और अक्टूबर महीनों में बहुत सगाव रहता है। गीतकान मत्रसे अच्छा ममभा जाती है। यहाँ पर वार्षिक वृष्टिपातका औसत २७ इंच है।

इतिहास—डूंगरपुरके वर्तमान राजवंशका वर्णन करनेके पहले यह कह देना उचित होगा, कि इस वंशको स्थापनाके पहले किम किम वंशका इस देश पर आधिपत्य रहा। श्री गताष्टीके पूर्व यह प्रान्त सीर्य साम्राज्यके अन्तर्गत था। बाद यह कुगनवंशके संस्थापक कनिष्कके हाथ लगा। इसी प्रकार कालक्रमसे यह चतुप, गुप्त, हर्ष, वैस तथा परमारवंशके हस्तगत होता गया। अब वर्तमान डूंगरपुर राज्यकी स्थापनाके विषयमें कहते हैं, कि मेवाडनरेशके दो पुत्र थे—माहुप और गहुप थे। बड़े पुत्र माहुपने ही वर्तमान राज्यकी स्थापना की। ये कुछ काल तक अछाडमें रहते थे, इस कारण उनके वंशज अछाडा कहलाये। डूंगरपुरमें यह कथा प्रसिद्ध है, कि महारावल वीरसिंहजीने डूंगरपुर राजधानीकी स्थापना की है। जहाँ पर आज कल डूंगरपुरको राजधानी है, वहाँ पर पहले डूंगरिया नामके एक मौलका आधिपत्य था। वह भटाचारी था। किमी एक अवलाका धर्म बचानेने लिये वीरसिंहने उसे मार डाला। बाद उसको टी स्रियोने वीरसिंहके कहा, “इस स्थान पर आप अपनी राजधानी बना कर उसका नाम हमारे पतिके नाम पर ही रखना। और हमारा ही वंशज आपके उत्तराधिकारियोंको प्रथम राजतिलक किया करेगा।” तभीसे यह स्थान डूंगरपुर नामसे प्रसिद्ध हुआ है। बहुत दिनों तक तिलकको भी प्रया सभी तरह जारी रखी पर अब नहीं है।

वीरसिंहके बाद भसुण्डी राजसिंहामन पर बैठे। इन्होंने केवल एक वर्ष तक राज्य किया। इनके उत्तराधिकारी डूंगरसिंहजी हुए। दो ही वर्ष तक राजत्व

करके आप १३६१ ई०में परलोककी चन बसे। इनके उत्तराधिकारी करमसिंहने २३ वर्ष राज्य किया और इनके लड़के रावल कानहुटेवने लगभग १३८३से १३८८ ई० तक राज्य किया। इन्होंने कानहुटा पील बनवाई, जहा पर फिलहाल क्रीतशाली, खुजाना और हिमाव टफतर हैं। बाद पातारावल राजसिंहामनहुट हुए, इन्होंने १३८८ से १४११ ई०तक राज्य भोग किया। इन्होंने एक तालाव खुदवाया जो पातेला तालाव कहलाता है। इनके उत्तराधिकारी इनके लड़के गेषा रावलजी हुए। लोग इन्हें रावल गोपोनाथ भी कहते थे। इन्होंने अपने नाम पर गेष नामका तालाव बनवाया। यहो तालाव राज्य भरमें सबसे बड़ा है। तालावके एक किनारे पर ‘उदयविनाय’ नामका एक नवीन राजप्रासाद सुशोभित है। इनका देहान्त १४४८ ई०में हुआ था। बाद सोमदासजी राजतत्त पर बैठे। इनके समयमें महम्मद ग़िलजैने राजधानी पर धावा मारा। जब ये बहुत उत्पात मचाने लगे तब सोमदामने दो लाख रुपये और २० घोड़े भेंटमें दे कर शत्रुसे पिण्ड छुड़ाया।

गङ्गा रावलको उत्तराधिकारी श्रीहू आप १४८१ ई० में परलोकको सिधारे। गङ्गाने १४८२में ले कर १४८८ तक राज्य किया। बाद रावल उदयसिंहजी १५ सिंहासनासोन हुए। इस समय मेवाडके सिंहासन पर महाराणा संग्रामसिंहजी सुशोभित थे। इन्होंने समयमें वावरने दिवोने मुसलमानों साम्राज्यकी नींव डालनेका विचार किया। दोनोंमें घनघोर युद्ध चला। रावल उदयसिंह सयामसिंहके पक्षमें थे। रणस्थलमें कटम बटानेके पहले इन्होंने राज्यकी दो भागोंमें बाँट दिये, एक भागका नाम डूंगरपुर रखा और दूसरेका नामवाड़ा। डूंगर ज्येष्ठपुत्र पृथ्वीराजकी और वांसवाड़ा कनिष्ठपुत्र जगमलकी सौंप दिया। रावल उदयसिंह खनवाकी लड़ाईमें खेत रहे।

रावल पृथ्वीराजजीके समयसे २०० वर्ष तक डूंगरपुरमें सुख-शान्ति विराजतो रहे। मन् १४४३ और १५५४ की बीचमें पृथ्वीराजका स्वर्णवास होने पर उनके लड़के आमकरणाजी राजसिंहामन पर बैठे। इन्होंने अपने नाम पर ‘आसपुर’ नामका ग्राम बसाया। सोम

धीर भाई नदीके छत्र पर बैस्यार महादेवका जो मन्दिर है वह भी इनो का बनबाया हुआ है। इनके मित्रा के राजधानीमें चतुर्भुजकोका मन्दिर निर्मात्र कर गये हैं। कहते हैं कि मूठमें जो वर्ष ८४ मन मोठा झाड़ लगा था, उसीदि इनोने लूना-दान किया। मन्दाद, पञ्चबरीको पधोमना कोकार कर के एक वैयिक कर देने ली।

इनके बाद महामन्त्री राजगहो पर सुयोमित हुए। इनके शासन कालमें राज्य भरमें गान्धि विराजतो रही। राज्य उत्तमिनी चरमसीमा तक पहुँचा हुआ था। १३८ ई०में इन्होंने सुरपुरमें भाइको नदीके किनारे यी भावबाराजको विद्यास मन्दिरका निर्माण करवाया। १८ वर्ष राज्य कर बुझनेके बाद १५० ई०में पाप इस लोकमें चल गये। इनके उत्तराधिकारी कर्मसि इजो हुए, जिन्होंने अक्षय पांच हो वर्ष तक राज्य किया। इनके समयमें कोई वियोग घटना न घटी। बाद १५११ ई०में पूजाजीने दुर्गपुरको गहो सुयोमित की। इनोने अपने नाम पर पूजपुर स्थापित कर वहाँ "पूजिरो नामका एक इष्टतान्त्र सुदवाया। सुदमन्त्राटने इनको डेढ़ इजारीका मन्त्राधीर भाई सुराज्य पला किया। पधोम वर्ष राज्य करनेके बाद १५३१ ई०में इनका देहावत हुआ।

बाद महाराजम मिरिधरको राजसि शासन पर पासीन हुए। इस समय सुदमन्त्राट धीरहीन धीर भैयाके शासक राजसि इजो थे। पापने दो लड़के छोड़ कर भागबलोका ममास की। बड़े लड़के अचलन जोने १५८ ई० तक राज्य किया। इनके छोटे भाई हरिसिंहजी या कीशरीरिंहजी थे जिन्हें माचनोको जागोर मिली। अचलनके भी दो लड़के थे बड़े सुमानसि इजो धीर छोटे फतहसि इजो। बड़े सुमानसिइजो रान्धाधिकारी हुए धीर छोटे फतहसि नजीको नाद कोका ठिकाना मिला। इनके समयका कोई वियोग विवरण नहीं मिलता। इनके पांच लड़कों में रामसि इ बड़े थे; ये बड़े उत्कृष्ट धीर इज्यारी थे। किसी कारणवय पिलामे इन्हें विवाहनको पाया दो थी। किन्तु मरते समय बाबन्धनेम लमड़ पाया धीर बुबाराजको बुलवा म गया।

१०० ई० में महाराजम रामसि इजो दुर्गपुरके सिंहासन पर पाफड़ हुए। ये बड़े प्रतापी धीर तीक्ष्णमायर्ष निकले। इनके समयमें सारे राज्यमें सुख शान्तिका सम्बन्ध था। यहाँ तक कि इनके राज्यको 'राम-राज्य' कहते थे। १०२ ई०के मयमग इनका अगं बास हुआ। बाद शिवसि इजो राज्यके उत्तराधिकारी हुए। ये सो योग्य पिताने योग्य पुत्र थे। निहानीका पादर इनके समयमें वधित था, कारण, पाप अर्ध विद्वान् धीर बनि थे। ये कहर धर्मिक भी रहे। वहाँ तक कि अराबस्थाने पाप योगीके मयमें कटा कारण किसे रहने ली थे। इन्होंने राज्यमें पच्छी पच्छी हमारत चल बाइ। कहते हैं कि गुमटा बाजार पाप ही बनना गये हैं। १०८ ई०में इनका अगं बास हुआ।

इनके पचात् महाराजम वैरियालजने दुर्गपुरको गहोको सुयोमित किया। इनकी मरियो मीरहा तनजोने राजधानीमें एक मन्दिर बनबाया जिसमें सुरक्ष पत्नीकी मूर्ति स्थापित की गई। अपने लड़के प्रतहसि इजो पर राज्यकार्य सौंप पाप १०८ ई०में इन लोकमें चल गये। प्रतहसि इ रातदिन अग्निमें पुर रहते थे, राज्य मासन उनके मन्त्रो मिसत्री बजाते थे। नयेके कारण पाप एक बार बन्दो मी जा चुके थे। दुर्गपुर राज्यमें यहाँ एक समय सुख-शान्तिका सम्बन्ध था, पाप यहाँ पापलिका बनवीर यज्ञन होमि लया। यहाँ तथा धमो क्षतम्ब थी गये। इसी मोर्षिमें १०३ ई०को महाराजने मो राज धानी पर पावा मारा। यज्ञने मुठमिड़ करनेका तो माहम प्रतहसिइजो था नहीं, दो साथ अपने दे कर इनके अपना पिण्ड सुझा किया।

१०८ ई०में महाराजम प्रतहसिइ पञ्चलकी प्राप्त हुए। बाद अचलनसिइजो राजगहो पर बैठे। इस समय चिन्तो फ्यन्तोने दुर्गपुर राज्यमें प्रवेश कर लसे चारों धोरने घेर लिया। दोर्षिमें २० दिन तक घनवीर बुइ होता रहा। अन्तमें 'बरका भिदिया लडा झाँबाला' कहा मत चरिताव हुई। इनमेंने किसी एक नीचने रातको राज-काटक काग दिया। जिसने पनेक बोधा उताहत हुए। फो पुत्रय, बान, उइ मप्री यज्ञ क सिंकार बन गये। मयमें काहाकार मच गया। मकान कूटे धीर दग्ध

किये गये। बाद कई एक राजाओंकी सहायतासे शत्रुकी हार तो हुई सही, पर अगले तीन साल तक राज्यमें एक तरह अराजकता फैली रह्यी। इन्होंने प्रतापगढ़के महारावन सावन्तमिंहके पौत्र दत्तपतसिंहकी गोद लिया था और जोतेजी राज्यका भार उन्हीं पर सुपुटे भी कर दिया था। उचित उत्तराधिकारी न होनेके कारण फिर राज्यमें विषम उपस्थित हुआ। दिन दहाड़े डाके पड़ते थे और ठाकुर लोग आततायिर्षीकी उन्तजना देते थे। अन्तमें १८०२ ई०में जमवन्तमिंहको मासिक पेन्शन १२०० रु० दे कर हन्दावन मेज टिया गया। इधर दत्तपतसिंहने भी विवश हो सावली ठाकुर साहबके पुत्र उदयसिंहको अपनी गोदमें ले डूंगरपुरका अधिकारी खोकार कर लिया। तभीसे सभी गड़बड़ी भर मिट गई।

१८५७ ई०में महारावल श्रीउदयसिंहजोने डूंगरपुर राजमिंहासनको सुशोभित किया। राजके सुधारकी और इन्होंने अटूट परिश्रम किया। इस समय भोलोंने फिर एक बार उल्तात मचाना शुरू कर दिया। अन्तमें उनको पुरो हार हुई, कितनोंके तो सिर भी धड़से अलग कर लिये गये। १८७० ई०में एक भयङ्कर अकाल पड़ा। महारावल साहबने दुर्भिक्षके निवारण करतीका अच्छा प्रयत्न किया। जगह जगह पर Relief work खोले गये, हजारों तालाब, बावड़ी आदि खोदी गईं। १८७७ ई०में प्रथम टिहो-टरवारके उत्सव पर राजराजेश्वरी महाराणी विक्टोरियाकी ओरसे डूंगरपुर टरवारकी एक भण्डा प्रदान हुआ। १८८० ई०में आपने तुलादान किया जिसमें लगभग १ लाख रुपये खर्च हुए। पहलेसे यहां शिक्षाका कोई प्रयत्न नहीं था। इन्होंने जो पहले पहल पाठशालाएँ स्थापित कीं।

आपके बाद श्रीमान् महारावल साहब श्रीसरविजयसिंहजी बहादुर के, सी, आई, ई, राज्यके उत्तराधिकारी हुए। पितामहके मरते समय आपकी अवस्था केवल ११ वर्षकी थी। नाबालगी तक राज्य प्रयत्नके लिये नेवाहकी टेखरेखमें चार मेम्बरोंकी कौन्सिल नियुक्त हुई और आप मेम्बरों कालेज अजमेर पढ़नेके लिये भेजे गये। इनके समयमें भी प्रजाको दुर्भिक्षका सामना

करना पड़ा था। ये बड़े विद्वान्, प्रतापी और प्रजावत्सल राजा थे। डूंगरपुर राज्यका जो ग्रीचनोय अवस्थामें चला आ रहा था आपने सँस्कार किया। धर्मको और भी आपकी अदा जम न थो। सद्गोतके भी आप अच्छे प्रेमी थे। प्रजाकी भलाईके लिये आप अच्छे अच्छे काम कर गये हैं। इस थोड़ीसी अवस्थामें आपका मेल जोल भारतके प्रायः सभी सुकुटधारी रईसोंके साथ खूब बढ़ गया था।

१८१२ ई०में सन्नाटके वार्षिक जन्मदिनके उत्सव पर आप 'के, सी, आई, ई' की उपाधसे विभूषित हुए थे। १८१४ ई०के विश्वव्यापी युद्धमें आपने गवर्मेण्टके प्रति सच्चे भक्ति दिखलाई थी। सारे राज्यमें सुख-शान्ति स्थापित कर १८१८ ई०के १५ नवम्बरको आप इस लोकसे चल बसे। बाद इनके बड़े लड़के लक्ष्मणसिंहजी बहादुर राजमिंहासन पर आरूढ़ हुए। ये अभी नाबालिग हैं और मेयो-कालेज अजमेरमें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ये भी योग्य पिताके योग्य पुत्र जैसे मालूम होते हैं।

राज्यभरमें कुल ७७२ ग्राम लगते हैं। लोकसंख्या प्रायः १८८२७२ है। अधिवासियोंमें अधिकतर भील हैं। इसके सिवा यहां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, मुसलमान, वीहरे आदि भी रहते हैं। मुख्य धर्म जो राज्यमें प्रचलित है, वह वैदिक-हिन्दूधर्म है। इसके सिवा जैन और महम्मदी भी हैं। जैन भटारककी गद्दे भी है।

यहाँकी मुख्य उपज मकई, धान, सूंग, उरद, तिल सरसों, गेहूँ, चना और जौ है। पहले अफीमकी खेती जितनी ही अधिक होती थी, अब उतनीही कम गई है।

वन-विभागकी ओर उतना ध्यान आकर्षित नहीं होता। पतरोलो जमीन होनेके कारण उपयोगी वन बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। फलदार वृक्षोंमें महुआ और आम खूब होते हैं। राज्यभरमें लोहे और तंबिको खानें हैं सही, पर उस और राजका काम ध्यान रहता है। बोझीगमें एक नकली हीरेका पत्थर अच्छा होता है और बहुत पाया जाता है।

यह राज्य क्षुद्रप्रधान देश है। सैकड़ों पीछे ७६ खेतीवारी करके अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं। कोई

बना-बोझ लड़खोय नहीं है। पत्थर तथा बाट  
पत्थरी लुदाईका काम प्रयत्न सही है। बाँधी सोनेके मो  
सई अच्छे कारीगर हैं।

पहले अरबोंको लपामि 'रायदावा महाराजा  
बिराज महाराजाने यी १०८० यी - बहापुर' है। पन्ड  
तोपीको सकामी है और लाट साइबसे बापसोको  
मुखाबात - (Return Visit) होती है। राजाको  
राज्यके धार्मिकारिक प्रवन्धमें पूरा अधिकार है। राज्य  
यो धमात्त कार्यालय" दरबारके अधीन है। मित्र मित्र  
विभाग एक एक पञ्चको देक रक्षित है। राजकार्य  
को सुविधाके लिए सर्वोय महाराजाने निवससि जमो  
हो नमार्थ स्थापित कर गये हैं। पहले समाजा नाम  
"राजप्रवन्धकारिको समा" है। इसमें बड़े सुकदमा पिय  
बिवा जाता है, जो धमात्त-कार्यालयके अधिकारके  
बहार रहता है। दूसरी समा "राज-शासनसमा"  
बहनाती है। इसमें बड़े बड़े फौजदारो और होमानो  
सुकदमें तथा दीवानो फौजदारोको पपोलि सुना जातो  
है। नवोन खान् ल भी इसी समाके पास होता है।  
"राज-शासनसमा" में निवस निम्बर की नहीं बैठते, मगर  
कुछ घनेतर भी बैठते हैं। राज्यको धामदगो दो भाग  
बपडेको है, जिसमेंसे १०२०० व इन्डिय मन् नसिपको  
नेने पकसि हैं। व मरपुर राज्यमें पयना सिद्धा नहीं  
समता। सब जनक पतीकी सिद्धा हो चकन है।  
राजपूतानेके सेवा, यहाँ भी बसोनीके अनुसार मान  
मुजारी फिर को गई है।

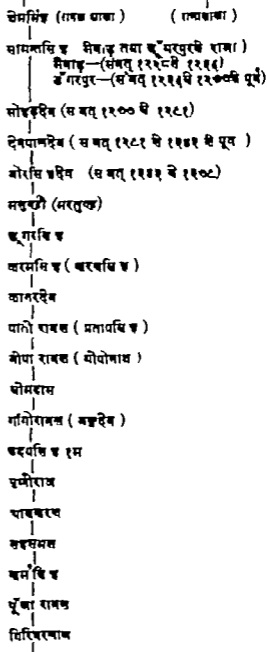
राज्यमें विद्याकी उत्तमी बहति नहीं है किन्तु पहले  
ने पाजकल कुछ बड़ोतरो पर है। मोल कोसोके निवे  
कास एक स्कूल है। स्कूलके प्रतिरिक्त दो अस्पतान  
है। शहर समारै पादिके निवे खुलिनपाबिडो मो  
कापित है।

२ बह राजका एक शहर। यह पचा० २२ ११ स०  
पौर दिशा० ०२ ३२, पू० लदयपुरसे ६६ मोल दक्षिणमें  
अवस्थित है। सोकस ज्मा कममय ६०८३ है। कहते  
हैं कि १३वीं शताब्दीमें यह नगर महाराजस कोरसि जये  
मोम-हरदार ब् बिरियाके नाम पर बनाबा गया। १८वीं  
शताब्दीमें महाराज-धेवाने शाहजाद खुदादादके अधीन

इस नगरको पदरोब बिबा बा। वहाँ एक पदरोबी  
काबर, टेलिफाक फासिम, कारागार, अस्पतान और  
यहनी बगान, सर स्कूल है।

इमरपुर राजकी वंश उत्तिका ।

मिवाङ्क मरीच रचसि व





से १२ ४० २५<sup>५</sup> पू० में अवस्थित है। इसके उत्तर में फ्लेगारक उपसागर, पूर्व में फाटिंग्ट और माबलुप्रपाको तथा बास्किक सागर, दक्षिण में जर्मनी के कई एक प्रथम एक पश्चिम में जर्मन सागर या पश्चिम महासागर है।

जिस्लर, फिशनर आनान्ध प्रकृति होय, जटलान्ड उपदोय पौर बास्किक सामरक बर्चडोमम होय से कर यह राज्य स मरित हुआ है। पहले ही पमिग होगटिन पौर लोबिनबग नामक दो प्रदेश भी डेनमार्क के पन्त मंत था। १८६६ ई० में जर्मनी के साथ युद्ध में डेनमार्क ने पन्त दो प्रदेशको भी हारा। बतमान राज्यका परि माबलुस १६८५ वर्ग मील है। पश्चिमियों में प्रायः सेकड़ें १६ द्विपत्तियों हैं पौर प्रायः ६४ मिल्प तथा बास्किप प्रादि द्वारा कीर्षिकारिवाह करती हैं। लोक संख्या प्रायः १२००००० है।

इसका उत्तर उत्तर उपदोय यूरोपक उत्तरे प्राय स सम्य तथा उत्तर दक्षिण तक विस्तृत है। इसको उत्तार् उत्तर-दक्षिण में प्राय १०० मील है पौर चौड़ाई पूर्व पश्चिम में मिल्प मिल्प जगामि मिल्प मिल्प प्रकारकी है। जिनको जगामि केवल १० मील पौर कहीं १०० मील है। इसके उपरून माबको जगार् प्राय ११०० मील है, किन्तु इस सुनीय उपरूनका पश्चिमिग बिबका है पौर इसमें कई अगड टापू हो गया है। छोटा होय पौर बास्का बांघ रहनेसे बास्किप में बहुत पसुबिवा होती है।

जगो हीमि में जिस्लर बड़ा है। राजधानी कोपेनहैगन इसी हीमि में अवस्थित है। इय होयको भूमि भी जो पौर प्राय समतल है तथा मनुद्रष्टने कई फुट ऊँचा पर है। कहीं कहीं दो एक पहाड़ भी देखे जाते हैं, जिनकी ऊँचाई समुद्रतल से १०० फुटसे अधिक नहीं है। जिस्लर पौर जटलरके बीच फिशनर होय अवस्थित है। जटलाण्ड, मोलाण्ड, फलहर, सोबिन प्रादि छोटे छोटे होय विरामन पौर जिस्लरके दक्षिण में पड़ते हैं। इसको प्रकृति तथा निबटवर्तिस समुद्रको कम अवरार् देल कर पनु मान बिवा जाता है कि बहुत पड़ते हैं समस्त होय पूर्व में सुर्वेन पौर पश्चिम में जटलरक तक विस्तृत एक बड़ा भूखण्ड था। आन्ध्रमि इयक प्रथम हो कर से कई एक छोटे छोटे दीपिनि परिचल हो गये हैं।

डेनमार्कको पहाड़ो पचात् देगमें बहुतसे सागर गालाये प्रविष्ट हैं। उत्तर भागमें जिस्लरके पहाड़ो पत्रे बड़े हैं। १८२४ ई० में इसको पश्चिम-भाग टट पट्ट कामिसे यह जमन सागरके साथ मिल गई है। डेनमार्क में छोटे छोटी पनेक भील हैं, किन्तु एक भी उँचा पर्वत पौर बडो नगी नहीं है। यहाँ बहुतसे छोटी छोटी नदियाँ छोटे छोटे पहाड़ पौर पश्चिम पानी हैं।

समुद्रके निकट रहनेसे डेनमार्क में शीत घोषका प्रकोप उत्तना पश्चिम नहीं है। वायु पनेक समय परम पौर मनोरम रहती है। सके दिनके पहले तथा फाल्गुनके बाद शीतकी प्रकृता प्राय नहीं रहती है। जमी जमी घोषकामि यहाँ बहुत परमो-पड़ती है। यहाँकी जलवायुकी अवस्था पश्चिम परिवर्तनशील है, ठंड तथा तूफान प्राय चाया करता है। राजधानी कोपेनहैगनका तापम शीतकामि १२८ बसल कामि ३१३, शीतकामि ६३१ पौर गरतकामि ३८१ पा० रहता है।

यहाँको भूमि उर्वर है, इसीसे गेहूँ, जौ, राई प्रकृति तरु तरुके पलाय उत्पन्न होते हैं। शिबल जिस्लर हीम में पन्त गाव इत्यादि उपजती हैं। प्रतिवर्ष प्राय ३६००० से २८००० भोड़ मिदिये में भेजे जाते हैं। बियेपत दूधके निरै हो यहाँके लोग प्राय-मैस प्रादि पाकते हैं। पानी पौर नदोमें मछली पधेद मिछती है। कहीं कहीं मछली पकड़नेका निवत खान भो है, पौर इससे पाम दनो बहुत होती है। नदोसे गोप भो निकालो जातो है किन्तु यह राजारे पक्षीन है। जटलरके उत्तर भागमें कड नामको एक प्रकारकी बड़ी मछली पाई जाती है जिस्को पचेसे तेल इत्यादि तैयार होता है। तिमि मछली भी यहाँ मिलती है। डेनमार्क में खान बहुत काम है। बर्चडोमम होयमें पयरिया कोयला बहुत कम मिलता है। यहाँका बाठ भी पच्छा नहीं होता है।

यहाँ कृषि पौर मिल्पकी अवस्था जगमय बढ़ती जाती है। मक्ख मक्खन, पनीर, ममकोना मांस, मराच बकरा, भेड़ा, घोडा गाव इत्यादि पय, जमड़ा, बर्चो, रोधा पौर तरु तरुके मछली तथा कड पौर तिमि मछलीका शिब

इत्यादि विदेशमें भेजा जाता है। आमदनीमें सूती और रेशमी कपड़ा, लोहा, शराब, फल, चाय, तमाकू, कहवा और वोसवर्गा आदि प्रधान हैं।

डेनमार्कमें सैन्यसंख्या १२०,००० है, प्रयोजन पढ़ने पर इसकी संख्या और भी अधिक बढ़ाई जाती है। ३७ युद्ध-जहाज और उनमें २२७ तोपें तथा १२७० सैन्य कर्मचारी रहते हैं।

डेनमार्कके रेलपथका परिमाण प्रायः २७०० मील टेलिग्राफतार ६६८८ मील है।

राज्यकी आय प्रायः ३३०००००००, रु० है। डेनमार्कमें विद्याशिक्षाका अच्छा प्रवन्ध है। यहाँका विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध है। ७ वर्षसे ले कर १४ वर्ष तक लड़केकी पढ़ानेके लिये उनके अभिभावक ही बाध्य किए जाते हैं। डेनमार्कके सभी विद्यालय राजाके अधीन हैं।

यहाँके राजाओंको लुथारसंस्कृत ईसाई धर्म अवलम्बन करना पड़ता है। किन्तु प्रजा अपने इच्छानुसार किसी धर्मको ग्रहण कर सकती है। १५३६ ई०में लुथारका संस्कार डेनमार्कमें आरम्भ हुआ है। इस राज्यमें ८ विभाग हैं। विभागोंकी राजा स्वयं चुनते हैं। उन्हें शासनसम्बन्धमें कोई अधिकार नहीं है।

डेनमार्कके भिन्न भिन्न शहरों और नगरोंमें बहुतसे विचारालय हैं, किन्तु सबसे उच्च विचारालय कोपेन हेगन नगरमें अवस्थित है। कोर्ट आफ कनसिलियेशन (Court of Conciliation) नामक अदालतमें सबसे पहले अभियोग उपस्थित करना पड़ता है। छोटी अदालतमें अच्छी तरह विचार नहीं किये जाने पर बड़े अदालतमें अपील की जाती है।

पहले इस राज्यमें वंशानुक्रमिक राज-निर्वाह प्रचलित नहीं था। १६६० ई०को हेलोथ फ्रेडरिकके राजत्वकालमें राज्यशासनका अधिकार वंशानुगत हुआ। उसी समयसे राजा अपने इच्छानुसार राज्य करते आ रहे थे। किन्तु बहुतांश अटल्टे होने पर १८३१ ई०में जटनगड और हीर्षे पर शासन करनेके लिये प्रधान मन्त्रियोंको ले कर एक सभा संगठित की गई। ऐसा होनेसे राज्यमें बहुत विश्वहला होने लगे। अन्तमें राजा ममम फ्रेडरिकसे डेनमार्कको वर्तमान शासन-

प्रणाली नियंत्रित कर दो गई। प्रजामेंसे प्रतिनिधि निर्वाचित और इन्हीं प्रतिनिधियोंने मन्त्रिसभामें शासन ग्रहण किया था। इस जातिकी सभा दो भागोंमें विभक्त है—Folkething and Landsting। ये दोनों सभा बहुत कुछ ब्रिटिश पार्लियामेंट House of Commons से मिलती जुलती है।

डेनमार्कमें राजाका शरीर बहुत पवित्र माना जाता है। अगर राज्यमें किसी तरहकी विश्वहला हो तो उसके लिये मन्त्रिगण ही दायी हैं।

राज्यके प्रधान मन्त्र्यकी राजा काउण्ट तथा व्यारण ये दो प्रकारकी उपाधि देते हैं किन्तु उपाधिहीन प्राचीन वंशोय व्यक्ति ही साधारणके निकट अधिकतर सम्मान पाते हैं। उपनिवेशमें शासन करनेके लिये राजाके अधीन शासनकर्त्ता नियुक्त होते हैं। राजाको एक मन्त्रिसभा है। यह सभा राजा और उनके उत्तराधिकारी तथा ८ सभ्य द्वारा संगठित है।

यहाँके अधिवासी अत्यन्त वलिष्ठ होते हैं। इनके शरीरका वर्ण परिष्कार, आंगु नोलवर्ण और बाल बहु हलका होता है। ये सहज ही किसी काममें निष्कुल नहीं होते। अगर इन लोगोंका स्वत्व कोई अधिकार भी कर ले, तोभी वे सहज ही उसे किसी प्रकारको बाधा नहीं देते हैं। किन्तु वे अत्यन्त साहसी तथा स्वदेशका रक्षाके लिये आत्मविसर्जित करनेमें तनिक भी नहीं हिचकते हैं। डेनमार्कके सभी श्रेणोंके मनुष्य बहुत यत्नसे मृत मनुष्यको कब्र रचा करते हैं। ये फूल बहुत पसन्द करते हैं। इनका सौन्दर्य ज्ञान प्रशंसा करने योग्य है।

दिसरोगण (Cymri) ही डेनमार्कके आदिम नवासी हैं। इसके बाद अडिनके अधीन गचगण आ कर कुछ काल तक यहाँ रहने लगे। उस समय डेनमार्क छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त था और अधिवासी जलमें चोरो डकैतो कर अपनी जोविकानिर्वाह करते थे। अधिवासोण बिनडर (Boender) और ट्रेल (Traelle) इन दो श्रेणियोंमें परिचित होते थे। ट्रेलश्रेणियोंके लोग कृषिकर्म तथा शिकार इत्यादि करके अपना जोविकानिर्वाह करते थे। उस समय वहाँकी स्त्रियाँ भी पुरुषोंकी नाई काम करती थीं। रोम साम्राज्यके अवनति के

समय से ५ गलेक प्रचति दीसिनि जेट मार करीनी मी से ।  
 १८६६ ई० में डेनमार्कके राजा हारोल्डक्लाक (Haroldklak)  
 जर्मनदेशके पतक प्रत्य खूट खाये से । इस समय तक  
 राजा अन्तिगिरियसके ईसाई धर्म में होचित हुए । बिन्दु  
 प्रजा ईसाई धर्मको बहुत हवा करती थी । १०४२ ई० में  
 एमन्ट्रिडन डेनमार्कके राज्यनि डानन पर पतितिक  
 हुए । सीबिन स्ट्रनिफाट पौर अन्तिग्युके पादमन्थके  
 डेनमार्क को भीर दुबक होता गया । अतोय मन्डिमर  
 के शासनकालमें डेनमार्ककी आतोय विविधमन्त्र  
 स पञ्चौत हो कर प्रचारित हुई । ११०६ ई० में मन्डि  
 मरको लड़के मारमारिट समष्ट कन्दनाभियको राजा  
 हुई, बिन्दु १४१२ ई० में लकी कीलुके बाट एक सम्यु  
 राज्य मुन प्रबक प्रपक हो गया । पोडि स्ट्रिडपर डेन-  
 मार्क पर शासन करीनी जये । १४४८ ई० में प्रथम ईसाई  
 न डेनमार्कका तथा १४२१ ई० में प्रथम प्रोटेस्टिकने  
 निर्वाचनामुसार डेनमार्क पौर नरये हृत्प्रत्यक्षा सि वा  
 भन पञ्चिकार बिबा । १४८८ ई० में ४४ ईसाईने राजा  
 हो कर डेनमार्कको अन्तत समतामासी बना दिया ।  
 बिन्दु तक प्रयोगके प्रतिबुद्ध पाचरप करीने डेन  
 मार्कका पूर्व गौरव जाता रहा । १६६० ई० में Arle En-  
 Vold's Rongering's Akt के अतुसार राजाका पञ्च  
 कर विर बड़ मन्ना । इससे बाद प्राय एक मताम्दी तक  
 क्षयवराच पावन्त पयोपता स्रष्ट करीने कये । १७म ईसाई  
 के समय डेनमार्क एक क्वि मिसर पर पडु च गया था ।  
 इनके राजत्वकालमें सुद्रावन्तको छाडीमता दो गई  
 तथा नवमैथका पप्रतिवृत्त अन्वयन बन्ध हो गया । मीयो  
 सियनके नाथ मिसर कर सुतोपीय दूसरे हुनै राज्योंके  
 विरुधे लड़टा लड़ाई करीने डेनमार्क प्राय दिवाकिया  
 हो गया था । १८०० ई० में निबडनमें डेनमार्क बाकोको  
 सन्धुर्षदयेने पपञ्चित किया । इस युद्धके बाद मियेना  
 मन्थिके अतुसार डेनमार्क राज्यके नरये सुइडनके साथ  
 मिला दिया गया । बहुत पहलैने हो राज्य से कर जर्मन  
 पोट डेनमार्कमें राज्भाव चला जाता था । इस कारण  
 १८४४ ई० में होमीन लड़ाई जिड़ गई । १८४८ ई० में  
 डेनमार्कको जीत होमि पर होमी राज्यमें मन्थि जापन को  
 गई । डेनमार्कको प्रथमि राजाके अन्धे क्वाडीमता प्रा-

की ३ पौर अतो सुकये समय म्यतोत करती है । बिन्दु  
 डेनमार्क के पयोग जोटे जोटे राज्यके पाव तक मी  
 पनकोच भाव दूर नहीं हुआ है ।  
 १८२२ ई०को २८वीं जनवरीको डेनमार्क पौर  
 जर्मनके बीच एक प्रकारको सन्धि हो गई । अतं यह  
 उचरी कि समय पकने पर एक दूसरेकी मदद करे पौर  
 राज्यके सामान्य विषयोंमें एक दूसरेका पञ्चिकार रहे ।  
 तदनुसार होल्स्टोन (Holsteen) डेनमार्कको वापिस  
 मिला तथा प्रुविया पौर पड्डे सिबा कन्दनसमार्मि भाग  
 डेनिको राजो हुआ । १८३१ ई०की २१ीं पञ्चुवरको  
 यहाँ मदा नियम चलाया गया जिनसे एक पञ्चिका प्रति  
 पावन न कर राज्यमें बहुत डेरकिर हुआ १८६१ ई० में  
 ७म प्रोटेस्टिकके मरी पर ८म ईसाई राजसि वा  
 सन पर पाठक हुए । अन्तिम जर्मनसे मन्थन्य रख  
 विपद्को भावी पागडा करीने हुए १८३१ ई०के प्रच  
 नित निबमोको कानून बना दिया । पगडेलकारोंके  
 ईसाईके लड़के प्रोटेस्टिक होल्स्टीन पौर जर्मनको  
 महादताये अयनेको थक कर होवना कर दो ।  
 बाद दोमोंमें लड़ाई जिड़ गई जिने १८६४ ई०का युद्ध  
 बचती है । अन्तिम १८६६ ई०को एक सन्धि ल्यापक को  
 मरे बिचये डेनिकिग प्रिडिका उत्तरोय भाग पुना डेन  
 मार्कके हाथ पाया । १८७२ ई० में करका विषय से  
 कर डेनमार्कमें खूब बलचन मचा था । प्रथम मन्थी  
 से भी दू पवो १४ डनकनके कारण से । १८८४ ई० में  
 १४के मन्थिपदये चले जाने पर रिगसदग (Big dog)  
 के प्रदानके इतका पन्थो तरफ निबडटा हो गया ।  
 समय १८८८ ई० में डेनमार्क उत्तमिको चरम यीमा  
 तक पहुच गया था । इस समय यहाँ इतनी पौष हो  
 जि किमोका डेनमार्क पर लड़ाई करीनेका जहम नहीं  
 होता था । नैबिन छठी भाग यहाँके ४००० इतक  
 कारोंके बागी हो जाने पर डेनमार्कको ५ ००००  
 कोनका पाटा हुआ था । १८०६ ई० में बहुत दिन राज्य  
 कर युद्धके बाद राजा ईसाईको सन्धु हुई । १८१६  
 उत्तराधिकारो इतके लड़के ८म प्रोटेस्टिक हुए । १८१९  
 ई०को १४वीं मईको ८म प्रोटेस्टिककी मन्थ, होनेके  
 बाद ननके पुत्र १०म ईसाई सि हासनाकुर हुए ।



डेपूटेसन (अ० पु०) प्रसिद्ध मनुष्योंको मण्डली। ये किसी सभा संस्थाको औरसे सरकार, राजा महाराजा इत्यादिके पास किसी विषयमें प्रार्थनाके लिये जाते हैं। डेरा (हि० पु०) १ टिकान, ठरराव. पडाव। २ ठहरावका आयोजन, छावनो। ३ ठहरनेका स्थान, छावनो. कैम्प। ४ खेमा, नख, ग्रामियाना। ५ नाचने तथा गानेवालीको मण्डली। ६ निवास-स्थान, मकान, घर। ७ पञ्जाव, अवध, वंगाल तथा मध्यप्रदेश और मद्राज़में मिलनेवाला एक प्रकारका जंगलो पेड़। इसको छाल और जड़ साँव, काटने पर पिलाई जाती है।

डेरा इस्माइलख़ा—१ उत्तर-पश्चिम सीमान्तप्रदेशका टंजिण्ड जिला। यह अक्षा० ३१' १५" से ३२' ३२" उ० और देशा० ७०' ५' से ७१' २२' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ७७८० वर्ग मील है। इसके उत्तरमें वझू जिला, पूर्वमें झुंझ और साहपुर, दक्षिणमें डेरागाजीख़ा और मुजफ्फरगढ़, तथा पश्चिममें सुलेमान पहाड़ है। यह जिला भारतकी अन्तिम सीमा है।

यहां दो गढोंके भग्नावशेष देखे जाते हैं जिन्हें काफिरकोट कहते हैं। शायद यीरू लोगोंने ये गढ निर्माण किये थे। १४वीं शताब्दी तक इस देशका विशेष विवरण कुछ नहीं मिलता है। १५वीं शताब्दीके अन्तमें मालिक मोहम्मदके अधीन एक टल बलूचो यहाँ आ कर रहने लगे। इस्माइलख़ा और फतेहख़ा नामक उनके दो पुत्रोंने अपने नाम पर दो नगर स्थापित किये। बलूचियोंको हट जाति कहते थे। इस हट जातिने २० वर्ष तक स्वाधीनभावसे राज्य किया। पीछे १७१० ई०में अहमदशाह दुरानोने उन्हें मार भगाया और देश अपने कब्जे में कर लिया। १७५२ ई०में दुरानोके सिंहासन अधिकारी शाहजमान महम्मदख़ांने एक अफगानको नवाबकी पदवी दे कर यहाँ भेजा। महम्मदख़ांने देशको अधिकृत कर मनकेरा नामक स्थानमें राजधानी स्थापित की। उनके मरनेके बाद उनके नाबानिग जाती सेर महम्मदख़ां राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इस समय रणजित्सिंह देश जीतनेमें लगे हुए थे। उनके मनकेरा अधिकार कर लेने पर सेर महम्मद डेरा इस्माइलख़ा भाग गये और वहाँ सिक्खराजाका क्रूरदही कर

उन्होंने पन्द्रह वर्ष तक राज्य किया। कर बाकी पढ जानिके कारण १८३६ ई०में नवनेशनसिंहने यह देश अपने अधिकारमें कर लिया। नवाबकी खर्च बर्चके लिये राजस्वका कुछ अंश देनेका नियम कर दिया गया। आज भी उनके वंशधर उस अंशका भोग कर रहे हैं। मिर्ख-शासनकालमें एपर डेराजात दोबान नख्हीमनके अधीन आ गया, पीछे इनके लडके दोनत-रायके हाथ लगा। १८४७ ई०में ब्रिटिश गवर्नमेंटका दम और ध्यान आकर्षित हुआ। गवर्नर एडवर्ड पीछे सर हरबर्ट) जब लाहौर दरवारमें प्रतिनिधि स्वरूप बना कर भेजे गये थे, तब उन्होंने राजस्वका एक संचिम बन्दोवस्त कर दिया। दूसरे वर्ष डेरा इस्माइलख़ा तथा बलूके योडाओंने एडवर्डका सुनतान तक साथ दिया तथा पञ्जाव अधिकृतकालमें भी उनकी यथेष्ट महायता का। पञ्जाव फतह किये जानेके साथ साथ डेरा इस्माइलख़ा भी अंगरेजोंके हाथ लगा। अंगरेजोंने इसे जिलेके सदर कायम किया और बलूको भी उसके अन्तर्गत कर लिया। १८६१ ई०में बलू एक पृथक् कमण्डोके हाथ सुपुटे किया गया और लोह जिलेका टंजिण्ड भाग डेरा इस्माइलख़ाके साथ मिला दिया गया। १८५७ ई०में सिपाहोविद्रोहके समय यहाँ भी विद्रोहका सूचना देखी गई थी, किन्तु डिप्टी कमिश्नर कर्नल कक्केने विद्रोह अग्नि धक्कनेके पहले ही उसे शान्त कर दिया। १८७० ई०में पञ्जावके लॉफ्टेनण्ट गवर्नर सर चेनरी दुरन्द जब एक दिन टाड शहरके तोरणहार हो कर हाथीको पीठ पर चढे मोतर जा रहे थे, तब संयोगवश उन्हें तोरणसे धक्का लगा और ओंघे मुंह बहासे गिरे और पञ्चत्वकी प्राप्त हुए। उनकी लाश डेरा इस्माइलख़ा में गाड़ी गई। उनकी मृत्यु होने पर जिला भरमें शोक फैल गया था। १८०१ ई०में युक्तप्रदेशके संगठनके समय भक्कर, लोह जिला तथा कुलाचो तहसीलके वत्तोस ग्राम इस जिलेसे पृथक् कर लिये गये थे।

इस जिलेमें ३ शहर और ४०८ ग्राम लगते हैं। लोक संख्या प्रायः २४७८५० है। यहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख, पठान, बलूची, जाट, चमार, धोत्री और मज्जाह लोग वास करते हैं। खेतोको अच्छी सुविधा नहीं है।

महर द्वारा जमोन नींको जाती है। गीह, नी, ज्वार, चोनी, तमाचू, लुबरी, मूंग, महर परहर पाटि जिसे-की प्रधान उपज है। डेरा इस्पाईसल्लो पीर खुरामान-के पाप वर्ष में डीवार घामदनी पीर खततनी होती है। जमई, नमक भादिकी घामदनी पीर गीह पीर बड़ी ज्वारकी एक तनी होती है।

घाघन-जायंकी सुविधाके लिये यह जिला तोन तासुख में विभाज है, डेरा इस भागका, टांड पीर कुमाबी। हर एक तहसील एक एक तहसीलदार पीर नावत तह सीलदारके अधीन है। डिप्टी कमिश्नर तथा सब कारी कमिश्नर द्वारा निवारकार्य सम्पादन होती है। एक संघकारी कमिश्नरके अधीन सुसिमाका इलाकाम है। दोबानो खांड डिप्टी क्लक बख द्वारा जमावा जाता है जिनकी घदासत बख में है।

जिलेमें दो मुनिसिपैलिटी हैं, एक डेरा इस्पाईसल्लो में पीर दूसरी कुमाबीमें। यहाँ ४ सेक्शन्नी, २२ प्रांट मरी ३ वार्ड पीर २८ वार्डका स्कुल हैं। इस जिलाम में वार्षिक ११६०० रु० खर्च होती है। इसमें सिवा यहाँ एक कारागार पीर एक पब्लिक है। जिलेमें योग्यतामकोप बहुत बख है।

१ लख जिलेको एक तहसील। यह पचा० ११ १८ से १२ १२ ८० पीर सिगा० ०० ११' से ०१ २२' पू० में अवस्थित है। मूपरिमात्र १६८८ वर्गमोन पीर लोकसंख्या प्राय १४४१६० है। इसमें २६० घाम नगर हैं।

१ लख जिलेका एक प्रधान शहर। यह पचा० ११ ३८' ८० पीर सिगा० ०० ११' पू० में अवस्थित है। लोक संख्या जनसंख्या ११०१० है। यह शहर हिन्दु नहीं है ३६ मोन, काहोरके २०० मोन तथा मुसलमान १२० मोन हुए पड़ता है। यह शहर १९वीं शताब्दीमें बन्धु के प्रधान मसौब सोहराबके अर्द्धके इम्पारनके लिये स्थापित हुआ। लखी नाम पर शहरका नामकरण हुआ है। यहाँ दो प्रिन्को वार्डरून, चिकित्सालय तथा बीपद्यालय है। यहाँके जमाख सबको पीर ची की एक तनी तथा दूसरी दूसरी कारीके जमई जमई पादिकी घामदनी होती है।

डेरा गाबीला—१ पचाबके अन्तर्गत मुसलमान जिमायका एक जिला। यह पचा० २० २१' से ११' २० ८० पीर सिगा० ६८ १८' से ०० १३ पू० में अवस्थित है। मूपरि मात्र ११०६ वर्गमोन है। इसमें उत्तरमें डेरा इस्पाईसल्लो, पूर्वमें हिन्दु नदी, दक्षिणमें उत्तर हिन्दुका मात सोमाख जिला पीर पश्चिममें सुवेमान पहाड़ है।

यह जिला बाबुलामय जिम्मेदारीमें सम्पाद्य है। एक पीरसे सुवेमान पहाड़ पीर दूसरी पीरसे हिन्दुका जिलारा इसको घेरे हुए है। जिलेके पश्चिम भागमें गिरि माता पहाड़को मातमूमिन्को पीर विस्तृत है। यहाँ बहुतने आबोल बन्धुजालिके पाववस्त्रान हैं। पहाड़में पर्यटक आबोलत निकसे हुए हैं यहाँ हिन्दु सूनी अदीन में आ कर वे गीधको एक जाती हैं। यहाँ पीर महर मन्थिमें वारहों मडोमि खन रहता है। अन्य नदियोंका खन अब खन जाता है तब बन्धुको मोय घपने घपने मरीगीको से कर पहाड़ पर चरने जाती हैं। पीयकासमें है, दोसी काय जमोनके लीके पानी मिश्रता है। पश्चिम-को पीर मडोके किनारे निर्जन मडमूमि इतिमोचर होती है। बीच बीचमें १८८ फुट गहरा कुआं मरमेंपड़को पीरके नया दिया गया है जिनसे पश्चिमको खन मिन जाया करता है। पूर्वकी पीर हिन्दु नदोके लखने जमोन कुख कुख खन रा जो गदरे है इसी कारण मनुष्योंका नाम जो इस कोर पश्चिम है। भा० स० का प्राय ३०११३० है। इसमें १ शहर पीर ७१० घाम नगर हैं। पश्चिमामिथीमें प्रधानत आठ हिन्दु पीर सिध मित्र खेबीके बन्धुको भोग है। इस पक्षमें खजुरके परिक एक देखे जाते हैं। यहाँका खजुर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँके ल'मलमें जो लखको मिलते हैं वे श्रेष्ठत खसामिके काय पाते हैं। खितोबारोको सुविधाके लिए यहाँ एक नहर काटो गई है। शहर पीर बामपुर तहसीलका पा घ कासापानो नामसे मयहर है। दो नदियोंमें वारहों मडोमि काते रगका पानो रहता है इतनी इस ल'मको कासापानो लख है।

यहाँके सुवेमान पहाड़की प्रधान चोटीका नाम एक माय है जो सतुष्टुइसे ७३६२ फुट ल'को है। इसमें बाद जो गम्बारी नामक चोटी है। पीयकासमें सुवेमान

पहाड़का ऊपरो भाग बहुत ठंडा रहता है। सुतरा यूरो-पियनोंके लिये बहुत मनोरम है। यहां ८२ गिरिसङ्कट है जिनमेंसे सङ्कट, सखोसर्वार चाचर, कद्दा और मोरो प्रधान हैं।

सिन्धु नदीमें जब बाढ आती है, तो पूर्वांशका कोई कोई स्थान डूब जाता है। जो जो ग्राम जलप्रावित होते हैं, वहां टलटल जम जानेसे जमोन उर्वरा हो जातो है। कभी कभी सिन्धु नदीमें भारो बाढ आ जातो है। १८३३ और १८४१ ई०में जब भीषण बाढ आई थी, तब सिन्धु नदीका जल २० फुट ऊपर उठ कर ६ कोस तकको जमोनको डूबाता हुआ शायद उपत्यका तक आ गया था। १८५६ ई०के प्रावनसे डेरा गाजीख़ाँका सेनानिवास बंद गया था।

खुनिजद्रव्योंमें यहांके पहाड़ पर लोहा, तावा और शोशा मिलता है। अच्छे कीयले भो पाए जाते हैं। जिलेके दक्षिणभागमें फिटकरी निकाली जातो है। पहाड़ पर मुलतानो नामको एक प्रकारकी भट्टो पाई जातो है जो भीषण बनानेके काममें आतो है और साधुनके बदले व्यवहृत होती है। यहां खार नामक एक प्रकारका पेड़ है जिसे जला कर सज्जो प्रसुत होती है। सिन्धुप्रावित भूमिमें सूंज नामकी काफो उगती है। जङ्गली पशुओंमें बाघ, हिरण, सूअर, गदहा और तरह तरहके पक्षी तथा कबूतर पाये जाते हैं।

इतिहास—पहले इस जिलेमें केवल हिन्दूजातिका वास तथा हिन्दूराजत्व था। जिलेके अनेक नगरोंमें आज भी हिन्दूराजाओंके कीर्तिकलाप वर्णित हुआ करते हैं। यहकि हिन्दू राजाओंमें वोरवर रसालूका नाम बहुत मशहूर है। रसालू देखो।

सङ्कर तथा दूसरे दूसरे स्थानोंमें सुसलमान आक्रमण की पूर्ववर्ती प्राचीन कीर्तियोंके अनेक ध्वंसावशेष देखे जाते हैं। ७१२ ई०में मुलतानके साथ साथ यह जिला अरब-विजेता महम्मद बेन्कासिमके हाथ लगा। सुसलमान राजत्वकालमें इस जिलेकी आय राजपरिवारको वृत्तिके रूपमें दी जाती थी। प्रायः १४५० ई०में तत्कालीन नवाबके आरमोय लोटीवंशके नाहिराँका प्रभाव बहुत बढ़ गया। वे किन और सोतपुर अञ्चलमें स्वाधीनभावसे

राज्य करते थे। नाहोरखंशमें डेराजात विभागमें अपना आधिपत्य विस्तार किया था। किन्तु पश्चिमप्रान्तवासो पार्श्वतीय बलूचो जातिके आक्रमणसे उनका अधिकार बहुत कुछ क्षाम हो गया। बलूचियोंमें मानिक सोफरव ही प्रधान थे। बाढ सरदार हाजो खों बहुत बड़ चट गये। इनके पुत्र गाजीख़ाँने १५वीं शताब्दीमें अपने नाम पर शहर और जिलेका नाम रखा। तभोमे डेरा-गाजीख़ाँ नाम प्रचलित है। उक्त बलूचो लोग मुलतानके राजाके अधोन सामन्तोंमें गिने जाते थे। क्रमशः वे अपने टलको मजबूत कर दो वर्षके बाद डेराजातके स्वधोन राजा हो गये। इसी वंशके १८ राजाओंने डेराजात पर राज्य किया और उनके उत्तराधिकारियोंने हाजी और गाजीख़ाँकी उपाधि धारण की। अकबरके समयमें गाजीख़ाँके वंशने नाममात्र सुगल साम्राज्यकी अधोनता स्वीकार की। यद्यपि इन लोगोंका राज्य इस समय भी जागोरमें गिना जाता था और उन्हें कुछ कुछ कर भी देने पड़ते थे, तो भी एक तरहसे वे सम्पूर्ण स्वाधीनता भोग करते थे। दक्षिणशंशमें नाहोरने १२वीं शताब्दी तक अपने स्वाधीनता बचाये रखी थी। सुगलोंकी अवनतिके समय १७३८ ई०में सिन्धुनदीका पश्चिम कूलवर्ती प्रदेश नादिरशाह दुर्गानेके अधिकारमें आया। इस समय गाजीख़ाँ दुरानोको अधीनता स्वीकार कर पैटक अधिकार निर्विवादमें भोग करने लगे। उनको मृत्युके बाद कोई उत्तराधिकारी नहीं रहनेसे यह जिला पुनः थोडे समयके लिये नाममात्र मुलतानमें मिला दिया गया। इस समय कलहोरा राजाओंने इस जिलेको अपने अधिकारमें कर लिया, किन्तु १७७० ई०में महमूद गुजर नामक अहमदशाह दुरानोके अधीनस्थ एक शासनकर्त्ताने इसे उधार किया। उन्हींके यत्नसे इस जिलेमें कई जगह कुएँ और नहरें काटी गईं, जिससे कृषिकार्यको अच्छो सुविधा हो गई है। दुरानो राजाओंके अधोन यहां कई एक व्यक्तियोंने यथाक्रम शासनकार्य किया। पीछे बलूचो जातिके अन्तर्विद्रोहसे यह स्थान शोभ्रष्ट और उत्सन्न हो गया।

इस समय नहरें आदि बरबाद हो गईं, कृषिकर्म उठ गया और प्रजा दुर्दशापस्त हो गई। रणजित्सिंहके

पम्पुदयके समय यह जिन्ना नाहोर दरबारके पञ्चोन  
 हुआ। १८१८ ई०में रषत्रित्तिहने पचना पाधिपथ  
 मिन्मुद तत्र खेला निदा। यहाँ तक कि इस त्रिमेका  
 टचिनीय भाग मो इन्के हाथ था गया। बहबन्पुरके  
 नवाब सात्तिक सुहच्छतानि नाहोर दरबारमें कुछ वार्षिक  
 कर ऐ कर ये मत्र नवीन पचिच्छत प्रदेश बतोर काओरके  
 ये निये। १८२० ई०में नवाबने इसके उत्तरीय भाग  
 पर मो खासा मारा। १८२१ ई०में माया जिन्ना सुनताम  
 के भावनमन्के हाथ था गया। द्वितीय मिन्मुद तत्र  
 मानमन्के लड़के मुलतात्रका इस पर अधिकार रहा।  
 बाद अब समूचा पञ्चान इटिय सबमें गढ़के शासनवीन  
 हुआ तत्र वह जिन्ना मो लोके माच साब इटियाके  
 टचनमें था गया। अबसे यह जिन्ना पञ्चरैलीके पचीन  
 पाया है, तमीसे इसको उत्तम दिन नूनो पौर रात  
 चोगुने होने लगी है।

जिन्नीकी रीतो फसल गिद्ध को प्रधान है। इसके पनावा  
 चम, पोप, तमाखू चाय, करे पौर लोन्नी वजय मो  
 बरम लडो होती। यहाँ ककन, गलोबा, वीन तथा  
 पौर नूरसे दूनी प्रकारके पयमके कपड़े तैयार होते हैं।  
 श्यमकी बुनावट मो यहाँको पच्छी होती है। यहाँ जो  
 हाथो दातको बुढ़िया बनती है वह यत्र जिन्नेमें बड़  
 कर होती है। इस त्रिमेके गिद्ध, बात्रा, मोक, पकोम,  
 फर्द चमड़ा पौर तिकहन कर(ची पौर सुनताम मीजा  
 जाता है तथा सड़मि गिद्ध, चम, मक, टचन, पीनो,  
 चमके पौर लोहेको पामटनी कोतो है।

इस त्रिमेमें रैम नईं सई है। लोग जहाज तथा  
 नाव द्वारा बपोखदुर्मि नदो पार कोरि है। १८ मोन  
 तत्र पको वजय पोट ६६ मोल तथा चको नदक गई  
 है। सवी परहर नामकी पको सड़क हो नरसे बड़ी  
 तथा मगहर है। शासनकार्यको सुविधाके निये यह  
 जिन्ना चार तहसीलोंमें बिभक्त किया गया है खेट  
 गाजोया, राजनपुर पौर गजुड़। जएज तहसीन तह  
 मौबदार पौर नाव तहसीलदारके पचीन है। डिप्टो  
 कमिश्नर कोषदारो मामभका बिचार करतें हैं पौर  
 डिप्टि क्लर दोबानोका। इन दोनोंके ऊपर सुनताम  
 त्रिभिन डिभिजनके डिभिजनल क्लर हैं।

गिन्ना-बिभागमें वार्षिक १४०००, २० शय होती हैं।  
 एकमेके मिना वहाँ करे एक पम्पुताल पौर पोपनालय  
 मो हैं। त्रिमेमें पाँच शहर मगत हैं,—खेट गाजोया,  
 दजन मौनहरा, यमपुर राजनपुर पौर मिघनकोट।

२ तत्र त्रिमेकी एक तहसील। यह पचा० २८ ४४' से  
 ३० ११' ४०' पौर देगा० ०० १०' से ०० १४' ५०' में पच  
 स्थित है। मूयविमाच १४१० वर्गमोन पौर लोकासंख्या  
 पात्र १८९४४ है। इसके पूर्वमें मिन्मु नड पौर  
 पचिममें लाखोन राज्य है। यहाँ एकमाय पौर फोर्ट  
 सुनरो नामक पर्वतवृक्ष क्रमयः ०४६९ पौर ६४००  
 फुट मसुठपुठसे ऊँचे है। इसी तहसीलमें इमी नामका  
 एक शहर पौर २११ पाम मगत हैं।

३ तत्र तहसीलका एक प्रधान शहर। यह पचा०  
 १० १ ४०' पौर देगा० ०० ३० ५०' पर मिन्मु नडके  
 सिनारे पर पचस्थित है। लोकसंख्या प्राय २१०११ है।

१४०१ ई०में माजोका मिरानी नामक खिसो बनूची  
 ने यह नगर स्थापित किया बा। नगरके पूर्वमें कस्तुरो  
 नामको नहर है। त्रिमेके दोनो बगल घने पामसे जंगल  
 हैं बीच बीचमें पनेक घाट मो हैं। पोपखालमें बहुत-  
 से लोन् यहाँ प्याय करतें पातें हैं। नगरके ऊपर एक  
 बहुत ऊँचा बर्य है जो १८१८ ई०में बाढ़से नगरको  
 बचानेके निये तैयार किया गया है। पच्छी यहाँ माजो  
 खाका ल्याम बा। यमी यहाँ पदाभत है पौर प्राचोन  
 दुर्ममें तहकोलकी कचहरा पौर सुनिय कार्यालय है।  
 इससे पचावा यहाँ टाउनहाल, बिधानय पोपनालय  
 डाकघर पादि हैं, बीच बीचमें पनेक ममजिठें मो टचने-  
 में पातो हैं। इनमेंसे माजोका पचदुन बहार पौर  
 चताखाकी मसजिद प्रसिद्ध है। सिन्नीके पाधिपथकाबमें  
 तत्र तीनों मसजिदें मिर्जाक कपासना-पट्टके कपमें गिना  
 जातो र्हे। यहाँ प्राचोन हिन्दू देवमन्दिर पौर दो सुसल  
 भाग साहुलोको समारिथा हैं।

शहरके लोन् पकोम पञ्जूर, गिद्ध, कपास, बंगनो,  
 जो चमके खादिको रवतनी पौर नूरसे नूरसे श्यामि  
 चौनी, चातुमेके तरह तरहके पान, बिलायतो कपड़े  
 चातु, मक तथा मरम मयालेको पामरनो कोतो है।  
 जिन्नी समय यहाँ श्याम पौर फरका कारवार बा, पच  
 मायः नईंके बराबर है।

श्रीपक्षकालमें नहरके किनारे मगाहमें दो वार हाट लगती है। गान्धिकाके लिये यहाँके किलेमें एक टम अनागेहो और दो टम पदातिक रहते हैं। १८६७ ई०में यहाँ स्यूनिस्पानिटी कायम हुई है। यहाँ रोडली वर्ना क्वलर हाईस्कूल और एक अस्पताल है।

डेरा गोपीपुर पञ्जाबके काङ्गड़ा जिलेको एक तहसील। यह अक्षा० ३१° ४०' से ३२° १३' ४०' और देशा० ७५° ५५' से ७६° ३२' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ५२५ वर्गमील और लोकसंख्या लगभग १२५५३६ है। इसमें कुल १४५ ग्राम लगते हैं। यहाँकी प्रायः लगभग दो लाख रुपयेकी है।

डेराजान—पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत एक कमिश्नरके अधीन एक विभाग। यह अक्षा० २८° ३०' से २८° १५' ३०' और देशा० ६८° १५' से ७०° पू०में अवस्थित है। इसके अन्तर्गत डेरा इम्माइलवाँ, डेरा फतहवाँ और डेरा गाजोखाँ ये तीन जिले हैं। यह उपविभाग उत्तरमें जीव बुदिन पहाड़ और दक्षिणमें जामपुर गहर तक विस्तृत है। इसकी लम्बाई ३२५ मील और चौड़ाई ५० मील है। १८४८ ई०में यह विभाग अंग्रेजोंके हाथमें आया। १५वीं गताब्दीमें यह विभाग बलूचके शासनाधीन था। सुन्तानके इन्हाधिपति सुन्तान कुसेनने जब देखा कि सिन्धुप्रदेशका अधिकार उनके हाथमें अब रहनेको नहीं है, तब उन्होंने बलूचसेनाओंको बुलाया और ननिक सोहरावकी वे सब प्रदेश जागोरमें दे टिये मोहरावके लड़के इम्माइल और फतहवाँने अपने अपने नाम पर दो डेरा अर्थात् वासस्थान स्थापित किये। इधर हाजोखाँ जो बलूचके प्राचीन मिरानो वंशके प्रधान थे और लड़ाके दरबारमें नौकरों करते थे, सुन्तान कुसेनके पोते महसूदके शासनकालमें स्वतन्त्र हो गये। उन्होंने अपने लड़केके नाम पर एक गहर बसाया जिसका नाम डेरा गाजोखाँ रखा गया। १५२६ ई०में बाबरके उत्तरोप भारत पर चढ़ाईके समय मिरानोने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। बाबरके मरने पर उनके लड़के कासराने, जो काबुलके शासक थे, डेराजान पर अपना अधिकार जमाया। फिर हुमायूँने इसका पूरा अधिकार मिरानोकी दे दिया। १७३८ ई०में नादिरशाहने सिन्धु

का पश्चिमीय प्रदेश हस्तगत कर लिया और मिरानोका मारा स्वत्व जाता रहा। बाद कई एक राजाअने इस पर एक एक कर आक्रमण किया मरा, लेकिन कोई अधिक दिन तक ठहर न सका। कालक्रमसे हरवट्ट उड़ बड़के सबसे यह विभाग १८४८ ई०में सटाके लिये अंग्रेजोंके हाथमें आ गया।

डेरा नानक—पञ्जाबके मुकदामपुर जिलेके अन्तर्गत बलूचाना तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० ३२° २' ३०' और देशा० ७५° ३' पू० पर रावी नदीके दक्षिण किनारे अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५१२८ है। यह मुकदामपुर गहरसे २२ मीलकी दूरी पर अवस्थित है।

इस नगरके निकट दूररी तरफ परिवारों ग्राममें मिर्वाँके आदिगुरु नानक रहते थे और उन्हीं ग्राममें उनके मृत्यु भी हुई। उनके वंशधर वेदोगल बराबर उन्हीं ग्राममें रहते थे, किन्तु जब वह ग्राम डरावती नदीमें कट गया, तब वे नदी पार कर गये और यहाँ उन्होंने एक नया नगर बसाया जिसका नाम अपने आदिगुरुपुत्र नानकके नाम पर डेरा-नानक रखा। तभीसे यह नगर मिर्वाँके निकट बहुत पवित्र माना जाता है। बाबा नानकके स्मरणार्थ यहाँ एक सुन्दर मन्दिर बनाया गया है जिसे दरवार माहव कहते हैं। गहरमें नानकके वंशधर ही प्रधान हैं।

एक समय यहाँ वाणिज्यव्यापार खूब जोर था। तब ही जानसे व्यवसाय कुछ कम गया है। तो भी यहाँका शाल प्रसृत करनेका व्यवसाय आज भी प्रसिद्ध है। टनी से कपास और चीनीकी रफतनी अधिक होती है। रावी नदीको बाढ़से नगरके विशेष अनिष्ट होन्की संभावना रहती थी, इसीसे यहाँ एक बाँध दे दिया गया है। इस पर भी मन्दिर और नगर भूगर्भ ग्रायो हो जानीकी आशंका सदा बनी रहती है।

यहाँ घाना, अंगरेजी और देगोभापा मिखानेके विद्यालय, श्रीपक्षानय आदि हैं। १८६७ ई०में यहाँ स्यूनिस्पानिटी स्थापित हुई है।

डेरापुर—१ मुकदामपुरके कानपुर जिलेको एक तहसील। यह अक्षा० २६° २०' से २६° ३७' ३०' और देशा० ७६° ३४' से ७६° ५५' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ३०८

वर्गमोन घोर मोहन प्या बंगमन १३८३८३ है। इममें  
२०३ घाम नमन है। गहर एक भी नहीं है। इमके  
उत्तरमें रिन्द नदी घोर दक्षिणमें सेहुर नदी प्रवा  
हित है।

२ सेहपुर जिलेका एक प्रधान नगर। यह सेहुर  
नदीके बाँधे किनारे आनपुर गहरके १० कोस पश्चिममें  
पवन्वित है। बड़ा तड़मौलको सबहरी प्रथम खो  
का नामा, निद्यालय, डाकघर आदि है। महाराष्ट्रके  
शासनकालमें (१०५६ १०६२ ई०खो) इस प्रदेशके शासन  
कर्ता मोविन्दराय पन्डित बड़ा एक सुदृढ़ दुम बना  
गये है। नगरमें अनेक पाषाण समजित मो है।

हेरीली श्रीगोद—श्रीगोद ब्राह्मणोंको जातिका एक मीठ।  
शासन प्रान्तमें ये पचिक स खामि पाये जाते है। इनका  
पाकार त्रिबाहू आकारक है। शुरुआत्याकी सन्धान होमि  
के कारण इनका पट नोचा है। खसने है कि लक्ष्मीके  
शापके से लोग मिरुच हो गये है। इमलिए खर्म खर्मके  
मो हीन है।

हेल (हि० खो०) १ रबोको फवसके सिने जोती हुई  
जमोन। (पु०) २ लहरीमें डीमिवाला एक प्रकारका  
बड़ा घोर खँवा पिक। इमको सबको मिक कुरको आदि  
इमानिके खाममें पातो है। इमके जोर खाये जाते है घोर  
उममेंके एक प्रकारका सेन निबसता है जो दना घोर  
अमानिके खाममें पाता है। ३ पक, पचो। ४ पकर  
महो आदिका ख ड, टिका, रीड़ा।

हेलडा (प० पु०) यह तिखोमी जमोन जो मदिराके  
सुखनि वा मद्यमस्त्रान पर लनके द्वारा माप हुए खोचक  
घोर बाणके जमनिके बनतो है।

हेला (हि० पु०) १ पचिका खोवा। २ मटकाट खोपायिके  
गमिमें खनि जानेका खाड ठेगुर।

हेलिया (प० पु०) प्रतिनिधि, से खिरी खानके निवादि  
योको घोरने बिचो समामे चपनी सधति हेनिके बिने  
भेके जाते है।

हेलिया (हि० पु०) खान या वीसेर मका फूलदेनि  
बाना एक प्रकारका पौधा।

हेलना (हि० खि०) १ खोच पर रखी हुई रोटीका  
पुसना। २ कपड़ेका लक लनाना।

खेवड़ा (हि० खि०) १ पाचाँ घोर पचिक, खेवड़ना।  
(पु०) २ महीरूपक, तग राम्या, जिसका एक किनारा  
ठान हो। ३ कूब लक मरका गान। ४ क कुगुनो संख्या  
का पहाड़ा।

खिण्ड (प० पु०) खिण्डिके बिने जोटा ठालुपी मिक।  
खिरिया—खामो प्रदेशके पूब माममें खमनाया नदीके  
किनारे पवन्वित एक प्राचोन ग्राम। भविष्यकालक  
के मतके यहाँ प्राचोन खानमें ताड़का राचमो रहतो बी।  
इसको खम्बु, रामचन्दके हाथमे हुई घोर इमी खान पर  
उसको इडिघाँ आलकमने महोमि मिठ गई।

(म मद्य० ५०५०)

खिरी (हि० खी०) टचकोज टिहलो।

खिल (हि० पु०) खैरी रोवा।

खिना (हि० पु०) यह खान जो मटकाट खोपायिके गमिमें  
खोच दिया जाता है ठेगुर।

खेना (हि० पु०) पक, पच पर।

खंस (प० पु०) सन्धानपी, धमागा।

खेय (प० पु०) पड्डको विगम पिड। इमका  
प्रयोग कई उद्देश्यके बिना जाता है। पचकेके खोच  
खेय दि कर लक खोद बाण सिखा जाता है, तर  
उम बाणका आकारके सन्धान प्रधान बाणके नहीं  
होता। इतका बिड —'खो है। जैसे जो मनुष्य पचके  
पके जिने है—बाड़े से बिन्दू हो, बाड़े सुनकमान हो,  
बाड़े मजो हो—समी लनका पादर करतें है।

खगर (हि० पु०) पहाड़ी रोवा।

खोगा (हि० पु०) १ यह नाच जिसमें पान लकी रहता  
है। २ नाच।

खोगो (हि० खो०) १ बिना पानको छोटी नाच। २  
खेयो नाच। ३ नाइरका यह पानोका बरतन जिसमें  
से खीरन काक करके सुभ्यत है।

खीड़ा (हि० पु०) १ बड़ी इनापको। २ कारतून टोटा।

खीडी (हि० खी०) १ पोसोका पन जिसमेंके चफोम  
निबसतो है। २ उमरा सुच टोटी। ३ खोटी नाच।

खीरे (हि० खो०) खानको बड़ी करके। यह खडाप  
मिने दूध पी, खामनी आदि खकानिके खाममें पातो है।

खोच (हि० पु०) पका हुआ घुवारा।

डोकर ( हि० पु० ) डोकरा देतो ।

डोकरा ( हि० पु० ) अशक्त और बृद्ध मनुष्य, वृद्ध आदमी ।

डोकरी ( हि० स्त्री० ) बृद्ध स्त्री, वृद्धी औरत ।

डोका ( हि० पु० ) तेल आदि रखनेका काठका छोटा बरतन ।

डोकिया ( हि० स्त्री० ) डोका देगी ।

डोकी ( हि० स्त्री० ) डोका देली ।

डोज ( अ० स्त्री० ) माथा, खुराक ।

डोडहयो ( हि० स्त्री० ) तलवार ।

डोडहा ( हि० पु० ) वह साँप जो पानीमें रहतो है ।

डोही ( म० स्त्री० ) चुपविधिप, एक प्रकारकी बेल । इसकी पर्याय—जोषन्ती, शाकथे छा, सुखालुका, बहुवमी, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मपत्रा और जीवनी है । इसमें कटु, तिक्त, उष्ण, दीपन, कफ, वात, कण्ठामय रक्तपित्त, दाहनाशक और रुचिकर गुण माना गया है । ( राजनि० )

डोही ( हि० स्त्री० ) औषधके काममें आनिवाली एक प्रकारकी नत्ता । इसका दूसरा नाम जीवन्ती है । यह मधुर, शोतल, नैऋहितकर, विदोषनाशक और शौर्यवर्धक मानी जाती है ।

डोडो ( अ० स्त्री० ) एक पूर्व समयकी चिट्ठिया । यह वत्तखके बराबर होता थी । इसका शरीर भारी और बंदहूँ था । यह अपने बचावके लिये कुछ नहीं कर सकतो क्योंकि यह अधिक लड़ नहीं सकतो थी । १६८२ ई०के जुलाई मास तक यह मारिशस टापूमें देखी गई थी । १८६६ ई०में इसको बहुतसी हड्डियाँ पाई गई थीं । यूरोपियनोंके बमने पर इस दीन पत्नीका समूल नाश हो गया ।

डोब ( हि० पु० ) गोता, डुबको ।

डोबा ( हि० पु० ) डुबकी, गोता ।

डोम—भारतवर्षकी एक अस्पृश्य और नीच जाति । ये कई एक स्थानोंमें विस्तृत तथा नाना श्रेणियोंमें विभक्त है । इनकी उत्पत्तिके विषयमें बहुतांका मतभेद है । विहारका मधैया डोम कहता है, कि एक दिन महादेव और पावँतोने मंत्र जातियोंको भोजन करनेके लिये निमन्त्रण किया था । डोमोंका आदिपुरुष सुपत भक्त

मन्त्रमें पीछे निमन्त्रणस्थान पर पड़'प कर देगा, कि, अन्यान्य जातियोंका भोजन ग्रहण ही गया है । उमें बहुत भूख लगी थी इसलिये उमने मधोका उच्छिष्ट भोजन एकत्र कर अपनी भूख तृप्त कर ली । उपस्थित मनुष्य इस दृष्टित कार्यमें समको मूख निन्दा करने लगे । अन्तमें यह जातिपूत कर दिया गया । विहारके किमा भिक्षोपजीयो डोमने उसकी जातिकथा सुने जाने पर यह अपनेकी उच्छिष्ट भक्षण धननाता है । परन्तु मन्त्र और पवित्र मन्त्रान्तर् डोम अथवा उत्पत्ति-विषयगत कुछ दूसरा ही मतमाने हैं । ये कहते हैं, कि यागडा जातिमें नैट श्रेणीके पुत्रके पारस तथा चण्डाल जातिकी स्त्रीके गर्भमें कालुघोरका जन्म हुआ । इससे गो ।

वहो कालुघोर समस्त डोम श्रेणियोंका आदिपुरुष है । कालुघोरके प्राणघोर, मनघोर, यागघोर और शाण-घोर नामके चार पुत्रोंमें आदरिया, विगमनिया याजु निशा घोर मधैया इन चार श्रेणियाँके डोम उत्पन्न हुए हैं । धकल देशिया अथवा तपसपुरिया डोम भी अपने की कालुघोरके वंशज वतनाते हैं । ये दूसरेके मत गमोर-को एक स्थानमें दूसरे स्थान तक पर चार घोर चित्ता काटते हैं । इन डोमोंका प्रवाद है, कि महादेवने कालु-घोरके एक पुत्रकी गद्गामे जल नानि भे जा या । गद्गानट पर आ कर उसने देखा कि बहुतमें मनुष्य शवकी जना नैके लिये वहाँ इकट्ठा हो रहे हैं । तब नृत्यशक्तिके आत्मोद्यमे रूपसे ले कर उसने मडा खोटा करके चित्ता प्रस्तुत कर दी । नीटने पर शिवजानि उसे इस तरह अभिशाप दिया 'तुम तथा तुम्हारे वंशधर बहुत काल तक नृत्यदेहका मत्कारादि करके कालयापन करोगे ।' डोमकी स्त्रियाँ धात्रोका काम कर 'धाय' नामसे पुकारो जातो हैं । इस श्रेणीके पुत्र मजदूरो कर अपने जीविकानिर्वाह करते हैं । एक श्रेणीके डोम बाँस काट कर उसकी फट्टियोंसे सूत्र डले आदि बनाते हैं । इन्हें बाँसफोड़ कहते हैं । इसी श्रेणीका जो डोम छप्पर छानता है वह छपरिया कहलाता है ।

डोमोंमें भिन्न भिन्न गोत्र हैं । इनमें ब्राह्मणोंके गोत्र हो अधिक प्रचलित है । साधारणतः डोमोंके पाँचवें पुरुषमें विवाह निषिद्ध है । विहारके मधैया डोमोंमें

विवाहके विधि ब्राह्मणे नियम प्रथम प्रवक्षे । ( १ )  
 पिता ( २ ) पितामहो ( ३ ) प्रपितामही ( ४ ) ब्रह्मा  
 प्रपितामही ( ५ ) माता, ( ६ ) मातामहो तथा ( ७ )  
 प्रमातामहो ये त्रिषु संबंधीकौ कौते । एषु च ब्रह्मिणो मयैवा  
 होम विवाह नर्हौ करता । ब्रह्मण्ये होमिनि  
 कौचन एक मूल्ये हो प्रपिता विवाह भियम-विषय  
 । ब्राह्मण्ये कर्मणे कर्म १ पौत्रोर्मि विवाह नर्हौ होता,  
 परन्तु भौषादि रक्षणे पर १ पौत्रोर्मि ही विवाह नर्हौ  
 हो सकता है । २४ परमनामासीको होई होम सपिण्ड  
 हो पश्य नर्हौ करता ।

यदि किसी पृथ्वी आतिवा मनुष्य होम होना चाहे  
 तो वह पञ्चायतको निर्दिष्ट धर्म और निष्कटवर्ती होमो  
 हो एक मोक्ष दे कर होम अतिमें सिद्ध सकता है । जो  
 मनुष्य होम संबंधीतुष्ट होना चाहता है, उसे तिर मनुष्य  
 कर पञ्चायतके एक प्रकारका हीका पश्य करनी पड़ती  
 है ।

प्रथम और पूर्व ब्रह्मण्ये होम होई हो धर्मकामि  
 पत्नी मनुष्योका विवाह कर देते हैं । १० वर्षके पश्चिम  
 कल्पकी कल्पिका विवाह नर्हौ करनिये समाजमें कल्पके  
 पिताकी निम्ना होती है । इनमें कल्पका पय १,  
 सपथेके हो कर १५ सपथे तक है । ठाका त्रिकोणे होम  
 विवाहकालमें पामोयकवर्तीको धामन्त्र्य करते हैं ।  
 निमन्त्रितवर्षके पशु चने पर बरका पिता सुवचो मोदमें  
 ही कर मरुप पर बैठता तथा कल्पका पिता ही  
 कल्पको से कर बरके सामने बैठ जाता है । कल्पका  
 पिता ७ पीढ़ीके तथा बरका पिता १ पीढ़ीके नाम उच्चा-  
 रण करता है । इसके बाद ही ईश्वरकी इत विषयमें  
 साक्षी रहते हैं और बरका पिता कल्पके पिताके यह  
 जिज्ञासा करता है कि नष्ट अपनी कल्पको परिव्राम  
 करता है या नहीं । कल्पके विषयके सम्प्रतिशुचक उत्तर  
 पाने पर बर कल्पके अयाजमें सिद्ध देता है । इनो  
 तरहके विवाहकाल मरुप होती है । २४ परमणिके  
 होम विवाहसमयमें विवाह-धर्मके मन्त्राकरण पर मन्त्रा  
 जलने पूर्व एक पात्र रखते हैं । इत पात्रके अवर बर  
 और कल्पके हाथ रक्षते हैं । धर्मपण्डितके मन्त्रादि  
 पढ़ने पर धर्ममें वर और कल्प दोर्मकी मासा परस्पर

बदली जाती है । विवाहके पहले दुर्गा, महादेव मयिध  
 प्रकृति देवताकीको अर्चना की जाती है ।

होमिनि बहुविवाह और विधवा-विवाह निषिद्ध नर्हौ  
 है । विधवाके पात्र तमके अमाका कनिष्ठ भाई विवाह  
 कर सकता है ; बन्धु और सिद्धूर दाग ही सगर्ह  
 विधवा-विवाहका नष्ट है । सुयिंदाबादके होमिनि पति  
 यको परिव्रामकी प्रथा प्रचलित है । परन्तु यह परिव्राम  
 पञ्चायतके मन्त्रातिष्ठमने होना चायच्छक है ; पञ्चायतके  
 'अप्ये' अर्थमें हो सब मनुष्यको आती रहते हैं । उत्तर  
 माग्यपुरमें कामो कुष्ठ पदान्त्रि कर सक्के सामने  
 दो कल्प कर देता है और इन तरह विवाह सम्बन्ध  
 विधिषु हो जाता है । सुहोर्मि २५ स्वामी पञ्चायतको  
 एक भाग देता और तमके स्वर काटता है । अत्र कोई  
 किसी धर्मका सतीत नष्ट करता है ; तो वह तमके पूत्र  
 स्वामीकी ८, सपथे दे कर ही समाजमें सुवि पा  
 लेता है ।

होमनि पञ्चायतको भिय सिद्ध सपाधि है । बका—  
 सरदार, प्रधान, मन्त्राल, मरार, मोरैत और अविराज ।  
 एक मनुष्यको सन्तान ही उत्तराधिकारोत्तमने पञ्चायत  
 नाम प्राप्त करते हैं ; प्रति पञ्चायतके अयोर्मने एक एक  
 कड़ीदार रहता है ।

होमिनि धर्मको शुद्धा नर्हौ है । विभिन्न प्रदेशोय  
 होमको धर्मप्रथाकोको अमानता देखी नर्हौ जाती ।  
 इनके कोई ब्राह्मण पुरोहित नर्हौ रहनेके कारण इनका  
 अमानुष्ठान मिय सिद्ध कामोर्मि विभिन्न पात्रातिमें पण्ड  
 गया है । भागिनेव हो विषेयकर पुरोहितका काम  
 करता है । भागिनेव धर्मका भागिनेयमन्त्रोय विभी  
 अक्षिके न रहने पर परिवारका अन्ता हो मन्त्रादि पाठ  
 करता है । ब्रह्मण्ये ब्राह्मण्ये विभीमें देपरिया तथा  
 अन्त्या विभीमें धर्मपण्डित नामके धर्मिष्ठ होमो'मि  
 पुरोहितका काम किया जाता है । इनका पय पुत्रवानु  
 कर्मिक है । मनुष्यीमे तथिकी धर्मोदेके ये पश्यामे  
 कीति है । अन्त्या परगनेमें नायित हो पौरीक्षिक  
 करता है ।

ब्राह्मण्ये और पश्चिम ब्रह्मण्ये बहुतेमें होम संबंधी  
 हैं । परन्तु राजा और अन्त्ये अतिरिक्त धर्मराज मो इनके



प्रधान उपास्य हैं। वे दुर्गापूजाके समय ढाकपूजा किया करते हैं। मध्य बङ्गालके डोम एकान्त कालीभक्त हैं। पूर्व बङ्गके बृहत्तम डोम श्रीमनभक्तकी गुरुरूपसे पूजते हैं। इनमेंसे थोड़े ऐसे भी हैं जो महाराज हरियन्द्रसे अपने उत्पत्ति वतलाते हुए अपनेकी हरियन्द्रो मानते हैं। उनका कहना है कि हरियन्द्र जब अपना सर्वस्व विज्ञामित्रकी दान कर चुके थे तब उन्होंने एक डोमके निकट टासल खोकार किया था। डोमके घरमें आ कर और उसके व्यवहारसे मस्तुट हो कर उन्होंने समस्त जातिको अपने धर्ममें दोलित किया, तभीसे डोम वह धर्म प्रतिपालन करता आ रहा है।

पूर्व बङ्गालमें आवाणिया पूजा डोमोंका प्रधान उत्सव है। यह उत्सव आषाढ मासमें किया जाता है। उस समय एक शूकर बलिदान कर एक पात्रमें उसका शोणित और दूधमें दुग्ध तथा तीसरेमें सुरा रगु कर नारायणकी उत्सर्ग किया जाता है। भाद्र कृष्णरात्रिमें भी इसी तरह वे एक दिन एक पात्र दुग्ध, चार पात्र सुरा, एक नारियल और गाँजा इत्यादि हरिरामकी उत्सर्ग करके वाट शूकरकी बलि दे कर उत्सव करते हैं। कुछ दिन पहले बङ्गालमें सर्वत्र एक ही प्रथा थी। सूर्य या चन्द्रग्रहणके समय प्रत्येक हिन्दू गृहस्थ द्वारके बाहरसे बहुतसी ताम्रमुद्गाएँ रख देते थे जो डोमोंको ही भिला करती थीं। परन्तु आजकल ग्रहाचार्योंने उन पर अपना स्वत्व जमा लिया है। रिमलो साहबका अनुमान है, इस प्रथासे प्रतीत भी होता है कि डोम पहले अग्नि, जल, वायु प्रभृति भूतोपासक अनार्य जातियोंके पुरोहित थे।

विहारके डोम भी महादेव, काली, गङ्गा प्रभृतिको समय समय पर पूजा करते हैं। इनके अतिरिक्त श्याम सिंघ, रक्तमाला, गोहिल, गोरैया, वन्डी, लोकेश्वर और दिहवार प्रभृति इनके अग्रण्य देवता है। इनमेंसे ये श्यामसिंघकी अपना आदिपुरुष अनुमान करते हैं। श्यामसिंघ ही इन लोगोंका प्रधान देवता हैं। दरमारीके देवधा नामक स्थानमें इनका एक मन्दिर है। विवाह अथवा और किसी प्रकारके उत्सवमें डोम मटीकी पिण्डा-कृति बहुतसी मूर्तियाँ निर्माण करके शूकरकी बलि

देते हैं और उनकी उपासना करते हैं। ग्रामके वाहर-में एक घरमें प्रथवा बृहत्तम नोचे पूजाटिका कार्य किया जाता है। कहना नहीं पड़ेगा, कि इन देवताओंकी परब्या और उत्पत्ति-विवरण अमंग्य है। जो डोम अपने कार्योंमें तथा मृत्यु, या किसी दूसरे कारणसे प्रमिड हो गया है, डोम लोग उसे ही ठाकुरके जैसा उपासना करते हैं। श्यामसिंघ भी सम्भवतः इसी तरहसे ही उत्पन्न हुए होंगे। गयाके निकटस्थ मधैया डोम प्रमित उक्त है। जब कोई उक्तैतिकी निवे वाहर निकलता है, तो पहले वह अपने मङ्गलके निवे मनमारो माई देवोको पूजा कर नेता है। बहुतांका अनुमान है कि यह देवो कालीके ही नामसेट भाव है। परन्तु दूसरे इस देवोको पृथिवी वतलाते हैं। इस देवोको उपासनाके निवे प्रतिमूर्त्तिकी प्रयोजन नहीं पड़ता है। घर में प्राथ विलम्ब परिमित स्थान पर गोबरके जलमें एक मण्डली बनाई जाती और उपासक उस मण्डलीके सामने अपने छुटनेको टेक कर बैठता है। वाट टाङ्गिने हाथमें डोमोंकी प्रमिड कुल्हाड़ी ले कर उसके द्वारा वाईं गार्हमें एक जगह काटता है। वाट वह अंगुलीसे चार पाँच बुन्द लेह ले कर मण्डलीके मध्य चिह्नित कर देता है, तथा मृदुस्वरमें देवीके निकट प्रार्थना करता है कि आजकी रात्रि खूब अन्धकारमय हो, जिससे उसे प्रसुर धनचोरोमें हाथ लगी एवं वह अथवा उसका कोई अनुचर पकडा न जाय।

बहुतांका विश्वास है कि डोम मृतदेहका न भी अग्निमत्कार करते और न उसे मडोमें गाडते हो हैं। वे निशियोगमें मृतदेहकी खण्ड खण्ड करके पासकी नदोमें फेंक देते हैं। जो कुछ हो, यह भोग्य धारणा अत्यन्त असुलक है, सम्भवतः डोमोंकी पहले रात्रि-योगमें हो मृतसत्कार करनेसे बाध्य करानेसे ऐसा प्रवाद प्रचलित हुआ होगा। ढाका प्रदेशमें डोम मृतदेह नदीमें फेंक देते हैं। सम्भवतः होने पर उसको देह गाड़ दी जाती है। आजकल अधिकांश स्थानमें ही दाह करनेको प्रथा प्रचलित हो गई है। मृतका सत्कार समाप्त होने पर वे स्नान कर एक एक करके लोड़े, पत्थर और सूखे गोबरको स्पर्श कर शूड हो जाते हैं, तथा

घतकी घेताकाके उहेइमे पय धीर मय लखगं करती है। ८ दिन तक कोरे मज्जनी या मांस नहीं खाता है। १०वें दिन सूपरका मांस का खर धीर मय पो कर लखन करत है। पचिम बङ्गाल धीर बिहार प्रवेगमें डोम प्रायः घतका पन्थिसखार ही करत है। छिकिन को बान्त प्रथति रोन्वे पबना तोम तपसे कम भयखामों मरता है उमे गाड़ दिवा जाता है। नयां खान काम पर ११वें १२वें या १३वें दिनमें घतका त्राह होता है।

समस्त हिन्दू डोमोंको पञ्चगत हुना धीर भयसे टैवत है। इनका धाधार व्यवहार तथा धाघ प्रथति ठेमा अथव्य है कि हिन्दू उनको बाबा स्पर्श करनेसे भी पपनेको पपनिज समझते है। किन्तु भी उनका काम ठेमा मुग म है जिमसे मासु म पड़ता है कि वे दया मायासे रहित है। इनका मयदोप धीर दरिद्रहोय पञ्चगत प्रथन है। वे जो कुछ उपाय करत है उसे मय दयादिमें व्यवहार जानते है। मविपमत्तु लिए ये कुछ मो बचा कर न रहते। एका प्रवाद है कि ठाकाके बिसो नवाकने जन्मदथा काम करनीके निचे एक डोम को म गावा था। ठाकाके डोम लपोके म मय है। प्राप्तिदुःखाना कार्यमें परिचित करनीके निचे प्रायः प्रति दिनमें एक डोम निवृत्त है। जब दखित मनुष्यको फानी हो जातो है तब तब डोम पुहार म हारापो या पुहार मय भावम सह कर बिजाता है। नव मोचता है कि, एमा करनेसे ही नव पापसे मुक्त हो जायता।

डोम श्मशानघाट बहुत माय सुबरा रखता है। डोमो की सहायताके बिना कामीमें घतदेह सन्धारमें विधीय अस्तुविजा होती है। वे पहले बिता मत्रा देते धीर तब पन्थि, पयान तथा काठ प्रथति का देते है। इन कार्यके लिए वे घतपन्थिके धामीपसे पयलानु मार कुछ उच्य को म है। अन्तवता प्रथति खानो के श्मशानघाटमें बहुतसे डोम निवृत्त है।

ममो डोम श्मशानघाटके कामीमें नये नहीं रहते, परन्तु घतदेह सन्धारके पत्रके धीर वीक्षिका को काम है उनसे ये मोन पचना जातोय पैगा पचव्य भागते है। धाघ सम्बन्धमें इन लोगोमें कोरे रोक टोक नहीं

है। ये घुपर, चौड़े, कुत्ते इ म, मूने इत्यादिका मांस खाते हैं। बिसो बिसो देयके डोमोंमें गोसास भी प्रय कित है।

डोम धीरोका कुपा हुपा द्रव्य नहीं खाता है। इस सम्बन्धमें एक गल्प इस तरह है—एक दिन डोमोंका धादिपुदय सुपत मज्ज पञ्चगत ज्ञान धीर सुभात्त को वूर देयके धरकी धीर धा रहा बा। राप्तेमें उसने एक धीरोको मटङ्गेकी पोठ पर बहुतसे पपङ्गे म्पाट कर से जाति देका तथा उसने कुछ भाघपदार्थ धीर धीरा ज्ञन मांगा। धीरोने उसे कुछ मो न दिया। इस पर डोमोंमें गानिवोंको बोझार होने लगी। पन्थिमें हमने धीरो को मार कर मया दिया धीर उसक मटङ्गेको लकी अयव मार कर मांस का लिया। कुपा निवृत्त होने पर मटङ्गे को जन्वा पा उसे बहुत दुःख हुपा। धीरो की इस पापका मूल है यिसा मोच कर वड धीरो जातिको पञ्चगत हुपादिति टैवनी लया। लमो समयसे कोरे डोम धीरोके घरमें पबना लनका म्पागं बिया हुपा पदाघं मन्वच नहीं करता है। कोरमुसबानो पाहु,रिया तथा विधेनिधिया डोम न तो चौड़े पञ्चकति धीर न कुत्ते को मारते है। वे कोय मटङ्गेनिमें खाटका जन्वा नहीं लगाते। उन देयके डोम कुत्तेको तो नहीं मारते ममर मारे गधरके डोम कुत्तेको मार कर पबं ठपायन करत है।

एव टोकरे प्रथति प्रसुत करना ही डोमोंका जातिगत व्यवसाय है। बिसु इन लोगोंमें यव बहुत जो छविचार्यमें नय मने है। इनके रीयतो खल नहीं है, ख्याति से प्रायः काम परिवर्तन बिया करत है। मान भूम जिकेके दखिनाममें यिपोत्तर कोमोका पबिचारमुक्त है। बहुनिया डोम बिवाहकाममें भाजि बजाते है धीर जिया यानबाघ बिया करतो है। बिसो बिसोके मतसे धीयं प्रति जो पन्थारनसे मने वा डोमोंका व्यवसाय है। इस धीरोके डोम पविच दिन एक म्यान पर नहीं रहते। वे बिसो छोटे घाममें राप्तेके निकट धिरकी बांन्ती धीर नहींसे धीरो करनेके निचे इतर लखर निवृत्त पड़ते है। मर्येया डोममें मयके एव धीर नहीं होते। मयाभानो मयैदा बांघ धीर छविचार्य द्वारा काच सेपच करत है।

महामहोपाध्याय पण्डित हरप्रसाद श्यामोजिका कहना है कि भारतवर्षमें बौद्धधर्म श्रव तक भी सम्पूर्ण रूपसे लुप्त नहीं हुआ है। भारतवर्षके भिन्न भिन्न स्थानोंमें डोम बौद्धधर्मके अस्तित्वका साक्ष्य देते हैं। वे यह भी कहते हैं कि डोम ब्राह्मणोंका प्रभुत्व स्वीकार नहीं करता। धर्मपुरोहित अथवा डोमोंमें उनका धर्मानुष्ठान किया जाता है। बुद्धदेवका एक नाम धर्मराज है। सबसे पहले कालु डोमने धर्मराजका पौरोहित्य प्राप्त किया था। धर्मराजकी पुस्तकमें लिखा है कि गोहंखर धर्मपालने महामहोपाध्यायकी मन्त्रोंके षट् पर नियुक्त किया था। महामहोपाध्यायकी अत्यन्त छुणा करना था। किन्तु धर्मराज रज्जाकी वस्त्र धारित थे। महामहोपाध्यायने भोजा रज्जाके पुत्र लाउसेनकी विविध उपायसे विनष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे। परन्तु धर्मराजका प्रियपात्र होनेके कारण वह उसका कुछ भी अनिष्ट कर न सका। महामहोपाध्यायकी मारी चेष्टा निष्फल होने पर उसने लाउसेनकी युद्धके लिये कामरूप और उड़ोसा भेजा। धर्मराजके अनुग्रहसे लाउसेन प्रत्येक कार्यमें ही सफल हुआ। अन्तमें महामहोपाध्यायने भ्रम समझ कर अपने भाँजेकी प्यार करने लगा। मद्य और शूकरका मांस खानेकी स्वाधेनता दे कर लाउसेनका प्रिय सेनापति कालु डोम धर्मराजका पुरोहित बनाया गया। धर्मपाल बौद्धधर्मावलम्बी थे। साधारण मनुष्योंको सुविधाके लिये मालूम पड़ता है कि बौद्धधर्मसे धर्मराज पूजाकी छटि धर्मपालके समयमें ही हुई है। वह पूजा आज भी प्रचलित है। डोम एक दृश्यसे देवताकी अर्चना नहीं करते। डोम प्रायः मृगशरके मांससे धर्मराजकी उपासना करते हैं। ध्यानके मन्त्र सुननेसे धर्मराज ही बुद्धदेव हैं, ऐसा प्रतीत होता है।

“यस्यान्तो नादिमध्ये न च हर चरणं नास्ति कागनिदानम् ।

नाहारं नादिरूपं नास्ति अन्नं स्रपस्य ( ? )

योगीन्द्रो ज्ञानगम्यो सकलजन्तुहितं सर्वलोकैकनाथम् ।

तत्त्वं तत्र निश्चिनं मरघद् पातु वः शुभमूर्तिः ॥”

इस मन्त्रकी सम्यक् आलोचना करनेसे बुद्धदेवका रूप ही मनमें उदित हो जाता है। शास्त्रोक्तोंमें और भी कहा है कि शूकरवलि और ध्यानके लिये धर्मराज

पूजा बौद्ध धर्मानुगत नहीं है इसमें प्रायः सब कोई मन्देह कर सकते हैं। परन्तु बौद्धधर्मका इतिहास पढ़नेसे यह मन्देह जाता रहता है। मोहटेगोय तारानाथके पुस्तकमें लिखा है कि रामपालने राजत्व कालमें विरूप आविर्भूत हुए। वे धर्मपाल नामसे भी प्रसिद्ध थे। धर्मपालके शिष्यका नाम काल-विरूप और कालविरूपके प्रधान शिष्यका नाम विरूप-रुद्रक था। ये त्रिपुराके राजा थे। ये आचार्य कालविरूपके निकट दीक्षित हुए, बाद सिद्धिनाभ करनेके लिये भविष्यवाणीके अनुसार इन्होंने डोम जातिकी पद्मावती नामकी किमी स्त्रीकी शक्ति रूपसे ग्रहण किया। इस पर प्रदाने उक्त राज्यमें निकाल दिया। राजा डोमनोके साथ जद्दल जा कर तब रक्षा करने लगे और सिद्ध हो कर डोमराज या डोमा वरुण नामसे परिचित हुए। बाद एक दिन त्रिपुरा राज्यमें भागी उपद्रव उपस्थित होने पर ये विग्रेष अनुकूल ही कर वशी गये। यहां आ कर वे धर्म नामक बौद्ध तान्त्रिक मत प्रचार करने लगे। बहुतसे इनके शिष्य हो गये। डोमाचार्यकी अद्भुत क्षमता देख कर राटदेवके राजाने भी उनका शिष्यत्व स्वीकार किया और दूमरे दूमरे लोग भी इनका यथेष्ट आदर करने लगे। धर्म उपासनाने भी वृद्धि पाई। बौद्धधर्मके शिष्यकालमें धर्म उपासना प्रचलित हुई। धर्मराजकी अर्चना बौद्ध उपासनाको तान्त्रिक आकृति है। इस उपासना प्रणालीमें भङ्गो, डोम प्रभृति अन्वयजोमें आवृष्ट है। बौद्धधर्मकी शिष्यावस्थामें बुद्ध और बोधिसत्वोंकी उपासना परित्यक्त तथा दिक्पाल और धर्मपाल प्रभृतिकी पूजा प्रचलित हो गई थी।\*

बहुतांके मतसे डोम भारतकी आदिनिवासी अनाथ जातिकी एक श्रेणी है। इनको आकृति देखनेसे भी ये बहुत कुछ उन लोगोंसे मिलते जुलते हैं। मधैया डोमोंकी आकृति छोटी, वर्ण काला, बाल बड़े बड़े और आंख अनार्यासी होती है। पूर्व बङ्गालके डोमोंके बाल काले और लम्बे होते हैं। किसीका मत है कि डोम द्राविड श्रेणीके अन्तर्गत है। परन्तु इस सम्बन्धमें

\* Journal of the Asiatic Society of Bengal for 1895,

पवित्रताका एक मत नहीं है। जो कुछ जो, कई यथास्थितिसे होम धम्मत्त कीन और क्वचित् कार्य करके सामन्तपण करते हैं।

पूर्वी होमोंके आचार-व्यवहार तथा और समी तरहके काम बहानाके होमोंके बहुत कुछ मिलते जुलते हैं पर जिस तरह बहानाके कई काम धर्मतत्त्वको न जना कर के कष्ट कर दि व देते हैं उस तरह इस देयमें नहीं है। यहाँके होम हिन्दूके ऐसा मृतदेहको ब्रह्मती हैं पर जिसको पवना पच्छो नहीं है वह नहीं है कि क देता है। भुँवरिकी साम पाके यह धर्मो जो पाके गरीब, नदीमें डी डेको जाता है। सिखिन मोरखपुरका सर्वथा होम मृतदेहको बहानाके जोड़ देता है। यह काम तथा पयोग बहानाके होमों मरोका है। हिन्दूके ईसि कामा, मन्नाटेन पादि भी इनके उपाख्यदेवता हैं। पोपन क्वचको भी ये लोग पवित्र मानते और उसको पत्त पादि तोड़नेके करते हैं। हिमाचल प्रदेशके कुमाऊँके काम इन इन कामोंको ब्रह्माड्डिके देवती हैं। यहाँ तक कि इनमेंके कोई यदि उसको करमें प्रवेक कर जाये तो घरको पवित्र करनेके बिदे वह गोबर पादिसे नोपता है। पादाव मदान तो बिनो जानतये जो जो नहीं मकता। यहाँके कुछ होम ऐसे हैं जो पच्छो पच्छो पवके सुगत तथा तरह तरहके बरतन और ब्रह्मको पीटी बनाते हैं।

यह जाति पश्यम् है खामने यदि उनमें पर्यं जा जाव तो स्थान कर १०८ बार मायत्रो खप करलो पड़ती है। एषु प्रमाणा स्थात्वा वाक्कवचर्त क्ये १।  
( मत्स्यसुक्तं २९ वचन )

होमकीर्मा ( हि० पु० ) एक प्रकारका बड़ा चौथा । इसका सारा शरीर खाना होता है।

होमतमोटा ( हि० पु० ) एक पक्का जाति । ये पीतल तान का काम करते हैं।

होमनगड़—युद्धप्रदेशके धम्ममत मोरखपुर जिलेका एक प्राचीन दुर्ग। यह मोरखपुर नगरेसे मात्र १६ मोल उत्तर पश्चिम दक्षिण और रामो दोनी नदियाँके मध्यस्थानके पास अवस्थित है। दुर्ग का अवस्थान असाधारण दुर्गम है। इसके उत्तर पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण पश्चिममें

रोडिन नदी, दक्षिणमें रामी नदी, उत्तर-पूर्व, पूर्व और दक्षिण-पूर्वमें क्वत्ताराधुपा नाका है। यहाँ जानमें यह प्रायः चारों ओरसे चहार दीवारीकी भाँति विरल रहता है। यद्यपि यह चमी टूटीकूटी अवस्थामें पड़ा है तो भी यदि चाहे ता फिरसे इसे पूरा करीया सुदृढ़ दुर्गमें बना सकते हैं। प्राचीन खानमें यह एक सुनय्य दुर्ग समझा जाता था इसमें मन्दिर नहीं। चमी सुर्गका अवनमना करिय रह गया है। मन्सतुने उत्तर बहुतसे च गरीबोंके मकान बन गये हैं। च मरैत्र होम चमी चमी बना बननेके निम्ने मोरखपुरके यहाँ जाते हैं।

प्रवाद है कि होमनगड़के राजाओंके यह सुर्ग बनावा गया था, अभीके अनुसुतार इसका नाम होमनगड़ पड़ा है। समीका विख्यात है, कि यह जाति पश्चिम ओडिस की ओर यायद इन लोगोंके तत्पूर्ववर्ती होम राजाओं को काट कर या मार कर राज्य प्राप्त किया होगा। होम यह नामसे जो ऐसा अनुमान किया जाता है। साधारण लोगोका भी विख्यात है, कि होमनगड़ चर्कीत् होमोंका सुम होम राजाओंके ही बनावा गया है। फिर किमोखा यह भी अनुमान है कि होम जातिके पश्चिमियोंके इस दुर्गका निर्माण हुआ है। लक्ष पूर्विके ता ये होम थे नही और होमोंके यहाँ राज्य भी नहीं किया। जो कुछ जो, होमनगड़ एक समय ऐसा पड़ा गया था, कि प्रायः बर्तमान समय मोरखपुर और रामी नदीके किनारेके क्षेत्र बहुत दूर तक इसका राज्य फैला हुआ था। बहुतसे यह भी कहते हैं कि इस प्रदेशके प्रादिम पश्चिमोके भीम थे। प्रायः भी होमनगड़, भीमरो, होमरदार, होमकीर्मा होमण, होमहाड, होमरिया, होमा, कामाड पादि अनेक स्थानोंके नाम प्राचीन होम पश्चिमियोंका परिचय देते हैं।

प्राचीन होमनगड़के मन्सतुपेमें जो दो एक ईंटें पाई गई हैं उनका आकार चौम्बूटा बड़ा और मोटा है।

होमनी ( हि० खी० ) १ होम जातिको जो। २ होमको जो। ३ एक प्रकारकी नोक जातिको जो। ये

• Cunningham's Archaeological Survey of India vol. xii, p. 65-67

उत्तमों पर गाने बजानेका काम करना है। कौनों कौनों इम जातिकी स्त्रियां विद्यावृत्ति भो करने लगी है।

डोमर—पूर्वीय बङ्गाल और आसामकी रङ्गपुर जिलेके अन्तर्गत नोलफामारी उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २६° ६' ३०" और देश्या० ८८° ५' ५०" में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८६८ है। यहाँ पटसनकी कई एक कलें हैं और दूर दूर देशोंमें इमकौ रवानगी होती है।

डोमर—डोम जातिका एक भेट। इलाहाबाद विभागमें ये अधिक संख्यामें पाये जाते हैं।

डोमा ( हिं० पु० ) एक प्रकारका मांस।

डोमिन ( हिं० स्त्री० ) १ डोमजातिकी स्त्री। - डोपनी देगे

डोम्बर—कर्णाटक प्रदेशकी एक जाति। डोपनी देगे।

डोर ( सं० क्लो० ) डोप-रा ड प्रयो० माधुः। इन्द्र प्रभृति ता वन्दनसूत्र, डोरा, सूत। अन्त प्रभृति व्रतमें यह धारण करना पड़ता है। हिन्दू स्त्रियां इसे बाये हाथमें और पुष्प टाङ्गिने हाथमें पहनते हैं। मत देगे।

डोरक ( सं० क्लो० ) डोर-स्त्राथें कन्। डोर देगे।

“वतुर्दशसनायुक्तं कुङ्कुमाकं मृधोऽरुम्।” ( अन्तप्रवस्था )  
डोरडा ( सं० स्त्री० ) डोरमिव डयते डी-ड गौरा० डीपू।  
बहती, बरहंटा।

डोरा ( हिं० पु० ) १ सूत्र तागा, धागा। २ धागे, लकीर। ३ आँखोंकी बहुत सूझ लाल नस। जब मनुष्य नशेकी उमंगमें होता अथवा सो कर उठता है तो ये नसें टीव पड़ती हैं। ४ तलवारकी धार। ५ घो निकालने तथा कड़ाहमें दूध आदि चलानेकी करछी। ६ सैन्य-सूत्र, प्रेमका बन्धन। ७ अनुसन्धानसूत्र, सुराग। ८ काजल या सुरमेंको रेखा। ९ नृत्यमें कण्ठकी गति। १० पोस्ते आदिका टोँड़, डोडा।

डोरिया ( हिं० पु० ) १ एक प्रकारका सूती कपडा। इस तरहके कपडेमें मोटे सूतको लम्बो धारियां बनो रहती हैं। २ हरि पैरवाला एक प्रकारका वगला। ल्यों ल्यों ऋतु बदलती जाती हैं ल्यों ल्यों इसका रंग भो बदलता जाता है। ३ एक नोच जाति। पूर्व समय यह जाति राजाओंके यहाँ गिकारों कुत्तोंको रचाके लिए नियुक्त की जाती थी। ये कुत्तोंकी गिकार पर सधाते थे।

डोरियाना ( हिं० क्लि० ) बन्धन लगा कर पशुओंको ले जाना, पशुओंकी रम्भोमें बांध कर ले चलना।

डोरिहार ( हिं० पु० ) पटवा, वह जो रेगस या सूतमें गहने गूथता हो।

डोरिहार—एक प्रकारके गींच योगी। ये डोरो धर्यात् क्षार्पासूत्रके वस्त्र पहनते हैं इसलिए ये डोरिहार कहलाते हैं।

डोरो ( हिं० स्त्री० ) १ रज्जु, रम्भो। = तागा, सूता। २ पाग, बन्धन, बांधनेको डोरो। ४ कटाईमेंका दूध और चागनी आदि चलानिका डोडीदार कटोरा।

डोल ( हिं० पु० ) १ कुएंमेंसे पानी खींचनेका लोहेका गोल बरतन। = भूना, पालना, हिं डोला। ३ गिविका, पालकी, डोली। ( स्त्रो० ) ४ एक प्रकारको कानो मटो जो बहुत उपजाऊ होती है।

डोल गुजरातके काठियावाडके अन्तर्गत मोहेनवाडका एक छोटा राज्य। यहाँका राजस्व १५००० रु० है। जिनमेंसे ३३७, बरोटाको और ५८, जूनागढको देने पड़ते हैं।

डोलक ( सं० पु० ) प्राचीन कालका एक वाजा जिनमें तान दिया जाता है।

डोलघो ( हिं० स्त्री० ) छोटा डोल।

डोलडाल ( हिं० पु० ) १ घूमना फिरना। २ टटो जाना।

डोलना ( हिं० क्लि० ) १ गतिमें होना, झिनाना। २ टडलना, चलना, घूमना। ३ दूर होना, चना जाना, हटना। ४ टट न रहना, विचलित होना।

डोलरवा—गुजरातके दक्षिण काठियावाडका एक छोटा राज्य। इसमें केवल एक ग्राम लगता है। राजस्व २२००० रु० है जिनमें १०३, बरोटाको और २३, जूनागढको का स्वरूप देने पड़ते हैं।

डोला ( हिं० पु० ) १ गिविका, पालकी, डोली। २ झूने-में दिये जानिका भोंका, पेंग।

डोलाना ( हिं० क्लि० ) १ गतिमें करना, झिलाना, चलाना। २ पृथक् करना, दूर करना, हटाना।

डोलायन्त्र ( हिं० पु० ) दोलायन्त्र देखा।

डोली ( हिं० स्त्री० ) गिविका, पालकी।

डोली करना ( हिं० क्लि० ) टालना, हटाना।

डोली (डि० एओ०) १ विमानपथके बागड़ा, निपाम, सिक्किम  
पादि प्रदेशोंमें होनेवाली हिन्दी रथ व चोली। रथका  
दूसरा नाम पदमचक्र और चुकरी मो है। २ पूर्वोक्त  
ब्रह्मण आशाम और भूटानमें भी कर करमा तहमें पाये  
जानेवाला एक प्रकारका रथ। यह चोली और ज्ञानि  
बनानेके काममें विशेषकर पातो है।

डोहो (डि० एओ०) १ डुगडुगिया, डि. डी. २ चोचका  
सुनादी।

डोरा (डि० पु०) कित्तोंमें उगनेवाली एक प्रकारकी घास।

डोया (डि० पु०) काठका चमचा।

डोल (डि० पु०) १ मारभिक रूप, झंझा, काट। २ रचना  
प्रकार, डब डौली। ३ मति, प्रकार, बिस्म। ४ उपाय,  
सदबीर। ५ लघुच, पायोजन रथ डय, मामान।  
(एओ०) ६ कित्तोंकी मिक, डाँड़।

डोलकाठ (डि० पु०) कुडि, प्रयव, उपाय।

डोलदार (डि० डि०) सुन्दर, खूबसूरत।

डोहर (डि० पु०) एक प्रकारका पत्थो। इसका पर,  
हामी और पोड सखेट, दुम बान्नी और चींच सात  
होती है।

डोड़ा (डि० डि०) १ घाघा और पबिह डेडुगुना। (पु०)  
२ घड़ीच पच, त ग राधा। ३ मोतका लं चा खर। ४  
डेडुगुनी स प्लाका पहाड़ा।

डोड़ी (डि० एओ०) १ जाटक, दरबाजा, चोपट। २  
दरबारमें प्रवेश करती समय सबसे पहली बाहरी खमरी  
पेरी।

डोड़ोदार (डि० पु०) बड़ीदरम देको।

डोड़ोदान (डि० पु०) दारपास, दरबान।

डार ग (प० पु०) सखीरिसि चिख या पाकति बनानेकी  
विद्या।

डारवर (प० पु०) बड़ जो गाड़ी चलता हो।

डारि गिट्टि (प० एओ०) बिना मिश्रण हुए कपारि। इन  
प्रकारकी कपारिसे कागजकी चमक ज्योंकी त्यों रह  
जातो है और कपारि मो साफ होती है।

ड्राफ्टमन् (प० पु०) बड़ जो लुल मानचित्र प्रस्तुत  
करता हो लकगा बनानेवाला।

ड्राम (प० पु०) तीन मासिके बरबर एक च मीको  
मान। इससे पातो पादि द्रव्यदार्थ मापा जाता है।

ड्रिम (प० एओ०) कथापट।

ड्रिंक—ससकताथि एक पदार्थ यासुनकर्ता। जिस समय  
(१०३६ ई०में) विराजने लखकर्ता पर पाकमथ जिया  
का ठस समय ये रट इच्छिया कथ्यनीकी थोरसे खान  
कताथि यासुनकर्ताथि पर निबुद्ध धी।

ड्रम करना (डि० डि०) मरहम परो करना।

ड्रिग्ल (प० पु०) सवार, सिपाही।

## ड

ड—सकत और हिन्दोके मनाका बीदहकी पचर,  
ठकयका चोया बर्ष। इसका उच्चारणमान भूडा और  
उच्चारणकाल पदमाका है। इसके उच्चारणमें धाम्यकार  
प्रयव है—जिहामज द्वारा भूडाका कर्ग बाध प्रयव  
स बार, माद घोष और लडाप्राय।

मादकाध्यासमें इसका टपिच पदाहुतिके मुखमें ध्यान  
होता है।

इसकी मिलन-प्रकाली इस प्रकार है— 'ठ' इम  
बर्षमें ब्रह्म, विष्णु और सङ्गीर मिल विराजते हैं।

(बर्षेष्टारवन्)

बर्षामिधानमें इसके वाचक शब्द इस प्रकार लिखे  
हैं—ठका निचंठ, शूर, यष्टय, बनदेमर, पदमारोखर,  
तोप ईखरो, जिगिको नख हयपादाङ्ग, मोमून, सिदि  
दख बिनापक प्रकार विधिरा, कडि निगुच, निचंम  
भनि बिचय पानिनी, तडकारिची, खोडपुच्छक प्लानुट,  
खगाभा बियाका, चो, मन थोर रति। (धाम्य०३)  
इस उच्चारकी पबिहानी देको परमारका पण्डितजी,  
पददेवात्मक, पदप्राचमय, विगुच और धाम्यादि  
मन्त्र तथैसि मङ्गल तदा विष्णु कताकार है। (धाम्येष्टु०)  
इसका ध्यान कर इस पचरके दस बार कपनेके बाबक

ढहाना ( हि० क्रि० ) ध्वस्त करेना, गिराना ।

ढाँक ( हि० पु० ) कुशीका एक पेच ।

ढाँकना ( हि० क्रि० ) १ छिपाना, ओटमें करना । २

किसे वस्तुकी इस प्रकार फौलाना जिनसे उसके नोचेजो वस्तु छिप जाय ।

ढाँचा ( हि० पु० ) १ किसी रचनाकी प्रारम्भिक अवस्था, ढाट, ढहर, डोन । २ पंजर, ढटरी । ३ रचना प्रकार, बनावट, गढ़न । ४ प्रकार, भाँति, तरह । ५ भिन्न भिन्न रूपोंमें एक दूसरेके साथ इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदिके बच्चे या छूड जिसमें उनके वाचमें कोई वस्तु जमाई या जडो जा नसे । ६ चार लकड़ियोंका बना हुआ खुडा चौखट । इनमें जुनाड़े नचनो लटकते हैं ।

ढाँपना ( हि० क्रि० ) ढाँकना देना ।

ढाँस ( हि० स्त्री० ) सूखी खामी 'प्राने पर गलेमेंका शब्द ।

ढाँसना ( हि० क्रि० ) सूखी खामी खानना ।

ढाई ( हि० वि० ) १ टोमे आधा अधिक । ( स्त्री० ) २ कीड़ियोंसे खेने जानिका लडकोंका एक खेल । ३ इस खेलमें रखी जानिको कीडो ।

ढाक ( हि० पु० ) १ पलाशका पेड । २ वह बडा ढोल जो लडाईमें बजाया जाता है ।

ढाका—१ कमिश्नरके अधीन पूर्व बङ्गालका एक विभाग । यह अक्षां २२° ४८' से २५° २६' उ० और देशां ८८° १८' से ८९° १६' पू०में अवस्थित है । इसके उत्तरमें गारो पहाड, पूर्वमें सुरमा, त्रिपुरा और मेघना, दक्षिणमें बङ्गो-सागर तथा पश्चिममें खुलना, यशोर, पावना, बगुडा, मधुमती और रङ्गपुर जिला हैं । लोडसंख्या प्रायः १०७८३८८८ और क्षेत्रफल १५८३० है । अधिवासियोंमें अधिकांश मुसलमान हैं । इसके सिवा यहां हिन्दू, ईसाई और बौद्ध भी रहते हैं । इस उपविभागमें १७ शहर और २६८२८ ग्राम लगेते हैं, जिनमेंसे ढाका और नारायणगञ्ज सबसे बड़े हैं । ढाका, मैमनसिंह, फरिदपुर और वाकरगञ्ज नामके चार जिला इस उपविभागके अन्तर्गत हैं । ब्रह्मपुत्र, पद्मा और मेघना यही तीन नदियाँ इस विभागमें जल देती हैं । पर इनका जल सुसङ्ग पहाड़ी तक नहीं पहुँच सकता । प्रसिद्ध 'मधुपुर बाङ्गल' नामक

भूभाग कुछ ऊँचा है । यह भूभाग मैमनसिंह और ढाका जिलेमें ले कर ढाका शहर तक विस्तृत है । वर्षा यद्यपि इस विभागमें कम होती है तीसरे इस विभागको आज तक दुर्भिक्षका सामना न करना पडा है, कारण यहाकी जमीन बहुत हो उर्वरा है । विक्रमपुर और मोनारगाँवमें प्राचीन अट्टालिकाओंके भग्नावशेष देखे जाते हैं । कहते हैं, कि पहले यहा मेनवंग तथा मुसलमान राजाओंको राजधानी थी ।

२ पूर्व बङ्गालका एक जिला । यह अक्षां २३° २४' से २४° २०' उ० और देशां ८८° ४५' से ८०° ५८' पू०में अवस्थित है । क्षेत्रफल २०२२ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः २६४८५२२ है । इसके उत्तरमें मैमनसिंह जिला, पूर्वमें त्रिपुरा, दक्षिण पश्चिममें वाकरगञ्ज, फरिदपुर एवं पश्चिममें पावना जिलेका कुछ अंग है । इसको सब दिशाओं नदोमे सोमावड हैं, पूर्वमें मेघना दक्षिण-पश्चिममें पद्मा और पश्चिममें यमुना नदी नामक ब्रह्मपुत्र नदीको प्रधान शाखा अवस्थित है । ढाका नगर इस जिलेका सदर है ।

ढाका जिलेकी भूमि समतल है । धलेगुरी इमो समतलमें पूर्व में पश्चिमको और प्रवाहित हो कर इसको दो भागोंमें विभक्त करती है । इन दोनों भागोंको प्रकृतिमें बहुतसे विभेद है । उत्तर भाग फिर लाचा नदीसे दो भागोंमें विभक्त है । इन दोनों भागोंके पश्चिम दिशामें ढाका नगर अवस्थित है । इसको भूमि वाटके जनकी अपेक्षा ऊँची है । स्थान स्थानमें कोचड है और उसके ऊपर गली हुई उद्विज वस्तु भी देखी जाते हैं । लाचा नदीके दोनों किनारे ऊँचे तथा गभीर जलपूर्ण हैं । स्थान स्थानमें नदीतीरका दृश्य अत्यन्त मनोरम बालूम पडता है । ढाकासे प्रायः २० मील उत्तर मधुपुर जङ्गलमें छोटे छोटे पहाड़ अर्थात् टोले देखे जाते हैं । इन टोलोंको ऊँचाई कहीं भी ३०।४० फुटसे अधिक नहीं है और ये प्रायः लणगुल्ल वा लङ्गलादिसे ढके हुए हैं । इस भूमिखण्डका अधिकांश अतुर्धर है तथा सूँखार, कांगली जन्तुसे भरा अरण्यमय है । सम्प्रति इस विभागमें क्षुद्र विस्तारकी चेष्टा हो रही है । नगरके निकट भोल और नहरके चारो तरफको भूमि, धान, सरसों और तिल आदि पैदा करनेके लिए उपयोगी है । ढाकाके पूर्वभागसे

विष्णु वसिष्ठरी धोर लासा नदीके संगमस्थान तकको मूमि पड़मय धोर उधर है। पूर्वोत्तरदिशि लासा धोर सिधना नदीका सम्भवती तथा पश्चिमदिशि पड़मय है। पतएव पश्चिमदिशि पश्चिमको पश्चिम दिशि पड़मयको पश्चिम दिशि पड़मय है। इसकी पश्चिम दिशि वाङ्गने बह जाती है। वसिष्ठरी नदीका दक्षिणदिशि विभाय को त्रिनेत्रे सबसे पश्चिम उधर है। यह विष्णुके सम्पत्तन मूमय नदीकासमे २ फुटमे १४ फुट पर्यन्त बाढ़क वन से बह जाता है। इस समय यह स्थान एक प्रसन्न नदीकी भाँति दीखता है। नदीकासमे समस्त मूमय इराभरा मान्म पड़ता है। बीच बीचमें कृत्रिम ख वा मूमि पर धाम बने हुए हैं। पश्चिमदिशि छोटी छोटी नावने द्वारा इन जेवोंके मध्य जो धर इधर उधर जाते पाते हैं। धर्मो यहाँ स्थान स्थान पर पाट सन पाटिको खेतो जोतो है।

इस त्रिनेत्रे नदियोंको मख्या पश्चिम है। धर्म मर जलधर जो धर जो भोग पश्चिम दिशि स्थानमें जाते पाते हैं। पदा सिधना धोर यमुना इन तोन नदियोंके पश्चिम दिशि पश्चिमदिशि कीर्तिनासा, वसिष्ठरी, बुद्धीमहा, लासा सिधनामी धोर गात्रीकासी नामक ७ नदियों में भी बड़ी बड़ी नालें या खा मकती हैं। इनका पश्चिम दिशि महाका या ब्रह्मपुत्रको मख्याक पश्चिम दिशि पश्चिम दिशि नदीका सम है। आज भी त्रिनेत्रे दक्षिणदिशि समस्त नदियोंका सम बाढ़के समय परिवर्तित हो जाता है। पश्चिमदिशि छोटी नदियोंमें त्रिनेत्रे, वसिष्ठरी, सुराम बुद्धी, बुद्धी धोर ब्रह्मपुत्रके प्राचीन स्रोत प्रधान हैं। इन नदियोंमें उत्तरदिशि प्रमाक अर्थात् होना है। डाकाके निकटस्थ बुद्धीमहाको उत्तर २ फुट पर्यन्त ऊपर उठती है। पश्चिम दिशि नदीके दक्षिण दिशि विष्णुके मूमि बह गई है। एक नदीसे बहती नदीमें जानेके लिये पश्चिम दिशि नदी गई है। जिन्हीं की ममी नदियाँ उत्तर पश्चिम दिशि पूर्वकी धोर बहती हुई प्राग्भाष्यमें गङ्गा धोर सिधनाके संगम स्थानके निकट उसको साह मिल गई है।

बुद्ध कलक धोर बुद्धी नदीके छोड़ कर यहाँ विभिन्न प्रकारके प्रस मुष्पादि उत्पन्न नहीं होती। बुद्धीके

काठदिने मो पामन्तो जोड़ीका जोतो है। पचास मो पश्चिम नहीं है। नदियोंमें प्रति वर्ष बहुतसी मखनियाँ पकड़ी जाती हैं।

डाका बहुत दिनों तक मुसलमानोंको राजधानी रहनेके कारण पश्चिम दिशि की पश्चिम दिशि समय यहाँ मुसलमान पश्चिमदिशि की मख्या बहुत ज्यादा है। लोकसख्या प्रायः २६८८५२२ है।

ठाका त्रिनेत्रेको पश्चिमदिशि धोर खेतो पाटिको सुविधा होने तथा पाटका व्यवसाय सुलभ होनेसे यहाँको जन मख्या क्रमशः बढ़ती जाती है। यहाँके मुसलमान प्रायः पश्चिम दिशि से सम्प्रदायके हैं। मयद मुसल धोर पठानोंको मख्या ठाका पश्चिम दिशि बड़ती जोड़ी है। हिन्दुधर्मि ब्राह्मण कायक मय, बड़ई पश्चिम दिशि, तम्बोको, बनिदा, स्थाना, धोको नापित मुष्कार, लोकाट मसाह तातो सूझी इत्यादि प्रधान हैं। पच्छिम धोर बीच जाति भी हिन्दु धर्म स्वीकार करती है। इनकी मख्या सो योकी नहीं है। जातिभेद पश्चिम दिशि मख्या सम्प्रदायके वही जाते हैं। इस सम्प्रदायकी लोकसख्या कम नहीं है। पश्चिम दिशि लोक जातिके भोग पश्चिम दिशि मुसलमान पश्चिम दिशि धर्म में दीक्षित हुए हैं। पश्चिम दिशि भोग पश्चिम दिशि बतजाते हैं। डाकाके ईसाई सम्प्रदायको उत्पत्ति मित्र प्रकारकी है। ये भोग योग गोब, धर्म बीच, पोख युरोपोय पश्चिम दिशि ईसाई धर्मके मयधर है। फिरही पश्चिम दिशि योग ईसाई दिशिदिशि मिश्रधर्म उत्पन्न है। ईसाई त्रिनेत्रे पश्चिम दिशि खानोंमें छोटे छोटे दल बने कर निवास करती हैं तथा कृत्रिम पाटिके द्वारा जीविभानिर्वाह करती हैं। ये भोग गोया नगरके प्रधान पाटरो साहबकी पश्चिम दिशि मुख्य मानते हैं।

निम्नलिखित मात नगरोंमें १ सखरसे पश्चिम मयुष्य निवास करती हैं। यथा १ डाका, २ नारायणगञ्ज, मदनगञ्ज ३ भाषिकगञ्ज, ४ परजजिरा, ५ मोषयद, ६ नारायणगञ्ज तथा ७ गरिमा ये ही मात नगर हैं। तन्मेंसे प्रथमोक्त तीन नगरमें शुनिमयाजितो है। डाका नगरमें त्रिनेत्रे मदन है जो लासा नदीके पश्चिम दिशि पश्चिम दिशि पर पश्चिम दिशि है। नारायणगञ्ज धोर मदन



गञ्ज वाणिज्यका प्रधान षाउडा है। शहरमें वाम करना अधिवासियोंको पसन्द नहीं पडता कारण गिम्पाटिका कोई कार्यालय नहीं है। उपरोक्त नगरमें कितनेको छोड़ कर निम्नलिखित स्थान भी उल्लेखयोग्य है। यथा सुवर्ण ग्राम, यहीं पूर्व बंगालको सर्व प्रथम सुमलमानकी राजधानी थी, फिरझोवाजार, पोतुंगोजका आदि उप निवेश, विक्रमपुर, सामार और दुरदुरिया। जेपोक्त टी स्थानोंमें कितने भग्न प्रामाटाटि देखे जाते हैं, नोग उनको भुंइयां और पाल राजाओंको कोर्ति बतलाते है। इसके सिवा जिलेके अनेक स्थानोंमें प्राचीन हिन्दू और सुमलमान राजाओंकी अनेक कोर्तियां विद्यमान हैं। सम्प्रति कृषिकार्योंको विगेष उन्नति होने एवं कृषिजात द्रव्योंका मूल्य बढ़ जानेसे कृषकोंको अवस्था बहत अच्छी हो गई है। तिल, सरसों, कुसुमफूल सन और पाट आदिकी खेती द्वारा अनेक कृषकोंको अवस्था सुधर गई है। कहना नहीं पडेगा कि निटिंट वितन भीगी कर्म चारी वा करग्राहो तालुकदारोंकी इस उन्नतिसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

कृषि—बङ्गालके अन्यान्य स्थानोंकी नाईं यहाँ भी चावल ही लोगोंका प्रधान खाद्य है। चार तरहके धान विशेषकर पैदा होते हैं। १ आमन वा हैमन्तिक, २ भाउश वा आशु धान, ३ बीरो धान तथा ४ ऊड़ोधान अर्थात् दलदल आदिमें आपसे आप होनेवाला धान। इनमेंसे हैमन्तिक वा आमनधान ही प्रधान है। ढाकामें जितना धान उत्पन्न होता उतनेसे इस जिलेका काम नहीं चलता है। दूसरे दूसरे स्थानोंसे चावलकी आमदनी होती है। उधर द्रव्योंमें ज्वार, बाजरा, जुन्दरी, अनेक तरहके रुई, तिल, सरसों, रुई, सन, पाटसन, कुसुम फूल, ऊछ, पान, सुपारी और नारियल प्रभृति प्रधान हैं। फिलहाल रुईकी खेती बहुत कम गई है, पहले यहां की रुई बहुत प्रसिद्ध थी, इसमें संदेह नहीं। उसी रुईसे संसारविख्यात ढाकेको साडी बनती थी। इस समय तिल, सरसों, सन, पाटसन, कुसुमफूल इत्यादि यहांसे दूसरे स्थानोंमें भेजे जाते हैं। धानका खेत अधिकांश वाट के जलसे प्रभावित हो जाता है। इसलिये उनमें सारकी आवश्यकता नहीं होती। रबीके खेतोंमें बहुत खाद देनी

पडती है। समस्त जिलेके अंशमें हल बनता है। अच्छे धानके खेतोंमें धानके कट जानी पर एक दूसरी फसल उत्पन्न होती है।

ढाका जिलेमें अतिवृष्टि, अनावृष्टि, वाट प्रभृति दैव-दुर्विपाक अधिक नहीं होते हैं। टैवदुर्घटनासे धानकी हानि विनकुल नहीं होती। १७७७-७८ ई.में भयानक वाट गोर उसके वाद भोपण दुर्भिक्ष हुआ था। १८६५ और १८७० ई.में अनावृष्टि होनेके कारण अन्न मंहगा हो गया था। सम्प्रति कई-एक वर्षोंमें विक्रमपुरमें दुर्भिक्षको बातें प्रायः सुनी जाती हैं। अभी रेलपथ और जलपथसे अन्यान्य जिलोंके माध्य संयोग हो जानेके कारण अन्तर्वाणिज्यको वृद्धि हो रही है। तथा घोर दुर्भिक्षको आशङ्का नष्ट हो रही है। ढाका जिलेमें बदन-मो बडी बडी नदियां रहनेके कारण साल भर प्रायः सभी स्थानोंमें जनपथसे जाने आनेकी सुविधा रहती है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जो बडी नदीसे दूर हो। विगेष कर जाना आना और वाणिज्य व्यापारादि अधिकांश जलपथसे ही सम्पन्न होता है।

ढाका नगरके मध्य हो कर त्रिपुरा और चट्टग्राम तक जो पक्की गडक गई है, वही सबसे प्रधान है। ढाकामें मंसनसिंह और नारायणगञ्ज तक एक दूसरी सड़क गई है, जिनसे नारायणगञ्जको जड़क हो कर बहुत वाणिज्य होता है। ढाकामें नारायणगञ्ज और मैदान सिंह तक रेललाइन गई है। गिन्धद्रव्योंमें यहांका सूती कपड़ा, गद्द और मोने तथा चर्दिके बने हुए तरह तरहके पदार्थ, मृष्टोके वरतन और कपड़ेके ऊपर पालिश करनेका काम प्रधान है। पहले ढाकाके कपास-के सूतकी बनी हुई अत्यन्त महीन तरह तरहकी मल-मल वा मस्तिन जगत्में विख्यात थी। अब भी यूरोपमें अनेक उत्कृष्टसे उत्कृष्ट मशीनोंके रहते हुए भी ऐसा आश्चर्योंत्यादक मलमल नहीं बनती। अभी उसकी खपत नहीं रहनेके कारण ढाकेका पूर्वं गौरव जाता रहा। जो उक्त वस्त्रके लिये सूत कातते तथा जो ताँती उस भुवनविख्यात मलमलको बुनते थे, वे अब एक भी नहीं हैं। जिस कपाससे उसका सूत बनता था, बहुतोंका कहना है कि उसका भी लोप हो गया है। कदा

जाता है, कि मन्मथने जिसे चरखेका लता बुधा पाव  
 छटाअ स्तिका भुम्भ १०, ब०से काम नही जा। पात्र  
 भी वो एक तातो कुछ मोकोन ध्याज्योकि जिसे पक्षीमा  
 मन्मथन योहा बहुत बनाने है। पक्षिबांग तातो तरह  
 तरहकी देगी बन्धु पुनर्न है। इनमिसे पन्निह मद्वाजनेकि  
 निकट अन्धघटा है पन्ना मद्वाजन लकोसे मन्ध अपडु  
 से कर बैठते है। मोमे पोर जाटीके पन्नाहार बनाने  
 कामि तथा मद्वाजनेको पन्नाका लंभी नही है। से  
 स्नाबोनमावने पन्निह अपने कर्मदासेमि काम करते है पोर  
 पन्निह द्रव्यको दृष्टानुसार अर्न तर्का बेचा करते है।  
 इससे मिया यहाँ मिय मिय पन्नाके वाचयन्क, मोमे  
 पन्निहा पीता, चायो दांतके कई तरहके द्रव्य, चिन्न  
 पन्नाहार माको पादि बनतो है।

टाका एक बड़ा बाणिज्यका केन्द्र है। असपय जो का  
 जो इनका पक्षिबांग बाणिज्य होता है। पन्नी रैन्धुपन्ने  
 भी इनका बहुत बाणिज्य बन रहा है। पन्ने अरोपेज  
 यद्दो सुमन्मान भारवाडां पादि जातिके बनिह तथा  
 देगी बनिह यहाँ अपडुका कारवार बहुत करती है।  
 पन्नी लम व्यवसायका क्राय हो मना है। नारायणमन्ध  
 पोर लमके निष्कट मदनमन्ध मद्वाजानो नगर है। यहाँ  
 बाणिज्य पक्षिह होता है सुयोगक्षेमि प्रति वर्ष तीन  
 मन्नाह तक मन्ना नगता है। लम मीसेमि भारतवर्षके  
 नाना स्थाने, यहाँ तक कि दिवो, पन्नामन्ध, पाराकान  
 पादि दूर दूर देशोमे भी बनिह पाते है।

इस क्रिमिसे विद्याको अवतिष्ठे जिसे नियम बिटा हो  
 रही है। टाका मन्धर जोड़ कर पन्नामन्ध स्थानोमे भी  
 बाणिज्यमे स्थापित हुये है पोर मांसिक तथा मायाजिह  
 पन्निहलते है। पाक्यामे पादिमि मन्धमि पन्ने मद्वा  
 यता मियनेको प्रया प्रचलित हो जानिसे कावस क्या  
 बहुत बढ़ रही है। पन्नेको ल्धुन मो यहाँ बहुतने  
 है। टाका नगरोमे एक कान्ने ब है। लक्ष्मिणीको पन्ने  
 के जिसे यहाँ कई एक कन्ना-पाक्यामन्ध है। सुलन  
 मानोके जिसे मन्धरना है।

गानमन्धायको पक्षिबांग जिसे मर जिता टाका,  
 नारायणमन्ध मांसिकमन्ध पोर सुयोगक्षेम १० नार अप-  
 विमानोमे पोर जिर प मेी कुल ११ यानोमे विरक्त है।

बन्धायु। क्रिमिसे चारो पोर बड़ी बड़ी नदियोके  
 रजनेमे पीपवापमि यहाँको असबायु हृह मीतल रहतो  
 है। मैयालके पन्नेमे पायिन मास तक यहाँ हृदि बीनी  
 रहतो है। इस समय चामि पोरकी भूमि अन्धमन्ध  
 रहती है। यपाक्याक्या पन्ना भाग पयोतिकर रहता  
 है। यार्पिक हृदिपात प्राक् ०३ इह पोर हायोय  
 प्राय ०८ ८ ०८ होता है। भूमिमाय भी प्राय बुधा  
 करता है। १०१२ पोर १००१ ई०के मई मासमे मीपच  
 भूमिमाय बुधा था।

पन्नी रोमिसे ल्धुन, गरुगण्ड, पामागय, पतिमार  
 गात, पापका दुख होना इत्यादि माधरच है। पुंग पोर  
 बसन्त रोगमे भी पन्नी कसो बहुत मनुष्योको मरु  
 होतो है। छोटे छोटे पामनामियो को प्नास्त्रारवाकी  
 पोर जिमोका मो ध्यान नहीं है। नवाब पन्धुनयधि  
 टाका नवरके स्नाम्यको लकठिके जिसे धर्मशास्त्र पोर  
 स्नास्त्रममिति सगठन तथा परिष्कृत अन्ध प्राजिका  
 पन्ना बन्धोबन्ध कर टाकाबाणियो का बहुत उपकार  
 कर गये है। डातय चिन्निकाणयोमे एक पन्नागारद,  
 मिटकोट अन्धतान, पन्धुनयधिप्रतिष्ठित एक मदावत  
 पोर ११ दूर दूर पन्नाताल है।

पिपहाव। पन्नी बडान कन्धमे जिस तरह राड  
 बरैन्ध, दड बागकी प्रशुति स्थानोका मोष होता है,  
 पन्ने लच तरह नही था। पन्नी जिपको टाका निमाय  
 कहते है, लसीका पक्षिबांग पन्नी पन्ना नाममे पन्निह  
 था। इस समय कोय जिसे पूरे बडान कहते है, मन्ना-  
 भारत पोर पोरबाकि समयमे भी कर मोडुके मिनराजा-  
 पोके राजलकान तक लपोको बेचन बडु कहती है।  
 नत मान टाका जिन्का पक्षिबांग पोर फरीदपुर  
 क्रिमिका कुछ पाय सेनराजापीके नमयमे निम्नमपुरनाममे  
 मयन्धर था; मिनराज निम्नकपके ताभ्रमासन द्वारा  
 तक प्रमाचिन होता है। \*

टाका नाम कहने प्रचलित है, लमका लियर करना  
 कठिन है। मन्धाराज मसुधुगुत्रके राजाहावादेमे मियाको  
 १० मिया है, कि लकोमे उपाक पोर ममलटकी जय  
 मिया था। ब गातल। पक्षिबांग मसुधुगुत्रकी स्नान

पहले समतट नामसे प्रसिद्ध था। दोनों नामके आस पान रहनेसे वर्तमान ढाका ही पहले डवाक था, ऐसा अनुमान किया जाता है।

त्रवाद है, कि आदिशूर प्रभृतिके बहुत पहले यहाँ विक्रमादित्य नामक एक राजा राज्य करते थे उनको के नामानुसार विक्रमपुरका नामकरण हुआ है।

भविष्य-ब्रह्मवर्णने लिखा है—“यहाँ ढकावाय प्रिया महाकालो वास करती है, इसीसे देगोय मनुष्य इस स्थानको ढका (ढाका) कहा करते हैं। इसका दूसरा नाम जङ्गीरपत्तन (१) (जहंगीरवाट) है।

ढाका जिलेका प्राचीन इतिहास अश्वकारमय है। महाभारतके समय यहाँ क्षत्रिय-धोरण राज्य करते थे। वेने। बौद्धशास्त्रके समय गौड़के दूसरे अंगमें बौद्धधर्म को सूचना होने पर भी यहा किसी समय बौद्धधर्म प्रचल था, उसका कोई विशेष प्रमाण नहीं है। छठी शताब्दीमें काश्मीरराज बालादित्यने पूर्वसमुद्र तक जीत कर काश्मीरमें रहनेके लिये यहाँ कायस्था नामक एक जनपद स्थापन किया (२)।

८वीं शताब्दीमें गौड़राज्य पालवंशीय-राजाओंके अधीन होने पर यहाँ भी उनके वंशीय कोई कोई स्वाधीनभावसे राज्य करते थे। दक्षिण प्रदेशके निकमलय शिलालेखमें लिखा है, कि जब (१०वीं शताब्दीमें) महाराज राजेन्द्रचोलने बङ्गराज्य पर आक्रमण किया, तब यहा गोविन्दचन्द्र नामक एक राजा राज्य करते थे; गौड़ शब्द देखो।

पाश्चात्यबैदिक-कुलप्रसिद्धिकाके मतसे १००१ शकमें महाराज श्यामलवर्मा (पूर्व) बङ्गमें राज्य करते थे।

(१) 'इदम गातटे वेदवर्षसाहस्रव्यत्यये।

स्थापितस्यैव यवनैर्जागिरं पत्तनं महत् ॥

तत्र देवा महाकाली दक्षकाबाधप्रिया सदाः।

गात्यन्ति वसन् दक्षकासहस्रं देशवासिनः ॥”

(म० ब्रह्मखण्ड १५ अ०)

(२) “यस्याद्यापि जयस्तम्भाः सन्ति ते पूर्ववारिषा।

प्रमावन्ति बंकाळां जित्वा येन व्यधीयत।

काश्मीरिश्चनिवासाय काटस्थ्याख्या जनाश्रयः ॥”

(राजतर० ३/५२)

उक्तके विख्यात भुवनेश्वरमें अनन्तवासुदेवके मन्दिरमें भद्रभवदेवको एक प्रशस्ति है, जिसमें ब्रह्मविष हरिवर्म-देवका परिचय मिलता है। गायट के १२वीं शताब्दीके किसी समय विद्यमान थे। मेनवंशीय राजाओंके समयमें दक्षिणराट, बङ्ग और बरेन्द्र इन्हीं तीनों स्थानों में उन लोगोंको राजधानी थी। मेन-राजवंशियों। मङ्ग-स्यट-इवखृतियारके ११८८ ई०में नटिया अधिकार करने पर महाराज लक्ष्मणसेनके पुत्र केगवसेन गौड़राज्य परित्याग कर विक्रमपुर भाग आये थे। उस समय यहाँ लक्ष्मणसेनके दूसरे पुत्र विश्वरूपसेन शासनकर्ता स्वरूप थे। ये भी सुसलमानोंके साथ युद्ध कर स्वाधीनभावसे राज्य करने लगे। उनके समयमें पूर्व बङ्गाल और समतट स्वाधीन था, सुसलमान उमें जत न मकें थे। उनके वाट मटामेनने ११ कुञ्ज काल तक राज्य किया, इस समय सुवर्ण ग्राममें सेन राजाओंको राजधानी थी। तदनन्तर प्रवल पराक्रान्त सेनराज दनोजामाधवने बहुत दिनों तक राज्य दिया। वेहिं दिल्ली मस्जिद बनवन तुघलकोंको टमन करनेके लिये गौड़ राज्य पहुँचे। महाराज दनोजामाधवने जनपदमें मस्जिदोंको बगैर सहायता को थी। मालूम पडता है कि उभी कारण लक्ष्मणावतीके सुवादार उन पर विरक्त हुए थे और जब बनवन लौट कर आया तब सुवादारोंने भी टनैजके ऊपर अत्याचार आरम्भ किया। राजा दनुज-मर्दनने गौड़ परित्याग किया और चन्द्रहोषमें आ कर राजधानी स्थापन की। इस समय वर्तमान ढाका जिलेका अधिकांश सुसलमानोंके अधिकारमें आया। सुवर्णग्राम देखो। वर्तमान फरोटपुर और वास्वर गञ्ज ले कर चन्द्रहोष राज्य स्थापित हुआ। दनुज-मर्दनके वंशधरोंने बहुत समय तक चन्द्रहोषमें राज्य किया। चन्द्रहोष देखो। प्रायः १३३० ई०में जब ढाका जिला सुसलमानोंके हाथ आया, तब थोड़े समयके बाद ही वंशवंशीय बङ्गाल नामक एक व्यक्तिने प्रवल हो कर विक्रमपुरका अधिकांश अधिकार किया और वहाँ कुछ काल तक स्वाधीनभावसे राज्य किया था। उनके आदेशसे उनके शिष्यक गोपालभट्टने १३०० शक अर्थात् १३७८ ई०में 'बङ्गालधरित' नामकी पुस्तक बनाई।

उत्तरी ममयमें जो राजभवन और सरोवर बनाया गया वह यमो नज्जालवाड़ी और नज्जालदोघो नाममें मगहर है। प्रवाट-रुस तराई के भी बाबा पाटमना मक ए स मुसलमान खबीरको साह बुर करनी लगी। युद्धयात्राजानके समय से अपने परिवारबर्गसे इस तरह कह गये "बुद्धमें यदि भरी शम्भू हो जायगी, तो भिरा साधी कबूतर उड़ कर बर्दा पहुँच जायगा और तब तुम लोग भी खनिहुएमें बूट कर प्रायव्याग करना।" इतना कह कर से रचयेत में गये और बर्दा नज्जालको हो लय हुई। वे लो ही एक सरोवरमें प्रवेश कर अपने रक्षाक कसेवरको साथ करनी ली लोही पवकाम पा कर उनका कबूतर उड़ गया। इधर कबूतरको देख कर राजपरिवारबर्गमें खनिहुएमें बूट कर अपना अपना प्रायव्याग किया। जब नज्जाल लौट कर आये, तब से उस छटनाको देख पख्तन मोकातुर हुए और उन्होंने भी उमी जलते हुए खनिहुएमें बूट कर प्राय छोड़ा। उनका बिभूत राज्य भोग करनेके लिये अब कोई न बचा। टाका जिन्या मुना सुनलमानोंके हाथ पाया। बिबोके मतातुसार अब समय भी भावाल और शार प्रभृति खानोंमें हिन्दू लमीन्दारगव आधोन भावसे राज्य करती थी। नावल दको।

१३२० ई०में महमूद सुनलकने पूर्व नज्जाल अपने अधिकारमें लिया। इस समय बङ्गराज्य लक्ष्मणावतो, मातवाँव और सोनारनाँव इन तीन भागमें विभक्त हुआ। टाका सोनारनाँव विभागके अन्तर्गत था। १३२८ ई०में सोनारनाँवके शासनकर्ता तातार बङ्गलसर्लाको शम्भू जोमिंके पकर-लही नु काठन पर बैठे और उन्होंने मुवा एकमात्र नामसे १० वर्षसे अधिक समय तक बङ्ग प्रदेश में राज्य किया। १३३१ ई०में समप्रद्योत इनयासमाह तथा उनके पुत्र विजयन्दरमाहकी परमिद्वत पिडासे समय बङ्गदेश एक राज्यभुक्त तथा टाकाके निकटवर्ती सोनार नाँवमें राजधानी स्थापन की। विजयन्दरके पुत्र पादम शाहने दिजोकी अधोनता परिव्याग को। राजनाँवक शासन आलके समय यह प्रदेश सिपुरा पाकाम और धाराकानके राजाकीके कई बार उत्पोजित हुआ था। १३३२ ई०में महमूदमाहने पुनः समस्त नज्जालको अपने अधिकारमें कर लिया। इस व शके शासनकालमें टाका, परीदपुर

और बाबरगञ्जके चारों ओरके प्रदेश जलालाबाद और खतयाबाद नामसे परिचित थे। १३२८ ई०में मिरगाहने बङ्ग देशपर शासन किया। उनके उत्तराधिकारो सुमनासे पराजित हुए। सुगल-मन्नाट पकवर द्वारा मध्यवर्षी भगवसे जाने पर उन्होंने लहीसा और टाकामें जा कर भाग्य ग्रहण किया। १३५२ ई०में उनके एक सर्दार लखमान लोके निजवङ्ग लूटा गया था। उन्होंने उक्त प्रदेशको १३१२ ई० तक अपने अधिकारमें रखा था। इस वर्ष पूर्व बङ्गके बिनी खानमें सुगलीके साथ हुएमें से मारी गये। इस समय इसकामका बङ्गदेशके शासनकर्ता थे। इस बुद्धके बाद उन्होंने राजमहलमें टाकामें अपने राजधानी स्थापनाकरिनी थी। तबसे १३२८ ई० तक पन्तनि-द्रोह और बङ्गराज्यके टाका कई बार उत्पोजित हुआ था। इस समय पाषाणकाली और मूर्तोंके यथाक्रम टाकाका उत्तर और दक्षिण मू भाग लूटा था। १३२८ ई०में सुलतान महमूद तुजाने टाका परिव्याग कर पुनः राजमहलमें राजधानी स्थापन की। १३३० ई०में मोर सुमना जब राजप्रतिनिधि नियुक्त हुए, तब राजधानी धिर टाकामें लाई गई। मोरसुमनाके शासनकालमें जो टाका सबसे अधिक लक्ष्मिन्कार पर पहुँच गया था। मय और धाराकानको भाषा ईमिंके लिये उन्होंने नासा और बरोखरी नदीके अर्धमें पर बङ्गलसे पुन निर्माण किये थे, जिनमेंसे हाजोयन्त और इदरकपुरके लुगं दो सबसे अधिक विख्यात हैं। इनके समयमें टाकाके निकट बङ्गलको सङ्घर्ष और पुन प्रलुत हुए। मारप्लाकाके राज्यकालमें इन नगरमें ल्यायलविद्याकी बङ्गल लक्ष्मि हुई थी। उन्होंने वहाँ बङ्गलसी मसजिदे बनाई। इनके समयमें ई टाकाँ सर बनानेके लिये एक नवो पवति धानि पञ्जत हुई जिसे भाइप्लाकानो कहते हैं। इन पवतिके दो एक तर अब मो टाका नवरोमें देखे जाते हैं।

भाइप्लाकानि टाका महर तथा निकटवर्ती खानको उत्तरकी ओर उड़ुको तब बिभूत किया था। मन्नाट औरलहीके प्रादेशके लक्ष्मिन्ने कुछ दिनके लिये प दंज बनिषीके दाकाकित एजप्लीको नङ्गलावर कर रखा था। जब पोख्रिब मन्नाट हुए, तब बङ्गलको राज्य बङ्गानेके लिये लक्ष्मिन्ने मुगि हङ्गलकोकाको बङ्गदेशका

देवाने बना कर भेजा। इस समय कुमार आजिम-उगान सम्राट् के आदेशसे वङ्गदेशको निजामतमें नियुक्त थे। सुगिटने ढाका जा कर सम्राट् पौत्रको बहुतसो जागोर साम्राज्यके अन्तर्गत कर लो। इस पर आजिम-उगान अत्यन्त विरक्त हो कर सुगिटका प्राणनाश करनेके लिये पट्टयन्त्रमें प्रहृत हुए। सुगिट असम साहसमें पट्टयन्त्र-कारियोंके हाथसे छुटकारा पा कर सुगिटवादादमें जा कर रहने लगे। यह सब हाल जान कर सम्राट् ने अपने पोषको विहार भेज दिया और सुगिटकुलोखोंको नाजिम बनाया। फरुखसिंघरके राजत्वकालमें वे प्रकृत नाजिम हो गये। इस तरह १७०४ ई०में ढाकामें राजधानी उठा दी गई। पूर्व प्रदेशके शासनका भार एक नायब अर्थात् अधीन नाजिमके ऊपर सौंपा गया। १७१३ ई०में मिर्जा लतोफउल्लान द्विपुत्रा राज्यको ढाका निजामतके अन्तर्गत किया। परवर्ती अघिकाय नायब ही अधीन कर्मचारी पर इसका भार सौंप कर सुगिटवादादमें जा बसे। ऐसा होनेसे अनेक कर्मचारी ढाका और निकटवर्ती स्थानोंके अधिवासियोंका भ्रष्ट चरित्र कर आप धनो हो गये। १७६५ ई० तक ढाकावासियोंने इस तरहका अत्याचर सह्य किया। इस समय अंग्रेज कम्पनीने बङ्गालको देवानो पाई। तब इजरी और निजामत इन दो विभागोंमें ढाकाशासनका बन्दोबस्त हुआ। राजस्वसम्बन्ध प्रथम विभागका कार्य सुगिटवादादके दोवान द्वारा चलाया जाता था। देवानो और फौजदारो अभिवोग आदि दूमरे विभागके अन्तर्गत थे। १७६८ ई०में दोनो विभागको देखभाल करनेके लिये एक कर्मचारी नियुक्त हुए। १७७२ ई०से यही कर्मचारी कलेक्टर कहलाते आ रहे हैं। इसी वर्ष एक देवानो अदालत और १७७४ ई०में एक कोन्सिल स्थापित हुई। नायब राजस्व दसूल तथा देवानो अदालतमें विचार करते थे। उक्त कोन्सिल में इनके कार्यका प्रतिवाद किया जा सकता था। १७८१ ई०में कोन्सिल उठ गई और राजकाय कार्य आदि चलानेके लिये मजिस्ट्रेट, कलेक्टर जज प्रभृति नियुक्त हुए।

पूर्व समयके जागीरदारोंने ढाका विभागका अधिकार किया था। प्रधान जागीरको नवारा कहते

थे। मग और आसामवासियोंके आक्रमणमें उपर्युक्त प्रदेशको रक्षा करनेके लिये नवाराकी आय खर्च होता थी। नवारा भी फिर कई एक तालुकोंमें विभक्त था। मद्रास प्रभृति अपने तन्त्रवाइके बटने इस तालुकको प्रायः भोग करते थे। इस तरह नवाब प्रधान सेनापति आदिका खर्च चलायनेके लिये मङ्कार खलि, आइसाम प्रभृति प्रदेश अवधारित किया था।

नवाब ढाकामें निम्नलिखित कर वसूल करते थे—

(१) पटा बटलनेके समय जमोन्दारमें एक प्रकारका कर।

(२) ईद तथा और दूसरे मुख्य सुसलमान पर्वोंमें नवाबके निकट जिनमें उपहार भेजे जाते, उत्तनका खर्च चुटानेके लिये एक प्रकारका कर।

(३) विभागाय राजस्वके ऊपर मकडे कर।

(४) ढाकामें राजधानी दूमरी जगह ले जानेमें नायब द्वारा गृहीत जमानके ऊपर एक प्रकारका म्यायो कर।

(५) महाराष्ट्रीय चौध।

निम्नलिखित विषयोंमें सायर लिया जाता था।

(१) नौकाप्रसृत। जितनी जलयान टका बन्दरमें आते अथवा बर्तमें दूमरी जगह जाते उनके ऊपर भी यह कर लगाया जाता था। (२) वजारमें बचे जानिके द्रव्य। (३) घाम बेचना। (४) जो बाजारमें बेचनेके लिये बॉम, पयाल आदि लाते थे। (५) जो युद्धमज्जा प्रसृत करते थे। (६) मिन्दूर प्रसृत। (७) पान बेचना। (८) माकसुलो आदि बेचना। (९) कागज बेचना। (१०) नगरमें जो व्यवसाय करते थे। (११) दूकानदार इत्यादि। (१२) वानर, भालु, सँपके खेल इत्यादि काममें जो नियुक्त रहते थे। (१३) गायक। (१४) काठविक्रय। (१५) वजन या तालके निरोजक कर्मचारी भी सैकडे ७) आनेके हिमावसे कर लेते थे।

सुगल सम्राटोंके अधीन ढाकाका राजस्व बसूल करनेमें कुल राजस्वके मकडे दश रूपसे अधिक खर्च नहीं होता था। कम्पनीके देवानो ग्रहण करने पर ढाकाका राजस्व कुछ कम गया। ओइए प्रभृति अन्यान्य स्थान ढाका विभागमें अलग कर दिये गये। किन्तु १७८३ ई०के चिरखाया बन्दोबस्तके समय वाखुरगञ्ज

पौर करीबतुग ठाका कमिश्नरीक साध मिला दिने गये ।  
 १८०१ १८०४ ई०में ठाकाने ३११००० रु० राजस्व मसुम  
 हुआ है । इतिहास गवर्मेंटने सादर कर लया कर प्रारंभ,  
 पयोम इत्यादि मादक द्रव्योंको खपर कर रखा है ।

ठाकामें ८८३३ जमीन्दारी बिरहयायो बन्दोबस्तके  
 पयोग है पोके ४१० जमीन्दारी पौर एक बन्दोबस्तके  
 पयोग हुई पौर २१४ भाकराज जमीन हैं । इन जिलेके  
 १११० जमीन्दारियोंका खस्र गवर्मेंटने बेष दिया है ।  
 निर्दिष्ट समय पर कर नहीं चुकानेसे गवर्मेंट पिर  
 आयो प्रबन्धके अन्तर्गत समो जमीन्दारोंको प्रजाप  
 मोक्षाममें बेष छाहतो यो । १२ जनवरी, २८ मार्च  
 २८ जन पौर २८ सितम्बर ठाका कमिश्नरीमें कर जमा  
 करनीका निर्धारित समय है । ठाका करिपके समय बहुत  
 तथी भाकराज जमीन प्रजापित की पड़ो है । गवर्मेंटने  
 लक्ष्मी पक्षमें इन्हींको पयोगया किन्तु बहुत समय तक  
 गवर्मेंटका कोई कदम नहीं रहनेसे पवका पन्ना जमीं  
 दारोंके अन्तर्गत जो जानिसे गवर्मेंट इन्में छोड़नेको  
 बाज्य हुई ।

पड़रौनीको गाई अरामीयो पौर पोखरामेने ठाकामें  
 बाबिज्य कोठियां जोनीं । किन्तु ये मो जमग १००८  
 पौर १०८२ ई०में पड़रौनीके जाय जनी । मुसलमानीक  
 शासनकालमें काफिया अजयवभाव पौर साबारक  
 पाबिल्ल विधेय प्रसिद्ध था । टाकिनी अन्तर्गतकी प्रथ सा  
 मय अगह यैनी हुई थी । किन्तु प यैज शासनमें  
 यहाँका व्यवसाय नोप हो गया है मिकेहरी महामन्त्रके  
 पक्षके तीर्तियोंका हस्त निरूप हो गया है । प येक  
 कश्मीने ठाका पबिहार कर बहाँ प्यवसाय पारम्भ  
 किया । किन्तु यैरे यैरे पाय कम जानिसे १८१० ई०में  
 लनकी कोठियां लठा ही गई ।

प यैक राजत्वकालको ठाकामें लतनी पबिहार राज  
 कीय दुखटना न पड़ी किन्तु १८२० ई०का मिपाही  
 विद्रोह बडेँ लयौग्य है । ७३ न० देसीय पदातिक  
 नेम्य दो दलमें बर्ण रहनी लो । मरठके मिपाही विद्रोहो  
 हुए हैं, यह बन्दाद पा कर टाकिने मिपाहिमें मो अच-  
 लीपका बिज अन्तर्गत लया । इतिहास गवर्ने पदने साको  
 पमदक ज्ञान कर यहरकी रसाके निधे बहुतमो निगा

भेजी । यूरोपीय पौर यूरेसियनने भी जगहको रसाके  
 निधे सैयटनमें पयोग पयोग नाम लिधाया । २६  
 नवम्बर तक कोई विधेय घटना न हुई । उस नि  
 एमा स पाद पाया कि पड़रामने मिपाहो विद्रोही लो  
 गये हैं । यह समाचार पा कर गवर्मेंटने ठाकाके  
 मिपाहिमेंको अज्य जोह टिनेके निधे लहा । दूसरे  
 दिन प्रातःकालके १ बजे मिपाहिमेंको निरख करनेके  
 निधे यूरोपोह मिला पड़ो । मन्ने पकले लोपालउका  
 पड़क निरल किया गया । बाद मो निनामके मान  
 बाज्यही पौर याआ लो । अ-य की प्रथम पवला देह  
 कर मानुम पड़ता था, कि मिपाही मजदूरीमें गवर्मेंटके  
 प्रस्तावको लोकार कर लेंगे, किन्तु ज्ञातकालमें पड़ व  
 कर प यैकीने देना कि मिपाहो मानना करनेके निधे  
 पन्तुत हा गये हैं । अतः दोनों पक्षमें एक जोटो लड़ाई  
 जिङ्ग गई । मिपाहो पराजिन हा कर भाग बसे । इनमें  
 से कई एक पकड़े गये पौर अन्में फाँसी लो गई ।

१११८ ई०में अल्गाट पकवरके राजस्वसबिध जोहर  
 मन्ने करपक्षकी सुविधाके निधे बाहुका पौर भोगार  
 गीब इन का विभागमें ठाकाको विभक्त किया जा ।  
 ठाका यहर प्रथम विभागके अन्तर्गत जा तथा पूर्वकी  
 पौर बारबकाबादके जोहर तक विस्तृत था । मुसल  
 मन्दात्मक महान पौर मायर इन दो अविधोके राजस्व  
 बमूल करते थे । अमीनको मासगुजारी पदा करनेके निधे  
 बाहुका १२ पौर भोगारगीब १२ परगनामें विभक्त हुआ  
 था । प्रत्येक विभागने यथाकाल ८००२२०, पौर  
 २१८२८०, रु० बमूल लोमि थे । १७२२ ई०में महदेय  
 ११ बख्तनेमें परिवर्तित हुआ । भोगारगीब, बाकलाम्भ,  
 बाहुका विभागके कई पय त्रिपुण, सुन्दरवन पौर  
 भोपाकाको फेबोमदो तक अर्धभोगार ( ठाका )  
 विभागके अन्तर्गत थे । ये विर २१६ परगनोंमें पौर  
 कई एक जमींदारिकोंमें विभक्त हुए । इन प्रदेशमें  
 १८२८२८) रु० कर निर्धारित हुआ था । ०

१ बहामके अन्तर्गत ठाका जिलेका सदर अर्धभाग ।  
 ० टाकेहा विस्तृत विवरण जाननेके लिये निम्नलिखित ग्रन्थ इत्यम्  
 Dr Taylor's Topography of Deccan Provinces & Adjacent  
 bet of Deccan Hunter's Ethnical Account of Deccan Vol. VI

यह अक्षां २३° ३०' से २४° २०' उ० और देशां ८०° से ८०° ४३' पू० में अवस्थित है। भूपरिमाण १२६६ वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ८८५१७ है। इसमें ढाका शहर तथा २६४० ग्राम लगते हैं। यहाँ लालबाग, साभार, कपासिया और नवाबगञ्ज नामके ४ थाने हैं।

४ पूर्वीय बंगालके अन्तर्गत ढाका जिल्लाका सट्टर नगर। यह अक्षां २३° ४३' उ० और देशां ८०° २४' पू० पर बूढोगङ्गा नदीके दक्षिण किनारे अवस्थित है। यह नगर जिल्लेमें सबसे बड़ा है। ढाका विभागके कमिश्नर साहब यहाँ बाम करते हैं। ढाका म्युनिसिपालिटीके अन्तर्गत स्थानका परिमाण प्रायः ८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ८-५४२ है।

यह नगर नदीके उत्तरी किनारे प्रायः ४ मील तक लम्बा और नदी किनारेसे उत्तरको और प्रायः १५ मील चौड़ा है। दोनोई खाडोको एक शाखाने इसे दो भागोंमें विभक्त किया है। नगरमें दो प्रधान सड़क हैं, एक पश्चिममें लालबाग प्रामाटसे पूर्वमें दोलाई खाडो तक प्रायः २ मील और दूसरी नदीसे उत्तरको और प्राचीन दुर्ग तक गई है। दो राज-मडक ही सबसे बड़े हैं और उनके दोनों किनारे सुन्दर अष्टालिका और विपणि (दुकान)-खणो-द्वारा सुशोभित है। शेष सड़कोंने अधिकश छोटी और टेडो हैं। नगरके पश्चिमप्रान्तमें चक अर्थात् बाजार पड़ता है। यूरोपीयगण नगरके मध्यभागमें नदी किनारे प्रायः ५ मील तकके स्थानमें घास करते हैं। अर्धशैथ और शीक पत्तोंमें बहुतभी बड़ी बड़ी अष्टालिकायें भग्नदशामें पडो हैं। देशीय लीगोंकी वामभूमि बहुत सङ्घोर्ण है। विशेष कर ताँतो और अड़वणिकके वासस्थानका सम्मुखभाग ६७ हाथसे अधिक नहीं है, किन्तु उसको लंबाई प्रायः ४० हाथ तक रहती है। इस तरह मकानका मध्यस्थान खुला है, केवल दो ही प्रान्तमें घर है।

१७वीं शताब्दीमें ढाकानगर बङ्गालके सुसलमान राजाओंकी राजधानी था। किन्तु अभी उसको पूर्व सम्रदिका अधिक परिचय विद्यमान नहीं है। सम्राट् जहाँगीरकेसमयमें प्रतिष्ठित ढाकेका दुर्ग बहुत पहले लोप गया है। सुसलमान राजाओंके केवल दो चित्र

दीखाई पडते हैं - सुलतानमहमूद सुजामि निर्मित कटरा और लासंबागप्रामाट। ये दोनों अभी भी भग्नावशेष पड़े हैं। १७वीं शताब्दीकी बनी हुई अंगरेज और फ्रांसो कीठियाँ भी नदी-गर्भमें विनील हो गई हैं।

बहुत समयसे ढाकाके चारों ओरके प्रदेशों पर मग और पोर्तुगोज डक्केत बहुत ऊधम मचाते थे। उन लोगोंके आक्रमणसे इस प्रदेशकी वचनिके लिये १६१० ई०में बङ्गालको राजधानी ढाका नगरमें स्थापित हुई। १७०४ ई०में मुग्लिदकुलीखाने ढाकासे निज प्रतिष्ठित मुग्लिदावादमें राजधानी उठा लाये। उसी समयसे ढाकाकी अवनति आरम्भ हुई। कहा जाता है, कि इसकी सन्दर्भके मध्य ढाका नगर बड़ जनाकोर्ण और नदीके किनारमें उत्तरका और १५ मील तक विस्तृत था। अभी भी अरबोंके मध्य टुङ्गी ग्राममें बहुतसे अष्टालिकायें और ममजिद प्रभृतिका भग्नावशेष देखा जाता है। १८वीं शताब्दीमें ढाका नगरको मलमल बहुत आदरके साथ यूरपवण्डमें विकती गे। उस समय यहाँके हिन्दू ताँतियोंने वंशपरम्पराक्रमसे ढाका-मलमलका प्रभूत उत्कर्ष साधन किया था। सूक्ष्मतामें, दुनावटके ढंगमें, चिकनापनमें तथा परिष्कार परिच्छ्वतामें कोई भी इन लोगोंको बराबरी नहीं कर सकते थे। ढाकेको कपास भी उस समय महीन सूत निकालनेमें भूमण्डल पर अतुलनीय समझी जाती थी। १८वीं शताब्दीके अन्तमें इट इण्डिया कम्पनी और देशीय सौदागर प्रति वर्ष प्रायः २५ लाख रुपयकी ढाकेकी मलमल खरीदते थे। १८वीं शताब्दीके प्रारम्भमें सैनचेटर-ताँतियोंकी सुलभ मलमलकी प्रतिहन्दितासे ढाकेकी मलमलकी खपत कमने लगी। अन्तमें १८१७ ई०को इटइण्डिया कम्पनीकी कोठे उठ गई। यह ढाकाकी अवनतिका दूसरा कारण है। तभीसे इसकी उन्नतिकी कोई अशा न रही। केवल वस्त्रवसाय ही ढाकेकी प्रधान आयका मूल था। अभी वह व्यवसाय यहाँसे लोप हो जाने पर अधिवासीगण धनहीन हो गये हैं। बहुतसे अधिवानो स्थान छोड़ कर दूसरी जगह जा बसे। अब भी ताँतियोंकी दुरवस्था और बहुतसे परित्यक्त गृहादि इसका विषमफल घोषणा करते हैं। १८०० ई०में यहाँके अधिवासियोंकी संख्या दो लाखसे कम नहीं

बी, किन्तु १८६२ ई०में मोरारजी साहेब १८२१२ रक  
 मई। १८२२ ई०में इनकी कमा ७८००५ हो। एक तथा  
 बाबिनबाई छवि जो जामिने दिनी दिन यहाँको कोस  
 बंधना कुछ कुछ बरू रही है। किन्तु फिर भी यह गहर  
 खमी पूर्व-भोवक वा संधिया, यह पामा सुरापा मास है।  
 मन्वति ठाकुरी मरुमलका बोड़ा बहुत घादर होता  
 है। बोड़े ताली धनकुबेरके लम्बाइने पक्षम्य सुन्दर और  
 सुष्य मरुमल प्रसुत करती है। पर ठाकुरीं नुनिनामिं टि  
 प्रतिष्ठित हुई है।

ठाका नगरका पक्षमल बाबिनबाई पक्षमें बहुत जो  
 सुविधाजनक है। यहाँ यमुना और सिंधवा इन ताल  
 बड़ी मदिमेंसे यह पक्षि कूर नहीं पड़ता है। मरुमल  
 और नारायणमलको ठाकुरी बन्दर बह मजती है। इन  
 का बाबिनबाई पटना छोड़ कर बङ्गालके पन्थास्य समा  
 मन्ववर्ती मयोरुंसे प्रविष्ट है। यहाँ प्रधान बाबि य  
 दूख—पावक, पाठ, तिस सरनी, चमड़ा और वज्रादि  
 हैं। ठाकुरी मन्थो बङ्गालके समी मन्थियोंमें खेठ गिने  
 जाती है।

ठाका नगरकी जलवायु पञ्चमल खराब बी। क्या  
 कालमें चारों ओर जलमल्य जो जामिने घनेरु रोग उत्पन्न  
 होते हैं। यमो विह्वल जलमल्यकी सुविधा ही जामिने  
 ठाका पक्षमेंसे प्नाक्यवर हो गया है। बर्हाका सिन्धु-  
 कारामार पूर्वमें बङ्गालमें मरुने बडा है, जिसमें प्राय  
 ११-११ कोटी रक्के जाती है। १८२८ ई०में मिटकोई पक्ष  
 ताब ज्ञापित हुआ। इससे सिवा यहाँ कोडो जपारिल  
 जगना पक्षमल और पागलपाना है।

ठाकादक्षिण—तीरुह जिलेके जलमल एक परमल। इस  
 परमनेके मध्यमें ही जलमलका ठाकादक्षिण पाम  
 है। यह तीरुहके मध्य एक प्रसिद्ध तोष-मलमें गिना  
 जाता है और गुणवन्दावन नामसे मगधर है। यह  
 पक्षा २४ ५८ और देगा ०८२ १०००में प्रबलित है  
 यह पाम तीरुह मधरने फात कीम कूर दक्षिण-पूर्व  
 कीनीमें प्रबलित है। मधरने ठाकादक्षिण तक एक पक्षो  
 सङ्क गरी है। ठाकादक्षिण एक सम्भवामो बडा पाम  
 है। यहाँ कोई हजार जालक कापक रज्यादि बान करती है।  
 यह ठाकादक्षिण तीरुहके पित्त जगवाक

मिन्धुकोका जलमल और ठाका पित्तस्य है। छपिन्द  
 मिन्धुकोका वाम मरुन जो घमी बन्धनतोष रूपमें  
 परिगणित हुआ है। प्रति बयं बहुतसे वैश्वर इन तोष  
 को देखनेके सिद्धे पाते हैं।

प्रायः साई चार सौ वर्षके प्राचीन सेतुकोदवा  
 बनो तथा परवर्ती मरुमलकोविमो पक्षोंमें इन तोषोंको  
 उत्पत्ति और माशाभ्य इन तरङ्ग सिद्धा है—

ठाका दक्षिणमें छपिन्दमिन्धुके पुत्र जमवाकमिन्धुका  
 पास का। जगवाक नरबीपमें पकुरी है। नरबीपके मोला  
 म्बर पञ्चवर्तीको जङ्गको शपोदेमोके सास ठाका विवाह  
 हुआ। विवाहके बाद वे मन्धोपमें रहने लगे। कुछ दिनोंके  
 बाद वे मपरिवार भिदर्यमके निचे यहाँ पाये। यहाँ  
 शपोको गमं रहा इनो गमकी मन्थान योचैतस्यदेव  
 य। यमोवर्षामें शपोकी म्हा जगवाक पुत्र नरबीप  
 की लोट पाये। पामिने पञ्च शपोसे ठाका पामने  
 धनरोष जिया का कि पुत्र जन्म देने पा कसे एक बार  
 ठाकादक्षिणमें सिद्ध देना।

यथापमय मास का पनुराज शपोदेवामें पयने सुमसे  
 कङ्क सुमाय पा, किन्तु मोराज संव्यामके पक्षमें तीरुह  
 में पा न म। मन्थामके गाड़ १७११ मन्थमें वे तीरुहके  
 ठाकादक्षिणमें पाये।

पूर्वमें दोनां पक्षोंमें सिद्धा है, कि उदामि पयने  
 तीरुहके सामने घनेरु तरङ्गको जया-नागाके सास पयने  
 पारिवारिक सुक-दुष्कने बाने मो जङ्गो हैं। इस पर  
 जतमने लभे दो मूर्त्तियां दो, एक योक्षप्यमूर्त्ति और  
 दूसरी पयनी। मूर्त्ति को दे कर सेतस्यदेव चले गये  
 किन्तु प्याचरुंका विषय का कि इन दोनां मूर्त्तियोंके  
 प्रभावने बह पाम हरिमश हो गया—विह्वलको कोई  
 मो न रहा तथा इन दोनां मूर्त्तियोंके प्रभावने सिद्ध  
 ब्रह्मा पारिवारिक प्रभाव जाता रहा। पात्र भी  
 मूर्त्तिपूत्राके सिद्धा मिन्धुयमको और कोई दूसरो  
 बोबिबा नहीं है। लम्ब प्यादिसे उत्पलमें यहाँ को  
 पामदमो जेतो है, जमीदे एक म श (१८ पर जगवाक)-  
 का मरुध पीपक होता है।

छपिन्दमिन्धुका मन्थान जहाँ दोनां मूर्त्तियां विषमाल  
 है, यमो 'मोपुरवाको पामने प्रविष्ट है। इस ठाकुर



धाड़ोके सामने डाककर, वाजार प्रकृति है। खयाला तथा भूलनोखव यहाँ बहुत धूम-धामसे मनाया जाना है।

इसके सिवा ढाकादल्लिमें प्रसिद्ध 'गोपेदरगिब' हैं। ठाडुरवाड़ोसे पाय. टा कोश दूर कौनाम नामक एक छोटे पहाडके ऊपर गिवालय है। उक्त ग्रन्थमें लिखा है, कि चैतन्यदेव इन्हों गिबको देखनेके लिये गये थे। कौलानके पाम हो अग्निहुग्ड है।

ढाकापाठन (हिं० पु०) एक प्रकारका मझीन कपड़ा जिसमें फूलके चिह्न दिये रहते हैं।

ढाकेवालपटेल (हिं० पु०) एक प्रकारकी पूरजो नाव। इसके ऊपर धूप तथा वर्षासे बचानेके लिये छपर दिये रहते हैं।

ढाटा (हिं० पु०) १ डाढ़ी बाँधनेकी कण्डोकी पट्टी। २ वह बड़ा सुरेठा जिसका एक फोट डाढ़ीसे ले कर गाल तक लपेटा रहता है। ३ कफनके सरकनेसे बचानेके लिये सुरटेका मुँह बाँधनेका कपड़ा।

ढाड़ (हिं० स्त्री०) १ चिंवाड़, चोग, गरज। २ चिंवाड़।

ढाडस (हिं० पु०) १ धैर्य, आखामन, मान्दना, तसल्ली। २ दृढता, साहस।

ढाड़िन (हिं० स्त्री०) ढाड़ोकी स्त्री।

ढाड़ी (हिं० पु०) एक प्रकारकी नीच जाति। ये जन्मो लवके अवसर पर लोकीके यहाँ जा कर बघाई आदिके गीत गाते हैं।

ढाड़ौन (हिं० पु०) जलसिरिमका पेड़। यह जड़लो निरिमसे कुछ छोटा होता है। इसका गुण—विदोष, कफ, कुष्ठ और अतिमारनाशक है।

ढाना (हिं० स्त्री०) १ धस्त करना, ढहवाना। २ गिराना।

ढापना (हिं० स्त्री०) ढापना देखो।

ढावा (हिं० पु०) १ झोलतो। २ जाल। ३ परछत्तो। ४ रीटोकी दूकान।

ढामक (हिं० पु०) ढाल नगारे आदिका शब्द, दमदम।

ढामना (हिं० पु०) एक प्रकारका नाप।

ढामरा (सं० स्त्री०) हंसी, मादा हंस।

ढार (हिं० पु०) १ उत्तार, ढाल जर्मन। २ पथ, मार्ग,

रास्ता। ३ रचना, बनावट। (स्त्री०) ४ एक प्रकार, का गहना जो कानमें पहना जाता है। इसका आकार ढालसा होता है, विरिया। ५ पञ्जेली नामक गहना।

ढारस (हिं० पु०) ढाडस देखो।

ढाल (सं० पु०) ढाक-अच पृथो० माधुः। १ चर्मनिर्मित फनक, चमडेका एक प्रकारका शस्त्र। इससे तलवार, भाले आदिका वार रोका जाता है। यह वालीके आकार गोल होता और गँडेके पुद्दे, कहुएकी खीपडो, धातु आदि कई चीजोंको बनतो है। २ उत्तार, तिरकी जमोन। ३ प्रकार, तरोका, टङ्ग।

ढालना (हिं० स्त्री०) १ एक वरतनसे दूसरे वरतनमें गिराना, उँडेलना। २ मद्यपान करना, गराव पीना। ३ दिक्ती करना, बेचना। ४ कम ढाम पर माल बेचना। ५ व्यङ्ग बोलना, ताना छोड़ना। ६ पिवनो हुई धातु आदिको सचिमें ढाल कर बनाना।

ढालवाँ (हिं० वि०) ढालदार, ढालू।

ढालिया (हिं० पु०) वह जो सचिमें ढाल कर वरतन आदि बनाता हो, साँचिया, भरिया।

ढालो (सं० स्त्री०) ढालमस्यास्ति ढाल-इनि। ढालविशिष्ट, ढालधारो, चर्मी।

ढालुआँ (हिं० वि०) ढालवाँ देखो।

ढालू (हिं० वि०) ढालवा देखो।

ढामना (हिं० पु०) १ सहारेकी वस्तु, टेक, उँदकन। २ तकिया, बालिया।

ढिँढोरना (हिं० स्त्री०) १ अनुसन्धान करना, खोजना, तलाश करना।

ढिँढोरा (हिं० पु०) १ घोषणा करनेका ढोल, उगडुगो। २ घोषणा, सुनावो।

ढिँचन (हिं० पु०) एक प्रकारका गन्ना।

ढिँकुलो (हिं० स्त्री०) देखो देखो।

ढिग (हिं० स्त्री० वि०) १ समोप, निकट, नजदीक। (स्त्री०) २ सामोप्य, पास। ३ तट, किनारा।

४ णड़, कोर, हाथिया।

ढिठाई (हिं० स्त्री०) १ छुटता, चपलता, गुस्ताखी। २ निर्लज्जता। ३ अनुचित साहस।

ढिवरी (हिं० स्त्री०) मधीका तेल जलानेकी डिबिया।

२ मन्त्रे पेंडोका भाग । ३ मन्त्रिका शोडा ट कडा को  
बिन्धी कसे जानेवासे पंच ? मिरे वा नगा रहता है हमसे  
पंच बाहर नहीं निकलता है । ४ चमडे या मुँखको  
चकती । यह परसेमें हमन्त्रिन्नाई जाती है जिनमें  
तन्त्रना न घिसे ।

त्रिन्त्रिणा ( हि० वि० ) १ टोना टान् । २ पागोको तरङ्ग  
पतना ।

टिनाई ( हि० स्त्री० ) १ टोना चोमेका भाग । २ सिधियाता  
पान्त्र सुप्तो । ३ छीन्नेको जिया ।

टिनाना ( हि० स्त्री० ) १ टोनेका नाम जिनो दूमरेने  
कराना । २ छीना करना ।

टिन्ड ( हि० वि० ) महर सुप्त ।

टिसरना ( हि० स्त्री० ) १ मठल होना, छुजना । २ पन्थोका  
पचना पार म होना ।

टोड ( हि० पु० ) १ बडा पिट । २ गर्म ।

टोडन ( हि० पु० ) एक प्रकारको तरकारी ।

टोट ( हि० स्त्री० ) रखा मन्थोर ।

टोट ( हि० वि० ) जो बडीके समाने मन्थोप न रहता  
हो छूट बेपटन, मोल । २ मयराहित, जिनको डर  
न हो । ३ माइमो विद्यावर ।

टोट्यो ( हि० पु० ) बीना देणे ।

टोमा / हि० पु० ) फयर पादिबा ट कडा टोमा टोका ।

टोम ( हि० स्त्री० ) सिबिलता, सुप्तो मासुमोड ।

० बन्धन का टोना करनेका भाग ।

टोबना ( हि० स्त्री० ) १ तना न रहना टोना करना ।

२ बन्धने छुटकारा देना छोड़ देना ।

टोला ( हि० वि० ) १ जो तना न हो । जो छूटतासे  
बधा न हो । २ जो सूत्रबद्ध कर पकड़े हुए न हो ।  
जिनमें बलका भाग पबिद्ध हो गया हो, पनोना बद्ध  
योना । ३ जो चर्म न बन्धने सिबिल हो । ४ शान्त,  
तरम, मन्ध । ५ सिबिल, मन्द, सुप्त । ६ पान्थी सुप्त,  
महर । ७ न पुसक ।

टोलापन ( हि० पु० ) सिबिलता टोला चोमेका भाग ।

टोड ( हि० पु० ) रखा टोना ।

टुडना ( हि० स्त्री० ) पन्थेप कराना तनाय कराना ।

डडी ( हि० स्त्री० ) बाहु बौड ।

टुलना ( हि० स्त्री० ) १ प्रथम करना सुपना । २ पात्र  
मय करना टट पडना । ३ पातमें छिपना ।

डडा ( हि० पु० ) इरा रणे ।

डपटन ( म० स्त्री० ) डुग्ध सुपट । पन्थेप, चोब  
तनाय ।

टुष्टा ( म० स्त्री० ) एक रासमोका नाम । यह हिरण्य  
कशिपुको प्रथिन थी । शिवकोमे नर पा कर यह पन्थिमें  
मो नशो ब्रह्मते थी । जब हिरण्यकशिपु प्रह्लादको मार  
नेके चनेक उपाय करके डार गया तो उसने टुष्टाको  
पाव पन्थिमें बैठे जानिके जिने बधा । श्रीरामचन्द्रको  
लुगमे हमका परिचाम करटा हो गया, प्रह्लाद तो न  
न बने टुष्टा उस कर भाग हो गई ।

टुष्टि ( म० पु० ) टुष्ट यमोको टुष्ट हन् । यथेय ये  
सह प्रकारको सिधिया प्रदान करते हैं । सागोवन्धमें  
निना है—

“अन्धेचने दुष्टिरन प्रथिलोत्थियानु  
सगन्नुत्थितका मन् दुष्टिनाय ।  
काशीप्रेशमपि धो बन्धेन रेरी  
लोभे रिश त्व रिशरथ दुष्टेयान् ॥” ( सागोवन्ध )

टुष्टि यह भातु जगत्में पन्थेपपार्थक्यमें हो  
प्रकथित है पात्र । विषय तुम्हारे पन्थेपिन या ठूटे हुए  
है हमीने तुम्हारा नाम टुष्टि है । तुम्हारे मन्थोपके  
बिना खोई मनुष्य कागोमें प्रथेय नहीं कर सकता है तुम  
सुभने कुछ दयिच टुष्टिरात्रपमें निराजमान रह कर  
मन्थोको पन्थेप कर रन्धे समस्त पन्थिनयित पदाब  
प्रदान करते हो इसी सिधे हो तुम्हारा नाम टुष्टि  
पडा है । जो मनुष्य सिबिल प्रकारने मन्थमाप्पाटि द्वारा  
दुष्टिरात्रको पूजा करता है वह सिबिलका पनुवर हो  
कर कागोमें पबकान करता है । प्रतिपत्तुमें जो हम  
की पूजा करता है वह मो दस म सारका पमोड प्राप्त  
करता है ।

मात्रभासको शुकाचतुर्वीमें नज्रत करके जो मनुष्य  
दुष्टिमथेमको पूजा करते, ज्येत्तिलके अन्ध बना कर  
भोम नगाने तबा जो तिलने होम करते हैं, वे मन् प्रकार  
की तावाधेनि रहित हो कर पन्थेप सिधिलाम करते हैं ।

( काशीवन्ध पन्ध ) काशी देणे ।

२ जातकपद्धति नामक ज्योतिष-न्यायकार । ३ सांसा-  
दिनिर्णय नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता । ४ एक संस्कृत  
शास्त्रानुरागे राजा । इन्होंने लम्बाइसे विश्वनाथभट्टने  
विख्यात "दुष्टिप्रताप" नामक एक वृहत् स्मृतिनिबन्ध  
प्रकाश किया है ।

दुष्टिराज—एक विख्यात ज्योतिर्विदु । ये पाय्यपुरवासी  
वृद्धिके पुत्र थे । इन्होंने बृहत्तमे ज्योतिःशास्त्रीय ग्रन्थ  
प्रणयन किये हैं, जिनमेंसे निम्नलिखित ऋद्धे एक पाये  
जाते हैं—ऋणभङ्गाध्याय, कुण्डकल्पलता, यदफलो-  
त्पत्ति, यद्वलाघवोदाहरण, जातककोस्तभ, जातकाभ-  
रण, ताजिकमूषण, ताजिकामरण पञ्चाङ्गफल, राज-  
योगाध्याय, जिष्टाध्याय, अनन्तरचित सुधारसकी सुधारम-  
सारीणी नामकी टीका, सुधारसकरणचतुष्क प्रभृति ।  
इनके पुत्र गणेशने गणितमञ्जरोको रचना की है ।  
२ वीधाशनेय चातुर्मास्य-प्रयोगरचयिता । ३ कावेरो-  
स्तोत्र प्रणेता ।

दुष्टिराज लक्ष्म—एक वैदिक पण्डित । इन्होंने चतुर्पत्नी-  
काधान, स्वर्गदारेष्टिप्रयोग तथा वीधायनीय होव  
सामान्य नामके ग्रन्थ रचे हैं ।

दुष्टिराज व्याधयल्लवन्—एक महाराष्ट्र-पण्डित । इन्होंने  
१७१३ ई०में शाहजोके अनुरोधसे शाहजिखिलास  
नामक एक लक्ष्मीत पुस्तक और उसके बाद सुद्राराक्षस-  
टीका रचना की है ।

दुग्धभ ( म० पु० ) दुग्धभ, डेहड़ा साँव ।

दुग्ना ( हि० क्रि० ) १ टनना, टपकना, गिरकर बहना ।  
२ इधर उधर डोलना, डगमगाना । ३ हिलना, डीलना ।  
४ लटकना, फिसल पड़ना । ५ प्रवृत्त होना, भुक्तना ।  
६ प्रसन्न होना, खुश होना ।

दुग्ही ( हि० स्त्री० ) १ फिसलनेकी क्रिया । २ पग-  
डंडी, पतला रस्ता । ३ सोनेकी गोल दानोंको पहिंत जो  
नथमें लगे रहते हैं ।

दुगाना ( हि० क्रि० ) १ दरकाना, टपकाना । २ हिलाना  
डुलाना । ३ लटकना ।

दुग्धा ( हि० पु० ) गोल मटर, बेराव मटर ।

दुग्ही ( हि० स्त्री० ) पगडंडी, पतला रास्ता ।

दुलकाना ( हि० क्रि० ) फिसलना, सरकना ।

दुलकाना ( हि० क्रि० ) लुढ़काना, सरकाना ।

दुलना ( हि० क्रि० ) १ गिर कर बहना २ । लुढ़कना,  
फिसल पड़ना । ३ प्रवृत्त होना, भुक्तना । ४ प्रसन्न होना,  
खुश करना । ५ हिलना, डोलना ।

दुलवाई ( हि० स्त्री० ) १ दोनेका काम । २ टोनेकी  
मजदूरी ।

दुलवाना ( हि० क्रि० ) दोनेका काम किसी दूसरेसे  
कराना ।

दुलाना ( हि० क्रि० ) १ डालना, ढरकना । २ गिराना । ३  
लुढ़काना, सरकाना । ४ प्रवृत्त करना, भुक्तना । ५ प्रसन्न  
करना, खुश करना । ६ इधर उधर हिलाना, फहराना ।  
७ चलाना, फिराना । ८ टोनेका काम कराना ।

दुलुभा ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी चीनी जो खजूरसे  
बनाई जाती है ।

दुवारा ( हि० पु० ) हुन नामका कीड़ा ।

दुक्का ( हि० क्रि० ) दुक्का देखो ।

दुका ( हि० पु० ) किसी पदार्थ की देखनेके लिये घातमें  
छिपनेका काम ।

दुद्ध ( हि० स्त्री० ) श्वेतपण, खोज, तलाश ।

दुद्धना ( हि० क्रि० ) श्वेतपण करना, तलाश करना ।

दुद्धला ( हि० स्त्री० ) दुद्धा नामकी राक्षसी ।

दुका ( हि० पु० ) दुद्धन, घास इत्यादिके बोझका एक  
मान । यह दश पूल्लिके बराबर माना गया है ।

दुद्धिया ( हि० पु० ) श्वेताश्वर जैनोंकी एक श्रेणी, ये  
मूर्तिपूजा नहीं करते और गृहस्थ धर्म ग्रन्थ पाठ करते  
समय और साधु हमेशा अपने मुँह पर पट्टे बांधे रहते हैं ।

दूसर ( हि० पु० ) वनियोंकी एक जाति । धूमर देखो ।

दुसा ( हि० पु० ) कुस्तीका एक पेश ।

दुँक ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी चिड़िया । जो मटा  
पानीके किनारे रहते हैं । इसकी चोंच ठीर गरदन  
लम्बी होती है ।

टंकली ( हि० स्त्री० ) १ एक औजार जिसके द्वारा सिंचा-  
ईके लिये कुएँसे पानी निकाला जाता है । इसमें एक आड़ी  
लकड़ी एक जंचो खड़ी लकड़ीके ऊपर इस प्रकार टेकी  
रहती है कि उसके दोनों छोर क्रमशः नीचे ऊपर हो  
सकते हैं । २ एक प्रकारकी सिलाई । ३ एक प्रकारका

सकड़ीका जोहार जिनसे धान दखाटि कूटा जाता है धान-कुड़े हेंको । ४ एक प्रकारका पत्थ जिनसे द्वारा मन्केसे पक्के छतारा जाता है, मन्केतुपपत्थ । ३ एक प्रकारको मित्रा जो सिर मोषि घोर घोर खपर खरके की जाती है, लकाबाजो । कनैया । ३ मन्केतुपपत्थ, मन्केसे पक्के छतारोका पत्थ ।

धंका ( हि • पु० ) १ कौतुहलका भास । यह अन्धसे विरिधे कतरो तब सगा रहता है । २ बड़ा डेको ।

धंजिका ( ध • स्त्री ) एक प्रकारका सुख ।

धेंकिया ( हि • स्त्री० ) छिद्रपट्टे चदर बनानेमें छपड़ेको एक बाट घोर सिधार्ई । इससे छपड़ेकी लम्बाई एक तिहाई घट जाती है और चौड़ाई अतनी हो बड़ जाती है ।

धेंको ( हि • स्त्री० ) धंका देखो ।

धेंकुली ( हि • स्त्री० ) डेको देखो ।

धेंठ ( हि • पु० ) १ बाक, खोबा । २ अत मनुषीका भास कामेबाओ एक प्रकारको मोच जाती । १ मूख, मूक, बड़ । ३ कपामपीन्धे पादिबा जोड़ा ।

धेंडर ( हि • पु० ) रीग या चोटके चारच पाँचके छेले परका समरा हुआ भास, डेंडर ।

धेंडवा ( हि • पु० ) एक प्रकारका चन्द, जिनका लूँच खासा होता है, मूडूर ।

धेंडा ( हि • पु० ) डेंक देखो ।

धेंडी ( हि • स्त्री० ) १ कपामका जोड़ा । २ पोन्डका जोडा । ३ एक प्रकारका मरना जो काममें पचना जाता है, तरको ।

धेंव ( हि • स्त्री ) १ टहनीसे लगा हुआ फल या पत्तेके खोरका भास । २ कुचाप, बीड़ी ।

धंपी ( हि • स्त्री० ) डेंक देखो ।

धेंडरो—प्राचीन डाकाबंज तन्धमें उल्लिखित एक धान । यह पक्षी खोचविहारके पूर्वार्धमें था, किन्तु वर्तमानमें यह स्थानपाड़ा घोर कामरूपका पथ समझा जाता है । सुगन्ध-बादमाहोंके समयमें तथा इह इच्छिया कम्पनीके पक्षिधारके प्रारम्भमें यह मन्कार धेंडरो कहलाता था । स्थानपाड़ा जिलेके पथान गोरोपुर-राजको जमींदारो पथ मो 'धेंडरी'के नामसे प्रसिध है ।

धेंडरो ( हि • स्त्री० ) विषी देखो ।  
 डेममोत्र ( हि • स्त्री० ) समुद्रकी खँचो लहर ।  
 डेर ( हि • पु० ) समूह पुत्र टाक, गज ।  
 डेरना ( हि • पु० ) बड़ फिरको जिनसे सूत या रस्मो बटो जाती है ।  
 डेरा ( हि • पु० ) १ सुतको बटनेको फिरको । २ मन्के या मोड़ेका घिरा जो मोटेके लूँच पर लगा रहता है । ३ पन्केलका पीड़ ।  
 डेराहीक ( हि • स्त्री० ) एक प्रकारको मन्को ।  
 डेंरो ( हि • स्त्री० ) डेर समूह, टाक ।  
 डेल ( हि • पु० ) रक देखी ।  
 डेनबाम ( हि • स्त्री० ) १ टेला खँकनेका रस्मोका एक पन्दा ।  
 डेना ( हि • पु० ) ईट मरो दखाटिका छोटा टुकड़ा । २ खण्ड, टुकड़ा । ३ बालका एक मीद ।  
 डेना चोब ( हि • स्त्री० ) माटीं सुदी चोब । कहा जाता है कि इस तिथिको चन्द्रमा दिर्घनेसे बलक मयता है । यदि इस दिन चन्द्रमां दिखा जाय तो देखनेवासीको नोगेसे कुछ गाथियां सुन लेनी चाहिये । निर्र माथियां जो सुननेसे निते लन दिन कीयीके बरमें डेना खँका खाता है ।  
 डे कसो ( हि • स्त्री ) पँचके देखी  
 डेंचा ( हि • पु० ) एक प्रकारका पीड़ जो चकबेंडकी तरह होता है । इसको खानसे रसियां बनाई जाती है, कयसी ।  
 डेंया ( हि • स्त्री० ) १ डाई डेरका एक बटखरा । २ डाई गुनेका पडाड़ । ३ मनेंवरके एक रायि पर ग्यिर रहनेका डाई चर्रका भास ।  
 डेंकना ( हि • स्त्री० ) पीना पी भास ।  
 डेंका ( हि • पु० ) १ पत्तर या पार बिठी कड़ो कलुका बड़ा पनबड़ टुकड़ा । २ खोन्डका भास । यह खोन्डमें जाटके बिरये शी कर खोन्ड, तब बँचा रहता है । ३ दो बीसी या चार जो पान ।  
 डेंम ( हि • पु० ) पावण्ड, पाकुम्बर, डकोपका ।  
 डेंमगूर ( हि • पु० ) धूर्त विधा, धूर्तता पावण्ड ।  
 डी नगानो ( हि • स्त्री० ) पावण्ड, पाकुम्बर ।

ढोंगी (हिं० वि०) पाखण्डो, जो झठा आडम्बर करता हो।

ढोंटा (हिं० पु०) ढोंटा देखो।

ढोंढ़ (हिं० पु०) १ कपाम आदिका जोड़ा। २ कली।

ढोक (हिं० स्त्री०) १२ इंच लम्बाईकी एक मछली, ट्रेनी।

ढोका (हिं० पु०) ढोंका देखो।

ढोटा (हिं० पु०) १ पुत्र, बेटा। २ बालक, लडका।

ढोटो (हिं० स्त्री०) लडकी।

ढोट मित्र-प्राणकृष्णमित्रके पुत्र और आर्द्धविवेकके रचयिता।

ढोना (हिं० क्रि०) १ किमी वस्तुको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुँचाना। २ उठा ले जाना।

ढोर (हिं० पु०) चौपाया, मवेशी।

ढोरा (हिं० पु०) ढोर देखो।

ढोरो (हिं० स्त्री०) १ ढालनेका भाव। २ रट घुन ली।

ढोल (सं० पु०) कानका परदा।

ढोल (सं० पु०) ढंका तदाकार' लाति ला-क प्रयोग माधुः। १ वाद्ययन्त्रविशेष, एक प्रकारका बाजा, जिसके दोनों ओर चमड़ा मटा होता है। रुद्रयामलमें इस वाद्य का नाम पाया जाता है। यह एक ग्राम्य बहिर्द्वारिक यन्त्र है, ढोलकमें कुछ बड़ा होता है। यह बाजा प्रायः गलेसे लटका कर एक तरफ हाथसे और एक तरफ लकड़ीसे धजाया जाता है। (यन्त्रकोष)

२ रागविशेष, एक रागिणीका नाम। यह ओडव, वरारो और रेखसे उत्पन्न होती है। - (सङ्गोत्पत्तौ)

ढोलक (सं० पु०) ढोल-स्वार्थ कन्। ढोलके आकारका यन्त्रविशेष। छोटी ढोलको हिन्दीमें ढोलक शब्द स्त्रोन्निष्ठमें व्यवहृत होता है।

ढोलकिया (हिं० पु०) वह जो ढोल बजाता है।

ढोलकी (हिं० स्त्री०) ढोलक देखो।

ढोलना (हिं० पु०) ढोलना देखो

ढालनी (हिं० पु०) १ एक प्रकारका जतर। यह ढोलके आकारका होता और ताम्रके पिरो कर गलेमें पहना जाता है। १ ढोलके आकारका एक बड़ा बेलन यह महक परके कंकड पत्थर याटि पीटनेके काममें आता है। २ बर्चोका छोटा झूला, पालना। (क्रि० ५) श्वर उधर हिलाना।

ढालनी (हिं० स्त्री०) बर्चोका झूला, पालना।

ढोलपुर (झोलपुर) राजपूतानेके उत्तर पूर्व कोणका एक श्रेयोय राज्य। यह अक्षा० २६' २२' से २६' ५७' और देशा० ७७' १४' से ७८' १७' पूर्वमें अवस्थित है। यह राज्य उत्तर-पूर्वसे दक्षिण पश्चिमकी ओर ७२ मील लम्बा और लगभग १६ मील चौड़ा है। इसके उत्तरमें आगरा, दक्षिणमें चम्बल नदी और पश्चिममें करीली तथा भरतपुर है। इसका प्रधान शहर ढोलपुर है। इस राज्यमें एक ब्रिटिश गवर्नेण्टके प्रतिनिधिकर्म चारो (Political agent) रहते हैं। भूपरिमाण ११८७ वर्ग मील है।

चम्बल नदी इस राज्यके दक्षिण-पश्चिमसे उत्तर-पूर्वमें १०० मील तक प्रवाहित है। योष्मकालमें इसकी चौड़ाई ३०० गज और वर्षाकालमें १००० गज रहती है। चम्बल नदीके समतलका आकस्मिक परिवर्तन हो जानेके कारण नदीके ऊपर झो कर जाने आनिमें डर लगता है। इस नदीको पार कर खालियर जानेको कई एक घाट हैं। परन्तु उनमें राजघाट हो सबसे प्रसिद्ध है। इस राज्यके उत्तरमें बाणगङ्गा (अथवा उतनगाँ) नदी है। ढोलपुरमें पार्वती और मोर्क नामक इसकी दो शाखा नदी भो हैं। योष्म कालमें ये तीनों नदियाँ कई जगह सूख जाती हैं। यहाँको नदियाँ साधारणतः देशके समतलको अपेक्षा बहुत निम्न हैं और इनका किनारा कहीं कहीं बड़े बड़े गड्ढे परिपूर्ण है।

ढोलपुरको चौड़ाईकी ओर एक लाल रेतिले पत्थरका छोटा पहाड़ है। अधिवासिगण इस पहाड़से पत्थर ले कर घर आदि बनाते हैं। बाहरमें रखनेसे यह पत्थर कठिन हो जाता है और गिरानेसे भी नहीं टूटता। चम्बलका रेलवे पुल इसी पत्थरका बना हुआ है। नदीके किनारे अनेक गड्ढोंमें कङ्कड मिलते हैं। ढोलपुर शहरसे २१ मीलके मध्य चूनेक पत्थर टेखे जाते हैं। पहाड़को निकट भूमि अनुवर है। उत्तर और उत्तर-पश्चिम भागको बालू और कोचडमिश्रित मट्टीमें फसल अच्छी होती है। राजाखेरा परगनेके निकटस्थ काली मट्टी हैमन्तिक शस्यके लिये अनुकूल है। बाजरा, ज्वार, जौ, गेहूँ ढोलपुरके प्रधान उत्पन्न शस्य हैं। यहां रूई और धान भी होता है। कुएँ और तालाबसे जल ले कर

जमीन मींचो जातो है। छप में माघ २१ पुट मोचे बस रहता है।

डीणपुरके राजा जो हम समय भूखण्डके एकमात्र पबिकारी है। जमींदार पयवा तानुबदार छपबीनि कर बल्न कर रोजकोपर्मि सेवती है। घामके ज्ञापन कर्ताके ब शहर जो जमींदारके बोसुख है। अब तक जमींदारनब राजाके साथ निर्धारित नियमीका पालन करते है तभीतक ये जमीनका पबि कर भोग कर सकते है। परती जमीन ताबाब घादि राजाके खान पबि घारमि है।

१८७६ ई में राज्य एक बार माया मया बा। यहां की भोग स व्था माघ २००८०१ है। हिन्दू सुसनमान ईसाई धोर जैनधर्मके माननिकानि बहुतके शोक यहां रहते है। रामपूत, गुर्जर, कच्छो भोगा, जाट, बनिया पडोर इत्यादि अे बोके लोग भी हम प्रदेशमें देखे जाते है। बारी धोर गिर्द तानुबके गुर्जरभोग पालतू पयवीको पोरो करती है। भोगामब छपिबोको है। बीषब धर्म जो डीलपुर राज्यमें प्रबल है। इस राज्यमें योनी बारी, पुरबा धोर राजाकेप मयके चार प्रधान शहर तथा ३१८ घाम नमसि है। यहां हिन्दो पारमो पडरेबो घादि सिखानेके सिबे बहुतके सिखान्त है।

डीणपुर राज्यके बीच जो कर घागरेके बम्बई तक घाण्डइड रोड गई है। डीणपुरके राजाकेगा जोती हुई घागरा, डीलपुरके बारी धोर डीणपुरके जोकारो तथा बरीती तक तीन पच्छी मडके है। सिम्बिया टंट रेलके मारन भी इस राज्यमें जोकर रहै है।

राजसूत्रकार्यको सुविधाके सिबे यह राज्य १ तहसो मीनि बिभक्त है। यथा ( १ ) गिर्द डीलपुर ( २ ) बारी ( ३ ) बसेरो ( ४ ) जोहरो, ( ५ ) राजनेरा। उक्त तहसीलमें यथा क्रम १, ७, १, १ धोर १ तानुब है। केवले सहायता पानेके सिबे १३ घाम जामोर धोर ४४ घाम देभोलर कर्के दिबे गबे है। जामोरटारीके पया चार करमें पर राजा कसका बिचार करती है। प्रजाकी औबध, जो को समता राजाके हाथ है। राजकायमें धनाह देनेके सिबे कोगिनलमें १ नटप्य रहती है। नाजिम पुनिध धोर विचार बिभागके प्रधान कर्ता है। हिन्दू

बोबिनमे अनुमति सिबे बिना ये जमीनको भी १ मयसे पबिक समय तक कैद नहीं कर सकते। हम राज्यमें बहुतके धाने, फाड़ो तथा प्रति घाममें एक एक बोको दार है। बन-विभायका बन्दोबस्त तहसीलटारके हाथ है। डीणपुरको काद्यप्रया इष्टिम-स्वास्वामी मार है।

देयका जपवातु सधारपत स्थापनक्रम है। सैत बीषाब धोर ज्येष्ठ मासमें पखन कण्य वातु चलती है। वार्षिक इष्टिपात ३ परिमात्र २७ से १० इण्ड है। हम राज्यमें १ दातब चिबिक्सासय है, जिनका सके राजकोप से दिया जाता है।

१००४ ई०में तोमरक शके राजा डोलन देव तखवार बम्बल धोर बाबगडा गरीके मन्थवती प्रदेश पर मासन करते थे। प्रवाद है, कि लकैके नामानुसार डीणपुरके राजाने बाबरको कुछ खान तक बाबा दो घो। पकबरेके समयमें डोलपुर मुख्य राज्यमें मिनाया गया। १६१८ ई०में डीणपुरके १ भीस पूर्व रहयकुव नामक खानमें राज्यके वारध धोर उत्रिब सुरादेके साब बुधमि प्रवृत्त हुए थे। वीरईसेनको सख, के बाद पाकम धोर सुपात्रमके बीच डीलपुरमें एक लड़ाई किड़ी। नवीन सन्नाट सुपात्रमको विपदापय देख कर राजा कब्याचसि जने डीणपुरको अपने पबिकारमें कर लिया।

डीणपुरके घामनकर्ता ज़ाटर्नयके है। हमके पूर्व पुरप प्राचोन कालमें म्कानियरके निकटकर्ता गीहट नामक एक घाममें जमींदार थे। प्राचीन बचनके अनुसार डीणपुर जमोज राज्यका एक घ य बीसा अनुमित होता है। सम्य ट कबकरने डीणपुरको पारगटा राज्यके पख-गंत किया था। जो कब जो, डीणपुरके मासनकर्तागब पखल परियमा धोर बुहहुगल कोनक कारक धोर धोरि कथित करने लगी। पियका ब्राहोमबक समयमें ये महारा-ड्रियके पबोन मोहदराक सपाधिने भूपित हुए। १७११ ई०को घानीपतके भीषण बुधक बाद मोहदराजने म्कानि-यरका पबिचार धोर अपनी स्वाधीनताप्रचार कर राजा को सपाबि चारक की। १७७८ ई०में मोहदके महाराजा म्कान्दरिबहुके भाव प गरेजाको इस शर्त पर सखि हुई कि इष्टिमयकमें १४ महाराजाको महाराजके विवृह तुर करनेमें सैन्यसाहाय्य करेगो तथा अयपराजयके

फलभागी होगी। अंगरेजोंकी सहायतासे महाराणाका राज्य बहुत बढ़ गया था। किन्तु महाराणाने अपनी प्रतिष्ठा पूरी न की। इसी अपराधसे अंगरेज गवर्मेण्टने उनके साथ मित्रता छोड़ दी और सुधवसर पा कर सिन्धिया ग्वालियर और गोहद अधिकार तथा महाराणाको बन्दी किया। १८०३ ई०में सिन्धियाके प्रतिनिधि शासनकर्त्ता अम्बजो इङ्गलियाने गोहद, ग्वालियर और अन्यान्य कई एक स्थान इटिशगवर्मेण्टको प्रदान किये। १८०४ ई०में इटिश गवर्मेण्टने महाराणा लकिनन्दरके पुत्र किरातसिंहको गोहद और उसके अधीन देश लौटा दिये। किन्तु थोड़े समयके बाद इटिश गवर्मेण्टने महाराणा किरातसिंहसे गोहद प्रदेश ले कर सिन्धियाको दे दिया। महाराणाको क्षतिपूर्तिके लिये इटिश गवर्मेण्टने उन्हें ढोलपुर, वर और रजकौर परगने अर्पण किये। इस प्रकार किरातसिंह ढोलपुरके महाराणा हुए। १८३६ ई०में किरातसिंहको मृत्यु होने पर उनके पुत्र भगवन्त सिंहने महाराणाको उपाधि पाई। इन्होंने मिर्जापुर विद्रोहके समय इटिश गवर्मेण्टको घघेष्ट सहायता की थी। पुरस्कारस्वरूप इन्हें इटिशगवर्मेण्टसे के० सी० एस० आई० की उपाधि और १८६६ ई०में जो० सी० एस० आई० की उपाधि मिली थी। पटियालेके महाराजको बहनके साथ इनका विवाह हुआ था। नेहाल सिंह नामक इनके एक पुत्र थे। १८७३ ई०में महाराणा भगवन्तसिंहकी मृत्युके बाद नेहालसिंह पिटपट पर अभिषिक्त हुए। ये आगरेसे प्रिन्स आफ वेल्सको अभ्यर्थनसभा तथा दिल्लीदरबारमें उपस्थित थे। १८०१ ई०में उनकी मृत्यु हुई। बाद उनके लड़के रामसिंह राज्याधिकारी हुए। इनका जन्म १८८३ ई०में हुआ था। इनके मरने पर उदयभानसिंहने राजसिंहासन सुशोभित किया। फिरहाल यही वहाँकी महाराणा हैं। इनका पूरा नाम है—

एच एच रैस—उद्-दोला सिपाहदार, उल सुल्त महाराजाधिराज अमवाड़े महाराजराणा सर उदय भानसिंह लौकिनन्द, बहादुर, दिल्लीरजद्रु अयदेव, के, सो, एस, आई०।

ढोलपुरके महाराणाको १५ तोपोंकी सलाहो है।

इस राज्यमें १८३ अक्षरोंकी, ८८४ पदाति और ३२ तोपें हैं

ढोलपुर राज्यमें सफेद और लाल रंगके रेतोले पत्थरसे मूल्य गुम्बज, बक्का और अन्यान्य आकारकी झरोखे प्रस्तुत होती हैं। जो देखनेमें बहुत अच्छे लगते हैं। शिल्पकार्यके तारतम्यकी अनुभार इसकी मूल्यका ज्ञास हुआ करता है। ढोलपुरमें पीतलका एक प्रकारका चित्रित और अलङ्कृत हुका बनता है, जिसे उस प्रान्तमें कम्मे कहते हैं। इस राज्यके काठकी वने हुए खिलोना और दूसरे दूसरे द्रव्य भी अत्यन्त सुन्दर होते हैं। यहाँका पालिश करनेका द्रव्य विशेष प्रसिद्ध है।

इसकी दक्षिण-पश्चिमकी जंगलोमें शेर, चीता, भालू, मभर, लकड़बन्धा, हरिण, नीलगाय और जंगली सूअर आदि जानवर दिखलाई देते हैं। यहाँसे रेतौना पत्थर, रुई, और घोको रफतनी होती है। कपडा, नमक, चीनी चावल और तमाकू बाहरसे आते हैं। इस राज्यको वार्षिक आय ७६०००० रु० है।

२ राजपूतानेकी अन्तर्गत ढोलपुर राजकी राजधानी और शहर। यह अक्षा० २६°४२' ३० और देशा० ७७°५३' ५०में पड़ता है। यह आगरेसे बंबई तक गायड्राइरोड पर आगरेसे ३४ मील दक्षिण तथा ग्वालियरसे ४० मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८७१० है। ढोलपुरसे ३ मील दक्षिणमें राजघाटके निकट चर्मण्वती नदीके ऊपर एक नीसेतु है, जो १ नवम्बरसे १५ जून तक रहता है। वर्षके अन्तमें उत्तारेकी नाव द्वारा नदीमें आते जाते हैं। आगरेसे ग्वालियर पर्यन्त सिन्धिया स्टेट-रेलवे ढोलपुर हो कर गयी है। यह रेलपथ ढोलपुरसे ५ मील दूर सेतु हो कर चर्मण्वती नदी पार होता है।

कहते हैं, कि राजा ढोलनदेवने वर्त्तमान नगरके दक्षिणमें प्राचीन ढोलपुर नगर बसाया था। सम्राट् जावरने १५२६ ई०में इसे अपनी अधिकारमें किया था। उनके पुत्र हुमायूँ चर्मण्वती नदीके गर्भशायी होनेकी आशङ्कासे नगरको नदी तोरसे उठा कर और भी उत्तरमें ले गये। सम्राट् अकबरने यहाँ एक ऊँचो और सुदृष्टित सराय निर्माण की है। नगरका नूतन अंश तथा राजप्रामाद राणा किरातसिंहसे बनाया गया है। कार्तिक

मासमें ११ दिन तक यहाँ एक मेला लगता है जिसमें बहुतसे मवेशी लवा दिनों, भांगरा खानपुर मसनज पादि स्थानोंके दूध बिक्रीमें पाते हैं। डोकपुरमें १ मील दक्षिण सुबुङ्गुङ्ग इदके समोप मो प्रतिवष कई घोर भूकम्प आते हैं। इस समय बहुतसे लोग भा कर यहाँ आनादि करते हैं। यह इद ( भोज ) प्रायः १२५ बीघा बीड़ा घोर बहुत बहरा है। चारों घोरके पर्वतोंके उद्विगल भा कर इस इदमें लमा रहता है। इसके चारों घोर कमसे कम ११४ देवान्य हैं। फाङ्गुन मासमें डोकपुरमें १४ मील उत्तर पश्चिमके समोप नगरमें मो एक बड़ा मेला लगता है। यहाँ कई एक विप्लव घोर भीषणरूप हैं।

डीससमुद्र—बङ्गालके पन्तर्गत फरोदपुर जिलेको एक भोज। यह फरोदपुर शहरसे दक्षिण-पूर्वमें पवस्थित है। यहाँबान्धमें यह भोज बड़ कर नवरके मकानोंके पास तक फैल जाती है। गोलबान्धमें यह घोर घोरि सद्, पित जो कर पन्तर्को भीषणानमें एक या दो मोन तक रह जाती है।

डीसा ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका छोटा सफेद बीड़ा

जिसके पर नहीं होते हैं। इसको मन्दाई पाव पगुल तक तो डोती है। यह प्रायः सड़ो हुई बहुतों तथा पीलों के हरे ककड़ा पर रहता है। २ घोसा, सूचित करनेका निदान। ३ गोल भेडरान वनामिका डाट, सदाय। ४ शरीर, दिङ्ग। १ प्रियतम, पति। ६ एक प्रकारका गीत। ७ सूखी मनुष्य कड़।

डोसिनी ( हि० खो० ) यह पोत जो डोक बनाती है डकासिनी।

डोपिया ( हि० पु० ) बड़ पुष्प जो डोक बनाता है।

डोको ( घ० सि० ) डोक पद्वयज इति। जो डोक बनाता है।

डोको ( हिं० खो० ) २०० पानोंको गण्डो। २ परिचाम, जैसे दिङ्गो।

डोप ( हिं० पु० ) मीठ, डाली, मजर।

डोबा ( हि० पु० ) साँटे चारका पड़ावा।

डोपना ( हि० क्लि० ) धानन्दधनि करना।

डोकना ( घ० खो० ) डोक-म्युट्। १ समन, जाना। २ लज्जोच, बूढ, शिष्यत।

डोकना ( हि० क्लि० ) पीना।

## गा

घ—संस्कृत घोर हिन्दो म्पञ्चमबर्षका पन्द्रहवाँ पक्ष घोर टबर्षका पाँचवा बर्ष। इन बर्षका पर्वमासा कालमें उच्चारण होता है। इसका उच्चारणकाल मूर्द्धा है। इसमें उच्चारणमें धाम्यन्तरिक प्रयत्न है—जिहा मज्ज द्वारा मूर्द्धाका ऊपर घोर नालिकामें यत्नविशेषका प्रभेद। काष्ठप्रयत्न—त बार. म्यद धोप घोर पन्धवाच है। इसको तिब्बतप्रधानो इन प्रकार है—पड़के एक पाङ्को लकोर खींचे बिरे लपके मोसे ज्ञानमय बड़ो बड़ी तीन लकीरको उपर मोचे खींच कर मोचे पड़की लकोर में एक तिरको लकोर खींच दे इसका आकार दिना जो जायगा—“घ”। इस पक्षमें ब्रह्मा, विष्णु घोर महादेव सर्वदा पवस्थान करते हैं। भाष्यध्यानाहमें इस

बर्षका दक्षिण पादाङ्ग, नमूनेमें ध्यान करना पड़ता है। इसमें पर्याहनाका शब्द—निर्गुण, रिति ध्यान, कथन, पवित्रासन, कथा श्रम नरकजिव् निर्गुण, योगिनीमिय, हिंसुल खाँडको पाँच सफेद बीधनी, चिनेत्र, मानुषो, खोम दन्तगदाङ्ग, सांसुच, मातक, शङ्खी, नीर घोर माधमय। ( कानतल्प )

इसको पवित्रतासे देवीका शब्दप—ते परमहृष्टको, पोतविष्णु, कृताकार पक्षदेवतामय पक्षवाचमय, त्रिगुण दुष्ट धाना पादि तत्त्वबुद्ध घोर महामोहप्रद है। ( कान धेनु० ) इनका ध्यान कर इस मन्त्रका मय बार जप करनेसे पापक शीघ्र ही पमोष्ट प्राप्त कर सकता है। इसका ध्यान—



“द्विभुजां वरदां गङ्गां मत्स्यप्रदायिनीं ।

राजीवलोचनां नित्यां धर्मदा मायमो... ॥

एवं ध्यात्वा त्रयन्तः तन्मन्त्रं दत्तवा जपेत् ॥” (वर्णादारत०)

ये द्विभुजा, वरदायिनी पद्मलोचना. धर्म-अर्थ-काम मोक्षदायिनी हैं। ये सर्वदा भक्तोंकी अभीष्ट प्रदान करती हैं। (त० १० टी०)

ण (सं० पु०) ण—ख-ड प्रयो० णधुः। १ विन्दुदेव, एक बुद्धका नाम। २ भूषण, गङ्गना। ३ निर्णय। ४ शिवका एक नाम। ५ पानोका घर। ६ टान। ७ पिङ्गलमें एक गणका नाम। ८ ज्ञान। (णशब्दको०) (सं० त्रि०) ९ गुणरहित गुणान्वय।

णकार (सं० पु०) ण—स्वरूपे कारप्रत्ययः। ण स्वरूप वर्ण, णकार।

णगण—दो माताश्रीका एक मात्रिक गण।

णत्वविधान (सं० क्ति०) णत्वव्य विधानं, ६ तत्। णत्व-विषयकविधान। पाणिनिमें इसका विधान इस प्रकार निरवा है—

ऋ ऋ, र और ष इन चार वर्णोंके बाद टन्ता न रहने तो वह सूर्धन्य होता है। यदि स्रवर्ण, कवर्ण, पवर्ण, य, व, ह और अनुस्वार व्यवधान रहे तो भो टन्ता न सूर्धन्य होता है।

पटका अन्तस्थित टन्ता न सूर्धन्य नहीं होता है तथा न मित्र तवर्ग युक्त (त, घ, द, ध) एवं ष और भ युक्त टन्ता न सूर्धन्य नहीं होता है।

यदि एक पटमें ऋ, ऋ, और ष रहे और दूसरे पटमें टन्ता न रहे तो न सूर्धन्य नहीं होता है।

यदि अन्य पटस्थित टन्ता न विभक्ति स्थान पर हो अथवा विभक्ति युक्त हो या स्त्रीलिङ्गविहित हैं प्रत्ययके साथ मिला हो, तो विकल्पसे सूर्धन्य होता है। परन्तु युवन्, भगिनी, कामिनी, भामिनी, यामिनी, यूने प्रभृ तिका टन्ता न सूर्धन्य नहीं होता है।

शोषधिवाचक और वृजवाचक शब्दके परस्थित वन शब्दका न विकल्पसे सूर्धन्य होता है, परन्तु, तिरिकाइ शरिका, हरिद्रा, तिमिरा, विटारी और कर्मार इन शब्दों के बाद वन शब्द रहनेसे सूर्धन्य नहीं होता है।

घानके एक जाने पर लिन समस्त उद्दिष्टका जोवन

गिप हो जाता है उक्त शोषधि कहते हैं। शोषधिवाचक शब्दमें यदि दो या तीन स्वर न हों तो नियम लागू नहीं है।

शर इज, प्रज, आम्ब, और शरि (खैर) इन शब्दके परस्थित वन शब्दका न सदा सूर्धन्य होता है।

प्र, निर, अन्तर, अथ इन शब्दोंके परस्थित वन शब्दका न नित्य सूर्धन्य होता है। अन्य पटस्थित र प्रभृति परवर्ती वान शब्दका न विकल्पसे सूर्धन्य होता है।

प्र, पूर्व, अपर प्रभृति शब्दोंके परवर्ती अहन् शब्दका न नित्य सूर्धन्य होता है।

पर, पार उत्तर, चन्द्र और नाग शब्दोंके परवर्ती अयन शब्दका न नित्य सूर्धन्य होता है।

अथ और ग्राम शब्दोंके परवर्ती नो शब्दका न सूर्धन्य होता है।

शूर्णके परस्थित नखका न तथा प्र, ड्रु, खर और वाप्री शब्दके परस्थित नसका न सूर्धन्य होता है।

गिरि, नदी, स्वर्णदी, गिरिनितम्ब, गिरिनख, गिरिनद, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तुर्यमान, माघोर्ग, आर्गयन इन समस्त शब्दोंके न विकल्पसे सूर्धन्य होता है।

प्र, परा, परि और निर, इन चार उपसर्गों तथा अन्तर शब्दके बाद यदि नद, नम्, नग, नह, नो, दु, नुद, अन् और हन् ये सब धातु रहें, तो उनका सूर्धन्य होता है।

यदि हन् धातुका न म और व युक्त हो तो विकल्पसे सूर्धन्य होता है।

हन् धातुको ह के स्थानमें घ हो तो न सूर्धन्य नहीं होता है।

प्र, परा, परि और निर ये चार उपसर्ग और अन्तर शब्दके बाद निम्, निष्, और निन्द, इन धातुओंके विकल्पमें सूर्धन्य होता है।

प्र प्रभृतिके बाद हिनु और मीनका न नित्य सूर्धन्य होता है।

प्र प्रभृतिके बाद लोटकी आनि विभक्तिका न सदा सूर्धन्य होता है।

प्र प्रसूतिजे वाद म्द, पद्, दा, भा, इन् म्द पद्-  
दान् हो भो, दे धे, मा या, द्रा, प्पा, यप बच, यम्, पि  
पाट, दिङ्, इम ममप्य वातुषोके पूर्ववर्ती नि उपसर्ग  
या न निवृत्त मूर्च्छा होता है ।

धातुके पङ्क्ते यदि प्र, परा, परि पोर निर् ये चार  
उपसर्ग प्रबन्धा अन्तर शब्द रई तो छत् पङ्कयत्रा न  
विकल्पसे मूर्च्छा होता है ।

बिना धातुको प्रारम्भमें तो व्यञ्जन वर्ण जो पोर  
अन्तिमवर्णसे पङ्क्ति से या या से मिय अर वर्ण जो तो  
उत्तमे पाठे हुए अन्त्यवका अन्तर विकल्पसे मूर्च्छा  
‘व’ नहीं होता है ।

अन्त धातुके उत्तर विहित छत् पङ्कयत्रा न विकल्प  
से मूर्च्छा होता है ।

मा, मू, पू, कस, यम प्याय, शेष पोर अन्त्य इत  
ममप्य वातुषोके अन्त करनेसे उत्तमे उत्तर विहित  
छत्में न मूर्च्छा नहीं होता है ।

छत् प्रत्ययका न व्यञ्जन वर्णमें मिसा रहनेसे मूर्च्छा  
‘व’ नहीं होता है ।

नय धातुका प्र मूर्च्छा होने पर व मूर्च्छा होता है ।

द्विमादिका न मूर्च्छा नहीं होता है ।

बोधोद्धारमन्त्र ( म० पु० ) जैनोंका महात्मविधिय ।  
जनोंका प्रधान मन्त्र । इसमें पाँच पद, पोर पञ्चम  
भाषा पौरोम अन्तर है, यथा—‘बमो अरइत्ताच  
बमो विद्वाच बमो पाद्योयाच बमो उदम्भटावाच  
बमो शोप सम्पदाच्च ।’ इम मन्त्रके पादिमें

बोड़ अर १०८ बार मपनेसे विद्वा वाधाएँ हूर  
होते हैं । माधरत्न इदयमें मूल प्रेत पाटिका  
भय मन्त्रा होने पर इस महात्मका नौ बार अर किया  
जाता है । अनेक जैनग्रन्थमें इससे महात्मका वर्णन  
किया है । यह मन्त्र वेदोक्त मायशो मन्त्रके तुल्य पूज्य  
है । इससे प्रत्येक पञ्चमसे सक्षत्रों मन्त्राको उत्पत्ति हुई,  
जिनका वर्णन “बमोद्धारमन्त्र” नामक ग्रन्थमें किया  
गया है । “सुष्माचर” नामक जैनग्रन्थमें इसके माहा  
त्म्यको पाठ कथाएँ कियी हैं । उत्तममें एक कथा यहाँ  
मन्त्रके सिद्धी जाती है—‘जिसे समय चक्र  
वर्ती अर अर्जुनोंको अंत अर पातमें अर्जुनोंके लय करने  
के लिए समुद्र पार हो रई थे । मार्गमें उनको पूर्व-  
मन्त्रके मन्त्र, एक टेबले साक्षात् हो गया । देखे पाहामन  
करते हो उन्होंने बोधोद्धार मन्त्र अपना प्रारम्भ कर दिया,  
जिससे देव उनको स्पर्श तक न कर सथा । कुछ देर  
बाद उनके पुप होने पर देवने अमको टी सि “यदि  
तु मन्त्रको किय कर मंड टे तो हम तुम्हें बोड़ टेये,  
पन्धवा समुद्रमें बिना डूबोसे नहीं डूबोने ।” अनेक  
बाहातुवादके पन्धात् चक्रवर्ती पपनो अथासे विचरित  
हो गये पोर उन्होंने उक्त मन्त्रको किय अर मंड दिया ।  
देवको भविष्याया पूर्व हुई उचने चक्रवर्तीको समुद्रमें  
डूबो दिया ।

अ ( म० पु० ) ब्रह्मसौक्यवित एक सरोवर ।

“अरत्तायेवा अग्रम्भेके तुटीरसा ।” (अश्वीय ४०)

# त

त-संस्कृत और हिन्दी वर्णमानाका सोलहवाँ अक्षर, तवर्णका प्रथम वर्ण। अर्द्धमात्राकालमें इसका उच्चारण होता है। इसके उच्चारणमें आभ्यन्तरिक प्रयत्न है- दन्त-मूल द्वारा जिह्वाके अग्रभागका स्पर्श। वाङ्मयप्रयत्न- विवार, श्वास और अघोष है। इसकी उच्चारणस्थान है- दन्त। माट्कान्यासमें इसका वामनितम्ब पर न्यास करना चाहिये। इसकी लि' नप्रणाली इस तरह है- 'त'। इस अक्षरमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर नित्य विग-जित रहते हैं।

इसके वाचक शब्द पूतना, हरि, शुद्धि, शक्ति शक्ति जटो, ध्वजो, वामम्बिक ( वामनितम्ब ), वामकटो, कामिनी, मध्यकर्णक, आपाटो, तण्डतुम्ब, कामिका, पृष्ठ पुच्छक, रत्नक, श्यामसुखी, वाराही, मकर, अरुणा, सुगत, ऊर्ध्वसुख, ऊर्ध्वजानु, क्रोष्टपुच्छक, गन्ध, विभव, मरुत्, ह्यत्र, अनुराधा सौरक, जयन्तो, पुलक, भ्रान्ति, अनङ्ग, और 'मदनातुरा। (नानान०) यह स्वयं परमकुण्डलो तथा पञ्चप्राणमय और पञ्चदेवात्मक है। यह वर्ण त्रि-शक्तियुक्त तथा आत्मादि तत्त्वोपेत, त्रिविन्दुयुक्त और पोतवि-द्युत्को भौति प्रभाविष्ट है। ( का० वेदत० )

इसका ध्यान कर इस वर्णका दश वार जप करनेसे शोभ ही अभीष्टको सिद्धि होती है। ध्यान—

“चतुर्भुजा महाशान्ता महामोक्षप्रदायिनीम्।

सदा पोटशवर्षीदां रक्तम्बरधरां पराम् ॥

नानालंकारभूषा वा सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।

एवं ध्यात्वा तकारन्तु तम्भन्तं दशधा जपेत् ॥” (वर्णोद्धारत०)

इन वर्णाधिष्ठात्रिको चार हाथ हैं। ये परम मोक्ष प्रदान करती हैं। ये सर्वदा पोटशवर्षीया रक्तवस्त्रपरिधा यिनी और नानाभूषणहारा परिशीभिता हैं तथा साधकों को समस्त सिद्धि प्रदान करती हैं।

इस वर्णका सावाहृतमें प्रथक् प्रयोग करनेसे धन नष्ट होता है। ( हन्त० टी० )

त (सं० पु०) तक-ड। १ चोर, चोर। २ अमृत। ३ पुच्छ, दुम। ४ क्रोड़, गोद। ५ त्नेच्छ। ६ गर्भ, हमल।

७ शठ। ८ रत्न। ९ सुगतदेव, बुद्ध। १० गोरववर्जित, वह जिसके अभिमान न हो। ११ क्रोष्टपुच्छ, गोदरको पूँछ। १२ तरण। १३ पुण्य। १४ नौका, नाव। १५ भूँड। तत्रञ्जुव (अ० पु०) आचर्य, अचम्भा।

तत्रम्ल (अ० पु०) १ मोच, फिक्र। २ विलम्ब, देर, अरसा। ३ धैर्य, मत्र।

तत्रलु (अ० पु०) सर्वन्ध, इलाका।

तत्रलुकः (अ० पु०) वह जमींदारी जिसमें बहुतसे मौजे लगते हों, बड़ा इलाका।

तत्रलुकःटार (अ० पु०) १ इलाकेका मालिक। (स्त्री०) २ इलाकेदारका पद।

तत्रलुका (हिं० पु०) तत्रलुकः देगे।

तत्रलुकादार (हिं० पु०) तत्रलुकःदार देगे।

तत्रलुकेदार (हिं० पु०) तत्रलुकःदार देगे।

तत्रलुकेदारी (हिं० स्त्री०) तत्रलुकःदारीका पद।

तत्रस्सुव (अ० पु०) पक्षपात, तरफदारी।

तश्क (हिं० पु०) मोचो, चमार।

तश्नात (हिं० पु०) तेनात देगे।

तश् (प्रत्य०) १ से। २ प्रति, को, से।

तश् (हिं० स्त्री०) कम गहराईकी कडाहो। यह शालीमें मिलती जुलती है और इसमें कड़े लगे होते हैं।

तं (सं० स्त्री०) १ नौका, नाव। २ पवित्र, पुण्य।

तंग (फा० पु०) १ घोड़ोंकी पेटो, कसन। (वि०) २ टुड़, मजबूत। ३ दुखो, दिक्, आजिज। ४ सड्डुचित, सद्गुण, पतला, सकरा, सजेत।

तंगदस्त (फा० वि०) १ छपण, कंजूस। २ दरिद्रो, गरीब, कङ्गाल।

तंगदस्ती (फा० स्त्री०) १ छपणता, कंजूसो। २ दरिद्रता, गरीबी।

तंगहाल (फा० वि०) १ निर्धन, गरीब। २ विपद्ग्रस्त, जो तकलीफमें पडा हो। ३ रोगग्रस्त, मरणासन्न, बीमार।

तंगा (हिं० पु०) १ एक पेड़का नाम। २ आध आना, डबल पैसा।



तक ( हि० अव्य० ) १ किसी वस्तु या व्यापारकी सोमा  
अथवा अवधि सूचित करनेवाली एक विभक्ति, पर्यन्त ।

( स्त्री० ) २ तराजू । ३ तराजूका पन्ना ।

तकड़ो ( हि० स्त्री० ) रेतीली जमीनमें होनेवाली एक  
प्रकारकी घास । यह मालमें ६ या ७ बार हुआ करती  
है । घोड़े इसे बहुत चावसे खाते हैं । इसे कोई कोई  
चरमरा और हिन कहते हैं ।

तकत् ( स० अव्य० ) तक वा अति । अत्यन्त अल्प, बहुत  
छोटा ।

तकटमा ( हि० पु० ) अनुमान, अंटाज ।

तकटोर ( स० स्त्री० ) प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत ।

तकटोरवर ( हि० वि० ) भाग्यवान्, जिसकी किस्मत  
अच्छी हो ।

तकन ( हि० स्त्री० ) दृष्टि, नजर ।

तकनकर—टाचिगात्य और बरारप्रदेशवासी एक भ्रमण-  
शील जाति । ये तेलगूमापसमें बोलते हैं । पत्थर काट कर  
चक्री बनाना ही इनकी उपजीविका है । इसीलिए ये  
चक्रीवाले या चकहार भी कहलाते हैं । ये एक जगह  
व्यादा दिन नहीं रहते, जगह जगह घूम, घूम कर चक्री  
बनाते फिरते हैं । इनके एक देवता हैं जिनका नाम है—  
सट्टाई । तकनकर लोग इनको सृष्टि बनवा कर गलेमें  
पहनते हैं । यह मूर्ति इनूमानको मूर्ति अैसी है । ये  
फूसकी भीपट्टियोंमें रहते हैं । इनमें विवाहके लिए  
उम्त्रका कोई नियम नहीं है, कि कब करेगे । ये गोमांस  
नहीं खाते, पर सतदेहको गोडते हैं ।

तकना ( हि० क्रि० ) १ अवलोकन करना, देखना, निहा-  
रना । २ आश्रय लेना, पनाह लेना ।

तकमौल ( स० स्त्री० ) पूर्णता, पूरा होना ।

तकरमच्छी ( हि० स्त्री० ) वह छँसिया जिसके द्वारा  
मेढीके ऊपरमें जन काटा जाता है ।

तकरार ( स० स्त्री० ) १ विवाद, हुआत । २ भगडा, टंटा ।

• ३ धानका खेत जो फसल काटनेके बाद फिर खाद डाल  
कर जोता गया हो । ४ वह खेत जिसमें जो इत्यादि कई  
तरहके भनाज एक साथ बोए गये हों ।

तकरी ( स० स्त्री० ) तं निन्दितं वारोति छ-ट् डीप् । कुस्ति-  
तकारिणी स्त्री, श्वराव चलन वाली औरत ।

तकरोर ( स० स्त्री० ) १ सार्त्तान्नाप, वातं चीत । २ वरुता,  
भाषण ।

तकरोत्र ( स० स्त्री० ) उल्लव, जलमा, भोज ।

तकरूरो ( स० स्त्री० ) नियुक्ति, सुकरर, वहलान ।

तकला ( हि० पु० ) १ सूत काननेके चरखेमें लगे हुई  
नोहेको मलाई, टेकुआ । २ मोनारंको वह मलाई  
जिससे वे सिकरो बनाते हैं । ३ रम्मा या रम्भो बनानेको  
टिकुरो ।

तकली ( हि० स्त्री ) छोटा तकना, टेकुरो ।

तकलीफ ( स० स्त्री १ दष्ट, दुःख, क्लेश । २ विपत्ति,  
सुभीवत ।

तकनफ ( स० पु० ) गिटाचार, मग्नान, आदर ।

तकवाना ( हि० क्रि० ) देखनेका काम किमो दूसरेमें कराना

तकवार—पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत डेरा-इम्माडलवाँ  
जिलेका एक शहर । यह शहर कुछ ग्रामोंकी ले कर  
बना है और डेरा इम्माडलवाँसे २७ मील उत्तर-पश्चिम-  
में, अक्षा० ३२° ३०' और देशा० ७०° ४०' पूर्वमें अवस्थित  
है । यहां गन्दपूर और जाट जातिका निवास है । अधि-  
वासियोंमें अधिकांश क्षत्रियों करते हैं । पर्वतके उपत्य-  
का प्रदेशमें १२।१४ फुट खोदनेसे ही पानो निकल  
आता है । यहां रसद बहुत मिलती है ।

तकवालयाल—पेशावर जिलेका एक ग्राम । यह ग्राम  
पेशावरमें खाईवार, जामरूड आदिके रास्तेमें, बुर्ज-इ-  
हरिसिंहमें १४ मीलकी दूरी पर अवस्थित है । यहां  
बहुतसे प्राचीन बौद्धस्तूप भग्नावस्थामें पड़े हैं । एक  
स्तूपकी वहाँके लोग, तकवानवालको 'देहरी' कहते  
हैं । ये स्तूप बहुत बड़े हैं । 'तकवान वालकी देहरी-  
की खुदाई हुई थी, उसमें दो पुरुषमूर्ति और एक स्त्री-  
मूर्तिकी बड़ा भारी मस्तक निकला है । इनमेंसे एक मूर्ति  
बुद्धदेवकी है और एक किसी राजाको बतलाई जाता है,  
स्त्री-मुखका आकार बड़ा विकट है ।

तकसोम ( स० स्त्री० ) १ विभाग करनेको क्रिया, बँटाई ।  
२ भाग, हिस्सा ।

तकसोर ( स० स्त्री० ) १ अपराध, दोष, कसूर । २ भ्रम,  
भूल, चूक ।

तकाई ( हि० स्त्री० ) १ देखनेकी क्रिया या भाव । २ देखने-

के बंदसेने दिवे जानिका बन ।  
 तन्नाका ( प० पु० ) १ तमादा, मासमा । २ बोई दिमा  
 काम करनेके लिये कहना क्रिमके सिमे बचन मिल चुका  
 हो । ३ प्रेरणा उत्पन्नना ।  
 तन्नाम ( हि० खी० ) पाचन देख्यो ।  
 तन्नामा ( हि० खि० ) टिकाना, बतकाना ।  
 तन्नार ( सं० पु० ) तन्नार्यो कार । तन्नार्य बर्ष त पधर ।  
 "एव न्यत्वा तन्नार्यु तन्नार्य रचना बपय" ( काव्येव० )  
 तन्नारा—बम्बई प्रदेशकी एक पत्तार खाटनेवाली सुमनमान  
 जाति । प्रवाद है कि, यह जाति गोन्नापुरकी बन्नुजोका  
 पर्याय पत्तार-खाटनेवाली जातिसे उत्पन्न हुई है । तन्नार  
 नोगोका कहनाय है कि, सन्नाद थोरहूजेनेने उनको सुसम्प-  
 मान धर्मसे दीक्षित किया जा । इनको पाहति थोर  
 पोनाक सुसम्मानने समान है । ये परधरमें जिन्दे तथा  
 दूधरीके साह मराठे बोजते हैं । पुत्रवगण मध्यमाहति  
 सुमनित थोर जानि होते हैं । तथा मरदाक सुहाते थोर  
 लख्यो या जोडी दाङ्गे रहते हैं । पदनाभमें ये होतो,  
 जाहट थोर पगड़ी व्यापहार करते हैं । खिया मराठे  
 कामिनियो कैयो पोनाक पहनतो हैं । पमिप्राय यह है  
 कि ये गन्दे रहते हैं । जानसे पत्तार ठठाना थोर लससे  
 बजो, मूर्ति पादि नमाना ही इनको लपनाजिहा है ।  
 ये मितलकी थोर परिचमी होते हैं । काम न होने पर  
 गरीब तन्नारा सोम बनक जगह पको जोदते फिरते हैं ।  
 इनमें जिनकी पबला हूक पच्छो है वे बर बैठे सोनीकी  
 परमाहयके पनुसार पत्तार दिया करते हैं । यह समय  
 कामकी क्षमताईके प्राय समो गरीब हो गये हैं थोर  
 बहुमति क्षति, मजदूरी, मीठरी पादि करने लगी है ।  
 वे लुचि सन्नादायके होते हुए भी गृहपरमाह भयक  
 करते हैं तथा कट्टाई थोर मरियाई देवताको भागतें हैं ।  
 नियमाहसार बन नमाक भी नहीं पढ़ते । सुसम्मान  
 धर्माचरणमें घिब सुकत पढ़ कर हो जानत होतें हैं ।  
 इनमें यमाक-पति जोई नहीं है, वे जाडीको मानते हैं ।  
 दाबी ही इनके विवाह पादिमें रजिठरो थोर सामाजिक  
 विवादको सीमासा करते हैं । ये बहुकोंको पाठशाळा  
 नहीं भेजते । जोई थोर इनको प क्या घटती हो जातो  
 है ।

तन्नारो—बम्बई प्रदेशको पत्तार खाटनेवाली एक जाति ।  
 पधमपत्तार जिलेके आमखेडा, कर्जेटनगर पादि ज्ञानोंमें  
 इनका बाध है । सधपन वे तेजिहने यहा था कर बसे  
 हैं । ये बलित कर्मठ थोर जाते हैं । दूधरीके प्राय मराठे  
 थोर पापभमें तेजिहो मापमें जातपोत करते हैं । वे  
 याव थोर सुधर पादिमें मांसके सिवा अन्य मांस जाति  
 थोर शराब पोते हैं । पुत्रोंका पहनावा होतो पादर,  
 कुता कुता थोर मराठे पगड़ी है । खिया मराठे खिया  
 ही मति मराठे थोर बोनो पहनतो हैं, पर काँच नहीं  
 सजाते । क्रियाकाह थोर लसन पादिमें ये हूक पच्छे  
 थोर माक बपके तथा लम्बूट गहने पहना करते हैं ।  
 तन्नारोमक साधारण साध-सुधर, परिचयो मित्तारी  
 थोर पातिधर होते हैं इनमें बहुमति गँठकटे मी होते  
 हैं । खिया कडे थोर नजकी स पठ तथा घटकीका  
 काम-नाक करतो हैं । पुत्रवगण पत्तार खाट पको बना  
 कर बीबिका-निर्वाह करते हैं । जोई जोई क्षति थोर  
 मजदूरी भी करते हैं । ये मीठरीके थोर कष्टवाकी  
 प्रतिमूर्ति घरमें रख कर इन एक जिन्-जोडारमें लकी  
 पूजा करते हैं । पूजा थोर विवाह पादिमें समय कर्षी  
 सिंघे एक सुरोहितका कार्य करता है । विवाहके समय  
 बन्नाका पिता वा बन्नापनीय जोई प्रोड कक्ति बर थोर  
 बन्नाके वस्त्रि नोट बाँध देता है । इनमें विधवा विवाह  
 थोर पुत्रोंका बहुविवाह प्रचलित है । ये धर्माहुताक  
 समय शैद वा पुरावादि नहीं पढ़ते । पनेकायमें ये  
 कुनबियाको तरह सन्नानेको पढ़ाते नहीं थोर न खिद्यो  
 नके व्यासवायमें हो प्रवृत्त करते हैं ।  
 तन्नाडी ( प० खी० ) सरकार या जमींदारको थोरसे  
 सरोज घटकीको सिंघे जानिका बन । यह लकलकप  
 दी जाती थोर मित्रत समय पर सुह समित बसूत को  
 जातो है ।  
 तन्नाबा ( प० पु० ) १ बपक वा बना कुपा नोल वा  
 बीबीर दैना । इसको कई हत्यादिने भर कर मोनेके  
 समय तिरके मोने रहते हैं जानिय । २ लख्यो रोक  
 या लहरके सिंघे क्यारि जानिको पत्तारको पटिया  
 सुतका । ३ विनामका ज्ञान, पाराम करनेको बयह ।  
 ४ पाचन, सहाय पाहण । ५ लहरके बाहर या क्षति



तन्त्र ( स० स्त्री० ) तन्त्रित, द्विज ।

तन्त्रम् ( स० पु० ) १ ब्रह्मना नामक चर्मरोग । २ यौतनादिबी ।

तन्त्रनायक ( स० स्त्री० ) वनना-नायकानो, वह जिसने ब्रह्मनायक जाता रहता है ।

तन्त्र ( स० सि० ) तन्त्रं ज्ञानं पदं हति तन्त्रं यत् । तन्त्रं हति चरति ब्रह्मिन्ने ब्रह्मणः । वा ६।१।६५ इति सूक्तम् । वासिष्ठोपनिषत् । महामौनं महर्षिं योग्यं, ब्रह्मदानं चरति चास्मिन् ।

तन्त्र ( स० स्त्री० ) तन्त्रिक महोत्पत्ति दुग्ध तन्त्र-रत्न । द्वाविंशति । अथ २।१३। दक्षिणेश्वर चतुष्पाद्य जगत्त्रे माघ मन्त्रा दुष्पाद्यो मन्त्रा, ब्राह्म । मन्त्रित इतिमेवे नवनात निष्काल सेने पर लो इवमाग पदमिष्ट रहता है उसको तन्त्र ना धीन कहते हैं । पयाय—मोरमन्त्र चान्, काल मेव, विमोहित, दन्तावत, परिष्ट चक्रे, उदयित् मन्त्रित पौरुषम् । ( रात्रौ० ) सावप्रकार्यमि लिखा है कि—तन्त्र पांच प्रकारका है—धोम मन्त्रित, तन्त्र उदयित् पौर द्विजिका । बिना पानो दिने मन्त्राई मन्त्रित टकांको मन्त्रने से धोम बनता है । बिना मन्त्राईवाले दहीका पानोने माघ मन्त्र कर को मन्त्र बनाया जाता है कने मन्त्रित कहते हैं । दहीको चतुर्धांय जगत्त्रे माघ मे टनेने तन्त्र पाईंय जगत्त्रे माघ मन्त्रनेने उदयित् पौर बहुत पानोके माघ मन्त्र कर नवनात निष्काल सेनेवे कस मन्त्राको द्विजिका कहते हैं । गुण—धोम बाहु पौर पित्तनायक है ।

धोम देवी ।

मन्त्रित—कण्ड पौर पित्तनायक है । तन्त्र—मधुर पौर चक्रमन्त्रिमिष्ट, पोछे कपाय मनु उदयनोर्य, पश्चि दीनिश्वर, यज्ञमन्त्रिक, प्रीतिप्रनक पौर बाहुनायक, गरुड मोच, चतोमाट, चङ्गु पौरु, च्यम, ज्ञोहा गुण्ड, चरुचि, विपमन्त्र, कृष्णा मन्त्रप्रसिद्ध गूण, मीद, छोधा पौर बाहुयोगत्रे लिए हितकर है । तन्त्र मनु होनेवे चारक है, पर बिपायमें मधुर होनेसे पित्तप्रकोपक नहीं है । इससे कपायक, उपल, विष्कामिल पौर दृष्टत्वके द्वारा कण्ड मन्त्र होता है ।

तन्त्र विनन करनेवासीको पौरिं स्त्रोत्र वा रोग नहीं होता । विद्याभ्योका कहना है कि उसे पशुतपान दीवीके

लिए सुखायक है, बीने जो मनुष्योके लिए तन्त्र सुखायक है ।

उदयित्—कण्डवदक, बलकारक पौर पञ्चम वासिनायक है ।

द्विजिका—यौतनोर्य, मनु कण्डनायक तथा पित्त यम, पिपासा पौर बाहुनायक है । यह शकचस बुद्ध होने पर पश्चिमदिशिचर भी है ।

जिन तन्त्रमें मन्त्रुन जो निष्काल लिया गया जो वह पञ्चम हितकर पौर मनु होता है । जिन तन्त्रमें वे जोड़ा लो निष्काला गया वा यह मन्त्रने कुछ गुण पुष्ट कालक पौर कण्डनायक है । जिसमें लो चिन्मन्त्रुन वा नहीं लिखाला गया हो, वह धन, गुण पुष्टि चारक पौर कण्डवदक है ।

बाहुयुगातित्रे लिए मांठ नमक पौर चक्रमन्त्रुन तन्त्र प्रयुक्त है ।

पित्तप्रयमन्त्रे लिए खोमो पौर मधुर रम मिना कर धोम मेवक कटना चाड़िये ।

कण्डप्रयमन्त्र लिए जिङ्गट, बुद्ध बील हितकर है । धोममें हॉय, मोर पौर से वा मन्त्र मिष्टा कर पीनेसे मन्त्र तरककी बाहु प्रयमित होता है । यह धोम क्विचकारक, पुष्टिकर, बलमट बन्धितयतुक्तनायक पार्ग पौर पनीमार रोममें विधिय कण्डनायक है ।

गुण्डमन्त्रित लोम मूवकच्छरीरमें पानोसे फायदा होता है ।

पण्ड तन्त्र—कोठगत, कण्डनायक पर कण्डगत कण्डकी उर्वि करता है ।

पण्ड तन्त्र—धोमस ग्राम पौर कायरोगके लिए हित कर है ।

धातुच्छत्रुमें, मन्त्राभि, बाहुयोग पौर पदचिसे खोलासे कस जाने पर तन्त्र पशुनको मूर्ति कण्डम् है ।

धयरोममें दुर्बल धारोममें, मूला, ध्वम दाह पौर रक्त पित्त रोगमें तथा मरुमियोंने तन्त्र नहीं विनन करना चाड़िये । ( मन्त्र० तन्त्रम् )

तन्त्रसूत्रिका ( स० स्त्री० ) तन्त्रप्रज्ञा तन्त्रधोमिन उच्यते दुष्पात् जाता सूचित्वा । फटा दुष्पा कूच क्षिना । इसका गुण—मनमन्त्रावरोचक, बाहुद्विचर कृच तथा पञ्चम गुणपाक



है। इससे अच्छे अच्छे खाद्यद्रव्य प्रसृत होते हैं।

तक्रजननी ( स० स्त्री० ) मछा, छाक, मठा।

तक्रजम्ब ( स० स्त्री० ) दधि, दही।

तक्रपयोया ( स० स्त्री० ) तक्राक्षुः।

तक्रपिण्ड ( स० पु० ) तक्रेण जातः पिण्डः। तक्रदुष्ट दुग्ध-  
पिण्ड, फटा हुआ दूध छेना।

“दुग्धा तक्रेण वा दुष्ट दुग्धं यद्गुणमथा।

द्रव्यमग्रेण हीनं यत् तक्रपिण्डः स उच्यते ॥”

दही और मट्टे से दूध खराब होने पर उसे उत्तम कपड़े में बांध देते हैं, बाद उससे मक्ख पानो निकाल जाने पर जो पिण्डके आकारका पदार्थ रह जाता है उसको तक्रपिण्ड कहते हैं।

तक्रमेड ( स० पु० ) पुरुषाका एक रोग। इसमें छाकसा चक्रेद मूत्र होता है और मट्टे से गन्ध आता है।

तक्रभक्षा ( स० स्त्री० ) तक्रा, एक प्रकारका जूप।

तक्रभिद्र ( स० स्त्री० ) कपिल्य कैथ। (Feroma elephantum)

तक्रमांस ( स० स्त्री० ) तक्रयोगिन पाचित मांस। तक्रमयोग-  
से पक्षमांस, मांसका रसा, अखनो। तक्रमांसका विषय  
मांसप्रकाशमें इस तरह लिखा है—फिसौ पात्रमें घोंघे  
हींग और हल्दी भून लेते हैं। बाद बकरेके मांसको खण्ड  
खण्ड कर उसी घोंघे भूननेके बाद उपयुक्त जल दे कर  
उसे धोमो आंचमें रंधा करते हैं। तदन्तर जोरे इत्यादि  
मिश्रित मट्टेमें मांसको डाल देते हैं। इसी तरहसे प्रसृत  
किये जानेको तक्रमांस कहते हैं। इसका गुण वायु-  
नाशक, लघु, रुचिजनक, बलकारक, कफनाशक  
और लुब्ध पिच्छवर्द्धक है। यह तक्रमांस समस्त खाद्य  
पदार्थोंका परिपाकजनक है।

तक्रवटक ( स० पु० ) विष्टकविशेष, एक प्रकारका पीठा।

तक्रवामन ( स० पु० ) तक्र वामयति वाम-णित्-त्वं।  
नागरङ्ग, नारंगी।

तक्रसन्धान ( स० पु० ) एक प्रकारको कांजी। यह सौ  
टके भर मट्टेमें एक टके भर सांभर नमक, राई और  
हल्दीका चूर्ण डाल कर बनाया जाता है। यह कांजी  
पन्द्रह दिन तक उसी अवस्थामें रहनेके बाद तैयार होती  
है। प्रतिदिन यह दो दो टके सेवन करनेसे २१ दिनोंमें

तापतिको अच्छो हो जातो है।

तक्रसार ( स० पु० ) मखउन।

तक्राट ( स० पु० ) तक्राय तक्रोत्पाटनाय पटति अट् अच्-  
मन्थनदण्ड, मथानो।

तक्रारिष्ट ( स० पु० ) तक्रेण प्रसृतः अरिष्टः। अरिष्ट शोष-  
विशेष। इसको प्रसृत-प्रणालो—अजवायन, भांवल, जह  
शोर मिर्च प्रत्येकके ३ पल और पंचलवणके १ पलको  
एकत्र चूर्ण कर ८ सेर मट्टेमें मिना कर चार टिन तक  
रखते हैं। इसीका नाम तक्रारिष्ट है। इसकी सेवन करनेमें  
अग्निको दीप्ति होती तथा शोथ, गुल्म प्रसृति रोग जाते  
रहते हैं। यह शीघ्र प्रायः संश्रहणो रोगमें व्यवहार को  
जातो है। ( चक्रदत्त )

तक्राक्षा ( स० स्त्री० ) एक प्रकारका जूप।

तक्र ( स० त्रि० ) तक्र गतो व। गमनशील, जल्दी  
जानेवाला।

तक्रन् ( स० त्रि० ) तक्र गतो वनिप्। १ गतिगोल,  
तेजीसे दौड़नेवाला। ( पु० ) २ चोर, चोर।

तक्रधो ( स० स्त्री० ) तक्रानां चौराणां धोः गतिः, ६-तत्  
चोरोंकी गति, चोरोंका भगाना।

तच ( स० पु० ) १ नृपतिविशेष, रामचन्द्रके भाई भरत-  
के बड़े पुत्र।

‘तक्षः पुष्कल इत्यास्तां मरुतस्य मदीपतेः।’ ( भाग० १।११।१२ )

२ तक्षके एक पुत्रका नाम। ३ पतला करनेकी क्रिया।

तचक ( स० पु० ) तचः-ण्वल्। १ सर्पविशेष, अष्ट  
नागोंमेंसे एक।

“अनन्तो वासुकिः पद्मो महावज्रोऽय तक्षकः।” ( भारत० १ )

पुराणके मतानुसार अष्ट नागोंमें शेष, वासुकि और  
तचक ये तीन प्रधान हैं। कश्यपके औरस और कद्रुके  
गर्भसे तचकका जन्म हुआ था। खण्डवारणमें इसका  
आवास था। शङ्खो नामक ऋषिकुमारके शपथकी सफल  
करनेके लिये तचकने राजा परीक्षितको काटा था। इस  
कारण राजा जनमेजयने इस पर क्रुद्ध हो कर सर्प-  
यज्ञका अनुष्ठान किया। तचकको यह खबर मिलते  
ही उसने इन्द्रकी शरण ली तथा वासुकिने महर्षि  
आस्तिककी सप-यज्ञ रोवानेके लिये भेजा। राजा जनमे-  
जयने तचकको इन्द्रका शरणगत जान कर ऋषि-

कोवि ब्रह्मा—यदि इन्द्र तद्युक्तो न होई, तो तद्युक्तको इन्द्रको साथ सम्म कोविदे ।

जोतने राजाको धात्रा या कर तद्युक्तका नाम से कर प्रसिद्धि पावति दो । उद्यो समय तद्युक्तकी साथ इन्द्र यज्ञानकरी घोर पाण्डव होने लगी । इन्द्रने मय-मोत हो कर तद्युक्तको छोड़ दिया और अपने कानको प्रकाश किया । तद्युक्त सबबिहान हो कर जमया प्रवृत्त नित पावब्रह्मिणाके समीपवर्ती हुआ । इसो समय धाम्पुत्रने महापराज जनसिद्धके सपर्यय निवारित हो यह मित्रा नाम कर इसकी रक्षा कर को । ( मात माने वर ) परीश्रित, बभनेव, आसीह देवो ।

हिन्दुधर्मका विन्यास है कि तद्युक्त इन्द्रपुत्र मनुष्य शरीर धारण कर सकता था । कनि इस धर्म विद्वानाका कहना है कि तद्युक्त तद्युक्तकी मत्तान है । डॉ. साहज कहते हैं कि राजा शक्तिवाहनने तद्युक्तवर्गमें कथ्यप्रवृत्त किया था । माना सोम मो अपनेको तद्युक्तके बंधकर बतलाते हैं ।

यूरोपीय पुराविकोंका कहना है कि प्राचीन हिन्दुधर्म धर्माधीको तद्युक्त घोर नाम नामसे उल्लेख किया है । म. ख. १ भागमें तद्युक्त यन्त्र निर्णय एक व्यक्तिके लिये ही प्रयुक्त नहीं हुआ है ; आश्रयदाहके समय चतुर्धने एक तद्युक्तको दण्ड दिया था । तद्युक्त घोर नामवर्गीय भोग हृद्य घोर भर्षोपासक थे । म. क. कातिके विभिन्न बंध तद्युक्त घोर नाम नामने परिचिन होते थे ।

कनि इसका कहना है कि सर्षोपासक तद्युक्त घोर हिन्दुधर्मो हाद्य वर्धित तद्युक्त जाति क्षेत्रीका एक हो य. म. का घोर पञ्चायुर्में उन्मा नाम था । पञ्चायुर्का तो तद्युक्त तद्युक्तकी मात्र दिक्को पाण्डवीका एक महा सुह हुआ था । उस युद्धमें परीचिन्तकी सङ्घ दुई घोर घोर तद्युक्तने कथ प्राप्त की थी । इसकी हो महाभारतमें तद्युक्त दमनने परीचिन्तकी सङ्घुत्पन्ने बर्षन किया गया है ।

डॉ. साहजके मतसे तद्युक्तव म सुरको कातिको एक श्याका हो । ये पक्षी उत्तर-पश्चिम प. म. नाम करती थी । महाभारतीय युद्धके बादके ये शोक क्रमः भारतके नामा कान पत्रिकार करने लगी । इसका कातीय निद

यंन मयं या इसलिये इन्के बगथा नाम तद्युक्त हो गया । ई. म. १०० वर्षे पक्षी इस वर्गमें भारत पर धाम्पुक्त मय किया था । मगध तद्युक्त इन्का पत्रिकार विस्तृत गया था । तद्युक्तवर्गीय राजा १० पीढ़ी तक मगधके निजामन पर बैठे थे । इस राजन यद्यो एक शान्ति नामानुमा हो नामपुरका नामकरण हुआ है । डॉ. साहज कहते हैं कि, शिपलाका पाण्डवम सोपार्क नाम तौषहरके मम सामयिक है । कहा जाता है कि, इस वर्गके किमो किसी व्यक्तिने ब्राह्मणधर्म पक्ष किया था जिनका व. श. पत्रिकुम्भके नामसे प्रसिद्ध है ।

तद्युक्तव शीय राजा भारतके बहुत प्रयोगोंका मानन दण्ड परिचानन करते थे । गुर्जरमें मो कुछ समय तक तद्युक्तव शीयोंने स्वाधीनताके राज्य किया था ।

मानवपुर जिनके बहुत मगध तद्युक्त एक धाम्पु देवता है ।

“ममूर्त्ति निम्बपत्रक कोटिनि देवयते रवी ।  
अशितोपाशितस्तस्व मन्त्रका कि करिष्यति ॥” (अशित)

रविसे मियपायिमें यमन करने पर ( चर्पात् ब. शाध मामने ) जो मसूर घोर निम्बपत्र मन्त्र करते हैं, तद्युक्त पञ्चम तद्युक्त को कर मो उन्मा कुछ कियाह नहीं सकता । “तद्युक्तः किं करिष्यति”में तद्युक्त पद लक्षणा, धर्मात् येमाव मामने मसूर घोर निम्बपत्रका मध्य सर्ष विवक्ता मानक है ।

१ निम्बपत्रका । (दण्ड०) १ द्युमदि । (दिन०) ४ यद्दर कातिविधिय, बहई । घुचकेके घोरस घोर विप्रकथाके यमने इन्को उगपति हुई है । सुधरा देवो ; १ मन्त्रा-प्रसिद्ध प्रथेनजित्के पुत्र । (म. ० ११५०) १ नामवायु । ( वि० ) ३ शिदक ।

तद्युक्तोय ( स० वि० ) तद्या पक्षवन् नडादित्यात् उ लुक्च । तद्युक्तिविद्य विधिमं शीय हो ।

तद्युक्त ( स० जो० ) तद्युक्त तद्युक्तके माथे म्पुट् । १ लयहरण लक्ष्मीको साथ करमेका काम रंदा करनेका नाम ।

“श्रेष्ठक ब्रह्मण्यन शारवाणाव तद्युक्त ।” (व. ५११५)  
१ बहई । १ मन्त्रकी पत्र पादि गङ्ग कर मूर्तिपा बनाता ।

तद्युक्त ( स० जो० ) तद्युक्तनेवा तद्युक्त करके म्पुट्

टिखात् डीप् । वामीयन्त्, वटइयोका रंदा नामक एक  
श्रीजार इसमें वे लकड़ी छोड़ कर साफ करते हैं ।

तमन् ( ४० पु० ) तम कनिन् । कनिन् युवृषितधिरा-  
जीति । उण् १।१५६। १ त्वटा, वट्टे । > विष्वकर्मा ।  
३ चिवा नचत् । ( त्रि० ) ४ तचणकत्, माव, जिसमें  
काठ इत्यादि साफ किया जाता है ।

तचगिल—तचगिलाके एक राजा । ग्रीक ऐतिहासिकोंका  
कहना है कि, ३२७ ई०के पहले अलेक्सन्दरके सिन्धु  
नदीके किनारे तक पहुँचने पर उक्त राजाने अग्रसर हो  
कर अलेक्सन्दरका साथ दिया था ।

अलेक्सन्दरने जब भारत पर आक्रमण किया था,  
तब पञ्जाव सुदूर रात्र्यमें विभक्त था । ये राजगण प्रायः  
सर्वदा ही आपसी कलहमें प्रवृत्त रहते थे । इन राजाओं-  
में पुरु अधिक्रम्यतागोल थे । उनसे ईर्ष्या कर तचगिल  
अलेक्सन्दरके साथ मिल गये थे ।

तचगिला—देशविशेष, एक प्राचीन देशका नाम । भारतके  
पुत्र तचको इस स्थान पर राजधानी थी । महाभारतके  
सतानुसार यह स्थान गान्धारके मध्य है । ( भारत १।३:२० )  
जनमेजयने यहाँ सर्पयज्ञ किया था ।

( भारत स्वर्गरोहण १ अ० )

इस नगरका भग्नावशेष अभी ६ वर्गमील भूमिके  
ऊपर फैला हुआ है । भग्नावशेषमें बहुतसे बौद्धमन्दिर  
और स्तूप देखे जाते हैं ।

प्राचीन कालके तक्षश्रीयगण इस प्रदेश पर शासन  
करते थे । इमी वंशके नामानुसार तचगिला नाम पड़ा  
है । ११वीं शताब्दीके प्रारम्भमें तचगिला नगर अमन्द  
नामसे परिचित था ।

तचगिलाकी जमान बहुत उर्वरा है । यहाँ बहुतसे  
नदियाँ और साते हैं । फल और पुष्प यहाँ बहुत उपजते  
हैं । अधिवासिगण अत्यन्त साइली और सतेज हैं । पहले  
यहाँ अनेक सहाराम ( बौद्धमठ ) थे, अभी उनका  
केवल भग्नावशेष देखा जाता है । बहुत थोड़े बौद्ध यहाँ  
बास करते हैं ।

३२१ ई० सनके पहले अलेक्सन्दर भारत आक्रमणके समय जब तचगिला आये थे, तब यहाँके राजाने  
तीन दिन तक अग्रसरके साथ उनकी अपने यहाँ

रखा था । चीन परिव्राजक भी यहाँ आये थे । उन्होंने भी  
तीन दिन तक इस राज्यमें अग्रसर सम्मान पाया था । तीन  
दिन तक अभ्यागत व्यक्तिको अभ्यर्चना करनेका नियम  
इस नगरमें प्रचलित था ।

चीन-परिव्राजकके भ्रमणवृत्तान्त पढ़नेसे मालूम होता  
है, कि तचगिलावासी भारतके मध्यप्रदेशमें जो भाषा  
प्रचलित है वही भाषा बोलते थे । इन लोगोंमें ठाकरो  
अक्षर प्रचलित था ।

तचगिलाका दृश्य अत्यन्त रमणीय है । राजधानीके  
उत्तर-पश्चिम भागमें नागराज एलापत्रका सरोवर है । इस  
सरोवरका जल अत्यन्त स्वच्छ है । तरह तरहके कमलके  
फूल सरोवरको शोभाको बढ़ा रहे हैं । सरोवरके दक्षिण  
पूर्वमें अयोकनिर्मित गहर है । प्रवाद है, कि इस गहर  
( गुफा ) के चारों ओर १०० पद तकको जमान भूमि  
में कभी कपती नहीं है । शहरके उत्तरमें अयोकने एक  
स्तूप निर्माण किया था । पर्वके टिनमें नागरिकगण  
स्तूपको पुष्पादिसे आच्छादित और आलोकित करते थे ।

पण्डितके मतानुसार तक्षशंशके राजाश्रीने वितस्ता  
नदीके किनारे तचगिला राज्य स्थापन कर बहुत दिनों  
तक स्वाधीनतासे यहाँ राज्य किया था । अलेक्सन्दरके  
समयमें भी तचगिला स्वाधीन राज्य था । अलेक्सन्दरने  
यहाँके राजाके साथ मित्रता की थी । महाराज अयोकके  
समय तचगिला उनके साम्राज्यभूक्त था । मौर्यवंशके  
राजाश्रीने कुछ काल तक यहाँ शासन किया था ।

जब अयोक पञ्जावके शासनकर्त्ता थे, तब तचगिला-  
नगरमें ही उनको राजधानी थी । उनके पुत्र कुणाल यहाँ  
रहते थे । कनिङ्गमका कहना है, कि ख्रि० पू० शताब्दी-  
के प्रारम्भमें तचगिला युफ्रोटाइडिस राज्यके अन्तर्गत था ।  
१२६ ई० सन्के पहले अवर नामक शकगणने इस प्रदेश-  
को अधिकार कर प्रायः एक शताब्दी तक यहाँ राज्य  
भीग किया था । बाद कूषाण कुलीनव कनिष्क तनवारके  
बलसे इस प्रदेशके राजा हुए । इस समय उनके प्रतिनिधि  
शासनकर्त्तागण तचगिलामें राज्य करते थे । इन शासन-  
कर्त्ताओंकी बहुतसे मुद्राएँ और उज्ज्वललिपि शाइरी  
नगरमें मिली हैं । रवार्ट्स साहबने जिस लिपिको  
पाया है, उसमें तचगिलाका नाम अङ्कित है ।

दीर्घका वर्षान पङ्क्तिसे मास्य पड़ता है, कि तद्य-  
गिन्ना नगरके चारों ओर ग्रीक ग्रहरोंकी भाँई प्राचौर  
ओर घडरमें बहुतसो गणियाँ थीं। खाटियसने नगरके  
एक स्थानका मन्दिर, एक उद्यान और एक मनोहर सरो  
वरका उल्लेख किया है। उस समय नगरके बाहरमें सो  
एक बड़े बड़े स्तूपोंके बिना कुछा मन्दिर था। दोबके  
बाद बहुत काम तब तद्यगिन्नाका निरवक नहीं मिथता  
है। इयो गताब्दीमें प्लाडियान इस राज्यमें पावे से।  
उर्बोने तद्यगिन्नाको चा-य गिन्ना कहा है। नुइदेवने  
इस स्थान पर अपना मन्दिर बिसो मनुष्यको दान दिया  
था। इसी कारण लोग-भ्रमणकारीने इस नगरका यह  
नाम रखा था। मारतोब बौद्धय तद्यगिन्नाको तद्यगिर  
कहते हैं। ६२० ई०में युएन-चुएन यहाँ पावे से। इस  
समय राजक यन्तुव तथा तद्यगिन्ना काग्रोरेके भवोन  
हो गया था। बौद्धमतकी मर्यादा नही थी। किन्तु  
बौद्धों को महायान मतानुक्रमो उनमें बाध करते थे।

इस नगरकी अवस्थितिके विषयमें बहुत मतभेद है।  
ग्रिनी कहते हैं कि प्राचोन तद्यगिन्ना इजिप्ता नगरने  
३१ मील दूरमें है। ग्रिनीके वर्षानुसार यह नगर  
सिन्धु नदके दो दिगके रास्ते पर चार मदीके किनारे  
पवस्थित है। किन्तु चीनयात्राकर्ताके लम्ब-सुजाकने  
मास्य पड़ता है कि सिन्धु नदके पूर्वदिगाको ओर  
तीन दिन तक पैदल चलने पर इस नगरमें पहुँचते हैं।  
चीनकी क्रियिके अनुसार कय हदरके निकटवर्त बिसो  
स्थानमें तद्यगिन्ना नगर था ऐसा अनुमान किया जा  
सकता है। गिनरल कनि इस कहते हैं कि ग्राइबेरो  
प्राचोन तद्यगिन्ना है। मनो प्राचोन कियुकिने  
तद्यगिन्नाको बलाक्य गडर मतकाया है।

तद्यगिन्नाकी प्रजा कय समय-राज सिन्धुमारके विरुद्ध  
बिद्रोही हुई थी, तब सिन्धुमारके पादेयापुषार सुसिम्ने  
या कर यह नगर परतोर किया था। किन्तु उनके  
पहलकार्य होने पर भयोकरके लपर हक थायका भार  
सो पा गया। भयोकरके थाने पर तद्यगिन्नाकासोने बनको  
पकीयता लोकार थी। महाराज भयोकरके मानकानमें  
तद्यगिन्नाको पाय १६ करोड़ रुपये की थी। ग्राइबेरो  
नगरका मन्मावयय और छ वादि भयो भी हकके पूव-

गोव और बनयानिताका पूर्ण परिचय दे रहे हैं।  
तद्यगिन्नाका मन्मावयय कर्द एक पथमें विभक्त है  
जो भयो मिथ मिथ नामके पुकारे जाते हैं। ये दक्षिण  
पक्षमें उत्तर-पूर्वमें विद्यत हैं। दक्षिणको ओर इनके  
नाम (१) नीर (२) इतिमाह (३) गिर-काप-का  
कोट (४) काक कोट (५) बाजग्याना ओर (६)  
गिर-सुख-का-कोट हैं। इस नगरके मरुप, मरु इत्यादि  
प्राकृत पायव जनक हैं। पञ्जाबके पन्थाम्य खानोंकी  
परीचा इस प्रदेशमें प्राचीन मुद्रा और पुराकोर्ति बहुत  
पायो जातो हैं। बालुकोटके तमानक्या निकटवर्ती  
स्थान बहुत उर्वरा है। इयो ओर ग्रिनी दोनों कहते हैं,  
कि चारों ओर विद्यत पर्वतके उपरका प्रदेश पर तद्य  
गिन्ना पवस्थित है। ग्राइबेरो नगरका अवस्थिति ओर  
इसके मन्मावययके पाव प्राचोन तद्यगिन्नाकी अवस्थिति  
ओर उसको पहातिकाओंका सामन्थ्य देखनेमें जाता  
है। यहाँ की गिन्नाके पाया गया है, उनके पङ्क्तिसे सो  
पकी प्रगत होता है कि बड़ी स्थान तद्यगिन्नाके नामके  
प्रतिह था। बौद्धयमें लिखा है, कि नुइदेवने तद्यगिन्ना  
के पकीक पाकोकरके कार्ये किये थे, जिनका मन्दिरान  
भी इस नगरमें पाया जाता है। इहाँ लव कारकीये ग्राह-  
पेरो नगर हो प्राचीन तद्यगिन्ना है ऐसा अनुमान किया  
जाता है

यह पन्जाब विभाके रायपयिष्ठी जिलेके पचा० ११  
१० क० ओर द० पा० ०२ इ० पू०में पवस्थित है।

यह नगर सम्यक्त प्राचोन है। रामायणमें सो इसका  
उल्लेख है। यह नगर मन्मावकी राजधानी था। भरतने  
यह राज्य कय किया था। कियवमूपति कुवाजिप्ती इस  
राज्यको श्रोतनेके लिए जब रामचन्द्रकीये अनुरोध  
किया, तब भरत सम्यर्बेय पकिवार करनेके निजे भेजे  
गये। भरतने राज्यको कय कर अपने पुत्र तद्यको बर्षा  
ल्लाप किया। रामायणमें तद्यगिन्नाको सिन्धुनदके  
उत्तरमें पवस्थित बतलाया है।

तद्यगिन्नादि ( स० पु० ) तद्यगिन्ना पादिय छ बहुती० ।  
पाकिन्ना कय। कोष्ठाभिन्नः इस पथमें तद्यगिन्नाके  
उत्तर प्रथमान ओर पञ्चनके उत्तर यकाक्रमे पच  
ओर लव होता है तद्यगिन्ना, बालुकोट, कौर्बेदुर,



को राजा बनाया। जब तपुविंश भारेवाकृषि राजा हो गये तो पञ्चमदन्तरवालोंमें बड़ेका दण्ड किया। धाजिर इनके पुत्र मी ब्र वर्ष बाद जोधपुर चले गये। इनका बचमें प्यरे बड़े भार्तामिं मसदीद का। इनके शासनकालमें प्रजा विधिय सुखो न थी। (एकलाल)

तफ़ा (फा० पु०) १ लकड़ीका बीघ इपा बड़ा पटरा, पका। २ लकड़ीकी बड़ो चौकी, तख। ३ सुईकी झमान की धानेको लकड़ीको बनी हुई छटरो, धरको छिछटी। ४ कागजका ताप। ५ जसोमका पञ्च पञ्च दुबड़ा, विद्यारो।

तफ़ायुल (फा० पु०) जिसकी ब्र दण्ड पर बलाये जानेका पटरोंका मुल। इस्लामुसार वह ब्राम में लिया जाता है।

तफ़ो (फा० खो०) १ झोडा तफ़ा। २ बिजनेको पटो। ३ बिबी जोबको झोटो पटरो।

तबड़ा (हि० बि०) १ बचवान, मजदूर, सचन। २ पच्छा घोर बड़ा।

तबड़ो (हि० खो०) टापुन देवो।

तगच (स० पु०) जन्तोपचमसिद्ध जिनकाजक लचबिधिय, जन्मजातमें तीन वर्षाका मसूह। इसमें पड़दे दो ह्रप घोर तब एक बड़ (झा) बच बीता है।

तमदमा (स० पु०) धनुमान, धन्दात्रा, तबमोना।

तगना (हि० जि०) तगना आना।

तबपड़नो (हि० खो०) लुकाईका एक धौरार। इसके धे टूटे हुए छत जोड़ते हैं।

तबमा (हि० पु०) टगना देवो।

तबर (स० पु०) तख जोड़क भा, इतत्। १ म्दोबसोप-जात हचबिधिय, तगरमूल, एक प्रकारका हच जो कास्मीर, मूटान पञ्चबानिस्थान घोर जोड़क दिक्मि नदिमिं बिगारे होता है। कास्मीरमें यह तरवट घोर जोड़कदिक्मि सिन्धीतमर नामसे प्रसिद्ध है। इसके पर्याय-धाको मन्ध-बाहातुमारिका, पञ्च, कुटिच, मरु, मजोररा, मरु, जिन्न दोपन, तमरपादिक बिमन्ध कुचित, पञ्च, भद्रुप दन्तइष्ट, बईच, पिन्धीतमरच, पार्वीच, राक-उपच, बाबातुसारच, चञ्च घोर दोन। लुच—शीतल, तिन्न तथा इष्टिदोच, विपदीव भूतीन्धाइ मय-नामञ्च घोर पन्थ। (राज०)

भावप्रज्ञांमि मतने तमरा दो प्रकारका है जिनमेंसे एकसेका नाम है क सातुसवा तमर। पर्याय-कुटिच घोर मपुर दूसरका नाम है पिच्छतमर। पर्याय-इन्हाइष्टो घोर बहिच। ये दोनों प्रकारके तमर लच्छबोर्य मडुर रम शिख्य लड्ड तथा बिय घपकार गूह, पञ्चितीम घोर त्रिदीपनायक है।

साधारण नदीके समोपवर्ती हचको पादुख भा तमर पादुख (Petrocarpus Dalbergioides) कहते हैं। यह जलदेवमें सिटाह नदीके पूर्वार्धमें मणुन तथा चहाराज लखामो घोर म्दाटारच लनेके बिगारे मो जोड़ा बहुत पाया जाता है। दूपरा पिन्धीतमर (Fabraeamonia Coronaia) जोहलदेवमें बहुतायतसे होता है। बिसे त्रिदीपना कहना है कि जब तबरका नामान्तर दन्तइष्ट है, तो लच्छबोर्योका नामस नदीमें लपच होत बाबा लपोत्रातीय कोठरमञ्चकुचित मोबसुप्य गाब तमरपादुख है क्मीकि इसका काण्ड इच्छाकृति घोर पत्ते पादुखाकृति हैं। किन्तु विचार कर दिक्मनेम मासुम जोना बि, लख गाबके मुप्य लोबबच घोर कोठरमञ्च हैं। इसलिय उसको मोमसुसा कहना हो सङ्गत है।

२ तमरमुलत्रात गन्धप्रथविधिय, लख हचकी जड़ जिमको बिगती गन्धप्रथमिं होती है। इसको चजानिदि दतीको पोका भातो रजो है। ३ मद्रुमइच, मेलफच, इ मुप्यहचविधिय तमरमुप्य, इसमें बहुतघो पञ्चद्विया होती है घोर वह टेकमिं सजेद है। पर्याय—बितमुप्य, कासपच, बट च्चद। (इमर०) यह मुप्य नारायचको पूजाके लिय प्रयत्न है। (भात १११०००१८)

तमर (हि० पु०) एक तरङ्गको म्ददको म्कलो।

तगर—टलेमोबे भूगोह घोर पिरिडस वर्षित भारतवर्षका एक प्राचीन नगर। यह प्रतिष्ठान नगरके पूर्व इय दिनके पच पर पञ्चजिन तथा बच्छप्रमणुन करनेके लिबे प्रसिद्ध का। किन्तु यमो हमको वर्तमान पञ्चकाया पूरा पूरा निर्धय करना कठिन है। यह नगर एक म्मय सिन्धाहारके राजाधोको राजधानो का। पिच्छत मन्वानलका इन्दुकी कहते हैं पूना बिसेका वर्तमान लुकार नगर जो प्राचीन टलेमोबन त तगर है। इसका कारण बलघाति हुए क्मीने कहा है कि लुकार नगरको प्राचीन सिन्धानिधि



को प्रेमिल वा ताया पङ्गा दिया । इहो परतान कान्तातर  
 में तथा ब्राह्मण लक्ष्मी नयी ।" कनिष्ठम माह्व विवृति  
 है, कि गोकु-ब्राह्मण और गोकु ताया ब्राह्मण देवीका  
 यादि स्थान उत्तर श्रीगल (गोकु जिहा) है, न कि  
 बंगाल प्रान्तल गोकुदेम ।

१ न नव प्रमाणीको देखते हुए यही खिर जिया या  
 लक्षता है, कि ये गोकु-ब्राह्मण धर्मग्रह हैं पर धर्म पाया  
 व्यवहारमें कुछ गिरे हुए हैं ।

तगादा ( हि • पु० ) श्रीईका विद्वान्ना वातन । इनमें  
 मन्त्ररू मधाना या बुना रस कर भोड़ारी करनिवाणीक  
 समीप ही जाता है ।

तगादा ( हि • पु० ) ठाका देवा ।

तगादा ( हि • क्रि० ) तागनेका काम सिमो नू५२से कराना ।

तगादा ( हि • ध्यो० ) १ यह मनुा जिनमें लखसे गाड़ा  
 जाती है । २ बुना मारा इत्यादि ठानिका लोड़िका विद्वान्ना  
 करतन । ३ इलवाइबीका मिठाई बनानिका मिठीका  
 करतन ।

तगादी ( हि • ध्यो० ) ठका देवो ।

तगियावा ( हि • क्रि० ) ठाका देवो ।

तगोर ( हि • पु० ) परिवत्तन, बदलो ।

तगोरी ( हि • ध्यो० ) ठानी देवो ।

तगादा ( हि • ध्यो० ) ठगा देवो ।

तगादी ( हि • ध्यो० ) ठका देव ।

तडा ( स० पु० ) तड पत्र । १ पायाकमेदनाक पत्र  
 काटनेको टीकी । २ पुनः शारा जोवनकारण । ३ विप  
 विरहके निवे सलाप, वह दुःख को बिमो विप  
 चियोगे को । ४ मन्त्र, कर । ५ परिधिपत्रमन्त्र, पङ्कनिका  
 मपङ्गा ।

तडन ( स० ध्यो० ) तड भाषे म्पुट । कट शारा जोवन  
 धारण ।

तडा—सुद्राविधिय, एक प्रकारका सिद्धा । यह स फल  
 टह मन्त्रे लपक हुआ है । पहले भारतवर्ष तुर्किस्तान  
 पश्चिम देशमें तडा प्रचलित था । धमी ही तुर्किस्तानमें  
 तडा या तडा नामक सुद्रा प्रचलित है । सुद्रामान राजा  
 धीके समय इहवीं शताब्दीमें नीने और चानिका तडा  
 ही व्यवहृत होता था । लक्ष्मी तडा और टडाके बदले

हया प्रचलित हुआ है । धमी हया जिस धर्ममें स्थ  
 दत होता है एक समय तडा मन्त्र भो लो धर्म  
 प्रचलित था ।

बईपान प्रभृति राजपरकारमें धवधरपान धर्म चारो,  
 मेनिक पञ्चापक समापविष्ट ब्राह्मणवर्णितको जो  
 धृति दो जाता है, उसे मो तडा कहते हैं ।

तडप ( स० पु० ) १ मोटेटीवीय पत्र, मोट देयका लोहा ।  
 बादा देवो ।

२ धर्मरत प्रवान पुत्रानवर्चित एक प्राचीन पत्रपद ।  
 यह वर्तमान पत्रपानिष्ठानके निष्ठ पत्रकलित है ।  
 धार्मिकत देवो ।

तडागा ( हि • क्रि० ) तत्र करका बलागा, तपाया ।

तड्योन ( स० वि० ) तड्योन यत्र, बहुमी । तड्य  
 स्वभावविशिष्ट जो धर्मको परिधान करके सामाजिक धनु  
 मार काम करता है ।

तत्र ( हि • पु० ) जोधोन समयार, पूर्व बंगाल, फामिया  
 को पडाङ्गिया और ब्रह्मदेशमें जोनिबाना एक प्रकारका  
 मदाबहार पत्र । यह तमास और दारकोनोको बातिका  
 मन्त्रोके प्रकारका होता है । यह सिर्फ भारतवर्षमें ही  
 नहीं होता बरं चीन, सुमात्रा और जावा यादि स्थानमें  
 मो होता है । वपाके बाद जहाँ कहीं पूव पड़ती है वहाँ  
 यह पत्र बहुत जम्द बढ़ता है । कोर कोर इमे और  
 दारकोनोके पत्रको एक ही मानता है, पर वहाँमें यह  
 उससे भिन्न है । इसे लक्षका पत्ता निजपत्ता और तत्र  
 ( लटकी ) हयको काम है । इसमें सदैव सुगन्धित पुन  
 समते हैं । इसके पत्र करोटिये होते हैं । पत्रके जो मेल  
 निरूपता है उससे इत तडा पत्र बनाया जाता है ।  
 वह इक प्राय दो वर्ष तक जीवित रहता है । विप  
 विपन लड्य धर्ममें देवो ।

तड्विरा ( स० पु० ) चर्चा, सिद्ध ।

तगादी ( ध्यो० ध्यो० ) मन्दा वित्र धर्मकी लोड़की पटरी ।  
 यह दो प पुन जोड़ो और लयमन किटु बानिना जम्मे  
 होती है ।

तत्रना ( हि • क्रि० ) स्वामना, जोड़ना ।

तत्ररवा ( स० पु० ) १ परोषा द्वारा प्राप्त धान, लपनध  
 धान पनुमय । २ बिमो जोत्रका धान प्राप्त करनेको  
 परीचा ।



तजरवाकार ( हि० पु० ) वज्र जिमने अनुभव किता हो ।

तजरवाकारी ( हि० स्त्री० ) अनुभव, तजरवा ।

तजरवा ( हि० पु० ) तजरवा देखो ।

तजरवाकार ( हि० पु० ) तजरवाकार देखो ।

तजरवाकारी ( हि० स्त्री० ) तजरवाकारी देखो ।

तजवीज ( अ० स्त्री० ) १ मध्यति, मलाह, राय । २ निर्णय फौसला । ३ प्रवन्ध, इन्तिजाम ।

तजवीजसानी ( अ० स्त्री० ) एक ही हाकिमके मामने होनेवाला पुनर्विचार ।

तज्ज ( स० त्रि० ) ततो तस्मात् जायते जन्ड । १ उसीसे उत्पन्न, उसीमें लगा हुआ । २ शीघ्र, हठात्, तुरन्त ।

तज्जलान् ( म० त्रि० ) ततो जायते जनड, तस्मिन् लीयते ली-ड, तेन तज्जलेन अनिति अन्-क्तिप् । उसीमें उत्पन्न, उसीमें लीन और उसीमें अवस्थित पदार्थविशेष, अर्थात् ब्रह्म ! ब्रह्मसे यह जगत् उत्पन्न हुआ है और उसी पर रहता है, वाट अन्तमें उसीमें लीन हो जायगा ।

“सर्वं तस्मिन् ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत् ।” (छन्दो०)

‘यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रविशन्ति अभिसंविशन्ति ॥’ (श्रुति)

जहाँसे ये समस्त भूत जन्मते वहाँसे जीवन धारण करते और अन्तमें जहाँ लीन हो जाते हैं, वही ब्रह्म है ।

“यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।

यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥” (स्मृति)

आदि सर्गकालमें जहाँसे समस्त भूत उत्पन्न हुए हैं और युगक्षय होने पर जिसमें लीन हो जायगे, वही ब्रह्म है । ब्रह्म देखो ।

तज्जो ( स० स्त्री० ) तं निन्दितं जवते जु-क्तिप्, गौरा० डोप् । हिङ्, पञ्चोत्थ ।

तज्ज ( स० त्रि० ) १ तत्त्वज्ञ, जो तत्व जानता हो । २ ज्ञानी ।

तञ्जौर (तञ्जापुर)—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत अङ्गरेज शासनाधीन एक जिला । यह अक्षा० ८° ४८' से ११° २५' ८०' और देशा० ७८° ४७' से ७९° ५२' पू०में अवस्थित है । इसका क्षेत्रफल २७१० वर्ग मील है । इसके उत्तरमें कोलरुण नदी, त्रिचिनापल्ली और दक्षिण अर्काटसे इसकी

पृथक करतो है पूर्व और दक्षिण पूर्वमें चङ्गोपमागर दक्षिण-पश्चिममें मदुरा जिला और पश्चिममें पुदुकोट राज्य तथा त्रिचिनापल्ली जिला अवस्थित है । तञ्जौर जिला दक्षिण कर्णाटका एक अंग्र है । तञ्जौर नगर जिलेका मद्र है जो कावेरी नदीके दहिने किनारे पडता है ।

यह जिला मन्द्राज प्रदेशका उपवनस्वरूप है । इसका उत्तर भाग बहुजनाकोण तथा अमंख्य नारियलके कुञ्जसे शोभित है । कावेरी नदीके विस्तीर्ण डेल्टामें बहुत धान उपजता है । अनेक प्रयःप्रणाली इस खण्डको जानको नाईं ठके रहतो है । इन खाडियोंके द्वारा बडो आसानीसे शय्यवेत सींचे जा सकते हैं ।

तञ्जौर नगरके दक्षिण पश्चिमार्ध कुछ ऊँचा है, किन्तु ममस्त जिलेके मध्य कहीं भी पहाड नहीं है । उपकूल भागमें बालुकास्तूप और उमके वाटही मामांख्य जङ्गल है । केवल कालोमीर अन्तरोपसे अद्रमपत्तन अन्तरोप तक एक विस्तीर्ण लवणाक्त जलाभूमि देखी जाती है । यहाँ अधिक पत्थर नहीं मिलते हैं ।

दक्षिण भागमें उपकूलसे प्रायः आध मोल दूर जमीनसे दो गज नीचेमें पत्थरता स्तर निकला है । यह पत्थर नरम होने पर भी घर बनानेमें उपयोगी है । नग्नपत्तनके दक्षिणमें सटोके नीचे सीप शङ्खु और घोषिका विस्तीर्ण स्तर खोदा हुआ है । इस स्तरके उपरो भागमें बहुत दिनेसे सञ्चित कोमल मिट्टो पडो हुई है । इस तरह सीपके स्तरोंमेंसे कुछ शत्यन्त प्राचीन और कुछ आधुनिकके जैसा मालूम पडता है । यहाँको सब जमीन उर्वरा नहीं है, केवल जलसिञ्चनका अच्छा बन्दोबस्त रहनेसे हो शस्यादि यथेष्ट उपजते हैं । डेल्टाके सिवा ऊँचो भूमिकी मट्टी लोहितवर्ण और क्षयवर्णकी है जहाँ कपासकी फसल अच्छो होती है और कहीं कहीं बालुका-मय हल्को मट्टो है । पोले रङ्गकी चार मट्टी भी देखी जाती, जो बहुत अनुर्वर होती है ।

जिलेका उपकूल भाग प्रायः १४० मोल है । उपकूल भागमें ऐसी भोषण तरङ्ग आतो है कि जहाज इत्यादि वहाँ आसानीसे जा नहीं सकते ।

चावल ही यहाँके अधिवासियोंका प्रधान खाद्य है । अतिम उपायसे जल सींचने पर धानकी फसल अच्छी

होती है। सुतरां किन टिको समतल भूमिमें तथा ज्वलन भूमिमें नैवद्य बड़े बड़े ताम्बाकने निकलानेकी बातको देखी जाती है। पश्चिम-कार और पियागम् नामक दो प्रकारके धान उपजाये जाते हैं। कार धान बीठ मास में बोवा जाता और अतिक्रमशः गटा जाता है। पियागम् धान पावाकर्म बोने और माघ मासमें बाटने में है।

रम्भो-प्रान्त वर्ण बहुत कम होती है। सेना, बाहरा क मनी और छरट पत्रिक उपजती हैं। जिनके पश्चिम भागमें ज्वलो जमीन पर सेना और छरट पड़े होते हैं। छरटमें ज्वलो जल सीजनको सुविधा नहीं है। इस तरहकी भूमिमें पशुधारा धानके क्षेत्रों वान बाटनेके बाद उच्च फलनकी वितो होती है।

तक्षोरमें मायमकी बहुत निकलती है। घृणमकुल उषान और ननेतो प्रकृतिमें मृत्ती, प्याज और पानू तथा तरह तरहने मंग नयन जेने हैं। बनियाँ और पादि मधारी मो यहाँ नकत होती हैं।

इस जिलेके छिप्टा विभागमें सेना, पान, तमाकू ईक इत्यादि पड़े उपजते हैं। ज्वलो भूमिमें मल और पटसन (पाट) मो निकले जाते हैं। तरहे मसीफको परती जमीन तथा नदी किनारे की प्रायः तमाकूकी क्षेत्रो होती है। इसके मिया जिलेके दक्षिण-पूर्व प्राय में खानीमोर पलायने निकलत वानू जमीनमें भी तमाकू उपजता है। तमाकूके पत्ते मोटे तथा लम्बी म्म बहुत लंबी होती है। ये प्रायः भास पयया पानके साथ व्यवहृत होते हैं। यहाँ तमाकू की प्रधान बाधिका-प्रय है। प्रतिवर्ष अर्धक परिमाणमें तमाकू त्रिबाहुर और इंटमपेट नमिष्ट प्रकृति खालेमें भित्री जाती है। कपान भी यहाँ कुछ कुछ उपजते हैं। जिलेका दक्षिण पश्चिमाय छोड़ कर दूररी मर जलध धाम, नारियल, इत्यादिने उच्च बहुत सुममगने उपजते हैं। दक्षिण पश्चिम भागमें पतरोनी मडो रक्षनेमें जहाँ खोई पच्छे पेश नहीं करते हैं।

अत्रिवासिमेंसे अर्धक भू-सम्पत्ति शून्य तथा कम होती है। इनमें प्रायः ३ पय अविचार्यमें निवृत्त रहते हैं। ये प्रधान पहार तथा परिया जातिने हैं।

पौर जिलो न जिली घृणमके क्षेत्रमें चिरखायो रूपमें काम करते हैं। मीप मोष पोषोदि विन्तूँ पौर मर पर प्रकृति कावेरो नदीके दक्षिणक प्रदेशके इन जिलेमें पाये हुए हैं।

छिप्टा मासमें जहाँ नदोको बाढ़के जमीन सूख जाती है वहाँकोचकू पौर ऐतोको मिरि कम आते है जिनके उत्तम खादका काम निकलता है। जिनूँ ज्वलो भूमिमें तथा जहाँ खाड़ी इत्यादिने जल सोंचा जाता है वहाँ खादका प्रयोजन पड़ता है। सबारापर-उम तरहकी जमीन मसैयोका मोषर टि कर उर्बाका बनाई जाती है। इसमें मिमा मडू पचा उत्रिक कार, कूड़ाकरकट पादि मार रूपमें व्यवहृत होता है।

तक्षोर जिलेमें स्वभावतः कम पत्रिक होता है। इसमें पसावा पडरैज पत्रिकारके पडरैवे जो पनेक खाड़ी रहनेके कारण क्षेत्रमें जल भी जनीकी और मो पच्छो सुविधा हो गई है। उत्तरो दीर्घमें प्रबाहित सोलरक मठी बहुत जिलेकी रक्षनेमें इसका जल उतना पत्रिक काममें लगे लाया जाता है।

इस जिलेमें बहुतसी नदियाँ हैं। इनके पतिरिक्त खाड़ी द्वारा भी जमीन जमीमार्ति सी चो जाती है। त्रिचिनापकोने ८ मोस पूर्वमें कावेरो नदी, तक्षोर जिले में प्रवेग कर कई एक शाखा-प्रयाणापीमें विभक्त हो कर उत्तरको पौर जाती है। इसी प्रदेशको कावेरो नदी का छिप्टा कहते हैं, यहाँ जल बहुत उपजता है। जिलेके पश्चिम भागमें कोनरकू और कावेरी नदी परपर पत्तका निकलवर्ती है। उम जयक कोनरकका गर्म कावेरो नदीके पयया प्रायः ८१० फुट ऊँचा है। यहाँ बहुत कम स योज पानेमें जो कावेरी नदीका जल जल कोनरक नदीमें या चकता है। इस पययाकी दूर करनेके निम्ने शरो प्रत्यान्देमें कोनरक यथे जिली राजा में उम जल पर शाखा कावेरो नदीके किनारे एक बड़ा पडा बाँध तैयार किया है, इसी कारण इसको तक्षोरका उर्दारतारक बाँध कहते हैं। यह बाँध पत्तका बना हुआ है। इसको लम्बाई १००० फुट चौड़ाई ४० से ६० फुट और ऊँचाई १५ से १८ फुट है। १८२६ ई०में कोनरक शाखाके ऊपर एक पानिकट प्रकृत हुआ इसमें

कावेरीको शाखाका जल बहुत घट्ट जानिसे १८४५ ई०में कावेरीके ऊपर एक दूसरा आनिकट बनाया गया । यह कोलरुणके निकट ७५० गज तथा कावेरीके निकट ६५० गज लंबा है । शीपोक्त दो आनिकट द्वारा तञ्जोरमें जलागम सम्पूर्णरूपमें आर्यताधोन किया गया है । कोलरुणके ऊपर आनिकट हो जानिसे इसका जल बहुत कम जाता है । पहले जो जमीन इसके जलमें मींची जाती थी, अभी उतनी दूर तक इसका जल नहीं पहुंचता है । इसके प्रतिकारके लिये पूर्वमें आनिकटमें ७० मोल नीचे एक दूसरा, आनिकट बनाया गया है । इस समय कोलरुणमें दो खाड़ी काट कर एक आर्कट और दूसरी तञ्जोर नगर तक ले गये हैं । उत्तरी खालकी उत्तर-रजनवायाखाल और दक्षिणी खालकी दक्षिण-रजनवायाखाल कहते हैं । इसके सिवा और भी कई एक खाड़ी खोटी गई हैं । उक्त खाड़ियोंमें फिर शाखा प्रवाहा निकाल कर बहुविधरीण प्रदेशमें जन मींचा जाता है । जो कुछ छो, धीरे धीरे इस जिलेकी उन्नति हो रही है । कहना नहीं पड़ेगा, कि नदीद्वारा ही प्रायः श्रेष्ठ शस्यक्षेत्रमें जल पहुंचाया जाता है । बहुत थोड़ी जमीन तानाव या वृष्टिजलके ऊपर निर्भर है ।

तञ्जोरमें बाढ, अनापट्टि प्रभृति दैवदुर्विपाक प्रायः नहोंके उरावर है । समुद्रके किनारे वानूका जं चा पहाड रहनेसे तूफानद्वारा उत्पन्न सागरतरङ्ग जिलेमें प्रवेश नहीं कर सकती है । पूर्व भागकी जमीन भी किनारेकी और ढाल रहनेसे नदी वा वर्षाका जल सहज-जीमें निकल जाता है । सुतरां जल जमा हो कर देशको प्रावित नहीं करता है ।

व्यवसाय-बाणज्य—तञ्जोरमें सब जगह जाने-आनेको विशेष सुविधा है । दक्षिणभारतीय रेलपथको दो शाखायें इसके मध्य हो कर गई हैं । एक शाखा द्विचिनापलीसे उपकूल होती हुए नग्नपत्तन नगर और दूसरी तञ्जोर नगरसे वद्विर्गत हो कर मन्द्राजकी और चली गई है । जिलेके मध्य प्रायः १२३३ मोल लंबा, चौड़ा और नदी खाड़ी आदिके ऊपर सेतुयुक्त रास्ता है । एक ३२ मोल लम्बी खाड़ी हो कर नाव इत्यादि जाती आती हैं । उन नावों पर विशेष कर वेदारण्यम् नामक स्थानका उत्पन्न लवण नाटा जाता है ।

गिल्यके मध्य तञ्जोरके भिन्न भिन्न धातुके तार, शगमो कपडा, कार्पेट ( गलीचा ) तथा काठको बनी हुई वस्तु प्रधान हैं । सूतो कपडा और मूल, यूरोपमें कई तरहके धातु, स्ट्रुट्मसेट्लमेण्टम् और मिङ्गलहीपमें सुपारो प्रभृतिकी आमदनी होती है । रफ्तनी ड्रव्योंमें चावल ही प्रधान है ।

तञ्जोरमें वृष्टिपात करमण्डल उपकूलके अग्राग्य स्थानोंको नाईं सब वर्ष एकसा नहीं है । ज्येष्ठ मासमें दक्षिण-पश्चिम मोसम वायु आरम्भ हो कर भाद्र मास तक प्रवल रहती है । इस समय वर्षा बहुत कम होती है और जब क्रमो होती भी है तो दो घण्टेसे अधिक काल तक नहीं ठहरतो । आश्विन वा कार्तिकमें पोष मास तक उत्तर पूर्व वायु बहती है । इस समय वृष्टि पड़नेमें अधिक और बहुत देर तक रहता है । तत्र वार्षिक-वृष्टिपात क्रमयः १५ और २५ ईंच होता है । प्रायः सब मासमें वृष्टि होती किन्तु भादोंमें अगहन मास तक ही सबसे अधिक होती है । चैतमें जेठ तकका समय शीतकाल रहता है । तापांग फागुनमें प्रायः ८२, शीतकालमें प्रायः १०४ तथा शीतकालमें ६४ तक हुआ करता है ।

आंधी मेह आदि अक्षर होता रहता है । तूफानके समय नाव जहाज इत्यादि जिलेके दक्षिणस्य पक्ष उपसागरमें ठहरते हैं ।

तञ्जोरमें कोई भी रोग कहीं न हो, देगभरमें फैलता नहीं है । पहले यहाँ पीनपा ( पैर फूल जाना ) रोगका बड़ा प्रादुर्भाव था, अभी यह कुम्भघोनम् तक फैल गया है । स्वास्थ्यकी और सभीको दृष्टि आकर्षित होनेसे यह रोग प्रायः विलुप्त हो रहा है । च्वर, वसन्त और हैजा रोग ही संक्रामक हो जाता है । जिले भरमें प्रायः ३८ शीघ्र धालय है । जिनमें अनेक लोग विना व्ययके चिकित्सित होते हैं । जिलेके मध्य ५ म्युनिस्पालिटी है ।

यहाँको लोकसंख्या प्रायः २२४५०२८ है, जिनमेंसे हिन्दुधर्मकी संख्या अधिक है । अधिवासियोंमें वेलियर ( मजूर ), वेल्लनर ( क्षपक ), परिया, ब्राह्मण, शिखरबन ( धीवर ), इदैयर ( सिपपालक ), कम्मनर ( कारोगर ), कैक नार ( ताँती ), सतानी, ( मिथनाति ), शानच ( पासी ), सेट्टी

(बर्बिक्) धम्मकुम् (जापित) विद्या ( धोरी ), कुगमन ( कुनार ), चक्रिय, चक्रान (सिक्क) प्रथमि प्रधान हैं । सुमनमानमन शिव, सैयट सुयण पडान, धामर, गहर प्रथमि मन्दायमे विमल हैं । इनके पक्षाभा ईपारि पोर येन तथा घोडो स ध्यामे पाम्य ज्ञानि वाम करती हैं ।

तम्बापुरो माहात्म्यमे तम्बापुर (तम्बोर)को उत्पत्ति का विवरण इस तरह किया है—तम्बान नामक एक राजस तम्बापुरमें बहुत ब्रह्म मवाया करता था । पश्चिमसिधौको सुनित देख बिन्दुप्रयवान्ने इस राजसको वध किया । राजसने मारते समय बिन्दुने प्रार्थना की थी कि यह नगर भी वी नामने प्रसिद्ध हो । बिन्दु मय वानने बैसा हो योगा" पिसा यह कर प्रस्थान किया । उसी राजसके नामने स श्कन नाम तम्बापुर पोर तामिष्ठ तम्बापुर पड़ा है ।

बहुत पहलमे ही कर १५०० ई० तक पोलराजापौत्रि यहाँ राज्य किया किन्तु तम्बापुर लोक किम समय राज सानोके रूपमें परिचित हुआ था वनका निर्णय करना कठिन है । पोलराजापौत्रि त्रिगिरापौत्रिके निकट बरेतुर नामक स्थानमें तथा इनके ध्वंश होनेके बाद कुम्भपोषम्में राजधानी स्थापन की थी ।

तम्बापुरके हजदोवार महादेवके मन्दिरमें लक्ष्मीर्ष पनुयामनने पना चलता है, कि राजा कुम्भोत्तुर्जन यह पनुयामन प्रदान किया था । पतएव यह पनुमान किया जा सकता है कि राजा कुम्भोत्तुर्ज चौक पयवा लके पिसा तम्बापुरमें राजधानी ठठा मारि स । यावट १०११से १०८० ई०के बिमो समय यह घटना हुई होगी ।

हाथर तुरनेक साहबने पोलराजर्षयको जो तालिका प्रस्तुत की है उसने मान्य होता है कि पितोय कुम्भोत्तुर्ज चौक ११२८ ई०में तम्बापुर सि वामन पर पश्चिहित है । उनके शासनकालमे वी तम्बापुरके पोलराजर्ष यका पञ्चपलन पारम्भ हुआ था तथा चौप राजसको शासन चहना हो गई ।

तम्बापुर-बुद्धवारि पुरित नामक इष्टलिपिके पठनेमे मान्य होता है कि पोलर्षयिय शेष राजाका नाम बोर शिखर था । ये प्रभूत पराक्रमयानो है । त्रिगिरापौत्रो पोर

महरापुरो रक्षिके समयमें तम्बापुरमें मिनाये सके । मधुरापुरीके सि हासनप्युत राजा चन्द्रोपानने विजयनगरके राजाके महायता वाचना की । विजयनगरपश्चिमिष्ठ इन्द्रपरायने लनको मधुरापुरोमें पुनः स्थापन करनेके लिये कतियान नाग नावक नामक सेनापतिके पक्षोप एक टक सैन्य भेजा । इकर बोरशिखर से कुछ दिवसे प्रलुत हुए । मधुरापुरीके निकट दोनों पक्षमें क्रमशः लडाई हुई, बाद तम्बोरके राजाने पयना प्राक् परिभ्याग किया । मधुरापुरो, त्रिगिरापौत्रो पोर तम्बापुर विजयनगरके पक्षोप हुए । १५२० ई०में पञ्चुतराय विजयनगरके सि हासन पर बैठे । इनको सारीके सान सेनाया नायकका विवाह हुआ । इन समयमेंके कारक एक वर्षमें पञ्चुतरायने सेनाया नायकको तम्बापुर पोर त्रिगिरापौत्रिके शासनकर्त्ता बना कर भेजा । समये तम्बापुरके नायक-राजर्ष यको उत्पत्ति हुई । नायकराजर्ष यके विजयनगरके पक्षोप हो राज्य करती है । किन्तु १५६४ ई०में विजयपुरके राजाने विजयनगरके राजापाषा ध्वंस किये जाने पर इस समय १६६२ ई० तक उक्त राजापौत्रि आशोलमानने तम्बापुरमें शासन किया था । इन राजापौत्रिके समयमें पदक तोडा पदुकोट्टै, केवासवारि प्रथमि कई एक दुर्ग पोर देनमन्दिर निर्माच किये गये स । नायकराजापौत्रिके समय १६१२ ई०को पौत्तमोत्रोने मन्वपत्तनमें तथा १६२१ ई०में शिवमार्कडे सोगोने इलकुडवर नामक स्थानमें निवासस्थान स्थापन किया ।

कर नायकर्षयके पौत्रे राजा विजयवरायव तम्बापुरके सि हासन पर पश्चिहित है, तब मधुराके योक्ष्यनमें नावकने तम्बापुर पर पञ्चमप करनेके काले राजसक्या का पाश्चिद्य करनेके लिये पूत भेजा । राजाके पक्षाध्व किये जाने पर लक्ष्मीने १६६० ई०में टनवाय विडडक्याप्या नायकका तम्बापुर कीर्तक लिये भेजा । सेनापति सोबिन्दु दीपितने उक्त पौत्रक, किन्तु टनवायने लक्ष्मीपश्चित कर तम्बापुर पश्चिकार कर लिया पोर घोष की है राजसक्यके समीप पण्डु च गये । उस समय विजयराजर्ष यानमें निमग्न है । पान मडु होमिष्ठ बाह अब लक्ष्मी मव हास मान्य हुए, तब लक्ष्मीने पयने बोरपुरको पुन्य कर कहा, कि राजसक्यकी समीप गि

स्वाधीकी एक घरमें रख कर उधके चारों ओर वारुट संग्रह कर रखी थीर सड़ते पानी पर उसमें आग लगा तुम तलवार हाथमें लिये युद्धके लिये बाहर रणभूमिमें निकल पड़ना। विजयराघव युद्ध करते करते मारे गये। इधर पुष्पने पिताका मृत्यु संवाद सुन कर अन्दर महल को वारुटमें आग लगा दी। तन्जावुर प्रशान्तभूमिमें परिणत हो गया। राजभवनके टजिण पश्चिम-कोणमें यह दुर्घटना हुई थी। यह अंग्र भव भी उन्नी तरह भग्ना वस्थामें रह कर पूर्व दुर्घटनाका स्मरण टिनाता है।

तन्जावुर जीते जाने पर शीक्यनायकने एकस्तन-पायी एलागिरिकी वहाँका शासनकर्ता नियुक्त किया। एलागिरि पहले शीक्यनायके अधीनमें राज्य करने लगे, किन्तु कुछ कालके बाद उनके साथ मतान्तर हो जानेसे वे स्वाधीन हो गये। तन्जावुरका राजभवन वारुटमें उड़ाये जानेके पहले एक दार्डे विजयराघवके नावालिंग पुत्र को ले कर नग्नपत्तनमें भाग आई थी। वह बालकी किमी वनियेके घरमें भरणपोषण किया गया था। ५१७ वर्षके बाद विजयराघवके अन्यतम सेक्रेटरी वेनकन्ना नामक कोई नियोगी ब्राह्मण बालकका स्थान पा कर स्वर्गीय राजाके कई एक आकीयवर्गोंको सहायतासे उक्त बालक और दार्डेको साथ ले विजनगरकी गये। जब विजापुरके सुलतानको पूरा खोरा मालूम हुआ, तब वे तन्जावुरके नायकीके दुःखसे अत्यन्त दुःखित हो गये। इस समय शिवाजीके छोट्टे बेटे मात भाई एकोजो विजापुरके सेना नायकको पद पर अधिष्ठित थे। एलागिरिकी भगा कर विजयराघवके नावालिंग पुत्र सिंहमालदामको तन्जावुरके सिंहासन पर प्रतिष्ठित करनेके लिये विजापुरके सुलतानने एकोजीसे कहा। एकोजो जानते थे कि शीक्य नायके साथ एलागिरिका विरोधभाव चल रहा है। अतएव उन्होंने शोष हो आयमपट्टी नामक स्थानमें एलागिरिको पराजित कर सिंहमालदामको तन्जावुरके राजपद पर अभिषिक्त किया। वेनकन्नाने आशा की थी, कि सिंहमालके राजा होने पर उन्हें सन्तोका पद मिलेगा, किन्तु दार्डेके अनुरोधसे बनिया ही मन्त्रो हुआ। इस पर वेनकन्ना नितान्त असन्तुष्ट हो कर एकोजोको राज्य ग्रहण करनेके लिये बारबार उसकाने लगा। पहले तो एकोजी

ने इस खोर तैलिक भो ध्यान न दिया, किन्तु विजापुरके सुलतानका मृत्यु समाद पा कर वे तन्जावुरको जीतनेको इच्छामें समन्य पहुँच गये। वेनकन्नाने भी राजभवनमें समाद दे दिया कि भारी विपत्ति आ पटी है। राजा इस घटनासे अत्यन्त भोत हो कर भाग चले। बिना खून-खराबोके तन्जावुर एकोजीके हाथ लगा। इस तरह तन्जावुरमें महाराष्ट्रीय राजवंश स्थापित हुआ। यह घटना श्रावण १६०४ ई०में हुई होगी।

एकोजोने अन्धाम पुत्र तकाजोके ५ लड़के थे। तकाजोको मृत्युके बाद सबसे बड़े लड़के चावाभाइय राजसिंहासन पर बैठे। १०३६ ई०में उनको मृत्यु होने पर उनको छोटा सुजानाव ई राज्यगामन करने लगा। किन्तु कोहनजो-वाटगी नामक किसे अचिञ्चने रूप नामको किमी खोके पुत्रको एकोजोने - यत्र गरभो-कीको उत्तराधिकारी कह कर स्थिर किया और किमी सुमनमान किलादारको सहायतासे सुजानावार्डेको राज्यमें भगा दिया। इस तरह वे खोके पुत्र लिये सिंहासन-ग्रहण करनेमें समर्थ हुए। परन्तु अन्धान्ध मन्त्रिवादि शोष हो कोहनजोका यह पठ्यन्त जान कर तकाजोने २५ पुत्र शशाजीको राजपद पर अभिषिक्त किया। १०४० ई०में तकाजोके छोटे पुत्र प्रतापसिंह कई एक राजमन्त्रियोंको सहायतासे गयाजोही भगा कर आप सिंहासन पर बैठे। १०४४ ई०में आर्कटके नवाबके साथ प्रतापसिंहका टो डार लड़ाई कही टोनी मन्दाइयामें लड़ित हो कर प्रतापसिंहने नवाबको ७ लाख रुपयेका एक तमस्यु क लिख दिया।

१०४८ ई०में शयाजोने पुनः राज्य लौटानेके लिये सेण्टेडेविड दुर्गके अंगरेज गवर्नरसे सहायता मांगी। प्रतापसिंहने आसन्नविपत्तको जान कर सुपकेसे अंगरेजोंके साथ इस शर्त पर सन्धि कर ली, कि यदि उन्हें राजपदसे च्युत न करें, तो वे टेवकोट नामक दुर्ग तथा उपस्थित युद्धका आयोजन-व्ययस्वरूप ६ हजार पैगोडा (सिका) अंगरेजोंको और शयाजोके खर्चके लिये वार्षिक ४००० पैगोडा अर्थात् १४८-०५ रु० देंगे।

१०४८ ई०में प्रतापसिंहने चाँटसाइवके भयसे उन्हें ५८ लाख रुपयेको एक दस्तावेज लिख दी। किन्तु कुछ

दिन बाद ही लखीम १००० चण्डोरी की वीर २००० पदा  
 तिष्ठ सैन्य महोजी की सेनापतित्व में मङ्गल्यद पक्षोको सहा-  
 यताके लिये चाँदसाहबके विरुद्ध भेजे। मङ्गल्यद पक्षोने  
 जयनाम कर तख्तापुर की राजाको सुरक्षारक्षक बनाया  
 दस वर्ष का विगल्य (नजर) छोड़ दिया और कोरमटी  
 तथा कडापु नामके दो प्रदेश भी दिये।

१०३१ ई० में प्रतापसिंह ने मन्थी महोजी की कृपया  
 अर्थात् सेनापति महोजीको आग्रह से प्रजग कर दिया।  
 सुरारिण यह जान कर कोरठदो अधिकार कर  
 तख्तापुर की घोर पराक्रम होने लगे। राजाने कोरठ उपाय  
 न देख कर महोजीको शरण ली। महोजीने महाराष्ट्रीय  
 सेनापतिको मार मगाया।

१०३४ ई० में परासोसे सेनापतिवर्ग तख्तापुर राज्य  
 छूट कर कोरमलका बाँध काट दिया। प्रतापसिंह ने  
 पनरौली की सहायताके पुनः कोरमल नदीका बाँध  
 मरुत कर लिया।

१०४८ ई० में प्रतापसिंह ने चाँदसाहबको लो १। नाम  
 रुपयेकी दर्याके लिये दो से, यह परासोसे गवर्नरके  
 शाह मदी। इस रुपयेको धारिके लिये परासोसे गवर्नर  
 काठण्ड नामो कई एक खान बूट कर तख्तापुर दुर्गके  
 पासने था पड़ु है। इस समय लखो बाण्ड घोर रमद  
 कम गई। राहुँमें त्रयै समय प्रतापसिंह ने लखो पशु  
 मरुत कर लखी राज्यके बाहर निकाल मगाया।

मङ्गल्यद पक्षो पनरौली साय नकारके लखे  
 चुकानेमें बहुत लक्ष्यपत्र भो भये थे। लखीने नबाब को  
 कर लक्ष्य-परियोजनाको कोरठ सुविधा न देवी। अन्तमें जब  
 लखे मातृभू पड़ा कि प्रतापसिंह कई वर्षोंसे विगल्य  
 नहीं दिते हैं तब लखीने सोचा, कि तख्तापुरको खास  
 अपने दर्याके लानेके बहुत मरुद रुपये मिल सकती हैं।  
 यह सोच कर लखीने मन्थोजी नवर्नरसे सहायता मांगी।  
 कुछ प्रस्तावनें सहमत न हो कर लखीने राजाका बाकी  
 विगल्य चुकानेके लिये कोरिणके धन्यतम मदद  
 कोमियाद-भो मीको भेजा। लखीने यह मोमांभा ली, कि  
 राजा प्रति वर्ष नबाबको ४ लाख रुपये विगल्य दिते  
 बाकी विगल्य (२२ लाख रुपये) दो वर्षोंके मध्य बीच  
 दरिने परियोजना करना होया। यह सन्धि १०५२ ई० में  
 हुई थी।

बाबैरोके उत्तरो बिनाई त्रिगिरायकीने निवट  
 ने मूर नामक खानमें एक बाँध था। राजा प्रतापसिंह  
 को प्रार्थना घोर लखेने त्रिगिरायकोके भागनकर्ता  
 महारिजने लखे बनाया था। लखो उच्च धामनकर्ता घोर  
 लखो राजाके लखेमें लख बाँधको मरुतत होतो रही।  
 १०५४ ई० में लखो एक खान टूट गया। नबाबने लख  
 को मरुतत न ली घोर न तो राजाको लो लखे-मरुतत  
 करनेको पशुमत मनो। इन समय तुक्त्राको तख्तापुर  
 (तख्त्रो)-के राजा थे। लखीने समयमें लो कर पशुत्र  
 गवर्नरकी सहायता लो। इस समयके लख लखी बाँधको  
 मरुतत करनेका ध्यानरुक्त होता तभी राजाको प धरि  
 ज़ोई सहायता सेनो पड़तो लो।

इसके बाद हैदरखलीके तख्त्रो पान्नाम करने पर  
 राजाने लखे प्रभुत धन दिया। १०६८ ई० में लखे माय  
 राजाको एक सन्धि हुई। शिवमहाके राजा ८ लख पदके  
 तख्त्रोको लो सम्पत्ति से भये थे, राजा तुक्त्राकीने  
 १०७१ ई० में लखे मुनः अपने अधिकारमें लिया। इस पर  
 नबाब बहुत परमरुत हुए। राजाके यहाँ दो वर्षका कर  
 बाको है १ से लखे तख्त्रो पान्नाम करनेमें है लखत  
 महसुल हुए। १४ मितम्बरको नबाबपुत्रने तख्त्रोका दुर्ग  
 पररोह किया, बाद २० तारोको राजाने बाध लो  
 कर लखे साह पन्धि कर लो। सन्धिपत्रमें यह था  
 रको, कि २ वर्षका बाको विगल्य ८ लाख रुपये और  
 मुद्रयय-लक्ष्य १२१ लाख रुपये नबाबको दिते और शिव  
 महाके राजाको लो सम्पत्ति लो गई है लखे लोटा दिते,  
 पान्ना, विनापुर, रनाहाय घोर कौपटी छोड़ दिते पड़ते  
 तथा लख १२४ लाख रुपये चुकानेके लिये मगावर्नर  
 घोर लुधकोपम के दोनो प्रदेश लो लय है लिये नबाबके  
 अधिकारमें काठ दिते, राजा नबाबके मिसके साथ  
 मित्रता और शत्रुके साथ शत्रुता रहें। १०९१-०२  
 ई० का विगल्य फिर बाको रद ज़ानेने नबाबने १०७१  
 ई० में प शत्रु गवर्नरके निवट तख्त्रोराज्यके विरुद्ध  
 यह नामिक लो कि विगल्य पतनेने दस लाख रुपये  
 बाको रद गया है। राजा हैदरखली घोर महाराष्ट्रके  
 साय नबाब तथा पनरौलीके विरुद्धने पशुयत्न कर रहे  
 हैं। प गवर्नर गवर्नरकी आग्रहसे सेनापति लखने मित-

स्वर महीनेमें तञ्जौर आकर राजा तुलजाजीको कैद कर लिया और नवाब तञ्जौरके खास अधिकारी हो गये।

डाइरेक्टरोँके निकट यह सन्वाद पहुँचने पर उन्होंने असन्तोष प्रकाश किया। वे बोले, कि १७६२ ई०को सन्धिके अनुसार अंगरेज गवर्मेण्ट तुलजाजीको सहायता करनेमें बाध्य है। पेशकशके वाकी रह जानेसे राजाको कैद कर लेना मन्दाज गवर्नरने बहुत अन्याय किया है। उन्होंने पिगट साहबकी मन्दाजका गवर्नर नियुक्त कर यह आज्ञा दी, कि उन्हें तुलजाजीको सिंहासन पर पुनः अधिष्ठित करना होगा। राजा नवाबको वार्षिक ४ लाख रुपये पेशकश देंगे। मन्दाज गवर्नरकी अनुमतिके अनुसार नवाबके साहाय्यार्थ राजा समय समय पर मैन्स-साहाय्य करेंगे और राजा अंगरेजके मित्र बने रहेंगे। एक दल अंगरेजी सेना तञ्जौरमें रह कर शान्ति रक्षा करेंगे और उमका खर्च राजाको देना पड़ेगा। अंगरेजीको अनुमतिके बिना राजा किसीसे सन्धि-स्थापन नहीं कर सकते।

डाइरेक्टरोँके आदेशानुसार पिगट साहबने १७७६ ई०के ११ अप्रैलको तुलजाजीको तञ्जौरके सिंहासन पर अभिषिक्त किया। १२ अप्रैलको राजाने सन्धिपत्र पर अपना हस्ताक्षर किया। और अंगरेजी-सेनाके खर्चके लिये वार्षिक १४ लाख रुपये देनेकी स्वीकार किया।

१७८१ ई०में हैटरगलीने तञ्जौरका दुर्ग छोड़ कर और सभी जगह ६ मास तक अपना अधिकार जमाये रखा था।

१७८७ ई०में तुलजाजीकी मृत्यु हुई। उन्होंने मरने के पहले शरभोजी नामक किमो आत्मीय-पुत्रको दत्तक लिया था। किन्तु उनको मृत्युके बाद उनके छोटे भाई दत्तक-शास्त्रमङ्गल नहीं है, यह अंगरेजके निकट प्रमाण कर थाप स्वयं राजा हो गये। तुलजाजीको विधवा स्त्रीकी वार्षिक ३ हजार और शरभोजीकी ११ हजार पैगोडा ( सिक्का ) देना कबूल कर सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किया।

मन्दाजमें रहते समय तुलजाजीकी विधवा स्त्रीने लार्ड कर्नवालिसके निकट दत्तकग्रहण शास्त्रमङ्गल है था नहीं इसका अनुसन्धान करनेके लिये आवेदन किया।

वनारम ( काशी ) प्रभृति स्थानोंके पण्डितोंके मतानुसार देखा गया कि दत्तकग्रहणमें कोई दोष नहीं है। डाइरेक्टरोँकी यह बात मान्य होने पर, उन्होंने शरभोजीकी राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त करनेका आदेश किया। मार्किम थाफ वेल्सलीने १७८८ ई०में उक्त आदेशको कार्यमें परिणत किया।

राजकार्यमें शरभोजीको अनभिन्नता रहनेसे मन्दाज गवर्मेण्टने उनके बदले कुछ काल तक राज्यशासन किया था।

१७८८ ई०के २५ अक्तूबरमें जो सन्धि हुई, उसमें यह शर्त थी, कि ब्रिटिशगवर्मेण्ट राजाके प्रतिनिधिस्वरूप तञ्जौर पर शासन करेंगे। राजा दुर्गमें रह कर एक लाख पैगोडा और मसस्त आवका ६ अंश मात्र पावेंगे। इस सन्धिके अनुसार तञ्जौर-दुर्गको छोड़ कर और सभी प्रदेश एक प्रकारसे ब्रिटिशमन्दाज्यभुक्त हो गये थे। महाराष्ट्रवंशीय राजाअनि १२२ वर्ष तक यहाँ राज्य किया था।

शरभोजीके बाद उनके पुत्र २५ शिवाजीने पिढपट पाया। शिवाजीने मरनेके पहले एक दत्तकपुत्र ग्रहण किया था। किन्तु मार्किम थाफ डलहीसेने उस दत्तकको स्वीकार न कर १८५५ ई०में तञ्जापुर राज्यका अस्तित्व लोप कर दिया। राजपरिवारवर्गको मासिक हत्ति निर्धारित हुई थी।

अभी तञ्जौरकी पूर्वची जाती रही। दुर्ग कहीं कहीं टूट-फूट गया है। राजभवनका भी अच्छी तरह मरसत नहोँ होता है। रानियोंको भूममत्ति रिसो-वरोँके हाथ लगे। इस सम्पत्तिकी वार्षिक आय ११ लाख रुपये है। तञ्जौरका सरस्वतो-भवन नामक पुस्तकालय सुरक्षित है। इस पुस्तकागारमें राजा शरभोजी बहुतसे हस्तलिखितग्रन्थ संग्रह कर गये हैं।

तञ्जौरमें वृद्धेश्वर महादेवके मन्दिरके पश्चिम-उत्तर कोणमें सन्नद्धय स्वामीका मन्दिर विशेष उल्लेखयोग्य है। इसकी गठन-प्रणाली बहुत अच्छी है। प्रसिद्ध मन्दिरके सामने जो प्रकाण्ड नन्दीकी मूर्ति है, उसके विषयमें एक प्रवाद सुना जाता है। नन्दीकी आकृति पहले बहुत छोटी थी। किसी समय उस मूर्तिकी इच्छा

हुं कि मैं शिवजीके पावतनसे बड़ी जो लार्क । यह सोच कर वह प्रतिदिन बहूँ भगी । शिवजी मो नन्दो से छोटे रत्नकी इच्छा न करतें हुए दिनों दिन बहूँ लगी । अर्ध बराह यह देख कर बहुत स खटमें पड़ गये । अन्तमें लक्ष्मी नन्दोकी हृदि निवारक करतीने जिये नन्दी के विश्वसे भावमें एक बड़ी सोझिकी शोल मोंक दो लम दिनसे नन्दी धीर बड़ न सकी । मझादेव मी लक्षी पावलामें हैं । यह प्रवाद मत्स्य वा पमत्स्य जो कुछ हो, शिवतु इस तरहका बड़ा मन्दिर निरूपे धीर नन्दो-मूर्ति पन्थास देखनेमें लगी प्रातो ।

शिवतु राधापौके शासनकालमें तन्धोर सब प्रकारके शिवा बाधयक, अरविधा, कायरचना धीर शिवविधा का शिखररूप था । यमी लख समी शिवय धीरे धीरे शोध होती आ रहे हैं । लेकिन पच मो तन्धोरमें जो शिव बगला है, वह पत्थन मनोहर दीख पड़ता है । शासककालमें यह कालकाले पाईएँ शिवकी शिवकी शपिका पनेक प शर्म यें ह है ।

२ मन्दास्य प्रदेशके अन्तर्गत तन्धोर जिसेका प्रधान उप-विभाग धीर तासुका । यह पचा० १० २६ से १० ३१' ३०" धीर दिशा० ७८ ३०' से १८ २२' ५०" में पच स्थित है । भू-परिमाण ६८८ वर्गमील धीर प्रसन्न का प्रायः ३०००१८ है । इसमें तन्धोर, तिह्रप्रदो बहम धीर अयमपते नामके चार शहर तथा ३६२ ग्राम मगत हैं । दक्षिण भारतीय रैलवेय इस उपविभागके उत्तरमें प्रवेश कर तन्धोर नगर होता हुआ पश्चिमको गया है । यहाँ सब अनाजके धानको प्रथम जो पक्की होती है ।

१ मन्दास्य प्रदेशके अन्तर्गत तन्धोर जिसेका प्रधान नगर धीर सदर । इसका प्रथम नाम तन्धापुर है । यह पचा० १० ३० ३०" धीर दिशा० ७८ ८०" ५० पर दक्षिण भारतीय रैलवेयके शिवार मन्दास्यके २१८ मील धीर तुतीकोरिनसे २२६ मीलको दूरी पर अवस्थित है । जनसंख्या प्रायः १०८०० है, जिनमेंसे शैकड़ ८२ शिवतु ३६०० मुसलमान, ३०८६ ईसाई धीर ११४४ बौद्ध हैं ।

यहाँ जिनके अत्र अमल्य मन्डिईट प्रसति नास करतें हैं । इस नगरमें धु निरपान्दी है ।

यह नगर पहले दक्षिण प्रदेशके प्रथम पराक्रान्त शिवतु राजन शको राजधानी तथा राजनीति, धर्म नीति, विद्याशुभोन्नत प्रभुतिका शिखरकाल था । यह काल प्राचीन शिवतु राधापौकी शक्ति तथा पूर्वतन स्थापता नैपुण्यका परिचायक है । यहाँका मन्दिर सुवनविख्यात है धीर इसको ऊँचाई १८० फुट है । इसके शिवा लस मन्दिरमें जो बहुतसे छोटे छोटे देवालय हैं । अन्तमें शिवकी शिवकी मठनप्रभावो धीर निर्माणाधारिण्य देखनेमें पाचर्ध खाया पड़ता है । मन्दिरकी टेकमूर्ति छप मूर्ति पानि मी शिवायकर है ।

तन्धोरका मन्वावशिष्ट दुर्ग बहुत दूर तक खेला हुआ है । दुर्गके प्राचोरके अन्तर्गत ही राजप्रामाट धीर नगर स्थापित है । राजप्रामाटको प्रशासक पञ्चानिकाप मने एकके अन्तर्गत राजापौका पुस्तकालय था । अन्तमें अन्तमें स स्तुतयन्त्र धी कि अन्तमें धीर अर्धों पावे नर्धों पाते । मन्दास्यके निमित्तअन्तमें सके मूर्तपूर्व काष्टर मार्थन मी लम पुस्तकोंकी एक सूची बगाई है ।

तन्धोर नगर बागेश शिवाकार्यके लिये विख्यात है । यहाँका रामी कार्पेट, लक्ष्मी करनेका पत्ता तमिषा तार तरह तरहके शिवकी इत्यादि अमल्य सुन्दर शक्ति हैं । तन्धोरमें से कर पूर्वकी धीर ससुद शिवार मन्वपत्तन मन्दिर तख तथा पश्चिममें शिविनायको तन्धोरनयक द्वारा म नुक्त है ।

तट ४ ( शि० पु० ) कर्णदूस एक प्रकारका गहना जो अन्तमें पहना जाता है ।

तट (सं० लो०) तट पच् । १ नदी प्रसुतिका कूल शिवारा, तीर । २ लक्ष्येक, लोको अमोन । ( पु० ) ३ शिव । शिवकी प्रधान देवता समस्त कर लक्ष्मी नाम तट रखा गया है । "नलदायक लक्ष्मीक लक्ष्मीक पत्तने नमः ।"

( भारत २२ २८०११६ )

( शि० ) ३ अक्षित लक्ष्मी, लक्ष्मी हुआ ।

तटग (सं० पु०) तटगय ह्यो० साधु । १ तटगय तानाक, धीरधर ( शि० ) तट गम-क । २ तटगामी तानाक पर आर्धनामा ।

तटय ( शं० शि० ) तटे समीपे तिष्ठति स्था-क । १ समीप स्थित, समीप रहनेवाला । २ लक्ष्मीक शक्ति निरपेक



जो किसीका पक्ष ग्रहण न करे। ३ तोरस्थ, जिनके पर रहनेवाला। ४ व्यस्त। ५ चमत्कृत आश्चर्यान्वित विस्मित। ( पु० ) ६ लक्षणविशेष किसी पदार्थका वह लक्षण जो उसके स्वरूपको नहीं बरन गुण और धर्मको ले कर कहा जाय। लक्षण देने।

प्रत्येक वस्तु दो प्रकारके लक्षणों द्वारा समझी जा सकती है—एक स्वरूप-लक्षण और दूसरा तटस्थलक्षण।

किसी बातका अर्थ समझाने समय जिन विशेषणके कहनेसे विशेष कुछ मर्म न समझा जाय सिर्फ एक ही तरहका अर्थ समझ पड़े अर्थात् पढ़नेको बातमें जिस अर्थका बोध हो दूसरो वार समझाने पर भी उतना ही समझ पड़े, उसको स्वरूपलक्षण विशेषण कहते हैं। एक उदाहरण दिया जाता है,—कलम और कुम्भ, इस जगह कुम्भ, कलमका स्वरूपलक्षण विशेषण हुआ, तथा कलम भी कुम्भका स्वरूपलक्षण विशेषण हो सकता है, कारण यहाँ कुम्भ शब्दके द्वारा कलमका वा कलम शब्दके द्वारा कुम्भका विशेष मर्म नहीं मानूम पड़ता। कुम्भ कहनेसे जितना ज्ञान होता है, कलम कहनेसे भी उतना ही समझ पड़ता है। कुछ विशेष ज्ञान नहीं होता। और भी एक दृष्टान्त दिया जाता है,—किसीने आपसे पूछा, "पोल क्या चीज है?" आपने कहा, "पोल शून्य पदार्थ है।" किन्तु इस शून्य शब्दमें पोलका कुछ मर्म नहीं मानूम हुआ। पोल कहनेसे पड़ने जितना ज्ञान हुआ था, शून्य कहनेमें भी उतना ही ज्ञान हुआ। अतएव शून्य शब्द पोलका स्वरूपलक्षण हुआ। यह तो हुआ स्वरूपलक्षणका वर्णन, अब तटस्थलक्षणका वर्णन किया जाता है। किसी अन्य वस्तुको सहायतामें यदि अन्य किसी वस्तुका लक्ष्य किया जाय तो वैसे वाक्यको तटस्थलक्षण कहते हैं।

यह तटस्थलक्षण भी उक्त पोल वा शून्यके दृष्टान्तसे समझा जा सकता है।

आपसे किसीके यह पृष्ठने पर कि, पोल वा शून्य पदार्थ क्या है, आपने उत्तर दिया कि, इस वरमें यहासे लगा कर भौत तक पोल वा शून्य है। यद्य भौतको सहायतामें शून्य पदार्थको समझाया गया, इसलिए यह वाक्य तटस्थलक्षण हुआ।

ब्रह्मको भी उक्त दोनों लक्षणोंमें समझाया जा सकता है। ब्रह्म चित्स्वरूप है मत्स्वरूप है, अनन्तस्वरूप है इत्यादि कहनेमें उनका स्वरूपलक्षण प्रकट होता है, अर्थात् इसमें द्वारा उसका विशेष कुछ ज्ञान नहीं हुआ। चित् कहनेसे जितना बोध होता है, मत् कहनेसे भी उतना ही ज्ञान होता है तथा ब्रह्म इत्यादि कहनेमें भी उतना ही बोध होता है। हाँ, जब यह कहा जाय कि, वे कर्ता है, हर्ता है और विधाता है तो कर्तृत्व, हर्तृत्व, विधा-इत्यादि गुणोंको सहायतामें उनका लक्ष्य किया गया, अतएव यह तटस्थलक्षण हुआ। क्योंकि कर्तृत्वशक्ति और पालविहत्त्वादि शक्तियाँ प्राकृत पदार्थ अर्थात् प्रकृतिसे विकाशित होती हैं। इसलिए वह ब्रह्मका कोई गुण वा शक्ति नहीं है, वह तो ब्रह्ममें विभिन्न ही पदार्थ है। प्रतिरिक्त वा प्रत्यक्षभूत किसी वस्तुको सहायतामें किसी वस्तुका प्रकाश किया जाय तो तटस्थलक्षण विशेषण हुआ करता है। मन्मथलक्षण देखो।

तटाक ( सं० पु० ) तट-आकन् वा तटं अकृति अक-अण् । तडाग, मरीचर, तालाव ।

तटाघात ( सं० पु० ) तटे आघातः, अ-तत् । वपक्रोडा, पशुर्षीका अपने भीनों या रतितमें जमोन खोदना ।

तटिनौ ( सं० स्त्री० ) तटमध्यस्थाः तट-इनि ततो डोप् । नदो, सरिता, दरिया ।

तटो ( सं० स्त्री० ) तट-प्रच्-अतो डोप् । १ तोर, तट, किनारा । २ नदो, दरिया । ३ तराई, घाटो ।

तट्य ( सं० पु० ) तट् उच्चत्य अहंति तट-यत् । शिव, महादेव । "नमस्तदाय तटाय ।" ( भार० १२।२८५।३६ )

तड़ ( हिं० पु० ) १ पक्ष, तरफ । २ स्थल, जमोन । ३ वह शब्द जो यम्पड आदि मारने या कोई चीजके पटकनेसे उत्पन्न होता है । ४ लाभका आयोजन ।

तडक ( हिं० स्त्री० ) १ तडकनेकी क्रिया । २ वह चिह्न जो तडकनेके कारण किसी चीज पर पड़ जाता है । ३ स्वाद लेनेकी इच्छा, चाट । ४ धरन, कड़ो ।

तडकना ( हिं० क्रि० ) १ चटकना, कड़कना । २ किसी चीजका सूखने आदिके कारण चूट जाना । ३ उच्च-स्तरसे शब्द करना, जोरको आवाज करना । ४ चिठना, कुंभलाना, विगड़ना । ५ उकलना तड़पना, कूदना ।

तद्वा ( वि० पु० ) १ प्रसात प्रातःकाल, सुबह । २ बघार, यी और कुछ समाका मर्म करके दास आदि तरकारि विधिं श्रान्त ।

तद्वाणा ( वि० लि० ) १ किमी लुकी हुई चीखको फाड़ना । २ उच्च शब्द करना, जोरसे पावाच करना । ३ किसी को शोक दिखाना ।

तद्वाय ( स० पु० ) तद्वाग श्रयो० यापु० । तद्वाग, शरीर ।

तद्वातद्वाणा ( वि० लि० ) तद् तद् शब्द होना ।

तदतद्वाचद ( वि० श्लो० ) तदतद्वाचको श्रिया ।

तद्वाप ( वि० स्त्री० ) कुम्भीको श्रिया । २ चमक मड़क ।

तद्वापदार ( वि० लि० ) मड़कोना चमकीना, मड़कदार ।

तद्वापना ( वि० लि० ) १ ध्याकुल होना, व्यग्रमाना तद्वापना । २ जोर शब्द करना चिखाना ।

तद्वापमाना ( वि० लि० ) श्रुदनेका काम किसी दूसरेसे कराना ।

तद्वापाना ( वि० लि० ) १ मानसिक वा शारीरिक श्रुदना पढ़ू वा कर ध्याकुल करना । २ किसीको शरकरनेसे निवृत्त करना ।

तद्वापना ( वि० लि० ) तद्वना देखी ।

तद्वापना ( वि० लि० ) तद्वना देखो ।

तद्वापनी ( वि० श्लो० ) समाज इत्यादिमें एक एक पक्ष पक्ष बनना ।

तद्वाच ( स० पु० ) तद्वाचिं पवित्रते उभिंभिं तद्वा पाच ।

विनाशकरक । उच ५११ । तद्वाच, तावाच ।

तद्वाच ( वि० पु० ) १ किसी पदाच के फटनेका शब्द ।

( लि० वि० ) २ अशरीरे, चटपट, चुरल ।

तद्वाचा ( स० श्लो० ) तद्वाच श्रियां टापु । १ गदो पौर समुद्रका तटभाग । २ पावाच चोट । ३ प्रमा दोषि, चमक ।

तद्वाचा ( वि० पु० ) कामान्वाच बुननेशालीका एक कडा । इसकी सम्याई प्राया सवा त्रयको होती है और यह मदिमें कडा रहता है ।

तद्वाच ( स० पु० ) तद्वा-पाच । तदवाचकरक । इति विपत्त नाद वापुः । १ यन्त्रद्वयक शरिष इत्यादि पक्षकुनेका म दा । २ जनमयविषय पुष्कर तानाच । इसके संस्कृत पदाच—धराच, तद्वाचः तद्वाच पौर तद्वाच है । पांच को

श्रुय नदरे पुष्करिणी, दोषिका तथा प्रयात मूमावर्त रश्मिवाशि तथा बहुत दिनोंका जलाशयको तद्वाच कहते हैं । २३ च मुक्तीका एक डाब पौर चार डाबका एक श्रुय माना गया है । एक जो श्रुय परिमित स्थानके जलाशयको पुष्करिणी कहते हैं, पौर पांच सौ श्रुय परिमित स्थानके जलाशयको तद्वाच कहते हैं ।

यत्तत्पुत्रिनामन्तो बहु संवत्परोपिताः ।

ब्रह्मवस्तुदानां स्वाश्रितानां तु ब्रह्मेतिव ॥" (धन्यामणि०)

"चतुर्विंशत्ये इत्ये बहुल्यव्युत्तरं ।

वचनमन्तरैश्च तावत् पुष्करिणी सुवा ॥

एतद् बहुश्रुय श्रेष्ठं स्वयं इति शिबेव ॥" (सविड)

इसके अन्धा श्रुच—शानुबईक, श्यापु, कपाय पौर कटुपाक तथा मिशिर पौर हिमकाष्ठमें चमक प्रयात है । ( धनव० ) जो मनुष्य यज्ञविधिसे तद्वाचोत्सर्ग करती है, है एक कल्प जन्मासपरमें पौर उसके बाद दिव्यश्रुय स्पर्गमें साम करती है । शरभविधिसे विवेकविचार पुष्करिणी प्रसिद्धा रहेता ।

काशनिरीषमें तद्वाचके जनका पक्ष—

यदां पौर शरत्कालमें पवकित जल भूमिदोमकक सङ्घ, श्रुमल पौर मिशिरकालमें बाजपेय, वचनाकालमें पायसिक पौर शीतकालमें राजसुवपक्ष मङ्ग पवनहा यक्ष है ।

"शानुबईके शिवत तोव शरीरदोमकक वचतम् ।

तरवकाले शिवत तोव बहुचक्रकरानकम् ॥

वाकपेयकककक हैयमश्रुतिशिवतम् ।

अश्रुवेवकक शानुबईकककककककककक ॥

श्रीधेऽपि तु शिवत तांश्च राजसुवकककककक ॥" (व्युत्तरम्)

जो तद्वाचोत्सर्ग करती है । है जो इस पक्षको पाती है । एक तद्वाचोत्सर्ग करनेसे जो समस्त यज्ञका पक्ष होता है ।

तद्वाच ( स० पु० ) कालकीक, एक प्रकारका कन्द, मनसाक ।

तद्वाच ( वि० लि० ) तद् तद् शब्दके भाव ।

तद्वाचा ( वि० लि० ) तद्वाचका काम किसी दूसरेसे कराना ।

तद्वाचा ( वि० श्लो० ) १ थाडम्बर, खपरो तद्वाच मड़क । २ मोचा, कपट, कच ।

तद्धि (सं० पु०) तड-आघाते तड-इन् । १ आघात, चोट ।

( त्रि० ) २ आघातकर्त्ता, चोट पहुँचानेवाला ।

तद्धित् (सं० स्त्री०) ताडयन्त्रं तड-आघाते इति प्रत्ययः ।

ताडे णिङ्गच्छु । उण १।०० । विद्युत्, विजली ।

विद्युत् डेगे ।

तडिष्, मार (सं० पु०) जैनीके एक देवता । ये भुवनपति देवगणमेंसे हैं ।

तडित्पति (सं० पु०) मेष, वाटल ।

तडित्प्रभा (सं० स्त्री०) तटितः प्रभेव प्रभा यस्या' बहुव्री० । १ कुमागनुचर माटभेट, कार्त्तिकेयकी एक माटकाका नाम ।

'केशमन्त्रोत्र श्रुतिनामा कौशनाऽथ तडित्प्रभा ।'

(भारत शिल्प ४३ अ०)

( त्रि० ) २ विद्युत्सदृश टोमियुक्त जिसमें विजलीसा चमक हो ।

तडित्वत् (सं० पु०) तडित् विद्यतेऽस्य मतुप् मस्य वा, अपदान्त्वत् तस्य न टः । १ मेष, वाटल । २ सुस्तक, नागरमोथा । (त्रि०) ३ तडिदिशिष्ट, विद्युत्युक्त ।

तडित्वती (सं० त्रि०) तडित्ववत् स्त्रिया डोप् । तडि-द्युक्त, जिसमें विजलीमो चमक हो ।

तडिहर्भ (सं० पु०) तडितो गर्भ' यस्य, बहुव्री० । मेष वाटल ।

तडित्प्रथ (सं० त्रि०) तडिदात्मकं स्वरूपे तडित् मथ ।

तडित् स्वरूप, विजलीके सदृश ।

तडिया ( त्रि० स्त्री० ) ससुद्रके तटको वायु ।

तडी ( त्रि० स्त्री० ) १ चपत, धोल । २ धोखा, ऋल । ३ बहाना, डोला ।

तण्ड (सं० पु०) तडि अच् । १ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम । (स्त्री०) भावे अ । २ आर्हात, चोट, मार ।

तण्डक (सं० पु०) तण्डते नृत्यते तण्ड-ण्डुल् । १ शस्त्रन-पत्तो । २ फेन । ३ समामबहुलवाक्य, वह वाक्य जिसमें बहुतमे समास हो । (स्त्री०) ४ गृहदारविशेष, गृहस्तम्भ, घरमें लगाये जानेका खम्भा । ५ तरुस्कन्ध, पेडका तना । ६ परिष्कार, शुद्धि, सफाई । ७ बहुरूपो; बहुरूपिया । ८ रोग । (त्रि०) ९ मायाबहुल मायावी । १० उपघातक, नाश करनेवाला ।

तण्डि (सं० पु०) मलयुगके एक ऋषिका नाम । इन्होंने टण्ड हज़ार वर्षे शिवजीमो आराधना की । वाट शिवजीने इनकी तपस्यासे संतुष्ट हो उन्हे टर्गन दे कर कहा था 'मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ, तुम्हें मेरे प्रसादमें एक पुत्रत्वको प्राप्ति होगी । वह पुत्र यगम्बो, तेजम्बो, दिव्य-ज्ञानमन्वित, अमर और वेदका सूत्रकर्त्ता होगा ।' शिवजीके घरमें तण्डिके एक पुत्र उत्पन्न हुआ । तण्डिके पुत्रने ही यजुर्वेदोय ताण्डिन गाथाका कल्पसूत्र प्रणयन किया था । (भारत धनु० १६।१० अ०)

तण्ड, (सं० पु०) महादेवजीके द्वारपाल, नन्दिकेम्बर । 'नन्दो भृंगगिरिस्तण्डु नन्दिरौ नन्दिकेम्बरः ।' (मत्तियुगपुत्र सं०)

तण्ड, रोग (सं० पु०) तण्डा अस्त्रार्थ उरच् तत्र भव-छः । १ कोटमात्र, कीडा मकोडा । (स्त्री०) तण्डु, ले भवः छः लस्य र । २ तण्डु, नोटक, चावलका पानो । (त्रि०) ३ वर्वर, अमभ्य, जङ्गली ।

तण्डुल (सं० पु०-स्त्री०) तण्डुलते आह्वयते तड-उलच् । सान्निवर्णमिति । उण ४।०० । १ निम्नप धान, चावल । चावल देखो । २ बोद्ध, वायविद्ध । ३ तण्डुलियगुक, चीनाईका माग । ४ प्राचीन कालको होरको एक तेल जो ८ सरसोंके बराबर होती है ।

तण्डुल-जल (सं० पु०) तण्डुलोटक, चावलका पानो । यह वैद्यकमें बहुत श्रितकर बतलाया गया है । इसमें प्रसृत करनेकी दो प्रणाली हैं—(१) चावलको कूट कर अठगुने जलमें पका कर छान लिया जाता है, यह उरकृत तण्डुल-जल है । (२) चावलको घोड़ी देर तक भिगो कर छान लिया जाता है, यह साधारण तण्डुलजल है ।

तण्डुलपरीक्षा (सं० स्त्री०) तण्डुलिन परीक्षा, ३-तत् । दिव्यविशेष, नौ प्रकारके दिश्योंमेंसे एक । वेगमितोदयमें लिखा है कि किसी चीजको चोरो होने पर विचारक इस दिव्यका प्रयोग करें । इसका विधान—चावलको अच्छी तरह धो कर उसे देवताके स्नानके जलमें एक नवीन मटोके पात्रमें भिगो कर एक रात तक रख देना चाहिये । दूसरे दिन विचारक शुचि हो कर नियमपूर्वक आसन पर बैठे । वाद जिसके ऊपर सन्देह हो उसे स्नान करा कर पूर्वकी ओर बैठावे । तब एक भोजपत्रके ऊपर 'अथवा उसके अभावमें पोपलके पत्ते के ऊपर निम्नलिखित मन्त्र लिख डाले' ।

“अद्विजकन्दारमिहोत्पन्नं ह्रींशुभिरागोवहरेदं वपुषः ।  
 वारुण तन्निश्वर इमे च हन्मैरथोदि जगति वारुण वृत्तं ॥”  
 इससे बाद यह एक उरुह्वर मन्त्रक पर एक उरुह्वर नामक  
 उरुह्वर नामके निम्ने देवे । यदि उरुह्वर यज्ञार्थमें घोरी या  
 धारायज्ञ किया होगा तो उसका शरीर कापिने लम्बा और  
 तापु उरुह्वर कायगा तथा उसे चक्रा का मोरजल या घोष-  
 कर्षण पर उरुह्वर फोकनेसे यह उरुह्वर केसा लाल होकर  
 पड़ेगा । अन्तमें उसे ही दोयी समझ कर धारायज्ञ  
 यगुसार दण्ड देवे ।

तण्डुला (घ० श्लो०) तण्डुलक मलहाय । १ विडुङ्ग,  
 वायविडुङ्ग । २ मरुममहाङ्गक ककरो नामका पिकु ।  
 तण्डुलाम्बु (म० श्लो०) तण्डुलप्रान्ति पम्बु, मन्-  
 पदसा० । तण्डुलोटक चाबनका पानो । इससे म स्तत  
 पर्याप्त—तोहाम्बु, तण्डुलोटक और तण्डुलोटक है ।  
 एक परिमित चाबनको धठयुने अन्तमें डाल देवे । बाद  
 कहे पका कर पदक करे । इस प्रकारका जल विषिय  
 हितकर है ।

तण्डुलिकायम (म० पु० श्लो०) तीव्र विषिय एक तोत्र  
 का नाम । धो मनुष्य इस तोत्रमें जाता है वह इस  
 ल सारमें कष्ट नहीं पाता और अन्तमें ब्रह्मलोकको प्राप्त  
 होता है ।

“अमृताभारवापुस वरुणोऽङ्कितधर्म ।

व दुर्धमवाप्यति प्रसन्नो च वरुणः ॥”

(मण्डलक ६२ अ०)

तण्डुलिया (हि० श्लो०) चोलाई, चोलाई ।  
 तण्डुली (म० श्लो०) तण्डुल-कोप । १ यवतिष्ठा  
 सता । २ यथाङ्गुली कर्कटी एक प्रकारकी ककड़ी ।  
 ३ तण्डुलीयमाक, चोलाईका साम ।

तण्डुलीक (म० पु०) तण्डुलीक कापति की च । तण्डु-  
 लीयमाक, चोलाईका साम ।

तण्डुलीय (म० पु०) तण्डुल काय तण्डुलकाय हित  
 तण्डुल-क । विवाशरधिरुगर्भम् । वा ५।१।० । पम्-  
 माकविषिय चोलाईका साम । इससे म स्तत पयाय—  
 पम्मारिय तण्डुलीक, तण्डुल मण्डीर, तण्डुली,  
 तण्डुलीयक पम्बु बहुरीय मित्रनाद उमकन,  
 रुयाक, पम्पयाक, स्फुत्रधु अन्तिताइय और और

तण्डुलनामा है । (Amaranthus polygonoides )  
 इसका गुण—घिमिद, मधुर, विष विरत दाह और  
 अमनायक, हृदिकारक दोषन घोर पम्बु है । इससे  
 पक्का गुण—विम, पर्याप्त विररक घोर विषकाय  
 नायक, दाहक मधुर, दाह घोर शोषनायक तथा हृदि-  
 कारक है । भावप्रकार्यक मतसे इससे पर्याप्त-कापुटे,  
 तण्डुलीरक, मण्डीर, तण्डुली, कोर, विषघ्न घोर पम्बु  
 मारिय है । इसका गुण—कषु शोषनायक हृदिकारक,  
 अमनायक, रक्तदोषापघारक मन्मूलनिघारक हृदि-  
 कर्षक, अग्निप्रदीपक घोर विषनायक है । (मन्मूलक)

एक दूसरे प्रकारका भी तण्डुलीय होता है जिसे  
 पानीय तण्डुलीय कहते हैं घोर कोरि कोरि रमे जल  
 तण्डुलीयककट नामसे भी पुकारते हैं । इसका गुण—  
 तिक्त रक्त, विररक, वातनायक घोर मधु है । (मन्मूलक)  
 तण्डुलीयक (म० पु०) १ तण्डुलीयमाक चोलाईका  
 साम । २ विडुङ्ग वायविडुङ्ग ।

तण्डुलीयकमूल (म० श्लो०) तण्डुलीयककप्य मूल,  
 ३ तण्डुलीयमाकका मूल, चोलाई सामको  
 मूल । इसका गुण—कषु, शोषनायक रमे शोषकर  
 रक्तविषघ्न घोर महरनायक है । (कात्रेवर्धिया०)

तण्डुलीयिका (म० श्लो०) तण्डुलीय काठे कन् प्लिया  
 काय कापि घत हल । विडुङ्ग, वायविडुङ्ग ।

तण्डुली (म० पु०) तण्डुल प्रयो० उरुह्वर साह । विडुङ्ग,  
 वायविडुङ्ग ।

तण्डुलीर (म० पु०) तण्डुल वाहुवकात् आर्ये कृ ।  
 तण्डुलीयमाक चोलाईका साम ।

तण्डुलीरक (म० पु०) तण्डुलीर आर्ये कन् । तण्डुलीय  
 माक चोलाईकर साम ।

तण्डुलीय (म० श्लो०) तण्डुलान् उत्तिष्ठति तण्डु-  
 ल्या क । तण्डुलाम्बु चाबनका पानो । तण्डुलाम्बु रेको ।

तण्डुलीटक (म० श्लो०) तण्डुलक कदक ३ तण्डु-  
 लप्रान्ति जल, चाबनका घोसा कृपा पानी ।

तण्डुलीय (म० पु०) तण्डुलानामोष ३-तण्डुली १ तण्डुल  
 रागि, चाबनका टैर । २ एक प्रकारका बांस ।

तण्डुलीर (म० पु०) ३२ यिजमन्त्रेभित्ति एक प्रधान मन्त्र ।  
 हर्मि रेको ।



तत्त्व ( स० त्रि० ) तुर्ब हिंसायां त्रि दित्वा प्रयोदशादि  
त्वात् माह । १ हिंसा, हिंसा चरनेबाधा । २ तारक,  
तारनेबाधा ।

तद्वपि—तत्त्व हिंसा ।

ततोऽथा ( हि० श्लो० ) १ बरे मिह, ब्रह्मा । २ अथा मितं  
ओ बहुत कङ्क, ई होतो है । ( हि० ) ३ तिज पुरतोऽथा ।

३ बुद्धिमान्, आसाक ।

तत्त्व ( स० त्रि० ) तत्त्व करोति तत्-कर्म, ट । तत्त्वदार्थं  
कारक ।

तत्त्वान् ( स० पु० ) स चासौ ज्ञानवैति, कर्मभा० । १ वर्त  
मानज्ञान । २ तस्य समय, तुम्हा, औरत । ( त्रि० ) त  
चासौ यन्, बहुप्रो० । ३ तत्त्वज्ञानवृत्ति ।

तत्त्वान्यो ( स० त्रि० ) तस्मिन् ज्ञाने कार्यं ज्ञाने ओ रूप  
ज्ञिता बुद्धिर्यं यद्गो० । प्रत्यक्षव्यवृत्ति उपस्थित  
बुद्धि ।

तत्त्वानुभव ( स० श्लो० ) विदुःशब्द ।

तत्त्वानुभव ज्ञान ( स० त्रि० ) तस्मिन् ज्ञाने स ज्ञान,  
० तत्त्व ओ तस समय बुद्ध्या हो ।

तत्त्वानुभवमूल ( स० त्रि० ) तस्मिन् ज्ञाने यद्युत्, ० तत्त्व ।  
ओ तस समय उत्पन्न बुद्ध्या हो ।

तत्त्वानुभव ( स० त्रि० ) तसो समयका ।

तत्त्वानुभव ( स० त्रि० ) वेतन विना ज्ञानावतः सा ज्ञिया कर्म  
यत्न बहुप्रो० । ज्ञानकारणमोल, जो बिना कुछ सिधे मार  
होता हो ।

तत्त्वानुभव ( स० पु० ) स चासौ ज्ञान ज्ञान कर्मभा० । सद्य  
तसो समय, तत्त्वान् ।

तत्त्वप्रतिमान ( शं० श्लो० ) ज्ञानमतागुसार मान, ज्ञान  
प्रमाण, अविमान, प्रतिमान और तत्त्वप्रतिमान इन  
लोकिज मानके के भेदनिधि एक । तुरन्त पर्यात् पीड  
पादिके मूलको लक्षणप्रमाण कहते हैं । ( हि० पु० )

तत्त्वानुभव ( स० त्रि० ) तत्त्वज्ञान, उत्तम ज्ञान ।

तत्त्वानुभवो ( हि० पु० ) १ दम्पिताया, बहुलाया ।  
० भ्रमका मान्य चरना, शोध बचाव ।

तत्त्व ( स० श्लो० ) ततोति मर्बमिद तन्-जिपु तुक्क  
धर्मो माहुः । तत्त्व माका तत्त्व । १ यथावत्ता, वादा  
विषयता, वासवियन । २ कल्प । ३ ब्रह्म । ( जवर )

४ पनारोपित कल्प परमाका 'तर्ब कश्चिद प्रसिद्धिर्ब' ( इति ) यह ममत्ता जगत् ब्रह्ममय है । जो कुछ मो है  
वह सब ब्रह्म हो है । ५ विमलित वायादि । ६ वेतन ।  
७ बहु । ८ पर्यन्त । ९ मारकतु मारण । १० सोप्योज  
प्रकृति पादि, जगत्का मूल कारण । मत्व रज पोर  
तम ।

इस परिच्छिन्नमान जगत्कल्प कार्यको देख कर इसका  
कारणका मो जन्मान होता है । बहुत ही बिना जियो मो  
बहुती उत्पत्ति नहीं हो सकती । जैसे मनुष्यके सींग  
होना पतन्य है जैसे जो जगत् पर्यात् जगत्के लक्ष  
उत्पन्न ज्ञाना पतन्य है । क्योंकि प्रकृत बलका वा  
एक न एक उत्पादनकारण है, यह मत-प्रसिद्ध है ।  
जैसे—मिहोपे ब्रह्मको पार सुनने कपड़ेको उत्पत्ति  
हत्यादि । अतएव यह मानना पड़ेगा कि हम जगत्का  
मूल कोरे तत्त्व है, वह तत्त्व प्रकृतता प्रकृति पोर  
सुख है ।

पादिकारणके ज्ञान कार्यपरम्पराको उत्पत्ति हुई  
है, इसलिये चाँदमाकावित् विद्वानेनि पादिकारणको जो  
प्रकृति बतलाया है । कारणका कारण पोर तस कारण  
का मुनः पन्थ कारण, इस प्रकारको यदि कारणपर  
पर्य हो, तो मो एक स्थान पर आ कर कारणका पतन  
होगा । प्रकृति तम पादिकारणका स प्रामाण्य है । हम  
प्रकृतिके समस्त तत्त्व पादिभूत हुए हैं । प्रकृतिमें तत्त्व,  
मध्यम पोर पथम यथात् दुःख, दुःख पोर मोह ये तीन  
गुण पाये जाते हैं । इसलिये प्रकृतिके उत्पन्न तत्त्वनिं मो  
ब्रह्म गुण देवनेमें पाते हैं, इसो लिये जगत्को लक्ष  
दुःख पोर मोहमय कहा गया है ।

तत्त्व पदार्थ गुण ज्ञाना पतन्य है कारण गुणके  
पदाव वा तत्त्वको उत्पत्ति नहीं हो सकती । बिन्दु  
माह, रज पोर तम ये तीन पन्थ-गुण नहीं बल्कि  
पदार्थ-गुण हैं ।

कल्प रज पोर तमो गुणात्मिका प्रकृति, महत्त्व ( बुद्धि  
तत्त्व ) पदहार, मन, चक्षु, शब्द नातिष्ठा, जिह्वा,  
दृक्, वाक् पाणि, पापु, पाद, उपरान, मन्त्र, श्रयं, ह्य  
रम, गन्ध, चिति ध्य, शिबः, वायु, वाक्याय पोर सुख  
ये २१ तत्त्व हैं ।

ये पञ्चोभ तत्त्व ही जगत्के मूल कारण हैं। इन तत्त्वोंसे जगत्की उत्पत्ति हुई है। जब इम जगत्का नाश होगा, तब उक्त समस्त तत्त्व प्रकृतिमें लौन हो जायेंगे। फिर सृष्टिके प्रारम्भमें प्रकृतिसे तत्त्वसमूह उत्पन्न होंगे।

प्रकृतिसे इसी तरहसे तत्त्व उत्पन्न हुआ करते हैं। पहले प्रकृतिसे महत्तत्त्व ( बुद्धितत्त्व ) उत्पन्न होता है, पोछे महत्तत्त्व अहङ्कारतत्त्व, अहङ्कारतत्त्वसे एकादश इन्द्रिय ( पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ ) और मन और पञ्चतन्मात्रतत्त्व, पञ्चतन्मात्रतत्त्वसे पञ्चमहाभूततत्त्व की ( पृथ्वी जल आदि ) उत्पत्ति होती है, इसी तरह सृष्टिके विनोपकालमें पञ्चमहाभूत पञ्चतन्मात्रमें, पञ्च तन्मात्र और एकादश इन्द्रिय अहङ्कारमें, अहङ्कारमहत्तत्त्वमें और महत्तत्त्व प्रकृतिमें लौन हो जाता है। उस समय सिर्फ प्रकृति और पुरुष बाकी रहते हैं।

( साख्यद० १।६१ )

पातञ्जलदर्शनके मतसे तत्त्व ऋज्वीस हैं—पञ्चीस तो साख्यवाले और ऋज्वीसवाँ ईश्वर भी तत्त्व है। साख्यके पुरुषसे योगके ईश्वरमें विशेषता इतनी ही है कि योगका ईश्वर लेश कर्म, विपाक आदिसे पृथक् माना गया है। मायावादी वैदान्तिकोंके मतसे ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थतत्त्व है, उसके सिवा और कुछ भी तत्त्व नहीं है, सिर्फ मायाकल्पित है। सब ही ब्रह्ममय है, जो कुछ देखता है, वह सब ब्रह्म है, इसलिए एकमात्र ब्रह्म ही परमार्थतत्त्व है, ब्रह्मातिरिक्त अन्य तत्त्वान्तर नहीं है।

माया परब्रह्मकी शक्तिस्वरूप है। ब्रह्म मायावच्छिन्न होते ही जगत् उत्पन्न होता है। किन्तु स्थलान्तरमें वे नित्य मुक्तस्वभाव कहे गये हैं।

वैदान्तिकगण एक उपमा दे कर इन दो परस्पर विरुद्ध वाक्योंका सामञ्जस्य किया करते हैं। जैसे वृक्ष-श्रीशोके अभ्यन्तरसे उसके अन्तरालस्थ महान् आकाशको देखनेसे वह खण्ड खण्ड देखता है, किन्तु वास्तवमें आकाश खण्डित नहीं होता, उसी तरह ब्रह्म मायावच्छिन्न होने पर भी वास्तवमें अवच्छिन्न नहीं होते। वे स्वभावतः पूर्ण और मुक्तस्वरूप हैं तथा उसी रूपमें रहते हैं।

वैदान्तिके मतमें परब्रह्म निरुण, निर्विकार और चिन्मयस्वरूप है। जगत् यदि भ्रम हो है, तो उनको जो जगत्कर्ता, सर्वनियन्ता इत्यादि कहा गया है, वह भी मल्य नहीं, आरौपमात्र है। वास्तविक स्वरूप नहीं है। जीव वास्तविक परब्रह्मके सिवा और कुछ नहीं है, अयमात्मा, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि इत्यादि वाक्योंमें ब्रह्म ही एक तत्त्व है, तदतिरिक्त अन्य कोई भी तत्त्व नहीं है। विस्तृत विवरण अग्रे और प्रकृति शब्दमें देना।

चतुस्तत्त्व—तेजः अप्, पृथिवी और आत्मा। पञ्च-तत्त्व—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध। ष. तत्त्व—चित्ति, अप्, तेज, मरुत्, व्योम और परमात्मा।

सप्ततत्त्व—पञ्चमहाभूत, जीव और परमात्मा। नव-तत्त्व—पुरुष, प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, नभः वायु, ज्योति, अप् और चित्ति। एकादशतत्त्व—श्रोत्र, त्वक्, जिह्वा, चक्षु, नासिका, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ और मन।

त्रयोदशतत्त्व—नभः, वायु, ज्योति, अप्, चित्ति, श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, प्राण, जिह्वा, मन, जीवात्मा और परमात्मा। पौण्डशतत्त्व—पञ्चभूत, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, मन, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श। सप्तदशतत्त्व—पौण्डशतत्त्व और आत्मा।

शून्यवादी बौद्धिके मतसे शून्य ही एकमात्र जगत्का तत्त्वभाव अर्थात् जिसका अस्तित्व अनुभूत होता है, उसका शेषफल अभाव वा विनाश है। वह विनाश वस्तु-मात्रका स्वधर्म वा स्वभाव है। शून्यवादियोंका मनो-भाव यह है कि, वस्तुको आदिमें उत्पत्तिसे पहले शून्य वा अभाव ही तत्त्व है, शेषमें भी शून्य वा अभाव है। मध्यमें जो किञ्चित् स्थायित्व पाया जाता है, विचार कर देखनेसे वह भी अभाव वा शून्य है। शून्यतत्त्ववादियोंके मतसे, सत्यके बाद शून्यके सिवा और कुछ भी नहीं रहता। अतएव मरनेसे ही मुक्ति होती है। शून्य ही तत्त्व है, शून्य ही सार है, यह मूढ़बुद्धि कुतार्किकोंका प्रलाप है; शून्यवादी नास्तिकबुद्धि मोहवशतः ऐसी कल्पना करते हैं, जिसको प्रमाणित नहीं कर सकते।

चार्वाकमतसे चित्ति, अप्, तेज और मरुत्, ये चार तत्त्व हैं, ये ही जगत्के कारण हैं। इन चार भूतोंसे ही स्थावरजङ्गमात्मक परिदृश्यमान जगत्की उत्पत्ति हुई है।

एन चार तस्वीरें सिबा पीचवां तख् नहीं है। (चारोंपै)

हेतवाद्दो पूरक प्रश्नाचार्योक्त मतमे तत्त्व दो प्रकारका है—एक अतन्त्र और दूसरा चक्रेतन्त्र । राममुनीके मतमे चित्, चचित् और ईश्वर ये तीन तत्त्व हैं ।

पाद्यपतयाभ्यन्तर् मनुजोयाचार्य शैबोके मतमे पति, पद्म और पाय ये तीन तत्त्व हैं ।

ज्योतिषमें तत्त्वका विषय इस प्रकार लिखा है—तत्त्व पाँच प्रकारका है—पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश । इनके गुण—अग्नि, मोक्ष, मज्ज, लज्ज, मोम ये ५ पृथिवीके गुण हैं । शुद्ध, मोहित, मज्जा, मज्ज, मूत्र, ये ५ जलतत्त्वके गुण हैं । निर्द्रा, सुखा, तप्या, क्लान्ति, पाक्ष्ण, ये ५ अग्नि-तत्त्वके गुण हैं । धारण, चानन, जेपण, महोचन और प्रसारण ये ५ वायुतत्त्वके गुण हैं । काम, शोच, मोह, अज्ञा और शोभ ये आकाशतत्त्वके गुण हैं ।

आकाशमे वायुको वायुमे अग्निको, अग्निमे जलको और जलमे पृथिवीको उत्पत्ति हुई है । पृथिवी जलमे जल रक्षिमें और अग्नि वायुमें लय होता है । इन पाँच तस्वीरें मनुष्य के अङ्गि हैं । पृथिवीतत्त्वके ५ गुण हैं । जलके चार गुण हैं । अग्निके तीन गुण हैं । वायुके दो और आकाशमें एक गुण है । पृथिवी मन्वन्त्याव है । जल रम तन्त्याव, अग्नि उपपत्त्याव, वायु धर्म्यावमात्र और आकाश शब्दतन्त्याव है । ये पाँच पञ्चतत्त्वके गुण हैं ।

तस्वीरोंको प्रकृतियाँ—पृथिवीतत्त्व अठिन, जल शीतल, अग्नि तप्य वायु चर और सिर है ।

तस्वीरें स्थान—पृथ्वीतत्त्वका स्थान है नासिका उपरि-देह, अक्षरत्त्वका स्थान है मस्तिष्क, अग्नि-तत्त्वका स्थान है पित्त वायुतत्त्वका स्थान है नासिदेह और आकाश तत्त्वका स्थान है मध्यव ।

तस्वीरें द्वार—पृथ्वीतत्त्वका द्वार है मुख, जलतत्त्वका द्वार है शिष्ट, अग्निको द्वार है शिर, वायुके द्वार हैं नासिका दोनो बिन्दु और आकाशके द्वार हैं दोनो कान ।

तत्त्वद्वारोंको क्रियाएँ—पृथ्वीतत्त्वद्वारको क्रिया है शोभन जलद्वारको क्रिया है चमन, अग्निद्वारको क्रिया है अङ्गि वायु द्वारको क्रिया है चानन और आकाश द्वारको क्रिया है शब्द ।

तस्वीरें गुण—पृथ्वीतत्त्वका गुण है मय, जलका मोम,

अग्निका लज्जा, वायुका मन्तोप और आकाशका गुण है दुन्दु ।

एक एक तत्त्वमें पञ्चतत्त्वका उदयचक्र—

पृथ्वी	आकाश	वायु	अग्नि	जल
जल	पृथ्वी	आकाश	वायु	अग्नि
अग्नि	जल	पृथ्वी	आकाश	वायु
वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी	आकाश
आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी

बहुतोंको मान्य है कि, खास प्रयास दिन रात दोनों नासाग्रमें समानरूपसे रहना है । बिन्दु बह न्यून मात्र है । खास-प्रयास ऊपर माटाको तरह चन्द्रसूर्य और अन्त्याय प्रकाशदिशि चालनेके तथा त्रिदिशि चतुस्रार यथा नियम इत्यादि विज्ञान यथावत् यामश्चिन्वा दक्षिण नासाग्रमें प्रवृत्तता सूर्योदयके समय उचित होता है । पश्चि एक एक नासिकामें ठाई दण्ड (पंखेका एक बण्डा) तब स्थिर रह कर दोनो नासाग्रमें २४ घण्टा रहमित बुधा करता है ।

इस ठाई दण्ड समयमें जब किसी नासिकामें खास प्रयास रहता है उस समय पृथ्वी जल, अग्नि वायु और आकाश इन पाँच तत्त्वका उदय होता है । पृथ्वीतत्त्व उदय हो कर १० घण (२० मिनट) तब ठहरता है ।

इसो तरह जलतत्त्व ७० घण (१६ मिनट) अग्नि-तत्त्व ३० घण (१२ मिनट) वायुतत्त्व २० घण ( ८ मिनट) और आकाशतत्त्व १० घण ( ४ मिनट ), उदय हो कर यथा स्थिति करता है ।

प्रत्येक नासाग्रमें वायु बहनेके समय पञ्चतत्त्व का उदय बुधा करता है । पञ्चतत्त्वका निश्चरप निश्चनिश्चित उपायमें जाना जा सकता है । पश्चि तत्त्वको सत्त्व का निष्कण, दूसरे स्थानका मन्त्रा, तीसरी स्वरका चिह्न, चौथे वायुको गति, पाँचवें अर्ध के अङ्गि तत्त्वका उपदेश स्थान भातमें साधुदे उदयप्रवृत्त और घाटमें अतिहा लयव आनना चाहिये । प्रातः कालमें यज्ञ-पूर्वक हवा इत्यादि द्वार दोनो नासाग्र द्वारच कर तत्त्वदिशा प्राण करना चाहिये ।

पृथ्वीतत्त्वका लक्षण—नासाग्रमें मध्यस्थानमे अर्ध बिंदी पार्श्वमें न लय कर खास चक्षुगा । यह स्थान दादयाङ्ग पर्यन्त निश्चलता है । उस समय गलेमें



मंधुर रसकी उत्पत्ति और मनमें मिर्क पीतवर्णके विषयों को चिन्ता होगी। तिसी प्रकारके करने पर पीत वर्णका दर्शन होगा। उत्तम दर्पणमें निःश्वास त्यागने से चतुष्कोण और पीतवर्ण टिखलाड़े देगा। जानु देशमें इसको स्थिति टाईं टण्ड समयके भीतर ५० पल समय तक इस अवस्थामें स्थित रहेगा। इस प्रकारका कार्य होने पर उसको पृथ्वीतत्त्व समझे। रविग्रहके आकर्षणसे वास नासिकामें पृथ्वीतत्त्वका उदय होता है तथा दक्षिण नासिकाके बहनकालमें जब पृथ्वीतत्त्वका उदय होता है, तब बुधग्रह उसका अधिपति होता है। पृथ्वीतत्त्वके नक्षत्र—२३ धनिष्ठा, २७ रेवती, १८ ज्येष्ठा, १७ अमुराधा, २२ यवणा, अमिजित्, २१ उत्तरापादा।

जलतत्त्वका लक्षण—इसकी गति अधोगामी अर्थात् नासिकापुटके निम्नभागमें कूट कर श्वास चलेगा। श्वासका परिमाण १६ अङ्गुल होगा। उस समय गलेमें कषाय रसका अनुभव होता है, टपण पर निःश्वास त्यागनेसे वह अर्द्धचक्राकृत और मफेट देखेगा। हृदयमें श्वेतवर्ण उदित होगा। किन्तो प्रकरणके होने पर श्वेतवर्ण दृष्टिगोचर होगा। पाटान्तमें इसकी स्थिति भी टाईं टण्डके मध्य ४० पल समय होगी। इन कार्योंको जन तत्त्वका लक्षण समझना चाहिये। दक्षिण-नासिकाके बहनकालमें शनिग्रह और वास नासिकाके बहनकालमें चन्द्र इस तत्त्वका अधिपति होता है। इस तत्त्वके नक्षत्रों के नाम—२० पूर्वापादा, ८ अश्लेषा, १८ मूला, ६ आर्द्रा, ४ रोहिणी, २६ उत्तरभाद्रपद, २४ श्रतभिषा।

अग्नि तत्त्वका लक्षण—इसकी गति ऊर्ध्वगामी अर्थात् नासिकापुटके उपरिभागमें लग कर श्वास चलता है। श्वासका परिमाण ४ अङ्गुल है। गलेमें तिक्त रसका उदय होता है। दर्पण पर निःश्वास त्यागनेसे वह विकीर्णकार और नाल देखेगा। टाईं टण्डके मध्य ३० पल तक उसी प्रकारसे स्थिति रहेगी तथा मनमें रक्तवर्ण का उदय होगा और प्रकरण करनेसे रक्तवर्ण टिखलाड़े देगा। स्कन्धदेशमें इसकी स्थिति है। दक्षिण-नासिका बहनकालमें मङ्गल ग्रह और वास नासिका-बहनकालमें शुक्र ग्रह इसका अधिपति होता है। इस तत्त्वके नक्षत्रों के नाम—२ भरणी, ३ कृत्तिका, ८ पुष्या, १० मघा,

११ पूर्व फल्गुनी, २५ पूर्व भाद्रपद, १५ स्वाति।

वायुतत्त्वका लक्षण—इसमें श्वास तोयें ग्वासी अर्थात् नामापुटमें तिरकी तरहसे किनारोंमें लग कर चलता है। इस वायुका परिमाण ८ अङ्गुल है। उस समय गलेमें अल्प रसकी उत्पत्ति होती है दर्पणमें श्वास निक्षेप करनेसे वह गोलाकृति और श्वासवर्ण किम्बा नीलवर्ण देखता है। नाभिस्नानमें इसकी स्थिति है। दक्षिण नासिका-बहनके समय राहू ग्रह और वासनासिका बहनके समय बृहस्पति अधिपति होता है। इस तत्त्वमें ये नक्षत्र होते हैं—१६ विगाथा, १२ उत्तरकल्गुनी, १३ इस्ता, १४ चित्रा, ७ पुनर्वसु, १ अश्विनो, ५ मृगशिरा।

आकाशतत्त्वका लक्षण—इसमें नामापुटके सर्वस्थानसे वायु निकलती है। सर्वगामी होनेसे इसके परिमाणका निर्णय नहीं किया जा सकता। गलेमें कटु-रस का उदय होता है। दर्पण पर निःश्वास छोड़नेसे वह विन्दु विन्दु नाना वर्णोंका देखता है तथा मिश्रितवर्ण मालूम पड़ता है। इसकी स्थिति टाईं टण्डकालके भीतर १० पल मात्रकी है। यह तत्त्व सर्वकार्यमें निष्फल है। इसलिये इस तत्त्वके बहनकालमें कोई भी कार्य न करना चाहिये, करनेसे वह काम मित नहीं होता। पृथ्वीतत्त्वके अधिष्ठात्री देवता ब्रह्मा, जलतत्त्वके विष्णु, अग्नि तत्त्वके रुद्र, वायुतत्त्वके इन्द्र और आकाश तत्त्वके सदाशिव हैं।

पृथ्वी अथवा जलतत्त्वके समय प्रयत्न होनेसे कमका शुभ फल होता है। वृद्धितत्त्वके समय प्रयत्न होने पर शुभाशुभ मिश्रफल होता है। वायु वा आकाशतत्त्वके समय प्रयत्न होने पर हानि और मृत्यु कर फल होता है।

अग्नि तत्त्वके उदयकालमें मारणादि कार्य करना चाहिये। जलतत्त्व-बहनकालमें गान्तिकार्य, वायुतत्त्वमें उच्चाटन, पृथ्वीतत्त्वमें स्नायनादि कार्य और आकाशतत्त्वके समय कोई भी कार्य न करना चाहिये। पृथ्वीतत्त्वके समय स्थिरकार्य और जलतत्त्वके समय घर कार्य करें।

जलतत्त्व पश्चिम, दिशाका अधिपति है, पृथ्वीतत्त्व पूर्व-दिशाका, अग्नि तत्त्व दक्षिणदिशाका, वायुतत्त्व उत्तरदिशाका और आकाशतत्त्व ऊर्ध्व, पश्चिम और मध्यस्थानका तथा अग्नि, ईशान, वायु, नैऋत दिशाका अधिपति है।

पुस्तकका उदय और अस्तित्व ज्ञानकी उपाय—  
 ६ घंटे में ७ घंटा तक काम निमित्तमें बाहु चलेगी तब  
 समय पुस्तकका उदय हो कर १० घंटा (२० मिनट)  
 तक कामकी क्षिति होगी। इसकी बाद अस्तित्वका उदय  
 और ३० घंटा ( १६ मिनट ) तक कामकी क्षिति होगी,  
 फिर अस्तित्वका उदय और ३० घंटा ( १२ मिनट )  
 क्षिति, बाहुतत्वका उदय और २० घंटा ( ८ मिनट )  
 क्षिति, पाकायत्वका उदय और १० घंटा ( ६ मिनट )  
 कामकी क्षिति होगी। कामनामापुटमें बाहुकी क्षिति  
 काम तत्वका उदय और क्षितिका उदाहरण—

घंटा	मिनट	तत्व	पद
६	२०	पुस्तक	उदय
६	३६	काम	गम
६	४८	अस्ति	पुत्र
६	५६	बाहु	चन्द्र
०	०	पाकाय	०

दक्षिण नामपुटमें बाहुके क्षिति काममें तत्वका उदय—

घंटा	मिनट	तत्व	पद
०	२०	पुस्तक	रवि
०	३६	काम	पति
०	४८	अस्ति	मङ्गल
०	५६	बाहु	राहु
८	०	पाकाय	०

इस नियमके अनुसार क्षिप्त समय क्षिप्त तत्वका  
 उदय होगा, यह जाना जा सकता है।

क्षिप्तमापुटार—तत्व मात है—१ जोय, २ अजोय,  
 ३ पाखर, ४ अन्ध, ५ मरुत ६ निजरा और ७ मोक्ष।  
 इन मात तत्वके मध्य विपरीत धनधनवायुद्विजित  
 प्रकार ज्ञानमें मोक्षको प्राप्ति होती है।

विस्तृत विवरणके लिए निम्नलिखित ग्रन्थ ( भाग ८ पृष्ठ ४२१  
 ४२२ ) देखो।

तत्वज्ञ ( पं० वि० ) तत्व ज्ञानाति तत्व-ज्ञान । १ तत्व  
 ज्ञानो ज्ञानके ईश्वर-विषयका ज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म हो  
 ब्रह्मज्ञानो। यह अन्तर्निर्मित मनो बन्धु सुखमय है, ऐसा  
 ज्ञान कर बिनामें तत्व ( ब्रह्म ) को समझ लिया है,  
 यही तत्वज्ञ है। तत्वज्ञान प्राप्त करनेके लिए समाधि  
 पावश्यकता है। श्रीकृष्ण देवो।

२ दर्शनशास्त्रका ज्ञानो दर्शन ज्ञानवाचा दार्शनिक  
 तत्वज्ञान ( पं० वि० ) तत्वज्ञान ब्रह्मतत्वज्ञान ज्ञान ६-मत्।  
 ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान। नैवादिशिके मन्त्रे प्रमाथ प्रमिय  
 मध्य प्रयोजन, इष्टान्त, धनयत्र तर्क निर्णय याद,  
 अर्थ, विनयज्ञ, कृपाभास ज्ञान प्राप्ति, निवृत्तज्ञान, इन  
 दोषयुक्त पदार्थके ज्ञानको तत्वज्ञान कहते हैं। ( गौडगुरु १ )  
 इनका अर्थ ज्ञान सेनेसे जोष अर्थयत्र काम कर सकता  
 है। अथ तत्र इन दोषयुक्त पदार्थोंका तत्वज्ञान नहीं होगा  
 तब तब अर्थयत्र नहीं हो सकता। शायद वचा।

मंथन और पातकान्तरे मन्त्रे प्रकृति और पुत्रपत्नी  
 भेदज्ञान की तत्वज्ञान है। पुत्रपत्नी अथ निरन्तर दुःखमें  
 परिभूत हो कर प्रकृतिके तत्त्वानुक्रममें प्रकृत  
 होगा, तब तब अर्थयत्रो इस प्रकारके ज्ञानसे अर्थयत्र  
 निको चेष्टा करेगा कि—'सुख' दुःख और मोक्षमयी प्रकृति  
 को मायामें परिभूत नहीं होगा चाहिये मैं पुत्रप  
 नियुक्त निर्णय, अर्थदानमन्त्रय इ प्रकृतिके सुख अथ  
 तब विमोहित कर रहता जा, अथ सावधान होना उचित  
 है।" प्रकृति और पुत्रपत्नी इस प्रकारके भेदज्ञानका नाम  
 तत्वज्ञान है। प्रकृतिके सुख ( जोवाचा ) को ज्ञानो न  
 ज्ञानी एक बार तत्वज्ञान अर्थयत्र हो जाता है वा होता।  
 अब तब यह तत्वज्ञान न होगा तब तब प्रकृतिके पुत्रप  
 सुख न हो सकेगा। प्रकृति पुत्रपत्नी यह ज्ञान अर्थयत्र  
 करा कर निवृत्त हो जाती है। संकन देवो।

विद्यात्मतरे परिभूत हो कर यज्ञका अर्थयत्र नको  
 ज्ञान पाता। तन्मन्त्रे नर्पको तत्र ब्रह्ममें परिब्रह्ममाण  
 अगत्य अर्थयत्रोक्त करता है। अन्तर्निर्मित जो सुख दिव्यकार  
 देता है तब ब्रह्म है, किन्तु अर्थयत्राभिभूत जोष अन्तर्निर्मित  
 ब्रह्मको न देखकर तद, पद, मन्त्र आदि देखा करता है।  
 अब तब अर्थयत्राका माय न होता, तब तब जीवको  
 ब्रह्मका अर्थयत्र ज्ञानो तत्र मो मानून न होगा।

अर्थयत्राका माय होती हो अगत्य नको होवेया फिर  
 यह अर्थयत्र ही को ब्रह्म देखने लगीया। पक्षी अर्थयत्रो  
 विविध समझता था, अन्तर्निर्मित फिर यह ब्रह्म अर्थयत्रो  
 लगीया, 'तब अर्थयत्र' तुम-इमका भेद न रहिया। नमी  
 यह पदवाच्य हो आयी। यह प्रकारके ज्ञानको तत्वज्ञान  
 कहते हैं।

जीव ब्रह्मभावात्कार होते हो ब्रह्म हो जाता है, आत्मज्ञ संसारदुःखको अतिक्रम करता है, इत्यादि युक्ति-वाक्योंके प्रमाणसे और तदनुकूल युक्तियोंसे स्थिर होता है कि, तत्त्वज्ञानके सिवाँ जीवके लिए दुःखातीत होनेका और कोई उपाय नहीं है। ब्रह्म हो मैं हूँ, इत्याकार अमन्दिग्ध अनुभवका नाम है तत्त्वज्ञान, इस तत्त्वज्ञानके प्रधान उपाय अर्वा, मनन और निदिध्यामन उसके महा यकमन्त्र हैं। शास्त्रकथा सुननेसे जो अर्वा होता है ऐसा नहीं। गुरुके मुखसे शास्त्रोपदेश सुनना, हृदयमें उसके विचारित अर्थ धारण करना, मात्मात् अथवा परम्परासे ब्रह्म ही समस्तशास्त्रका तात्पर्य है, इस विषयमें विज्ञान, इन सबके एकत्र होने पर तब कहीं वह अर्वा कहलाता है। इनके बिना अर्वा नहीं होता। इसका एक लौकिक दृष्टान्त दिया जाता है।

वत्पना कोजिग्रे, आपके घरमें जा कर हमने आपके नोकरसे कहा, "एक ग्लास पानी लाओ।" परन्तु वह पानी नहीं लाया। पीछे हमने दुःखित हो कर आपसे कहा "आपके नोकरने हमारे बात नहीं सुनी," अब देखना चाहिये कि सचसुच ही क्या नोकरने हमारी बात नहीं सुनी या "एक ग्लास पानी ला" ये शब्द उसने कानमें प्रविष्ट हो नहीं हुए अथवा प्रविष्ट हुए थे, उसने सुना था पर ध्यान नहीं दिया था उसने अनु-सार कार्य नहीं किया।

अतएव ऊपरका सुनना सुनना नहीं है। मैकड़ों मनुष्य वेदान्त अध्ययन करते हैं, 'तत्त्वमसि' वाक्य भी सुनते हैं और उसका अर्थ भी आदरपूर्वक ग्रहण करते हैं, फिर भी उनकी तत्त्वज्ञानका उदय नहीं होता। संसारमें ऐसे भी बहुत मनुष्य हैं, जो बिना वेदान्त अध्ययन किये और 'तत्त्वमसि' वाक्यको बिना सुने ही तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं। शास्त्रों कहा गया है कि, कपिल, वामदेव आदि जन्मसे ही तत्त्वज्ञानी थे, अतएव अर्वाके निरति तत्त्वज्ञान वा तत्त्वज्ञान अर्वाका कार्य है, यह बात कैसे मानी जा सकती है? आचार्यदेव शङ्कर कहते हैं, इसके प्रत्युत्तरमें हमारा यह कहना है, कि चित्तको अनिर्मलता और जन्मोन्नीय पाप आदि प्रतिबन्धकोंसे अर्वा-फल तत्त्वज्ञान अर्वा रहता है। उसमें उसको

कारणताका अभाव नहीं होता। जैसे अग्नि-का संयोग होने पर भी मणिसन्धादि प्रतिबन्धकके कारण दाह-कार्य अर्वा रहता है, उसी प्रकार अर्वा-फल तत्त्वज्ञान नामा प्रतिबन्धकों द्वारा अर्वा रहता है। प्रतिबन्धकका अर्थ होता ही उमता उदय होता है। कण्डि आदिका ऐसा हो हुआ था। उनके पूर्व जन्मके अर्वामें इन जन्ममें प्रतिबन्धक शून्य हो कर तत्त्वज्ञान उत्पन्न किया था, इस लिए इस जन्ममें उनको अर्वा-मननादि नहीं करना पड़ा था। अतएव अर्वा ही तत्त्वज्ञानका प्रधान कारण है, मनन और निदिध्यामन उसके मन्त्रकारी हैं। 'तत्त्वमसि' इस महावाक्यके अर्वा जन्ममें, उसके अर्थमें जो अर्वा-मन और अमभव बोध आदि जो कार्य होते हैं, वे कार्य मनन द्वारा निवारित होते हैं। मननके बाद भी यदि स्पष्ट रूपमें 'मैं ब्रह्म हूँ' और कुछ नहीं, ऐसा अनुभव न हो, तो निदिध्यामनकी अर्वा रहना पड़ता है। निदिध्यामनमें सिद्धि प्राप्त कर लेनेसे जो यह अनुभव स्थिरतर होता है, अर्वा करनेसे तत्त्वज्ञान नहीं होता।

कोई कोई आचार्य करते हैं कि निदिध्यामन ही तत्त्वज्ञानका मूल कारण है, अर्वा और मनन उसके महायक मात्र हैं। अर्वा ब्रह्मभावका अर्वा-ज्ञानमें आरूढ़ होना ही तत्त्वज्ञान है। जैसे मरु-मनोचिकामें जलको भ्रान्ति होती है, उसी तरह ब्रह्ममें अर्वाको भ्रान्ति होती है। इसलिए अर्वा-प्रपञ्च मिथ्या और ब्रह्म ही सत्य है। पहले यह ज्ञान-अर्वा भी दृष्ट करना पड़ता है बादमें मैं ही ज्ञान हूँ और उससे अर्वा-मनन शरीर, मन और इन्द्रियाँ सभी भ्रान्तिविगीपका विलास है, इसनिर्वा में ही ज्ञान और ज्ञानका अर्वा-मनन हूँ, समस्त ही ब्रह्ममें है, रज्जु सर्पको भ्रान्ति यह मिथ्याज्ञान जब अर्वा-चास्य होता है, तब अर्वा-प्रपञ्च "अहं" अर्वात् "मैं" यह ज्ञान इन्द्रिय और मन आदिको त्याग कर ब्रह्ममें जा मिलता है। अर्वा-ज्ञानके ब्रह्मावगाही होते हो तत्त्वज्ञान हुआ है, ऐसे अर्वा-प्रपञ्च करने चाहिये। ऐसा तत्त्वज्ञान होते ही मोक्षको प्राप्ति होती है। तत्त्वज्ञान ही मोक्षके उद्धारका एकमात्र उपाय है, ऐसा तत्त्वज्ञान होने पर उसको आत्मज्ञान वा ब्रह्मज्ञान कहा जा सकता है। यह तत्त्वज्ञान सात्विक, राजसिक और तामसिक मनो-

व्यक्ति प्रतीत है, इसलिये सुच्यतीत हो है। जब जिसकी सुख दुःख समझते हो, वह प्रत्यक्षा उस सुख-दुःखके प्रतीत है। (वेदान्त०)

जैनमतानुसार—मान तत्त्वज्ञान यथाच ज्ञानपूर्वक जब शरीर व्याप्ता प्रपन्नको कर्मोक्ति बाह्य पदावधि मित्र समझ कर सम्प्रत्यक्ष, सम्प्रदान और सम्प्रत्यक्षपरितोष्य मीचमार्ग का प्रयत्न बन करतो है, तब उसके उस ज्ञानको तत्त्वज्ञान कहते हैं। वह तत्त्वज्ञान तीन प्रकारका होता है, १ उपयम प्रत्यक्ष २ आधिभौतिक्य सम्प्रदाय और ३ आधिब्रह्मण्य। इनमेंसे पहिलेके दो हो कर बूट हो जाती हैं, परन्तु त्रिषु जोषको आधिक्यमन्त्र वा प्रयत्न तत्त्वज्ञान हो जाता है, वह प्रयत्न हो मीचमार्ग करता है। विशेष विवरण जैनधर्म ग्रन्थ भाग ८ पृष्ठ ४०१-४०१) में है।

तत्त्वज्ञानार्थदर्शन (म० श्लो०) तत्त्वज्ञानस्य षड् ब्रह्मा स्मृति साक्षात्कारस्य धर्म तस्य दर्शन इत्यम्। तत्त्वज्ञानके लिये साक्षोचन और मीचको निर्वै तत्त्वज्ञानके साधन, मैं ही ब्रह्म इ एते साक्षात्कारका प्रयोजन प्रविद्या और कसका कार्य निश्चित दुःखनिवृत्तिरूप्य और परम धान्द्र्य प्राप्तिरूप्य मोक्ष है। उसको साक्षोचन को तत्त्वज्ञानार्थदर्शन है।

तत्त्वज्ञानी (म० सु०) तत्त्वस्य ज्ञानमप्यादि ज्ञान-इति। १ जिसके ब्रह्म, प्राणा और अदि आदिसे सम्प्रत्यक्षा यथाच ज्ञान हो। तत्त्वज्ञ देखो। २ दार्शनिक।

तत्त्वज्ञ (क० पाठ०) तत्त्व तदित्। यथाच कथये, बहुशुत, आध्यात्मिक।

तत्त्वज्ञा (घ० श्लो०) तत्त्व भाषे तत्त्व जिह्यां टाप। १ यथाच तत्त्व, आध्यात्मिकता। तत्त्व होनेका मात्र या शुच।

तत्त्वदर्शन (स० श्लो०) १ त्रिषु तत्त्व दर्शनं कियता है त्रिषुके तत्त्वज्ञान कथ्यत कृपा हो। (सु०) २ आध्यात्मिक सम्प्रदायके एक आध्यात्मिक नाम।

तत्त्वदर्शिता (म० श्लो०) तत्त्वदर्शिनो भावः तत्त्वदर्शिनं तत्त्व दर्शितां टाप। वह जो दर्शन याचक जानता हो तत्त्वज्ञता।

तत्त्वदर्शी (स० सु०) तत्त्वपश्यति तत्त्व इयं चिति। १ तत्त्वज्ञानो वह जो तत्त्व जानता हो। २ वैदिक अनुष्ठे एक पुत्रका नाम।

तत्त्वदोषण (म० श्लो०) तत्त्वज्ञानोक्त, तत्त्वज्ञानही प्राणा। तत्त्वदृष्टि (स० श्लो०) वह दृष्टि जो तत्त्वका ज्ञान प्राप्त करनेमें सहायक हो, ज्ञानसुख, विद्यादृष्टि।

तत्त्वनिरूपण (म० श्लो०) तत्त्वस्य निरूपण इत्यम्। १ स्वल्पवारक ईश्वर निरूपण, ब्रह्मनिरूपण। २ जैनमतानुसार—जोष, प्रज्ञीव, प्रास्वय कथ्य आदि मत्र तत्त्वों का निरूपण।

तत्त्वनिर्णय (म० सु०) तत्त्वस्य निर्णय इत्यम्। तत्त्वनिर्णय देखो।

तत्त्वव्यास (म० सु०) तत्त्वोऽपि विद्युत्पूजाइत्यादिप्रियं तत्त्वके प्रत्युसार विद्युत्पूजामें एक पदव्यास। इस व्यासके नियतमें तत्त्वकारमें इस प्रकार लिखा है। पहिले पूजा विधिसे अनुसार पूज दि कर विविधतामें लिये साधकका यह व्यास करना चाहिये।

“ब्रह्म परावैश्वर्यात्परे तत्त्वत्वात्परे नमः।” (ब्रह्मगीत०) पहिले नमः पराय और इसके बाद तत्त्वाम्नी नमः यह वाक्य प्रयोग करना पड़ेगा।

मं नम पराय जीवतत्त्वत्वात्परे नमः न नमः पराय प्राण-तत्त्वत्परे नमः एतद्दर्शनं सर्वप्रथमे।

ततो हृदयभये तत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

न नमः पराय अतीतत्त्वत्परे नमः कं नमः पराय अर्द्धकार-तत्त्वत्परे नमः पं नमः पराय अन्ततत्त्वत्परे नमः एतत्पुं इति।

मं नम पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः मत्पुं।

मं नमः पराय अर्द्ध तत्त्वत्परे नमः सुष्ठे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः इति।

मं नम पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नम सुष्ठे।

मं नम पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नम पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

मं नमः पराय अर्द्धतत्त्वत्परे नमः शिरोऽर्पे।

त्रे नमः पराय उपस्थत्वात्मने नमः लिंगे ।

इ नमः पराय आहागतत्वात्मने नमः मुखे ।

ष नमः पराय वायुतत्वात्मने नमः मुखे ।

गं नमः पराय तेजस्तत्वात्मने नमः ।

खं नमः पराय जलतत्वात्मने नमः लिंगे ।

कं नमः पराय पृथिवीतत्वात्मने नमः पादयोः ।

इत्याद्युनीकृततनुर्विदधीत तत्त्वान्वास मपूर्वकपरानरन-  
द्युपेतं । मूमपरायं च नदाह्वयमात्मने च न न्यन्तमुद्गरु तत्त्व-  
मनुक्रमेण ॥

सकलवपुषि जीवं प्राणमायोज्य मध्ये

न्यस्तुमतिमदेकारनश्च मनस्य ।

कमुखहृदयशुभ्रं चिन्वधोदाश्वपूर्वं

शुणगणमथकर्णादिस्थितं श्रोत्रपूर्वं ॥

यागाशीन्द्रियवर्गमात्मनि नमेदाकाशपूर्वं गणं ।

मूर्धात्वे हृदये शिरे चरणयो ह्येत्पुण्डरीकं हृदि ।

धं नमः पराय हस्तपुण्डरीकतत्वात्मने नमः हृदि ।

हं नमः पराय द्वादश कलाव्याप्तसूर्यमण्डलतत्वात्मने नमः हृदि ।

से नमः पराय षोडशकलाव्याप्तसोममण्डलतत्वात्मने नमः हृदि ।

रं नमः पराय द्वाकलाव्याप्तवज्रिप्रण्डलतत्वात्मने नमः हृदि ।

पं नमः पराय परमेष्ठितत्वात्मने वासुदेवाय नमः मस्तके ।

मं नमः पराय पुरुषतत्वात्मने संकर्षणाय नमः मुखे ।

उं नमः पराय विद्यतत्वात्मने श्रुण्म्याय नमः हृदि ।

धं नमः पराय त्रितितत्वात्मनेऽनिच्छाय नमः लिंगे ।

ल नमः पराय सर्वतत्वात्मने नारायणाय नमः पादयोः ।

ई नमः पराय कोपतत्वात्मने नृसिंहाय नमः सर्वगात्रे ।

एवं तत्त्वानि विन्वस्य प्राणायाम समाचरेत् । (तन्त्रद्वार)

इस प्रकार उक्त मन्त्र द्वारा सर्वाङ्गमें व्यास कर प्राणा-  
याम करना चाहिये । यथानियममें तत्त्वव्यास करने पर  
समस्त सिद्धि लाभ होती है और वह मनुष्य विष्णुको  
स्वरूपता प्राप्त करता है ।

तत्त्वप्रकाश ( सं० पु० ) तत्त्वस्य प्रकाशः, इ तत् । तत्त्व-  
दोषन, तत्त्वज्ञानको आभा ।

तत्त्वबोधिनो ( सं० स्त्रो० ) वह जिसके द्वारा तत्त्वज्ञान  
उत्पन्न होता है ।

भाव ( सं० पु० ) प्रकृति, स्वभाव ।

यो ( सं० त्रि० ) तत्त्वं भावते भाव स्थिति । यथार्थ-

वादी, जो स्पष्टरूपमें यथार्थ ज्ञान कहता है ।

तत्त्वमद्भुतम्—सन्ध्याज प्रदेगके अन्तर्गत कोचिन राज्यके  
चित्तूर जिलेका एक शहर । यह अक्षा० १०° ४१' ३०  
और देशा० ७६° ४२' पू०में अवस्थित है । यहाँ एक  
मुसफो अटानत है । इसका क्षेत्रफल प्रायः ५३ वर्ग मील  
और लीकमरखा प्रायः ६२२२ है ।

तत्त्वगमि ( सं० पु० ) तत्त्वके अनुसार जो देवताका  
बीज, वधूबीज ।

तत्त्वगद्यर—१७वीं शताब्दीके एक विख्यात तामिल गौ व  
स न्यायो । इन्होंने तामिल भाषामें बहुतसे ग्रन्थ लिखे हैं ।

तत्त्ववत् ( सं० त्रि० ) तत्त्वविद्यतेऽव्य तत्त्व मसु२ ।  
तत्त्वविशिष्ट, तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ ।

तत्त्वघाट ( सं० पु० ) दर्शनशास्त्रसम्बन्धी विचार ।

तत्त्वघाटो ( सं० पु० ) तत्त्वं वदति, वद-गिति । १ यथार्थ-  
वादी, वह जो स्पष्टरूपमें यथार्थ ज्ञान कहता है ।

२ वह जो तत्त्ववादका ज्ञाता और समर्थक है ।

तत्त्वविद् ( सं० पु० ) १ तत्त्ववेत्ता । २ परमेश्वर ।

तत्त्वविद्या ( सं० स्त्रो० ) दर्शनशास्त्र ।

तत्त्ववेत्ता—एक कविका नाम । ये १६२३ ई०में हुए थे ।

तत्त्ववेत्ता ( सं० पु० ) १ तत्त्वज्ञानो, वह जिसे तत्त्वका  
ज्ञान है । २ दार्शनिक, दर्शनशास्त्र का ज्ञाता, फिला-  
सफर ।

तत्त्वशास्त्र ( सं० पु० ) दर्शनशास्त्र ।

तत्त्वयज्ञान ( सं० स्त्रो० ) जिस वस्तुका जो स्वरूप है  
उसका उसी तरहसे अध्ययन करना । जैन शास्त्रानुसार  
सम्यग्दृष्टिके यह होता है ।

तत्त्वमञ्जय ( सं० पु० ) बौद्धशास्त्रका एक भेद ।

तत्त्वार्थ्य अध्ययन— ( सं० स्त्रो० ) तत्त्वप्रधान देखो ।

तत्त्वार्थ्य सूत्र ( सं० स्त्रो० ) जैनधर्मका मूलतत्त्व प्रकाशक  
सूत्रग्रन्थविशेष । यह ग्रन्थ संस्कृत भाषामें लिखा हुआ है

इसमें प्रायः समस्त ही जैनधर्मको ज्ञातव्य बातोंका  
उल्लेख है । आचार्य श्रीरामान्धामोने इसे बनाया है ।

दिगम्बर खेतांबर दोनों संप्रदायवाले कुछ परिवर्तनोंके  
साथ समानभावसे इसे मानते हैं । इसके सूत्रोंका पाठ करने-

से एक उपवास करनेका फल मिलता है । बहुतसे जैनो  
इसका प्रतिदिन पाठ करना अपना कर्तव्य समझते हैं ।

श्री सोम यदुना नदीं ज्ञानते वि भी इमको दूतमि सुनमि  
 मं पुष्प समझी है ।

इस पत्रमें दय पञ्चाय है । सममें पश्चिमी पञ्चाय  
 में नय प्रमाय पीर निषेधका बर्चन है । दूसरी पञ्चाय  
 में श्रीवर्षी शोषगमिक पादि ५३ भाग समझी इन ज्वावर  
 म मारी मुञ्च पादि मीट, म म्बुर्जन पादि जम्बुप्रकार  
 पीर योनि पादिबा विस्तृत बर्चन है । तीसरी पञ्चायमें  
 पयोशोच नरकाशाम पीर मञ्जुशोचके समुद्र दीप पर्यंत  
 नदी बादिबा बर्चन है । चौथीमें अन्न साक-मर्च्य ज्यो  
 तियन्न लक्ष्मि विमान, पात्र, शान प्रकृतिबा बर्चन है  
 पांचवीं पञ्चायमें ज्योत्, पुत्र, बर्च ( दृश्यविमेष ) पत्रमें  
 दृष्ट, पाश्या पीर ज्ञान इन दृष्टम्योका मं ज्ञानिक दृष्टने  
 बर्चन है । छठेमें श्रीवर्षी साय मन बचन कायबी जिया  
 मी ज्ञानावरणादि बर्चनका विन्न प्रकार पाचय (पागमन)  
 होता है, जोन ज्ञान करनेमें क्या फल होता है इत्यादि  
 बातोंका विस्तार है । सातवेंमें सुनि पीर व्यावहिक  
 पाचारका बर्चन है । आठवेंमें ज्ञानावरणादि बर्चनोंको  
 जिति, प्रकृति अनुभाग पीर प्रत्येकीका बचन है । नवमें  
 मं बर्चनोंको नष्ट करदेनेमें कारक सुनि बर्चनित अनुपेक्षा  
 परीपदजय ज्ञान पादिबा बर्चन है पीर दशवेंमें मोक्ष  
 तत्त्वका विमेष व्याख्यान है । अैवने जोन इत्यादि हैकः ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान्, ६ तत् ।  
 प्रकृत पत्रकाका पत्रबच ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनु-न या विनि । जो  
 तत्प्राप्तिसम्बन्धान् करता हो ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान् ६-तत् । निरी  
 चन, जीव दृष्टान, देखने ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान्, ६-तत् ।  
 तत्प्राप्तिसम्बन्धान्कारो, निरीचन, बच जो देखने करता हो ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान्, ६-तत् ।  
 तत्प्राप्तिसम्बन्धान्, बच जो विमेष विषयका तत्प्राप्तिसम्बन्ध  
 करता हो ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान् ६-तत् ।  
 तत्प्राप्तिसम्बन्ध, यथायं मोक्ष ।

तत्प्राप्तिसम्बन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्र अनुबन्धान्, ६-तत् । तत्प-  
 ज्ञान । दृष्टान् देखे ।

तत्पत्रो ( १० • श्री० ) तत्पत्र यत्तः बहुरी० । १ इन्द्र,  
 पत्नी, ब्रह्मपत्नी नामको कामः । २ बहुरी इष्ट विनिका  
 पिकु ।

तत्पत्र ( १० • श्री० ) तदिति पद, बर्चनं ० । १ विष्णु का  
 परम पद विर्वाच ।

"तत्पत्रमि रीरकेतो इत्यादिवाक्येषु तावम ब बर्चनमि"  
 ( धुष्ट ) इति रीरकेतो । बहुरी मय है बहुरी पासा एक  
 मात्र मय है इतिरिक्ते उन पासाको तत्पत्र समझना  
 चाहिये । "तत्पत्र इतिरे वेव तस्मि श्रीपुरने मयः ।" नांरक  
 वर ) २ पद्यतत्पत्र ।

तत्पत्रानुबन्धान् ( १० • श्री० ) तत्पत्रानु बहुरीवर्चनं, ६-तत् ।  
 विष्णुवर्चनं ब्रह्म ।

तत्पत्रवाच्य ( १० • श्री० ) तत्पत्रानु वाच्यः, ६-तत् । ब्रह्म  
 सुनिप्रतिपाद्य एकमात्र ब्रह्म जो तत्पत्रवाच्य है ।

तत्पत्रवाच्यार्थ ( १० • श्री० ) तत्पत्रवाच्यार्थ पत्रं ६-तत् ।  
 ब्रह्मके वाच्यार्थमें प्रज्ञानादिद्वन्द्व रूपमित्त मर्चनत्व  
 प्रकृति विमिश्रितैवेत्य पीर अनु पठितवैतन्य ये तीन  
 तत्पत्रवाच्यके पत्रं है ।

तत्पत्रार्थ ( १० • श्री० ) तत्पत्रानु तत्पत्रवाच्यार्थ पत्रं  
 ६-तत् । अन्वयार्थ परमाणा, पठितकर्ता । ब्रह्म जो एक  
 मात्र अनन्तका कारण है । ब्रह्म हेतो ।

तत्पत्रार्थ ( १० • श्री० ) तत्पत्रानु तत्पत्रवाच्यार्थ पत्रं  
 पत्रिका यत्त, बहुरी० । तत्पत्रवाच्य ब्रह्म ।

तत्पत्र ( १० • श्री० ) तत्पत्र परम ब्रह्मम यत्त, बहुरी० ।  
 १ तद्वत् लयके सम्बन्ध रत्तुमिवासा । २ तदानु, लयमें  
 क्या दुपा । तन्नात् पर ३ तत् । ३ नवद लयत जो  
 कोई काम करनेके निचे तैयार हो । ४ निमित्त, यत्त  
 बान् । ५ नियुक्त इत्त । ६ मन्त्र चतुर, जोयियार ।  
 ( पु० ) ७ एक निमित्तका तीमर्चो भाग ।

तत्पत्रता ( १० • श्री० ) तत्पत्रानु-पद्यः । १ पठितता,  
 सुनीदो । २ दृष्टता, नियुक्तता । ३ यत्त, पापह ।  
 ४ मन्त्रता जोयियारो ।

तत्पत्रार्थ ( १० • श्री० ) तत्पत्र परं पद्य, यत्त बहुरी० ।  
 १ तदानु, लयमें क्या दुपा । २ तत्पत्रानु, लयमें शिष्ट ।  
 तत्पत्रार्थ ( १० • श्री० ) १ समानविमेष एक प्रकारका  
 बर्चन । इस बर्चनमें तत्पत्रवाच्यी ब्रह्मनाता होती है

पत्रात् दी पदोंमें समास ही कर जो यह वनता है उसका लिङ्ग प्रकृति होता है। प्रधानतः यह समास ६ भागोंमें विभक्त है—द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी तत्पुरुष। द्वितीयादि विभक्तिके अन्तका उत्तर द्वितीयादि तत्पुरुष होता है। १। १४ देवी। २। रुद्र भेट, एक रुद्रका नाम। ३। ईश्वर, परमेश्वर। ४। मन्व्यपुराणके अनुसार एक कल्पका नाम।

तत्पूर्व (सं० त्रि०) म एव पूर्वः, कर्मधाः। मर्व प्रथम, मवसे पहला।

तत्प्रकार (सं० त्रि०) उसी तरह।

तत्प्रतिरूपक व्यवहार (सं० पु०) जेनिधेके मतसे एक अतिचार। यह विक्रीय शब्द पदार्थोंमें खोटे पदार्थोंको मिलान करनेसे होता है।

तत्फल (सं० पु०) तनोति तन-क्तिप् तत् फलं यस्य, बहुव्री० वा तत् विस्तृतं फलति फल-अच्। १। कुवलय, नोलकमल। २। कुठ नामक औषधविशेष, कूट नामको टवा। ३। चीर नामक सुगन्धि द्रव्य। ४। रोहिषदण (को०) तस्य फलं, ६-तत्। ५। उसका फल।

तत्र (सं० अव्य०) तत् तत्र। वहाँ, उस स्थान पर उस जगह।

तत्रक (हिं० पु०) यूरोप, अरब, फारससे ली कर पूर्वमें अफगानिस्तान तक हीनेवाला एक प्रकारका पेड़। यह कुछ कुछ अनार पेड़सा मिलता जुलता है। इसके पत्र लौमके पत्तोंकी तरह कठावटा और कुछ लचाई लिये होते हैं। इसके बीजको समाक कहते हैं और ये बाजारमें विक्रते हैं। इसकी दवामें इसके बीज बहुत उपयोगी हैं। एक प्रकारका रंग इसके पत्तोंसे बनाया जाता है। इसके डंठल और पत्ते चमड़े सिम्हानेके काममें आते हैं। हिन्दुस्तानमें चमड़ेके बड़े बड़े कारखानोंमें इसके पत्ते सिस्लीसे मंगाये जाते हैं।

तत्रत्य (सं० त्रि०) तत्र भवः अव्ययात् त्यप्। तत्स्थानस्य, उस स्थान पर उत्पन्न।

तत्रभवत् (सं० त्रि०) पूज्यार्थे तत्र भवान् नित्यसः वा सुप्सुपेति समासः। पूज्य, मान्य प्रयंसनोय अर्थे।

अत्रभवान् देखो।

तत्रस्य (सं० त्रि०) तत्र तिष्ठति स्या-क। तत्रस्थित, उस स्थानका, उस जगह पर।

तत्रापि (सं० अव्य०) तथापि, तीभी।

तत्संक्रान्त (सं० त्रि०) तस्य संक्रान्तः, ६-तत्। तदीय। उसका, उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

तत्सदृश (सं० त्रि०) तस्य सदृशः, ६-तत्। तथाविध, उसके समान।

तत्सम (सं० पु०) भाषामें व्यवहृत हीनेवाला संस्कृतका एक शब्द।

तत्समानन्तर (सं० अव्य०) तदनन्तर उसके बाद।

तत्साधुकारो (सं० त्रि०) तत्साधु यथा तथा करोति तत्साधु-ङ्गणिनि। जो उससे प्रति उत्तम व्यवहार करना ही।

तत्स्य (सं० त्रि०) तत्र तिष्ठति तत् स्या क। वहाँ पर अवस्थित।

तत्पत्यनासिपिक्त (सं० त्रि०) तस्य स्यने समिपिक्तः, ६ और ७-तत्। उसका प्रतिनिधि, जो दूसरीका स्थानापन्न हो कर काम करता हो।

तत्स्वरूप (सं० त्रि०) तस्य स्वरूपः, ६-तत्। उसके समान, उसीके जैसा।

तथा (सं० अव्य०) त्वेन प्रकारेण तद्-यान्। १। इसी तरह, ऐसे ही। २। और, व। ३। अभ्युपगम, निकट, समीप। (पु०) ४। पूर्व प्रतिपद्यत, पहनेको कहो हुई बात। ५। सत्य। ६। सोमा, हट। ७। निश्चय। ८। समा-नता।

तथाकार (सं० अव्य०) किसो प्रकारसे करके।

तथागत (सं० पु०) तथा मत्वं गतं ज्ञानं यस्य, बहुव्री० यथा न पुनरावृत्तिर्भवति तथा तेन प्रकारेण गतः। १। गीतमनुच, सुगत। पूर्व पूर्व वृद्धोंकी तरह आगमन हुआ था, इसलिये इनका नाम तथागत हुआ। बुद्ध देखो। (त्रि०) तथा तेन प्रकारेण आगतः, ३-तत्। २। उसी प्रकार एवं उसी रूपमें आये हुए। (भारत ३७७५)

तथागतर्भ (सं० पु०) बौद्धके एक शास्त्रका नाम।

तथागतगुणज्ञानचित्यविषयावतारनिदर्श (सं० पु०) बौद्धके एक शास्त्रका नाम।

तथागतशुभ (सं० पु०) एक बौद्ध राजा।

तथागतगुह्यक (सं० पु०) नेपाली बौद्धोंके ८ प्रधान शास्त्रोंमेंसे एक।

तथागतभद्र—नागार्जुनके एक प्रधान शिष्य।

तपागुण (च० लि०) तद्गुणसम्बन्ध, तेषां चैव गुण  
 वात् ।  
 तत्राच (च० पञ्च०) तत्रा च च, च, इति, इत्थ० । तत्रापि  
 तो मी ।  
 तत्राता (स० लो०) तत्रा माये तन् डाप् । तत्रात्, तत्र  
 तरत् ।  
 तत्रात् (च० लो०) तत्रा माये त् । तत्रामूलत् तत्र  
 तरत् ।  
 तत्रापि (स० पञ्च०) तत्रा च अपि च, इत्थ० । तत्रापि,  
 तो मी, तिष्ठ पर मो, तत्र मी ।  
 तत्रामात्रो (स० लि०) तत्कामावसम्बन्ध, तस्यो व्यवाचका ।  
 तत्रामूल (स० लि०) तत्र प्रकारेण भूतः भू-अकारि च ।  
 तस्यै प्रकारेण सम्बन्ध, तस्यो तरत्वे मया कृपा ।  
 तत्रासुच (स० लि०) तस्यो चोर सुच सुमा कर । तस्यो  
 चोर सु च इत्थं कर ।  
 तत्रारत्न (च० पु०) तस्मिन् रात्रौ रात्रं टच् । सुह ।  
 तत्रारूप (स० लि०) तदनुपपत्त्य, तस्यो प्रकार ।  
 तत्रारूप्यो—तत्रारुप्ये ।  
 तत्रारिच (स० लि०) तत्रा रिचा यत्न, बहुव्री० । तत्रारु  
 तस्यै प्रकार ।  
 तत्रारिचये (स० लि०) तस्यो प्रकार कर्तव्य को तस्यो  
 तरत्त्व क्रिया जाय ।  
 तत्रारत्न (स० लि०) तस्यो तरत्त्व प्रतपरायत्न ।  
 तत्रारु (पञ्च०) त्रैसाक्षी हो ।  
 तत्रारु (स० लि०) तस्यो तरत्त्व तत्रारुच क्रिया कृपा ।  
 तत्रारु (स० पञ्च०) तत्रा च इत्थं च, इत्थ० । १ निर्दोषं,  
 दिग्बलानिको विद्या । २ प्रसिद्ध, ज्ञाति । ३ समर्थन ।  
 तत्रैव (स० पञ्च०) तत्राच एव च, इत्थ० । तत्रैव तस्यै  
 तरत्त्व, त्रैसाक्षी ।  
 तत्रैवच (स० पञ्च०) तत्रा च एव च च, इत्थ० । तस्यो  
 प्रकारेण चैव ।  
 तत्रैव (स० लो०) तत्रा सात्तु तत्रा दत् । (उत्तर पात्रः) । १  
 १११८) १ तत्रैव, तत्राच ता, सचाई । (लि०) २ तत्रैव ।  
 तत्रैवज्ञान (स० लो०) तत्रैवज्ञान, ३ तत् । तत्रैव  
 ज्ञान, प्रकृत ज्ञान । उत्तरपात्र देवी ।  
 तत्रैवज्ञान (च० पु०) तत्रैवज्ञान ३ तत् । तत्रैवज्ञान,  
 प्रकृत ज्ञान । इत्थं देवी ।

तत्रैवज्ञानो (स० लि०) तत्रैव भावतं माय-निमित्त । तत्रैव  
 वादो, तत्रैव चोर तस्यो वात तत्रैवज्ञाना ।  
 तत्रैवज्ञानी (स० लि०) तत्रैव वदति वद चिन्ति ।  
 तत्रैवज्ञानी देवी ।  
 तत्रैवज्ञानान (स० लो०) तत्रैवज्ञान चतुस्रान्, ३ तत् ।  
 प्रकृत तत्रैवज्ञाना चतुस्रान् ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत् चार्थि तिष्ठ । १ बुद्धिश्च परमम  
 विमेष, वद । इत्थं प्रयोग योगिक शब्दोच्चे चारुचर्म  
 होता है । तत् देवी ।  
 तत्रैव (स० पु०) तत्रैव च यः, ३ तत् । तत्रैव भागं यः  
 द्विधा ।  
 तत्रैवनिष्ठ (स० लि०) तस्य प्रतिनिष्ठ, ३ तत् । तत्रैव  
 प्रतिनिष्ठ, तत्रैव निष्ठा ।  
 तत्रैवनिष्ठ (स० लि०) तत्रैवनिष्ठ, तत्रैव निष्ठा ।  
 तत्रैव (स० लि०) १ तस्यो प्रकारेण सम्यक् ज्ञाना ।  
 (पु० लो०) २ तत्रैवज्ञान, सम्यक् ।  
 तत्रैवनिष्ठ (स० लो०) तत्रैव निष्ठ, तत्रैव निष्ठा ।  
 तत्रैवनिष्ठ (स० लो०) तत्रैव निष्ठ, तत्रैव निष्ठा । तत्रैव  
 तत्रैव निष्ठ ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत्रैव तत्रैव यत्न, बहुव्री० । तत्रैव  
 तरत्त्व जायत तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैव  
 तत्रैवज्ञाने मो ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत्रैव तत्रैव यत्न, बहुव्री० । तत्रैव  
 तत्रैव जायत तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैव  
 तत्रैवज्ञाने मो ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत्रैव तत्रैव यत्न, बहुव्री० । तत्रैव  
 तत्रैव जायत तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैव  
 तत्रैवज्ञाने मो ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत्रैव तत्रैव यत्न, बहुव्री० । तत्रैव  
 तत्रैव जायत तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैव  
 तत्रैवज्ञाने मो ।  
 तत्रैव (स० लि०) तत्रैव तत्रैव यत्न, बहुव्री० । तत्रैव  
 तत्रैव जायत तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैवज्ञाने तत्रैव  
 तत्रैवज्ञाने मो ।



वस्या और प्रमाणवाधितार्थ प्रसङ्ग । तर्क देखो ।  
 तदपि ( सं० अव्य० ) तथापि, नौभो ।  
 तदवीर ( अ० स्त्री० ) युक्ति उपाय, तरकीब ।  
 तदभिन्न ( सं० जि० ) तस्मादभिन्नः, ५ तत् । तत्स्वरूप  
 उभोके समान, उभोके जैसा ।  
 तदर्थ ( सं० त्रि० ) १ तत्प्रयोजनक, उभके लिये । २  
 तदभिव्यय । ३ तत्प्रयोजन, तन्निमित्त, तज्जन्य ।  
 तदर्पण ( सं० क्लो० ) तस्य तस्मिन् निजिप्रत्यय अर्पणं  
 ६-तत् । उभ वस्तुका प्रत्यर्पण, उस पदार्थका देना ।  
 तदर्थ ( सं० त्रि० ) तद्योग्य, उसके लिये ।  
 तदवधि ( सं० क्लो० ) सं० अवधि यस्मिन् तत्, बहुव्री० ।  
 तदवस्थ ( सं० त्रि० ) सा अवस्था यस्य बहुव्री० । जो  
 उभो अवस्थामें हो, जिसकी पहली अवस्था कुछ भो नहीं  
 घटो हो ।  
 तदा ( सं० अव्य० ) तस्मिन् काले तद्-दा । उस समय,  
 तिस समय, तब ।  
 तदाकार ( सं० त्रि० ) १ तद्रूप, उमी आकारका, वैसा  
 ही । २ तस्यय, लवलीन, लगा हुआ ।  
 तदात्मा ( सं० पु० ) १ तत्स्वरूप, उसके ऐसा । २ तद्विल,  
 उभोके मध्य ।  
 तदात्व ( सं० क्लो० ) तदा इत्यस्य भावः तदात्व ।  
 तत्काल, वर्तमान समय ।  
 तदानीं ( अ० अव्य० ) तस्मिन् काले तद्-दानो ।  
 तदो दा च । पा ६।३।१। उभो समय, तब ।  
 तदानोन्तन ( सं० त्रि० ) तत्र भव इति द्युन्-ल्युट्-च ।  
 तदातन, उभ समयका ।  
 तदाप्रवृत्ति ( सं० त्रि० ) तदा तत्कालः प्रवृत्तिरादित्यस्य,  
 बहुव्री० । उभो समयके ।  
 तदामुक्त ( सं० त्रि० ) तदा मुक्तं यस्य बहुव्री० ।  
 आरंभ, शुरू ।  
 तदायुक्तक ( सं० पु० ) तस्मिन् आयुक्तः, ७-तत् स्वार्षि-  
 कन् । राजपरिषद् विशेष, राजाकी एक सभा ।  
 तदावक ( अ० पु० ) १ किमो खोई हुई चीज अथवा  
 अपराधोका अव्ययण । २ प्रवन्ध वन्दोवस्तु, पेशवन्दो ।  
 ३ दण्ड, सजा ।  
 तदित् ( सं० त्रि० ) तदेति इत् क्तिप्, तुक् । तद्-  
 निवचक स्तोत्र ।

तदित्यर्थ ( सं० त्रि० ) तदित् तदेवार्थः प्रयोजनं यस्य,  
 बहुव्री० । तद्विषयक स्तोत्र, उभ संवन्धो मुक्ति । जिसका  
 प्रयोजन है । "बहुव्री० तदित्दर्पा इन्द्र" (ऋ० ८।१।१६)  
 'वद्विषयक स्तोत्र तदित् तदेवार्थः प्रयोजनं येषां तादृशा' (भाष्य)  
 तदोय ( सं० त्रि० ) १ तत्स्वरूपो, उसका, उससे सम्बन्ध  
 रखनेवाला ।  
 तदुपरान्त ( सं० अव्य० ) उभके पीछे, उभके बाद ।  
 तदुपरि ( सं० त्रि० ) तत् उपरि । उभके ऊपर ।  
 तदुक्त ( सं० त्रि० ) स एव एकः प्रधानं यस्य, बहुव्री० ।  
 नत्स्वरूप, उसकी मध्य ।  
 तदेकात्मा ( सं० त्रि० ) स एव एकः आत्मा आत्मस्वरूपः  
 यस्य, बहुव्री० । उभोके जैसा, उभोके समान ।  
 तदोक्तम ( सं० त्रि० ) वदो म्यान वहां ।  
 तदोजन् ( सं० त्रि० ) मध्ववनस्वरूप, उभोके जैसा  
 चलवान् ।  
 तद्गज ( सं० त्रि० ) तत् गजः, २-तत् । १ तदाम्ना,  
 उभके अन्तर्गत । २ उभसे सम्बन्ध रखनेवाला ।  
 तद्गुण ( सं० त्रि० ) तस्य गुण इव गुणो ऽस्व, बहुव्री० ।  
 १ तत्स्य गुणयुक्त, उभोके समान गुणवान् । २ अर्था-  
 लङ्कारविशेष, एक अर्थालङ्कार । जहाँ अपना गुण त्याग  
 करके समीपवर्ती किमो दूरे उत्तम पदार्थका गुण  
 ग्रहण किया जाता है, वहाँ यह अलङ्कार हुआ करता  
 है । ( पु० ) तस्य गुणः, ६-तत् । ३ उसका गुण । ४  
 प्रधान विशेषण ।  
 तद्गुण संविज्ञान ( सं० पु० ) तत्र बहुव्री० ही गुणस्य गुणी-  
 भूतस्य विशेषणस्य संविज्ञानं मस्यकृत्तानं यत्, बहुव्री० ।  
 समासविशेष, एक समास । बहुव्री० कि समासके दो भेद  
 हैं—तद्गुणसंविज्ञान और अतद्गुणसंविज्ञान । बहुव्री० कि  
 समास करने पर समान्यमान पदाथ जहाँ समासवाचामें  
 रहता है, उसकी तद्गुणसंविज्ञान कहते हैं । यथा—  
 'श्रीणि लोचनानि यस्य स त्रिलोचनः शिव ।' यहाँ पर समास  
 वाच्यमें अर्थात् शिवके तीन नेत्र हैं ऐसा जान कर इसका  
 नाम तद्गुणसंविज्ञान पडा है । समास देखो ।  
 तद्दण्ड ( सं० त्रि० ) तद्दण्डं, कर्मधा० । वह दण्ड, वह  
 काल, तब ।  
 तद्दिन ( सं० क्लो० ) तत् दिनं, कर्मधा० । वह दिन, उस बत्त ।

तद्विभक्तम् (स० च०) १ दिन मन्त्र टिनमि । २ प्रति-  
दिन, रोज रोज ।

तद्वन (स० वि०) तत्रैव स्थितं क्षेत्रं जलं यन्म  
बहुप्रो० । १ लक्षणं, वस्तुम । (श्री०) तत् जलं, जलमंथा० ।  
२ यत्र जलं या दौघत । तत्र जलं १ तत् । ३ उपस्था  
जलं ।

तद्वनं (स० वि०) न चर्मं यन्म, बहुप्रो० । तद्वान्मूत्रं चर्मं  
बुद्ध, लसीके एसा धर्माणा ।

तद्वित (स० वि०) तन्मैरहितं इ-तत् । १ तस्मिन्  
भक्त्याः । (पु० श्लो०) २ व्याकरणोक्तं प्रत्ययविशेष, व्याक  
रुषमि एव प्रकारेणा प्रत्यय । इने स प्राप्ते चत्तमिं मया  
कर मन्मदं बनानीं हैं । यह प्रत्यय वीथ प्रकारेने मन्मदं बना  
निचे चत्तमिं पाता है । यथा—यत्प्रवाचकं चत्तं वाचकं,  
भाववाचकं, कर्मवाचकं धोर गुणवाचकं । यत्प्रवाचकं  
यह है जिसमें प्रत्ययता या अनुवायिकात्वा बोध हो ।  
इसमें या तो स प्राप्ते परसे मरको हवि कर दी जानी  
है प्रत्यय लसके चत्तमिं 'ई' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है ।  
चत्तं वाचकं यह है जिसमें किसी शिवाये कत्ता जोनीका  
बोध हो । इसमें प्रायाधाना या वारा प्रत्यय समाया  
जाता है । भाववाचकं मन है जिसमें भावका बोध हो ।  
इसमें चाट्ट, ई, वि, ता, पल पा बट, चट चादि प्रत्यय  
लगते हैं । कर्मवाचकं यह है जिसमें किसी प्रकारको  
गुणता या कृतता पादिवा बोध हो । इसमें स प्राप्ते  
चत्तमिं, च, ई का प्राप्ति समाये जाती है धोर या 'ई'मि  
बदल दिया जाता है । गुणवाचकं यह है जिसमें गुणका  
बोध हो । इसमें स प्राप्ते चत्तमिं पा, इक, इत, ई, ईसा,  
यना, लू, बर्त, बान, दायक, चारक पादि प्रत्यय लगाने  
जाते हैं ।

१ इने तरुके प्रत्यय मया कर बना हुआ मन्मद ।

तद्वस (स० पु०) तस्मिन् लस्ये एव चर्चं मन्मद, बहुप्रो० ।  
वाचकविशेष, एक प्रकारका वाच ।

तद्वन (स० पु०) स स्मृतके मन्मदका प्रत्यय मन्मद । जेने  
उपस्था जाय ।

तद्वन (स० पु०) तस्य भाव, १ तत् । १ उपस्था यथा  
धारकं चर्म । यथा चत्तमिं चट्टक, गोमिं गोत्व । तद्विभक्तं  
भावा ०-तत् । २ विपयको चिंता ।

तद्वान्मूत्र (स० वि०) तद्वान्मूत्रं पायक, २-तत् । तद्वान्मूत्रं,  
जो लसो चर्चस्त्रामिं हो, त्रिसशो पदको चर्चस्त्रा कुत्र लो  
बनलो न हो ।

तद्विच (स० वि०) तद्वान्मूत्रं विच, १ तत् । तद्वान्मूत्रं,  
उपस्था विचा ।

तद्वयि (स० च०) तद्वयि, लोमो ।

तद्वान्मूत्र (स० पु०) तस्य रात्रा, १ तत् । उपस्था रात्रा ।

तद्वान्मूत्र (स० वि०) तद्वान्मूत्रं चर्मं पा० । मन्मदं, ममानं,  
बंसा हो ।

तद्वान्मूत्र (स० पु०) माह्वन्म, ममानता ।

तद्वान्मूत्र (स० च०) सेन तुष्य वा तदा मुद्रा सा चित्तं  
क्षिप्या इत्यर्थे बत । १ तत्प्रत्यय क्षिप्या-बुद्ध, लसोके ममानं  
जिसको क्षिप्या हो । २ तत्प्रत्यय लसोके लीला, श्लोका  
खीं । (वि०) मन्मद प्रत्ययें मनुय मन्मदं । ३ तत्प्रत्यय,  
लसोकी भाई ।

तद्वान्मूत्र (स० पु०) तद्वतो भावा तद्वान्मूत्रं-टाय । तद्वि  
गिट, मन्मदता, ममानता ।

तद्वान्मूत्र (स० वि०) तद्वान्मूत्रं ।

तद्वान्मूत्र-उद्गार हैको ।

तद्वान्मूत्र (स० वि०) तद्वान्मूत्रं ।

तद्विच (स० वि०) मा विचा प्रकारो यन्म बहुप्रो० ।  
तद्वान्मूत्र लसो तरु ।

तद्वान्मूत्र (स० वि०) तद्वान्मूत्रं चर्चस्त्रामिं, १ तत् ।  
तद्विच लसके विचा

तद्वान्मूत्र (स० पु०) १ जन । २ मन्मदं ममानं ।

तद्वान्मूत्र (वि० पु०) १ शरीर, देह । २ लसोको मूत्रं मन्मदं,  
मम, योनि ।

तद्वान्मूत्र (स० पु०) हैतमन्म ।

तद्वान्मूत्र (वि० पु०) यन्म रागिनीका नाम । इसे लोहे  
लोहे मन्मदरायो रागिनीको मानते हैं ।

तद्वान्मूत्र-पक्षोद्गार जिसको चर्चस्त्रामिं तद्विचोत्तका चर्चस्त्रामिं  
प्रधान एक पाय । यह यथा २८ ४ ल-धोर दिशा-  
८० ० पु० पर चर्चस्त्रामिंको तद्विचोत्तके लोहा लोहेके  
निष्कट बना हुआ है । लोहास एसा चर्चस्त्रामिं १८२ है ।  
यह निष्कटके व्यापारिकाका प्रधान व्यापारकाय है ।  
मूत्रानशानो चर्चा लुधाना धोर कर्म ला कर बेचते हैं धोर  
चर्चस्त्रामिंको लोहेके लोहासे है ।

तनकीर ( अ० स्त्री० ) अन्वेषण, जाँच, खोज । २ न्याया-  
लयमें उपस्थित अभियोगमेंसे विवादास्पद बातोंको दृष्ट  
निकालना ।

तनखाह ( फा० स्त्री० ) वेतन, तलब ।

तनखाहदार ( फा० पु० ) वेतनभोगी, तलब पानेवाला  
नौकर ।

तनखाह ( हिं० स्त्री० ) तनखाह देना ।

तनखेव ( फा० स्त्री० ) एक प्रकारका सूक्ष्म और सुन्दर  
सूती कपड़ा ।

तनजुल ( अ० पु० ) अवनति, घटाव ।

तनजुली ( फा० स्त्री० ) अवनति, घटाव ।

तनतना ( हिं० पु० ) १ रोषदात्र, दुःखमत । २ क्रोध, गुस्सा ।

तनतनाना ( हिं० क्रि० ) १ रोषदात्र दिखाना । २ क्रोध  
करना ।

तनदिही ( हिं० स्त्री० ) तरेही देना ।

तनधर ( हिं० पु० ) तनुधारी देना ।

तनना ( हिं० क्रि० ) १ झटके, खिंचाव वा खुश्कीसे  
किसी पदार्थका विस्तार बढ़ना । २ जोरसे खिंचना ।  
३ अकह कर खड़ा होना । ४ अभिमानसे ऐंठना ।

तनपात ( हिं० पु० ) तनुपात देखो ।

तनपोषक ( हिं० वि० ) स्वार्थी, खुदगर्जो ।

तनवाल ( म० पु० ) १ जनपदविशेष, एक प्राचीन देशका  
नाम । २ उस देशके निवासी ।

तनमय ( हिं० वि० ) तन्मय देखो ।

तनमानसा ( स० स्त्री० ) ज्ञानकी सात भूमिकाओंमें  
तोसरी भूमिका ।

तनय ( स० पु० ) तनोति विस्तारयति कुलं तन कथन् ।  
वलिपलितमिन्धु. कथन् । उण्. १११ । १ पुत्र, बेटा । २  
जन्मलग्नसे पौत्रवा स्थान ।

तनय—चन्द्रवंशी राजा कुशके पुत्र ।

तनया ( स० स्त्री० ) तनय-टाप् । १ कन्या, बेटा । २ चक्र-  
कुल्यालता, पिठवन सता । ३ दृतकुमारो, धीकुवार,  
ग्वारपाठा । ४ कण्णतुलसी ।

तनयित्, ( स० पु० ) तन शब्दे तन-इत्, ष्टोदरा० भाषुः ।  
१ अशनि, विजली, वज्र । २ मेघ, बादल ।

तनराग ( हिं० पु० ) तनुराग देखो ।

तनवाना—ताननीका काम दूरमेंसे कराना, तनाना ।

तनवाल ( हिं० पु० ) वेग्योंको एक जाति ।

तनस् ( स० पु० ) तनोति वंश तन-असुन् । षोढाटि ।

तनसन ( हिं० पु० ) स्फटिक, चिमेर ।

तनमीख ( अ० स्त्री० ) अन्धोकार करना, रद्द करना ।

तनसुख ( हिं० पु० ) एक प्रकारका उमदा फूलदार  
कपड़ा ।

तनहा ( फा० वि० ) एकाकी, अंगला ।

तनहाई ( फा० स्त्री० ) १ तनहा होनेकी दशा । =  
एकांत, वह स्थान जहाँ घोर कोई न हो ।

तना ( स० स्त्री० ) तन-अच् टप् । धन, दोलत ।

तना ( फा० पु० ) १ पेड़का धड़, मंडन । ( क्रि० वि० ।  
२ और, तरफ ।

तनाई ( हिं० स्त्री० ) तनाव देना ।

तनाजा ( अ० पु० ) १ प्रपंच, भागड़ा, टंटा । २ शत्रुता,  
वैर ।

तनाटि ( स० पु० ) धातुपाठोक्त धातुगणविशेष ।

तनाना ( हिं० क्रि० ) ताननेके काममें किसी दूसरेको  
लगाना ।

तनाव ( हिं० पु० ) १ तननेका भव या क्रिया । २  
धीवीकी कपड़े सुवानेकी रस्मी । ३ रज्जु, रस्सी, डोरी ।

तनावल—उत्तर-पश्चिम सोमनाथ प्रदेशके अत्यंत  
हजार जिलाके अधीन एक पर्वत जनस्थान है । यह

अक्षां ३४° १५' तथा ३४° २३' उ० और देशां ७२°  
५२' तथा ७३° १०' पू०में सिन्धु नदीके पूर्व किनारे पर

अवस्थित है । उत्तर-पश्चिमकी ओर मिरान नदी बहती  
है । अकरके शासनकालमें गुप्तकायके निवासी

पठानोंने तनावलकी जीता था और अब भी इस प्रदेशके  
किसी किसी भागमें अफगानोंका निवासस्थान देखा

जाता है । दुर्गानियोंके समयमें यह कुछ दिनोंके लिये  
नाममात्र ही काश्मीरके अधीन था । तनावलके

निवासी ही इस प्रदेशके प्रकृत शासनकर्त्ता हैं । ये  
सुगनोंकी शाखान्तर्भूत हैं । तनावल-निवासी पुनाल

और हिन्दवाल—दो श्रेणीमें विभक्त हैं तथा वर्त्तमान  
तनावल स्टेट हिन्दवाल तनावलियोंके वासस्थान और

उनके अधिकृत स्थानोंसे गठित है ।

ईम प्रदेयका क्षेत्रधर्म लगभग २०४ वर्ग मील तथा जनसंख्या मात्र ३१६२२ है। इससे उत्तरमें लख पर्वत, पश्चिममें मित्रु नद दक्षिणमें हरिपुर तथा चकोटाकाट तहसील और पूब में ज्वाल त्रिसाका मानवेर तहसील अवस्थित है। इस प्रदेशका बोड़ा भाग चम्पारने ग्रामन कर्ता नवाब मर महशुद पञ्चरम खाँ है० एम० पार्सै महोदयके पोर घोडा भाग पुन्नारके खाँ खाता महशुद खाँके पयोल है। ये दोनों हिन्दुवान स प्रदायके तनावको हैं। महशुद पञ्चरम खाँ १८६८ ईस्वीमें नवाबको लपाबि पाई थी। सिपाही-विद्रोहके समयमें इनके पिताने पंथेजोंका वधैट लपजार बिबा बा पोर खँनेनी मी १८६८ ई०में ज्वालारिबाबाके समय पञ्चरम माहम तथा प्रयाङ्क मञ्जिका परिषय दिया बा। इयो निये पथेजोंने इखँ नवाबको लपाबि दी। इखँ १८०१ ई०में मी० एम० पार्सै और १८८८ ई०में म० मो० एम० पार्सैको लपाबि मित्री इखँने ज्वाल बिनाके पन्नागत हरिपुर तहसीलका ८००० बी का मोर लपमोल कर रहे हैं।

- तनिङ्क (हि० वि०) १ बोड़ा, वम । २ छोटा ।  
 तनिङ्का (स० खी०) तन्धते धातुगामनिकाङ्खाय बध्दति-  
 न्गया करके इत् सङ्गा। कन् खाति यत् इत् । बन्धन  
 रच्छु, बोई बोन बांधो जनिबो रथो ।  
 तनिमन् (स० पु०) तनोर्माका तनु-इमनिङ्क । १ तनुज,  
 ज्यमता, दुर्बलता, पुञ्जसापन । २ बन्धन, उदररोज  
 बीबा ।  
 तनिबा (हि० खी०) १ न मोट, बँगोटी । २ लज्जनी,  
 आदिबा । ३ चोको ।  
 तनिठ (स० वि०) धवमनयो रतिग्रयेन तनु-ना पय  
 शिवामतिग्रयेन तनु-तनु-चतन् । एतु, खी बहुत पुबका  
 पल्ला छोटा या कमजोर हो ।  
 तनी (हि० खी०) बन्धन, बन्ध ।  
 तनोबन् (स० खी०) बन्धनां मन्कोऽयमतिग्रयेन । पल्ल  
 छोटा ।  
 तनु (स० खी०) तन-ङ् । १ शरीर, दिङ् । २ रक्त्  
 चमड़ा ३ खी चोत । ४ बँजुको । (वि०) ५ ज्वाल,  
 दुबकापल्ला । ६ पल्ल, बोड़ा ७ बिरन, धन्वर, बडिया ।

८ बोजम, नातुङ्क । ९ योग्याखोङ्क यन्त्रित् खादि  
 ज्ञेय । "नविषासेनप्रसुरेणं म्पुततद्विदिङ्करोशापना"  
 (पाठक० शासन० ४)

- पविद्या हो समस्त दुर्खोंका मूल है यनाकामें  
 धामाभिमानका नाम हो पविद्या है। एक पविद्याके  
 हो यन्त्रितादि चतुर्विध ज्ञेयोंको कर्षति होतो है। ये  
 यन्त्रितादि ज्ञेय चार प्रकारके हैं—प्रसुत, तनु, विच्छिन्न  
 पोर उदार। जो ज्ञेय वित्तभूमिमें रह कर मो अपने  
 महबारी उद्योगके बिना अपना कार्य कर नहीं सकता  
 उन्को प्रसुत कहा जा सकता है। जैसे बाबानसामें  
 शानबीका वित्त वामनाक्षरमें अवस्थित हो कर मो सङ्-  
 कारो उद्योगके पमावके कारण लको ज्ञान नहीं कर  
 सकता । जो ज्ञेय अपने प्रतिपक्षोंके बिनाके द्वारा  
 सकार्यशक्तिसे शिद्धि होमें पर बासनासङ्कप चित्तमें  
 रहता है, शिन् प्रभूत कार्योत्पन्न मामयोके पमावके  
 लभाव प्रारंभ करमेंमें पममर्ब होता है लपको तनु  
 कहते हैं। जैसे बोगिदीके चित्तमें बासना रहतो पवम  
 है, पर नह लपनुज मामयोके पमावके शिमी तरङ्का  
 कार्य करके नहीं दिया सकता । जो ज्ञेय पथ धवत  
 खंयके पाङ्कमके परानूत होता है इसको विच्छिन्न  
 कहते हैं। जो ज्ञेय महबारीका अधिकानमाव पपना  
 कार्य सन्पादन करता है, लपको उदार कहते हैं ।  
 (खी०) १० ल्योतिबोङ्क नप्यका लान । (बन्धक वर)  
 तनुच (स० खी०) तनु स्वार्थे कन् । १ शरीर, दिङ् । २  
 धातकोपुष्प, बयका पुष्प । ३ विमोतबन्धन, तनिमका  
 दिङ् । ४ लच्छु, डारखीमी ।  
 तनुकूप (स० पु०) रोमकूप ।  
 तनुबीर (न० पु०) तनु पल्ल पोर निर्वासो यथ,  
 बहुतोः । धाम्नातबन्धन, धाम्नेका दिङ् ।  
 तनुपङ्क (स० खी०) ल्योतिबोङ्क यथमेव, ल्योतिपके  
 पनुकार एक प्रकारका कर ।  
 तनुष्यट् (न० पु०) तनु टैव कादपति कादेवँ ऊरवक ।  
 कायेरेऽनुपधर्मन । वा ६।न०६६। कवच बहुतर ।  
 तनुष्कार्य (स० पु०) तनी काया यथ बहुमीः । १ ज्वाल  
 ननुँरक इव, ज्वाल बहुलका दिङ् । (खी० खी०) २ शरीर  
 ल्लाबा, शरीरकी परबाही । (वि०) ३ पल्लकाका

युक्त, जिसमें थोड़ी, छाया हो। (स्त्री०) तन्वी छाया, कम धा०। ४ अक्षयछाया।

तनुज (सं० पु०) तनोर्देहात् जायते जन-उ। १ पुत्र, बेटा। २ अन्धकुण्डलीमें लगने पर चक्का स्थान।

तनुजा (सं० स्त्री०) तनुज स्त्रिया टार-। कन्या, बेटो।

तनुता (सं० स्त्री०) तनु भावे तल-टाप-। १ तनुत्व, कृशता, दुर्बलता, दुबलापन। २ लघुता, छोटाई। तनुत्वज- (सं० त्रि०) तनुं त्यजति त्यज-क्तिप्- तनु-त्यागकारी, जो शरीर छोड़ता हो।

तनुत्याग (सं० पु०) तनुना त्यागः, ६-तत्। देहत्याग। तनुत (सं० क्लो०) तनुं त्रायते त्रा-क। वर्म, कवच, वस्त्रतर।

तनुत्वत् (सं० त्रि०) तनुत् विद्यते अस्य तनुत् मत्तुप-। तनुत्वधारी, कवच धारण करनेवाला।

तनुत्वाण (सं० क्लो०) तनुत्वाप्रतेऽनेन त्रे करणे ल्युट्-। वह चीज जिससे शरीरको रक्षा हो। कवच, वस्त्रतर।

तनुत्वच् (सं० स्त्री०) तन्वो त्वक् वस्त्रानं यस्याः, बहुव्री०। १ क्षुद्राग्निमन्ववृक्ष, छोटी अरणी (त्रि०) २ सूक्ष्मत्वग्युक्त, जिसको काल पतलो हो।

तनुधारी (सं० त्रि०) शरीरधारी, शरीर धारण करनेवाला।

तनुपत्र (सं० पु०) तनूनि कृशानि पत्राणि यस्य, बहुव्री०। १ इड्डुटोहृक्ष, गोंदनी या गोंदोष्ण पेड़। (त्रि०) २ अल्पपत्रयुक्त वृक्षमात्र, जिसमें बहुत कम पत्ते हों।

तनुपात (सं० पु०) सृत्य, मोत।

तनुवीज (सं० पु०) १ राजवेर। (त्रि०) २ जिसके बीज छोटे हों।

तनुभव (सं० पु०) तनोर्भवति भू-अच्, ५ तत्। १ पुत्र, बेटा। (स्त्री०) २ कन्या, बेटो, लड़की।

तनुभस्त्रा (सं० स्त्री०) तनोः शरीरस्य भस्त्रा इव। नासिका, नाक।

तनुभाव (सं० पु०) दुबला।

तनुभूमि (सं० स्त्री०) बोद्धश्रावकींके जोवनको एक अवस्था।

तनुमृत् (सं० त्रि०) तनुं विभस्ति मृ-क्तिप्-। देहधारी, शरीर धारण करनेवाला।

तनुमध्या (सं० स्त्री०) तनुं कृगं मध्यं यस्याः, बहुव्री०। १ लग्नमध्या, जिसको कामर पतनी हो। २ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरणमें एक तगण एक यगण होता है। इसको चौरस भी कहते हैं। ३ जिसका बीचका भाग पतला हो।

तनुरस (सं० पु०) तनोर्देहस्य रस इव। घर्म, पसोना। तनुराग (सं० पु०) एक प्रकार का सुगन्धित उत्रटन, जो केशर, कस्तूरी, चन्दन, कपूर, अगार आदिको मिना कर बनाया जाता है।

तनुरुद् (सं० पु०) तनो तन्वां वा रोहति रुह-क्तिप्। लोम, शरीर परके बाल, रंगटे।

तनुरुह (सं० क्लो०) तनो तन्वा वा रोहति रुह-क। लोम, रोम, रोध्रां।

तनुल (सं० त्रि०) तन-उल्च्। विस्तृत, फैला हुआ।

तनुवात (सं० पु०) तनुः क्षीणः वातः यत्र, बहुव्री०। १ नरकविशेष, एक नरकका नाम। (त्रि०) २ अल्प वायु युक्त स्थान, वह स्थान जहाँ हवा बहुत हो कम हो।

तनुवार (सं० क्लो०) तनुं देहं सुगोति ह-मण्, उवपटम०। कवच, वस्त्रतर।

तनुवाज (सं० पु०) तनूनि कृशानि वोजानि यस्य, बहुव्री०। १ राजवदर, राज वर। (त्रि०) २ स्वल्पक्षोजयुक्त, जिसके बीज बहुत छोटे हों।

तनुव्रण (सं० पु०) तनुः पृष्ठः व्रणो यत्र, बहुव्री०। वल्मीकरोग।

तनुम- (सं० क्लो०) तनोति तन-उमि। शरीर, देह।

तनुमञ्चारिणो (सं० स्त्री०) तनु अस्वयं यथा तथा मञ्चरति सम्-चर-णिनि-डोर-। युवता स्त्री, जवान अरत।

तनुसर (सं० पु०) तनोः सरति तनु-सृ अच्, ५-तत्। खेद, पसोना।

तनुङ्गद (सं० पु०) तनोङ्गद इव। पायु, मलहार, गुदा।

तनू (सं० पु०) तनोति कुल तन-ञ्ज। १ पुत्र, बेटा, लड़का। २ शरीर, देह। ३ प्रजापति। ४ गो, गाय। ५ थप जल, पानो।

तनुकरण (सं० क्लो०) अतनुं तनुं करणं अभूततद्भावे च्चि। अस्पोकरण, छोटा करना।

तनुकू—मद्राज प्रदेशके क्षणा जिलाके अन्तर्गत एक

—ताम्रक। यद् यथा २६ ३३' तथा २६ ३८० स० पीर  
 टेमा० ८२ ३३' तथा ८२ ३०' पूर्वै पश्चिमि तै ।  
 इदम्वा सेतपन्न ३०१ इयंमौन तथा जमनव्या जगतस्य  
 २३८०२८ है । इमं १०७ मीन है । यद्वाको जमीन  
 उपजाक है । गोदावरी नदीक जमने यद्वाको जमीन  
 मीको जाती है । चात्रन यद्वा पञ्चानया उत्पन्न होता  
 है । इमके पतिरिक्त मन्वा पीर रोगनदार जोक मी  
 ( बावर ) पैदा होता है ।

तनुक—पतनु तनु क्नेति तनु पम्तनराधे ( विभ  
 क्तोऽपु प्रयोग ) । पत्न्योवरच, छोटा बनाना ।

तनुकृत् ( म० वि० ) तनु-कृत् क्रिप् । पुत्रकृत्परीरकारी ।  
 तनुकृत ( म० वि० ) तनु-कृ-वर्म्मणि क्त । १ तट, छोटा  
 बुधा ।

तनुकृत् ( म० पु० ) पुत्रके निये मुति ।  
 तनुक ( म० पु० ) तन्वा देहात् व्यापये अन् इ । पुत्र  
 बिटा ।

तनुकृति ( म० पु० ) 'तन्वा अति' इ-तत् । १ पुत्र  
 बिटा । ( श्री० ) २ कन्या बिटो ।

तनुकृत्यन् ( म० पु० ) तन्वा कृत्य, इ तत् । पुत्र, बिटा ।  
 ( श्री० ) २ कन्या, बिटो ।

तनुका ( म० श्री० ) तनुक टाप । कन्या, बिटो ।  
 तनुकाह ( म० श्री० ) पच, पन्न पर ।

तनुतन ( म० पु० ) परिभाषभेद, एक व्यास ।  
 तनुकृत्य ( म० वि० ) शरीरमन्वा शरीर छोडनेवाला ।

तनुकृति ( म० वि० ) शरीरकृत्य, शरीरका नाम करमि  
 वाणा ।

तनुदेवता ( म० पु० ) पत्निभूर्तिभेद, पत्निको एक  
 भूर्तिका नाम ।

तनुदिय ( म० पु० ) पद्मप्रत्यय, शरीरका हरएक पद्म ।  
 तनुद्वय ( म० पु० ) 'तनोद्वयवति कृत्-भू-पच', इ-तत्  
 १ पुत्र, बिटा । ( श्री० ) २ कन्या, बिटो ।

तनुन ( म० श्री० ) तन्वा नन । बाहु, बुधा ।  
 तनुनय ( म० श्री० ) तन्वा नन इय पाति पा-क । घृत,  
 ची । चा शरीरको मन्वद्वन बनाता है इयनिये इमका  
 नाम तनुनय पदा है ।

तनुनयान् ( म० पु० ) तनु न पातयति पत-विच-क्रिप् ।  
 १०। LX 52

बधापुनवात् । वा ( ता० ) । इति निपातनात् न मोप' वा  
 तनुनय घृत पति-पद-क्रिय । १ पत्नि, पाग । २ मन्वा  
 पतिके दोत । ३ विचकृत्य, चीता । ( श्री० ) ३ पुत्र जो ।  
 ४ मन्वन् । ५ पत्न्य हेतुक प्रशासभेद ।

तनुनय ( म० पु० ) तनोति तनुः परमात्मा तस्य जना पीक,  
 इ तत । बाहु, तनु, जो परमात्मा है परमात्माके पात्राय  
 उत्पन्न बुधा है, पात्रायके बाहु रमोनिप बायु परमात्मा  
 के दोक है । युति पीर बिदामदमर्नके मतने पक्षि  
 परमात्माने निपिन जमत्का नपादान पात्राय जन्म  
 बुधा तथा पात्रायके बाहु प्रभृति निश्चयी है ।

तनुपा ( म० पु० ) तनु पाति पा क्रिप् । १ शरत्पत्नि ।  
 इमके द्वारा बाया बुधा पच पच जाता है पीर इमका  
 भारीय रक्त मासादिद्वयमें शरीरमें परिभत चा कर  
 देखको पोषक करता है, दक्षीनिये अरत्पत्निका नाम  
 तनुपा पदा है । २ देहात्पत्न्यमात्र, पच जो किन्न  
 शरीरका पानन करता है ।

तनुपान ( म० वि० ) शरीरपानक, पद्मरचक जो शरीर  
 को रखा करता है ।

तनुपायन् ( म० वि० ) तनु वा औचनरत्नाबाधि, शरीर  
 या प्राणको रखा करनेवाला ।

तनुपुत्र ( म० पु० ) मोमपागका एक भेद ।  
 औचनय देखो ।

तनुपुत्र ( म० श्री० ) शरीरकृत्य, ताकत, जोर ।  
 तनुपुत्र ( म० पु० ) रंदा देखो ।

तनुपुत्र ( म० श्री० ) तन्वा रीरति कृत् कृत् । १ सोम,  
 रोम, रोधा । २ पतिवर्तिका पर, पच । ३ पुत्र, बिटा,  
 कृत्का । ३ मयत् ( देव )

तनुपुत्रादुर ( म० श्री० ) शीम, रोधा ।  
 तनुपुत्र ( म० पु० ) उत्तममनुके पुत्र एक राजा ।

( इति० ) ७७० )

तनुपुत्रिन् ( म० पु० ) पत्नि पाग ।  
 तनुपुत्र ( म० वि० ) शरीरभूयक, शरीरका मोभ  
 पद्मनिवाला ।

तनुपुत्रिन् ( म० श्री० ) वैदिक तनुकृत् इति । बिदमन्  
 द्वारा न द्यन यो इत्यादि इवन करनेको बलु ।

तनुपुत्र—उर्ध्व देखो ।

तनेना ( हि० वि० ) वक्र टेटा, तिरछा ।

तनेना ( हि० पु० ) तनेना देखो ।

तनेला ( हि० पु० ) एक प्रकारका छोटा पेड । इसके फूल सुगन्धित और सुफेद होते हैं ।

तन्ति ( सं० स्त्री० ) तन-कमणि क्लिच् वेदे न दीर्घः न लोपाभावश्च । १ दीर्घप्रसारिता रज्जु, बहुत लम्बी रस्वी । २ गोमाता, गौ, गाय । ३ विस्तार, फैलाव ।

तन्तिपाल ( सं० पु० ) तन्ति गोमातरं पालयति पालि-  
श्रण् । १ गोमातृपालक, गौकी रक्षा करनेवाला । २ सहदेव, विराट्ग्रहमें सहदेव गुप्तावस्थानके समयमें इसी नामसे परिचित हुए थे । ( भारत विराट १० अ० )

तन्तु ( सं० पु० ) तन्वते विस्तर्यते तन्-तुन् । सित निग-  
मोति । उण् १।०।१ सूत्र, सूत, तागा । २ आइ । ३ सन्तान, बाल बच्चे । ४ ताँत । तात देखो । ५ विस्तार, फैलाव । ६ यज्ञको परम्परा । ७ वंशपरम्परा । ८ मकड़ीका जाला ।

तन्तुक ( सं० पु० ) तन्तुरिव कायति कौ-क वा संज्ञायां कन् । १ सर्पप, सरसो । २ वनशुकर, जङ्गलो सूपर । ३ स्नायुरोग । ४ जलजन्तु । ५ सन्तति । ६ सूत्र, सूत । ७ मण्डलीसपेभेद । ( स्त्री० ) ८ नाडी ।

तन्तुकाष्ठ ( सं० स्त्री० ) तन्तुसमन्वितं काष्ठं, मध्यपदलो० ।  
तन्तुयुक्ताकाष्ठ, छुलाहीकी एक लकड़ी जिसे तूली कहते हैं ।

तन्तुको ( सं० स्त्री० ) तन्तुक स्त्रियां डीप् । १ नाड़ी । २ शिरा । ३ नाड़ीशाकभेद । ४ राजिका, राई ।

तन्तुकीट ( सं० पु० ) तन्तुत्पादकः कीट, मध्यपदलो० ।  
१ कीटविशेष, मकड़ी । २ रेशमका कीटा ।

तन्तुजाल ( सं० पु० ) नसीका समूह ।

तन्तुण ( सं० पु० ) तन बाहुलकात् तुनन् निपातनात् णत्वं दन्तप्रकारान्त इत्यंके । आइ ।

तन्तुनाग ( सं० पु० ) तन्तुर्नाग इव । आइ, मगर ।

तन्तुनाभ ( सं० पु० ) तन्तुर्नाभौ यस्य, बहुव्री०, अच्-  
समासान्तः । लृता, मकड़ी ।

तन्तुनिर्घास ( सं० पु० ) तन्तुवत् निर्घासी यस्य, बहुव्री० ।  
तासृष्ट, तालका पेड ।

तन्तुपर्वन् ( सं० स्त्री० ) तन्तोः यज्ञोपवीतसूत्रस्य दानरूपं

पर्वं यत्र, बहुव्री० । चान्द्रयावण षोणं मामो, यावर्षं  
मामको पूर्णिमा । इस तिथिमें भगवान् वाम नदेवको  
यज्ञोपवीत दान देना चाहिये ।

इस तिथिमें नक्षत्र प्रभृति विगड होने पर भो यज्ञोप-  
वीत दान अवश्य कर्तव्य है । इस पूर्णिमामें मङ्गलके  
लिये हाथमें राखी बाँधी जाती है । इसका विषय निर्णय-  
सिन्धुमें इस प्रकार लिखा है ;—यावणो पूर्णिमाके दिन  
प्रातःकाल विधिपूर्वक स्नान कर देवता और ऋषियों का  
तर्पण करना चाहिये । बाद अपराह्नमयमें राखीकी  
पोटलोकी मिठार्य और अक्षतमे अर्पित कर उसमें सुवर्ण  
मंयुक्त कर देना पढता है । उसके बाद पुरोहित निम्न-  
लिखित मन्त्र द्वारा राखी बाँधते हैं ।

मन्त्र— येन वदो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः ।

तेन स्वामपि वधनामि रक्षे मा ले मा चरु ४”

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र प्रत्येकको उचित  
है कि इस तिथिमें यथाशक्ति ब्राह्मणोंको दान दे कर  
राखी हाथमें धारण करें । रक्षावन्धन देखो ।

तन्तुभ ( सं० पु० ) तन्तुरिव भाति भा-क । १ सर्पप,  
सरसो । २ वल्ल, वक्रुडा ।

तन्तुमत् ( सं० पु० ) तन्तुः विद्यतिऽस्य तन्तु-मत्तुप् ।  
अग्नि, आग ।

तन्तुमती ( सं० त्रि० ) तन्तुमत् स्त्रियां डीप् । सुरारि-  
की माता ।

तन्तुर ( सं० स्त्री० ) तन्तु रस्यस्य कुञ्जादित्वात् तन्तुर-  
। मृणाल, भसींह, कमलको जड़ ।

तन्तुल ( सं० स्त्री० ) तन्तुर रस्य ल वा तन्तु-लत्त् । मृणाल,  
कमलकी जड़ ।

तन्तुवादक ( सं० पु० ) तन्तो, वीन आदि तारके वाजे  
वजानेवाला ।

तन्तुवान् ( सं० त्रि० ) बुननेको क्रिया ।

तन्तुवाप ( सं० पु० ) तन्तुन् वपति वप-अण् । १ तन्तु-  
वाय, ताँत । तन्तुवाय देखो ।

तन्तुवाय ( सं० पु० ) तन्तुन् वयति विस्तारयति वै-अण् ।  
१ लृता, मकड़ी । २ नवशाखके अन्तर्गत जातिविशेष,  
ताँती । नवशाख देखो ।

वस्त्रवयोपजीवो मशुच्यमात्रको ही तन्तुवाय (ताँती)

बहते हैं सुता! जिन्होंने केवल यही व्यवसाय धरमस्वयन विद्या है, वे सबके मन लक्ष्मणके अन्तर्गत तन्तुबाय जातिके नहीं हैं। मित्र मित्र जातिपेके एक व्यवसाय धरमस्वयन करकेके आरम यह साधारण इतिवृत्त नाम रखा गया है। वहुतीका कहना है कि तन्तुबाय मित्रदास या कामदासके न शहर हैं। किछो समय गच्छते समय शिवजोके शरीरके एक बूँट पसीना मिरा। उस पसीनेके तुरंत ही मित्रदास उत्पन्न हुआ। पसीनेके पैदा होनेके कारण इसका नाम कामदास पड़ा। इसके बाद मित्रजीने एक कुत्र से कर कामदासके स्थिते कुत्रवती नाम की एक लम्बा छड़ ली। यह कुत्रवती कामदासको छोड़ी है। मित्रदासके चार पुत्र बनारस उच्च पुरन्दर और महुसर हुए। इन चारोंके चार सम्प्रदायके तन्तुबाय निवसके। अंतितोसुदीके समर्थ मन्त्रिबन्धु पुत्र्य और मन्त्रिदासके छोड़े तन्तुबायकी उत्पत्ति हुई है। परंपराकेको जातिमाकाके मतानुसार—

“ते कथात् मन्त्रिबन्धुनां तन्तुबायस्य सम्भवः ।”

सिद्धोके चोरस और मन्त्रिदासको मन्त्रिकोके गर्भसे तन्तु बायका जन्म हुआ है। इत्यन्तमेका जातिमाकाके मतानुसार—

“मन्त्रिबन्धुनां कामिदासो तन्तुबायस्य सम्भवः ।

तं पुत्रं दत्त्वा मुनिभेदे तन्तुबायस्यमात्तवाम् ॥

मन्त्रिबन्धुनां तन्तुबायस्य चोपजीवस्य सम्भवः ।”

मन्त्रिबन्धुके चोरस और कामिदासके कामिदासके गर्भसे तन्तुबायने उत्पन्न हुआ है। इतने किसी मुनिवर की तन्तु दिया का इसलिये इसका नाम तन्तुबाय पड़ा है। तन्तुबायके चोरस और मन्त्रिबन्धु कामिदासके गर्भसे नोपजोवका जन्म हुआ।

मनुसंहिताके मतानुसार—

“पुत्रावां वैश्वदेवकथाशोभक इति त्वयः ।

तन्तुबायो मन्त्रमेव वत्सपरोपदीतिवः ।

श्रीकथा केचित्तमेव शीघ्रं वक्षतिःश्रीती ॥”

अश्विदासके गर्भसे चोर बँधुके चोरसने आशोभवको उत्पत्ति हुई। तन्तुबाय भी इसी तरह उत्पन्न हुआ है। इसको श्रीकथा वक्षनिर्माण करना है। ‘चिर बहुताका मत है कि मित्रदासके चोरस और मापध्वहा इताकोके

गर्भसे आठ पुत्र उत्पन्न हुए। विश्वकामने उन आठों पुत्र को मित्र मित्र मित्रमास्त्रेनि मित्रा दो। उन्होंने आठ जातिके मित्रकार उत्पन्न हुए। उन आठोंमें तन्तुबाय भी एक है।

ब्रह्मानके तन्तुबाय निम्नलिखित सम्प्रदायमें विभक्त हैं। यथा—आश्विना या आश्विनतातो चिर दे भो बँधुमानो वरुण, मन्त्रिबन्धु, मान्दारव और उत्तर कुत्र इन पाँच अश्विमें विभक्त हैं बलरामी बहू ब्रह्माभिगिदा या भ्रंशनिदा, बरैन्द्र, छोटा भागिया या कायत, तातो कापुर, मोरा, चोर, महुसरो, भगन महुयाको मोर, पाम, पुरन्दरो, पूर्णकुत्र, राङ्गे और उच्चो।

विहारके तन्तुबाय बँधर, पनीशिया, कामार, शिखर, बहार कनोजिया, सिद्धिदा चोर उत्तरा अश्विमें हैं।

उड़ीसके तन्तुबाय मातिवस तातो, गाना तातो चोर रूनी तातो इन कई एक अश्विमें विभक्त हैं। बङ्गालके तांतियेकी अर्पाव पराग, बपाक मनु, मद्र, बी ब्रिट, चन्द, सुरतो दन्दास, दास, दत्त व गुँड, प्रामाचिक जसो, शचनदार कर, लु मण्डक मैक, सुखिम, नन्दो पान, गण्ड, मदार, रचित चोर मोल है।

विहारमें इसको अर्पाव दास, मसतो, मसिो, मराल चोर मारिक है।

बङ्गालके तातो निम्नलिखित क्षेत्रोंमें विभक्त हैं—अमरक अश्वि, अमरदासो, अश्विमान, अश्विअश्वि बङ्ग अश्वि बास्य, मरदास, मिथ्यामिद, ब्रह्माअश्वि, गर्गअश्वि मीतम, जनअश्वि, काङ्कप कुष्माअश्वि, महुकुसा, पराशर, माखिअश्व, साबन चोर प्यास। विहारमें इसके चामर तातो इन्दुदा आश्वय प्रथति गोत्र हैं।

पश्चिम ब्रह्मानमें आश्विना तातो को सबसे अधिक है। इनका कहना है कि आश्विन तातो को मूल जाति हैं इन्होंने मूलर मूलर तन्तुबाय उत्पन्न हुए हैं। ये मित्र मित्र कामने नामानुसार विभिन्न मात्ताधर्मि विभक्त हैं। आश्विन तांतोने एक विशेष लक्षण यह है कि इनको छिटां कसो माऊमें लघनी नदी वहनहीं।

उाश्विके तातो ब्रह्माभागिया या सम्पनिदा चोर छोटा भागिया या कायतिया इन दो वर्गोंमें विभक्त हैं। बङ्गा



भागिया या भम्पनिया ताँती पावकीमें बैठ कर विवाह करते, इसलिये ये भम्पनिया कहनाये। शेषोक्त ताँती पहली कायस्थ थे, बाद वस्त्रवयनवृत्ति अवलम्बन करनेके कारण ये जातिच्युत किये गये।

इनमेंसे पहला या बड़ा भागिया शाखा हो बहुत दूर तक विस्तृत है। इनमें बहुतेकी उपाधि वमाक है। पहले जब कोई सम्भ्रान्त तन्तुवाय वस्त्र बुनना छोड़ कर कपड़ेका व्यवसाय आरम्भ करता या तब उसे यह उपाधि दी जाती थी। इष्ट इण्डिया कम्पनी को कोठेमें जितने तन्तुवाय नियुक्त थे उनकी उपाधि वंशानुक्रमिक आज तक भी चली आती है। यथा—याचनदार या सूखनिरूपक, मूखिम, परिदर्शक, दलाल और सर्दार (एक दल कारोगरका सर्दार)।

ढाकाके मग बाजारमें मगो श्रेणी नामक एक दल जातिभ्रष्ट तन्तुवाय वाम करते हैं। पतित होने पर भी इनका आचार व्यवहार शूद्र तन्तुवायोंके जैसा है।

डाक्टर वाइजने लिखा है कि छोटा भागिया अर्थात् कायेत ताँती पहले सोनार थे, बाद अपना व्यवसाय छोड़ कर इन्होंने कपड़े बुननेका व्यवसाय आरम्भ किया। अभी वे भी वसाकके साथ खाते पीते हैं। वमाक भी उन्हें सामाजिक मर्मादा प्रत्यर्पण करते हैं।

कुछ धनी कायेत ताँती अपनेको कायस्थ बतलाते हैं। ये ढाकामें रहते हैं। इनमेंसे बहुत महाजनी या नक्कासी वृत्ति द्वारा अपनी जीविका निर्वाह करते हैं।

पूर्व बङ्गालमें वङ्गताँती नामक एक दूसरी श्रेणीके ताँती बसते हैं। ये नागरिक ताँतियोंसे सम्पूर्ण स्वतन्त्र हैं। ये कहते हैं कि ये हो इस देशके आदिम ताँतो हैं तथा सम्राट् जहांगीरके पहलेमें ही देशोंमें कपड़ा बुन कर देते आ रहे थे। जो कुछ छों वमाक ताँतो इन्हें अपनेसे श्रेष्ठ मानते हैं। ढाकासे २० मील उत्तर धामराई नामक नगरमें प्रायः २५० घर ताँती वास करते हैं। ढाकाके ताँतो विवाहके समयमें लाल वस्त्र पहनते हैं, किन्तु वङ्ग ताँती शकल वस्त्र धारण करते हैं।

पहले इसी धामराई नगरमें ही सुविख्यात सूक्ष्म सूत्र प्रसृत होते थे। स्त्रियाँ चरखेमें हाथसे महीन सूत तैयार करती थीं। उनके हस्तनिर्मित सूक्ष्म सूत्रको प्रयत्न

करते हुए किसीने कहा है कि एक कातनेवालीका प्रसृत उल्कृष्ट ८८ गज सूत तोलमें एक रत्तीसे भी कम हुए थे। अभी एक रत्ती बढ़िया महीनसे महीन सूता ७० गजसे अधिक नहीं होता है। इससे मावित होता है कि या तो स्त्रियाँ पहलेको नाईं सूता कात नहीं सकती अथवा कपास ही मोटा हो गई है। आजकल उनका यह व्यवसाय विलुप्त हो गया है।

विहारके ताँतियोंको तँतवा कहते हैं। ये प्रधानतः दो सम्प्रदाशोंमें विभक्त हैं—कनोजिया और त्रिहुतिया।

मालूम पड़ता है कि विहारके चमार ताँतो और कहार ताँतो चमार और कहार जातिसे उत्पन्न हुए हैं। गायद कोई चमार और कहार वस्त्रवयनवृत्ति अवलम्बनाकरके क्रमशः ताँतो हो गये हों। उड़ीसेके मातिशंश ताँतो मोटा कपड़ा बुनते हैं। इनमेंसे बहुत आजकल वस्त्रवयन वृत्ति छोड़ कर पाठशालाके शिक्षक हो गये हैं। गाला ताँतो सूक्ष्म वस्त्र और हंभी ताँती अनेक तरहके रंगीन वस्त्र प्रसृत करते हैं।

ढाकेमें अनेक हिन्दुस्थानी या मुंगेरिया ताँती वास करते हैं। इनमेंसे अनेक बाहरमें प्याटा, मोटिया, मजदूर तथा पंखा खींचनेका काम करते और घरमें वस्त्रवयन और कृषिकार्य भी किया करते हैं। ये दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं—कनोजिया और त्रिहुतिया। कनोजियेको हो संख्या अधिक है। समाजमें इन्होंने अधिक उन्नति की है। त्रिहुतिया पावकी-भाजक, गायक, चायकर, सहोष, माँझी प्रभृति निष्कृत कार्य करते हैं।

बङ्गालके तन्तुवाय नवशाखके भक्तभुक्त हैं। इसलिए इनके विवाहादि दूसरी दूसरी नवशाख जातिकी नाईं हैं। पश्चिम बङ्गालमें कहीं पर कोई कोई पण ले कर कन्याका विवाह करते हैं। कन्यादान करना ही समाजमें सर्वत्र सम्मानसूचक और यशस्कर है। अभी दूसरी उच्च श्रेणीके हिन्दुको नाईं कन्याकर्त्ताको भी वरको विद्या, बुद्धि और ऐश्वर्यानुसार पण दे कर कन्यादान करना पड़ता है।

विहारके ताँतियोंमें विधवा विवाह और परित्यक्त स्त्रीको सगाईको प्रथा प्रचलित है। जब कोई स्त्री स्वजातीय किसी पुरुषके साथ संभोग करती है तो एक



करते हैं, किन्तु अधिकांश ही बुद्धराम नामक विष्णुवामी किमी मोची (चमार)-के प्रवर्तित धर्मको मानते हैं। इस बुद्धराम मोचीका मत बहुत कुछ नानकशास्त्रके मतसे भिन्नता जुगता है। उसके मतावलम्बो ताँतो जाति-भेद नहीं मानते हैं किन्तु धर्माचरणके अनेक तर्पणसे वाङ्मय अनुष्ठान किया करते हैं। विहारके उन्दो, गोरैया धर्मराज प्रभृति जिन देवताओंको पूजा करते हैं उनके छोड़ ताँतो सैमियार, कारवर आदि अपने पूर्वपुरुषोंकी पूजा करते हैं। यावण मामकी जनि और मङ्गलधारकी उनके उद्देश्यमें मेष बलिदान कर प्रेतपुरुषोंको प्रसन्न करते हैं। इस काममें पुरोहितका प्रयोजन नहीं पड़ता है। पुरुष ही स्वयं इस कार्यको करते हैं।

पहले ही कहा जा चुका है, कि ब्रह्मण्डके तन्तुवाय नवगायकके शक्तगंत है, सुतर्ग उनमें पुरोहित ब्राह्मण ही उनका पोरीहित्य करते हैं। कहना नहीं पड़ेगा कि तन्तुवायोकी या-कता भरानेके लिये वे दो चार विगड ब्राह्मणोंके निकट हेतु होने पर भी ब्राह्मणसमाजमें कुलोन ब्राह्मणोंके समान गिने जाते हैं।

विहारमें कई जगह ताँतियोंके पुरोहित नहीं हैं और जहाँ है भी वहाँ वे नोच ब्राह्मणोंमें गिने जाते हैं। बहुत जगह जहाँ ताँतियोंके पुरोहित नहीं हैं, वहाँ इन्हीं लोमीमेंसे कोई एक पुरोहित बन जाता है और कभी कभी उनका भाँजा जो पुरोहितका काम करता है। इस तरहके अनाय कामोंमें साधित होता है कि विहारके ताँतो नोच जातिके हैं और नोच जातिके क्रमगः हिन्दूधर्म ग्रहण करने हुए ममाजमें प्रवेग होते हैं। उक्त योणोंके हिन्दुओंका अनुकरणमें विहारके ताँतो भी तेरह दिनों तक अगोच मानते हैं। जो कुछ हो कितने हो पवित्र वे क्यों न रहें तोभी हिन्दूधर्मज्ञ तथा कोई सदुद्ब्राह्मण इनके प्रायका जल ग्रहण नहीं करते हैं।

कौन ताँतो उच्च और कौन नोच योणोंका है इसका पता उनके व्यवहृत मण्ड (लेई) द्वारा हो चलता है। उच्च योणोंके तन्तुवाय कपडा बुननेके समय लावेकी लेई व्यवहार करता है। ये अनाजकी लेईको अपवित्र और उच्छिष्ट समझते हैं, परन्तु निम्नयोणोंके ताँतो अनाजकी लेई व्यवहार करते इसीसे इन्हें 'मेहो ताँतो

कहते हैं। ब्रह्मण्डके ताँतो याने पौनेके विषयमें अत्यान्व नवगायक जातिके जैमे हैं। ये ममाजमें नगराय याने हैं और न साम याने हैं। परन्तु विहारके ताँतो नया मथराम यावणारमें जाते हैं। गराय पानिने पहने के दो चार बुन्द अपने इच्छे ताँतो जाँतो या मयादेवके नाममें एलो पर गिरा कर तब पाने हैं।

पहले ही कहा जा चुका है कि कपडा बुनना ही तन्तुवायकी उपजीविका है। इन लोमीका यह व्यवसाय बहुत दिनमें बना पा रहा है। किन्तु जिन योणोंके कपडा कृष मन्ना ही जाननेके कारण आज तक इनका व्यवसाय चिन्म ही गया है। वरतमें ताँतियोंके मन्त्र को कर अपना व्यवसाय ही किया है या वाणिज्य, छपि प्रभृतिमें लग गये हैं। आदिना और सन्निधियोंके प्रायः ३ अंगने छपिकार्य चारखाने किया है। यह कपडा अत्युत्तम नहीं होता कि जिनमें कपडो छपि परित्याग कर अन्यान्य व्यवसाय व्यवसाय किया है, उनको अथवा यथायत्न उन्नत हो गई है, परन्तु जो पुरुष पानुक्रमिक व्यवसायइति व्यवसाय करते हैं, उनको उन्नतिके ज्ञान तो दूर रहे, क्रमगः दुर्दशा हो जाती जा रही है। इस व्यवसायमें वे स्वयं पैट भी पोषते, कुछ मनुष्य नहीं कर सकते हैं। इस विषयमें एक प्रवाद इस तरह है—गिबजीने गिबदासरी सृष्टि कर उगे वस्तु बुननेका आदेश किया। इस पर गिबदासने उनसे सव, तस इत्यादि मांगा। तब गिबजीने एक असुरकी मार कर उसको आँवोंमें कपासकी गोठो सृष्टि की। उस गोठोमें कपासका बोज उत्पन्न हुआ। बाद उस बीजमें कपास हुआ और क्रमगः उससे रुई तैयार हुई, और गिबकमाने आ कर एक चरखा प्रस्तुत किया। दुर्गाजीने स्वयं सुता कात दिया, परन्तु वे धोनी कि पहना वस्तु उन्हें हो देना पड़ेगा। इसके बाद गिबकमाने तन्तु निर्माण किया और देवताओंमें आ कर उसे पृथक पृथक अङ्गमें अविष्टान किया। गिबदासने प्रथम वस्तु बुन कर गौरोको प्रदान किया। गौरो जब प्रसन्न हो कर गिबदासको वर देनेको राजो हुई तो गिबदासने कहा कि मुझे यही वर दीजिए कि मैं एक वस्तु बुन कर छह मास तक उससे घर बैठे जीविकानिर्वाह करूँ। गौरीने भी

उभे पैसा को खर दिया। इधर इन्द्रादि देवताओंमें सेब सुगन्धि मिश्रणको क्षिप्त एक बख्त मुनिले जो एक मास तकको जीविका प्रतिपादन करनेका कर मिला है तो उन्हेंलि सोचा कि ऐसा होनेसे समस्त मनुष्योंको बख्त नहीं मिलेगा, ऐसी बातसे सब उपाय बन्द करना निश्चय था। किन्तु बख्त मिश्रणको खर करके सब मनुज कर मने ऐसा मोक्ष कर उन्हेंलि सरस्वतीको शिवदासको श्री कुम्हारको पास भेजा। परन्तु तो कुम्हारको बख्त पर का बँडे। इनमें अब शिवदास कर ही कर करको लौटा तो कुम्हारने उभे पूछा "आपने कौनसा कर लिया है?" शिवदासने पायोपान्त समस्त बिबरन बख्त सुनाया। कुम्हार तो सरस्वतीको प्ररोचनासे बोला, "पाद! आपने यह क्या कर लिया है? यदि एक बख्त मुन कर एक मास तक बैठे क्षीरि तो मासवन्दे क्षिप्त तरङ्ग हम कार्यको छोड़ेगे, प्रतिदिन बपड़ा बुननेसे जो सुवगन कर्मिष्ठ जो मनेगे। इसक्षिरे पाप धमी का कर कर लौटा दीक्षिरे पोर हम बातको उनसे प्राबुध्य कोत्रिये कि मैं प्रतिदिन बपड़ा बुनना पोर प्रतिदिन खाऊँगा।" शिवदास श्रीको बुदिकी प्रम सा करते हुए उभो समय गौरीके पास गया पोर लख कर लौटा कर पुन घर पाया। उभो दिनसे बख्त बपड़ा हुनने लगा पोर उभे प्रति दिन वैष कर धरि लगा। देवताओंकी दृष्टा पूरी हुई। हम तरङ्ग बुदिमान् तन्तुवापोंको सुबुदि धादि सुबपने धीय मन्ना बुदिमन्नाका परिचय दे कर धपनेको तथा धपने व धपनेको कर्म सुधपन पोर परिचयको होनेसे बाध्य किया। पात्र मी धप तन्तुवापयक धपनी दुवयका दिव कर इस उपायान्तको बखर्त हुए धपने धादिपुवर्षोंको रोमी ठहराते हैं।

यह गद्य यथार्थमें मन्त्र जो वा न जो लेखिन साधारण मनुष्योंका इह विद्यास है कि तांतिवोंको बुदि उनसे उपायान्त सचि न धादि सुबपने धादि सुधपन नहीं है। तांतिवोंको निवुंदि पोर मीधताका धर्ष धारिमाविक्रमा जो गया है पोर इसीपर ये निरिह, दुर्धम, मोह, उधम मूल्य पोर कोड़ेको मनुष्टचित्त हो जाते हैं। समस्त दिन परिधम करते पत्यन्त बखर्ते दिन व्यतीत करने पर मी ये स तुट रहती हैं। बख्तवापका पन्नाधार ये

धातुमावसे सङ्ग करते तथा धमता रहने पर मी बिद्योके विरुद्ध वे राव न उठाते हैं। इनको निवुंदिता जो या न जो तोमो तांति बखर्तसे ही वे निर्बोध पोर आमुदप समझे जाते हैं। मनुष्योंका यह विद्यास इतना प्रबल है कि इनको निवुंदितासे विधयमें इस तरङ्गके कई एक मन्त्र प्रबन्धित हो गये हैं। कोई तांति पावसे व मन्त्रमें बाङ्गसे धमने तौर रहा है, उधर कोई तांति धूमो पर धिरी हुई रोडोको मीर्ष चन्द्रमासे धमने देख रहा है, कोई तांति साधारण धमन्त्रमें व का बुधा है, पोर चप्यो या दनपति धा कर उनसे सुधने खङ्गका उखन धावसे बन्धन पोर जानसे कई धोम कर धपनो धनाध बुदिका विद्यास करती हुए मन्त्र काट कर धाव बाहर निष्कारनेका उपाय बतला रहा है तथा उभो समय धूसरी बार धावमें धमको, सुधने खङ्ग पोर जानमें कई काव देता है यह जान कर कि मावद सुतोप्य बुदि बाहर न निबल जाय। इधर कोई तांति धूब देनेकाकी गायकी एक मास तक न दुध कर विद्यासके दिन एक ही बारमें उभे एक मासका धूब जब धूधनेके क्षिरे जाता पोर उतना धूब नहीं पाता है तो बावको पोड पर बैठे धुई मञ्जीको धोरधोर समझ कर मारनेमें धायकी ही बन्धा कर धामता है पोर बह मञ्जी सब उङ्ग कर उभे मारिंके ऊपर का बैठती है तो बसका मारिं उभे बतला देता है कि मञ्जी यहाँ है, मञ्जीको मारनेमें बह धपने मारिंको धे धरायायो कर देता है। उधर कोई तांति धोमसे खट पा रहा है पोर कोई धमिमानमें धूर है। बर्षों तांति दखबससे माव मीङ्गसे मङ्गनेके क्षिरे का रहा है। इस तरङ्गसे सेबङ्गों गन्ध धत्यन्त रक्षित भावसे उभे न्यानि करते हैं। ये सब गन्ध तन्तुवापोंको निवुंदितासे परिचायक हों या न हों, रक्षिताको निर्दधनुदि, धानिन्द्राप्रियता पोर तन्तुवापोंके ऊपर बख्तमूल मेर धर प्रकाश करते हैं।

जो सुद्ध हो, पात्र धन बधुनसे तन्तुवाप-धुवक धपनो प्रधर बुदिमन्नाका परिचय देने हुए राधधार्थमें प्रबिठ हो रहे हैं। ये शिच तरङ्ग तोप्य बुदि, मन् धार्थ कुयनता, उधमगोबता धर्षति धारा बधुनोंको पराध कर रहे हैं उधने यह कोई उभे निर्बोध बखर्तका

साहस नहीं कर सकते हैं। सुपन्नमान जोना तातो निर्बोधक आदर्श है।

तन्तुवायोंमें एक विगेष पार्यक है। उत्तरकुन मन्मदाय केवल कपामके सूतेमें वस्त्र प्रस्तुत करते हैं, मडयाली ताता केवल तसरका वस्त्र बनाते कभो अतीमे कपडा नहीं बुनते हैं और आश्रिना तातो दोनों तरतके वस्त्र प्रस्तुत करते हैं।

डाकारके तातो पहने जगत्विख्यात उत्कृष्ट कप म वस्त्र प्रस्तुत कर प्रचुर धन उपानन करते थे। अमो उस तरतका कपडा कहीं देखनेमें नहीं आता है। उनके मौभागके समय जो अच्छे अच्छे वस्त्र बनते थे डाक्टर वाइज Dr. Wise ने उनके ५ प्रकारको तानिका दी है, यथा:—सलमल—इसमें पत्रने प्रकारका अर्थात् मधमे दृच्छे अत्रवान, तच्छे व और टैगीय कवामके सूतेका इन। दुषा मनमल है। दूसरे प्रकारका गावनाम खामा, मून, गङ्गाजल और तीरन्दम है। तीसरे प्रकारका मन्-लिन जो मधमे मोटा होता है, इसका साधारण नाम वफता है।

२। डोनिया—अर्थात् मोटे सूतकी लम्बी धारीदार मलमल, यथा—राजकीट, ठाकान, पाटगाडीदार, वृटी दार, कागजो और खिलाशट।

३। चारखान—चारखाना मलमल, यथा—दन्दन-शाह, अनारटाश, कवूतरखीपो, गाकुहा, वच्छे दार और कुण्डोदार।

४। जसदानो—अर्थात् छोटे छोटे वृटेदार मलमल। पहले यूरोपाय वर्णिक इसे नयनमुख कहते थे। वृटेके आकार, उत, फूल इत्यादिका प्रतिभूति तथा उसके वर्ण भेदसे जसदानो का नामभेद हुआ है, उनसेसे शाह वर्णावृत्ति, चाबू, मेल, तेलचा और धुवलोचान सावा रण है।

५। कसोदा या चिकण—मलमलको लाल, नाले, हल्दा और डेंगो रङ्गमें रङ्गा कर उसके ऊपर तसर इत्यादिका फूल छपा रहता है। इन प्रकारके कपड़ेमें कटा डरमी, नौवाडो, यहदो आजिलुला और समुद्र-लहर प्रधान है।

तन्तुवायदण्ड (सं० पु०) तन्तुवायस्य दरडः, ६ तत्।

कपड़े बुननेका यन्त्र, काथा। तन्तुविषया (सं० छा०) तन्तुभिः निर्मितो विप्रदो यस्याः, वद्वो०। कटनीय, लेजा पेट्ट।

तन्तुगाना (सं० म्य०) तन्तुवायनार्थं य. गाना। तनु वयनदण्ड, वर स्थान जहाँ कपड़ा बुना जाता है।

तन्तुवस्तन (सं० वि०) तन्तुभिः मन्ततं व्याप्तं, ३-तत्। न्यूत्रवस्त्र, मिया हुआ कपडा। इनके पर्याय—ऊत उत और म्युत है।

तन्तुमन्ताति (सं० स्तो०) तन्तुनां मन्तानिः, ६-तत्। वयन, बुननेकी क्रिया।

तन्तुभार (सं० पु०) तन्तः एव भारो यत्र, वद्वो०। गुवाकटल, सुपागजा पेट्ट।

तन्त्र (सं० को०) तन्नाति तन्वते वा तन्-इन् वा तन्नि कुटुम्ब धारणे घञ्। १ कुटुम्बकच, कुटुम्बके भरण और पोषण आदि का कार्य। २ वेदकी एक गाथा। ३ मिदाल, मोमामा, विचार। ४ दृष्ट प्रमाण, पक्षा मवृत्त। ५ परिच्छेद, वस्त्र, कपड़ा। ६ पोषण, टथा। ७ भाङ्गन-मन्त्र, भाङ्गने फुंकनेका मन्त्र। ८ प्रघन। ९ कार्य, काम। १० कारण। ११ उगाय। १२ राजममसि-व्याशरो लोक, राजकर्म चार। १३ सैन्य, सेना। १४ अधिकार। १५ राज्य। १६ स्वराज्यचिन्ता, राज्यका प्रवन्ध। १७ इतिकतव्यता, धर्म, फर्ज। १८ सूत्र, दूत। १९ तन्तुवाय, ताता। २० तन्तु, तात। २१ पद, कार्य करनेका स्थान। २२ ममूद, टेर। २३ वस्त्रवयनकी सासय, कपड़े बुननेकी सामग्री। २४ आह्लाद, प्रसन्नता, आनन्द। २५ राज्यशासन। २६ राज्यका नमृद्धिमत्पादन, वह कार्य जिससे राज्यको उत्थति हो। २७ रट, घर। २८ धने, सम्पत्ति, दोलत। २९ अधोपता, परव्ययता। ३० चर्मनिर्मित मूछर रज्जु, चमड़ेको पतलो रस्सो। ३१ दल, संप्रदाय। ३२ उद्देश्य। ३३ कुल, खानदान। ३४ शपथ, कसम। ३५ अधोन। ३६ उभयार्थ प्रयोजक। ३७ विधिके अन्तर्में अद्भ समुदाय। ३८ शिवोक्त शास्त्रभेद, एक शास्त्र, जो गिवके मुखसे कहा गया है। यह शास्त्र प्रधानतः आगम, यामल और तन्त्र इन तीन अंगियोंमें विभक्त है। चाराहोतवके मतसे—

“सर्वत्रैव प्रकल्पैव देवतायां दशार्थवत् ।  
 काचनैव सर्वेषां पुराणपरमैव च ॥  
 ब्रह्मसंसारसंनैव व्याख्येयवस्तुविधा ।  
 सप्तभिर्देवैस्तुल्यदायव तद्विदुर्बुधाः ॥”

छटि, प्रसव, देवतापीथी पूजा सबका साधन, पुराणरथ, मठबन्धन साधन और अतुल्य भ्रान्तयोग, इन सात प्रकारके लक्षणके रहने पर उक्तको ध्यायन कहा जा सकता है ।

“वर्षेण प्रतिगण्य मन्त्रमिषेन एव च ।  
 देवदायाव संस्कारं टीर्थागारैव वर्षेणम् ॥  
 सैषैवभ्रमरमन्त्रेण विप्रसंस्कारमेव च ।  
 संस्कारमेव मृत्यायां वस्त्रापायैव मिषेन ॥  
 अतुल्यविदुषामाव उक्तं ब्रह्मवैदिकम् ।  
 संस्कारं ज्योतिषाद्यैव पुराणपरमानव च ॥  
 योगैव लक्षणैव मृत्यायां परिमाणम् ।  
 कौवापीथ्येन वाक्यानां वरदायाव वर्षेणम् ॥  
 इत्येकैव वाक्यानां कौमुदीवैव उक्तम् ।  
 रात्रयैः शतयैः तुल्यसंस्तवैव च ॥  
 अथहाटः कपठे च तथा ध्यायामर्षवत् ॥  
 इत्यादिब्रह्मैतुर्ब्रह्मैतन्मन्त्रिकमिषीवते ॥”

छटि, प्रसव, मन्त्रमिषेण, देवतापीथा स स्नान, तोयवर्षेण, पाचनबन्धन, विषय स्नान, मृत्पादिका स स्नान, स तन्त्रमिषेण, विदुषामावो उत्पत्ति, अथ वर्षेण, ज्योतिष-स स्नान, पुराणाद्यान्, शोपकचन, इत आद्य, शौचागोचरवर्षेण, श्री-पुण्यका लक्षण राजबन्धन, दानबन्धन, नूनबन्धन, अथहाट और ध्यायामिष विषयकी वर्षेणा इत्यादि लक्षणके रहने पर उक्तको तत्र कहा जा सकता है ।

“यदित्थं ज्योतिषावशावे निरहृम्यरीचवत् ॥  
 अथसर्वं वर्षेयैरो ज्योतिषैरुत्तरेव च ॥  
 तुल्यवर्षेव संश्रयायां वाक्यस्याहवकम् ॥”

छटितन्त्र, ज्योतिष-वर्षेण, निरहृम्य अहवकम्, वर्षेमेव, ज्योतिष और तुल्यवर्षे, ये पाठ ध्यायनके लक्षण है ।

वापसीतर्क मन्त्रे समस्त तन्त्र प्रोक्त द्वि-  
 कोक्त ब्रह्मणोक्त और वातात्मकोक्ति ८ काष्ठ तथा भावतर्क  
 १ काष्ठ मात्र हैं । इति—

“जायते त्रिविधं प्रोक्तं अनुसैधेयं स्वरूपं ॥  
 अतनुवस्तु-वर्षेण प्रोक्तं भावतो वायव्यका ।  
 वायव्यक तथा तन्त्रं तेषां भेदात् पूषकं वृषकं ॥”

ध्यायन तोल प्रकारका है, शोभा ईश्वर है । अथ मो-  
 चार प्रकारका है—धागम, कामर, ध्यायन और तत्र ।  
 महाविद्यारत्नसंग्रहमें लिखा है—

“अनुसैधेयं तन्त्राणि वायव्यदीनि वारंति ।  
 अहवकमीह वाप्ये विष्णुमन्त्राद्गुण्ये ॥  
 अतनुवैव तन्त्राणि क्वचितानि च वानि च ।  
 पावकमीहवायैव निरहवकमीह स्मरति ॥”

ध्यायन ध्यायिको से कर ईह तत्र विष्णु ज्ञाना भूमि  
 पर फलदायक है । अतनुवैव ध्ये ध्ये तत्र अहवक यद्ये हैं, ये  
 पावक मोहनके लिए हैं अतने कुछ फल नहीं होता ।  
 भेद्यः । महाविद्यार्थ तत्रमें महाविद्येन कहा है—

“अधिकारवर्षेणार्थां विद्यादीनां श्रेयसि ।  
 मेधामेधाविचारार्थां च छटिः शौचवर्षेण ।  
 च संश्रयाणैः स्मृतिमिषिषिद्विदुषां नयेत् ॥  
 वर्षं सप्त पुनः सप्तं सप्तं सप्तं सप्तोपकते ।  
 विद्या व्यागवर्षेण कर्त्तव्यं ध्यायनः श्रेयः श्रेयः ॥  
 ध्यायितुस्तुल्यवर्षेण सप्तोपकते पुनः श्रेयः ॥  
 ध्यायनोपविषादेव कर्त्तव्यं वर्षेण वृषेण ॥” २१० ।

अन्त्रिके दोयने दोन ब्राह्मण अत्रियादिके पवित्र और  
 अपवित्रका विचार न रखेया । उसलिये वैदिकहित कर्म  
 द्वारा ये किस तरह सिद्धिमान करेंगे ? ऐसी प्रश्नकासे  
 रक्षितमहितादिके द्वारा मो मानकीके उक्तको निधि नहीं  
 होये । श्रेयः में सत्य हो कहता है कि अन्त्रियुग्में  
 ध्यायनमार्गके सिवा और कोई गति नहीं है । श्रेयः ।  
 श्रेयः श्रेयः और पुराणादिमें कहा है कि, अन्त्रियुग्में  
 साधक तन्त्रोक्तविधान द्वारा देवीकी पूजा करेगी ।

“अथवायव्यवर्षेण शोच्यवर्षेण प्रवर्षेण ।  
 च सप्त वारंश्रेयसि वर्षं करे च संतव ॥”

अत्रिबालमें जो ध्यायन ( तन्त्र ) उक्तकर्म करके पद्य  
 मार्ग ध्यायनमान करेया संवत्सुच जो उक्तको शक्ति  
 नहीं होयेगी ।

“निवीर्यः शौचवर्षेण विषयीयैवा इव ।  
 उक्तवैव अथवा वायव्य वर्षेण वृषेण वृषेण ॥

नाम	श्लोकसंख्या
प्रत्यङ्गिरातन्त्र	८८००
महालक्ष्मीतन्त्र	५५०५
देवीतन्त्र	१२०००
त्रिपुरार्णव	८८०६
सरस्वतीतन्त्र	२२०५
आद्यातन्त्र	२२८१५
योगिनीतन्त्र ( १म )	२२५३२
योगिनीतन्त्र ( २य )	६३०३
वाराहीतन्त्र	"
गवाक्षतन्त्र	६५१५
नारायणीतन्त्र	५०००३
मृडानीतन्त्र ( १म )	४४८०
मृडानीतन्त्र ( २य )	३०००
मृडानीतन्त्र ( ३य )	३३०

वाराहीतन्त्रमें लिखा है—इनके सिवा वौड और कपिनोक्त अनेक उपतन्त्र हैं। जैमिनि, वसिष्ठ, कपिल, नारद, गर्ग, पुलस्त, भार्गव, सिद्ध, याज्ञवल्क्य भृगु, शुक इहम्पति आदि मुनियोंने बहुतने उपतन्त्र रचे थे, उनको गिनतो नहीं हो सकती।

हिन्दुओंके तन्त्र जिस प्रकार शिवोक्त हैं, वौडोंके तन्त्र भी उसी प्रकार बुद्ध द्वारा वर्णित हैं। वौडोंके तन्त्र भी संस्कृत भाषामें रचे गये हैं। वौडतन्त्रोंमें ये तन्त्र जो प्रधान हैं—१ प्रमोदमहायुग, २ परमार्थसेवा, ३ पिण्डोक्तम, ४ सम्पुटोद्भव, ५ त्रैलोक्य, ६ बुद्धकपाल, ७ सम्बरतन्त्र वा सम्बरोदय, ८ वाराहीतन्त्र वा वाराहीकल्प, ९ योगास्त्र, १० डाकिनीजाल, ११ शुक्लयमारि, १२ क्षणायमारि, १३ पीतयमारि, १४ रक्तयमारि, १५ श्यामयमारि, १६ क्रियासंग्रह १७ क्रियाकन्द, १८ क्रियासागर, १९ क्रियाकल्पद्रुम, २० क्रियार्णव, २१ अभिधानोत्तर, २२ क्रियासमुच्चय, २३ साधनमाला, २४ साधनसमुच्चय २५ साधनसंग्रह, २६ साधनतन्त्र, २७ साधनपरोक्षा, २८ साधनकल्पलता, २९ तत्त्वज्ञान, ३० ज्ञानसिद्धि, ३१ गुह्यासिद्धि, ३२ उद्यान, ३३ नागार्जुन, ३४ ३४ योगपीठ, ३५ पीठवतार, ३६ कालवीरतन्त्र वा चक्ररोपण, ३७ वल्लवीर, ३८ वल्लसत्व, ३९ मरीचि, ४०

तारा, ४१ यच्चधातु, ४२ विमलप्रभा, ४३ मणिकर्णिका, ४४ वैलोक्यविजय, ४५ सम्पुट ४६ मर्मकान्तिका, ४७ कुक्कुभा, ४८ भूतडामर, ४९ कालचक्र, ५० योगिनो, ५१ योगिनोन्धार, ५२ योगिनीजाल, ५३ योगास्त्रपोठ, ५४ चट्टामर, ५५ वसुधारासाधन, ५६ नैरास्य, ४७ डाकार्णव, ५८ क्रियासार, ५९ यमान्तक, ६० मञ्जुश्री, ६१ तन्त्रसमुच्चय, ६२ क्रियावमन्त्र, ६३ हयग्रीव, ६४ मञ्जीर्ण, ६५ नाममद्भोति, ६६ अमृतकर्णिकानामसद्भोति, ६७ गूट्रोत्पादनामसद्भोति, ६८ साधाजान, ६९ ज्ञानोदय, ७० वमन्ततिनक, ७१ निष्पन्नयोगावर, और ७२ महाकालतन्त्र।

इनके सिवा हिन्दुओंके तान्त्रिककवचकी भांति नेपाली वौडोंमें भी अमरय घारणोसंग्रह है। वौडतन्त्रोंमें बहुतांका चीन और तिब्बती भाषामें अनुवाद हो गया है। तिब्बतमें तन्त्र ऋग्यजुर्के नाममें प्रसिद्ध हैं। ऋग्यजुर् ७८ भागोंमें विभक्त हैं। इनमें २६४० स्वतन्त्र ग्रन्थ हैं। उनमें प्रधानतः वौडोंके गुप्त क्रियाकाण्ड, उपदेग, स्तव, कवच, मन्त्र और पूजाविधिका वर्णन है। शिवोक्त तन्त्र शाक्त, शैव और वैष्णवके भेदमें तीन प्रकारके हैं। तान्त्रिक गण स्वसंप्रदायशुक्त तन्त्रके अनुसार हो चल करतें हैं।

उत्पत्ति। तन्त्रशास्त्रकी उत्पत्ति कबमें हुई है, इसका निर्णय नहीं हो सकता। प्राचीन स्मृतिमंडितामें चौदह विद्याओंका उल्लेख है, किन्तु उनमें तन्त्र गृहीत नहीं हुआ है। इसके सिवा किमो महापुराणमें भी तन्त्रशास्त्रका उल्लेख नहीं है, इत्यादि कारणोंसे तन्त्र शास्त्रको प्राचीनतम आर्यशास्त्र नहीं माना जा सकता। तन्त्रोक्त मारणोच्चाटन-वयोकरणादि आभिचारिक क्रियाका प्रसङ्ग अथर्वसंहितामें पाया जाता है सही किन्तु तन्त्रके अन्यान्य प्रधान लक्षण नहीं मिलते। ऐसी दृश्यामें तन्त्रको हम अथर्वसंहितामूलमें नहीं कह सकते। अथर्ववेदीय ऋषिंहितापनोयोपनिषद्में सबसे पहले तन्त्र का लक्षण देखनेमें आता है। इस उपनिषद्में मन्त्रराज-नरसिंह-अनुष्टुभ प्रसङ्गमें तान्त्रिक मालामन्त्रका स्पष्टांशभास सूचित हुआ है। शङ्कराचार्यने भी जब उक्त उपनिषद्के भाष्यकी रचना की है तब निःसन्देह वह ईसाको ७वीं शताब्दीसे भी पहलेका है। हिन्दुओंके

धनुष्मन्मे दोषतस्तीदी रचना हुई है। ईसाको ८ वीं शताब्दीमें ११ वीं शताब्दीके मोतर बहुतसे दोष तस्तीका तिष्ठतोय भाषामें धनुष्मन् कृपा था। ऐसो समयमें मूल शोधतस्ती ईसाको ७वीं शताब्दीके पहले पोर उनके बादमें विद्वत्तस्ती शोधतस्तीके भी पहले प्रकाशित हुए हैं। इसमें मन्दिर नहीं। शोधतस्तीमें ३३ शब्दोंके २४ अक्षरोंमें लिखा है—**दस्युष्मन्मे शिव दिव्या सुम कर मन्दिर शिवनिन्दक टस पोर उसके समर्थनकारी ब्राह्मणोंको धमिलण्यात करति पर धनुष्मि भी इस प्रकार धमियाप दिया था—**

“नवप्रवचन है न पैष वान् मममुद्रता ।  
 वाक्किन्वति मन्नु नक्षत्राचारिगिष्म ॥  
 मरुमीवा मुद्रुचिो म्मन्वराशिवादिन ।  
 शिवन्नु मि।टीकां नम देव सुगवम् ॥  
 म्मन् न माद्वर्षे नद न्दु वरिक्किन्व ।  
 केन्नु विरव पु वान्त वान्मन्मिगा ॥”

जो महादेवका मत धारण नहीं पोर जो उनके धनुष्मन्में जोसे है म्मन्मन्त्र प्रतिज्ञानकारी पोर पाण्डुकी नाममें प्रसिद्ध है। शोषाचारकोन पोर म्मन्मुद्रि स्थिति को अग्रामन्त्रकारो जो कर उन शिवदीपानि प्रवेग कर, ३३ श्लोकों की श्लोक पाठनीय है, तुम शोषानि १।३३के अयादात्म्य ब्रह्म, नैव पोर ब्राह्मणोंको निन्द्य को है इसलिये तुम शोषोंको पाण्डुशानित कहा है।

पद्मपुराणके पाण्डुोपनिषद् अक्षरोंमें लिखा है—  
 शोषोंको म्मन् करकेके लिये जो शिवको दुर्हाई दे कर पाण्डुोपनिषद्में धपना मत प्रकट किया है। उक्त मान मत पोर पद्मपुराणमें शिव तरह पाण्डुोपनिषद्का उल्लेख किया गया है तस्तीमें शोषो शिवोक्त उपदेश कहा गया है। शोषोक्त शैवधर्मके पन्थोंके पङ्क्तिमें मालूम होता है कि शैवधर्मके भी शक्तिशक्तोंको पाण्डुोपनिषद् नामके सम्बोधन किया है। ईसा केतिमें भागवत पोर पद्मपुराण के रचनाकारोंमें जो शक्तिमत प्रचारित हुआ था, वह एक तरहसे धक्का किया जा सकता है। शोष-परि ब्राह्मण पाण्डुष्मन् पोर धनुष्मन्पुराणमें भारतमें पा कर लहाई पन्थ म पदादाका विवरण किया है, किन्तु शक्तिशक्तोंके विषयमें कुछ नहीं लिखा है। १० ८वीं

शताब्दीमें मोटदेयमें शोधन व धनुष्मन्दिन हुए थे। किन्तु १० ७वीं शताब्दीमें धनुष्मन्पुराणमें शान्मन्कारके शोध शोषोंका उल्लेख करने पर भी तस्मयापका शोर् उल्लेख नहीं किया। अब ८वीं शताब्दीमें मूल पन्थका धनुष्मन् कृपा है, तब मानना पड़ेगा कि, म्मन्त व धपन्म जो हमने पहले रचे गये हैं; हाँ, यह ही सकता है, कि उन समय उनको प्रतिधि नहीं हुई होती धपना शोषाचारके समयको म्मन्त मत मान कर पक्क नहीं किया होगा। दासिचाम्मन्में धनुष्मन्का विषय है कि पश्चेत नादो म्मन्तुराचार्यमें ही शक्तिमतका प्रचार किया या पोर इसी कारण वे मायाबाहो नाममें प्रसिद्ध हैं। किन्तु म्मन्तुराचार्यको हम तस्मन्तका प्रचारक किन्तो ज्ञानतमें भी नहीं मान सकते। पंचतर्क देखो।

दासिचाम्मन्-त श्रावणमें लिखा है—शोष, शिव पोर शान्मन् इन तीनों टैगके शोष जो म्मन्तुराण है। किन्तु हम शोषकेको जो प्रधानमात्र वा शक्तिशक्तोंको उन्मन्मूिम मान सकते हैं। शक्तिशक्ति शैव, शैवधर्म पोर शान्त ये तीन न महासमेट करने पर भी शक्तिता मन्तो शान्त हैं। शोष शक्तिशक्तोंको भी हम एक शिवायने शान्त कह नेंको शान्त हैं। शान्त देखी।

ब्रह्मन्में शिव प्रकार शोषोंका प्रभाव है, भारतमें पोर शोषोंको भी कहा नहीं है। शिव समय शोधधर्म शोषमम होता पा रहा था, उस समय शोषमें शक्तिशक्त मन्तका प्रचार हुआ था। इस समय शक्तिमें भी शिवोक्त त व पाये जाते हैं, उनको रचनाप्रकारोंको पयानोचना करनेके उद्देशमें जो कारण होते है कि, वे शोषकेयमें रहे गये थे। तन्त्रमें शोषो पक्क शब्दमाका स्थिति हुई है, वह भी शपूर्व शोष वा म्मन्तदेयमें प्रचलित थे। बरदात व शर्वोहारत व पादि त दोनों शब्दमानाकी शोषो निष्कन्तपत्नी शिवो है शोषो भी हम ब्रह्मन्त पक्क रहे शिवा पन्थ शोर् निषि नहीं मान सकते। त शोष शिवि धव शिव ब्रह्मन्में जो प्रचलित है। इस शिविको उद्धार या शोध भी शर्वने अयादा पुरानी नहीं कह सकते। शक्तिमें शव रक्षमें शोर् म्मन्त नको रर आता कि उक्त प्रचारको निषिधे त व मो उनके बाद रहे गये हैं। शोषकेयमें धमियाका नाम बहुत प्रसिद्ध



हे। ये वद्वानो ये, देमाको ११वो शताब्दीमें इन्होंने निज्जनेमें जा कर तांत्रिक धर्म का प्रचार किया था। यह सम्भव नहीं कि, इनसे भी पहले किसी वद्वधानीने जा कर वहां धर्म प्रचार किया होगा। अतएव सम्भव है कि वद्व वा गौडसे ही नेपाल, भूटान, चीन आदि दूर देशोंमें तान्त्रिक धर्म विस्तृत हुआ था।

गुजरातो भाषामें लिखे गए 'भागमप्रकाश'में लिखा है हिन्दू राजाओंके राज्यकालमें वद्वानियोंने गुजरात उभोड़, पावागढ, चडमटावाट, पाटन आदि स्थानोंमें जा कर कालिकासूक्ति स्थापित की थी। वद्वतमें हिन्दू राजा और प्रधान प्रधान व्यक्तियोंने उनकी संवदीक्षा ग्रहण की थी। (भागमप्र० १०) वास्तवमें देखा जाय तो फिनहान जो वद्वान आदि देशोंमें संवदगुरुका प्रचलन है वह भी तांत्रिकोंके प्राधान्य कालमें प्रचलित हुआ था। ऐसा संवदगुरुका नियम पहले न था। वद्वानो तांत्रिकोंने जो इस प्रथाका प्रथम प्रचार किया था। उनकी देखा-देखी भारतके नाना स्थानों वा नाना मंत्राचारोंमें इस प्रकारके संवदगुरुकी प्रथा चल पड़ी है।

सभी तंत्र प्राचीन नहीं माने जा सकते। त्यागिनी-तंत्रमें कोचराजवंशके प्रतिष्ठाता विष्णुमिंडका परिचय दिया गया है। विष्णुभारतंत्रमें निवानन्दकी जन्मकथा का वर्णन किया गया है। इसलिए ऐसे तंत्र देमाकी १५वीं शताब्दीसे वाटके हैं, इसमें मन्देह ही का १ वद्वालमें महानिर्वाणतंत्रका सर्वत्र आदर होता है, किन्तु बहुत जगह किन्त्यदन्ती है कि, महात्मा राममोहन रायके गुरुने इस ग्रन्थकी रचना की थी। शक्तिरत्नाकरमें वद्वनिर्वाणतंत्रका उल्लेख है। किन्तु नितान्त आधुनिक प्राणतोपिणोके सिवा अन्य किसी प्राचीन वा आधुनिक तंत्रग्रहमें महानिर्वाणतंत्रका नामोर्षेण न रहनेसे इसका आधुनिकत्व ही प्रतिपन्न होता है। और सेवतन्त्रमें लंङ्ग, अंग्रेज इत्यादि शब्दों द्वारा यही प्रमाणित होता है कि, भारतमें अंग्रेजोंके आगमनके बाद उक्त तन्त्रोंकी रचना हुई है।

प्रतिपाद्य विषय। तंत्रोंमें प्रातःस्मरण, स्नानविधि, विपुण्ड्र धारण, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, प्राणायाम, मंत्रा, जप, पुरश्चरण, कराङ्गन्यास, अन्तरमातृका, वहिर्मा-

तृका, चितान्यास, नामादिविद्या, निर्यादिविद्या, मन-विद्या, तत्त्वन्यास, हारपूजा, तर्पण, शिवविद्यान्यास, पावननिर्णय, निर्यपूजा मर्याद्व्यं तोर्यमंस्कार, शुर्वादि पूजन, दीक्षा, पूर्णाभिषेक, प्रायश्चित्त, निर्यपुष्यपूजा, दमनकपूजा, यमनपूजा, ओचकपूजा, दीक्षाकाल दीक्षा भेद, सर्वतोभद्रादिवकनिर्णय, यंत्रनिरूपण, पुन्याह वाचन, नान्दोयाह, नययोनि, कौनयाह, संतगोधर, मन्मोहार, नामपारायण, तत्त्वपारायण, पञ्चाङ्गन्यास, महा षोढान्यास, महान्यास सगोचनन्यास, श्रीभास्ववर्द्धन न्यास, अन्वैटिक्रिया, विधिधमन्त्रा, अथपूनादि निर्णय आदि नाना विषयोंका वर्णन किया गया है।

मनुके टीकाकार कञ्चूकभट्टने लिखा है—  
 "श्रित्तो तान्त्रिकैस्त्वं द्विविधा श्रुतिरिति १:।"  
 वैदिकी और तान्त्रिकी इन दो श्रुतियोंका निर्देश है। इसलिये कञ्चूकभट्टके मतमें, तन्त्रकी भी श्रुति कथा जा सकती है। आदियामनके मतमें—

"आगतः शिववक्त्रेभ्यो ग्णोपि गिरिशमये।  
 मग्न तस्य इदमगोत्रे तस्यदागम उच्यते ॥"  
 हे दुर्गे ! शिवसे मुखमें निकल कर तुम्हारे हृदयपद्ममें मग्न हुआ है, इसीलिये इसकी आगम कहते हैं।

कुलार्णवके मतमें—  
 "कृते श्रुत्युक्त आचारैस्तादा स्फुटिसम्पन्नः।  
 द्वारे तु पुगानोकं ह्यौ आगमैरेव न ॥"  
 विष्णुयामनमें वर्णित है—  
 "आगमोपविधानेन ह्यौ देवान् यजेत् शुभीः।  
 नदि देवाः प्रवीदन्ति ह्यौ सान्यविधानतः ॥"

वृद्धिमान् मनुष्य कलिकालमें आगमोक्त व्यवस्थासे अनुसार हो पूजा करेंगे; अन्य नियमसे पूजा करनेमें देयगण प्रसन्न नहीं होते।

रुद्रयामनके मतमें—  
 "अत्रमन्त्रैर्भवेद्दीक्षास्त्रागमोक्त श्रुतिभिः।  
 यां कृत्वा कलिघाटे च सर्वाभीष्टं लभेत् ॥"

आगमोक्त पञ्चमंत्र द्वारा दीक्षा लेवे, इसके लेनेसे मनुष्यकी कलिकालमें सर्व अभीष्टकी सिद्धि होगी।  
 ईशा। तंत्रोंके मतमें, सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करने को ही तांत्रिक कार्योंमें हाथ डालना चाहिये, बिना

दोहाके तास्त्रिकवायंमें परिचार नहीं है ।

गोतमोयत त्रिमं लिखा है—

“द्विजात्प्रमृगपक्षीतानां त्वचर्षाचरवापिपु ।

ववापिचारी मास्त्रोऽथ धन्वोपाचरवर्षर्षु ॥

तवाचरौक्षितामास्तु संरतंवाचंवापिपु ।

वापिचरौऽस्तवतः कुर्वाद्यान्ध्रं क्षिप्रंरक्तुतम् ॥”

त्रिमं द्विजातियोंको उपनयन बिना हुए पशुपयन और मन्वापूजा आदि प्रकारमें परिचार नहीं होता, जसो तरङ्ग भदोक्षित आश्रितियोंको म त्त त और पूजादि कर्ममें परिचार नही होता । इसो लिए मियस कृत होना पावश्यक है । उक्त त त्रिमं अर्थात्त्रिमं लिखा है—

“वराहो विवरदाभेदेऽपि सुपुत्रं वाचकन्वति ।

तेव वीजेति विचराया मुनिविरतंरवाते ॥

वां विना वै व पिदिः रवात्म्यो बर्षवतेऽपि ॥”

दिव्यता देवी और पापसन्तति भाय करतो है इस लिए त तपारन मुनि द्वारा यह दोहा नामसे प्रसिद्ध है । इससे बिना सो जय मंत्र पढ़नेसे जो सिद्ध नहीं होतो ।

दोहा छेनेके लिए सद्गुरुको पावश्यकताहै । दोहा गुरुका लक्षण इस प्रकार है—

“ज्ञातो ज्ञाताः कुर्वन्वच इत्यन्तःकरणं चरा ।

पंचतरुपर्णको वस्तु वदुष्टः व प्रकीर्तितः ॥

विदोऽवापिदि वेदं वरतो बहुभिः क्षिप्रवल्गुः ।

वज्रतपी देववधारा सद्युष्टः कविता मिथे ॥

वस्तुतः धर्मते वाचर्षं व्रापि काण्डं मपोहरत् ।

तर्षं कर्मं वचं व्रापि व एव सद्गुरुत्वं वा ।

वदा व क्षिप्रवोचैव विदवा व ववाकुक्कः ।

विप्रसस्तुभे एकां सद्गुरुत्वंमते तुपे ॥

परमाचो वदा एतिः वरार्णो प्रकीर्तितम् ।

गुरुराज्ञामुने नतिर्धरैव वदुष्टः एवः ॥”

( वाचकव्याकरण १४ )

ज्ञान, दान, कुर्वीन, उदात्तःकारण, पञ्चतन्त्रके पूजक, सिद्ध, प्रसिद्ध बहुमिथपाकनकारी, वज्रकारी, देवयज्ञिसम्बन्ध, शास्त्र, मनोहर, पशुत और त तवद्यत वाक्कवारी त त्रम तको जो मनुमानसे ज्ञाते हैं, मिय वीचमें जो सबंदा जो हित करने रहते हैं, निपञ्चा-तुपधमें समर्थ हैं, सदा परमात्ममें द्रष्टि रहते हैं और

जो सदा परमात्मतत्त्व खोजन करते रहते हैं, गुरुके पाद-पद्ममें बिजली पचक मूर्ति हो, लक्ष्मीको सद्गुरु समझना चाहिये । इसलिये जसो प्रधान त त्रिमं लिखा है—

“अद्यं क्षिप्रान्तरव ववाचनसम्बन्धः ।

वेनसुप्यीक्षितं वैव तस्ये श्रीगुरवे ववा ॥”

अज्ञानरूप तिमिररोमसे जो धन्व वृथा है, ज्ञानरूप पशुपको महाकाके द्वारा जो लक्ष्मी पन्थता गष्ट कर ज्ञानमीतको जोख सके हैं, ऐसे शोगुरुको ममप्यार है ।

ऐसे गुरु हैं जैसे मियकी अदरत है । गोतमोय त त्रिमं लिखा है—

‘ विष्वाः कुर्वीवः सुवराया सुवर्णावराववा ।

अनीतवेदकुक्कः विमुमासुदिते रतः ॥

वर्षविरदंरुतां व सुव-सुवर्षवे रतः ।

चराः काकार्यतस्वो वदरोते ववाचवः ॥

दित्तो प्रथिनां मिथे वरलोक्षर्षर्षर्षुदः ।

वात्स्य-वाचवदुमिगुवदुसुववे रतः ॥

अभिरवर्षेनस्ववाणी मियाध्वानवतः ॥

विदोऽविरो वितावनी वितमोदविमंरतः ॥

गुरुरगुप्तुगुप्तु तत्कञ्जत्रावैव मथियात् ।

एवाविरो मवेपिष्मथिवगुतो गुरुत्म्बरः ॥

वर्षेवैव मवेचोमो निरा वर्षगुपान्वितः ।

वर्षवैव तु राजन्वो वैरवस्तु वरौक्षिनिः ॥

अपुमिथैवैः द्युः मथिया विष्मयेववा ।

वरा विष्मो नवैव पोव कुववा वदुष्टस्तरः ॥

कृपवा वरा धन्वगु वीहाका विविमाचरेत् ।” (१ अन्ववा)

मिथ कुर्वीन, उदात्तःकारण सुवर्षावपर, वैदपाठमें निपुण वितामाताकी महत्त्वमें तत्पर, वचंश्र, धार्मिक गुरुवैवार्थं पगुरु, सर्वदा तत्रमाकका यवाचं मम व इक्ष्माय और इक्ष्चित प्राविपीका सर्वदा महानकारी, परमोवर्षी महत्त्वके लिए वचंकारी कायमनीवाक्वसे वाचकीवन गुरुवैवार्थं निरत, अनिष्ठ वसंत्वामकारी, सर्वदा तत्रातुताममें तत्पर, त्रिभिन्दिव, पादस्वप्रपकारी, मोह और ममरको कोतमीवार्थं, गुरुपुत और गुरुके परि वारवर्षी गुरुके समान मूर्ति करनीवार्थं विमा मिथ होना चाहिये ; धन्व पञ्चार मिथ गुरुके लिए सुवृष्टावक है । सर्वगुपान्वित ज्ञाद्यव एव वर्षर्ष, अमिय दो वर्षर्ष

वेद्य तीन वर्षमें और शूद्र चार वर्षमें शिष्य होनेके उप-  
युक्त होता है। शिष्य उपयुक्त होने पर सद्गुरुको चाहिये  
कि, उससे कृपापूर्वक सम्पूर्ण दीक्षाको विधियोंका  
पालन करावें।

उक्त लक्षणाक्रान्त होने पर भी सबसे दोषा लेनेको  
विधि नहीं है। योगिनीतन्त्रमें लिखा है—

“पितृर्मन्त्रं न गृहीयात् तथा मातामहस्य च।

सौदरस्य कनिष्ठस्य वैरिपक्षाधितस्य च ॥”

पिता, मातामह, सहोदर वा अपनी अपेक्षा छोटी  
उभवासे तथा शत्रुपक्षवाचसे मत ग्रहण न करना  
चाहिये।

कामाख्यातंत्रके मतसे—

“अर्थं स्रज तथा रुद्रं स्वल्पज्ञानयुतं पुनः।

सामान्यकौलं वरदे वर्जयेन्मतिमान् सदा ॥

उदासीनं विशेषेण वर्जयेत् सिद्धिकामुक्त्तः।

उदासीनमुखाद्दीक्षा वन्त्या नारी यया प्रिये ॥

अज्ञानाद्भयं वा मोहाद्दुदासीनस्य पामरः।

अभिषिक्तो भवेद्देवि विप्रस्तस्य पदे पदे।

सर्वं हि विफलं तस्य नरकं याति चान्तिमे ॥” (८७०)

मतिमान् सिद्धिकामुक शक्तिको चाहिये कि, वह  
धन्या, लूसा, रुद्र, अल्पज्ञानी, सामान्य कौल, विशेषतः  
उदासीनको परित्याग कर दे। क्योंकि वन्त्या नारी  
जैसी है, उदासीनके पास दीक्षा लेना भो वैसा ही है।  
यदि बिना जानि किम्बा मोहसे उदासीनसे दोषा ले ली  
हो तो उसको पदपदमें विघ्न हुआ करते हैं। उसके  
सभो कार्य विफल हैं। अन्तको वह नरक जाता है।

गणेशविमर्षिणीतंत्रके मतसे—

“यत्वेर्दामा पितुर्दाक्षा दीक्षा च वनवासिनः।

विदिक्ताश्रमिणो वीरान न सा कल्याणदायिका ॥”

यति, पिता, वनवासी और गृहस्थायम परित्यागसे  
दीक्षा लेना मङ्गलजनक नहीं है।

रुद्रयामलमें लिखा है—

“न पत्नीं वीक्षयेद् भर्तान न पिता दीक्षयेत् सुताम्।

न पुत्रश्च तथा भ्राता भ्रातरं न च वीक्षयेत् ॥

सिद्धमन्त्रो यदि पतित्स्वदा पत्नीं च वीक्षयेत्।

शक्तिवने वरारोहे-न च सा-पुत्रिका भवेत् ॥”

पति पत्नीको, पिता कन्या वा पुत्रको, भ्राता भार्दकी  
दोषा न देवें। पति पिद्धमंत्र होने पर पत्नीको दक्षित  
कर सकते हैं; क्योंकि उनकी शक्तिवने कारण वर कन्या  
नहीं समझो जाते।

गणेशविमर्षिणीके मतसे—

“प्रमादाद्वा तयाज्ञानात् पितुर्दाक्षा प्रमाणम्।

प्रायश्चित्तं ततः कृत्वा पुनर्दाक्षा प्रमाणम् ॥”

प्रमाद वग वा अज्ञान वग यदि पितासे दोषा ला  
जाय, तो प्रायश्चित्त करके पुनः दीक्षा लेनी पड़ती है।

कृष्णानन्दने तंत्रमारमें लिखा है—

“वैष्णवे वैष्णवो प्राग्ः शैवे शैवश्च शक्तिः।

शैवः शक्तिः सर्वत्र दीक्षास्वामी न संशयः ॥”

वैष्णवका वैष्णव तथा शैवका शैव और शक्त शक्त  
है। शैव और शक्त सर्वत्र ही दीक्षागुरु हो सकते हैं।

देगमेदसे भी गुरुप्रतिं तारतम्य होता है। बृहत्सूक्त-  
मोयतंत्रके मतसे—

“पादचाला गुर्वो मुग्धा दाक्षिणात्याञ्च मन्थमाः।

गौडदेशोद्भवा ग्यूना कामरूपोद्भवाभ्यवा।

कलिगाथाय च प्रोक्षा अपरास्तं द्विनः; स्तृताः ॥”

पायात्य वैदिक गुरु प्रधान, दाक्षिणात्यमें मन्थम,  
गौड़ और कामरूपके ब्राह्मणगण उनकी प्रोक्षा न्यून,  
कलिगादि अधम हैं।

विद्याधराचार्यद्वैत जामनवचनके मतसे—

“मध्यदेशे कुरुक्षेत्रं लाटकौरुणकनाथाः।

अन्तर्वेदिप्रतिष्ठाना अवन्ताय गुन्तमाः ॥

गौड़ा शास्त्रोद्भवाः सौग मागथा केरलान्तवा।

कोशलस्य दशार्णव गुरवः सप्त मध्यमाः ॥

कर्णाट-नर्मदा-रेवा-कच्छतीरोद्भवास्तथा।

कलिगाय कम्बलाय दाम्बोजाश्रयमा मताः ॥”

मध्यदेशमें कुरुक्षेत्र, लाट कौरुण, अन्तर्वेदि, प्रतिष्ठान  
और अवन्ति, इन स्थानोंके गुरु उत्तम वा श्रेष्ठ, गौड़,  
शात्व, सौर, मगध, केरल, कोशल, दशार्ण, इन सात  
स्थानोंके गुरु मध्यम तथा कर्णाट, नर्मदा, रेवा और  
कच्छतीरवासी, कलिङ्ग, कम्बल और काम्बोजवासी गुरु  
अधम होते हैं।

तात्क दीक्षा वा मंत्रगुरु ग्रहण करनेमें स्त्री शूद्र

ममीको समान आचिचार है। शीतमीयतं दशै प्रारभ्यते  
श्री सिखा है—

"हृदयमाधिधारणं नाटीनां योग्य एव च ॥"

हृदयसामानिनीतं दशै मतये—

"हृदयानां इत्यत्र देवि चतुर्दशपर्यन्तं त्रिवे ।  
साद्विन्दुसममुच्च शीनां चैव वरायवे ॥  
पत्नी वराहा च वा देवि ह्युत्तरेष्वर्था न संशयः ।  
हीमकार्ये बहुकामि ह्यः स्वदां न चोत्तरेत् ॥  
अग्नेभ्यो कारित ह्ये विपरीतं विद्या त्रिवे ॥"

हे देवि ! गुरु और शिष्यीका प्रथम शीतमस माद  
विन्दुसमायुक्त चतुर्दशपर्यन्त है। गुरुको मनमें भी प्लाहा  
उच्चारण न करना चाहिये। शीत-आयुर्धर्म भी गुरु प्लाहा  
उच्चारण न करे। विपरीतज्ञ सिखा गुरुको और शीर्ष  
भी मन्त्र न उच्चारण करना चाहिये।

शोषत दशै मतये दीक्षायाश्च इत्य प्रकार है—

'हृदयसमं वाहयन्तां ह्येव चो ह्यनेदशै ।  
पूर्वमादयचतुषे शिष्यतापरिहृत्युषे ॥  
अथवा ह्यनुत्पत्तौ रैरमां वा इत्येतये ।  
आसीत्पुत्रोर्नमं वात्त वाग्दशैव प्रथि ॥  
इते वासि विद्वेषेन चार्थिके च विद्वेषताः ।  
महात्मना विद्वेषेण बर्धनावांशित्तये ॥  
रीक्षिनी अथय्यां च अग्निश्च शोषतप्रथम् ॥  
हृदया अतिसा चैव शीतानुसममुच-ठे ॥"

हृदयसमको शोषमी निशि शुभ मन्त्र और शुभ दिन  
मित्रतारादिबुक्त पूर्वमादयद, अनुत्पत्ता वा रैवती मयसमें  
चन्द्रप्रदक्षिणे मन्त्र, आग्नि, वा आर्ति च मासमें दीक्षा  
दिना प्रथम है। विधिपत्तः धर्म-पद-आमकी विधिसे  
निए महाशमी परयमा प्रथम है। रीक्षिनी, अथवा,  
शोषी, अग्नि, अन्तरायाका, उत्तरमाद्रुपट, उत्तरकक्षगुनी,  
सुधा, और शतमिया से दोषानुसम मन्त्रमें आर्ति है।

मतमदशै दीक्षाशुभमें भी भीद होता है। नीचमन्त्रके

मतये—"विन्दुसमसमनां शीतानुसमम् ।

यावत्कालं देवैश्चि कर्त्तव्यमवसतः ।

तेषां आद्यत्र सर्वत्र शीतानुसमानी न संशयः ॥'

ये शीतोर्धे शुभ विन्दुसमकोपासत्र, शीतमातमन्त्रकी  
से शुभ और शीत मातमन्त्रके शुभ मन्त्रकोपासत्रके

विधि। शीत और मातमन्त्र को दोला गुरु को मन्त्रमें है  
इसमें मन्त्र न लगे।

उक्त पाँच सामान्यायं भी विभिन्न दिग्मूर्ति और  
पथ पथ क्षेत्र हैं, उन तीनोंके अनुसार जो इष्टदेवको  
पूजा और ध्यान पादि कृपा करते हैं। शीत लगे।

ताम्रिहस्य उपासना और योत्रम इत्ये मन्त्रे नामा  
शाम्बायी और मन्त्रदायिनि निभक्त होने पर भी किसी  
विधो तन्त्रमें ब्राह्मणमात्रको जो मातमन्त्र कहा गया है।

"अनें वाच्यं प्रियाः प्रेक्षा न शैरा न च वैलयाः ।

आतिरेयी च नावती इताइवपिनेतया ॥"

सभी चित्र मातमन्त्र, शीत वा मन्त्र न लगे हैं, क्योंकि  
उपासकको सुविदाको पादि देवी मायवी (सबको  
पाराय) है।

भाषारभेदः ताम्रिहस्य पाँच प्रकारके पाचारिनि  
विभक्त है। कुत्तार्थ-वतमन्त्रे मतये—

'हर्षेभ्योपेतमा वेदा वेदेभ्यो वैश्वर नरत् ।

वेरवाहुत्तव धैव येवाग्निमुत्तमम् ॥

दक्षिणामुत्तमं वात्त वात्तम विद्यामुत्तमम् ।

विद्यामुत्तमं चैव चैवत्तं वरत्तं वरि ॥"

सबसे वेदाचार श्रेष्ठ है, वेदाचारसे वैश्ववाचार  
महत् है वैश्ववाचारसे योवाचार उत्तम है, योवाचारसे  
दक्षिणाचार उत्तम है, दक्षिणाचारसे वात्तवाचार श्रेष्ठ है,  
वात्तवाचारसे विद्यावाचार उत्तम है और विद्यावाचारकी  
पयसा कोमाचार उत्तम है। कोमाचारसे वाद और  
शोर्षी लगे है।

वेदाचार—प्राचतोपिपोहता निम्नानन्दतदके मतये—

"वेदाचारं प्रथममि म्त्रु र्धनांशुन्दरि ।

मात्रे सुहृते कल्पान गुरुं मन्त्र स्वभावानिः ॥

आनन्दवाच अथान्तेः पूर्यैव वाचकाः ।

वर्धयाम्युने प्यन्ता इवपरिस्तु प वसि ॥

इत्यत्र वाग्मन्त्रवीर्यं विद्वेषैव वरयो अन्तम् ॥"

सवाहसन्दरि ! वेदाचारका सर्वत्र न करना प्रथम  
सुनो। साधकको चाहिये कि वह प्राचा सुहृत्तमें लगे  
और गुरुके नामसे धर्ममें ध्यानमात्रको मन कर उनको  
प्रणाम करे। फिर संवत्सरादयमें ध्यान करके एक एक  
चारमें पूजा करे और वाग्मन्त्रको अप करके परम  
आचार्यकी ध्यान करे।

वैष्णवाचार—“वेदाचारक्रमेणैव सदा नियमतत्परः ।

मैथुनं तत्कथालापं कदाचिन्मैव कारयेत् ॥

दिर्घा निन्दां च कौटिल्यं वर्जयेन्मासभोजनम् ।

रात्रौ मालां च यन्त्रं च स्पृशेन्मैव कदाचन ॥”

वेदाचारको विधिके अनुसार सर्वदा नियमतत्पर होना चाहिये । मैथुन वा उमका कथाप्रसङ्ग भी कभी न करना चाहिये, हिंसा, निन्दा, कुटिलता और मांस भोजन परित्याग करना चाहिये । रातको कभी माला वा यन्त्र न छूना चाहिये ।

शैवाचार—“वेदाचारक्रमेणैव शैवे शास्त्रे व्यवस्थितम् ।

तद्विशेषं महादेवि । केवलं पशुघातनम् ॥”

शैव और शाक्तोंके लिए जैसे वेदाचारकी व्यवस्था दी गई है, इनके लिए भी वैसी ही है । शैवाचारमें विधिपता इतनी ही है कि, इसमें केवल पशुघत्याको व्यवस्था है ।

दक्षिणाचार—“वेदाचारक्रमेणैव पूजयेत् परमेश्वरीम् ।

स्वीकृत्य विजयां राशौ जपेन्मन्त्रमनन्यथोः ॥”

वेदाचारके क्रमानुसार आद्याशक्तिको पूजा करें और रातको विजया ग्रहण करके एकाग्रचित्तसे जप करें ।

वामाचार—“पञ्चतत्त्वं स्वपुत्रं च पूजयेत् कुलशोधितम् ।

वामाचारो भवेत्तत्र वामा भूत्वा यजेत् पराम् ॥”

( आचारभेदतः )

पञ्चतत्त्वं अथवा पञ्चमकार, खगुप्य अर्थात् रजस्वलाकी रजः और कुलघ्नोकी पूजा करें । ऐसा करनेसे वामाचार होता है । इसमें स्वयं वामा ही कर पराशक्तिको पूजा करें ।

सिदान्ताचार—“शुद्धाशुद्धं भवेत् शुद्धं शोधनादेव पावैति ।

एतदेव महेशानि सिदान्ताचारलक्षणम् ॥”

पावैति ! शुद्ध क्या अशुद्ध वस्तुओंके शोधन करनेसे शुद्ध हुआ करता है । सिदान्ताचारका लक्षण निम्न प्रकार है । समयाचारतन्त्रमें सिदान्ताचारियोंके विषयमें लिखा है—“देवपूजारतो नित्यं तथा विष्णुपरो दिवा ।

नक्तं द्रव्यादिकं सर्वं यथालामेन चोत्तमम् ॥

निधिवत् क्रियते भयसा स सर्वं च फलं लभेत् ॥”

जो सर्वदा देवपूजार्थं निरत है, दिनमें विष्णुपरायण हो कर रातको यथासौध्य और भक्तिभावसे यथाविधि

मद्यदान और मद्यपान करता है, वह संमत् फलोंका नाम करता है ।

कौलाचार—“दिक्कालनियमो नास्ति तिग्धादनियमो न च ।

नियमो नास्ति देवेदि महामन्त्रस्य सापने ॥

कचित् शिष्टः कचित् भ्रष्टः कश्चित् भूतपिशाचवत् ।

नानावेधधरा कौलाः विचरन्ति महीतले ॥

कर्दमे चन्दनेऽग्निं मित्रे राशौ तथा शिष्ये ।

इमदाने भवने देवि तथैव कंचने वृषे ।

न भेदो यस्य देवेदि स कौलः परिकीर्तितः ॥”

( नित्यातन्त्र )

दिक्कालका नियम नहीं है, तिग्धादिका भी नियम नहीं है, देवेदि ! महामन्त्रसाधनका भी नियम नहीं है । कभी शिष्ट कभी भ्रष्ट और कभी भूतपिशाचके समान, इस तरह नाना वेधधारी कौल महीतल पर विचरण करते हैं । शिष्य 'कर्दम और चन्दनमें, मित्र और शत्रुमें, अग्नि और अग्निमें, स्वर्ण और लहंगमें जिनको भेदज्ञान नहीं उन्हें ही कौल कहा जा सकता है ।

यद्यपि नित्यातन्त्र और कुलाणवर्षमें मात प्रकारके आचारोंका उल्लेख है, तथापि प्रधानतः दक्षिणाचार और वामाचार के दो प्रकारके आचार ही देखनेमें आते हैं । दक्षिणाचारतन्त्रराजमें लिखा है—

“दक्षिणाचारतन्त्रोक्तं कर्मतद्युद्धवैदिहम् ।”

दक्षिणाचारतन्त्रमें जिस प्रकारको कर्मपद्धति विवृत हुई है, वही शुद्ध वैदिक है ।

वास्तवमें दक्षिणाचारो लोग वैदिक विधिके अनुसार अर्थात् पशुभावसे भगवतीकी अर्चना किया करते हैं । वे वामाचारियोंको तरह मद्य-मांस व्यवहार वा शक्तिसाधनादि नहीं करते । दक्षिणाचारतन्त्रके मतसे रक्त-मांसादि रहित सात्विक वलि देना ही ब्राह्मणोंके लिए विधेय है । दक्षिणाचारतन्त्रमें बहुतसे दक्षिणाचारो रक्षते हैं । कामाख्यातन्त्रमें ( ४४ पटल ) पशुभावका विषय इस प्रकार लिखा है—

“पञ्चतत्त्वं न गृह्णाति तत्र निन्दां करोति न ।

शिषेन गदितं यत्तु तत्सत्यमिति भावयन् ॥

निन्दायाः पातकं वेत्ति पाशवः स प्रकीर्तितः ।

उत्पाचारं बहाम्नाह गृह संघयमाद्यम् ।  
 द्विपत्वं नष्टवैशिकं साम्बुध् न हृष्टोद्यति ।  
 अद्युक्तान् मित्रा नापि काममावे नदि हृष्टोद्येत् ।  
 वरुजिव काममावे इहा संघ वसुलुवेत् ।  
 संज्ञकैस्मत्सर्वपाणि पञ्चमे निसमेव च ।  
 पञ्चमःस्वानि वक्रानि श्रीरामि प्रमत्तैव्य च ।  
 देवाम्बने कदा शिष्टेराहारान् पर भवेत् ।  
 अन्वयानिजास्तव्यं कुर्वाणिक लकायुक्तः ।  
 देवर्षी प्रार्थवैवैव नवपरित उद्यु न कजेत् ।  
 अन्वयत्वं समस्तार्थं वदि कतिव वनादि च ।  
 कार्यशोहात् शिष्टेत् पवामह कारादिवाक्यतः ।  
 शिष्टेरेव नहादेति । श्रेष्ठं संघवैवैदिति ।  
 कदाचित्पुत्रवैवैव पञ्च वरयेपरि ।  
 वल वल पुन' उक्त अन्वयावचन मन ।  
 नष्टाद्यन् युक्ति वा श्रीमाम्भद्रराव करोति च ।  
 वल वल महादेवि देवीराजं इजावते ।  
 इत्यदि बहुपाचारा अचिरुत्तम नशोर्भेदिः ।  
 उवाचि च न शोभेत् । स्वान् परिर्विचर वराचन ।  
 वदि संघयवै वल अद्युक्तारे वदा नर ।  
 पचात्वारं वदा कुर्वाण् विन्दु सिद्धिं वावते ।  
 अन्वुदीये कर्त्तु वैव नम्यतो द्वि वराचन ।  
 पञ्चवैवैवत् पञ्चनस्वात् पञ्चमवाय विवाङ्गवा ॥"

जो पक्षतत्त्व पदव्य नहीं करती और न उनको निन्दा ही करती हैं, जो मित्रोक्त कथाको सज्ज मानते हैं और पापकार्योंको निन्दनीय समझते हैं वे ही पण नामसे परिचित हैं । तुम्हारे सन्देहको दूर करनेके लिए मैं उनका पाचार कहता हूँ, जो तुमो । जो प्रतिदिन ज्ञानिय पाचार करते हैं, ताम्बुल नहीं करते, अष्टुखाता घयनी नहीं छिन्ने सिवा अन्य किसीको मो काममाधने नहीं देवते, परस्त्रोके काममाधको देव कर उनका साव त्याग देते हैं, अरुण-साव कभी भी पदव्य नहीं करते, गन्धमान्य नष्ट और और नहीं सिद्धि, सर्वदा देवालयमें रहते हैं, और पाचारके लिए घर आते हैं सुखकथाओंको प्रति अहृष्टिसे दियते हैं, दिग्घर्षको नहीं चाहते वा जो है उसको मो त्याग नहीं करते, मन जोति पर सर्वदा दरि द्रोंको दान देते हैं, कभी चाप'यः श्लोच और चहृष्टादि

प्रकट भरी करते, किसीवतः जो घयमा श्लोच वर्जन करती हैं, परमेश्वरि । ऐसे पर्ययोको दोषा न देमो पाच्छि । सत्य कहता हूँ, मीरा कथना कभी पथ्याय न होगा । पञ्चान वा अन्वये पणको म त्र देनिते सच मुच हो देवो के थापका भागो होना पड़ेगा । हम तरफसे बहुयकार पाचारोको पण कहते हैं । वलको कलो मोच वा सिद्धि नहीं होती । पञ्चाचार कितना ही क्यो न करे, किसी तरफ मो सिद्धि नहीं होती । हे देवि ! शिवको पाचा है वि, इस अन्वु दोपमें ब्राह्मण कभी पण न होमी ।

यज्ञानमें तास्त्रिक कहनेसे प्रधानतः सामाचारियोंका ही बोध होता है । किसीके मतसे ये विद्वद्विद्वद्व नियरोत पाचारण करनेके कारण सामाचारीच नामसे समझर हैं । ब्रह्मणके तास्त्रिकोंमें सामादार और दक्षिणाचार दोनों को पाचार निवित सिद्धिमें पाते हैं । किन्तु पक्षनी तास्त्रिकणच इस बातको नहीं मानते ।

वामकेश्वरत मन्त्रे इर्षं प्यहर्षमें लिखा है—  
 "आचारो द्विविधो वेवि वानवक्षिणनेरुः ।  
 अन्वयान वक्षिं द्वि अनिरेवेव वामधम् ॥"  
 देवि । सामाचार और दक्षिणाचारके भेदसे पाचार दो प्रकारका है । अन्वयानमें दक्षिण और पश्चिमोक्त होने पर सामाचारी होता है ।

मात्र । उक्त पात पाचार निर्दिष्ट होने पर मो त ह में प्रधानतः तोण मार्मीका विषय वर्चित है । यथा-यथा-भाव, श्रीरमान और दिव्यभाव । वामकेश्वरत मन्त्रे मतने-  
 "अन्वयानं बहुपाचं सर्वोद्युत्पन्नम् ।  
 उद्युत श्रीमानद्यु वारत्वं ववाहृष्टी भवेत् ।  
 शिष्टीराधे श्रीरम्भवरुष्टीको विष्णुभावः ।  
 एव मानववैवैव मानवेवन सर्वैत् द्वि ।  
 देववहावात् कुम्भवातो वैव वैवयथे भवेत् ।  
 माथेदि मानवो वर्मो मानवेव वराम्भैवैत् ॥"

अथवाक्यसे श्लोचक वर्ण तत्र पणमान, इससे बाद दितोयांममें पचाच वर्ण तत्र श्रीरमान, उससे बाद दितोयांममें दिव्यभाव होता है । इन मात्रकमें मानवेव्य होता है । विष्णुमानने कुम्भाचार होता है इस कुम्भाचारके द्वारा जो मानव शिवमय पुपा करता है । मात्र जो मानव वर्म है, मन ही मन सर्वदा उसका अभ्यास करना

उचित है। कुञ्जिकातंत्रके ७वें पटलमें लिखा है—

“भावश्च त्रिविधो देवि दिव्यवीर्यपुरुषमात् ।  
विद्वद्देवतारूप भावयेत् कुलसुन्दरि ।  
स्त्रीमयश्च जगत् सर्वं पुरुषं शिवरूपिनम् ।  
अमेदे चिन्तयेद् यस्तु स एव देयतात्मकः ।  
नित्यस्नान नित्यदान त्रिसन्ध्यश्च जपार्चनम् ।  
निर्मलं वसन देवि परिधानं समाचरेत् ।  
वेदशास्त्रे दृढज्ञानं शूरो देवे तर्ह्य च ।  
मन्त्रे चैव दृढज्ञानं पितृदेवार्चनं तथा ।  
वल्लिबन्धुं तथा श्राद्धं नित्यसर्वं शुचित्प्रिये ।  
शशुं मित्रसमं देवि चिन्तयेत्तु महेश्वरि ।  
अन्नशैव महेशानि सर्वेषां परिवर्जयेत् ।  
गुरोरन्नं महेशानि भोक्तव्यं सर्वमिदमे ।  
कुर्याच्च महेशानि निष्ठुरं परिवर्जयेत् ।  
सत्यश्च कथयेद् देवि न मिथ्या च कदाचन ।  
केवलं दिव्यभावेन पूजयेत् परमेश्वरीम् ॥”

भाव तीन प्रकारके हैं—दिव्य, वीर और पशु। हे कुलसुन्दरि ! यह विश्व देवतारूप है, समस्त जगत् स्त्रीमय और पुरुष शिव है, इन प्रकार अभेदभावसे जो चिन्ता करता है, वह देवतात्मक वा दिव्य है। उसको चाहिये कि, वह नित्यस्नान, नित्यदान, त्रिसन्ध्या जलपूजा, निर्मल वसन परिधान, वेदशास्त्र, गुरु और देवतासँ दृढ-ज्ञान, सत्त्व और पितृदेवपूजामें अटल विश्वास, वलिदान, श्राद्ध और नित्यकार्य, शत्रुमित्रमें समज्ञान, सबका अन्नपरित्याग, सर्वसिद्धिके लिए गुरुका अन्नभोजन, कठयं और निष्ठुरताचरण त्याग तथा दिव्यभावसे सर्वदा परमेश्वरीकी पूजा करे। उसको सर्वदा सत्य बोलना चाहिये, कभी झूठ न बोलें। पिच्छिकातंत्रके १०वें पटलमें लिखा है—

“दिव्यवीरोमहाभावावधमः पशुभावकः ।  
बैष्णवः पशुभावेन पूजयेत् परमेश्वरि ॥  
शक्तिमन्त्रे वरागेहे पशुभावो भयानकः ।  
दिव्यैर्वीरमहेशानि जायते सिद्धिस्तथा ॥  
दिश्ये वीरे न भेदोऽस्ति भेदो वीरो महोदतः ।  
दिव्यवीरो प्रवक्ष्यामि सर्वमाद्योत्तमौ मतो ।  
विना शक्तिं न पूजास्ति मत्प्रमासं विना प्रिये ।

मुदाय मधुनगापि त्रिनालक प्रपूश्येत् ॥  
स्त्रीभगं पूजना मातः स्मरणं ह्यपामनः कुतः ।  
शभावे सर्वद्रव्यागामनुकरद कर्तौ युगे ।  
अथवा परमेशानि मानसं सर्वमाचरेत् ॥  
यातन्तु मानसं प्रोक्तं वैदिको मानसः मदा ।  
यत्तु भुक्त्वा महापूजा मानस भोजनन्तु तत् ॥  
स्वच्छेया परकीयां वा मानसन्तु रमेत् भिग ।  
मानस मद्यमांसादि र्व्याकुर्याद् शायरोत्तमः ॥  
स्वयम्भूक्तुम् तद्द्वन्मानस ममुभाचरेत् ।  
मानस भगोवाग्मानसं भगपूजनम् ॥  
सर्वन्तु मानसं कुर्यात्तेन धिस्तुति प्रायकः ।  
न कर्तौ प्रकृताचारः संघातमिति नैव सः ।  
मानसेनैव भावेन सर्वमिदियुगात्तमेत् ॥”

दिव्य और वीर ये दो महाभाव हैं, पशुभाव अधम है। वैष्णवकी पशुभावसे पूजा करना चाहिये। शक्ति-मन्त्रमें पशुभाव भोतिजनक है। दिव्य और वीरभावमें प्रभेद नहीं है। वीरभाव अति उदत है। सर्वभावोंमें अठतम और दिव्य वीरभावका विषय कथा जाता है। शक्ति वा मय्य, मत्स्य, मांस, मुद्रा और मधुनके बिना पूजा नहीं की जाती। स्त्री-भग पूजाका आधार है—स्वर्ण और रोप्यात्मक कुण्ड। कनियुगमें सर्वद्रव्यके अभावमें अनुकल्प है अथवा मन ही मन मत्र कार्य करनेका मार्ग है। मानसस्नान, सर्वदा मानस चैत्रिककाण्ड जहाँ महापूजाभोग वर्द्धी मानसभोजन और मन ही मन स्वकीया वा परकीया नारोसे रमण करे। साधकअष्ट मन ही मन मद्यमांसादि ग्रहण करे और तद्रूप स्वयम्भूक्तुसुम भो उपाचार है, तथा मन ही मन भग-रोम आदिकी चिन्ता और भग-पूजा करे। इस प्रकारसे मन ही मनमें सब कार्य करना चाहिये। कलिकालमें निश्चय ही वास्तविक आचार नहीं है। इस प्रकारसे मानसभावोंके द्वारा जो सर्वसिद्धि प्राप्त होती है।

पशुभावका लक्षण इसमें पहले ही लिखा जा चुका है। रुद्रयामलमें ( उत्तरखण्डमें ) लिखा है।

“दुर्गापूजा विष्णुपूजां शिवपूजाय नित्यगः ।

अवश्य हि यः करोति स पशुव्रतमः स्रुतः ॥

केवलं शिवपूजां च यः करोति च साधकः ।





है । मत्स्यमयादियुक्त इस कठोर दोषामें जोव भवधन्मनसे  
विमुक्त होना है । श्री कुलनायिके । जिनका पूर्णामिपेक  
नहीं हुआ है, उनको सत समभना चाहिये । पूर्णामिपेक-  
के द्वारा सिद्ध शिवसायुज्य लाभ करता है । स्वयं  
शिवने कहा है कि, इस पूर्णामिपेकके द्वारा निश्चय ही  
सुक्ति होतो है ।

पूर्णामिपेकका विधान महानिर्वाणतंत्रमें इस प्रकार  
लिखा है—“विधानमेतत् परमं गुप्तमासीद्युगत्रये ।

गुप्तमादेन कुर्वन्तो नरामोक्षं ययुः पुरा ॥

प्रबले कलिकाले तु प्रकाशो कुलवर्त्मनः ।

नक्त वा दिवसे कुर्यात् स प्रकाशाभिषेचनम् ॥

नाभिपेकं विना कौलः केवलं मयसेवनात् ।

पूर्णामिपेकः कौलः स्याच्चक्राधीश कुलार्चकः ।

तत्रामिपेकपूर्वाह्ने सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

यथाशक्त्युपचारेण विघ्नेगः पूजयेत् गुह्य ॥

गुरुधेनाधिकारीस्यात् शुभपूर्णामिपेचने ।

तदाभिपेककौलेन नत्सर्वं साययेत् प्रिये ॥

स्वान्तार्णं विन्दुसंयुक्तं वाजमस्य प्रकीर्तितम् ।

गणकोऽस्य ऋषिच्छन्दो नीर्वृद्धिस्तु देवता ॥

कलेव्यकर्मणे विघ्नशान्त्यर्थं विनियोगिता

षड्दीर्घयुक्तमूलेन पठगानि समाचरेत् ॥

प्राणाचार्यं ततः कृत्वा ध्यायेत् गणपतिं शिवे ।

सिन्दूरामं त्रिनेत्रं प्रयुत्तरजठरं हस्तपद्मेर्षधानं ।

अङ्गप्राशाङ्कुरेष्टान्यरुकरविलसद्वाक्णीपूर्णकुम्भं ।

वालेन्दूददीप्तमौलीं करिपतिवदनं वीजप्राद्वंशण्डम् ॥

भोगीन्द्रा बद्धभूयं भजत गणपतिं रक्तवर्णागरागम् ।

ध्यात्वेव मानसे विष्टा पीठशक्तिं प्रपूजयेत् ॥

तीव्रा च ज्वालिनी नन्दा भोगदा कामरूपिणी ।

उप्रा तेजस्वनी सत्या मध्ये विघ्नविनाशिनी ॥

पूर्वादितोऽचथित्वैता पूजयेत् कमलासनं ।

पुनर्घात्वा गणेशान पञ्चतत्त्वोपचारकैः ॥

अम्बर्ध्यं च चतुर्दिक्षु राणेशं गणनाथकं ।

गणनाथं गणक्रीडं यजेत् कौलीनसप्तमः ।

एकदण्डं वक्रदण्डं लम्बोदरगजाननौ ।

महोदरश्च विकटं धूम्रामं विघ्ननाशनम् ॥

ततो प्राप्सीमुखाः शक्तीर्दक्षपालांश्च प्रपूजयेत् ।

तेयामराणि संपूज्य पित्रराजं विशर्जयेत् ॥

एवं संपूज्य विघ्नमधिवासनमाचरेत् ।

भोजयेच्च पत्रतर्पणं दद्यात् कुलशायकान् ॥

ततः परदिने स्नातः कुननिर्घोदितकृपः ।

आजन्मकृतपापानां क्षयार्थं नित्यजननम् ॥

उत्सृजेत् कौलतृप्त्यर्थं भोजैर्दक्षैकमपि प्रिये ।

अर्घ्यं दत्त्वा दिनेनाम व्रतमिष्टुनवप्रदान् ॥

अर्चयेत्वा मातृगणान् वसुधायां प्रदद्यायेत् ।

कर्मणोभ्युदयार्थं यदिश्राद्धं समाचरेत् ॥

ततो नत्वा गुरोः पार्श्वं प्रणम्य प्रार्थयेदिदं ।

एहि नाम कुलाचार नलिनीकुलपत्नम् ॥

स्वरादाभ्योदहृष्ट्याया देहि मूर्त्तिर्न शृपानिये ।

आसां देदि मद्राभाग शुभपूर्णामिपेचने ॥

निर्विघ्नं कर्मणः सिद्धिमुपेक्षि त्वत्प्रसादतः ।

शिवगन्धशास्यं यत्नं कृत्वा पूर्णामिपेचनम् ॥

मनोरपमवीं सिद्धिर्जायता दिवशासनात् ।

न्यमासां गुरोः प्राप्य सर्वान्दशशान्तये ॥

आयुर्लक्ष्मीवतीरोगयापार्थं संकल्पमानरेत् ।

ततस्तु कृतसंकल्पो वसतर्त्तन्वाभ्युपैः ॥

कारणैः शुद्धिसहितैरुत्सर्ग्यं मृगुवाद् गुरुं ।

गुरुर्मनोहरे गेहे गैरिकादिधिचिप्रिते ॥

विश्वजपताकामिः कल्पपुत्रेण शोभिते ।

किंकिनीजालमात्राभिश्चन्द्रातपविभूयिते ॥

घृतप्रदीपावलिमिस्तमोलेद्यविवर्जिते ।

कूपूरसहितैर्भूषणैस्तम्रैः सुनासिते ॥

व्यजनैश्चामरवर्णैर्दण्डाद्यैरलेकृतेः ।

सार्द्धहस्तमितां वेदीमुच्चकेश्वरतुरंगुला ॥

रचयेन्मृगशीं तत्र चूर्णैरक्षतसम्भवंः ।

पीतरक्षासितश्वेतश्यामलैः सुमनोदरैः ॥

मण्डलं सर्वतोमद्रं विदध्यात् श्रीगुरुस्यतः ।

स्य स्व कल्पोकविधिना कुर्यादर्वा विधिक्रियां ॥

कृत्वा पूर्वोक्तविधिना पंचतत्त्वानि शोधयेत् ।

संशोध्य पंचतत्त्वानि पूर्वकल्पितमण्डले ॥

स्वर्णं वा राजतं ताम्रं नृण्यं घटमेव वा ।

क्षालितं चन्द्रबीजेन दध्यक्षतविचचितम् ॥

स्यापयेद् ब्रह्मबीजेन सिन्दूरैर्गुरुयेत् श्रिया ।



है, जिनका मुखमण्डल गजराजके सदृश है, जिनके गण्डहृदय सर्वदा सदापात्रसे भोग गये हैं, जिनका शरीर सर्पराज द्वारा विभूषित है जो रक्तवस्त्र और रक्त अङ्ग राग धारण करते हैं, ऐसे देव गणपतिको भजना करने चाहिये ।

इस प्रकारका ध्यान करके मानस उपचार द्वारा ( प्रणव उच्चारणपूर्वक चतुर्थी विभक्तान्त नाम उच्चारण करके 'नमः' यह शब्द गन्तमें लगा कर गन्ध पुष्यादि द्वारा ) पूजा कर पौठ शक्तियोंको पूजा करना चाहिये । तीव्रा, ज्वालिनी, नन्दा, भोगदा, कामरूपिणी, उग्रा, तेजस्वती और सत्या, इन आठ पौठशक्तियोंकी पूर्वाटिकमसे पूजा करके मध्यदेशमें विघ्नविनाशिनोकी पूजा करने चाहिये । तीव्रा, ज्वालिनी नन्दा, भोगदा, कामरूपिणी, उग्रा, तेजस्वती और सत्या इन आठ पौठशक्तियोंकी पूर्वाटिकमसे पूजा करके मध्यदेशमें विघ्नविनाशिनोको पूजा करनी चाहिये । (३) वादमें ( प्रणवपाठपूर्वक 'नमः' पदान्त नाम उच्चारण करके ) कमलासनको पूजा करनी पड़ती है । कौलिकग्रन्थको पुनः ध्यान करके सर्वशोधित पञ्चतत्त्वरूप उपचार द्वारा गणेशकी पूजा करनी पड़ती है । इसके उपरान्त उनके चतुर्दिक गणेश, गणनायक, गणनाय, गणकोट्ट एकदन्त, रक्तगुण्ड, लम्बीदर, महीदर, विकट, धूम्राम, विघ्ननाशन, गजानन, इनको पूजा करनी चाहिये ।

अनन्तर द्वाघ्नौ आदि अष्टशक्ति और इन्द्र आदि दश दिक्पालोंको पूजा करके दिक्पालोंके अक्षसमुदायको पूजा ( विघ्नराज चमस्व इन वाक्यके द्वारा ) पूर्वक विघ्नराजको विमर्जन करें ।

इस प्रकारसे विघ्नराजको पूजा करके अविवाह करें और पञ्चतत्त्वके द्वारा ब्रह्मज्ञ कुलसाधकोंको भोजन करावें ।

(३) पूर्व दिशामें—एते गन्धपुष्पे ओं तीव्रायै नमः । अग्नि दिशामें—एते गन्धपुष्पे ओं उज्जालिन्यै नमः । दक्षिण दिशामें—ओं गन्धायै नमः । नैऋत दिशामें—ओं भोगदायै नमः । पश्चिम दिशामें—ओं कामरूपिन्यै नमः । वायु दिशामें—ओं उग्रायै नमः । उत्तर दिशामें—ओं तेजस्वत्यै नमः । ईशान दिशामें—ओं सत्यायै नमः । मध्यमें—ओं विघ्नविनाशिन्यै नमः ।

दूमरे दिन स्नानपूर्वक गित्यक्रिया समाधान करके जन्मसे किये हुए पापपुत्रके चयनके लिये तिनका जन्म उत्सर्ग कर (४) । प्रिये ! उसके बाद कोलोंको लम्बिके लिये एक भोज्य उत्सर्ग करना चाहिये (५) । पीछे सूर्यको अर्घ्य प्रदानपूर्वक ब्रह्मा, विष्णु, शिव, नवग्रह और मातृगणोंकी पूजा करके वसुधागा देनी चाहिये । फिर कर्मके अभ्युदयको कामनाके लिये हृदित्याद करे ।

अनन्तर गुरुके पास जा कर प्रणतिपूर्वक प्रार्थना करें कि, 'नाथ ! आप कौलिकरूप पद्मवनके वरभ हैं । कृपानिधे ! भव मेरे मस्तक पर अपनी चरण कमलको छाया प्रदान कर । महाभाग ! मेरे शुभपूर्णाभिये कके विषयमें धाप आज्ञा प्रदान करें । मैं आपके प्रसादमें निर्विघ्न कार्यसिद्धि कर सकूँ ।'

"वत्स ! शिवशक्तिके आज्ञानुसार पूर्णाभिये कसे अभिपत्ति होओ । महेश्वरके आदेशानुसार तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होवे ।" शिष्य गुरुसे इस प्रकारको आज्ञा ले कर सर्वोपद्रवोंकी शान्तिके लिये तथा आयु, लक्ष्मी, वल और आरोग्य लाभके लिये सद्बुद्ध करे \* ।

इस प्रकारसे कृतसङ्कल्प हो कर वस्त्र, अन्नहार, भूषण और शुद्धिके साथ कारण द्वारा गुरुकी अर्चना कर वरण करें † ।

( ४ ) एते गन्धपुष्पे ओं कमलासनाय नमः ।

( ५ ) एते गन्धपुष्पे ओं गणेशाय नमः । एते गन्धपुष्पे ओं गणनायकाय नमः इत्यादि ।

\* ओं तत्सदय अमुके मासि अमुकदिशिभ्ये भास्करे अमुके पक्षे अमुकतिथौ अमुकवारि अमुकनक्षत्रे अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकवेदी अमुक । खाद्यायी कुमारिकाखण्डान्तर्गतामुकप्रदेशीया मुकप्रामवासी श्रीअमुक देवशर्म निःशेषोपद्रवशान्तिधाम आयु-लक्ष्मीवलारोग्यकामश्च शुभपूर्णाभियेचनमाहं करिष्ये । इस वाक्यको कह कर संकरन करना चाहिये ।

† ओं तत्सदय अमुके मासि अमुकदिशिभ्ये भास्करे अमुके पक्षे अमुकतिथौ अमुकवारि अमुकनक्षत्रे अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकवेदी अमुकशाखाध्यायी कुमारिकाखण्डान्तर्गतामुकप्रदेशीया मुकप्रामवासी श्रीअमुक देवशर्मणः अमुक गोत्रं अमुक प्रवरं अमुकवेदीनं अमुकशाखाध्यायिनं कुमारिकाखण्डान्तर्गत-अमुक-प्रदेशीय-अमुकप्रामनिवासिनं धीर्मतममुकानन्दनाथं गुरुत्वेन भवन्तं



करे' शीर यद्द मंत्रं पठते रहें कि, शुभपूर्णाभिषेकमें ऋषि  
सदाशिव, छन्द अनुष्टुप्, बीज प्रणव, शुभ पूर्णाभिषे-  
कार्थं विनियोग कीर्तन करना होगा \* ।

उमके वाद यद्द अभिषेक-मंत्रं पठे—

“गुरवस्त्वामिषियन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।  
दुर्गा लक्ष्मी भवान्यस्त्वामिषियन्तु मातरः ॥  
पोडशी तारिणी नित्या म्वाहा महिषमर्दिनी ।  
एतास्त्वामिषियन्तु मन्त्रपूतेन वाणिना ॥  
जयदुर्गा विशालाक्षी ब्रह्माणी च सरस्वती ।  
एतास्त्वामिषियन्तु बगला धरदा शिवा ॥  
नारसिंही च वाराही वेणवी ननमालिनी ।  
इन्द्राणी वारुणी रौद्री त्वामिषियन्तु राक्षसः ॥  
भैरवी भद्रकाली च तुष्टिः पुष्टिमा क्षमा ।  
श्रद्धा कतिदया शान्तिरभिषियन्तु ते सदा ॥  
महाकाली महालक्ष्मीर्महानीलसरस्वती ।  
उग्रचण्डा प्रचण्डा च अभिषियन्तु सर्वदा ॥  
मत्स्यः क्रुमो वराहश्च वृषिहो वामनस्तथा ।  
रामो भार्गवराजस्त्वामिषियन्तु वारिणा ॥  
असितो गरुडध्वजः क्रोधोन्मत्तभयकर ।  
कपाली भीषणयत्त्वामिषियन्तु वारिणा ॥  
काली कपालिनी कुला कुहकुला विरोधिनी ।  
विप्रचित्तमहोप्रात्वामिषियन्तु सर्वदा ॥  
इन्द्रोमिः शमनो रुक्ती वरुणः पवनस्तथा ।  
धनदथ महेशानः सिंचन्तु मा दिगीश्वराः ॥  
रविः सोमो मंगलश्च बुधो जीवः शितः शनिः ।  
राहुः केतुः सनत्तारा अभिषियन्तु ते प्रहा ॥  
नक्षत्रं करणं योगो वारा पक्षौ दिनानि च ।  
ऋतुर्मासोहायनस्त्वामिषियन्तु सर्वदा ॥  
लघुनेषु सुरासर्पिर्दधिदुग्धनलान्तकाः ।  
समुद्रास्त्वामिषियन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥

\* मन्त्र, यथा—“एषां शुभपूर्णाभिषेकमन्त्राणां सदाशिव  
ऋषिरनुष्टुप् छन्द आद्याकाक्षी देवता ओं बीजं शुभपूर्णाभिषेकार्थं  
विनियोगः । शिरसि सदाशिवाय नमः । मुखे अनुष्टुप् छन्दसे  
नमः । हृदये आषाढ्यै कालिकायै देवतायै नमः । शृणु ओं बीजाय  
नमः । शुभपूर्णाभिषेकार्थं विनियोगः ।” एषा ऋषिन्वाच करना  
चारिये ।]

नंगा गुरोर्गुना रेवा चन्द्रभागा मन्त्रार्थी ।  
सरसुर्गच्छी सुंजी भनयंगा न कौण्डिणी ॥  
अनन्ताया महानागा सुपर्णीया पत्तारिणाः ।  
तरणः कारुक्षया, विमन्तु तसो दिगीश्वराः ॥  
पाताम्भुतल्लोकनचारिणः शैवचारिणः ।  
पूर्णाभिषेकमन्त्राया शोभिषियन्तु पापया ॥  
दीर्घांशुं दुर्गमोरोगा दीर्घमन्त्रं सदा ध्रुवः ।  
विनश्यन्तभिषेकेण कालीभोजेन तादिनाः ॥  
भूतः प्रेयः पितामह प्रदा ये रिष्टरातिनः ।  
विद्वत्तान्ते चित्तमन्त्रु रगाभोजेन तादिनाः ॥  
अग्निशरहना दोषा शैत्योर्दोदनक्षय मे ।  
मनोयाकक्षामना दोषा विनश्यन्तभिषेकनाद ॥  
नश्यन्तु विषदः सर्वा मन्त्रदः मन्त्रु सुविपराः ।  
पानोर्षेण पूजेन पूर्णाः मनु प्रनोषयाः ॥  
इत्येकाधिकविद्याया मंत्रैः संमिल्य पश्यन् ।  
पनोर्षया चपमन्त्रं पुनः संभावयेद् मन्त्रः ॥  
पूर्वोक्तनाम्ना संशोष्य शपयन् शक्तिशुभवात् ।  
दशानन्दनायान्तमान्तानं कौण्डिको मुष्टः ॥  
शुभमन्त्रं सुरार्थं मन्त्रं संपूज्य निरुदेयताम् ।  
पन्तत्तोपनारेण गुरुमन्त्रं चरेत्ततः ॥  
गोभूद्विष्णुपयासाधि नानालक्ष्मिणि च ।  
गुरवे दक्षिणां दत्त्वा प्रजेत् कौण्डिकं निमात्मकाम् ॥  
पतञ्जलीचर्चो धारः शान्तोऽतिविनयादिभ्यः ।  
श्रीगुरोर्धरणीं स्पृष्ट्वा भक्त्या नन्देदमर्षयेत् ॥  
श्रीनाथ जगता नाथ मन्त्राय कृत्वा निषे ।  
पराशरतपसनेन पूरवात्मनोर्धम् ॥  
आशां मे दीयतां कौण्डिकः प्रत्यक्षशिष्यरूपिनः ।  
सच्छिष्याय विनीताय ददामि परमामृतम् ॥  
चक्रेशपरमेष्ठान कौलवंशजभास्कर ।  
कृतार्थं कुह सत्गिण्यं देयमुपैव कुलामृतम् ॥  
आशामादाय कौण्डिकं परमामृतपूरितम् ।  
सशुद्धिं पानपात्रं शिष्यहस्ते समर्पयेत् ॥  
ह्याकृष्य गुरुदेवीं सुवसलाप्रभसना ।  
स्वस्य गिर्यस्य कौण्डिकानां कूर्चं च तिलकं न्यसेत् ॥  
ततः प्रसादतत्त्वानि कौलेभ्यः पत्विष्यन्तु ।  
चक्राज्ञानविधिना शिष्यात् पानमोजमम् ॥



भक्तिके साथ योशुक्को चरण छु कर नमस्कार करे और प्रार्थना करे कि, योनाथ आप जगत्के नाथ हैं, मेरे नाथ और करुणानिधि हैं। आप परमासृत प्रदान कर मेरा मनोरथ पूर्ण कोजिए। गुरु कौलीने यह कहेंगे— कौलगण। आप प्रत्यक्ष शिवरूपी हैं। आप आज्ञा देंगे जिससे मैं इस विनयसम्पन्न सत्शिष्यको परमासृत प्रदान कर सकूँ। कौल यह कहेंगे— चक्रेश्वर। आप साक्षात् परमेश्वर हैं, आप कौलरूप पशवनके लिए भास्करस्वरूप हैं। आप इस सत्शिष्यको चरितार्थ करें। इसको कुलासृत देंगे।

तदनन्तर गुरु कौलीकी अनुमति ले कर शुद्धिके साथ परमासृत-पूरित पानपात्र शिष्यके हाथ पर रखेंगे। वाटके गुरुको चाहिये कि, देवी भगवतोको हृदयमें धारण कर स्वसंलग्न भस्मके द्वारा अपने शिष्य और कौलीके ललाट पर तिलक लगा दें। पश्चात् प्रभादतस्त्र मसुदाय कौलीको परिवेशन करके चक्रानुष्ठानके विधानानुसार पान और भोजन करें। यह मैंने तुमसे शुभ-पूर्णाभिषेक कहा। इससे ब्रह्मज्ञान और शिवत्व प्राप्त होता है।

नवरात्रि, सप्तरात्रि, पञ्चरात्रि, त्रिरात्रि अथवा एकरात्रि पूर्णाभिषेक करना चाहिये। कुलेश्वरि। इस नस्कारमें पाँच कल्प हैं। यदि नवरात्रि अभिषेक करना हो, तो सर्वतोभद्रमण्डलकी रचना करनी चाहिये। प्रिये। सप्त-रात्रि अभिषेकमें नवनाभमण्डल, पञ्चरात्रि अभिषेकमें पञ्चाक्षमण्डल, त्रिरात्रि और एकरात्रि अभिषेकमें षट्पद-पशुकी रचना करनी चाहिये। साधकोंको उचित है कि, वे सर्वतोभद्रमण्डल और नभमण्डल पर ८ घट तथा पञ्चाक्षमण्डल पर ५ घट स्थापन करें। षट्पदपशुमें सिर्फ एक घट स्थापना करना पड़ता है। इस पशुके केशरादि अङ्गदेवता और आवरण-देवताओंको पूजा करनी पड़ती है। जो पूर्णाभिषेकसे अभिषिक्त कौल हैं, जो निर्मलहृदय हैं, उनका दर्शन, स्पर्शन वा घ्राण द्वारा द्रव्यशुद्धि हुआ करती है।

साधक और साधिका। तांत्रिक साधक और साधिकाके लक्षणोंका भी तंत्रोंमें वर्णन है। निरुत्तरतंत्रके (११वें पटलमें) मतसे—

“आत्मनो ज्ञानमाश्रेण तत्त्वज्ञानं भवेत् प्रिये।

तत्त्वज्ञानी भवेत् योगी य योगी त्रिविधः स्मृतः ॥  
 निगलस्यैव गाल्प्यो भक्त्या परमेश्वरि ।  
 मकोपि वीरभावेन शायते कृतसाधनम् ॥  
 शक्तिमात्रं यत्तु योगी मनो ही पराधनः ।  
 अभिषेकेन देवेति भक्तो शायते भुवि ॥  
 श्वभूतो भवेद्द्वारो दिग्दश बुधभुवदरि ।  
 स्वयानामगमिष्य कृतवेदिशरान्तः ॥  
 कृतप्राप्तो वैश्वानरः पण्डितः सदा ।  
 निर्द्वन्द्वो निरदेषो निर्दोषो निर्भयः सुविः ॥  
 गुरुदेवस्य शान्तो घृणात्पशुविषयिणः ।  
 रक्षन्तदनदिपायो रक्षणीवीरभूषणः ॥  
 उदागन्तः सर्वद वैष्णवानामन्तरः ।  
 कुलचारो वीरः पतिः कृतवर्णः ॥  
 कुलार्थं तर्षयन्ता कुलप्राप्तो जगत् ॥  
 महाबलो महाशुदिः महासाह्विकः सुविः ॥  
 नित्यकर्मणि निष्ठातो दम्भदिकारिभितः ।  
 पानिन्दासद्विषुः स्वादुःखाररः सदा ॥  
 वीरभासनमापीनः पितृभूमिगतः सुविः ।  
 सर्वदानन्ददयः कुमारीपूजने रतः ।  
 एव यदि मरेद्वीरस्वदेव हीनजा दजेत् ॥  
 दिव्योऽपि वीरभावेन शायते कृतसाधनम् ।  
 कुलस्य सर्वजातीनां पूजनीयं कुलचने ॥  
 स्वयाने निर्द्वन्द्वे मरे द्रिगान्ते शून्यमण्डले ।  
 ग्रामे पातालके वापि साधयेत् कृतसाधनम् ॥”

प्रिये। आत्माको स्वरूप ज्ञान होती ही तत्त्वज्ञान होता है। तत्त्वज्ञानी योगी हो सकते हैं, वे योगी तीन प्रकारके होते हैं—निरालम्ब, मानस्य और भक्त। भक्त-कोभी वीरभावसे कुलसाधन करना चाहिये। योगपरायण भक्तयोगीको शक्तिमात्रकी पूजा करना उचित है। देवेशि। अभिषेकके द्वारा इस संसारमें भैरव तथा दिव्य और वीराचारो अवधूत हुआ करता है। स्वयानामगमें निष्ठावान् कुलस्त्रीपरायण, कुलमास्त्रार्थ जो अच्छी तरह कर सकता हो, नित्य वनिदानमें रत, इन्द्रहीन, अहङ्कारहीन, निर्दोष, निर्भय, शुद्ध, गुरु और देवतासे अनुरक्त, शान्त, घृणालम्बारहित, जिसके अङ्गी पर रक्तचन्दन लिपि हो, रक्तवर्ण की कौपीन धारण करनेवाला,

उदारचित्त, सब समय वैश्वनाथारमें तप्य, कुना चाररत, मोराचारी, कुनमासमें पंडित कुसमत्रेतका बिना नृत्तयात्रमें विद्याष्ट, महाभगन्तु बुद्धिमान् पतिपात्रको। शशाचारी निव्यवमगिठ, इत्य धोर द्विस्तत्रित्त, परनिटासत्रिच्यु, सबदा वरोच्यारमें रत मोरासममें ममायोग, पिच्छभूमिगत, पवदा जो पान न्दिन धोर कुमारीपूजनमें रत, एसा कोनि पर धोर तात्रिकमाधनमें होनजा यजन करें। दिव्य धोर धोर भावये कुनसाधन करें। कुनपूजामें समो जातिको कुल को पूजनीय हैं। इन्द्रगानमें, निर्जन वा रमचोद स्नानमें, विमासाय धोर शून्ध मच्छकमें, ग्राम वा सुरकुके भोगर कुनपूजा करनो चाहिये।

मात्रिकाके लक्षण—

“निर्मोघ कपवाहीना निर्भयका इत्यर्थादिता ।  
 शिबप्रयागटा शान्ती स्वेच्छका विपरीतता ॥  
 वसुवैश्वानुसवा इत्या इच्छता कुम्भजने ।  
 वसुवैश्वानुसवा न प्रत्यर्था विधिभेदे ॥  
 कर्मबंधरतो वाटा हीनजा परिधीयिता ।  
 कज्जा कौशिकतामका वा सा प्रजात् पुनवैश्वरी ॥  
 गानामनुसुवनावां न वा शीका कुम्भजने ।  
 इन्द्राको हीनवां देवी म्मका वा प्रत्यवेत् ॥  
 कज्जात्वा कौशिकी देवी वसुवत् परिपूजयेत् ॥  
 वसुवत् पूजयेद्दीपो दीक्षिता वत्परदीक्षिताम् ।  
 अष्टिम्यत्रे वसुवैश्वीरं प्राज्ञसोमपाना स्वरेत् ॥  
 हीनवाये तु प पुष्य दीक्षिताम्वेन पवैर ।  
 कौशिकी शक्तिका नापि देव्यदी वत्परैल्लक्षे ।  
 तवैश्वी भावने नोक्ता वाचक्यनाम् पुष्पयने ॥”

( वि० ११५० )

जिन कोको मोम नहीं कामना नहीं, कज्जा नहीं, दण्ड नहीं, जिस चाभीमि शिवक सत्र किया है, जो जो पपनो इच्छाके विपरीत रमय करती है,

- “मद्योत्तरव्य देवि उद्योमं गुणो भवेत् ।  
 इत्यत्र वचना देवी कु वर नवना इत्ये ॥  
 त इतिं वावरी एव वा एव म विपरीतता ।  
 व एव वाकिवापुन उदादिन इत्यत्र ॥” ( वि० ११५० )

एमी चारो दो वर्षाको किरां कुलपूजाके लिए प्रयाप्त हैं। चारों वर्षाको कुनपूजामें निय पुच्छरवका विधान है। वर्षमहादेमें उपपथ गयी होनजा नामने प्रसिद्ध है। जिसने सुधमच्छन पर नज्जको घामा हो, उच साचात् मुयगेच्छरो है। इस प्रकारको भागा जातिकी छियोंको कुलपूजामें दोषित किया जा सकता है। ब्राह्मण होन जातोया देवीको मन ही मन पूजा करेवा। खौलिकोदेवी मालूम न होने पर पपवत् पचना करेवा। मोराचारी दोषिता वा चदोषिता कोको पपवत् पूजा करेगी पयना प्राज्ञयोगमना हो कर शक्तिमात्रका करप करेगी। हीनजा साक ही पवदा दोषिता हैं। शैवा वा प्राज्ञरमको वैश्वको पचना पवैश्वको मात्रिकोंको कुलसाधनमें योग्य समझना चाहिये।

उक्त। तात्रिक उपासक भावको ही महेतका जानना विधि पान्थकीय है, नहीं तो कुनपूजामें उलथा बिच्छुक पयिकार नहीं पचवा चक्रे मध्य यह स्नान पानिके योग्य नहीं होता। निष्कारतन्वमें सिखा है—  
 “अमर्षकेतव्य वैर पूजाकैतयेन च ।  
 मन्त्रबंदेकव्य वैर न चर्षकेतव्यता ॥  
 सिद्धम मर्षवनां संकेत सुदीर्घता ।  
 संकेतव्य विद्या वीर परे चके विरोधवैत् ॥  
 निष्कल पूजक देवि इच्छ तत्र परे चरे ।  
 संकेतहीनो धो धीपी वामिनेकी पुत्रा कन्यात् ॥  
 कुम्भज ॥ व पापिष्ठ छनैरीरचक्रे ।”

( वि० १०५० )

अमसहेत, पूजासहेत मन्त्रमहेत यन्त्रसहेत, सुखी मय धोर यन्त्र सिद्धिना महेत इन सहेतोंको जिसमें नहीं जाना है तमको चकमें निहृक करमेंसे पूजा निष्कल होती धोर पद पदमें तमको पुच्छ कुपा करता, है। जो धोर सहेत नहीं जानता पचवा जो सुखी क्रमा नुसार यमिचित्त नहीं है वच कुम्भज धोर पापिष्ठ है, तमको वीरचकमें पतिव्याय करना चाहिये।

अमसहेत—अपुष्य, अयमुपुष्य कुण्डोडव, मोषोडव, वसुपुष्य, उल्लाह, शीकु इत्यादि ।

तन्वमें उक्त तात्रिक शक्तिके पर्यका निर्वय किया गया है। ... ब्रह्मदेव, ब्राह्मैतिह्य इत्ये एते मी है जिनका



अर्थ अभिविक्त गुरुके शिवा और कोई नहीं बता सकता ।

स्वयम्भू कुसुम प्रथम ऋतुमतीका रजः है । यथा—

“हरसम्पर्कहीनायालतायाः काममन्दिरे ।  
जातं कुसुममाक्षौ गन्महाद्वेयै निवेदयेत् ॥  
स्वयम्भू कुसुमं देवि रक्तन्दनसंमितम् ।  
तथा त्रिशूलपुष्पं च बज्रपुष्पं वरानने ॥  
अनुकल्पं लोहिताक्षचन्दनं हरवल्लभम् ॥”

(मुण्डमालातंत्र २५०)

हर अर्थात् पुरुषके संस्त्रवके विना लता अर्थात् स्त्रीको योनिसे जो कुसुम अर्थात् रजः निकलता है, उसीको स्वयम्भू कुसुम वा रक्तचन्दन कहा जा सकता है । इसके अभावमें महादेवीको त्रिशूलपुष्प और वज्रपुष्प ( चण्डालिनका रजः ) षडाना चाहिये । इसका अनुकल्प शिव-प्रिय लोहिताक्ष चन्दन है ।

कुण्डोद्भव अर्थात् सघवा स्त्रीका रजः । यथा—

“श्रीवद्भर्तृकनारीणां पद्मम कारयेत् प्रिये ।  
तस्या भगस्य यद्द्रव्यं तत्कुण्डोद्भवमुच्यते ॥”

(समयाचारतन्त्र २५०)

गोलोद्भव अर्थात् विधवा स्त्रीका रजः । यथा—

“शृतभर्तृकनारीणां पंचमं चैव कारयेत् ।  
तस्या भगस्य यद्द्रव्यं तत् गोलोद्भवमुच्यते ॥”

कुलार्थ वक्त्रे मतसे—

“तत्त्वत्रयं स्यादारम्भः कथित कुलनायिके ।  
कथितस्तरुणोत्थापे तरुणं सुखमयिके ॥  
यौवनं मनसं सम्यगुत्थापः कथितः प्रिये ।  
स्खलनं दृष्टमनोवाचां प्रौढ इत्यभिधीयते ॥”

तत्त्वत्रयकी आरम्भ, अरुण सुखकी तरुण उत्थाप, यौवनकी मनका महोत्थाप, दृष्टि मन और वचनकी स्खलनकी प्रौढ कहते हैं ।

पूजा-सङ्केत—तंत्रसारमें इस प्रकार उद्धृत है—

“द्रव्याणां मावती सख्या पात्राणां द्रव्यसंहतिः ।  
हाटकं रामत ताम्रं मारुतमृतादिना ॥  
उपचारविधाने तद् द्रव्यमाहुर्मनीषिणः ।  
आधने पंचपुण्यानि स्वागते षट्चतुःपलम् ॥  
जलं श्यामाकदूर्वा च विष्णुकान्तामिरीरितम् ॥

पाथेनार्थे जयं तावत् गन्धपुण्यास्ततं जदा ॥  
दूर्वास्तितलाद्य नक्षारः कुशाग्रः श्वेतसर्पपाः ।  
जातीफललवंगकृष्णशोलाश्च यत्पलम् ॥  
श्रीकामाचमनं कास्ये मधुपर्कं पुनं मधुः ॥  
दध्ना मत् पलं दध्नुः शुद्धं पाणिः तथा च मे ।  
परिमार्गन्तु पंचामात् पलं स्नानार्थं सर्वमथः ॥  
निर्मलेनोदकेनाप सर्वत्र परिपूर्णता ।  
मन्दिनं गार्हेत सर्वं त्यजेत् पूजायै यैः श्रेः ॥  
वितन्तिमाश्रादधिकं वामे युगमन्तु नृगनम् ॥  
स्वर्णाशमरणान्येव मुष्कारान्युपाणि च ॥  
चन्दनागुरुकर्पूरपंकं गन्धपत्राणि च ॥  
नानाविधानि पुण्याणि पंचानादधिकानि च ॥  
कांश्यादि निमित्ते पात्रे धूपो गुग्गुलुर्गमाहूः ।  
सप्तवर्षीयु संयुक्तो दीपस्याच्यतुरंगुलः ॥  
यावद् मक्षं भवेत् पुंमस्तावद्दद्याज्जनादने ।  
नेवेद्यं विविधं पस्तुमस्यादिकचतुरंगम् ॥  
कपूरं शिखिता वनिं मा च फार्पासनिर्मिता ।  
सप्तवर्षीयु संयुक्तो दीपस्याच्यतुरंगुलः ॥  
शिलापिष्टं चन्दनागं सप्तधा वर्त्तयेत्ततः ।  
कार्यं ताम्रादिपात्रे तत् प्रीतये हरिमेधमः ॥  
दूर्वाक्षतप्रमाणं च विधेयन्तु जनाधिकम् ।  
उत्तमोऽयं विधिः प्रोक्ते विभवे मनि सर्वदा ॥  
एषामनावे सर्वेषां यथाशक्या तु पूजयेत् ।  
अनुकल्पं विषयेषु च द्रव्याणां विभवे षति ॥”

द्रव्यकी जितनी संख्या है, पात्रको भी उतनी ही संख्या समझनी चाहिये । उपचार द्रव्य कहनेसे सुवर्ण, रजत, ताम्र और कांस्य इन चारका बोध होता है । पञ्चविध पुष्पसे आसन, षट्पुष्पसे स्वागत, चार पल जलमें पाय, श्यामाक (विष्णुकान्ता), अपराजिता, शुभ्रपुष्प आतप-तण्डुल, दूर्वा, तिल, कुशाग्र, श्वेतसर्पपा, जायफल, लवङ्ग और ककूल, इनका अर्घ्य, षट्पल जलमें आचमन, कांस्यपात्रमें छत, मधु और दधिसे मधुपर्क, एक पल विशुद्ध जलमें आचमन, ५० पल विशुद्ध जलमें स्नान, धितस्तिमात्रसे अधिक दो नये कपड़ोंसे वसन, मुष्का और रत्नादियुक्त स्वर्णादि द्वारा आभरण, चन्दन, अगुरु और कर्पूरसे गन्ध, ५० प्रकारसे अधिक फलोंसे पुष्प,

आध्यात्मिकतामें बुना घोर शुभानुसुते रूप, तथा सत्रवर्तीवृत्त  
 दोष द्वारा रूप बनती है। जितने द्रव्यके भक्षण करनेके  
 एक सुप्रयोज्य पीठ मरता है, उतनेसे नभय बनता है।  
 ( इस नैवेद्यमें माणाधारके पदार्थ मिलावे जाते हैं,  
 चाय-पत्र इ इकारने कम न होनी चाहिये )। कार्य  
 मादि सुत्रके द्वारा इ पञ्चन परिमित ० बलि बना कर  
 कममें कपूर सत्रुल कर बना देनेसे हीय घोर ० बार  
 प्रदक्षिणा करके प्रक्षाम करनेके लक्ष्मी मन्त्रना समझना  
 चाहिये। (विष्णुपीठके लिए ताखादि पात्रमें यह कार्य  
 करना चाहिये।)

सूत्रांघत कर्तव्ये एकमोमे पचित्र सूत्रां घोर पघत  
 लेना चाहिये। घनयासो म्पत्ति के लिए यही उत्तम विधि  
 है। इस विधिसे यमुघार जो पूजा करता है, वह समस्त  
 भोगोंको मोय कर पाविर हरिपुरको समन करता है।  
 विमलकोन म्पत्ति यथागमि लपवार द्वारा पूजा कर  
 सकता है। यह यमुघार बननामोके लिए नहीं है।  
 घनवान् म्पत्तिसे ऐसा करने पर बह निश्चय होता है।  
 मन्त्रसङ्केत—घर्मात् वीत्र। जेवे मुपमेश्वरो वीत्र।

“बहुमीवोऽग्निमासुको वाग्नेयार्कमन्त्रवत् ॥”

बहुमीय मन्त्रके ‘ह’, अग्नि मन्त्रके ‘ग’, वाग्नेय  
 मन्त्रके ‘ई’ घोर अर्धेन्द्र मन्त्रके “—इन सबके “ॐ”  
 मन्त्रना लडाए दुपा।

बाधोवीत्र, यथा—

‘वर्णय वदितंयुच शिबिभुवववितम् ॥”

वयाय मन्त्रके ‘अ’, वदित मन्त्रके ‘ए’ रति मन्त्रके ‘ई’  
 घोर विन्दु मन्त्रके “—इसके “छो” इस मन्त्रना लडाए  
 दुपा। इस पाठोतिथ पठसमुच्चको मन्त्रसङ्केत कहते  
 हैं। बीच लभमें निरूप निराल हैवी।

इस प्रकारने किस तरहका पत्र जोनेके लक्ष्मी  
 कोनधा यन्त्र कहते हैं, वह जिस रीतिसे बनाया जाता  
 है, इन सब सङ्केतोंके जाननेको यन्त्रसङ्केत कहते हैं।  
 वरत्रमन्त्र इति।

घोराधार-पूजा। तन्त्रमें घोराधार-य या एक प्रधान यत्र  
 है। लक्ष्मणस-सोरिकाने छतोय पटनमें लिखा है—

“भारो वीवनी देवैरि वक्ष्या घोराधरि ॥

वत्त विज्ञानमात्रेण वीवन्मुखे ववैवटः ॥

घर्णेकमेव देवतां वीवनीया प्रधीतिथ।  
 अकारनं विना विना न विदुष्यति करारक न  
 विना पूजां विना ध्यानं विनाकारं नदेष्टरि।  
 धारणे इत्यमर्थेन मनेमुच्यते महामयः ॥  
 लक्ष्मी देव हरिश्च तद्गोत्रं नास्तिवर्षितः।  
 वरं देवात् वन देवात् कुक् देवात् शिवोऽपि न त  
 एतां विधां नदेष्टामि न दद्यात् वत्त फलवित्।  
 कासी वीवत्रन कूर्ध्वयुक्त लक्ष्मणम् ॥  
 कर्मात्वीवत्रं देवि वदिते कानिके तथा।  
 पुनस्तम्भेन वीवामि वदित्कन्ठावधिमनुः ॥  
 भैरवोऽत्र न्यधि श्रेष्ठ इतिवृत्त्युक्त्वा वरारणम् ॥  
 दक्षिण कानिका श्रेष्ठा देवता लक्ष्मणविता ॥  
 वीवयति न देवैरि कूर्ध्वं कर्मां यमात् मिये ॥  
 संख्याकृत्स्नानो व्यक्ता वरिधीनितौ ॥  
 अकारवत्तां वोटं सुचयेषी शिवम्बरीम् ॥  
 यमुघ्रां महावरीं सुवमास्तविमुषिताम् ॥  
 एवकन्ठादि कर्त्तव्योऽङ्गनाःपटुवाम् ॥  
 अमर्षं वरवैव दक्षिणवोर्दपामिवात् ॥  
 महायैवप्रसां वामां वरक कालकावितताम् ॥  
 कर्त्तव्यकमुच्यतेवृत्तवृत्तिवर्षिताम् ॥  
 वोरदंष्ट्रं कालकात्वां वीवितपवोवर्षिताम् ॥  
 एवकन्ठा-महावैव-वृत्तवो रित्तिवितताम् ॥  
 महाकालेन न वरं विपरीतलक्ष्मणां ॥  
 एव यत्ता प्रवर्षेन प्रवैरीयेक मचितः ॥  
 एवकन्ठी एवपरवै एवकन्ठावमभिवैः ॥  
 एवकन्ठा वलतो मन्त्री वरिवायत्त वमर्षैवत् ॥  
 वीवत्तां लतो देवि व्याकर लक्ष्मणवृत्तम् ॥  
 वदितं कमठवैव क्षेत्रं वृत्तां तपिव न ॥  
 एवामुषि म्पत्तिं विनावमिदं तथा।  
 इयथा वरिवायत्त तन्त्रके विधिदेष्टव्यम् ॥  
 तत्त्वोपरि मये वीठ ववरेत् मावकवतमः ॥  
 वदितं वृत्तं वीव देवात् विनां वरमुच्यते ॥  
 वरवैवमर्षोऽपि नो वी वरमयवे वयाः ॥  
 वदितु न पूर्वाविधियः इत्यभिना लण ॥  
 कायिषी वामरा वैव रतिः प्रीतिवैव न ॥  
 विना मन्त्र नदेष्टामि मये वैव मनीष्यती ॥

काली कपालिनी कुक्कां कुरकुक्कां निरोधिनीम् ।  
 विप्रचित्तां महेशानि वहिः पट् कोणकेषु यः ॥  
 त्रयामुप्रभमां धीसा न्यसेत् पत्रत्रिकोणके ।  
 मात्रां मुद्रा सितार्धैव न्यसेच्चान्यत्रिकोणके ॥  
 सर्वाः श्यामा असिकरा मुष्टमालाविभूयिताः ।  
 तर्जनीं वामहस्तेन धारयन्त्यः शुचिस्मिताः ।  
 दिगम्बरा हृषन्मुख्यः स्वस्ववाहनभूयिताः ।  
 एवं ध्यात्वा प्रयत्नेन पूजयेदष्टपत्रके ॥  
 ब्राह्मीं नारादणीशैव तथा माहेश्वरीं प्रिये ।  
 अपराजिता च कौमारीं वाराहीमर्चयेदसुधः ॥  
 नारसिंहीं प्रपूज्यैव ततो दक्षिणतो यजेत् ।  
 महाकालं यजेत् देवि विपरीतरतान्तरे ॥  
 दिगम्बरं मुष्ककेश चण्डवेशं प्रयत्नन ।  
 एवं संपूज्य यत्नेन यजेत् प्रन्त्रमनन्वधीः ॥  
 विना मद्यं विना मांसं यदि देवीं प्रपूजयेत् ।  
 देवता शापमाप्नोति मृतो नरकमश्नुते ॥”

वीराचार पूजा में पहले दीपनी आवश्यक है जिसके जाननेसे मनुष्य जीवन्मुक्त होता है इसीलिये समस्त देवताओंके लिए दीपनी कहा गई है, इस विद्याके बिना आयत्त हुए कभी भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। साधक पूजा, ध्यान और आचारके बिना एकमात्र ज्ञान द्वारा मुक्त होता है तथा जो मुक्त होता है उसके कुलमें कोई दरिद्र वा मूर्ख नहीं रहता। प्राण, धन, कुल और तो क्या स्त्री भी दान की जा सकती है, किन्तु यह मन्त्र हर एकको नहीं देना चाहिये। कालीके वीजहय, उसकी वाट कुर्च वीजहय और लज्जावीजहय, देवी दक्षिणकालिका, पुनः ये ही वीज हींगो। इसके ऋषि भैरव, कन्दर्पिक और देवी दक्षिणकालिका हैं।

इसके वीज कुर्च और लज्जाशक्ति हैं, अहंन्यास और करन्यास मायावीज द्वारा करके देवीका ध्यान करना पहला है।

करान्त-वटना, घोरा, मुक्तेशी, दिगम्बरो, चतुर्भुजा इत्यादि रूपमें कालीका ध्यान करके मद्य, मांस, रक्तपुष्प और रक्तपत्र हर तथा रक्त वस्त्रान्वित हो कर भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिये।

उसके बाद परिवारपूजा, फिर पीठ-पूजा की जाती

है। 'प्रकृति, कमठ, शेष, पृथ्वी, मुद्याम्बूधि, मणिदोः, चिन्तामणिगृह, श्मशान, पारिजात, इनको जड़में मणि-वेदिका बनावे। उसमें साधक श्रेष्ठ मणिपोठ न्यस्त करे। चारों ओर मुनि, देवता, गिष, नरमुण्ड, धर्माधर्मादिकी 'ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः' इतना कक्ष कर स्थापन न्यस्त करे।

पीछे साधक कानो, कपालिनो, कुम्भा, कुम्बकुम्भा, विरा, धिनी, विप्रचित्ता, इन सबको वहिःपट् कोणोंमें न्यस्त करे।

उग्र, उग्रप्रभा श्रेष्ठ दोहाकी पत्रत्रिकोणमें तथा मात्रा, मुद्रा और मिता को अन्य त्रिकोणमें न्यस्त करे।

बादमें "मर्वाः श्यामा असिकरा" इत्यादि मन्त्रद्वारा ध्यान करके षट्पत्रसे भक्तिपूर्वक पूजा करे।

तदुपरान्त साधक ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, अपराजिता, कौमारी और वराहोकी पूजा करे। पीछे नारसिंहीकी पूजा करके फिर याग करे। विपरीतरतान्तरमें महाकाल याग करे। साधककी चाहिये, कि अनन्यचित्त हो कर चण्डवेश, मुक्तेश और दिगम्बरको यत्नपूर्वक पूजा करे। मद्य और मांसके व्यतीत यदि देवीकी पूजा की जाय, तो देवता शापग्रस्त होते हैं और पूजाकारी व्याक्त अन्तर्न नरक जाता है।

“विना परकिया देवि जपेत् यदि तु साधकः ।

शतकोटिजपेनैव तस्य सिद्धिर्न जायते ॥

त्रियो गति त्रियो प्राणाः त्रियः सिद्धिर्न संशयः ।

नारीणां स्मरणे काली स्मरिता स्यात् सर्वशयः ॥

कण्ठे कण्ठ मुखे यत्र वक्षोर्न चोसि प्रिये ।

तस्यै कुलरसं देवि पाययित्वा यथोचितम् ॥

“स्वयं पीत्वा जपेन्मन्त्रं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥” ।

साधक परस्त्रीके बिना यदि जप करे तो शत कोटि जप करने पर भी उसको सिद्धि प्राप्त न होगी। क्योंकि इसमें स्त्रीही एकमात्र गति है, स्त्री ही एकमात्र प्राण है, स्त्री ही एकमात्र सिद्धि है, इसमें जरा भी संशय नहीं। नारीके स्मरणमें कालीका स्मरण करना होता है। कण्ठसे कण्ठ, मुखसे मुख, उरुस्थलसे वक्षोज, इस तरह उसकी कुलरस पिला कर और खुद पो कर यथोचित जप करे।

इस प्रकारसे जप करने पर निधि होती है, चम्यवा होमे पर निधि नहीं होती ।

इसमें धनविधारी होम है ?

“एतस्य च प्रयोगेन मन्त्रिर्बस्य ब्रह्मचरते ।  
वाङ्मिच्छामन्त्रवैजु वाग्निष्ठाटी स इत्यन्ते ॥”

जपर जो ब्रह्मा ब्रह्मा है, उस पर जिसको मन्त्रानि उप खित हो, वह योद्धारणू आदि धनविधारी है ।

पुरधारण—

“असमात्रवनेवैव पुरधारणुष्यते ।  
सुप्रिण्णा द्विकर्षं स्वयं वैश्यां त्रिकसक्तम् ॥  
क्षानाम्पु चतुर्कंथं पुरधारणुष्यते ।  
असुवाम अनेद्वेवि हविष्वाही विगाद्युविः ॥  
रागौ निरुद्वे तावच पीत्वा कुबराव विरे ।  
कुम्भापीयनोपेतो अनेमन्त्रदम्भनधीः ॥  
एवमुच्यविधानेन दद्यात् होममाचरेत् ।  
तद्द्व्यंथं तपन च तद्दर्शामिषेचनम् ॥  
तद्दर्शानं विप्रयोग्य कीर्तितं पार्ष्णिने ।  
पुष्पिणीमन्त्रदेव होमदर्शनामाचरेत् ॥  
एव ब्रह्मोपमात्रं च शिषो मन्त्रो नाम्बवा ।  
वाङ्मिच्छिं कसते वेदि कवित निर्दिक्तं त्रिणे ॥  
बनेनापि कुषेत्स्वात् विद्यया स्नात् बृहस्पतिः ।  
आहस्त्रोमीवो मूवा अन्ते सुष्मिषायावदात् ॥”

असमात्र जप जो इसका पुरधारण है किन्तु अत्रिय के लिये दो लाक्ष, वेद्योंके लिए तीन लाक्ष और गृह्योंके लिए चार लाक्ष अथवा पुरधारण होता है । यदि पञ्चक हविष्वायी जो निगोबराशमें कुबरास पो कर तथा कुम्भनारीबुद्ध जो धनव्यचित्तये इस मन्त्रका जप करे । इन तरहसे जपकराके पूरा करके विद्यानामुनार दद्यात् होम, दद्यात् तर्पण और दद्यात् धर्मियेक करे बादमें दद्यात् ब्राह्मण मीत्रन करार्थ । पुष्पिणी मन्त्रद्वय दद्यात् होम तथा तर्पण करे । इस प्रकारसे प्रयोग जिहा जाव तो धिदि होती है, चम्यवा होमे पर नहीं । वाक चिदि तथा निमन अविष्यव्यभि नाम होती है, चर्धमें सुषिरके समान, विद्यामें हृदयमति तुल्य और जीवन अस्थान पयन्त जायो होता है । चम्यमें वह सुति नाम करता है ।

“प्रथोमा म्बवाके च युवा कुबरावो बवेत् ।  
सोद्विज वा नवेद्वेदिनां नाने पुष्ययनं मयेत् ॥  
सुराणां मयेद्वयं मन्त्रानं विद्येवच ।  
ब्रह्मकाम्यावेद्वयं युवां पुष्याणं नवेद्वयं ॥  
नवमीं मांभुनवं मांभुं पुष्यं नवेद्वयं विरे ।  
एवं इतथा तावकेन्दो मायते च अनेम तु ॥”

इसके प्रयोगारणुकात्ममें सुरा जो दुष्पुतुष्य और मांभ पुष्य म्बव्य है । सुरा और मांभवाक बादमें गृह्य जो आर्वीने । सममें वाको कुङ्ग न बवेया । इसमें नवमीत मांभतुष्य है । सावकय्ये छटो इस प्रकार जान कर कार्य करना उचित है ।

“वीर्यं राजर्षिन तथा मौषिकमेव च ।  
निष्ठुते पद्मशागं च तवैव वरर्षिणि ॥  
श्रेष्ठं माताचतुर्कं च सवनागेन मासिद्धं ।  
प्रबवेत् बृहस्पतेः पुष्पिणी एवर्षिणी ॥  
मोक्षितेन वारोहे सर्षांघटी कुष्ठोबनाम् ।  
स्वापवेत् प षण्म्येव मन्त्रदेव वार्ष्णि ॥  
यारं माना पूर्वपुत्रम अने माके परं तथा ।  
वदि यत् । सपुष्पार्थमेव यत्प्राभिवन्तुवेत् ॥  
स्वापवेत् पीठनवेत् अशानारे वरानने ।  
तदस्तां मासिनां वेदि वृहीता वस्ततः सुवीः ॥  
इत्ता किञ्चित् मिच्छे मीरुववनवाचरेत् ॥  
शोडशांशं सुपुटी समानीव अस्तवत् ॥  
तामुद्गलं सव वर्यैः स्वापवेत् इन्द्रवारिणा ।  
विषाक वारसोयर्षिर्निष्पुने हृदयनिधिः ॥  
वृन्निष्ठा च मिद्धाये भोजवेत्ता वराननाम् ।  
आमव पाववेत् वृन्निष्ठा मिर्षं तन्मन विरेत् ॥  
तयो मन्त्री रन्वेत्ता विनिष्ठाये वा वरा ।  
तथा इस्ते तयो माकं एवा तां वाचवेत्तुका ॥  
वीत्ता माकं तथा वर्यं मादायान् भोजवेत्ततः ।  
तथा अनेर्द्वारतो वाङ्गात् मन्त्रि वायवा ॥”

सुषर्ष, रोष्य, मौषिच विष्णुम और पद्मशाग, इनकी सामाः परतुल्ये गृह्य कर समसे पृथक्कर्तितो पुष्पिणी को को अत्रित करे । बादमें पद्ममय और मन्त्रद्वय दद्यात् आम करार्थ । इनके बाद अत्रिब्रह्मना ( व्याहा ) उधारण कर धर्मिमन्त्रण करना और पीठके मन्त्र मासिकाको जान

कराना चाहिये। इस प्रकारके आचरण करनेसे मिदिको निकटवर्ती समझें और महीत्सव करें। षोडशवर्षीया युवतीको यत्र पूर्वक ला कर शङ्ख जल और गन्ध द्वारा स्वयं उसको स्नान करावें। फिर दिव्य अलङ्कार, सुगन्ध पुष्प और मिष्टान्नादि द्वारा पूजा करके तन्मय हो कर उसको आसव पिलावें और स्वयं भी पोंवें। उम समय यदि वह षोडशी युवती रतिके लिये प्रार्थना करे, तो उसके साथ रमण करें, तथा उसके हाथमें माला टेंवें। पीछे उस मालाको उससे वापस ले कर ब्राह्मण-भोजन करावें। इसके बाद आधी रातको जप करनेसे निश्चय साक्षात् होगा, इसमें श्रम्यथा नहीं।

“तत्रापि प्रत्ययो नोचेत् कलामध्ये विशेषद्वेषः।

पर्येकस्य चतुःपार्श्वे षट्सूत्रं मनोरमम् ॥

वक्त्राद्वाविद्यति ग्रन्थिं रमापूटितमूलकः।

निविशैव स्वार्थं पायाली सैन्धवी तथा ॥

वक्ष्यमाणक्रमेणैव वस्त्रोपरि निघापयेत्।

षोडशाब्दां परलता गणिकां च विशेषतः ॥

समानीयप्रश्लेन दिव्यपुष्पैर्निवेदयेत् ॥

भोजयेत् मिष्टमोज्याने धौमकं परिघापयेत्।

लेपयेत् दिव्यगन्धेन भूषणैर्भूषयेत् स्वयम्।

रमयेत् परया भक्त्या साधकः सिद्धिहेतवे ॥

जपस्यादर्शनैव सिद्धिर्भवति नान्यथा।

विना मद्यं महेशानि न सिध्यति कदाचन ॥

तस्मादादौ प्रयत्नेन पीत्वा ता पाययेद्वेषः।”

पूर्वाक्त प्रकारसे यदि ज्ञानोत्पत्ति अर्थात् सिद्धि न हो तो इस प्रकारसे करने पर सिद्धि होगी—

साधक कलाके बोच निवेशित हों, फिर पर्यङ्कके चारो और मनोहर षट्सूत्रसे रमापूटित मूलक द्वारा वाइस गांठे बांध कर अपनी रक्षाके लिये वक्ष्यमाणके नियमानुसार पांचालो और सैन्धवी वस्त्रके ऊपर स्थापित करें। बादमें साधक यत्रके साथ षोडशी परलता वा गणिकाको ला कर उसको दिव्य पुष्प देवें और मिष्ट भोजन खिलावें, चौमवस्त्र पहनावें तथा दिव्य गन्ध और भूषण द्वारा विभूषित करें। साधक सिद्धिके लिये परा भक्तिके द्वारा उसके साथ रमण करें। इस तरहसे सब कार्य कर चुकनेके बाद अपना अर्द्धभाग जपनेसे ही

सिद्धि होती है। किन्तु इसमें मद्यके बिना कभी भी सिद्धि नहीं हो सकती। इसलिये पहले यत्र पूर्वक स्वयं मद्य पान करके और उसको पिना कर पीछे जप करना चाहिये।

“तत्रापि प्रत्ययो नोचेत् ग्रहदोषं प्रकल्पयेत्।

निशीघे निर्भयो देवि इमंशाने प्रान्तरे तथा ॥

गन्धैः शानादिकं कृत्वा पादशौचादिपूर्वकम्।

षट्पारोपयेत्तत्र सौवर्णं राजतं तथा ॥

ताम्रं वा तन्महेशानि विभवातुक्रमेण तु।

कल्पयित्वा निग्रामागे पूजयेत् परमेश्वरीम् ॥

उपनायंयाशाकि चित्तगत्यं विवर्जयेत्।

देवीपूजा बाधयैव पिष्टन्तु परिदापयेत्।

चरौ निघाय श्लेन चतुःपिष्टकवर्तुदम्।

ततश्च पाचयेत्तु कुण्डमये तु पूजयेत् ॥

रक्षां घनां वलाकाय नीलां कालीं कलावतीं।

द्वारेषु पूजयेन्मन्त्री लोकपालान् प्रयत्नतः ॥

प्रहान् सपूजयेन्मन्त्री चतुष्कोणक्रमेण तु।

हृदिदीर्घां हुनेन्मन्त्री यथाशक्त्या ततश्च ॥

श्रावयेत् मूलमन्त्रेण मधुना सिद्धिहेतवे।

हुत्वा संच्छादयेन्मन्त्री ततो दक्षिणकालिकाम् ॥

धूपदीपध नैवेद्यैः प्रदक्षिणमथाचरेत्।

पिष्टवर्तुलसंहयातं सुवर्णादि प्रजायते ॥

एकैनेव प्रयोगेण यदि सिद्धिर्भवेत्प्रिये।

तथा होमो द्वितीयेन सौष्यं वापि सुरेश्वरि ॥

तृतीयेन भवेत्ताम्रं खौहं तुयैण च स्मृतम्।

एयामभ्यतमां शक्त्वा साधयेत् सिद्धिमुत्तमाम् ॥

सिद्धाया कालिकायान् नेन्द्रं दुर्लभमुच्यते।

शुक्लमिदं सर्वं तस्मादादौ समर्चयेत् ॥

तस्य प्रसादमात्रेण सिद्धो भवति नान्यथा।”

पूर्वाक्त प्रकारसे यदि सिद्धि न हो, तो साधकको चर-  
होम करना चाहिये। साधक श्मशान वा प्रान्तरमें जा कर निशीघ समयमें वहाँ स्नान करें। अनन्तर पाद-  
शौचादि पूर्वक विभवातुसार सुवर्ण, राजत वा ताम्रमय  
षट् स्थापन करके पूजा करें। देवीपूजाके उपचारके  
विषयमें छपणता न करने चाहिये। यथाशक्ति देवी  
पूजा करके पिष्टक बनावें। वर्तुलाकार चतुःपिष्टकको

ब्रह्मपूजा करती रण कर चबवाव करे और कुण्डल  
 मध्य पूजा करे । सायबको उचित है कि, राजा, राजा  
 बलाका, मोला, बानी कलाबती और हारसमूहके कोब  
 पासीको पूजा करे । वीजे चतुष्कोषके क्रमसे चर्चीको पूजा  
 तथा मयागति इतिहास प्रथेय करे । ब्रह्ममन्त्र और  
 मनुष्य द्वारा होम तथा टीप, ब्रुप, नैषध पादिसे द्वारा  
 पूजा करके प्रदक्षिणा देनी चाहिये । बाहरी पिठ  
 बतुं स क्माके चतुस्रार सुत्रपादि उत्पद्य होती हैं । एक  
 प्रयोगसे यदि निदि हो तो होम करना पड़ेगा । द्वितीय  
 द्वारा रीष्य, तृतीयसे ताव्य और चतुर्थसे शौच होता  
 है । इनमें चम्बतम होने पर उत्तम निदि प्राप्ती  
 चाहिये ।

इस प्रकारसे आदिवा सिद्ध होने पर इन्द्रज भी  
 दुर्गम नहीं है ।

ये धर्मो सिद्धि शुद्धमूलक हैं, शुद्धसे बिना किसे तरह  
 भी सिद्धि नहीं हो सकती । इच्छासिद्धि सबसे पहले शुद्धकी  
 चर्चना करे । शुद्धके साधक पर प्रसन्न होते ही निदि  
 होता है । चम्बका नहीं ।

“उद्यारि प्रसन्नो मे वेत् शुद्धिप्रथमवाचरेत् ।  
 कर्मावास्तान्दि वैर निर्वीये च्छुद्धावधे ॥  
 समकाले प्राण्डरे वापि भवा देवीं ब्रुवन्वेत् ।  
 मयावांशोपचारैश्च ब्रुपरीये मंगोरये ॥  
 देवे । धर्मिधार्मेच तथैव वराभक्ति ।  
 इत्येकींश्चिदवलेच स्वनामरत्नपुरितैः ॥  
 ब्रह्ममूर्धं श्लोचस्य इच्छिप्रथमवाचरेत् ।  
 प्रथमेष्टुत्तमस्यैवमुपायनिश्च निरिहन्वरे ॥  
 विद्यावास्तुधर्मं वापि विद्याकेचं महेपारि ।  
 वदि भीष्टिर्वेलास्य तथा वदुदरे मवेत् ॥  
 इन्द्राग्निपिवादेव मन्त्रैव मनुस्मरेत् ।  
 अवस्त्वं ब्रुवन्ने कर्मा विद्या च दस्यते स्वके ॥  
 वदि उत्र मवेत् देवि धर्मो पुण्यके मवेत् ।  
 उता परकपालकं पुत्र कार्यं तुषैव च ॥  
 उता बवती वारीनि देवनाथी सुकोयवा ।  
 द्विद्विधमन्त्रकं इत्या मरिचकवचवाचरेत् ॥”

इससे भी यदि सिद्धि न हो, तो प्रदक्षिण चारचर  
 करण चाहिये । सायबको चाहिये कि, मैं यमावाकाजे

दिन निशीथ रात्रिको मगरहित हो कर अगान पबला  
 प्रातरमें जा कर बर्षा देकोको मध्य, मांस, ब्रुप, दोप  
 और मनोरम उपचार, धामिपाक, दक्षवन्न और क्वाभम  
 रपादि द्वारा पूजा करे । बादमें ब्रुह्ममन्त्रका प्रथम जोर  
 टण्डवत् हो कर प्रदक्षिण करे ।

अब तक निमा मिय न हो तब तक जो उपादिवा  
 करना प्रयत्न है । यदि सायबको उतम समय भव उप  
 धित हो तो उस समय उनको पूव डठ और टव्याटनि  
 हो कर मन हो मन धराव करण चाहिये । उतम समय  
 पबल हो मन्त्र सुगरी पड़ेगा और उतम स्थान पर सिद्धा  
 दिवारी देमी । यदि वरी सुगुगु मन्त्र हो, तो परम्परासे  
 पासक हो कर पुत्र कार्य धारण करे और उनसे  
 बाव यदि सुगोमना देववाची हो तो निदिको उपलित  
 आज कर महीस्य करे ।

“तवापि प्रसन्नो मेवेत् नवव्ययमवाचरेत् ।  
 वामिनीं बुवतीं दत्तां पुरिदाव्य विसेषण ॥  
 दानादीव प्रकलेन स्व च ब्रुवन्वाचरेत् ।  
 तासुमन्त्र स्वर्गैश्च मूर्धैर्वैद्वेदोद्यवा ॥  
 द्वितीयमोत्रविद्या च नक्षत्रा पावगा विवे ।  
 तां विद्यां विधानेन स्वायेष्टुत्तमैवमरगे ॥  
 उत पूजां विचार्य नामान्कारंशुभं ।  
 उच्येव कवेत् नम्य रत्नचन्द्रवचनैः ॥  
 यमावाकां नगव्यां नगव्यां मन्त्रादीं ।  
 पूजयेदप्यत्रं पुत्र मये देवीं ब्रुवन्वेत् ॥  
 रत्नकर्म रत्नकर्म रत्नकर्मरिदीये ।  
 पूजयेत् भक्तितो मन्त्री देवींरत्नचन्द्रवचनैः ॥  
 इतिरिक्तं कवेये वैपि रत्नविष्णुति वा परा ।  
 क्वाण्णु इत्येष्टुति वारदोपे करोति च ॥  
 पुत्रिकामकरलेन तथा श्रेयं चवाचरेत् ।  
 को ममस्ते नगमन्परी नगव्यादीं सुये ॥  
 मन्त्रके मयागणे म्नेकवेदिद्वाराजिनि ।  
 मन्त्रावाः प्रचारेन मम तिद्विद्विषयति ॥  
 अवस्त्वं ब्रुवन्ने वाप्य वाप्यं विधानवा ।  
 इति से कवितं देवि पुण्यपुण्यदरं परं ॥  
 मयागणं चर्चयन्निः स्वत्तु मन्त्रात् फलेन भोपेणम् ॥”

इससे भी सिद्धि न हो तो सायबको मयाग करना

चाहिये। साधकको उचित है कि, एक युवती पुष्पिणी कामिनीको यत्रपूर्वक ला कर स्वयं उाको गन्धादि द्वारा भूषित करे। उसको मिष्टान्न भोजन करा कर तथा विवस्त्रा (नंगी) करके जर्दंतण पर स्थापन करे। पोछे रक्त चन्दन और अलङ्कार द्वारा गन्ध बनावे और नाना उपकरणोंने पूजा करे। भगवागर्भे भग हो नाम है, भग ही प्राण है, भग हो देह है और भग हो स्तन है, अष्ट पत्रके मध्य देवीकी पूजा करे। पूजा करते समय रक्त-गन्ध, रक्तवस्त्र, रक्तमाल्य आदि प्रदान करे। देवीके दर्शनको कामना करके इस प्रकारसे पूजा करे। उस समय यदि वह रतिके लिए प्रार्थना करे, तो जय तक होम न होवे तब तक लभार्भे रत रहना चाहिये। पोछे पुष्पिणी-मकरन्द द्वारा होम करे। ओं भगमालायै नमः, तुम भगरूपधारिणी हो तुम महाभारगा हो, तुम्हीं एक मातृ मोक्षदायिनी हो, इत्यादि कह कर प्रणाम करे। 'तुम्हारे अनुग्रहसे मुझे सिद्धि प्राप्त हो, इस प्रकारका आचरण करनेसे सिद्धि होती है। यह अत्यन्त गुह्यतम है। कोई इसको प्रकट कर दे तो कायमें हानि होती है। इसलिये इसको मब तरहसे गुप्त रखना चाहिये।

‘अत्रागणो महेशानि कलावतीं समाचरेत् ।

कुंक्रमं चन्दनं चन्द्र एभीकृतं तु पेपयेत् ॥

जपेत् सहस्रं देवेशि देवीयैव प्रपूजयेत् ।

कामिनी पूजयेत् भक्त्या तस्या मूर्ध्वेति कारयेत् ॥

तिलकं वश्यमात्रेण स्वयं शिरसि धारयेत् ।

रमा वाणीर्भवानी च सर्वे सम्मोहिनी तथा ॥

देयुता परमेशानि वहि षान्तावधिमंतुः ।

धनेन शतजपेन तिलकं मूर्ध्नि कारयेत् ॥

कलांच पूजयेद्यत्नान् नानाभरणभूषिताम् ।

पाययेत् सा स्वयं यत्नात् स्वयं पीवा च यत्नतः ॥

जायते देववाणी च ततो देवीं न संशयः ।

एवं भूत्वा वरागोहे ततो यत्नं समाचरेत् ॥

अथवा देवदेवेशि नगनीमुख विचक्षणः ।

नगनां परलतां पश्यन् जपेत् मन्त्रमनन्वधीः ॥

यामोत्तरं समाचरेत् यान्द्रूपमतन्त्रितः ।

मद्यमांसीपचारैश्च पूजयित्वेष्टवेवताम् ॥

रत्नार्थसङ्ग्रहाणिस्तु स्वपादवैष्णवि नियोजयेत् ।

गणनाथं क्षेत्रगर्भं वट्टक योगिनीं तथा ॥

यत्किमिः सामिपार्थैवध ज्ञेयं परमपुन्दरि ।

पृतप्रदीपं प्रज्वाल्य ततो देवीं मनश्चयेत् ॥

ततः वरसं जपतो देवत दर्शनं भवेत् ।

अथवा नियमीभूत्वा भूतनिःशान्तिसुम् ॥

जपेत् प्रतिदिनं देवि वरसं सिद्धिदत्तवे ।”

यदि पूर्वाक्त कार्यमें साधक भगवत हो, तो उक्त कलावती आचरण करना चाहिये। कुंदूम चन्दन और चन्द्र (कपूर) को एकत्र करके पेपित करे तथा सहस्र जप करके देवीको पूजा करे। अनन्तर कामिनी-पूजा करे। देयुता इत्यादि मंत्र भी बार-बार जप कर उसके मन्त्रक पर तिलक लगा दे और खुट भी तिलक लगावे। यत्र पूर्वक नाना आभरणसे भूषित कलाको पूजा करे। पोछे यत्रपूर्वक मध्य पी कर उसको भी पिलावे और उस समय देववाणी होने पर और भी यत्रके साथ जपादि आचरण करे। अथवा उस समय साधक स्वयं नग्न हो कर तथा उसको नंगी करके, उसे देखते हुए अनन्यचित्तसे जप करे।

यामोत्तरमें प्रारम्भ करके यामोदय अतन्त्रितभावसे मध्य और मांस आदि उपचार द्वारा इष्टदेवीको पूजा करे। आम्बरस्राके लिए खड्गधारी होना तथा पार्श्वमें रक्षा करना जरूरी है।

तस्यस्यात् गणनाथ, चैतपाल, वट्टक और योगिनी, इनका सामिपान्न द्वारा याग करे तथा पृतप्रदीप प्रज्वलित करके देवीको अर्चना करे। इस प्रकारसे हजार जप करने पर देवताके दर्शन होती है। अथवा नियमी होकर भूतनिःशान्तिसुम् प्रतिदिन हजार जप करे। इससे भी सिद्धि होती है।

“दिवारात्रो संस्मरणं हविष्याशनमेव च ।

कुमारीं पूजयेत् यत्नात् नानाभरणसंयुताम् ॥

मासे पूर्णे वरागोहे निक्षीये मतसःध्वजः ।

महापूजां प्रकुर्वीत लतामण्डलमध्यगः ॥

मद्यै मासैश्च विविधैरन्यैश्च विविधैस्तथा ।

संपूज्य विधिवद्भक्त्या सर्वदा तिमिरालये ॥

सहस्रजन्मात्रेण सिद्धिर्भवति नान्यथा ।

साक्षादायाति सा देवी सदा सरयं न संशयः ॥

साक्षादायाति वरागोहे भवेदिन्दुसमोदरः ।

अत्र च वायुकाष्ठिकाः कश्चनमिद्विद्विपन्नेः ।  
 अत्ररायणा इती कामिनी निदिदिपुने ।  
 तथा महुमदी सिद्धिर्वापये वात्त संभवः ।  
 इत्येदी मत्तत तरववत् नवलि वि ।  
 म्पये मने व पत्तके व वत्त म्पुमिपन्नि व  
 तत्रैव वेदिता सर्वा म्पयित्ता मत्त संभवः ।  
 रमा वा हुताग्नी वा वरि वप्यति । यथा ॥  
 नरेव याति नः इती मत्त कथा विचारका ।  
 इत्युत्तुमवेदेति विचारत्त्वं इत्यवधि ते ॥”

अथवा साधक इतिशब्दो जो कर दिवाराण इत्यनेनो  
 का स्वरूप करे और माना सामर्थ्येन भूमित कुमारो  
 जो पूजा करे । इस प्रकार एक मान करके मानके वर्ण  
 टिकने निगीहने मत्त निम्नगतामे जनामण्डलके मध्य  
 गत जो कर म्हाय जा करे । मध्य मान पादि विविध  
 लपकारों द्वारा विविधत् पूजा करे मन्त्र रूप करे  
 इसमें निश्चय ही निधि होगी । निधि प्राप्त होनेके बाद  
 देवोक्ता साक्षात् होगी । इस तरहसे वायुकाष्ठिका चन्द्र  
 निधि, मधुमती पादिभी निधि निम्नमे जोबो । जिनको  
 निधि प्राप्त होती है । मेकड़ा सेटिका सिकता पादि लभने  
 मयोमूल जो प्राति हैं तथा अन्य मन्त्र और पातानमें कर्मा  
 प्रातिको इच्छा जो, उसी समय सेटिकाएँ लभे मे  
 ज्ञातो हैं । साधक यदि म्प्या, हुताग्नी पादिवा अप करे,  
 तो सब ही उपस्थित होंगे और इनको इच्छाएँ सु  
 होनी ।

“अथवाः वणिचं वत्ता पूरयेत् मन्त्रिमतत ।  
 एवा वद वपेम्पन्न विवेरसिमाहवम् ॥  
 विवेक वरवा मत्तका वरयेत् प्रवत्ततः ।  
 एवं इत्या विचारम्पु मात्तमेकं व(अथे ॥  
 कर्मा ईमनेदिहात् सिक स्वाधिपमोत्रम् ॥  
 माहपूर्वे तावनेयो सिद्धीये व कम्पुतः ॥  
 वाटात् पूर क्मनेये पूरयेत् परिकेवटीम् ।  
 महासिमीरमम्पत्तो म्पेम्पन्नमम्पन्धी ॥  
 उत्तमात् वारते निधि कर्मा रैवि वरामि ते ॥”

अथवा साधक म्पिच्छाके पाम का कर म्पिपूर्वक  
 पूजा करे । उसमें साधक इच्छा वार मत्त अपे और  
 धरमता लम्हाइ पूर्वक उसको म्प्याव पिन्ना कर पूर ही

मिधि । इस तरहसे एक मास तक अनुष्ठान करे । प्रति  
 दिन होम और ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिये । मान  
 पूर होने पर साधक नियोज रात्रिमें कताकुल जो कर  
 साक्षात् पूजाका वारा परमेष्ठीको पूजा करे और  
 महातिमिरमें पलम्पयित्तने मन्त्र अपे । ऐसा करनेसे  
 साक्षात् निधि होगी ।

“अथवापि वारांहे प्रयोगविधिमाचरेत् ।  
 वायुम्पन्न वामादीव मावत्स्वापि वार्षी ॥  
 येमुम्पन्न तत्रवाचीव म्पुये सिद्धिप्य वत्तः ।  
 एत पीठं वामायेन वैशी ध्याता तु धारका ॥  
 पूरयेद्देवप्राप्तौ साधकापि समन्वितः ।  
 वपेत्तु परवा वरवा म्पुम्पन्नविचारका ॥  
 एतः साक्षात् म्पेवैदि विचारका ॥”

अथवा साधकको चाहिये कि प्रयोग विधिवा अनु  
 ष्ठान करे । साधक नरहृच्छ साकार-सुच्छ और मो  
 सुच्छको यत्पूर्वकता कर म्पुमि पर निश्चय करे । इस  
 पर पीठ आरोपण करके देशोक्तः ध्यान और चर्चादिभि  
 समय व जा करे और वामबाहि युक्त जो कर म्पिच्छे साध  
 म्पुच्छ अप करे । इतनेकोसे देवी साक्षात् दयान  
 देवोको और साधक मी निधि लाभ करेगी ।

“अथवाः वनिचं वत्ता पूरयेत् मन्त्रिमतत ।  
 एवा वद वपेम्पन्न विवेरसिमाहवम् ॥  
 विवेक वरवा मत्तका वरयेत् प्रवत्ततः ।  
 एवं इत्या विचारम्पु मात्तमेकं व(अथे ॥  
 कर्मा ईमनेदिहात् सिक स्वाधिपमोत्रम् ॥  
 माहपूर्वे तावनेयो सिद्धीये व कम्पुतः ॥  
 वाटात् पूर क्मनेये पूरयेत् परिकेवटीम् ।  
 महासिमीरमम्पत्तो म्पेम्पन्नमम्पन्धी ॥  
 उत्तमात् वारते निधि कर्मा रैवि वरामि ते ॥”

अथवा साधक रमने म्पुच्छ होनेमें रत जो उससे पच  
 रायुतकी पाग कर पोछे कपूर पूर करे । योनि पर  
 कुहूम और कर्मा म्पुच्छ प्रदान करे । पोछे यमके साथ  
 एत कुहूम पादिको एकत्र कर उससे तिक्क करे ।  
 तिक्क लमाकर नियोज रात्रिमें निम्नय जो इच्छा वार  
 अप करे । ऐसा करनेसे देवी साक्षात् होनी ।

“अथवापि लठीपिम्पन्नविरेव वाराम्पे ।  
 मन्त्र विचारं वनेन एव देवी वप्ययेत् ॥  
 म्पयमातोपचारैव कर्मात्पुर्वीव(रामे ।  
 बहवमरमात्रेन सिद्धी लभति साधका ॥”



अथवा साधक अपने शरीरमें उचित रुधिरके हाग यन्त्र बना कर मद्य और मांस उपचार तथा अर्कपुष्प हाग देवोको पूजा करें, फिर अनन्यचित्त हो कर हजार जप करें। इससे साधकको सिद्धि हो जायगी।

“अथवा परमेवामि गंगातीरे वसेत् मुधो ।  
उपवासद्वय कृत्वा कुर्वीत् स्नानमनन्दिनतः ॥  
ततो देवीं सवभ्रवर्चं धूरीपर्मनोरमैः ।  
हविष्यादेश्च नैवेद्यैः स्वर्गं मुशीत वाग्यतः ॥  
सुकवा पीत्वा स्त्रिया सार्द्धं निगीधे ऋषाक्षसः ।  
जपेत् षड्दशं देवेति ततः सिद्धिर्गगनने ॥”

अथवा साधक गङ्गाके किनारे जा कर दो उपवास करें, फिर अतन्त्रितभावसे स्नान करें तथा धूप, दोप, हविष्यान्न और नैवेद्य द्वारा पूजा करके स्वयं हविष्यान्न भोजन करें।

भोजन और पान करके स्त्रोके साथ निशोथरात्रिमें निर्भय हो सहस्र जप करें। इससे साधकको सिद्धि होगी।

“अथवा वटमूलस्यो दिग्वासातुक्तेःशयान् ।  
लताभिर्वेष्टितोभूत्वा जपेन्मन्त्रप्रपन्नः ॥  
ततः साक्षात् भवेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥”

पूर्वाह्न उपायमें यदि मिदिलाभ न हो तो साधक नरन और मुक्तकेग हो वटवृक्षके तले लना द्वारा वेष्टित हो कर अनन्यचित्तसे मन्त्र जपे। इसीसे निश्चय हो देवीका साक्षात्कार होगा।

“एतेनापि प्रयोगेन यदि साक्षात्प्रजायते ।  
ततो देवि । प्रवक्ष्यामि उपायं परपाद्भुतम् ॥  
एकेनैव प्रयोगेण यदि साक्षात्प्रजायते ।  
द्वितीयं वापि कुर्वीत तृतीयं वाप्यपि त्रिये ॥  
तृतीयं नचेत् सिद्धिं स्तत्रोपायं वदाभि ते ।  
वधे शुक्ले तथा रफे पीते वा नीरुधामसि ॥  
पुतली रचयेद्देश्याः सर्वथयवसुन्दरीम् ।  
पूजयेत् क्रोधरूपेण रक्षकैर्मनोहरैः ॥  
तत्र देवीं जपेत् यन्त्रे मर्मभ्रष्टर्यं सहस्रकम् ।  
रक्षचन्दनबीजेन तत्र कल्पितमालया ॥  
ततः शालमलीकाष्टेन सिम्बकाष्टेन वा त्रिये ।  
वह्निं शृज्वात्य यजेत् तत्र वह्निं प्रपूजयेत् ॥

ततः पुतट्टिहा भाटे लिभेन मन्त्रं व्रगानने ।  
सिन्दूरपुनर्ला देवि ततो वसा नृ गारयेत् ॥  
तादृयेत् मूलमंत्रेण मूलमंत्रेण रत्नयेत् ।  
क्षालयेत् शुद्धदुग्धेन अथवा दधिवाहिना ॥  
ततो हृंकारं प्रजपेत् षड्दशं परमेश्वरि ।

ततः साक्षात् भवेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥”

पहले जितने भो उपाय कहे गये हैं, उनमें यदि देवोके साक्षात् न हो, तो साधकको द्वितीय और भो एक परम श्रद्धत उपाय कडा ज्ञाता है। यदि एक प्रयोगके हाग सिद्धि न हो, तो द्वितीय और तृतीय उपाय जानना चाहिये।

पहले शुक, रक्त, नोन और पीत वस्त्रमें सम्पूर्ण चन्द्रयवमन्त्र एक पुत्तलिका बनावे। मनोहर रक्तयन्त्र द्वारा क्रोधरूपमें उम मूर्तिको पूजा करें। उमके वाटयन्त्रमें रक्तचन्दन निम्बित बोजमन्त्र हाग अर्घ्यरचना करके सहस्र जप करें। तत्पश्चात् शालमलीकाठ वा सिम्बकाठके हाग अग्नि जलावे और पूजा करें। अनन्तर पुत्तलिकाके कपान पर मन्त्र लिखे और सिन्दूरका पुत्तलिकाको अग्निमें तपावे। मूलमन्त्र हाग ताडन और रक्षा करें। वादमें दुग्ध अथवा दधि वा जल हाग चानित करें। पीके सहस्रवार हुडार मन्त्रका जप करें। इससे निश्चय हो देवीके साक्षात् दर्शन हीं, इसमें सन्देह नहीं।

“अथवा तादृयेत् देवि । नारसिंहेन पार्वतिः ।  
हविष्याशी दिवा भूत्वा ब्रह्मचारिसमो नरः ॥  
शतौ ताम्बूलपुगास्थो लतामं दलपथयः ।  
नारसिंहेन देवेति पूटितन्तु मनुं जपेत् ॥  
ततो लज्जजपेनैव साक्षात् भवति नाश्रया ।  
भवद्यं जायते साक्षात् मर्मव धवनं यथा ॥”

अथवा नारसिंह मन्त्र हाग देवोको ताडित करे, दिनमें हविष्यागो हो कर ब्रह्मचारोके समान होवे। रात्रिको ताम्बूल चर्चण करके लतामण्डल मध्यवर्ती हो नारसिंह मन्त्र पुटित कर जप करें। इस प्रकार १ लाख बार जप करनेसे देवी साक्षात् दर्शन देती है। इसमें विन्दुमात्र भो सन्देह नहीं।

“अथवापि वारोहे नौकालौहेन पार्वति ।  
शूलं निर्माय यत्नेन पटे देवीन्तु त्ययेत् ॥

तां वृक्षेषु प्रवृत्तेन तत्रैवमनुभवैः ।  
 पुत्रविद्या प्रवृत्तेन तरुणां वीर्येतरात् ॥  
 आराध्य विविद्वद्भारत्या कथेनम इमवम्ययी ।  
 एतु संवृषेयपलातोष्ण वरमपुत्रैर्मत् ॥  
 सो महाएतु नरानुभवं कवेरीकान्तवारीते ।  
 अत्रहृत्त सतुप्रवर्षं ततः दृष्टेन वपति ।  
 वदते मेव वा वागी आराटि च न संदधतः ।  
 अत्रान् आवठे पाप्मात्सु मयैव वचन वधा ॥”

पूर्वोक्तिवत् तपायमे दटि देवोवा साधात् न हो,  
 तो मोवा-मौह द्वारा शुभ वनामं पौर उत्तमं यज्जपुं  
 देवीको जन्मना कर । रत्नवन्दन पौर रत्नपुत्र द्वारा  
 मन्त्रिके साह उत्तमी पौर पोड टं वतापयोी पूजा करिं ।  
 पीके विजिपुर्वक धनम्विपत्ति मन्त्र जपे । धनमन्त्र  
 शुभकी पूजा कर “ॐ महाशुभ” इम मन्त्रके द्वारा प्रथम  
 करे । इम प्रकारके प्रयोगके कालो निपद्य दर्शन दे गी ।  
 “अथवा कश्चिदासीत् एत संनिवन् वनत ।  
 दूरमेतं कुडुमेन मन्त्र रत्नवन्तवधा ॥  
 विनिवन् मुनि कैरेति तत्र कालां कथामपेत् ।  
 तद्वाग्ने पूजयेद्देवीः शान्तानरत्नपुत्राय ॥  
 निधीयेत् इ जपेत्प्रत्येकंति कान्ता वर ।  
 जपेत्त न वदत इ ततः कालात् मनेपुत्रवम् ॥  
 इति ते क्वचिन् देवि शुभ्राद्यन्त रं वाम् ।  
 अत्रवारमिदं देवि योगैस्तु ज्ञानुवाच ॥”

प र्ष अत्रित तपायके साधात् न होमि पर कुडु म पौर  
 एव यनाकाठे द्वारा मो कालिमात्रीक विधि । त्रिय  
 कर इम पर काला गुना कर वैशाखे पौर जमके शरोरमि  
 देवीको पूजा करे । निजैम स्वाममं जियाघराजिका  
 कालाव नाय धनम्विपत्ति हो कर इजार मन्त्र जप  
 कर । एता कर्मने निपद्यमे ही देवीका साधात् होया ।  
 यह कतिपय शुद्धम पौर चन्द्रकाश के तह मन्त्र माह  
 आरवत् गोपनीय है ।

“ममकान्तकालिकान्तु कलावस्तुवैद्यवम् ।  
 कलावस्तुवैद्यकालि पुत्राविरान् वपते ॥  
 अत्रवस्तु वा वावा इतरापो मयेवने ।  
 एताकेभ्यु वस्तुवस्तु वैद्यकालिकान्तिना ॥  
 वस्तुवैद्यकालि कलावस्तु वैद्यकालि ॥

पावकैर् भावनें वक्रात् स्वव चापि विपत्तता ।  
 मकारेण प्रकारेण ककारेण ममपि वस्तुम् ।  
 अनेरकोतासत तावत्, कनें पुत्रवत् पुत्रवत् ।  
 तपमन्त्रं प्रवृत्तेन कृता वदति तावदा ।  
 मंगलावस्तुतु वैवि अनेमन्त्रमन्त्रकी ॥  
 एतस्मिन् जमपे वेतो रक्षित्पत्ति सा वधा ।  
 तदा तां रपयेत् मन्त्री वीदा न कारते यथा ॥  
 धर्मरत्नवान न धर्मैर्भोजनवदनम् ।  
 धर्मैर्गुणविषय व धर्मैर्भोजनमिष्य मिष्ये ॥  
 नद्यत् जावते वीदा तदा निदिर्मिवापिनी ।  
 एव अनेमेतु वापी तासात् नवति मन्त्रया ॥  
 इति ते क्वचित् देवि शुभ्राद्यन्त रं वाम् ।  
 मन्त्रिकीन विद्यामीन विविदीन व वस्तुवैद्य ॥  
 तदापिदि विद्यमैव निष्कन्त मेव जायते ।  
 अविद्याया न वस्तुवै कालवर्षं वरं वार्षिके ॥  
 अनें प्रमन्त्रवधानां तास्तुदाव वार्षिके ।  
 पुत्रवप्ये वना कर्ति काह जपेवधा वदतः ॥  
 तथा सपुत्रवत्, वारो एवि वास्तवज संभवः ।  
 स्वर्गं शिवादि तं वक्रताः सर्वतन्त्रेणु मोषिता ॥  
 इति त वचितं देवि गोपनीयं प्रवन्ततः ॥”

यह तन्त्रमात्र चम्यन्त शुद्धतम है बिद्योवत् शुद्धके  
 उपदेयके बिना इमका कारिं भां प्रक्रिया नहीं कालो जा  
 सकती । इमनिचे इमका विन्दुत कृतान्त लिपना  
 दुःमात्र है ।

इम प्रकारका बीरावार पूजा पौर मिहि प्रक्रियाके पौर  
 भां बहुत तरफकी है जिनको म च्छा नहीं हो सकतो ।  
 इम प्रक्रियाधीको करने पर भां बिमो बिमोका मिहि  
 होनेमें विनम्य होता है । बिमो बिमोको तो प्रथम  
 भर तह मिहि नहीं होता । इमका कारण यह है, कि  
 कोई मन्त्रिकान्, कोई जियादान पौर कोई विविदान  
 हो कर प जा करते हैं । मनुशुद्ध उपदेशानुसार विधि  
 पूर्वक पनुष्ठान करने पर गोत्र मिहि प्राप्त होती है ।

इमका शुद्धतम कृतान्त मनुशुद्ध बिना कुरा कोई  
 भां नहीं बना सकता । इमनिचे इमको पनुष्ठाने इदयमं  
 नामा तरहक भाव उदित होमि है । बिन्नु वाप्यविक  
 तत्वाय निष्कय्य शुद्धपदेयके बिना बिदा तरह मो  
 नहीं हो सकता ।

पञ्चमकार तन्त्रका प्रधान अङ्ग है ।

“मकारपंचकं देवि देवानामपि दुर्लभम् ।  
मयैर्मासैस्तथा मत्स्यैर्मुद्गाभिर्मैथुनैरपि ॥  
स्त्रीभिः सार्द्धं महासासुरचर्येत् जगदम्बिका ।  
अन्यथा च महानिन्दा गीयते पण्डितैः सुरैः ॥  
कायेन मनसा वाचा तस्मात्तत्त्वो परं भवेत् ।  
कालिका नारिणी क्षीर्षां दृष्ट्वा मद्यसेवनम् ॥  
न करोति नरोयस्य स कलौ पतितो भवेत् ।  
वैदिके तांत्रिके चैव जपहोमवह्निकृतः ॥  
अत्राद्यं स एवोक्तः स एव हस्तिपूर्वकः ।  
शुनीमूत्रसम तस्य तर्पणं यत् पितृष्वपि ॥  
कालीतारामनुप्राप्य वीराचारं करोति न ।  
शूद्रत्वं तच्छरीरेण प्राप्तुं यात् स न चाप्यथा ॥  
या सुरा सर्वकार्येषु कथिता सुवि सुफिदा ।  
तस्या नाम भवेत् देवि तीर्थपानं सुदुर्लभम् ॥  
शूद्राणा मन्त्रयोगयाणा यन्मांसं देवनिर्मितम् ।  
वेदमंत्रेण विधिवत् प्रोक्तो सा शुद्धिस्तथा ॥  
भोक्ष्य योगयाच कथिता ये ये मत्स्यविरानने ।  
ते रहस्ये मया प्रोक्तो मीनाः सिद्धिप्रदायकाः ॥  
पृथुका तंडुला अष्टा गोधूमचणकादयः ।  
तस्य नाम भवेद्देवि मुद्रा सुफिप्रदायिनी ॥  
भगलिङ्गस्य योगेन मैथुनं यद् भवेत् प्रिये ।  
तस्य नाम भवेद्देवि पंचम परिकीर्तितम् ॥  
प्रथमस्तु भवेत् मद्यं मांसं च द्वितीयकम् ।  
मत्स्यंचैव तृतीयं त्यात् मुदाश्वं चतुर्थिका ॥  
पंचमं पंचमं धियात् पंचैते नामतः स्मृताः ॥”

पञ्चमकार तन्त्रके प्राणस्वरूप है । पञ्चमकारके विना तान्त्रिकको किसी भी कार्यमें अधिकार नहीं है । पञ्चमकार देवताओंके लिए भी दुर्लभ है, मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन इन पांच मकारोंसे जगदम्बिकाकी पूजा की जाती है । इसके विना कोई कार्य भी सिद्ध नहीं होता और तन्त्रवित् पण्डितगण निन्दा करते हैं । काली वा ताराका मन्त्र ग्रहण करके जो मद्य सेवन नहीं करता, वह कालिमें पतित होता है, तान्त्रिक जप, होम आदि कार्योंमें अनधिकारी होता है तथा वह व्यक्ति अत्राद्यं और हस्तिमूर्धं कहलाता है । उस व्यक्तिका

पितृ-तर्पणं कुर्त्तुंके मृतके मंत्रद्वयं है । जो व्यक्ति काली और ताराका मन्त्र पा कर वीराचार नहीं करता, वह शूद्रत्वको प्राप्त होता है । सुरा नभो कार्योंमें उक्त है तथा पृथिवी पर येही एकमात्र सुक्तिदायिनी है । इस सुराका नाम ही तीर्थ और पान है ।

वैदिक आदि ग्रन्थोंमें जिन मांसोंको भक्ष्य कहा गया है, वे ही मांस विशुद्ध हैं । रहस्यमें जिन मीनोंको भक्ष्ययोग्य कहा है, वे मत्स्य मिष्टिप्रदायक हैं । पृथुक, तण्डुल भ्रष्ट, गोधूम, चणक आदिको मुद्रा कहते हैं, यह मुद्रा सुक्तिप्रदायिनी है । भग और लिङ्गके योगसे मैथुन होता है । यह मैथुन ही पञ्चम है । मकारोंमें प्रथम मद्य द्वितीय मांस, तृतीय मत्स्य, चतुर्थ मुद्रा, पञ्चम मैथुन है, ये ५ द्रव्य ही पञ्चमकार हैं ।

पञ्चमकारका अर्थ—

“मायामलादि शमनात् मोक्षमार्गनिरूपणात् ।  
अष्टदुःखादिविरहान्मत्स्येति परिकीर्तितम् ॥  
मांगल्यजननाद्देवी सन्विदानन्ददानतः ।  
सर्वदेवप्रियत्वाच्च मास इत्यभिधीयते ॥  
पंचमं देवि सर्वेषु मम प्राणप्रिय भवेत् ।  
पंचमेन विना देवि चण्डीमन्त्रं कथं जपेत् ॥  
यदि पंचमकारेषु आस्ति चेत् कुर्वते प्रिये ।  
तस्य सिद्धिः कथं देवि चण्डीमन्त्रं कथं जपेत् ।  
आनन्दं परमं ब्रह्म मकारास्तस्य सूचकाः ॥”

जिससे माया और मलाटिका प्रथमन, मोक्षमार्गका निरूपण और आठ प्रकारके दुःखोंका अभाव होता है, उसका नाम मत्स्य है । मांगल्यजनन, सन्विदांको आनन्ददायक और सब देवताओंका प्रिय होनेसे इसका नाम मांस पड़ा है । पञ्चमकार सब कार्योंमें सरे प्राणोंके समान प्रिय है । पञ्चमकारके विना चण्डोमन्त्रका जप कैसे हो सकता है ? इसलिए उसके लिए सिद्धि भी असम्भव है । आनन्द ही परम ब्रह्म है और पञ्चमकार उसका सूचक है ।

“धूमन सेषितलाच्च राजत्वात् सर्वदा प्रिये ।  
आनन्दजननाद्देवि सुरेति परिकीर्तिता ॥  
मुदं कुर्वति देवानां मनांसि द्रावयन्ति च ।  
तस्मान्मुदा इति ह्याता दर्शिता व्याकुलेश्वरी ॥”

केलम पुष्य दमका शिवम करने हैं तथा रात्रय  
घोर पानन्द प्रननका यह कारक है इसलिये दमका  
नाम सुग है। दमने श्वेतापीका मम पानन्दित घोर  
दुःखीमूत होता है तथा दमके देमनेमे परमोत्ररो मो  
प्याकुल होती हैं, इसलिये दमका नाम सुग है।

पद्मकारका फल मद्यानिर्विकतम् ११३ पटलमें  
दम प्रकार कदा है—

“मृष्टमर्षं वरं मोक्ष मद्यादेव देवदे ।  
मांजनसुषमाऽप्य वाचमाराधयो मयैतु ॥  
म्रायतनकथयोन कथो म्रमस्तानियात् ॥  
मशादेवनमार्थं मन्त्रो गिप्सुद्वयर् ॥  
मैयुदेव मशातो मम तुम्हो व रं दय ॥”

मद्यपान करनेमे घटे मर्षं घोर परामोक्ष तथा मान  
के अथकमात्रमे माघात् नारायणत्व नाम होता है।  
मशा मलय करने समय ही जानाका मर्षन होता है।  
सुद्राके शिवम मात्रमे विष्णुद्वय प्राप्त होता है। मेषुन  
द्वारा मेष ( शिवके ) तुम्हा होता है, दममें मंम नर्षा।

पद्मकारके दानका फल—

“इह मनुः तदा मरुव मोमं हरा व मैपुवम् ।  
मकरवचंमुपं दमैवु मैरैवाम् ॥  
दम्भतोमिद्वहाराव हेमनारतलानि प ।  
कमललीनि देवैधि कौटिके विदुशकता ॥  
दुषिको हेदधम्भा हावा कम्भमामुवात् ।  
तत्पुत्रे कौमिके दम्भा वृटीव श्रवणामुम् ॥  
श्रीश्रीं प्रवणामुक् मो दद्यात् कुम्भोमिदे ।  
तुम्भित मान ( कर्ता ) कैपित्तो मरादव ॥  
अवधेचालिक पुष्पमरुव नाम ( वीगम् ) ।  
गात्रक ममते देवि कौटिके इततुरवा ॥  
दरां कोटिप्रशानेव वशुम्बं कनठे मः ।  
तशुम्बं ममते देवि व कवराय इवदमः ॥  
व कनेव रिवा इव व कुवात् वाचदावमः ।  
तम्बं निम्बं देवि वप व कन व कंठव ॥  
वाम्बाली कर्षाणी व मान दी कौटिकीपी ।  
कपवती व कठी पीपी कनकवः ॥  
करीना कुम्भोम्भ कर्षितिकवपवा ॥”

मह, मन्त्र, मान, मुद्रा घोर मेषुन दन दाव मन्त्र  
१०१ १५ ६३

दमि मेषुनरको पृजा करे । कोटि कन्या दान करनेमे  
तथा मूमि घोर एव बाध मोना दान करनेमे जो फल  
होता है, कोनिक कर्षमें दमको एक बूट दान करनेमे  
पतना हो पुष्क होता है। सुवच मनुष्य दुषिको दान देनेमे  
जो फल होता है प्रथमपुत्र जतोव दुषवा वा प्रथमपुत्र  
द्वितीय दुषवा दान देनेमे भी यही फल होता है।  
माताए योगिनी घोर भैरवादि ममो दमके दान कोने  
हैं। कोटि मो दान करनेमे जो पुष्क होता है, पद्मकार  
प्रदान करनेमे भी मनुष्यको सतता ही पुष्क होता है।  
जो माघकाथम पद्मकारको होइ कर चयव द्रव कल्पित  
करता है उसको मय कुम्भ नियम है। दमको अत्यन्त  
मन्त्र मानो।

वाच मो चर्मकारे, मातृको मन्त्रकारिको मय  
कर्ता, रणको, कोरको घोर चनकमा, ये पाठ बिना  
कुम्भयोगिनो हैं। ये ही ममत्त निर्विकीको देनेवाको हैं।  
पद्मकारका विषय कथित हुआ, किन्तु पद्मका  
रका मोक्षन बिना जाता है।

“संशोचनमनायं वीपु वरेपु वाचवः ।  
वाचर्यः निर्विहानि स्वात् कदा मयति तुम्हरी ॥”

जो साधक पद्मकारका मोक्षन बिना किये मद्यादि  
प्यवहार करता है उसके काय में जानि होती है घोर  
उम पर देको मो कूट्ट होती है तथा वह भी मो  
निर्वि नाम नको कर पाता।

व वराव ।—ताम्बिकके लिए प्रयोग कर्षमें जिस  
प्रकार पद्मकारवाच है उसी प्रकार धमत्त कर्षमें  
पद्मतरुको भी वाचप्रकता है।

‘बुधेशु वदुःखेन व वराम्बैव कौटिकः ।  
एव दृश कम्भ निर्वि वाचराय दनि देवरे ॥  
कैवे टाके शक म नारे कंठे तुम्भेवने ।  
तम्भहावमिरे मोक्ष ईश्वरे तनु यजन ॥  
पुरातन वाचराव मनसस मुदेवरी ।  
वेदमरुव प्यमन्त्र । वराम्ब दामने ॥”

कोनिकको चादिमे शि धनि धमके पद्मतरु द्वारा  
पृजा करे। एसा करनेमे जो निर्वि प्राप्त जगा। शेष,  
गात्र, माघमय वैष्णव दन ममो मन्त्रदायाके लिए पद्म  
तरुका जानना जरूरी है। सुदतत्व, मन्त्रगाय मम



द्रव्यपुष्टि—

“ॐ” इति च साः सुविषयसदस्यस्योः सञ्ज्ञोता विदिसदतिनि  
द्रुं दीनमत् । सुनहरनहतसदस्योसदस्यता गोत्रा स्यतत्रा  
पद्रिज्ञा स्यत इत्यत् । इम मन्त्रस्यो द्रव्यके अघर तोन वा  
पदं । तमके वाद द्रव्यसि पानम्भेरव घोर पानम्भेरयो  
का इम मन्त्रके दापा भ्याम करे ।

पञ्चमि पञ्चमकारका विषय वर्जित दुपा है, बहुतोषि  
मगमि धारका हो ससतो है कि पञ्चमकारका सेवन  
पुष्पवद है किन्तु मोहन घोर पाषणके विना मध्य पान  
करनेका निवेद है । इसी निप कुन्वाच यतन्मने पञ्चमकार  
का विषय निम्नलिखित सूत्रके बचि त दुपा है—

“पञ्चमः कौटिके वदं सिपयान् दिग्गजः ।  
सुबुद्धया पञ्चमस्तीक्ष्णं बाल्यवर्षिकीक्षिता ॥  
नपचादेव मनुजा पति सिद्धिं लभत है ।  
महाकावासा सर्वे सिद्धिं लभन्त्यु नामः ॥  
नाचपञ्चमनालेष पति पुणः पतिनवेत् ।  
कोके अंशुविनाः सर्वे पुण्यज्ञानो वाणि डि ॥  
श्रीहम्भोगेव वैवेदि यस्मि नोऽ नानि वं ।  
सर्वेऽपि जन्मके कोके मुखाः सुः कोमिनेवाम् ॥  
नवा पानम्भु वैवेदि द्वापानं तदुच्यते ।  
पञ्चमपाण्डु वैरि वैरासिपु निरुपिउम् ॥  
अवापि पयसाश्लेषमरपूरनाप्यपेवकम् ।  
नर पालं पशुनाम् कौटिकायां दराकम् ॥  
अवेप्यासि द्विहातीयां नपायैकारवैव तु ।  
श्राद्धकारण महापय अर्वापयम स्तवम् ॥  
द्रुः वै मयपञ्चम्यं वापाया नमनुच्यते ।  
ततः त्वात् नमनाऽयम्नो वैवक न द्वां विवेत् ॥  
श्रावर्षवमानेन कुवात् इवर्षिकीक्षम् ।  
पञ्चमपाण्डुनामन नमनापामन वरेत् ॥  
वावाहम्नां नवेत् नमो वके चोचपेवराः ।  
कर्त्तुं नावेक्षितान्मनु मकरव इरकेवे विधिः ॥  
श्रावमानेऽश्रावणकेऽवकाशीं तां विवेक्षितेत् ।  
सुके तना विवेक्षिते तदा इदिसमापुणत् ॥  
मन्त्रमोक्षविरोचन श्यवविधिमिः स्यतः ।  
अभिवानेन नो इत्यात् मन्त्रार्थं श्रुतिः विदे ॥  
मिदं नरके चोरे विदामि बहुरोमणिः ।

भूमितामि द्वापापरिर्नप्येयिषु जावते ॥  
अनुमन्त्र विपक्षिता विवृता अविष्मयी ।  
वंशका चोपहातः न कारितको व कसका ॥  
वनेव न केना इति काशिता चोचमोवत ।  
कातसे काठनम्बाऽपामिसेप विविहोवका ॥  
नाचकार्द्वन इत्या सूक्ष्मपमावरेत् ।  
तन्पारविधिना मांघ मचन नापेव अथिव ॥  
विचिपव सैधमे वैवि परमार्थं प्रसीदती ॥

( कुन्वाचपेवत्सम् )

बहुतसे मनुष्य मिष्यादानके द्वारा विहम्बित हो कर  
मघादि पान करनेसे पुष्प होता है ऐसी कल्पना किया  
करती है । यह उनका महत्त्वम है । मध्य योगिसे जो  
यदि सिद्धि होती, तो शरायी पानर भी सिद्धि लभ कर  
सते । मन्त्र मध्य करनेसे जो यदि पुष्प होता, तो  
सभी मांसमद्यो मनुष्य पुष्पवान् जो सचते है । जो  
सम्भोगसे जो तदि सुखि होतो, तो सभी मन्त्रयी पनावास  
सुख जो प्राप्ति किन्तु ऐसा नहीं है, हवा मध्य पोना  
तो शरावकोदोना शराव पोना है । मीद पादिनि शराव  
योगिके दीनि टोप सिद्धि है इका मध्य पान करनेसे वे  
सब महापाव लभते है । यह शराव पशुपय, पनाचोय  
घोर चपिय है । सेवन कोमिच कायने जनप्रद है ।

सभी प्रकारका मध्य सिद्धिके लिये चपिय है । पयका  
मन्त्र जो मध्य है इमलिये सिद्धिको कसो मो शराव न  
पोनी चाँहिये । यदि किनो तरह शरावको देखे, तो  
सुयंका इयंन करना उचित है । देवकय तदि  
सुराको सुत से तो तर्के प्राचावामन्त्रवदका पाचरव  
करना पड़ेगा । इतनी पानोनि चक्रे जो कर एक दिन  
उपवाम करनेसे शराव सुचनका पाप नष्ट होता है ।  
देवकय यदि मध्यका म्यं हो आय, तो नामि पर्यन्त  
जन्मने चक्रे जो कर तीन दिन उपवास करनेसे तमका  
पाप जाता रहता है । कोरे यदि पञ्चमने चुरा पान  
करे तो वे पञ्चि प्रवृत्ति करके अथ तमने निजिच  
होवे । ऐसा करनेसे पञ्चमनाम चुरापानका पाप नष्ट  
होता है । मन्त्राघोर मांसादिका प्रायचित्त भी इसी  
मार्गि है । पञ्चिनामसे पयमो प्रीतिक्षि निप जो कोम  
मन्त्राघोर मांसादिका जनन करती है वे इतपयके  
गेमको मन्त्राक्षि चतुसारा चोरे नरकने वास करती है तथा

फिर तिर्यक् योनिमें जप लेते हैं। इस प्रकारको पशु-  
हत्यामें घातक अनुमोदक, विश्वसिता, निहन्ता, खरोटने  
वाने, बचनेवाले, मन्सर्ता, उपहर्ता और खानेवाले  
वे भ्रमो पापके भागी होते हैं। इनलिये मांसके ट्रेखते  
ही सूर्यका दर्शन करना चाहिये। किन्तु विधिवत्  
अर्थात् मद्गुरुके उपदेशानुसार पञ्चमकार सेवन करनेसे  
परमार्थतत्त्व लाभ होता है, अन्यथा यमो निष्कल और  
विशेष पापजनक है। अतएव तान्त्रिकोंको कोई भी  
कार्य अपनी इच्छाके अनुसार न करना चाहिये।

शुद्ध शक्तिका फल—

“साधिता च जगद्धायी श्च्यद्ददति पार्वति ।

तत्सर्वं मत्पता गति मत्य सत्य न संशयः ॥”

नारो शोधिता होने पर जगदातीके तुल्य होती है  
और वह नारो जो कहे वडो मत्व होता है, इसमें अनु-  
मात्र भी संशय नहीं।

शक्तिशोधन —

“इदानीं कथयिष्यामि नारीणां शोधन त्रिये ।

अग्ने वा दक्षिणे वापि सस्याप्य मण्डलोपरि ॥

भाले च मण्डलं कुर्यात् त्रेपुरं सिन्दुरेण च ।

नयने कज्जलं दद्यात् मूलमन्त्रं जपेत् सुधीः ॥

अन्यैश्च विविधैर्द्रव्यैर्भावयेत् शाक्तमन्त्रतः ।

ताम्बूल घदने दद्याद्विष्टमूर्तिं विभाष्य च ॥

ततः पङ्कगमन्त्रैश्च पङ्कगन्यासमाचरेत् ।

मातृकार्णं ततोऽन्यस्य ऋष्यादिन्यासमाचरेत् ॥

मूलेन व्यापकं कृत्वा मूर्द्धनि मूल शतं जपेत् ।

हृदये कामबीजश्च वधुबीजश्च सजपेत् ॥

नाभौ श्री गुह्यदेशे च सर्वबीजश्च पार्वति ।

मौलौ च वाग्भवं काम कुण्डलीं कुलकुण्डलीम् ॥

शक्तिबीजं जपेन्मञ्जी सर्वमिन्द्राश्वरो भवेत् ।

वामे माया श्रावयेच्च कर्णैश्च महेश्वरी ॥

एवं क्रमेण देवेशि नारी शुद्धिः प्रजायते ॥”

नारोशुद्धि करनेको, तो नारोको ला कर उसे अग्र  
भागमें वा दक्षिणमें मण्डलके ऊपर स्थापित करें।  
कपान पर सिन्दूर द्वारा त्रैपुरमण्डल करें। नयनोंमें  
काजल लगा दें। फिर साधक मूल मन्त्र जपे। अन्य  
विविध द्रव्य द्वारा शक्तिमन्त्रसे उसको सम्बोधन करें।

सुखमें ताम्बूल टैवें श्रीर इष्टमन्त्रका ध्यान कर पङ्कमन्त्र  
द्वारा पङ्कन्यास करें। वाटमें मातृकान्यास करके  
ऋष्यादिन्यास करें। मूल द्वारा व्यापक करके मन्त्रक पर  
सौ बार मूलमन्त्रका जप करें। हृदयमें कामबीज और  
वधुबीज नाभमें श्रीबीज, गुह्यदेशमें सर्वबीज, मोलमें  
कामबीज और कुण्डलीमें कुलकुण्डली शक्तिबीजका जप  
करें। वाममें माया और कर्णमें महेश्वरो श्रावण करावें।  
उक्त रूप अनुष्ठान करनेसे नारोशुद्धि होती है।

“सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिपुत्रीतलम् ।

अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥

अमृताण्वममप्यस्यं ब्रह्मपटुमेपरिस्थितम् ।

वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥

कपालखट्वाण्वरं घंटाडमरुवादिनम् ॥

पाशाकुशधरं देवं गदामूलधारणम् ।

खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरं शलदण्डधृक् ॥

विचित्रं खेटकं मुण्डं वरदामयपाणिनम् ।

लोहितं देवदेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥”

इस मन्त्रसे ध्यान करके “इसत्तमलवरयुं आनन्द  
भैरवाय वषट्” इस मन्त्रके द्वारा आनन्दभैरवका तीन  
बार पूजा करें। पीछे आनन्दभैरवोका ध्यान करें।

“भावयेच्च सुधां देवीं चन्द्रकोटपायुतप्रभा ।

हिमकुन्देन्द्रधवलां पञ्चवक्त्रा त्रिलोचनाम् ॥

अष्टादशभुजैर्मुक्ता सर्वाभरणैश्चिताम् ।

प्रहसन्तीं विद्यालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥”

इस प्रकारसे आनन्दभैरवोका ध्यान करके “इसत्त  
मलवरधीं सुधाटैव्यै वषट्” इस मन्त्रसे पूजा करें तथा  
द्रव्यमें शक्तिचक्र लिख कर क्रमानुसार “हं लं च”  
लिखें।

ऐसा करनेसे शिव और शक्तिका योग होता है, इस  
लिये द्रव्यमें अमृतत्वकी चिन्ता कर धेनुमुद्रा द्वारा अमृतो  
करें। “वं” इस वरुणबीजको तथा मूलमन्त्रकी आठ  
बार जप कर देवतास्वरूप उस द्रव्यका ध्यान करें।

इस तरहसे द्रव्यशुद्धि होती है।

“एतत्तु कारणं देवि घुरसंघनियेवितम् ।

अतएव तस्यानाम घुरेति भुवनत्रये ॥

अस्याः गन्धः केशवस्तु तेन गन्धेन कौलिकः ।

पूजयेच्च परा देवीं शालिकां दक्षिणां शिवाम् ॥”

देव इमका निवन करती है इमहिजे इमका नाम सुरा है । इस सुराकी अन्ध भी विद्या है, उस अन्धके द्वारा बौद्धिक परा शान्तिवा देमोको पूजा करे ।

मांसोपवन—“ॐ प्रतद्विष्णुं स्वाते वीर्यं च जगोन मोमं भुजगेम विद्या यजोवसु त्रिभु त्रिभूमी त्रिभन्वि भुव नाति त्रिधा ।” इस मंत्रके मांस मोहित होता है ।

मन्त्र—“ॐ तद्विष्णो परमं पदं यदा पश्यन्ति सुराय सिमो न चतुराततं । ॐ तद्विधासो विपश्च कोशायदां मः सन्निभ्यते विष्णोर्वैतु परमं पदं ” इस मंत्रके द्वारा मन्त्र मुक्ति करे ।

सुरासुक्ति—“ॐ विष्णुं योनिं लक्ष्यतु लक्षं कृपाधि वि मनु प्राणि यतु प्रजापतिर्नाता ममं दधातु मे ।

‘अर्थ देहि विदोवाधी परं देहि तत्सवती ।  
ममं ते अश्विनी देवा वाचतां पुष्करवने ॥’

इस मंत्रके द्वारा सुरासुक्ति करे । पढ़से जो विधान न हो सके, उसमें व शमकार जोधित होती है । विष्णु व शमकार जोधित करनेके लिये सिद्ध हुक्की बसुरत है । बिना सिद्ध हुक्के कोई भी साधक इसको अपना देखातुसार नहीं कर सकता, यदि करेगा, तो उससे फलको प्राप्ति न होगी ।

बकासुहाय—सिद्धताम्बिकाय बकासुहाय विद्या करती है । यह अति गुह्य अस्वापार है । निमीयरात्रिमें इमका अनुष्ठान करना पड़ता है ।

श्री वच—‘श्रीरक्त प्रवृत्तानि देव विष्णुविष साधका ।  
अनवा वृद्धा देवि देहिदिवि प्रवावते ॥  
अथ यो न समयादि नालसदा निवेदयेत् ।  
पूजयान्ते जेवायां लपाम्बादा सुपावन ॥  
सुरा कर्षणि बलवानि कुष्मन्ति परमेवारे ।  
सैतप्रीत व पुण्यानि रक्षानि व विदेवता ॥  
अथवीरु व बहूवीरं वववीरं तथा मिथे ।  
वरावैतु शीरपिबन् ववावयान पुष्परी ॥  
वीर्येन्दो दक्षिणां दधातु भावावर्गं विपुवता ।  
अर्धकपलवद्वैरं प्रददाम्बादीवतवम् ॥  
वायवेतु लक्ष्मणात् देवि वीरवकप्रसादन ।  
दक्षिणाविधिद्वैत व लक्षं निष्कलं पश्येत् ॥’

उक्त बोरवकका विषय कहा जाता है, कि त्रिमको Vol. IX, 68

पूजाके प्रभावसे साधक गीत ही सिद्धि प्राप्त करती है । इसमें समझ होने पर समस्त द्रव्य न दे कर सिद्ध प्रमथ द्रव्य निवेदन करना चाहिये ।

सूर्यर पौर शिखर पाटिका नाम जो उत्तम सिद्धि मन्त्र है । उसमें प्रकारके भाव्यको सुझा कहते हैं । अर्थात्, पौत बोटु रजसुप्य शाना चाहिये । पड़वीर, चन्द्रबोर वा नवबोर इवमिदि जो नाम जो उसको कल्पना करे । इस प्रकारकी कल्पना करनेसे बोरबल होता है । पादायको दक्षिणा दे कर पीछे बोरको दक्षिणा देंगे । घम का पातक बोर ब्रह्महत्यादि पातक बोरबलसे प्रभावसे तत्पक्ष पूर हो जाती है । बल यदि बिधि बोर दक्षिणाही न हो तो वह निष्फल है ।

राजवच—“सुवर्णां कुमार्परं स्वक्या इमोरोर ।  
नामिनीं वोगिनीयेन रवनी यपनी तथा ॥  
कैवर्तकमसुलभा पचकथि वराहता ।  
एता प्रवस्ता लक्ष्मा लक्ष्मणेन निनेविता ॥  
अर्धैतु मनुवच व इतिष्णकककपरा ।  
वर्गावैकपमोवार्त्तं राजवकं विधीयते ॥  
वकिर्त्तवद्वैकानि देवकेके मदीवते ॥’

पतियय रूपवतो सुमनोहरा चतुर्वर्णां कुमारी—सिद्धी यामिनी, योमिनी, रवनी, चाण्कामी पौर वैवर्ती—ये पञ्चयुक्ति हैं, जे पञ्चपञ्चा साधक द्वारा नियोजित होने पर प्रमथता होती है । पञ्चात् मध्य, मध्य पौर मांस पर्व व करे, इस प्रकारसे राजवक होता है । इस राजवकके प्रभावसे कर्म, पाप, काम पौर मोक्षको प्राप्ति तथा देव लोकमें अति सजक पर्व प्राप्त होता है ।

देववच—“देववकं प्रवृत्तानि वसुधुरे किरते वरा ।  
अथवस्तव वृत्तानि विद्याक्या प्रवेदया ॥  
राजवैस्ता वायवी व पुत्रवैस्ता तथा मिथे ।  
देववैस्ता वरावैस्ता लक्ष्य वंभवेवता ॥  
राजवैस्ता राजवैस्ता सुता व वीरवता ।  
देववैस्ता वृक्षवस्तु मद्रवैस्ता व लीवया ॥  
वागरी अथवस्तु कथा वनाथवस्तुवस्तु ।  
धैवता अथवा देवि देवक निनेवैतु ॥’

देववकका विषय कहा जाता है—देवता नर्तका देववकका अनुष्ठान विद्या करती है । इस देववकमें



राजवेश्या, नागरो, गुमवेश्या, देववेश्या और ब्रह्मवेश्या ये पञ्चवेश्या ही पञ्चशक्ति हैं। राजमेवापर यथा राजवेश्या, कौलजा गुमवेश्या, नृत्यकारिणी देववेश्या, तीर्थगामिनी ब्रह्मवेश्या और मोड़ी भी रजस्वला कन्या नागरो कहलाती हैं, ये पाँचों देश्या हैं इनको देवचक्रमें नियोजित करें।

“राजचक्रे राजदं न्यात् महाचक्रे चमृद्धिदम्।

देवचक्रे च सौभाग्यं धीचक्रं च मोक्षदम् ॥”

राजचक्रका अनुष्ठान करनेमें राज्यलाभ, महाचक्रमें समृद्धि, देवचक्रसे सौभाग्य और वीरचक्रमें मोक्षकी प्राप्ति होती है। ( इदयामल )

“पञ्चचक्रे प्रशस्ता यास्ताः-शृणुष्व चरानने।

चक्रं चविषं प्रोक्तं तत्र शक्तिं प्रपूजयेत् ॥

राजचक्रं महाचक्रं देवचक्रं तृतीयकम्।

वीरचक्रं चतुर्थं च पशुचक्रं च पंचमम् ॥”

पञ्चचक्रमें जो प्रशस्त हैं, उनका विषय कहा जाता है चक्र पाँच प्रकारके हैं, उनसे शक्तिकी पूजा करें। राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र ये चक्र हैं।

“पञ्चचक्रे यजेद्दिव्यो वीरध फलमुन्दरि।

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च पञ्चचक्रे प्रपूजयेत् ॥

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वीरचक्रेण पूजयेत्।

योगिभिः पूज्यते देवि सर्वचक्रेषु कामिनी ॥

माता च भगिनी चैव द्रुहिता च स्तुया तथा।

गुरुव्रती च पञ्चेता राजचक्रे प्रपूजयेत् ॥

गौड़ी वापयथवा माध्वी सुरा शस्ता कुलेश्वरी।

शुद्धिदायोगेद्भव वा शस्ता तृतीया वेदसम्भवा ॥

सुरा गोधूमजा शस्ता स्वयम्भूकुसुमस्तथा।

कुण्डगोलोद्भवं द्रव्यं भनुक्त्वं नियोजयेत् ॥”

वीर पञ्चचक्रसे याग करें। ब्रह्मचारी और गृहस्थ भी पञ्चचक्रसे पूजा कर सकते हैं। योगिगण सभी चक्रसे कामिनी पूजा कर सकते हैं। माता, भगिनी, पुत्री पुत्र-वधू, गुरुपत्नी, इन पाँचोंको राजचक्रमें पूजा करने चाहिये। गौरी, साध्वी, सुरा, सुरा, स्वयम्भूकुसुम, कुम्भ-गोलोद्भव द्रव्य, इन सबका अनुकल्पमें प्रयोग किया जाता है।

“रक्तचन्दनं त्रयद्वैतमनुक्त्वं च चन्दनम्।

घटालंकारभूषाद्यैर्मन्धमारुणानुलेपनम् ॥

पूजयेत् परगामकया देवनाभ्ये निवेद्यते ॥

मर्क्यं नानाभिः द्रव्यं नानाभ्यमभ्यगिनम् ॥

आध्वं शुद्धिदेयुक्तं ताभ्यो दद्यात् पुनः पुनः।

प्रणमेत् प्रजपेन्मन्त्रं दृष्ट्वा त दत्तं सदस्यकम् ॥

अगं नैव स्पृशेत्ताना स्पृशेथ नरकं व्रजेत्।

मधुमत्ता गदा ताम्बु न द्यान्ति सु श्रुतः ॥

तत्तद्देव भवेत् सर्वं मलयं मलय न सगः।

पट्टिष्वेवमहापाणि प्रदालोके महीयते ॥”

रक्तचन्दन और अनुकल्पमें श्रेष्ठचन्दनकी वस्त्र, अलंकार आदिके द्वारा भूषित करें तथा परमभक्तिसे साथ उसे देवताकी सेवामें उपस्थित करें। नाना प्रकारके मलय पदार्थ, चित्र-विचित्र वस्त्र आदि तथा आमव शुद्धि करने उन्हें पुनः पुनः प्रदान करें। प्रणाम करें उनको और श्रवणलीकन प्रवृत्त हजार जप करें। उनका अङ्ग स्पर्श न करें यदि स्पर्श करेंगे, तो रोख नरकको जाना पड़ेगा। वे मधुमत्तागण उसको श्रावणसे दिते तथा वे पट्टि सहस्र वर्ष पर्यन्त स्वर्गलोकमें वास करते हैं।

“माता भगो स्तुया कन्या वीरपत्नी कुलेश्वरी।

महाशक्ति यजेदेताः पञ्चशक्ति पुनः पुनः ॥

द्रव्यदाने तु सपूज्या न शक्ती शिवयोजनम्।

योजयेत् सिद्धिदानि म्यात् रौरवं नरकं व्रजेत् ॥

महाठ्याधिर्भवेद्देवि धनहानिं प्रजायते।

सदैव दुःखमाप्नोति सर्वं तस्य विनश्यति ॥

आध्वं च गौडिकं प्रोक्तं द्वितीयं कुण्डोद्भवम्।

तृतीयं रोहितं प्रोक्तं चतुर्थं मासमम्भवं ॥

करदीरोद्भवं पुष्पं चन्दनं रक्तचन्दनम्।

पूजयेत् परया मक्त्या शिवलोके महीयते ॥

पट्टिष्वेवमहापाणि तत्र देवीं प्रपूजयेत्।

अष्टम्यां च चतुर्दश्या अमायाच कुजे ऽहनि ॥

राजचक्रे महाचक्रे भयस्या शक्तिः प्रपूजयेत्।

शुक्रशके गुरोवरि चतुर्थ-सप्तमी तिथौ ॥

महाचक्रे यजेत् भक्त्या सर्वकामार्थं सिद्धये ।”

माता! भगिनी, पुत्रवधू, कन्या और वीरपत्नी ये कुलेश्वरी और पञ्चशक्ति हैं। चक्रमें बार बार इनको पूजा की जाती है। द्रव्यसे इनको पूजा करें, इन शक्तियोंमें कभी

धो निरु पोत्रन न करमा चाहिये । पोत्रन करमेने सिद्धिवाति, रोचन नामक नरकर्म बाध, महायाधि, धन वाति, मर्षटा दुःखदोष धोर सर्वनाय होता है । प्रथम गीदो, द्वितीय कुञ्ज टोडन तृतीय रोहित, चतुर्थ मास ज्ञात करबोरपुष्य, चन्दन धोर रत्नचन्दन इन सबने दिवोको समझि पूजा करनेने शिवनोहको गमन होता है । वर्षा मन्त्र माठ हजार वर्ष तक दिवोको पूजा किया करता है । घटमो, चतुर्दशो चमाबन्ना चबबा मङ्गलवारको रात्रिचक्र नामक महाचाष्टये भक्तिपूर्वक पद्य गदि को पूजा कर । सप्युर्व खासता धोर पद्य सिद्धि निप धरुपचम उदभ्रतिवारक चतुर्वो वा घटमो तिदिमें महाचाष्टये भक्तिपूर्वक याग करे ।

माता, भिनो पादि त्रिन पञ्चमहायज्ञिनीका विषय नि ।। मया है, इन तीनों गन्दीको पारिमायिक समझना चाहिये । निवत्तरतमक १०० पटलमें लिखा है—

‘मूर्तीरुद्रमया माता दुष्टिता रक्षणीकृता ।  
 रचयी च रक्षा देया कृपायी च स्तुता स्तुता ॥  
 धोमिती सिक्ककि स्तुतु वक्कम्याः प्रधीतिताः ।’

माता कङ्कनेने रात्रिचक्र्या, दुष्टिता कङ्कनेने रात्रिकोको कल्या, मया कङ्कनेने चक्रानी, कृपा कङ्कनेने काय सी तथा चपला मन्त्रिको धोमिनी समझना चाहिये— ये पाँच पञ्चम्या कङ्कलतो हैं ।

‘देवचक्र इवरासि मनुज वारमिनि ।  
 सिद्धया सर्वजातीनां वक्रवयाः प्रधीतिताः ॥  
 दीदिक चक्रव (सर्व शिवा रक्षिषीभवन् ॥  
 सुदीन मावन्तस्तु चतुर्षु च सर्वभवन् ॥  
 सुवाचि मावन्तुः च देवके निरोधवेत् ।  
 देवचन्दे । ॥१॥ एति देवयोः महीवरे ॥  
 वरिषीनदुष्कारि देवकम्याः इदुवेत् ॥  
 सर्ववर्षां वक्रवके मीरीर्यां वक्रवचन ॥  
 कोमहा वाग्दो वापि उमहा वावतिनि ।  
 वरे स्नातु संकमनागो वीर्ये वारं वक्रवेत् ॥  
 अरवोच चतुरीनां वक्रवोववोवोरि ।  
 गिरुमि वक्रवगो वी वरे इदुवेत् ॥  
 रिप वीगोःतो वक्रो वीरु वक्रि, वक्रिचक्रुः ॥’

देववत्तका विषय कदा जाता है—धर्मजातिको

पाँच विदग्धा काया, चक्रव रम्य गोद्विज, द्वितीय पंच मन्त्र, तृतीय शानिमन्त्र, चतुर्थ धाम्यमन्त्र धोर सुमन्त्रि गन्धसुध इनके द्वारा देवचक्रमें गलिपूजा करनी चाहिये । देवचक्रमें याग करनेने देवकोकली मति होती है । पञ्चम्या चक्रमें याग कर, कमी मो इनके धतिरिक्त याग न कर । लोभवग पयवा इन वा कामके बगोमूत हो यदि और इनके साथ मङ्गल करे, तो चक्र रोचन नरकमें जाता है । दोनों पञ्चमी घटमो धोर चतुर्दशोको पियु, भूमिमें जा कर धोरचक्रमें पूजा करनी चाहिये ।

‘विदग्धमनो नवेत् वीरो वरीते मघवानत ।  
 भूमिपिपो मवेत् वीरो भूमिपिष्ठा च कीमिटी ॥  
 एव च वीरवति च वीरचके निरोधवेत् ;  
 माभिरिधो वक्रवकीं माभिरिष्ठा च कीमिटी ॥  
 वक्रेच वीरव वाति वक्रि तस्य च वक्रवः ।  
 एव च वीर वति वीरचके वक्रेत् वरि ॥  
 भिदिहामि भिदिहामि वीरव वरं वक्रेत् ॥  
 सर्वमप तर्षुगुडि सर्वानो वक्रेवरी ॥  
 सर्वदुर्गां सर्वदुर्गे वक्रमङ्गुडुमूढवा ।  
 दुर्गमो देव इव वामारुचमभिनान् ॥  
 मरुत्तु वापको भेदो वीरचके पुनः पुनः ।  
 रचकि पूववेतन तदुचिद वक्रि वक्रि ॥  
 चक्र च उदीरतो ज्ञात कमिष्यव निवेदवेत् ॥  
 एधातने च सुवीर मोरव वक्रजायने ॥  
 परतर्षुमरुतसं च कर्मव वक्रवचन ।  
 एव कर्म वक्रि वीरच वक्रवरीत् ॥  
 अ.वीर वीर । देवी वक्रिमनेन चोवयेत् ॥  
 वक्रिच वीरवां पुनः वी चक्रि भिकरेत् ॥  
 मनु चक्र वीरव वी वक्रान् वीरवां पुनाम् ॥  
 वक्रवोवैवदुष्चन तस्य पुनो च पयवे ॥  
 वीरव वक्रिवागनु वीरवके निवीरके ॥  
 वक्रिचिने वक्रेत् वान वीरव वरं वक्रेत् ॥  
 वक्रवैत् वक्रवैदुषि च निवेद मीरुवेत् ॥  
 वक्रि चक्र च मयवने विवाग् वीरवेत् च ॥  
 इत्या मिया वक्रवो वीरवैवदुषि ॥  
 म नं वक्रवचनको वीर च वीरवमम् ॥  
 मंवेव वरं वीरं भिदिभ्रम्येन वक्रवेत् ॥

पण्डितं वीरसतानं क्षेत्रं देवीच योगिनी ॥  
 कुलाचारं गुरुदूर्तिं मनसापि न निन्दयेत् ।  
 मातृयोगिनिं पशुकोटा नग्ना सीमुद्यतस्तनी ।  
 कातेन क्षोभितां कृता कामतो नावलोडयेत् ।  
 द्वेषीं गुरुं सुधां विद्यां श्रेष्ठां दक्षिणं क्रियतेभजा ॥  
 योगिनीं भैरवीतत्त्वं अष्टतत्त्व प्रपूजयेत् ।  
 विमाता दुहिता मर्मा स्तुया पत्नी च पंचमी ॥  
 पशुचक्रे यजेदीमान् पशुवत्तोषणं चरेत् ।  
 गंधपुष्पं च मास्यं च धन्वाद्याभंगानि च ॥  
 सिन्दूरगुरुकस्तूरी नानापुष्पाणि मुन्दरि ।  
 मक्ष्यं नानाविधं द्रव्यं फलं नानाविधं प्रिये ॥  
 एतद्द्रव्यगणं यस्तु भक्त्या ताभ्यो निवेदयेत् ।  
 पण्डित्वर्षसहस्राणि शिरो तं राजा भवेद्गुणम् ॥  
 वीरचक्रं मन्त्रसिद्धिर्भवत्येव न संशयः ।  
 अमावस्यां चतुर्दशीं गजयोरुभयोरपि ॥  
 श्मशानेन गते नार्हेत् सूचितं न प्रकाशितम् ॥”

मन्त्रसिद्धि होनेसे ही वीर होता है, मद्य विना पोये वीर नहीं होता। यथाविधि अभिपिक्त होने पर वीर और यथाविधि अभिपिक्त होने पर कौलिकी होती है। वीरचक्रमें इस प्रकारसे वीर और शक्तिकी नियुक्त किया जाता है।

वीर और कौलिकीकी अभिपिक्त विना हुए चक्र पर बैठ कर याग न करना चाहिये। यदि करें, तो उन्हें रौरव नामक नरकमें जाना पड़ेगा। इस क्रमके सिवा वीरचक्र पर कभी भी न बैठना चाहिये। इस क्रमके विना वीरचक्र पर बैठनेसे पद पदमें उसकी सिद्धिहानि होती है और रौरव नरकको जाना पड़ता है। सब तरहको शराव, मास्य, सुद्रा, पुष्प, स्वधम्भूषण, कुण्डगो-सोद्ववद्रव्य, ये सब चोखं साधकको पुनः पुन वीरचक्र पर चढ़ानो चाहिये तथा अपनी शक्तिकी पूजा करनी चाहिये। भक्त्य द्रव्य च्येष्टादि क्रमसे कनिष्ठकी निवेदन करें। परस्पर स्पर्श न करें। एक आसन पर और एक धात्रमें भोजन न करें। हीनजा देवीकी सा कर शक्तिमन्त्र द्वारा शाधित करें। वीर हीनजाकी पूजा और उनका शोधन करके शक्ति निवेदन करें। मधुसक्त वीरकी जो हीनजा कन्या प्रदान करेगा उसकी इतना पुख्य होता है

कि, वह कौटि सुखसे भी नहीं गाया जा सकता।

वीरचक्रका आचरण करनेके लिए वीरकी शक्तिदान करना पड़ता है। वीरचक्रके विना यदि शक्तिदान किया जाय, तो दाता रौरव नरककी जाता है। यह कार्य श्रत्यन्त गुप्तभावसे करना चाहिये। अर्थात् काम. क्रोध, मात्सर्य, विकार लोभ, कृष्ण, निन्दा, दुरात्माप, इन आठोंकी गुप्त रखें।

मन्त्र, सुद्रा, अक्षरमाना, योगि, वीरसङ्गम, मण्डल, घट, पीठ और सिद्धिद्रव्य, इन सबकी गुप्त रखें। पण्डित वीर, मन्तान, क्षेत्र, देवी, योगिनो, कुलाचार और गुरुदूर्तो इनकी मनमें भी निन्दा न करें।

मातृयोगिनि, पशुकोटा, नग्ना स्त्री, उन्नत स्तनी, कान्त क्षोभिता और कान्ता, इनकी कामभावसे अवलोचन न करें। देवी, गुरु, सुधा, विद्या श्रेष्ठशक्ति, योगिनो, भैरवीतत्त्व और अष्टतत्त्वकी पूजा करें।

पशुचक्र—माता, दुहिता, भगिनो, पुत्रधृ और पत्नी, ये पांच शक्तियां समन्विता ही कर पशुचक्रमें याग करेंगे। इसमें पशुवत् तुष्टि आचरण करें। गन्ध, पुष्प, मास्य, वस्त्रादि आभरण, सिन्दूर अगुरु, कस्तूरी, नाना प्रकारके पुष्प और फल ये सब द्रव्य भक्तिपूर्वक उनको अर्पण करें। इस तरह पशुचक्रमें याग करने-याक्षा साठ हजार वर्ष तक श्रियवो पर राजा होता है। वीरचक्रमें मन्त्रसिद्धि अवश्य होगी, इसमें मन्त्रेह नहीं। दोनों पक्षकी अमावस्या और चतुर्दशीको श्मशानमें जा कर ऐसा आचरण करें। कभी भी किसीसे प्रकट न करें।

“न निन्देत् न हसेत् पापि चक्रमध्ये मदाकुलान् ।

एतच्चक्रगता वार्तां बहिर्नैव प्रकाशयेत् ॥

तेभ्यो भोजनं कुर्वत नाहितं च समाचरेत् ।

भक्त्या संरक्षयेदेतान् गोपयेच्च प्रथमतः ॥”

चक्रमें मंदिरासक्त व्यक्तियोंको देख कर हास्य और निन्दा न करें। इस चक्रको बात बाहरमें प्रकट न करें। उनके पास बैठ कर भोजन करें और अहित आचरणसे विरत रहें। भक्तिपूर्वक उनकी रक्षा करें और यत्नपूर्वक ये सब वृत्तान्त गुप्त रखें। ( प्राणतोषिणी )



शौर्यवान् और तरुणवयस्क ही, तो शवसाधनार्थ उसकी जाना चाहिये । ४

स्रो-रमण द्वारा पतित और कुठादि महापातक रोगग्रस्त शवका परित्याग करना उचित है । स्वेच्छापूवक मरे हुए व्यक्तिका और हडका शव ग्रहण न करना चाहिये । दुर्भिक्षमें मरे हुए व्यक्तिका शव श्रथवा वामी सुर्दा भो शवसाधनके लिए अनुपयुक्त है । स्त्रियों जैसे रूपवालेका शव भी वर्जनीय है ।

नाना प्रकारके साधनोंमें शवसाधन बीराचारियोंका एक प्रधान साधन है, इनलिए इसका स्थान विशेष होना आवश्यक है । शून्य गृहमें, नदीतीर पर, पर्वत पर, निर्जन स्थानमें, विल्ववृत्तके तले श्रथवा श्मशान वा उसके समोपवर्ती वनस्थलमें साधना करनी चाहिये । अष्टमो वा चतुर्दशी श्रथवा क्षयपक्षीय मङ्गलवारको द्विप्रहर-रात्रि ही शवसाधनाका उपयुक्त समय है । श्मशानादि स्थलमें शवको ला कर कुश-शय्यापर स्थापन करे और फिर न्यास करना प्रारम्भ करे । पीठमन्त्र लिख कर गन्ध पुष्पादिके द्वारा अर्चना करे । पीछे आमन प्रदान कर मन्त्र द्वारा रक्षा करे । उसके बाद शवके मुख पर विधिपूर्वक देवताओंका प्राप्यायन (तुष्टि) आचरण डाले । 'भूवनेश्वरी' और अन्तर्म 'फट' का प्रयोग करे उसके बाद शवको प्रज्वलित करके यत्पूर्वक स्थापित करे और किसी प्रकारसे भोत न होवे, यत्से भी यदि स्थापित न हो, तो एला, लवङ्ग, कर्पूर, जातोफल, खदिर और आर्द्रक द्वारा शवको अधोमुख कर तथा उसके मुखमें ताम्बूल देवे । उसके पीठ पर रत्न कर चन्दन विलोपित करे । बादमें मूलको आदि करके कटोदेश तक चतुरस्र मण्डल का वीचमें चतुर्धरयुक्त अष्टदल पद्म वनावे । उसके बाद चैत्य, अजिन, कम्बलान्तरित करके न्यास करे और निकटमें पृजा द्रव्य रख देवे । कुछ दूरी पर एक उत्तर माधकको रखना चाहिये ।

\* "यद्विदं शूलविदं सङ्गविदं पयोमृतम् ।

वज्रविदं सर्पदं चाडालं वामिभूतकम् ॥

तदगं सुन्दरं शूरं रणे जष्टं समुज्ज्वलम् ।

पलायनविश्लस्यं च सम्मुखे रणवर्तिनम् ॥"

(-तन्त्रसारधृत भावचूडामणि )

शवको संस्थापन करके पर्वना करे और उभय पर शरीर-द्रव्य करे । कुछ कुर्गोंको उसके पैरोंके नीचे डाल देना चाहिये । शवके कर्गोंको प्रसारित करके उसकी चोटी बांध देवे । उसके शरीरको दृक्स्वरूप मान कर पूजे और वादमें उल्लिख ही कर 'भोम-भीरु-भयाभाव', इम मन्त्रका पाठ करे । उसके पैरोंके तले त्रिकोणयन्त्र निरवना चाहिये ।

'तेनोत्पातुं न शक्नोति शवश्च निधलो मयेन ।

उपमिदं पुनस्तत्र श्राद्धं त्रिःशतं पादयोः ॥

हस्तयो कुण्ठमास्तीत्यं पादो तत्र निघापयेत् ।

शोष्णो तु सपुटी कृत्वा स्थिरान्तित स्थितेन्द्रियः ॥

नदा देवीं षडि प्याशा मौनौजपमयानरेत् ।

चलामनात् मय नास्ति मये जाले मयेन्नुतम् ॥

यत्प्रार्थयामि देवेशि दातव्यं कुंजरदिकम् ।

दिनान्तरे च दाप्यामि स्वनाम कथयस्व मे ॥

इत्युक्त्वा संदृष्ट्वेतेनैव निमगन्तु पुनर्जपेत् ।

ततश्चेमपुरं वक्ति वक्षन्त्यं टीलया नैव ॥

ततः सत्यं क्षारयित्वा वरन्तु प्रायेयेदरः ।

यदि सत्यं न कुर्याच्च वरं वा न प्रयच्छति ॥

तदा पुनर्जपेद्विमान् एकाग्रतमानसः ।

सत्ये कृते वरं लब्धा सत्यजेन्तु जपादिकम् ॥

फलं जातमिदं स्नात्वा क्षुष्टिका मोचयन्ततः ।

शवं प्रज्ञात्प सत्याप्य मोचयेत् पादबन्धनम् ॥

पादचक्रं मोचयित्वा पूजाद्रव्यं जले क्षिपेत् ।

शवं जले च गते वा निःश्लिष्य स्नानमाचरेत् ॥

सतथ स्वयहं गत्वा वलिं दत्वा दिनान्तरे ।

पूजयित्वा ततो देवीं याचितोहं वलिप्रियम् ॥

तेन गृह्णन्तु सधं च महा दत्तमिदं वलिम् ।

परेऽहं निलमाचार्यः पञ्चगव्यं पिबेत्ततः ॥

प्राक्षणान् भोजयेत्तत्र पंचविंशतिबंधयकान् ।

सप्तपंचविहोमं वा क्रमाच्चैव दशावधि ॥

ततः स्नात्वा च भुज्ज्वा च निवसेदुत्तमे स्थले ।

यदि न स्यात् विप्रमोर्ग्यं तदा निधनितं प्रजेत् ॥

तेन चैप्रिधनं नस्यात् तदा दुवी प्रकृप्यति ।

शिरात्रं वा पञ्चात्रं वा नवरात्रं च गोपयेत् ॥

स्त्री-शय्या यदि गच्छेत्तु तदा ध्याधि विनिर्दिशेत् ।

गीतं श्रुत्वा च बभिये निष्कृष्टं पुष्करसंज्ञकम् ॥  
 यतिं बभिव विद्यां शान्तं तदाल्पं मूर्च्छां तजेत् ।  
 न चरत् शिवं कथन्तं हिंसे देवस्य संनिभति ॥  
 वा स्तोत्रार्थात् न्ययपुण्ये बभिव गतिं नदा मभिर ।  
 तदा बद्धं परिक्रम्य शरीरपाहृतनाम्नसम् ॥  
 योगाद्यतिभिर्याप्य न कुं चित्तं ब्रह्मचरम् ।  
 देवयोगाद्यतिभिर्याप्य च स्तुतेत् प्रकृतं यति ॥  
 श्राद्धनिष्कामिनाम् च विष्णुपरीयकं निरैर ।  
 ततः स्नात्वा च न गार्वां प्रत्ये वोढववाचरे ॥  
 स्वस्वात्मानं मन्त्रमुच्चार्य-तर्पणस्ये नमः प्रथम् ।  
 एव सततपारुर्ध्वं देवं ये तर्पयन्ति त्रये ॥  
 'आमर्तर्पणस्यस्तु ब्रह्मार्देवस्य तर्पणम् ॥  
 इत्यनेन विधानेन सिद्धिं शनोति शक्यं ॥  
 इति मुक्ता वाग्म्ये योगात् कार्त्तये वाणि इरेः पदम् ॥'

पैरों तसे ब्रह्मोत्पत्त्यर्थे निजनिर्भेदात् उद्धान् कारने  
 को शक्यं शोभं पीर शक्यं मो निबन्धन शोभेमा । पुनः उस पर  
 उपवेशन करके पाद धारा दीनी बाहुश्लोक निष्कारे पीर  
 उस पर ह्रुम विद्या कर पैरोंको स्थापित करे । शोभेको  
 चपुट करके स्थिरचित्त पीर स्थिरचित्त शोभं । इस प्रकार  
 पन्यचित्तसे हृदयमें देवीका ध्यान कर अप करे । इस  
 प्रकारसे धनुहाल करनेसे यदि ध्यान चञ्चल शोभे, तो  
 डरना न चाहिये । भय शोभे पर उसकी पूजा करे पीर  
 कई कि "ई देवेति । तुम को चाहतो को दिनत्र पन्त शोभे  
 पर उभे-में तुम्हें बधी पूजा । तुम अपना नाम प्रकट  
 करो ।" अक्षतमें उदको उद बात कह कर निर्भयतासे  
 पुनः अप करे । उससे बाद यदि वह मधुरवाक्य न  
 करे, तो मातृशक्तो उचित है कि, मन्त्र कर अप चन  
 से कर प्राणना करे । यदि वह मन्त्र न करे या कर न  
 दे, तो साधक पुनः पन्यचित्तसे अप करना शक्य कर  
 दे । पुनः विसा शोभे पर उद कह मन्त्र करे पीर कर  
 दे, उससे बाद उस बरको से कर मातृक अप करवा  
 होइ है । जमसे बाद चन प्राप हो गया—विसा मन्त्र  
 कर शोभे शोभ दे । योही शक्यको प्रदानित करके संज्ञा  
 पन पूर्वक पादत्रयन मोचन कराये पीर पादत्रय  
 मोचन करा कर मुक्ता-शुभको जन्ममें निदेष करे । उनक  
 बाद शक्यको वागो का गङ्गदेसे से क कर स्थान कर क कर  
 को शीट प्राप ।

दिनके पन्तमें साधक देवीको पूजा करके बलिदान  
 करे पीर प्राणना करे कि—ई देवि । मेरे  
 द्वारा प्रदत्त बलिको पक्क कोजिये । दूरे दिन  
 पक्कपक्क पान कर पक्कसंज्ञक शोभेको जिमार्थे । तदनन्तर  
 ध्यान पीर मोचन करके उत्तम स्थानमें शान कर ।  
 साधक यदि साधकमोचन न कराये तो वह निर्धन होता  
 है पीर यदि निजल मो न हो तो दिने उस पर बुधित  
 होती है । १ दिन, १ दिन वा ० दिन तत्र इसको सुम  
 रचना चाहिये । साधक यदि शोभेको शक्य पर गमन  
 करे तो उसको ध्याति शोभे है तथा गीत सुमनेसे वहरा,  
 मातृ देवनेसे पन्ना पीर दिनको मोलनेसे नूमा शोभा  
 है । इस प्रकारसे पन्त्र दिन बिताने चाहिये । कों कि  
 पन्त्र दिन तत्र शरीरमें शिवताका न स्थान रहता है ।  
 इन पन्त्र दिनमें मन्त्र ब्रह्मोका स्वयंकार न करना  
 चाहिये । बाहर जागा हो मो मन्त्र ब्रह्म कर जाये ।  
 मन्त्र पीर साधकको कर्मो निन्दन न करे । देवता मन्त्र  
 पीर साधकका प्रतिदिन कर्म करे । प्रातःकालमें निज  
 विश्वास करनेक उपरान्त विष्णुपरीयक पान करे । पश्चात्  
 ११दिन गङ्गा-ध्यान कर साहाय्य मूल उच्चारणपूर्वक  
 तर्पण करे पीर तर्पण कर शुक्ल पर नमः पद प्रयोग  
 करे ।

इस प्रकारसे तोन शोभे उद्वेगनमें देवतपण करे ।  
 ध्यान करके विसा तर्पण न करनेसे, देवतर्पण न शोभा ।  
 साधकको विसा धारण करने पर धन्य हो सिद्धि प्राप्  
 होगी । इस तरह निबिस्तान करनेसे इस म धारमें विविध  
 भोग पीर पन्तमें स्वर्गमें गमन होता है । (श्रीकण्ठ)

तन्त्रके मतमें सृष्टितत्त्व—

'विद्याकारे निर्गुणं च स्तुतिभिर्यापि रक्षितम् ।  
 प्रथमं ब्रह्मकारेण रक्षणीयं द्वितीयं च ॥  
 त्रितीयं च त्रितीयं च त्रितीयं च त्रितीयं च ॥  
 तस्मात्पुनरिदं च त्रितीयं च त्रितीयं च ॥  
 चर ३३ च —

तनु है वि पर तत्र रक्षणीयं च ये ।  
 पुन चको पुनारीणी स्तुतिभिर्यापि रक्षितम् ॥  
 आधरक्षितां निर्या देवको धारि रक्षितम् ।

पूजायोगं च देवेशि स्वयमुत्पत्तिकारणम् ॥  
 येन रूपेण ब्रह्माण्डा जायन्ते शृणु तत् शिवे ।  
 आकाशाज्जायते वायुर्वायोऽप्ययते रविः ॥  
 रवेरुत्पद्यते तोयं तोयाद्भवत्यते मही ।  
 पंचभूतेषु ब्रह्माण्डा भवेयुः पर्वतामजे ॥  
 ब्रह्माण्डस्थापनार्थाय कूर्मपृष्ठे गनन्तः ।  
 तन्मूर्ध्नि वायुराकारा ब्रह्माण्डा बहवः स्थिता ॥  
 कारणं वारिमध्येषु कूर्मश्चरति नित्यगः ।  
 अहमेव विश्रुतेन पालयामि पुनः पुनः ॥”

हे देवेश ! निराकार, निर्गुण, स्तुतिनिन्दाविवर्जित वर्णतीत, सुनियंत्र, मंज्राविरहित यह किम आकारसे प्रतिष्ठित है और कहाँसे इसकी उत्पत्ति हुई है त ॥ उत्पत्ति हुई तो किम आकारमें हुई ? यह सब कह कर मेरा मंशय दूर कोजिये । महादेवने पार्वतीके प्रत्यक्ष उत्तरमें कहा—हे पार्वति ! श्रेष्ठतत्त्वना मैं वर्णन करता हूँ और जिस तरहसे इस ब्रह्माण्डको उत्पत्ति हुई है उसकी कथा भी कहता हूँ, तुम ध्यान दे कर सुनो ।

गुणान्तया, गुणातोता, स्तुति और निन्दाविवर्जिता आकाररहिता, नित्या, रोगशोकविवर्जिता शक्ति स्वयं ही उत्पत्तिका कारण है, उसके बाद जिस तरह ब्रह्माण्डको उत्पत्ति हुई है वह कहता हूँ । पहले आकाशमें वायु वायुसे रवि, रविसे जल, जलसे महा वा पृथिवी उत्पन्न हुई है । ये पाँच पञ्चभूत हैं, इन्हीं पञ्चभूतोंमें ब्रह्माण्डको उत्पत्ति हुई है । कूर्मपृष्ठ पर ब्रह्माण्ड संस्थापित है तथा अनन्तके मस्तक पर बालुकाकार अनेक ब्रह्माण्ड अवस्थित हैं । कारण-वारिमें कूर्म विचरण करते हैं, मैं त्रिशूल द्वारा पुनः पुनः पालन करता हूँ ।

‘श्रीचण्डिकोवाच ।

कथं वा लभते जन्म कथं मृत्युर्भवेत् प्रभो ।  
 तत्प्रकारं महादेव श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥  
 श्रीशंकर उवाच ।  
 इह यत् क्रियते कर्म तत्परश्रोतुञ्जयते ।  
 जीवत्पुणजलौकेव देहाद्देहान्तरं प्रजेत् ॥  
 संग्राह्यं चोत्तमं देहं देहं त्यजति पूर्वकम् ।  
 इति श्रुत्वा च सा चण्डी पप्रच्छ परमेश्वरम् ॥  
 श्रीचण्डिकोवाच ।

प्राप्तं ज्ञोत्तरं देहस्तु विजडानादिकं कथम् ।

शिव उवाच ।

शृणु देवि प्रख्यामि मायादेहं तदैवहि ।  
 मायादेहं परमेशानि वायुरूपेण चान्यथा ॥  
 वायुरूपो यतो देह आकाशाद्यां निराश्रयः ।  
 इतश्च विण्टदानेन वायुः स्थिरतरो भवेत् ॥  
 प्रथमं मस्तकं देवि ज्ञायते न कमावधि ।  
 ततो यमपुरं गत्वा धर्मावर्मादिकं च यत् ॥  
 तद्भुक्त्वा वापरे किञ्चित् यदा कर्म न वियते ।  
 तदाशया तदा जीवः प्रयायै ब्रह्माशयनम् ॥  
 तन्मात् कर्मानुवारेण यद्विद्याद्दर्शनं तनुम् ।  
 महाविद्यां भागवशात् यदि प्राप्नोति मद्गुरुम् ॥  
 तत्त्वज्ञानं महेशानि यदि मागम्यशाभेत ।  
 तदेव परम मोक्षं यावद्ब्रह्माण्डं विष्टति ॥  
 प्राज्ञस्य महाभोगं वायुत्वं क्षत्रियस्य च ।  
 साहस्यं चोदजातस्य शूद्रस्य सहस्रैकिकम् ॥  
 मयादियाप्रसादेन पुनरागमनं नहि ।  
 इह ब्रह्माण्डं नामो त्वं सर्वभोज्ञ यदा शिव ॥  
 तदा सर्वस्य निर्वाणं भवत्येव न संशयः ।  
 श्रीच ङिकोवाच । \*  
 इह ब्रह्माण्डबाह्ये तु किं पुनः परमेस्वरं ।  
 तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ॥  
 शिव उवाच ।  
 ब्रह्माण्डस्य बाह्ये देहो ब्रह्माण्डो बहवः स्थिताः ।  
 अनन्तस्य प्रमाणत्वं किं वक्तुं शक्यते म ॥  
 स एव निर्मितं सर्वं सर्वं महेश्वरि ॥”

मनुष्य कैसे तो जन्म लेते हैं और कैसे उनकी मृत्यु होती है इस विषयकी सुननेकी मेरो बड़ी इच्छा हुई है । हे शिव ! आप इसका यथायथ विवरण कहिये । महादेव पार्वतीसे कहने लगे—“हे शिवे ! मनुष्य इस जगत्में जो कर्म करते हैं, अर्थात् पाप और पुण्यका जैसा अनुष्ठान करते हैं, उन्हीं कर्मोंके अनुसार परलोकमें स्वर्ग नरकादि भोग करते हैं । जोक जैसे लक्षणसे लक्षणकारको गमन करती है, उसी प्रकार जीव भी देहसे देहान्तरको गमन करता रहता है । जैसे जोक एक लक्षणका बिना आश्रय लिये पहला लक्षण नहीं छोड़ सकती, उसी प्रकार जीव भी

एक शरीरका बिना पात्रय किए पश्चिमा शरीर नहीं  
 जागता।" पात्रैतानि महादेवका इस बातको सुन कर  
 कहा—“यदि होव दूसरो एक देहका पदम बिना किये  
 पूर्वदेहको नहीं होके, तो अत व्यक्तिका पित्रादि पदम  
 केन होता है ? पाप धनुषपूर्वक भी इस संशयको भो  
 दूर होजिये।” महादेव बोले—हे शिवे ! मूर्ख  
 मय्य मायादेह होता है, मायाक्य देह बाहुक्य है  
 वह साक्षादेह साक्षात्कर्म को कर निराशय भावसे  
 रहतो है। अब तक पित्रदान नहीं दिया जाता तब  
 तक वह इसी तरह निराशय रहतो है।

उसके बाद अत व्यक्तिका पित्रदान दिये जाने पर  
 वह बाहु फिर होती है और अतमे मनुष्य उत्पन्न हो  
 कर पश्चात्क्य पदमक मय उत्पन्न होती है। जोकि यमपुरको  
 आ कर पाप और पुण्य जो कुछ होता है उसको भोगता  
 है। पाप और पुण्य रहनेसे अत और तदक भोगता है।  
 उनका भोग जो जाने पर अब कोई कर्म बाकी नहीं रह  
 जाते, तब जोन यमको पात्रादि धनुषार ब्रह्मात्मनको  
 समन करता है। जोकि कर्मानुसार कर्ममा पादि तनु  
 काम करता है।

किन्तु यदि कोई मायात्मने मनुष्य, महाविद्या  
 वा तत्त्वज्ञान प्राप्त कर ले, तो वह अब तक इस ब्रह्माण्ड  
 में रहता है, तब तक भोग भोग करता है। एतमें ब्राह्मण  
 महाभोग अत्रिभ साकुल ब्रह्म साक्य और गुरु  
 मानोक पाते हैं। महाविद्याके प्रभावसे पुनरात्मन नहीं  
 होता। हे शिवे ! अत समय इस इहम् ब्रह्माण्डका नाय  
 होता, अत समय अती और सुख होती। इस ब्रह्माण्डको  
 बाह्य देह और ब्रह्माण्ड अनेक हैं, ब्रह्माण्ड ही अनन्त है।  
 इस अनन्तका प्रमाक कर्मको क्या कोई समर्थ है ?

“ब्रह्मा नान्ते तु वा ब्रह्मा धरते वान् ।  
 तीयानुदरुर्ध्वं देवि ब्रह्मते विज्ञेयते ॥  
 अथवा आरते सर्वं ब्रह्मा धरते वपत् ।  
 तीयानुदरुर्ध्वं देवि ब्रह्मा तोने विज्ञेयते ॥  
 परमात् इन्द्रियेणैव जातं ब्रह्मवा इन्द्रि ।  
 अतः किन्तु किंचो वरि प्रकृत्य आरते ज्ञेयम् ॥  
 तथा अथवाऽपि ब्रह्मा धरते पुनः ॥”

(निर्वाणतन)

प्रकृतिसे ही मयक पुत्रन अथवापद्व करती है,  
 प्रकृतिसे ही अयको उत्पत्ति है। जैसे जन्म मनुष्यके  
 होते पौर दिन विनीन को जाती है, तभी प्रचार प्रकृति  
 से ही सब उत्पन्न होते पौर उनसे अय हो जाती है।  
 ब्रह्मा, किन्तु और मईअर प्रकृतिसे ही उत्पन्न हुए हैं  
 तथा प्रकृतिसे ही बीन हो जायगी। प्रसन्नकालसे उत्पन्न  
 होने पर अब ब्रह्माण्ड प्रकृतिसे ही विपुत्र हो जायगा।

तास्मिन्काले—

“कीर्त्तवा स्मरदरेतो पु कर्वा वा स्मरेह भिने ।  
 स्मरेह भिनेह अथ बभितानक्यविनीम् ॥  
 देवं शेषिच न पुत्रात् न श्वो न बहः सृष्टः ।  
 तथापि अथवाऽपि ब्रह्मैव न कुन्तेत ॥  
 वाचक्यां द्विवाचं ब्रह्मा कर्वातेनो ॥”

अब अत्रिदानक्यपिसे देवी पाई श्रीकृष्णसे ही वा  
 पुत्रकृष्णसे पौर पाई निम्बन ब्रह्मात्मने ही हो-अथवा  
 स्मरक्य करना चाहिये। मादात्मने सब न तो खो है, न  
 पुत्र पौर न पण्य अथवा अहू हो है। तथापि अथवाऽपि  
 देसे श्रीवाचक है, उसो तरह अतमे भी श्रीकृष्णका  
 प्रयोग करना चाहिये। उनका क्य नहीं है, वह मात-  
 कोकि मनुष्यके लिए क्यकारिणी है।

प्रपञ्चभारमि विद्या है—

“तमेवा कुन्तकीकेके अन्ते इदवर्वा विदुः ।  
 अ तैसि वठत देवी भूमीऽपीऽक्यमिन् ॥”

अब महापात्रि कुन्तकृष्णमिने दोमिन्तेके कृदयको  
 पात्रव कर रहतो है तथा वह वा शोबके मूकभारमि  
 निरत हो अथवाऽपि तनु गुन गुन धनि करती है।

कारदात्मनकमें कहा गया है—

“भोगिनि इदवाम्बोके कुन्तकी कुन्तकवा ;  
 कारी अर्धमूतान् स्मरती विदुवाऽपिः ॥  
 अकारतैक्यात्तरेपी अर्धवाऽपिः सिद्धि ।  
 इ इलीऽप्युर्ध्वार्धमिभिवदुपेयी ॥  
 अर्धैवैवपी देवी अर्धक्यमपी विद्या ;  
 अर्धैवैवपी अथवाऽपिः सुनिम्ब सुनता विदुः ।  
 द्विवाचकमी देवी अथवाऽपिः स्मरती ॥”

हे शिवे किन्तेके कृदयकमसेम पयमा अथवा क्य प्रचार  
 कर-अपने पानकमें तुम्ह करती है। अर्धमूत





सौख्यका साहाय्य योसोक्तमी मी योयुगा है। इससे ऊपर  
 योद्वयप्रत्यय मोहाय्यकारणायक निम्न पद्य है जो  
 यमसोक्त कहनाता है। यहाँ बाईं ओर गौरी ओर  
 दाहिने ओर सदायिक विराजमान हैं। इस पद्यके ऊपर  
 पद्यप्रथमसम्बन्ध ज्ञानपद्य है जो तपोसोक्त कहनाता  
 है। यहाँ गिणको बाईं ओर सदानन्दरूपिको सिद्धकाकी  
 चक्रव्यान करतो है।

'तपोत्तेर्द योसोक्तस्य चतुर्केतुप्रत्यय विधे ।  
 स्यत्तेरेषु ये देवा वैश्वंते ये सुगन्धका ।  
 तपसापि न स्मरन्त तपोसोक्तप्रत्यय विधे ।  
 तपोसोक्तप्रत्यय कारित सोक्तप्रत्यये ह्येत्येते ।  
 सायकस्य सूर्यस्य स्वात् सास्य नवस्येते ।  
 चातुस्य तपोसोक्तस्य निर्वाणं हि तस्यैते ।  
 अतो मन्त्रासो वेदासोक्तोक्तविधा सता ।  
 एतन् सोक्तस्य साहाय्यं भवा वस्तु न ज्ञानवते ॥'

तपोसोक्त योसोक्तको प्रथमा चार साधु युगा प्रमाण  
 है। ब्रह्मसोक्त ओर वैश्वस्योक्त देवयज मी तपसाय  
 द्वारा इस मन्त्रसोक्तको नहीं पाते। इस तपोसोक्तके  
 समान दूसरा कोई सोक्त नहीं है। मन्त्रोक्तमें सायकोक्त,  
 ज्ञानसोक्तमें साहय्य ओर इस तपोसोक्तमें सातुस्योक्त  
 होता है। इसके बाद ही निर्वाण है। ब्रह्मादि समो  
 देवता एन तपोसोक्तको साहाय्य करते हैं। इस सोक्तका  
 साहाय्य करनेमें मैं समझ नहीं हूँ।

"दिनाकतस्य मन्त्रार्थं तस्यै तुह्यै भवेत् ।  
 छन्दोकारं तस्यै चिन्ताकारं हि तत्परिवृत्तं ॥

संक्षेप उच्यते—

अतोराकारं ब्रह्मार्थं सायविद्यं प्रायेति ॥  
 ब्रह्मार्थं निबद्धं मीत्रं स्वकच्छुद्रादि च तत् ।  
 वेदं चरितं सत्यमेव तथा यत्तदुच्यते च ।  
 पूर्वोक्तस्योक्तस्यै वैश्वस्यै च पूर्ववत् ।  
 त्वितं योसोक्तोक्तस्यै वैश्वस्यै च पूर्ववत् ॥  
 पूर्वोक्तस्यै चोक्तस्यै च तत्परिवृत्तं च ।  
 ह्यैतस्यै च अत्रोक्तस्यै च तत्परिवृत्तं च ।  
 तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च ।  
 तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च ।  
 तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च तत्परिवृत्तं च ।

सायानन्दस्यै चोक्तस्यै चिन्ता मित्वा योसोक्तम् ।  
 विषयविशेषात्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ।  
 प्रथमे चोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ॥

ब्रह्माण्डका साधारण कौशा है और वहि किम तरह  
 होती है ? प्रायतः मन्त्रादेवके विषा मन्त्र किया। उत्तर  
 में मन्त्रादेवके कथा— 'हे प्रायतः। ज्ञाना विषयविशेषित  
 अन्तुका साधारण ही ब्रह्माण्ड है तथा स्युन-स्युमादि  
 विषय जो ब्रह्माण्ड कहनाता है। उत्तरमें मन्त्रपद्यंत ओर  
 मन्त्रसुताचक्र (मन्त्र, मन्त्र मन्त्र यन्त्रिमान, मन्त्र  
 पद्यंत, विन्ध्य, पारियात ये ७ मन्त्रपद्यंत हैं) मन्त्र प्रादिते  
 से कर मन्त्रक पद्यंत मन्त्र पद्यंत है। मन्त्रके अर्द्धदेय  
 में मूर्त्तिकादि मन्त्रमन्त्र, ओर यथोक्तमन्त्रें सत्र पातात हैं।  
 मन्त्रोक्तमें साधारणतः मन्त्रासोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता  
 यन्त्रि मायाके द्वारा सायकोक्त प्रादित कर रहा है।  
 यह मन्त्रासोक्त चक्रकारणरूपिकी तथा इन्द्रोक्तस्यै चिन्ता  
 ओर चन्द्र-सूर्योक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता है। यह मन्त्रासोक्त  
 साया-  
 क्य लक्षणका परिचय कर स्वयं प्रथमेको दो भागोंमें,  
 विभक्त करतो है। उस समय गिण ओर यन्त्रि विभाके  
 पहली छदिको अन्वय होता है तथा उसी समय प्रथम  
 सुक्त होता है जिसका नाम है ब्रह्मा।

"मन्त्रं पुत्रं महावीरं विवाहं पुत्रं वल्लभा ।  
 स्यात्पुत्रस्य तस्यै चोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ॥  
 त्वां विना चरतीत्यस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ॥  
 तस्यै चोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ॥  
 त्विदं वा महाविद्या सायिकी चोक्तस्यै चिन्ता ॥  
 अस्यां संन चोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता ॥  
 अथापार्थं छन्दोकारं न च तत्तत्परिवृत्तं ॥"

इस प्रकार ब्रह्माण्डके लक्षण होने पर मन्त्रासोक्तके लक्षण  
 कथा— 'हे महावीर ! तुम विवाह करो।' ब्रह्मामे  
 यन्त्रिकी इन्ने उत्तरमें कथा— 'प्रायतः विद्या मेरो ओर  
 कोई भी चरनी नहीं है, मैं विवाह न करूया। प्राय  
 तुम्हें यन्त्रि प्रदान करे।' इस पर मन्त्रासोक्तमें प्रथम शरीर  
 से मोहितोयन्त्रि लक्षण कर ब्रह्माकी दी ओर कथा—  
 "यह यन्त्रि दिनेय मन्त्रासोक्तस्यै चोक्तस्यै चिन्ता है तन्का  
 नाम है सायिकी। तुम इसका मन्त्र करके वेदविस्तार  
 करो। इस मन्त्रोक्तपर तुम अन्वय ही यन्त्रिकी  
 होतै है।"



सोमलोचनं महाशक्ती महाबद्ध द्वारा म पुटित इत् ।  
 यह महाशक्तो चन्द्रसूर्याभि रूपविग्रहा, यनादि रूप  
 स मुक्ता पौर चन्द्रको भक्ति पात्रतिमिग्रहा है । समस्त  
 जोय इन महाशक्तोके य प्रमात्र है । जिस तरह स्वयं  
 दक्षिण दिक्पुच्छिष्ठ स्फुरित होती है किन्तु वे पश्चिमे भिन्न  
 नहीं हैं, उसी प्रकार जोय भी महाशक्तोसे मिल नहीं  
 उनके चंद्रमात्र है । महाशक्तोके जिन समस्त परब्रह्मण्युक्त  
 को हर मूमि पर पड़े, वे देव । उसी समय वे शक्तिबुद्ध  
 हुए । सारासिद्धि कोट पौर पदपति पादि चौराभी काय  
 योगियोंमें जन्म लिया, उसके बाद दुर्लभ मनुष्यस्य प्राप्त  
 किया। यह मनुष्य-शरीर को बर्ण पौर चन्द्रमेंका पाकर  
 है । इस धर्मावर्णके द्वारा मनुष्य एक बार जन्म ले कर  
 फिर मरता है । इस तरह मानव-चन्द्र कर्मपाथ द्वारा  
 नियन्त्रित हो कर आत्मा प्रकाशको योगियों परिस्वयम्  
 करता है ।

तन्त्रे मतसे तत्त्वज्ञान—

पञ्चभूत, एक एक भूतके पाँच पाँच करके २५ गुण  
 हैं । पत्थि, मांस मद्य, त्वक्, सोम, ये ५ इन्द्रियोके  
 गुण हैं । दृक्, शोचित, मन्त्रा, मन पौर मूल, ये ५  
 ऋतके गुण हैं, निद्रा, सुषा, वस्था, ज्ञान्ति पौर पान्द्र  
 ये पाँच तिजके गुण हैं । धारण, चान्नन विषय, नष्टोच  
 पौर प्रथम, ये ५ वातुके गुण हैं । काम शोच, मोह  
 मन्त्रा पौर शोम ये ५ भावायुके गुण हैं । समुदायमें  
 पञ्चभूतके २५ गुण हैं । यह पञ्चभूत—सबो जन्में जन्  
 रक्षित, रवि नाहुमें पौर नाहु पाकायमें विसीन  
 होती है ।

इन पञ्चतत्त्वके बाद भी तत्त्व है—श्रम, रसन,  
 प्राण, चक्षु पौर श्रोत्र, ये पाँच इन्द्रिय पौर मन माधन  
 इन्द्रिय है । यह ब्रह्माण्डमध्य देखके मन्त्र व्यबस्थित है  
 तथा समभातु, धाक्ता, परकराब्जा पौर परमात्मा ये मो  
 शरीरके मन्त्र व्यवस्थित हैं । दृक्, शोचित, मन्त्रा, मन्,  
 मांस, पत्थि पौर त्वक् ये मन्त्रातु है ।

शरीर को पाक्ता है, यन्त्रात्मा है । मन पौर परमात्मा  
 मन्त्रमय है, इस परमात्मामें ही मन विसीन होता है ।  
 रज्ज्वातु माता दृक्वातु पिता पौर मूय्वातु प्राण,  
 र्दनीके मर्मपिच्छको उत्पत्ति होती है ।

अध्ययके प्राण, प्राणमें मन पौर मनमें वाक्को उत्पत्ति  
 होती है तथा मन वाक्के माय विसीन होता है । सूँ,  
 चन्द्र नाहु पौर मन ये ब्रह्म। अवज्ञान करतें हैं ?  
 ताहुमूनमें चन्द्र, नाभिमूनमें दिवाकर सूर्यके पानी  
 नाहु पौर चन्द्रके पानी मन तथा सुख के पानी विल पौर  
 चन्द्रके पानी जोवन व्यवस्थित है । किंच स्वानमें शक्ति  
 मिय अवज्ञान करतें हैं ? काष्ठ बर्ह रजता है पौर  
 बरा भी पाती है ?

पातायमें शक्ति व्यवस्थित है, ब्रह्माण्डमें मिय नाम करतें  
 हैं पत्थरीयमें काष्ठको व्यवस्थिति है पौर इस कालके जो  
 प्रराको उत्पत्ति होती है । जोन तो पाकाको पाकाहा  
 करता है पौर जोन पानमोजनादि करता है तथा आपत,  
 चन्द्र सुपुत्रि चिसको होती है पौर जोन प्रतिबुद्ध होता  
 है ?

प्राण पाकारको पाकाहा करतें हैं, वृतामन पान  
 मोजनादि करता है तथा आपत, स्वप्न पौर सुपुत्रिमे नाहु  
 की प्रतिबुद्ध होती है ।

जोन ती कर्म करता है जोन पातकमें निद्र होता  
 है तथा पापका पाचरण करनीवाला जोन है पौर पापोंके  
 सुख जोन होता है ? मन पाप कार्य करता है, मन जो  
 पापमें निद्र होता है । मन को लगना हो कर पुच्छ पौर  
 पाप लगात्रन करता है । जोय किंच प्रकारके मिय होता  
 है । श्रान्तिबुद्ध होने पर कमको जोय कहती है, यह जन्म  
 श्रान्तिमुक्त हो जाता है, तब तबे मिय कहते हैं । तामम  
 श्रद्धि इन तीर्थके निये इसी तरह अमन्त्र करतें रहती  
 हैं । पद्मानाभ्य हो कर परमतोयमें काश्चि नहीं होती ।  
 पातमतोयके बिना जानि कौसे मोच हो सकता है ?

वेद मो वेद नहीं हैं, परान्तु ४ वेदोंका वेद नहीं  
 ब्रह्म का सक्ता, मनातन ब्रह्म ही वेद हैं । चार वेद  
 पौर समस्त शास्त्रोंके पञ्चयन करके योगो लनका मार  
 य दृक् करतें हैं, किन्तु पण्डितगण तत्त्व पोया करतें हैं ।  
 तप तपत्या नहीं है, ब्रह्मचर्य हो तपस्या है ; जो ब्रह्म  
 चर्यके प्रमाथके खरैरता होती है, वे ही तपस्वी हैं ।

शोम पादि सो शोम नहीं हैं ब्रह्मन्त्रिमें प्राचाका  
 समर्थ करता हो शोम है मोच नाम कहते हैं मिय पाप  
 पुच्छ दोनोंका ही त्याग करना पड़ता है ।



बुद्धमत प्रतिपाद्य बोधशास्त्रंनि पद्मभारको निम्न  
 है और समको पद्म कहनेका निमित्त है। किन्तु बोध  
 तन्त्रिक लक्षमें पद्मका श्रिया करती है। पद्मभारको  
 सेवा बौद्धतत्त्वका एक प्रधान चक्र है। जिस मध्य और  
 मांसको पद्म कहना बोधशास्त्रंनि विप्रियक्षयके निमित्त  
 बतलाया गया है, बोद्धत लक्षमें लक्ष्मीको सुखाति पारं  
 जाती है।

‘मिथं पार्याप्तमोदी मरिचकवर्णितम् ।’

‘... मर्यादं वीक्ष्य नर्त मिया लह ।

लक्ष्मिभित्तो पार्याप्तं मरिचकवर्णितम् ।’

(अभिधाव ४ प ०)

बोद्धत लक्षमें पद्म और और, इन दो भावोंका लक्ष्य  
 है। जो वास्तविक विद्वत्तात्रिय है, बोद्धत लक्षमें लक्ष्मीको  
 कोरनायक कहा गया है। बोद्धतात्रियगण भी इस लक्ष्य  
 को धामोद्धव मानते हैं। बोद्धत लक्षमें चक्रबुद्धा, वीरयाम,  
 भक्तपूजा आदिका विषय भी वर्णित है। वर्तमानके  
 भास्विक बोद्धगण प्रायः ज्ञानिनिदको नहीं मानते किन्तु  
 बोद्धतात्रियगण चतुर्वर्णका विप्रियक्षयके विचार करते  
 हैं। (विद्यार्थपरवर्षिभ्य १ म अ० ३४ व दै।)

तात्रिकविषयने जिस तरह भारतीय हिन्दुधर्मका  
 हृदय परिवार किया है, उसी प्रकार बोद्धतात्रियविषय  
 भी तिम्बत और चीनके बहुत व्यापक बोद्धिमें पर्यवसित  
 हुआ है। पद्मार्थ नामके तिम्बतवासी एक नामाने (ई०  
 को १६वीं शताब्दीमें) कहा है—‘जो यथायं तत्र  
 तत्त्वने वाचिक नहीं है, वह मोक्षमार्गमें राहभूने पवित्र  
 को भाँति है, इधमें सन्देह नहीं। वह भगवान् मय  
 मन्त्रके निर्दिष्ट मार्ग बहुत दूर विचार करता है।’  
 तन्त्राक्ष (म० ली०) तन्त्रान् लुब्धवापान् पश्चिराद्गतं तत्र  
 अन्। संशयनिपत्तये। प १११००। नूतन ब्रह्म, नया  
 अयत्ना।

तन्त्राक्ष (म० ली०) तन्त्रं काष्ठ । तन्त्रमित् काष्ठ  
 मीट तर्तित्तौ एक अक्षरौ।

तन्त्रा (अ० ली०) मासना का प्रबन्ध आदि करनेका  
 काम।

तन्त्रता (म० ली०) तन्त्रप्र भाषा तत्र तत्र टाप। अर्थात्

कार्यके लक्ष्यके कोरे एक कार्य करना कोरे ऐसा  
 कार्य करना जिससे फलके लक्ष्य सिद्ध हो।

जिस तरह शास्त्रानुसारके ध्यान किये बिना कोरे  
 काम करना निमित्त है, परन्तु एक ही पादमो पूजा  
 तत्रं और होम कर सकता है।

‘अल्परा मावरेत् कर्म मरिचोनि लिचन ३’ (रस)

इस शास्त्रीय वचन तुलारने हमके प्रत्येक कार्यके  
 वाद ज्ञान करना आवश्यक ज्ञान पड़ता है। लक्ष्यके  
 लिये तत्रता कोरार कर समस्त कर्मोर्ध्वके एक बार  
 ज्ञान करनेसे काम चम सटता है। प्रत्येक कार्यके वाद  
 ज्ञान करनेका कोरे प्रयोजन नहीं।

यदि किसीने फलके लक्ष्यका ज्ञान को नों तो सम  
 ब्रह्मका पापनाशके लिये एक एक पापविनाश करके  
 सर्वोर्ध्वके एक प्रायश्चित्त कर लेनेसे ही समस्त ब्रह्म  
 कर्माका पाप नाश हो जाता है। (स्पष्टि)

तन्त्राक्ष (म० पु०) तत्र तन्त्रावकपवतिपन्नं चार  
 यति चारि-शुभु। पुष्पाक्षराक्ष, यद्य आदि कार्यमें यह  
 मनुष्य को कर्मकाष्ठ आदिको मुक्तके ले कर यात्रिक  
 आदिके भाव है। यत्रिक केसाही पार  
 र्थी कीन हो तो भी तत्राक्षके विना पूजा यद्य  
 मनुष्यका अनुष्ठान नहीं करना चाहिये। पूजादिमें एक  
 पूजा करके लिये बैठे और दूसरेको आदिने कि जायने  
 पुष्पाक्ष ले कर लक्ष्यके अनुष्ठार पकृति जाय।

‘एवमेव शिषुषत्वापत्त नकार १’ (स्पष्टि)

तन्त्रबुद्धि (म० ली०) जायने शरीरमनेन तत्र चिकि  
 कित तत्र बुद्धयः, इत्तु। सुदुर्लभ ३२ प्रकारको  
 बुद्धि। इनको महायथाके किमो वाचकका अर्थ आदि  
 निष्ठापने या समझनेमें सहायता को जाती है। ३२  
 बुद्धियोंके नाम—पश्चिकरय योग, पटाक्ष, इत्थक प्रदेय,  
 पतिदेय, पयवर्म, भास्वमिय अर्थात्पति, विषयय प्रमम,  
 एकाक्ष फलैकान्त, पूर्वपक्ष, निषय अनुमत विधान  
 अनागतार्थेचय अतिज्ञानार्थेचय, संशय ध्याप्यान  
 स्वप्न निर्वाचय, निदाम, निदोम विक्षल्प, अनुषय,  
 अक्ष, अर्धय, निर्देय, उपदेय और अपदेय। इन  
 ३२ प्रकारको तन्त्रबुद्धिमें वाक् और अर्थ योजित होने  
 हैं। अर्थात् अयमन्त्र वाक् रहता है, अर्थात् अय

• X. Schlegel's notes on Buddhism in Tibet, p. 42.







तन्त्रि ( सं० स्त्री० ) तन्त्र-इ । १ तन्वी, वीणा मितार आदि वाजोंमें लगा हुआ तार । २ तन्त्रा, उँघाड़े ऊँघ ।

तन्त्रिका ( सं० स्त्री० ) तन्वी एवं स्वार्थे कन् पूर्व झ्रस्त्वय । १ गुडुचो, गुरुच । २ तन्त्र, ताँत ।

तन्त्रिज—तन्त्रि देवो ।

तन्त्रित ( सं० त्रि० ) तन्त्रा तन्त्रा जाता अस्य तारकाटित्वादितच् । आलस्ययुक्त, आलसी ।

तन्त्रिन्—तन्त्रिन् देवो ।

तन्त्रिपात—तन्त्रिगल देवो ।

तन्त्रिपालक ( सं० पु० ) जयद्वय राजा । ( शब्दभासा )

तन्वी ( सं० स्त्री० ) तन्त्रयति मोहयति लोकान् तं व-डोप् ।

१ वीणागुण, वीण मितार आदि वाजोंमें लगा हुआ तार । २ गुडुचो, गुरुच । ३ देहशिरा, शरीरको नम । ४ नाडी । ५ नदीमेंट, एक नदीका नाम । ६ युवतोभेद, एक जवान औरत । ७ रज्जु, रस्मी । ८ वह वाजा जिममें वजानेके लिये तार लगे हों । ९ कर्णपालीगत रोगविग्रिय । १० सैहली पिप्पको । ( पु० ) ११ वाजा वजानेवाला । १२ गवैया, वह जो गाता हो । ( त्रि० ) १३ आलस्ययुक्त, आलसी । १४ अधीन ।

तन्वीमुख ( सं० पु० ) हफ्ताका अवस्थाभेद, हाथको एक मुद्रा ।

तन्त्रय ( सं० स्त्री० ) तन्त्रुना अयं, इ-तत् । सत्रका अग्र-भाग. सूतेका अगला हिस्सा ।

तन्वी ( सं० अच्य० ) स्त्रीकार, अद्भोकार मंजूरी ।

तन्वी—हेदरावाट जिलेका एक उपविभाग । इसमें गुनो, बदीन, तन्वीवागो, डेरा मझावत वे चार तालुका लगते हैं ।

तन्वी अलाहियर—१ हेदरावाट जिलेका एक तालुका । यह अक्षा० २५°७' और २५°४८' उ० और देशा० ६८°३५' और ६८°२' पू० पर अवस्थित है । जनसंख्या ८०८८०-के लगभग है । इसमें ३ शहर और १०७ ग्राम लगते हैं । वाजरा और तमाकू यहाँ प्रधानतया उपजते हैं । खेतफल प्रायः ६८० वगं मील है ।

२ उक्त तालुकाका शहर । यह जोधपुर-बीकानेर रेल्वेकी हेदरावाट बन्धोत्तरा शाखा पर अक्षा० २५°२०' उ० और देशा० ६८°४६' पू० में अवस्थित है । लोकसंख्या ४३२४ के लगभग है । यहाँ चीनी, आत्रो, रेशम, कपड़ा, रुई और

तेलका व्यवसाय चलता है । यह १७८० ईस्वीके लगभग तालपुर राज्यके प्रथम राजपुत्रने वसाया था । यहाँका किना देखने लायक है । १८५६ ईस्वीमें स्युनिमपनिटो स्थापित हुई थी । यहाँ तीन लड़कोंके स्कूल, एक लड़कियोंकी पाठशाला, एक रुईकी जिन, एक कपाए औटनेका पेच और एक अस्पताल है ।

तन्वी आदम—( आदमजो ) तन्वी हेदरावाट जिलेके तन्वी अलाहियर तालुकाका एक शहर । यह अक्षा० २५°४६' उ० और देशा० ६८°४२' पू० पर अवस्थित है । यहाँ हो कर नारायं वेष्टर्न रेलपथगया है । इसकी सन् १८०० ई०में आदमखों मरौने अपने नाम पर वसाया था । जनसंख्या ८६६४ है । रेशम, रुई, तेल, चीनी और घोका अत्य व्यापार होता है । यहाँ १८६० ई०में स्युनिमपनिटोकी स्थापना हुई थी । यहाँ तीन रुईके जिन, पाँच स्कूल और एक अस्पताल है ।

तन्वीवागो—हेदरावाट जिलेका एक तालुका । यह अक्षा० २४°३५' और २५°२' उ० और देशा० ६८°४६' एवं ६८°२२' पू०के बीच अवस्थित है । लोकसंख्या ७४८७६के लगभग है । इसमें १४१ ग्राम लगते हैं । नहरोंके पानेसे जमीन सोची जाती है और चावल, रुई, ईख और चव अथिक् उत्पन्न होते हैं । इसका खेतफल प्रायः ६८० वगं मील है

तन्वी मस्तोख़ाँ—वम्बईके अन्तर्गत खैरपुर राज्यका एक शहर । यह अक्षा० २७°२६' उ० और देशा० ६८°४२' पू० पर खैरपुर शहरसे १३ मील दक्षिणमें अवस्थित है । हेदरावाटसे रोहरो तककी प्रधान सड़क इसी शहरसे हो कर गई है । लोकसंख्या प्रायः ६४६५ है । १८०३ ई०में वाटरो मस्तोख़ाँने यह शहर वसाया था । कोटसरका भग्नावशेष अब भी शहरके दक्षिणमें देखा जाता है । कहते हैं, कि एक समय वहाँ बहुत मनुष्योंका वास था । पश्चिममें शाहजरी पौर फजलनद्दी और शिख मक़ाको मसजिदें हैं ।

तन्वी महम्मदख़ाँ—वम्बईके हेदरावाट जिलेके अन्तर्गत गुनो तालुकाका सहर । यह अक्षा० २५°८' उ० और देशा० ६८°३५' पू० पर फूलेली नहरके दाहिने किनारे तथा हेदरावाट शहरसे २१ मील दक्षिणमें अवस्थित है । लोकसंख्या लग-

भय ३६२२ है। मन्त्रायंज कनकरुषि रश्मिनि व्यासक पदा  
 छोटी पादासत तथा कई एक सरकारी मन्त्रान हैं।  
 १८२३ ई०में यहाँ म्मुनिमयापिटो स्थापित हुई है।  
 दूसरे दूसरे देशोंमें जायस तथा दूसरे प्रकारके धमाक,  
 ऐशम, वात, तमाङ्ग, रम, खोनके बपड़े पौर धोपबकी  
 धामदनी तथा यज्ञनि व्यार, वाजरे, वाजक तथा  
 तमाङ्गकी रखतनी होती है। यज्ञमें तधि, लोहे तथा  
 महीके बरतम, ऐशम, कम्पस, सूना, बपड़े, जूते देगो  
 यराय तथा लकड़ोको बखी पछो बोजे प्रसुत होती  
 है। प्रवाद है कि मोर मुङ्गपद-तालपुर माङ्गलामीने इस  
 यज्ञकी बसाया था, जिनको बखू १८२२ ई०में हुई।  
 यहाँ एक धोपबान्व पौर तोन खून है।

तन्द्र (म० खो०) तन्द्र-प्रज । पञ्चिह्यन्तः, एक प्रकारका  
 छन्द ।

तन्द्रपु (म० खि०) तन्द्रां प्राप्त्य याति या-कु छयी०  
 नाहु । पानप्यबुद्ध, पाननी ।

तन्द्रबाप (ख० पु०) तन्त्रबाप छयो० नाहु । तन्त्रबाप  
 तांती । तन्त्रबाप देयी ।

तन्द्रबाब (स० पु०) तन्त्रबाप छयी० नाहु । तन्त्रबाप देयी ।

तन्द्रा (म० खो०) तन् प्राप्नोति तत् प्रा-क, वा तन्द्र पव  
 कादि तन्द्र-बज ततदाप । १ निश्रुषिय, उ चाई अ व ।  
 २ पानप्य, सुप्तो । इसका मङ्कत पदाव -प्रमीक्षा,  
 तन्द्रो, तन्द्रि तन्द्रिका पौर विपयाज्ञान है ।

इसमें मनुष्यको व्याकुलता बहुत होती, इन्द्रियोंका  
 प्रान नहीं रह जाता मुखमें बचन नहीं निकल सकता  
 तथा बार बार अँमार्ई पातो रहता है। बहो तन्द्राका  
 प्रकट लक्षण है। चरखेचहितमि इतका लक्षण इस  
 प्रकार निम्ना है। महुद, चिन्ध, मुक् पौर धन्निवन्,  
 चिन्तन, भय शोच पौर व्याञ्जमुपह (योग्यान्तु)के सिधे  
 कप नाहु प्रेरित होकर इदयको धायव करके इदय  
 निवत ज्ञानको व्याञ्जदम करतो है उसके तन्द्रा उपपन्न  
 होती है। इस तन्द्राके उपपन्न होने पर इदयमें  
 व्याकुलोमान, पाक्, पीडा पौर इन्द्रियोंको सुखता, मन  
 पौर बुद्धिको धमससता उत्पन्न होती है। निम्ना पौर  
 तन्द्रा इन दोनोमें प्रमेठ यह है कि निम्नामें जागरित  
 होनेसे ज्ञानि भावम पड़ती पौर तन्द्रांमि जागरित

होनेसे ज्ञानि भावम पड़ती है। कल्पनायक वरु पौर  
 अटुलिन मन्त्र पवना व्यापाम पौर शक्रमोघच करनेसे  
 तन्द्रा दूर होती है।

तन्द्रा सुखकी भावां, निम्ना बन्धा पौर मीति भविनी  
 है। (बन्धावधि०)

तन्द्रासु (म० खि०) तन्द्रा-प्राप्त्यः । सुधि वरीति । वा  
 ३।१।५० । पानप्यबुद्ध, पाननी ।

तन्द्रि (स० खो०) तदिसोको वातु जिन । पञ्चदशवर्ष  
 २।१६ । पञ्चनिम्ना, उँचाई, अँच ।

तन्द्रिबमत्रियात (म० पु०) एक प्रकारका सविपात  
 छन्द । इसमें उँचाई पञ्चिक पाती अर वैशिक चट्ट जाता  
 प्वाव पञ्चिक सवती बीम काको जो अर सुरचरो जो  
 जाता, दम खून जाता, दस पञ्चिक होता अलग नहीं  
 होती पौर ज्ञानमें दर्द रहता है। यह प्वर चिर्क २३  
 दिन तक रहता है।

तन्द्रिका (ख० खो०) तन्द्रिरेव काटें कन् टापू च ।  
 तन्द्रि चन्वनिम्ना, उँचाई, अँच ।

तन्द्रिज (स० पु०) बहुव शील अन्वक राजाके पुत्र ।  
 ( इति च १५ अ० )

तन्द्रित—तन्द्रित देको ।

तन्द्रिता (म० खो०) तन्द्रिनो भावः तन्द्रि-तत् टापू ।  
 निम्नासुता प्राप्त्य ।

तन्द्रिपात (म० पु०) बहुव शीय क्लमक राजाके एक  
 पुत्रका नाम ।

तन्द्री (स० खो०) तन्द्रि डीप् । १ तन्द्रा अ व । २  
 अकुटो, मोड ।

तत्र (स० पथ०) तत्-न । वड नहीं ।

तत्रा (खि० पु०) १ बुनाईमें तानिका सूत को अन्तारमें  
 ताना जाता है। २ पिधा पदार्य जिब पर चोई बीज  
 तानो जाता है ।

तत्रि (ख० खो०) तथयति भी नाहुकाम्पु डि । १ अत्र  
 कुष्ठा, पिठवन । २ काशमेरुकी चन्द्रसुता मदीका नाम ।  
 तत्रिच्यम (स० खो०) तत् निच्यम कर्मधा० । लवी  
 सिधे ।

तत्रिमिना—तदर्क उसके सिधे ।

तत्रो (खि० खो०) १ एक प्रकारकी अँसुयो । २ यथे

लोहेका मैल खुरचते है। २ एक प्रकारका रसा जो जहाजकी मस्तूनकी जडमें बंधा रहता है। इसको महा-यतासे पाल आदि चढाते है। ३ तराजूमें जोतोको रसो, जोतो। ( पु० ) ४ व्यापारो जहाजका एक अफमर जिम्मेके हाथ व्यापार सब्बन्धो कार्योंका इन्तजाम रहता है। ५ तानी देखो।

तन्मतता ( स० स्त्री० ) तस्य मतं, ६-तत्, तन्मत तल्-टाप्। उषो तरह, वीसा ह्यौ।

तन्मध्य ( स० लो० ) तस्य मध्यं, ६-तत्। उषमें।

तन्मध्यस्थ ( स० त्रि० ) तन्मध्ये तिष्ठति स्था-क। तन्मध्य-वर्त्ती, उसके मध्यका, उसमेंके।

तन्मनोहराङ्गनिरोचण ( सं० स्त्री० ) जैनशास्त्रानुसार ब्रह्म-चर्य-व्रतका एक अनिचारदोष। ब्रह्मचारी अथवा स्वदार-मन्तोष-व्रतवाले आवकको परस्त्रिणिके मनोहर अंगोंको न देखना चाहिये। यदि वह ऐसा करे तो उसे उक्त दोष लगता है। जैनधर्म देखो।

तन्मय ( स० वि० ) तदात्मकं तद्-मयद्। दत्तचित्त, तदात्मक चित्त, लवलीन, लीन, लगा हुआ।

तन्मयता ( स० स्त्री० ) लिप्यता, एकाग्रता, लीनता।

तन्मयासक्ति ( सं० स्त्री० ) भगवान्में दत्तचित्त हो जाना।

तन्मात्र ( सं० स्त्री० ) तदेव एवाद्यं मात्राच वा सा मात्रा यस्य, बहुव्री०। साख्यमतानुसार सूक्ष्म अमित्र पञ्चभूत; शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध। सत्त्व, रज और तमोगुणात्मिका प्रकृतियोंसे महत्तत्त्व उत्पन्न होता है। महत्तत्त्वका अपर पर्याय है—बुद्धितत्त्व।

उस त्रिगुणात्मक महत्तत्त्वसे त्रिगुणान्वित अहङ्कार उत्पन्न होता है। यह अहङ्कार भी तीन प्रकारका है—सात्विक अहङ्कार, राजस अहङ्कार और तामस अहङ्कार।

राजस अहङ्कारके साथ सात्विक अहङ्कारमेंसे एकका दश इन्द्रियां तथा तामस अहङ्कार और राजस अहङ्कारके संयोगसे पञ्चतन्मात्रकी उत्पत्ति होती है और अल्प सात्विक सखन्ध होनेसे उसका लिङ्ग उत्पन्न होता है। लिङ्ग अर्थात् अनुद्भूत स्वभाव वाङ्मन्यके अग्राह्य मोहादि लिङ्ग।

शब्दादि पञ्चतन्मात्र योगग्राह्य है, वे मात्राएँ जिनसे इस व्युत्पत्तिके अनुसार तन्मात्र शब्द निष्पन्न हुए हैं,

अर्थात् जो स्वयं अवयवशून्य पर समस्त पदार्थोंके अवयव हैं, उनको तन्मात्र कहते हैं। वे तन्मात्र, ५ हैं—शब्द-तन्मात्र, स्पर्श-तन्मात्र, रूपतन्मात्र, रसतन्मात्र और गन्ध-तन्मात्र।

इन पाँच तन्मात्रोंसे क्रमशः आकाश, वायु, तेज, जन और चित्ति ये पाँच महाभूत उत्पन्न होते हैं। इन आकाशादि पञ्च महाभूतोंमें उत्तरोत्तर एक एक तन्मात्र-को क्रमशः दृष्टि होती है। जो जिससे उत्पन्न होता है, वह उसके गुणोंको पाता है, इस न्यायके अनुसार शब्द-तन्मात्रसे शब्दगुण आकाश, शब्द-तन्मात्रसंयुक्त स्पर्श-तन्मात्रसे शब्द-स्पर्श-गुण वायु, शब्द-स्पर्श-तन्मात्र संयुक्त रूपतन्मात्रसे शब्द-स्पर्श रूप गुण तेज, शब्द-स्पर्श-रूप-तन्मात्र संयुक्त रसतन्मात्रसे शब्द, स्पर्श, रूप और रसगुण अप् तथा शब्द, स्पर्श, रूप और रसतन्मात्रके साथ गन्धतन्मात्रसे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध-गुण पृथिवी उत्पन्न हुआ करती है।

शब्द-स्पर्शादि पाँच तन्मात्र स्थूलताको प्राप्त हो कर यथाक्रमसे विशिष्ट भावापन्न होते हैं।

ये पञ्चतन्मात्र सुखदुःख और मोहात्मक अहङ्कारसे उत्पन्न हुए हैं, इसलिए कहना होगा कि, इन पाँच तन्मात्रके सुख-दुःख और मोह ये तीन धर्म हैं अर्थात् शब्द-तन्मात्र आदि क्रमशः सुख दुःख और मोहादि रूप धर्म-विशिष्ट होनेके कारण अनुभवयोग्य होती हैं। अतएव इस जगह समझना होगा कि जो अवशिष्ट भावापन्न पञ्चतन्मात्रका सूक्ष्मत्व हेतु है, उसका सुख दुःखादि रूप द्वारा विशेषरूपसे अनुभव नहीं किया जा सकता। जैसे—किसी सुललित शब्दको सुन कर सुख और विकृत शब्द सुन कर दुःखका अनुभव होता है, तथा यदि वह सुललित और विकृत शब्द अति सूक्ष्मभावसे होता तो, सुननेमें नहीं आता, सुतरा उसमें सुख वा दुःख कुछ भी नहीं होता। महत्, अहङ्कार और पञ्चतन्मात्र इन सात इन्द्रियां और भूतके कारणत्वके कारण दर्शनविदोंने इनकी प्रकृति कहा है। गोतामें मनको शामिल करके ८ प्रकृति कही गई है। ( गीता ७।४ )

मूल प्रकृतिमें कोई कारण नहीं है, इसलिए उसकी प्रकृति कहना दार्शनिकोंका अभिप्रेत है।

पारंगु मरुत् पञ्चद्वार पौर पञ्चतन्मात्र एव नार्तो  
को प्रकृतिवा कार्य समरुता चादि ।

प्रकृति न्य हो कारक है इतका पृथक् कोई  
कारक नहीं है । मरुत् पञ्चद्वार पौर पञ्चतन्मात्र के  
समी कार्य हैं । ( भाष्य ४० )

विद्वेन विवरण प्रकृति शब्दों से ।

तन्मात्रता ( घ० खी० ) तन्मात्रत्व भावः तन्मात्र-तत्त्व  
डाप् । तन्मात्रत्व । उगमात्र देखो ।

तन्मात्रिण ( घ० खि० ) तन्मात्र सम्बन्धीय ।

तन्वता—तन्वतु देखो ।

तन्वतु ( घ० पु० ) तनोति विस्तारवति तन-यतुच् । १  
बाहु, दबा । २ रात्रि, रात । ३ भाव-वह्नोति यत्नविधिय  
प्राचीन कालका एक प्रकारका राजा । ४ गज्रम, मर  
जना । ५ अग्नि, बच्च, विजयो । ६ पत्रम्व मरुता  
हुवा भावक ।

तन्वु ( घ० खि० ) तन-वतुच् । १ पनादेय, उपदेयका  
धमात् । ( पु० ) २ बाहु, दबा ।

तन्वि—आम्बोरबी चन्द्रकुला नदीका एक नाम ।

तन्वो ( घ० खी० ) तनु डोप् । १ हागाहो, बह छो  
जिह्वे पङ्क उग्र पौर कीमल हो । २ माहपर्वो ।  
३ शोकापको एक खीका नाम । ( त्रि० घ १२८ अ० )  
४ खन्वोविधिय, एक खन्दका नाम । इहके प्रलोके करबमें  
२४ वर्ष रहती हैं तथा १५३१२११३१३६२६५ पौर २४  
पञ्चर शुभ होता है । तथा ३६, १२वें पौर २४वें पञ्चर  
पर विराम लेना पड़ता है ।

तप ( घ० पु० ) तप-पच । १ शीघ्र, ज्यैष्ठ पौर आवाह  
माय । २ तपस्या । ३ ज्वर, दुखार ।

तप आचार ( घ० पु० ) तपका आचरण करना, उसकी  
प्रमाणका करना आदि सब तप आचारके ही में हैं ।  
उपसु देखी ।

तपःकर ( घ० खि० ) तपः करोति क ट । १ तपस्याकारी  
को तपस्या करना है । ( पु० ) २ तपस्विमन्त्र तपनी  
सहको ।

तपःकर्म ( घ० खि० ) तपसा कर्म, १-तत् । तपसे कीच ।

तपःकर्मद्वय ( घ० खि० ) तपच. छोद्य चरति सङ्घ-पच ।  
इन्द्रिय च ब्रह्मादिकारक तपकी, जो तपजावे हीनचाते  
कहको सफल कर सकता है ।

तपःप्रमाण ( घ० पु० ) तपसा प्रमाणः, ३ तत् । तपसा-  
का प्रमाण ।

तपःयोग ( घ० खि० ) तप एव योग स्वभावो यस्य,  
बहुव्री० । तपसापराबच तपसासिं लीन ।

तपःभाज ( खि० पु० ) तपसा भाजः, ३ तत् । तपस्या  
द्वारा भाजनोच, तपसासिं साधन करनी योग्य ।

तपःसिद्ध ( घ० खि० ) तपसा सिद्धः, ३ तत् । तपसा द्वारा  
सिद्ध जिनमें तपसा करके सिद्ध लाभ को है ।

तपःवना ( खि० खि० ) १ उद्वनना, बहुव्री० । २ उद्वनना  
हुँ ।

तपःवाक ( खि० पु० ) एक प्रकारका तुर्की बीजा ।

तपःको ( खि० खो० ) १ कुच छोटा टोका । २ आङ्के  
पक्षमें होनेवाला एक प्रकारका फल । पक्षमें पर पक्ष  
पोसापन सिद्धे काल इतका हो जाता है ।

तपती ( घ० खो० ) १ सूर्य की कन्धा । यह सूर्यको पक्षो  
छायाके समीप चलक हुई ही बहुत क्षयवतो थी । कुछ  
ब शीत जल-राजपुत्र स बरक सूर्यके पक्षे मारनी ।  
उन्को दृक्पुषि तुष्ट हो कर सूर्यदेवनी तपतीको ठकीके  
पाव विनाह कर दिया था । ( मारु १.१०.१०० )  
२ नदीविधिय, एक नदीका नाम । यह नदी दक्षिणात्य  
प्रदेशमें बह्नादि पर्वतसे निकल कर पश्चिममुखमें बरक  
मनुश्रुमें गिरी हैं । यह नदी कोइल देगको उत्तरीय  
सोमा है । तापी देखो ।

तपन ( घ० पु० ) तपतोति तप कर्त्तरि षष् । १ सूर्य । २  
महातप उग्र, मिश्रावैशा पिङ्ग । ३ पक्षवच मदार,  
धाव । ४ शीघ्रचाल मरुतीका मय । ५ चम्पादिमें  
राहुशुभ मरुत्वविधिय, एक प्रकारका मरुत्व जिसमें जाने  
को शरीर जल जाता है । ६ सुद्रान्धिमन्त्र उग्र, करनीका  
पिङ्ग । ७ सूर्यकालमधि सूर्यमसुखो । ८ साक्षिस्वर्धुवोत्र  
शिरीषे योगन कालमें सज्जनात पञ्चद्वारमैद नद जिवा  
का दाब भाव आदि जो नायकके विद्योगमें नायिका  
करती है । ९ चम्पिभेद, एक प्रकारकी चम्पि । ( पु० ) १०  
मिच, महादेव । ११ ताप जलन, दाह धान । १२ धूप ।  
१३ बेलगाथासुधार विपुलगम नामक कबदन्तक  
नरकुटोमिदि एक । ( शिकोपार ०१ १४८ अ० )

तपनच ( घ० पु० ) साक्षिधाव्य भेद, एक प्रकारका धान ।

तपनकर ( स० पु० ) तपनस्य करः, इ-तत् । रश्मि, सूर्य-  
को किरण ।

तपनच्छट ( स० पु० ) तपनः अतिरूचः छटो यस्य, वद्ध-  
ब्रौ० । आदित्यपत्रवृक्ष, मदारका येड ।

तपनतनय ( स० पु० ) तपनस्य तनयः, इ-तत् । सूर्यके  
पुत्र यम, कर्ण, शनि, सुयौव आदि ।

तपनतनया ( स० स्त्री० ) तपनतनय-टाप् । १ शमोष्ठ्य ।  
सूर्यको कन्या यमुना, तपतो प्रभृति ।

तपनमणि ( स० पु० ) तपनः सूर्यः तत् प्रियो मणिः ।  
सूर्यकान्तमणि ।

तपनाशु ( स० पु० ) तपनस्य अशुः, इ-तत् । रश्मि, सूर्य-  
की किरण ।

तपना ( स० स्त्री० ) क्षुद्राग्निमन्य ।

तपना ( हि० क्रि० ) १ तप्त होना, गरम होना । २ मन्त्र  
होना, कष्ट सहना, सुसोवत भूलना । ३ गरमो  
फैलाना । प्रवलता दिखलाना, रोव दिखलाना ।

तपनात्मज ( स० पु० ) १ यम, कर्ण प्रभृति । (स्त्री० )  
तपनस्य आत्मजा, इ-तत् । २ सूर्यको कन्या, गोदावरी  
नदी, यमुना तपनी प्रभृति ।

तपनी ( स० स्त्री० ) तप्यते पापमनया तप-स्युट्-डोप् ।  
१ गोदावरो नदी । २ पाठा, एक लता, पाड़ ।

तपनीय ( स० स्त्री० ) तप-अनोयर् । १ स्वर्ण, सोना । २  
कनकधूसर, धतूरा । ३ वह जो उत्तम करनेका उपयुक्त  
हो, वह जो तपनीके काविल हो ।

४ जैनशास्त्रानुसार सौधर्मादि चार स्वर्गोंके अदतीस  
इंद्रकविमानोंमेंसे एक । (त्रिलोकसार ४६५ गाथा)

४ ( पु० ) ५ शालिधान्य भेद ।

तपनीयक ( स० स्त्री० ) तपनीय स्वार्थे कन् । सुवर्ण,  
सोना ।

तपनेष्ट ( स० स्त्री० ) तपनस्य सूर्यस्य इष्टं, इ-तत् । ताम्र,  
ताँवा ।

तपनेष्टा ( स० स्त्री० ) शमोष्ठी, एक प्रकारका शमोष्ठ्य ।

तपनोपल ( स० पु० ) तपन क्षति नाम्ना ख्यातः य उपलः ।  
सूर्यकान्तमणि ।

तपन्तक ( स० पु० ) महाराज उदयनके विदूषक वसन्त-  
का पुत्र, नरवाहनदत्तका वन्धु ।

तपभूमि ( हि० स्त्री० ) तपोभूमि देखो ।

तपराशि ( हि० पु० ) तपोराशि देखो ।

तपलोक ( स० पु० ) तपोलोक देखो ।

तपवाना ( हि० क्रि० ) १ गरम करवाना, किसी दूमरेको  
तपानेके काममें प्रवृत्त करना । २ अनावश्यक व्यय  
करना, विना प्रयोजनका खर्च कराना ।

तपविनय ( स० पु० ) तपस्वी पुरुषोंको विनय करना ।

तपवृद्ध ( हि० त्रि० ) तपोवृद्ध देखो ।

तपव्यरण ( स० स्त्री० ) तपसः चरणं । तपव्यर्था, तपस्या ।

तपव्यर्था ( स० स्त्री० ) तपसः चर्या, इ-तत् । व्रतचर्या,  
तप, तपस्या ।

तपस् ( स० स्त्री० ) तप अस्तु । १ वह जिसके द्वारा मन  
निर्मल हो, शरीरको कष्ट देनेवाले वे व्रत और नियम  
जो चित्तको शुद्ध और विषयोंसे निवृत्त करनेके लिये  
किये जाँय, तपस्या । २ आलोचनात्मक ईश्वरज्ञान-  
विशेष । ३ क्षुत्पिपासा, क्षुवा और दृष्ट्या, भूख, प्यास ।  
४ मोनादि व्रत । ५ शरीर वा इन्द्रियको वशमें रखनेका  
धर्म । ६ शास्त्रानुसार शरीर, इन्द्रिय और मनका शोधन ।  
७ कष्टसे किये जानेवाला चान्द्रायण प्राजापत्यादि प्राय-  
श्चित्त । ८ शास्त्रविहित तपशिलारोहणादि । ९ वान-  
प्रस्थावलम्बीका असाधारण धर्म ।

तपके तीन भेद हैं—शारीरिक, वाचिक और  
मानसिक ।

देवताओंका पूजन, वडोंका आदर सत्कार, ब्रह्मचर्य,  
अहिंसा आदि शारीरिक तपके अन्तर्गत हैं ।

सत्य और प्रिय बोलना, वेदशास्त्र पढ़ना आदि  
वाचिक तप हैं ।

मौनावलम्बन, आत्मनिग्रह आदि मानसिक तप हैं ।

ये तप फिर तीन प्रकारके हैं—सात्विक, राजसिक  
और तामसिक ।

जो फलको आकाङ्क्षासे परिशून्य हो कर परम अज्ञानसे  
उक्त तीनों प्रकारकी तपस्याका अनुष्ठान करता है, वही  
सात्विक तप है । जो मनुष्य-समाजमें सत्कार, सम्मान  
और पूजादि लाभके लिये उक्त तीनों प्रकारकी तपस्याका  
अनुष्ठान करते हैं, उसी पारलौकिकतपस्य तपस्याको  
राजस तप कहते हैं और अत्यन्त दुराग्रहद्वारा अज्ञानसे

व्यादने विधे चामात्रो यदित योहा यदुवा कर ओ तपस्या को जानी है उमे तामम तप कहते हैं। (गीता) पातञ्जल-संग्रहमें तपस्याको क्रियायोग बतला कर वर्णित है।

शास्त्रान्तरीर्वदित चान्द्रायण प्रथति तपस्यामि विनाओ गृहि होतो धोर मनवी एकःपता उत्पन्न होतो है।

तपस्यामे मनुष्य धर्मोत्त फल पाते है। तपस्यामे वाप सोच होता है धोर मनुष्य वर्गको जति धोर यहा यम पाते है। इस भोजनमें धोर परभोजनमें मनुष्योंका ओ कुछ धर्मिकपिन रहता है, यह एक तपस्याम हो प्राग होता है।

इस अगतुर्म तपसिह मनुष्यमि कुछ मो घमाय नहो है। मनुके भक्तानुवार ब्राह्मणोंका एकमात्र च न ही तप है। ब्रह्मर्षीको केवल यही काम करना चाहिये जिसमे ज्ञान सगर्भम हो। रचा करनी ही चरित्रोंका तप है। चरित्रोंको चरित्र है कि वे ब्राह्मण, दिग्ध धोर शूद्र इन तीन वर्गको विधेय रखते रचा जरे। रचा हो जनको एकमात्र तप्या है। मैयाकी धारणा को। ज्ञपि चानिग्य प्रवृत्ति। एकमात्र तप्या है। शूद्रमि विधे पदमे तीन वर्गको सेवा हो तप है।

'नापनरद तपोऽथ तप उच्यते एवम् ।  
'मेवमेव तु तपो वाप्य तप धारयत उच्यते ॥'

(मनु १११५)

मन्वपुगर्भे तपस्या, ज्ञेतामि ज्ञान हापरमें यद्य प्रधानतः कनिष्ठुर्म दान हो प्रधान है। (मनु १११६)

ब्राह्मणोंके विधिपूर्वक विदाभ्यसन ही तपस्या है। (मनु १११६) तपःसिह ब्राह्मण तपस्या द्वारा जिमुवन का धयभोजन कर मचते हैं। १ माघमास माघका महीना। ११ नियम। १२ धर्म। १३ ज्योतिषोक्त मन्व ध्यानमे लक्ष्म म्यान ज्योतिषमें मन्वमे लक्षा व्यान। १४ तपोभोज। यह भोज उन्नमोन्नमि जपर धोर चयनत मीलोप है।

जो बानुदेवमें चामन मन्वियरायक है धोर जो चयन ममयन कर्मे परम गुण श्रीहृत्तमें पर्यन करति ओ तप धर्मे शोहृत्तका मनुत्त रपने धोर त्रिनही लक्ष्मि कथा परिपन्न हो गई है, वे ही इसधर्ममें माध करति

है धोर जो विष्णुभ्य वृत्ति द्वारा चपनो भोविष्ठा निर्वाह करने, जो धोषजावर्मे चामन जतोर पद्यमिनाय तप्या करने धोर जो यषोऽवर्मे खण्डिनगायो, किमल धोर शिशिर ज्ञानमें जन्ममें परम्यान कर तप्या करते हैं वे ही इस भोजके परिहारो है।

ओ पातुर्मन्व सत प्रथतिह चामन जतोर नियम पावन करने धोर ईश्वरमें सदा मौन रहति, वे ही निर्धमै इस भोजमें नाम करति हैं। (श्रमणु। १) ४ चमि, पाग।

तपस (स० पु०) तप चतत्। १ सूर्यं। २ चन्द्रमा। ३ पयो।

तपमा (हि० श्लो०) १ तपमा, तप। २ तापतो मदीका दूना नाम। उह हैतुनके पडाइमे निचन कर प्रथान को ग्राहोमें गिरतो है।

तपामो (हि० पु०) तप्यो।

तपयो (हि० पु०) तपमा करनेवाला, तप्यो।

तपया मन्वा (हि० श्लो०) 'ब्रह्मणो च्याकुमि मिनने वामो एव प्रचारवी महनी। इसको मन्वाई लगमय एक बानिष्ठाको होतो है। चधि देमिने विधे यह भौगल या जेठ मानमें मदिर्दिमें चमी जानी है।

तपमोराम - हिन्दोके एक कवि। ये ज्ञातिधे ज्ञापय्ये धि। मारन त्रिनेत्रे सुवारजपुर चाममे रनका कर था।

तपमोमृति (स० पु०) बारहवें मन्वन्तरेके चोपे मानर्षिके मन्वर्षिदोमिने एक। (हरिश्च० ५००)

तपमत्त (स० पु०) तप तप्या तपति तनु शरोति तप-पच। १५५।

तपयति (स० पु०) तपयां पति ३ तत्। चदि विणु।

तपय (स० पु०) तपमि बाहु यत्। १ चाम्पुन मान, चामुनका महीना। २ चक्रुं, चर्जुनका एक नाम चामुन या दमोनिवे तपना मो चर्जुनका नाम दूया है। (को०) ३ कुम्पुत्। ४ तपयक, तपना। ५ तापम मनुके दग सुवर्षिने एक (हरिश्च० ११०)

तप्या (स० श्लो०) तपयति तपम-श्रद्ध। बर्षन गोमन्व तपोऽथ वनिकरो। वा ३११५५। तता च तना टापु। १ ज्ञन चयो तप। इसके मन्वम पयाव - जनादान परिचया नियममिर्गत धोर ज्ञनपया। पत्तरेका, २ चाम्पुन मान चामुनका महीना।

तपस्यामर्त्य (सं० पु०-स्त्री०) मत्स्यभेद, तपसो मच्छलो ।

इसके पर्याय—तपःकर, चेटक और चेट ।

तपस्वत् ( सं० वि० ) तपस् मनुष्य मस्य व । तपस्वी ।

तपस्विता ( सं० स्त्री० ) तपस्विनी भावः तपस्विन्-तन-टाप् तपस्विन् तपस्वी होनेकी अवस्था ।

तपस्विन् ( सं० वि० ) तपो विद्यतेऽस्य तपस्-विनि ।

तपःसहस्राभ्यां विनीनी । पा ५।२। १०२ । १ तपोयुक्त, तपस्या करनेवाला । इसके पर्याय तापस, पारिकाङ्क्षो, पारिकाङ्क्षी और तपोधन है ।

स्वाध्यायरूप तप, समयरूप तप तथा मनके साथ इन्द्रियों का एकाग्रतारूप तप, इन तीन प्रकारके तपस्याविशिष्ट-की तपस्वी कहते हैं । विधिपूर्वक वेटादि अध्ययनके समय यथाशास्त्र नियमादि पालन और मनके साथ इन्द्रियोंको एकाग्रता अर्थात् स्थिरत्व सम्पादन नहीं करनेसे तपस्वी नहीं कहना सकता है ।

जिनके धर्मत्व, नियमित्व और वैदिकत्व ये तीन गुण विद्यमान हैं, वे ही प्रकृत तपस्वी हैं । जिन्होंने संसार-आयस परित्याग कर अरण्य वास किया है और वहाँ तन-मनसे देवताको आराधना करते हैं, वे भी तपस्वी कहलाते हैं ।

इस संसारमें मनुष्य दुर्निवार इन्द्रियसुखमें आसक्त हो कर कभी न कभी अवसन्न हो जाते हैं । बुद्धिमान् मनुष्य जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि और मानसिक क्लेशमें संसारको असार ममभक्त कर तपस्याके लिये यत्नशोल ही जाते तथा वे कायमनोवाक्यसे पवित्र, अहङ्कारपरिशून्य और संसारमें निर्लिप्त हो कर भिचावृत्ति अवलम्बन करके तपस्याका अनुष्ठान किया करते हैं ।

प्राणियोंके प्रति दया करनेमें उनमें अनुराग उत्पन्न हो सकता है, इसलिये प्राणियों पर उपेक्षा दर्शाना तपस्वियोंको उचित है । शुभकर्मका अनुष्ठान करके यदि उन्हें दुःख भोग करना पड़े तो वे विरत नहीं होते । तपस्वी अहिंसा, सत्यवाक्य, भूतानुकम्पा, क्षमा और सावधानता अवलम्बन किया करते हैं ।

वे अवहितचित्तसे समस्त प्राणियोंके प्रति समान दृष्टिसे देखते हैं । दूसरेकी अनिष्टचिन्ता, असम्भव सृष्टि और भविष्य या भूत विषयके अनुष्ठानसे सर्वदा विरत

रहते हैं । वे कठिन यत्नसे तपस्याके फल ज्ञानार्जनमें प्रविष्ट होते हैं । उनके वेदवाक्यानुशोलनके प्रभावसे ज्ञान प्रवर्धित होते रहते हैं । वे अविचलितचित्तसे हिंसा, अपवाद, शठता, परुषता, क्रूरतापरिशून्य और परिमित सत्यवाक्य प्रयोग किया करते हैं । तपस्वी संसारके भयसे भोत हो कर राजसिक और तामसिक कार्य परित्याग करके संसारको यन्त्रणा अर्थात् जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधिके फंटेमें विमुक्त होते हैं । वे द्योतस्पृह, परिग्रहपरिशून्य, निर्जनविहारो, अत्याहारनिरत और जितेन्द्रिय होते हैं । जो तपस्याके प्रभावसे समस्त क्लेशको निवारण कर योगानुष्ठानमें एकान्त अनुराग दिखलाते हैं, वे निश्चय ही अपने वशीकृत चित्तके प्रभावसे परम गति पानमें समर्थ होते हैं । बुद्धिमान् मनुष्य पहले बुद्धिदृष्टिको निगृह्य कर पीछे उभो धोशक्तिके प्रभावसे मनको तथा मनःप्रभावमें शब्दादि इन्द्रियविषय समूहको निगृह्य कर लेते हैं । जितेन्द्रिय हो कर चित्तको वशीभूत करनेसे सब इन्द्रियां प्रमत्त हो बुद्धितत्त्वमें लीन हो जाते हैं । इन्द्रियोंके साथ मनको एकता सम्पादित होनेसे ही तपस्याका फल ब्रह्मज्ञान उत्पन्न होता तथा उसी समय मनमें ब्रह्मभाव आ जाता है ।

तपस्वोपण विशुद्धचित्त अवलम्बन कर तण्डुलकणा, सुपकमाप, शाक, उष्णजल, पक्षयवचूर्ण, शङ्खु और फलमूल प्रभृति भिचालभक्ष्य भक्षण करके जीवनधारण करते हैं ।

तपस्याका कार्य आरम्भ होनेसे उन्हें व्याघात करना कर्तव्य नहीं है । अग्निको नार्हं क्रमशः उनको उक्त-जना करना ही विधेय है । ऐसा होनेसे धीरे धीरे सूर्यको नार्हं तपस्याका फल ब्रह्मज्ञान प्रकाशित हुआ करता है । ज्ञानानुगत अज्ञान, जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओंमें ही मनुष्यको अभिभूत करता और बुद्धिदृष्टिके अनुगत ज्ञान और अज्ञान द्वारा उपहत (अष्ट) हुआ करता है । मनुष्य जब तक अवस्थात्रयातोत परमात्माको उन तीन अवस्थायुक्त कह कर समझते हैं, तब तक उन्हें कुछ भी समझमें नहीं आ सकता । फिर जब तपस्याके प्रभावसे पृथक्त्व और अपृथक्त्वका विषय समझमें आ जाता है, तब उनकी सृष्टा सदाके लिये दूर

को जाता है तथा उस समय तपस्वी तपस्या में प्रभावसे  
 बरा पीर सह्युको पात्रय का परमद्वय है अधिकारी  
 होती है। विशेष विवरण बोधित्वात्पत्ते देवो। २ बहुब्रह्म्या  
 में योग्य दया करनी योग्य। १ दोन, दुःखिना। ४ तपस्या  
 मन्त्र तपसी मन्त्री। ३ हृतनरस्युत्त, जो दुष्टार।  
 ६ नारद। ७ शौच मन्त्रस्वरूपे ब्रह्मपात्रय स्वयिवा नाम।  
 तपस्वीने देवो। ८ भागवतके अनुसार मन्त्रस्वरूपे  
 धर्मात्। तपोभूते देवो। ९ ब्रह्म, प्रस। १० दमनकहृत्त  
 दोनिका पिङ्ग।

तपस्विनी (स० स्त्री०) तपस्विन् स्त्रियां ङोप। १ तपो  
 युक्ता तपस्या करनीवाली स्त्री। २ बटामांसी। ३ कट,  
 रोहिणी कुटवी। ४ महावाक्चिका, बड़ो घोरक  
 लुच्छो। ५ दीना, दुःखिता, दोन पीर दुःखिया स्त्री। ६  
 पतिव्रता मतो स्त्री। ७ बह स्त्री जो अपने पतिको स्युत्त  
 पर शिवक अपनी मन्त्रानुषे पावन करनेके लिये मतो न  
 को पीर सह्युत्त अपना बीबन बितावे। ८ तपस्वीनी  
 स्त्री। ९ सुशीरी, मोरसुन्नी। १ त्रिजिनी, त्रिगिनीका  
 पिङ्ग।

तपस्विपत्र (स० पु०) तपस्विमिय पत्र यद्य, बहुत्री०।  
 दमनकहृत्त दोनिका पिङ्ग।

तपा (स० पु०) १ पौष ऋतु। २ माघ मास।  
 तपाक (का० पु०) १ धर्मिक, शोभ। २ शिग, शोभो।  
 तपागन्ध (स० पु०) अतिध्वर जैन साधुओंका एक  
 स्रव। शिखरगण देवो।

तपाव्य (स० पु०) तपमा दीधमा चक्रयो वत्र बहु-  
 शो०। १ बर्षान्त, बरनात। तपव्य पत्न्यव, ६ तप  
 बोधावमान, बरमी ऋतुको समाहित।

तपान्न (स० पु०) तपसे कल्पक व्रत।  
 तपाना (हि० स्त्री०) १ तप करना, गरम करना। २  
 युक्त देना, शोध देना।

तपान्त (स० पु०) तपय चको यत् बहुव्री०। १ शोध  
 कात्। तपय चक्र, ६-तप। २ शोधकाल, गरम  
 ऋतुका यत्।

तपाव (हि० पु०) ताप गरमावृत्।  
 तपावन्त (हि० पु०) तपस्वो, तपमी।  
 तपित (स० स्त्री०) तप-दाई है। तप, कल्प गरम।

तपित (स० पु०) १ नयापानुष्टार वासुकाप्रमा नामक  
 तोहरी नरकमूर्तिमें नारदिकोंके रहनेके जो बिलकाल  
 है कर्ममें ८ इन्द्रकल्पि कहे जाते हैं। तपित दूरी  
 इन्द्रकल्पिका नाम है।

तपिया (हि० पु०) मन्त्रभारत, बहाक तथा धामाममें  
 बोनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। इसके लिये शेर पत्ते  
 दनाके धाममें पाते हैं। इसका दूधका नाम बिरमो है।

तपिय (का० स्त्री०) तपन गरमी शौच।

तपिष्ठ (स० स्त्री०) अतिशयेन तथा तप्युत्त वृत्तको  
 शोष। १ शब्दन्त तापक अधिक गरम। २ अत्यन्त उष्ण,  
 अधिक तथा बुधा।

तपिष्ठ (स० स्त्री०) तप-दण्ड है। तपकारो, जलन देने  
 वाळा।

तपी (हि० पु०) १ तापन, तपने, कपि। २ पूर्व।

तपोवम् (स० स्त्री०) अतिशयेन तथा तप ईयद्युत्त वृत्त-  
 कोष्ण। १ शब्दन्त तापकारो, अधिक गरमी देनेवाळा। २  
 शब्दन्त तपकारक, कठिन तप करनीवाळा।

तपु (स० स्त्री०) तप-इन्। १ तापक, ताप कल्पक करनी  
 वाळा। २ तापकृष्ण, जिसमें अधिक गरमी हो। ३ तप,  
 कल्प, गरम। (पु०) ४ धर्मि, धार। ५ रवि, सूर्य। ६  
 शत्रु, दुष्टमन।

तपुर्ष (स० स्त्री०) अथमान कल्पतापुष्प, जिसका अथमा  
 मान बहुत गरम हो।

तपुर्ष (स० पु०) धर्मि, धार।

तपुर्षिन् (स० पु०) जिसका मन्त्रक उत्तर हो, धर्मि।

तपुवच (स० स्त्री०) उत्तम चक्रकृष्ण गरम कपियार।

तपुवि (स० स्त्री०) तप कर्मिन् शिवे नशारह-इत्। तापक  
 गरम करनीवाळा।

तपुवी (स० स्त्री०) तपुवि स्त्रियां ङोप। शौच, गुण्या।

तपुष्पा (स० स्त्री०) ज्वालाने रेखा धामसे बचाता।

तपुम् (स० पु०) तपनि तापकलिना तप कर्मि। कर्मिन्  
 पीठि। वत् १११८। १ रवि, सूर्य। २ धर्मि, धार। ३  
 तापकृष्ण, यह जिसमें अधिक गरमी हो। ४ तपन, कर्म,  
 शौच। (स्त्री०) ५ तपनयोग्य तपनीवाळा।

तप्येक (स० स्त्री०) तपस तपस्यात धर्म्येर्वा कपयते जन  
 क। १ तपस्याजात, जो तपस्यासे उत्पन्न हुआ हो। २  
 धर्मिजात, जो धर्मसे उत्पन्न हुआ हो।



तपोजा ( सं० स्त्री० ) तपोज टाप् । जन, पानो । तपस्या को अग्निसे चप (जन) उत्पन्न होता है । तपने चग्निमें धूम, धूमसे चम्र (मेघ) और मेघसे वृष्टि होती है । इसीप्रकारे वृष्टि तपस्यामें उत्पन्न होनेके कारण इसका नाम तपोजा लया है ।

तपोडी ( हिं० स्त्री० ) काठका एक वस्तु ।

तपोट ( सं० पु० ) मगधका एक तोर ।

तपोदान ( सं० स्त्री० ) तप इव दान यस्य, प्रशस्ती० । तोर भेट, पुण्य-तोर्षामें तपोदान एक प्रधान तीर्थ माना गया है । ( भारत १३।२२-३० ) तीर्थ संगो ।

तपोधन ( सं० वि० ) तपोधन यस्य, प्रशस्ती० । १ तपोरत्न, तपस्वी । तपोधन मन चाकर और काय दाम जो कुछ पाप करते, वे तपस्यामें नाश हो जाते हैं । ( स्त्री० )— तप एव धनं, कर्मधा० । २ तपोरूप धन तपस्या ही जिसका एक मात्र धन हो । तपः धनं मूर्ध्नि यस्य । ३ तपस्या द्वारा पाने योग्य मर्गादि । ४ दमनकहण, टोने का पीडा ।

तपोधन—गुजराती ब्राह्मणोंकी जातिका एक भेद । नामा नदीके तीरवर्ती देशोंमें वे अधिष्ठ मंत्र्यामें पाने जाते हैं । प्राचीन कालमें इस वर्गके लोग बड़े तपस्वी थे, यही तप कि तपस्याकी ही अपना सर्वत्र समझने के और लौकिक धनको इच्छा न रख करके तपस्वी धनको एकत्रित करनेवाले थे । इसी कारण इके तपोधनकी उपाधि मिली थी । आज कल ये नाम मात्रके तपोधन रह गये हैं ।

तपोधना ( सं० स्त्री० ) तपोधन-टाप् । मुण्डीरोष्ठ, गोरखमुण्डी ।

तपोधर्म ( सं० पु० ) तपः एव धर्मो यस्य, बहुवो० । १ तपस्या ही जिसका धर्म है, तपस्वी । तपमी धर्मः, इ-तत् । २ तपस्याका धर्म । ३ शोषकालका धर्म ।

तपोष्ट ( सं० पु० ) तपसि धूमः सन्तोषो यस्य, बहुवो० । १ तपोरत्न, तपस्वी । २ मर्षि भेट, वारहसे मन्वन्तर चौथे सावर्णिके मर्षि धर्मसे एक ऋषि ।

तपोनिधि ( सं० पु० ) तप एव निधिः धनं यस्य, बहुवो० । तपोनिष्ठ, तपस्वी ।

तपोनिष्ठ ( सं० पु० ) तपसि निष्ठा यस्य, बहुवो० । तपोरत्न, तपस्वी ।

तपोभूमि ( सं० स्त्री० ) तप इतिजा ल्यात्, तपोरत्न । तपोभूमि ( सं० स्त्री० ) तपो विभक्तिं तप मूर्च्छिष्, मुष्, इ । तपोवारक, वी तपसा धारण करने है ।

तपोमव ( सं० पु० ) तप प्रपूरः तपः सटनपशादीनां धर्मं तदागधी या तपसु मयट् । १ तपः प्रपूर, यद्विष्ट तपस्या । २ परमेश्वर ।

तपोमया ( सं० स्त्री० ) तपोमय-टाप् । तपसा तपसा, मन्त्रिमते यद्विष्ट तपसा की ली ।

तपोमूर्ति ( सं० स्त्री० ) तप, या मन्त्रमयं तप मूर्ति, यद्विष्ट या तप प्रपाना मूर्ति, यद्विष्ट तपसा । १ प्रमेश्वर । २ तपस्या । ३ मन्त्रिमते, तपसा मन्त्रमयं तपो सायनिके मर्षियधर्मसे एक ऋषि । ( भार १३।२२-३० ) तपसे मूर्ति देवो ।

तपोमून ( सं० पु० ) तपो मूनं यस्य, प्रशस्ती० । तपसायें निके त्वर्गादि । २ तामस मनुके एक पुत्रका नाम । तपसा इतो ।

तपोयुक्त ( सं० वि० ) तपसा युक्त, इ तत् । तपस्या द्वारा युक्त, तपस्यामें भरतृ ।

तपोरति ( सं० वि० ) तपसि रति र्गन्ध, बहुधा० । तपसा पराधन, या तपसायें मोन का । पु०— १ तामस मनुके एक पुत्रका नाम । तपसा देवो ।

तपोरवि ( सं० पु० ) तपसा रविर्गन्ध । १ यए जो सूर्य इ महान् तेजयुक्त हो । २ तपसायें सत्यकारक चौथे सावर्णिके समयमें सायनियधर्मसे एक ऋषि का नाम ।

तपोरगि ( सं० पु० ) मष्टामुनि, प्रहृत वए तपस्वी ।

तपोनीक ( सं० पु० ) तपोनाम लोकाः, मध्यपटनी० धर्म धा । ऊर्ध्व स्थित लोकायिगेय, ऊपरसे मात लोकां मेंसे उठा लोका । यह लोक जसनेकसे चार करोड़ योजन ऊपरमें अवस्थित है ।

“बहुःकोटिप्रधानं तु तपो लोको गि भूतकृतम् । ( शशीयन २५३० )

भू प्रकृति मात लोक ब्रह्मामे उत्पन्न हुए हैं । ब्रह्माके दोनी पोरसे भूलोक, नाभिमसे भुवर्लोक, हृदयमें स्वर्लोक, वज्रःस्थलमें महर्लोक, गलेमें जनलोक, दोनी स्तनसे तपो लोक और मस्तकसे सत्यलोक उत्पन्न हुआ है । ( भाव-पत्र १।१।२२-२९ ) विशेष विवरण सप्तलोकमें देखो ।

तपोवट ( सं० पु० ) तपमी वट-इव । ब्रह्मावर्त्त देव ।

तीपोवन ( स० श्लो० ) तपोवनं वर्णं, १-तत् । १ तपोवन-सिद्ध  
वर्णविविध सुनिर्गोत्रा पाच्यवस्तान्, यत्र एकान्तं क्षान्  
जर्षां सुनिर्गोत्रं कुटो बना कर तपोवना करती हैं । २ इसी  
नामका एक तीर्थ इत्यादिनामकित यह वर्ण । यहाँ गोप  
कथा कात्यायनो-पत करती हैं । इसकी पासही शीरवाट  
है । (वचनमन्त्र) पर्यायन हैनी ।

तपोवन ( स० श्लो० ) तपोवनं वर्णं, १-तत् । तपोवनाका वर्ण,  
तपोवनाका प्रमाण ।

तपोवृद्ध ( स० श्लो० ) तपोवना वृद्ध, १-तत् । तपोवर्षाह जो  
तपोवना द्वारा चोह की ।

तपोवृद्धयत्न ( स० पु० ) १ सत्त्वविधि, तपोसोमृतिंका  
एक नाम । २ तामस मनुष्ये एक पुत्रका नाम ।

उपस्य देखी ।

तपोनी ( श्लो० श्लो० ) १ उर्वीको एक रम्य । यत्र शी  
सुमाधिर्वीको बृहदार कर सनका शाक कर की जाती हैं  
तत्र ब्रह्म रम्य को आतो है । इसमें शी मिस कर पियोकी  
पूजा करती शीर लक्ष्मी युद्ध चढ़ा कर शरीका प्रसाद  
पापमर्गें बाटते हैं ।

तप ( स० श्लो० ) तपो-क । १ दृष्य, तपो वृथा, कर्मता  
वृथा । २ तपोयुक्त, जिसमें अधिक मरमी को । ३  
दुःखित पीड़ित ।

तपश्च ( स० श्लो० ) १ शीर्य शीदो । २ अर्धमात्रिक ।

तपश्चाचन ( स० श्लो० ) तप यत् चाचन, कर्मधा० ।  
अग्निश योयसि विमल चाचन पागति साय किया हुआ  
मोम ।

तप्तकुण्ड ( स० पु० ) प्राकृतिक लक्ष्य लक्ष्यवाप, गरम  
पानोका मोता । पहाड़ी या मैदानमें कहीं कहीं गरम  
पानोके सोपे मिलती हैं । इसका कारण यह है कि या ती  
पानी बहुत अधिक गरम होने वा धूमनेके मात्रकों अग्नि  
क्षी तप्त चरानी परये होता हुआ आता है । ऐसे जलमें  
अग्निज पदार्थ मिली रहनेके कारण इसमें क्षान् करनेसे  
प्रायः रोग आता रहता है । ऐसे गरम जलमें सोपे यूरोप  
शौर अमेरिकामें बहुत पाये जाते हैं । दूर दूरसे मनुष्य  
लक्ष्मी देखने तथा सनका जल पीनेके लिए वहाँ आते हैं  
शौर बहुतसे मनुष्य शीरसे कुटकारा पानिके लिये शरीरों  
लक्ष्मी किनारे रह जाते हैं । जल जितना जो गरम होता  
वसमें जलता को मुख अधिक होता है ।

तप्तकुण्ड ( स० पु० ) तप्त कुण्डो यत्न, बहुधा० । गरम-  
जल एक मयानक गरमका नाम । इसकी पानी शीर  
वस्य कड़ाही हैं जिसमें लोहेका चुर्च शीर तिल सदा  
शोभता रहता है । कहीं कड़ाहीमें पुराचारियोंको  
मर्यादा लोहेको शीर करके यमसे दूत कि क दिवा करती  
शीर मिस लक्ष्मी मिस, अग्नि इत्यादि लक्षाङ्क लक्षाङ्क लक्ष्मी  
काक सुते हैं । जब लक्ष्मी जलका प्रत्येक भङ्ग बस आता  
है तो यमसे दूत लक्ष्मी या यमसे ही बाँटती हैं ।

इस तरह पावर्त हुए मर्यादाके दुष्कर्मकारी मनुष्य  
लक्ष्मीके शीर हुए अग्नि प्रचारकी यमका पाती हैं ।  
( मार्गशेष्याय ) बरक देखी ।

तप्तकण्डा ( स० पु०-श्लो० ) तप्तमे जलकुण्डादिना पाच-  
रितं कण्डा यत्न वा तप्तमे पाचरितं । द्वादशमाहाय  
वतविधिय, बारह दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक प्रकारका  
व्रत । इस व्रतमें व्रत करनेवालेको पक्षी तीन दिन तक  
प्रति दिन तीन दिन एक लक्ष्य दूक, तत्र तीन दिन तक प्रति  
दिन एक पक्ष की, बाद तीन दिन तक निम्न १ एक लक्ष्य  
जल शीर जलमें तीन दिन तक तत्र बाहु शीरन करना  
पड़ता है । दूध भरय लिये जल पर जो लक्ष्यवाच्य मिस  
मता है वही तप्तवाहु मानो गई है ।

यह व्रत करनेके विधीके सब प्रकारके पाप मष्ट को  
जाती हैं । प्रायश्चित्तविधिके मते यह व्रत बार दिनोंमें  
मो किया जा सकता है । पक्षी तीन दिन यथाक्रमसे  
दूक, शीर शीर जल शीरन करना आदि शीर शीर दिन  
उपवास करना आदि है । इसको चतुरदशवार तप्तकण्ड  
जाती हैं । प्रायश्चित्त देखी ।

तप्तकण्ड ( स० पु० ) शीर्य कुटनीका गरम किया हुआ  
जल ।

तप्तकण्ड ( स० श्लो० ) तप्त जल यथाऽन बहुधा० । जेन-  
याश्चातुषार मोतानयोश्च दक्षिण तट पर दोकाय्य बंधो  
शे धर्म लक्ष नामकी एक विमल नदी है । इसका जल  
गरम है इसीलिये यह नाम पड़ा है ।

तप्तपापाचकुण्ड ( स० पु० ) तप्तार्ण पापाचार्यां कुण्डमिव ।  
नरकविधिय एक गरमका नाम ।

तप्तवाहुक ( स० पु० ) तप्त वाहुका यत्न, बहुधा० । १ गरम  
विधिय एक गरमका नाम । गरक देखी । ( श्लो० ) २  
लक्ष्य वाहुकाय, गरम किया हुआ जल ।

तप्तमाप ( स० पु० ) तप्तं मापमितं सुवर्णादिकं यत्र, वृद्धी० । परीक्षाविशेष, पाचन कालको एक प्रकारकी परीक्षा । यह परीक्षा किसी मनुष्यकी उपराधी या निरापराधी साबित करनेके लिये की जाती थी । इसमें लोहे या ताँबेके बरतनमें वीण पल तेल और घी डाल कर उसे अग्निद्वारा उत्पन्न करते थे । वाट उभमें एक मापा सोना छोड़ कर अपराधीकी उसे बाहर निकालनेके लिये कहा जाता था । यदि उभकी अंगुलीमें छाले आदि न पड़ते तो वह सच्चा समझा जाता था । ( श्रद्धाति )

इमका दूसरा विधान भी इस तरह है—

सोने चांदे, ताँबे, लोहे और सटोके बरतनकी भली भाँति परिष्कार कर अग्नि पर रख छोड़ते थे वाट उनमें गायका घी या तेल डालते थे । इसके बाद विचारक धर्मका आवाहन और पूजादि करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अग्निको शुद्ध करते थे ।

“ओं परं पवित्रंममृतं घृतत्वं यद्भक्षंमसु ।

दह पावक पापं त्वं हिमशीतशुभा भव ॥”

वाट जिस मनुष्यकी परीक्षा करना होती उसे उपवास करना पड़ता और तब स्नान कर प्राङ्मुखयुक्त हो प्रतिज्ञापत्र मस्तक पर रख कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना पड़ता था—

‘ओं त्वमग्ने धर्मभूतानामन्वयति पावक ।

सक्षिप्तव पुण्यपापेभ्यो ब्रूहि धले करे मम ॥”

यह मन्त्र पढ़ कर उभ खोलते हुएसे तप्तमाप निकालने पर यदि परीक्षार्थीको अंगुलीमें छाले आदि न पड़ते तो वह सच्चा समझा जाता था । (दिव्यतत्व) दिग्ग देगो । तप्तमुद्रा (स० स्त्री०) तप्ता अग्निसन्तप्ता मुद्रा, कर्मधा० । शरीर पर धारणोपयोगी अग्निमन्त्र भगवान्का आयुधादि चिह्न, हारकाके शंखचक्रादिके रूपे । वैश्व लीग इसे तपा कर अपना भुजा तथा दूसरे अङ्गों पर दाग लेते हैं । यह धार्मिक चिह्न होता है और वैश्व लीग इसे सुक्तिदायक मानते हैं । मुद्रा देखो ।

तप्तमहस् ( स० स्त्री० ) तप्तं महः, कर्मधा० अचू समासान्त । १ वक्रि, आग । २ तप्तवत् निर्जनस्थान, वह एवात्त स्थान जहाँ पर कोई दूसरा मनुष्य जा नहीं सकता ।

तप्तराजतेन (स० स्त्री०) पायुर्वेदीक तेनविशेष, एक तप्तका टवाइका तेन ।

प्रसृत-प्रणाली—नरसीका तेन ४ सेर, सटार महिजन, धतूरा, वामक, मरुत्, दगमूल भरञ्ज, वनाप्रत्येकका रम ५४ सेर कल्कार्य पोपल, वना, सोठ पोपलमूल, चातेकी जड़, कटफल, धतूरेकी बीज, चय्य, जोरा, सोया, पुनर्णवा, हलदः, देवदारु इंगल, इला, शुक्मूला, कुड़, दुरालभा, कालाजोरा मित्रकः गाँट, सटार का गाँट, जयपालमूल, नागटीला, विटंग, मेथ्य, खवार, रक्तचन्दन, महिजनको जड़, उत्पल, मिच, जेठी मधु, राम्ना, काकड़ासींगो, कण्टकारी और उरुणका छाल, प्रत्येकका दो तोला । इस प्रकारसे यह तैल बनता है । शिरपीडमें यह श्लेष्म विशेष फलप्रद है । तथा नेत्रशूल कर्णशूल, तीरह तरहका मन्त्रिपात, वातश्लेष्मा, गलग्रह, मव तरहका श्लेष्म, ज्वर, पित्तहो, श्लेष्मारोग, ये मव रोग उपशान्त होते हैं ।

यह तैल और एक प्रकारका होता है । प्रसृतप्रणाली—कटुतैल ४ सेर, गोमूत्र १६ सेर, कायके लिये धतूरा (पूतिका), उरुकरञ्ज, भिण्डो, जयन्तो, मँभानू, शिराप, हिज्जल और महिजन मिनित दगमूल, प्रत्येक २ सेर, जल ६४ सेर, श्लेष्म १६ सेर, कल्कार्य मदनफल, तिकटु, कुड़, काला जोरा, सोठ, कटफल, वरुण-छाल, सोया, हिज्जल, वेलगरी, हठिताल, जवापुष्प, विप, मनःशिला, काकड़ासींगो, रक्तचन्दन, महिजनको छाल, अजमाशन और बँचोकी जड़, प्रत्येकका दो तोला । इससे शिरःशूल, नेत्रशूल, कर्णशूल, ज्वर, दाह, स्वेद, कामला, पाण्डु, और तीरह तरहका मन्त्रिपात नष्ट होता है ।

शिरःशूलमें यह तैल विशेष फलप्रद है । (भेषज्यरत्नावली) तप्तमहस् (स० स्त्री०) तप्तं महिजोषितं रूपकं रूप्यं कर्मधा० । विशुद्ध रेप्य, तपाई हुई और साफ चाँदी । तप्तलोमश (स० पु०) काशीश, एक प्रकारको घास, कमीस ।

तप्तलोह (स० पु०) नरकविशेष, एक नरकका नाम । तप्तशूर्मिकुण्ड (स० पु०) तप्ता अग्निमयो शूर्मि लोह प्रतिमूर्तिर्यत्र तप्ताविधं कुण्डं यत्र, बहुव्री० । नरकविशेष, एक नरकका नाम ।

तन्मय्यी ( स० पु० ) तन्मा मूर्ति यत्र, बहुव्री० । नरक-  
विमिय, एक नरक । इति पुत्रय धमम्मा खोधि काय धोर  
खो धमय्य पुत्रवधि चात्र सन्धीग करि ती ये वर नरकमि  
मंमि ज्ञानि हैं ।

इस नरकमि पुत्रय तम भोजिनी नारीको पाकिट्टन कर  
धोर नारी तमखोजिने पुत्रयको पाकिट्टन कर धनेध  
प्रकारकी यन्त्रका पाठि हैं ; ( मन्थर १०-११२० )  
नरक देवे ।

तन्मय्युत्तुम्भ ( स० खी० ) तन्माया सुराया कुम्भमिच ।  
नरकविमिय, सुरायात्तुम्भार एक नरकका नाम । नरक देवे  
तन्माय ( स० खी० ) तन्म धर, धर्मका० । तन्म धर, धर्म  
मात ।

तन्माय ( स० खी० ) तन्म मलिन नरम लक्ष ।  
तन्मायमी ( स० खी० ) तन्मि चमत्केय धय-भूट् डोप ।  
भूमिभित्, वर भूमि को दोन कुखिचोकी बहुत सता  
कर धाम की काय ।

तन्पा—मध्यभारतके मीपात्र एजिप्टीकी मन्त्ररात या रिया  
मत ।

तन्पा ( स० पु० ) तप-यत् । १ मित्र, महादेव । ( त्रि० )  
२ तपनोय, जो तपने का तपानि योय्य जो ।

तन्पातु ( स० त्रि० ) तप-यत्तु । तापसे त्पादि ।

तन्प्रकर्षवेनका—पक्षकावादेके इटिया राजद्वीपी नकाव ।  
ये सुत्रपरवर्षके कलराभिकारो तथा पौर धि । १८२०  
ई०के पहरमि इन्मि वाचक प योय लनकी खी तथा  
वर्षीको कतल कर बाका या । धनमि ये पक्के गये धीर  
शोक समाहित होमि पर धीकीको यात्रा दी करे । सेखिन  
धरव खिचिने कामिधर नैत्रर धीरे इन्मे पक्षी की प्राक्-  
दान से खुषि धि, इस कारण धनर-धनरकमि प्राक्दक्ष  
न दे कर इटिया राज्यसे बाहर निवास देनेका विचार  
लिखा । नवाधमि मन्मा बानेका इन्म प्रकट की । धनमि  
१८२८ ई०को २३वीं मईको कर्कोर धान कर इन्मे  
मन्मा मित्रका लिखा । अये समझ सेबल धनको संस्थानसे  
की लुनाकात कर सेनेको इन्मे यात्रा मिनी को ।

तन्प्रीक ( स० खी० ) १ मिथता, सुदाई । २ विद्योग,  
धनमा, बाकी निवधन । ३ धनर, परक । ४ मय,  
वैटवारा, बाँट ।

तन्प्रीक ( स० खी० ) १ प्रसवता सुमी परकत । २  
इंमो, ठडा निवमा । ३ धीर, धवाकोरो । ४ तात्रापन,  
तात्रगो ।

तन्प्रीक ( स० खी० ) १ विद्यूत बन्धन, मन्मा खोडा  
धोर । २ सुयो, कर्द सेहरिण । ३ विवरय, कैजिबत ।  
४ टोका तमरोड ।

तन्प्रात ( स० पु० ) १ धनतः धरुं । २ इरी, प्रासिता ।  
तन् ( द्वि० धय० ) १ लस धमय कष नक्ष । २ धम  
कारक धमनिधे ।

तन्क ( स० पु० ) १ शोक, तल । २ परियोकी नमाक ।  
सुमसमान खिर्वा परियोकी बाधासे बधनेके लिखे यह  
नमाक पक्षी है । ३ थोड़ोका एक रोम । इममि लनके  
धरीर पर लूत्रन को जातो है । ४ धरीर पर एक प्रकार  
का दाब जो रक्त्रिधारके कारण को जाया करतः है  
चकचा । ५ तल, तल, परत । ६ थोड़ो धीर कम मर  
पड़ेको बाकी ।

तन्कगर ( स० पु० ) धोमि चाँदी धादिके तन्क या धनर  
बानेबाका तन्किया ।

तन्कवाङ्क ( स० पु० ) कुसीका एक धे य ।

तन्कवा ( स० पु० ) १ विमान, खंड । २ तल, परत । ३  
शोक, तल । ४ मनुष्यका म्पुण्ड । ५ पद, कान, दर्भा ।

तन्किया ( स० पु० ) उरकधारा सेको ।

तन्किया धरताक ( द्वि० पु० ) एक प्रकारकी धरताक ।  
इन्मे कुकर्मि तन्क या परत होमि हैं ।

तन्करोस ( स० वि० ) परिवर्तित बटका कुपा ।

तन्दीकी ( स० खी० ) परिवर्तित धीनीकी क्रिया,  
बटनो ।

तन्दुल ( स० पु० ) धरवीकी देको ।

तन्वर ( धा० पु० ) १ कुक्काकी टोमो । २ कर्नाईका एक  
धदिवार जो कुक्काकीमा होता है ।

तन्वर ( द्वि० पु० ) एक प्रकारकी पात्र जो मल्लुसके धरवे  
धपरो भायमि कर्गाई जातो है ।

तन्वरदार ( धा० पु० ) धर जो कुक्काको का तन्वर  
चन्नाता है ।

तन्वरदारी ( धा० खी० ) तन्वर, कुक्काको या धरवे चकरीका  
धाम ।



गवामें ३२ गांघ इस राख्ये हैं । राजाको उपयुक्त २०६ गांघोंकी मासगुजारी १२००८६ रुपये वार्षिक भर कारमें देनी पड़ती है । इसके पतिरिक्त दरम या तथा सुत्रपकरपुरके जिलामें भी ८४ गांघ लयते हैं । इस प्रकार इस राज्यके कुल गांघोंकी संख्या ४६० है । उक्त ८४ गांघों को वर्तमान राजा माइबके खर्गवालो पितारजने सुत्र पकरपुर जिलाकार्यत सुरसख नरैय राजा रजुनन्दन सिंहजीसे प्राप्त किया था ।

तमकोठी-नरैय सूमिहार झाड़व हैं । कागो-राज बंधके साब पापका लण्डि मन्व्य है । इनके पूर्वज पक्षी बिहार ठकोका प्रदेशगत त जिना कारनमें हुयेपुरके अधिपति थे । सुगल साम्राज्यमें इनके पूर्वज राजा कर् १७ शाही सभके अधिष्ठ प्रभाववालो हुए । फलतः तथा मोन टिको-बादशाहने उन्हें राजाको उपाधि दी थीर साथ ही एक डंका एक पताका तथा एक मलकबदार सम्मानित सुकुट ( माहेमरातिव ) भी दिया था ।

राजा खजाचवाहीके बड़े बंधार राजा गन्वैयाको उपनाम हमोरगाहीने टिको-अधिपति मन्व्यदशाहका वियेय उपकार किया था । पत' अपयुक्त अधिरतिने इसे पुष्करकल्प एक उपाधिविधिय एवं वि द्वाहित पदक प्रदान किया । राजा हमीरगाहीके खतोय मयबर राजा पतदशाहीने अपने अधिष्ठ भ्राताके साब मनोमानिक्य कोनेके कारण अपने प्राचीन राजधानी हुयेपुरको काड़ दिया थीर गोरखपुर जिलाकार्यत तमकोठी नामक ग्राम में एक नई राजधानी स्थापित की । राजा कङ्कगदवापुर गाहीने अपने राजत्वकालमें ब्रिटिश मबरमें ख्येसे भी अपनी बंधारम्बरगत "राजा" उपाधिको सम्मानित कराया । इन्होंने अपने नामा टिकारो-नरैयके वियेय स्थावर सम्पत्ति प्राप्त कर तमकोठी राज्यको पाब बढायो की ।

वर्तमान राजा इन्द्रजित्प्रताप बहादुर गाहीके खर्गीय जिना राजा शम्भुजित्प्रताप बहादुर गाहीने सुत्रपकरपुर जिलाकार्यत सुरसख-अधिपति राजा रजुनन्दनसिंहको योसेके विवाह किया थीर उनसे प्रभुर स्थावर सम्पत्ति प्राप्त कर राज्यको पावकी थीर भी बढा दिया ।

सन् १८८८ ई०के अक्टूबर मासमें राजा शम्भुजित् प्रताप बहादुर गाहीके खर्गवास होनेपर उनके सुदोष

सुख वर्तमान राजा इन्द्रजित् प्रताप बहादुरगाही राज्याधिकारो हुए । पाप बड़े सुविद्य उन्नतिगीत मधुवध पुरय हैं । आपने सखनज काबिन ताम्बुददार क्क जमें तथा अपने घर पर धनुमबी पविष्टतां थीर गवमें टके उच खर्गकारियोंने मिथा प्राप्त की है ।

उक्त राजा माइब लुट्टे, हिन्दो, म सूनत तथा घंघीको म वामें नियुक्त होते हुए, पम्बारीदख तथा पाखेट आदि में मो मको भौति कुयल हैं । पाप १८११ ई०के टिको दरबारमें मन्धिभित थीर उच समय पाउको बढाये सम्मानाखड एक रीप्यदख मो मिथा था । दीन तथा घनजायेंके प्रति आपको दयाइति सर्वदा रहती है । प्रजावाक्यय आपमें पूर्णरूपसे विद्यमान है । राज्यमानम-म राजा साइबको मनोय रिता एवं प्रजाको पाबिंड पबखाकी उचतिमें दखदिलता वियेयक्यसे प्राप्तोय है । आपने इन्द्रजित्से प्रचारार्थ अपने राष्ट्रमें कई कारखानें खोल रखे हैं ।

विगत यूरोपोय महाकुर्दमें वर्तमान राजा साइबने सर्वमें एकको विविध प्रकारसे यथेष्ट उदायता कर राज मन्धिवा पूर्णरूपसे परिषय दिया था । फलतः सुखरि पदके पापको पुष्करकल्प एक मण्ड, तथा प्रान्तीक मरखाने मन्व मधुवध एक लखनार भी मिलो था । पाइलकमात्र पाप सदख भी हैं ।

राजा माइबका निवानखान तमकोठीमें है । यहाँ एक प्रजाख राज-मासाद एवं इड्ड पहासिखाने एह उच मन्दिर सुरक्षित दुर्ग, तथा चारों थीर फसोर्ब हैं । राज प्रमादके समय ही दखिख थीर मन्कोबागमें एक सुसज्ज थीर सुसज्जित बगवा है जिसमें एक कोटि ब भारनोव थीर यूरोपोय धनिवि निवान किया करनी है ।

तमकोठीमें एक पोड चाफिन, तारखर मिडिख चर्ना क्क कर क्कू ख जिसमें चंमरेकोको भी मिथा दो जाती है, पपर तथा लोपर प्रायमरो क्कून, प्पोतिय थीर व्याखरन मिथा दिनेका मसूत पाठगामा एक साधारण पुष्ककानत्र तथा एक दातक बकिम्बालय भी है । उक्त राजा माइबने एक मोस, एक जोनोबा एक तथा दो थीर खिय विमाथके फार्म खोल कर अपनी प्रजाघां का वियेय उपकार किया है । तमकोठीमें प्रति वर्ष

आश्विन विजयादशमीके अवसर पर एक भारी मेला लगता है जिसमें पशुप्रदर्शनी भी कराई जाती है। राजा साहब अपने हाथसे उन कपड़ोंको जिनके पशु उत्तम तथा पुष्ट होते हैं उचित पुरस्कार दे कर प्रजामण्डलकी उत्साहित करते हैं।

तमगा ( तु० पु० ) पदक, तमगा।

तमगुन ( हि० पु० ) तमोगुण देखो।

तमङ्ग ( म० पु० ) मञ्चस्थान।

तमङ्गक ( स० पु० ) इन्द्रकोप, मञ्चक, मचान।

तमचर ( हि० पु० ) १ राक्षस, निशाचर। २ उल्लू, उल्लुक।

तमत ( स० त्रि० ) तम काङ्कायाँ अतच्। ढपित, प्यासा।

तमतमाना ( हि० क्रि० ) १ अधिक गरमो अथवा क्रोधके कारण चेहरा लाल हो जाना। २ चमकना दमकना।

तमतमाहट ( हि० स्त्री० ) तमतमानिका भाव।

तमता ( स० स्त्री० ) १ तमका भाव। २ अन्धकार, अंधेरा।

तमप्रभ ( म० पु० ) तम इव प्रभा अस्मिन् बहुव्री०। नरकभेद, एक नरकका नाम।

तमरंग ( हि० पु० ) एक प्रकारका नीबू।

तमर ( म० स्त्री० ) तमं राति राक। १ वङ्ग, रांगा। २ शीषधानु, शीशा।

तमर ( हि० पु० ) अन्धकार, अंधेरा।

तमरसेरि—मन्दाज प्रदेशके मालवा विभागका एक गिरिपथ। यह अक्षां ११° २८' ३०" और ११° ३०' ४५" पू० तथा देशां ७६° ४' ३०" और ७६° ५' १५" पू० के मध्य अवस्थित है। कालिकटसे मडिसुर तकका रास्ता पश्चिम-घाट पर्वतके ऊपर ही कर तमसेरिको और चला गया है। कछवे आदिकी रफ्तनोके लिये यह पथ विशिष्टरूपसे व्यवहृत होता है।

१७७३ ई०में कालिकटकी यात्राके समय हैदर अली तथा मालवा पर चढाई करनके लिये सुलतान टीपू इसो पथसे गये थे।

तमराज ( स० पु० ) तम इव राजते राजा टच्। शर्करा-विशेष, एक प्रकारको खट्ट। इसका दूसरा नाम शालक है। इसका गुण—ज्वर, दाह, रक्तपित्त और पित्तनाशक हैं (राजव०)

तमला—एक नदी। यह वर्तमान जिलेके उखराग्रामके पश्चिममें सेरगड़ परगनासे निकल दक्षिण-पूर्वको और बहतो हुई भोटरा ग्राम तक जा कर दामोदरमें गिरी है।

तमलुक—वङ्गदेशके मेदिनीपुर जिलेका एक उप विभाग। यह अक्षां २१° ५४' और २२° ३१' उ० एवं देशां ८७° ३८' और ८८° ११' पू०में अवस्थित है। यहाँ हिन्दू, मुसलमान, ईसाई इत्यादिका वास है। हिन्दुओंको संख्या सबसे अधिक है। इस उपविभागमें तमलुक, पाँच-कुडा, मसलन्दपुर, सुताहाटा और नन्दियाम इन पाँच स्थानोंमें ५ पुलिसथाना है। १८८४ ई०की इसमें ४ फौजदारो, २ दोवानो अदालत और १४७ पुलिसकर्मचारो तथा १३८० चौकोदार नियुक्त हुआ था।

इस उपविभागमें ११ बड़े बड़े जमींदार हैं। तमलुकशहर और केलोमाल ग्राम सबसे प्रसिद्ध स्थान है। पहले तमलुकमें हिजलीके कलक्टरके अधीन नमकको आदत थी।

पूर्व समयमें यहाँ बौद्धोंका एक विख्यात शहर और पूर्व देशीय वाणिज्यका केन्द्रस्थल था। बहुत दिन हुए, तमलुकमें बौद्धधर्मके सभी नदर्शन ही विलुप्त हो गये हैं, किन्तु अब भी तमलुकका कोई-कोई हिन्दू-परिवार बौद्धोंको नाईं स्मृतदेहको जमानमें गाड़ता है। राजपूत-कुलोडव मयूरवंश पहले तमलुकमें राज्य करते थे। मयूरध्वज, ताम्रध्वज, हंसध्वज, गरुडध्वज, और विद्याधरराय तमलुकके इन पाँच राजाओंके नाम विशेष प्रसिद्ध हैं। तमलुकके ४८वें राजा केशवराय कर नहीं देनेके कारण १६४५ ई०में सुगत सम्राटसे राज्यच्युत हुए और १६५४ ई० तक हरिराजने राज्यशासन किया। हरिरायकी मृत्युके बाद उनके भाई और लड़केमें सिंहासनके लिये विवाद उपस्थित हुआ। बाद राज्य दो भागोंमें विभक्त किया गया। १७०१ ई०में हरिरायके भाईका वंशलोप होने पर पुनः तमलुक राज्य एकत्र हो कर नारायणराय और उनके उत्तराधिकारियोंके हाथ लगा। १७५७ ई०में मिर्जा दोदार-बेगने बलपूर्वक सिंहासन हस्तगत कर १७६६ ई० तक अपने अधिकारमें रक्खा। उक्त ई०में गवर्नेण्टके आदेशसे तमलुक पुनः सिंहासन-

शुन राजाश्री को मन्तोपमिया तथा हृद्यप्रियाके पवि-  
 कारमें पाया। राजी व तोपमियाके दत्तक पौर हृद्य  
 विवाह गर्भजात पुत्र थे। उन्होंने क्रमशः राज्यका ७  
 तथा ८-वांता प ग पाया। (१८२३ ई में ८) धर्मिके  
 द्विजोदार धामन्दनारायणराय ७) धर्मिके द्विजोदार  
 विद्यनारायणरायके विवाह एक दोवामी मुकुन्दमा बना  
 कर इनको मत्र मन्थलिके पवित्राती को मथे। धामन्द-  
 नारायणने अपुत्रक पदध्यामें प्राबन्धाम किया। उनको  
 दोनों स्त्रोने मन्त्रीनारायणराय पौर हृद्यनारायणराय  
 नाम दो दत्तकपुत्र पदध किया। उन्होंने भारो मन्थलिके  
 पापमें बाँट ले। किन्तु दोनों मारलोमें परस्पर विरोध  
 को जर्मने बोरे बोरे दोनाको मन्थलिके ज्ञातो रहो।

तमसुक्त धामनेमें कई एक ब्राह्मण हैं इसी कारण बाढ़  
 के दिन वह नहीं जाते नञा पौर कपनारायण व निवृत्त  
 तमसुक्त प्रवर्धित है। इसीके इन प्रदेयके हृद्यपुत्रय बहुन  
 धामानोने पूरने पूरने ज्ञानोने भेजे जा सकती हैं।  
 पाचक, मारियक मन्थल पौर तरह तरहको माक मन्थो  
 इन परमने मथ व पित्रपुत्र्य है। यहाँ विरफायो बन्दो  
 वदत प्रवर्धित है।

त सुके धनेक पवित्र भो पुर्नमयों न क तीगार  
 कर श्रीविज्ञानिकांग करती है। यहाँक मन्थका मथ  
 माय बहुत प्रविष्ट हो गया था। अन्ते यह प्रदेय मथ  
 मन्थक पचीन पाया तन्ने यहाँक एक व्यापमाय नष्ट  
 हो गया है। यमो तमसुक्तका मन्थक तोयार नहीं है।  
 मन्थ है। इन कारण धनेक दृष्टि लोभ बहुत बट  
 पाते हैं।

तमसुक्त गन्नाके मुद्गानिके निवृत्त प्रवर्धित है। इसीने  
 १२वीं यताप्ते तत्र विभिन्न र्मने माविश्वके कक्षात्र  
 पाया करते हैं।

गन्नाके पधिम मुद्गानिके निवृत्त तमसुक्तके पधि  
 माविश्वको दमकित्त वा तमनिक कहती हैं।

तमसुक्त पन्थक मन्थकामाना देय था यह धनेक  
 बन्धोमें भो निवा है। रक्षाकर माक तमसुक्तका एक  
 महर का। इन नामका पधित्त मन्थक भोय बीता का  
 रहा है। रक्षाकर नामने की मन्थोने तमसुक्तको जन  
 धानिकाका पधेष्ट परिचय पाया जाता है।

इन उपविभागना भूमिभाग (१२१ नग मोठ है।  
 इनमें १२२२ घाम मगने हैं। १८२१ ई०के मन्थकर  
 माममें तमसुक्त उपविभागमें परिचय हुआ है। यहाँ  
 १११ एकक जमीन जामोर है। सोडम स्या प्राय  
 १८२२१८ है।

२ एक तमसुक्त उपविभागा मन्थ। यह पक्षा०  
 २२ १८० पौर देया० ८० ११ नू० पर मैदिनोपुर  
 जिनके दक्षिण-पुर्ब प मने कपनारायण मन्थके ऊपर  
 प्रवर्धित है। तमसुक्त महरमें म्य निधर निवृत्तका पन्थका  
 बन्दोबस्त है। यहाँ विभिन्न धर्मोवन्धो सोम याम  
 करते हैं किन्तु सो सप्या मन्थे पवित्र है। तमसुक्त  
 महर मैदिनोपुर जिनके मन्थ माविश्वकेन्द्र है।

माधुनिक इतिहासमें तमसुक्त बोडोका एक बन्दर  
 का कर बनित हुआ है। इसी यताप्तेके पुर्ब  
 मागमें प्रविष्ट पानपरिमज्जक माविश्वान इसी म्थाने  
 माधुनिक जहाज पर च० कर नि दण देग मथे है।  
 इनके २३० वर्ष पीछे पुनपुनपुन तमसुक्तमें पाये है।  
 उन्होंने भो तमसुक्तका बीडवर्म न बोनायेन- धेमा  
 लक्ष्य किया था। उनका मन्थक पुनक उनने मन्थक  
 होता है कि यहाँ बहुतने बोडमक को बोड मन्थ को  
 तथा मन्थका पन्थोका बनया हुआ २५० पुट ज न  
 एक मन्थ था। बीडवर्मको पन्थलिके बाट गो यह  
 म्थान माधुनिक माविश्वका पागारक म्थका बर्धित है।  
 बहुतने धनेक बन्धु पौर मन्थका विवाहा इन पन्थामें  
 काम करते हैं। माग मन्थक, पदम पौर वद तग  
 लक्ष्मीके बहुमून्थ प्रजाति प पान तमसुक्त मन्थने (३६०-  
 को मने ज्ञात है। यहने मन्थक पाग वा भुदुर बहा  
 था। मन्थक बहुत पूर बट ज्ञान पर मा व विज्यको  
 विधेय पति नहीं है। ११३ ई०में पुनपुनपुनने  
 इन मन्थके मन्थको मन्थको बन्थे है न था किन्तु  
 पन्थो मन्थक मन्थके ६० मन्थ पूर बट मन्थ है। गन्नाके  
 मुद्गान पर मन्थोका मन्थक जर्मने मन्थक पन्थो गन्नाके  
 मन्थमें पदुता है। हृद्यजन पूर जो पुन्थक र्थो मोटते  
 मन्थक ने २० पुन्थक मन्थ बहुतना माधुनिक मन्थ  
 पाते हैं।

माधोन मन्थक मन्थक मन्थकामने पार्थ पौर हृद्य





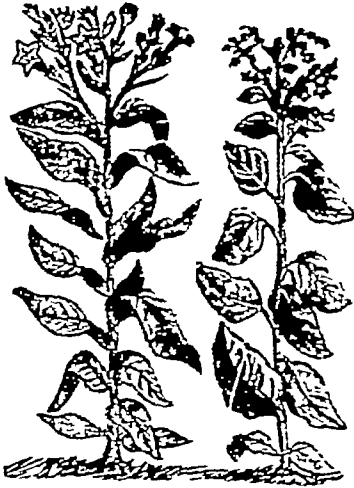
ई ट बांध देना पौर उषको यावधि रुटका देती है ।  
 बर्गमोसाटेधमि नमो चक्रवर्त मय करती है । देवोका  
 शोध बहुत प्रचल है । १८वीं शताब्दीमें महापण्डित  
 मय बहुरेयको सुट्टी सुट्टे कर तमसुक्तको पहुँचे थे,  
 तब देवोके मयके लक्ष्मी वहाँ कोई चक्राचार न किया ।  
 लक्ष्मी बहुत ब्रह्मचारी देवीकी पक्षना को । मन्दिरके  
 निकट छपनारायण नदीका शिग मन्दिर है, किन्तु कुछ दूर  
 जा कर इसका शिग बहुत तोड़ हो गया है । चक्रिवाचियों  
 का कहना है कि छपनारायण नदी देवीके मयके कर  
 कर हो मन्दिरके निकट खोई खोई बहने लगी है । यमके  
 कर नदी बड़ कर मन्दिरके समीप तक पहुँच गई थी ।  
 एक बार मन्दिरके विपक्ष मन्त्रवा हो चला था । जनके  
 आशासे मन्दिर नष्ट हो जायगा इस आशङ्कामें सुरोहित  
 गये मामने लगे । किन्तु नदीका जल कुछ दूर पौर बड़  
 कर पोके चट गया । मन्दिर गिराफले रहा ।

तमसुक्तमें विष्णु का एक मन्दिर है । प्रवाद है, सुधि  
 शिरके चक्रवर्तियुक्तका घोड़ा सब तमसुक्तमें थावा, तब  
 यहके मयके शोध राका तास्यजत्र उने पकड़ा । घतएव  
 चक्रवर्तके मीमांसे पत्रिपति चतु मके प्राब लनको मरुतो  
 सुठमें डू हुई । नङ्गाईमें तमस्यजत्रकी जीत हुई पौर  
 ये लक्ष्मी माय चतुर्नकी बाँध कर लाये । छाप्य पर्य  
 विष्णु से इस कारण लक्ष्णु पौर चतु मकी एक साक  
 बंधे हुए देख तास्यजत्रके पिताने पर्यने लक्ष्मीका गिर  
 प्यार तथा लक्ष्मीके मविमय निवेदन किया । लन का  
 लक्ष्णु पौर चतु मके दमन होता रहे, इस आशयसे लक्ष्मीने  
 एक मन्दिर बनवाया पौर लक्ष्मी लक्ष्णु तथा चतु मकी  
 प्रतिमूर्ति स्थापन करनेको चाहा ही । इन दोनों प्रति  
 मूर्तियोंका नाम जित्पु, पौर गरावच है । प्राय ११६  
 मी बय व्यतौत हुए, व्यामोय न्दोने इस मन्दिरको  
 पाकनातु कर निहा है, किन्तु दोनों प्रतिमूर्तियोंको रक्षा  
 की गई थी । बाद गोपजातीय किमो प्योने एक मन्दिर  
 निर्माच कर लक्ष्मी तथा मूर्तियों स्थापित की । मन्दि  
 रकी आकृति पौर निर्माणबीमय बर्गमोसा देवीके  
 मन्दिर मरीचा है ।

तमसुक्त चक्रवर्त प्राचीन शहर है । इसका संस्कृत नाम  
 तास्यजत्र है । ६-शताब्दीमें भी तास्यजत्रका उल्लेख

मिथा जाता है । तमसुक्तपरित, इन्द्रजया मधति  
 यन्तोंमें तास्यजत्र बहुदेयका प्रधान बन्दरके मीमांसे बर्णित  
 है । प्राचीन संस्कृत चक्रवर्तियुक्तमें मान्य पड़ता है कि  
 ब्रह्मोपनायर पौर भारत महाभाग शोपावलीके प्राब  
 तास्यजत्रका पश्चिम बाह्य चक्रता या पौर बसुधुधि  
 केवक ८ मीलको दूरी पर यह शहर अवस्थित रहा ।  
 तास्यजत्रके बौध्दधर्म प्रसारित होने पर यह चन्द्रवर्तमें का  
 तोयं ऐव हो गया है । किमो विजोने तमसा विधा  
 प्रधातु पाप-लक्ष्मि, इन दो मूर्तियोंके तास्यजत्रको  
 स्तुतिपति निर्धारित की है इससे जाना जाता है  
 कि पूर्वकालको इस स्थानमें धर्मनियम उतना प्रति  
 पालित नहीं होता था । जो कुछ हो, तास्यजत्रके उत्पत्ति  
 मन्त्रमें एक कदाही इस तरह प्रचलित है—विष्णु अब  
 कल्पिक प्रवृत्तारमें टैज्जोको विनाश करके करने बहुत  
 ज्ञान हो गये, तब लक्ष्मी मरुतोके तास्यजत्रमें पयोना  
 गिरा । देवधर्म द्वारा जित्त हो जानेसे यह स्थान पवित्र  
 क्षेत्रमें परिणत हो गया पौर इसका नाम तास्यजत्र पड़ा ।  
 मक्ष्मन्के पन्तोंमें निहा है कि भारतवर्षके टैज्जिक  
 दिग्मय तास्यजत्र तोड़ने छान करनेमें मनुष्य मय पापोंमें  
 विमुक्त होनी हैं । फिर भी कथा है कि बब महादेवमें  
 लक्ष्मीका बब विद्या, तब ब्रह्मवत्सा पापके कारण लक्ष्मी  
 पापके लक्ष्मीका विषय प्रदाक परिष्कृत न हुआ । ब्रह्मरा  
 कोई उपाय न देख लक्ष्मीने देवताधीको गरव थी । देव  
 जन्मने लक्ष्मीके ममसा तोषोंमें पर्यटन करनेको  
 मलाइ दी । महादेव तास्यजत्र कोड़ कर पौर दूसरी  
 ब्रह्मदेव तोषोंमें हो पाये, किन्तु लक्ष्मीका चमोड विष न  
 हुआ । लक्ष्मीका लक्ष्मीका ममसा बर्षजित्त चक्रवर्तमें  
 रह गया । तब ही हिमाचल पर्यंत पर लक्ष्मी करने लगी ।  
 इस समय विष्णु, भगवान्ने लक्ष्मीके मायमें लक्ष्मीके हो  
 कर तास्यजत्रमें जानेके लिये लक्ष्मीका कहा । लक्ष्मी लक्ष्मी  
 तुमार गिबजोने तास्यजत्रमें जा बर्गमोसा पौर जित्पु,  
 कारावचक मन्त्रवर्ती जन्मावर्तमें छान किया । छान  
 करनेके बाद जो लक्ष्मी लक्ष्मीके लक्ष्मीका ममसा लीके गिर  
 पड़ा इसी कारण यह स्थानको लक्ष्मीको लक्ष्मीके है  
 पौर यह एक प्रधान तीर्थस्थलमें गिना जाता है । क्षान  
 क्षमके यह स्थान नदी गर्भ को हो गया है । अब भी

Nisimes)ने तमाकूकी आमतदो को थो। उन्हींके नामानुसार इस थोणीके उद्भिदका नाम पड़ा है। निकोटियाना थोणीमें कई एक प्रकारकी तमाकूके सिवा अन्य कोई भी उद्भिद गृहीत नहीं होता। वन्य और कृषिलब्ध समस्त तमाकूधोंमें आज तक ५० प्रकारके तमाकूके पेड़ोंका विवरण प्रकाशित हुआ है। इन ५० प्रकारके पेड़ोंमेंसे ४८ प्रकारका आदिस्थान अमेरिका है, अवशिष्ट २ प्रकारके पेड़ोंमेंसे एक प्रकारका पेड़ अट्रैलियामें और एक प्रकारका नये क्वालिटोनिथ होपमें पाया जाता है। उक्त ४८ प्रकारके तमाकूके पेड़ोंमेंसे विशेषतः इस देशमें निकोटियाना टाबाकम् (N tabacum) और निकोटियाना रास्टिका (N rastica) इन दो थोणियोंका प्रचलन अधिक है। देश और जमीनके भेदसे तथा कृषिकी प्रकृतिके भेदसे इनके नाना प्रकारके सामान्य विभाग देखनेमें आते हैं,



१। साधारण तमाकूका पेड़। २। तुर्की तमाकूका पेड़।

जिनमें अधिकांश ही व्यवसायके स्थान और जन्मस्थानके नामसे परिचित हैं। भार्जियाना, मेरिलैण्ड, केण्टाकि, लाटाकिया, हाभाना, मानिला, सिराज आदि एसिया, यूरोप और अमेरिकाको प्रसिद्ध तमाकू एक निकोटियाना टाबाकमसे ही उत्पन्न हुई हैं। प्रसिद्ध तुर्की तमाकू निकोटियाना रास्टिकासे उत्पन्न है।

निकोटियाना रास्टिका वा तुर्की तमाकू साधारणतः यूरोपमें पूर्वभारतकी तमाकू (Turkish or East Indian tobacco) के नामसे तथा बङ्गाल, बिहार और

युक्तप्रदेशमें विनायतो वा फलकत्तेकी तमाकूके नामसे प्रसिद्ध है। पञ्जाबमें कनाहारी तमाकू वा कान्दाहारी ककर नामसे प्रसिद्ध है।

निकोटियाना टाबाकम् वा साधारण तमाकू अमेरिका वा भार्जियानाको तमाकू कहलाती है।

भिन्न भिन्न देशोंमें तमाकूके नाम इस प्रकार हैं—

युक्तप्रदेशमें	...	तमाकू तम्बाकू, वज्जरभाङ्ग।
बङ्गालमें	...	तामाकू, टोका, तामाकू।
बिन्ध, गुजरात और राजपुतानामें	...	तमाकू।
बम्बई प्रदेशमें	...	तम्बाकू।
उडिष्यामें	...	धूमपतड़ (धूम्रपत्र)।
मंस्कृतमें	...	कलञ्ज।
" ( गठित )	...	धूम्रपत्र, ताम्रकट।
तामिलमें	.	पोगड-इनाई।
तेलगूमें	..	पोगाकू, धूम्रपत्रसु।
काश्मीरमें	...	सबन् पाण्डव।
कर्णाटकमें	...	होगिमप्पू।
मलयमें	.	पुकाइला, पुकानो, ताम्बा नो।
ब्रह्मदेशमें	...	से, साक, साकपिन।
सिंहलमें	.	टिहाजहा, टि'कोला।
पारस्यमें	..	तम्बाकू।
अरबमें	...	तुतन, वज्जरभाङ्ग।
तुर्क्यमें	...	तुतन, टोखन।
वालि वा यवक्षीपमें	..	ताम्बाकी।
चीनदेशमें	..	मियाइयेन, हियनभाई, तान्या।
जापानमें	.	टावाको।
इटलीमें	...	टैवाको।
लैटिनमें	..	टावाकम्।
रूस, जर्मन, डेनमार्क और फ्रान्समें	.	टावाक।
इलैण्डमें	..	टोवाक।
पर्तुगाल, स्पेन और इंग्लैण्डमें	...	टोवाको।
मेक्सिको देशमें	...	कोयाकरियेट।

तमाकूका पेड़ सीधा होता है। इसके पत्ते काण्डा-त्रोपी, हन्तहीन और कोणाकार होते हैं तथा काण्डकी तरह विवकुल जड़से हो उगते हैं। काण्डके ऊपर शुद्ध कीमल लो सबव कांटे होते हैं। पत्तोंमें आवरक पत्ते

हरे पौर पञ्चमीची होते हैं। इसका पैङ्ग बहुत खोसल होता है। बाइबलमें यह छत्र किस दिशाका अभाव बात है, इसका यमी तब निश्चय नहीं हुआ। डॉ. इतना तो निश्चय हो चुका है कि मध्य या दक्षिण अमेरिकाजि किमी न किमी कानने यह पृथिवी भरमें फैल गया है। डॉ. कोर्ट कहते हैं, कि विजुवर्गका पौर समझा निश्चयवर्ती अर्थ जो हमको पादि प्रथममूमि है। इस समय यह पृथिवीका भागः समी अन्वयजन पौर जामिमोतोप्य देगमि पयैट उत्पन्न होता है।

बिनायती वा तुर्की (Turkish) तमाझू मेषिको वा जामिमोतियाक अभावजगत पोषे है। उद्दिष्ट तत्वा नुसार यह भात्रिंशाका तमाझूने बहुत कुछ अभाव है। इस आतिथको तमाझू सबसे पहले जन्मैपडे लारे गईं वो हमनिप हमको बिनायती तमाझू कहते हैं। सर बाण्डर राते इस तमाझूको पमन्द करती है।

पञ्चाबके, बन-विभायके परिणामक डा० ए. ए. टॉट (१८६१ ई० में) ने सबसे पहले यह धारिणकार किया था कि उत्तरभारतमें इस आतिथको तमाझूको चितो होती है। उन्होंने लाहोर, मुजतान जोधियारपुर दिवो पादि स्थानोंमें यथाव्य प्रचारको तमाझूको तरह इस त्रैबीची तमाझूको भी बहुत चितो होती दिखलाई थी। ईराकतो प्रदेशके उत्तरांशमें पादि नामक स्थानमें बन्दू मामाको पत्रवाहिकां, लखनऊके बिनाई, आगाम प्रदेशमें, वहाँ तक कि सुदाम प्रदेशमें १०२०० फुट ऊँचाई पर भी इसको चितो होता है। बङ्गालमें, बीज बिहार, उजपुर, बीहड़ कबाड़ मजोपुर, धामाम पादि स्थानोंमें भी इसकी चितो होती है। दक्षिणदेशमें गोदा गरी जिलेकी “कडा तमाझू” इतो आतिथकी तमाझूके उत्पन्न है। यह अन्य प्रकारको तमाझूको पपिया कडो कोमिंके कारण तमाझूके अभावयो शीघ्र पाइकीकी दक्षिण अनुसार इसकी दूसरी तमाझूके साथ मिनाया जाल है। तमाझूके इतके पोषे मज्जुत है और अतिवृत्तके उत्पन्न होती हैं। इसकी चितो करकेमें मो परिप्यम कम जयता है और इसको मिनावटके भी तमाझू बनतो है, उनसे पैसा भी बचाटा जाता है। पञ्जाबमें इसके वहाँ मोड कर मजो

बांभ रखते हैं। इसमें बोड़ी बहुत सुंदरी (जन्म) बनती है, पर बोरी रने सुरती बना कर खाता नहीं। इसमें गुड (बीरा) मिना कर पोना तमाझू नहीं बनतो किन्तु गुडके निप इसका अतिप्र प्रचलन है। इस तथा झूको गुडमें कुछ मीठापन कोमिंके मि० वैडिन पाठकेमती पनुमान किया था कि इसमें कुछ मज्जुता पय है। इसको गुडपदेशमें पान्दाकारी विनायती पौर चिनामो तमाझू कहते हैं। एन नामोंने पनुमान होता है कि भारतमें यह पहले पहल उक्त देशोंमें पाई थी।

अमेरिका का भात्रिंशियाको तमाझू जो साधारणत मय देशोंमें मिलती है। भारतवर्षमें तमाझूकी चितो पदेष्ट होने पर भी आत्रजन पनुमस्थानने देखा गया है कि भारतवर्षके अन्वयदेशमें इस आतिथको तमाझू परई अभावमें पदेष्ट रूपप्रतो है। किन्तु इस तरह इस देशमें तुर्की वा बिनायती तमाझू होती कहीं भी नहीं देखो गयो है। डा० बाटका कहना है, कि अन्वयदेशके निश्च टय २४ परागनेके मध्यवर्ती स्थानोंमें, योमिंके भीतर, मज्जुके बिनाई, बांसके निक्षि अङ्गलीमें पौर गोमि स्थान पर इस यथोके तमाझूके पोषे पयमि पाप पैदा होती हैं। बहुत पुरानी दीवानों पर तथा कुगमी पौर यहाके वास्तुकारम दोवीमें मो यह पयमि पाप पैदा होता है। जिन उपुमें यह पोषा होता है, वहाँ दूसरा कोर् भी अभावजगत छत्रगुस्मादि नहीं कम सके, परन्तु रतनी बात अदरत है कि ये चेतवाले तमाझूके पोषोकी तरह परिपुष्ट नहीं होती। ये पयाके अन्तमें होती हैं, पौर येत भी यथावमें इन पर प्युन जयते हैं। डा० बाटने जिन आतिथके अन्वयदेशको तमाझूके पोषेको अन्य अभावता वत लार है वह क्या चोर है, यह हम ठोक नहीं कह सकते। बाइरने इसको बहुतसाके विपयमें लेना निश्च चिना है, लयके मान्य होता है कि योमिंके लोग इसे अदर जानते पौर प्रचलन ही किसी नरे नामने पुकारने हेतु। परन्तु हम बहुत कोमिया करने पर भी लयके विपयमें कुछ निश्चय नहीं कर सके हैं। कोर्ट कहते हैं कि उक्त बाइरने जिन पीयेका लम्ब किया है, वह “निबोटिया टोरीकम” नहीं, उक्त आतोय “निबोटियाना इन्वयमिफोमिया” है परन्तु बाइरने इस बातको पत्तीकार किया है।

तमाजूका इतिहास ।—१४७२ ई० में यूरोपियों में तमाजूका प्रथम प्रचलित हुई थी। कोलम्बस ने टनसिनीस द्वीप पश्चिम भारतोय द्वीपसमूह में पहला बार इस चीज पर लक्ष्य दिया था। उन्होंने किम द्वीपमें इसे पहली देखा था, इसमें भी बहुत गड़बड़ है। कोई तो यह कहते हैं उसका घोषा क्या था उन्होंने स्वयं देखा था और कोई ऐसा कहते हैं, उन्होंने जिन लोगोंको अमेरिका भेजा था, उन्होंने गुवानाइनो द्वीपमें ( मनमैलमेउरमें ) उद्युधित हो कर इस वस्तुको देखा था। उन लोगोंने उस देशके आदिमोंकी एक पत्तीके गुच्छेकी जला कर उसका धुआं पीते देखा था। उस देशके लोग इस घोषेकी "कोहवा" और जलंत हुए गन्धकी "टोवाको" कहते थे। कोलम्बसकी द्वितीय यात्रामें ( १४७४—७६ ई०में ) स्पेनदेशके मन्थानो रोसेनो भी साथ थे, उनका कहना है, कि मनडोमिङ्गो द्वीपके लोग "गुइयोजा" वा "कोहवा" नामक एक प्रकारके वृक्षके पत्तीको लपेट कर 'टोवाको' नामकी नली द्वारा धूम्रपान करते थे। उनके विवरणमें उक्त देशमें नव्य प्रशणका विषय भी मान्य पड़ता है। १५३५ ई०की मनडोमिङ्गोके शासनकर्त्ता द्वारा लिखित गञ्जाली फार्मागंडेज डि आभिडो अपने पुस्तकमें इस 'टोवाको' नामक धूम्रपानको नलीकी ऐसी वर्णना कर गये हैं। यह देखनेमें ठोक श्रेय जो अक्षर V कैसा होता थी। इसमें तमाजूक भरने नहीं पड़ती थी। आग पर पत्तेकी छेते थे, उससे धुआं निकलता रहता था, उस धुएके ऊपर उस नलीके नोचिका भाग पकड़े रहते थे और ऊपरके दोनों मुंह दोनों नासाराश्रमोंमें लगा कर उसमें धुआं खींचा करते थे। उक्त ग्रन्थसे यह भी पता चलता है, कि मनडोमिङ्गोके लोग मेषजगुणके कारण इसका दह्रा आदर करते थे। १५०२ ई०में स्पेनके लोगोंने दक्षिण-अमेरिकाके उपकूलवासियोंमें तमाजूक चबानेकी प्रथा सबसे पहली देखी थी। पहले पहल अमेरिकामें जितने भी पर्यटक गये थे, उन सबके विवरणोंमें ऐसा लिखा है, कि अमेरिकामें इसका तीन तरहसे व्यवहार होता था, किन्तु टाइममानका काना है, कि दक्षिण अमेरिकाके लोग धूम्रपान करते ही न थे, सिर्फ सुँघने (नस्य सूँघते और तमाजूक चबाते थे तथा लाप्लाटर, उरुग्वोया

और पाराग्वोया इन तीन देशोंमें तमाजूका किसी प्रकार भी व्यवहार न होता था। उत्तरअमेरिकाके पानामा-योजक्रमे कनाडा, कानिफनिया, पश्चिम भारतीय द्वीप-पुञ्ज आदि समस्त स्थानोंमें धूम्रपानका अधिकतामें प्रचार था। इसका भी प्रमाण मिलता है कि अति प्राचीन कालमें ही यह धूम्रपानकी प्रथा उक्तदेशोंमें प्रचलित थी। उक्त 'टोवाको' नामकी नलियों पर अति सूक्ष्म, सूक्ष्म और मनोहर गल्पकार्य है, यह भी छोटे टिनोका उद्भावित नहीं है। मेक्सिको देशको अजतक जागिको कब्रों तथा अमेरिकाके युद्धराज्यको स्तूप-गणियोंमें उक्त प्रकारके गल्पकार्य विविध नत आविष्कृत हुए हैं। इन पर कुछ ऐसे जीवोंको भी आकृति है, जो उत्तर अमेरिकामें नहीं पाये जाते।

अमेरिकाके नाना स्थानोंमें इसके भिन्न भिन्न नाम प्रचलित हैं। मेक्सिको देशमें इसके नाम पितम ( Petum ) वा पिटन ( Petal ) है। इस शब्दमें जो एक श्रेणीको तमाजूका नाम 'पिटुनिया' ( Petunia ) हुआ है। 'येटल' ( yel ) नाम भी मेक्सिकोके किसी किसी भागमें सुनाई, देता है। यहाँमें इसके 'स्यरी' ( Sary ) कहते हैं।

यूरोपमें सबसे पहले १५६० ई०में तमाजूक पहुँचो था। द्वितीय फिलिपके समयमें फ्रान्सिस्को फार्नाण्डेज, मेक्सिकोके अन्यान्य स्थान आविष्कार करने गये थे, वे ही तमाजूके पत्त यूरोपको लेते गये थे। स्पेनमें कई वर्ष तक धूम्रगान प्रचलित होने पर भी तमाजूका विशेष आदर नहीं हुआ। अन्तमें पोतुगालसे ही इसका विशेष प्रचार हुआ। जिवानिको ( Geau nicot ) नामके एक फरासीसी दूत इस समय पोतुगोजके दरबारमें रहते थे। उन्होंने एक थोलन्दाजसे तमाजूके बीज ले कर लिसेवन नगरमें अपने उद्यानमें बो दिये। तमाजूके मेषज-गुणसे अपने आदमियोंके अनेक रोग नष्ट होते देख वे आश्चर्या-न्वित और प्रलोभित हुए। १५६१ ई०में उन्होंने इसे फ्रान्सके राजाके पास भेजा। फ्रान्सकी राजीने इसके गुण सुन कर इसका विशेष आदर किया जिससे इसको कृपित बहुत जल्द उन्नतिलाभ को। उस समय इसको नाना प्रकार पवित्र नाम दिये गये थे, जैसे—'हाजाना साइटा'

(पब्लिश मुव्म) "हार्बो पैजिफिया" "हार्बो डिपारट्मन्ट" "हार्बो मि एन्ड पोर्टल्स डिपार्ट्मन्ट" (यू.एस. मुव्म) इत्यादि। पोर्तुगालके काठिनायक साय्न्सप्रोग्राम इले इन्फोर्मिसेसि बने, बर्हा इन्फ्रान्सा नाम उनके नामानुसार 'हार्बो साय्न्सप्रोग्राम' पढ़ गया। इटलीके इन्फ्रान्सा प्रोग्राम यूरोपीय विज्ञान को गया।

१९८८ ई में हर वायटार राजेसे भाजियानाके कमान राष्मके नामक किमी अग्रिबे पचीन -क उप निवेश स्थापित किया। बर्हा पौपनिवेशिकीमें इन्फोर्मिसेसि को। १९८९ ई.में कमान साइबेसि इले पच्छि पश्च इन्फ्रान्सा मीजा। उप ममक तमाजू पर २ प्पिण इन्फ्रान्सा मगता बा बिन्टु १० वर्ष बाद प्रथम जीन्मने १९९१ ई.में इसको बड़ा कर ५ मिलियन १० पेंस कर दिया।

कुछ दिनों तक यूरोपमें इसका प्रचार शुरू पाट ४ मास होता रहा, मगो बिचारते थे कि इसका मियत्र गुण प्रति पादार्थकणिके है मानसिक पोड़ाको बह एक तर इले पच्छिम मशीपक है। जन्ममें कुछ दिन पोछे यह मर दूर हो गया। कुछ समय समाप्त राबा और पोपीको इन्फ्रान्सा म्बहार भठानिके लिए प्रति निष्ठुर दच्छको म्बहका करनी पको को। तुम्हें फ्रान्सेसि म्बुवाविशिके लिए पोछा कर बिटन और म्बुवाइकाके लिए भासाच्छेदनको म्बहका हुई। बिना किनो म्बह तो पाददच्छ तक होता बा। इतने पर भी तमाजूका म्बहकार बटा नहीं। जन्ममें एक-मास प्रच्छेदको म्बहकार म्बु को गई। बिटयो तमाजूका प्रामदुमोमइच्छ बहुत हो बड़ गया बा, पाश्चि १९९० ई.में बह भी उठा दिया गया। १९९० ई.को पादार्थकणिके मी मइच्छ उठा दिया गया और १९९५ ई.में कुछ बंधे हुए नियमोंके अनुसार इन्फ्रान्सा और क्वांटन वर्म म्बुवाइके तमाजूको खेतो करनेक कानून कुल मई।

मातृक ववाइ—यूरोपिकीके मतके पक्कर बाद माइक राजत्वके बाद पोर्तुगालकीय १९९२ ई.में इले भारतमें जाये थे। बहुतसे ऐना मां कहते हैं कि पब्लिशिका पाब्लिशारके बहुत पच्छे पयिया और भारतमें म्बुवाइक प्रचलित बा परन्तु पात्र तक इसका कोई प्रमाक नहीं मिला है। यूरोपिकीका कहना है, कि मच्छत

पच्छमें इसका कुछ उच्छेद नहीं मिलता तथा पयिया और भारतमें सर्वत्र इसका बड़ेसिक नाम होतेसे और मी निम्नास होता है कि यह इस देशमें कहीं भी ई.को १० यों म्बुवाइके पच्छे परिचित न को। बिन्टु मिशान्त साराकनो नामक बंधक पन्थीक "कनक" म्बुवाइ पार्ब तमाजू" है इस बातको म्ब मानते हैं। "कनकमपे इन्फ्रान्सा पार्ब" सुष्ट हो अनुमित होता है। क्बक देवी। इसक निवा इयून और मॉन्टेमद्रेयोव म्बुके रतिहाममें १९०४ ई.में लिखित पासाइ-बेबके बिबरकपे भी तमाजूको बात काहिर होता है।

पासाइबेब लिखते हैं—"बोत्रापुरमें मीने तमाजू नेक"। भारतवर्षमें पच्छम कहीं भा इसका पाया नहीं गया। मीने कुछ माइमें से पाया और क्वाइरातको एक मकी बनवाई। पक्कर बादमाइ मीरे उपहातोंको पा कर बड़े समुष्ट और विधित हुए। उर्बेनि कहा—"एत मी मोछे समयमें पापने इतनी पच्छमकी बोर्गे केले इच्छो मी? इसी समय काछोमें म्बुवाइक मी लता और पच्छाम्य बोकोको देख कर उर्बेनि पूछा, कि यह क्या है और पापने क्बयि प्राम को है?"

मवाइ का पापमने उत्तर दिया—इसका नाम है तमाजू, यह मका और मरीमिमें मिमियकपने म्बुवाइक होती है। क्बोम पादक पापको दवाके लिए इले काये है। बादमाइने उये देकमाक कर सुच्छि उनके क्बानिके लिए कहा। मं म्बुवाइक करनी मरी। उस समय बिबि म्बुक उर्बे" तमाजू पोनेके लिए नियेक करने मरी। मीरे पास तमाजू कुछ म्बुवाइको मीने पमोर उमरावोंके पास मो कुछ कुछ तमाजू-मैत्र दो। बिबन करके समीने और पाते को इच्छा प्रच्छ को। इस तरह तमाजूका म्बुवाइक प्रचलित हुआ। इसके बाद मीरागरेने इसका रोजगार करना उच्छ कर दिया। मगर बादमाइने इसके पीनीका प्रमाइक न काका।"

भारतमें भी इसके कुछ दिन बाद यूरोप मीमो उठना हुई। पक्करके समयमें तमाजूका म्बुवाइक प्रचलित हुआ बा यहो डोक है, बिन्टु क्वाइमोरिमें इसको पनित कारिता लमक कर इसके म्बुवाइकको इच्छ करनेके लिए ऐना पाद्रेय दिया बा बि—'तमाजूके पोनेके सुबकोबा

सन और स्वास्थ्य नाना प्रकारके टोपोंमें दूषित हो रहा है, इसलिए कोई भी इसे न पीये।" ईरान देशमें जहाँ गौरके भाई शाह अब्बासने भी इसी समय तमाकू बंद करनेका आदेश दिया था। जहाँगोरने तमाकू पीनेवालों के लिए "तगौर" (लटके गधे पर सवार होनेका) दण्ड जारी किया था।

मिख, ओहवो और कईएक योथोके हिन्दू, और जैनी धर्महानिकर होनेके कारण तम्बाकू नहीं पीते। सुसलमान लोग पहली इसमें बहुत छुणा करते थे, किन्तु दिन दिन वह लोप होती गई। वर्तमान समयमें भारतके प्रायः सभी स्थानोंमें तमाकूको खेतो एक मुख्य चीज हो गई है। विहारमें तमाकूकी प्रियता इतनी बढ गई है, कि उस पर कहावतें भी बन गई हैं—

"जो खाए न खाए तमाकू पीये।

सोनर बेटवा कैसे जीये ॥"

भारतवष की तमाकू अमेरिका वा विलायतों तमाकूको तरह व्यवसायसे उतनी आदरणीय नहीं है। जहाँ, १८२६ ई०में गवर्नरके तरफसे इसने लिए कोशिश की गई थी। कप्तान वामिल हॉलने इस विषयमें कलकत्तेकी एग्जिहाटिंकल चरैय सोसाइटीमें जैसा उपदेश दिया था, उसके अनुमार उन लोगोंने मेरिलेण्ड और भार्जिनिया तमाकूके बीजसे खेतो करके जो तमाकू पैदा की थी, वह विनायतमें बड़े आदरके साथ गृहीत हुई। विनायतों वणिकोंका कहना है, कि भारतीय तमाकूमें इतनी उमटा तमाकू उठाने और कभी भी नहीं देखते। यह तमाकू विनायतमें १ दोण्ड ६ गिलिं ८ पेन्सके हिमाइसे बिकी थी, किन्तु इसके बाद अहमदाबादमें एक बार तमाकू विनायतकी बेजी गई थी, उसका इतना आदर नहीं हुआ। उसके पत्ते ज्यादा सूखे और छोटे थे। हिन्दुस्तानकी तमाकूमें धूल-रेत ज्यादा होता है, इसलिए विदेशोंमें व्यवसायके लिए भारतकी तमाकू वणिकोंसे आदर नहीं पातो।

तमाकूकी खेती—१८८८-८९ ई०में सिंधर हुआ कि देसीय राज्योंको छोड कर ब्रिटिश अधिकारमें प्रायः लाख बीघा जमीनमें तमाकूकी खेती और उससे करोड़ मंन करीब तमाकू उत्पन्न होती है। भारतमें मन्द्राज, गोदा

वरी कृष्ण, कोयम्बातुर, विद्युत, ( बंगालमें ) रडपुर, ( बम्बईमें- ) खेडा और अहमदाबादमें तमाकूकी खेती अधिकतासे होती है। प्रसिद्ध "लङ्का तमाकू" गोटावरी और कृष्णा जिलेमें तथा त्रिचिनापल्ली-चूरटको तमाकू कोयम्बातुर और मद्रुरा जिलेमें उत्पन्न होती है।

युक्तप्रदेश—यहाँ प्रायः १२३८८४ बीघा जमीन पर तमाकू उत्पन्न होती है। फरक्काबाद और बुलन्दशहरमें ही तमाकू ज्यादा होती है। इस प्रदेशमें कहीं दो और कहीं तीन बार तमाकूको फसल होती है।

पहलो फसल ( यावणसे खेतो शुरू होनेके कारण ; "यावणो" नामसे प्रसिद्ध है। दूसरो फसल (जिठ अपाठसे फसल काटो जातो है, इसलिए ) "अमाटो" नामसे मशहूर है। 'यावणो' फसल ऋतु ज्ञानके बाद उसकी जड़ जो खेतोंमें रह जातो है, उसमें दूसरो मान वैशाखमें और एक फसल मिलतो है, जिसे 'रतून' फसल कहते हैं। 'रतून' फसल अच्छो नहो होती। इनाहाबादके पश्चिमाञ्चलमें फसल जड़के पामसे काटो जातो है और उसके पूर्वाञ्चलमें एक एक पत्ते तोड लिये जाते हैं। इस देशमें विहारको प्रसा कोठोमें पहले भी गाजीपुरमें तमाकूको एक कोठो बनो थी। वहाँ जितनी तमाकू हुई थी, वह इंग्लैण्ड और अष्ट्रेलियासे नमूनेको तौर पर बेजी गई थी। उस समय यह, सिरेके हिसाबसे बिकी थी।

इससे साबित होता है, कि हिन्दुस्तानी तमाकूको खेतो यत्पूर्वक को जान पर, वह अमेरिकाको तमाकूमें किमी अंशमें हीन नहो समझो जा सकती।

अयोध्या—यहाँ प्रायः ४०१२२ बीघा जमीनमें तमाकूको खेती होती है। मोतापुर और खेरो जिलेमें तमाकूकी खेती कुछ अधिकतासे होती है।

पञ्जाब—यहाँ १८५६६८ बीघामें तमाकूकी छपि होती है। जालन्धर, सियानकोट और लाहौर जिलेमें इसकी फसल ज्यादा है। इस प्रान्तमें विशेषतः लाहौर जिलेमें, निकोटियाना राष्ट्रिका वा कान्दाहारो वा ककर तमाकू ही ज्यादा होती है। लाहौरी ककर और धिकारपुरी ककर ज्यादा प्रसिद्ध है। इसका पत्तियाँ छोटी और गोल होती हैं। इसके सिवा यहाँ और भी

० ई तरुणा मयङ्कर तमाङ्ग पेदा होतो है ।

बोगदादो तमाङ्गरी पचन चक्र चक्की घोर ज्वादा होतो है, कारच किसान मोन बनिसे लिए इसकी बीज ज्वादा काममें मासि घोर पचन करती है । सभ्यत. इसके बोध सबसे पहले बोम्बार्दछे ही भारतमें लाये गये थे, इसी लिए इसका नाम पैदा पड़ा है ।

घोष—इसको पत्तिका चक्र नामी घोर मोखदार होतो है, इसलिये इसका नाम “मोखी” पड़ा है । यह देसी घोर “मोख” के सिद्धे दो प्रकारको है ।

लक्ष्मी—यह लक्ष्मी पचतसर घोर मियामकोटमें होतो है । इसको निषं पत्तिका को व्यवहृत होतो है, उठन किमो काममें नहीं पाते ।

पूर्वी—पहले बङ्गालमें इस जालिचा तमाङ्गके बीज ला कर लाहौरकी तरफ इसको खिती को गई यो रस-निय इसका नाम पूर्वी पड़ा है । इसको खेतमें यहाँ कुछ ज्वादा पचने पड़ता है । यहकि शीघ्र इसी पानके मास लाया करते हैं । घनिक लोग इसको पोते भी हैं ।

बेन्ती—इसकी पत्तिका दिक्कतमें बंगालको पत्तिकादि मिश्रतो-सुमते होती है, इस कारण इसका नाम बेन्ती पड़ा है । सम देगमें इसको प्रचार ज्वादा है ।

सुरली—सुरलमें बीज ला कर इसको पहले पचन खितो को मई को इसलिये इसका नाम सुरली पड़ गया । यह तिख घोर चक्की होतो है । कारनाम जिनमें देगो तमाङ्ग, जिनके गुण घोर पत्तिका पाकारानुसार तोन तरुणा उत्पन्न होती है—बुयङ्को, सुरलामी घोर चक्रगी । ईरा-इम्बानपनी जिनमें दो प्रकारका तमाङ्गको पैदायम है—मिन्धार घोर मारोवा । मारोवा पति निष्ठत तमाङ्ग है । यहकि लाय इसी ज्वादाकारो तमाङ्गके माप मिला कर पानी तमाङ्ग बनाते है । मारोवा तमाङ्गमें ज्वादा घोर गन्धको विमियता कुछ भी नहीं है ।

गिण्ड—परीप पचनके बाद इस देगमें तमाङ्गकी खेतो होतो है । यहाँ तमाङ्गको पहलो पचनको सिद्धा कहते हैं । एक मास बाद दूसरी पचन करती है, आ बादटो या “बाकटा” कहलातो है । गिण्डारपुरी तमाङ्ग एक देगमें जमदा समझो जातो है । इससे बिबा को

मोडी घोर सिन्धो से तोन तरुणा तमाङ्ग यहाँ होतो है ।

लशो—यह तिख घोर पचन पाम्पादविमित है ।

मोडी—इसका ज्वादा मोठेपनका लिए होतो है ।

शिन्धी—पति निष्ठत है ।

पचनकार—ज्वादिपचके प्रथम त मीनसा नामक ज्वादाको तमाङ्ग बहुत जमदा होतो है । बङ्गालमें यह मीनसाके नामसे प्रसिद्ध है । राजपूतानाके पत्तारगत पामिरका तरफ भी एक प्रकारको उत्कृष्ट तमाङ्ग पेदा होतो है जिनसे पामिरो कहते हैं ।

बङ्गा—इस देगमें यकेंद्र तमाङ्ग होतो है । तमाङ्ग का खेतोके लिए इस देगमें बिनो जमोन लगे हुई है इसका निषं यहाँ हुआ । ज्वादि यहाँ तमाङ्गको उत्पत्ति पचिकतासे होने पर मो देगको जिनमें जमको मिश्रतो नहीं है । रङ्गपुर विदुत पूर्विवा दरमङ्गा, २४ परगना, दुवार, चङ्गाम पहाड़ घोर कोचविहार जिनमें घोर जयइने तमाङ्गको खितो ज्वादा होतो है तथा सब ज्वानोंके उत्पन्न प्रथम जो व्यवसाय चलता है । पचास ज्वानोंको तमाङ्ग जहाँकि मोमोके व्यवहारमें जतम हो जाती है । जो बिद्यान तमाङ्गको खिती करने का नियत करता है, वह सबक लिए मात्रा अपने तर या मोम्बने पानको जमोन सुनता है । बाराहातको तरफ जहाँ नामका खिती बंद हो गई है, उन जमीनों पर तमाङ्गको खितो पचनी होती है । जालन माद्र घोर पामिर माममें, तमाङ्गके पीछे ११६ इंच होने पर लक्ष्मी पूरको जमीनमें गाड़ते हैं तथा माचने चैत्र मास तक पत्तिका तोड़ लिए जाती हैं । रङ्गपुर घोर चक्रकी तमाङ्ग समस्त पूर्वभारत घोर ब्रह्मदेगमें जाती है । रङ्गपुरको जमोन घोर पाच-जवा तमाङ्गके लिए बहुत हा उत्पत्ती है । राजपूतानाका पनुमान है कि कुछ दिन बाद चक्रको तमाङ्ग घोर मो जमदा हो कर बहुतसे देगमें बिस्तृत होगी । तमाङ्गका रसा करनेको व्यवसाय चक्की होने पर इस विषयमें पाम्याके पनुमार जल मिल सकता है ।

१८७० ई.में रङ्गपुरके एक पचिकने अपने यकने प्रस्तुत तमाङ्ग वैरिपको प्रदर्शनीमें भेज कर पदक पुरस्कार



पाया था। रङ्गपुरकी तमाकू टिगोय लोकोकी बहुत प्रिय है। उक्त जिलेमें इसकी खेती आज कल धान या सनकी समकच ही गई है। प्रति वर्ष ४०५० मग आ कर सब तमाकू खरोदते और कलकत्ते, नारायणगञ्ज, चट्टग्राम और ब्रह्मदेशकी भेजते हैं। इसका अधिकारी ही ब्रह्म और कलकत्तेमें 'वर्माचुरट' बनानेके लिए व्यवहृत होता है। यहाँ प्रति बीघेमें लगभग ३४ मन तमाकू उत्पन्न होती है और ६, ७ रुपये मन विकती है। मग लोग ब्रह्ममें चुकटके लिए तमाकू छांट कर लेते हैं। खूब चाँडे, मोटे और मोठे-कड़े पत्ते वे ७ मनके भावसे भो खरोट लेते हैं। यहाँ सबसे उमदा तमाकूके पत्ते हाथीके कानके समान होते हैं और "हाथोकान" नामसे ही उनकी प्रसिद्धि है। मग लोग इस तमाकूको ही अधिक पसंद करते हैं। कीचविहारकी तमाकू भी बहुत उमदा होती है। २४ परगना और नदोद्यामें जितनी तमाकू पैदा होती है, वह स्थानीय लोगोंके काममें ही जाती है। बारासत, बनगाँव और रानाघाटमें जो तमाकू पैदा होती है, उसमेंसे कुछ रफतनी भी होती है।

गोवरडांगाके निक्षुटवर्ती गाइघाटा थानेमें ३४ मान दूरी पर यमुनाके पश्चिम किनारे छिड़ली ग्राममें जो तमाकू होती है, वही बङ्गालमें 'छिड़ली' नामसे सर्वापेक्षा प्रसिद्ध और उत्कृष्ट समझी जाती है। रानाघाट और बारासतकी तमाकू भी छिड़लीके नामसे चलती है। असली छिड़ली ग्राममें उत्पन्न तमाकू परिमाणमें थोड़ी होती है। सुना गया है, कि छिड़ली ग्राममें २३ बोघा मात्र जमीनमें इसकी खेती होती है। छिड़ली-तमाकू ५ से ८ मन तक विकती है।

आधानमें—तमाकू बहुत काम पैदा होती है, किन्तु यहाँके मिशमी और अरब जातिके स्त्री-पुरुष मात्र ही तमाकूके प्रेमी हैं। वे प्रायः बिना हुकूमके निकलते ही नहीं। यहाँ बङ्गालसे तमाकू आती है। पार्वत्यजातियाँ अपने कामके लायक थोड़ी तमाकू बोती हैं। कुकी लोग हुकूमको लकड़ीकी चवा कर नशा करना पसन्द करते हैं।

विहारमें—गङ्गानदीके उत्तरकूलमें तमाकूकी खेती होती है। यहाँ तीन प्रकारकी तमाकू पैदा होती है—देशी वा बड़की, विलायती वा कलकतिया और जेठुया।

जेठुया तमाकूको पूस माघमें बोते और बरमातमें काटते हैं। दरभङ्गामें ही तमाकू ही खेती ज्यादा है। विहृत और नाजपुरकी तमाकूकी ही इस प्रदेशमें अच्छी समझी जाती है। इसके पत्ते खूब बड़े होते हैं। सम्भवतः यही तमाकू कलकत्तेको तरफ "मोतिहारो तमाकूके नामसे प्रसिद्ध है।

इस देशमें प्रति बीघामें लगभग ६१० मन तमाकू पैदा होती है। किन्तु सर्वोत्कृष्ट तमाकूका मूल्य ५ मनसे अधिक नहीं होता। इधरकी तमाकू ही नेपाल, गोरखपुरमें रेल और नावसे युक्तप्रदेशके अन्यान्य स्थानोंमें पहुँचती है। किमो किमी जमीन पर पहलो फसलमें २० मन और दूसरो फसलमें १५ मन तक उत्पन्न होती है। किमो किमो जमीन पर ३४ बार भी फसल होती है। यहाँ विद्युतके अन्तर्गत पूमा नामक स्थानमें अंग्रेजोंने नोनकी कोठीकी तरफ तमाकूकी कोठी बनाई है। उनकी खेती बहुत अच्छी होती है।

बम्बई—इस प्रदेशमें प्रायः १०२४६१ बीघेमें तमाकू पैदा होती है। खेडा और खानदेशको तरफ ही तमाकूकी खेती ज्यादा है। खेडा और बनगाँव जिलेमें मुख्यरूपमें इसकी आवादी है। गुजरातमें एक तरफको उमदा तमाकू होती है, जो युक्तप्रदेशकी भेजी जाती है। पारस्यदेशीय मिराजा और अमेरिकाकी हावाना, मेरोलेण्ड आदि तमाकू इस देशमें पैदा होती है।

महौंच जिलेमें इनकी आवादी ज्यादा है। यहाँको तमाकू अधिकतर मरिचगङ्ग और बोरवाँ होपमें भेजा जाती है।

मद्राज—इस प्रान्तमें २६३५८० बाघा जमीन पर तमाकूको फसल होती है, जिनमें कृष्णा जिलेमें ही इसकी खेती ज्यादा है।

गोटावरी जिलेको 'लडातमाकू'के सिव दिन्दिगुल और विचिनापल्लीकी तमाकू ने भी इंग्लैंडमें ख्याति नाम का है। इससे खुरट बहुत उमदा बनती है।

इस देशके अंग्रेजोंकी श्रेयोक्त दो प्रकारकी तमाकू ही ज्यादा पसन्द है। दिन्दिगुल-तमाकूका व्यवहार बहुत ज्यादा है। मसलीपत्तनकी तमाकू नस्यके लिए प्रसिद्ध है। यहाँको नास प्रथिवो भरमें प्रचलित है।



और सुगन्धित बनानेके लिये उसमें सड़े केने, अंतर तथा अन्यान्य मशाने डालते हैं ।

'गुडु, क' वा पोनी तमाकूमें खमोरा ही विगिय प्रसिद्ध है । बहुत उमदा तमाकूके पत्तोंके साथ गुनकन्द ( जिसरो और गुलाबको पखडोमें बनता है ), सेवका सुग्खा, पानका सूखा हुआ चूरा, सुग्कवान ( चन्दनको भाँति सुगन्धवानो लकडो ), चन्दन, इलायचो, केवडेका इत्र कोकनवर ( सुमिष्ट फलविगिय ) और अमल तामका चूर्ण मिला कर फिर उसे मड़ा कर खमोरा-तमाकू बनायो जातो है । मस्रोमें मस्रो खमोरा-तमाकू रूपमें 50 सेर तक विकतो है । अमलो खमोरा-तमाकू ढण्ड में भर कर बिना वजनके विकती है । पञ्जाव, दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानोंमें खमोरा-तमाकू बनती है । खमोराके साथ भफेट तमाकूके पत्ते मिला कर दूसरो तमाकू बनती है ।

विहारको तमकू खमोरा बनानेके लिए जटामांसो, छरिना, सुगन्धवाला और सुगन्धकोकिल नामक गन्धव्य मिलाते हैं । लखनऊमें "बादशाही" तमाकू खमोराके अन्तगत है । यह अति उपादेय वस्तु है ।

पोनी-तमाकू बहुत जगह अच्छो बनतो है । पञ्जावकी खमोरा और लखनऊको बादशाही-तमाकूके सिवा चुनार, चण्डालगढ, गया आदिकी तमाकू भी बहुत उमदा होती है । बङ्गालमें विशुपुर और आनरपुरकी पोनी-तमाकू अति उल्लूक समझा जातो है । कलकत्तेमें विशुपुर, आनरपुर, गया, चण्डालगढको तमाकू ही ज्यादा विकतो है । इनके साथ याहकोंको रुचिके अनुसार खमोरा-तमाकू भी मिलाई जाती है । विशुपुरकी सर्वोत्कृष्ट पोनी तमाकू कलकत्तेमें ॥) सेर विकतो है । द्विजनीमें इसको "पियानी" वा पिइनी कहते हैं । तमाकू पोनीके लिये दुका, नलो आदिकी आवश्यकता होती है ।

नम्य वा नास । - ममलोपत्तनकी नाम जगदप्रसिद्ध और जगत्प्याप्त है । यह बीतल भर कर बेचो जातो है और खुब सरस और खुगवदार होतो है । इसके सिवा काशी, उड़िया और पञ्जाव प्रान्तमें भी सूँघनो बनती है । काशीको नास सुगन्धयुक्त और प्रसिद्ध पर बहुत कड़ो होतो है । पञ्जावमें नोका और विहारमें मोतिहारा नाम

बनतो है । कर्पाटक प्रदेशमें पोनी तमाकू नहीं चलती, सूँघनीका हो अधिक प्रचलन है । इस देशमें हिन्दू लोग, दुका क्या चीज है यह भी नहीं जानते । सुपनमानोंके दुकूमें तमाकू पोना हिन्दुओंके लिये जातिनाशका कारण समझा जाता है किन्तु नम्यसेवन अति आदरणीय है । यहदो, आर्मनो और अरबके व्यवसायी लोग ममलोपत्तनकी नास ले कर नाना स्थानोंमें फिरते हैं । ममलोपत्तनकी नम्यप्रसृतप्रणालो बहुत हो महज है । जितनो पत्तियाँकी नास बनानो हो, उसके उगठल और नम्य निकाल कर आधीकी घासमें सूखा दे' और सूख जाने पर उसका चूरा बना ले । बची हुई आधो तमाकूकी नमकके पानोमें उबाल ले । उबालनेके बाद जो पानी बचे, उसमें नया तमाकू भी उबालो जा सकता है । उमा करते रहनेमें पानी क्रमशः तमाकूके पर्यसे गाढ़ा होता रहता है । अन्तमें पानी जब गुडकी तरफका हो जाता है तब उसको ठण्डा किया जाता है । फिर उसमें घोडोमी ब्राण्डी ( विलायतो गराव ) मिला कर पूर्वोक्त तमाकूका चूरा डाल दिया जाता है । कुछ दिन तक यह सड़ता रहता है । पोछे वह नम्य बीतलमें भर कर बेचा जाता है ।

चुरुट—विगिरापलो, ब्रह्मदेश आदि स्थानोंमें चुरुटके कारखाने हैं । इन स्थानोंसे अपने नामसे मसहर हर तरहके चुरुटोंका विलायतके लिए रफ्तानी होतो है । इनके सिवा सभा जगह टेंगो चुरुट बनते हैं । मानिझा, डामाना, लङ्का और यवहोपको तमाकूके चुरुट भी विदेशकी जाते हैं ।

बाँधी—यह शाल या बादाम आदिके पत्तोंमें तमाकूका चूरा लपेट कर बनाई जातो है । गरीब लोग इसे चुरुटकी तरह सुलगा कर पोते हैं । यह ब्राह्मणोंके सिवा अन्य लोगोंके लिए बड़ी प्रिय वस्तु है ।

'खैनी' वा 'सूखा'—पश्चिममें विगियतः विहारमें इसका ज्यादा प्रचार है । तमाकूके सूखे पत्तोंकी 'खैनी' कहते हैं । बंगालमें इसे 'टोला' कहते हैं । लोग इसको चत्रा कर खाते हैं ।

सूखा—तमाकूके पत्तेको चूनाके साथ रगड कर गोलीसी बना लेते हैं और जोभके तले रख कर इसका रस चसा करते हैं ।

शुद्धी—तमाकूमें बस्तूरी चन्दन पाटि मजाने डाक कर उसे सूटेँ और मटरको बराबर मोलिया बना ले । यह पानके साथ खायो जातो है । कागोको सुरतो उमंग होनी है ।

विषेणवा—तमाकूके फलोंने एक प्रकारका निर्यास निकलता है, जो विषाक्त है । बुद्धों को जलोमें उबल तीन घोर तमाकूके पत्ते पाबइत होते हैं । देघोय वैद्योंके मतमें तमाकू संकामक तथा विषाक्त है ।

बुद्धोंके पानोसे विष कीड़े पाटिखा विष घोर सूजन आती रहती है । बुद्धोंको लडकुमें जो तैयबत्त के इद्रय निकलता है, उससे नमका चाव घोर रतींधो पक्को हो जातो है । जोषदवाइ रोपमें भास, चूना घोर सुप्तालो चम्पसइतकी झाडका चूरा तोनाको एक पात्र मिखा कर प्रसेध मेंसे रोग धारोख होता है । डा० मिखला लइग्य है, कि बसुइहकारमें सेकदण्ड पर तमाकू को पुस्टिध दिनेसे मज्जा पड़ता है । ग्यादा नाम सु घनेसे घमोचता ग्याग सुबट पीनेसे शरीरयन्त्रमें दुर्बलता, यकृत्में कार्यज्ञान पाचयन्त्रमें कार्यज्ञानि इखादि सोनो है । जसो जसो लकवा जेसा पापिप मो होता है । तमाकूके चशमे खुप पानोसे सेकने पर बसुइहकारका पापिप बट जाता है । तमाकूका इच्छुइ मइकीके शुद्ध सेगमें मयानेमे खुदु विरचन होता है । एक तरवका पीत बसुनेसे उस पर तमाकूका पत्ता बाँध देनेसे सूजन घोर दह जाता रहता है पर तिर घोर टेक बूमती तथा ले होती है । झोकनाहन विषमें तमाकूका पानो प्रतिविषक का काम करता है । चुनेमें तमाकूके पत्ताका चरा मिखा कर ड्रीहा ( पिपहो ) के ऊपर उसका प्रसेध देनेसे फायदा होता है । मसुडे फुलने पर तमाकू दवा रक्नेसे पाराम्यपड़ता है ।

इसके चनावा यणे तमाकू विषलका चमक्याम को हो इपने लहार, बमन दस्त घोर जालो हो जाती है । पहला लकवा मो हो सकता है । तमाकू चशमिसे जितन पनिट होता है उतना तमाकू पीनेसे जहाँ होता तथा मध्य शीरेमें कचने मो काम पनिट होता है । नाम घुँसने में घीखाइदि, प्राचमइकी तोस्तताका नाम पन्निमाइदा घोर पादका परिचर्तन हो जाता है ।

तमाकूमें दो प्रकारका तैल घोर एक प्रकारका चार है । इन तीन चीजोंने जो उबल कार्य होते हैं । एक प्रकार का तैल उदासु है । पानोमें तमाकू उबालनेसे, पानोके ऊपर यह तैल तेरने लगता है । इसमें जो तमाकूको मध्य घोर घाइल ( छोड़ा गया मानेवाला )-सुख रहता है यह उप्ताप लकनेसे चायुर्में मिस जाता है । तमाकू पीते समय खुप क नाव वइ हो शरीरमें जा कर पपना प्रलय प्रकाय करता रहता है ।

दुपरे प्रकारका तैल तमाकू जन्मते समय चूता रहता है । इसका स्वाद कइभा होता है । यह विषाक्त द्रव्य है । इसको एक जो सूँटेने बिलोको दम निकल आतो है । मिनिवार या मिरकासे इस तैलको गोहित कर छिनेसे इसका लहर जाता रहता है ।

तमाकूका हा—छोड़ाना मध्यकइरावक मिखा कर ईवतु पखजन्में तमाकूको मियो दे, तिर उसमें जसोका चूना डाल कर उसे सुपावे ऐसा करनेसे एक प्रकारका चर्ब जोन तैयबत्त उदासु चार मिलेगा । यह जन्मि भारो घोर घति विषाक्त होता है । इसको एक सूँटेने कुत्ता घर आता है । इसकी मध्य इतनी तीव्र है कि एक घरमें यदि इनको एक बूद बजाके पात्र मिखा जाव तो वहाँ खाम लेना मो कटकर हो जाता है । सूँटे तमाकूके पत्तेमें यह चार रमे उभाय तक रहता है । श्वेती जान वाले उससे साव चूना मिखा कर खाते हैं, इसविप उससे शरीरमें इस द्रव्यको पनिहकारिता बहुत ज्यादा होती है ।

बुद्धोंमें पानी रहनेसे कारक बुद्धोंमें तमाकू पीने पर उबल विषाक्त द्रव्य शरीरके पन्दर पख परिमाणमें पनिह होते हैं । हएँके साव, जलोके भोतरसे पानिधे जमय, उसका कुछ पय जलोमें घोर कुछ पानोमें रह जाता है । जलोदार बुद्धोंको जपो बड़ो होनेपर कारक उसमें विषाक्त द्रवा घोर मो काम पीटमें आने हैं । सुबट पीनेसे यह सुभोला नही होता । मध्य जगते समय तमाकूका चार घोर तैल भाग बहुत कुछ नष्ट हो जाता है, इस कारक सुबटको पपिका बइ काम पनिहउर है । सुविधो पर ८० करोड़से पविध मोय तमाकू पीते हैं । पाहा द्रवाइ विषने शरीर घोर मग कुछ उत्तेजित घोर चरमादग्य होता है,



तमासिनो (म० षो०) तमानो तमासवर्षोऽन्वङ्गः  
 इति इति षोप । १ तास्यनित दिग्वा एक नाम ।  
 २ भूम्यामश्वी सुर्योऽन्वङ्गः ।  
 तमानो (घ० षो०) तम आन्तु गोरा० षोप । १ चिच  
 षूटर्म होमिवातो ताम्रवको नामचो भवा । २ मन्त्रिहा  
 मश्रोः । ३ वदन्वङ्गः ।  
 तमायसीन षि० पु० ) तमाया देवनेवाना, मेनामौ ।  
 २ वेम्नागामो र षोबाच ।  
 तमायसीनो ( षि० षो० ) वेम्नागामी र षोबाचो ।  
 तमाया (आ० पु० ) १ चित्तको पमक करजनावा इग ।  
 २ पशुत व्यापार, धनोषी वात ।  
 तमायाई (घ० पु० ) नच जो तमाया ईकता हो ।  
 तमाचव (म० षो०) तासोयपत्र ।  
 तमि (म० पु०) तम्यते खायतेऽय तम इत् । ३ वाङ्म्यो  
 इत् । इत् ३।१२० । १ रात्रि रात । २ मोह । ३ इरिडा  
 इत् ।  
 तमिन् (म० षि०) तम चि तुन् । इत्यन्वङ्गोऽन्वङ्गः ।  
 वा ३।१२० । चन्वकारतुक्, चर्षिरा ।  
 तमिनाय (म० पु०) तमोर्ना नायः । ३ तत् । निगानाय,  
 चन्द्रमा ।  
 तमिपोषि (म० षो०) तमि मोह मिहति मिच इन्  
 न प्रायो वलं इवो० दोषः । १ चपरोमिद एक चपराका  
 नाम । (अर्षे ३।३।४) ( षि० ) २ नमकान् ताकतवर ।  
 तमिस्र (म० षो०) तमोऽन्वङ्गः । अन्वङ्गः तमिषेः । वा  
 ३।१२० । इति निपातनात् साधु' वा तमिस्रा चन्वकार  
 त्वात्वा चन्व । १ चन्वकार, चर्षिरा । २ मोह, गुष्ठा ।  
 ३ नरबन्धियेव एक नरबन्धका नाम । ( मानस ३।१।२० )  
 तमिस्रपच (म० पु०) तमिस्र चन्वकार तत्प्रधानो  
 पचः, मन्वपचमी० । स्रपच, त्रित मामका स्रपच  
 चर्षिरा हो ।  
 तमिस्रा (म० षो०) तमो बहुत्वमिति चन्वा । अन्वङ्गः  
 तमिषेः वा ३।१२० । इति निपातनात् साधु' । १ चन्व  
 कार रात्रि, चर्षिरो रात । २ इत्यं रात्रि चमावसा  
 निचिषी रात । ३ तमस्तनि, चन्वकार रात्रि । ३ इन्द्रि,  
 इन्व दी ।  
 तमी (म० षो०) तमि-द्वोश् । १ रात्रि रात ।  
 २ इन्द्रि, इन्व दी ।

तमोचर (म० पु०) निगावत्, दोष दनुत्र ।  
 तमोत्र (घ० षो०) १ विवेक भवे इरेका निचार ।  
 २ पदचान, बिह । ३ चान बुदि । ४ चन्व, चापद ।  
 तमोपति (म० पु०) चन्द्रमा निगाकर ।  
 तमीग (म० पु०) चन्द्रमा ।  
 तमुद्गुचोय (म० षो०) तमुद्गुचि इत्यादिकचर्षमिहन्व  
 प्रकृता इतिष् । सुकषिद, एक सुकषा नाम ।  
 तमिठ (म० षि०) ताम्यति तम एव । न्यामिहन्व, निषे  
 स्या हो ।  
 तमोग (म० षि०) १ चन्वकारमी चानिवावा ( पु० )  
 २ चन्वका नामाकर ।  
 तमोगु (म० पु०) राहु ।  
 तमोगुच (म० पु०) तमः गुचः, ३ तत् । सुकृतिवा  
 यतोय गुच । इम गुचका मावाच होमिने मत्तुवा होमि  
 या कर चराद्वी चराव काम करति है । तमद् वेको ।  
 तमोगुचो (म० षि०) तिमका इतिमि तमोगुच हो ।  
 तमोत्र (म० पु०) तमोऽन्वङ्गः वा मोह प्रकृत, च्चि  
 चन्व टक् । १ सुय । २ यत्रि पाय । ३ चन्द्रमा । ४ हुह ।  
 ५ चिष् । ६ चिच, मवादेव । ७ चान । ८ दोष,  
 दोष, चिराग । ९ बीहमन्वे मिबमादि । ( षि० )  
 १० तमीनागक, त्रिहसे चर्षिरा दूर हो ।  
 तमोच्योतिस (म० पु०) तमसि च्योतिर्यन्व, इन्वदी ।  
 चपोत सुमन् ।  
 तमोद्वयं (म० षो०) यैतक च्चद, नच च्चर्षी  
 पित्तके प्रकीपये सत्य हो ।  
 तमोदुद (म० षि०) तमोऽन्वङ्गः चन्वकार वा तुदति  
 मुद-क्षिप । १ चमि, पाय । २ सुय । ३ चन्द्रमा ।  
 ४ दोष, दोषा, चिराम । ५ तमीनागक, तिमिने चर्षिरे  
 दूर हो ।  
 तमोदुद (म० पु०) तमीदुदति मुद-क । एवचर्षि ।  
 वा ३।१२५ । १ च्चमि, पाय । २ चन्द्रमा । ३ इत्यर,  
 प्रकृतिपरक । ( षि० ) ४ चन्वकारनागक । ५ चानान  
 नायक ।  
 तमोऽन्वङ्ग (म० पु०) तमोऽन्वङ्ग चरोति छ-क्षिप ।  
 १ चन्व जो नमदा प्रकृत निगाग करता हो । २ चन्व  
 त्रिमिने नमदा चन्वकार दूर होना है ।

तमोऽन्त्य ( सं० स्त्री० ) ग्रहणसेद, दश तरहसे ग्रहण ही नकता है, उनमेंसे तमोऽन्त्य एक है।

तमोऽन्त्र ( सं० पु० ) तमोऽन्त्रकारं अपहन्ति अप-हन-ड । अदे लेजनमसोः । पा ३, २। १० । १ सूर्य । २ चन्द्र । ३ ग्रहनि । ४ ज्ञान । ( त्रि० ) ५ तमोनाशक, जिमसे अँधेरा उठ हो । ६ मोहनाशक ।

तमोभिदृ ( सं० पु० ) तमस्तिमिरं भिनति नाशयति भिदृ-क्तिप् । १ खद्योत, जुगनू । ( त्रि० ) २ तमोभेदक, जिमसे अँधेरा दूर हो ।

तमोभिद ( सं० पु० ) तमोभिदृ देखो ।

तमोभूत ( सं० त्रि० ) १ अन्धकारकृत, अँधेरा किया हुआ । २ आज, अज्ञानो, जड़, मूर्ख, नादान ।

तमोमणि ( सं० पु० ) तमसि अन्धकारे मणिरिव । १ खद्योत, जुगनू । २ गोमेटक मणि ।

तमोमय ( सं० त्रि० ) तम आत्मकं तमः प्रचुरं वा तमस्-मयट् । १ अन्धकारात्मक, अँधेरासे घिरा हुआ । २ अज्ञानाहत, अज्ञानो, मूर्ख । ३ तमोगुणयुक्त । ( पु० ) ४ राहु ।

तमोरि ( सं० पु० ) सूर्य ।

तमोलिन ( हिं० स्त्री० ) तँवोलिन ।

तमोलिमा ( सं० स्त्री० ) तममा लिप्यति लिप-क्त निपात-त् डोप् । जनपदविशेष, एक मुल्कका नाम । इसके पिय—तामलिम, वेलाकुल, तमालिका, दामलिम, तमालिनी, स्वम्बू और विष्णुगृह है । तमलुक देखो ।

तमोली ( हिं० पु० ) तँवोली देखो ।

तमोविकार ( सं० पु० ) तमसैव विकारो यत्र, बहुव्री ।

रग । तमो विकार, ६-तत् । २ तमोगुणका विकार, निद्रा और अलस्य आदि । तमस् देखो । ३ तमिस्त्रा, रात्रि, रात ।

तमोवृष् ( सं० त्रि० ) तमसि वा तमसा वर्धते वृष्-क्तिप् ।

तमोवृषे गतमे धूमनेवाला राक्षस । २ अज्ञान वृद्ध, भारो नादान ।

तमोवृष्ण ( सं० पु० ) वल्गोक ।

तमोहन ( सं० त्रि० ) तमोहन्ति हन-क्तिप् । १ अज्ञान-नाशक । २ अन्धकारनाशक, सूर्य, चन्द्र प्रभृति ।

तमोहर ( सं० त्रि० ) तमो हरति ह-अ । १ अज्ञान-

नाशक । २ अन्धकारनाशक, जिमसे अँधेरा दूर हो । ( पु० ) ३ सूर्य । ४ चन्द्रमा ।

तमोहरि ( सं० पु० ) तमसा हरिः, ६-तत् । १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ ज्ञान ।

तम्बा ( सं० स्त्री० ) तम्बति गच्छति तक्-अच्-पृषो० साधुः । सोरभेया गाभो, गच्छो गाय ।

तम्बा ( सं० स्त्री० ) तम्बति तम्ब-अच्-टाप् । गाभो, गाय । तम्बिका ( सं० स्त्री० ) तम्ब ग्बु-ल टाप् जापि अत इत् । गाभो, गाय ।

तम्बोर ( सं० पु० ) तम्ब-ई-गन् । योगभेद, ज्योतिषका एक योग । योग देखो ।

तम्बीर—१ अयोध्याके सीतापुर जिलेको विसवन तडसोन का परगना । इसके उत्तरमें खेरो जिला, पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिममें कुन्ड्रि, विसवन और लानरपुर परगना हैं । भूपरिमाण १८० वर्ग मील है । इस परगनेमें बहुतेरी नदियाँ बहती हैं । उत्तरमें दहावर नदी तथा पश्चिममें घर्वरा, चौका और कई एक छोटी छोटी नदियाँ, मध्यदेशको विच्छिन्न करती हैं । इस परगनेमें सब जगह एक प्रकारको गोली मट्टी पाई जाती है । इस कारण खेतमें जल सींचनेका प्रयोजन नहीं पडता है । वर्षाकालमें परगनेका प्रायः सभी ग्राम जलझावित हो जाते हैं । चौका और दहावर नदी अक्षर प्रवाहपथ बदला करती हैं । ये दोनों नदियाँ जिस ग्राम हो कर बहती हैं, प्रति वर्ष उस ग्रामकी बहुत क्षति होती है ।

तम्बीर परगनेके कुर्मी और मुराव गृहस्थ कृषिकार्यमें बड़े सुदक्ष और अभिज्ञ हैं ।

इस परगनेमें १६६ ग्राम लगते हैं । इसमें ८० तालुक हैं, जिनमेंसे ४३ गाँव राजपूतोंके अधिकारभुक्त हैं । ८६ ग्राम जमोन्दारी हैं, इनमें भो ४०के अधिकारी गौड राजपूत हैं ।

तम्बीर परगनेमें सोरा तैयार होता है । एक सहक इस परगने ही कर सीतापुरने मझापुर तक चला गई है ।

२ उक्त सीतापुर जिलेको विसवन तडसोनका एक शहर । यह मझापुरसे ६ मील पश्चिम य पोनापुर शहरसे ३५ मील उत्तर पूर्व में अवस्थित है । १८८० वर्षमें अधिक समय हुए, ताम्बूलोंने यह नगर स्थापन किया





व्याघ्रविशेष, लकड़बग्घा, चरग। पर्याय—तरलु, सृगादन और तरलुक। (शब्द०)

यह मांसाग्री हिंस्त्रजन्तु है। इसका आकार बाघके समान और सर्पाङ्ग रेखादि द्वारा चित्रित होनेसे, इसको हायना (Hyena Striata) भी कहते हैं। यह कुत्ते-से कुछ बड़ा होता है, इसके शरीरका चमड़ा पिङ्गल-वर्ण लोमोंसे ढका है तथा स्तम्भ कपिश रेखान्वित और पोठ पर केन्द्रकी तरह दीर्घलोम हैं। इसके सामनेका पैर पीछेसे कुछ बड़ी और पूँछ छोटी होती है। पेटकी धारियाँ सुस्पष्ट होती हैं, पोठका रंग घोर होनेके कारण वहाँकी तिरछी धारियाँ स्पष्ट नहीं देखी जाती।

इसको दोनों डाढ़ों (डाँह) अत्यन्त मजल और दृढ़ हैं और तो क्या यह उनमें बड़ो तककी कतर पकता है। ये भारतवर्ष, सिन्धु, अफ्रीका, अरब, आदि स्थानोंमें रहते हैं। ये घने जङ्गलोंमें रहना पसन्द करते हैं। विरल गुह्यपूर्ण पर्वतको गुहा, नदीतोरस्य वनके प्रान्त आदि स्थानोंमें ही इनका वास है। दिनकी पर्वतकी गुहा वा जङ्गलके गर्तोंमें सोते हैं तथा मन्थ्याके वाट श्मशानमें, नोकानयके किनारे वा प्रान्तरमें आहारकी खोजमें निकलते हैं। ये सुट्टे खाते और उनको बड़ो चवाना पसन्द करते हैं। कुत्ता, भिल्लो, गाय, बकरी इत्यादिको पाले हो पकड़ ले जाते हैं।

इसकी गर्जनेमें एक प्रकारका विकट शब्द होता है, कुत्ते भी उसे सुनते ही उसीकी ओर भागते हैं, इसी मीठे पर यह कुत्तोंकी पकड़ता है। स्वभावतः यह डरगोक होता है। यह मनुष्य पर प्रायः आक्रमण नहीं करना। समतल स्थानमें ये उतनी तेजीसे नहीं दौड़ मयते किन्तु पार्वत्यस्थानमें इसको दौड़ देखनेसे विस्मित होना पड़ता है। वधपनमें पालनेसे यह हिलता है, पर ज्यादा उत्तेजित करने वा छेड़नेसे यह भयानक हो जाता है। नाना स्थानोंमें नाना प्रकारके तरलु देखनेमें आते हैं। उन मभीका स्वभाव प्रायः एकसा है।

इसके गुहापारके नीचेकी टैलोको चमड़ा निकुचा रुड़े है। इसमेंसे पहले योकाङ्ग लोग इसकी उभय निद्रा समझते थे। इति, इतिग्राम आदि प्रसिद्ध ग्रन्थकारोंने लिखा है, कि यह एक वर्ष तक मुनिद्र रहता है, दूसरी

माल स्त्रीलिङ्ग ही जाँता है। इस प्रकारके और भी बहुतसे अलीक उपाख्यान हैं, जिनसे गोक-ऐन्द्रजालिक-गण इसको बड़ो, चमड़ा, लोमादि, जादू आदि विषयोंमें आश्चर्यशक्तियुक्त जान कर आदरके साथ रक्खा करते थे।

तरलुक (सं० पु०) तरलु स्वार्थे कन्। तरलु देखो।

तरखा (हिं० स्त्री०) तीव्रप्रवाह, तेज प्रवाह।

तरखान (हिं० पु०) बढई, वह जो लकड़ोका काम करता हो।

तरगुलिधा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका छिछला वस्तु जिनमें अन्नत रखा जाता है।

तरङ्ग (सं० पु०) तरति प्लवते इति तृ-अङ्गच्। तरलादि-

शब्। उण् १११९। जर्मि, लहर, हिलोर। वायु द्वारा

नदी इत्यादिका जल उछाले जाने पर वह तिर्यक् रूपमें

बहने लगता है, इस प्रकारकी गतिका नाम तरङ्ग है।

एकमात्र वायु ही तरङ्गका कारण है। इसके पर्याय—

भङ्ग, जर्मि, जर्मि, वीचि, वोची, हलो, विलि, लहरि,

लहरि, जललता, शृङ्गि, चल्कलिका और जर्मिका है।

२ वस्त्र, कपडा। ३ अश्व प्रभृतिका समुत्फाल, घोड़े

आदिको फलाँग या उछाल। ४ चित्तको उमङ्ग, मनको

मौज। ५ एक प्रकारको चूड़ी जो हाथमें पहनी जाती

है। ६ खरलहरी, मङ्गोतमें खरोंका चढाव उतार।

तरङ्गक (सं० पु०) तरङ्ग-स्वार्थे कन्। १ पानीको

लहर, हिलोर। २ मङ्गोतमें खरोंका चढाव उतार।

तरङ्गमौर (सं० पु०) तरङ्गिन भोर, ३-तत्। चतुर्दश-

मनुका पुत्रभेद, चौदहवें मनुके एक पुत्रका नाम।

तरङ्गवतो (सं० स्त्री०) तरङ्गिणी, नदी।

तरङ्गालि (सं० स्त्री०) नदी।

तरङ्गिणी (सं० स्त्री०) तरङ्गिन् स्त्रियां ङोप्। मदी,

सरित्।

तरङ्गित (सं० त्रि०) तरङ्गः सञ्जातोऽस्य तारकादित्वादि-

तच्। १ जाततरङ्ग, हिलोर मारता हुआ, लहराता हुआ। २ चञ्चल, चपल। ३ भङ्गिविशिष्ट।

तरङ्गिन् (सं० त्रि०) तरङ्गोऽस्य तरङ्ग इति। १ तरङ्ग-

युक्त, जिसमें लहर हो। २ आनन्दो, मनमौजो।

तरचखी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा। यह सजा-

वटके लिये उद्यानमें लगाया जाता है।

तारका ( हि० श्री० ) लक्ष्म देवो ।

तारका ( हि० पु० ) बह ज्ञान जहाँ सिद्धी मोहर बना करता है ।

तारक ( हि० पु० ) उर्दी देवो ।

तारकना ( हि० लि० ) १ तारुण करना काटना, छपटना ।  
२ अचित्त-प्रतुषित काटना, बिगड़ना ।

तारकनी ( हि० श्री० ) १ तारुनी शंभुदेवी पासकी लंगरी । २ मंत्र कर ।

तारुमा ( श० पु० ) भाधानर, प्रभुवाद, लक्ष्या ।

तारु ( स० पु० ) पञ्चमदंष्ट्रक, चक्रबद्ध ।

तारु ( स० पु० ) तोर्बेवै धर्मन तु-अरुके वसुट । १ इव, पानी पर तैरनेवाला तन्त्रा, बैड़ा । २ मन्त्र ( श्री० ) भाषे काट । ३ इवमपूर्वक दिग्गतर ममन, बैड़ा पर चढ़ कर प्रमरा दिय जाना । ४ पारवसन, लक्षो आदिशो पार जानेका काम । ५ निष्कार, उदार । ६ अन्तरण ।

तारुतारक-१ पञ्चाशके पञ्चतसर त्रितीके अक्षि-  
भाममें प्रवर्जित एक तारुसोत । बह पचा० ११ १० तथा ११ ३० और देगा० ०४ ११ तथा ०५ १० पु०में प्रव-  
र्जित है । इस तारुनीसमें सब अक्षर बड़े बड़े मोहात  
हैं और इसके अक्षिर्भाय जलमें ही खेती होती है । ये  
फल १८० वयंमोत है । इसमें गहर और घाम मिठा कर  
कुल ५३० काते हैं । यहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख, बैबाई  
इत्यादि विभिन्न धर्मावलम्बियोंका बास है । मुसलमानों  
को सज्जा अथवा अथवा अथवा है । मौसस का प्रायः  
१२५५०५ है ।

इस तारुसोसमें गीर्वा, ज्यार, बर्द, बाग, लुबरी  
ईक, ईई तथा तारु तारुकी काब सभी उत्पन्न होती  
है । यहाँको बापिक प्रायः २८१०००, ५०० है ।  
इस तारुसोसमें एक धौबदारो और दो दीवानो पटाबत  
है । एक तारुसोसहार और एक सुनिषय विचारकार्य  
करते हैं । यहाँ ३ ग्राम हैं, जिनमें बहुतमें आनन्ददेव और  
शोकोदार रहते हैं ।

१ ठाठ तारुसोसका प्रधान गहर । यह पचा० ११  
२० ५० और देगा० ०४ १६ इ० पर पञ्चतसर गहरके  
१२ मोत अक्षिर्भाय अतद्दु और विपाषा लक्षो मङ्गल  
करस पर प्रवर्जित है । इस गहरमें म्बु निष्पातिटीका

बन्दोबस्त है । हिन्दू, मुसलमान सिख प्रकृति धर्मीय  
सबको समुप यहाँ नाम करते हैं ।

गुद रामदासकोषे गुल्ल सुब परशु नजोने यह नगर स्थापित  
बिधा है । इससे मिठा वी जगदक्षि मन्त्र एक सुन्दर तासाय  
पौर उससे अयनमें एक मिष्ठ बसंमन्दिर निर्माच कर  
गते हैं । प्रवाद है कि जो कुठरोगो तेर कर यह तासाय  
पार हो सभ, बह लक्षो समय पारोष्य हो जाता है । इसी  
कारण गहरका नाम तारुतारक रखा गया है । तासाय  
के पार्श्वस्थित मन्दिरके प्रति महात्मान रचबिर्गुमिंहको  
पगाध मन्त्रि सो । उक्तमें बहुत रूपसे अर्थ करके मन्दिर  
को पनाङ्कत तथा इसका अगरो भाग तीर्थके मङ्गवा  
दिया था । उक्त सरोवरके दोनों जिनारे लम्बिकाशक्ति  
के बनसे हुए अर्धे पार्श्व विद्यमान हैं । यह गहर  
मन्त्राको राजधानी कह कर प्रसिद्ध है । तथा बारि  
पुपायका मन्त्रालय सो है । - इस ज्ञानको इतिहासमें  
मिर्थाका दुर्ग बतनाया है । अब भी यहल्लि छटिय गव  
में अष्ट बहुत पैदा स ०५ करती है ।

पञ्चतसरके साब इस गहरका बाबिष्पसम्पन्न है ।  
यहाँ लोहके पथके पथके बरतन तो वार होते हैं ।

यहाँसे डीठो हो दूर पर बारि-पुपायको सोभासन  
गान्धा है । इन गाकासे एक नासा हो कर तारुतारकके  
सरोवरमें बस गिरता है । यह नासा भीन्दके पाकासे  
बनाया गया है । गहरमें विचारालय, मुनिघर, बागा,  
सराय, चिकित्सालय, डाकाघर और विद्यालय है । अस्त  
घर और साकोरविभागके दरिद्र लुठ रोगियाके बिदे जो  
कुठानम प्रतिहित हुआ है, बह गहरके बाहरमें पड़ता  
है । गहरके अग्रीय मो बहुतसे कुठरीगिर्बीका बास है ।  
यहाँके अविनासिबीका कहना है, कि सुब परशु नजो  
इन लोगोंके आदिपुरुष हैं ।

तारु ( स० पु० ) तोर्बेवै धर्मन तु-अरुके वसुट । म<sup>१</sup> छ-व नीति ।  
२ १५०१ । १ लुभ । २ मेलक, बैड़ा । ३ पञ्चमदंष्ट्रक, गहर  
का पैड़ा । ४ विवर रोयनो । ५ ताम्र भाषा । ( श्री० )  
६ मोका नाम । ७ इतकुमारो, कोकुबार, स्यारपाठ ।  
८ अक्षरकेवतो । ( सि० ) ८ तारक, उदार करनेवाला ।  
१० शीतगन्ता, बन्दो जानिबाना । ११ जो यमु, जो  
असोच कर बर्तमान ही ।

तरणिकुमार ( स० पु० ) तरणित्तु देखो ।  
 तरणिका ( स० स्त्री० ) १ सूर्यको कन्या, यमुना ।  
 २ कन्देविशेष, एक वर्णवृक्षका नाम । इसके प्रत्येक  
 चरणमें एक नगण और एक गुरु होता है ।  
 तरणित्तनय ( स० पु० ) तरणिः सूर्यस्य तनयः इत्यत् ।  
 सूर्यके पुत्र, यम, शनि, कर्ण ।  
 तरणित्तनुजा ( स० स्त्री० ) सूर्यको कन्या, यमुना ।  
 तरणिकन्य ( स० पु० ) शिव, महादेव ।  
 तरणिकेटक ( स० पु० ) तरणिः केटक इव । काष्ठाभु-  
 वाहिनी, काठका वह पात्र जिमसे नावका पानो बाहर  
 फेंका जाता है ।  
 तरणिकपोत ( स० पु० ) तरणिः पोत इव । तरणिकेटक देखो ।  
 तरणिकमणि ( स० पु० ) तरणिकमणिः मणिः । सूर्यपिथ मणिकय ।  
 तरणिकरत्न ( स० स्त्री० ) तरणिः सूर्यस्तत् प्रियं रत्नं, मध्य-  
 पदलो० कर्मधा० । पद्मराग मणि ।  
 तरणिकस्त ( स० पु० ) तरणिकस्त देखो ।  
 तरणो ( स० स्त्री० ) तरणिक डोप । १ नौका, नाव ।  
 २ पद्मचारिणो लता, स्थलकमलिनो । ३ वृत्तकुमारो घोड़-  
 आर, ग्वारपाटा । ४ ऋषदन्तीवृत्त ।  
 तरणिकसेन ( स० पु० ) विभोपणके पुत्र और रामजीके एक  
 भक्तका नाम । विभोपणके कहनेसे रामचन्द्रजीने इसे  
 लडाईमें मारा था । ( कृष्णवार्धाराम ) वाल्मिकी रामायणमें  
 इस तरणिकसेनकी कथाका कुछ भो उल्लेख नहीं है ।  
 तरणिकीय ( स० स्त्री० ) तू-अनीयर् । तरणिकीय, पार होने  
 काशिल ।  
 तरणिकवल्ली ( स० स्त्री० ) कण्टकशतपुत्रीपुष्पवृक्ष, एक  
 प्रकारका गुलाबका पौधा  
 तरणिक ( स० पु०-स्त्री० ) तरणिक प्रवृत्ति तू बाहुलकात्  
 अण्डच् । १ मछली मारनेकी डोरीमें बंधी हुई छोटी  
 लकड़ी । २ प्रवृत्त, नाव खेनेका डौडा । ३ नौका, नाव ।  
 ४ कुम्भतुम्बी, केलिके पत्तिका बड़ा । ५ देशविशेष, एक  
 देशका नाम ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिक संज्ञायां कन् । १ तीर्थभेद,  
 एक तीर्थका नाम । तीर्थ देखो । २ बडिगस्तबद्ध लघु-  
 काष्ठभेद मछली मारनेकी डोरीमें बंधी हुई छोटी

तरणिकपाटा ( स० स्त्री० ) तरणिकः प्रवनयोत्तः पाटः प्रायेण  
 तुरीयागो यस्याः, नहुत्री० । नौका, नाव ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिकनया तरणिक गौरा० डोप ।  
 नौका, नाव ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिक तमेति प्रत्ययार्थो बध्यतथा  
 अन्त्यत्र अच् । न्यूनाधिक, घोड़ा-बहुत ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) क्रम, सिलसिला ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिक ममेत्यादि ऋचः सन्त्यत्र । इति  
 अच् । पावमान सूक्तान्तर्गत एक सूक्तका नाम ।  
 तरणिकमन्दीय ( स० स्त्री० ) पावमान सूक्तान्तर्गत एक  
 सूक्तका नाम । मनुष्य यदि अप्रतिप्राण्य अर्थादि ग्रहण  
 करे अथवा विगर्हित ( निषिद्ध ) अन्न भक्षण करे तो यह  
 सूक्त तीन दिन जप करनेसे वह पापसे विसृक्त हो  
 जाता है ।  
 "प्रतिप्राण्य प्रतिप्राण्यं भुक्त्वा वाप्यं विगर्हितम् ।  
 जपंस्तारणिकमन्दीये पूयते मानवत्प्रादात् ॥"  
 ( मनु ११२५४ )  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिकनेन तू बाहुलकात् । १ प्रवृत्त,  
 बड़ा । तू कर्त्तरि अटि । २ कारण्डवपत्नी, एक  
 प्रकारका बतक ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) तरणिक तरणिक दीयति ग्वण्डति दो खण्डने  
 घञर्थक गौरा० डोप । कण्टकयुक्त वृक्ष, एक प्रकारका  
 कटोला पेड़ । इसके संस्कृत पर्याय-तारदी, तोत्रा, खर्बुरा  
 और रक्तबीजका है । इसका गुण तिक्त, मधुर, गुण, बल्य  
 और कफनाशक है ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) १ काटने या रद करनेकी क्रिया,  
 मंस्त्रो । २ प्रत्युत्तर, खंडन ।  
 तरणिक ( स० पु० ) चित्ता, पित्त, सोच ।  
 तरणिक ( स० स्त्री० ) पक्वान्मेद, एक प्रकारका पकवान ।  
 इसको प्रस्तुत प्रणालो—घो और दहीके साथ माड़े हुए  
 बताना मिला कर गोला बनाते हैं । बाद घोंघे धोमी  
 आँचसे उसे पका कर कपूर और मिर्चका चूर्ण मिला-  
 देनेसे तरणिक प्रस्तुत होती है । इसका गुण बल्य, पुष्टि-  
 कर, हृद्य, पित्त और वायुनाशक, स्निग्ध तथा कफ-  
 कारक है ।

तरद्वेष (स० पु०) मनुष्य के पापमूलकारि इन्द्र ।  
 तरलतार (हि० पु०) विद्यार, मोक्ष, मुक्ति ।  
 तरलतारन (हि० पु०) १ मोक्ष, तारन । २ वह जो भय  
 भावसे पार करता हो ।  
 तरला (हि० लि०) १ पार करना । २ सुख होना,  
 सखति प्राप्त करना ।  
 तरलाम (हि० पु०) एक पशोका नाम ।  
 तरलान (हि० पु०) पानकी लोड़की भरती बर्तनका  
 रत्ना ।  
 तरनि (हि० स्त्री०) तरनि देवी ।  
 तरनिजा (हि० स्त्री०) तरनका देवी ।  
 तरोमी (हि० स्त्री०) १ लोका नाव । २ मिठाईका नाम  
 या पीसा रत्नका छोटा मोड़ा ।  
 तरका (स० पु०) तरलोलि लु-भङ्ग । दूध-दिवली, बच्  
 १) २) ३) ४) ५) ६) ७) ८) ९) १०) ११) १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)  
 १) मनुष्य । २) इन्द्र, बौद्धा । ३) मित्र, मित्रक ।  
 ४) राघव । ५) पवित्रिय, एक पिडियाका नाम ।  
 तरली (स० स्त्री०) तरल मोटा- लीप । लोका नाव ।  
 तरलुङ्ग (स० स्त्री०) कुङ्कुमका स्नानार्थ ट, कुङ्कुमका  
 चर्मगत एक स्नानका नाम ।  
 तरपण्ड (स० स्त्री०) गुं मासे पय तरपारण तप्य पण्ड ।  
 पानर उत्तरार्ध नदी पार आनिका मङ्गल ।  
 तरपन (हि० पु०) १ लविद्या, लुबीता । २ पाराम देव  
 लुव ।  
 तरपन (हि० पु०) तप्य देवी ।  
 तरपना (हि० लि०) तरपना देवी ।  
 तरपर (हि० लि०) १ लीपे ऊपर । २ लामानुगत, एकके  
 पीडे वृषा ।  
 तरपू (हि० पु०) मननार पोर पवित्रवाटके पहाड़में  
 मिलनेवाला एक प्रकारका पिट ।  
 तरपू (स० स्त्री०) १ बिया पोर । २ पायल बिजारा  
 बमक । ३ पय, पामदारो ।  
 तरपू—ब्रह्मणके चरणाम विभागका एक प्रधान जमीन  
 विभाग । इस विभागके पवित्र शास्त्रके बमूल जाता है ।  
 १०५४ ई०में मन्मथके कौशिकने इस विभागके जमी  
 दागोका स्वत्व स्थिर कर दिया । जमींदागोका पवित्रत  
 मदान मय करके बन्दोबस्त किया गया । १०५४ ई०को

जरोबके अनुसार हो १२८० ई०को तरपमें दमयाना  
 बन्दोबस्त हुआ और बाद १०८५ ई०में यहाँ दमयाना  
 बन्दोबस्त बिरग्यायी बन्दोबस्तमें परिवर्तन हो गया ।  
 १०५४ ई०में जिन जमीनका बन्दोबस्त हुआ था वेनम  
 जमी जमीनका स्वतन्त्र स्वत्व गर्भमें छुटने लगे । बिन  
 तरकनारयण ठम बन्दोबस्तके पनाया बहुतको जमीन  
 पाने अधिकारमें करने लगे । चरणाममें मन्मथके  
 बन्दोबस्तकारी रिबेटम माइबने एव अधिकारको चोरो  
 अधिकारके जैना वर्चन किया है ।  
 रिबेटम माइब जरोबदार बन्दुतमी जमीन निकाल  
 कर ठमके ऊपर कर निश्चित किया । १०५० ई०में  
 मजालको मज्या ११८१ को बिन १८८८ ई०के बन्दो  
 बस्तके बाद ठमको मज्या ११२० तथा १८२२ ई०में  
 ११०- हो गई । ठम समय ४४१ (१८) ५० राजस्व  
 बन्दुन होने देखा गया है । बिन बन्दुन जमीन नदीके  
 किनारे रहने पयका पोर दूमे दूमे कारकोसे राजस्व  
 कम गया है ।  
 तरपका पायतन छोटा है । यह एक घाटीके  
 पथीन मिय मिय मोसि पयका एक हो मोसिक विभिय  
 ज्वाणमें छोटे छोटे पयमें विभक्त है । तरपको पानो  
 पयस्थिति पोर पाहलिनके विपरीत बन्दुतीका मित्र मित्र  
 चारका है । कारे कारे जल है कि दुमाय पोर म  
 गाहके जगहर पाकमलके कारण गोड़पचिवामागल  
 मोड़के पोर चरणामक बड़वमए प्रेगमें पा कर काम  
 करने लगे । बड़मिच लूरीगर पयका ठमके ऊपर जमी  
 दागोको पथीनता प्याकर न करके ये पयने चुमनाम  
 पयस्थानमें रहते थे । ये हा चुमनामय चरणाममें तरप  
 टार नामके परिचित है । मोड़ पविशाना मित्र मित्र  
 पनमें चरणाम पाये थे । पाने बिन्दर जमीन देव कर  
 के पयने इलाजुमा एक एव लमें काम करने लगे ।  
 प्रत्येक पवित्रायकने पयने बयामूल लोकोके लिये जिनो  
 जमीन को अधिकार कर लो । बचा चुका भूभाग चरणाम  
 कोविन्को चरणामके अनुसार १५५५ ई० १०५० ई०के  
 पन्दर बन्दुनके बिदेगियाके अधिकारमें था गया । जरा  
 बड़ समय हो वह जमीन पवित्रायकके चलोन पी, म  
 के पने लकठो गिनतो तरपमें कर लो । जिनो दूमे

तरमीम ( अ० स्त्री० ) संशोधन, दुःखस्ती ।  
 तरम्बुज ( म० स्त्री० ) तरं तरलं अम्बुवत् जायते यत्र  
 जन बहुलवचनात् उ तरम्बुज इत्ये ।  
 तरल ( म० पु० ) तृ-कालच् । वृषादिभ्यश्चि । उण्, ११०० ।  
 इति कल प्रत्ययश्चित् । १ हरके वीचका मणि ।  
 २ हार । ३ तल, पेटा । ( त्रि० ) ४ चंपल चञ्चल, ।  
 ५ कासुक, इच्छुक । ६ विस्तीर्ण, फौला ह्यया । ७  
 भास्वर, चमकीला । ८ मध्यग्ल्यद्रव्य, खोखला, पोला ।  
 ९ द्रवीभूत पदार्थ, पानोको तरह वहनेवाला । ( पु० )  
 १० जनपदविशेष, एक देशका नाम । ११ उम टेंगका  
 रहनेवाला । १२ जणभङ्गुर, अनित्य । १३ हीरकारण  
 हीरा । १४ लोह, लोहा । १५ घोटक, घोडा । १६ मय  
 विशेष, एक प्रकारको शराव । १७ मधुमक्ती ।  
 तरलता ( म० स्त्री० ) तरल भावे तन् स्त्रियां टाप ।  
 १ तरलत्व । २ चञ्चलता ।  
 तरलनयन ( म० पु० ) कन्दोविशेष, एक वर्णवृत्तका  
 नाम । इसके प्रत्येक चरणमें चार नगण होते हैं ।  
 तरलनयनी ( म० स्त्री० ) तरलं नयनं यस्याः, बहुव्री० ।  
 १ चञ्चलाक्षि, चंचल आंख । २ कन्दोभेद, एक प्रकारका  
 कन्द ।  
 तरलभाव ( म० पु० ) १ पतलापन । २ चञ्चलता चप-  
 लता ।  
 तरललोचन ( म० त्रि० ) तरल लोचनं यस्य, बहु-  
 व्री० । १ चञ्चल नेत्र, जिसकी आंखें चञ्चल हों । ( स्त्री० )  
 तरलं लोचनं, कर्मधा० । २ चञ्चलनेत्र, चलायमान  
 आंख ।  
 तरललोचना ( म० स्त्री० ) तरलं लोचनं यस्याः, बहुव्री० ।  
 चञ्चलनयना स्त्री, वह शीरत जिमकी आंखें चञ्चल हों ।  
 तरला ( स० स्त्री० ) तरल-टाप । १ यवागू, जौका मांड ।  
 २ सुरा, मदिगा, शराव । ३ काञ्जिक । ४ मधुमक्षिका,  
 शहदको मक्खो ।  
 तरला ( हि० पु० ) क्षाजनके नौचिका वांस ।  
 तरलाई ( हि० स्त्री० ) १ चञ्चलता, चपलता । २ द्रवत्व ।  
 तरलित ( स० त्रि० ) तरलमस्य सञ्जातं तारकादित्वादि-  
 तच् यथा तरल इव चरति तरलं करोति तरल क्षिप-  
 णिच-क्त । कम्पित, कंपता हुआ, थर थराता हुआ । इसके

संस्कृत पर्याय—प्रेक्षोन्नित, ललित, प्रेक्षित, द्रुत चलित,  
 कम्पित, धृत, वेदित और आन्दोलित है ।  
 तरवट ( स० स्त्री० ) वृक्षभेद, एक पेडका नाम । ( Cassia  
 auriculata )  
 तरवडो ( हि० स्त्री० ) छोटी तराजूका पलड़ा ।  
 तरवन ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका गहना जो कानमें  
 पहना जाता है, तरको । २ कर्णफूल ।  
 तरवर ( हि० पु० ) १ बड़ा वृक्ष । २ मध्यभारत और दक्षिण-  
 में होनेवाला एक प्रकारका बड़ा पेड । इसके छिलकेमें  
 चमड़ा मिभाया जाता है ।  
 तरवाची ( हि० स्त्री० ) जुएके नौचकी लकड़ो मचिरो ।  
 तरवाई मिवाई ( हि० स्त्री० ) पहाड और घाटो, ऊँचो  
 जमीन और नौचो जमीन ।  
 तरवाना ( हि० स्त्री० ) १ वेल्कीका लँगडाना । २ तारनेको  
 प्रेरणा करना ।  
 तरवारि ( म० पु० ) तरं समागतधिपक्षवर्णं वारयति  
 वृ णिच इन् । खड्गभेद, तलवार । खड्ग देखो ।  
 तरम् ( स० स्त्री० ) तृ-असुन् । १ वन । २ वेग । ३ तोर  
 तट । ४ वानर । ५ रोग ।  
 तरम ( म० स्त्री० ) तृ वाहुलकात् अमच् । १ माम ।  
 २ दया, करुणा, रहम । ( त्रि० ) तरम् अस्तार्थं अच ।  
 ३ वेगयुक्त, तेज ।  
 तरसत् ( स० पु० स्त्री० ) तरस इव आचरति तरस् क्षिप-  
 शत् । मृगभेद, एक प्रकारका हिरण ।  
 तरसना ( हि० स्त्री० ) अभावका दुःख सहना ।  
 तरसान ( स० पु० ) तरत्यनेन तृ-आनच्, सुट् च । नौका,  
 नाव ।  
 तरसाना ( हि० स्त्री० ) १ अभावका दुःख टेना । २ व्यर्थ  
 ललचाना ।  
 तरस्थान ( स० स्त्री० ) तराय अवतरणाय यत् स्थानं  
 तरस्य स्थानं वा । १ घट, घाट । २ वह स्थान जहाँ  
 उतराई ली जाती है ।  
 तरस्वत् ( स० त्रि० ) तरोवर्त्तं वेगो वा अस्यस्येति मतुप्-  
 मस्य व । १ शूर, वीर, बहादुर । २ वेगयुक्त, तेज ।  
 ३ चतुर्थ मतुके एक पुत्रका नाम ।  
 तरस्विन् ( स० त्रि० ) तरो वेगः वर्त्तं वास्यस्य तरस-

बिनि । अन् मानमेवक मो विधि । वा ३०१११ । १ विगुल ।  
 म्र । २ गू, बीर, बणादुर । ( पु० ) २ अचड़ । ३ बाहु ।  
 तरह ( च० खी० ) १ प्रकार, भाति, बिधा । २ रचना  
 प्रकार, टीका, बनावट । ३ प्रभावो, रोति तर्ज । ४ बुद्धि  
 लयाव । ५ पचव्या, हान, दशा ।  
 तरहटो ( हि० खी० ) १ मोची भूमि । २ पहाड़की  
 तराई ।  
 तरहदार ( फा० नि ) १ जिनकी बनावट पख्या हो ।  
 २ मोचीन मजदूरबाना ।  
 तरहदारो फा० खी० ) मजदूरका ठह ।  
 तरहा ( हि० पु० ) १ एक ज्ञापकी माप जो प्रायः कुर्पा  
 ओटमेंसे पातो है । २ एक लघुहा । इसपर मछो पैना  
 कर बाड़ा टाननेका लीका बनाया जाता है ।  
 तरहवान—मुजबदेमि बाँदा जिलेका एक प्राचीन शहर ।  
 यह बाँदा नगरमें ३२ मील पूर्वमें परोखी नदीके निकट  
 पचस्थित है । यह शहर बीरे धेर भू ल होता जा रहा  
 है । यहाँ एक दुर्ग है, यह भी भू लावस्थामि पड़ा  
 है । कहा जाता है कि माघ २८० वय पड़नेपराके राजा  
 वमनरायने इन दुर्गका निर्माण किया था । इन दुर्गमें  
 १ मील लम्बा एक सुरह बा । सुरह जो कर पक्षी कोम  
 जाती पानी से । अभी यह रास्ता सम्पूर्ण रूपमें बंद कर  
 दिया गया है । २ हिन्दूमन्दिर और ३ मसजिद शहरमें  
 विद्यमान हैं । राजा वमनरायण बाद रजिमसामि लबाब  
 की लडाकिया तथा तख्तवान राज्य प्राप्त कर यहाँ सुमन  
 मान उपनिवेश स्थापन किया था । पियवा रजुमार्केके पुत्र  
 पद्यतराय यहाँ प्राप्त करते थे । १८०३ ई०में सतिमगल  
 में प्युल लखे तथा लखेके पुत्रको बापिक ७००००००) ५०  
 को प्रति व्यापार को बीर से तरहवानमें रहने लगे ।  
 यहाँ लखेमें एक छोटा जालेर भी पाई हो । पद्यतराय  
 के पुत्र बिनायकरायको मृत्यु, जोने पर सतिमगलमें  
 लखे प्रति बंद कर दी । इन पर लखे की दुलक पुत्र  
 नारायणराय तथा मजुराय विद्रोहो विवाहियाक नाव  
 मिल गये । नारायणरायने १८८० ई०को बन्दी पचव्यामि  
 प्राप्तक्या किया । मजुरायका दोष समा कर सतिमगल  
 में गये लखे १०००) ५०को प्रति व्यापार की ।  
 इन शहरमें एक बिधान्य घोर एक बाजार है ।  
 यहाँके पय, बाट प्रकृतिको परिष्कार रहने तथा पुलिकबा

पर्व चनामिसे जिसे एक प्रकारका प्यु कर वन ल  
 किया जाता है ।  
 तरहेज ( हि० खी० ) १ पद्योन । २ पराजित, शोता दुप ।  
 तराँय—सुन्दोमण्डलमें पोलिटिकस एजिण्टर पद्योन एक  
 बोधि जालीर । भूपरिमाच २६ बग मील है । १८२०  
 ई०में खानिखरने रामलख्य बोधिका राज्य ३ भागमि  
 विभक्त किया जिनमेंसे तराँय लखे बोधि सुव मजरावरके  
 लखेके गयामसाद बोधिके बाय लगा । वर्तमान जालेर  
 इरका नाम बोधि ब्रजरोपोपन है । यहाँको मोहन स्टा  
 प्रायः १२०८ है । इसमें कुल १६ घाम लमते हैं । राजत  
 १००००) ५०का है ।  
 तराई ( हि० खी० ) १ पहाड़के मोचिका लह मैदान  
 जहाँ तरौ रहते है पहाड़के मोचिको भूमि । २ पहाड़की  
 चारो । ३ भूजके सुई को जालनमें लपड़ोंके मोचि दिए  
 जाते है ।  
 तराई—१ हिमान्य पहाड़के मोचिकी भूमि या लपयका ।  
 यह सब जगह एकमो नहीं है, किमो जगह १० घोर किमो  
 जगह १० मील चौड़ी देखो गई है । यह एक प्रकाश  
 बनभूमि है । पद्योपामे पामाम तक यह हिमान्यक  
 शिखरालुपमें विस्तृत है । इन वन भागमें शाल घोर  
 शोबमके लखे बहुत पाये जाते हैं । कोको घोर कोको  
 लटोमि बहा कर लखे लखे पच्यत लाये जाते हैं ।  
 नेवानको तराईको मोरहू लखते हैं । तराईकी  
 मझमें बामू लखे घोर लखेर मिलि रहते हैं । वर्तलक  
 निकटवर्ती भूमाममें बड़े बड़े प्युल लखे गये हैं ।  
 सिक्किम पय लखे २० मान दलिय लखको जमोन  
 लखे लखे है ।  
 इन प्रदेशमें पायुल नामक एक प्रकारका रोग दिया  
 जाता है । वर्षमें ८१० मान तक वट प्याधि पच्यत  
 प्रबल रहते है । इन पयल कोई भा तराई भूमि पति  
 जम लखे कर सजला है । यह लखे पामा पहाड़क लखर  
 में प्रद्युव लखे तक ६० मान विस्तृत है । यहाँ बहुतने  
 पच्ये पच्ये पड़ पाये जान है । पद्ये लखे पच्यत लखे लखर  
 तक यदि कोई पद्येतीय इन प्रदेशमें बिना मयल लखे  
 लखामें रहे तो बह निषय की लखे सुवमें पतिन होया ।  
 सितम्बरमासमें तापमानपच्यत ७० से ८० घोर लखे  
 लखे ७२ से ७० पर्यन्त लखे है । लखे लखे पद्योन

तराई-भूमिमें बहुत हृत्त भगते है, जिनसे नेपाल राज्यको यथेष्ट आमदनी होती है। व्यवसायोंगण इस प्रदेशमें बहुसंख्य हृत्त, गजदन्त तथा कई तरहके चमड़े वूढी-गण्डक को कर कलकत्तेमें लाते है। १८१५ ई०में युद्धके बाद नेपालके राजाने कुमायूँ और अन्य कई एक पार्वत्य प्रदेशोंके साथ साथ तराईके भी कई एक अंश वृटिश गवर्मेण्टको दिये है। नेपाली लोग अयोध्या और बरेलीके उत्तर अंगरेजाधिकृत प्रदेशको लूटते थे। लॉर्ड सिंग्टोके नेपाल-दरबारमें यह बात सूचित करने पर भी कोई फल न निकला। लॉर्ड मयराके शासन कालमें नेपालियोंका अत्याचार और भी बढ जानिसे उन्होंने इस विषयका प्रतिविधान करनेकी इच्छा की। उनके आदेशसे भूटवाल नगर अधिकृत हुआ। उस समय नेपाल दरबारमें दो पक्ष थे। अमरसिंह दूसरे पक्षके युद्धमें शामिल थे, किन्तु दूसरे पक्षने सन्धि करने की राय दी। जो कुछ ही नेपाल गवर्मेण्टने अंगरेज गवर्मेण्टके विरुद्ध लडाई ठान दी। युद्धमें अंगरेजोंकी जीत हुई। नेपालीगण सन्धि करनेको चेष्टा करने लगे। वाममाने नेपाल-पक्षसे अंगरेजपक्षीय गार्डनर माह्वको खबर दी, कि नेपालदरवार कानो नदोका पश्चिम अंश-स्थित भूभाग अंगरेज गवर्मेण्टको देनेमें प्रसन्न है, किन्तु वे तराईप्रदेश छोड़ नहीं सकते गार्डनरने इससे जवाबमें कल्पना भेजा, कि बिना तराई-प्रदेशको लिये वृटिश-गवर्मेण्ट सन्धि करनेमें राजी न होगी। इस पर वाममाने कहा, कि पार्वत्यप्रदेशमें केवल तराई ही नेपाल राज्यकी लाभजनक सम्पत्ति है, इसको छोड़ देनेसे पार्वत्यप्रदेशमें उनको बहुत क्षति होती है। अंगरेज गवर्मेण्ट यदि इस प्रदेशको अधिकारमें लानेकी एकान्त चेष्टा करती, तो नेपालमें पुनः समरानल प्रवृत्तित हो उठना। पहले जो लडाई हुई थी, उसमें नेपालके सब मनुष्योंने योग न दिया था। किन्तु जब यह मालूम हो जाता कि तराईके लिये लडाई होती है, तो नेपालके छोटेसे बड़े सभी व्यक्ति ईर्ष्या और अन्तर्कालह परित्याग कर अंगरेजोंके विरुद्ध तलवार धारण करनेमें तनिक भी विलम्ब न करती। ऐसा होनेसे फल क्या होता, वह कहा नहीं जा सकता है। वृटिश गवर्मेण्टको भी मालूम हो गया, कि

गोरखाली सैन्यसामन्तगण सभी एकखरसे तराई छोड़ देनेका प्रतिकूल मत देते हैं। गार्डनर साहबने कहा कि गवर्नर जनरल इस विषयमें विचार करेंगे। तराई-प्रदेश कुछ काल तक अंगरेजके अधिकारमें था। उस समय उन्होंने देखा, कि इस प्रदेशको जलवायु अत्यन्त अहितकर है पर अधिवाशियोंका सम्पूर्ण आयात्ताधोन रखना भी कष्टकर है। इस कारण इस प्रदेशको अधि-कारमें लानेका गवर्नर जनरलको बेसो इच्छा न थी। किन्तु विपक्षियोंको भय दिखानेके लिये उन्होंने सैन्य मजानेका आदेश दिया। इधर गोरखालोगण बरपर्सा (मकवानपुर), विजपुर, महोतरी सत्रोतरी (मोरङ) तथा पर्वतके नाचेको भूमि छोड़ कर तराईके अवशिष्ट अंश वृटिश गवर्मेण्टको अर्पण करनेमें स्खलित हुए। २री दिसम्बरको गजराजसिंहने अंगरेजपक्षीय कानल ब्राउसके साथ सन्धि नियम स्थिर किया। इस सन्धिके अनुसार अंगरेज गवर्मेण्टने कानो नदोके पश्चिम भागमें पार्वत्यप्रदेश और मेचोका पूर्वीय प्रदेश पाया। १५ दिनके मध्य नेपाल राजाको सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ेगा, यह स्थिर किया गया। किन्तु इसो बीच अमर-सिंह दूसरे पक्षके दरबारमें प्रधान हो गये, अतः सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर न हुआ। दोनों पक्षमें पुनः नवोन उत्साहके साथ युद्धका आयोजन होने लगा। एक सामान्य लडाईके बाद दोनों पक्षने सन्धिपत्र पर स्वाक्षर किया। २री दिसम्बरको गुरु गजराजसिंहने सन्धिको जो शर्तें निश्चित की थीं, प्रायः वही शर्तें कायम रहीं, किन्तु अंगरेज गवर्मेण्टने तराईकी जो अंश पाये थे, उनका अधिकांश नेपाल दरवारको छोटा दिया गया। अयोध्याके प्रान्तवर्ती तराईका अंश अयोध्याके नवाबका तथा मेचो और चिस्ता नदोका मध्यवर्ती छोटा अंश सिक्किमके राजाको मिला।

शारदा नदोके समीपवर्ती तराईभूमि अङ्गलसे परिपूर्ण है। इस प्रदेशमें आज तक कोई उपयुक्त फसल नहीं हुई है। शीतकालमें कई मास इस प्रदेशके प्रान्तरमें मवेशी इत्यादि घाम खाते हैं। किन्तु यहाँ बाघका डर हमेशा बना रहता है। पहलूके रहते भी बाघ असंख्य गाय भैंस-इत्यादिका प्राणनाश कर डालते हैं।

दिनेके समयमें भी बाघ दृष्टपात्रिते पशुओं पर आक्रमण करनेमें इतरती नहीं। आनोव बाघ इतने मजानक होते हैं कि सबेसो परानेवासीको रबों बाधा देनेका माहम नहीं होता। इस प्रदेशमें बहुतसो झोम घोर दमदम हैं, जो तराई तराईकी आनेसे आच्छादित हैं। जिन टमदममें आम दब्बादि बहुत तबा बनो रहते हैं, उन ज्वालनमें नैदा पाया जाता है।

२ कुशप्रदेशके भेनीताम जिलेके अन्तर्गत छठिय गब मंथले पचीन एक जिला। यह पचा० २८ ३५ और २८ २६ ३० तथा दिगा० ७८ ५ और ८० ५ पूर्वमें अवस्थित है। मूर्धमाप ७०५ बयमीन और लोक सख्या प्रायः ११८४२२ है। इनमें कुल ५०४ ग्राम लगेते हैं। इसके उत्तरमें कुमायूँ जिला पूर्वमें मीवान घोर विभिन्न जिला, दक्षिणमें बरेली मुगदाबाद घोर रामपुर राज्य तथा पश्चिममें बिजनौर है। जिलेका प्रधान शहर काशीपुर है, किन्तु बीचकालमें जिलेके प्रह्लंघनीय यूरोपीय जर्मनारी नेनीताममें पाकर रहते हैं। बेगानके अन्तर्गत आर्तिक नाम एक नेनीताम तराईके प्रधान शहरमें परिचय होता है।

तराई जिला हिमालयके नीचे पूर्व घोर पश्चिमकी घोर प्रायः ८ मील विस्तृत है। इनकी चौड़ाई लगभग १२ मील होगी। कुमायूँके जनशुभ्य वनप्रदेशमें बहुत से होते हैं। इन घेतोंका एक मिश्र मिश्र दिग्दर्शिके एकत्र हो कर नदोके रूपमें तराई जिलेके सब ज्वालनमें प्रवाहित होता है। इन जिलेके दक्षिण पूर्वकोषमें प्रति मीलमें १२ फुट ऊँच है। उच्च नदियोंके बिमारा असमान है तथा नदीसमके स्तर भी बोजड़मव है। एक सव प्रान्तके ऊपर जो कर के नदियाँ बहती हैं। निम्नपरा पहाड़प्रदेशमें जो नदियाँ निम्नको हैं, उनमेंसे सन्धि नदी शारदा नदीके साथ मिलती है। इस जिलेकी देवदा नदी भी पचने बड़ी है। विभिन्नके निकट बर्तीज्वालनकी छोड़ कर इस नदीमें नाव चालो जाती है। सुची नदी वर्षाकाकके बाद का एक शालो है। बिपचा नदीका ज्वाल बहुत प्रबल है। कोसो नदी आगोपु पर गतीमें बहती है। बिपचा घोर कोसो नदीके उत्पत्ति ज्वालमें एक सवरा भी घोर देवदा नदी मिश्र मिश्र

दिशादिमें बनी गई है। सब नदियाँ अन्तको रामनजामि गो है।

हाथो बाघ, गज विलाबाघ सुपर, तराई तराईके विले इन्नादि वृद्धको जन्तु इन जिलेमें बहुत देखे जाते हैं।

बहुत प्राचीन कालमें तराई जिला मीवासराम्पने पार्वंभ्यप्रदेशके पचीन था। रोहिणापनि कई बार पच सासियोंकी पञ्चाल लट्ट टिया था। सम्वाद पञ्चलके रात्रकालमें इस प्रदेशको प्राय ८ लाख रुपयेकी की घोर यह ८४ कोम तक विस्तृत समझा जाता था। इसीके तराईको एक समय भोजकिया घोर चोरासो मील लड़ी थी। १७४४ ई०में इसका कर ४ लाख तथा रोहिणापने समयमें २ लाख रुपयेमें परिचय हुआ था। यह बरबादत घोर मीवातागत घोर बमूल जाले लने, तब यह ज्वाल लुकरा तथा मनोकोका पालयज्वाल की गया। अन्तर्गतमें प्रारंभ राज्यको अवनति होने पर काशीपुरके मानकसा सुपतनर देव कर बिप्लीकी दो गये घोर अन्तमें बर्तीने प्रयोभाके मवावको तराईप्रदेश समर्पण किया। १८ २ ई०में रोहिणकण्ड पनरकोके हाथ लना, तब मन्दरामक मतोका शिबसाह इस राज्यके इन्नादार ठेकेदार) से तराईका पालयज्वाल, रूप दग्धादि दिग्दर्शनमें मार्बंभ्य पड़ता है, कि यह प्रदेश एक समय समुद्रत था। छठिय सवमेंथले पचीनमें इस प्रदेश की पश्चिम अर्धति हुई है। पचले पञ्चल गवमेंथले इस प्रदेशके प्रति विमेष ज्वाल न दिया था। १८५१ ई०में तराई प्रदेशमें बाँध घोर जल सौंजनेका पञ्चल प्रबन्ध कर दिया गया है। १८५१ ई०में तराई जिलेको सुद्धि हुई है तथा १८७० ई०में कुमायूँ बिभागके अन्तर्गत की जानेसे इनके प्रायः एकत्र चाल किया है।

बाक घोर मूसा नाग इस प्रदेशमें सबेदा जाल करते हैं। घुनरी घुनरी पश्चिमासो जलो जलो तराई छोड़ कर पञ्चल पची जाते हैं। बाक घोर मूसा पचीको रात्रपुल नदीके जलमाली हैं। यहाँ एक प्रकारका सजासक रोग होता है। इन रोगमें पाञ्चाल होने पर मरनेका कर महीन बना रहता है। किन्तु यह सजासक रोग घाक घोर मूसाका बीरे पणित कर नहीं सकता है। इन



नोगोंका कहना है, कि लगातार सूअर और हरिनका मांस खानेके कारण वे इस रोगसे उदार पाते हैं। ज्वर और अन्तर्गर्भसे भी यहाँ बहुत लोग मरते हैं। आवादी अधिक होनेके कारण यहाँके अधिवासियोंकी संख्या बहुत बढ़ गई है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन प्रभृति धर्मवल्लक्षी मनुष्य इस प्रदेशमें वास करते हैं। ब्राह्मण, कायस्थ, राजपूत, बनिया, गोमाई, चमार, कुर्मी, कहार, माली, लोध गहरी, लीजार, अजीर, भड्डी, नाई, जाट और धोबी इत्यादिको संख्या अधिक है।

इस जिलेमें कागीपुर और गगपुर नामके दो प्रधान शहर लगते हैं। इन्हीं दो स्थानोंमें लोकसंख्या मत्र जगहसे ज्यादा है।

इस जिलेको जमीन बहुत उर्वरा है। योहें परिश्रमसे ही अच्छा फसल उपजती है। इस स्थानका प्रधान अन्न धान है। जौ, गेहूँ, बाजरा, जून्धरी, उरद, मरमाँ तोसो, ईख, रुई, तमाकू, तम्बूज, अटरक, जलदो, मिर्च, पटसन इत्यादि उत्पन्न होते हैं। इस प्रदेशको भूमि और वायु आर्द्र है, सुतरा, अगावृष्टिके कारण उत्पन्न द्रव्यको विशेष क्षति नहीं होता है। किन्तु १८६८ ई०के दुर्भिक्षसे तराई जिलेके किसी किसी ग्रामवासियोंकी अत्यन्त कष्ट भोगना पड़ा था।

रोहिलखण्डके जमींदारों तथा बज्जारीके अनेक पशु तराईप्रान्तरमें विचरण करते हैं।

शारदा नदीसे ले कर पूर्व और पश्चिमको और एक रास्ता है, जो परगनेके चारों ओर गया है। राजपुर पर गना हो कर सुरादाबाद और नैनोतालका रास्ता २१ मील विस्तृत है। धरेली और नैनोतालका रास्ता १३ मील लम्बा है। सुरादाबाद और रानीखेटकी रास्ता रामनगर तक चला गया है। रोहिलखण्ड और कुमायूँ रेल पथ तराई जिलेके मध्य बरेली, नैनोताल रास्ताके साथ समान्तर भावमें अवस्थित है।

तराई जिलेमें एक सुपरिगढ़े गड़े गढ, उनके महकारो और रुद्रपुरके तहसीलदार टोवानो विचार करते हैं। इन नोगोंका फौजदारो विचार करनेका भी अधिकार है। कुमायूँके कमिश्नरके निकट इनके विचारकी अपील हो सकती है। राजपुर, गदारपुर और रुद्रपुरमें

एक देशीय विगिट भजिट्टे रहते हैं। यह जिना कागीपुर, राजपुर, गदारपुर, रुद्रपुर, किलपुरो, नानकमता और बिलहरो नामक परगनोंमें विभक्त है। कागीपुर और नानकमता छोड़ कर और किसी परगनेका जमीनमें मानिकान स्वत्व नहीं है। गवर्मेण्ट को मभो जमीनके अधिकारो है। इस जिलेमें पशु चुराईका सुकदमा ही अधिक चलता है। पहले सिधातो, गुर्जर और अहोरगण इस काममें अत्यन्त निप थे। इस जिलेमें ७ पुलिस स्टेशन और वृत्तसे विद्यालय हैं। इस जिलेको अनेक स्त्रियाँ पढी लिखी हैं।

३ टार्जिलिङ्ग जिलेका एक उपविभाग। क्षेत्रफल २७१ वर्ग मील है। इसमें ७१० ग्राम लगते हैं, जिनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध प्रभृति वास करते हैं। इस विभागका प्रधान शहर गिर्जगुहो है। यह स्थान हिमालय पहाडके नीचे अवस्थित है। गिर्जगुहोमें उत्तरवर्द्ध स्टेट रेलवे और टार्जिलिङ्ग हिमालय-रेलवेको अन्तिम सौमा है। इस विभागमें ४३ चायके बगीचे हैं।

अब यह प्रदेश टिपटिप साम्राज्यभूक्त हुआ, तब उन्हीने इस प्रदेशका उत्तरांग टार्जिलिङ्ग और दक्षिणार्ग पुर्निया के कलेक्टरोभूक्त करनेको इच्छा की, किन्तु दक्षिण प्रदेश वासोने पुर्निया कलेक्टरोके अधीन होनेमें असन्तोष टिपटिप लाया, वाट ममस्त तराई विभाग टार्जिलिङ्गके अधीन कर दिया गया। लेकिन इसके पहले पुर्नियाके कलेक्टरने तराईके निम्नस्थानवासो राजवर्गो और सुसलमानोंके साथ तीन वर्षके लिये जमीनका कर निर्धारण किया था। पहले तराईसे निम्नलिखित प्रकारका राजस्व वसूल किया जाता था. (१) सेव और धिमालोंसे टाकर, (२) निम्नतराईके बङ्गालो अधिवासियोंसे जमीनका कर, (३) तराईके निकटवर्ती बङ्गदेशके भूभागसे आगत गृहपालित पशुके विचरणके लिये पशुपालकोंसे शुल्क, (४) वनमें उषन्नद्रव्योंको आय, (५) बाजारका शुल्क, (६) अर्थदण्ड, (७) गायकोंके ऊपर एक प्रकारका कर, (८) आवकारो आय। पहले दो प्रकारके करकी चौधरी वसूल करते थे। इन्हें फौजदारो और टोवानी विचारका भी अधिकार था।

तराई प्रदेशमें ५४४ जोतें थीं और प्रायः १८५०२

रूपसे राजकर्में बसूव जाति से । प्रति वर्षके प्रथम ज्योत  
दार भोग चौथोसे अपनी ज्योत का परिवार फल पाति  
से । किन्तु प्रकृतयज्ञमें ज्योतदारिका एक प्रकारका सुष  
पातुसमिक फल बा ।

इष्टिय गवर्मेष्ट्ये प्रथम भागनकात्ममें चोचरोसे जाकर  
दोवामो घोर छोडदारोका अधिकार से लिया गया, घोर  
बोड फाँस रीमिन्यु से एषा कहा गया कि ये उँकड़े (१)  
हं कसोगन या दफूरी पाँति ।

१८२ ई०में तराईका पाबादो पय १० वर्ष  
किये पुनः बन्दोबस्त किया गया । यह बन्दोबस्त केवल  
ज्योतदारोंके साथ बा । फल गवर्मेष्ट्ये १८२ ज्योतके  
छपर २००१५ हं कर कर लिया । कर निर्धारित  
होनेके समय गवर्मेष्ट्ये जमोलाको बिना भाये प दाखल  
कर पया करनेको पात्रा से ।

तराज (फा० खो०) तोलनिका यज्ञ तुला, तखरो ।

तराज—मध्यभारतके इन्दोर राज्यके प्रथम ज्योतदार  
त्रिलोके एक परगनेका सदर । यह पया २१ २० ल०  
घोर दिया० ७३ ३ पू०के मध्य तथा इन्दोर शहरसे ४४  
मील घोर इन्डो न म्युनिसिपलिये तराज स्टेशनसे ८ मील  
को दूरो पर अवस्थित है । लोकसंख्या लगभग ४४८०  
है । यह शहरके समयमें यह भागवाने सूबा सरकारपुर  
सरकारके महासका सदर का घोर नौबान नामसे  
पुकारा जाता बा । पोखे इधका नाम बदल कर नौबान  
तराज हो गया । पास पासके बड़े बड़े सुन्दर उष  
तथा पनेल मन्मथ प देवमेंसे माधूम पड़ता है कि  
एक समय यह खान उन्नत दशमें बा । यहाँ प्राचीन  
बीसिं योनिसे केवल सुषसुपामी लिखिका मन्मांश रच  
गया है । यह शहर १८वीं शताब्दीमें होलकरके पबोल  
बा । पड़काबाईका बनाया हुआ यहाँ एक तिलमाफ्फारे-  
मरका मन्दिर है । कहति है कि शहरके पास पास जो  
सुन्दर पड़ देके जाति है वे बाईजोसे ही लगाने हुए  
हैं । पदन्पाबाईने अपनी लड़को सुजाबाईको पास  
व शके यशवन्तदावके साथ कहा बा घोर ज्योतके  
लकें तराज शहर से टिया । १८४८ ई० तक यह शहर  
लकेंके व मयरोके अधिकारमें रहा । पोखे राजा माय  
पासीका चरित कृतित हो जानेके कारण तराजा लकें

छोड लिया गया । १९०२ ई०में यहाँ म्युनिसिपलिटो  
स्थापित हुई है । यहाँ स्टेटका शासक, एक मुनिस  
स्टेशन एक बस स्टेशन और एक पोचवानस है ।

तरागा (फा० पु०) १ एक प्रकारका गाना । इनका बोध  
इन प्रकारका होता है—रिं दिर ता टि पा ना रे ति  
दो मू ता ना ना दे रे ता दा रे दा गि ता ना ना दे र ना  
ता ना ना दे रे ना ता ना ना ता ना तोम् देर ता रे दा  
मे । तरागा प्रबन्धक रागका ही सङ्गता है । इनमें  
कमो कमो सरयम घोर तबलेके बोल मो मिला दिने  
जाति है । २ बड़ियां ज्योत ।

तरागान्यु (स० पु०) तराय तरपाय पन्थुरिक, पतियघोर  
त्यादु । मेकावियेय एक प्रकारको गान । इसके पर्याय  
होड, बहन, बायट घोर बरित है ।

तराया (हि० पु०) जकमें तैरतो हुई शङ्कोर, शङ्का ।

तराघोर (फा० हि०) पाई खुब सीया हुआ ।

तरमन (हि० पु०) १ ज्ञानमें खपरेके मोसे दिने  
आनेके सूँवके सुई । २ सुपके मोकेका लकड़ी ।

तरामीरा (हि० पु०) लकरोय मारतमें होनेवाका मरसो  
को तरङ्गका एक पोबा । इसके मोत्र आङ्के की पसके  
साथ मोप जाति है और लकें एक प्रकारका मिन निब  
लता है । मथेयो इसके पत्ते बड़े पावके जाति हैं ।

तरारा (हि० पु०) १ लकाय, कर्माज । २ त्रिलो बसु  
पर लगातार गिरनेकी पानोको चार ।

तरासु (स० पु०) तराय तरपाय पनति पर्याङ्कोति पय  
लक । मेकावियेय, एक प्रकारको गान ।

तरावट (फा० खो०) १ गीनापन, लमो । २ मीतकता  
उपलक्ष । ३ बड़ पाहार सिसने मयोरको सरसो गान्त  
होती है । ४ शिखमोजन ।

तराय (फा० खो०) काटनेका तरोका, काट । २ यना  
बट, रचना प्रकार ।

तरायशराराय (फा० खो०) बनावट, काट काटि ।

तरायना (फा० हि०) कतरना काटना ।

तरिंदा (हि० पु०) ससुद्धमें किमो खान पर लहरके  
द्वारा बौरके जानिका एक पोवा ।

तरि (स० खो०) तरायमया नृच । लई । लम् १११५ ।  
१ मोका गान । २ बणादिपेटक, कपडोका घेठारा ।  
३ कपडोका छोर, शामन ।

तरिक ( सं० पु० ) तराय तण्णाय दिनं तृ-ठन् । १ श्रव, वेडा । तरे तरणार्थं देशसुक्तप्रयोगे अधिष्ठान इति-ठन् ।  
२ नावको उत्तराई लेनेवाला । ३ मवाह, क्रियट, मांझो ।

तरिका ( सं० स्त्री० ) तरिक-टाप् । नौका, नाव ।

तरिक्किन् ( सं० पु० ) तरिक-इनि । नाविक, मांझो ।

तरिक्केरो—१ मझिपुर राज्यके कटूर जिलेका उत्तमोधतालुक। यह अक्षां १३° ३०' और १३° ५४' ३०" तथा देशां ७५° ३५' और ७६° ८' पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७६४७२ और निवासी ४६८ वग सोल है। इसमें २ शहर और २३६ ग्राम लगते हैं। तालुकेके दक्षिण-पश्चिममें वावावुटन पहाड और उत्तरमें उगमानो पहाड है। आजमपुरके समोप क्षेत्रका कारखाना है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षां १३° ४३' ३०" और देशां ७५° ४८' पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग १०१६४ है। इसके उत्तर-पूर्वमें काटूर नामका एक स्थान है, वहीं प्राचीन शहर था और जो १२वीं शताब्दीमें जयगल्लसे स्थापित हुआ था। १४वीं शताब्दीमें विजयनगरके राजाने इसे हस्तगत कर अपने एक प्रधानके हाथ सौंप दिया। पोल्ले उनके परिवारमें भो विजापुरके सुलतानने छोन लिया। अन्तमें मुगलोंने इस पर अपना पूरा अधिकार जमा कर इसे धामवत्तनके सरदारोंको अर्पण कर दिया, जिन्होंने १६५८ ई०में तरिक्केराका दुर्ग और शहर स्थापित किया। १७३१ ई०में यह हैदराबनाके अधिकारमें था। रेलके हो जानेसे पहलेसे आजकल इसको अवस्था बहुत कुछ सुधर गई है। १८७० ई०में यहाँस्य निमगालिटो स्थापित हुई। शहरकी अथ लगभग ८८००) न०की है।

रिणो ( सं० स्त्री० ) तरस्तरणं कृत्यत्वेनाप्तव्यस्याः इति इनि लोपश्च । नौका, नाव ।

रित ( सं० द्वि० ) उत्तीर्ण, पार क्रिया हुआ ।

रिता ( सं० स्त्री० ) तरस्तरणं कृत्यत्वेनाप्तव्यस्याः तार कादित्वात् इतच्-टाप् । १ तर्जनी उँगली । २ गृह्णन्, गाँजा । ३ रसोच, लशुन ।

रिव ( सं० स्त्री० ) तरत्यनेन तृ-ड्रन् । तरणसाधन नौकादि, पार होने योग्य नाव इत्यादि ।

तरिग—दिनात्रपुर जिलेमें बडगाँव परगनाके मथ्य एक प्रसिद्ध ग्राम ।

तरिव ( सं० पु० ) तरे रथइव परिचाननात् । शरिव, बवा जिनसे नाव खिने हैं, डाँड ।

तरिवन ( द्वि० पु० ) १ एक प्रकारका गहना जिसे पित्तो कानमें पहनतो हैं, तरको । २ कर्णफूल ।

तरा ( सं० स्त्री० ) तरचनया तृ-इ । अरिदृष्ट-अग्निः ३ । ३५ ३५५ । १ नौका, नाव । २ गटा । ३ वस्त्र-पेटक, कपडा रखनेका पिटागा, पेटो । ४ धूम, धुप । ५ टोला, डगो । ६ कपडे का छोर, टामन ।

तरा ( का० स्त्री० ) १ आट्टेता, गोलापन । २ गोत-ता ठंठक । ३ नाचो भूमि जहाँ वरसातका पानी बहुत दिनों तक जमा रहता है, कझार । ४ तराई, तरफटो ।

तरोका ( ञ० पु० ) १ रोगि, प्रकार, टव । २ चान, थय पार । ३ युक्ति, उपाय ।

तरोथस् ( सं० द्वि० ) अतिगयेन तरोता इयमुन्-दृणो लोप । अतिगय तारक, बहुत तारनेवाला ।

तरोप ( सं० पु० ) तृ-इयत् । कृत्यत्वेनाप्तव्यत् । ३५ ३५५८ । १ शुक गोमय, सूँवा गोधर । २ नौका, नाव । ३ पानीमें बहनेवाला तण्ण, वेडा । ४ व्यवसाय । ५ समुद्र । ६ समर्थ । ७ स्वर्ग ।

तरोपन् ( सं० पु० ) तृ-कृन्दसि इय नकारस्य नेत्वं । तरण, पार होनेको क्रिया ।

तरपो ( सं० स्त्री० ) तराप संज्ञार्थां डोप् । इन्द्रको कन्या ।

तर ( सं० पु० ) तरति समुद्राटिकमनेनेति तृ-ठ । मृथी-पृथरीणि । ३५ १७५। वृक्ष, गाक, पेड़ । ( द्वि० ) २ तरक, उड र करनेवाला । ( पु० ) ३ एक प्रकारका चोड । इसके पेड़ खासिया पडाडो, चटगाँव और बरभामें पाये जाते हैं । इसका गोंद सबसे अच्छा होता है। तारपोनका तेल भो इससे बहुत अच्छा निकलता है ।

तरुषा ( द्वि० पु० ) उवाले हुए धानका चावल ।

तरुङ्गणि ( सं० पु० ) तरौ वृक्षे कृण्वथति कृष्-इन् । पत्ति विशेष, एक प्रकारकी चिडिया ।

तरुच ( सं० द्वि० ) तृ-वाहुलकात् उडन् । १ याग और



तहराज ( स० पु० ) तरुणा राजा, ६-तत् अत्युच्चत्वात्  
मन्त्रादि टच् । १ तालवृत्त, ताडका पेड़ । २ पारिजात-  
पुष्पवृत्त, कल्पवृत्त । यह वृत्त नरलोकमें पूजित होता है  
और देवलोकेमें पाया जाना है । ( त्रि० ) ३ तरुश्रेष्ठ-मात्र,  
वृत्तोंमें सबसे बड़ा ।

तरुकडा ( स० स्त्री० ) तरौ रोहति रुह-क-टाप् ।  
१ वन्दाक, बाँदा । ( त्रि० ) २ वृत्तरोहिमात्र ।

तरुगेरिणी ( स० स्त्री० ) वन्दाक, बाँदा ।

तरुवमो ( स० स्त्री० ) तरुपु वक्षीव । जतुकालता,  
पनडी ।

तरुवा—मध्यप्रदेशके बाँटा जिलेका एक जूट । सेगाँवसे  
२४ मील पूर्वमें चिमूर पहाड़से यह जूट निकला है ।  
इसको गहराई बहुत है ।

अनेक पुत्रामिलापिणी स्त्रियाँ इस जूटके निकट आ  
कर अर्चनादि करती हैं । पौडित मनुष्य भी आरोग्यता  
लाभ करनेकी आशासे यहाँ आते हैं ।

मध्यप्रदेशीय लोगोंका विश्वास है, कि देवताओंको  
इच्छामें यह जूट उत्पन्न हुआ है ।

इस जूटके एक और एक कृत्रिम बाँध है—

प्रवाट है, कि बहुत वर्ष पहिले गोलो लोग वर और  
तन्त्राकी ले कर बहुत समारोहके साथ चिमूर पहाड़ हो  
कर जा रहे थे राहमें उनमेंसे बहुतोंको प्यास लगी,  
किन्तु जल कहीं न मिला । हठात् एक अस्त्री वर्षसे  
अधिक उम्रवाला वृद्ध मनुष्य उन लोगोंके सामने आ  
पहुँचा । उनके जलकष्टका विवरण सुनाने पर वृद्धने  
जवाब दिया, कि वर और तन्त्राके जमाने खोदने पर एक  
भरनेकी उत्पत्ति होगी और उसो भरनेके जलमें वे  
अपनी प्यास निवृत्त कर सकते हैं । वृद्धके उपदेशानुसार  
वर और वधूने व्र्याँ हो जमाने खोदो, व्र्याँ ही एक सोता  
निकल कर हृद (भौल)-के रूपमें परिणत हो गया । इस  
जूटके किनारे एक ताड़का पेड़ उत्पन्न हुआ । वह पेड़ प्रति  
दिन दिनके समय ऊपर उठता, किन्तु सन्ध्याके समय मटो-  
के नाचे चला जाता था । एक दिन बहुत सबेरे कोई यात्री  
उस पेड़ पर बैठा था, वह बैठे वृद्धके साथ आकाश-  
की चला गया और वहाँ सूर्य-किरणसे टप हो गया  
तथा वृद्ध भी उसी समय चूर चर हो धूलमें मिला गया ।

वृद्धके वदने उस स्थान पर जूटकी अधिष्ठाहृदेवो तारोवा  
देवीकी प्रतिमूर्त्ति देखो गई । दूसरा प्रवाट यह भी है,  
कि पहिले यात्री लोग कार्यके अन्तमें अपनी नाव जूटमें रख  
कर जाते थे । कालक्रमसे कोई दुष्ट मनुष्य नावको उस  
जगह न रख कर अपने साथ ले गया । किन्तु वह नाव  
उसी समय अदृश्य हो गई । उसी दिनमें नाव उस जूटमें  
नहीं मिली ।

इस जूटमें ढोलकी नाईं शब्द सुना जाता है । वृद्ध  
मनुष्योंका कहना है कि चार भाटाके समय जूटमें स्वर्ण-  
चूडगोमित एक मन्दिर देखा जाता है ।

तरुविटप ( स० पु० ) तरुणां विटपः, ६-तत् । वृत्तगाव,  
पेड़की छाली ।

तरुविलामिनो ( स० स्त्री० ) तरोविलामिनोव । नव-  
मल्लिका, चमेली ।

तरुग ( स० त्रि० ) तरुः अस्मत्तरु श । तरुयुक्त, वृत्तमें  
घिरा हुआ ।

तरुगायो ( स० त्रि० ) तरौ तरुकोटरे शाखायां वा शोते  
शो षिनि । १ पत्ती, चिड़िया ।

तरुप ( स० स्त्री० ) तरुपप्रति हिनस्त्वत्तरुप आभारे  
क्षिप । युद्ध, लड़ाई ।

तरुप ( स० त्रि० ) ट-उपन् । तारक, उधार करनेवाला ।  
तरुपण्डा ( स० पु० ) वृत्तश्रेणो, वृत्तकी कतार ।

तरुम् ( स० त्रि० ) ट-उमि । तारक ।

तरुमार ( स० पु० ) तरौः मारः, ६-तत् । १ कर्पूर  
कपूर । २ वृत्तका सार, गोंद ।

तरुस्य ( स० त्रि० ) तरौ तिष्ठति तरु-स्या क । वृत्तस्थित,  
जो पेड़ पर टिका हो ।

तरुस्या ( स० स्त्री० ) तरुस्य-टाप् । वन्दाक, बाँदा ।

तरुट ( स० पु० ) तरौः उट इव । पद्ममूल, कमलकी  
जड़, सुरार, भसीँड ।

तरुणक—तरुणक देखो ।

तरुपम् ( स० त्रि० ) ट-उपस् । १ तरणशुभ्र, जो  
पानोमें तैरना जानता हो । २ आपदुद्धारक, जो विपत्ति-  
से बचाता हो ।

तरेदा ( हि० पु० ) १ पानोमें तैरता हुआ काठ, बैड़ा ।  
२ तैरनेवाली वस्तु ।

तराटी ( वि० खो० ) बह जमीन को पहाड़के नीचे रखती है । तराई, घाटो ।

तराई ( वि० पु० ) तराई देखो ।

तरारना ( वि० लि० ) इति लुपित करना याँकने इमारतें पसन्तीय आदिर करना ।

तराही ( वि० खो० ) हरिम पीर इतको एकमें सटावे रखनेका पहर ।

तरसा ( वि० पु० ) बिमो खीका बह सुव को बघने दूतरे पतिमें कथा हो ।

तराँको ( वि० खो० ) तराँकी देखो ।

तराँव ( वि० खो० ) १ क बोके नीचेको लकड़ो । २ तराँकी देखो ।

तराँवा ( वि० पु० ) फसलका बह परिमित पत्र को जन्मवाड़े पादि मजदूरोको देनेके निवे निक्कास दिया जाता है ।

तराँई ( वि० खो० ) तराँई देखो ।

तराँता ( वि० पु० ) मज्जारत पीर टचिक भारतमें डोनिबाना एक प्रकारका मन्ना पुपिक । इसके बिचके बमड़ा चिभ्रनेके काममें पाता है । इसका दूसरा नाम तरवर है ।

तराँवा - मसुग जिसेके पत्तगंत जाता तइसीतका एक छोटा घाम । यह पचा० २० इ० इ० ३६ उ० पीर दिया० ७० इ० इ० ३३ पु०में पवकित है । कृषिकार्यके लिये बह घाम लकड़काय है । इस फलका राजागान्ठ देवका मन्दिर विमिय प्रसिद्ध है । प्रति वर्ष कार्तिक मासमें तयोदगीके पूर्वमा पर्वत लकड़ मन्दिरके निकट एक मेला लगता है ।

तराँको ( वि० खो० ) १ इत्थेमें नाचेकी पीर लगी हुई लकड़ो । २ बेल भाडोमें लुकावाके नीचे लगी हुई एक लकड़ो ।

तराँटा ( वि० पु० ) खडोके नीचेका पहर ।

तराँता ( वि० पु० ) जात्रामें काटने नीचे दिने कामिको लकड़ी ।

तराँव सिमला पहाड़के पत्तगंत पीर पहाड़ मजदूरोंके पचीन एक देगोय राख । बह पचा १० ३२ पीर

११ १० तथा देमा० ७० १० पीर ७० ३२ पु०में पवकित है । इस राखका पत्तगंत ६० वर्षमीन है । बोड़े सुसम्मान जोड़ कर इस पदमेके समो अधिकाभो दिन्नु हैं । तराँव पहाँके खरमेके राखके पत्तगंत या । य तराँवके प्राय धानके समय ठाकुर कमरसि ब तराँवके शासनकर्ता है । विन्नु बार्दिक्यबनुडा के बोई काय नहीं कर सकते थे । उनके भाई श्रीवृ समझ राखकाय पनाते थे । १८२८ ई०में करमसिइको खरबुके बाद भोजुको एक सनट मिळो, जिससे लकड़े तथा जलके उत्तराधिकारोके प्राय तराँव राखका शासनभार पपक किया गया । १८८२ ई०में ठाकुर शिदारसिंह तराँवके राजा थे । शिदार सिंहाके मृत्युके बाद ठाकुर गण्पुसि ब राजा हुए ।

इस राखकी प्राय प्रायः ६०० न है । राजाको ८० दैन्य रखनेका अधिकार है ।

तराँता ( वि० पु० ) १ एक प्रकारका महुना जिसे खियाँ कानमें पहनती हैं, तराँको । २ कर्कशुल नाम का महुना । ३ मिठारेका खींचा रखनेका मोड़ा ।

तर्क ( ल० पु० ) तर्क भाँके पत्र । १ स्थानिकारायदा निमतक कइमिट, पर्यात् पविष्ठात पर्यंके विषयमें म्यु सिद्ध कारण द्वारा तर्कविमिय, बह तर्क को शास्त्रने पविरोधी पीर मन्दिर पूर्वपक्षको निराय कर उत्तरपक्ष में व्यवस्थापनपूर्वक शास्त्रार्थमें विचरताका पवधारण करता है । २ प्रकारका चाइ । ३ व्याजके पारोपके कारण व्यापकता प्रसङ्गन । ४ पाममका पविरोधो न्याय । ५ पाममार्क परोषा । ६ मोर्मासारूप विचार या शास्त्रार्थ । ७ मानस ज्ञानमिट । ८ पपनो कुडिडे पनुमार तर्क ( विचार ) मात्र । ( ईरगप्र० )

को भाव परिवर्तनोय हैं बिसो ज्ञानमें भो जिनका विषय बिलामें नहीं पा सकना उन विषयीका कर्मो भो तर्क द्वारा निर्णय न खीं । कर्वाँके परतिष्ठित तर्क द्वारा कर्मो भो नप्योर परबका निचय नहीं हो सकता ।

इस प्रकारका तर्क करनेके परतिष्ठादोय लगता है । तर्कमें परतिष्ठा दोय जाने पर, बह निराकृत होता है ; बह तर्क पक्षबोय नहीं । तत्र दिनः किंते शास्त्र मोर्मासा न कर दिमो बिबि है । दिन्नु बह तत्र दुत इ न होना बहिदे । धर्मशास्त्रके मक मत हा करतइ

करे। इस प्रकारके तर्कसे ही यथार्थ ज्ञान होता है। इमीलिए वेदान्तदर्शनमें तर्कका विषय इस प्रकार लिखा है—“तर्का प्रतिष्ठानादित्यादि”। (वेदान्तसूत्र)

जो वस्तु शास्त्रागम्य है, तर्कमात्रका अवलम्बन कर उस वस्तुके विरुद्ध उद्यम नहीं करना चाहिये। कारण, पुरुष शास्त्रावलम्बनके बिना बुद्धिमात्रसे जितने भी तर्कोंका उद्भावन करता है, उन तर्कोंको प्रतिष्ठा नहीं होती, क्योंकि कल्पनामें कोई अद्भुत (नियामक) नहीं होता। जो जहाँ तक समझता है, वह वहाँ तक कल्पना करता है। अनुभवान् कारनेसे देखा जाता है, कि एक विद्वान्ने बहुत यत्नसे एक तर्क छेड़ा, अन्य विद्वान्ने उसी समय उसको मिथ्या बता दिया और उनसे भी अधिक विद्वान्ने उनके तर्कको भी मिथ्या सिद्ध कर दिया। मानवबुद्धि विचित्र है, इमी लिए प्रतिष्ठित तर्क असम्भव है। जब कि मानवबुद्धि जो अनवस्थित है, एक प्रकार नहीं, तब उससे उत्पन्न तर्क भी अनवस्थित होगा एक प्रकारका नहीं। इसी लिए तर्क अप्रतिष्ठादोषसे दूषित है अर्थात् स्थिरतर तर्क नहीं होता। अतएव तर्क अविश्वस्य है। तर्कका विश्वास करके शास्त्रार्थ निर्णय करना अन्याय्य है। मान लो, प्रसिद्ध कपिल देव सर्वज्ञ थे, इस कारण उनका तर्क प्रतिष्ठित था, ऐसा कहनेसे भी कहेंगे कि, वह भी अप्रतिष्ठित था अर्थात् वह बात भी तर्कमें अन्यरूप हो जाती है। कपिल सर्वज्ञ थे और गौतम असर्वज्ञ, इस विषयमें क्या प्रमाण है? कपिल, कणाद, गौतम, ये सभी ख्यातनामा हैं, सभी महात्मा और सर्वविदित हैं परन्तु तो भी इनके मतमें परस्पर विरोध पाया जाता है।

कपिलके मतमें कणाद और गौतमको आपत्ति है तथा कणाद और गौतमके मतमें कपिलको आपत्ति है। यदि कहोगे, कि हम ऐसे एक तर्कका अनुमान करेंगे, जिसमें प्रतिष्ठा-दोष नहीं आवेगा। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि, अप्रतिष्ठित तर्क है ही नहीं। एक न एक प्रतिष्ठित तर्क है, यह अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा। हाँ, ऐसा कह सकते हैं कि, किमो किमो तर्कको अप्रतिष्ठितत्व देख कर तर्कमात्रमें अप्रतिष्ठितत्वको कल्पना करनेसे व्यवहार उच्छेदकी आपत्ति हो सकती है, सभी

तर्क यदि मिथ्या हैं, तो लोगोंका प्रवृत्ति-निवृत्ति व्यवहार किस तरह होगा ?

हम देखते हैं, कि प्रत्येक व्यक्ति भविष्यमें सुख दुःखको प्राप्ति और परिहारके लिए सर्वदा चेष्टमान है, वह चेष्टा भी तर्कमूलक है।

तर्कका दूसरा नाम है कल्पना, तर्कमें मत्तया न होतो तो उसका व्यवहार न रहता, अत्र तर्क वह उच्छिन्न हो जाता। श्रुतिके अर्थमें सन्देह होने पर वाक्यवृत्तिनिरूपणरूप तर्कके द्वारा उसके तात्पर्य अर्थका निर्णय होता है। भगवान् मनुने भी ऐसा ही कहा है—

जो धर्म श्रुतिको इच्छा रखते हैं, उन्हें प्रत्यक्ष अनुमान (तर्क) और विविधशास्त्रका उत्तमरूपसे ज्ञान रखना चाहिए। जो पुरुष वेदशास्त्रके अवरोध तर्कका अवलम्बन कर ऋषिसेवित धर्मविधिकी खोज करते हैं, उन्हें ही धर्मका वास्तविक रस्य मालूम पड़ता है। अप्रतिष्ठित तर्कको शोभा दोष नहीं है। जिस तर्कमें दोष है, उसे छोड़ देना चाहिये, निर्दोष तर्क ग्रहणीय है। पूर्व पुरुष नृद थे, इसलिए हमको भी मूढ़ होना पड़ेगा, ऐसा कोई नियम नहीं। एक तर्कमें दोष देख कर समस्त तर्कोंमें दोष बतलाना बड़ा अन्याय है।

सम्यक्ज्ञान एक ही प्रकारका होता है, नाना प्रकारका नहीं। भेरे एक तरहका और तुम्हें दूसरो तरहका ही, ऐसा भी नहीं; क्योंकि सम्यक्ज्ञान वस्तुके अधोन है, न कि मनुष्यात्। जैसे—अग्नि उष्ण है। अग्नि उष्ण है यह ज्ञान एक ही भौतिक अर्थात् सब समय और सब पुरुषोंके लिए एकसा है। इसलिए सम्यक् ज्ञानमें मतां मत (तर्क)-का होना अप्रभव है। तर्क बुद्धिसे उत्पन्न है। इसलिए वह नाना व्यक्तियोंका नाना प्रकार है तथा विरुद्ध तर्कजनित ज्ञान भी विभिन्न और परस्पर विरुद्ध होते हैं, किन्तु सम्यक्ज्ञान एक ही प्रकारका होता है। किसी हालतमें भा विभिन्न नहीं होता।

एक ताकि कने तर्कबलसे कहा कि यही सम्यक्ज्ञान है और दूसरेने उसका खण्डन कर कहा कि नहीं, वह सम्यक्ज्ञान नहीं, यह सम्यक्ज्ञान है। अतएव जो एक प्रकारका नहीं, वह अस्थिर तर्कसे उत्पन्न है, ऐसा ज्ञान किस तरह सम्यक् हो सकता है।

हैसन्धि तर्क द्वारा यह सिद्ध होता है। दुर्बल विषयमें तर्क कोट कर शास्त्रिका अनुसरण करना नवित है। शास्त्र समझनेके लिए भी तर्क ही अक्षरत है किन्तु यह तर्क शास्त्रानुसूत्र है; शास्त्रनि प्रतिबन्ध तर्क को प्रतिविष्ट हुआ है। शास्त्र पादि किसी भी विषयके ज्ञानमें तर्क ही एकमात्र आरथ है। तर्कके बिना किसी भी विषयका शास्त्राधिक तथार्थ माहूम नहीं होता। यह तर्क शास्त्रानुयायो ज्ञाना पादिसे, ऐसा न होनेसे उभे हतर्कवाद पादि कहते हैं। इस प्रकारके तुल्यतावादिनों में किसी तरफका भी तर्क न करना पादिसे तथा करनेसे भी कोई फल नहीं होता। (वैरा ११०)

यौनस्युत्तमं तर्कं वा विवरण इत तर्क निष्ठा है  
 'अविज्ञाततत्त्वैर्ज्ञानेन कारणेव्यतिष्ठत्तराज्ञानार्थमुदत्तरं'  
 (गीतमसूत्र १:१०)

व्यापका आरोपमनुष्य व्यापका आरोप जो तर्क पदात्त है अर्थात् प्रमादिका आरोप करने व्यापक है। व्यापक वहि पादिका भी आरोप होता है उभे को तर्क कहते हैं।

'आरोप'का अर्थ है पवचार्य ज्ञान। उत्तमं 'आरथोप पक्षितः' इन शब्दोंसे व्यापका आरोपमनुष्य' यह अर्थ तथा 'उत्त' शब्दसे व्यापका आरोप ऐसा अर्थ हुआ है।

'तर्क' द्वारा क्या फल होता है ?' विषयमें अब यौतम दिवने यह प्रथम बिद्या, तब महर्षिनि उत्तर दिया- 'इसमें पदात्तमें विधीय स शय होने पर तर्क' करना पादिसे तर्कसे न शयको निष्पत्ति को कर यथाच' पक्षका निरुध को ज्ञायमा।

इसलिये तर्क पदात्त निरुधमें विधीय प्रयोजनोप है। तर्कके बिना कसो भी एकतरफा नियम नहीं होता। किये अरथे उचित वाचको देख कर बहुतांको 'वाच्य है वा वृथा' ऐसा अर्थेष्ट हुआ करता है। अनन्तर यह यहि वृथा को; तो अरथमें अग्नि को सक्तो है, किन्तु बहुतर अरथमें अग्नि नहीं होती तो वाच्यमा निरुधना किये अर्थेष्ट को सक्तता है; अनन्तर यह अम नहीं है। इधं प्रकारको पापति जिनको उपलित होती है, उभको इस तर्कके द्वारा 'यह वृथा नहीं, वाच्य है' ऐसा नियम होता है। दूरसे एक इयमें काण्डको देख कर उससे

मनुष्यका अर्थ हुआ पीछे 'यदि यह मनुष्य है तो हाथ पैर अक्षर होते ऐसा तर्क' उचित होने पर यह शास्त्रार्थमें मनुष्य नहीं है ऐसा सिद्ध होता है। मोगत नामके कोट कहा करती हैं, कि यह इयमान विचित पदात्त समूह विज्ञानमय शास्त्ररूप है अर्थात् मोति समय अर्थे वाच, हाथो, मनुष्य पादि होक पड़ते हैं किन्तु पक्षलमें ये तुल्य भी नहीं हैं अर्थेष्ट रूप हैं, उभो प्रकार आपत्-अवस्थामें अर्थेष्टो, जल मनुष्य पादि को तुल्य इतिवोचर को रूढ़ है न पदात्त' भी शास्त्ररूप हैं, ज्ञानके अतिरिक्त तुल्य भी नहीं।

इसमें नो कायिकोका कहना है, कि सोते समय को पदात्त' अनुसूत्र रोति हैं, अब ज्ञान पर न पदात्त' सिद्धा अर्थात् मनुष्यत्वित मात्र माहूम पड़ते हैं इसलिये शास्त्ररूपार्थ ज्ञानरूप होने पर भी आपत्-अवस्थामें जो ज्ञान प्रकाशके पदात्त' दोष रूढ़ हैं न कसो भी ज्ञानमय नहीं ज्ञानसे सिद्ध हैं। इस प्रकार दोनोंके बाव्य तुल्य पर, इस जो पदात्त' समूह नेक रूढ़ हैं यह शास्त्ररूप है या ज्ञान' प्रतिष्ठित यह अर्थेष्ट अवस्था को उपलित होता है। बादमें इयमान अरापर अर्थेष्टो जल, मनुष्य पक्ष, पक्षी पादि पदात्त' यदि ज्ञानरूप को, ज्ञान से सिद्ध न को, तो इस प्रतिदिन अर्थेष्टोको अर्थेष्टो, जल को अरु, मनुष्यका मनुष्य नहीं अर्थेष्ट अर्थेष्ट में तथा अर्थेष्टोको अर्थेष्टो और जलको अर्थेष्ट अर्थेष्ट रूपमें इसको अर्थेष्ट ज्ञान को रूढ़ा, अर्थेष्ट अर्थेष्टोको भी होता है, बादमें काण्डपदात्त व्याप्तिज्ञानको मति ज्ञानरूप होने तो अर्थेष्टोको अर्थेष्टो जलको जल अर्थेष्टादि एक रूपसे अर्थेष्ट अर्थेष्टादि अनुभावका विषय नहीं होता। अब देखते हैं, कि 'अज्ञानस्थानमें सनका ज्ञान एकता नहीं होता इन प्रकारका तर्क उचित होने पर इयमान पदात्त' समूह ज्ञानरूप नहीं ज्ञानसे अर्थेष्ट है, अवस्था को ऐसो पवचारका होती है। इन तर्कके बिना पक्ष अर्थेष्ट अर्थेष्ट कसो भी एकतरको पवचारण नहीं होता। इस लिये पदात्त निरुधमें तर्क' बहुत पावयार्थ है। प्राचा मात्रको तर्क' हुआ करता है, किन्तु विधीय अर्थेष्ट न होनेसे उभको तर्क नहीं अर्थेष्ट

व्यापकात्तमें तर्कपदात्तका निरुधरूपसे प्रकाय होने



से न्यायशास्त्रको तर्कशास्त्र भी कहते हैं। तर्क पहले संप्रथ, फिर तर्क और अन्तमें निर्णय—इन तीन अंशोंमें परिसमाप्त होता है।

उक्त तर्कमें कोई पदार्थ आपाद्य वा आपादक (अर्थात् व्याप्यव्यापकभाव) नहीं होता। क्योंकि जलाशय यदि धूमविशिष्ट होता, तो पटविशिष्ट भी होता, इस प्रकारको आपत्ति कभी भी सम्भव नहीं तथा यद्यदि मनुष्य होता, तो शूद्रविशिष्ट होता, ऐसी आपत्ति कोई नहीं करता। इसी लिए व्याप्यका आरोपयुक्त व्यापकका आरोप कहा गया है, अर्थात् व्यापक पदार्थमें ही आपत्ति हुआ करता है। उक्त स्थानमें धूमका व्यापक पट नहीं है और न मनुष्यत्वका व्यापक शूद्र है इस लिए उनको वह आपत्ति नहीं हुई। उक्त आपत्तिके पक्षमें आपादकका अभाव निश्चय होने पर वह ज्ञान उत्पन्न होता है। इसलिए जलाशय यदि धूमविशिष्ट होता तो द्रव्य होता, ऐसी आपत्ति नहीं होती। कारण, जलाशयमें द्रव्यत्वका अभाव नहीं, किन्तु द्रव्यत्वका निश्चय हो है। यह तर्क ५ प्रकारका है—आत्माशय, अन्योन्याशय, चक्रक, अनवस्था और वाधितार्थ प्रसङ्ग।

इनमें जो आपत्ति स्वमें स्व अपेक्षणीय होने पर होती है, उसका नाम है आत्माशय, अर्थात् आपत्तिमें आत्माको (अपनी) अपेक्षा करते है इसलिए इस आपत्तिका नाम आत्माशय है।

जिमके अभावसे जो वस्तु सम्भव नहीं होती, उसको अपेक्षा कहते हैं, अपेक्षा भी उत्पत्ति, स्थिति और प्रतिक्रमिके भेदसे तीन प्रकारका है। यथा—हृत्त उपजनेमें बोज और पुत्रादिको उत्पत्तिमें पिता माता, वस्त्रादि वनानिमें ताँत सूत आदिको अपेक्षा होती है, तथा किसो पदार्थके संस्थापनको आवश्यकता होने पर अधिकरणको अपेक्षा चाहिये, किसो पदार्थको प्रथम अर्थात् अभिव्यक्ति (ज्ञान) आवश्यक होने पर इन्द्रियादि अपेक्षित होते हैं, इसलिए उत्पत्ति, स्थिति और प्रतिक्रमिके भेदसे आक्षेप तीन प्रकारका होनेसे आत्माशय भी तीन प्रकारका है। वस्तुतः जिस आपत्तिमें स्वमें स्वजन्य आपादक होता है, वही आपत्ति प्रथम आत्माशय है, जैसे—एक हृत्तको देख कर 'यह हृत्त इस हृत्तसे उपजा है या नहीं'

ऐसा सन्देह होने पर यह हृत्त यदि इस हृत्तसे उत्पन्न होता, तो इस हृत्तका अनधिकरण कालके उत्तरक्षणमें उत्पन्न न होता अर्थात् इस हृत्तके उत्पन्न होनेसे पहले भी यह हृत्त होता, क्योंकि जो वस्तु जिस पदार्थमें उत्पन्न होती है, उस वस्तुसे पहले वह पदार्थ अवश्य ही रहता है। अपनी उत्पत्तिसे पहले आप कभी भी नहीं रहते। इसलिए यह हृत्त इस हृत्तमें उत्पन्न नहीं है। अन्य जिस आपत्तिमें स्वमें स्वव्यक्तित्व आपादक होता है। उस आपत्तिका नाम भी आत्माशय है। जिस प्रकार इस पृथिवी पर पर्वत आदि स्थित है, उसी प्रकार इस पृथिवीके उपरिस्थित हो कर यह पृथिवी है या नहीं? ऐसा संधय होने पर यदि यह पृथिवी इस पृथिवीके ऊपर स्थित होती तो इस पृथिवी से यह पृथिवी भिन्न होती, क्योंकि अधिकरणसे आधेय पृथक् होता है, यह सब जगह देखा गया है। अधिकरण और आधेय एक ही व्यक्ति हो, ऐसा किसीने भी नहीं देखा।

यह आपत्ति हितोय आत्माशय है। जिस आपत्तिमें स्वप्रत्यक्षसे स्वमात्र अपेक्षणीय पथवा स्वमें स्वज्ञानस्वरूप आपादक होता है, वह आपत्ति ततोय आत्माशय है। यथा—इस घंटका प्रत्यक्ष यदि इस घटमात्रसे उत्पन्न होता, तो घटको उत्पत्तिके बाद सब समय इसका प्रत्यक्ष होता जब कि इस घटका प्रत्यक्ष कारण यह घट मात्र है और वह घट सर्वदा हो है। कारणके बिना कार्य क्यों नहीं होगा, अथवा यह घट यदि एतद्घट ज्ञानरूप हो, तो यह घट ज्ञान सामग्रीसे उत्पन्न होता, कारण जो ज्ञानरूप होता है, वह ज्ञान सामग्रीसे अवश्य ही उत्पन्न होता है। सामग्री शब्दसे उस कारण समूहका बोध होता है, जिससे कार्य हुआ करते हैं। स्वमें स्वापेक्ष अपेक्षणीय होने पर जो अनिष्टको आपत्ति होती है, उसको अन्योन्याशय कहते हैं। फलतः जिस आपत्तिमें स्वजन्य जन्यत्व, सुवृत्ति वृत्तित्व, स्वज्ञान ज्ञानमयत्व, इनमेंसे कोई भी एक आपादक हो, वही अन्योन्याशय है। यथा—यह हृत्त यदि इस हृत्तजात फलजन्य होता तो यह हृत्तजात फल इस हृत्तके पैदा होनेसे पहले अवश्य हो जाता, क्योंकि कारण कार्यसे



उभयत्र होता है, वह उभयका द्यभिचारो नहीं होना, ऐसा नियम है। मेरो आपत्ति करनेसे धूमसे बहिष्-कारका मन्देह निवृत्ति हो कर बहिष्को व्याप्तिका निर्णय होता है। इसलिए यह तर्क व्याप्तिनिर्णयक है। जिस तर्कके द्वारा द्यग्निसि भिन्न विषयका अवधारण हो, उभयका नाम है विषयपरिगोपक। जैसे—पर्वत यदि बहिष्का अभावविशिष्ट हो, तो धूमका भा अभावविशिष्ट हो सकता है। इस तर्कसे पर्वतमें बहिष्का मन्देह नष्ट हो कर बहिष्के रूपसे विषयका प्रवचरण होता है इसलिए इस तर्कका नाम विषयपरिगोपक है। (गौतमसूत्र)

करणे वज् । ८ न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्रका नामान्तर। इस शास्त्रमें तर्कका विषय विशेषरूपसे वर्णित हुआ है इसलिए इसका नाम तर्कशास्त्र है। न्यायशास्त्र चार भागमें विभक्त है—प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शाब्दज्ञ। इनमें अनुमानसङ्गठमें ही तर्क का आविष्कार है, इसलिए उभयको ही तर्क कहते हैं, किन्तु इन चारों सङ्गठोंमें तर्कप्रणाली विशेषरूपसे प्रवर्तित हुई है। नवहीपरे गदा धर भटाचाय आदि महामहोपाध्यायगण तर्कशास्त्रको विशेष उन्नति कर गये हैं। न्याय देखो।

१० मोमासाशास्त्र। तर्कसे शास्त्रको मोमासा हीतो है, इसलिए मोमासाका नाम भी तर्क है।

तर्कक ( मं० त्रि० ) तर्कण आकाङ्क्षा कायति प्रकायते कंक। १ याचक, मांगनेवाला। तर्कयति तर्क-गवुल् । २ तर्ककारक, तर्क करनेवाला।

तर्ककारिन् ( सं० त्रि० ) तर्क करोति कृ-णिनि। तर्ककारक, तर्क करनेवाला।

तर्कग्रन्थ ( सं० पु० ) तर्काधिकृतः ग्रन्थः, मध्यपटलो०। तर्क प्रधान ग्रन्थ।

तर्कञ्चान्ता ( मं० स्त्री० ) १ वह पदार्थ जिसमें उक्तजित करनेकी क्रिया हो। २ वीदशास्त्रमेद।

तर्कण ( मं० स्त्री० ) चिन्तन, तर्क करनेकी क्रिया।

तर्कणा ( सं० स्त्री० ) १ विवेचना, विचार। २ युक्ति, उपाय।

तर्कणीय ( सं० त्रि० ) चिन्तनीय, विचार करने योग्य।

तर्कना ( हिं० स्त्री० ) १ तर्कण देखो। २ तर्क करना।

तर्कमुद्रा ( सं० स्त्री० ) तन्वोक्त मुद्राविशेष, तन्वको एक मुद्रा। मुद्रा देखो।

तर्कवागीश ( सं० पु० ) तर्कशास्त्रवेत्ता, वह जो तर्कशास्त्र अच्छी तरह जानता हो।

तर्कवितर्क ( मं० पु० ) १ विवेचना, सोच विचार। २ वाद-विवाद, बहस।

तर्कविद्या ( मं० स्त्री० ) तर्करूप या विद्या तर्कस्य विद्या वा। न्यायविद्या, युक्तिविद्या। गौतमप्रणीत प्रमाणप्रमेय प्रभृति सोलह पदार्थरूप विद्या और कणादोक्त छह पदार्थरूप विद्या, आन्वोक्तिकी विद्या।

तर्कश ( फा० पु० ) तूणोर, भाषा, तोर रत्नकेका धागा। तर्कशास्त्र ( मं० स्त्री० ) तर्करूप शास्त्रं मध्यपटलो०। १ न्यायशास्त्र। २ वह शास्त्र जिसमें ठोक तर्क वा विवेचना करनेके नियम आदि निरूपित हों।

तर्कसा ( फा० स्त्री० ) छोटा तरकश। तर्काभान ( मं० पु० ) तर्कस्य आभामः, ६ तत्। कुवर्क। ऐसा तर्क जो ठोक न हो।

तर्कारी ( मं० स्त्री० ) तर्कं ऋच्छति ऋ-घण् । कर्म-णण् । ग ३ । ३। डोप् च १ जयन्तोहत्, जैतका पेट । पर्याय-वैजयन्तो विजया, जया, जयन्तो। ( Sesbania Aegyptiaca or Reschyuomene Sesban ) इसकी युक्तभान्तमें—जैत, विहारमें—सन्तरो वा सेवरी, उदियामें वज्र जन्ति, बालमें जयन्तो वा धनिया, गुजर तमें—वायमिंगनि, महाराष्ट्रमें—सेवरी, बम्बईमें—जैत वा जनजन, द्राविडमें—चम्पई वा करुमसेम्बाई तथा तेलगूमें—सडमिण्डा वा समिण्डा कहते हैं।

भारतमें सबत ही यह वृक्ष होता है; और तो क्या, हिमालयके चार हजार फुट ऊँचाई पर भी इसका वृक्ष देखनेमें आता है। हाँ, दक्षिणदेशमें कुछ अधिक होता है। कृष्णा और वेण्णा नदीके किनारे; जो जो स्थान बाढ़ आनेसे डूब जाते हैं, उन उन स्थानों पर इसके एक एक वृक्ष २० फुट ऊँचे होते हैं। इसको एकही नरम हीतो है। इससे साचे जगेरह भी बनते हैं। इसकी छालसे रस्सी बन सकती है।

इसके पत्त और बोज बड़े फायदेमन्द हैं। पूय-सञ्चय निवारणार्थ इसके पत्तोंको पुष्टिग दौ जाये है। और को-रह वा वातरोगकी सूजनमें इसका प्रयोग किया जाय, तो सूजन घट जाती है। हकीमीग्रन्थके मतसे-

इसके बीच निरन्तर रोजि-मास 'घोर मनुष्य' उदर  
 मयनायक. परिच रोजि-बनियारक घोर होशुकि  
 व्यापकारक है। बहुतने हिन्दू मुसलमो, पुण्यो पादिमें  
 इसको मन्त्रम बना कर लगते हैं। पञ्चममें इसने  
 होशु बट कर होशुकि मात्र उसे मात्र पर लगते हैं।  
 मराठीका विग्राम है कि इसके बीचको मन्त्रमें जो  
 विशुद्ध शक्तिका दर्द जाता रहता है। ठावेमें बहुतने  
 मोग इसमें तापी पत्तोंको बट कर १ बट्टाक तक खाते हैं  
 जिनमें उनका कर्मिणोग चन्दा जो जाता है। बरन्दी देको  
 ० गन्धकारिका, गन्धवारका पिट्। (मानप०)  
 गन्धवारका रेनो। १ टेबताइयत, रामर्षीम। ३ पन्थि  
 मन्त्र चलोकर पिट्। १ सुशुद्धिपन्थि यनिगारका पिट्।  
 १ जोमन नागरमोका। ० यि यपायय यीयमका पिट्।  
 ८ बन्धकड़ी, बन्धकड़ो।

तर्कित (स० पु०) बन्धकड़ोका चर्चक, पंवार।  
 तर्कित (स० वि०) तर्क-त्र। १ विचारित मोका दूपा।  
 २ धामोचित, विचार जिया दूपा। ३ मभावित चद्र  
 मान जिया दूपा। ४ चद्रुमित विचारा दूपा च द्वाका  
 दूपा।

तर्कित (स० वि०) तर्कयति तर्क-चिन्ति। तर्ककारक  
 मोर्माका करमेथाना।

तर्कित (स० पु०) तर्क-चन्त्। तर्कित देको।  
 तर्कित (वि० जो०) तर्कित देको।

तर्कित (स० जो०) छत्र त निगततात् माहु। सुत्रनिर्माच  
 यन्त्र, तन्त्रका टेरुपा। इसमें पर्याय—छपासन्त्रितिक  
 तर्कितो घोर धुठला है। (शागधने)

तर्कित (स० जो०) तर्कित्यात् चन्त्। तर्कित देको।

तर्कित (स० जो०) तर्कयति सुवीर्यात्-तया शीमन  
 तर्क-उत्तम्। चर्चान, चार्चाना।

तर्कित (स० जो०) तर्कित चिन्ता मोरा० कीव। तर्कित  
 तन्त्रका टेरुपा।

तर्कित (स० पु०) तर्कित-विष्णु, मन्त्रपदमो०।  
 तर्कितको चिन्ताको। इसमें पर्याय—चन्ति ने, तर्कितोको,  
 चन्त्, ना है।

तर्कितो (स० जो०) तर्कितता पोमी। तर्कित  
 तन्त्रको चिन्ताको।

तर्कित (वि० पु०) १ तर्कित्यात् पिट्। २ तर्कित्या चन्त्।  
 तर्कित्यासक (स० पु०) तर्कित्यासक चन्त् चिन्त्-चन्त्।  
 तर्कित्यासक, चन्त्।

तर्कित्या (स० पु०) तर्कित्याका, तर्कित्या। सामन्त्र बट  
 कोटा पत्तर जिनमें तर्कित्याका जिया हो पर मान चर्चार्क  
 जातो है।

तर्कित (स० वि०) विचार, जिन पर कुछ चीज-विचार  
 करना चाहिये हो।

तर्कित (स० पु०) तर्कित्या पयो० माहु। तर्कित, तर्कित्या या  
 चोना।

तर्कित (स० पु०) तर्कित्यात्-चन्त्-चन्त्। चन्त्-चन्त्  
 चन्त्-चन्त्-चन्त्।

तर्कित—प्राचीन तुरको भाषाको एक सम्भ्रमन्त्रक  
 उपाधि। तर्कित चर्चनेमें उनका बीच होता है जो उच  
 बंधोत्पन्न है घोर जिनको किलो तरकका नियम कर न  
 देना पड़ता हो। प्राचीन तुरकभाषामें निकित बहुतने  
 दयाविशीमें तुर्क मन्त्रका उल्लेख देखनेमें पाता है। इसका  
 पर्यं पाश्चात्य घोर सम्भ्रमन्त्रक यथापन्न निधि है।  
 तुरकीमें घनिष्ठानमें इसका पर्यं 'उच पदवी' लिया  
 है। नरचि घोर तर्कित कोम तर्कितकी जगह तर्कित  
 लिखते हैं जिन्को नियम व्यवस्था बीच चर्चनेमें लिए है  
 इस मन्त्रका प्रयोग करते हैं। चर्कितको मारनेमें लिए  
 पेटार जन्ते जो इसका नाम जिया या बट घोर चर्चनेकी  
 मान्त्रम होती है कीमें चर्कितके चर्च दिना। उनमें  
 परामर्शमें बीबलकी रचा जोमें चर्कितके दोनोंकी  
 तर्कितकी उपाधि प्रदान की। इनको मन्त्रानसन्त्रित मो  
 तर्कित उपाधिमें विमुक्तित है। सुरामान घोर तर्कित  
 स्थानमें इनका बाल है।

भारतवर्षमें सिन्धुदेयको तरक तर्कितव घ देखनेमें  
 पाता है। कहा जाता है, कि तर्कितमें यह उपाधि हो  
 को। तुर्कतमियकान् चर्च तैम्पर पर पाठमन्त्र चर्चनेमें  
 लिए चपकर चूए है, उच समय चर्कितके प्रयोग चर्कित  
 तैम्पर मोमपराक्रमने उनको प्रति रोज कर चर्कितके  
 पाचन्त्राग दिने। तैम्पर चपको चर्कितके उचमें बीबलको  
 दिने कर पत्तोव विधित हुए। चर्कितमें चर्कितके

आत्मोद्योगको 'तर्जान'को उपाधि दे। तमोसे सिन्धु-  
देगमें तर्जानवंशकी उत्पत्ति हुई है।

परगना प्रदेशमें भी तर्जानवंशियोंका वाम है। ७०३  
ई०में, वहाँके तर्जानोंने अत्यन्त ममारोहके साथ फारसके  
मुलतानकी अभ्यर्थना की थी। कास्योय भागरके  
पश्चिममें खजरके ग्वाकनीमें कर्मचारीविशेषको तर्जान  
कहते हैं।

भारतमें तर्जान-वंशके लोग इस समय नसरपुर और  
ठहरमें रहते हैं।

१५२१ ई०में सिन्धुदेगमें अर्धुनवंशियोंका आधिपत्य  
देखनेमें आता है। १५५४ ई०में इस वंशके शाह हुसैन-  
की अपुत्रक टर्जाने मृत्यु होने पर तर्जानवंशने अर्धुन-  
वंशका म्यानाधिकार किया। किन्तु ये कुछ ही दिन  
वर्ष राज्य करनेमें समर्थ हुए थे। १५८२ ई०में वाट-  
शाह अकबरने मिर्जा जानोबेगकी परास्त कर सिन्धुदेग  
सुगन्ध साम्राज्यमें मिला लिया था।

तर्ज (अ० स्त्री०) १ प्रकार, तरह, किस्म। २ रीति  
शैली, ढंग, ढव। ३ रचनाप्रकार, वनावट।

तर्जन (स० स्त्री०) तर्ज भावे ल्युट्। १ निरस्कार, फट-  
कार। २ अवज्ञापूर्वक निर्देशकरण, घृणा करनीका  
कार्य। ३ भयप्रदर्शन, धमकानिका कार्य। ४ आस्फा-  
लन, ताड़न, मार, फटकार। ५ क्रोध, गुस्सा।

तर्जना (हि० क्रि०) डाटना, धमकाना, उपटना।

तर्जनो (स० स्त्री०) तर्जत्वनाया तर्ज करणे ल्युट् तत-  
भ्रिया डोय्। अङ्गुष्ठममौषाङ्गुलो, अङ्गुठेके पासको  
उंगुली। इसके दूसरा पर्याय प्रदेशिनो है।

तर्जनोमुद्रा (स० स्त्री०) तन्वीत मुद्रामेद, तन्वीको एक  
मुद्रा। इसमें बायें हाथको मुठो बाँध तर्जनो और  
मध्यमाको फैलाते हैं।

तर्जिक (स० पु०) तर्ज स्तर्जनमस्त्वत्र तर्ज-ठन्। देश-  
विशेष, एक देशका प्राचीन नाम, ताजिकदेश।

तर्जित (स० द्वि०) तर्ज-क्त भस्वित, अपमानित, अना-  
दर किया हुआ।

तर्जुमा (अ० पु०) अनुवाद, भाषान्तर, उल्हा।

तर्ण (स० पु०) तर्णति तर्णादिकं भक्षयति तर्ण अच्।  
१ वल्क, बछड़ा। २ शालिधान्यविशेष, एक प्रकारका  
धान।

तर्णक (स० पु०) तर्ण एव स्वार्थे कन्। १ मद्योज्ञात-  
वल्क, तुरतका जम्मा गायका बछड़ा। २ शिशु, बच्चा।

तर्णि (स० पु०) तर्ण्याकाश पडति त-नि। १ मूर्ध्।  
० प्रवृ वेडा।

तर्त्तरीक (स० स्त्री०) तोर्यत्वनेन त-इक। फर्त्तरीक  
दशक। उग्-५।०। इति निघातनात् माधु। १ नोका,  
नाव। कर्त्तरि-इक। (त्रि०) २ पारग, पार  
करनेवाला।

तर्त्तव्य (स० द्वि०) तृ-तव्य। तर्णोय, पार होने योग्य।

तर्तू (स० स्त्री०) तरति प्रवते तृ-ऊ टुकागमच। शोडून्।

उग्-५।१। टारुहस्तक, लरुडोका हत्या।

तर्तन् (स० पु०) तट् वा मनिन्। १ छिद्र, रान,  
सुराग। २ तर्दन प्रदेश।

तर्पण (न० स्त्री०) तप-प्रोगने भावे ल्युट्। १ तृनि,  
प्रोगन मन्तोप होनेको क्रिया। २ यज्ञकाठ। तर्पन्ति  
पितरो येन तप-करणे ल्युट्। ३ आहारविशेष।  
४ नैवतर्पणानुष्ठान। ५ जन्मदान दे कर देवार्प, पितृ,  
मनुष्य आदिको तप वा परिशुद्ध करनेका कार्य। यह  
तर्पण पञ्च महायज्ञके अन्तर्गत महायज्ञका भेद है।

तर्पण दो प्रकारका है—प्रधान तर्पण और अङ्ग-  
तर्पण। शातातपने प्रधान तर्पणका वर्णन इस प्रकारसे  
किया है,—

स्नातक द्विजगण शुचि हो कर प्रतिदिन देव, ऋषि  
और षितर्गोका यथाक्रमसे तर्पण करें तथा विधवा  
स्त्रियाँ कुशतिलोटक द्वारा भर्ता और श्वशुरादिके नाम  
गोत्रका उल्लेख कर प्रतिदिन तर्पण करें।  
इनके मतसे अङ्गतर्पण इस प्रकार है—

स्नान तीन प्रकारका है—नित्य, नैमित्तिक और  
काम्य, तर्पण उसका अङ्ग है। प्रात्यहिक प्रतः और  
मध्याह्न सन्ध्या स्नान नित्य है। ग्रहणादिके निमित्तसे  
जो स्नान किया जाता है, उसे नैमित्तिक कहते हैं।

\* 'तर्पणान् शुचिः कुर्यात् प्रसहं स्नातको द्विजः।

देवेभ्यश्च ऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्च यथाक्रमम् ॥

तर्पण प्रसहं कार्यं भर्तुः कुशतिलोटकैः।

तत् पितु स्वत्पितृश्चापि नामगोत्रादिपूर्वकम् ॥'

(आधिकृतत्व)

मैत्री आदि लोकात्मिकी को ज्ञान विद्या जाता है वह आत्म ज्ञान है। चाण्डालादिसे कर्म, यज्यु, कर्म, पशुप्राण, मीयुन, कर्म न घोर पशुप्राण कर्म करनेसे जो ज्ञान करती है, वह मो नैमित्तिक ज्ञान है। किन्तु ऐसे नैमित्तिक ज्ञानमें तर्पणदि प्रवृत्तिया नहीं होती जाती। पूर्वोक्त निम्न नैमित्तिक घोर आध्यात्मिक करनेसे ही तर्पण करना भावश्यकोप है। जो पुत्र नादित्यतासे कारण प्रतिदिन पितरोंका तर्पण नहीं करता पित्रयत्न करतीं जो कर उसको देखके बहिरको पीठ है। पतएव पति यमनूनक प्रतिदिन तर्पण करे। ज्ञान करके तर्पण करना उचित है। इस नियमके पशुप्राण यदि किसी दिन शारीरिक पशुप्राणसे कारण प्रातः, मध्याह्न ज्ञान न किया जाय तो क्या उस दिन तर्पण करना निषिद्ध है ? परन्तु ब्रह्मज्जालमें "तर्पणं प्रवृत्तं कर्म" इत्यादि बचन द्वारा तर्पणको निम्नता प्रतीत होती है।

"नमित्तिकवशात् तर्पणं न तर्पणं वै ह्ये ।"

निमित्तिके हेतुविरतिं विना वै नकार्यते ॥"

( बोदी ब्रह्मवत्सव )

तर्पणको निम्नताके कारण "यदि जो कर तर्पण करे" इस बचनके अनुसार प्रधान तर्पण मध्याह्न घोर संध्याके बाद करना उचित है। क्योंकि पशुप्राणतम तर्पण मध्याह्नकालमें कहा गया है।

यदि प्रातःप्राण तर्पण करके मध्याह्नप्राण न कर सके, तो भी प्रधान तर्पण करना विधेय है या नहीं ? इसका उत्तरमें शांतातमने लिखा है, कि प्रातःप्राणात् तर्पण करनेसे ही प्रसङ्गात्प्राण पशुप्राणतम तर्पण तर्पणको भी निश्चि होतो है। अतः कहा है—विज्ञानम ज्ञान करके ज्ञान द्वारा पितरोंको जो तर्पण करती है उसी तर्पणके द्वारा ही उन्हें समस्त पित्रयत्न विद्याका फल प्राप्त होता है।

"वरैव तर्पणं विदुः शान्ता प्रियोत्तमः ।"

वेदेन वर्तमानेषु विदुषरुचिवाक्येषु ॥ ( वसु )

अतः ही मतसे—शांतिसे ही पार इच्छते पागामो शक्तिसे प्रथम पार इच्छते भीतर ज्ञान करे, पर्यात् प्राण घोर मध्याह्न ज्ञानका वर्तमान न रहनेसे कारण पशुप्राण शारीरिक तर्पण द्वारा भी पित्रयत्न तर्पणकी निश्चि

होतो है। पशुप्राणसे समस्त ज्ञान करनेसे सामवेदियों को मध्याह्न तर्पणके बाद पित्रयत्न करना चाहिये। पोके मध्याह्नप्राण करने पर मध्याह्न मध्याह्न तर्पण करनेसे पित्रयत्न करना चाहिये। प्रातःप्राण न करनेसे सूर्योदयके बाद जो ज्ञान होता है उसको पशुप्राण कहते हैं, इसलिये पित्रयत्न मध्याह्न मध्याह्न बाद करे।

प्रातःप्राणमें ज्ञान घोर तर्पण करके यदि पशुप्राण न किया जाय तो मध्याह्नप्राणमें प्रधान तर्पण नहीं करना पड़ता। कारण—पशुप्राण तर्पणके जो प्रधान तर्पणको निश्चि होती है। अतः सूर्योदय घोर पशुप्राण दस आदि योगमें ज्ञान करनेसे किञ्चन तर्पण करना पड़ता है।

अधोर पशुप्राण होने पर यदि प्रातः घोर मध्याह्नप्राण न किया जाय, तो मध्याह्नमध्याह्न तर्पणके बाद प्रधान तर्पण करना पड़ता है। किन्तु कारणसे जो मध्याह्न एक दिन प्रातः घोर मध्याह्नप्राण कर पशुप्राण करता है उसको मध्याह्नप्राणतम तर्पण करना चाहिये। मध्याह्न करके यदि तीर्थोदयमें ज्ञान किया जाय तो भी प्राणके बाद तर्पण करना चाहिये।

जिन अज्ञानमयका अज्ञानमय प्राचिनोक्ति लिये लक्ष्मी कृत नहीं हुआ है और अज्ञान है पर्यात् श्रेष्ठ्यादि द्वारा शानित रूप पुष्करिको आदिका ज्ञान घोर निपान प्रक्रमसे तर्पण न करना चाहिये। ( कृष्ण पाल भाय भंस आदिमें यीमके लिये रचित अज्ञानमयको निपान कहते हैं )

"नम वहीन शोष्य नवापेयमिवावस्य ॥"

उत्तरे वसिष्ठ उवाच वरैव विदुषोऽपि ॥ ( भाद्रकालम् )

इहिके जलसे तर्पण न करना चाहिये। शूद्र और श्रेष्ठ आदिमें जलसे ज्ञान, पाचमन, दान, देन घोर पित्रयत्न न करे। जो पशुप्राण तथा जोते समस्त इष्टिजन मित्रित जलसे तर्पण करता है, उसको निश्चय ही पार नरकमें जाना पड़ता है। ईदके जलमें पूरा स्थान पर हैक कर पित्रयत्न न करना चाहिये।

"नैवकापिते स्वये विदुः स्वर्गैः ।" ( लक्ष्मीनिपान )

पार्श्वकाल जो कर तर्पण करना हो तो उसमें रज कर जो तर्पण करना चाहिये। पार्श्वकाल परित्याग करने पर तोर पर बैठ कर तर्पण करे। किन्तु तोर-

में शुष्कवस्त्र पहननें कर तर्पण करेना ही, तो एक पेर जलमें और एक पेर स्थल पर रख कर तर्पण करें। जलमें उतर कर तर्पण करना ही तो नाभिमात्र जलमें रहे। स्थल पर तर्पण करनेके नियम कुछ विशेष है, यदि कोई उद्धृत जल द्वारा तर्पण करें तो उसमें तिल मिला लें। यदि तिलमिश्रित न किया जा सके, तो विचक्षण व्रात्ति को चाहिये कि, वह वामहस्तके द्वारा तिल ग्रहण करें।

तिलतर्पण करना ही तो अद्भुत और अनामिका द्वारा वामहस्तसे तिल ग्रहण करें और पात्रस्थ करके पितरोंका तर्पण करें।

जो व्रात्ति तिलको रोमसंस्थ करके पितरोंका तर्पण करते हैं, पिढ्यगण उस तर्पणके द्वारा तर्पित न हो कर उनका रुधिर और मल द्वारा तर्पित होते हैं।

“रोमसंस्थान् तिलान् कृत्वा यस्तु सःतर्पयेत् पितॄन् ।

पितरस्तर्पितास्तेन रुधिरैर मटेन च ॥” (आधिकृतम्)

वाम करमें जहाँ रोम न हों, वहाँ तिल रखना चाहिये। किसी शुद्ध पात्रमें तिल रख कर तर्पण करना उचित है, ऐसा करनेसे सोमसे मिलनेकी सम्भावना नहीं। व्यवहार भी इसी तरहका देखनेमें आता है। विज्ञानगण ताम्रनिर्मित तिलधानीकी वामहस्तके मणिशन्धसे संयुक्त करके तर्पण किया करते हैं। तिलके विना शुद्ध जनसे भी तर्पण हो सकता है। किन्तु तिलतर्पण अधिक फलदायक है।

कुश, रोष्य वा स्वर्णाङ्गुरीय टाहिने हाथको अनामिकामें पहननो चाहिये। एक हाथसे तर्पण करना निषिद्ध है। यव और त्रिपत्र द्वारा देवतर्पण, तिल और कुशमोटक द्वारा पितृतर्पण करना विधेय है। तिलके अभावमें सुवर्ण और रजतयुक्त करके जल दें। उसमें अभावमें दर्भयुक्त जल द्वारा तर्पण करें। इसमें सिवा अन्य प्रकारसे तर्पण न वारे। तिलके अभावमें क्रमगः प्रतिनिधि कहे गये हैं। इससे ही स्पष्ट प्रतीयमान होता होता है, कि तिलयुक्त तर्पण ही प्रशस्त है। रविवार, शुक्रवार, द्वादशो और अभावस्थानिमित्तक आहके सिवा अन्य आहके दिन, समो, जम्भतिथि और संक्रान्तिमें तिल तर्पण न करें। किन्तु अयन और विषुवसंक्रान्ति, ग्रहणकाल, युगादि, प्रेतपक्ष (महालया) अमावास्यासे

पड़नेको प्रतिपदासे (महालया अमावास्या तक प्रेतपक्ष कहलाता है) और गङ्गादि तीर्थमें सब दिन तिल तर्पण किया जा सकता है। टाहान्तमें और प्रेतपक्ष उद्देश्यमें निषिद्ध दिनको भी तिलतर्पण करें। ऐसा टागमें किसी दिन भी तिलतर्पण निषिद्ध नहीं है।

मोवर्ण, ताम्र वा रोष्यमय अथवा खड्गनिर्मित पात्रमें पितरोंका तर्पण करनेमें सब कुछ अज्ञय होता है।

सुवर्णादिके पात्रके विना अथवा तिन और दर्भके विना तर्पणोदक पितरोंके लिये ढमिकार नहीं होता। किन्तु ऐसा समय दृश्यके अभावमें समझें। मोवर्ण आदि पात्रमें सुवर्ण द्वारा उदक पितृतीर्थको स्पर्श करके देना पड़ता है।

जलसे तर्पण कराना ही तो पात्रमें जन ले कर अन्य शुद्ध पात्रमें वा जलमें भरे हुए गडहमें निक्षेप करें, वहिःशून्य स्थानमें परित्याग न करें। तर्पणका जल जनपात्र में एक झिलझल जलके छोड़ना चाहिये।

उपवोतो हो कर देवीका, निवोतो हो कर मनुष्योंका और प्राचीनावोति हो कर पितरोंका तर्पण किया जाता है। तर्पण करते समय वामहस्त बहुततर कुशयुक्त करें और दक्षिणहस्त कुशपत्रद्वय निर्मित पथिवयुक्त करें। किन्तु गृहस्थोंके लिये प्रतिदिन इन द्रव्योंका सग्रह कर कार्य करना अत्यन्त कठिन है। इसी लिए शास्त्रकारोंने एक सहज उपाय निर्धारित किया है। दहिने हाथको तज नोमें रजत और अनामिकामें सुवर्ण धारण करें, ऐसा करनेमें ही कुशादि धारण करनेका कार्य ही जायगा।

“तजंश्चा रजतं धार्यस्वर्णं धार्यमनामया ।

कुशाकार्यैर्करं यस्मान्ननुबन्धाः कृपाः कुशाः ॥” (आधिकृतम्)

सामगणको चाहिये कि वे सनकादि दिव्यमनुष्यका तर्पण प्रत्यङ्ग-मुख हो कर करें। सामनेतर लोम उदङ्मुख हो कर तर्पण करें। देवगण पूर्व, पिढ्यगण दक्षिण, मनुष्यगण प्रतीची और असुरगण उत्तर दिशाको भजना किया करते हैं, इसलिए तर्पणादि कार्य भी उक्त दिशाओंकी तरफ मुह करके करने चाहिये। देवीको प्रीतिके लिए तीन बार जलतर्पण करें और ऋषियोंके लिए एक बार। पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह,

प्रैतोतामह, इहप्रमातामह माता विनामही पीर प्रपिता मही, इमको तीन बार पित्रतोर्ब द्वारा तर्पण करे । क्रिन्दु माताके अनुपरोधसे मातामही प्रमातामहो पीर इहप्रमातामहोको एक बार तर्पण करना चाहिये ।

इस बारह व्यक्तियोंमेंसे जो जीवित हों उनको छोड़ कर उनमें से प्रथमको पञ्च बार बारह सप्ता पूर्व करे । मन्वामी पीर पतित व्यक्ति किए भी ऐसा ही विधान समर्थ ।

तदनन्तर बिमाता ज्येष्ठ माता पित्रध्व, मातृम पादिवा तर्पण करे । श्रावणके तर्पणके बाद सुहृदीका तर्पण करे । सुहृद् यदि पञ्चवर्ष हो तो भी उनका तर्पण किया जा सकता है ।

ब्राह्मणको पञ्चवर्ष होने पर भी भौष्पाष्टमोमि भोष्प का तर्पण करना आवश्यक है । ब्राह्मण पादि जो वध भौष्पाष्टमोमि भोष्मको जन नहीं चढ़ाते, उनका एक वर्षमें व माया कृपा सुष्ण नष्ट हो जाता है ।

'श्राद्धन कालु मे वन्य इजुर्भीध्याय भो वधम् ।

इन्मन्वाङ्गर्ण र्वां पुत्रं वरयेत् उत्तम ॥'

(आश्विपुस्तक)

पक्षी देवतर्पण, फिर मनुष्यतर्पण पश्चात् मरीच्यादि अदितर्पण, उसके बाद अग्निष्वात्तादि वितरौका तर्पण, अनन्तर चतुर्दश वसतर्पण करके पितरौका तर्पण करे । पीछे रामतर्पण करे ।

इस समस्त तर्पणोंमें अग्रत होने पर ज्येष्ठमुनि निश्चित न चित्र तर्पण करे । इस नश्चित्र तर्पणसे समस्त तर्पण निश्च होत ।

श्री पीर शूद्र तर्पणमन्त्र ब्राह्मणके द्वारा पाठ करा कर शूद्र 'ममा ममा उच्चारण करके जन चढ़ाये । क्रिन्दु पित्रादिवा नामोल्लेखपूर्वक जो वाक्य बड़ी जाति है उन्हें श्री पीर शूद्र चढ़ाये । अनुपनीत पीर लावत् पितृक व्यक्तियोंमें तर्पणके सिवा अन्य तर्पण नहीं कर सकती ।

तर्पण करनेसे पहले ध्यानस्थको निचोड़ना न चाहिये । याज्ञवल्क्यकी कथा है जो तर्पणने पहले ध्यान रख निचोड़ती है, उनका विद्वगव महर्षिमेंसे माह निराय हो कर उसे जाते हैं ।

तत्र प्रयोग—यहने श्री धर्मय कथा गयी है, उस समयसे अनुसार प्राचीनाभोतो पीर दक्षिणमुख हो कर शान्ति पूर्वक—

'ओ सुस्सेरं ववा भवा प्रनात पुष्टरात्रि च ।

श्रीरूपेणमि पुष्टमि तर्पण्यके मन्त्रित्वा ॥'

यह मन्त्र पढ़ कर तोर्ब-आवाहन करे । पीछे पूर्व मुख लपनीतो हो कर देवतर्पण करे । 'श्री ब्रह्मास्त्रप्यता, श्री बभ्रुस्तृप्यता श्री बह्वस्त्रप्यता, श्री प्रजापतिस्त्रप्यता' ब्रह्मादि प्रखेक देवताको त्रिपत्रके माह देवतोर्ब द्वारा एक एक पञ्चानि अक्षयदान करे । इस प्रकारसे देवतर्पण करके—

'ओ वैवा ब्रह्मसवा माया शान्वास्त्रलोऽहारा ।

शूरां वरां पुनरीयत्र तरो ब्रह्मगा वराः ॥

निपावरा ब्रह्मवास्त्रवैशम्भरगमिवा ।

मिगहारात्र वै श्रीशा पापे नरे उत्तरक वै ॥

तेवाभावावकातेतृपीवते लठिकं ववा ।'

यह मन्त्र पढ़ कर देवतोर्बके द्वारा एक पञ्चानि जन प्रदान करे । बादमें पथिममुख निबोती हो कर—

'ओ इमकव वनरव इपीरव ववायवा ।

वपिक्यापुत्रैवै चोऽः पचठिकवत्तवा ॥

धर्वेते ह्यतिवावन्तु मरुतेवाभ्युवा वदा ।'

यह मन्त्र दो बार पढ़ कर प्रजापतितीर्षके द्वारा दो पञ्चानि जन प्रदान करे । उसके बाद पूर्वमुख लपनीतो हो कर 'श्री मरीचिस्त्रप्यता, श्री अग्निस्त्रप्यता श्री अश्विना स्त्रप्यता, पुनहस्तृप्यता श्री पुनहस्त्रप्यता, श्री ऋतु स्त्रप्यता श्री प्रचेतास्त्रप्यता श्री अग्निहस्तृप्यता श्री शूद्र स्त्रप्यता श्री कारदस्त्रप्यता' यह ऋच कर मरीचिसे भारत पर्यन्त यथाक्रमसे प्रखेकको देवतोर्ब द्वारा एक एक पञ्चानि जन चढ़ाये ।

उसके उपरान्त दक्षिणमुख प्राचीनाभोती हो कर श्री अग्निष्वात्ता पितरःश्रयन्कामितृत् मतिभोदव तम्य व्यवा श्री रोम्या, श्री इतिश्रयन्ता श्री लक्ष्मण श्री सुतानित, श्री बर्हिषद श्री पाण्डवा इनको विद्वतोय द्वारा मतिव एक एक पञ्चानि अक्ष देवे । पीछे—



“ओं यमाय धर्मराजाय सृत्वे चान्तकाय च ।

वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥

धौहुम्बराय दध्राय नीलाय परमेष्ठिने ।

शुक्रोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः ॥”

इस मन्त्रको तीन बार पढ़ कर पितृतीर्थ द्वारा तीन अञ्जलि जल चढ़ावें । यदि समय ही, तो चतुर्दश यमोंको प्रत्येकका नामोच्चैः कर तीन तीन अञ्जलि जल प्रदान करें ।

उसके उपरान्त तर्पण समाप्तपर्यन्त दक्षिणमुख प्राचेनावीतो हो कर पितृतीर्थके द्वारा तिस्रतर्पण करें, क्षतञ्जलि ही कर—

“ओं आगच्छन्तु मे पितर इम गृह्णन्वयोऽर्घालि ।”

इस मन्त्रको पठ कर पितरोंका आवाहन करें । पीछे “विष्णुरीं श्मुक्कगोत्र पिता श्मुकदेवगर्मां तृष्यतामित्त सतिलोदकं तस्यै स्वधा ।” यह वाक्य तीन बार कह कर तीन अञ्जलि जल पितरोंको चढ़ावें । इस तरह पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामहको भी सतिल तीन अञ्जलि जल दें ।

“विष्णुरीं श्मुक्कगोत्रा माता श्मुक्की देवा तृष्यतामित्त सतिलोदकं तस्यै स्वधा ।” इस प्रकार कह कर सतिल तीन अञ्जलि जल दें ।

तत्पश्चात् पितामहो और प्रपितामहोकी भी इस तरहसे तीन अञ्जलि जल प्रदान करें । मातामहो, प्रमातामहो, वृद्धप्रमातामहो, विमता, पितृव्य, मातुल और भ्राता आदि सभीको एक एक अञ्जलि जल दें ।

पितृतर्पण समाप्त कर भोष्पाटभोमें भोष्पाका तर्पण करना विधेय है । भोष्पाटभोके अलावा भोष्पके तर्पण करनेकी जरूरत नहीं ।

भोष्पतर्पण—

“ओं वंशप्रपद्यगोघ्राय साकृतिप्रवणाय च ।

धनुषाय ददान्येतद् सलिलं भीष्मवर्षणे ॥”

इस मन्त्रकी पढ़ कर एक अञ्जलि जल चढ़ावें ।

“ओं भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवासी त्रितेन्द्रियः ।

आभिरक्ष्मिरवाप्रोद्ध पुत्रपौत्रोचिता क्रियां ॥”

इस मन्त्रके द्वारा भोष्पको नमस्कार करें । अनन्तर—

“ओं क्षमिन्द्रग्राह्य ये जीवाः येऽन्यदग्धाः कृष्टे मम ।  
भूमौ दत्तेन तृप्तस्तु तस्मा यातु परं गतिं ॥”

इस मन्त्रको पठ कर एक अञ्जलि जल दें ।

“ओं ये चान्धववाण्ववा वा येऽन्यजन्मनि शान्ववाः ।

ते तृप्तिमनिला यातु ये चाग्मन्तोवक्षाक्षिणः ॥”

इस मन्त्रको पठ कर एक अञ्जलि जल दें । तट-  
नन्तर—

“ओं आश्रमभुवनाहोरा देवर्षिपितृमानवाः ।

तृष्यंतु पितरः ममं माह्यमातामहादयः ॥

अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनां ।

मया दत्तेन तोयेन तृष्यंतु मुवनप्रयम् ॥”

इस मन्त्रसे तीन अञ्जलि जल दे कर

“ओं आश्रमस्तम्भपर्यंतं जगत्तृष्यतु ।”

इस मन्त्रसे तीन अञ्जलि जल चढ़ावें । तदुपरान्त—

“ओं दे चाग्मनां कृष्टे जाता अधुनागोत्रिणो मृताः ।

ते तृष्यंतु मया दत्तं वरनिष्पीडनोदकम् ॥”

इस मन्त्रसे ज्ञानवस्त्र निचोड़ कर भूमि पर एक ब्राह्मण जल छोड़ना चाहिये ।

“ओं पिता स्वर्गं, पिता धर्मः, पिता हि परमं तपः ।

पितरि प्रीतिमापने प्रीयंते सर्वदेवताः ॥”

इस मन्त्रसे पिताके चरणोंको नमस्कार करें । प्रति दिन तर्पण करनेमें अग्रह हीन पर—

“ओं आश्रमस्तम्भपर्यंतं जगत्तृष्यतु ।”

इस मन्त्रसे तीन बार जलाञ्जलि दे कर तर्पण सम्पन्न किया जा सकता है ।

संक्षेपमें तर्पणके मन्त्रान्तर—

“आश्रमस्तम्भ पर्यंतं देवर्षिपितृमानवाः ।

तृष्यंतु सर्वे पितरो माह्यमातामहादयः ॥

अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनां ।

आश्रमभुवनाहोरादिदमस्तु तिलोदकम् ॥”

शूद्र और यजुर्वेदियोंकी तर्पणकालमें “तृष्यतु” शब्दका प्रयोग करें, जैसे—“ब्रह्मा तृष्यतु” “मनकथ सनन्द्य” इस मन्त्रको उत्तरमुखो हो, पढ़ कर दो अञ्जलि जल चढ़ावें ।

‘कुक्षेत्रं’ गया गंगा प्रसाद-पुष्कामि च ।

शीर्षान्येतामि पुण्यानि तर्पणकाले भवन्तिव ॥”

इम मन्त्रके द्वारा पृथ्वी तीर्थ-आवाहन करना चाहिये ।

शुद्धमय भीष तर्पण करने पिट्तर्पण करे । और सब नियम सामवेदियोंके समान है ।

अथवेदियोंका तर्पण मनुवेदियोंकेसा है मिर्कं अग्निष्वात्तासि पितरोऽका तर्पण तौन बार करना पड़ता है । अथाष्टमी तिथिमें मिर्कं बनने को पितरीं का तर्पण किया जाय, तो सो वर्षके गया आदिका एक होता है ।

( भाट्टिलय )

तन्त्रके मतके तर्पण तीन प्रकारका है—१ धास्तर २ मानम और ३ बाह्य । सोम पर्व धोर पञ्चमके म वह के स्थानित को परम पञ्चत, उस दिवस पञ्चमके परम देवताका जो तर्पण किया जाता है उसको धास्तर तर्पण कहते हैं । धास्तरको तन्त्रय कर पश्चात् त्रिं देवता का तर्पण करे उस देवताके पञ्चममें सोम को कर जो तर्पण किया जाता है उमका नाम है मानम तर्पण । विद्युत् कानमें बैठ कर तर्पण परम्य करना चाहिये । पृथ्वी गुणका तर्पण कर पीछे मूलदेवीका तर्पण करे । पृथ्वी कोहक पृथक् करे, पश्चात् विद्या योग कृतसुम्भयिता (साहा) कृत करके मूलदेवीका नाम से कर "तर्पयामि ममा" इम पदका प्रयोग करे । कृत्वारि द्वारा देवता, अग्नि धोर ऋषियोंका तर्पण करे । तर्पणके आदिमें "अप्यता" इम पदका प्रयोग किया जाता है ।

इस प्रकारसे विष्णु, ब्रह्म, प्रजापति, ऋषियन्त्र, पित्र्ण यत्र धोर धैरवीका तर्पण करे । तर्पणके प्रारम्भमें "त्रिपुर मूर्धे" इस पदका प्रयोग करना आवश्यक है । \* ( त्रि० ) ६ मंत्रपूरक ।

- ॐ "तर्पणश्च विद्या श्रेष्ठं वास्तव तन्मनुष्येण म ।
- लोचार्णवस्रववाद् स्वस्तिव वपुर्वापुतम् ॥
- देवामुतन रिम्बेन तर्पेद्द वरदेवता ।
- आस्तरं तर्पेत् सोत्पन्नाशर्षे ऋतु धाम्मसम् ॥
- आत्मानं तन्मयम् कृत्वा यथा कल्पितोऽहमवाद् ।
- वहीरा नर्वेकावेतु तन्मुह रिवाकान्त ॥
- वपुश्चिः कृत्वा वैसे त्पारर्पणमारभेत् ।
- तर्पित्वा पुनरागो मुञ्चेत्तौ च तर्पेत् ॥

तर्पणघाट—दिनात्रपुर त्रिषुके सरहट परगनेके पञ्चोन एक पत्रिधाम । परवर्तमें वही धाम मन्त्रके मन्त्रकर है धोर करतोया मन्त्रके बिनार अनस्तित है । इसके पास जो पनेक गुफा धोर शान्त्रके मन हैं । प्रतिवर्ष यत्र का वैशाख मासमें वहाँ एक भारो भिका लगता है बिमर्त माय ३११ हजार मनुष्य रहते होते हैं ।

तर्पणमन्त्र ( म० स्त्री ) 'विद्यामन्त्रो' नामक जैनमन्त्र में उल्लिखित एक मन्त्र ।

तर्पणो ( स० स्त्री० ) द्वय विष्णु करके ऋतु डोप । १ शुभ मन्त्रद्वय विरलोका पेड़ । २ गङ्गा । ( त्रि० ) १ प्रीति हाविगो, दधि देनेवाको ।

तर्पणोय ( स० त्रि० ) अग्निने योग्य ।

तर्पणेश्वर ( स० पु० ) तपक् इच्छति इय-ठ निपातनात् साधु । १ भोज्य । ( त्रि० ) २ तर्पणार्थाको जो तर्पण करनेमें रहस्युक्त हो ।

तपयित्वा ( म० त्रि० ) द्वय विष्णु-तन्त्र । अग्निने योग्य ।

तर्पिणी ( स० स्त्री० ) तर्पणति प्रोचवति द्वयं विष्णु विनि, ततो डोप । पत्रवारिणो मता क्लम कर्मिणो ।

तपित ( म० त्रि० ) द्वय विष्णु । प्रीणित, समुह किया हुआ

तपित् ( स० त्रि० ) द्वय-विष्णु-विनि । १ प्रोचयिता समुह करकेवाला । २ तर्पण करनेवाला ।

तर्पिणो ( स० स्त्री० ) द्वय इन बीरा डोप । पञ्चकवा रिणो । कहीं कहीं तर्पिणो ऐसा सो पाठ देखा जाता है जिसका पर्व भो यही है । तर्पिणो कश्चित्वादि० ।

रक्षण तर्पिणो । सार्धं चत् । तर्पिणिका, तत्पिणिका ।

तर्पुञ्ज ( त्रि० पु० ) तर्पण केको ।

वीरवर्तने लोकेषा हृतसुम्भयिता तथा ।  
 ततो देव्या स्वकावति तर्पणामो वमाः पद् ॥  
 देवत्वमीतुवीर्यै च तर्पणैत् कृत्वातिना ।  
 तर्पणार्थो यन्तुजीत द्वयत्तम् इदं तैरव ॥  
 तथैव परमेष्ठामि विष्णु इह प्रयापति ॥  
 इव क्वच प्रतर्प्यात् पिह्वति च धैरवात् ॥  
 द्वयत्ता सुम्भरीगाता तिता तैरव द्वयत्तम् ।  
 वादो त्रिपुरार्थं च तर्पणे रिमिरोवनेत् ॥

( अन्वयतन्त्र )

तर्मन् ( स० क्लो० ) तरति तू-मनिन् । सर्वधातु-गे मनिन् ।  
 उष् ४११४ । यृपाग्र, यज्ञकै काठका अलग्ना भाग ।  
 तर्ष ( स० पु० ) ऋषिर्मद, एक ऋषिका नाम ।  
 तर्षट ( स० पु० ) तर्षति द्रुतं गच्छति तर्षं वाहलकात्  
 अटन् । १ वक्षर, वर्ष । २ चक्रमर्दं, चक्रवर्द्ध, पँवार ।  
 तर्षा ( हि० पु० ) चातुकका फीता ।  
 तर्षाना ( हि० पु० ) एक प्रकारका गाना । तराना देखो ।  
 तर्षी ( हि० स्त्रो० ) प्रत्येक ऋतुमें होनेवाली एक प्रकार  
 की घास ।  
 तर्ष ( स० पु० ) तृष तृषायां भावे घञ् । १ अभिलाष  
 इच्छा । २ तृषा, चाह । ३ प्रव्र, वेष्टा । ४ समुद्र ।  
 ५ मूर्ध ।  
 तर्षण ( स० क्लो० ) तृष भावे ल्युट् । १ पिपासा, तृषा  
 प्यास । २ अभिलाष, इच्छा ।  
 तर्षित ( सं० त्रि० ) तर्षोऽस्य जातः । तर्षं तारका० इतच् ।  
 १ तृषित प्यासा । २ जाताभिलाष, वाञ्छित, चाहा  
 हुआ ।  
 तर्षुल ( स० त्रि० ) तृष-उलच् । तृषायुक्त, जिसे प्यास  
 लगे हो ।  
 तर्षावत् ( स० त्रि० ) तृषावत् वेदे ष्यो० माधुः । तृषित,  
 प्यासा ।  
 तर्हेन् ( स० पु० ) अर्निष्ट करना, बुराई करनेकी क्रिया ।  
 तर्हि ( स० अर्थ० ) तद्-ङित् । उस समय, तब ।  
 तल ( स० पु०-क्लो० ) तलति तल-अच् । १ अधोभाग,  
 पैदा, तला । २ पाताल । ३ पृष्ठदेश, किसो वस्तुका  
 वाहरो फौलाव । ४ मूलदेश, वह स्थान जो किसी  
 वस्तुके नीचे पड़ता हो । ५ हृषिलौ । ६ पैरका तलवा ।  
 ७ मध्यदेश । ८ स्वरूप, स्वभाव । ९ कानन, जङ्गल ।  
 १० गतं, गह्रा । ११ व्याघातवारण, चमड़ेका बन्ना  
 जो धनुषकी डोरोको रगडमें बचनेके लिये बाईं बाँझमें  
 पहना जाता है । १२ घरको छत पाटन । १३ कार्य-  
 बीज । १४ थप्पड़, तमाचा । १५ तालछत्र ताडका पेड़ ।  
 १६ खड्गादिमुष्टि, तलवार इत्यादिका मूठ । १७ मध्य  
 हस्त द्वारा तन्त्रीवादन, बाएँ हाथसे वीणा बजानेकी  
 क्रिया । १८ गोधा, गोह । १९ कलाई पड़चा । २०  
 नरकविशेष, एक नरकका नाम । इस नरकमें व्यभि-

चारो, इत्याकारो इत्यादि नाम करते हैं । २१ आधार,  
 महारा । २२ महादेव । २३ वालिगत, वित्त । २४ ब्रलके  
 नोचिकी भूमि । २५ वक्ष, छाती ।

तलक ( स० क्लो० ) तलेन गभोग्गर्त्तनं काशति कौक ।  
 १ पुष्करिणो, तान, पोखरा । २ फलविशेष, एक फलका  
 नाम ।

तलकर ( स० पु० ) १ एक प्रकारका कर या लगान ।  
 यह कर सुर्गिटावाड जिलेमें प्रचलित है । सूखे ताला-  
 बोंकी जमीनके खतको तलकर कहते हैं ।

२ सुर्गिटावाड जिलेके एक विलका नाम । इस  
 जिलेमें जितने विल हैं सबसे यहो विल बडा है । बहरम-  
 पुरसे कई मोल पश्चिमको ओर जानेसे हो यह विल  
 देखा जाता है ।

तलकाड—१ महिसुर राज्यमें महिसुर जिलेके अन्तर्गत  
 एक तालुक ।

२ उक्त तालुकका प्राचीन नगर । यह अचा० १२°११'  
 ३०' और देशा० ७७°२' पू० पर महिसुर शहरसे २८ मील  
 दक्षिण-पूर्वमें कावेरो नदीके किनारे अवस्थित है । पूर्व  
 समयमें यह नगर तलगाडू, तलकाडु, तथा तालकाडु,  
 नामसे भी प्रसिद्ध था । लोकसंख्या प्रायः ३८५७ है ।

इस नगरमें कावेरो नदीके एक किनारे बहुतसे शैव-  
 मन्दिर देखे जाते हैं । उक्त मन्दिरोंका सर्वांश बान्धूसे  
 ढका हुआ है । कावेरो नदीके दूसरे किनारे जो मन्दिर  
 विद्यमान है, उसके विषयमें निम्नलिखित दन्तकथाएँ  
 प्रसिद्ध हैं । किमो समय एक भिक्षुक महादेवको अर्चनाके  
 लिये तलकाडमें आये हुए थे । यहाँ आ कर वे बड़े हो  
 अममञ्जसमें पड़ गये । अस्संख्य शिवमन्दिर देख कर वे  
 सोचने लगे, कि यदि मत्र मन्दिरमें पूजा की जाय तो  
 पूजाके जितने उपकरण उनके पास सञ्चित हैं, उतनेसे  
 कुछ भी नहीं हो सकता, अथवा सब मन्दिरमें पूजा  
 किये बिना भी नहीं बनता, क्यों कि यदि वे किसी  
 मन्दिरमें अर्चना न करें, तो उस मन्दिरकी देवमूर्त्ति  
 अमन्तुष्ट हो जायगी । ऐसा सोचते सोचते अन्तमें उन्होंने  
 संश्रुत अर्थसे उरद खरोदा । वे एक एक उरद प्रति-  
 मन्दिरमें उक्तर्ग करने लगे । किन्तु आश्चर्य है कि जब  
 एक मन्दिरमें उपासना वाको रह गई, तब सब उरद

खर्च हो गया। इस पर वह भिक्षुक्त सप्तत वी चिन्तित हो पड़े। जिस मूर्ति को पूजा न हुई, उन्हें ही नदोके तूफाने निगारे उठा ले गये। इस स्थानसे कि तूफाने तूफाने मूर्तियाँ उन पर अपने प्रवालना कर न सके।

प्राचोत्त तल्लकाद नगरका पश्चिमिधामे वामुने उ को हुई है। यह बालुगामि होटे पहाड़को भाई प्राय १ मील लम्बो है। प्रतिनय १० फुटके विमानसे वह बालु गामि बढ़तो जा रही है। उक्त बालुकास्तूपने १० मन्दिर लोप हो गये हैं। उक्त मन्दिरमिसे दोबे मिसर पर मो दोब पकृति है। जिसो जिसो पर्वोपलक्षमें कोतिगारा यक्षी मन्दिरकी बालुकारामि कुछ कुछ पथग को जाती है। इस नगरके प्राय समो पथ बालुकागत है। बर्तमान पथव्या देवनेमें अनुमान करतें हैं कि शीपथ शमी मोत्र को बालुकाकाटित हो आयगा। स्थानोय कोमीका कथना है, कि इस नगरको पश्चिम रातोनि यह स्थान बालुमें परिवत होमा ऐसा प्राय दे कर कावेरो नदोमें अपने प्रायव्याग टिका था।

तल्लकादके पश्चिमिधामिमें प्रया समो हिन्दू है। १८५८ ई० तक तल्लकाद लमीपुर तालुकका प्रवाल शहर था। सफल भाषामें तल्लकादको दुसरेन कहतें हैं। दुसरेनपुर नामसे मो इसका उल्लेख देखा जाता है।

तल्लकादका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता और धर्म त्रिकता मो है तो १८८८ ई०से उक्त ई०में मङ्गल गीब हरिजमाने तल्लकादमें अपने राजधानी स्थापन की। १७वें शताब्दीमें इस व शक्ति किमो तूफाने राजाने तल्लकाद का दुमादि स प्कार किया। १७वें शताब्दीके अन्तमें सोल-राजवंश यहाँ शासन करतें थे। यह शहर जेग व शोव राजाधीने धधोनी भी कुछ क्षण तक था। १०वीं शताब्दीको यहाँ इयसाम बजास व शको राजधानी थी। १६वीं शताब्दीमें मुगल मङ्गल शको अथपताका इस नगरमें पहरने लगे। मियससुदके पराक्रमसे जो यह स्थान फिरसे मङ्गलशके हाथ लमा था। किन्तु इस व शके मोनसे पश्चिम राजा तल्लकादमें गच्छ न कर लें। बाद यह विजयनगरसे किमो करटराज्ञाके अधोन था गया। अन्तमें १६१४ ई०को मल्लिकार्जे हिन्दुराजाने तूफाने विजयो को कर तल्लकाद पर अधिकार कर लिया। १८८८ ई०में यहाँ म्युनिशिपलिटो स्थापित हुई है।

तल्लकावेरी—कावेरो नदो का उत्पत्तिस्थल। यह कुर्म प्रदेश में पश्चिमघाट पर्वतके ब्रह्मगिरि पथमें पश्चात् १२ २१' १०" उ० और ८५° ०३ १४ १०" पू०में अवस्थित है। यहाँ एक देवमन्दिर है। अनेक हिन्दूयामो प्रतिनय यहाँ पाते हैं। कार्तिक पथवा पथवन मसोनेमें मन्मथान पर्वोपलक्षमें बहुते लोप स्नान करनेको यहाँ पाते हैं। इस समय कुर्मके पखेक परिवार स्नान करनेके लिये एक एक प्रतिनिधि भेजतें हैं। प्रतिनय मन्दिरमें नवमच्छका प्राय २१२५ ५० खर्च होता है।

तल्लको (वि० छो) पञ्जाब, पथव व माल, मध्यप्रदेश तथा मद्राजमें मियनेबाथा एक पिट्ठका नाम। इसका काठ लाल और कुछ कुछ भूरा होता है और दोतीके सामान इन्डोनि बजाने तथा मसोनेमें लगानेके काममें जाता है।

तल्लकोट (स० पु) इन्डोविशेष एक पिट्ठका नाम।

तल्लकोन—मद्राजके कड़ाया जिलेके अन्तर्गत बाबलपदाद तालुकका एक मन्दिर, जन्मप्रपात और उत्पत्तिका। यह पश्चात् ११४० उ० और ८५° ०३ १४ १०" पू०के मध्य पाल कोट पश्चात् पर अवस्थित है। इसके धाम पाथमें धान और ईन्डोको दोती होती है। समुचा पहाड एने कङ्कलने पाच्छादित है जिसमें कई तरफके इरिन और खूपर पाते जाते हैं। मन्दिर मो उसोके बीच अवस्थित है। एक और जन्मप्रपात उल्लेखन मन्द करत कुमा बढ़ रहा है। इसके धाम का दो विगाम धामके दरक्त है जिन्हें सोय राम और सप्तम्व नामके मुञ्जारीतें हैं। अयर जने को जितनी राई गई हैं समो बहोने के और हमोया कथको जानबरीका कर बना रहता है। जन्मप्रपात ७० या ८० फुट लीचे जमीन पर मिरता है। अर्द्ध है, कि इस जन्मप्रपातमें स्नान करनेने समो पाव जाते रहते हैं।

मिवरासिने उत्पत्तके अनेक नामो पुर पूर देयोके बर्ण पाते हैं। यासिधामि विधेय कर जियोको उल्लेख को पश्चिम रहतो है। प्रवाद है, कि इस प्रपातमें स्नान कर एक मन्दिरमें पूजा करनेमें बन्धा लो मुनवतो होती है तथा जिसको किबल कङ्कको जो होता है, से मो

यहाँके प्रभावसे पुत्र प्रसव करती हैं। सचमुच यहाँका दृश्य देखने योग्य है।

**तलसग—** १ पञ्जाबके आठक जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२°३४' और ३३°१२' उ० तथा देशा० ७१°४८' और ७२°३२' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ११८८ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः ८२५८४ है। इसमें ८६ ग्राम लगते हैं। लवणके पर्वतसे यह तहसील कहीं कहीं विच्छिन्न हो गई है। सुमनमान, हिन्दू, सि०, ईसाई प्रभृति इस स्थानमें वास करते हैं। सुमनमानोंको संख्या सबसे अधिक है।

गैहूँ, जौ, बाजरा, ज्वार, जूहरी, उरद और रुई यहाँके प्रधान उत्पन्नद्रव्य हैं।

राजस्व एक लाख रूपयेसे अधिक है। इस तहसीलमें एक टोवानो, एक फोजदारी विचारालय और २ ग्राम हैं। एक तालुकादार सब प्रकारके विचारकार्य करते हैं।

२ पञ्जाबके आठक जिलेके अधीन तलसग तहसीलका प्रधान शहर। यह अक्षा० ३२°५५' उ० और देशा० ७२°२८' पर पू० भोलाम नगरसे ८० मील उत्तर-पश्चिम कोणमें अवस्थित है। इस शहरमें स्युनिवर्सलटोका बन्दोबस्त है। लोकसंख्या प्रायः ६७०५ है, जिनमें सुमनमानोंको संख्या सबसे अधिक है।

१६२५ ई०के प्रारम्भमें किमो अवान मदारने यह नगर स्थापन किया, तभीसे इसी शहरमें स्थानीय राज कार्य चलाया जाता है। सिक्के राजत्वकालमें तथा ब्रिटिश शासनकालमें भी इस स्थानसे विचारालयादि स्थानान्तरित न हुए। यह शहर एक मालभूमिके ऊपर बसा हुआ है। कई एक गुहा हो कर नगरका जल निकास होता है।

तलसगके निकटवर्ती स्थानमें भिन्न भिन्न प्रकारके अनाज उत्पन्न होते हैं। यहाँका व्यवसाय बहुत विस्तृत है। यहाँ एक प्रकारका जूता तैयार होता है। जूतोंमें सुनहरी जडाऊका काम किया हुआ रहता है, जो दूसरे दूसरे प्रदेशोंमें भेजे जाते हैं। पञ्जाबकी स्त्रियाँ इस जूतोंको काममें लाती हैं।

भिन्न-भिन्नप्रकारके समय सरदार जिस दुर्गमें रहते थे,

वह मटोका बना हुआ है। अभी इस दुर्गमें पुनिम और तहसीलकी कचहरी है।

अद्वैतके शासनकालमें बहुत दिनों तक इस स्थानमें एक मैन्दावास था। किन्तु १८८० ई०में यह यहाँसे उठा दिया गया।

शहरमें एक स्कूल और एक दातव्य शोधालय है। तलसू (हि० म्बो.) तेलङ्ग देशका भाग। तलसग हि० पु० तहसील।

**तलघाट—** मन्द्राज विभागके मालिम जिलेका दक्षिणभाग। पहले यह प्रदेग कोट्ट, देगके अन्तर्गत था। कोंगुवंशीय वा गड्डराजगण चैनराजाओंके पहले इस प्रदेशमें शासन करती थी।

पूर्वी शताब्दीमें कोट्टुवंशीय राजाओंने दुर्गे तक तथा पूर्वी शताब्दीमें तुङ्गभद्रा नदीतोरम्य हरिहर तक अपना राज्य फैलाया था। ८८४ ई०में ये लोग चालुक्योंके अधिकारस्थित किये गये। ११वीं शताब्दीके मध्य चोल राजाओंके अधीन कई एक सामन्त प्रवल हो उठे। इनमेंसे हयगाल वंशीय किमो सामन्तने १०८० ई०में मालिम प्रदेश पर अधिकार किया। १३१० ई०में यह प्रदेश सुमनमानोंके हाथ लगा। कुछ कालके बाद यह विजयनगर राज्यमें मिला लिया गया। १६वीं शताब्दीके अन्तको इस प्रदेशमें नायकोंका आधिपत्य रहा। १७८८ ई०में थोरङ्गपत्तनके अवरोधके बाद यह प्रदेश मटाके लिये ब्रिटिश राज्यके अन्तर्भूक्त किया गया।

**तलचेरी—** मन्द्राज विभागके अन्तर्गत मलवार जिलेके कौत्तयम् तालुकाका एक शहर और बन्दर। यह अक्षा० ११° ४५' उ० और देशा० ७५° २८' पू०के मध्य कालिकट शहरसे २४ मील और मन्द्राजसे रेल द्वारा ४५७ मील पर अवस्थित है। इस शहरमें स्युनिवर्सलिटिका प्रवृत्ति है। हिन्दू, सुमनमान, ईसाई प्रभृति भिन्न भिन्न धर्मके लोग इस शहरमें वास करते हैं। हिन्दूको संख्या सबसे अधिक है। इस नगरको तेलिचेरी और तलसेरी भी कहते हैं।

तलचेरी मलवार विभागका एक उपविभाग है। इस स्थानमें उत्तर मलवार जिलेकी प्रदालत, कारागार,

मुल्य कार्यालय गवर्नेण्टके पद्यान्व कार्यालय तथा बहुत-  
 दि वाचिन्व कार्यालय है। गहर प्लाण्डर पीर देखनी  
 में सुयी है। यह इत्यमय पहाड़ीके ऊपर बना हुआ है।  
 पहाड़ समुद्र तक लींसा हुआ है। निक्कटवर्ती खान  
 से कर गहरका भूपरिमाण ५ वर्गमील है। एक समय  
 इसके चारों पीर एक इक मझेका प्राचीर शोभा देता  
 था। नगरके उत्तरीमें तलचैरी दुर्ग है, जो प्रायः तब  
 मो सुदृग् भावमें विद्यमान है। यह दुर्ग धमी आरामार  
 रूपमें व्यवहृत होता है। दक्षिण-पूर्व पीर उत्तर-पश्चिम  
 भागमें दो पमचतुर्भुजाकार मदान हैं। दक्षिण-पूर्व  
 मदानमें एक पम्पारीकी घोडा देखा जाता है। उत्तरकी  
 पीर एक भूपरा प्रेधान है, जो दुर्गके ११० मजकी  
 दूरीमें एक इक प्राचीर दुर्गकी पथरबहित मोमाको  
 रचा करला है; इस प्राचीरमें कहीं कहीं बन्दूक जोड़  
 निहा छेद था।

बहुता बनाइकी पीर चन्दनकाठ इस खानके दूरी  
 दूरी खानेमें भेजि जाते हैं। यहाँको रजतनी पामदनी  
 से दुमनी है।

वार्यिक इद्रियात प्राय १२४ १४ १४ है।

१६८१ ई०में इट इण्डिया कम्पनीने मिर्ब पीर  
 बनाइकीका व्यवसाय करकेके सिधे दई एक वाचिन्व  
 कोडो खोली थी। १७०८में १७११ ई० तक कई बार  
 कम्पनीको शिराहबके राजा तथा कानोय कूसरी कूसरी  
 अमींदारसि तलचैरी पीर उरुके समोपमें बहुतसो  
 समोन मिची थी। उन्हें अमींदारीमें यत्न कसुन तथा  
 बिचारदि करनिवा अधिकारमो दिया गया था। गहर  
 पकोने कम्पनीकी बहुतसो अधिकत समोन इष्टगत  
 कर सो। १७११ ई०में इस कोडोमें रैसिडेण्टोका पाबार  
 करव किया। १७०८ ई०से १७०२ तक यह प्रदेज गहर  
 पकोके बिनापति सरदारवसि पयवइ पयवसिं था।  
 बन्दरके बिगाने प्य कर रधि उदार किया। मद्रिपुरादुर्गमें  
 पहाड़ीकी बिना तलचैरीके बाइ पर्वत पार हुई थी। कडाइ  
 के बाद इस खानमें उत्तर मन्वारके सुपरिण्टेण्टिया  
 कायानय पीर प्राद सिक् शासन मभा ख्यापित हुई।  
 लोहय प्या प्राय २००२१ है।

तलचट ( हि० खो० ) सिची पद्याके गोपि मेडो हुई  
 तनीक गाद।

तलताक ( सं० पु० ) तलिन करतसेन ताचते ताड़कमें पि  
 पय छत्र म। करतय द्वारा बादनोय बाघभेद, इविबोमे  
 बजामिका एक प्रकारका बाजा।

तलत ( सं० खो० ) तल त्रायते त्रे-क चमड़ेका बना  
 हुआ दस्ताना।

तलताच ( म० खो० ) तल करतल त्रायते त्रे करके सुद।  
 करतकरचक चमड़ेका बना हुआ दस्ताना।

तलधनि ( सं० पु० ) तलध धनिः १ तत्। करतयका  
 यम्।

तलना ( हि० लि० ) कड़क हाति हुए जो पीर तेलमें डाल  
 कर पकाता।

तलपट ( हि० बि० ) नाग, परबाद, पोपट।

तलप्रहार ( म० पु० ) तलेन मडाः ३ तत्। तमाचा,  
 बय्यक।

तलपु ( प० बि० ) मछ, बर्बाद।

तलपना ( हि० लि० ) १ बैचेल होना, छटपटाना। २  
 व्याकुल होना, निरकल होना।

तलप्री ( पा० खो० ) १ सराबो, बरबादी। २ इनि।

तलव ( पा० खो० ) १ चम्पिय, खोज तलाय। २ टम्बा,  
 चाइ, इच्छा। ३ थायम्भकता, मीन। ४ मुकाबा, मुका-  
 बट। ५ तलवाइ, वीतन।

तलवमार ( पा० बि० ) पाइनीबाका मीनिकाका।

तलवाना ( का० पु० ) १ एक प्रकारका करपा। यह गवा  
 कीको तलव करकेके सिधे टिक्कटके रूपमें पद्यावतति  
 टाविक किया जाता है। २ समय पर मालगुजारी नहीं  
 देनेके कारण दण्डके रूपमें अमींदारको पीरके सिधे  
 जानेका करपा।

तलवो ( प० खो० ) १ मुनाइड। २ मीग।

तलवैनी ( हि० खो० ) उलपण, छटपटो, बैचैनी।

तलमेद ( सं० पु० ) तलध मेदः १ तत्। यह जिनके  
 धिंमिं सिद हो गया जो।

तलमन ( सं० पु० ) तलचट, तनीक, गाद।

तलमकाइड ( हि० खो० ) व्याकुलता, बैचैनी।

तलमीन ( सं० पु० ) तले जलनिम्ने स्थितो मीनः । जल-  
निम्नस्थित मत्स्या, भींगा मकली ।

तलम्ब—पञ्जाबके मुलतान जिलेके अन्तर्गत कवीरवान तह  
सोलका एक गहर । यह अक्षा० ३०°३१' ३०" और देशां  
०५°१५' पूर्वके मध्य मुलतान गहरसे ५२ मील उत्तर-  
पूर्वमें तथा चन्द्रभागा नदीके बायें किनारेमें २ मीलको  
दूरी पर अवस्थित है । गहरमें स्युनिमपालिटो है । लोक-  
संख्या प्रायः २५२६ है ।

गहरमें १ मील दक्षिणमें एक प्राचीन दुर्ग था । उस  
दुर्गको ईंटोंसे तलम्बके वई एक राजभवन बनाये गये  
हैं । दुर्गकी ईंट प्राचीन मुलतानकी अष्टालिकाकी ईंटमो  
है । बहुतेका मत है, कि अलेकसन्दर इसी स्थान पर  
चन्द्रभागा उत्तीर्ण हुए थे और यहाँ उन्होंने मस्जिदोंको  
पराजित कर इस प्रदेश पर अधिकार जमाया था । यह  
प्रदेश एक बार महसुदक भी हाथ लगा था । तैमूरने  
भारतवर्षमें आ कर तलम्बको लूटा तथा अधिवासियोंकी  
हत्या को किन्तु दुर्ग नष्ट नहीं किया ।

तलम्बमें अनेक धर्मभावशेष देखे जाते हैं । कहा जाता  
है, कि महसुद लड़के समय (१५१०-१५२५)में चन्द्रभागा  
नदीकी गति परिवर्तित हो कर यह स्थान परित्यक्त हो  
गया है । यहाँका विस्तोर्ण धर्मभावशेष एक नगर मरीखा  
डोख पड़ता है, जो दक्षिणको और ऊँचे दुर्गमें सुरजित  
है । वहिर्भागका मटोका प्राचौर २०० फुट मोटा और  
२० फुट ऊँचा है । इस प्राचौरके ऊपर प्रायः समान  
ऊँचाईका एक दूसरा प्राचौर देखनेमें आता है । पहले  
दोनोंका समुखभाग बड़ो बड़ो ईंटोंसे ममाच्छादित  
था ।

वर्तमान तलम्ब ग्राममें एक पुलिस, एक डाकघर,  
एक स्कूल, एक चिकित्सालय और एक सराय है । ये  
सब एक अष्टालिकाके मध्य अवस्थित हैं ।

गहरसे प्रायः १ मील दक्षिण-पश्चिममें एक कानो  
स्थान और एक सुन्दर कूप है ।

तलयुद्ध ( सं० क्लो० ) तलम्य चपेटस्य आघातेन युद्धं ।  
चपेटाघात द्वारा युद्ध, मुक्का-मुक्कोसे लड़ाई करनेको  
क्रिया ।

तललीक ( सं० पु० ) तलखी लोकः, मध्यपदलो० । पालाल ।

तलव ( सं० लि० ) तलं हस्तादि तलं वागि निहन्ति यां-क ।  
तलवाशकारक ।

तलवकार ( सं० पु० ) १ मामवेदकी एक ग्राखा । २ एक  
उपनिषद्का नाम ।

तलवा ( हि० पु० ) पौरके नाचिका भाग ।

तलवा—भागलपुर जिलेका एक छोटी नदी । पहले यह  
नदी बहुत बड़ी थी । स्थान स्थान पर इसका प्राचीन गर्भ  
देखा जाता है जिसेको नोशई नगभग १५मे २०  
चैनको है । देखनेसे मानस पड़ता है कि अभी जिम  
स्थानसे तिलजुगामें जल आता है, पहले उसी स्थानमें इस  
नदीमें जल आता था । वर्षा ऋतुमें बाढ़ यह नदी कहीं  
कहीं सूख जाता है । नदीगर्भमें शुष्क स्थानमें फसल  
उपजाई जाता है । मटो पंकसे आच्छादित रहनेके कारण  
फसल भी खूब लगता है । यह नदी निःशुद्धपुरपुरा पर  
गनेके पश्चिमकी ओर प्रवाहित है । वर्षा ऋतुमें मोनवर्षा  
और वैजनाथपुर तक बोलसे भरी हुई नदि आती जाती  
है । यह नदी पर्वान और लोरनके मध्य मिली है ।

तलवार ( हि० स्त्री० ) १ खड्ग, छगण । अस्त्र, यज्ञ श्रेयो ।  
२ मोडा तैयार करनेके लिये जिम हथियेसे गुल्मादि  
कतरे जाते हैं, उसे भी तलवार कहते हैं ।

तलवारण ( सं० क्लो० ) नले वादने वाग्दन्ति वारि ल्युट् ।  
१ ज्याघात यारणाद्ये हस्ततन्वह वमैमेट, वड कवच  
जो धनुषको डोराके आघातसे बचनेके लिये हाथके तले  
बाँधा जाता है । २ खड्ग, तलवार । ३ स्थान ।

तलसान—व० ई प्रदेशके आठियावाड़ विभागमें भाना  
वारका एक छोटा राज्य, इसमें ७ छोटे छोटे ग्राम लगते  
हैं । भूपरिसाण ४३ वर्गमील है और राज्यकी आय प्रायः  
१०५००) रुपये की है जिनमेंसे १०५२) रुपये वृष्टिश  
सरकारकी और जुनागडके नवाबकी देने पड़ते हैं ।  
लोकसंख्या प्रायः १६८१ है । यहाँके राजा भानाराजपूत  
वंशीभव हैं ।

बम्बई-बरोटा और मध्यभागतौर रेलपथको बडवान  
शाखाके लखतर टिशनसे ११ मील दक्षिणपूर्वमें तलसान  
ग्राम अवस्थित है । प्रतिकतागके मन्दिरके लिये यह  
ग्राम विगेष प्रसिद्ध है । काठियावाडमें सर्पूजाके जो मन्त्र  
निर्दशन पाये जाते उनमेंसे यह एक है ।

तनसारक (सं० छौ०) तनो सारी बन्ध यक्ष बहुप्रो-  
क्षय । चोटकका बबबबबबबबबब रक्षु वक्ष रक्षो लो  
चोके लो क्षातीमि बँबी रहती है । इसके स शकत पक्षि-  
पक्षयध धोर तनिका है । किसी किसी पक्षितके भतमि  
रक्षका घबं चोटकका पक्षमोक्षनपात्र है पक्षाल वक्ष  
बबबबब बिसमि चोके लो क्षातीमि निये पक्षान दिया जाता  
है ।

तनखित (सं० सि०) तनो खितः ० तत् । लो मोचे  
रक्षता है ।

तनखटो (हि० छौ०) पक्षालको तनखटो चाटो ।

तनखारि—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेके पक्षमंत एक खान ।  
राजिमने बगपाबका लो लणोबं लेख सिपा है, उसके  
पक्षमने खाना खाता है, कि रक्षदेबके राजलखानमि जम  
पान्मि वक्ष खान जय किया था । फिर ८६६ सम्बत्के  
रक्षपुर शासनमि लिया है, कि तनखारिमे काजबदेब  
बाविक बर बसल करती ये ।

तनखदय (सं० छौ०) तनख खदयमिब । पदतनका  
मध्यभाग तनका ।

तनका सं० छौ०) तनख खिया टाय । मोषा, बमकेका  
बका लो धनुषकी छोरोको रयकेके बबनेके निजे बारी  
बोडमे पक्षना जाता है ।

तनका (हि० सु०) १ बिभी वसुके मोचेकी सतह पेटा ।  
२ कुनिके मोषिका पक्षका ।

तनखारि (हि० छौ०) छोटा तनख तनैया, बाबनो ।

तनखक (सं० सु०) पति पक्षोका विधान पूवक रक्षब  
त्याम ।

तनकापी (सं० छौ०) तनखकालि धनुष खिय खिगं  
डीव । तनखिमित कट, बत या बसको पक्षियोंको  
वनो हुई चटारि ।

तनकाज—बम्बई विभागके पक्षमंत काठियावाड़के मज  
नगर राज्यका नगर । यह पक्षमं ११ २१ १२ क  
धोर टियां ०२ ४ १० पू० पर मजनगरके ११ मील  
दक्षिणमि पक्षकित है । नगर चारों धोर दोबारीमे  
घिरा हुआ है । इसका इम्ब एक छोटा सुरागीक मध्य  
पक्षत सरोका है । यह मसुद्रप्रदेश ४०० फुट ऊँचा है ।  
इसके पासके एक मसुद्रके ऊपर एक हिन्दू मन्दिर धोर

एक सुन्दर तालाब है । उस तालाबका भल पक्षक  
मिमल है । पक्षमंमि कहीं कहीं बम्बदा मो है । पक्षी  
ठकेत रक्षीं बम्बराधोमि खिय बर रहती ये । १८२१  
ई० तस मो लनमे बबो लोका रक्षना देखा गया था ।

तनखत्रिया गुजराती ब्राह्मण समुदायका एक मीद । मज  
नगरके ११ मील दक्षिण तनका नामका एक ग्राम है ।  
पक्षीमे इन लोकोका निवास हुआ है, इसलिये ये तनका  
त्रिया नामसे प्रसिद्ध है । पात्र खन ये लोग द्वितीय रूपसे  
दुबानशरीमे गुजारा करती है । नासिक, बम्बई, बम्ब  
नर धोर मुरत पादि जिलोमि ये पक्षिक स खानि पाये  
जाती है । ब्राह्मणभूमको पक्षे पा वैश्वकर्म्ममे इसको  
प्रशस्ति नियेय देखी जाती है ।

तनकाङ्क—तामिल भाषामि निजे हुए बहुलके पक्ष । इनमे  
देवताधोको धैयबाबका बर्णित है । प्रतिबर्ष निर्दिष्ट  
पक्ष दिनमे मन्दाबने दक्षिणामवासी बहुलमी छोटे  
छोटे देवमूर्ति योको जि डोके पर सुला मुला कर यह पक्ष  
जाती है । इनमे बहुलके पक्ष यक्षोष धोर बहुलके क्षिप्त  
शब्दाक्ष पर परिपूरक है । इनमे एक पक्षका नाम पक्षङ्क  
है जिसकी भाषा पक्षक मसुर है । मन्दाबकी जिया  
छोटे छोटे बक्षोको सुसानिके निजे यह पक्ष नाया  
करती है ।

तनकातन (सं० छौ०) नादि तन यन्तेति पक्षतं तनकादिपि  
पक्षन । पाताकमिद, सात पाताकमिब एक पक्षकका  
नाम । वहाँ मयदानक सिबके रचित हो कर नाम  
करती है । (मागवत) पाताक देनो ।

तनकाभिघात स० सु०) तनख अभिघातः, १-तत् । बर  
तस धारा प्रहार, तनका बष्यक ।

तनकाभि (सं० सु०) प्रबान, मुंसा ।

तनकास (सु० छौ०) १ पक्षवध, खोज दूठ ठाँठ । २  
२ पाबबबबता पाह, मीर ।

तनकासा (सं० छौ०) लक्षमिद, एक पक्षका नाम ।

तनकाधो (का० छौ०) खोज बनु पादिकी देव मास ।

तनकाज (सं० छौ०) तापीवत्र देखो ।

तनका (सं० छौ०) तनख बक्षकालतस बम्बबबबान  
लोनासुख तन म् । तनसारक, बक्ष रक्षो जिमने  
चोके लो क्षातीमि बँबी रहती है ।



तलित् ( सं० स्त्री० ) तलित् डस्य-त् । विद्युत्, विजली ।  
तलित ( सं० स्त्री० ) तलितारकां इतच् । मृष्टमांस,  
तना हृषा मांस । शुद्ध मांस जिम तरङ्ग प्रसृत किया  
जाता है उसी तरह मांसको अच्छी तरह मिद कर उसे  
घोमें भुन लेते हैं इसको तलित कहते हैं । इसके गुण—  
बल, मेधा, अग्नि, मांस, ओजोघातु और शुक्रवृद्धिकारक,  
त्वमिजन्क, लघु, स्निग्ध, रुचिकर और शरीरपुष्टिकर है ।  
तलित् ( सं० त्रि० ) तना अस्यास्ति इति । गोधायुक्त,  
जिममें चमडे का बल्ला लगा हो ।

तलिन ( सं० स्त्री० ) तल्यते शयनार्थं गम्यतेऽत्र तल-डनन् ।  
तलि पुलिन्यां च । उण् २।५३ । १ शय्या, सेज, पलङ्ग ।  
( त्रि० ) २ विरल, अलग अलग । ३ स्तोक, थोड़ा, कम ।  
४ खच्छ, शुद्ध, साफ । ५ दुर्बल, दुबला ।

तलिपरम्ब—१ मन्द्राज विभागमें मलवार जिलेका एक  
शहर ।

२ मलवार जिलेमें चिराकल तालुकका एक शहर ।  
यह अक्षा० १२° ३' उ० और देशा० ६५° २२' पू० पर  
काननूरमें १५ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है । यहाँ  
भिन्न भिन्न धर्मावलम्बी अनुष्ठान वाम करते हैं । हिन्दूकी  
संख्या सबसे अधिक है । यहाँ सब मजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट  
मुन्सिफको अदालत और एक मन्दिर है । मन्दिरको  
ऊत पोतलमे मटो हुई है । इसके पास ही रेतोले पहाड  
पर बहुतसी कन्दरायें खुदो हुई हैं जो देखनेमें अत्यन्त  
मनोरम और आश्चर्यजनक लगते हैं । लोकसंख्या प्रायः  
७८४८ है ।

तलित ( सं० स्त्री० ) तल बाहुलकात् डमन् । १ कुटिम,  
छत, पाटन । २ शय्या, पलङ्ग । ३ खड्ड । ४ वितानक,  
चँटवा । ५ चन्द्रहास ।

तलिया ( हि० स्त्री० ) समुद्रकी घाह ।

तलो ( हि० स्त्री० ) १ तल, पेंदो । २ तलकट, तलौछ ।

तलोद्य ( सं० पु० ) प्रत्यङ्गभेद, शरीरका कोई अङ्ग ।

तलुन ( सं० पु० ) तरति वेगेन गच्छति त्ठ ठनन् ।  
श्रीरश्चलोवा । उण् ३।५४ । रस्य लस्य । १ वायु, हवा ।

२ युवा पुरुष ।

तलुनो ( सं० स्त्री० ) तलुन-डोप् । तरुणी, युवती स्त्री ।

तले ( हि० क्रि० वि० ) नीचे ।

तलेक्षण ( सं० पु० ) तले अघोभागे ईक्षणं यस्य, बहुव्री० ।  
शूकर, सूअर ।

तलेटी ( हि० स्त्री० ) १ पेंदो । २ तलहटो, तराई,  
घाटो ।

तलैङ्ग—पेंगुके अधिवासियोंका माधारण नाम । मगगण  
इन्हें तलैङ्ग और श्यामवामोगण मिङ्ग-मोन कहा करते  
हैं । इनमेंसे अनेक इरावती नदीके डेल्टेमें वाम करते  
हैं । पेंगु, मार्त्तावान, मोलमोन और ग्रामहाईके अधि-  
वासो मोन नामसे मगङ्गर है । यह नाम इन लोगोंमें  
आपसमें चलता है ।

पेंगुयानको भाषा मोन अथवा तलैङ्ग है । इस भाषाके  
अक्षर भारतीय अक्षरमूलक है । पानो अक्षरके साथ  
यह बहुत कुछ मिलता जुलता है । वीहग्रन्थ इसी अक्षर-  
में लिखे हुए मिलते हैं । मग और श्यामवामो यह  
भाषा समझ नहीं सकते । तलैङ्ग शब्द सम्भवतः तैलङ्ग  
शब्दका अपभ्रंश है ।

तलैचा ( हि० पु० ) इसारतका वह भाग जो मेहरावसे  
ऊपर और ऊतसे नीचे रहता है ।

तलैया ( हि० स्त्री० ) छोटा ताल ।

तलोदरो ( सं० स्त्री० ) तलं निम्नसुदरं यस्याः, बहुव्री०  
तत् डोप् । भार्या, स्त्री ।

तलोदा ( सं० स्त्री० ) तले उटकं यस्याः बहुव्री०, उदक-  
शब्दस्य उदादेशः । नदी, दरिया ।

तलोदा—१ बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलेका एक तालुक ।  
यह अक्षा० २१° ३०' और २२° २' उ० तथा देशा० ७३°  
५८' और ७४° ३२' पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण  
११७७ वर्ग मील है । इस उपविभागमें इसी नामका एक  
शहर और १८३ ग्राम लगते हैं । छिखलो और कावो  
नामके दो छोटे टैगोरान्य इसके अधीन हैं । लोक-  
संख्या प्रायः २३८८१ है, जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या सबसे  
अधिक है । बहुतसे सुसलमान तथा अन्यान्य धर्मके  
लोग भी यहाँ वास करते हैं ।

स्थानीय नैसर्गिक दृश्योंमेंसे सातपुरा पहाड़यें गौका  
दृश्य अत्यन्त मनोहर है । यह पहाड पूर्वसे पश्चिमकी  
ओर विस्तृत है । पहाडके नीचे एक बड़ी वनभूमि

टेली जातो हे । इम बनप्रदेशमें तरव तरवने पय रहते हे ।

तलोदाखी मडो खानो हे पोर सममें उद्विद् पाणिजा मार मिथिन हे । जिन म्यानमें मिने होतो हे बरहीडा बनबाबु वराव नहो हे । मातपुरा पदाङ्कडे नीचे पास पासचे धामोंमें मने विद्या रोम पञ्चम प्रवल्न हे । यहाँ म्वर पोर जोडा रोग पफमर बुपा जाता हे । धरि म पोर मई माम जोडू कर यूरोपीयमच इम म्यानमें निर्मं मने नही रह सकते हे । भाषिक कृष्टिमल प्राय १ ईड हे ।

२ वरव त मुक्तका एक प्रधान गहर । यव पचा० २१ १४ ७० पोर देया० ०४ ११ पु भूमिगामे (२ मोन उत्तर-पश्चिममें पयस्थित हे । लोडम म्या प्राय १२८२ हे । हिन्दू सुमनमान मेल, पारमो प्रभृति पश्चिमामो यहाँ देखे जाते हे । हिन्दूके म म्या मरुमि म्यादे हे । मार्ये ग जिनेमें तलोदाके उचका म्यबनाव बिरीय प्रमिब हे । मित्र मित्र म्यामोंमि बहापुरो काठ यहाँ ना कर बेचा जाता हे । रोयाबाम मेल पोर पनाकका पयमपाय भी यहाँ काम नहो हे । मार्ये मडो मरुतुलत काठको मडो रमो म्यानमें बनारि जातो हे । हरवल मडोका मूय्य ४० ४१, व० रहता हे । इम गहरमें म्युनिजपासिटि हे । इम गहरमें एक डाकघरा म्य म पोर टालक पोपबालय हे ।

तलोड ( हि० प्लो० ) बिमी डूब पनाबकी बर मेल ओ मोचे जम जातो हे, तनडट ।

तल्ल ( म० लो० ) तल बाडुनचातू क्यू । वन, वज्र । तल्ल ( पा० वि० ) १ कट, खडू, वा । २ मिसका म्याट वराव जो, बटमत्रा ।

तलो ( पा० प्लो० ) खडू, बाइट, खडू कावल ।

तल्य ( म० पु०-लो० ) तल्य-तं गहरनाके मयने तल-प । कपारकावरावावरावरावरा । मू० ११८ । १ मय्य, पलंम । २ पालिका पटाः । ३ दाव, जो ।

तल्यड ( म० पु० ) तल्य-ड्यू । मय्यासप्लाक मय्य बर लोकर जो पल्ल ग या पाटको मत्रा का रयता हे ।

तल्यकोट ( म० पु० ) तल्य मय्यासं जाम कोट । कोट बिदेव, वरमय ।

तल्यगिरि ( म० पु० ) टासिपायने तिबयतिने ममोप नी विप्यूके नामने उमगां किया बुपा एक पदाड ।

तल्यत्र ( म० वि० ) तल्य जम ड । नेत्रत्र पुत्र ।

तल्यन ( म० लो० ) तल्य इव पाचरति तल्य जिय कपूट । १ वरिपठ जायीको पोठ । २ पहाम्यिका माम मिव दखका माम ।

तल्यगोवन् ( म० वि० ) मय्यामायो ओ मय्य पल्ल म पर पडा रहता हे ।

तल्येय्य वराधोवर रेनो ।

त-य्य ( म० पु० ) तल्ये मय्य तल्य-यत् । १ ब्रह्मेव एक बद्ररा माम । २ मय्यामापु ।

तत्र ( म० लो० ) तल्येय्य लोयते लो ड । १ बिब गहाः ( पु० ) २ जनापारविशिय ताल पोपरा ।

१ ( ति० ) सममें माल सममें मया बुपा ।

तदत्र म० पु० ) तत् प्रमिब यया तया लजनि लत्र यत् । प्रयतिवाचक पादरमूचक मय्य ।

तल्लड ( म० पु० ) कुडूर, कुता ।

तल्ला ( स० पु० ) १ मामांय डोग, पान । २ तल्लो परत पल्ल, मितला ।

तल्लिका ( म० प्लो० ) तल्लिम्यू लोयते लो ड मय्य यां क्यू कावि पल वल । कुम्भिका कुम्भो, तालो ।

तलो ( म० प्ला० ) तलयमिड उद्या तया लजनि मय उ प्लिणं डोय । १ तदयो सुवतो । २ लोडा, लाव । ३ बदन ही प्लो ।

तलो ( हि० प्लो० ) १ लुनीका तला । २ लोको तलडट ।

तल्लुया ( हि० पु० ) एक मकारका कपडा मय्यडट, तुकरी मय्यम ।

तल्य ( म० लो० ) लुनमिडुय्ये चर्यवेने तल्यक पोरम बर लुय्य ओ लुयमित पटाबाको रगडनेने तल्यक जो ।

तल्यकार ( म० पु० ) मामविटको एक मया ।

तव ( म० वि० ) बुधदू मय्यको १ लोका एक यवन । तुमारा ।

तवड ( म० वि० ) तव का । तुमारा ।

तवघोर ( म० लो० ) तु पय तव घोमिति, लम था० । १ पोरजम तवागोर, लोपुर । २ लव लुच-मपुर विमिड, दाड, विल, चय, काम लव माल पोर चयरीयनामड हे । ३ मय्यपयो, लमडधर ।

तवचोरो ( मं० स्त्री० ) तवचोर-डोप । गम्भयत्रा, कनक चूर । इसकी जड़मे एक प्रकारका तोखुर बनता है । खोर इमी तोखुरमे बनता है ।

तवज्जह ( अ० स्त्री० ) १ ध्यान, कव । २ कपाट्टि ।

तवनौ ( हिं० स्त्री० ) छोटा तवा ।

तवर ( मं० क्लो० ) निर्दिष्ट उच्च पंख्या, कोई इष्ट वही रागि ।

तवरक ( हिं० पु० ) समुद्र और नदियोंके तट पर छाने-वाला एक प्रकारका पेड़ । इसमें इसलोकके जैसे फल लगते हैं जिन्हें खानेमे गाय भैंस इत्यादि अधिक दूध देते हैं ।

तवराज ( मं० पु० ) तु-अच् नव पूर्णः मन् राजते राज-अच् । यवामशर्करा, सुरंजवीन ।

तवराजोद्भवखण्ड ( मं० पु० ) तवराजादुद्भवति उत्-भू-अच्, तवराजोद्भवः यः खण्डः । कर्मधा० । यवामशर्करा-का खण्ड, सुरंजवीन का टुकड़ा । इसके संस्कृत पर्याय-सुषामोदकन, खण्डजोद्भवज, मिट्टिमोदक, अमृत-मारज और सिद्धखण्ड है । इसके गुण—दाह, नाप, टणा, मोह, मूर्च्छा और ज्वामनागक, इन्द्रियोंका तपण-कारो, गौतल और सदा मधुररस है ।

तवर्ग ( मं० पु० ) न, य, ट, ध न, ये पाँच तवर्ग हैं ।

तवर्गीय ( मं० पु० ) तवर्ग भवः वर्गान्त्व त् क । तवर्गमे उत्पन्न वर्ग, तवर्गका अक्षर ।

तवर्गीकृत ( मं० पु० ) शरत् ।

तवम् ( मं० वि० ) तु-असन् । १ उड़, बुढ़ा । २ महत्, बड़ा । ( स्त्री० ) ३ वन्द, ताकत ।

तवस्य ( मं० क्लो० ) तवसे वनाय हिनं तवस्य यत् । वल-साधन ।

तवस्यत् ( मं० वि० ) तवोऽस्यस्य मनुष्य मस्य वः सान्त-त्वात् मत्वर्थेन विपर्यः । धन्युक्त, ताकतवर ।

तवा ( हिं० पु० ) १ रीटो सेकनेका एक छिद्रला, गोल लोहेका बरतन । २ खण्डेका गोल डोकरा । इसे चिलस पर रख कर तमाखु पीते हैं । ३ एक प्रकारको लाल मट्टा ।

तवाकुल सुग्गी—गाहनासा और गमगीर खानेके रच-यिता । उक्त दो कितायें १६५२ ई०में बनाई गई थीं ।

फिर १८१० ई०में मन्नाट् द्वितीय शाह अकबरके समय उनका अनुवाद किसी दूसरे कविमे उर्दूमें हुआ था ।

तवाखोर ( हिं० पु० ) बंगलौचने ।

तवागा ( मं० त्रि० ) तवम् वनेन गीयते गै कर्मणि क्विप्-पूर्णे० साधु । प्रसुप्त वनयुक्त, जिमे खुद ताकत हो ।

तवाजा ( मं० स्त्री० ) १ प्रादभगत, आदर, मन । २ आतिथ्य, मेहमानदारी, टावन ।

तवाना ( फा० वि० ) बली, मोटा ताजा ।

तवाना ( हिं० क्लि० ) किसी दूसरेमे गरम कराना ।

तवायफ ( मं० स्त्री० ) बेग्या, रंडो ।

तवायफ—बेग्याकी एक जाति । गम्भवं कच्चन, जगमोरो, पतुरिया, रामजानी, वकवरिया, कसबो, भडुआ, कुहकिया, कइतरो मिरामी, मारयोकार, नायिका, गौनहारिन ब्रज-वासी और नैगमक ये सब तवायफ जातिके हो अन्तर्गत हैं । इनमेंमे पात्र, रामजानी और गम्भवं ये तीनों हिन्दू स्त्रियाँ हैं । पात्रको उत्पत्तिके विषयमें प्रवाद है, कि कुमायूँके राजाके यहाँ टी दामो कन्यायें थीं जिनमेंमे एक तो राजपूतमे व्याहृ गई थी और दूसरी पहाड़ी क्षत्रियमे । जो पहाड़ी क्षत्रियमे व्याहृ गई थी, वही पात्र कहलाई । आजकनको पात्र या पतुरिया उमीके बंगका मानी जाती है । मन्नाट्टेव, कलन् पार और मरंग इनके उदाह्य देवता हैं जो लड़कियाँ जन्म लेती हैं, उन्हें बचपनसे ही नाचना गाना सिखाया जाता है, वाट के पीपल वृक्षमे विवाह कर बेग्यावृत्ति अवलम्बन करती है ।

नोरंगो, मिरामी, गौनहारिन, डोमिन और आकाग-कामनी ये सब मुसलमान स्त्रियाँ है । पात्रके जैसा ये लागभो अपना लड़को ना विवाह नहों करतो । किन्तु इनका लड़का जब विवाहके योग्य होता है, तब वे एक निम्नश्रेणोको हिन्दू वा मुसलमान लड़कीको खरीद कर उमीके साथ उसका विवाह कर देतो है । इस प्रकारसे व्याहृ हुई स्त्रियाँ बेग्यावृत्ति नहीं करतो वरं वे विवाहीपल्लवमें तथा और किसी दूसरे लोहारमें गृहस्थके यहाँ नाच गान कर अपना गुजारा करती हैं ।

जब कोई हिन्दूस्त्री इस समाजमे आना चाहता है, तब पहले उसे इसलाम धर्ममें दीक्षित होना पड़ता है । विधाय कर हिन्दू विधवा वा भगोड़ी स्त्रियाँ ही तवायफ

दुपा करतो हैं। इस जातिमें मूले रक्त है कि लड़को अब बारह सिरह बर्षकी होतो, तब यह ज़िमी बनो पार से यहाँ बैठी जाती है, इस रक्तको सिर ठन्धारेँ कबरी है। लड़को अब बारह सिरने मोट पातो है, तब अपने वात भाईका एक मोख देना पड़ता है। मिथो नामको एक दूधो रक्त है जिसमें से अपने इतनेमि मिथो लवण पारक्य करतो है। इसन बाद नकुनो त्रिने से बचनसे हो पड़ने पातो है, इतार पें हतो है। इस रिवाजको 'नबनो उत्तारन' कहते हैं। प्राय काल भारतनबर्षके प्राय सब ज़िमीमि तनावक पारि जाती है। कमो कमो से भोग महजियमि जा कर भापतो गातो है।

तवारा (हि० पु०) बलन, ताप, दाह।  
 तवाशोत्र (च० श्लो०) इतिहास।  
 तवागत (च० श्लो०) १ दोषैल लवणै। २ पाचिका, पचिबता, पचिहार्। ३ भ्रष्ट, बर्षेडा।  
 तविपुना (स० श्लो०) विपुना छन्दोमिद विपुना नामका छन्द। पार पचरौका तगक जोने पर यह छन्द होता है।  
 तविद्यम (स० त्रि०) धन्वला वनवान्।  
 तविय (स० पु०) तप दिवच्। १ खर्ग। २ मयुज्। ३ नवभाव। ४ यज्ञि। ५ पक्ष, सोना। (त्रि०) ६ इह, दुहा। ७ मवयु, बड़ा। ८ बलवान्, ताकतवर।  
 तविपी (स० श्लो०) तविय सजावा डोय्। १ मूमि, जमीन। २ नदी दरिया। ३ दिवज्वा। ४ बल।  
 तविषोमत् (स० त्रि०) तवियो पद्म्यज मरुप। दोनि सुख, बमक दमक।  
 तविषोयु (स० त्रि०) तविषोय-उ। बलपयोगकारो।  
 तविषोवत् (स० त्रि०) साहसो।  
 तविष्वा (स० श्लो०) बल यज्ञि, ताकत।  
 तव्य—१ विदाम्मिद। (त्रि०) तन यत्। २ यज्ञिमानो, बलवान् ताकतवर।  
 तवयोम (च० श्लो०) १ निषय, उद्वारन। २ रोमका निदान।  
 तवरीत्र (च० श्लो०) मरुत द्यत वुहुर्यी।  
 तव्य (धा० पु०) १ एक प्रकारका दिवना बरतन जिसका पाकार घानोमा होता है। २ परात, लसन। ३ पाकामिभि रखे जानिका तविष्वा बड़ा बरतन ममना।

तजरी (धा० क्री०) रिखायी।  
 तज (स० त्रि०) तज-उ। १ तनुजत, जोसा दुपा। २ दिवाबत, पीप कर हो दनेमि किया दुपा। ३ ताङ्कित, पोटा दुपा। ४ सुबित, गुण श्रिया दुपा।  
 तजा (स० पु०) १ बिजकर्मो। २ जोन ज्ञान कर मङ्गे नामा। ३ ज्ञाननवाना। ४ एक पादिरयका नाम।  
 तजा (फा० पु०) तविष्वा एक छोटी तजरी। इसका व्यवहार ठाडुर पूजनके समय मूर्तिधोको धान कारनेके त्रिये होता है।  
 तजि (स० श्लो०) तज-दिच, तजब, र हा करमिका नाम।  
 तजु (स० पु०) तज त, प्रयोदरा० कनोपी माहु। १ सुतस बहुरै। २ विषकर्मो। ३ पादिरिभिद, एक पादिरिक्का नाम।  
 तज (त्रि० त्रि०) तैसा बेषा।  
 तजवीन (च० श्लो०) दिनामा, तजबो।  
 तजकुरवान—पद्मान-तुकिप्यानका एक गहर। यह पका० ३६ ३२ स० पोर दिया० ६० ४१ पु० पर मनुप्रपचसे १६८५ फुट लंबे पर पचखित है। यह गहर अपने प्रदेशमें सबसे बिखटा पोर मखक है तथा मध्य एशिया पोर जानुसजा बाकिम्प-केन्द्र है। इसमें ४००० घर लगते हैं, लजबैन पौर ताजिकको जो स क्या नबसे पचिक है। वहाँ प्राय जितनो सड़के हैं, सभी १० या १२ फुट चौड़े हैं। तारीफ तो इस बातको है कि ये सबसे अब बिलकुल मोठो पत्तो गई है, टेडापन बहुरो मो नहीं है। समुचा गहरमें तमकुरवान नदीसे जल जाता है। काकी पानो नहीं मिलनेके कारण पच्छो जमीन रहति मो लपत्र बहुत कम होती है। पवन, शिथे पादि जो पचिक पाये जाती है।  
 तजगर (वि० पु०) कुसाईके तानेकी एक लकड़ो जो मीनक्रीडे पाम रहती है।  
 तजदोक (च० श्लो०) १ मचार्। २ ममबंन फुटि, मचार्का निषय। ३ मारुष, गवाहो।  
 तजहक (च० पु०) १ निवाबट, मदका। २ बलिपदान कुरवानो।  
 तजनीत्र (च० श्लो०) पजबो रचना।  
 तजबोच (च० श्लो०) त्रयमाना, सुमिरनो।

तसमा ( फा० पु० ) चमड़ेको धब्बो जो कुछ चौड़ा और छोरीको आकारको लम्बी होती है, चमड़ेका चौड़ा पीता ।

तसर ( सं० पु० ) तनीतौति तम-सरन् किञ्च । ? सूवर्षटन, - लुलाहोकी टरको । २ एक प्रकारका कोड़ा ।

तसर—कौपिय-सूत्रविशेष, एक तरहका कडा और मोटा रेशम । बङ्गालके अन्तर्गत छोटा नागपुर प्रदेश, बालेश्वर, मयूरभञ्ज, केवभट्ट आदि स्थानोंमें, बाँकुडा, वीरभूम, सिदनीपुर जिलेके जङ्गलोंमें तथा बङ्गालके अग्र्यान्व स्थानोंमें गाल, पियाल, हरोतकी, विभोतकी आमलकी, कुसुम, मौल, बदरी आदि वृक्षों पर तसर्के कोड़े पानते हैं । इन्हीं कोड़ोंसे तसर पैदा होता है । यह कहना फिजूल है, कि तसर रेशमका ही एक भेद है ।

रेशम देखो ।

ऊपर जिन स्थानोंके नाम लिखे गये हैं, उन प्रदेशोंके जङ्गलोंमें तसर अपने आप ही उत्पन्न होता है । इसको खेतो भी होती है । तसरकी खेती रेशम जैसी नहीं है । रेशम उत्पन्न करनेके लिए जैसे तृतियाके पत्ते खिल्ला कर रेशमके कोड़ोंको पालते हैं और यत्नपूर्वक उनको घरमें ही रख कर, घरमें ही गुटिका उत्पन्न कराते हैं, तसरके उक्त प्रदेशोंमें वैसा नहीं करते । चाँदिवामा, हजारोवाग, लोहारडागा आदि स्थानोंमें तसर उत्पादनकारियोंको तसरको खेतो पैनी यत्नसाध्य नहीं है । इनको जङ्गलोंमें अपने आप होनेवाले कोड़ोंको सिर्फ चिड़ियों और चींटियोंसे बचानेके सिवा और कुछ भी नहीं करना पड़ता ।

तसरकी उत्पत्ति—पहलेसे कुछ पके हुये बोज वा कोशोंका संग्रह कर रखते हैं और यथासमय उनमेंसे कोड़े निकालने पर उनको पासके जङ्गलमें छोड़ देते हैं । वहाँ वे अपने अपने जोड़े टूटूँ लेते हैं । शीघ्र ही मादा कोड़े वृक्षके पत्तों पर छोटे छोटे चपटे, सरसों जैसे अण्डे देने लगते हैं । ये अण्डे कुछ चिपकने होनेसे पत्तों पर खूब चिपट जाते हैं । एक एक कोड़ा -३।४ दिनमें २००से २५० तक अण्डे देता है । एक बारगी मत्र अण्डे दे देने पर इनके जीवन-कार्यका अन्त हो जाता है अण्डे देनेके ३।४ दिन बाद ही ये मर जाते हैं ।

नर कीड़े शीघ्र मर जाते हैं । तत्र सिर्फ अण्डे ही भविष्यत् तसर-कोटवंशके वंशरक्षक रह जाते हैं ।

इन अण्डोंसे १०।१२ दिनके भीतर छोटे छोटे लट जैसे कीड़े निकलते हैं और पत्तों पर रेंगते फिरते हैं । इस समय ये कीड़े बड़े ही पेटुक होते हैं । लगातार कीमल पत्तोंकी खा खा कर जल्दी जल्दी बढ़ते रहते हैं । इस समय ये ३।४ बार खोलो या कलेवर बदलते रहते हैं । खोली बदलते समय कुछ टेरके लिए ये आहारविहार छोड़ कर चुपचाप पड़े रहते हैं । इस तरह १०।१५ दिनमें ये अपने पूरे वाढ़की पहुँच जाते हैं । उस समय इनका आकार ३।४ इंचसे ५।६ इंच तक होता है । ये कीड़े मटमैले, नोले, पोले, भूरे, लाल आदि नाना रंगोंसे चित्र-विचित्र होते हैं । इनको आँखें उज्ज्वल और पैर छोटे छोटे होते हैं ।

अंडे फूटनेके बादसे अब तक इनके शत्रुओंको कमी नहीं रहती । प्रथमतः जुद्ध अवस्थामें चींटियाँ इनकी परम शत्रु हैं । चील, कोए और अन्यान्य वनचर पक्षी, गिलहरी, साँप आदि मौका लगते ही इनको खा जाते हैं । इसलिए पालनेवालोंको इस समय बड़े सावधानीसे इनको रक्षा करना पड़ती है । रक्षकगण तीरधनु, कंकड वाँस आदिसे उक्त जानवरोंको मार कर भगा देते हैं ।

जो लोग इनको रक्षाके लिए नियुक्त होते हैं, वे कठोर ब्रह्मचर्य अवलम्बन कर जङ्गलमें ही रहते हैं । उनका विश्वास है, कि ऐसा न करनेसे कोड़े मर जाते हैं । अतएव वे जङ्गलमें भौंपड़ो बना कर २।३ मास तक व्रतपरायण हो श्रद्धाचारसे रहते हैं । मल-मूत्र त्यागनेके बाद ही ये स्नान करते हैं और प्रतिदिन हविष्यान्न भक्षण कर लक्षणय्या पर सोते हैं । जब तक कोड़े पूरे वाढ़की नहीं पहुँचते, तब तक ये स्त्रोमुत्रादिका सुखावलोकन नहीं करते । इनको और भी एक ऐसा ही विश्वास जम गया है, कि रक्षा करते समय वहाँसे यदि श्यामका गमन हो, तो कोड़ोंमें उत्पादिका शक्ति बढ़ जाती है । इसीलिए व्याघ्रके गमन करने पर रक्षकगण अधिक लाभकी प्राप्ति करते हैं । सत्याल, कोल, जुरमो आदि जातियाँ ही प्रधानतः तसर पैदा करनेका काम

करती है। किन्तु प्रायः बहुतेरे पर्वक बलिबोली भी पक्ष तरफ इति पड़ो है।

कोड़े पूर्वाययबको राव होने पर कोय बनानेके लिए व्यय होती है। उस समय ये वृषको छोटी छोटी शक्तियों पर सुखसे निजको डूई खाने इतल बनाते है। पक्ष कार ही बादमें लुप कर प्रकृत तसर बा सतके रूपमें परिणत हो जातो है। इतल बन जाने पर मत निबालने हुए भूम भूम कर ये पयने लिए एक कोय बना जेत है पोर लसोमें मन्द हो जाते है। इन कोयोका प्राकृति ह्यज लवेपनको लिए गोल पंछेके समान है। कोटको प्रातिदि पनुसार कोय भी कोटे बर्फे कई प्रकारके होती है। बर्फेसे बड़ा कोय १। २। ३। इतल तक मन्दा होता है।

कोयके प हर १३ दिन तक मयातार सुत निबाल कर, ये कोड़े चुपचाप सोते रहते है। इस पयव्यामिं ये खाना पीना मय कोड़ कर मुरदेकी तरह 'निपन्द' पौ। निवेद्य हो जाते है। किन्तु पाच्यकी बात तो यह है कि दो तोन मास तक इस तरह पके रहने पर भी इन को मृज्ज, नहीं होती। इस पयव्यामिं कोयको पोर कर इनको बाहर निबालनेके, ये 'मिज्जबब' मासविषयकत् मान्य पड़ने है, किन्तु योत्र ही ये दिन-हुत कर सजोय ताका प्रमाय दिकाते है। इन तरह पयसयमिं इनको मित्रामङ्ग करनेके ये ज्यादा देर तक जीतेमङ्गी, योत्र ही मर जाते है। मयव पर ये पयने पाप कोयकी काट कर बूसूरत प्रजापतिके रूपमें बाहर निबालते है।

कोय मन्थके बन जाने पर रचकमय उनको उकारनेके लिए तयार रहते है। लगे पयनी पभिरताके लव कोय पयता पोर कोड़नेके मायव होता है, इसका पान ही जाता है। इस समय कोयमण्डित तहरात्रिबहुन बनभूमि पयमिं पयनयोमित फलेपानके समान मोमायमान रहतो है। तब कोय कोड़ कर दी-एक कोड़ा मानवेकी तैयारो करता है तब रचकमय लगे इकड़ा कर सर नि पाने है। कोड़े जीवित रहनेके कोय काट कर भाग जायवे, इन मयवे है कोरीकी चारके माय गरम पानोमिं बहान कर मार जानते है। जिन कोयोकी लवाना नहीं जाता, वे 'पियो' नामके प्रनिह है। इनका तहर सबके बुध्या

होता है। इनको 'मूदम' मो कहते है। यह कोय बहुत बड़ा होता है, कोरसे दाबने पर भी टपता नहीं। इससे मोषेदनेके कोयोको कारा बगुई, जाकुई पादि कहते है। जिन कोयोको काट कर कोड़े पत' निबल जाते है, उनको रासकडा, घाम, पिते कोड़, पूरे, तथा प्भी कहते है। जो कोय परिपक्व होनेके पक्षी हो पयसयमिं कोड़े का लवासे जाते है वे बहुत कोमल होती है, उनको मज्ज को दाब कर पयदा किया जा सकता है। यह किसी कामके नहीं होते पौर बृह वम दाममिं निबलते है। बडे हुए कोय बिल्कुल ही मट नहीं हो जाते। कोड़े कोयके इ टपके पाम मूत ठेक कर बाहर निबल जाते है। पनः उनसे मो पूत पाया जाता है। कोटी, पड़े पादिके काटने पर कोय नाकाम हो जाते है। पापाइ याबनमिं पामपते, भाद्रमिं मूदम, पामिजममिं मृमा, कार्ति'कमिं ब्राजा, पम इनमिं बगुई, पोय पोर माघमिं जाकुई कोय लयव होते है।

कोयोके स पक्ष किये जानेके लयपल लक्यके पनु पार उनमिं सुन सुन कर इवक् पयमिं टोरे मगाते है। बादमें उनको बाजारमिं बेचते है। चाईबासा सि चभूम, मानभूम पादि जिन पोर पनभूम, गिलभूम टुङ्गभूम पादि खानीके व्यापारो कोय बंगल-बासियोने इन कोया को परोद मीते है। ये फिर उनको बाकुड़ा, बिपु, पुर, मं दिमोपुर, मानकर, मोनासुजो, राजपाम पादि म्पानो के पावे हुए व्यबपायियांकी या इनके दोब मान मने बानोको बेच देते है। ये दनाल वा पैकारो मीय पभिक नामकी पायासे बहुधा राब तावेमिं भूम भूम कर कोय म पक्ष किया करते है। किन्तु पभिर्याय कोय निबलम्य हाटीमिं निबलते है। तमर कोयके स पक्षके समय उन हाटीमिं पूर्वोक्त म्पानने बहुतेरे व्यापारियो का ममागम होता है। चाईबासाके पयसयमिं इतुद पुङ्गुर नामको हाटीमिं तथा बडगाणुड़ा नामक खानमिं इन कोयोको बड़ो मारो पारोद बिबो होतो है। विषयके लिए हाटीमिं उनको पयम पयम टोरे मगा दो जाता है। परोददार पयनी इच्छानमाय एक एक टोरोसे मुजो मर मर इनको परोपा करते है। इनको चाप वा चाबती

करना कहते हैं। इस जांचसे जैसा उत्कर्ष वा अपकर्ष होता है, तमाम ढेरों वैसी ही समझी जाती है। पीछे एक एक ढेरीको कौमत ठहराई जाती है। कहना फिजूल है, कि इस तरह तसरके छोटे बड़े आदि आकार, असुखता, पुष्टता आदि गुणोंके अनुसार कौमतमें कमी बेशी हुआ करती है। बहुधा ये अरखवासी तसरविक्रता धूर्त दलाल और पैकारियोंके संगुलमें फंस कर खोखा खाते हैं।

संख्याके अनुसार ही इनका मूल्य निर्धारित होता है। तीन कर वेचनेको रिवाज नहीं है। पैकारो वा दलाल लोग फुटकर खरोदते समय गण्डे आदिके भावसे खरोदा करते हैं। बड़ो बड़ो हाटोंमें जब बहुसंख्यक कोशोंको खरोदविक्री होती है, तब गिनना मुश्किल हो जाता है। इस समय कृत वा अनुमानसे एक एक ढेरीको संख्या निर्णीत होती है। किन्तु अधिक संख्या होने पर भी प्रायः गिन लेना ही अच्छा ममभा जाता है। संख्या स्थिर होने पर उनका मूल्य ठहराया जाता है। तसरको उपज अच्छो न होने पर उत्कृष्ट कोशोंको कौमत फो काहन (काहनको संख्या १२८० ६०) १२)से ७ तक, मध्यम प्रकारके कोशोंको ७) से ५) तक तथा निम्न प्रकारके कोशोंको कौमत लगभग ५) से ३) ६० तक होती है। और उपज अच्छो होने पर उत्कृष्ट कोशका भाव ७) से ६) रुपया, मध्यमका ७) से ५) रुपया और निम्नका भाव ४) से २) रुपये तक हुआ करती है। वर्षा, गरम, हेमन्त और शीतऋतुमें ही तसरके कोशोंको उत्पत्ति होती है। वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें जब सूर्यका तेज अत्यन्त प्रखर होता है, तब ये कोशके भीतर सीते रहने हैं।

खरोददार लोग उन कोशोंको खरोद खरोद कर बांगुला और उसके पन्तगत राजधाम, सोनामुढी, विष्णुपुर, जयपुर, तथा वर्तमानमें मानकर और हुगली जिलेमें वटनगञ्ज, ग्रामवाजार, कृष्णगञ्ज आदि स्थानोंमें बेजा करते हैं। उपर्युक्त स्थानोंमें कोशोंसे तसरका सूत बनता है। यह सूत कुछ तो स्थानोंय जुलाहे लोग खरोद लेते हैं और मफेद वा नाना रङ्गोंमें रङ्ग कर तरह तरहके कपडे बनाने हैं तथा बाकीका कलकत्ता और अन्यान्य प्रधान प्रधान नगरोंको रवाना होता है।

मुर्शिदाबाद और उसके निकटवर्ती बर्हमपुर, तथा मानदह आदि स्थानोंमें भी कुछ कुछ तसर पैदा होता है। परन्तु इन स्थानोंमें तसरको अपेक्षा रेशमको अधिक उपज है।

कोशसे सूत निकालनेके लिए पहले उनको चारके पानोंमें उधाला जाता है। इससे कोश कोमल हो जाते हैं और सहजमें सूत निकलता है तथा सूतका मैल भी कुछ कुछ निकल जानेसे सूत साफ हो जाता है। अनन्तर समस्त कोशोंके शीतल और परिष्कृत होने पर उन्हें पुनः पुनः धो कर उनके डंठल और ऊपरका अपरिष्कृत अंश फेक दिया जाता है। पीछे एक पात्रमें थोड़ा पानी रख कर उसमें ४ ५ वा उससे ज्यादा कोश काड़ा देते हैं, और उनके छरोंको एकत्र कर एक साथ सबका सूत चरखो पर लपेट लेते हैं। यह काम अक्सर करके औरते ही किया करता हैं। सूत निकालनेके लिये इससे उमदा और कोई यन्त्र व्यवहृत नहीं होता। तमाम सूत निकालनेके बाद कोशके भीतरसे कृष्णाम रक्तवर्ण मांसपिण्डवत् सूत तसरकोट निकलता है। मोच जातिके लोग उसका तसरलड्डू कहते और उपादेय समझ कर खा जाते हैं। तसर कातनेवाले उनको रख देते हैं और मोच लोगोंको बेच देते हैं।

कोशोंको पुष्टता और आकारके अनुसार उनके सूतमें भी कमीबेशी होती है। उत्कृष्ट कोशोंमें १०, १२से ही १ तोला सूत निकलता है। कोश निम्न होने पर उसके अनुसार कोशोंको संख्या भी बढ़ जाती है। तसरका सूत बहुत उमदा होनेसे रुपयेमें ८।१० तोला और निम्न होने पर १२।१५ तोला तक मिलता है।

कोशोंके डंठल और सूत निकल जाने पर बाकीका जो भीतर अंश बच रहता है, वह और छिन्न तसर सूत्रादि भी मष्ट नहीं होते। इनसे एक प्रकारका मोटा सूत बनता है। औरते इनको कोमल बना कर अण्डी-रेशमकी भाँति--रुईको तरह उत्तन उत्तन कर चरखोसे उनका सूत बनाते हैं। इस सूतसे करघनो और एक तरहका खूब मोटा कपड़ा बनता है। बङ्गालमें इस कपड़ेको कैटिया, मटका इत्यादि कहते हैं। बहुतसे लोग इसको पवित्र और मजबूत समझ कर देवपूजा और ब्रती-

पेवान्ति धर्मय पद्मना केरति है । तमरका क्षामानिक  
रु मीवु था होता है । रचको कुसुमो, पोषि पादि नाना  
रङ्गिनि रङ्ग कर वसने उल्लसत धोतो साङ्गी दुर्घटि पादि  
बनाति है । बिना रंगी पुष्प साई तमरके स तुये दीर्घ  
आनन्दायो धीर ध्व बसुरत विरुना अपङ्गा बनता है ।  
विद्वद् तमरके धाम तथा तमरकी तानो धीर कुम्भको  
मरनी दे कर नाना प्रकारके मन्त्रवृत्त अपङ्गे बनाते  
जाति है । इससे कोट घ मरका पादि अष्टके बनति है ।  
इसके एक गज अपङ्गेकी कोमत २) २४) तक होती है ।  
बाङ्गुका, विष्णु पुर, मासकङ्क सुयिंटाबाद मामधपुर  
पादि खानीमें समदा समदा तमरके अपङ्गे बनति है ।  
तमरके अपङ्गे मन्त्रवत धीर म्वास्त्राकर कोनेसे साधारण  
योग ब्रह्मा करते हैं कि—

“पद्मे तमर और काने धी,  
देसा बने और बमदा भी ।”

उल्लसत तमरको धोमो, साङ्गी इत्यादि पद्मपक्षमें बुरो  
नहीं बल्कि मन्त्रवत होती है ।

तमरका सूत पानीमें बरदी मडता नहीं धीर बराबर  
के अपामके सूतको अपेक्षा बहुत मन्त्रवत होता है । इस  
जिसे इससे मङ्गली पङ्कजनेका धोरा भी बनाया जाता है ।  
३ गाङ्गमें यार्थिके रहनेवाले भोग इने धीर भी मन्त्रवत  
बनानेके लिये निर्घं पानीमें भिगो कर कर्ष कोमिसे भी  
सूत निकालते हैं । बहुतसे लोग जानदृष्टाते धपसे जो  
कच्चे कोमिसे सूत निकालते हैं । इस तरहसे निकाला  
जानेवाला सूत बहुत समदा धीर मन्त्रवत होता है पर  
बध्यादिभि लिये सूत निकालनेमें रतनी निहलत करना भीग  
पसन्द नहीं करती धीर पनायाम हो इकारी-साखों  
की हीकी बजास कर अपना रोजगार बनाति है । तमर  
कोट आदिषु विस्तृत विवरण और इसके प्रकृतितक जाति देखन  
इच्छते देखो ।

तमना (घा० पु०) धीरे, पोतक, तीर्थे पादिका एक  
प्रकारका गहटा भरतन ।

तमनो ( वि० खी० ) छोटा तमना ।

तमनोम (घा० खी०) १ पनाम ननाम । २ लिमी बाग  
को स्वीकृति जामी ।

तमनी (घा० खी०) १ पायामन सम्भवा, ठाडुष ।  
२ धियं, धीरज ।

तमर (घा० खी०) १ पित्त, मन्त्रा । (वि०) २  
मनाहर, सुबसुरत ।

तम् (वि० पु०) समशीको एक माप जो १३ इंचके  
न्यमभग मानो गई है ।

तम्बर (स० पु०) तद् करोति स यच् सद् दक्षीपय ।  
१ धीर धीर । २ प्रवृत्तान, एक प्रकारका माग । ३  
मदनतृप्त, म नपक । ४ धीरानामक मन्त्रवृत्त । ५ यवक,  
खान । ६ एक प्रकारके लम्बे धीर धिक्रिड केतु । इनको  
५ भ्या ३१ है धीर से पुत्रके पुत्र माने गये हैं ।

(पुद्गलेशिया)

तम्बरता (स० खी०) तम्बरव्य भाव तम्बर तथ् स्त्रिया  
टाप् । धीर्यं, धीरका काम, धीरी ।

तम्बरकामु (स० पु०) तम्बरक स्थावुरित नाङ्गिका  
यस्मा बह्वी० । बाणनासासता कीवाठीकी ।

तम्बरो (म० खी०) तम्बरा तद् कृतधोरान्धर्बे ट, टिकात्  
ङोप् । १ वङ्गकी जो धोर हो । २ धोरकी खी ।  
३ धोरका काम धोरो । ४ बाणनासासता, कीवाठीकी ।  
५ यन्त्रियर्बे मन्त्रिन । ६ अनेतनकासुका ।

तम्ब (स० खी०) धैर्यवपत्र नामकी धोपय ।

तम्बनम् (म० वि०) सा उद्यु न्बित उद्वरा द्रुपा ।

तम्बु (म० वि०) का कु द्विलक्ष । व्याकर, एक ही  
खान पर रहनेवाला ।

तम्बुम (घा० पु०) का कु द्विलक्ष । मानक, मनुष्य ।

तम्बाम् (स० घञ०) इसनिधे ।

तम्ब (स० पु०) उद्वका ।

तम्बु (वि० पु०) दृष्टु देवो ।

तम्ब-वर्षा ऐषी ।

तम्ब (घा० खी०) १ मोटाईका कर्भाव, परत । २ तल,  
पेंद । ३ तल, घाह । ४ किरी मजोन पटल ।

तम्बकीक (घा० खी०) १ सम्ब धमभियत । २ अनुसन्धान  
धोत्र । ३ श्रिधोषा, पूषताक ।

तम्बकोकात (घा० खी०) अन्धोपच, अनुसन्धान, जांच ।

तम्बकाना (घा० पु०) तन्मन्त्र अमोनने भोषिको कोठरी  
सुष्टु इरा ।

तम्बज्जीव (घा० खी०) सम्भ्यता, मिडता ।

तम्बरक (घा० वि०) बिलकुल नया, जिसका व्यवहार  
न हुआ हो ।



तद्वनिर्णय ( फा० पु० ) लोहे पर सोने चाँदोको पञ्चोकारी ।  
तद्वपेच ( फा० पु० ) पगड़ीके नौचिका कपड़ा ।  
तद्ववाज़ारो ( फा० स्त्री० ) सद्यमें सौदा बेचनेवालोंमें लिये  
जानेका महसूल ।

तद्वमत ( फा० पु० ) वह कपड़ा जो कमरमें लपेटा जाता  
है, लुंगो ।

तद्वरो ( हिं० स्त्री० ) १ पेटको बरी और चावलकी  
द्विचड़ो । २ मटरकी खिचड़ी । ३ कालीन बुननेवालोंकी  
ठरकी ।

तद्वरोर ( अ० स्त्री० ) १ लिखावट, लेख । २ लेखशैली । ३  
लिखी हुई बात, लिखा हुआ मज़मून । ४ लेखवच  
प्रमाण । ५ लिखनेकी मजदूरी, लिखाई ।

तद्वरोरो ( फा० वि० ) लेखवच, लिखा हुआ ।

तद्वलका ( अ० पु० ) १ मृत्यु, मौत । २ नाग, बरवादी ।  
३ विप्लव, धूम, हलचल ।

तद्वलील—भरवटंगको स्त्रियोंका एक प्रकारका कर्कश  
शब्द । जिज्ञा और कण्ठको गतिके एकत्र संयोगसे यह  
शब्द निकला है । यह शब्द निकालते समय वे सुंघ पर बहुत  
तेजीसे हाथ फेरते हैं । तद्वलील सुननेसे ही भरव अथवा  
कुटू लोग जोशमें आ कर ज्ञानरहित हो जाते हैं ।

कजैहून और सुसहरके मध्यवर्ती देशोंको अरबी  
स्त्रियाँ किसी अपरिचित व्यक्तिको अभ्यर्थनाके समय यह  
शब्द उच्चारण करती हैं । यह उनका आमोदशापक  
निदर्शन है । मृत व्यक्तिके लिये शोक प्रगट करते समय  
भी यह शब्द व्यवहृत होता है ।

तद्ववील ( अ० स्त्री० ) १ सुपुर्दगी । २ धरोहर, अमानत ।  
३ जमा, खजाना ।

तद्ववीलदार ( अ० पु० ) वह मनुष्य जिसके जिम्मे रूपयेका  
हिमाव रहता है, खजानचो ।

तद्वयनहस ( हिं० वि० ) नष्ट भ्रष्ट, बरबाद ।

तद्वसील ( अ० स्त्री० ) १ चंदा, उगाही, वसूली ।  
२ जमीनकी वार्षिक आय । ३ तद्वसीलदारकी कचहरी,  
मालकी छोटी कचहरो ।

तद्वसील—राजसू वसूलकी सुविधाके लिये एक एक प्रदेश  
भिन्न भिन्न भागोंमें विभक्त किया जाता है । हमके प्रत्येक  
भागको तद्वसील कहते हैं । हर एक तद्वसीलमें एक

तद्वसीलदार रहता है और वही वहाँका मुख्य मुख्य  
काम करता है ।

तद्वसीलका कर मंग्रह करना ही तद्वसीलदारका  
प्रधान कार्य है । पञ्चायके तद्वसीलदारोंके हाथ दोषानो  
और फौजदारो विचारकी ज़मता है । इन्हे मजिस्ट्रेट-  
कासा अधिकार रहता है ।

तद्वसीलदारके कार्यालयको भी कभो कभो तद्वसील  
कहते हैं ।

गवर्मेण्टकी नाईं जमींदारोंके अधीन भी बहुतसो  
तद्वसील हैं । जमींदारोंका परगना अनेक तद्वसीलों  
और डोहोंमें विभक्त रहता है ।

तद्वसीलदार ( हिं० पु० ) १ किसी परगने या तालुकका  
प्रधान कर वसूल करनेवाला । फारसी तद्वसीलदार  
और अरबी तद्वसील शब्दसे हिन्दो तद्वसीलदार शब्द  
उत्पन्न हुआ है । सुभलमानोंके राजत्वकालमें इस शब्द-  
को सृष्टि हुई है । बाद अंगरेज गवर्मेण्ट भी इस शब्द  
का व्यवहार करते आ रहे हैं । २ जमींदारोंसे सरकारो  
मालगुजारी वसूल करनेका अफसर । यह मालके छोटे  
सुकदमीका फौसला भी करता है ।

तद्वसीलदारो ( अ० पु० ) १ मालगुजारी वसूल करनेका  
काम, तद्वसीलदारका काम । २ तद्वसीलदारका पद ।

तद्वसीलना ( अ० क्रि० ) वसूल करना, उगाहना ।

तहाँ ( हिं० अव्य० ) उस स्थान पर, वहाँ ।

तहाना ( हिं० क्रि० ) लपेटना, तह करना ।

तहोवाला ( फा० वि० ) क्रमभंग, ऊपर नीचे, उलट  
पुलट ।

ता ( म० पु० ) विशेषण और संप्रा शब्दोंके आगे लगाये  
जानेका एक भाववाचक प्रत्यय ।

ता ( फा० अव्य० ) पर्यन्त ।

ताई ( हिं० स्त्री० ) १ ताप, ज्वर । २ वह बुखार जो जाड़ा  
दे कर आता हो, जूड़ी । ३ मालपूभा, जलबो आदि  
बमानेको एक प्रकारकी छिछली कराही । ४ बापके  
बड़े भाईको स्त्री, जीटी, चाची ।

ताईद ( अ० स्त्री० ) १ पक्षपात, तरफदारी । २ समर्थन,  
सुष्टि ।

ताईं ( हिं० अव्य० ) १ पर्यन्त, तक । २ निकट, समीप ।  
३ समझ, प्रति । ४ लिये, वास्तु, विषयमें ।

ताक वि० पु०) बाबकंधे पिताका बड़ा भारी, बड़ा बाबा।  
ताकन (च० पु०) एक प्रकारका ब्रह्मानक रोग। इसमें  
शरीरको मिट्टी निकलती और दुखार जाता है।

ताकन (च० पु०) १ मरुत, मोर। २ एक प्रकारका  
बाजा की सारही और वितारथि मिट्टा लुप्तता है। इस  
पर मोरका चित्र बना रहता है।

ताकनो (च० वि०) १ मोरकासा मोरके रङ्गका। २  
गहरा भिगनो।

तापोई—(तापोचि नामसे प्रसिद्ध) चोनदेगका एक  
प्राचीन बर्ममत और कर्मदाय ई०से ६०१ वर्ष पहले  
सेषोकाइ नामके एक दार्शनिकने कल्पवृक्ष किया  
बा, वे जो इस मत और सम्प्रदायके प्रवर्तक थे। उनका  
जोबनो बहुत और एकक उपान्यासे मरो हुई है।  
उनके पास बहुत ही धर्मिक थे, इसलिए वे ‘तापोचि’  
पर्याय ‘दुःखवेग’ से नामसे प्रसिद्ध थे।

पहले तापोचि चू० व शोध एक चोन सम्प्रदाईके कुछ  
कारणके प्रत्यक्ष थे। इस कार्यके लिये नाना शास्त्र  
परिदृशनेमें विधिव सुसोता हुआ बा। जोरे और उनके  
पाश्चिमायी चर्चा नाना ज्ञानमें पैल गई। चोन सम्प्रदाई  
ने उनको मान्यारिणका पद दे दिया। कुछ दिन बाद वे  
तिम्बतमें जा कर एक नामाके पाप बर्मोपदेश सोचने  
करी। इस विचारके बलसे जो लक्ष्मी तापोई वा तापोचो  
पर्याय चमरपुत्र नामके कर्मदायका प्रवर्तन किया बा।  
इन्होंने अपने प्रथम रथे हैं, जिनमें तापोई एक ही  
प्रधान है। तापोई मत बहुत चर्मोंमें शोध विद्वान्  
पर्यकिपरसके मतका अनुयायी और कुछ चार्वाक-मतके  
समान है।

इस मतमें—उपलभाबसुखम दुःख कामनाओंको छोड़  
कर दुर्गम इन्द्रियोंको नशीभूत करना को मनुष्यका  
प्रधान कर्म और लक्ष्य बतलाया है। पाका और मनको  
शेरे बने—हर एक तरफसे इन का सुको रक्षनीकी चेष्टा  
करना कर्तव्य बतलाया है। और वह भी बताया है, कि  
कनो भी कुचिन्ता और मोक्षरूपी लक्ष्मीको मनमें ज्ञान न  
दिना चाहिये।

तापोचिके मतका बलसे शिष्योंने बहुत कुछ परिवर्तन  
कर डाला। बर्मोंमें देखा कि, भयावह बल बाल स्वर्गति-

पत्र पर पाकड़ जोने पर मन चञ्चल होता और कुछ दूर  
भाग जाता है। इसलिए उन लोकोने फिर किया कि,  
पिशा एक पशुतरस बनाना चाहिये जिससे पोनेसे चमरल  
मान हो, फिर रोग, शोक करा और शब्द, चर्म मो न  
कर सके। इस लक्ष्यसे ही रसायनशास्त्र चयाचरमें प्रवृत्त  
हुए। अमृततरस पो कर चमर हो आयी, इस पायने  
सेकड़ीं कीज उनका मत प्रकृत करने लगी। क्या बनी  
और क्या मरुत, क्या ली और क्या पुत्र, सभी चमिनव  
नोतिमिचामें व्यय हो गये। इस तरह जोड़ें को दिनोंमें  
तापोचो मन्त्रदाय शब्दक प्रवृत्त हो गया। चोनमें सर्वत्र  
ही इन्द्रजाल प्रोताविज्ञान, मन्त्रिशास्त्री इत्यादिका  
प्रचार होमें लगा। बहुतसे चोन सम्प्रदाईने भी तापो  
चियोंके पायात्मनोरम बचनों पर सुत्र जो कर लक्ष्य  
पात्रय दान दिया बा। तापोचियोंने भी लोगोंको मजि  
पठवित करनेके लिए नाना व्यासोंमें दीबमन्त्रि और  
दीबमूर्ति धी स्थापित कर पूजा, होम, वधि इत्यादि करना  
प्रारम्भ कर दिया। इन दिग्गजे तन्त्रशास्त्रोंमें को चोना  
चारकमका उल्लेख है तापोचियोंका ज्ञान-शास्त्र प्रायः  
कनसे मिलता लुप्तता है। इस दृश्यसे लोकोका विचार  
है, कि तन्त्रोक्त चोनाचार चोनदेगमें इस दृश्यमें प्रचारित  
हुया है। सत्य है, कि चोनके तापोचियोंमें जिस  
मतका प्रचार किया है, वही इस दृश्यमें चोनाचारके  
नामसे प्रचलित हुआ हो।

तापोचियोंमें बहुतको पिशाचविष देखा जाता है।  
इस समय तापोचि होम शूकर, पशो और मन्त्रके  
उपाय देवताको पूजा किया करती हैं। बहुतसे तो चम  
हैमत्र चरुकारी हैं।

बहुत दिनोंसे चोनके विद्वान् और बुद्धिमान व्यक्ति  
तापोचि-धर्मको प्रसारता प्रतिपादन करमें धार्य हैं,  
किन्तु तो भी बहुतसे चोनवाचो कुछ प्रकारको जोड़ कर  
तापोई धर्मका परिचय नहीं कर सके हैं।

तापोचियोंके प्रधान चर्मोपदेश चोनके विद्यो प्रधान  
मन्त्रिकको अपेक्षा भी अधिक सुख-सम्पत्तिका भोग  
करते हैं। विद्याइका प्रदेयके प्रधान नमर्षि चर्मोपदेशका  
प्रासाद है, देवता समझ कर उनसे शोधरथके दर्शन  
बचवा उनका उपदेश सुननेके लिए बहुत दूर-दियागरीके

सेकड़ों लोग धर्मांधारको मेवामें उपस्थित हुआ करते हैं।  
तॉत ( हि० स्त्रो० ) १ चमड़े या नर्सोंको बना दूरे  
डोरो । २ धनुषकी डीरो । ३ सूत, डोरो । ४ मारंगो  
आदिका तार । ५ जुनाहोंका रांच ।

तॉतडो ( हि० स्त्रो० ) तॉत ।

तॉतवा ( हि० पु० ) तॉत उतरनेका रोग ।

तॉता ( हि० पु० ) योगी, पाँक्ति, कतार ।

तॉतिपाड़ा—१ वीरभूम जिलेमें हरिपुर परगनिका एक  
छोटा ग्राम । यह नगरमें कई मोल दक्षिणमें अवस्थित  
है । यहाँ बहुतमे तॉने रहते हैं । जो तमरके कपड़े  
तथा सूते तैयार करते हैं । इस गाँवके पूर्व और पश्चिम-  
को भोग प्रायः ३०५४०० गज विस्तृत पत्थरका एक  
प्रसिद्ध बाँध है और इससे भो एक मोल दक्षिणमें बल्लेश्वर  
नामक कई एक गरम सोते प्रवाहित हैं । बन्दर देतो ।

२ मालदह जिलेके भटिया गोपालपुर परगनेका एक  
छोटा ग्राम । यह महानन्दा नदीके मदीय हो अवस्थित  
है । यहाँ बहुतमे मनुष्य वास करते हैं । इसी कारण यह  
परगनेमें विगेष प्रसिद्ध है ।

तॉतिया ( हि० वि० ) जो तॉतकी तरह टुन्नला हो ।

तॉतिया तोपो ( नाया टोपो )—मिपाडोविश्रीहके नायक  
प्रसिद्ध नानामाहवके प्रधान मन्त्रो और पृष्ठपोषक ।  
मिपाडो-विद्रोह (मनु ५७का गटर)-के इतिहासमें नाना-  
माहवने जैसो प्रसिद्धि नाम का है, तॉतिया तोपोकी  
प्रसिद्धि भी उससे कुछ कम नहीं है । कानपुरके विद्रो  
हमें तॉतियाने जैसे साहस और वीरत्वका परिचय  
दिया था, उससे उस समयके सेनापति उद्दण्डहाम,  
कश्मिर् आदि बहुतमे अंग्रेज भोत और चकित हो गये  
थे । इन्होंने उत्तेजित करने पर ग्वालियरकी बडो  
फौजने सिन्धियाका पक्ष छोड़ कर विद्रोह किया  
था और चर्खारोराजकी विगेषरूपसे विपद्ग्रस्त कर दिया  
था । अंग्रेजो सेना आ कर यदि राजाको सहायता न  
करती तो शायद उस समय चर्खारोराज्यका अस्तित्व ही  
मिट जाता । जिस समय भौमोको रानो अपने पात्रमित्त  
द्वारा परित्यक्त हो कर तथा अंग्रेज-सेनापतिके प्रवल  
आक्रमणसे अत्यन्त विपद्ग्रस्त हुई थीं, तॉतिया तोपो उस  
समय सेना सहित रानीको सहायताके लिए उपस्थित

हुए थे । रानीके साथ छटिय-सेनाका पित्तनो टफा युद्ध  
हुआ था इन्होंने प्रत्येक युद्धमें रानीको यथेष्ट सहायता  
की थी । कानवो अंग्रेजोंके हाथ पडनेके बाद गोपाल-  
पुरमें जा कर इन्होंने रानोमें भेंट की और ग्वालियर अधि-  
कार किया । यहाँ इन्होंने बहुत धन एकत्रित किया था ।  
अंग्रेजो सेनाने आ कर जब ग्वालियर अधिकार कर  
लिया और भौमोको वीर रानो जब शत्रुको गोलीमें  
मारो गईं, तब तॉतिया एक तरफमें निरुत्साह हो गये ।  
परन्तु समयमें बहुत सेना और अर्थात्कल हीनेमें ये नाना-  
माहवका नाम लेकर दक्षिणान्ध्यामियोंको उत्तेजित  
करनेमें अग्रसर हुए । छटिय-गवर्मेण्ट भी इसमें बहुत डर  
गई थी । वही लाटक आठेगावमार सेनापति नेपियर  
तॉतियाको पकडनेके लिए अग्रसर हुए । तांत्याने राव  
साहवके साथ चर्मगवतो नदीको पार कर राजपूतानामें  
प्रवेश किया । उनको इच्छा था, कि राजपूत राजाओंको  
उत्तेजित कर अंग्रेजोंके विरुद्ध युद्ध घोषणा करें । किन्तु  
राजपूतानामें दो एक जगह विद्रोहके चिह्न दोखने पर  
भी तांत्याका अभिप्राय सिद्ध न हुआ । जयपुरकी  
इन्होंने चर भेजे थे, वहाँमें विगेष सहायता पानेका सुभोता  
हुआ था, पर बात प्रकट हो जानेमें नमोर(वादसे रवार्ट  
साहव दो हजार सेनाके साथ तांत्याको गतिरोध करनेके  
लिए आ पहुँचे । तांत्या अपनी फौजके साथ नर्मदा  
नदी पार होनेके अभिप्रायसे टोंकके भोतरसे धावित  
हुए । उस समय चम्बल नदीका पानी इतना बढ़ा हुआ  
था, कि उनको सेनाको उमें पार करनेको हिम्मत न  
हुई । इसके लिए वे पश्चिमको तरफ बुन्दोगिरि पार हुए ।  
उस समय राजपूतानेको सभी नदियाँ उर्ध्व नित हुई थीं ।  
इतने पर भी रवार्ट साहवने उनका पोकल करना छोडा  
नहीं । भोलवाडोके पाम रवार्टको एक बार ताँचा लो  
सेना दौख पडो थी, किन्तु शोध ही वह अर्वाँके भोक्त  
हो गईं । वनास नदीके किनारे पर पहुँच कर रवार्ट  
तांत्या पर आक्रमण करनेके लिए तैयारियाँ करने लगे ।  
वहाँ तांत्या तोपो भी निश्चित न थे, वे सेनाको होशियार  
करने स्वयं पासके देवानवमें पूजाके लिए चले गये ।  
आधो रातकी आ कर उन्होंने सुना कि शत्रु लोग बहुत  
ही पास आ गये हैं । इस पर उन्होंने शोध ही रण-भेरो

बज्रानिका पाटीय दिया। पदातिवगण समो ब्रह्म मये से, उन लोगीनि तस्याका पादेय प्राज्ञ नहो किया। धम्मा रोही धोर गोबन्दाज सच तैवार हो मये। दूरै दिन एव छोडा सुह कुषा। किन्तु दुर्मान्धवम तस्याको सेनाको पोड दिखाना पड़ो। बोरे बोरे ताब्बा चम्पन नदोको पार हो कर आनरा पाटनको तरफ बढने ली।

आनरापाटन एव प्रसिद्द द्वितीय राज्यको राजधानी से ताब्बाने धनायास ही उच्च राजधानी पर पबिहार कर पबिवासियनि करनद्वय ५ भाग रूपये बन्तुन कर निये। इससे सिवा राजकीयये मो वनको प्राय ४ भाग रूपये की बीजे धोर ३० तोये सिनी से। सर्वा उन्धेनि बहुत घोड़े समवधि मोतर बहुतसो लई सेना बना ली।

एव ताब्बानोपो ईश्वरन धोर पचबन्धने द्वितीय बलो यानु हो गये। इन्दोर पर बलका लक्ष्य गया। मजाराह माय हो भाभाभाइबलो पियना भागते से। ताब्बाको विमान था, कि इन्दोर पबिहार कर सेनिसे तथा नाभा साइबका नाम सोधित होनि पर होलकर-राज्यके सम्पूर्ण भोग था कर उनको मजयता करी। किन्तु उनके सेनापतियोंमें परस्पर बैमन्य होनिसे उनका यह सङ्घर्ष बिह न हुआ। ताब्बानोपो पर पाकमच करनेके लिए सफाई, होय धोर मैत्र जनरल माइकेल सेना सहित राजमदुमें उपस्थित हुए। तातिबा लोयको धोर दुर्भिमानु होने पर मो बने साइको न से, हुइके समय से प्रायः रच-सेनमें उपस्थित न होत से, इसा हापके कारण उनको सेना उनको बायर नमन्न कर हुवाको इटिसे देखतो हो। इसो दोपने विपुन सेना धोर सजायक होत हुए मो से बार बार प चोने पराजित होत पाये से। धोर पचको बार मो से इसो दोपके कारण पराजित हो जये। उनको सेना तितर बितर हो गई। कुछ दिन तातिबा अंमनोंमें दूधने रड़े। अन्तमें उन्धेनि पचमी सेनाके दो विभाग कर दिवे एव दस राबसाइबसे पचोन उत्तरको तरफ भेज दिश होर एव दनको से अने माह ने कर दक्षिणको धोर चल दिये।

ताब्बानोपो नमदा नदोको पार हो कर हाचिपात्तको तरफ पयसर हो रड़े हैं, यह सन कर अम्बईके यमनर मोत धोर बखित हुए। अन्तमें तातिबा नर्मदा नदी

पार न हो सकें, इससे लिए द्वितीय बन्दोबस्त किया गया था। तातिबा पचम बिसो मो तरफ जानेका मोक्षा न देव पर पबिसको धोर था कर कार्युन नामक खानमें पड़ च गये। इसर मैत्र माहर्षि उनको गति राकनेके लिए मिलनन था पड़ुके। तातिबा देरो न कर नर्मदाको तरफ पयसर हुए। छोटा नदयपुर नामक खानमें पड़ते हो त्रिपेदिवर पार्सेनि का कर धनकी सेना को परास्त कर दिया। इससे तातिबा मन्महृदय हो कर शयनाइके बने च गणको भीड़ने ली। उन्धे एव यह सन्देश लयो कि से विर हटियमबमें गड़े वे विद्वध पक्ष बनायेनि। किन्तु पचभ्रातु पायाका चोब-पानोब दिख-लाई दिया। सवाद मिना बि, कुमार फिरोजयाह धयी ध्याये था रड़े हैं; इकनि उनका साध दिवा। से अिस बालने धैये से, पच उस खानको तोड़नेके लिए उन्धेनि एव बार धीप मन्धक बढाया। प्रयापयके तिरिसहृदको सेद कर उन्धेनि मैत्र रोइको सङ्घेय पराप्त किया। बर्गल बेनमने मानवाये य च नाद या कर जोरपुरमें ताति बाको सेना पर पाकमच पूर्वक ५ काको होन सिये।

तातिबा इन्द्रगुरु नामक खानमें था कर फिरोज याइके साथ मिल गये। इस समय दोनो पक्षोंको सुरो खानत हो गई से, किन्तु दोनी इकाके मिल जाने पर कुछ कुछ पशाका सवार हुआ। से दूतसेनेसे मालवाते हो कर राजपूतानाके उत्तरांशको आवित हुए। इसर अन्त बन्-मिसने नकोरावादेये २३ अक्टूके मोतर २५ कोच राष्ट्रा पार कर होकर नामक खानमें द्विद्विधी पर पाकमच किया। इस पाकबिहक पाकमचसे तातिबा पबन्त निबधित हुए। उन्धेनि मन्धोकाइ हो कर कुछ पयुच-रीके माय चम्पन नदी पार करती हुए फिर पूरके निकट बर्ती निबिहू ज गलमें प्रवेय किया। ज गलमें मानसे कडे माह उनको सुसाखान हो गई। मानसे इ निम्बियाके पचीन एव नामक राजा से विन्धियाने उनकी समष्ट सम्पत्ति हीन लो बी। इमो लिए से दम्भुस्तित कर ज ग लमें हो चोचन यापन करत से। तातिबाके माच बलका पूव परिचय था। उन्धेनि ताब्बानोपोको धाराके माह धायाय दिया।

इसर विनयति निपियरने मैत्र मिहको मानसि इ

शोर ताँत्यातोपीके पकड़नेके लिए भेज दिया। १८५८ ई०को ८वीं मार्च को मेजर मिडन, जिस गाँवमें मानसिंह रहते थे उस गाँवके ठाकुरको पत्र दिया। उसमें मानसिंहके लिए लिखा गया, कि यदि वे स्वयं आ कर पकड़ाई देंगे, तो उनके लिए बहुत सुभोता होगी। अन्तमें मानसिंहको कहल गया, कि उनको उट्टिश-गिविरमें रक्खा जायगा, सिन्धिया उनका बाल भो बाँधा नहीं कर सकेंगे, प्रत्युतः उनके सुखस्वच्छन्दताके लिए अफ़्फ़रेज सेनापति विशेष कागिश करेंगे। मानसिंह अंग्रेज सेनापतिके पास जा कर मिले। किन्तु तब भी ताँत्यातोपीको कुछ नन्दिह न हुआ। उन्होंने मानसिंहको कहलवा भेजा, कि वे यहाँ रहें या फ़िरोजगढ़के साथ फिर जा मिलें। मानसिंहने उत्तर दिया कि, "मैं तोन दिनके भीतर आ कर आपसे मुलाकात करूँगा।" उट्टिश सेनापति जानते थे कि मानसिंहके मिथा और किनोको भी ताकत नहीं कि ताँत्या तोपीको पकड़ लावे। इसलिये नाना प्रकारका लोभ दे कर मानसिंह पर यह भार सौंपा गया। ७ अप्रैलको शामके बाद मानसिंहने ताँत्यामे जा कर बैठ की और कहा—“मिड साहब आप पर सदय हुए हैं।” उस समय भी ताँत्याने पूछा, कि यहाँ रहें या फ़िरोजगढ़के पास जाँय। किन्तु 'कल इसका जवाब दूँगा' इतना कह कर मानसिंह चल दिये। उभो रातको दो पहरके समय मानसिंहने कुछ मिथाहियोंके साथ आ कर देखा, कि ताँत्या तोपी गहरा नींदमें नो रहे है। विश्रामघातक मानसिंह उसी अवस्थामें उनको कौट कर मिड साहबके गिविरमें ले गये। पोछे ताँत्यातोपी मोकरीको भेजा गया। विचारमें ताँत्यातोपी टोपी ठहराये गये। विचारके समय ताँत्यातोपीने जवाब दिया था कि—“अपने प्रभुके आदेशमें इतने दिन शुद्ध किया है, मैंने कभी भी किसी अंग्रेज पुरुष, स्त्री वा बालकको हत्या नहीं की।” १८५८ ई०, १८ अप्रैलको उनके प्राणदण्डका दिन स्थिर हुआ। मृत्युसे पहले ताँत्यातोपीने यह वान कही थी—“मैं अपने लिए जरा भी दुःखित नहीं हूँ परन्तु मेरा परिवारवर्गको कष्ट न पहुँचना चाहिये।”

गनाघाहक, सिपाहीविद्रोह, स्रावीकी गनी आदि घन्दोंमें अन्यान्य विवरण देखो।

ताँतियाभील, (ताँत्याभील)—एक प्रसिद्ध भोल-टप्पू या डाकू। मध्यप्रदेशमें नोमार जिलेके अन्तर्गत घाटखेरोके निकट विरदा नामका एक ग्राम है, यहाँ हिन्दू भीलोंके बीच कई एक घर गोपीके भो याम हैं। इसी वंशमें (१८४२ ई०में) कृपिजोषो भाऊसिंहके शौरसमें ताँतिया का जन्म हुआ था।

बाल्यावस्थामें ही इसकी माताका देहान्त हो गया। विद्याशिक्षाके असहायके कारण ज्ञानमार्जित नहीं हो सका था, किन्तु उसमें उनके महद्वण, अभाधारण बुद्धि और न्यायपरता अवश्य थी।

बचपनमें ही ताँतिया अस्त्र-शस्त्रमें खेलना ज्यादा पसन्द करता था। उसमें शारीरिक सामर्थ्य भी कम नहीं। एक दिन एक भैंसा जिन अवस्थामें गाँवके अन्दर घुम आया, ग्रामका कोई भी उसको पकड़ न सका। किन्तु ताँतियाने खेल समझ कर उसके दोनों सींग इस तरहमें पकड़ कर नवा दिये कि, फिर वह भैंसा किसी तरह भी अपना मस्तक उठा न सका और घबराता हुआ जमीन पर गिर पड़ा।

तभीमें लोकोको ताँतियाके पराक्रमका परिचय मिलने लगा। जिस ग्राममें भाऊसिंह रहता था, वहाँ उसको कुछ सम्पत्ति न थी।

ग्रामसे कुछ दूरी पर पाखार नामक गाँवमें उसको कुछ जमीन थी। शिव पटेल नामक एक ध्यक्तिके साम्नेमें वह खेती करता था। ताँतियाको उसमें जब ३० वर्षको हुई, तब उसके पिता भाऊसिंहका मृत्यु हो गई। पिताको मृत्युके बाद उस शिव पटेलने ताँतियाको उस जमीनसे दूर कर दिया। इस पर ताँतियाने शिव पटेलके नाम अदालतमें नामिश ठोक दो; किन्तु अर्थाभावसे वह मुकदमेंमें हार गया।

ताँतियाने मुकदमेंमें हार कर शिव पटेलको उत्तम-मध्यम कुछ शिंकाये दीं। इस अन्याय अत्याचारके कारण उसे एक वर्षको कैद हुई।

यह उसका प्रथम कारागार दर्शन है। नागपुर में द्रल जेलमें वडे कष्टसे एक वर्ष बिताया।

ताँतिया जेलसे लौट तो आया पर गाँवके कुछ लोगोंके पहचानसे उसे फिर तौन सहोनेके लिए जेल जना पड़ा।

असने कुटकारा या कर पत्रको वार वर पत्रे जो राखने न रर कर जोनकर राखने घिया नामक पामने ररने लगा ।

इन समय फिर बड़पूर्वीय पड़पय्यकारियोंसे पड़पय्यमें पड़ गया । इस पड़पय्य पोर जिनके कठीर अरु वारने ही तौतियाको डाकू बना दिया उससे दम्बु प्रति पय्य करनेमें यही प्रधान कारण था । पड़पय्यका डाल माकूम पड़ने को तौतियाने बड़ पाम छोड़ दिया पोर एक जगहमें दूमरो जगह पर जगहमें दूसरे बड़पय्यमें धूम फिर कर एक बय काट दिया । इस समय जोविखा निवाहके लिए बसको कुछ कुछ घोरो पोर जको तो मो करनी पड़ती थी ।

षड्कोशापामने विभ्रमिदा नामका तौतियाका एक विध्वंस मित्र था, उसने तौतियाकी पड़पय्यके विषयको बहुत कुछ जोत्र मिना करतो थी । तौतिया विध्वंस पटेन यादि कुछ पड़पय्यकारियोंके पड़पय्यसे पुनिसके द्वारा फिर पकड़ा गया ।

उसके साथ बिभ्रमिदा पोर टौतिया ने दोनो मो पकड़े गये । इस ज्ञात्रत-घरने तौतियाके अनुकर मोन कौदो २० घे वै ज्ञात्रत-घरसे घे न काट कर निजस थासे पोर पहरवासीको खर कर बन दिये ।

तौतिया घपने दन बनके साथ जिनके निजस कर ६ वरपू नयातार बना, १० कोम चल कर सब निरापद हुए थी । सबकी खोजकी बनी कहुना यादि तोड़ जानी । जिन कोनीने तौतियाके बिबर पड़पय्य रखा था, समय था कर पत्र उसको बड़ उपयुक्त पत्रा दिने लगा । इसो तरह तौतिया कजूमका मान लूट कर सरीसोको बडिता या को पकड़े अभावसे मूषा मारा खिरता था वसे तौतिया बहुत रूपसे देता था । कहुस का बुदांनके निचे तो तौतिया यमके समान था ।

जिस जिस भादमीने तौतियाके बिबर पड़पय्य बिधा या पोर उसको पुनिसके हाथ पकड़वा दिया था, उन सबको उसने बिभीपक्षसे दण्ड दिया । उनके घर द्वारा जन्म दिने, वन लट कर गोमोको बडि टिया । पुनिस नि हमको पकड़नेके लिए बड़ी बड़ो कोमिये की, पर सब व्यर्थ हुई । पुनिस जब कौकड़ीं वार कोदिय करके

इसे पकड़ न सको तब पनन्धीपाव ही कर उसको पकड़नेके दोसबर-रात्रके सहायता मांगने पड़े । दोसबर राख भी इटिया-पुनिसके साथ एकमत हो कर उसके पय्य अन्धानमें प्रवृत्त हुए ।

तौतियाको पकड़नेके लिये पुनिस जितना प्रयत्न करने लगे, उतना ही उसका पकड़ना उनसे निचे कठिन होदि गया । इस समय सिधे मीन ही तौतियाके दन्में न घे खोरखु पोर बनकारोमिने मो बहुरते था कर उनसे दण्डको बड़ाने लगे ।

तौतियाको न पकड़ सकनेका प्रधान कारण यह था, कि बड़ दरिद्रोंका पिता पोर बिपयका एकमात्र पायय दाता था । तौतिया जिस पामने कुट करता लगी गौबर्ध दरिद्रोंको सबके सामने समान भावसे बटयारा कर देता था ।

बराह ब्राह्मण पोर प्यो, ये तीन तो तौतियाके लिये बिभीपक्षसे दोयो होने पर भी बड़ लगका बिमां तरह पण्डित न करता था ।

जिन गुर्बोके कारण उस मदेशको दरिद्र मजामखुजां तौतियाको विभीपक्षसे धार करतो थे, ये गुण वसने डाकू होनेके बाद नहीं मांघे थे । बचपनसे ही उनके हृदयपर पर उन गुणोका पय्य पड़ा हुआ था ।

तौतियाको पकड़नेके लिये भवसे प्य राधि राधि घपे पय्य करने लगे, जोखबर सभाराजक बहुतेने विध्वंस कामं चारो पोर सुदण्ड पुनिस, कोई मो ज्ञात्रतय न हो सके । तौतिया इसो तरह कामो पहरको राखने पोर कामो जोनकर राखने का कर सुडोका दमन करने लगा ।

इसी समय तौतियाका दाहिना बाज टौतिया पकड़ा गया पोर इमेयाके लिये उसे कार्मपानीको सजा हुई । तौतियाने बहुत जकोतो करके न माकूम का पाच कर कुछ टिनीके लिये सोप्यमूर्ति कारण कर लो ।

तौतियाने इन २ वर्षोंमें इतनी जकोतियां की थीं, कि जिसका मन न पसन्दा है । उनसे द्वारा यथाक्रमने बड़ो बड़ा ४०० पण्डित कौमियां हुई थीं । कामी पुनिसके सामने पोर कामो पुनिसको प्रचारित करके ये कौमियां को मरे थीं । उन समय तौतियाने कुछ पुनिस-काम कारिबोको नाक काट लो थी । इस समय तौतियाको

उम्र ४५ वर्ष की थी, इस तरह असमयमें बहुत परियम, शारीरिक अनेक अत्याचार आदिमें उसका शरीर कुछ दुर्बल हो गया तथा लगातार ११ वर्ष तक पुलिस, पल्टन, मालगुजार आदिके साथ युद्ध कर और हजारों घर जला कर वह बहुत ही ह्लान्त हो गया। अब दस्यु पति ताँतिया इन सबको छोड़ कर गवर्मेण्टमें काम पानेके उपाय भीचने लगा। इसके लिये आखिर उसे बहुतोंके साथ मित्रता करनी पड़ी। उसकी तरफसे गवर्मेण्टको दो एक बात कहनेके लिये बहुतोंको उसने रुपये भी दिये।

पहले इसकी हिम्मत यहाँ तक बढ़ी हुई थी, कि जब उसे गरीबोंके कष्ट निवारण करनेको इच्छा होती और महजमें कहींसे द्रव्य-संग्रहका उपाय न देखता, तब चलते गाड़ोंमें चढ़ कर बाहुबलसे गाड़ीका दरवाजा खोल डालता था। इस तरह जी० आइ० पो० इन गाड़ोंमें चढ़ कर चावल, गेहूँ, चना आदिके बोरे नोचे डाल देता और बादमें उस गाड़ीसे उतर कर उन चीजोंमें गरीबोंका अभाव दूर करता था। किन्तु अब उस शक्तिका हानि हो गया, दृष्टिशक्ति भी घट गई वह तेज, वह उद्यम अब उसमें कुछ भी नहीं रहा।

ताँतियानि मेजर ईश्वरोप्रसाद सो० आइ० ई०से-अङ्गरेजोंसे कामा मागनेके लिये मित्रता को। ईश्वरो-प्रसादने एक दिन ताँतियाको निमन्त्रण दिया। ताँतिया जब इनके सभान पर निमन्त्रण रचाके लिये उपस्थित हुआ, तब इन्हींके पहलुगन्धसे पुलिसके द्वारा पकड़ा गया। इस पर ताँतियाके असुखर पुलिसमें बहुत कुछ लडें, पर किसी तरह भी हतकार्य न हो सके।

“ताँतिया पकड़ा गया है” इस संवादकी पा कर अङ्गरेज गवर्मेण्टके प्रानन्टको सोमा न रहो। पुलिस-कर्मचारी मात्र ही अपने कष्टका लाघव समझ कर प्रानन्टसे नाचने लगे। ईश्वरोप्रसादने ताँतियाकी विचारार्थ अङ्गरेजोंके पास भेज दिया। किन्तु बहुतसे लोग मन्देह करने लगे, कि वह असली ताँतिया है या और कोई। अन्तमें अनेक प्रयासों द्वारा निर्णय ही गया कि, वही असली ताँतिया है।

अब ताँतियाका विचार होने लगा। ताँतियाके ४ हजारों अभियोग उपस्थित हुए। ताँतियाके

विचारके दिन अदालत नौगीको भेडमें ठमाठम भर गड़े। ताँतियाकी जो कुछ पूछा गया, उसने सबका सच स्वीकार किया था। ताँतियाके लिए फाँसीका हुकम हुआ।

ताँतियाको मजबूतीमें बाँध कर जञ्जलपुरवाँ जेलके भीतर पहुँचाया गया। बहुतसे लोग ताँतियाके लिये रोने लगे। ताँतिया राजदण्डमें दण्डित हो हमेशाके लिये इस लोकमें विदा हो गया।

ताँतो (हि० स्त्री०) १ पंक्ति, कतार। २ बालधन्ने, औलाद। (पु०) = चुन्नाहा।

ताँवा (हि० पु०) नाम दूधे।

ताँवी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका तविका छोटा वर तन जिमका मुँह चाटा रहता है। २ तविकी काँची।

ताँविकारी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका नाल रत्न।

ताँविल (पु०) जञ्जप, कटुया।

ताँवर (हि० स्त्री०) १ ताप, ज्वर, ह्रारत। २ जूडो। ३ सूच्छा, पकाड।

ताँवरी (हि० स्त्री०) ताँवर देखो।

ताक (अ पु०) १ चीज वस्तु रचनेके लिये टोवारमें बना हुआ गट्टा, आला, ताग्रा। (वि०) २ विषम, जो मर्यामें बराबर न हो। ३ अहितय, अनुपम।

ताक (हि० स्त्री०) १ अवलोकन, ताकनेकी क्रिया। २ अनुमन्यान, खोज, तलाश। ३ किसी अवसरकी प्रतीक्षा, घात, दाँव। ४ स्थिरदर्प, टकटकी।

ताकचुपत (फा० पु०) एक प्रकारका जुआ। इसमें एक खिलाडो सुझीके भीतर कुछ कीड़ियाँ वा इमी प्रकारकी दूसरी वस्तुएँ ले कर दूसरेकी पकता है कि वस्तुओंकी मर्या सम है या विषम। यदि उत्तरदाता ठोक बतला देता है, तो वह जीत जाता है।

ताक भोक (हि० स्त्री०) १ कुछ प्रयत्नपूर्वक दृष्टिपात, उडर उडर कर बारबार देखनेकी क्रिया। २ छिप कर देखनेकी क्रिया। ३ निरीक्षण, देखभाल। ४ अन्वेषण, तलाश, खोज।

ताकत (अ० स्त्री०) बल, शक्ति, जोर। २ सामर्थ्य।

ताकतवर (फा० वि०) १ बलवान्, बलिष्ठ। २ सामर्थ्यवान्, जिसे बल ही।

ताकना ( हि० लि० ) १ विचारना चाटना लोचना ।  
२ एक इष्टिमें देखना टकटकी लगाना । ३ ताकना  
लक्षणा । ४ पक्षमें देख कर स्थिर करना, तजबीज  
करना । ५ इष्टि रखना रखवान्नी करना ।

ताकरीलिवि—तामिपानमें यमुना नदीके किनारे तकके  
प्रदेशमें जो जो पत्थर प्रचलित हैं, उनका नाम है  
ताकरी । ताकरी पत्थर जागरी लिविसे समान नहीं,  
बल्कि नाबरीका रूपमें ही मकता है । मन्दात तपक  
वा ताकरीमें इन पत्थरोंका पत्थरी पत्थर प्रचलन किया है,  
इलीविये इनके नामात्तुमार इनका ताकरी नाम पडा  
है । सिन्धु नदीके पश्चिममें तरक घोर मततु नदीके पूर्व  
भागमें तथा आग्नीय घोर काङ्गडाके काङ्गडामें इस लिवि-  
का प्रचलन है । आग्नीय घोर काङ्गडाके गिन्नालीको  
घोर सिन्धीमें यही पत्थर देखनेमें पाते हैं । काम्बोराका  
राजतरङ्गिणी नामक ग्रन्थ भी ताकरी लिविमें लिखा गया  
है । यद्युक्तकाल घोर गिन्नालीके बीच २६ स्थानोंमें यह  
लिवि होय पड़तो है । इनमें कोई कोई स्थान ताकरी  
लुण्ठ घोर लुण्ठ नामसे परिचित है ।

इस लिविमें विद्येयता इतनी है, कि जलवर्ष ब्यङ्गन-  
के माघ वर्षी भी सञ्चुक्त नहीं होता, पृथक् लिखना  
पड़ता है । इस लिविमें सप्ताहोपका पत्थर इनके  
प्रचलित पत्थरोंमें समान है । यह मन्दातमें लिवि का  
प्रकृति है । इनमें लिवि 'घ' ब्यङ्गनवर्षके माघ सञ्चुक्त  
विद्या जाता है ।

ताकरी—मतारा मासगाँवके राईके दक्षिणमें प्रचलित  
एक गच्छामास । यह वैठ नामक स्थानमें १० मील उत्तर  
पूर्व तथा कराङ्गुने १६ मील दक्षिण-पश्चिममें पड़ता है ।  
मताराके राईके प्रायः १ मील उत्तरमें एक झोटा पहाड़  
देखनेमें पाता है जो दक्षिण-पूर्वकी घोर बिन्दूत  
है । इस पहाड़में एक पाषाण रमकोय गुहा है । इसी  
गुहाके लिये ताकरी पाम बहुत समझर हो गया है ।  
प्रायः १ मील पहाड़के उत्तर कुछ दूर जानेसे उन्नत गुहाके  
पास पहुँच जाते हैं । गुहाके पश्चिम दिशाकी पाम तोय  
भूमि प्रायः २० गज पर्यन्त प्रसृत है । इसमें रमकीका  
रमकोय मन्दिर दक्षिण पूर्व कोणमें प्रतिष्ठित है । उक्त  
गुहा ३० फुट लम्बी घोर १० फुट गहरी है । इनके

मध्य एक पायताकार सरोवर है, जिसका जल बहुत  
परिष्कार घोर सारव्यजनक है । पूर्वकी घोर उक्त तक  
बहुतनी सीधियाँ पाई गई हैं । ताकाय देखनेमें बहुत  
सुन्दर लगता है । इसका परिमाण ११ × ११ है ।  
गुहाके पश्चिम दिशामें एक महादेवका मन्दिर है, जिस  
में शिवलिङ्ग स्थापित है । मन्दिर प्राणलिकासा प्रतीत  
होता है । इसका परिमाण २१ × १० फुट है । पायता  
कार, मनाकार घोर पटकोबाकार इन तीन प्रकारके  
६ फुट लम्बे प्दार्थोंमें मन्दिरका दाक्षान सुरचित है ।  
इनकी उक्त प्रसन्नमय है । जिस कोठरीमें शिवलिङ्ग प्रति  
ष्ठित है, वह समचतुर्भुजाकार है । मन्दिरके शिखर  
पर एक कल्पन दीव्य पड़ता है । कहा जाता है, कि  
वैशम्पैके पञ्चम शिकोडोके निकटवर्ती पन्धरके राम  
रथ मगवर्षमें १०१० ई०में उक्त मन्दिर निर्मात्र किया  
है । माघ मासकी कृष्ण चतुर्दशीमें यहाँ प्रतिवर्ष मीना  
लगता है । यद्युक्तके राविकान्नी कामक-रवोको प्रति-  
मूर्त्तियोंको पानको पर चढ़ा कर याता कराते हैं ।

ताडि ( पा० पञ्च० ) इसलिये कि, जिसमें ।

ताडोद ( प० पञ्जी० ) किरीको सावधान करके दो हुई  
प्राणा वा पशुरोष ।

ताडानो ( हि० ली० ) एक वीधिका नाम ।

ताडक ( प० लि० ) तपक सम्बन्धीय ।

ताडक ( प० पु० पञ्जी० ) तप्योपेक्ष्य तपन-व्य तप्यो  
पपक । तपका पपय बढईकी मत्तान ।

ताडयिज ( स० लि० ) तपयिजोप्रियजनेप्य तपयिज  
पक । तपयिजाज्ञात जो तपयिजा नगरीमें लयक  
पुया हो, या जो तपयिजा नगरीके प्राया हो ।

ताड्य ( स० पु० पञ्जी० ) तप्योप्यता तप्य-प्य । शिदि  
२०१५ । या १११११ । तपकका वपता, बढईको मत्तान ।

ताड्यो ( प० लि० ) जिसको दोनों पक्षों में मिश्र मिश्र रह  
या उड़की हो ।

ताड ( हि० पु० ) तापा शक्ति ।

ताडक ( हि० पञ्जी० ) तप्योको वनी हुई एक प्रकारको  
सीढ़ी को लडाकी पर चढ़नेके लिये लगी रहती है ।

तामड़ो ( हि० पञ्जी० ) १ कर्ममें पढ़नेका एक गणना कर  
वनी काको । २ लक्ष्मण, कर्ममें पढ़नेका र मोन  
होरा ।



तांगना ( हि० किं० ) सुईमें तांगा डाल कर सिलाई करना ।

तांगपहनी ( हि० स्त्री० ) एक पतली लकड़ी । इसका एक सिरा नोकदार और दूसरा चिपटा होता है ।

तांगपाट ( हि० पु० ) रेशमके तांगीमें मोनीके तीन जंतर डाल कर बनाया हुआ एक प्रकारका गहना । यह केवल विवाहमें काम आता है ।

तांगा ( हि० पु० ) १ सूत, डोरा, धागा । २ प्रति मनुष्यके हिसाबमें लगनीवाला एक कर ।

ताड़—१ युक्तप्रदेशके अन्तर्गत डेरा इस्माइलखी जिलेका उपविभाग और तहसील । यह अक्षा० ३२' और ३२' ३०" ७० तथा देशा० ७०' ४' और ७०' ४३' पूर्वमें अवस्थित है । भूपरिमाण ५७२ वर्ग मील है । इसके पश्चिममें वजोरिस्तान पड़ता है । यह तहसील पड़ले एक प्रकारकी खाद्योन्नत थी । यहाँके नवाब दोलत खिल बंशके कतिखिल सम्प्रदायभुक्त थे । अन्तिम नवाबका नाम शाह नवाज था, जिनको मृत्यु १८८२ ई०में हुई । पीछे उनका लड़के सरवारखी नवाब बने । ये बड़े शूरवीर निकले । उन्होंने अपना सारा समय राज्यकी सुधारने तथा अपने जातिको उन्नत बनानेमें लगा दिया था । सिख लोगोंने जब डेरा इस्माइलखी हस्तगत कर लिया, तब सरवारखीको उनको अधीनता स्वीकार करने पड़ी और वे वार्षिक १२००० रु० उन्हें देनेकी राजी हुए । सिखकी गोठो जब धीरे धीरे जमने लगे, तब वार्षिक कर बढ़ा कर ४०००० रु० कर दिया गया । सरवारखीके मरने पर उनके लड़के अलादादखी राज्यधिकारी हुए । इस समय सिखका एक लाख रुपया पावना उनके यहाँ हो गया था । अलादादखीमें ऐसी शक्ति नहीं थी कि उक्त ऋणका परिशोध करे, अतः वे पहाड़ों पर भाग कर मच्छूदकी शरणमें पहुँचे । अन्तमें यह तहसील सिख सरदार नवनिहालसिंहकी जागोरके रूपमें दे दी गई । कुछ काल तक यह तहसील मालिक फतेहखी तिवानाके अधीन थी, पीछे सिख सरदार दोवान लखीमलके लड़के दौलत रायने इस पर अपना अधिकार जमाया । १८४६ ई०में अलादादके लड़के शाह नवाजखीने अंगरेज प्रतिनिधि एडवर्डकी शरण ली । दयापरवश एडवर्डने (पीछे

सर दरवर्ट) उन्हें ताड़का शासक बना दिया । साथ साथ पूरा स्वाधीनता भी दे दी । किन्तु ऐसी स्थिति सदा एकसो न रही । यहाँकी जनसंख्या लगभग ४८४६७ है । इसमें एक शहर और ७८ ग्राम लगते हैं ।

२ उक्त तहसीलका एक शहर । यह अक्षा० ३२' १३' ७०" और देशा० ७०' ३२' ५०"के मध्य अवस्थित है । लोकसंख्या प्रायः ४४०२ है । यह शहर ताड़के प्रथम नवाब कतलखीसे बनाया गया है । समूचा शहर मटोकी दीवारमें घिरा हुआ है । दीवारकी ऊँचाई १२ फुट और चौड़ाई ७ फुट है । बीच बीचमें दो एक फाटक भी लगे हुए हैं, लेकिन वे सब अभी भग्नावस्थामें पड़े हैं । यहाँ भग्न मटोका दुर्ग भी देखनेमें आता है । शहरसे अनाज, कपड़े, तमाकू तथा और दूसरी दूसरी चीजोंको रफ्तानो होता है । पञ्जाबके प्रतिनिधि सर हेनरी डुरन्दको इसी शहरमें मृत्यु हुई थी ।

ताच्छोलिक (सं० पु०) तच्छोलार्थे विहितः उक्त्वा । तच्छोलार्थे विहित-प्रत्यय ।

ताच्छोल्य (सं० क्लो०) तत्क्षीयं यस्य तस्य भावः यज् । तच्छोलता, कसो कामको लगातार करनेकी क्रिया ।

ताज (अ० पु०) १ राजसुकुट, बादशाहकी टोपी । २ कलगी, तुरी । ३ मोर, मुर्गा आदि चिड़ियोंके सिर परकी चोटी, शिखा । ४ दीवारकी कंगनी या छज्जा । ५ मकानके सिर पर शोभाके लिये बनाई जानेकी तुरी । ६ गंजोफके एक रंगका नाम । ७ आगरेका ताजमहल ।

ताज—मुसलमान जातिकी एक स्त्री कवि । इनके वंश, स्थान इत्यादिका कोई ठोक पता नहीं लगा । शिवसिंह सरोजमें इनका सम्बत् १६५२ कहा गया है और मुन्गो देवोप्रसादने सम्बत् १७०० के लगभग इनका समय बतलाया है । इनकी सभी कविताएँ सरस और मनोहर हैं । श्रीकृष्णचन्द्रको भक्तिमें भी ये खूब रंगी थीं । इसका परिचय इनकी कवितासे ही भूलक्षता है । जान पड़ता है, कि ये पञ्जाबके तरफकी होंगी, क्योंकि इनकी भाषा पञ्जाबी और खड़ी बोली मियित थी । यों तो इनके बनाये हुए अनेक छन्द विद्यमान हैं पर उदाहरणार्थ यहाँ एकही दिया जाता है—

“वेद को छोड़कर सब दूसरे रीतियाँ

बड़ा निरुपद्रव शरीरका कट्टू देवतेसे स्थाता है।

यात्रा नके छोड़े गात्र मोली देव छोड़े काम

मोड़े सब कुम्भक सुकुम्भ छीच बाण है ॥

सुख बन धारे बरबन रकधारे टाक

फित श्रित धारे त्रेम प्रीति कर बाण है।

सम्बन्ध प्यसा दिन बंधये बन्धन

बह इन्द्रावधारा कृष्ण श्रावण इयात है ॥”

ताम्रक ( फा० पु० ) १ ईरानोंको एक जाति। बुखारकि पानामि और बदाकसानमि से पश्चिम देखे जाति हैं। इनमिसे बहुतमि खोबन, खिवा, खोमतातार और चकमा मिश्रणमि रहति हैं।

ताम्रक मन्धकी उत्पत्तिका निश्चय ज्ञाना अतोम कठिन है। उन्नतक ज्वारा पक्षमाग ब्रह्मई पोर सुखं प्राहित मदेमोमि को लोग प्साभोदयमि रहति है साधारणतः ताम्रक मन्ध कर्मीके लिए प्रयोग किया जाता है। समस्त मदेमोमि सुरबो, सुखं ब्रह्मई पोर विसुधि भावा व्यञ्जित होतो है मतमत्र यह कि फारसी भी प्रचलित है। अफगानिस्तान पोर तुर्किस्तानमि विन पश्चिमवर्तियों की जातितक भावा फारसी है, वे ताम्रक पोर पारसिकन इन दोनों नामोंसे परिचित हैं। पारस्य देशमि ताम्रक पोर इजियत में दो विपरोत चर्चबोचक स श्रायं प्रचलित हैं। बर्दा चर्चत का ताम्रकमि महरबायोका बोध न हो कर कपचोका बोध होता है। बुखारमि एक जाति सत् पक्षमामिस्तानमि देहान और विसुधिस्तानमि दुश्कारकि नामसे प्रसिद्ध है। काबुल लदोब निकटवर्ती ईरानो मोमो को काबुली कहते हैं। सिद्धान्तके पश्चिमक लोग ताम्रक है। वे पू पश्चीं ओ पश्चिमि रहति पोर मस्य तथा पचीं पकड़ कर जौवनधारक करति हैं। तुर्कं पाहलमकके पक्षसेवे ही बदाकसानमि ताम्रकोका वास था। बर्दावे ईरानो पवत, उपमका पोर उप्यामं परिधेहित पक्षीमि वास करति है। बदाकसानके ताम्रक चित्रकक मोमो कातरक क्वसूरत नहीं होमि। इनको पयाक चत्रकको लैलो है।

दुषारावे ताम्रक बीन अरबानोत काकने बहो रहति पाये है। वे पक्षी चम्य बर्मावकको दी। खिवा

को पक्षी यताम्बोके शिपभागमि इनको खबरन सुकलमान बनाया गया था। बुखारमि ताम्रक चम्बे पोर पूवसूरत तथा सनक पाखि पोर शक मो प्याक बाजे हैं। ये बड़े करपोक, मोमो मिथामावारी पोर विम्यासबातक होति हैं।

कोई कोई कहति है कि ‘ताम्र’ मन्धके ‘ताम्रक मन्धको उत्पत्ति हुई है। ताम्र मन्धका पक्ष’ है—पश्चिम पूरकका सुकुट। किन्तु ताम्रक लोग सत्त प्याक्या को नहीं मानति।

ताम्रक लोग प्याशातर खितोबारो पोर रोजमाने हो लमि रहति हैं, सम्बन्ध पोर मिथको पानोपगावे मो ये लदाबोन नहीं हैं। इकीं लोकोके प्रयत्नके मन्ध पयियाका बुखारा मध्यता पोर उपतिका वेन्दकान हो गया है। बहुत दिनमि ये मावधिक लकतिं लिए मसिद्ध हैं पोर अत्यन्त विज्ञानाया द्वारा प्रयोक्त किमि पर मो ये लको मन्धनाको मिथा देखे रहे हैं। मन्ध-पयियाके पश्चिमोय मन्धव्य व्यक्ति ताम्रकक मसि हैं। बुखारा पोर जिवाके प्रधान प्रधान क्वचि मत्र ताम्रक हैं।

ताम्रक पोर कर्त लोमिमि मरोर-यत बहुत बंपम्य देखनेमि पाता है। मन्धरो काइकका क्वचना है कि पार पिक क्लोतदासिर्वोके साक सत् सुबयोके विवाहको प्रया प्रचलित रहनेके कारण पत लीगाको पाहति प्यर्ब हो गई है।

मन्ध पयियाके बालक-उन्नतमिता समी क्वमिता पोर क्विचो पक्षता पसन्द करति हैं। पक्षीका साइजक मी मंदि मिक पनदातेमि मय हुआ है। क्वालय सुहा ईरानमि बहुतसे धार्मिक ग्रन्थ लिखे हैं। किन्तु समी दुर्बोच हैं—साधारण लोग लन सुप्तको का विपुल ही लको समझ पाते। ताम्रकोके सुप्तक लिखन समी उदात्त विदेशीय क्वचिमि ठसे हुए हैं।

उन्नतक, तुर्कं पोर विरचित्र लोग पक्षक सन्नेत मिय हैं। गली समय ये लोग श्दु रानिकोको पकड़ रहते हैं। उन्नतकोकी क्वमितायाका मूलमात्र चरको पक्षमा प्याकोसे निदा गया है, राना जान पक्षता है। इनमें क्वपुर्वै ल तो विरको की क्वमितामि पाया जाता है।

तातार लोग वीरल-गाया रचना और उसको गाना  
श्रुत पसन्द करते हैं।

२ यवनाचार्य का बनाया हुआ ज्योतिषका एक  
ग्रन्थ। पहले यह ग्रन्थ शरवो और फारसीमें था। बाद  
राजा समरसिंह नोलकण्ठ आदिमें यह संस्कृतमें बनाया  
गया। ताजिक देखो।

ताजगी (फा० स्त्रो०) १ शुष्कताका अभाव, हरापन,  
ताजापन। २ प्रफुल्लित, स्वस्थता। ३ नयापन।

ताज्ज ( सं० त्रि० ) तन्ज सङ्कोचे आदिद्विर्ननौषी। शोष।

ताजदार (फा० वि०) १ ताजकी आकारका। ( पु० ) २  
ताज पहननेवाला बादशाह।

ताजइह ( वै० पु० ) कोविदारइह, कचनारका पेड़।

ताजन (फा० पु०) चाबुक, कौड़ा।

ताजना ( हि० पु० ) ताजन देखो।

ताजपराकाठि—बम्बई विभागके वोउड और गवार अञ्चल-  
वामी एक जाति।

ताजपुर—१ दरभङ्गा जिलेका एक उपविभाग। यह पहले  
त्रिहुतके अन्तर्गत था। १८७५ ई०को १ली जनचरोमें दर-  
भङ्गा, मधुवनी और ताजपुर इन तीन मज्जुमें की ली कर  
दरभङ्गा जिला संगठित हुआ है। १८६७ ई०को इस  
स्थानमें प्रथम महकुमा स्थापित हुआ था। यह प्रचा०  
२५'२८'१५" और २६'२'७" तथा देशा० ८५'३'६" और  
८६'४'०"में अवस्थित है। भूपरिमाण ७६४ वर्गमील  
है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, कोल प्रभृति यहाँ वास  
करते हैं। हिन्दू को मंत्र्या सबसे अधिक है।

ताजपुर महकुममें ३ थाना, एक टोवानी और  
फौजदारो अदालत है।

२ उक्त ताजपुर महकुमेका प्रधान गहर। यह प्रचा०  
२५'५१'१३" उ० और देशा० ८५'४३'५०"के मध्य सुज-  
फ्फरपुरसे २४ मील दूर दलसिद्धसगायके रास्ते पर अव-  
स्थित है। यहाँ एक स्कूल, दातय्य औपशालय और  
विचारालय है। शहरके नोचे वनन नदी प्रवाहित है।

ताजपुर—पुर्णिधा जिलेका एक परगना। इस परगनेमें  
धान, तिल, सरसों, आलू इत्यादि बहुत उपजते हैं

परगनेके किसे किसे स्थानमें ४६'से ७६' हायका  
कटा चलता है। साधारणतः ४ से ५ हायका कटा है।

विशेष प्रचलित है। प्रजाकी प्रति धीरेमें एक रुपया  
मानगुजारी देनी पड़ती है।

इस परगनेमें ४४ जमींदारो लगते हैं। यहाँका कर  
प्रायः ६८८४२ रु० है।

ताजपुर—१ दिनाजपुर जिलेका एक परगना। यह जिलेके  
दक्षिण पश्चिम कोणमें अवस्थित है। इस प्रदेशको जमोन-  
ममल नही है, कहीं जँचो और कहीं नौचो है तथा  
दक्षिण पश्चिमको शोर दानू है। यह प्रदेश ममुद्रप्रदेशमें  
१५० फुट ऊँचा है। थोड़े परिचयमें ही खेतमें अच्छी  
फसलउपजती है। कहीं कहीं घासको जमोन और  
जलाभूमि है। वर्षाकालमें परगनेको सभी नदियोंका जल  
बहुत बढ़ जाता है जिससे मधुयाम जनमय हो जाता  
है।

धान, ईश, तिल, सरसों, उरु इत्यादि यहाँके प्रधान  
उत्पन्न द्रव्य हैं। यामके निकटवर्त जमोनमें तमाजू बहुत  
उपजता है। पहले यहाँ बहुतसा नोनको जमोन था।

ताजपुर परगनेके सभी स्थानमें मकानो पाई जाते  
हैं। धोवर मकानो पक्ष कर राइगञ्ज और निकटवर्ती  
वाजारमें वचते हैं।

१८७४ ई०के दुर्भिक्षकालमें दुर्भिक्ष-प्रपोंडित  
समुष्योंके थोड़े खर्चसे परगनेमें कई एक राई तैयार  
हो गई हैं।

यहाँकी जमीन कुछ कुछ धूसरवर्ण तथा बालू-  
मिलो हुई कोचडसी है।

इस परगनेका जनजायु स्वास्थ्यकर नहीं है। वर्षाके  
बाद हो ज्वरका प्रकोप आरम्भ होता है, जिससे अनेक  
लोगोंको मृत्यु हो जाती है। ग्रीष्मकालमें दिनके समय  
अत्यन्त गरमी और रातके समय ठण्डा मालूम पड़ने  
है। बहुत दिनों तक ज्वरके रङ्ग जानसे वात-रोग हो  
जाता है। अतिसार और कुछ रोगका प्रकोप भी यहाँ  
क्रम नहीं है।

२ दिनाजपुर जिलेके विजयनगर परगनेके अधीन एक  
ग्राम। यह ग्राम अत्यन्त प्राधुनिक नहीं है। मुसलमानोंके  
समयमें यह स्थान विशेष प्रसिद्ध था। उस समय  
ताजपुर एक प्रधान सेन्यावासके रूपमें गिना जाता था

धो। पुर्वि या तथा दिनप्रपुरके सौमान्य प्रदेयमें प्रथ  
 न्मित था। धमो इस स्थानका नाम सरस्वार ताजपुर  
 रखा गया है। ताजपुरके पूर्वभागमें ही प्रथम सुख  
 मान-राजधानी देखकोट नगर है। बहुरीनि विद्रोहो  
 को कर ताजपुरमें दिनाको कठिण विनाके सब कर ईक  
 मुद्र किये। १७७० ई०में प्रदेय यममें एकके अधीनमें  
 ताजपुर विनाका मन्हार किया गया। पक्षी यहाँ एक  
 जलो को, जो १७७२ ई०में यहाँके उठा दी गई है।  
 नगरमें ताजपुर तक एक बड़का पथी बर है।

ताजपुर—बुधवदिमके विजयोर जिलेके अन्तर्गत धामपुर  
 तहसील का एक मठ है। यह पचा० २८ १० ७० और  
 दिशा० ७८ २८ ५० पर विजयोर शहरसे २० मील  
 दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। सोलम क्या प्राय १०१२  
 है। तागाय शोय परिवारका भाय कोनेके पारक यह  
 मठ प्रसिद्ध है। उक्त मठके मठालीमें ईसाईधर्म प्रथ  
 म स्थापन किया है। १८वीं शताब्दीमें यह राज्ज तथा अंग्रेजों  
 राजाके श्रेष्ठ भाग था। १८३७ ई० के विपत्तोंके विद्रोह  
 के समय यहाँके राजा बागो न हुए थे। वर्तमान राजा  
 शोय अक्षयप्रसाद-सभाके सदस्य है। यहाँ एक  
 पोषधामधय धोर दो एक है।

ताजपोयो ( फा० जो ) यह उक्त मठो राजसुकुट शरक  
 करनी या राजसिहासन पर बैठनेके समय किया  
 जाता है।

ताजबायको—एक प्रसिद्ध ताजका। इस बाबकीका दूसरा  
 नाम ताजबारो भी है। बहुरी विमानके विनापुर मठ  
 से यन्त्रिध धोर नगरमें मन्हारसे १०० गज पूर्व बाहिष्क  
 केन्द्रके समोर्धमें अवस्थित है। इसके दक्षिणमें श्रगवा मठ  
 है और प्रदेय-शर पर एक प्रकाण्ड मन्हार है जिसेका  
 द्वय देखने को बनता है।

१६२० ई०में ताजराजोके उपाध्याय ईशान्विम राजा  
 के अर्पणत मासिक मन्त्रमें यह विष्वात बाबकी कोद  
 बाई धो। इसके विपत्तमें दन्तकहाणी इन प्रकार प्रकृत  
 है—मासिक मन्त्र सुकतान मन्त्रमूदके अन्ततम मन्त्रो  
 से। सुकतान शिवोकी पूजकोकोकी पूज तारोय करती  
 से। एक दिन सुकतानने बन्नाको दरबारमें लानेके शिबे  
 मासिक मन्त्रके कहा। बुद्ध धारी को मासिक मोदका

सा रक गया। उन्के सामुम पडा कि मायद उन्के  
 रात्रिका कोई पनष्ट किया है जिसके उन पर अविशेष  
 बनाया जायगा। बन्नाको सुकतानके सामने लानेमें उन्के  
 माको विपद्को पापदा हुई। २५ विपद्ने बन्नेके निये  
 ने पक्षी को चपनी निर्दोषिताके अनेक प्रमाय धपद कर  
 बन्नाको साने चम किये। जब वे बहुतमो रमचियेके  
 गाब बन्नाको से कर दरबारमें पहुँचे तब उन्के सामुम  
 पडा कि उन्के शब्द दृष्टको पाया हुई है। इस पर  
 मानिकने धोरन अर्पण पूर्वक श्रुको प्रमाकीको राजाके  
 सामने धिय किया। सुकतानने जब देखा कि मानिकके  
 प्रति बहुत प्रमाय विचार किया गया है, तब वे बहुत  
 कम्पित हुए। बाट सुकतानने मानिकके कहा, कि तुम्हारा  
 जो जो चाहे सो भोगो। इस पर मानिकने बहुत विनीत  
 अर्पण कहा 'यदि पाप मुक्त पर श्रुग है तो चपना  
 नाम विष्णुशरकोब रत्नके किये मैं एक कोर्ति स्थापन  
 करना चाहता हूँ। मासिकका अमोह विद करनेके  
 शिबे सुकतानने उपश्रुक्त धन दे दिया। उसी धनसे ताज  
 बाबकी कोदबाई गई। बाबकीको यहराई १२ पुत्र है।  
 ताजकोबी (बा० जो०) शाहजहानको अत्यन्त प्यारो धोर  
 प्रसिद्ध शैलम सुमताजमन्त्र। इसीके निये धाममें ताज  
 मठ नामका मन्त्र बनाया गया।

ताजमठ (फा० पु०) धामरा शहरमें दसुनाके किनारे पर  
 कृत अमरप्रसिद्ध अमात्रि मन्दिर। कानोय लोय इसे  
 राजा या ताजकोको राजा कहती है। एशियाके धार  
 पाकर्यकक पदाकीमें इसकी भी बिलनी होती है।

बादमाह शाहजहानकी चपनी मियतमा पको सुमताज  
 मन्त्रके अरपण यह श्रम्य धर्म बनवाया था। सुम  
 ताजका यथा नाम का अर्थ मन्त्र-बानु शैलम या नवान  
 फासिदाविसम। शाहजहान् इनको अर्पण प्राचीनके मी ल्यादा  
 प्यार करती से। एकदिन वेधमने अत्र देखा कि उनके  
 गर्मक बाबक रोता है। उन्के बादमाहको हुना कर  
 कहा, 'प्रियतम। मैं गर्मक बाबकका रोना सुन रहा हूँ।  
 पिशा रोना कसो शिबोने नहीं हुना। मुझे शिष्य माधुम  
 होता है कि मैं प्रथ बन्तो नहीं। शिष्यु पापसे भरो  
 रतमो प्राङ्गना है, कि भरी लय के बाद पाप शिबोका  
 पनियक न करे। पाप भरे पुनीको दो रात्राधिकारो

बनावे । और एक पार्थना है, आपने कहा था, कि मेरी कब्रके ऊपर एक हथियं बनवा देंगे । आपका यह वायदा भी पूरा होना चाहिये ।" वेगमकी बात मञ्जी निकली, प्रसव होनेके बाद, १६३१ ई०में उनको मृत्यु हो गई । शाहजहान्नी भी प्रियतमाके अन्तिम अनुरोधकी रक्षा की । उन्होंने फिर अन्व जिसे भी रसगोका पाणिपक्षण न किया अथवा ऐसा ममके, कि फिर उनके कोई स्तान होनेकी बात नहीं सुननेसे आई ।

प्रियतरा पत्नीकी मृत्युके बाद ही शाहजहान्नी ताजमहल बनवाना शुरू कर दिया । ऐसा सुना जाता है कि, उस समय भारतवर्षमें देगी और चिट्ठीकी जितने भी सुख सुख गिन्नी और स्वपति मौजूद थे, सभीने इस महाकार्यमें साथ दिया था ।

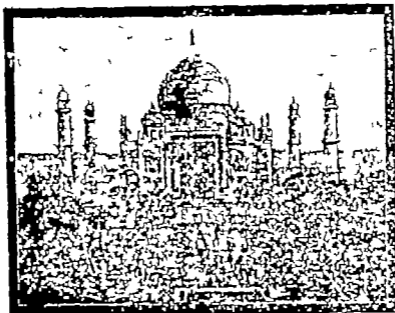
वसुनाके किनारे प्रसिद्ध अकबरवाड । वर्तमान आगरा ) नगरमें ताजमहल बनना शुरू हो गया । प्रसिद्ध अकबरकी टाभनीयरीने इस अनुपम अष्टानिकाकी प्रारम्भ और सम्पूर्ण होति देखा है । उस समय वर्तमान कालकी अपेक्षा मालममाना और मजदूरी इतने ज्यादा मन्गी होने पर भी ३१७४००२४) रुपये व्यय और लगातार ३० वर्ष परिश्रम करनेके बाद यह महाकार्य समाप्त हुआ था ।

यह महल १८ फुट ऊँचे और ३१६ फुट अंतमर्ध-मण्डित ठोक चतुरस्र चतुरे पर प्रतिष्ठित है । इसके चारो कोने १३३ फुट ऊँचे अत्यन्त रसगीय भारतभरमें अतुलनीय चार मोनारोंसे सुगोभित हैं । उक्त सफेद संगमरमरके चतुरेके बीचमें १८६ फुट चतुरस्र भूमि पर जगत्प्रसिद्ध मसावि-मन्दिर अवस्थित है । ठोक बीचमें ५८ फुट विस्तृत और ८० फुट ऊँचो एक प्रधान गुम्बज है । इस गुम्बजके भीतर लदाव पर सफेद संगमरमरकी जालियाँ लगी हुई हैं । ऐसी खूबसूरत और गिन्नी-पुष्प-सय जालियाँ वा घवनिका संसार भरमें और कहीं भी नहीं है । इस गुम्बजके भीतर ठोक बीचमें वेगम मुमताजमहलकी कब्र और उसके वगलमें वाटशाह शाहजहान्नीकी कब्र है ।

इस महागृहके प्रत्येक कोने पर गुम्बजकी आकृतिके २६ फुट ८ इंच आयतनके दुमजले गृह बने हैं । इसमेंसे

गृहान्तरमें जाने आनेके लिए बहुतसे मार्ग और दरवाजे हैं । इस गृहके प्रत्येक लदावके ऊपर, भीतर और बाहर अति अज्जल सफेद सिंगमरकी जालियाँ लगी हुई हैं, जिनमेंसे काफी प्रकाश पहुँचता है । अकबरकी मृत्युके बाद सुगल लोग गिन्नीपुष्पका कितना आदर करते थे, इस गृहकी कारीगरी देखनेसे उसका काफी परिचय मिन सकता है । मारांग यह है, कि नाना प्रकार और नाना वर्णके मन्थवान् मणि-प्रभराटि हाथ कितने खूबसूरती, कितना मनीषर और कितना स्याभाविक गिन्नीपुष्प दिखलाया जा सकता है, इसमें उसकी पराकाष्ठा दिखलायी गई है । इसमें नाना प्रकारके बहुमूल्य लाल, सवज आदि रंग दिरंगे पत्थरोंके टुकड़े जुड़ कर बने वृष्टोंका ऐसा उमटा काम बना है, कि जिसकी देख कर चित्तका भ्रम होता है । यहाँ तक कि एक गुलाबकी प्रत्येक पत्रहीमें जितने प्रकारका रंग, जैसा आकार हो सकता है, वहाँ उन उन रंगोंके पत्थर लगाये गये हैं । ज्यादा क्या कहें, मानो वे प्रकृतिके सचिमें ही टाले गये हैं, ऐसे मालूम पड़ता है । ऐसा अपूर्व मनीषर गिन्नीपुष्प संसारमें क्या और भी कहीं है ? ताजमहलमें जहाँ जाओगे, जहाँ देखोगे, वहाँ ऐसी मनीसुखकर तमशीर नुस्कारे नेत्रपथकी पथिक होगी कि, जिसे तुम जनम भर भूल नहीं सकते । ज्यादा दिन नहीं हुए भारतवासो जिम अधाधारण गिन्नीपुष्प और भास्करकार्य ( पक्षीकारो, नकागो आदि ) में अपना पाण्डित्य दिखला गये हैं, उसकी तुलना और कहाँ है ? ताजमहल ही उसकी तुलना है ! चित्तकरकी तुलिका, कविको कल्पना और भावुककी भावना भी ताजमहलकी तगवौर उतारनेमें असमर्थ है । जिसने इसे अपनी आँखोंसे देखा है, उसीने समझा है, वही पिवला है, उसीके हृदयने इसका स्पर्श किया है । इस सामान्य लेखुनेके द्वारा ताजमहलका खींचना तो दूर रहा, उसका वर्णन करना भी प्रसम्भव है ।

बहुत दिनकी बात नहीं है, ठगोंकी टमन करने वाली प्रसिद्ध कनल स्त्रीमन सस्त्रीक एक बार इस अनुपम भारतीय कौतिको देखने गये थे । वे स्वयं तो मुग्ध हुए ही थे, जब उन्होंने अपनी प्रणयिनीसे यह



ताजमहल ।

पूछा कि—'कहाँ कैसा देखा ?—तब तककी खोज सुँहमे यही निष्कर्ष कि—'अगर धीरे खपर भी घिसा ही मकबरा बने, तो में क्या मरनेकी तैयार हूँ ।' वास्तव में जिन खोजने एक बार ताजमहल देखा है, उसकी प्रथम ही इस तरह की भावना उत्पन्न हुआ है ।

ताजमहलके दोनों इगममें तीन गुम्बजवालो अफेद मकबरोंको ही मकब्रिदे है । दाहिने तरफको मकब्रिदेकी माथारक नीचा उभार करके है, इसमें उपवास भादि नहीं होती । इसको गुमटी या दोतलके सीमा परबलम्बे पीर खोजक टिपनाई देरी है ।

ताजमहलका बीनमा पय सब बना है यह भी यहाँके मिस्सिमेरी द्वारा बिरित हो सकता है । मकब्रिदे घामने दायिम दिमाके कलबकी रोख पर याह बहानुर्क राखका १ बाँ बयँ पीर १०३६ हिजरा खुदा हुआ है । ताजमहलके भीतर प्रवेसपयके बाईँ पीर १०३८ हिजरा पीर फाटकके सामने १०३० हिजरा ( अथात् १६३८ ई० ) खुदा हुआ है । यह खनिम पद या ताजमहल पूरा होनेका समय है । इसी तरह मुमताज खनिमकी कब्रके ऊपर १०३० हिजरा पीर गाहकहानुकी कब्र पर १००६ हिजरा खुदा हुआ है । इन्

दोनी खोजके ऊपर जो इन्कह वैसी ही दो कब्रें ऊपर बनी हुई हैं । यहाँ कब्रें नीचे हैं । प्रवेसद्वारने सुमने की सामने नीचे जानेके निम्ने गोपानके भी हैं । मामूम होता है ऊपरको कब्रें कोतीके देखनेके निम्ने खनुतीके बराबर ( खँ पाईँव ममान ) बनावईँ गई है तथा इससे भीतरकी सीमा मो खपुवँ की गई है । भीतर जानेके यह मामूम होता है, कि मामी वे हा ( ऊपरको ) पयलो कब्रें हैं । पहले ऊहाँ जहाँ तारीख खुद हुई है उन मभो मशारी पर तुधरा निचिमें कुरानने उरईँ म पूरँ सुरा निचि दुप है । इसी तरह फाटकके सामने "पवित्र पीर मरन हुदद । चिर्यान्निमय खगीय उचाल में पायी ।" इत्यादि काब्र निचि है ।

ताफ़ा ( फा० बि० ) १ की खूपा न हो इरामरा । २ श्री खानमे तोड़ कर तुरान लाया गया हो । ३ जो खान न हो, खस्य पशुज । ४ मथामसुल खानका बना हुआ । ५ खिमकी खबकारमें जानेके निचि तुरान निखाना हो ।

ताजिख ( म० खी० ) एक ख्योतिपका पय । यवनापाय क्त आतकविपयक पय श्री फारसी पीर फारको भाषामें निचा हुआ था । राजा मरामि ह, मोलकख्ट खादिने इसे क खान भाषामें खनुबादिन किया था ।

संस्कृत ताजिक ग्रन्थमें निम्नलिखित विषयोंका वर्णन मिलता है—

प्रधान वारह रागियोंमें सेप आदि चार चार रागिएं यथाक्रमसे पित्त, वायु, मम और कफस्वभावो हैं अर्थात् सेप, सिं'ह और धनुः इनका पित्तस्वभाव, मकर, हृष और कन्या इन तीनोंका वायुस्वभाव है; मिथुन, तुला और कुम्भ इन तीनोंका ममस्वभाव (वायु, पित्त और कफको समता) तथा कर्कट, वृश्चिक और मीन इन तीन रागियोंका कफस्वभाव है।

मेपसे लगा कर चार चार रागि क्रमसे क्षत्रियादि चार वर्ण है, अर्थात् मेप, सिं'ह और धनु ये तीन रागियों क्षत्रियवर्ण, हृष, कन्या मकर ये तीन वैश्यवर्ण, मिथुन, तुला और कुम्भ ये तीन शूद्रवर्ण तथा कर्कट, वृश्चिक और मीन इनका ब्राह्मणवर्ण है। इस प्रकार रागियोंका स्वरूप और वर्ण जान कर ज्योतिःशास्त्रकी गणना करनी चाहिये, इसीलिये पहले रागिका स्वरूप कहा गया है।

वर्षका शुभाशुभ फल जाननेके लिये वर्षप्रवेश-समय निर्गम—जन्म-समयमें रवि जिन रागिके जितने अंशादिमें अवस्थिति करता है, पुनः जिस समय वह उमो रागिके उतने ही अंशादिमें आगमन करता है, वही समय वर्षप्रवेश-समय है।

रविस्फुटका स्थिर करके भो वर्षप्रवेश-समयका निग य किया जा सकता है। वाटमें वर्षप्रवेशमें तिव्यानयन, वर्षप्रवेशमें योगानयन, वर्षप्रवेश ग्रहस्फुटानयन चन्द्रस्फुटानयन, प्राङ्गत और पश्चान्तदण्डानयन ; तथा लग्नखण्डा, लग्नकुण्डली और भावकुण्डली, पञ्चवर्ग ट्रोकात्रचक्र, उच्च-नोच कथन, लग्नखण्डाचक्र, वन-निरूपण, हाटगवर्गविवरण, जैत्रचक्र, हीराचक्र, चतुर्थोग चक्र, पञ्चमांगचक्र, यथांगचक्र, ममांगचक्र, अष्टमांगचक्र, नवांगचक्र, दशमांगचक्र, एकादशांगचक्र, द्वादशांगचक्र, भावचिन्ता, वर्षाविधानयन ग्रहका स्वरूप, दृष्टि-प्रकरण, दृष्टिसाधन, मैत्रीभाव, नक्षत्रयोग, वर्षप्रवेश, टगानिरूपण, मामप्रवेशानयन, अन्तर्दशानयन, वर्षरिष्ट, विचाररिष्टभङ्ग, भावविचार, धनभाव, सहजभाव, चतुर्थभाव, पञ्चमभाव, षष्ठभाव, सप्तमभाव, अष्टमभाव, नवमभाव, दशमभाव,

एकादशभाव, द्वादशभाव और रवि आदि दशांका विषय विषयरूपसे वर्णित है।

और भी कई एक विषयोंका वर्णन है, जिनके नाम संस्कृत नहीं जान पड़ते ; परन्तु वा फारसीमें लिये गये हैं। नोचे उनके नाम दिये जाते हैं—

इहाविवरण, सुन्यानयन, इक्षानयोग, इन्विहायोग, इत्यगानयाग, इगराफ योग, नक्षत्रयोग, जमया योग, मनृत योग, कम्बूल योग गेरिकवूनयोग, खलासरयोग, रहायोग, दुकानिकुल्य याग, दुपोत्या दबोत्ययोग, त्वो-त्ययोग, कुत्यायोग और दुगत्यायोग ये पौढ्य योग, महम नाम, महम ५० प्रकार, महमसाधन, महमटन और सुत्याभावफल।

ताजिया ( अ० पु० ) सूत-ज्योतिषके लिए विनाय करना तथा गोक प्रकट करना। सुहरमके समय सुसजमान लोग सामान्य उपकरणसे हुमेन और हाथनको कत्र बना कर जो बाहर निकला करते हैं, उभोको भारत-वर्षमें ताजिया कहते हैं। यह बांसको कमचियों पर रङ्ग विरङ्गे कागज, पक्षो वगैरह चिपका कर बनाया जाता है और आकारमें मकबरे (मण्डप) जैसा होता है। फारस देशमें सुहरमके दिनोमें अनौकिक वर्णना युक्त अनेक नाटकादि रचे जाते हैं, जिनको वहाँके लोग ताजिया कहते हैं।

अमेरिकामें भो ताजिया शब्द प्रचलित है। इस देशसे जो मजदूर लोग अमेरिकाके भिन्न भिन्न स्थानोंमें गये हैं, वे वहाँ ताजिया शब्दका व्यवहार किया करते हैं। सुहरम ही इन मजदूरोंका प्रधान पर्व है, हिन्दू मजदूर भी सुहरमको प्रधान पर्व मानने लगे हैं।

१८८४ ई०में ब्रिनिटाटक किसी एक शहरके भीतरसे ताजिया ले कर जानेको मुमानियत हुई ; जिनसे आखिर एक भोयणतम घटना हुई थी।

सुहरमके समय बहुतसे मुसलमान ताजिया बनाते हैं ; बहुतसे फकोर और दूसरे लोग तरह तरहको पोशाकें पहन पहन कर छातो पर हाथ पोते पोते ताजियाके पोछे पोछे जाया करते हैं। बहुतसे मराठी सदाँरोंको ताजिया बनाते देखा गया है। उपरन्तु वे

शास्त्र के शोध नहीं है। शास्त्र के सदर तान्त्रिका नहीं बनती।

भारतवर्षमें खूनामङ्ग पाटिकी तरह तान्त्रिकाकी से कर हिन्दू और मसलमानोंमें परस्पर बड़ो भारो लड़ाई हुआ करती है। सुहरय देखा।

ताज्जी (पा० बि०) १ चरक मन्त्रयो, चरकबा। (पु०) २ चरकबा जोड़ा। १ गिहारी कुता। (फो०) ४ परबकी माया।

ताज्जीम (पा० फो०) सन्धान प्रदर्शन, मुक्त कर सन्धान करना इत्यादि।

ताज्जीमोसरदार (पा० पु०) बड़ा सरदार जिनके पानि पर राजा या बादशाह बठ कर गड़के हो जाते हैं।

ताडक (पा० पु०) १ पाम्पुषविषिय, एक प्रकारका यहनता ओ काममें यहनता जाता है करनपुस, तरबो। २ खप्य के २३३ मीदका नाम। ३ खन्दविषिय, एक प्रकारका खन्द। इसके प्रत्येक चरणमें ११ और १३के बिरामये १० मादाए होती हैं और धनमें मगप होता है।

ताडक (पा० पु०) ताघते ताड़ पयो० इमा टः तथा भूतो इहं चिह्नं यत्न, बहुशो०। खर्चामरकविषिय, काममें यहनतेका एक यहनत करनपुस, तरबो।

ताडक्य (पा० फो०) १ टककस भावाः खर्च। १ घोदा शोय, उदासीनता। २ शौच्य, बह ओ समीपमें है।

ताड़ (पा० पु०) १ सुरादि० तड़ भाषे चर्च। १ ताड़न, प्रकार, चोट, धाकात। २ गुचन। खर्चि चर्च। ३ टन्ड, भ्रमि, बमाका। ४ सुदिपरिमित टर्चादि, काम, पनाकके इंडन चादिको पंठिया जो सुशोमें या जाय सुती। ५ यत्नत पहाड़। ६ चम्पाका धनहा०विषिय, चायका एक यहनता। ७ मूर्ति निर्माक विद्यामें मूर्तिके छपरी भागका नाम। ८ तानहृद्य, माकारहित एक बड़ा पैड़। यह पैड़ पंथिसे रूपमें जयरको घोर बड़ता बना जाता है। इसके बंदन बिरे पर हो पत्तं होतें हैं। ये पत्तं चिपटे मजबूत कण्ठमें जाते घोर इन प्रकार केसे रहते हैं जैसे पत्तियोंके पर। इनको लकड़ोको भीतरी बमापट लुनके कोम लपटोको तरह होती है। जन्म गिरी रूप पत्तीके इ डकोके मूल एक जामेके कारप काम चुरदुरो दिनाई पड़तो है। इनके संस्तन पयाय—

तानपुम, पयो, दीर्घक्य, अत्रपुम, लंबरात्र, मपुरस, मदाय, दोष पादय, चिरानुः, तबरात्र, दोष पय, गुच्छ पत्र, पासकपु सिध्यत्र घोर मजोपत है।

भारतमें नागा स्थानोंमें बरमा, सि बक, सुमावा, जाया पादि होयेंमें, तथा पारसको प्याकोसे लटक प्रदे योंमें ताड़के पैड़ बहुत पाये जाते हैं। बङ्गालमें तान्त्रिके बिभारी को इनके पैड़ दिये जाते हैं। इनको खंकारि लगभग ०६० फुटको होती है घोर मोटाई ३६ फुटमें अधिकको नहीं होती।

तान्त्रिक भाषामें तान्-बिनास नामक एक धन्य है जिसमें ताड़ पैड़के ८०१ प्रकारके गुणाका परिचय बर्णित है, इन गुणका प्रत्येक भाग बिना ल बिनी काममें पाता हो है।

पुराना ताड़का पेड़ हो अधिक काममें पाता है। यह सितला पुराना होता जायगा उतला हो यह लड़ा घोर काको रङ्गना होता जाता है।

इनको लड़ो लकड़ो मकानोंमें लगतो है। लकड़ो खोचको करके एक प्रकारको छोटी नाव मो बनई जाती है। नि इनके जफना नामक नपरका ताड़का पेड़ बहुत प्रसिद्ध था। पनेक प्रकारके द्रव्य प्रलुप्त होनेके कारण इसको लकड़ो दूर दूर देशोंमें भेजो जाता थी। बायद जारने परोचा करके यह देगा या कि ताड़को लकड़ो पानको लकड़ोसे बिना चंगमें जिखत नहीं है।

इसके पत्तंके इ टमोके रीयिसे मजबूत रस्मे तैयार होते हैं घोर मन्त्रकोमोचक बनये एक प्रकारका सुन्दर काम बनते हैं। पत्तमि पंथि बनते हैं घोर खपर हाए जाते हैं। इतिचके रीगमें बहुत जगह काममें बहने इनके पत्तंका जो निम्नमें पत्रुनिके काममें जाते हैं। इनके बहुत पामानोमे दिवामनारीके बकब तैयार होते हैं घोर खर्च मो काम पड़ता है। प्राकाम काममें तान-पत्र पर धन्य लिपि जाते हैं।

तान-कचक रस्मे प्रकानतः निरकः, ताड़ो घोर मध प्रलुप्त होता है।

ताड़का रथ निरककर, प्री पालायाक तथा लको चर्च काममें पचन मजूर होता है। यदि प्रतिदिन तान-काम निरकपुसक रसका रन पोया जाय तो बह मरीरमें



जुलाबसा काम करता है। प्रदाहिक रोग तथा शोथमें भी यह बहुत उपकारो है। इसके फूलोंके कच्चे अंकुरोंको पौधनेसे बहुतसा नशीला रस निकलता है जिसे ताड़ो कहते हैं। ताड़ी देखो।

ताड़ोका पुलटिस फोड़े या चावके लिए प्रत्यन्त उपकारो है। ताजा ताड़के रसको मँदा में मिला कर थोड़ी थोड़ी टेनसे उससे जो फेन निकलने लगता है, वही पुलटिस है। पके हुए ताड़को मज्जा चर्मरोगमें बहुत उपकारो है। शरीरका कोई अङ्ग छत होने पर सिङ्गलके चिकित्सक लोडू रोकनेके लिये उसके ऊपर ताड़को आँठोके शैथि चिपका देते हैं।

जिम रससे तुरन्त फेन बाहर निकला है उसे खानेसे सूत्रकच्छरोग जाता रहता है। यह शोथमें भी बहुत उपकारी है।

ताड़की गरीके जलसे वमन और वमनोद्रेक चञ्जा होता है।

ताड़के ताजा रससे वटिया गुड़ और चीनी तैयार होती है। चीनी देखो। ताड़ोको चुभानेसे अरक या शराब बनतो है। मद्य देखो।

चैतके महीनेमें इसमें फूल लगते हैं और वे शाखमें फल जो भादोंमें खूब पका जाते हैं। एक एक फलमें कमसे कम तीन तीन आँठो रहती है, छोटे फलमें दो भी पाई जाते हैं। कच्चे अवस्थामें फलीके भीतर गरी रहती है जो खानेके योग्य होता है। इस अवस्थामें इसके भीतर जल रहता है। ज्यों ज्यों फल पकाता जाता है त्यों त्यों जल कड़ा होता जाता है। अन्तमें छम आँठोके मध्य गरी होती है जो खानेमें मिष्ट, सुखप्रिय तथा नारियलको गरीके सदृश इसमें अनेक गुण हैं।

पहले ही कहा जा चुका है कि ताड़की लकड़ीसे अनेक प्रकारकी गृहसामग्र्यो प्रसृत होती है। उसी तरह इसका रस भी भोजन इत्यादिके अलावा और दूसरे दूसरे कामोंमें व्यवहृत होता है। डिम्बके पानोमें ताड़का रस डाल कर यदि उसमें शंखु या सोपका चूष मिला दिया जाय तो सुन्दर पालिश तैयार होती है और भोजन पर इसका लेप देनेसे यह बहुत चमकने लगता है।

ताड़में अनेक गुण रहनेके कारण इसे पवित्र हर्षोमें गिनते हैं। कोई कोई इसे ही कस्पट्टममा समझते हैं।

वैद्यकके मतसे इसके गुण—मधुर, शीतल, पित्त, दाह और यमनाशक है। इसके रसका गुण—व्रण, पित्त, दाह और शोथनाशक तथा मत्तताकारक है। फलका गुण—पका ताड़ दुर्जर, मूल, तन्द्रा, अभिष्यन्द, शुक्र, पित्त, रक्त और कफवृद्धिकर होता है। (भावप्रकाश) गणवत्सभके मतसे इसके गुण वात, छामि, कुष्ठ, तथा रक्त पित्तनाशक, वृंहण, वृष्य और स्वादु हैं।

ताड़की गरीका गुण—सूत्रकच्छ, मिष्ट, वातपित्तनाशक और गुरु है। ताड़की अश्विमज्जाका गुण—मधुर, मूत्रल, शीतल और गुरु है। ताड़के जलका गुण पित्त, नाशक, शूल और स्तन्यवृद्धिकर तथा गुरु है। नूतन ताड़ोका गुण—मदकर, कफ, पित्त, दाह और शोथ नाशक है, खटा ही जानसे यह वातनाशक और पित्तवृद्धिकर होता है। ताड़के कोपलका गुण—स्वादु, तिक्त, कषाय, सूत्ररोगनाशक, वल, प्राण और शुक्रवृद्धिकर है। ताड़की तरुण मज्जाका गुण सारक, सधु, श्लेष्मल, वात और पित्तनाशक है। ताड़को जटाका गुण—रुच और जयरोगनाशक है। (राजवहम) ८ क्षणताल, तमालका पेड़। १० हिन्ताल। ११ कण्टकताल।

ताड़क (सं० ति०) ताड़-कन्। १ प्रहारकारो, ताड़न करनेवाला। (लो०) २ द्वद्वारकबीज, वधारका बीज। ताड़कजङ्गल—ताड़का देखो।

ताड़का (सं० श्लो०) १ राक्षसोमेद, एक राक्षसोका नाम, इसको उत्पत्तिके सम्बन्धमें कहा है कि सुकेतु नामक किसी पराक्रमशाली यज्ञने सन्तानके लिये ब्रह्माके वृद्देशसे कठोर तपस्या की। ब्रह्माने उसको तपस्यासे सन्तुष्ट हो कर उसे एक वर दिया जिससे उन्हे ताड़का नामकी एक कन्या उत्पन्न हुई। ब्रह्माके वरसे ताड़काको हजार हाथियोंका बल था। यह जन्मनन्दन सुन्दको व्याही यो। जब अगस्त्य ऋषिने किसी बात पर क्रुद्ध हो कर सुन्दकी मार डाला, तब यह अपने पुत्र मारीचको ले कर अगस्त्य ऋषिको खाने दोड़ी। ऋषिके शापसे माता और पुत्र दोनों घोर राक्षस हो गये। इसी समयसे यह राक्षसी अगस्त्यकोका तपोवन नाश करने लगी और उसे उन्हीं

प्राचिनोसि शून्य कर दिया। यह धरण ताड़काफण्ड नामसे प्रसिद्ध है। यह धरण रसका पुत्र दोनों आश्रयको देखनेसे ही लगे प्रति पत्न्या परयाचार करते थे तथा यशोय बलिसे धुएँ को पाकागामि पेशता देखे ये दसबलसे साध बड़ा पशुंय जाति धरि धनक तरहका लभम मधाय्या करते थे। इनके इस परयाचारसे कोई भी यह करनेका साहस नहीं करता। इसी प्रकार ताड़का उष क गहमें रह कर अपना दिन बिताने लगे। बाद विष्णु मित्रने इनका दमन करनेके लिए दमरबलीभी शरण ली धरि लखें मत्र वृत्तात्क लख कर के रामचन्द्र धरि लखन को अपने साथ लख तपोवनमें लाए। राखों में ही विष्णु मित्रसे धादिप्रसे रामचन्द्रकोने इसे मार गिराया धरि मारीचको बाध द्वारा बहुत पूर के क दिया। त कुन्नाको मारनेके समय रामचन्द्रने विष्णुमित्रसे कहा था "प्रसो ! यह खी है, धतः बिध प्रकार इसका बध कर ।" इस पर विष्णुमित्रने कहा, 'यह खो नहीं है, जो खो बोरके समान बुद्ध करते है, बिधने खियाके योग्य लखा धरि कोमलताका त्याग कर दिया है, देसो खीको मारनेके औषधका प्रायचित्त नहीं होता।' (शावक १।२५ २५ प०)। २ शिवदासी, एक कता।

ताड़कापत्र ( स० खो० ) तारकेय लखत्रिमि पलमपत्र, बहुको । इहदीका बहुइलाकही।

ताड़कापत्र ( स० पु० ) विष्णुमित्रके एक पुत्रका नाम। ( मारण भाष० ४ ख )

ताड़कारि ( ख० पु० ) ताड़काया धरि, इ-तत्। ताड़ काके धाम, औषधचन्द्र।

ताड़केय ( स० पु० ) ताड़कायाः पर्ययं उक्त्वा । ताड़काका पुत्र, मारीच ।

ताड़क ( स० पु० ) ताड इति इन् उक्त्वा । शक्तितापुत्री विनिनि । प १।१५५ । कयाघात, धेत या खोड़ा मारने काता कजाट ।

ताड़कात ( ख० पु० ) ताड़ इति इन् उक्त्वा । बहु जो बसोके धादिने पीठ कर काम करता हो।

ताड़क ( ख० पु० ) ताड़ धतः बिध यत्न या ताड पदार्थ लखनेके पद-उत्पन्न लख इत्क मयकन्यादिखात् माधु । १ खर्चामरचरितीय, खानमें पदमनेका एक प्रकारका यज्ञना,

करनपुत्र । इसके मस्तक परायं—खर्चदयैच ताडक, खर्चिका तापयत, ताड़पत्र धरि खर्चमुद्र है। २ यथा मरचरितीय खानमें पदमनेका एक यज्ञना।

ताड़क ( स० खो० ) ताड़ि भावे क्युट । १ धावात, प्रहार, मार । २ दोषाङ्गविययमें दोषकोय मन्त्रस स्फारविधिय । इसमें मन्त्रोंके बर्चको उन्दने सिद्ध कर मन्त्रके मन्त्र को वायुवोक द्वारा पड़ कर मारते हैं। ( धारणिक० ) १ शुक्ल । २ शामन, दण्ड मजा ३ खौट खपट, बुद्धको। ताड़का ( सं० खो० ) ताड़क टाप । १ प्रहार मार । २ मर्तु मना खौट खपट । १ शासन दण्ड । ३ लपोड़न, खट, तखमोप ।

ताड़का ( खि० खि० ) १ दण्ड देना, मारना पीटना । २ याचित करना खौटना खपटना । ३ किसी बातको लखनेसे समझ देना, खौटना, लख देना । ४ मारपीट कर भनाना खिचना, खटा देना ।

ताड़को ( खि० खो० ) ताड़क खिर्वा खोप । पञ्चताड़क-यदि खोड़ा, बाबू क ।

ताड़कोय ( स० खि० ) ताड़-पलोयर् । शासनयोग्य, दण्ड देने योग्य मजा देने कावित ।

ताड़पत्र ( स० खो० ) ताड़क पत्रमि लख इ । लख मूल-विधिय, खानका एक यज्ञना ।

ताड़पत्रि—मन्त्रात्म प्रदेयके धेनारो बिसेके पथीन पत्र महर । १२वो यतान्देमें यह महर खायित कृपा है। यहाँ राम धरि चित्तारावके दो मन्दिर हैं। दोनों मन्दिर पच्छे पच्छे गिणकार्यसे खचित हैं जो देखनेमें बहुत पच्छे लगते हैं ।

ताड़काव ( खि० खि० ) ताड़नेकाता, यमत्र लानेकाता ।

ताड़कित ( स० खि० ) ताड़क-यत् । ताड़ककारो मारने काता ।

ताड़काम ( स० खि० ) ताड़की मजः पत्र । ताड़कामय कन्, ताड़कामका पानो । शुक्ल-बाहुर्दिक, फाटु कपाय धरि कटु पाक । कुम्भकामनेम तकायका जन् बहुत हितकर है।

ताड़ि ( ख० खो० ) ताड़यति पत्रि योमती तड़-विष इन् । १ उचविधिय एक प्रकारका पिठ । गयी हैनो । २ ताड रस ।

ताहित (सं० त्रि०) तड-णिच्-क्त । १ आहत २ तिर-  
स्कृत । ३ उत्पीड़ित । ४ दूरीकृत । ५ दण्डित । ६ विह ।  
(क्तो०) तडित् भावार्थे अण् । ७ विद्युत् विजलो ।  
ताहितको उत्पत्तिका विषय मिहान्तिगिरोमणिमें इस  
प्रकार लिखा है—मसुद्रमें वडवानि है, जलभरनिमग्न  
इस वडवानिसे वूमराणि उत्पन्न होते हैं और वह धूम  
राणि आकाशमें वायुद्वारा नोत हो कर चारों तरफ फैल  
जाते हैं । पीछे द्युमणि किरण द्वारा प्रदोष होने पर  
स्फुलिङ्ग निकलते हैं, इन्हीं स्फुलिङ्गोंको ताहित वा  
विजलो कहते हैं । ये अनुकूल और प्रतिकूल वायुके  
आघातसे उत्पन्नान्त हो कर पार्थिवोंके साथ मिश्रित  
होते हैं, वादमें अस्मात् वैद्युत तैजः निकलता है,  
यह प्रायः अकालवर्षणसे हुआ करता है । यह तीन  
प्रकारका है—पार्थिव, आप्य और तैजस । जिसमें पृथिवी-  
का अंग अधिक हो वह पार्थिव, जिसमें जनीय अंग  
अधिक हो वह आप्य और जिसमें तैजसका भाग अधिक  
हो वह तैजस कहलाता है ।

विशेषपरिचय—यूरोपीय विज्ञानमें ताहितका परिचय इस  
प्रकार दिया गया है—अम्बर (Amber) नामक पदार्थ-  
को घर्षण करनेसे, वह छोटे छोटे पंख, लृण आदिको  
आकर्षित करने लगता है । बहुत दिनोंसे लोग अम्बरके  
इस गुणको जानते थे । अम्बरके ग्रीक नामसे अम्बरजे  
Electricity शब्दको उत्पत्ति हुई है । संस्कृत प्राचीन  
ग्रन्थोंमें लृणमणि और अम्बरको एक ही पदार्थ बतलाया  
गया है । डाक्टर गिलवार्टने तीन सौ पचास वर्ष पहले,  
अन्यान्य पदार्थोंमेंसे अम्बरजेसे इस तरहको आकर्षण-  
शक्तिका आविष्कार किया था ।

डेड सौ वर्ष पहले ताहितके विषयमें मनुष्य जातिका  
ज्ञान सहोर्ण और सोमावद था । वास्तवमें देखा जाय  
तो सुप्रसिद्ध आमेरिक वैज्ञानिक फ्रांकलिन और अंग्रेज  
कावेण्डिशके समयसे ही ताहित-विज्ञानको सृष्टि हुई है ।  
पीछे ताहितकी इतनी उन्नति हुई कि अब उसने विज्ञान  
का शोर्षस्थान लाभ कर लिया है । वर्तमानमें यह कहना  
अशुक्ति न होगा कि, मनुष्य-समाजकी स्थिति और उन्नति-  
के लिए ताहितशक्ति ही प्रधान अवलम्बन है । सभ्यतम  
मनुष्य जातिका व्यवसाय, वाणिज्य, राजनीति इत्यादि सब

कुछ ताहितरागिनी विविध प्रक्रियाके ऊपर प्रतिष्ठित है ।  
यूरोप और अमेरिकाके प्रधान प्रचलन मनविद्योंके हाथ  
ताहितके विषयमें विविध आविष्कारोंका मधन और  
ताहितविज्ञानको विविध उन्नति सम्पादित हुई है । हम  
छोटेंसे निबन्धमें सबका उल्लेख करना असम्भव है । किन्तु  
कुछ लोगोंका उल्लेख न करनेमें निबन्ध अधुना रह जायगा ।  
फ्राड्लिन और कावेण्डिशके बाद चापियार, माइकेल  
फाराडे, लार्ड केनविन ( सर विलियम टोमस), क्लार्क  
मक्लवेल और हाट्टेजके नाम ताहितविज्ञानके इतिहासमें  
समधिक प्रसिद्ध हैं । इनमें चापियार फारमो, हाट्टेज  
जर्मन तथा और सब अंग्रेज थे । इन्मेंसेके निचे यह  
बड़े गौरवका विषय है ।

वर्तमान समयमें ताहितशक्ति विविध विधानानुसार  
मनुष्य और मनुष्य-समाजका भृत्यभावमें उपकार कर  
रही है । कितने विषयोंमें कितने उपायोंमें ताहित  
शक्तिका व्यवहारिक प्रयोग हो रहा है, उसको शमार  
नहीं । वर्तमान निबन्धमें ताहितशक्तिकी वैज्ञानिक  
भानोचना की जायगी । ताहितके व्यवहारिक प्रयोगके  
लिए स्वतन्त्र निबन्धको आवश्यकता है । ग्रेडमेल, एडि-  
मन आदि जगत्विख्यात व्यक्तियोंने जिन कौशलोंमें  
विविध यन्त्रोंका उद्घाटन कर ताहित शक्तिकी मनुष्योंके  
कार्यसाधनमें निशोजित किया है, इस निबन्धमें उन  
सबकी भानोचनाकी ही स्थान मिलेगा या नहीं  
सन्देह है ।

ताहित एक जड़पदार्थ अथवा जड़ पदार्थका एक  
प्रकार धर्ममात्र है, अथवा शक्तिका किस तरहका  
भेद मात्र है, इसका अभी तक निःसंशय निरूपण नहीं  
हुआ है । आज तक भी इस विषय पर विविध तर्क  
वितर्क चल रहे हैं । फिलहाल हम उस वितण्डाक्षेत्रमें  
प्रवेश नहीं करना चाहते । उस विषयमें आधुनिक  
वैज्ञानिकोंके मत अन्तमें कहेंगे ।

ताहित किसकी कहते हैं ?—ताहित कहनेसे हम  
क्या समझते हैं, पहले यही बतलाना आवश्यक है । एक  
काँचके डण्डेकी रेशमी रूमाल पर घिस कर छोटे छोटे  
कागजके टुकड़ोंके ऊपर रखनेसे मालूम होगा कि कागजके  
टुकड़े उछल उछल कर काँचके डण्डे पर लग रहे हैं ।

सहाय्यको प्रस्तावित पर विषय कर धरना रखती  
 वगैरे बातों पर विमल भावनोंके टुकड़के ऊपर  
 धामनेसे मो घिसा जाता है। काँच, भासाएण्ड वा  
 ल मोसे लम प्रकारसे धरनेके प्रसंगे किमो प्रभावको  
 विवक्षित नहीं होती। धमनेसे पहले कायम देखनेमें ऐसा  
 वा बाटमें मो ठोक बैसा हो रहता है, किन्तु न मानूम  
 धमनेमें एक नूतन धमता वा धमं बहसि धा जाता है।  
 यह नवाविभूत पाक्यव्यग्रविभिन्न काँच-एण्ड धोर  
 भासाएण्डको ताड़ित-वर्माव्यित कक्षा वा सकता है। इस  
 नूतन धामिभूत धमंका नाम है ताड़ित-धम।

साहित्य-विकासके इतर—काँच, ईशम धोर काँच पर  
 पयम धरनेके कारणसे बहुत धामागैये ताड़ितधमंका विकास  
 होता है। साहाय्यतः विभिन्न प्रकृतिधम्यक विधो मो  
 दो पदार्थोंको परस्पर घिसनेसे स्थलाधिक भाषामें ताड़ित  
 का विकास हुआ करता है। धमना सर्वव्यक्त मो प्रयो  
 वन नहीं होता। इटली निवासो जोन्सने पहले पहल  
 देखा था कि दो बानु-द्रव्योंके परस्पर मध्यमें जोनेसे जो  
 दोनेमें ताड़ितधमविकास होता है। काँच इसमें विकासको  
 माया सर्वत्र समान नहीं होती है। यह ठोक है माया  
 रचना; यह नियम निर्दिष्ट किया जा सकता है, कि दो  
 विभिन्न सामान्यतः प्रकृतिधम्यक द्रव्योंको परस्पर कृपा  
 देनेसे दोनों को ताँ तधमंकायता होती है। धमंको कक्षा  
 ताड़ित-विकासके लिए यथेष्ट है, वहाँ दो द्रव्योंको धमने-  
 से विधिय धम होगा, यह निश्चित है।

धमं धोर सर्वव्यक्त निवा धम्य भागा कारणसे  
 ताड़ितका विकास होवे देखा जाता है। धामना प्रयोग  
 धोर तापप्रयोगमें ताड़ितका विकास देखनेमें आता है।  
 बहुतने कोच-धोरोंमें ताड़ितका विकास होता है।  
 धि पाकरसाके लिए धम ताड़ितका व्यवहार करते हैं।  
 प्रसंगे धाम्य होने समय ताड़ितका विकास होता है।  
 धमके प्रकाशको ताड़ितप्रकाश उत्पन्न करनेके लिये  
 है, उनका बहनेन धारी बिना मायगा।

साहित्य-विकासके इतर—ताड़ितका विकास कृपा  
 है या नहीं, धमके धमधमनेके लिए विभिन्न लयाय  
 है। एक मोनाके टुकड़े पर एक सूती कल्पित  
 करके धामनेसे जो धमनेमें ताड़ित-विकसकका धमदा

उपाय होता है। जोई मो ताड़िताका लयाय धमके  
 धाम धारे हो मोनाका टुकड़ा उधको तरफ धाकड  
 होमा। एक काँचको मोतकमें काड कल कर, लमको  
 बाटमें घुसाए कर ठकमें एक मोतकको सोब पिरो दें।  
 मो कक्षा एक जोर मोतकसे मोतर धोर एक बाहर रहना  
 चाहिये। जो जोर मोतर रहे उस पर दो सूया धमको  
 धामि वा धामिसे एलियाँ कपेट दें। इस धम्यको ताड़ित  
 निष्पन्न वा ताड़ितको धम्यक कक्षा वा सकता है। काँच  
 वा भास सा धम्य कोई पदार्थमें ताड़ितका विकास  
 होने पर लम पदार्थको मोतकके बाहरको धीकके कोर  
 पर धामनेसे जो धम्य प्रकाश दोनों एलियाँ धमना धमना  
 हो क र्थो। दोनों एलियोमें परस्पर विधम्यक होमा।  
 इस विधम्यकका विषय धीके धोर मो विधियधम्यके कक्षा  
 प्रायगा।

ताड़ित दो प्रकारका है। जिस तरफ ईशम पर काँच  
 धिन कर लल काँचको ताड़ितको धम्यक पाध धामनेसे एलियाँ  
 धमना धमना हो जाती है, उनो तरफ धमना लल वा धमना  
 पर लल विध कर लम ललका ताड़ितको धमके धाम  
 धामनेसे मो एलियाँ धमना धमना हो जाती है। धमय  
 काँच धोर काँच दोनोंमें जो ताड़ितधमंके विकासका  
 प्रमाण मिलता है। किन्तु धियो धमकाँचमें यदि काँच धोर  
 लल दोनोंको एक साथ धमके पास धामा जाव, ता  
 एलियाँको लल तरफ धमना धमना होते नहीं देखा जाता।  
 काँच धोर लल दोनोंमें ताड़ितके विकास हुए हैं, किन्तु  
 धम परस्पर विधम्यक धमंकायता हो प्राते हैं। प्रकक मावसे  
 दोनोंको कार्य करती हैं। प्रकक जोनेसे परस्पर लम  
 काय में प्रतिवृत्तता करती हैं। धममें काँच धोर ललके  
 टुकड़ोंको काँच देनेसे मानूम होगा कि दोनों काँच  
 धित हो रहे हैं। दो काँचके टुकड़ोंको ईशम पर धम  
 कर र्थो धमने देखिये कि दोनोंमें धम्यक ल लो कर  
 विधम्यक हो रहा है। धोर काँचके दो टुकड़ोंको धमना  
 पर धम कर धमने लम्बित करनेसे दोनोंमें परस्पर विधम्यक  
 धमंकोने देखिये। धमय मानूम होता है कि—

- (१) काँचका ताड़ित काँचके ताड़ितको विधमिय ल  
 करता वा धका देता है।
- (२) काँचका ताड़ित ललके ताड़ितको विधमिय ल  
 करता वा धका देता है।



विश्वरूप बाहर प्रभूत परिमाणवे तादृशता संभव होने पर मो उस कालके पदार्थ पर वा तद्विद्योचयपक्ष पर उच्यते अत्रा मो प्रभाव नहीं पड़ता । सादृश्येन प्रागदेने एक बड़े भारी कालके ब्रह्मसत्त्वो कारणे रमिको पत्नियोंसे एक बार वस्त्रसे करिये उसमें प्रभूत तादृशता संभव क्रिया और स्वयं तद्विद्योचयवादि से कर उच्यते मोतर उच्यते गये । ब्रह्मसत्त्वे सादृश्ये बड़े अग्निस्फुटिङ्ग इधर उधरका विचित्र हो रूखे से, जिन्तु ब्रह्मसत्त्वे मोतर उच्यते कुछ मो मात्र म न कृपा ।

गणितशास्त्रादुत्तर सिद्धा जाता है, कि जिन प्रदेयमें तादृशताको बोर क्रिया नहीं है वहाँ तादृशता पण्डित मो नहीं है । बाहुसूत्रमें मोतर जैसे विज्ञकीका क्रिया नहीं होती, उसा तरह उस मोतर विज्ञकी मो मणित नहीं रहती । क्षेत्र वा घोसो केयो मो खो न हो, बिषी मो बाहुको चोत्रमें विज्ञकीो सञ्चित करनेसे समस्त तादृशता विज्ञकीो उच्यते अत्र या जाता है । समस्त मोतर अत्रा भी नहीं रह जाता । बिषी तादृशता विद्युत् प्रत्यको ब्रह्मसत्त्वा या वि करे जैसे पोखी बाहुसूत्र पदार्थके मोतर सुखे दिने से कार्य मात्रसे समस्त तादृशता उच्यते ब्रह्मसत्त्वा या वि करके अत्र या जाता है । उस समय उच्यते प्रत्यको निष्काश कर तद्विद्योचयद्वारा उच्यते परोक्षा करनेसे मान्य होया कि, उसमें अत्रा मो विज्ञकी नहीं रहो है ।

एक वि करे या कोष्ठके आन्तरे मोतर रहनेसे ब्रह्मसत्त्वको कुछ प्रायदा नहीं रहती ।

अपरिचायक पदार्थके मोतर सर्वत्र तादृशताक्रियाकी स्पृति होती है तथा समस्त अत्रा और मोतर सर्वत्र हो तादृशता सञ्चित हो सकता है ।

परिचायक पदार्थमें सिवा अत्राके अन्यत्र कहीं भी विज्ञकी नहीं रहती । और अत्रा मो सर्वत्र समान परिमाणसे नहीं रहती । एक कोष्ठके मोसे पर सर्वत्र समान भावसे विज्ञकी मीकृत रहती है । जिन्तु बाहुसूत्र प्रत्यका अपरिमाण अत्रा नीचा होने पर सब जगत् समान विज्ञकी नहीं होती । जो अमीन जितनी अत्रा होनी वहाँ उतनी ही ज्यादा विज्ञकी ठहरती और जोही अमीन पर उतनी ही कम । इस प्रकार वहाँ वहाँ मोक्षको निकली रहती वहाँ वहाँ विज्ञकी कुछ ज्यादा कमता है ; अन्यत्र समस्त कुछ कम रहती है ।

परिचायकके मोतर जो तादृशताकी क्रिया प्रकट नहीं होती सोच उहाँ वर्तने प्रकृति ऐसा होता है, यह गणितशास्त्रको सहायतासे प्रमावित हो सकता है । जिनो निर्दिष्ट आकारके बाहुसूत्र पदार्थको अपरिमाणके क्रियो अत्रा पर तादृशता समस्त मोतरमें तादृशताकी क्रिया प्रकट नहीं होती, इसको सञ्चितकी सहायतासे गणना हो सकती है । गणितप्रयोग वर्तमान निबन्धसे बहिर्भूत है ।

परिचायक श्रीर अत्राबाहरी अत्रेय ।—परिचायकके मोतर विज्ञकीो ब्रह्मसूत्रमें नहीं रहती, पर अपरिचायकके मोतर विज्ञकीोका ब्रह्मसूत्र होता है । दो तादृशतासूत्र पदार्थ बाहुसूत्रे मन्त्र रहनेसे दोनोमें या तो प्राक्पक्ष या निष्कर्षक होश देखा जाता है । दोनोमें एकको वि करे या ब्रह्मसत्त्वे मर देनेसे फिर आन्तरेय वा विषयक कुछ मो उस ब्रह्मसत्त्वो बाहुसूत्रो मीकृत कर नहीं जाता । वि करे वा ब्रह्मसत्त्वो निही कृ कर रहता है । ऐसो अत्रासत्त्वे मोतरकी विज्ञकी और बाहरीको विज्ञकी परस्पर मन्त्रक प्रत्यक्ष और आश्रोत्रभावे रहती है । परिचायक पदार्थ तादृशतासत्त्वके उच्चारणमें अत्रासत्त्व है जिन्तु अपरिचायक पदार्थ रहने पदु है । दोनोका यह प्रसिद्ध इस प्रकारसे कुछ कुछ समझा जा सकता है । इत्यात्, काँच मटो, पत्थर, रत्न आदि अठिन प्रत्यको कौंचा, तोडा और टेढ़ा क्रिया वा सञ्चता है, जिन्तु अत्रा, तैल, सुद, कोचक इत्यादि तरह प्रत्यको उच्यते उच्यते हो वा, तोडा और टेढ़ा नहीं क्रिया वा सञ्चता । काँचको दोनो जाँचोसे पकड़ कर हो वा वा सञ्चता है काँच उच्यते अत्रासत्त्वे अत्रासत्त्वका पदार्थ सञ्चित हो वा, तोडा और टेढ़ा मोक्षको दोनो जाँचोसे पकड़ कर हो वा वा सञ्चता है कि, कौंचन हो नहीं पड़ती । अत्रा इत्ये मीकृता है । विज्ञकीके लिए अपरिचायक पदार्थ अठिन प्रत्यके समान है और परिचायक पदार्थ कम वा कौचकके समान । अपरिचायकके मोतर विज्ञकीको ही कम पड़ती है और ब्रह्मा मो कमता है, परिचायकके मोतर न तो ही कम पड़ती है और न ब्रह्मा ही कमता है । अठिन महीका अपरिमाण अत्रा नीचा वा अत्रासत्त्व हो सकता है, जिन्तु तरन अत्रा अपरिमाण समस्त हो होता है, अत्रा नीचा नहीं । अत्राके मोतर अत्रासत्त्व दाबकी कमतासे ही

हो जल अपने आप हट कर दाबकी सर्वत्र समान कर लेता है, परन्तु कठिन पदार्थके भीतर विभिन्नस्थलोंमें विभिन्न मात्रासे दाब देनेसे कठिन पदार्थ टूट्टा या नब जाता है। जलकी तरह बहता ढरकता नहीं। इसी तरह अपरिचालक पर ऊपर या भीतर विभिन्नस्थलोंमें ताड़ितकी विभिन्न मात्राओंमें दाब पड सकती है, उस दाबमें ताड़ितको एक जगहसे दूसरी जगह टकल देना चाहता है। किन्तु ताड़ित अपरिचालकको भेद कर सहजमें नहीं जा सकता। परिचालकके भीतर ताड़ितको दाबमें थोड़ी बहुत घट वढ होनेसे ही उसी समय थोड़ीही विजली पानीकी तरह ढरक जाती है, परिचालक उसमें कुछ भी बाधा नहीं देता। अतएव परिचालकके भीतर ताड़ितकी दाबकी कुछ कमीवैशी नहीं होती, सर्वत्र समान दाब होनेसे न खोंचन पडतो है और न धक्का ही लगता है।

पानीके दाबके साथ विजलीके जो गुणोंको तुलना की गई है, उसकी अब हम उद्भूति (potential) शब्दसे व्यवहार करेंगे। कठिन पदार्थके विभिन्न स्थलों पर दाबकी कमीवैशी हो सकती है, तरलपदार्थके विभिन्न स्थानोंमें दाबकी थोड़ी बहुत कमीवैशी होनेसे तरलपदार्थ हट कर दाबकी बराबर कर लेता है। अपरिचालकके भीतर ताड़ितकी उद्भूति विभिन्न स्थान पर विभिन्न परिमाणसे हो सकती है। परिचालकके अन्दर ताड़ितकी उद्भूति सर्वत्र समान होगी; जरा भी कमीवैशी होनेसे ताड़ित कुछ हट कर उद्भूतिकी समान कर लेगा। परिचालक और अपरिचालक दोनोंका ही स्वभाव वसा है। दोनोंमें ताड़ितकी जो क्रियाएं देखनेमें आती हैं, वे समी इस विभिन्न स्वभावसे उत्पन्न हैं। परिचालकके भीतर उद्भूति सर्वत्र समान होती है, इस कारण परिचालकके भीतर वहिस्व ताड़ितकी कोई खिंचाव वा धक्का प्रकट नहीं होता। अतएव परिचालकके किसी स्थान पर जराभी बिजलीका सञ्चार करने मात्र से समस्त ताड़ित केवल ऊपर ही फैल जाता है और वढ इस तरह फैल जाता है जिससे परिचालकके भरमें उसकी उद्भूति समान होती है, अर्थात् परिचालकके भीतर किसी जगह खिंचाव वा धक्का नहीं पाया जाता।

जैसे पानी जहाँ ज्यादा दाब है, वहाँसे, जहाँ कम दाब है, वहाँ जानेकी कोशिश करता है, उसी तरह विजली भी जहाँ उद्भूति अधिक है, वहाँसे, जहाँ उद्भूति कम है, वहाँ जानेकी चेष्टा करती है। वोचमें यदि अपरिचालकका व्यवधान हो तो सिर्फ चेष्टा मात्र हो कर रह जातो है, विजली एक स्थानसे अन्यत्र नहीं जाने पातो वीचमें सिर्फ खिंचाव पड जाता है। और यदि अपरिचालकका व्यवधान हो तो विजली सहज हो ढरक कर जाती है, दोनों जगह उद्भूति समान हो जाती है, खिंचाव नहीं पडता।

परिचालक और अपरिचालकका इस स्वाभाविक प्रभेदकी याद रखनेसे ताड़ित-वटित प्रायः सभी क्रियाओंकी एक प्रकारसे समझा जा सकता है। मान लो, कि एक पीतलके गोलेमें धन-ताड़ित मन्त्रित करके उसकी डोरेमें बांध कर टांग दिया गया। उसके चारों ओर सिर्फ अपरिचालक वायु विद्यमान है। पासमें उद्भूति अधिक है, जितनी दूर जाओगे उद्भूति उतनी ही घटती, जायगे। और एक छोटे गोलेमें धन-ताड़ित ले कर उसे उसके पास यामनेमे वह क्रमशः दूर जाना चाहेंगा। क्योंकि यह धन-ताड़ित, जिधर जानेसे उद्भूति घटती है उसी तरफ जाना चाहता है। धन-ताड़ितके साथ ऋण-ताड़ितके प्रभेदकी याद करनेसे ही समझ सकते हैं, कि उस प्रदेशमें ऋण-ताड़ितयुक्त एक छाटा गोला रखनेसे वह क्रमशः दूरसे पास आवेगा। धन ताड़ित जहाँ उद्भूति अधिक है, वहाँसे जहाँ कम है, उसी तरफ जाता है। ऋण-ताड़ित जहाँ कम है वहाँसे जहाँ अधिक है, उसी तरफ जाता है। धन-ताड़ित धन-ताड़ितकी धक्का मारता है, ऋण ताड़ित भी ऋण ताड़ितकी ठेल देता है, किन्तु धन-ताड़ित ऋण-ताड़ितकी खींचता है।

ताड़ितका परिमाण।—ताड़ितकीचणयन्त्र ताड़ितके अस्तित्व निरूपणार्थ व्यवहृत होता है। ताड़ित किस आतिका है, इसका भी सहजमें निर्णय किया जा सकता है। उपस्थित ताड़ितमें जय यन्त्रकी दोनों पत्तियाँ अलग अलग हो जाय, तब काचके ताड़ितकी पास ले जाने पर यदि पृथक्त्व और भी बढ जाय तो समझना चाहिये कि, उपस्थित ताड़ित धन ताड़ित है। और यदि पृथक्त्व

घंट बायें तो उसे कष्ट-ताड़ित संसर्गना चाहिये । धन और कष्ट दोनोंके परस्पर-व्यय रक्षितसे यदि पतियां जरा मो परस परस न हों तो समझें कि धन और कष्ट दोनोंका परिमाण समान है । कुछ घुबकलकी देख कर ताड़ितका परिमाण मो स्पृह्यत निर्धारित हो सकता है । सूर्यमासके ताड़ित-परिमाणको प्रयान्तिषोका उल्लेख करना प्रभावशाल्य है । यही तब याद रखना चाहिये कि यन्त्र द्वारा ताड़ितको ज्ञाति और परिमाण दोनोंका ही निर्णय किया जा सकता है ।

ताड़ितकी कल्पना।—इसो तरह यन्त्र द्वारा परिमाण और परीक्षा करके देखा जाता है कि, ताड़ितका धन नही है । जिसको एक-ज्ञानसे दूरसे ज्ञानकी एक धाधारके अन्य धाधारमें जा सकता है, इसकी कल्पनास्मात्कथा भी धन नही होता । साधारणता विज्ञानकी जो बहुत दूर तक एकाग्र जागृ नही रखी जा सकती, उसका प्रधान कारण धार्मिकता पदायुक्त पारिभाषिक परिचायकत्व को है । विज्ञानी बायु पक्षसे तथा भूतिकाया प्रकृतका पारिभाषिक धाधार कर और योग परिचायित हो कर एक इच्छाके ऊपरके अन्य दृष्टिके ऊपर जाता करता है, किन्तु उसका धन नही होता । डॉक्टरेटके दिनके बांधका पोशाक वस्तुस वास्तुशिल्प करके उसके भीतर नही तक ताड़ितवृत्त पदायुक्तकी धाधार कर रक्ता था, बहुत वर्षोंमें ही ताड़ितके परिमाणका ज्ञान नही हुआ था ।

धर्मात् दस भाग धन-ताड़ितमें पांच भाग धन ताड़ित मिलानेके सर्वाङ्ग और सर्वाङ्ग ठीक पन्द्रह भाग धन ताड़ित पाया जाता है । मित्राने समय परिमाण बढ़ता नही । इस भाग कष्ट-ताड़ितमें पांच भाग कष्ट-ताड़ित मित्रानेके सर्वाङ्ग पन्द्रह भाग कष्ट-ताड़ित होता है । और दस भाग धनमें पांच भाग कष्ट मिलानेके दो भाग धन होता है । इस भाग धनमें दस भाग कष्ट मिलानेके धन या कष्ट किसीका मो प्रकृतत्व नही रहता । इस ज्ञानमें मो कल्पना पड़ेगा, कि धन और कष्टमें दोष हुआ है । धनका धन या नाश हुआ है, पैसा कल्पन मूल्य है ।

ताड़ितका प्रकृतत्व कोड़ेके धन ताड़ितके पांच

एक दीतलकी कोड़े धन कल्पना सहायतासे यामी । पूर्वोक्त निबन्धानुसार धन-ताड़ितको पारममें उद्भूति पश्चिम और दूरमें उद्भूति कम होती है । पतएव हन वास्तुशिल्पका जो पाय्य धन-ताड़ितक सन्ध, कष्ट और निबन्धक है, वही उद्भूति पश्चिम तथा जो पारम्य पौष्टिके और दूरी पर स्थित है, वही उद्भूति कम होती है । उक्त वस्तुको वही ज्ञानसे पक्षके समके ऊपर लिखो ज्ञानमें ताड़ितका विज्ञानात्मक न या किन्तु उक्त देखोगे कि, सामनेके सामने कष्ट ताड़ित और पक्षाङ्गा में धनताड़ितका आविर्भाव हुआ है धर्मात् परिचानक वास्तुशिल्पके समावयवमें किञ्चित् धनताड़ित, वही उद्भूति पश्चिम को नही, वही उद्भूति कम है, वही पक्षा गया है, निबन्धने दूर और सामनेके पौष्टिक नया है । और जोड़ाका कष्ट ताड़ित विपरीत दिशाकी धर्मात् दूरसे पारममें, पक्षायुक्त सामने नया है । आपनेसे देखेंगे कि, नूतन धर्मिभूत धन-ताड़ितका परिमाण ठीक कष्ट ताड़ितके समान है । पहले ज्ञानो उस वास्तुके भीतर शून्य परिमित ताड़ित प्रकृतत्वमात्रसे निश्चित था, धन नही शून्य परिमित ताड़ित किञ्चित् धन और उत्तने ही शून्यसे निश्चित हो कर विभिन्न दिशाको बंट गया है । इसीको ताड़ितका सप्रमाण कहते हैं ।

यह कल्पना वास्तुका मात्र है कि, परिचायकके समावयवसे पैसा होता है । परिचायक पदायुक्त पैसा नही होता, किञ्चित् उसके दोनों पायमें उद्भूति परमाण न होनेसे मो ताड़ितमें गति नही होमो । और परिचायकके दोनों पारम्यमें उद्भूति धनमान होनेके जो कुछ धन-ताड़ित अपने धाय बंट कर पक्षात् भागको उद्भूतिको करत बड़ा देता है ; जोड़ाका कष्ट ताड़ित अपने धाय बंट कर सामनेकी उद्भूति बटा देता है । इससे उसके किञ्चित् धर्मात् उद्भूति परमाण नही रह सकता, सब त उद्भूति समान हो जाती है । उक्त समक कष्टके भीतर ताड़ितका किञ्चाव नही रहता पक्षात् ताड़ितको जिधामें उद्भूति नही रहती ।

इस कल्पनके समक कितने धन और ठीक उत्तने ही शून्यका विचार होनेके समय ताड़ितका परिमाण पहले जितना था धन भी उत्तना ही रहता है । ताड़ित



का लेशे ध्वंस नहीं है, वैसा ही सृष्टि भी नहीं है। एक जगहसे कुछ धन ताड़ितकी हटा कर एकत्र संचित करनेसे अन्यत्र किसी न किसी जगह ठोक उतने ही ऋण-का आविर्भाव और विकाश होता है। योगफल शून्य ही रहता है। माइकेल फरादि हम मतके प्रतिष्ठाता है।

एक टोनके या अन्य किसी धातुके बकसकी भूमिसे अलग कर अर्थात् अपरिचालक द्रव्यमें परिवर्त करके उसके भीतर एक धन ताड़ितयुक्त गोला लटका दो। बकसके बाहरके हिस्से पर धन ताड़ित और भीतरके हिस्सेमें ऋण ताड़ित का विकाश होगा। उल्लिखित संक्रमण दो दसका कारण है। बकसके बाहरी हिस्से को छूनेसे वहाँका धन ताड़ित तत्क्षणत् शरीरके मध्यमें चला जाता है। अभ्यन्तरमें गोलाका धन और बकसके भीतरी हिस्सेमें ऋण-ताड़ित वर्तमान रहता है। तड़िहीक्षण द्वारा बाहरमें कहीं भी कोई ताड़ितक्रिया देखनेमें नहीं आती, भीतरके गोलकी सड़मा बाहर निःशून्य लेनेसे ऋण-ताड़ित भी माय ही माय बकसके अन्तःपृष्ठसे बाहरके पृष्ठमें आ कर पड़ता है और तड़िहीक्षणसे पकड़ा जाता है। और गोलका यदि निकालनेसे पहले बकसके गात्रसे स्पर्श कराया जाय, तो बाहर निकालनेके बाद गोला अथवा बकसमें कहीं भी किसी ताड़ितका लेशमात्र नहीं मिलता। प्रमाणित हुआ कि, गोलामें जितना धन था, बकसके भीतर भी उतना ही ऋणका आविर्भाव हुआ था, नहीं तो दोनोंका योगफल शून्य नहीं होता।

जिस कोठरीके भीतर मैं बैठा हूँ, उसको एक वृद्धत् परिचालक बकसके समान समझ सकता हूँ। कोठरीके भीतर किसी जगह कुछ धन-ताड़ित रखनेसे कोठरीके भीतर दोवारों पर ठोक उतने ही ऋण-ताड़ितका आविर्भाव होगा अर्थात् चारो ओरको दोवार, नोचेकी जमीन और ऊपरको छत पर सर्वत्र घोड़ा बहुत ऋण-ताड़ितका विकाश होगा, सबको एकत्र करनेसे ठोक अभ्यन्तरस्थ धन-ताड़ितके साथ परिमाणमें सामान होगा, जरा भी कम वा ज्यादा न होगा।

कोठरीके भीतर न सुना कर यदि खुले मैदानमें धन-ताड़ितयुक्त एक गोला लटकाया जाय, तो उसके

चारो ओर जहाँ जहाँ परिचालककी पोठ है, वहाँ वहाँ कुछ कुछ ऋण-ताड़ितका विकाश होगा। नोचे मैदानमें जमीन पर कुछ दूरवर्ती वृक्ष वा पहाड़ पर किञ्चित् उपरिस्थ आकाशमें एक सेत्र होनेसे उसके गात्रमें भी यत् किञ्चित् ऋण-ताड़ितका आविर्भाव होगा। किन्तु यदि जगतमें जहाँ जिनना ऋण-ताड़ितका ऐसा आविर्भाव हुआ है, उसको एकत्र नंग्रह कर रखा जाय, तो उसको समष्टि उभ सूत्रनन्वित गोलके पृष्ठदेशवर्ती धन-ताड़ितकी अपेक्षा जरा भी क्षमता या बढतो न होगी।

ऊपर जो टोनके बकसका उल्लेख किया गया है, उसके भीतर धन-ताड़ित ले जानेसे बाहरके हिस्सेमें धन और भीतरी हिस्सेमें ऋण-ताड़ितका आविर्भाव होता है। किन्तु बकसके भीतर यदि रेशम पर काँच घसा जाय, तो काँचमें धन-ताड़ितका विकाश होता है, किन्तु बकसके बाहरी हिस्सेमें किसी भी ताड़ितका चिह्न नहीं मिलता। काँचमें जैसे धनका विकाश होता है, वैसा ही रेशममें साव माय ऋणका विकाश होता है। काँचमें जितना धन उत्पन्न होता है रेशममें ठोक उतना ही ऋण उत्पन्न होनेसे बाहर कोई फल नहीं होता।

ताड़ितकी प्रकृति।—पहले हो कह चुके हैं, कि ताड़ित पदार्थ क्या, शक्ति है या धर्म, इसका अभी तक कुछ निर्णय नहीं हुआ। ताड़ितके स्वरूपनिर्णयमें प्रवृत्त होने पर इस बातको याद रखनी चाहिये। ताड़ित कोई भी पदार्थ क्यों न हो, जगत्में उसकी नूतन सृष्टि वा ध्वंस नहीं है। शुद्ध धन वा शुद्ध ऋण-ताड़ितका हम किसी तरह भी सञ्चय नहीं कर सकते। कुछ धन ताड़ित किसी जगह किसी उपायसे संचित होने पर ठोक उतना ही ऋण-ताड़ित साथ हो साथ किसी न किसी जगह आविर्भूत होगा। और इसी तरह कुछ धनका किसी स्थानमें लोप होनेसे ठोक उतने ही ऋणका अन्यत्र कहीं लोप होगा। योगफल समान ही रहेगा। धन-ताड़ित सिर्फ समपरिमाण ऋण ताड़ितसे पृथक् होता है। पानो जिस तरह दाब पहुँचता है, विजली उसी तरह उद्भूति उत्पन्न करती है। धन ताड़ितके जितने पासमें जाओगे, उतनी ही उद्भूति अधिक

होने और शब्द-ताड़ितके जितने पापमें जापोमि उद्भूति उतनी ही कम होगी। धन पवित्र उद्भूतिबुद्धि स्नानसे पूर जानेकी और शब्द उससे विपरीत दियाको जानेको चेष्टा करता है। धन जब एक तरफ पसी, तो समझना चाहिये कि शब्द भी विपरीत दियाको आ रहा है। परिचासक प्रदेशमें उद्भूतिको जगोधिगो को सबतो है, जहाँ कि परिचासकके भीतरसे विजयी सङ्गमें जा नही सकतो। परिचासकके भीतर उद्भूति सबस समान होती है, जहाँकि जहाँ धन और शब्द बिना वाचाके धन फिर बार उद्भूतिको समान बार सेते हैं। सर्वस उद्भूतिको समान बारसे समय धन ताड़ितकी गति शब्दको तरफ घबरा शब्दकी गति धनकी तरफ होती है। वस स्वरूप दोनीका मन्थनन वा योग होता है, धर्मात् कुछ धन और धर्म ही शब्दका तिरोग्माव होता है।

साहित्य महत्त्व विषय।—साधारणता दो बातें प्रथीको ताड़ितबुद्धि करके दोनीको बुधा देनेके सम्पत् ताड़ितको दोनी बाँट सेते हैं। तात्पर्य यह है कि जो बड़ा होता है, उसमें ही ताड़ितका पत्र पवित्र पड़ता है। प्रथम पायतन और पाचारको देख कर जिसके द्विधर्म जितना पड़ता है, वहाँकी मन्थना को जा सकतो है।

जिसो प्रथम कुछ धन-ताड़ित देने पर उसको उद्भूति बहर पड़ती है, ताड़ित जितना ज्यादा दिया जायगा, उद्भूति उतनी ही बड़ जायगा। और छोटी वस्तुमें बरामो विजयो देखनेके जितनी उद्भूति पड़ती है एक बड़ा वस्तुमें उतनी देनेके उद्भूति उतनी नहीं पड़ती। एक दाहीमें और एक म्बानमें समान जस दाहनेके म्बानके पानमें उचता और वाप्यजितनी होती है, उतनी चानके पानीमें नहीं होती, पिसा हो इसका विसार है। चाकृत और परिमाण मानू म रहने पर, जिनका विज नीके जितनी उद्भूति बड़तो है वह बड़ा जा सकता है। दो चोकोको बुधा देनेके जितमें उद्भूति पवित्र है बड़ाके जितमें कम है, उसमें जोड़ावा धन-ताड़ित चला जाता है। इतिहास समय ताड़ित दोनी चोकोमें बाँट जाने पर दोनीको उद्भूति समान हो जाता है।

धन्याय्य दूधोंकी तुलनामें पवित्रको पाचार उतना बड़ा है कि धन्य प्रथीके द्विधर्म ताड़ितके जाने धानमें

पवित्रको उद्भूतिकी करा भी चति-पवित्र नहीं होती। इसीलिए किसी ताड़ितबुद्धि प्रबन्ध मूमिये धर्म होने पर उसको प्रायः तमाम बिजयो द्विधर्मों चको सातो है। द्विधर्मोंके द्विधर्मों प्रायः सब पड़ता है। परन्तु तो भी द्विधर्मोंको उद्भूतिका बरा भी व्यतिक्रम नहीं होता। महाभागमें जितना ही पानो गिरता है और जितना ही निकसता है, पर तो भी उसमें कुछ घटतो बड़तो नहीं होती, उसकी मर्यादा समान हो रहती है, इसका विसार भी प्रायः वैसा ही है।

पुष्पिको उद्भूतिको महजमें ज्ञान इति नहीं होते, इसीलिए धन्याय्य ताड़ितबुद्धि पदार्थकी उद्भूतिको पुष्पिको के ज्ञान मिना बार परिमाण निर्णय करनेको प्रया है। परंतुको उचता मापनो को तो वह मात्रा-प्रसवे कितना ज्ञान है और समुदायो गमोरता मापनो को तो वह जिनका मोबा है, यही देना जाता है, इसी तरह जिसको स्नानमें ताड़ितको उद्भूतिका निचय करनेके लिए वह द्विधर्मोंके जितनी ज्यादा वा कम है, वही मातका निर्णय किया जाता है।

पानो जेने अर्थके धर्म पाप मोकेको जाता है ताप जिस तरह गरम जगहमें गीतक ज्ञानको जाता है, धन-ताड़ित भी उसी तरह जहाँ उद्भूति ज्यादा है वहाँके जहाँ कम हो, वहाँ जाना चाहता है। इसीलिए जिसो अन्ध ताड़ित सचित करना हो तो उद्भूति जितनी कम हो, उतना ही सुमोता है। पानोका जेने जेने जगहमें न रक कर नीको जगहमें रखनेके सुमोता पड़ता है, गिरनेका डर नहीं रहता। वही भी कुछ कुछ बेसा ही समझें। इसीलिए धर्म स्नानमें धोर पिसे उपायसे धन ताड़ित मन्थित कर रचना चाहिये कि, जहाँ उद्भूति पूर ज्यादा न हो। धन्याय्य ताड़ितके निचय जानेकी पायदा रहनेको।

अन्धेव वार।—एक डीलको पहर पर कुछ धन-ताड़ित मन्थित कर-रकते। और एक डीलको बहरको जगहमें लेना कर उनके सामने समान्यराज करके रहते। इस पहरको जो पीठ पड़को बहरके सामने है, उस पीठ पर शब्द ताड़ित म म्बानकवयता धानिभूत होता है। पड़को बहरमें जितना धन होमा, वही उतना ही म्ब

रहेगा। यदि सिर्फ धन ताड़ित हो उसमें गयेष्ट उद्भूति होती, पासमें ऋण होनेसे उसकी उद्भूति उतनी नहीं हो सकती।

दूसरो चहरको जितने पासमें रक्ता जायगा, उद्भूति उतनी हो कम होगी। इसलिए ऐसे स्थान पर पहलो चहर पर बहुत धन-ताड़ित सञ्चित कर रखने पर भी उसकी उद्भूति ऊँचेको नहीं चढ़ती। ताड़ित सञ्चित कर रखनेकी जहरत पढ़ने पर ऐना उपायका श्रवणस्वन करना उचित है। एक काँचशो बोलतके भीतर और बाहर जम्ताके वरक चिपटा देनेसे, वह ताड़ित पकड़ रखनेका उमदा यन्त्र बन जाता है। ऐसे यन्त्रको लोडिन-जार कहते हैं। ऐसे ही कुछ लोडिन-जारोको बराबर बराबर मजा कर मत्रके भीतर और बाहरके हिस्सा को धातु द्वारा जोक दो, इस तरह वैटरो बन जायगा। उसमें काफो विजली सञ्चित की जा सकती और बहुत-देर तक रकतो जा सकते हैं। बाहरका हिस्सा जमोलकी छुए रहता है, भीतर जितना धन होता है, बाहर उतना ही ऋण सञ्चित रहता है। मतलब यह है कि धन भपने सहचर ऋणके पास रहे, तो दोनों दोनोंकी बाँध रखते हैं, अन्यत्र नहीं जाने देते। और दूर रहनेसे दोनों हो अन्यत्र जानकी कोशिश करने रहते हैं।

योंतो जहाँ भी ताड़ित है, वहाँ ऐसे लोडिन-जारकी भी सृष्टि होती है। किमो चोज पर कुछ धन ताड़ित रहनेसे ही अन्य किसी चोज पर दोषाल या जमौन पर उसका सहवर्ती ऋण-ताड़ित अवश्य ही रहेगा। इसके सिवा कुछ धनके सामने कुछ ऋण रख कर बीचमें अपरिचालकका व्यवधान देनेसे लाडिन-जारकी सृष्टि होती है। बात यह है, कि वह व्यवधान जितना कम होगा, धन और ऋण जितने पास पास होंगे, उस लोडिन-जारकी कार्यकारिता, अर्थात् दोनों ताड़ितकी स्थितिशोभता उतनी ही अधिक होगी। वायवीय-व्यवधानकी अपेक्षा काँच आदिके द्रव्योंका व्यवधान उस स्थितिशोभताके अधिक भलकूल होता है।

ताड़ितका सञ्चालन:—पुनः पुनः उल्लिखित हुआ है, कि धनताड़ित जहाँ उद्भूति अधिक है, वहाँसे जहाँ उद्भूति कम है, उसी तरफ तथा उसका सहवर्ती

ऋण-ताड़ित उनटो तरफकी जानकी चेष्टा करता है। बीचमें अपरिचालक रहनेसे सहजमें परस्पर मिल नहीं सकते, परिचालक रहनेसे उभी समय मिल जाते हैं। ताड़ितका यह सञ्चालन था गता-शत साधारणतः तीन प्राणालियोंमें होता है।

(१) बीचमें परिचालकका व्यवधान होनेसे दोनों ताड़ित उभो समय मिल जाते हैं। एक तौंचे या पीतल अथवा किसी भी धातुके डण्डे, तार या जञ्जोरसे धन ताड़ित और ऋण-ताड़ितको परस्पर छुआ देनेसे, दोनों ही उस धातु द्रव्यके द्वारा विपरोत दिशाको धावित होते हैं। उस धातुमें क्षणिक प्रवाहका मञ्चार होता है। दोनों ताड़ितोंका मिल जाना प्रवाहका फल है। मिल जानेसे सर्वत्र उद्भूति समान हो जाती है और प्रवाह बन्द हो जाता है। ताड़ित-प्रवाहके विशेष धर्मको धातु पीछे कहेंगे। मामूला तोरसे यह याद रखना चाहिये, कि उद्भूति समोकरणको चेष्टासे ही परिचालकमें ऐसे क्षणिक प्रवाहको उत्पत्ति होती है। जिसके भीतरसे प्रवाह चलता है, वह उत्तम होता है।

(२) धन और ऋण ताड़ितके मध्य काँच, वायु आदि अपरिचालक व्यवधान होनेसे दोनोंका मिलना सहजमें नहीं होता। धनके निकटवर्ती प्रदेशमें उद्भूति अधिक और ऋणके निकटस्थ प्रदेशमें उद्भूति कम रह जाती है। किन्तु इस उद्भूति-वैषम्यके फलसे धन हमेशा ऋणकी तरफ और ऋण धनकी तरफ जानकी चेष्टा करता है। जिन दो पृष्ठों पर दोनों ताड़ित सञ्चित होते हैं, वे परस्पर आकृष्ट होते हैं और यदि रोक न जाय तो अग्रसर हो कर आखिर तक एक दूसरेको छूते हैं। दोनोंके मध्यवर्ती प्रदेशमें एक खिंचावसा पड़ जाता है। इस उद्भूतिके वैषम्यकी क्रमशः बढानेसे वह खिंचाव आखिर तक इतना बढ जाता है कि फिर मध्यवर्ती अपरिचालक भी दोनों ताड़ितकी पृथक् नहीं रख सकता। इस्पात या स्वरका तार बहुत कुछ खिंचावको सह लेता है, किन्तु ज्यादा खिंचाव पढ़ने पर टूट भी जाता है। इसी प्रकार बीचका परिचालक भी आखिर तक टूट जाता है। परिचालककी तोड़ कर ताड़ित मानो अपनी रास्ता कर लेता है और उस रास्तासे दोनों

ताड़ितका सम्बन्धन होता है। सम्बन्धनके बाद फिर उद्भूतिमें वैयर्थ्य नहीं रहता, और न अपरिचायकके बोधमें बिधायक हो रहता है।

इस तरह अपरिचायक बिध हो कर दोनों ताड़ित का मेल होने पर विविध उत्पात होते हैं। अपरिचायक यदि कायबोय रूप्य हो, तो वह संज्ञमा इतना उत्पन्न होर प्रभावित होता है, कि उसमेंसे ध्वनिस्फुटित्वा निकलती होर शब्द होने समता है। काँच कागज, मजहूँ या कठिन पदार्थमें होनेसे यह टूट या फट जाता है। बोधमें बाधद हो तरहका टाँचा पदार्थ होनेसे यह जलने समता है। खोरे कोश-शरीर हो तो उसमें प्रचण्ड पाघात समता है।

ताड़ितमें स्फुटित्वा, वायुपट्टिक शब्द होर पाघात पादि इसी तरह हुआ करती हैं।

बड़े बड़े ताड़ित यन्त्रोंको महावताधि ये सब छिन पासामोने दिखाने जाती हैं। पानोशक शब्द पादि उत्पन्न करके विविध शोधनके तरह तरहके तमामे दिखाने जा मरती हैं। मोडिन कारकां मेटरोंमें बहुत ताड़ित छदित करके उस ताड़ितमें ऐसे पद्यालयन द्वारा नामा प्रकाशके पायव्यजनक कार्य किये जा मरती हैं। बहुतने भोगोंको एक दूसरेका बाध घमा कर एकका करके एक मोडिन कारके ताड़ितमें पाघात करनेसे सबका शरीर छाप ठठना है।

बड़े बड़े काँचके नमीमें छोड़ो चोड़ो पबिञ्जन कार झोजन पादि विविध कायू भर कर, उसमें इस तरह ताड़ित सञ्चालित करनेसे नामा प्रकाशके विविध वर्णोंक पानोशोंका विज्ञाय होता है। इन पानोशोंका विज्ञाय पसन्न मनोहर होता है। विविध पाकारके मल बना कर नामा प्रकाशके समदा समदा छिन तमामे दिखाने का शक्य है। ऐसे मलको गौसलरका (Goussier) मल कहते हैं।

किस बिधुत्वे माय ताड़ित-शब्दमें उत्पन्न ध्वनिस्फुटित्वा होर उससे वायुपट्टिक आर्याका माहुरन देय कर वैद्यमिन् प्राह्मिन्में पनुमान बिधा है कि दोनों हो एक हो कारकमें उत्पन्न होने हैं। क्वानि पनर उठा कर उसमें वैयर्थ्य ताड़ितका सञ्चय करायो का यह

ताड़ित पतङ्गके लयि रूप भीरी लूनके हाथ या कर उनकी प सुभियोंमें स्फुटित्वा देने लगा वा। पन्थाम्य परोचापों द्वारा क्वानि में उर्ध्व ताड़ित होर यन्त्रके ताड़ितमें एकता प्रभावित का हो। माहुरनमें बिधुत्वा ताड़ितका उद्भूत् स्फुटित्वा मात्र है होर मध्यमनि तदानुपट्टिक वायुका या शक्ति उत्पात होर प्रसारकनित शब्द मात्र है।

काँच केखनि द्वारा पानिष्कृत उद्भूतिमान यन्त्रको महावताधि देखा गया है कि जमोनके ऊपर वायुमण्डल में माय मन्त्र ताड़ितका जोड़ा बहुत बिधायक है। वायु रचिन में व प्राय सर्वदा हो ताड़ितमुक्त रहता है। यानोसे भावका होना होर वायुसे माय सर्वत्र हो मात्र इन ताड़ित विज्ञायका कारण है। सुद सुद पदम्य जन कथा जव जम कर उद्भूत्तर जन कथाका पाकार प्रारण करती होर में बन्धो छटि करती है, उस समय उस ताड़ितका परिभाष जोड़ा होने पर मो उसका उद्भूति बहुत ज्यादा हो जाती है। जमोन पर वा पाश्वर्कतों में बोधमें पश्चिमे ताड़ित न होने पर मो पूर्वीक लियमातुषार विपरोत त तड़िका सञ्चय होता है। उद्भूतिका वैयर्थ्य होर ताड़ितका बिधायक बहुत ज्यादा हो जाने पर मध्यम वायुराशिको बिध करके जलमें प्रकाश ताड़ित-स्फुटित्वाको उत्पत्ति जाती है काज हो मन्त्र पादि हो होती है।

(१) बहुततों विपरोत ताड़ित यदि पसन्न दूर हो तो ताड़ितके लिय मध्यम व्यञ्जानको संदे कर समके माय मिमन्त्र कठिन हो जाता है। बिन्धु देखा ज्ञानतमें मो बिमो एक जोशके ऊपर उद्युगुनार ताड़ितका मध्य नरो बिधा का मकता। उद्भूत्वे पर जहाँ जहाँ कथा कुछ, सुषय स्थान बतमान है, पबिञ्जाय बिञ्जो कयो ध्वनिमें या कर जमतों है होर चारो होर को बिञ्जो उत्पत्ती बधा देतो रहतो है। इस तरहके बन्धे देते रहनेमें बिञ्जो जन स्थानोंमें वायु-पट्टके निष्क मल-बाहतो है। वायुके मो अपरिचायक प म मट हो जाती है। वायुका हर एक कथा उस सञ्चित ताड़ितमें कि कुछ कुछ पदम्य करता तथा विच्छेद होर विविध हो कर जहाँ उद्भूति कम है वहाँसे उत्पन्न रहता है। इसी प्रकारसे वायुमें प्रकाश उत्पन्न होता होर वायुगवने वायु-

कणिका अथवा लम्बन ले कर धीरे धीरे ताड़ित निकलता रहता है।

किसी नुकीले पदार्थमें ताड़ित सञ्चित करने पर उस ताड़ितकी रोकना कठिन हो जाता है। नुकीले स्थानमें ताड़ित जमता है और चारों तरफसे धक्का पा कर वायुपथसे निरूल जाता है। वायुमें जो प्रवाह उत्पन्न होता है, उसको कौशलसे प्रत्यक्ष दिखाया जा सकता है। इसके सिवा सूचोके सुँड़के पास वायुमें नाना प्रकारके आलोकिका विकाश होता है। अंधे घरमें ताड़ित-यन्त्र चलानेसे सूचोके सुँड़ पर ऐसे आलोकिका विकाश देखने में आता है।

वज्रपातकी आशङ्का निवारणार्थ मकानके वगलमें सूक्ष्माय धातुदण्ड गाड़ रखनेको प्रथा है। ऊपरमें घमें ताड़ित सञ्चित होने पर नीचे जमोन पर भी उसके सङ्घर्षकी विपरीत ताड़ितका संक्रमण होता है। वह ताड़ित जमोन पर आवह न रङ्ग कर धातुदण्डके सूक्ष्म अग्रभागे क्रमशः निकल जाता है। एक साध व्यादा ताड़ित भूपट पर आवह वा सञ्चित न हो सकनेके कारण, वज्रपात अर्थात् सञ्चित ताड़ितके शिवावसे वायुगर्भमेंसे आकाशिक भेदजनित स्फुलिंग निकलनेकी आशङ्का नहीं रहती।

फिनहाल ताड़ित-स्फुलिंगके विषयमें नये नये विविध तत्त्वोंका आविष्कार हुआ है। उनसे मालूम होता है, कि इस तरहके धातु दण्ड द्वारा सम्यक् फलदायिकी सम्भावना कम है। वज्रपातको आशङ्काको निर्मूल अर्थनेके लिये मकानको लोहे या ताँबेके जालसे ढक देनेके सिवा अन्य उपाय नहीं है।

ताड़ितयन्त्र—पर्याप्त परिमाणमें ताड़ित उत्पादन और सञ्चय करनेके लिए विविध यन्त्रोंका आविष्कार हुआ है। अल्प मात्रामें ताड़ितकी आवश्यकता होने पर महजमें मिल सकता है। एक तश्तरोमें थोड़ीसी लाठ गला कर रखो। और दूसरी एक तश्तरोको काँच वा अन्य अपरिचायक दण्डके हल्येसे थामो। पहली रकावो दो तश्तुर पर फलानेन वा विज्ञोका चमड़ा दो बार बार विषयसे उसमें कुछ ऋण-ताड़ितका विकाश होगा। दूसरी रकावोकी इस ताड़ितके सामने लाठी और

उँगलीमें उसे एक बार छू दो। अब इस रकावोमें भी कुछ धन-ताड़ित संक्रमित और आविर्भूत देखोगे। वास्तवमें पहलीके ऋण और दूसरीके धनमें कुछ वायुभाव और व्यवधान रहनेसे एक प्रकार लीडन जारकी सृष्टि हो जाती है। अब हल्येको पकड़ कर दूसरी तश्तुरोको अलग कर दो और सञ्चित धन ताड़ितका यथेच्छ व्यवहार करो। इस तरहके यन्त्रको ताड़ितवहयन्त्र कह सकते हैं इसका अंग्रेजी नाम है Electro-phorus.

प्रचुर परिमाणमें ताड़ितोत्पादनके लिए नाना प्रकारके बड़े बड़े यन्त्र हैं। ये यन्त्र माधारणतः दो अंगोंके होते हैं। प्रथम अंगोंमें वर्षा द्वारा काँच वा अन्य द्रव्य पर ताड़ित उत्पन्न होता है। उस ताड़ितको फिर बड़े बड़े ताड़िताधारमें किसी तरह सञ्चालित और सञ्चित किया जाता है। इस अंगमें रामसनका (Ramsden) यन्त्र ही प्रसिद्ध है। इनमें ताड़ित गतिकी प्रत्यन्त अपेक्ष्य होता है, यही दोष है। जितनी महान्त की जाती है, उसका अधिकांश हवा नष्ट हो जाता है, उतना फल नहीं मिलता।

दूसरी अंगोंके यन्त्र कुछ कुछ ताड़ितवहयन्त्रसे मिलते जुलते हैं। मान लो कि, दो बड़े बड़े 'क' और 'ख' ताड़ितके आधारस्वरूप विद्यमान हैं। शुरूसे ही 'क'में थोड़ा धन और 'ख' में थोड़ा ऋण सञ्चित है। और एक तृतीय क्षुद्र द्रव्य 'ग' को लो। 'ग' को 'क' के पास पकड़ और एक बार जमोनसे छुआओ। 'ग' में किञ्चित् ऋणका संक्रमण होगा। 'ग' को अब हटा कर 'ख' को छू दो, 'ग' का प्रायः सम्पूर्ण ऋण 'ख' में चला जायगा। क्योंकि 'ग' छोटा और 'ख' बड़ा है, 'ख' में ऋणका परिमाण बढ गया। फिर 'ख' को 'ग' के सामने रख कर भूमि स्पर्श कराओ। अबकी बार 'ग' में धन संक्रान्त होगा। 'ग' को 'क'के पास ले जा कर 'क'को छू दो। प्रायः सम्पूर्ण धन 'क' में चला जायगा। अबकी बार 'क' में धनकी मात्रा बढ गई। इसी तरह मध्यवर्ती 'ग' को एक बार 'क'को तरफ और एक बार 'ग' की तरफ ले जानेसे तथा बीच बीचमें भूमिस्पर्शकी व्यवस्था करनेसे 'क' में क्रमशः धन और 'ख' में क्रमशः ऋणकी मात्रा बढ जायगी। दोनों ताड़ितका थोड़ा थोड़ा भंश ले कर प्रारम्भ

अरुने विषय तब दोनोंका प्रचुर प्रभाव ही सकता है।

इस संज्ञोके यन्त्रोंमें प्रक्रिया पश्चिम पश्चिम नहीं होता, तथा एक कोटिसे बलमें इतनी विद्युत् संचित की जा सकती है कि, जिसके विचारमें 'क' और 'ख' दोनोंके मध्य वायुपथमें कई रज्जु या कई फुट लम्बे क्लिष्ट धामानोके निक्षेप संभव हैं।

वोल्ट (Volts), वू (Voov) विम्बरस्टम (Wimhurst) प्रादिके बनावे हुए ताड़ितयन्त्र इसी संज्ञोके प्रत्यगत हैं। प्रायतन रकी यन्त्रोंका आदर होता है।

साहित्य-प्रवाह।—एक ताड़ितयन्त्रके ताड़िताधारमें कुछ ताड़ितका संचय करके एक ताड़ित तारके सम ताड़ित आधारको समीपमें लुपा देनेसे सम समय सम्यक् ताड़ित सम तारके अरिसे समीपमें पला जाता है। इस तरह ताड़िताधारकी उद्भूति भूमिकी उद्भूति समान ही जाती है, इसीका नाम है ताड़ित प्रवाह। यह प्रवाह संचयमात्र अचरता है। प्रवाहके आरंभ तार कुछ नरम हो जाता है। प्रवाहको यदि छात्रो बनावना चाहे तो यन्त्रके कार्यको बन्द न करके समाप्तार ताड़ित उत्पन्न करते रहो। एक तरफ लंबे ताड़ित आधारके निक्षेप कर ताड़ित अरिसे समता रहैमा, दूसरी ओर लंबी तरह लंबो ताड़ित आधारमें संचित होता रहैमा। इस तरह जब तक चरको ताड़ितका प्रवाह तारमें पलाया जा सकता है। तार क्रमशः उत्तम ही जाता है। तारके पास यदि एक चुम्बककी कोश रक्की जाय तो यह अपने ध्यानसे जोड़ाया बंद जायगा।

बीडिंग-आरके दोनों तरफ वातुदण्ड वा तार जोड़ देनेसे दण्ड ओर तारमें ताड़ितप्रवाह चलता है। अर्धमें संचित ताड़ित बाहर निक्षेप जाता है। जब ताड़ित एक छतसे एक ही ओर जाता है, अर्ध-ताड़ित पन्थ छतसे पन्थ दियाकी जाता है। इस स्थिति में ताड़ित प्रवाह संचलायो होता है। प्रवाहको छात्रो बनानेके लिए एक तल (पट) ताड़ितयन्त्रके साथ ओर दूसरा तल भूमिके साथ स जुड़ करके पश्चिम यन्त्रकी चलाती रहना चाहिये।

आट देखनेमें पाता है, कि परिचानक पदार्थोंको उद्भूतिको समान करनेके लिए एक प्रवाहको उत्पत्ति

होती है। जब तक ओरसे वा मूलन ताड़ित उत्पन्न करके परिचासक पदार्थके दोनों पक्षोंको उद्भूतिको समान रक्का जाता है, तभी तक ताड़ितका स्रोत एक पक्षसे पन्थ चलता रहैगा। उद्भूतिके समान होने से स्रोत भी बन्द हो जाता है।

ताड़ित-यन्त्रके द्वारा ताड़ितका को स्रोत उत्पन्न होता है, उसमें प्रवाहित ताड़ितका परिचासक पश्चिम नहीं होता। ताड़ितमें प्रवक्त स्रोत बहानेके पन्थ उपाय भी हैं।

आधारतः ताड़ितका प्रवाह अर्धमें ही न ताड़ितके प्रवाहका ही बोध होता है। किन्तु इस बातका हमेमा ख्याम रक्की कि, ताड़ित 'क' से 'ख' की तरफ बहता है ऐसा अर्धमें ही बनताहै 'क' से 'ख' को तरफ ओर बाह हो अर्ध ताड़ित 'क' से 'ख' को तरफ प्रवाहित होता है ऐसा समझे।

ताड़ितयन्त्रके बिना ताड़ितस्रोत उत्पन्न करनेके लिए तीन प्रवाह उपाय हैं—

(१) एक टुकड़ा तांबा और एक टुकड़ा दस्ता, दोनोंके कोनोंके सिवा कर पन्थ दो पानोंको मध्यक वा मध्यकीन मध्यकी दिश्ये लुपासे उनका निर्वाह प्रयोर भी उद्भवनि सयता है। मसपनो (Galvani) ने इस घटनाका प्राविष्कार किया था। दो विविध वातुके धाम-भावसे दोनोंमें ताड़ितका प्राविभाज होता है। एकमें धन और दूसरोंमें अर्ध प्राविभूत होता है। वोल्टा (Volta) इस घटनाके प्राविष्कर्ता है। जोड़ाया पानोंमें कपसा नमक वा कई विन्दु, दासक जाल कर उसमें एक तले और एक अर्धसे टुकड़ेको प्राविष्कारवाने लुपी दो तथा एक तारके द्वारा ताड़ितके साथ आधरमें अर्धोंको संचय कर दो। आधरमें ताड़ितके अर्धोंकी तरफ तार द्वारा ताड़ितका (पर्याय् धन ताड़ितका) स्रोत चलैगा। पानोंके भीतर अर्धोंके ताड़ितकी तरफ स्रोत चलैगा। अब तक दोनों वातुके पानोंके भीतर लुपो रहैगा तब तक यह ताड़ित-स्रोत चलता रहैगा। लुपो हुए अर्धोंका ओर ओर घाय हो जायगा।

इस तरह ताड़ितका कोष (Cell) तैयार होता है। कोषके अन्दर आधारतः मध्यकद्रासक पानोंमें सिवा

कर 'वायव्य' होता है। इस गन्धकद्रावकमें एक जप्तो का और एक अन्य धातुका टुकड़ा पड़ा रहता है। यह द्वितीय धातु विभिन्न कोषोंमें विभिन्न होती है। इसमें ताँबा, प्लाटिनम्, पारद तथा जमा हुआ कोयला तक व्यवहृत होता है। इस धातुद्रव्यको तार द्वारा जस्तोके साथ जोड़ देनेसे उस तारमें ताड़ितका स्त्रोत बहता है। जस्ता क्रमशः गन्धकद्रावकके साथ रासायनिक मिश्रणसे मिल कर लयकी प्राप्त होता है। इस रासायनिक प्रक्रियासे हाइड्रोजन वायु उत्पत्ति हो कर ताँबे या तद्विषय अन्य किसी भी धातुके कोषमें रहती है, उसके गात्रमें उत्पन्न होती और ताड़ितप्रवाहका क्रमशः क्षीण करती है। इस लिए इस हाइड्रोजन वायुकी जला देनेको जरूरत पड़ती है। प्लाटिनम् अथवा कोयलाको इसी लिए एक मिट्टीके भाँडमें नाइट्रिक एसिड (यवचारद्रावक) द्वारा भिगो रखनेकी रीति है। उक्त द्रावक हाइड्रोजन वायुकी जला देता है।

ताड़ितप्रवाहके लिए विविध कोष प्रचलित हैं। दानियेनके कोषमें ताँबा और जस्ता, प्रोवके कोषमें प्लाटिनम् और जस्ता, बुनमेनके कोषमें कोयला और जस्ता व्यवहृत होता है। दानियालका कोष भीरोंमें कुछ कमजोर होता है। क्षीणप्रवाह उत्पादनके लिए उसका व्यवहार किया जाता है। हाइड्रोजन जलानेके लिए नाइट्रिकके बदले वाइक्रोसिक एसिड आदिका भी व्यवहार होता है बाहरमें ताड़ित-स्त्रोतका प्रतिबन्धक अधिक होने पर कुछ कोषोंकी धरावर धरावर सजा कर एकका ताँबा दूसरेका जस्ता, इस तरह क्रमसे संलग्न करके बैटरी बनाने चाहिये। बाहरमें प्रतिबन्धक अधिक न होने पर एक कोष ही दृश्य कोषका काम देता है, क्योंकि कोषोंमें भी कुछ कुछ प्रतिबन्धक कमता मौजूद है। संख्या बढ़ानेसे प्रतिबन्धक भी बढ़ेगी।

ताड़ितयन्त्रसे ताड़ितस्त्रोत उत्पन्न करनेसे उस ताड़ितका परिमाण अधिक नहीं होता, किन्तु उसमें उद्भूति बहुत ज्यादा होती है। कोषसे जो प्रवाह उत्पन्न होता है, उसको उद्भूति उसके सामने बहुत कम है, किन्तु प्रवाहगतं ताड़ित का परिमाण अधिक होता है। यन्त्रजात प्रवाहकी 'जैसे स्थानसे पतनशील' 'सर्वेण क्षीण जल-

धारा' साथ और कीर्णजात प्रवाहको प्रायः समभूमि पर धीरे प्रवहमान विगल नदीके स्त्रोतके साथ तुलना हो सकती है। यन्त्रका प्रवाह मानो नायायाका जल-प्रवाह है और कोषका प्रवाह मानो भूगोरीवीका स्त्रोत।

(२) एक ताँबे और एक लोहेके तारके दोनों छोरोंको जोड़ कर यदि एक सन्धिस्थलमें उच्चाप और दूसरेको ठण्डा रखा जाय, तो दोनों तारोंमें ताड़ित-प्रवाह चलने लगता है। कोषज पवाह रासायनिक गति भो ऐसे स्थानतमें प्रवाह-तारसे उत्पन्न होती है।

इस प्रवाहका उद्भूति बहुत कम होती है, हाँ, दोनों सन्धिस्थलोंके बीचमें उष्णताका अत्यन्त इतरविशेष होनेसे हा थोड़ा बहुत प्रवाह दाख पड़ता है। ताँबे और लोहेके बदले अन्य दो धातु विशेषतः एल्यूमीन (रसाञ्जन) और विषमयका व्यवहार किया जा सकता है। दोनों सन्धिस्थलोंमें उष्णताके सामान्य तारतम्यसे यह ताड़ितप्रवाह उत्पन्न होता है, इसलिये यह प्रवाह उष्णताके आविष्कारके लिए व्यवहृत होता है। जहाँ उष्णता इतनी कम हो कि जो साधारण पारदघटित तापमान-यन्त्रमें भो पकड़ी नहीं जा सकती, वहाँ भी इस उपायमें वह पकड़ाई देती है। चन्द्र और नक्षत्रके आलोकके उच्चापकी आनेके लिए इस यन्त्रका व्यवहार होता है।

(३) आजकल प्रायः विविधकार्यमें अल्प उद्भूति-युक्त पर परिमाणमें भो प्रवल, ताड़ितप्रवाहका प्रयोग किया जाता है। यन्त्रज, कोषज वा तापज प्रवाहसे भो ये काम नहीं होते। डाइनामो नामक यन्त्र द्वारा इन उद्य प्रवल प्रवाहोंकी उत्पत्ति होती है। एक चुम्बकके पास ताँबेका तार घुमाते रहनेसे उसमें भो ताड़ितप्रवाह उत्पन्न होता है। डाइनामोके विषयमें विशेष विवरण पीछे दिया जायगा।

ताड़ित प्रवाह बहनेके नियम।—ताड़ितप्रवाह अपरिचालक पदार्थमेंसे नहीं बह सकता और इसलिये इससे ताड़ित स्फुल्लिङ्ग आदिके तमाम अन्त्रों तरह नहीं दिखाए जा सकते। इसको उद्भूति यन्त्रज ताड़ितको अपेक्षा बहुत कम है। हाँ, यह परिचालक मावके मोतारसे बनाया जा सकता है। सब धातुओंमें परिचालकता 'समान नहीं' होती। जिसमें परिचालकता कम है, उस-

में प्रवाह प्रतिबन्धको समता पश्चिक् है। धातुओंमें सबसे ज्यादा परिवर्तनना आंदोलन होती है, उससे गोले तैयार हैं। इटलिनम् जोडा, धोडा पादिमें परिवर्तनकता कम और प्रतिबन्धकता अधिक है। जिसमें प्रतिबन्धकता अधिक है, उसमें ताहित प्रवाह बनता तो है पर लहदे न हो जा सकता। पश्चिक् समयमें जोडा ताहित प्रवाहित जाता है। और जिसमें प्रतिबन्धकता कम है, उनमें जोडा समयमें पश्चिक् ताहित प्रवाहित होता है। इससे जिया को तार जिनका कडा होगा, उनको प्रतिबन्धकता हो उनको वा पश्चिक् होगी; जो जितना मोटा होगा, उसको प्रतिबन्धकता बतनी हो कम होगी। तथि कि मोटे और छोटे तारमें प्रवाह कूड दृष्टमें प्रतिबन्धकता बहुत कम होती है।

ताहितप्रवाह कोपसे निश्चय कर परिवारक राष्ट्रावे चलता है। जोधमें दो चार मार्ग मिलने पर जोडा बहुत मजमें जाता है। जिस मार्गमें प्रतिबन्धकता अधिक है, उन मार्गमें प्रवाह थोडा हो जाता है; और जिस मार्गमें प्रतिबन्धकता कम है, उसमें प्रवाह हो जाता है। जो मार्ग बड़ा पर जा कर एकत्र होते हैं ताहित प्रवाह भी बड़ा जा कर मिलता है; इस विषयमें नदी के माय ताहित प्रवाहका पूरा साहस है।

प्रवाहके धर्म—प्रवाहके विविध धर्ममेंसे तीन को प्रथम और हम कोसिंधि बहुत काममें पाते हैं—

(१) जिस धातुमें भीतर प्रवाह चलता है, वह गरम हो जाती है। कोपसे भीतर कितने लक्षोंका चय हुआ, वह देव कर कुल कितना ताप उत्पन्न हुआ इसका हिसाब लगाया जा सकता है। प्रवाहके मार्गमें लक्षों प्रतिबन्धकता अधिक है, बड़ा ताप भी पश्चिक् उत्पन्न होता है। इटलिनम् धातुमें परिवर्तनकता कम है, इटलिनम्के पतले तारमें प्रवाह चलानेसे वह तापने लगे हो जाता है। काँचके बस्तुके भीतर इटलिनम् या कोपसेका बारीक तार लगा कर साधारण ताहित प्रदोष (विजनी बत्ती) बनाये जाते हैं। उस तारमें प्रवाह चलनेसे वह उत्पन्न हो कर प्रकाश देने लगता है। यदि कोपसेका तार दिग्ग्राह तो बस्तुके बाहुगुण्य

कर देना चाहिये; नहीं तो कोपसेका तार उस प्रायमा।

रात्रपथ, मकान पादि पालोहित करनेके लिए दो एक कोपसे का प्रयोग करता। बहुत कम कोपसेको पंक्ति कर लगा कर उस बेंदोके प्रवाह लिया जाता है। बाहरमें जो तार रहता है, उसको एक समयके काट कर दो कोपसेके टुकड़े बना दिये जाते हैं। दोनों सुपोंके बीचमें सामान्य वातुके स्तरका व्यवधान रहता है। प्रथम प्रवाह उस वातुपरको भेद कर चलता रहता है। कोपसेका टुकड़ा और मध्यम वातुपर बनता और प्रदोष हो कर त्रिज रोयनी देता है।

पश्चिक् धर्म लक्ष पर इटलिनम्-जमित प्रवाह व्यवहृत होता है। एक जोडाका इटलिनम् बहुतसे कोपसेका काम होता है।

(२) ताहितप्रवाहके मार्गमें जोडासा पानो रकडो पर्याप्त कोपसे दोनों प्राक्तोंके पाये हुए दोनों तारोंका सुँह पानोमें कूबो दो। पानोमें दो चार सुँह मज्जक प्रथम छोड़ दो। प्रवाह जितना चलैगा, पानो उतना हो विघ्नित होता आयमा। जो तार कस्ये से मिला हुआ है, उससे सुँह पर बाइडोजन और जो तथि या इटलिनम् से संश्लय है, उसमें पश्चिक् लक्ष होमा। कस्ये सिक्कर पथ पदाधर्मों में इस तरहका विघ्न पथ हो सकता है।

साधारणतः इत्येक पदाध, चार पदाध तथा प्रथम और चारके समवायसे उत्पन्न आवधिक पदाध मात्र को यदि तरल पश्चिक्में हों तो ताहित प्रवाहके द्वारा उनमें रासायनिक विघ्न पथ हुआ करता है। जिसो किसी माय कोय और कठिन पदाधमें जो विघ्न पथ होता है, वह विघ्न कथित हुआ है। कावधिक पदाधका एक मात्र धातुमय और पथ माग उपधातुमय (Non-metallic) होता है धातुमाग लक्षोंसे सख्त तारके सुपमें और उपधातु मात्र तात्कालिक तारके सुपमें कथित होता है। बहुतसे मूल पदाध जो पथ रासायनिक उपायसे यौगिक के भीतरके बाहर निकाला नहीं जा सका है, वह इस उपायके विघ्न पथ और आविष्कन हुआ है। १८वीं शताब्दीके प्रारम्भमें नर डमको धोमो इनो तरह पदाधिम डम् (परक), सोडियम (पश्चिक्), कार्बोडियम (पश्चिक्)



आदि कुछ नवोन धातुओंका आविष्कार किया था। फरासीसो मोयासां साहबने पलरिन् ( दोषक ) नामक अत्युच्च वायवीय उपधातुको इस उपायसे योगिक पदार्थमेंसे निकाला है।

ताड़ित-प्रवाह धातुज द्रव्यको विक्षिप्त करके धातु भागको घृयक कर सकता है, इसलिये आजकल कलरुके काममें ताड़ितप्रवाह व्यवहृत होता है। किमी पदार्थ पर चाँदो, सोना, ताँबा आदि धातुको वारीकोसे चटा देनेका नाम कलरु वा गिन्टो है। इन धातुओंमें घटित लावणिक पदार्थको पानोमें गला कर उसमें ताड़ितप्रवाह चालित करो। जिम पदार्थ पर कलरु चटानो हो, उसको जस्तसे लगे हुए तारमें हिलगा कर उस द्रवमें डुबो दो। शीघ्र ही उस पदार्थ पर धातुमय सूक्ष्म आवरण जम जायगा किमी पदार्थ पर जरा मोटा आवरण चढ़ा कर उससे टाँचिका काम लिया जा सकता है।

( १ ) जिम तारसे ताड़ित-प्रवाह चल रहा हो, उसको एक चुम्बकको कोलरु ऊपर समान्तरान भावसे शान्तिमें कोल उसो वधत घूम कर तारके साथ खडे होनेकी कोशिश करेगी। चुम्बकका काँटा स्वभावतः उत्तर-दक्षिणमें रहता है, तारको उसके पास ( उत्तर-दक्षिणमें ) पकड़नेसे काँटा घूम जाता है। पृथिवीका चुम्बक-बल काँटिको उत्तर-दक्षिणमें रखना चाहता है और ताड़ित प्रवाह उसे पूर्व-पश्चिममें रखना चाहता है। तार-वाहित प्रवाह यदि दक्षिणसे उत्तरकी तरफ हो और काँटा तारके नोचे हो, तो काँटिका उत्तर-वर्ती मुख वार्ड और ( वा पश्चिमकी तरफ ) घूम जाता है एवं दक्षिणवर्ती मुख दाहिने ( पूर्व की ओर ) घूम जाता है। एकके उलटनेसे सब उलट जाते हैं।

ताड़ित-प्रवाहमें चुम्बक-शलाकाको इस प्रकार घुमाने को शक्ति होनेसे टेनिग्राफ वा ताड़ित वार्तावहकी सृष्टि हुई है। कलकत्तेमें ताड़ितकोष है और दिल्लीमें काँटा। कलकत्तेके कोषसे तार निकल कर दिल्ली चला गया और वहाँ चुम्बककी कोलके पाससे घूम कर कलकत्तेको लौट आया। प्रवाह कलकत्तेसे तारके जगिये दिल्ली चला गया, वहाँ कोलको घूमा कर फिर कलकत्तेके कोषमें वापस आ गया। लौटने समय तारके रास्तेसे

न आ कर जमोनके रास्तेसे भी आ सकता है। भूमि-पथमें परिचालकता भी अधिक है और खर्च भी कम है। इस तरह कलकत्तेमें बैठ कर इच्छानुसार दिल्लीमें चुम्बकका काँटा घुमाया जा सकता है। चुम्बकके काँटिको घुमानेसे ही सङ्केत हो जाता है। कोलको पाँच तरहसे घुमा कर पाँच तरहका सङ्केत भेजनेके लिए विविध कोण प्रचलित है। आज कल इस टेगमें टेनिग्राफ स्टेशनोमें मोर्सको पहति पर सङ्केत किये जाते हैं। उसमें चुम्बकसे संलग्न एक ज्योडो खट्, खट् करके नाना प्रकारके शब्द करनी है, अथवा एक कागज पर भाँक बना देतो है। उक्त शब्दोंको सुन कर वा भाँक देख कर सङ्केत निरूपित होते हैं। टेनिग्राफ-विद्या अब एक प्रकाण्ड और स्वतन्त्र विद्या हो गई है। म्यानाभावके कारण इस निबन्धमें उसका विशेष विवरण नहीं देना चाहते। ताड़ितवार्तावह दन्तमें विशेष विवरण देना।

तार द्वारा प्रवाह पल भरमें बहुत दूर चला जाता है। प्रवाह कितने समयमें कितना दूर जाता है, इसका कोई निर्दिष्ट हिसाब नहीं है। वस्तुतः ताड़ित-प्रवाहमें किसी तरहका निर्दिष्ट वेग नहीं है। आजकल महासागरके भीतरसे, एक महादेशसे दूसरे महादेशकी सङ्केत भेजे जाते हैं। इन तारोंमें प्रतिबन्धकता इतनी ज्यादा है, कि ताड़ित-प्रवाह उसमें अत्यन्त क्षीण हो जाता है। इतना क्षीण हो जाता है, कि चुम्बकका काँटा भी सहजमें नहीं हिल सकता। एक टेशनमें तार-कोषसे संलग्न करने पर तारमें सिर्फ एक ताड़ितका धक्का लगता है। वह धक्का फिर दूरवर्ती टेशनमें पहुँचता है, इसमें भी कुछ समय लगता है। इस धक्के के पहुँचने पर सङ्केत मालूम पड़ता है ऐसे स्थल पर सूचारुरूपसे सङ्केत पानेके लिए पक्षे वड, कंठ उठाना पड़ता था। ग्लासगोके अध्यापक सर विलियम टमसनको प्रतिभाने समस्त विज्ञान वाधाओंकी पराजित कर उनके नामको जगद्विख्यात कर दिया। इन्हीं टमसनको इस समय लॉर्ड केल्विनके नामसे प्रसिद्धि है।

ताड़ितप्रवाहको नापनेका तरीका।—प्रति सेकेण्डमें तारसे कितना विजली जातो है, इसका निश्चय कर, प्रवाहका परिमाण निर्धारित होता है। दोनों उपायोंमें

वहो परिमाण मजबूत है। जबका धन्य तरणवदाहं  
 कितने समर्थन कितना बिघोपित होता है, इसको देख  
 कर प्रवाहके प्राक्क वा चीनताको निश्चय ही मकता  
 है। प्रथमा सुम्बकको क्षीन कितनी घूम गई इसको  
 देख कर प्रवाहका परिमाण ही मकता है। प्रवाह  
 जितना प्रबल होता सुम्बकके लिए क्षमता प्रबल बन मो  
 उतना ही अधिक होगा। प्रवाह यदि नितान्त शीघ्र  
 हो तो तारकी कम जोड़ पर कई बार फिर सेना  
 चाहिये। जितने धारा बोगे, प्रवाहका बल भी उतना  
 ही बढ़ जायगा। सुम्बकको क्षीनता बलमें लटका  
 कर बसके धारो तरण तार सेपेटमेंसे ताड़ित-प्रवाहके  
 मापनेका मध्य बन जाता है। इसका प घंटी नाम है  
 Galvanometer

सुम्बक प्रवाहमें सुम्बक 1- ताड़ित-प्रवाह सुम्बक  
 के कटिको हुमा देता है। बहुत ताड़ित-प्रवाह रख-  
 हो सना गये सुम्बकबल मजबूत है। एक सुम्बकके धारो  
 पार्श्वके प्रदेशमें जो जो घटनाएँ होती हैं ताड़ित-प्रवाह  
 के पार्श्वके प्रदेशमें मो मजबूत बेसो ही घटनाएँ होती  
 हैं। तारकी एक प घंटी तैयार करके उसमें प्रवाह चलाते  
 ही, वह सुम्बकधर्म परिवर्तन हो जाता है। एक बड़।  
 इत्यादि सुम्बकके पार्श्वमें जोडा रखनेसे वह सुम्बकधर्म  
 पाता है सुम्बककी जोल रखनेसे, वह एक निर्दिष्ट  
 दिशामें लम्बी तोरके उधरती है। इसो तरह ताड़ित-  
 प्रवाहके समीप भी लोहा सुम्बकत्व पाता है। सुम्बक  
 शक्ताका निर्दिष्ट दिशामें उधरती है। छोटा लोहेका  
 टुकड़ा उसकी तरफ आकृत होता है।

इत्यादिको प्रबल सुम्बकके पास ज्यादा देर तक रखने  
 वा सुम्बकके बलमें पर इत्याद कायो सुम्बक बन जाता  
 है। इसी तरह इत्याद पर ताड़ित-प्रवाहो तार लपेट देनेसे  
 भी वह लोहा सुम्बक हो जाता है। जोड़े पर तार लपेट  
 देनेसे जब तक प्रवाह रहता है, तभी तक उसमें सुम्बकत्व  
 रहता है। बाह्यधर्म प्राप्त करने कायो वा अन्तर्गत सुम्बक  
 तैयार करनेसे लिए ताड़ित-प्रवाह ही व्यवहार होता  
 है। प्रबल-प्रवाहकी सहायतासे आसानीसे समतागामो  
 सुम्बक बनता है।

एक लकड़ीका टुकड़ा पर जोडा बना हुआ तार लपेट  
 कर कचको निकाल लेनेसे जो लपेटा हुआ तार रह

जाता है, उसको प घंटीमें Sobnoid कहते हैं। जिन्दीमें  
 उसे कुच्छको कह सकते हैं। तारकी एक लम्बी कुच्छ  
 कोमें विद्यु-प्रवाह चलनेसे वह सर्वांशमें सुम्बक-शक्ताकी  
 पतुल्य होती है। उसका एक और लक्षण ही उल्टरको  
 तरण धीरे धीरे दक्षिणकी ओर रहता है। दो सुम्बक  
 कोमें परस्पर लैथी धाकण्येन निष्कर्ष्येण पदि होता है,  
 कुच्छकी धीरे सुम्बकमें वा दो कुच्छविधिमें मो लम्बी तरण  
 धाकण्येन-निष्कर्ष्येण पदि आरो रहता है। प्रथमा  
 कुच्छकोको बाल जाने दोहिने करके तारको एक फेर  
 लपेट कर (सिर्फ पंशूटीके समान करके) उसमें ताड़ित-  
 शक्त चलातेसे वह भी सुम्बक शक्ताका इत्यादकी  
 रक्ताकोको तरह काम करता है। उसका एक पात्र उत  
 रती धीरे धीरे धाकण्येन दक्षिणवर्ती होना चाहता है।  
 इसो तरह दो पंशूटीको परस्पर सधु-योग करनेसे दोनों  
 में धाकण्येन वा निष्कर्ष्येण होता है। प्रवाह यदि दोनोंमें  
 एक तरफ चले, तो धाकण्येन धीरे बिपरोत दिशामें चले  
 तो निष्कर्ष्येण होता है। धाराको जो विद्युत्-पदियाने  
 पहले पक्ष उच्च गतिसे प्रयोगसे वह धाकण्येन पदि  
 घटनाको लक्षणा ही हो। किन्तु धाकण्येन धीरे मध्यमेक  
 धारा प्रदर्शित पदितमें से गयनाए धीरे भी सजबमें  
 सम्पादित होती हैं।

ताड़ित-प्रवाह (—सुम्बकके पार्श्व प्रदेशको लोम्बक  
 प्रदेश कहते हैं। एक प्रदेशमें लोहा रखनेसे उसमें  
 सुम्बकत्व पा जाता है। लोम्बक प्रदेशका प्रधान  
 लक्षण ही यह है कि वहाँ धीरे धीरे सुम्बककी यद्व्या-  
 क्रमसे रक्ता नहीं वा मकता। उस धूमरे सुम्बकको  
 चाहे जिन तरह लक्ष्मी, जोड़नेके साथ ही वह घूम कर  
 एक निर्दिष्टरूप धनक्षालको पक्ष्य करेगा। वहहि  
 बलपूर्वक घटाने पर भी वह पुनः वहाँ पदु च जायगा।  
 ताड़ित-प्रवाहके धारो पार्श्वका प्रदेश भी लोम्बक  
 प्रदेश है। वहाँ भी सुम्बक वा धन्य ताड़ित-प्रवाहकी  
 यद्व्याक्रमसे हर एक जगह नहीं रक सकते। रचनेसे  
 वह घूम कर पुनः अपने निर्दिष्ट क्षानको पक्ष्य कर  
 लेता है। इसी तरह हम लोम्बक प्रदेशमें सुम्बक धीरे  
 ताड़ित-प्रवाह चलने पाप बलिहोम हो जाता है। गति  
 प्रधानतः सुम्बक गति होता है। लोम्बकत्वसे ताड़ित

प्रवाहका पुनः पुनः दिक्-परिवर्तन करके इस गतिको घूर्णनमें परिणत किया जा सकता है। प्रबल ताडित प्रवाह तारके कुछ अंशोंमें प्रवाहित हो कर गतिगाली चोम्बक-प्रदेशकी सृष्टि करता है। उस प्रदेशमें तारके अग्र अंश इस तरह सजे हुए रहते हैं, कि उसमें प्रवाह प्रवाहित होते ही वह तेजसे घूमने लगता है। उसके साथ बड़े बड़े चक्रोंकी जोड़ देनेसे, वे भी घूमा करते हैं। साधारण वाष्पीय एञ्जिनमें जो कार्य होते हैं, इस तरहके ताडितके एञ्जिनमें भी वे कार्य हो सकते हैं। वाष्पीय एञ्जिनका कार्य तापमें उत्पन्न होता है जो कोयले जलानेसे होता है। विजलीके एञ्जिनका कार्य भी ताडितशक्तिसे उत्पन्न होता है और वह कोपके मध्य गन्धकद्रावक द्वारा जस्ता जलानेसे मिलता है। गन्धकद्रावकके साथ जस्तेका सम्मिलन, साधारण टाइन-क्रियासे मूलतः अभिन्न नहीं है। कोयलेको अपेक्षा जस्तेमें खर्च ज्यादा पड़ता है, इसलिये ताडितका एञ्जिन वाष्पीय एञ्जिनका स्थान ग्रहण नहीं कर सका है।

ताडित-प्रवाहके वायु चुम्बकका सम्बन्ध।—चुम्बकके साथ ताडित-प्रवाहके इस साधर्म्यको देख कर दोनों को प्रकृतिगत अभिन्नताकी बात सहजहोमें मनमें जगह पाती है। चुम्बकके अन्दर लोहेके प्रत्येक अणुके चारों तरफ ताडितप्रवाह घूम रहा है। अनुमान करनेमें दोनोंमें यह सादृश्य खूब मिलता है। विविध युक्तियों इस अनुमानका समर्थन करती हैं। वस्तुतः लोहमातृका (चाहे उसमें चुम्बक हो, चाहे न हो) प्रत्येक अणु ताडितका एक एक क्षुद्र आवर्तस्वरूप है। गोला जैसे एक अक्षरेखाके चारों तरफ घूमता है, पृथिवी, जैसे अपनी अक्षरेखाके ऊपर आवर्तन करती है, प्रत्येक आणविक ताडितआवर्त भी उसी तरह एक एक अणुका प्रबलम्बन कर उसके चारों तरफ इसीसा घूम रहा है। साधारण लौह-पिण्डमें यह अक्षरेखाएँ इतस्तत विभिन्न दिशाओंमें विलिप्त होती हैं, परन्तु चुम्बकमें ये अक्षरेखाएँ प्रधानतः एक ही दिशामें रहती हैं। भिन्न चुम्बकके भीतर ही नहीं, बाहर चोम्बक प्रदेशमें भी ये आवर्त विद्यमान रहते हैं। हम जिसकी शून्य कहा करते हैं, वास्तवमें वह शून्य नहीं है। कोई एक अष्टश्र सामग्री

समय शून्यप्रदेशमें व्याप्त है। चुम्बकके चारों तरफ इस अष्टश्र सर्वप्रदेशगत्यापो पदार्थमें मो.ताडितके क्षुद्र आवर्त विद्यमान हैं। वहाँ लोहेको ले जानेमें वे आवर्त लोहेमें आ कर, उसमें चुम्बकत्वको उत्पत्ति करते हैं, अर्थात् उन आवर्तोंके वेगमें लोहेको आणविक अक्षरेखाएँ निर्दिष्ट दिशाकी घूम जाती हैं।

ताडित-प्रवाहका संक्रमण।—ऊपर कह चुके हैं, कि चोम्बक प्रदेशमें ताडितप्रवाहकी इच्छानुसार नहीं रहता जा सकता। वह अपनेमें ही एक निर्दिष्ट अवस्थानको ग्रहण कर लेता है। वह अपने आप जिस तरफ जाना चाहे, उस तरफ उसे बे-रोकटोक जाने दो। टेवोगी—प्रवाह चलते चलते कुछ क्षीण हुआ। मानो प्रवाह जिस तरफ चलता था, उसमें विपरीत दिशामें दूसरा एक प्रवाह उत्पत्ति हुई और उसमें पूर्वतन प्रवाहकी क्षीण और दुर्बल कर दिया। प्रवाह जिस तरफ जाना चाहे, उस तरफ उसे मत जाने दो, बलपूर्वक उसे उलटो तरफ लोटा ले चलो। टेवोगी—प्रवाह और भी कुछ प्रबल हो चला है। मानो दूसरे एक नये प्रवाहमें उत्पन्न हो कर उसके प्रवाहकी बड़ा दिया है। चोम्बक प्रदेशमें गतिके प्रभावसे इसी प्रकार ताडितप्रवाह कभी क्षीण और कभी प्रबल होता रहता है; अथवा इस क्षीण पर वा उस क्षीण पर नवीन प्रवाह उत्पन्न हो कर वर्तमान प्रवाहको घटाता या बढ़ाता है। चोम्बक प्रदेशमें गतिके प्रभावसे इस नवीन प्रवाहकी सृष्टिका नाम है—ताडितप्रवाहका संक्रमण। माइकेल फारादेने इसका आविष्कार किया है। जो तार वा परिचालक द्रव्य चोम्बक प्रदेशमें घूम रहा है, उसमें ताडितप्रवाह विवृक्त न होने पर भी उक्त गतिके प्रभावसे नवीन प्रवाहका आविर्भाव होता है। वह जब तक चलता है, प्रवाह भी तभी तक रहता है, गति बन्द होने पर प्रवाह भी बन्द हो जाता है। तारको चुम्बकके पाससे ले जानेसे जो फल होता है, चुम्बकको दूरसे तारके पास लाने पर भी ठीक वही फल होता है। ताडित-प्रवाह सब विषयोंमें चुम्बकके समान है; इसलिए तारके पास सहसा एक प्रवाह उपस्थित करनेसे भां ठोक वैसे ही फल होगा। गतिके प्रभावसे नये प्रवाहका आविर्भाव

होता है, मन्वाविमूर्त प्रवाह ऐसी दिशामें बहता है जिधसे यह उस गतिको वाधा पहुँचाता रहता है। इस विधाब को याद रखनेसे, जिस तरह प्रवाह जमेगा, उस बातका सहजमें निश्चय किया जा सकता है। जैसे सहजा घोड़ा चलनेसे खबार पोशिको कुछ जाता है और खड़े होने पर सामने मुक्त जाता है, यह भी कुछ कुछ वैसे ही है। ताड़ितप्रवाहको सहजा जिसो तार पर चलानेसे भीतरमें एक वाधाको पहुँचाते हैं, सहजा प्रवाहमान स्त्रोमको रोक्ना यातो तो यह दकता नहीं बरिष्ठ सखमरके लिए प्रबन्धन ही जाता है, उसमें भी यही कारण है। यह साधारण नियम है, कि चोम्बक प्रदेशमें एक तारको हुमानेसे ही उसमें प्रवाहका पानिमात्र या मज्जमक होना। चोम्बक प्रदेशमें जिसो नालको चुम्बकका प्रबन्धन तदनुकूल ताड़ितप्रवाहका प्रभाव नियमान है। यह प्रभाव यत्रैत समान होता है ऐसा नियम नहीं। कहीं ज्यादा और कहीं कम होता है। पश्चिम प्रवाहके स्थानसे कम प्रवाहके स्थान पर प्रबन्धना कम प्रवाहके स्थानसे पश्चिम प्रवाहके स्थान पर जिसो भी परिवाहको से बा सजते हैं, उसमें एक तरह (होर पर) ताड़ितप्रवाह उत्पन्न होगा। प्रवाह जब तक चलता रहेगा, उसकी स्थिति भी तभी तक रहेगी। यदि दोनों जगहका प्रभाव समान ही, तो मध्यम है प्रवाह उत्पन्न ही। परिवाहक जितनी तीव्रतासे एक स्थानसे पश्चिम स्थानमें ही जायगा उत्पन्न प्रवाह भी उतना ही प्रबल और पुष्ट होगा। बसुता तथैवे तारको कई बार ऐंठ कर पति हैगसे चोम्बक प्रदेशमें चलाने या हुमानेसे, प्रबन्धना प्रबल ताड़ितप्रवाह प्राप्त सकता है। अन्धकारपूर्वक इस प्रकारमें ताड़ित-प्रवाह उत्पन्न करनेसे उद्योग और उद्युतिक विधयमें यह ताड़ितयन्त्रोत्पन्न प्रवाहके समान होता है।

बल्लर करके डम्बक को कुण्डली (Bomkorli's Coil) नामक एक तरहका यन्त्र व्यवहृत होता है, उसमें ताड़ितप्रवाहकी उद्युति इतनी ज्यादा होती है, कि यह प्रवाह पलायन ही अपरिधानक बाहुको भेदकर चला जाता है। २१० इंच लम्बा ताड़ित-कुण्डल एक छोटीसी कुण्डली द्वारा भी प्राप्त सकता है। बड़े भारो कोयला के टोरेसे ; इंचका कुण्डल भी नहीं लिये

रता। वायुमय पदार्थमें ताड़ित-कुण्डलके चलनेसे भी तमामें होते हैं, ये सब जो इस यन्त्रकी मन्वायतामें सुधाब स्थिति दिखाते जा सकते हैं। मासकेवे नलको बात पढ़के यह सुने हैं। उसके भीतर विविध वायुवीय पदार्थ अथ परिमाणमें रहते हैं। उसमें ताड़ितप्रवाह चलनेसे विविध मन्वके विविध पासोकोका विधाय होता है। डम्बक माहकमें काँचके नलके भीतरसे बाहुने प्रायः सम्पूर्ण रूपसे निहाल कर, कुण्डली द्वारा ताड़ितप्रवाह चला कर नामा प्रकारके पाचयंजनक तमामें दिखाये है। डम्बकके नलके भीतर वाहु करीब करीब हीतो ही नहीं, ऐसा भी कहा जा सकता है। कुछ बन्ध इतर उधर दोड़ा करते हैं। ये जो अथ ताड़ित नलक करके इतकत दोड़ते हैं। नलके भीतर एक छोटी कुण्डलियाँही डोरीका टुकड़ा प्रादि विविध पदार्थ रहनेसे वे अथ उन पर लका है कर विविध उत्पन्न पासोकोका विधाय करते हैं। डम्बक-नलके से वायु प्रबन्धन सुन्दर और मनोहर होते हैं।

डम्बकको कुण्डलीमें जो उद्युति ताड़ितप्रवाह उत्पन्न होता है, यह एक ही तरहको पश्चिमके दक्षिणमें नहीं रहता। यह एक ही तरहको पश्चिम कर रहता है। १ मिण्टके घन्टे २०१७ बार चलना २०१७०० बार उड़ रता और रहता है। इन विद्युत् दोकों में क्वाको यदि किसी तरह दवाई और सेकड़ोंको पार कर लाय और करीबमें चढ़ाया जाय तब माय ही प्रवाहको उद्युति और उद्युतिको बल्लर जैवे पर चढाया जाय, तो डम्बक-नलको यन्त्रके माह सञ्चलन करनेका भी पावश्यकता नहीं रहती। यन्त्रके पाथमें किसी स्थान पर नलको रखनेसे उसका अन्तर्द्वय उत्पन्न हो रहता है जो कर्चमें मनुष्यका व्यवधान रहनेसे कथ ताड़ितप्रवाह उसको भेद कर चला जाता है और दूरक मन्वको उद्युति करता है। प्राचयका विषय है, कि जिसका शरीर भेद कर जाता है, उसे कुछ भी मान्य नहीं पहुँचाता। साधारण डम्बकके ये यन्त्रका वा साधारण इन्धनीका शेटरोका क्वा मनुष्यशरीर यह नहीं सकता, किन्तु इस यन्त्रप्रादाताप्रवाहके क्वा—केन्द्रमें जो जाल बार प्रचलन चरता है साय—ऐह भेद करने पर भी कौई व्याघात नहीं होता। तोय वर्ण

हुए होंगे, इटलीके युवक निराना तिमलाने इस अद्भुत घटनाका आविष्कार कर लोगोंको आँखोंमें चकाचौंध लगा दिया है।

डाइनामो।—चौबक प्रदेशमें ताँबेके तारको तीजीसे घुमाने पर पुष्ट और उग्र ताड़ितस्रोत उत्पन्न होता है। पुष्टका उग्र परिमाणमें अधिक और उग्रका उग्र उद्भूतिमें कँचा होता है। क्लार्क, साइमनस, ग्राम, एडिमन आदिके बने हुए विविध प्रकारके डाइनामो आजकल विविध कार्योंमें व्यवहृत होते हैं। चौबक प्रदेश विभिन्न तरहसे प्रसृत होता है। कहीं कहीं बड़े बड़े प्रतापशाली इस्पातके चुम्बक व्यवहृत होते हैं। कहीं कहीं बैटरीने ताड़ितप्रवाहको बहत् लीह पिण्ड पर लपेट कर, उस लोहेकी पराक्रान्त चुम्बकरूपमें परिणत किया जाता है। जैत्राविशेषमें तार घुमा कर जो प्रवाह उत्पन्न हो रहा है उसका कुछ अंश वा अधिकांश वा पूरा लौहपिण्ड पर लपेट कर चुम्बक बनाया जाता है। प्रवाह क्रमशः पूर्ण होता है, चुम्बकका प्रभाव भी उतना ही बढ़ता है। प्रवाह और चुम्बक दोनों ही क्रमशः प्रबल हो कर एक दूसरेको और भी प्रबल कर देते हैं।

नगरके राष्ट्रपथोंको आलोकित करनेके लिए ट्राम गाडो चलानेके लिए तथा अन्यान्य बड़े बड़े कार्योंके सम्पादन करनेके लिए डाइनामोओंसे ताड़ितप्रवाह उत्पन्न किया जाता है। इन डाइनामोओंके तारोंको वेगने घुमाने के लिए वाष्पीय एंजिनको जरूरत पड़ती है। छोटे छोटे डाइनामो हाथसे घुमाये जा सकते हैं। जिन डाइनामोमें इस्पातके स्थायी चुम्बक द्वारा चौबक प्रदेश उत्पन्न किया जाता है, उसको डाइनामो न कह कर बरिक्त मान्नेटो यन्त्र कहते हैं। डाक्टरो वैंटरो छोटा मान्नेटो मात्र है। एक इस्पातके चुम्बकके पास तार घुमानेसे जो प्रवाह उत्पन्न होता है, वही रोगके शरीरमें चालित होता है। इस वैंटरोका प्रवाह एक तरफा नहीं होता, एक वार इस तरफ, एक वार उस तरफ चलता है। प्रवाहको एक तरफा और अर्धच्छिन्न करनेके लिए किसे किम, डाइनामोमें विशेष विशेष कौशल है।

एक फेर धा काँडे फेर लपेटा हुआ तार चौबक प्रदेशमें घुमानेसे, उसमें काफी प्रवाह वा स्रोत उत्पन्न हो

जाता है। जरासे धातुमय पिण्डको सहसा चौबक प्रदेशमें ठेल देनेसे उसमें काफी प्रवाह पैदा नहीं होता है। सिर्फ उसके ऊपरसे थोडोसो विजली हट जाती है। उसके ऊपर एक विजलीका धक्का लागता है। यह धक्का उसका मात्र रोद पर जितना भीतर प्रवेश करता है, उतना ही चोख ही जाता है और उसमें प्रवेशका वेग जब्तो घट जाता है। और यदि एक धक्केके बदले पुनः पुनः मेकेण्डमें हजार बार या लाख बार, एक टफा इस तरफ और एक टफा उस तरफ धक्का लगे, तो वे धक्के प्रवेश करनेमें असमर्थ होते हैं। कुछ प्रवेश करनेके पहलने ही वे नष्ट हो जाते वा उन्नाप रूपमें परिणत हो जाते हैं।

ताड़ितप्रवाहका आन्दोलन वा स्पन्दन—डाक्टरो वैंटरोमें, बहुतसे डाइनामो, रूमरफर्ने वा तिमलाने यन्त्रोंमें ताड़ितका एक तरफा स्रोत नहीं बरता; एक वार इस छोरको और एक वार उन छोरको और बड़ता है। वास्तवमें प्रवाह आन्दोलित वा स्पन्दित होता रहता है। अतएव सबको धारणा हो, कि ताड़ितका एक एक स्फुल्लिङ्ग एक एक धक्का मात्र है। प्रत्येक स्फुल्लिङ्गके साथ एक एक धन-ताड़ित एक तरफ और एक ऋण ताड़ित दूसरी तरफ सहसा चला जाता है। किन्तु फिलहाल निश्चित हुआ है, कि यह एक स्फुल्लिङ्ग सिर्फ धक्का नहीं, बल्कि यह भी एक आन्दोलन मात्र है। लोडिन जार वा ताड़ितयन्त्रमें 'क'से 'ख' को तक्ष एक प्रष्टसे अन्य प्रष्ट पर थोडा धन ताड़ित सहसा वायुसेट कर चला गया, जिनसे स्फुल्लिङ्ग उत्पन्न हुआ, एक जगिक आकस्मिक उग्र प्रवाह उत्पन्न हुआ। ऐसा अत्र तत्र विश्वास था। किन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है। धक्का एक वार इधरसे उधर और उधरसे इधर, इभी तक्ष पुनः पुनः जाता आता रहता है। प्रवाह जा कर फिर लोट आता है। एक स्फुल्लिङ्ग जगिक घटना है, उसका स्थितिकाल एक सेकेण्डका लनाधिक भाग मात्र है। किन्तु उस क्षण भरके भीतर नौ लाख धक्के इधर उधर लग जाते हैं। बहुत वार ताड़ित प्रवाहमें इतस्ततः स्पन्दन वा आन्दोलनका सम-टिफल एक स्फुल्लिङ्ग है। एक स्फुल्लिङ्गके दर्पणगत प्रति-विश्वको दर्पणके गसे घूर्णन द्वारा विप्यारित करनेसे

प्रतिबिम्ब कटा हुआ ना जान पड़ता है। स्फुटि-के मध्य ताकितका धान्दोलन हो इन प्रकार होलानेका कारण है।

साहित्यकी कला—परिचालनके विभिन्न चरित्रों ताकितको उद्भूति विभिन्न नदो हो सकती। परिचालन कला यही धर्म है। इन अवस्था में प्रमाणसे परिचालनमें ताकितप्रवाह पैदा होता है। प्रवाहमें धर्मसे परिचालनकर गमन हो जाता है। चौर उच्चका धार्मिकता समय प्रवेश योग्यक-धर्मोक्तता होता है। प्रवाह सिद्ध परिचालनकी मोतर हो जाता है, ऐसा नहीं। हाँ अपरिचालनके मोतर प्रवाह सम्बन्धमें जाता नहीं, अब जाता है तब एक उच्च प्रपञ्च तथा दे कर अपरिचालनको फाड़ कर जाता है। यथा मो एक तरफ नहो क्यता, एक यथा समयमें ही माचारकता कुछ देर तक उच्चका इतस्तत् धान्दोलन चलता है। इस धान्दोलनके रहते हुए स्फुटिका धान्दोलन चौर सर्वत्र उद्भूति समान हो जाती है। परिचालन चौर अपरिचालनमें यही प्रमेय है। परिचालनके मोतरसे ही प्रवाह जाता है। ऐसा धर्म समय नहो कदा ना सकता। परिचालन त्रिषु प्रवाहका रास्ता दिखाना देता है। ताकित-स्रोत उसने क्षणसे चलता है। यदोरसे मोतर गुम्फनीको गिर्य करता है चौर इस निक बाद तापकर्ममें परिणत होता है। प्रवाह जिस रास्ते में चलता है, उष्ण चारों तरफ योग्यक प्रदेय है। चारों तरफका प्रदेय विन्मुख बाहुमुख्य होने पर भी उच्चका पुष्पकत्व नष्ट नहीं होता। अतुमान होता है कि शून्य स्थानमें भी ऐसे पदाङ्क विद्यमान हैं जिनसे उच्च पुष्पकत्व लोकूद रहता है। माध्यमें जिन स्थानको शून्य कहते हैं, वह विन्मुख शून्य नहो है। धान्दोलनप्रधान कहता है कि शून्य स्थानमें भी पदाङ्कविधिये पीतपीत भावसे व्याप्त है। उच्च पदाङ्कको घ घे जोमें ईवर कहते हैं; जिन्हेमें धान्दोलन वा असमान कहेंगे। यहा धान्दोलनका धर्म शून्य नहो, बल्कि शून्यभायो पदाङ्कविधिय है। यह ईवर वा धान्दोलन शून्य, यह शून्य चौर अतुमानसे चलीत होने पर भी धान्दोलन कठिन स्रित तन्वाङ्क पदाङ्क बाहुङ्गन चौर ीहृत्पचरसे जगा कर प्रच नचर तक स मोतरसे बिना धान्दोलन कहे जाते हैं, धान्दोलन है, तो भी

साहित्यविषयमें इत्यात मो इससे पराहित होता है। वह पाकाय कङ्कपदाङ्कसे चपुत्तसे इतस्तत् कम्पा चौर धान्दोलनकात प्रबोधी कडरोंनी बहन करता है। ये ताङ्क धान्दोलनके मोतरसे शिष्टेयमें एक साध विधानो मोक्ष तक चसते हैं।

मध्यतः ताकितप्रवाह को चतुर्धाध्य धान्दोलनमें इन चोम्बकधर्मको देता है। माध्यिक धान्दोलन, पुष्पक कसे साध धान्दोलनके कुछ मध्यभाका धान्दोलन किया था। धान्दोलन धान्दोलनका धान्दोलन मात्र है। इन धान्दोलनको निदिष्ट एक दिया है। चोम्बक प्रदेय इस धान्दोलनको दियाको हुमा सकता है। इससे तथा धान्दोलनकारणोंसे यह अतुमित होता है कि चोम्बकधर्म धान्दोलनका ही धर्म है।

चोम्बक धर्म यदि धान्दोलनका ही धर्म हो, तो जिस स्थानमें ताकितप्रवाह इतस्तत्का न वह कर बार बार धान्दोलन हो रहा है, वहा इस धान्दोलनमें भी एक धान्दोलन उपस्थित होगा। कङ्कपदाङ्कसे पदाङ्कसे कम्पनसे तरङ्ग उत्पन्न हो कर केधे चारों चौर धान्दोलनमें स्थान होती चौर धान्दोलन उत्पन्न करते हैं, ताकित तथा धान्दोलनसे उच्च प्रकार तरङ्ग उत्पन्न हो कर न हो चौर धान्दोलनमें प्रसारित होती हैं। इन तरङ्गोंको ताकितोर्मि वा चोम्बकोर्मि कह सकते हैं। अतुतः बिसे स्थान पर ताकितकी एक तरङ्ग उत्पन्न होने पर उससे मात्र पुष्पकत्वको भी तरङ्ग उत्पन्न होती है, दोनों यह-धर्मों वा सङ्घटनों हैं, क्योंकि जहाँ ताकितका प्रवाह होता है, उससे धान्दोलनके पुष्पकत्वका धान्दोलन होता है। ताकितके प्रवाहको तुलना खेतके धान चौर पुष्पकको तुलना धानके वा तुर्बोक साध ही सकते हैं। तथा इस प्रवाहके साथ तुर्बोक धान्दोलनके सम्बन्ध देखनेमें जाता है। धानको खार्च मन्ववेसक मनमें ऐसा प्रत्य उपस्थित हुआ कि जिस धान्दोलनमें धान्दोलन विद्यमान होता है उसी धान्दोलनमें ताकितको तरङ्ग का न चले गो ? यदि ऐसा ही हो धान्दोलन यदि एक धान्दोलन दोनों प्रकारको सङ्घटनों को बहन करे, तो धान्दोलन चौर ताकितको तरङ्ग दोनों को एक ही वेगसे धान्दोलन पर सा बत-नी हो। विभिन्न बुद्धिसे धारा मध्यगत धर्मों केतका समर्थन किया वा।

ताड़ितका स्फुल्लिङ्ग सिर्फ कम्पेन वा आन्दोलन मात्र है, यह—फुई बपे हुए—स्थिर हो गया है। किन्तु मक्सवेलन इस बातका सिर्फ अनुमान ही किया था, कि इस आन्दोलनके फलसे चारों ओर आकाशमें ताड़ितको तरङ्गे उत्पन्न हो सकते हैं। वे उन उर्मियोंके अस्तित्वको प्रत्यक्ष नहीं कर सके थे। जर्मनके विद्वान् हार्ट्ज (Hertz) ने १८८७ ई०के शेष भागमें आकाशवाही ताड़ितोर्मिके अस्तित्वको प्रत्यक्ष दिखाया था। तभीसे ताड़ितोर्मि एक प्रकारसे चर्मचक्षुके गोचर होती है। तरङ्गोंकी लम्बाईका भी नियय हो गया है। सेकण्ड में कितनी तरङ्गे होते हैं, इसकी गणना हो गई है। देखा गया है, कि ताड़ितोर्मि भी ठीक आलोकोर्मिको भाँति एक लाख क्रियाशील हजार मोल वेगसे आकाशपथमें चारों तरफ धावित होती है। ताड़ितोर्मि सर्वांशमें आलोकोर्मिके ही अनुरूप, सृष्टि और मजातीय है। मक्सवेलनका अनुमान और भविष्यवाणी ज्योंका त्यों फलीभूत हुई है। वर्तमान शताब्दीमें जिन वैज्ञानिक तथ्योंका आविष्कार हुआ है, उनमें यही आविष्कार शायद सर्वप्रधान है।

ताड़ितको लहरें और आलोककी तरङ्गें सर्वांशमें समधर्मा हैं। आलोककी रश्मि जैसे प्रतिफलित वक्रोक्त वा विवर्तित और विस्फारित होती है, ताड़ितकी रश्मि भी ठीक वही तरहका आचरण करती है। आलोकके स्पन्दनको जैसी निर्दिष्ट दिशा है, ताड़ितोर्मिके स्पन्दनकी भी वैसी ही निर्दिष्ट दिशा है। ताड़ितोर्मियोंको प्रकृतिके विषयमें आज कल विविध गवेषणाएँ चल रही हैं। हमारे देशके अध्यापक मर जगदीशचन्द्र वसु मम्प्रति इस विषयमें नवीन तथ्य निकाल कर यगसी हुए हैं।

दोनों उर्मियोंमें अन्य प्रभेद नहीं है, विभेद सिर्फ लम्बाईको ले कर है। वर्षभेटमें आलोकोर्मिमें भी छोटे बड़ेका भेद होता है। साधारणतः चक्षुके गोचर आलोककी तरङ्गे अति कुछ होती हैं, एक इंचका सन्नभाग वा दश सन्नभागके हिसाबमें उनके दैर्घ्यका नाप होता है। ताड़ितकी तरङ्गें खूब बड़ी होती हैं। आकाशमार्गमें २ या १० हाथसे लगा कर २ या १० मोल तकको लम्बा

तरङ्गे देखो गई हैं। उपयुक्त यन्त्रके कुछ वनान्दोलित प्रवाहोत्पादनके द्वारा एक अल्प आध इंच तक ताड़ितोर्मि उत्पन्न हुई है। अनुप्रमाण यन्त्रोंकी सृष्टि होनेमें ताड़ितकी सहायताके बिना आलोक्सृष्टि भी सम्भवपर होगी।

मक्सवेल और हार्ट्जकी गवेषणाके फलसे यह स्थिर हुआ कि, आनोन् ताड़ित को हा छोटी छोटी तरङ्गें हैं तथा आलोकविकाश ताड़ित-विज्ञानको ही शाखा है।

ताड़ितका स्वरूप—ताड़ितका स्वरूप अब कुछ समझा जा सकता है। आकाश सर्वत्र व्याप्त है, धातु-पदार्थके भीतर आकाश मानो तरल है, अपरिचालकके भीतर और शून्यदेशमें आकाश मानो कठिन है, कठिन पदार्थके भीतरसे धक्का सञ्चारित होता है, तरलके भीतर नहीं होता। कठिनमें खिचाव पड़ता है, तरलमें नहीं। इस्पात वा काठके साथ कोचड वा मोमकी तुलना करनेसे ही समझ सकते हैं। उद्धृतिके वैषम्यसे आकाश में खिचाव पड़ता है। खिचावसे आकाशके दाहिनी ओर हट जाने पर यदि धन-ताड़ितका आविर्भाव हो, तो बाईं तरफ हटने पर ऋण ताड़ितका आविर्भाव होगा। दाहिनी तरफ जगसा हटनेसे साथ साथ आकाश बाईं ओर भी जरासा हटता है। धन ताड़ितके साथ साथ ऋण-ताड़ितका भी विकास होता है। अपरिचालकके भीतर खिचाव होता है, परिचालकके भीतर नहीं होता; इसीलिए अपरिचालकमें परिचालकमें प्रवेश करते ही एक परिवर्तन अनुभूत होता है। इसलिए धातुमय दार्थके मात्रके सिवा अन्यन्त्र ताड़ितका विकास नहीं मालूम पड़ता। धातुके भीतर यत्नामान्य आकर्षणसे ही तरल आकाशमें स्रोत उत्पन्न होता है; जब तक खिचाव रहता है, तब तक स्रोत रहता है। इस स्रोतकी तरल जलस्रोतके साथ तुलना हो सकती है। अपरिचालकके भीतर कठिन आकाशमें घोंड़े खिचावसे प्रवाह उत्पन्न नहीं होता, अधिक खिचावसे आकाश फट जाता है। अपरिचालकका खिचाव इस्पातके खिचावके साथ तुलनीय है। आकाशके फट जाने पर उत्ताप, आनोक, स्फुल्लिङ्ग आदिका विकास होता है। कठिन आकाश स्थितिस्थापक पदार्थ है, खिचावसे फटनेके बाद हिलता

धां शान्ति होतो रजता है। यको स्फन्दन चारों ओर  
 आन्ध्यायमिं समिं लयप्य करके पाक्याय द्वारा दस गुने  
 निपुस विषये प्रकाशित होता है। चपरिचामक मीद कर  
 बहो पर बहो पीर समिं पर समिं सञ्चारित करता है,  
 परिचायक मीद नहीं सञ्चता क्योंकि परिचायक धजा दे  
 में पचम है, बहा पाठी की तरह पाक्याय इट कर लुङ्क  
 जाता है। बहा लसके लपर लग कर लौटता पीर  
 प्रतिफलित होता है। यदि अराया हुस जाय, तो हुस  
 दूर जानि जाती हो तरह पदाहंके धर्यंके तापधर्म  
 परिचय हो जाता है। ताङ्कितका प्रवाह चारों ओरके  
 पाक्यायमिं हुस हुस पूर्वी वा पश्चिम लयप्य करता है,  
 बह प्रदेय शोभ्यक प्रदेयमिं परिचय होता है। उस प्रदे  
 मीं लोहा रचमेवे, लसके पशुधोको पीर कर पाक्यायका  
 शान्तनं चूमता रहता है। पशु भी मायद निर्दिष्ट  
 दिशामिं अचरैया पर चूमने लगते हैं। सिर्य लोहा हो नहीं,  
 पशुधोय जङ्ग-पदायके पशुधोमिं मो यक पाक्यायलादन  
 पीर चूमन पारम्भ होता है। पापदने दिखाया है, कि  
 पदाहं मात्र हो लोहा बहुत पुनःकाल पा सकता है।  
 ताङ्कितको तरह बड़ो बड़ो हो तो वे साधारण चपरि  
 चायक पदायको मीद करचको जाती है साधारण परि  
 चालकके लपरसे प्रतिफलित होतो पीर लौट पाती है।  
 इको लिए पच तक लसका अक्षिप्त मासूम नहीं हो  
 सका वा। लोटी लोटी तरह परिचायक चातुपदायके  
 लपर पङ्क कर हुस प्रतिफलित होती पीर हुस मोतर  
 मुस कर लताप लयप्य करतो हैं। इको लिए लगिन्द्रिय,  
 तापमान्यस्य आदिसे द्वारा लसका पशुधम्य होता है।  
 लकीमिंसे लोटी लोटी हुस तरह पशुधे आयविष्य यन्मिं  
 यज्ञोत हो कर इष्टिदिशान करती हैं। परिचायकके  
 मोतरसे ताङ्कितको वा पासीकली तरह नहीं जा  
 सकता। चातुपदाय मात्र इसी लिए पासीकके लिए  
 सञ्चताहीन है।

रोप्येन इमा शानिष्ठत एवम १-१८८५ ई०के  
 प्रारम्भमिं अक्षिय पश्चापक रोप्यमिं (Montgen) ने  
 एक नये रजसका आविष्कार किया है। लपर जिस  
 लुङ्क लसको बात लकी गई है, लसका पशुधम्य मात्र  
 प्रायः चातुपुञ्ज होता है, मायवीय पदायके हुस पञ्च

ताङ्कितको बहान कर दीङ्कते है पीर पदाय विषयेमिं  
 प्रतिफल होने पर बिचिय पाकोज लयप्य होता है।  
 रोप्यमिंने दिखाया है कि लुङ्क लसके मोतरसे एक  
 प्रकारकी रजिम निकलतो है, जो पासीकलरिम्य वा ताङ्कित  
 रजिमसे सम्पूण मिश्र प्रकृतिकी है। यक रजिम बिना वाचाके  
 काठ तथा कासे कायक पादि पञ्चल्ल पदाहंकी मीद कर  
 जा सकती है। चातुधोमिं पाशुमिनियमको मङ्कमिं मीद  
 सञ्चतो है, धीसेको नहो मीद सञ्चतो। काचके मोतरसे  
 मो मङ्कमिं नहीं जा सकता। लसके बाहर पञ्चल्ल रजिमकी  
 परलरीचाने लसके पल्लतो हैं। बाहरमिं लोटीपाकिसे  
 लिए बना हुआ कागज वा काच सामनेसे हमारे विरप-  
 रिचित पाकोलकी तरह दाय पङ्कता है। विषये विषिय  
 पदाय पर पङ्कनेसे लसको लकीम पीर लञ्चक करती है।  
 रजिममिं यदि लकी वा काचको मतिकी कोई चीज लामो  
 जाय, तो लसकी जाया पङ्कती है। मनुष्य-प्ररीरका  
 पञ्चल्लहाल इस रजिमसे लिए पञ्चल्ल है, पर मांसपयो  
 पादि पञ्चल्ल हैं इसलिये रजिमके मागमिं मनुष्यके  
 लङ्के होने पर लसके लहाल मागकी जाया पङ्कती है  
 पीर लोटीपाकि वा पाकोलजनन द्वारा लस लहालको  
 जाया पाट देखनेमिं पातो है। लकाके मोतर लियी  
 लानके दूड जानि पर, लकी हुस ल्यायि होने वा लसेको  
 मोतो लुमने पर, दल लमोन लोटीपाकके बह सङ्कमिं  
 पचका जा सकता है।

लुङ्क लसके बिना पञ्च लयायसे मो इस रजिमके  
 लयादनको बिना लुङ्क सञ्चन हुई है। इस रजिमके  
 पाविष्कारसे प्रविषीकी बौद्धानिक सञ्चको पञ्चित हो  
 गई हो। प्रति सहाइ वा मतिदिन इसके विषयमिं लकीम  
 तथ्य निजल रङ्के हैं। मासुधमिं रोप्यमिंने एक नये  
 जगत्का पाविष्कार किया है। ताङ्कित रजिमके साथ  
 लसका निर्जीत होने पर मायद पदाहंविज्ञानमिं गुनान्तर  
 लपञ्कित होया।

अपदेश १-—लुङ्क लो लयके पञ्चमे ताङ्कित लोपुञ्ज  
 को सामयो लो। किन्तु पाञ्च मनुष्यकी सञ्चता इसी  
 पर प्रतिष्ठित है। १८८५ ई०मिं रोप्यमिंने रजिमका  
 पाविष्कार हुआ है। १८८५ ई०मिं निजानकी क्या  
 पञ्चता लोमी, पञ्च लपञ्चमिं लो पगोचर है।



ताड़ितपदार्थ ( म० पु० ) ताड़ित रूपः यः पदार्थः कर्मधा० । दो वस्तुओंको रगड़से निकलना हुआ ज्योतिर्मय पदार्थ ।

ताड़ितपरिचालक ( म० पु० ) ताड़ितस्य परिचालक-तत् । ( The conduction of electricity ) वे वस्तु जिनसे ताड़ित पदार्थ एक स्थानसे दूसरे स्थानको जगदो-से पहुँचाया जाता है ।

ताड़ितवाचा ( म० स्त्री० ) तारको खबर ।

ताड़ितवाचावह देखे ।

ताड़ितवाचावह ( म० पु० ) ताड़ित एव वाचावहः कर्मधा० । ताड़ित-बलके द्वारा शीघ्र संवाद प्रेरण करनेका यन्त्र, वह यन्त्र जिसके द्वारा विजलीको सहायतासे एक स्थानसे दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है तारके जरियेसे खबर भेजनेको काल, टेलिग्राफ ( Telegraph ), तार । जिस यन्त्रसे ताड़ित अर्थात् विजलीकी तरह शीघ्र संवाद अर्थात् वाचावह, उसका नाम 'ताड़ित-वाचावह' वा Electric telegraph है ।

पूर्वकालमें किस प्रकारके सड़के-ताड़ि द्वारा दूरवर्ती स्थान पर संवाद टि भेजे जाते थे, इसका कुछ कुछ वर्णन "टेलिग्राफ" शब्दमें लिखा जा चुका है । फलतः वे ही सड़के, मसूदके मध्य एवं सप्रय समय पर आवश्यक होने पर स्थल भागमें, ताड़ितके आविष्कारके बाद विज्ञानके बलसे सर्वोत्कृष्ट वाचावहके रूपमें सर्वत्र नियोजित हुए हैं । विजलीके जरिये बहुदूरवर्ती प्रदेशोंमें भी, इतनी सरलता एवं शीघ्रतासे संवाद भेजा जाता है, कि जिसको देख कर आश्चर्य होता है । विज्ञानके चरमोत्कर्षसे ताड़ितको यह उपयोगिता अब भूमण्डलस्य समस्त सभ्यदेशोंमें सम्यक् रूपसे मद्ध्यवहारमें आने लगी है तथा सन्धि, विपणन, व्यवसाय वाणिज्य आदिका प्रभूत उपकार कर रही है । सभ्यसमाजमें प्रतिदिन काम आने वाला यह महोपकारो व्यापार किस प्रकारके आविष्कृत हुआ और इसकी कायं प्रणाली कौसी है, इसका स्थूल मर्म यहाँ लिखा जाता है ।

ताड़ित अत्यद्भुत द्रुतगतिकी आविष्कारके बाद ही उसके द्वारा दूरवर्ती स्थानमें सड़के-तारके उपाय उद्भावित हुआ । १७४७ ई०में विशेष वाट्सन् साहबने इस

विषयकी बहुत परीक्षा की थी । इन्होंने १०० फुट लम्बे तारसे एक लीडेन-जार ( Leyden-jar ) विजलीको मुक्त किया था । १७५७ ई०में स्कट्स मैगज़िन ( Scots' Magazine ) नामको पत्रिकामें, विजलीसे दूरवर्ती स्थान पर किस तरह अक्षर भेजे जा सकते हैं, इसका एक महत्त्व उपाय प्रकाशित हुआ था । परन्तु वह कभी कार्यमें परिणत नहीं हुआ । १७७४ ई०में जेनेभा नगरमें २४ अक्षरोंके लिए २४ तारोंमें एक एक पिथबाल इलेक्ट्रोस्कोप ( Pith ball electroscop ) जोड़ कर टेलिग्राफ बनाया गया । इसी वर्ष जर्मनीमें रिउसर ( Reussur ) साहबने विद्य-बलके बटले मोनीकी दो पत्तियाँ और उन पर अक्षर लिख कर, उनके द्वारा अक्षर प्रकट किये । ये सब टेलिग्राफ वर्षण-जनिता ताड़ित ( Frictional electricity )-के द्वारा उत्पन्न होते थे । इसमें कभी कभी परिश्रानामें सड़के पड़ते थे, और कभी कभी परिश्रम व्यर्थ भी जाता था । अन्तमें बल्टा साहबने प्रवाह ताड़ित ( Current electricity ) का आविष्कार किया । यह ताड़ित सड़कमें और सुविधासे तारके भीतरसे स्थानान्तरको भेजा जा सकता है और उसमें इसकी शक्तिका भी ताड़ित अपचय नहीं होता ।

प्रवाह-ताड़ितके द्वारा कौसे संवाद भेजा जा सकता है, इस विषयको अनेक परीक्षाएँ हुईं । १८११ ई०में मिउनिकवासो सीमरिङ्ग साहब ( Sommering ) ने ३५ फुट्, ४५ फुट् तारोंके साथ ३५ जलपात्र संयुक्त कर, पाठस्य जनके विशेषण द्वारा सड़के स्थापन करनेका प्रस्ताव किया । १८२० ई०में आंपियर ( Ampire ) साहबने जलपात्रके बटले २५ कम्पासके काँटोंके चलन चलनके द्वारा अक्षर प्रकट किये । बादमें १८३२ ई०में सि० बैरन स्किलिङ्ग ( Baran Schilling ) ने रुस-राव्यमें मिफ एक कम्पासको सूचिकाके परिदोलन द्वारा अक्षर प्रकट करके टेलिग्राफ बना डाला ।

१८३३ ई०में, वेबर ( Weber ) और गस ( Gauss ) साहबने दो तारोंके द्वारा ८००० फुटकी दूरी पर एक छोटी सुम्बकशूलकामें संलग्न दर्पणके आन्दोलनसे सड़कोंका परिचालन किया था । यह यन्त्र टमसन-

—साहचर्ये वर्तमान दर्पक-ताड़ितमान-यन्त्र (Mirror-galvanometer) कि समाप्त था।

उपरोक्त वैज्ञानिकों के अनुसंधान करने पर मिडलिनक प्राणो घञ्जापक मि० स्टाइन-होल (Mr Stein Hoel) ने इस विषयमें बहुत प्रयोग किये और यद्यपि उचित मोक्षों। बहुत परिश्रमके बाद प्राणो १८६० ई में एक टेलिग्राफ बनाया और उसी वर्ष उसे Göttingen Academy of Sciences समामें सभ्यको दिखाया। इसीमें सभ्ये पहले ताड़ितप्रवाहके प्रत्यक्ष लक्ष्य लिए हुए तार न रख कर एक ही तारके दो छोरों को दो छेदनोंमें जमोनीं गाड़ कर एक ही तारने सवाद भेजनेकी प्रथाका आविष्कार किया था। इस समय दो कम्पासके कांटोंके इत्तल जलित दो मूल मद्धों के मंभियचने सम्पूर्ण वर्षमाहा प्रकट को जाने लगे ये दोनों कटि, एक धन और दूसरी ऋणताड़ितप्रवाह द्वारा, एक ही तरफ मुक्त आते थे। कम्पो कटिको गति को टिक् कर और कम्पो कटिमें एक सागत्र पर बिन्दु चिह्नित कर प्रथम स्थिति होते थे। बिन्दु प्रथमे सिध कटिके पथमार्गमें हूँको वा मनो-पूर्व स्थल नम रहता था। कटि प्रथम इट आते थे और कम्पो बिन्दुधको दो योको चिह्नित हो जातो थीं। ज्ञायो पुम्बकने उत्पन्न ताड़ितके द्वारा यह ताड़ितवाता सम्पन्न होती थी।

एक लीह-टिक्के अथर अपरिचात्मक सुवाद मण्डित तथिका तार कपिट कर उस कुण्डलोमें ताड़ित स्रोत प्रवाहित करनेके उस कोष्ठमें कुण्डल या जाता है और ताड़ित-स्रोत बन्द होने ही उसका पुम्बकत्व नष्ट हो जाता है। ऐसे ताड़ितोय पुम्बकके प्राथम्यमें पाहट करके, एक कम्प पर चोट मार कर चिह्नित करनेकी प्रथा उद्घातित हुई। यही मोक्ष साहचर्यके टेलिग्राफका मूल स्तम्भ है। इट्टडोलन साहचर्ये इस उपायमें सध्य बना कर टेलिग्राफ करनेमें पहले मद्धोंके कर्मचारिको मलके करनेका कर्णय निकाला था।

१८६० ईमें सर्व प्रथम तोल टेगोमि टेलिग्राफ ध्वन साय रूपमें स स्थापित हुआ। मिडलिनकमें स्टाइनहोल साहचर्य, अमेरिकामें मोक्ष साहचर्य और इन्वैर्यमें इट्टडोलन और कुम्ब साहचर्य टेलिग्राफ प्रचलित हुआ।

इन्वैर्यमें मण्डल नमिड हम और चोट्टेडने रश्मेमें सभ्ये पहले टेलिग्राफ बना था। इन टेलिग्राफोंके तागेको अपरिचात्मक पन्थके मण्डित कर मद्धोंको मोक्षे गाड़ा जाता था, परन्तु पोक्षे इतमें अथ पथिक होनेमें कठिणो कटिमें पर मगाया गया। एक कटिके यन्त्रमें एक तार और दो कांटोंके यन्त्र दो तार मगा कर टेलिग्राफका व्यवहार होने लगा। रश्मे वट इट्टडोलन साहचर्ये इतको बहुत कुक्ष उचित हो तो।

अथ ताड़ितवातात्मक वा टेलिग्राफ यन्त्रने मृततत्त्व, उमकी गठन और कार्य प्रथाको वा विवरण लिखा जाता है।

उद्दिष्टोप न बरही—मन्प्रति जितने मो प्रकारके टेलिग्राफ प्रचलित हैं, मत्र प्रवाह ताड़ित द्वारा सम्पन्न होते हैं योग्यकोय ताड़ितको टेलिग्राफमें नियोजित करनेके लिए बहुत योग्य हो गई यो, पर उतमें अर्थ पथिक पड़ने तथा टिक्के होनेके कारण उनका व्यवहार नको हो सथा।

ताड़ित-व्यार्थयक्षि लिए अथ नामा देगोमि नामा प्रचारके ताड़ित-त्रोय प्रचलित है। कुक्ष समय पहले ज्ञानियन साहचर्य ताड़ित बोय व्यवहृत होता था। अथ पथिकोग म्यानमि उमके बहने 'बाइकमिड डेटेरो' काममें आतो थे। इस देगोमि टेलिग्राफ प्राक्सोमि मिनेटोडा (Minto) ताड़ितकोय व्यवहृत होता है।

गार—टेलिग्राफका तार साधारणतः लोह-मिमित और अष्टे द्वारा मण्डित होता है। कम्पो लोको विषेय सुमोतिव लिए तथिका तार मो व्यवहृत होता है। यह तार काष्ठ वा बानुके मध्यों पर समो हुई जोनामद्धोंको अपरिचात्मक ट म्पिमि बाँध कर से जाला पड़ता है। ये दोषियां इतको मगाईये बनाई जातो हैं कि वर्षा होने पर मो इतका कुक्ष पथ बना रहता है और इतमिध ताड़ितप्रवाह तारके निश्चल कर मध्योंमें नहो जाता। प्राथमिक प्राथ सभो ध्यानमें अ मो पर तार जाता है। कहीं कहीं कदा बाहरमें विपद्को प्रायदा पथिक है, जमोनक भीतरने तार मगा है। इस तार पर मुद्रापाका कुण्ड, रबर आदि अपरिचात्मक वस्तुएं चढ़ो रहतो हैं

और उसे नलके भोतारने में जाते हैं। ऐसे तारमें ताड़ित का अयचय तो कम होता है, पर यह ध्रुत मद्धते प्रापनके लिए उतना उपयोगी नहीं है।

ताड़ितवातीवहके पूर्व पूर्व आविष्कर्ताओंका विश्वास था कि ताड़ितप्रवाहके प्रत्यावर्तनके लिए एक दूसरे तारके बिना काम नहीं चल सकता। पूर्वोक्त स्टाइन-हिल साहबने, एक दिन रेल पथका लौहवर्तमं लाइनके ताड़ितवाहो तारका काम दे सकता है या नहीं, इस बातकी जांच करते हुए आविष्कार कर डाला कि पृथिवी ही ताड़ित-प्रत्यावर्तनके लिए तारका काम कर सकता है। दो स्टेशनोमें तारके दोनों छोरोंकी जमीनमें गाड़ देनेसे, दूसरे तारका काम निकल आता है। ऐसा होने पर भी तारमें जैसा वास्तविक ताड़ितस्रोत लौट आता है, वैसा पृथिवीमें नहीं आता। पृथिवी तारके दोनों छोरोंसे विभिन्न प्रकारका ताड़ित शोषण करतो है, इसलिए तारमें ताड़ितका प्रवाह अश्याहृत रहता है। जमीनमें तार अच्छो तरह गढ़ जाना जरूरो है नहीं तो वह कामयाब नहीं होता। तारके एक छोरमें बड़े ताँबेकी पत्ती लगा कर उसे साधारणतः पुष्करिणो वा कूपदिमें गाड़ देना चाहिये। बड़े बड़े शहरोंमें गैस या पानीके नलोंमें तारका सुँह लगा देनेसे हो काम चल जाता है। स्थानविशेषमें वस्त्राघात-निवारक तार वा पत्तोंके साथ जोड़ दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं। तात्पर्य यह कि तारका छोर जो जमीनमें गाड़ा जाना है, वह सर्वदा आर्द्र रहना चाहिये, कभी सूखना न चाहिये।

ताड़ितवातीवहके मूल उपादन ३ हैं—१ दोनो स्थानोंके बीचमें धातुप्रय तारका संयोग और ताड़ित-प्रवाह-उत्पादक एक यन्त्र, २ एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन की संवाद भेजनेका यन्त्र और ३ संवाद ग्रहण करनेका यन्त्र। जिन कौगलोंसे ये कार्य, विशेषतः शिपोक्त दो कार्य सम्पन्न होते हैं, वे बहुत प्रकारके हैं, जिनमें कटिका टेलिग्राफ, डायल-टेलिग्राफ और प्रिटि टेलिग्राफ वा मुद्रणवार्ता ये तीन प्रधान हैं।

कम्पासकी कटिका टेलिग्राफ प्रधानतः एक तड़ित-प्रवाहमान यन्त्र (Galvanometer) के सिवा और कुछ भी नहीं है। एक अपरिचालक पदार्थ मण्डित तारकी

कुण्डलीमें जड़ियोंभावसे एक सुम्बक-शलाका लम्बित रहतो है और उस सुम्बक-शलाकाकी माय तारका एक काँटा संलग्न रहता है। यह शिपोक्त काँटा ही यन्त्रके बाहर दृष्टिगोचर होता है। तार द्वारा विभिन्न प्रकारका ताड़ितप्रवाह उस कुण्डलीमें प्रवाहित होने पर सुम्बक शलाका दो विभिन्न दिशाओंमें झिलतो रहतो है। इसीसे सद्धेत समझाया जाता है। प्रेरक इच्छानुसार धन वा ऋण-ताड़ित प्रवाहित कर उस काँटिकी दाहिने वा बाये झिला सकता है।

डायल टेलिग्राफमें एक डायल वा गोलाकृति कागज पर २४ अक्षर लिखे रहते हैं। केन्द्रस्थलमें एक काँटा लगा रहता है, जो ताड़ितोय सुम्बकको सहायतासे दूर-वर्ती स्टेशनसे इच्छानुसार घुमाया जा सकता है। यह काँटा जिस अक्षरका निर्देश करता है, वह प्रेरित अक्षर है, ऐसा समझा जाता है। ऐसे टेलिग्राफोंमें बहुत समय नष्ट होता है और यन्त्रादि अत्यन्त कुटिल होनेसे शीघ्र ही विग्रहल हो जाते हैं। अव्यवसायोगण अपने अपने कामके लिए ऐसा टेलिग्राफ कभी कभी व्यवहारमें लाते हैं, अन्यथा इसका व्यवहार नहीं के बराबर होता है।

मोसंघटेलीग्राफ—यह टेलिग्राफ सम्प्रति बहुत प्रचलित है। मोसंघट टेलिग्राफका प्रधान अङ्ग एक लौह-दण्ड और ताड़ितप्रवाहके गमनकालमें उसका अस्थायीरूपमें सुम्बकधर्म-प्राप्ति है। नीचे इसकी कार्य-प्रणाली संक्षेपसे लिखा जातो है।

लौहनिर्मित एक ताड़ितोय सुम्बक पर, अपरिचालक पदार्थमें डुबोया हुआ (अर्थात् अपरिचालक पदार्थसे मढ़ा हुआ) ताँबेका तार लिपटा रहता है। इस तारका एक छोर जमीनमें और एक छोर लाइनके तारके साथ लगा होता है। उक्त सुम्बकके ऊपर, एक लौह-दण्ड इस प्रकार लगा रहता है कि जिससे वह मध्यस्थानके अवस्थानके ऊपर आन्दोलित होता रहता है। एक छोटेसे स्प्रिङ्के सहारे वह डंडा सुम्बकसे विच्छिन्न हो कर अवस्थान करता है। सुम्बककी विपरीत दिशामें डंडेके छोर पर एक पेन्सिल वा सुई लगी रहतो है। उस सुई वा पेन्सिलके बहुत ही पासमें सटा हुआ, पर उससे अलग एक कागजका पतलो फीता रहता है इस

यन्त्रको इण्डिकेटर वा इन्डिकर (Indicator or Reo-  
meter) (पद्योत्सवाद् निर्देश वा दृश्य करमेका यन्त्र)  
कहते हैं ।

आरम्भके तारसे ताङ्कितप्रवाह स्थां हो कम ताङ्कितोय  
पुनरारम्भो तार कुण्डलीमें जो कर आना है त्यों जो कम  
का मोह सुम्बलकल्पमें परिवर्तन हो जाता है और परिष्कृत  
मोह टण्डको पाकयित् जाता है । उस मोहदण्डका  
एक छोटा मोषिको पाइलट रोमे पर दूसरा जोर जिनमें  
पिन्डिक वा सुई लगे होते हैं, ऊपरको उठ जाता है  
और फिर वह सुई या पिन्डिक कामजमे लग जाती है ।  
इस प्रकार जब तक ताङ्कितप्रवाह प्रवाहित होता रहता  
है तब तक सुई या पिन्डिक कामजमे सटो रहती है और  
ताङ्कितप्रवाहके बन्द होते हो 'स्प्रिङ्'के जोरसे वह  
पक्षय हो जाती है । ताङ्कित खोतनी कम वा अधिक  
समय तक प्रवाहित कम, स बाटदाता इच्छामुसार कम  
वा अधिक समय तक पिन्डिक वा सुईका सुक्ष्म कामजमे  
मटाये रल सकता है । उपरोक्त कामका जोता एक  
छोटे पक्षये पर लिपटा रहता है और वह हाथसे वा  
सफ़ोको भाति किसी बख्खंडे द्वारा समालम्बने कीजा  
जाता है ; सुतरां पिन्डिक वा सुई कमजाम वा कुछ  
अधिक समय तक कामजमे फोने पर सटो रहनेसे उस  
कामज पर कामज विन्दु ( ) वा रेखा (—) पहिच हो  
जातो है ; कहीं कहीं पिन्डिक वा सुईके बहसे प्वाहो  
वा आरोह नल कबहुत होती है ; इससे पिन्डिक मो स्पट  
होता है और अपेवाहत पोषकर ताङ्कित प्रवाहमे काम  
पल जाता है । इन बिन्दु और रेखापक्षि बिन्धाममे  
समस्त पद्योत्सवा बिन्धाम की जाता है । मोषिके मोर्म  
माइबके टेलिग्राफको बन्माना सिमी आतो है—

A —	N —	1 —
B —	O —	2 —
C —	P —	3 —
D —	Q —	4 —
E —	R —	5 —
F —	S —	6 —
G —	T —	7 —
H —	U —	8 —
I —	V —	9 —
J —	W —	0 —
K —	X —	Understood —
L —	Y —	
M —	Z —	

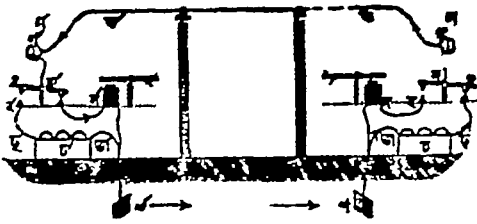
दो पद्योत्सवे मोषमें एम "डेस" वा रेखाके बराबर  
त्रगह कामो जोड़ दा जातो है और दो शब्दोंमे मोषमें  
उभये प्राकः दूना काम कामो रक्ता जाता है । एक  
कटिके वन्धमें पिसा-पिन्डिक कटिके भाई तरल तबा पिसा  
पिन्डिक ताङ्कितो पोः सुखा बुधा माक्षम पड़ता है ।  
पानत", ये यथाक्रमसे मोर्म साइबके बिन्दु और रेखाके  
समान हो काम पडते हैं । प्र पद्यो बन् मानाको तरह  
कल्पुंके पिन्डिके द्वारा बिन्दुके प, पो, क, न पाटि मी  
सूचित सिधे जा सकती हैं ।

उंवार मन्नेका रलन वा मोर्म माइबके बायी (Morse's  
k y)—यह यन्त्र एक कलकीकी छोटी पटिया पर बना



है । इससे ऊपर 'व' पद्यकालमें निबह ० '०' धातुमय  
दण्ड पवसित है । इसका 'न' प्राक 'न' सुद्ध स्प्रिङ्कि  
सबंदा 'व' तारके साथ लगी हुए ' नामक एक धातु  
कल्पमें मजबूत रहता है और अपर प्राक 'व' ऊपरको  
उठ जाता है । '०' माइबका तार '००' दण्डके साथ संबन्ध  
है । '०' धातुकल्प 'न' तारके द्वारा ताङ्कितकोपक्षे एक  
निबधे साथ मजबूत है । 'व' धातुपिन्डिक 'व' तारके  
द्वारा इन्डिकेटर वा निर्देशक यन्त्रके साथ मजबूत है ।  
'०' कोनामटो वा पद्य कोरे उपरिचामक पदाद्य निर्मित  
होता है ( इच्छा ) है । इस पिन्डिके स बाट-पद्यक  
के समय इसको जैसे पद्यका रहतो है, वही दिखलाई  
गरे है । दूसरी छंघमने ताङ्कितप्रवाह माइबके '०'  
तारमें जो कर पाता और '००' दण्डमें प्रविष्ट होता  
है फिर वहजमे प्राकमें जो कर '०' 'व' तारके द्वारा  
संबाद निर्देशक यन्त्रको तार-कुण्डलीमें परिवर्तन करता  
बुधा मूर्तिमें प्रवेश करता है । निर्देशक यन्त्रमें जते  
समय वहां सङ्केत संचित हो जाता है । स बाट भेजने  
समय, स बाटदाता स्थां जो पिन्डिक लको टाक कर '०' के  
माथ ताङ्कितकोपका स योम करता है, स्थां ही उसका  
दूना धार 'व' मे पद्य हो जाता है । फिर ताङ्कित  
कोपक्षे ताङ्कितप्रवाह पद्यमे धातु '००' दण्ड पोः '०'

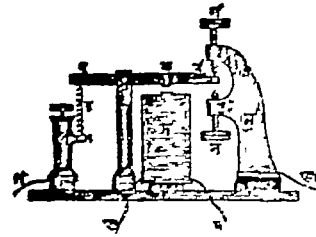
तारकी लाइनके द्वारा दूसरी स्टेशन पर पहुंच जाता है। इस प्रकारसे संवाददाता इच्छानुसार हैण्ड लकी कम वा अधिक समय तक दाव कर. तार द्वारा कम वा अधिक समय तक ताडितप्रवाहको प्रवाहित रख सकता है और दूसरी स्टेशन पर बिन्दु वा रेखा अंकित कर सकता है। दो स्टेशनोंका परस्पर किस प्रकारसे सम्बन्ध रहता है, इस बातको समझानेके लिए नीचे एक मासूलो चित्र दिया जाता है।



इस चित्रमें दो स्टेशनोंके यन्त्रादि हबड़ बना दिये गये हैं और बीचमें दो तारके खंभे भी खींचे हुए हैं। '८' और '६' ताडितकोष हैं, 'क' और 'क' ये दो संवाद देनेके यन्त्र (Key वा चाबी) हैं, 'न' और 'न' संवाद ग्रहण करनेके यन्त्र (वा निर्देशक) हैं, 'ग' और 'ग' ताडितमान यन्त्र हैं तथा 'उ' और 'उ' लाइनका तार है। '८' और '६' इन दो ताडितकोषोंका एक एक प्रान्त 'छ' और 'छ' स्थानोप संवाद देनेके यन्त्रमें तथा अर्ध प्रान्त 'छ' और 'छ' भूगर्भके साथ संयुक्त हैं; चित्रमें दाहिनी ओरकी स्टेशनमें वाई' तरफकी स्टेशनमें संवाद आ रहा है, आगे वाई' ओरकी स्टेशनमें वह संवाद-निर्देशक यन्त्रमें स्थापित हो रहा है। ताडितस्त्रोत '८' ताडितकोषमें निकल कर 'क' चाबीमें और 'ग' ताडितमान यन्त्रमें होता हुआ लाइनके तारमें प्रवेश कर रहा है; और दूसरी स्टेशन पर पहुंच कर वहांके 'ग' ताडितमान यन्त्रमें होता हुआ 'क' चाबीमें प्रवेश कर रहा है। 'क' चाबी 'न' निर्देशक-यन्त्रमें संलग्न होनेके कारण ताडितप्रवाह वहां जा कर संवाद स्थापन कर रहा है और अन्तमें वह 'न' स्थानमें भूगर्भमें प्रवेश कर रहा है। ताडितमान यन्त्र मात्रमें इतना ही मालूम होता रहता है कि ताडितप्रवाह जा रहा है या नहीं। इस तरह एकही तारसे संवाद भेजना और ग्रहण करना दोनों काम होते हैं।

टेलिग्राफ-कार्यालयमें और भी कुछ यन्त्र रहते हैं; नीचे उनका वर्णन लिखा जाता है।

रिले (Relay) — यह यन्त्र प्रायः निर्देशक-यन्त्रके समान ही है, पर यह उसको अपेक्षा अनिर्देशक-यन्त्र और अपेक्षाकृत क्षीणतर ताडितप्रवाह द्वारा परिचालित हो सकता है। तारका ताडितप्रवाह स्वभावतः क्षीण है, जिसमें अधिक दूर गमन करते करते नाना कारणोंसे और भी क्षीणतर हो जाता है; सुतरा वह निर्देशक यन्त्रको तेजोके साथ परिचालित नहीं कर सकता और न उससे कागज पर अच्छी तरह टाग ही पड़ता है। इसी लिए प्रत्येक स्टेशन पर केवल स्थानोप निर्देशक यन्त्रमें प्रेषित संवादके मुद्रणके लिए एक पृथक् ताडितकोष रहता है। इस ताडितकोषके दो मिर्रोंसे एक मात्सरूपसे निर्देशक यन्त्रके साथ संलग्न है; दूसरा तारके हाग 'ख' रिलेयन्त्रके 'न' स्थानके साथ संलग्न है।



निर्देशक-यन्त्रके ताडितोप सुम्बकको तार कुण्डलीका दूसरा छोर 'ग' तार-द्वारा 'ग' होता हुआ 'व' दगड़के साथ जा मिला है। रिलेमें स्थित 'न' तार कुण्डलीका एक छोर लाइनमें जा मिला है और दूसरा जमोनमें गड़ा है। अब वही ही लाइनके तारसे ताडितस्त्रोत रिलेमें स्थित ताडितोप सुम्बकके 'न' तार-कुण्डलीमें हो कर जमोनमें जाता है, वही हो वह ताडितोप सुम्बक 'क' दगड़को आकर्षण करता है और उसका 'व' प्रान्त 'न' के साथ संयुक्त हो जाता है। सुतरा स्थानोप ताडितकोष के दोनों मिर्रोंके संयुक्त होने पर, उसका प्रवल ताडितप्रवाह बिना वाधाके 'ख, न, क, व, ग' मार्ग निर्देशक यन्त्र हो कर गमन करता है और उसे कार्यकारी बनाता है; और वही ही लाइनके तारमें ताडितप्रवाह बन्द हो जाता है, वही ही 'ख' स्त्रोतके ओरसे 'क' स्त्रोतपर

श्री वट जाता है, सुतरां निर्दोषक यन्त्रमें ताद्वितप्रवाह स्थित होता है। इसी प्रकार प्रत्येक बार जैसे रिने यन्त्रमें जो कर ताद्वितप्रवाह समन करता है निर्दोषक यन्त्रमें भी हृदय इसी प्रकारमें प्रवहतर ताद्वितप्रवाह समन करता है और सद्योतीका स्थलतया निर्दोष करता है।

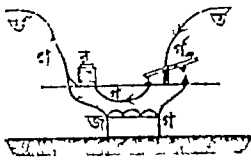
वर्तमानताद्वितवाचार्थ—टेनिपाय कार्योत्पत्ति, क्षम चारीमय इतनी चिप्रतरको साथ अन्तन्तद्वयमें संवाद मन्त्रते और पश्य करतें है कि त्रिमको दक्ष कर पावय होने समता है। एक सुदय क्षम चारो प्रत्येक मिनटमें ३०। ४० गन्ध प्रेरण और पश्य कर सकता है। सुनि-सुच क्षमचारी स नाद पश्य करतें समय वायवजको तरण पाक उठा कर देखता भा नहीं बह मास निर्दोषक-यन्त्रके ताद्वितोय पुग्गकके साथ मोहदृष्टके पाकात-अनित गन्धके जो महोत समझ सीता है। इसी परसे चमेरिका-वालोमें एक प्रकारका नया टेनिपाय पाविष्कृत किया, जिनमें रिने-यन्त्र केसा एक यन्त्र रहता है। ताद्वित-प्रवाह ज्यों जो तार दाग सममें प्रवेग करता है, ज्यों जो इनका ताद्वितोय पुग्गक एक छोटी हबोकोको आवर्तित करता है। पुग्गक पर इस हबोकोको पकरी जो टक, गन्ध होता है और प्रवाह गन्ध जोति जो स्थिरके औरसे हबोको ऊपरकी उठ जाता है। इस प्रकारसे ताद्वितस्त्रोत को पक्य वा पविष्य समय तक प्रवाहित रख कर, गन्धके ऊपर और दोर्वताडा तारतम्य प्रकट किया जा सकता है। यह ऊपर और दोष गन्ध समसे मोहके विष्टु और रक्षाके समान है। समयको विधायत और प्रवाहो पश्य होनेके कारण विद्वहक सब स यही टेनि-पाय प्रचलित हो गया है।

जिस हृदय पर स नाद भी जा जाता है, उस हृदयनत्र क्षम चारीयोको सावधान करके लिए और एक यन्त्र व्यवहृत होता है, जिसे इस ताद्वितोय पश्यो कह सकते हैं। इसका गमनप्रवाहो इस प्रकार है, एक सड़कोकी पट्टिया पर एक तु नक लगा रहता है, जिसके एक और पर स्थिर, द्वारा पावक एक धातुकी पत्ती और उस पर एक छोटी हबोकी तथा उस हबोकीके पार्श्वमें एक प्रप्यो लगी होती है। यह हबोको स्थिरके औरसे बटा, और

पुग्गकके पुग्गक रहती है। ताद्वितोय पुग्गककी तार कुण्डलोका एक और हबोकोके साथ स तुल्य रहता है। आरनके माह इस यन्त्रको ओड़ देने पर ज्यों जो ताद्वित प्रवाह उस हबोकोमें जो कर तारकुण्डलोमें प्रवेग करता और दूसरी ओरसे निकल जाता है, ज्यों ही पुग्गककी यन्त्रमें हबोको पावकित हो कर पश्यो पर पकती है। परन्तु हबोकोके पावकित होती जो ताद्वितप्रवाह स्थिरत हो जाता है और हबोकोके एक पाकात होनेमें स्थिरके कारणे यन्त्र हो जाती है इट कर पूर्वावस्थाको पाव होती हो फिर सममें ताद्वितप्रवाह स तुल्य होता है और बह पुनः प्रप्यो पर पकती है। इस प्रकारसे जब तक ताद्वितप्रवाह चलता रहता है, तब तक पश्यो बजती रहती है। क्षम चारो उक्त गन्धको सुन कर यन्त्रन पास पाता है और जोयन्त्रसे ताद्वितस्त्रोतको सम यन्त्रसे उठा कर मोहा निर्दोषक यन्त्रमें जाने देता है।

जसो जसो भ्रमशा मिय पादिने तारण आभाविष्य ताद्वित विष्टित हो जाता है और संवाद देने जेमेंमें हबो दिवत होतो है। यहां तक कि मवायन उपद्रव भी ोम मयते हैं। इस कैव उपद्रवके निराकरणके लिए, पाहनका तार एक ताद्वित परिचालन यन्त्रके माह लुहा रहता है। आरनके तारसे ताद्वितप्रवाह सोभा टेनिपाय के यन्त्रमें नहीं जाता, बल्कि इस यन्त्रमें हो कर जाता है। इ-का गमन-प्रवाहो इस प्रकार है,—पारोके समान टीतक रो दो तथिको पतिदी नग्राहमें पाव-पास इस तरह लगे रहती हैं कि ओ एक दूसरेका कार्य नहीं करतो। इनमेंसे एक तो आरनके तारके पाव और एव भूगर्भके पाव स तुल्य रहती है। मीबादिको प्रचोदन यन्त्रके कारण ज्यों जो तारसे ताद्वित यन्त्रित होता है, ज्यों जो उस पारोके टुथीरी इतिमी जो कर बह भूमिमें प्रकट हो जाता है। और फिर विष्टुको धाराहा नहीं रहतो। दंत एक दूसरेमें सटे न रहनेके कारण तरका ताद्वितस्त्रोत भूमिमें नहीं जाता, सुतरां वातावरणकी तुल्य चलि नही होती। सिधे मीबादि-द्वारा उपचोयमान ताद्वित ही नष्ट होती है।

दो प्रधान हृदययोकी कोचने कससे पविष्य हृदयन ज्यों तो सममें हो कर विश्व प्रकारसे संवाद पागे जाता है, जो दिव्यवाते है।



'घ' ग' ताडितकोष है। इसका एक सेक 'ग' संवाद देनेकी यन्त्र की प्रतियासे और दूसरा सेक 'घ' लाइनके तारके साथ जुड़ा हुआ है। ताडितप्रवाह 'घ' लाइनके तारमें हो कर संवाद भेजनेकी यन्त्रमें प्रवेश कर रहा है और वहांसे 'ग' की तरफ निर्देशक-यन्त्रमें हो कर 'घ' लाइनके तारमें जा रहा है। इस प्रकारसे गमन करते समय वहां निर्देशक-यन्त्रमें संवाद सूचित होता है, इसमें समय भी कम लगता है। ताडितप्रवाह अव्याहतभावसे उसी समय (खटकानेके साथ ही) निर्दिष्ट स्थान वा स्टेशन पर जा कर वहां संवाद स्थापित करता है। इस प्रकार एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशनको संवाद भेजते समय, मध्यवर्ती स्टेशनोंमें भी वह संवाद स्थापित होता है।

यदि एक स्टेशनसे दूसरी स्टेशन बहुत दूर हो, तो प्रथम ताडितकोषका व्यवहार करने पर भी, प्रवाह गमन करते करते चीण हो जाता है। इसलिए दूरवर्ती स्टेशनों के बीचमें एक स्टेशनका होना आवश्यक है। इस मध्यवर्ती स्टेशनके यन्त्रादि किस प्रकारसे विन्यस्त रहते हैं, सो लिखा जाता है।



'घ' ताडितकोष है। इसका एक सेक 'ग' 'घ' 'घ' दण्डसे लगा हुआ है, और दूसरा सेक 'ग' जमीनमें गड़ा है। 'ग' ताडितोय चुंबक है; इसकी तार-कुण्डलोका एक छोटा लाइनके तारसे लगा है और दूसरा छोटा जमीनमें गड़ा हुआ है। 'घ' घातुमय दण्ड है, जो दूसरी तरफ 'घ' लाइनके तारके साथ संयुक्त है। 'घ' दण्ड साधारणतः सिंक्रिके जोरसे 'ग' से घृथक रहता है। ताडित प्रवाह 'घ' लाइनके तारसे 'ग' ताडितोय चुंबकको

कुण्डलीमें घूमता हुआ जमीनमें प्रवेश करता है, परन्तु उस समय 'घ' दण्डका 'घ' प्रान्त चुंबकके आकर्षणसे आकृष्ट होता है और इस प्रकार 'घ' के संयुक्त होने पर 'घ' ताडितकोषसे नवीन और प्रबलतर ताडितप्रवाह 'घ' और 'घ' दण्डमें हो कर 'ग' 'ग' को और 'घ' लाइनके तारमें प्रवाहित होता है। और 'घ' तारमें ताडितस्त्रोत बन्द होते हैं 'घ' और 'घ' घृथक हो जाती हैं और इस कारण 'घ' तारमें भी ताडितप्रवाह बन्द हो जाता है। 'घ' तारमें जब तक ताडितप्रवाह रहता है, तब तक 'घ' तारमें भी मध्यवर्ती स्टेशनके ताडितकोषसे प्रबल ताडितस्त्रोत प्रवाहित होता है; और इन्हींलिए दूर गमन-दशतः प्रवाहको चोपता-जन्म कोई छानि नहीं होती।

यहाँ तक, साधारणतः आजकल जा टेलिग्राफ सर्वत्र प्रचलित है, उसोका मंलिपमें वर्णन किया गया है। वतमान समयमें इसके सिवा और भी अनेक प्रकारके ताडितवाचीन आविष्कृत हुए हैं और हो रहे हैं; जिनमेंसे कुछ टेलिग्राफोका भिन्नत्व नोचे लिखा जाता है।

Telegraph वा तसवोरे नताग्नेय टेलिग्राफ—टेलिग्राफसे संवाद जाता है और फोटोग्राफसे फोटो उतरतो है, यह बात सभी जानते हैं, पर टेलिग्राफसे फोटो उतरतो है और फोटोग्राफसे संवाद भेजा जाता हो, यह बात किसीके भी मगजमें न आई होगी। परन्तु विज्ञानने ये असम्भावनीय वार्ते भी सिद्ध करके दिखा दीं।

टेलिग्राफको सहायतासे जिन यन्त्रके द्वारा तसवोरे उतारो जाते हैं, उस यन्त्रका नाम Teleidiograph है। इसमें खर्च भी अधिक नहीं पड़ता और न इसमें कुछ जटिलता ही है। इसके जरिये विलायतके बहुतसे संवाद-पत्रों और पुलिस-कर्मचारियोंने प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है। सैकड़ों मीलकी दूरी पर किसी राज्यमें सहसा कोई विप्लव उपस्थित हो, तो तुरंत ही उसके नेताओंका चित्र प्रकाशित हो कर चारों तरफ फैल जाता है; जनसाधारण आश्चर्यमें डूब कर धन्य धन्य कहने लगते हैं। यह टेलिडियाग्राफ क्रमशः व्यवसाय-वाणिज्यका अङ्ग होता जा रहा है।

इसके आविष्कारक मि० अनेट ए० हुमेल (Mr Ernest A. Hummel, of St. Paul Minnesota) हैं।

पाप एक थडो बनानेवाले कारोबार थे। तब एक समयमें ही पापने इस थडूत वगुना धाबि-भार किया था। पापने एक ही पत्रक १८७१ ई के मई मासमें इसका मूल् मख एक बार काय्य धारण किया था।

इस समय पाप धरम ज्ञातापिताने मिन्नेके जिन्हे खमनी मये थे और वहां सिस्ती म बाटपवर्तमें एक तमबोर दिक् कर पाप इनके धाबिन्धारके सखमें उगमोत हो गये। उसके बाद १८८८ ई में खमवरो मबोनेमें पापने 'New York Herald' धाबिमें इसको परोका करनो दफ कर दो। उक्त ठावातपके दो खमरी पापने धपने जिन्हे खानो कर निघ, जिन्मेंसे एकरी टेलिघाफ मेजने की मगोन (Transmitter) धोर वूममें टेलिघाफ सेनेको मगोन (Receiver) रख कर बिनाके धाटान प्रदानके विषयमें परोका करने मगे। पहले पत्रक पापने धाबिमें धारों धोर धाठ मीन्ध मखा तार खया कर काय्य धारण कर दिवा धोर उसमें बिन किन धोकोकी खमरी के, धमकी धोर करने मगे।

इस प्रकारसे एक नय्य धोर करनेके बाद पापने धतनो कबलि कर को कि सन् १८८८ई, १८ धमीनकी पापने New York Herald धाबिसये (Chicago Times Herald, The St. Louis Retonico, The Boston Herald धोर The Philadelphia Inquirer इन धाबिसीमें धोटो भेजे। एक ही समयमें, एक ही तार-दारा एक ही उक्त धोटो धाबिसीमें वहु धमिसे धोर ही धापकी धोरि धारों धोर धैन गई।

धाधाय्य मीममें की टेलिघाफ खयाया के उसमें बिन्दु धोर रेखाका धनुबाद करना पडता है बिन्दु धूमिन्ध नाइवने धिमो तारके ध निखानो कि उन्को बिन्दु धोर रेधाधोके द्वारा वहां तसबोर धींच कर तेवार हो जाता है।

टेलिघाफमें धेवे धुबिधोकी एन Conductor बना कर निर्य्य एक तारमें एक (Complete circuit) धूरे धैटन बनाया जाता है, धमो प्रकार Telegraph में भी एक ध्यानके बिन्दु धोर रेखा धिमो जाती है। उक्त धरमें कान्धि धुना जाता था। धींके परोका द्वारा धाबिन्धत धुधा कि भेजनेधानी मगोनके धरिये बिन्दु वा

रेखा धैमि धो बिन्दु भेजे जाती है, धे धंर धोधि धो धेने धानी मगोनक धधि एक पतला धाभन रख देनेसे उसमें धो धरिन्ध हो जाती है। इन्को प्रखानो धर धूमसके धाबिन्धर एक भिति धरि उत है।

टोना यन्त्र एक ही प्रखालिये धमि है धोर तार-दारा धनुबुध है। प्रन्धेक यन्त्रमें एक एक cylinder है धिसको सधधारे धाठ रख है धोर धकोके धूर्नेक समान एक प्रकारन यन्त्र (Clock work) धी, एक ही प्रधारसे धुमाया जा सकता है। प्रन्धेक मिन्धरके धपर एक पतला धाटानामका कांडा (Style-वा needle) है, जिसका धाधार टेलिघाफको धाधधे धपमामके धम न है। इसकी सिधा तमबोर धतारनेके निघ धोर धो कई धींकोकी धाभय्यकता होतो है। धेवे—८ रख सन्धो धोर ६ रख धोको एक पत्ती, तथा इसी नापका एक Carbon manifold electrolying paper (धोह धाबिस धादिमें काम धानेधाना निधा कामध) इन्धादि।

धध धैरनेको तरकोक सिन्धो जाती है। जिसकी तसबोर भिजने धो, उमका धाटो धरसे उक्त टोनको पत्ती धर उसकी एक तमबोर धाबिधो धाधि बिन्दु तसबो रके धारों धोर एक एक रख खान धाको धींके देना धाधि, कसम धा धूधोसे तसबोर धींचन धाधि, धरन्धु सेध-वधधे धाहीको धधिधा धना धोर non conductor of electricity धोना धाधि। 'धुरधार' धे धिधनाया धुधा धपधामे धाहोका काम किया जा सकता है।

उक्त पत्तीको, जिल धर धपकीको धाधोने तसबोर धींको गई है, सिन्धर धर लधेड कर धेरितध धान धर धुबाध भेजनेके नाध धो वहां तमबोर तयार हो जाती है उस समय धाधक यन्त्रके सिन्धर धर दो धागध धके रहती है। (जिन्धे एक धारधोन धियर होता है) धोर उमके धपर कांडा तथा Style-नाया जाता है। धध टोना धैटनेका प्रधर (Current) धींका जाता है धोर टोना मिन्धर धमो धधो मगोनको धधधधधे धे धमधधधे धुधने मगति है तथा धररक यन्त्रका कांडा लध पत्तीके धपकेके धपरने जाता है, तब धपधधधे nonconductor धींने धाधक यन्त्रमें धेधु तिध प्रधधध



पंहुचनेके कारण ग्राहक यन्त्रका काँटा कागज पर जोरसे लग कर चिह्न बना देता है। प्रेरक यन्त्रमें जैसी भी तसवीर लगी रहती है, ग्राहक यन्त्रके कागज पर हवह बैसे हो चिह्न वा रेखाएँ आदि खींच जाती हैं। पत्तीके जिन स्थानोंमें चपटा नहीं रहता, उन स्थानों पर कटिके लगते हो वैद्युतिक प्रवाह चालित होता है और तत्क्षणात् ग्राहक यन्त्रका काँटा कागजसे अलग हो कर ऊपरकी चढ़ जाता है, फिर उस कागज पर किसी तरहका दाग नहीं पड़ता। इस प्रकार सिलण्डर एक बार घूम कर कुछ देर ठहरता है और कुछ बाईं ओर हट कर फिर घूमने लगता है। क्रमशः रेखाओंके पार्श्वमें रेखाये बनती जाती हैं और २० वा ३० मिनटमें एक चित्र बन कर तैयार हो जाता है। इसके बाद कागज खोल कर चित्रकारको दिया जाता है और वह उसे देख भाल कर जहाँ जो कुछ कमी रह जातो है, उसे सुधार देता है, फिर वह चित्र प्रकाश-योग्य हो जाता है। सिरके बाल पके हो, तो लिख दिया जाता है। उसके अनुसार चित्रकर आलोक और छाया डाल कर उसे सुधार देता है। एक ही मशिनसे उसी समय वही तसवीर भिन्न भिन्न दूरवर्ती स्थानों पर भेजी जा सकती है।

यह स्थिर हो चुका है कि, विजली एक सेकेण्डमें ४००००० मील दौड़ सकती है। अतएव यह कहा जा सकता है, कि चाहे कितनी भी दूर क्यों न हो इसका भी प्रवाह तत्क्षणात् पहुँच जाता है। फिलहाल इस यन्त्रको "New York Herald"ने अपने ही कर्कमें रक्वा है।

द्वि च ग्राहकका प्रिण्टिङ्ग टेलिग्राफ (Hughe's printing-telegraph) — इसके द्वारा दूरवर्ती स्टेशन पर अंग्रेजी अक्षरोंमें हवा हुआ संवाद पहुँचता है। इसके यन्त्रादि बहुत ही जटिल हैं; इसलिए सुनिपुण कर्मचारो हो इसका व्यवहार कर सकते हैं। फिलहाल इसको और भी उन्नति हो गई है।

ऊपर ग्राहकका राइटिङ्ग टेलिग्राफ (Cowper's Writing telegraph) — इस अद्भुत यन्त्रके द्वारा, एक स्टेशन पर संवाददाता जो कुछ भी लिखेगा, वह तत्क्षणात् दूसरी स्टेशन पर लिख जायगा। इसको अब काफी तारको हो गई है।

सामुद्रिकतार—जो तार समुद्रमें ही कर जाते हैं, वह बहुत मजबूत होते हैं और उस पर नाना प्रकारके अपरिचालक पदार्थ चढ़े रहते हैं। सामुद्रिक तारको गठन-प्रणाली इस प्रकार है,—पाँच या सात विशुद्ध तांबेके तारोंको एक साथ एँठ कर, उसके ऊपर अपरिचालक कोई पदार्थ मढ़ा जाता है; फिर उस पर गुटापार्चा कुचुका आदि पदार्थ ४।५ बार चढाये जाते हैं। अन्तमें उसे नोडोंके तार और अलकतरेमें डुबोये हुए सन आदिके द्वारा वेष्टित किया जाता है। इस प्रकारसे मध्यस्थित तारको सुरक्षित हो जाने पर, फिर उसे धूना तारपिन तेल, अलकतरे आदिसे परिपूर्ण उत्तम कड़इमें डुबो लिया जाता है।

वे-तारका तार—(Wireless Telegraph) इस टेलिग्राफमें तारको आवश्यकता नहीं, बिना तारके ही खबर पहुँच जाती है। केवल दोनों स्थानों पर दो विद्युत् यन्त्र होते हैं, जिनकी मद्दयतासे एक स्थानका संवाद दूसरे स्थान तक बिना तारको सहायताके हो पहुँच जाता है। विशेष विवरणके लिये 'वे-तारका तार' देखो।

ताड़ित वियोजन (सं० लो०) ताड़ितस्य वियोजनं ६ तत्। (Electrical repulsion) जो ताड़ित पदार्थोंके गुण द्वारा झोटी वस्तु काँच या लाइसे अलग हो जाय, उसे ताड़ित-वियोजन कहते हैं।

ताड़िताकर्षण (सं० लो०) ताड़ितस्य आकर्षणं ६ तत्। (Electrical attraction) वह वस्तु जो ताड़ित पदार्थोंके गुण द्वारा काँच या लाइके साथ मिल जाती है उसे ताड़िताकर्षण कहते हैं।

ताड़ितापरिचालक (सं० पु०) ताड़ितस्य अपरिचालकः ६-तत्। (non-conductor of electricity) वह वस्तु जिससे ताड़ित पदार्थोंका सञ्चालन निवारण किया जाय।

ताड़ितालोक—ताड़ितका आलोक, विजलीका प्रकाश।

ताड़ी (सं० स्त्री०) ताड़ि डीप्। ताड़का पेड़। इसका पर्याय—ताड़ि, ताली और तालि है। २ आभरणविशेष, एक प्रकारका गहना।

ताड़ो (हिं० स्त्री०) मादकशक्ति विशिष्ट ताड़का रस, वह नयोला रस जो ताड़के फूलते हुए ड ठलोंमेंसे निक-

मता है। प्रचान्त ताड़ के रसको ताड़ी कहा जाने पर भी ईश, अरु, मोम, मीरु, भारियल, पादि वृक्षों को रस निकलता है, जिसके पानेसे मया होता है, उसको भी माधारकता ताड़ो कहती है।

भारतमें ताड़ोका व्यवहार कुछ मया नहीं है। कुषाणवंशकालमें ताड़िकाके नामसे ताड़ोका उल्लेख पाया जाता है। यम्बकतन्त्रके १३१ पदकमें इक्षुरम, बदरो रम, उम्ब रम, अत्रु रम, भारियल और ग्राधारमसे मादक-द्रव्य बनानेका विधान है। वय देखो।

भारतवर्षमें सब भी लसक अथवा मीरुके लिये ताड़, अत्रु, भारियल, मीरु, पादिका ताड़ो व्यवहृत होती है। ताड़ोमें मादकतायुक्ति होने पर भी ताड़ो और मयमें बहुत फरक है। समावतः वा अग्नि उपायसे ताड़ पादिके वृक्षों को रस निकलता है उसको दूध या तापसे घोलकर खरके तिरस्कर किया जाता है इसीका नाम ताड़ो है और उसे सड़ा सुपा कर जो पानोय बनाया जाता है उसको मय कहती है।

भारतमें जिन जिन वृक्षोंमें लेने के लिये ताड़ो मरुतोत होता है, सोचे इन सबको प्रचामी लिखी जाती है।

ताड़-वृक्षके कईभागमें जो कच्ची कच्ची पुष्पित शाखा वा पत्तिका दूध निकल निकलती है, उनसे मीरुको चखी तरह घोल कर रस निकलनेके लक्षणमें एक पाधारकता हीन दिया जाता है। अत्रुकर खरके लोय रोज लुहक ली घोल कर लमका रस लुनी पात्रमें टाल कर भी खाते हैं और पूर्ववत् कठनीको घोल कर पात्र हीन देते हैं। इन तरह सब तब उन कठनीका मूलतक न बूट जाय तब तक ही खोले जाते हैं। माधारकता पादिमें मीरुका मान तब ताड़ वृक्ष काट कर रस निकाला जाता है। भारतमें मयके ही ताड़के रस निकाला जाता है जिसमें दासिनायकमें कुछ अधिक। ताड़ देखो।

अत्रुकर खरके पानो लोय रसमें घोड़ोको पुराने काखो वा जेनकुल ताड़ो मिला देते हैं, जिससे उस रसमें मादकतायुक्ति बहुत अन्त बढ़ जाती है।

ताड़का रस वा ताड़ो माधारक भागोको मया करके का सद्य उपाय है। इसमें मयमें गन्धसे पावकारोसे ज्ञान होत है, एक बार मयके मयमें गन्धसे अत्रु और

ताड़वृक्षोको काट लानेका पादेय दिया जा। ० उससे अनुहार एक घृत मिलेमें जो प्रायः कापसे ज्यादा उप काटे गये है। किन्तु रस जोत्रका अत्रु का सद्यमें निर्मूल हो सकता है? कुछ दिन बाद जो प्रायः पचान हजार उप फिर पेटा हो गये। कुछ भी हो सब गम मेष्य ताड़ और अत्रुके पेटको निर्मूल करना नहीं चाहती बल्कि इससे जो ताड़ी बना कर बेचते हैं, गम मेष्य उनमें कुछ कुछ कर बन्ध करतो है।

भारत और सिन्धुके रोडोके लिये प्रायः मयमें ही पोट रोडोके लिये ताड़ो व्यवहार करते हैं। इसमें लिखी भी बनावे है।

मायप्रकाशके मतसे-ताड़का ताड़ा रस पचान्त मादक, पहा होने पर पिच्छजनक और वाकुदोपनायक है।

अत्रु।—दियो अत्रु विकट अत्रु पादि लाना प्रकार के अत्रु रसके कठनीको घोल काट कर जो रस निकाला जाता है उसमें भी ताड़ो बनती है। अत्रु रस लुण्ठितसे पचने पर माताकासमें खूब मोटा और मायप्रकाशित रहता है, किन्तु जितना दिन अत्रुता रहता है उतनाही उसमें माय बढ़ता और ताड़ो कपमें परिवर्त होता रहता है। टिन चढ़े बाद उस किन्तु अत्रु रसको पानेसे मया होता है।

मीरु ( मरि ) (Caryota urens)—इसको ताड़ो मन्दात्र प्रदेशमें अधिक प्रचलित है। इसके १३ से २४ वय तकके पेटके मन्दात्रो लोय रस निकाला करती है। घोषघट्टमें ही इसमें अधिक रस निकलता है। एक एक पेटके २४ लक्षमें एक मयके भी ज्यादा रस पाया जाता है। पेटको काट देने पर भी एक मयके तब रस निकलता रहता है। ताड़ा रस खातेमें बहुत मोटा मयता है, किन्तु घोड़ो देर तक रखनेमें उसमें मय था जाता है और यह तोत्रमादकतायुक्तिविषय ताड़ोमें परिवर्त हो जाता है। दासिनायक मया मय ज्ञानिके अधिकार्य लोय रस ताड़ोको व्यवहारमें लाते हैं। इनको सुपाकेसे मीरु ( Gin ) बनता है।

भारियल। जैसे ताड़ वृक्षके पत्तिका दूध कठनीको घोल कर लममें रस निकालते हैं उसी तरह भारियल

पृष्ठके अग्रभागकी—जहाँसे शाखाएँ निकलती हैं उससे नीचेके भागको काट झील कर रस निकाला जाता है। आर्यावर्तमें नारियलके पेड़में रस निकालनेको प्रथा अधिक प्रचलित न होने पर भी दक्षिणात्यमें यथेष्ट प्रचलित है। बंबई प्रदेशके लोग दो तरहमें नारियलके पेड़की रक्षा करते हैं, एक फल पानेके लिए और दूसरे रसके लिए। जिम पेड़में रस निकाला जाता है, उस समय उस पर फल नहीं लगते हैं। बंबई प्रदेशमें सानार लोग नारियलका रस निकालते हैं। इसके लिए उन्हें पेड़ पौछे १) से ३) ५० तक कर देना पड़ता है। ताड वा खजूर रसकी अपेक्षा नारियलका रस अति शोष ही भाग दे कर ताडीरूपमें परिणत हो जाता है। इसलिए जो गुड़ बनाना चाहते हैं, वे ताजा रस ले कर शोष ही भाग पर चढा देते हैं। नारियलको ताडो साधारणत नोरा नामसे प्रसिद्ध है। भारतवर्षके सिवा भारत महासागरीय द्वीपोंमें भी नोरा व्यवहृत होता है।

नारिकेल देखो।

नोम।—किन्हीं तिसो निंबहृत्तके काण्डसे भी दो तीन जगहसे रस निकलता है। कोई कोई इस रसको नौमको ताडो कहते हैं। रस निकलनेसे कुछ पड़िलिसे हो जहाँसे रस निकालेगा, वहाँ एक तरहका चूँ चूँ शब्द होता रहता है। शब्द सुनते ही लोग समझ लेते हैं कि, पेड़में रस हुआ है, शोष निकलेगा, उस समय वहाँ एक पात्र लगा देते हैं। उसमें बहुत थोडा वूँट वूँट रस टपकता रहता है। नौमके पेड़से जैसे स्वभावतः रस निकलता है, उमो तरह कृत्रिम उपायसे भी किन्हीं किन्हीं स्थानसे रस निकाला जा सकता है। कृत्रिम उपायसे रस निकालना हो तो पेड़के उस स्थानका—जहाँसे शाखाएँ निकलती हैं—प्रायः अर्धा तिस्रा काट कर उसके नीचे पात्र रख देना चाहिये। स्वभावतः जैसा खच्छ और वर्षा-होन रस निकलता है, कृत्रिम उपायसे वैसा वा उसका एकद्वितीयांश रस भी नहीं निकलता। मन्द्राज प्रदेशमें कोई कोई नौमको ताडोसे तेज शराव बना कर पोया करते हैं।

ताडुल (सं० पु०) ताडयति तड् णिच्-उल्। ताडक, ताडन करने वाला।

ताड्य (मं० लि०) १ ताडन योग्य, ताडनेके योग्य। २ डाँटने डपटने लायक। ३ दण्ड्य, सजा देनेके लायक। ताड्यमान (सं० लि०) तड णिच्-शानच्। १ वाद्यमान, जिमपर प्रहार पड़ना हो, जो पोटा जाता हो। २ जो डाँटा जाता हो। (पु०) ३ टका, टोल।

ताण्ड (सं० क्लो०) तण्डिना मुनिना कृतं अण्। नृत्य शास्त्र।

ताण्डव (सं० क्लो०) तण्डिना मुनिना कृतं ताण्डि नृत्य शास्त्रं तदस्याप्तोति वा तण्डुना नन्दिना प्रोक्तं तण्डु अण्। १ नृत्य, नाच। २ पुरुषका नृत्य। पुरुषोंके नृत्यको ताण्डव और स्त्रियोंके नृत्यको लास्य कहते हैं। यह नृत्य शिवको अत्यन्त प्रिय है, इसी लिये कोई कोई कहते हैं, कि इस नृत्यका प्रवर्तक नन्दो है। किन्हीं किमोके अनुसार तण्ड न.मक ऋषिने पत्रसे पहल इसको शिक्षा दी, इसीसे इसका नाम ताण्डव पड़ा है। ३ उद्धृत नृत्य, वह नाच जिसमें बहुत उच्छल कूट हो। ४ शिवका नृत्य। ५ हण विशेष एक प्रकारकी घास।

ताण्डवतालिका (सं० पु०) ताण्डवे शिवनृत्यकाले यस्तालः स कार्यतथास्थस्येति ठन्। शोवजोके द्वार-रक्षक नन्दो।

ताण्डवप्रिय (सं० पु०) ताण्डवप्रियं यस्य बहुव्री। १ महादेव। (लि०) २ नृत्यप्रिय मात, जिसकी नाच बहुत प्रिय हो।

ताण्डवित (सं० लि०) ताण्डव कृतो जि कमणि क्त। नसित, नाच किया हुआ।

ताण्डवी (सं० पु०) संगीतमें चौदह तालोंमेंसे एक।

ताण्डि (सं० क्लो०) ताण्डिन मुनिना कृतं ताण्डि-इव। नृत्यशास्त्र।

ताण्डिन् (सं० पु०) ताण्डयेन प्रोक्तं अधोयत इति इति यत्तोपः। तण्डिमुनिपुत्र ताण्डप्रोक्त शाखाध्यायी, सामवेदको ताण्ड्य शाखाका अध्ययन करनेवाला। २ यजुर्वेदका एक कल्पसूत्रकार।

ताण्डिन (सं० पु०) ताण्डिन् अण्, इनो न टिलोपः। मुनिभेद, तण्डिमुनिके पुत्रका नाम। इन्होंने यजुर्वेदका कल्पसूत्र प्रणयन किया है। तण्डि देखो।

ताण्डो (सं० स्त्री०) ताण्ड्य स्त्रियां डोप्, यलोपः। तण्डि मुनिकी स्त्रीके वंशज।

ताकाय ( स० पु० ) तच्छिमुनेरवय गगादि यम् ।  
१ तच्छि मुनिके व गम् । २ सामवेदसे एक सामयका  
नाम ।

तात ( स० पु० ) ततोति विष्कारयति गोवादिश्च तन् न  
दोर्घश्च (पुनश्चिन् ११५०) यमुदात्तोति तनेर्च  
नोय । १ पिता । २ खेडाप्यट धर्म्ययच्छब्दे प्रति सम्भो  
जनसंस्थानत शब्द प्यारका एक शब्द या स बोधन को  
भाई बन्धु इट मित विधीयत। यपनिसे छोटेके निचे  
व्यवहृत होता है । ३ यमुदाम्या दया । ( वि० ) ४ पूज्य,  
पादरयोश्च ।

तातयु ( स० पु० ) तातम्य पितुरिव यी कार्यत शब्दो यव  
बहुव्री । १ पित्रश्च, चावा । ( वि० ) २ जगज्जित,  
पिताभी मन्नाई भरनिनामा ।

तातजनविदो ( स० स्त्री० ) तातय जनयतो च । पिता  
पौर माता यव शब्द निव द्विचचान्त है ।

ताततुष्य ( स० वि० ) तातश्च तितुष्यश्च १ तत् । पिताके  
तुष्य, जो पिताके पमान हो । रत्नता प्रयाय—पितृमय  
मनोतपस मनोज्ञ प्रितृमय पौर तातन है ।

तातन ( स० पु० ) तात प्रपन्न यथा तथा नृयति तात  
शुद्ध । लक्षण पयो विहरिच ।

तातरी ( वि० स्त्री० ) एक पेडका नाम ।

तातन ( स० पु० ) तात मानि ना ज् ह्यो० पम्ब त् ।  
१ रोग । २ पाठ, पकता । ३ लीडगुट, लोहेका  
कट्टा । ४ पितृतुष्य सम्बन्धी । ५ मनोज्ञ मनको  
समान जिनका बेष हो पतिवैगवान् । ( वि० ) ६  
तत्रमाय गरम ।

ताता ( जमगैदजी )—भारतवर्षके गौरव लक्ष्य एक  
प्रधान बनिष्क । इन्होंने हमारे देशके व्यवसाय बानिज्यमें  
दिगोवोको प्रतिष्ठा स्थापित की है । पात्र इनके द्वारा  
स्थापित जमगैदपुरका लोहेका कारखाना दीर्घ कर  
पुष्टिकोके प्रायः सभी व्यवसायो पाषण्य करती है ।

१८२३ ई०में बड़ौदा राज्यके पलायत नाम्दारोमें  
इनका जन्म हुआ था । जिन समय सुम्नमनोने पञ्जा-  
बारीके घबड़ा कर पारनो लोम भारतमें पाबे थे, उस  
समय नाम्दारो पारनो ममानका एक प्रधान कर्मज्ञ हो  
गया था । जमगैदजी ताताने पारको श्रातिमें हो जन्म

लिया था । बाल्यावस्थामें जमगैदजीने नाम्दारोमें  
ही प्रारम्भिक शिक्षा पाई थी पौर वहीं धर्मपत्नीका  
पढ़ना सीखा था । उस समय के शिक्षार क्षेत्रका बहुत  
पसन्द करती थे । यह शाल्यमें इन्होंने विधीय ध्युत्पत्ति  
नाम को सी । इससे बाद १८२३ ई०में ये एक गिला  
ग्राम करमिसे लिए बम्बई सिधे गये । उन वरत इनको  
उमर १० वर्षकी थी ।

बम्बई पहुँच कर ताताने मनो नयो बुनियामि पैर  
रखा । वहाँ पारी पौर ताता जातिके लोम माना कार्यमें  
मग्यूल थे, नयो नयो बिलाधी पौर नये नये कार्य को  
विधित द्वारा प्रवाहित हो रहो थे । जमगैदजी बम्बई  
पा कर एम्पकिन्टन स्कूलमें भरनो हुए । १८२८ ई० में  
इनका विद्याभ्यास समाप्त हुआ । छात्र जीवनमें ये विधीय  
कोई कलित्व नहीं दिया मके थे ।

जमगैदजीके पिता एक मामूली रोजगार करती थे ।  
चोनदेशके साथ उनका बानिज्य चलता था । ताता  
कानिज्ये निज्जन्म कर पिताके साथ व्यवसायमें लग गये ।  
पछोसका रोजगार उस समय पाबियार्थि हाथमें हो  
था। पन्थ लोम इस व्यवसाय को काम समाप्तते थे । बिने  
पन्थ उस समय चोनमें लोकोको पामदनी रपतनोका  
विधीय सुभोता न था । ताताने पिताके पास रह कर कुछ  
काम लोया पौर फिर ये छोड़ छोड़ सिधे गये वहाँ  
पयोसके रोजगारको इन्होंने मनो मति सोच लिया  
जिससे इनको बानिज्य बुद्धि पुन गई ।

इसके कुछ दिन बाद जो अमेरिकामें चलनविप्रव  
होनेके कारण बहाने बहुरो रपतनो बन्द हो गई, फिर  
नया बन्द बम्बई नगर बहुरो व्यवसायका केन्द्र हो गया ।  
ताता कल्पनने प्रसिद्ध प्रेमचन्द रावचन्दन भाय मित्त  
कर बहुरोका व्यवसाय प्रारम्भ कर लिया । ताता लन्दन  
जा कर बहुरोके व्यवसाय पर विचार करने लगे । १८६६  
ई०में अमेरिकाका युद्ध समाप्त समाप्त हो गया, जिनसे  
ताताको कुछ शक्तिपदा होना पड़ा । लन्दनमें जमगैदजीने  
जो बहुरोके विषय में विद्ये माचार्य कोको की एक बैठ कर  
ये भारत लौट पाये । बम्बईमें जो लज्जा कारोबार था,  
वह जिन्को तरफ कायम रहा ।

ताताकल्पनो की की इन शक्तिको पूर्तिके विषय

कीशिंग करने लगी। इसके कुछ दिन बाद ही अविमिनियाके राजा फियोडरके साथ भारतन गवर्मेण्टका युद्ध शुरू हो गया। अन्यान्य कम्पनियोंके साथ साथ ताता कम्पनीकी भी मैनिफेस्टो रमट पत्रचालिका ठेका मिल गया। इस ठेकेमें ताताको कुछ फायदा हुआ था। इसके बाद जर्मनीके जो कुछ डिस्कोटारिके मामलेमें एक तेलकी मिल खरोद ली, छोड़े वहाँ कपड़ेकी मिल बना दो गई। इस मिलमें सूत भी बनता था। उन दिनों उन प्रांतमें कुछ ७।८ मिलें थीं, इस लिए उन्हें खूब लाभ होने लगा। इस मौके पर कैरोल्लो नायक नामके एक टेलाने वहाँ चला आकर देकर उनसे मिल खरोद ली। थोड़े दिनोंके अभिन्नतासे ताता समझ गये, कि स्वदेशमें कपड़ेकी मिल खोल कर खूब लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने स्वयं एक मिल चलानेका नियय किया, परन्तु अच्छी तरह बिना समझे वे किसी काममें ध्यान न डालते थे इस लिए उन्होंने पहले इंग्लैण्ड की मिलोंकी कार्य-प्रणाली देख आना आवश्यक समझा तदनुसार वे स्वदेशमें मैनुफैक्चरकी तरफ चल दिये।

इंग्लैण्डसे लौट आनेके बाद ताता विचारने लगे, कि भारतमें किस जगह कपड़ेकी मिल खोलनेमें विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है। अन्तमें, नागपुरमें मिल खोलनेका नियय किया। ताताका यह अभिमत था, कि जिस प्रांतमें खूब रुई पैदा होती हो, वहाँ कपड़ेकी मिल खोलनी चाहिए। नागपुरमें रेल-लाइन होनेके कारण माल भेजने वा मंगानेमें भी किसी तरहकी अड़चन न पड़ती थी।

१८७६ ई०में मिल बन कर तैयार हुई और १८७७ ई०को १ नो जनवरीको वह चालू हो गई। इस दिन महाराजो विकटोरिया भारतकी सम्राज्ञी हुई थी, इस लिए ताताने अपने मिलका नाम रक्खा 'एम्प्रेस मिल'। पहले पहले मिलके चलानेमें उन्हें बड़े दिक्कत भेँलनी पड़ी थीं, परन्तु उनके मैनेजर विजनजो दाटाभाई बहुत योग्य और समझदार व्यक्ति थे, इसलिए धीरे धीरे सब दिक्कतें दूर हो गईं।

"एम्प्रेस मिल" स्थापित करनेके बाद, ताता उसे अच्छी तरह चलानेकी व्यवस्था करने लगे। इस व्यवस्था

विधानसे इनकी प्रतिभाका परिचय मिला। ये चिर-प्रचलित रीतिका अनुसरण करना पसन्द न करते थे। इन्होंने पृथिवीके नाना अभ्यदेशोंमें परिभ्रमण कर यंत्रोंकी मिल्की क्रिया-पद्धतिका पर्यवेक्षण करके जो कुछ सीखा था, उसे भारतमें प्रचलित करनेकी पूरी चेष्टा की थी। सबसे पहले इन्होंने देखा, कि मिलकी अच्छी तरह चलानेके लिए उसमें मशीन बहुत अच्छी होने चाहिए। इसलिए उन्होंने पुराने चीजोंके बदले बहुत मोटे चीजें खरीदीं। जिन मशीनोंमें थोड़े समयमें बहुत माल तैयार हो सके, ऐसी मशीनें मंगाईं। हमारे देशमें उस समय ऐसी अच्छी मशीनें नहीं थीं। मिल-घराने प्रपेन्नाकृत उस कामकी मशीनोंमें काम चलाने थे। आखिर ताताके दृष्टान्तका अनुसरण कर अन्य मिल वालोंने भी अच्छी मशीनें मंगानीं। इसके बाद, अच्छी मशीनोंसे बने हुए अच्छे मालोंकी खपत किस स्थानमें हो सकती है, इस बातका पता लगानेके लिए ताताने चारों तरफ आदमी भेजे। स्थान ठोक होने पर, वहाँ किस तरह कम खर्चमें माल पहुँचे, इस बातका इन्टो-वस्तु करने लगे। इसके सिवा अपने मिलके पाम ही कपासको खेतोंका इन्तजाम किया और अन्यान्य स्थानोंसे भी कृषायतसे रुई मंगानेका बन्दोबस्त किया। ताता इस बातको जानते थे कि मिलकी अच्छी तरह चलानेके लिए छोटी-बड़ी सभी बातोंमें पूरा पूरा ध्यान दिया जाता है।

इस प्रकारको कीशिंगसे कुछ ही वर्षोंमें मिल बड़े जोरशोरसे चलने लगी—लाभ भी काफी होने लगा। कर्मचारियोंको उखाड़ित करनेके लिए ताताने कुछ पुरस्कार भी नियत किये और वार्षिक-लाभमेंसे उन्हें कुछ अंश भी देना प्रारम्भ कर दिशा। इससे कर्मचारोगण मिलको उन्नतिके लिए ज' तोड़ कर परिश्रम करने लगे। जो कर्मचारो काम करते करते विकसाह वा हठ हो जाते थे, उन्हें पेंशन भी दे दी जाती थी। इसके अलावा कर्मचारियोंकी और भी बहुतसे आराम थे। इसलिए वे अन्य मिलोंमें न जाते थे।

'एम्प्रेस मिल' में, ताताने उस समय शिक्षानवोद्य रक्ष कर काम सिखानेका बन्दोबस्त किया था। शिक्षित

सुवर्णोंको भी पच्छे वीतन पर निरुद्ध करके उन्हें काम निष्कारि से घोर फिर उनमेंसे पच्छे पादमियाँको पुनः कर्ण उन्हें मिलावा काम देते थे। इस तरह बहुतसे सुवर्णोंको पापको मिलासे काम मिला करता था घोर बहुतसे प्यवसाव सोच कर देवको सखरि उचि करते थे।

उक्त मिलाको दण्ड बर्ष तक जमानेके बाद ताताने विचार कि पत्र इन देर्ममें पच्छे भीष्मके जमानेका समय थाया है, इसलिये पछे समयमें म गानो जादिय जिनसे छुट मजोन होतो बन सके। इसके लिए पापने दूमरो मिला प्योवनेका नियम किया। भाष्यने उस समय 'हरमसी मिला'का भीष्मका जो रहा था ताताने १२॥ काव है कर बसे खरोद गया। 'हरमसी मिला' उस जमानेमें सबसे बड़ो मिला थी। पलास नाम रुपये मगा कर मिला फिरसे बनाई गई। सोगोने ममभा ताताने बहुत मन्ते दामोमें मिला से ली, किन्तु यह उनका कोरा लभ था। इस मिलामें ताता पूरे उमाये मडे थे। मिलाके कल्प-पूर्व विचक्षण रणे थे जिनकी मरभ्यत करारि करारि दण्ड बर्ष होत मये। दण्ड बर्ष बाद मिला पापु हुई। इनमें ताताको प्रसुर बर्ष प्यव जाना पड़ा था। परन्तु रुपयेको पयिया ताताके बैयका जो पच्छि प्रयोजन था 'हरमसी मिला'को फिर पचाना ताता से भीष्मको एक पचय बौर्ति है। पापके पञ्चवसाव को देव कर मोन चकित हो मये थे। दूमरा मिला बासा होता तो कामोका देव कर बुरो करता। परन्तु ताता इटनीबासे न थे। दण्ड बर्षको पछाना वेडाके बाद उर्ध्वनि पञ्चवसावको मन्भव कर दिखाय। बने डूरी हरमसी मिला पत्र नामके रुपये करमें जाने लगे। इस मिलाका पापने नाम रक्खा 'सदेयो मिला'। पत्र भी 'सदेयी मिला' पच्छे पञ्चवसाव रणे है।

ताताको दोनी मिला पच्छे तरफसे चकने लगीं। पर भी मो लके सन्तोष न हुआ। ये चकतिसे नये नये मर्गोंके पाविष्कार करनेमें सर्वदा व्यस्त रहते थे। उर्ध्वनि देवा, मारतमें ज्ञापास को चितो जिस डंगरि को जाती है वह पच्छे नहीं है। मियमें पाप ज्ञापासको चितो देव प्राये है। पापने मोबा, मारतके मोम भी मिचाप्राप्त होने पर बेसा लपाव पञ्चवसाव करेते। इन

पर पापने एक बोटीको पुच्छेके भी लियो, किन्तु उस समय पापको बात पर चिन्तीने मो ध्यान न दिया। परन्तु इन समय गवमें पछे तब ताता कल्पकोकी हुईके विषयमें-प्राप्त (AuthORITY) मानने हैं।

इन समय बिनायतो जहाजवासीने बम्बईके मास का माफ़ा बहुत ही ज्यादा कर दिया। मिलाके मालि कोँकी यह व्यवहार बहुत ही बुरा मगा पर भी कुछ कर न सके। बाखिर ताता ज्ञापान गये घोर बर्षाकी ज्ञात्र कल्पनीसे बन्दीचप्ट कर प्राये। बम्बई भौट कर पापने तमाम मिला-बानोका एक स बठन किया, जिनमें सबसे ज्ञापानो जहाजमें मास भीष्मके लिए पछोकारपत्र मिला दिया। बिनायतो कल्पनियो ताताको कारेवाई देव कर प छो उड़ाने लगीं। कुछ दिन बाद उनको प सोने विवादका रूप धारण किया पत्र जहाजवानी का रोत्रगार मिडो हो गया। परिष्माम यह कृपा कि दोनमें प्रतिद्वन्द्विता होने लगी। पहले जिस चीजका मरचन ११, १०में १५, १० तक था, उसका पत्र २, १० मात्र रह गया। दो० पछे भी० कल्पनीमें १, जो रुपका मरचन कर दिया। दोनों दफ्तोंमें भीष्म स पाम चलने लगा। ताताने सबको समझाया कि "भाववान रहना, सोममें पा कर कोई पछोकारपत्रको मरु न करना। पाद रहना, ज्ञापानी कल्पनी यदि एक बार भी पराप्त हो गई, तो फिर बिनायतो कल्पनियोंके कल्पमें पड़ना पड़ेगा।" परन्तु मानता कीन जा-मोम सुयी बना थी। बहुतसे व्यापारियोंने पछोकारपत्रको मरु तोड़ ही। परन्तु बिनायतो कल्पनियोंको मो कृप घिचा मिला गई। उर्ध्वनि फिर माफ़ा बर्षानिका नाम भी न लिया, बल्कि पहलेसे कुछ काम हो रक्खा।

ताताने पञ्चवसाव चिन्तीकी तरह उनको जो लोवन-का ज्ञानताप न बनाया था। उनके जीवनमें सुख वा निष्कारिताके लिए तनिका मो ध्यान न था। तात्पर्य यह, कि ताता उनका सद्व्यवहार करना जानते थे। पाप पत्र द्वारा जिस तरह देवका चित हो, सर्वदा रणे चिन्तार्थ रहते थे। माचारक मनुष्योंको तरह पापका जीवन निरर्थक नहीं था। कुछ कामोकी कल्पना तो पापके मनमें सर्वदा ज्ञापन रहते थी घोर उन ज्ञानीको

सम्पन्न करनेके लिए आप सर्वदा मचेष्ट रहते थे। दोनों मिलींको कम्पनीके हाथ सौंप कर जब आप निश्चित हुए, तब आपने अपना मन दूसरी तरफ लगाया।

भारतके प्रतिभावाम् छात्र जिसमे विनायक जा कर आधुनिक वैज्ञानिक प्रणालीमें शिक्षा प्राप्त कर सके, इसके लिए आपने दो छात्रवृत्तियां स्थापित कीं। (१८८२ ई०) पहले आपने दो वृत्तियां सिर्फ पारसो छात्रोंके लिए ही नियुक्त की थीं, किन्तु दो वर्ष बाद ही यह नियम उठा दिया गया। अब भारतका हर एक योग्य छात्र इस वृत्तिकी प्राप्त कर विनायक जा सकता है। इन वृत्तिमें आज तक ३८ छात्र विनायकने पद कर पाये हैं, जिनमें २३ छात्र पारसो है। विनायकने नोट आर्निके बाद यह रूपया मय व्याजके वापस कर देना पड़ता है। ब्याज उसकी आमदनीके अनुसार भगाईं जाते हैं।

ताताके जीवनका और एक उद्देश्य था, एक वैज्ञानिक गवेषणागारकी स्थापना करना। ताता इस बातकी भली भाँति जानते थे कि विज्ञान ही मनु प्रकार गिन्य वाणिज्यक उन्नतिका मूल है। इसी उद्यमसे उन्होंने मनुके पहली एक शिक्षित व्यक्तिको यूरोप और अमेरिका भेज कर आवश्यकीय संवादाका संग्रह किया और अपने विधे-पत्रोंके साथ बह विषयको आलोचना एवं परामर्श किया। इसके बाद आप, भारतवर्षमें कौनसा विज्ञानागार होना चाहिये, स्मरति उसमें किम किस विषयकी शिक्षा दी जानी चाहिए इत्यादि विषयोंका अनुसन्धान करने लगे। शन्तमें निर्णय हुआ, कि तीन लाख रुपयेका फण्ड हो जानेसे उसका तमाम खर्च निर्वाह हो सकता है और उसमेंसे जो बाकी रुपये बचे गे, उसकी व्याजसे उसका वार्षिक खर्च चल सकता है।

१८८८ ई०में जब लार्ड कर्जन बम्बई पधारे, तब इस विज्ञानमालाकी बात कहो गई। १८८८ ई०में तीन बार विवेचना करनेके बाद गवर्नमेण्टने इस विज्ञानागारके खोलनेको अनुमति दे दी। बैंगलोरमें इसको नोर्व खुदा। महिसुरके विद्याल्लाहा महाराज वहादुर तथा गवर्नमेण्टने इनके प्रतिष्ठानमें यथेष्ट सहायता की। परन्तु अत्यन्त दुःखका विषय है, कि ताता इस कालेज की अपने सामने चक्षते न देख सके। १८९० ई०में इस

विज्ञान-मन्दिरका उद्घाटन हुआ। इसका नाम रखा गया, "The Indian Institute of Research" अर्थात् भारतीय गवेषणा समिति। इस विज्ञानमन्दिरमें निम्न लिखित तीन विषयोंकी शिक्षा दी जाती है,—

( १ ) विज्ञान और 'गैज्यविज्ञान'।

( २ ) आयुर्वेद

( ३ ) दर्शन और शिक्षा।

इस विज्ञान मन्दिरमें मन्त्र पुस्तकालागार, मातृघर और वैज्ञानिक परीक्षागार भी हैं।

ताताके अन्यान्य उद्योगोंमें मनु ही मनु परिचित न थीं, पर उनका प्रसिद्ध लोहेकी कारखानेके विषयमें मनु जानकारा रघुते हैं। यह कारखाना, उनका अजय योगी है और भारतवर्षमें एक प्रतिभय उद्योग है। इसी उद्योग बहुत प्राचीनकालमें लोहेका व्यवहार होता आया है। परन्तु वर्तमान वैज्ञानिक प्रणालीमें लोहा बनानेकी प्रथा यहाँ प्रचलित न थी। सम्भव है, कि नो जमानेमें वैज्ञानिक उपायमें यहाँ भी लोहा, इत्यादि आदि जाता था, किन्तु अन्यान्य विद्यार्थीको तरह यह विद्या भी इस उद्योगमें लुप्त हो चुकी थी। ताताको बहुत दिनोंमें इच्छा थी, कि आधुनिक वैज्ञानिक उपायमें भारतमें भी लोहा बनानेकी विद्या होनी चाहिए। सुना जाता है, पहले भारतमें अच्छा लोहा ज्यादा नहीं मिलता था। अतएव अब यहाँ एक लोहेका कारखाना खुलना चाहिये, इस उद्देश्यसे भूतस्वविदोंने धीरे धीरे लोहेकी खान और पहाड़ोंका अनुसन्धान करना शुरू कर दिया। ताता इनके नये नये आविष्कारोंकी खोज रखते थे। बहुत प्रयत्न-व्यय करके आपने भी भूतस्वविदोंकी नियुक्त किया और उनसे लोहेकी खानोंकी खोज कराने लगे। अनुसन्धानमें मालूम हुआ कि भारतमें बहुत लोहा है और यहाँ बनाना भी लोहेका कारखाना खोला जा सकता है। करीब तीस वर्षके अनुसन्धान और प्रयत्नके फलस्वरूप मध्यप्रदेशमें कारखानेके लायक एक जमीन पाई गयी। उस स्थानका नाम है साकची। यह हवडासे १५५ मीलकी दूरा पर तातानगर (पहले इसका नाम 'काली-मही' था) -उद्योगके पास हो है। तातानगर उतर कर

मार्गको जानि है; ईश्वरसे दो मोन बनना पड़ता है।

परन्तु छिद है कि ताता इस कारखानेको हैयार न देना मजे। १८०४ ई०में पापको मृत्यु हो गई। इस समय कारखानेका काम चालू नहीं हुआ था। हाँ, उन के दोनो सुपुत्रोंने पिताके प्रयत्नको धर्य नहीं आने दिया; पुत्रोंने उनके समो लघोयाको सार्बक कर दिखावा है।

ताताको बगोसेका बड़ा शौक था। उन्हांने देम देमके पोषे का कर अपने भागमें लगावे थे। वनिक होने पर मो पाप बड़े मितलवाये पौर मध्यामके बड़े बिरोधी थे। मध्य प्रशासको रोखनेबाकी नेतायोको पाप काफ़ी पार्थिक सहायता दिया करती थे।

रात्रनोतिक बिद्योमें साधारणतः पाप किसो प्रकार का मन्तव्य जाहिर नहीं करते थे। इस विषयमें सुप पाप काम करते रहना ही पाप बुद्धिसुद्ध समझने थे।

१५ वर्षकी अवस्थामें ताताकी मृत्यु हुई थी। मृत्युके कई मास पहले पापकी इच्छा-रोम हुआ था। काबूरी पौर इतिवियोंको सन्धारके १८०४ ई०के जनवरी मासमें बिबिधाले लिये पाप यूरोप गये थे। इसी साल मार्चके महीनेमें पापकी खोजा देहान्त हो गया। १८वीं मई को कर्मनोके प्राक्खिम महरमें पापकी मो मानवलीला समाप्त हो गई। मृत्युके समय पापके पुत्र दोराब ताता पौर जालि भाई रतन ताता पापके पास थे।

पाप नामके भूषे न थे। काम करना ही पापके शौकनका रहस्य था। पाप चाहते तो बहुतही लय विधीके विमूषित हो सकते थे। किन्तु ऐसा बिचार पापके हृदयमें कभी नहीं हुआ। परन्तु 'ताता कम्पनी' पापके नामको पसर बनाये रहते थे, इनमें सन्देह नहीं।

'ताता-कम्पनी' और इण्डिया-कम्पनी-कर्मसिद्धको ताताके लघोयके १८०५ ई०में इस कम्पनीकी प्रतिष्ठा हुई पौर १८०७ ई०में इसका कार्य पारम्भ हुआ था।

गत कुछे समय इस कम्पनी का कारखानेना नाम प्रधारके मर्मसूची मास दे कर सहायता पहुँचाई है। हमने लिये भारत' मर्म-रत्नरत्न लघय आकर कम्पनीको धन्यवाद दे पाये है।

ताता कम्पनीको कार्यबनी संख्या १८०४ ई०। इस कम्पनीमें धयने प्रतिष्ठाताके नामानुसार ( उनके समरवाक ) शरकरका नाम कर्मसिद्ध पुर दिया है। कर्मसिद्ध पुरका शहर है, यहाँके मजानात, बाजार, चाना बिबिधालय, विद्यालय पादि सब ताता द्वारा प्रतिष्ठित हैं। तातामर देको।

इस कम्पनीके प्रथम बिबिधाल पौर साक्षर विभाग है। मिचा-बिद्यारको लिये कम्पनीमें पार बिद्यालय खोल रहते हैं। कम्पनीके कर्मचारियोंके प्रमोद प्रमोदके लिए मो पुरका इन्तजाम है। यहाँ दो इन्डि ट्रिबुट पौर उनके साथ दो काइसेरियाँ हैं। हर एक कर्मचारी साल रि कर लसका मदद कर सक्ता है। उसके सिवा मद्राजो बहाला पौर मारबाङ्गिरी के मिच माल-मामन है।

ताताके कारखानेमें एक इण्डिय विद्युत्तागार है। लिये पावर हाउस ( Power House ) कहते हैं। भारतमयमें इतने बड़े विद्युत्तागार बहुत कम हैं। इसके भीतर इतना मोपक मन्द होता है, कि प्रयोग करनेसे खान बहरे से हो जाते हैं। तमाम कारखानेका काम इसी बिद्युत्तागार पर निर्भर है। कारखानेके भीतर सर्वस रेन-वाइरन है। मारी लोड पर लाद कर एक जगहसे दूसरी जगह पहुँचाई जातो है। लोचनेके लिए एंजिन मो बहुतसे हैं। ये सब कम्पनीको सम्पत्तिवा है। कारखानेमें सर्वस बिजली-बत्तो पौर टेलिफोनका प्रबन्ध है। कर्मचारियोंको विद्यासा-लिङ्गलिये लिए सर्वस बीर लोडा वाइरका मो इन्तजाम है। इसके लिए उन्हें पैसे नहीं दिने पड़ते।

ताताका लोडका कारखाना बहुत लम्बुट समझा जाता है। इसका मान अमेरिका, जापान चीन पहुँ सिया म्यूजिनैण्ड, फ्रान्स, पपरीका पौर इटलीको जाता है। एशियाके प्राय सभी बड़े बड़े नगरोंमें ताताके बिद्यालय ( पाकिम ) हैं। भारतमें प्रथम बड़ी मो देना लोडका कारखाना नहीं है।

ताता-कम्पनीको पौर एक लघय कीर्ति—'वाइर इन्डि ट्रिबुट वाइर इण्डिया कम्पनी' है। यह एशियाके एक लघयको लघय केनालिक व्यापार है। १८११ ई०में काठ



सोडियमके हाथसे पश्चिम-वाटके लोनडना नामक स्थान में इसकी स्थापना हुई थी। यहाँ पानीकी रोक कर ड्रट बनाया गया है। यहाँ चैरापुञ्जीमें भी ज्यादा वर्षा होती है। पृथिवी भरमें चैरापुञ्जीमें ही सबसे अधिक वर्षा होती है, ऐसा इसमें मान्य है। परन्तु यहाँ ३१ दिनमें जितनी वर्षा होती है, चैरापुञ्जीमें उतनी वर्षा ४५ मासमें होती है। इस ड्रटका पानी खगडाना उपत्यकामें खापोलीमें १७४० फुट नीचे जा कर गिरता है। इस जल-प्रवाहसे बिजली उत्पन्न होता है और वह बिजली तबिके तारके भीतरमें बम्बई पहुँचती है। इस 'पावर-हाउस'की शक्ति १००००० घोड़ेके बराबर है, पृथिवी भरमें इसका द्वितीय स्थान है।

ताताघरे ( हि० स्त्री० ) १ नृत्यमें एक प्रकारका वीन।

२ नाचनेमें पैरके गिरने आटिका अनुकरण गण्ड।

तातानगर ( जमशेदपुर )-बिहार उडोसा-प्रदेशके अन्तर्गत सिंघभूम जिलेका एक नगर। यह बहान-नागपुर रेलवे लाइन पर हवर्डसे १५५ मील पश्चिम तथा जमशेदपुर रेलवे-स्टेशनसे तीन मील उत्तरमें अवस्थित है। यहाँ ताताका बहुत विस्तीर्ण कारखाना है। आजसे लगभग १५ वर्ष पहले यहाँ घोर जङ्गल था। रात-दिन बाघ-भालू और चीते आदि वन्य पशु जोड़ा किया करते थे। इस स्थानका नाम पहले "साकचो" था। गत महायुद्धमें ताता-कम्पनीने लोहा इस्पात आदि टे कर सरकारकी सहायता की थी। उसीके पुरस्कारमें भारतके भूतपूर्व वायमय लाड चेम्सफोर्डने इसका नाम, स्वर्गीय देशभक्त श्रीमान् जमशेदजी नसरवानजी ताताको स्मृति रक्षाके लिये, 'साकचो' नामसे 'जमशेदपुर' और रेलवे-स्टेशनका 'कालीमाटी'से 'तातानगर' कर दिया।

ताता देखो।

जो स्थान पहले 'वनघोर' जङ्गलमें परिपूर्ण था, आज वही नए ढङ्का लक्ष्मीका लीलाखल-स्वरूप एक सुन्दर नगरमें परिणत हो गया है। लोकसंख्या प्रायः ८० हजार है। यहाँका दृश्य देखनेसे ऐसा प्रतीत होता है, मानो प्रकृति-माता इस नवजात नगरशिशुकी अपनी गोदमें खिना रही है। इसके पश्चिममें खडखाई नामको नदी और कारखानेसे लगभग ११ मील उत्तरमें स्पर्शिया

नामको नदी बहती है। खडखाई नदीकी पार करने में यथेष्ट सुविधा नहीं, वरन् खतरका खोफ है। उस पारके निचामो मजदूर वर्षा ऋतुमें रेलवे-पुन द्वारा, जो इस पार बना हुआ है, नदी पार करते हैं। सुवर्ण रत्ना का दृश्य बहुत मनोरम है। इसके दोनों तट पर हरे भरे वृक्ष हैं, जिनमें इसको नैसर्गिक गोभा बहुत बढ़ गई है।

यह नगर गत तीन चार वर्षोंमें जिलेका एक मज-डिवाजन बन गया है। पम्प-हाउस ( Pump House ) के निकट नदीको धारा एक पक्के बांधमें बांध दी गई है। जब नदीमें अधिक जल होता है, तब इस बांधके ऊपरसे निकल जाता है। बांधके पश्चिम और जल जमा रहता है और वही जल बिजलीकी शक्तिमें खींच कर ४८ इंच व्यासवाले नल ( Pipe ) द्वारा, कारखानेके पास एक सुसह्य तानावमें पहुँचाया जाता है। गहरमें दो जल-भण्डार ( Water Reservoirs ) हैं, एक कदमा से और दूसरा नगरके उत्तरी भाग ( Northern Town ) में। नगरके भिन्न भिन्न विभाग L. Town, G. Town, H. Town, आदि नामोंसे पुकारे जाते हैं। नगरमें जितनी मठके गई हैं, सभी पक्के हैं और जिनके दोनों बगलमें अच्छे-अच्छे पीचे लगे हुए हैं। दृग्ग दर्शनीय है।

यहाँका जल वायु साधारणतः उत्तम तथा शुष्क है। यहाँ प्रत्येक ऋतु अपना-अपना पूरा प्रभाव दिखती है। कारखानेमें जागें उन कीयना प्रतिदिन स्वाहा होता है और कारखाने भी दिनोंदिन बढ रहे हैं। इन कारखानेमें जल-वायुमें कुछ दोष प्रवण आने लगे हैं। यहाँ दातय चिकित्सालय, मिसेल पेरिन मेमोरियल हाई स्कूल ( Mrs. Perin Memorial High School ) मिडिल स्कूल, बालिका स्कूल, टेक्निकल इंस्टीट्यूट ( Technical Institute ) राति-श्रीद्वी गिक विद्यालय ( Night Technical School ) हैं। बिहार-उडोसा प्रान्तमें जितने हाई-स्कूल हैं, उनमें यही एक ऐसा स्कूल है जिसमें विज्ञान ( Science ) की शिक्षा भी प्रबन्ध है, इसके सिवा स्वर्गीय लोरमान्य तिलक महा-राजका स्मारक-स्वरूप एक पुस्तकालय है।

यहाँका नगर प्रबन्ध प्रथम सनोय है। ज्ञान्यो इस कार्यके लिये भी जो चीज कर वाय करती है। नगर प्रबन्धके लिए बोर्ड काय वर्क (Board of works) नामकी एक संस्था है। यह बोर्ड पब्लिकनिजिपासिटी को है दिनी दिन ब्रह्मको उत्पत्ति को रको है।

विशेष विवरण ठामा ठामा देवो।

तातार (पा० पु०) मध्य एशियाको लक्षप्रदेश-जामी एक भाति। ये मुगल-शासके प्रन्तगत है। भारत चीन और फारसके उत्तरमें आषानके पश्चिममें, कस्पियन सागर और कालमागरके मूर्धमें तथा हिमाली महापाकरके दक्षिणमें जितने बिस्तीर्ण भूमान है वहाँके पश्चिमाभी य रोपियोंके निकट तातार नामसे परिचित है। पक्षी विश्व सुलसजाति को तातार नामसे प्रविष्ट को, सिखिन लक्षिसन्धि पम्पुदयके बाद सुलस शासनाधीन समस्त जाति को तातार कहकाने समी है। इस समय मध्य एशियाके सुलस शासनाधीन भूमान तातारो तथा उन को माया भी तातारो नामसे समझर को गये है। पमो हिमालयके सीमानामूर्ती तिब्बतके मोट, यारकन्द, पृतन और बुखारेके तुर्क तथा चीनको माङ्गोलिकके सीम पयमीको तातारक शके बतकाते है।

बहुतेके मतके तातार जाति तुर्क, सुलस और माङ्गु प्रधानतः इन तीन अंशियोंमें विभक्त है।

आधुनिकके उत्तर अक्षांश प्रदेशमें भी पमोच तातारोंका नाम है। तातार जातिके परिवारमें प्रति व्यक्तिका हितोय पुत्र नामा तथा द्यौतिय पुत्र टोखाका पद पाता है, ये दोनों विवाह नहीं कर सकरी, आत्रोवन ब्रह्मचर्य पमबन्धन पूर्णक रहते है।

पूर्व समयमें किन्त्रिया, किष्ट और जन्जातिये यूरोप के उत्तरी भाग पर अधिकार किया था, ये मो तातार टैय होते हुए वहाँ गये स। यव, ब्रह्म, सुइदिम मान्साक और ब्राह्म जाति सो इसी तातारक शको है।

मस्तारो माया सोमनेमें दो भाग प्रकट होते है। एशियाकी अन्तर्देशीय ब्रह्म जाति को माया अन्तर्हार करतो है, यह एक है। यह तुराकोब नामसे मो प्रविष्ट है। फिर मध्य एशियामें जिध मायाके साथ तुर्क मायाका पविष्ट माङ्गु देखा जाता है, जधे भी तातारो कहते है।

मध्य एशियाका एक टैय। हिन्दुस्तान और फारसके उत्तर के अशियन सागरके से कर चीनके उत्तर भाग तथा तातार टैय कहकानता है।

तातारो (पा० वि०) १ तातार टैय मध्यको तातार टैयका। (सु०) १ तातार देगन्ना निवासी।

राति (स० पु०) ताय शिष। १ पुत्र, शेटा। ताय भासे शिन्। (फो) २ उक्ति, उक्ति, तरको।

तातौन (प० फो०) कुटोवा दिन कुटो।

तात्कालिक (स० शि०) तद्यिन् कामि मन् तत्काल-उत्त। अत्यशक्तिपूर्वशास्त्र अन्तगतः। पा १२।१११ नरन मुखन शक्तिसेरका उम्। तत्कालीन समी समयका।

महागुरु शिवातमें बारह दिनका प्रयोग होता है। हिन्दु धर्माधुने दिन प्रयोग होती मो शाब्दादि कार्य जिके ज्ञानि है, उस समय पर्याप्त याददाशोम अन्तको तात्कालिक शक्ति दृष्टा करती है।

तात्काल (स० शो०) तत्कालता वह जो समी समयका हो।

तात्पर्य (स० शो०) तात्पर्यक नामः तत्पर अन्। १ ब्रह्मको दक्षिण वह मान को लियो वाक्शको कह कर कहनिवाता प्रकट करना चाहता हो। २ परिभाषा। तत्परता।

आध्यात्म बहुरिचकण तात्पर्य परिचित। (वाचस्प०)

ब्रह्मको दक्षिण टी याकाहा है और वको तात्पर्य है। इसी तात्पर्यके अनुसार पर्य मान्म दृष्टा करता है। एक सदाशररके ही इसका पर्य स्पष्ट हो आयागा। 'संयान' केवः इस वाक्शका पर्य महाके विचारि वीप (पहोर) मान करता है, तात्पर्यके अनुसार ही इस तरहका पर्य समया मया है। यदि तात्पर्य जोकार न किया जाय तो गहनमें सन्तानो रक्षात्मिका रचना संभव है। "यद्वादा" अर्थात् गन्धके विचारि एसा पर्य सचपायजिके हाप प्रभावित होता है किन्तु "गन्धादा" इस पन्थे गन्धामें और "वीप" पदमें सन्तानादिको लक्षणा नहीं हो सकती अर्थात् "गन्धादा वीप" एसा कहनेसे गहनमें सन्तानो रक्षादि रचती है एसा पर्य हो को नहीं सकता-अर्थात् यदा पर बोधनेबानेका एसा परिभाषा नहीं है। गहनके विचारि वीप (पहोर) बास करता है, यही बोधनेबासिका

प्रकृत अभिप्राय है। इस तरहके अभिप्रायका नाम हो तात्पर्य है। इसी तरह सब जगह वक्ताके तात्पर्यानुसार हो अर्थ लगाया जाता है और दूसरा उदाहरण लोजिये, जैसे 'काशी गङ्गा पर बसो है' इस वाक्यका शब्दार्थ काशी गङ्गाके जलके ऊपर बसो है, ऐसा होगा। लेकिन कहनेवालीका तात्पर्य यह है कि काशी गङ्गाके किनारे बसो है।

तात्पर्यक ( स० त्रि० ) १ भावोद्घोषक, अर्थबोधक । २ तत्पर, उद्यत, मुस्तैद ।

तात्व ( स० त्रि० ) तद् छान्दमस्यः दकारस्य श्रावत् । तत्कालीन, उसी समयका ।

तात्विक ( स० त्रि० ) १ तत्त्वमस्यन्वी । २ तत्त्वज्ञान-युक्त । ३ यथार्थ ।

तात्क्ष्णीय ( स० क्ली० ) उसी तरहको सुति ।

तात्स्य ( स० क्ली० ) उसमें स्थित, उसमें रक्वा हुआ ।

तात्स्य ( स० पु० ) १ किसीके बीचमें रहनेका भाव । २ एक व्यञ्जनात्मक उपाधि । इसमें जिस वस्तुका कहना होता है, उस वस्तुमें रहनेवाली वस्तुका ग्रहण होता है। यथा—यदि कहा जाय कि 'सारा घर गया है' तो इसका 'घरके सब लोग गए है' इसके निवा दूसरा अर्थ नहीं हो सकता ।

ताथाभाष्य ( स० त्रि० ) स्वरितके परे जिसका उदात्त उच्चारण हो ।

ताथेई ( द्वि० स्त्री० ) ताताथेई देखो ।

तादर्धिक ( स० त्रि० ) उसी तरह ।

तादर्थ्य ( स० क्ली० ) तदर्थस्य भावः तदर्थ-य्यञ् । गुणवचन-प्राप्त्यादिभ्यः कर्मणि च । पा ५।२२२ । १ तन्निमित्त, उसके लिये । २ तदर्थता, उसके वास्ते ।

तादात्म्य ( स० क्ली० ) तदात्मनो भावः तदात्मन् प्यञ् । तत्त्वरूपता, एक वस्तुका मिल कर दूसरी वस्तुके रूपमें हो जाना ।

तादाट ( अ० स्तो ) संख्या, गिनती, शुमार ।

तादीना ( अ० ) तदानीं प्रयो० साधुः । तदानी, उसी समय ।

तादुरी ( स० स्त्री० ) मेटकका एक नाम ।

तादृक्ष ( म० त्रि० ) म इव दृश्यते तद् दृग्-ङ्, सर्वनाम टेराल् । उसी तरह, उसीके जैसा ।

तादृग्विध ( म० त्रि० ) तादृगो विधा यस्य बहुव्री० । उसी तरह ।

तादृग् ( म० त्रि० ) म इव दृश्यतेऽसौ तद्-दृग्-किन् । खादादिषु दृशोऽनालोचने क्त । पा ३।१।५ । सर्वनाम टेराल् । उसीके समान, वैसा ।

तादृग्य ( म० त्रि० ) म इव दृश्यते तद्-दृग् कञ् । तत्त, ल्य, उक्त्तके जैसा ।

तादृगी ( म० स्त्री० ) तादृग्य डीप् । तत्त, ल्या, उसीके समान, वैसी ।

तादृर्म्य ( म० क्ली० ) एकधर्म, एक नियमता ।

ताधा ( द्वि० स्त्री० ) ताताथेई देखो ।

तान ( म० पु० ) तन-घञ् । १ विस्तार, फैलाव, खींच । २ ज्ञानका विषय । ३ गानाङ्गभेद, गानेका एक अङ्ग । अनुलोम विलोम गतिमें गमन और सृच्छनादि द्वारा किसी रागको अच्छी तरहसे खींचनेका नाम तान है । सप्तोत्त दामोदरके मतसे स्वरोमें उत्पन्न तान ४८ है। इन ४८ तानोंसे भी ८३०० कूट तानें निकली हैं ।

किन्तु बङ्गला सप्तोत्तरवाकरमें तानके चार भेद लिखे हैं, यथा—अरचक, घातक, सातक, और सुरातक । जिम तानमें अनुलोम या विलोममें एक सुर दो बार प्रयुक्त होता हो उसे अरचक कहते हैं । जिसमें अनुलोममें एक बार और विलोममें एक बार प्रयुक्त होता है, वह घातक है ; तीन बार व्यवहृत होनेसे सातक और चार बार व्यवहृत होनेसे सुरातक कहलाती है ।

एक सुरमें	१ तान ।
दो सुरमें	२ तान ।
तीन सुरमें	६ तान ।
चार सुरमें	२४ तान ।
पांच सुरमें	१२० तान ।
छः सुरमें	७२० तान ।
सात सुरमें	५०४० तान ।

समग्र ५८१३ तान ।

( संगीतरत्ना० )

४ कम्बलका ताना । ५ भाटका हलड़ा, लहर, तरङ्ग ।

१ एकद्वय या त्रिदिने मन्वृतेऽपि त्रिपल्लवौ त्रिदिनेषु लोकेषु  
 लोकेषु । ० एक दिवसा नाम ।

तानतरङ्ग ( स • खो • ) पन्नापचारोऽथवा लोकेषु ।

तानतरङ्ग—द्विद्वेषे एक पक्षे कवि । इनको प्रायः  
 समो कविताएँ सराहनामें हैं । उदाहरणार्थ एक नीचे  
 दो आती है—

“अथ हो वारि देरे इंदिरिना बरदेना मरे पवरं पारथी ।

छटा बालि तेरे परमं परी छीं

बह ककच पोखे मनुगवर दारथी ।

मेरे वंशमे दूर निकल गई दो बीनी इह मन्थी ।

तानवरण मनु सवते जग्गो इहव लुगई दारथी ।”

तानना ( छि • छि • ) १ नीचेसे खींचना, बड़ाना । २ बन्-  
 पूर्वक बिल्लोके करना औरसे बड़ा कर पसारना ।  
 'तानना नीचे 'खींचना' में एक इतना हो है, कि तानने  
 में बलुका खान लगे बहलना, सिद्धि 'खींचना' किसी  
 बलुको इस प्रकार बड़ानेको मो कहते हैं, जिसमें बह  
 पपना खान बदनतो है । जैसे खुट्टेके ब हो हुईको  
 तानना, गाड़ो खींचना पहा खींचना । २ खामनको तरङ्ग  
 खपर किसी प्रकारका तरङ्ग समाना । ३ बारामार मिनना ।  
 ४ जिसोके बिहङ्ग कोरे बिहा-पत्रो या दरबाष्ट पादि  
 मोचना । ५ जिसो पटायको एक खंसे खानसे दूसरे  
 खंसे खान तस के बाकर बांधना । ० प्रकारके सिधे भज  
 उठाना ।

तानपूर ( छि • पु • ) एक प्रकारका बाजा जो पितारके  
 पाकारका होता है । यह माथप्रको दूर बांधनेमें बड़ा  
 पहाबता देता है । इसमें चार तार होते हैं जिनमेसे  
 दो कोहिने पीर दो पीतलके रहते हैं । सुरबांधनेका क्रम-  
 पि मो लो पि  
 छि सि स प

तानम ( स • खो • ) तनोमिका लघु-पञ्च । इन्मयान्क लघु  
 वर्णः । प ५१(१११) । शरीरको तनुता शरीरको दुर्ग  
 मता ।

तानवर—द्विद्वेषे एक पक्षे कवि । इनको सारो कवि  
 ताएँ उल्लूख, मनुग्राम पाएँ जोनार जंतो धो । यां ता  
 येँ पनेत्र कविताएँ बसा गये हैं पर यहाँ एक जो  
 उद्भूत को आतो है—

“बनीसो नीच पाए, पासो नीच खेच कोबसो नीच खेच  
 खेचसो नीच मोहनक, बहसो नीच गहर बहारना ।  
 स्वर्धो नीच मरुकोक, मनुकोकमें नीच पुत्र  
 सिले नीच पांन, राजसो नीच प्रभा पारना ।  
 ब्रह्मसो नीच कशी, लकीसो नीच बरस बैरसो नीच कर  
 बनीसो नीच निरंन, बैरसो नीच धाक भावना ।  
 बैरसो नीच राजन लघुसो नीच बनीनक कवठ  
 कवि ताबर लघुसो नीच निरुणी पारना ।

तानवरण—द्विद्वेषे एक कवि । इनको कविता सरल  
 तथा प्रय समीय होती हो, उदाहरणार्थ एक नीचे  
 देती है—

“देवसमें प्रथम ब्रह्म मातसमें प्रथम वैशाख श्राद्धि  
 रिनुमें प्रथम बसंत शिवसमें प्रथम आश्विनी कीर्तिये ।  
 बैरमें प्रथम सावैर पुराण प्रथम श्रीवावरा  
 साक प्रथम ब्राह्मण राणी प्रथम मैत्र सो शिव कीर्तिये ।  
 दूर प्रथम भाव हीप प्रथम जम्बूद्वी बहव प्रथम मन्थरी  
 राध प्रथम मेघ कर्क कीर्तिये ।  
 एक प्रथम बरच गुण प्रथम लोपुत्र तस प्रथम ब्राह्मण  
 कवठ कवि तानवरण छुना प्रथम पीयैये ।”

तानब ( स • पु • खो • ) तनोरपञ्च गार्ग्यिजात् पञ् ।  
 तनु शि म शक ।

तानब्यापनो ( स • खो • ) तनोरपञ्च खो तनु खोचि-  
 तादिस्तात् पञ्, सिवात् खोय् । तनुबको व शक खो ।

तानसेन—मारतवर्षके एक पहिलोब गायक । अनुस-  
 पञ्चसका कहना है कि, हजार वर्षके मोतर एके मायक  
 देखनेमें नहीं पाये । पहले ये एक कहर हिन्दू थे ।  
 उन्दाबनेमें जा कर हरिशास मोझामोके सिध बने थे ।  
 माठके बपिबापाज रामचन्दने इनके सहीतगुण पर लुप  
 हो कर इनको पपनो मसामे रक्ता बा । प्रवाद है कि  
 लकीने तानसेनके बाबन पर लुग हो कर इनको खरीब  
 एक खरीब रूपये दिये थे ।

तानसेनको ख्याति बहुत थोड़ी समयमें ही भारत  
 मरमें फैल गई थी । इस समय राजादिम खूने इनका  
 धारके बुनानेक तिए बहुत नीगिय को था पर वे बुना  
 नहीं मने थे । बादमाह पञ्चवर भी तानसेनको अपूर्व  
 सहीत-यज्ञिका परिचय पा कर इनको दिखी बुनानेके

निचे ध्यय हुए। उन्होंने तानसेनकी आगरे से आनेके लिये जलाल उद्दौनकुर्चीको भेजा। राजा रामचन्द्रकी अश्वरकी आज्ञा उल्लङ्घन करकेका साहस न हुआ। उन्होंने रोते रोते तानसेनको विटा किया। तानसेनने जिन दिन पङ्कले पहल दरबारमें उपस्थित हो कर गाना सुनाया, उसी दिन वाटगाहने उनको दो लाख रुपये इनाममें दिये।

प्रवाट इस प्रकार है—पहले तानसेन टिमोर्नर साय सुलाफात नहीं करना चाहते थे। उनके पास पट्टे चर्न पर भी ये कुछ गाने नहीं थे। वाटगार प्रायः द्विप वर इनका गाना सुना करते थे। आश्वर एक दिन अकबरने तानसेनके पास अपनी लडकी भेज दी। वाटगारहाजेके रूपने तानसेनको मोहित कर लिया। गारहाजे भी तानसेन पर लट्टू हो गई। अकबरने दोनोंका विवाह कर दिया। तबसे तानसेन सुसलमान और अकबरके सभामंड हो गये। पहले ये स्वरचित जितने भी गीत गाने थे, उसमें उनके प्रतिपालक रामचन्द्रके नामका स्वस्तिप्रकाश वा भनिता होता था। उन गीतोंको महज-दृष्टिसे देखनेसे मालूम होता है कि उनमें रघुपति रामचन्द्रकी महिमा गायी गई है। परन्तु अकबरके आश्रित होनेके बाद ये भनितामें अकबर वा 'तानसेनपति अकबर' का नाम देते थे।

तानसेन एक मद्भ्रितमाधक व्यक्ति थे। माधकका शब्द उनके हृदयमें कभी भी दूरे भूत नहीं हुआ। ये वेदान्तिक भावसे ब्रह्मकी जगत्के साथ एकाकार समझते थे। योंही इनके बनाए हुए अनिक गीत मिलते हैं, पर यहाँ केवल एक ही गीत उद्धृत किया जाता है—

“प्यारे ! तुही अन्न तुही विष्णु तुही शेष तुही महेश।

तुही आदि तुही अनादि तुही अनाथ तुही गणेश ॥

जल स्थल मरुत ब्योम तुही अकार तुही सोम।

तुही उकार तुही मकार निरोङ्कार तुही धनेश।

तुही वेद तुही पुराण तुही हवीश तुही कुरान,

तुही ध्यान तुही ज्ञान तुही त्रिभुवनेश।

तानसेन ६६६ वैन तुही देन तुही रमण।

तुही घर पल्पुन तुही वरुण तुही दिनेश ॥”

सुसलमान धर्ममें दाक्षित होनेके बाद ये मियाँ तानसेनके नामसे प्रसिद्ध हुए थे।

तानसेनकी सृष्टि, कि विषयमें भी एक चतुर्थ उपाख्यान सुननेमें आता है। तानसेन अकबरके अत्यन्त प्रियपात्र हो गये थे, इसलिए बहुतसे लोग उनसे ईर्ष्या करते थे। बहुतसे उस्ताद मद्भ्रित-संग्राममें परास्त हो कर उनकी भारभंका पड्यन्त वर रहे थे। परन्तु उसमें वे कृतकार्य न हो सके। इस वाट उन लोगोंने नियुक्त किया कि दोपक राग गानेसे गायक जन जाता है, इसलिए तानसेनसे दोपक राग गवानेसे हाँ हम लोगोंको प्रमादमिदि हो सकता है। एक दिन अकबर त्रव दरबारमें पहुँचे, तब उस्तादोंने दोपकका प्रदर्शन किया। वाटगारने उन लोगोंने दोपक गानेके लिए अनुरोध किया। उस्तादोंने कहा—'इस लोग दोपक नहीं जानते, दोपक गाना तो मियाँ तानसेन ही जानते हैं।' अकबरने तानसेनकी दोपक गानेके लिए आदेश दिया गायक चूहामणि तानसेनने वाटगारके पास आ कर कहा—'यदि आप मुझे चाहते हैं, तो दोपक गानेका आदेश न दें।' किन्तु दोपक सुननेके लिए वाटगारका कुनूहन बहुत बढ गया था। उन्होंने तानसेनको वान पर ध्यान न दिया। तब तानसेन क्या करते ? उन्होंने अपना कल्याणकी मझार गानेके लिए कहा और खुद दोपक गाने लगे। उनका विश्वास था कि, मझारके गुणसे दोपकानल कुछ प्रगमित होगा। तानसेनकी कल्याण मझार गाने लगे, किन्तु पिताने मरनेको आग्रहामें उसका स्वर विस्तृत हो गया। तानसेन भी दोपक राग गाने गाने अपने ही दाहनसे आप दग्ध हो गये। कहा जाता है कि, उनके स्वरके प्रभावसे मझार निर्वाणित दोप उठे थे। किन्तु उनके जीवन-प्रदोपके साथ साथ वह दोपावली भी निर्वाणित हो गई थी।

तानसेनकी कन्न उन्होंने आदिनौलाक्षत्र खालियरमें स्थापित हुई। अब भी वहाँ इनकी कन्न देखनेके लिये बहुत दूर दूरमें नर्तकी और गायक आया करते हैं। इनकी कन्नके ऊपर एक वृक्ष अब भी मौजूद है। बहुतोंका विश्वास है कि, उस वृक्षको पत्ती खानेसे कण्डस्त्र परिष्कार और गीतशक्तिका वृद्धि होती है। इसलिए बहुतसे गायक और नर्तकी वहाँ जा कर उसको पत्तियाँ चवाते हैं। खालियर देखो।

\* इस विकृत मझारका ही मियाँ मझार नाम पड़ गया है।

शान्तियः मित्रं एकं पश्चिमीयं गायत्रं चो वे, एषा  
नह्यौ, ये बहुतवी नवीन नवीन राम-रागिणी भी बना  
गये हैं। आयाबरो, बीनिगा और दरबारो-बनाइया से  
राम इकोके बनाये हुए हैं। आशु १ परबरो और  
'पादया नामासिं यथाक्रमसे तान्तरण' और निनास नामक  
रनके दो पुत्रोंका उल्लेख पाया जाता है। दोनों भो  
ममिह गायत्र ये। ममिह गायत्र परतमेन इत्येके ब्रह्मण  
ये। इनके य शत्रु प्यारधनेसे ज्ञान भयज्जत्र भ एकार  
क्रिया वा।

शान्तेनके मित्रं भो प्रसिद्ध गायत्रं चो मये है,  
जिनमें चौदहों और शत्रुजनोंका नाम जो प्रसिद्ध है।  
शाना ( चि० पु० ) १ कपड़के लो तुनावटमें बंध छूत जो  
जम्बार्दिके बन्ध होता है। २ शरो या शालोन तुमनेका  
करवा।

शाना ( चि० लि० ) १ तन करना, तपाना, करम करना।  
२ विषयाना। ३ गरम कर परीक्षा करना। ४ परीक्षा  
करना, जाँचना।

शाना ( च० पु० ) आयेय वाक्, अथ च्च बोको ठोको।  
शाना शाना ( चि० पु० ) कपड़के लो तुनावटमें जम्बार्दिके और  
चौदहोंके बन्ध यथायुक्त हुए छूत।

शानाशरीरो ( चि० खो० ) माचारक शाना आसाय, रात्र।  
शानायाम ( जा पु० ) शम्भुचक्रवर्तन वायवाइका दूररा  
नाम।

शानो ( चि० खो० ) कपड़के लो तुनावटमें बंध छूत जो  
जम्बार्दिके बन्ध हो।

शानोयक ( स० पु० ) यावज्जन्तं ब्रह्म सुदृक्का पोका।  
शानुको—यक प्रसिद्ध परको कवि। इनका दूररा नाम  
पञ्च-शाना था। ये तानक व शत्रुके थे। इनको बनाई  
हुई कविताएँ प्रथम जगते हैं।

शानुनयास ( स० लि० ) धर्मि सम्बन्धीय।

शानुनय ( स० खो० ) तन्मन्त्रा नेयता अथ अथ।  
वास्तुके लिये दिया जानेवाला इति मिथित हूत, बंध  
इसी मिला हुआ जो जो वास्तुको चढ़ाया जाता है।

शानुर ( च० पु० ) तन बाहुनकात् शरव। अशानवत्,  
पानोका भँवर। २ वास्तुका भँवर। ३ बहुवापक, बहु-  
पार लोको।

शानु ( स० लि० ) तन-बन्ध। १ ज्ञान, निरुक्त सुखा  
हुषा। २ ज्ञान, यथा हुषा।

शानुव ( स० खो० ) तन्मोर्विकाट अथ। १ नख अण्डा।  
( लि० ) २ तन्मूर्तिर्मि, जिनमें तन्मू या तार जो, जिनमेंसे  
तार या तन्मू निकल सके।

शानुवता ( सं० खो० ) शानुव तन्मू टाप। कठिन द्रव्यका  
विशेष वर्ण। जिस शुभके रत्नमेंसे कुछ पदार्थोंको छोड़  
कर तन्मू अर्थात् तार बनाया जा सकता है, उसका नाम  
शानुवता है। आघातमहित शुभके मात्र शानुवता शुभका  
कोई भो-सम्बन्ध नहीं है।

जिनसे पतको पत्तो बनतो है, उसीसे पतका तार  
बनता होमा ऐसा कोई निबन्ध नहीं। लोहेका तार जेमा  
बारोक होता है पत्ती उतनेसे बारोक नहीं होती। गंगा  
और सोनेको पीठ कर पत्ती पत्ती बनाई जा सकती  
है, पर लकड़ो को च कर तार नहीं बनाया जा सकता।  
इटिन्मू, चाँदो ताँबा, सोना, बस्ता रांगा, सोमा इनमेंसे  
पूर्वकर्त्तौ धातुधोकी अथवा परबर्त्तौ धातुधोमें कर्मण्य' यह  
शुभ बोझा पाया जाता है। वस्तुतः इटिन्मू अर्थात् मिन  
आचन नामक धातुमें शानुवता शुभ सबसे ज्यादा है।  
जिसी किसोने इनका इतना बारोक तार बनाया है कि  
जिसका आध एक इंचके एक आध भागमें तोन भाग  
मात्र है।

शानुव ( स० पु० खो० ) तन्मो वस्तुनय अथ अथ मर्मा  
यज। तन्मूका अथक, लुप्तमूर्त्तौ सन्तान।

शानुववायनो ( स० खो० ) तन्मोरपत्तं खो अथ पिलात्  
कोय। तन्मूको अथक खो।

शानुववाय ( स० पु० खो० ) तन्मूवावय अथ अथ तन्मूवाय  
इत्। तन्मूवायका अथक, तातोका अथक।

शानुववाय ( स० पु० खो० ) तन्मूवाय अथ अथ तन्मूवाय  
अथ। शानुववायका अथक। वा ११, ११२। तन्मूवायके  
अथक, तातोके अथक।

शानुव ( स० खो० ) १ तन्मूविशेष, यह जिनमें तार लकी  
है। २ तन्मूवाय सम्बन्धीय।

शानुव ( स० लि० ) तन्मू विद्यानामधोसि शेट वा तन्मू  
कक वादित्वात् ठक। १ प्रातःशानुव, जो शिवान्  
नामका हो। २ माघामिष जो माघ नामका हो।

२ तन्त्रशास्त्रवेत्ता, जो तन्त्र-शास्त्र जानता हो। मारण मोचन, उच्चाटन आदिका प्रयोग करनेवाला। ४ तन्त्र सम्बन्धी। (पु०) ५ मन्त्रिपात-रोगविशेष, एक प्रकारका मन्त्रिपात, जिस मन्त्रिपातमें अत्यन्त उँचाई और उसमें अधिक प्यास लगती हो, अतिसार, अत्यन्त श्वास, कास, गात्र वेदना हो शरीर अधिक गरम और गला सूख जाता हो, नाकका अगला भाग शोथल हो जाता हो, जोभमें काली पड़ जाती हो, यकाष्ठ मालूम पड़ती हो तथा श्वषण-शक्तिका ह्रास और टाङ्ग उत्पन्न होता हो उसे तान्त्रिक मन्त्रिपात कहते हैं।

तान्त्रिकी (सं० स्त्री०) तान्त्रिक-डोप। १ तन्त्र-सम्बन्धीया। श्रुतिप्रमाणक धर्म दो प्रकारका है, वैदिक और तान्त्रिक। तन्त्र देखो।

तान्द्र (सं० पु०) वायु, हवा।

तान्द्र (सं० स्त्री०) तन्दुरेण पाकयन्त्रभेदेन निर्वातं अणु। तन्दुरपक्व-मांसभेद, अन्नरस परिपूर्ण गड्ढे में अलग अलग शुद्ध मांसमें आच्छादन कर उसे तन्दुर-यन्त्र द्वारा पाक करनेसे तान्द्र मांस प्रसृत होता है।

तान्द्र (सं० पु०) तन्त्राः प्राणाधिष्ठितत्वात् प्राणवत्या अयं अन्व, सञ्ज्ञा पूर्वकविधिरनित्यत्वात् वेदे न गुण। १ तनुज, पुत्र, वेदा। २ ऋषिभेद, तनु नामक ऋषिके वंशज। तनु दशा पवित्रवस्त्रं तस्येदं अणु। ३ दशा-पवित्र-वस्त्र-सम्बन्धी स्त्रियं अणु। ४ दशावस्त्र।

तान्द्र (सं० पु०) तन्त्र ऋषिके वंशज।

ताप (सं० पु०) तप-वञ्। १ क्षेयजनक उष्णदि स्वर्ग-जन्य सन्ताप। २ कृच्छ्र, दुःख। ३ उष्णता, आँच, लपट। ४ ज्वर, बुखार। ५ यातना, मानसिक कष्ट, हृदयका दुःख। ६ आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुःख। दुःख देखो।

ताप (Heat)—प्रकृति-कार्यमें सामञ्जस्य-स्थापनके लिए विशेष उपयोगी एक प्राकृतिक शक्ति, जिसका प्रभाव पदार्थोंके पिघलने, भाप बनने आदि व्यापारोंमें पड़ता है, उष्णता, गरमी, तीज। इसके द्वारा आन्धो वृषान आदि नैकहों आश्चर्यजनक भयानक घटनाएँ होती हैं। इसके न होनेसे विशेष परीक्षाके द्वारा रसायनशास्त्रकी आखीबना नहीं की जा सकती। यथार्थमें ताप, पदार्थों-

के मंत्रोपण, विशेषण श्रवणान्तर वा रूपान्तर-प्राप्ति आदि क्रियाओंका एक प्रधानतम साधक है।

ऐसे जोड़े रासायनिक क्रिया नहीं, जिसमें तापका विनियोग, उद्भव या लोप नहीं पाता हो। इसके अन्तर्गत और पद्यायन्य विनियोग-प्रणालियोंकी भनाई होती है जिनसे संसारमें सैकड़ों अद्भुत और महोपकारी कार्योंका सम्पादन किया जा सकता है। वाष्पीय-गकट, वाष्पीय यान (जेल जहाज) और तापमानयन्त्र आदि इन्हींके निदर्शन-स्वरूप हैं। क्या प्राणि राज्य और क्या जड-राज्य तापकी महोपकारिता सर्वत्र ही विद्यमान है देखनेमें आती है।

तापके न होनेसे प्राणियों और उद्भिजोंका जन्म, परि-वर्धन और पचन कुछ भी न होता। ताप विशेष उप-कारो है, किन्तु इसका लक्षण क्या है? ताप अदृश्य है, प्रदोषको जनता देख कर यह नहीं कहा जा सकता कि वह उत्तम है। ताप भागविहीन है। किसी वस्तुका शीतकानमें जितना भार है, शीतकानमें भी उतना ही भार रहता है। तापद्वारा भारमें कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। फिर भी उसको सत्ताकी उपलब्धि होती है। वह सत्ता स्वर्ग-ग्राह्य और प्रक्रमानुमेय है। ताप जब किसी पदार्थसे संक्रामित होता है, तब पदार्थ उसे शीपण करता है, और उसमें उसका श्रवणान्तर या रूपान्तर होता है। उस समय तापका प्रक्रम देखा जा सकता है और उसे समय विस्तारण, तरलोकरण और वाष्पीकरण प्रभृति यात्रोंकी उपलब्धि होती है।

ताप समस्त पदार्थों अल्प वा अधिक मात्रासे वर्त-मान रहता है। यों तब कि तुपारपिण्ड जो अत्यन्त शीतन है उसमें भी ताप है। कारण तापमानयन्त्र-द्वारा यह निर्धारित हो चुका है कि शांतप्रधान देशोंका तुपार शीतकालमें जितना रहता है, शांतकालमें उसकी अपेक्षा अधिक शीतल ही जाता है।

तापकी गति भीषो रेखाके रूपमें और आलोककी तरह एक वस्तुसे दूसरी वस्तुमें प्रतिफलित एवं संक्रामित होती है। कोई कोई पदार्थ इसे आत्मसात् वा शोषित करते हैं, किन्तु किसी वस्तुद्वारा यह प्रतिफलित भी जाता है और किसी किसी वस्तुद्वारा परिचालित प्रसा

रित और विकीरित होता है। सभी स्थानोंमें ताप प्रवृत्त पाया और परिमेय है। कई पदार्थों ताप का गोप्य करती है किन्तु उदाहरण मद्यो होवे पक्षवा कलत्रा उत्पन्न होता दिव्यनेमें नहीं जाता। ऐसे स्थानोंमें ताप गूढ़ अतिशय पाया या अनुमित-पात्रा लक्षणाता है।

पतएव ताप दो प्रकारका है—प्रत्यक्षपात्रा (Sensible) और अनुमितपात्रा (latent)

उदाहरण—जिनके किसी वस्तुमें रहनेसे बह वस्तु तप्य मान्यम पड़े कभीका नाम ताप है।

तापके प्रकृति (Nature of heat)—पनेक विज्ञान बिन्दु विद्वान् इस विषयमें नामा प्रकारके मत प्रकाशित कर गये हैं किन्तु उन सबमें एक मो मयात्र सुन्दर रूपसे प्रकृत मद्यो हो सञ्जा। किन्तु बह स्थिर है कि ताप, पालोक और तद्विन्दु, ये तीनों एक पदार्थ हैं—एक ही पदार्थके रूपान्तर मात्र हैं।

इन तीनोंका उदाहरण पदार्थ एथर (Ether) है जो पृथ्वीके परम्पर अन्तर्गत प्रदेशमें परिष्कार हो कर पन स्थान करता है।

आधुनिक विद्वानोंका लक्षणा है कि, त्रिसका अणुकार्य है उदाहरण नाम सैत्र है। पुरातन यूरोपीय विद्वान् इसे एक प्रकारका पञ्चम रूप पदार्थ समझते थे, किन्तु नये विद्वानोंका मत है कि ताप कोई कृतमत्र वा मिश्र पदार्थ नहीं है।

जन्मि प्रमाशित बिद्या है कि अज्ञानम् पृथ्वीका कारण हो ताप है। उनक मतसे बह पदार्थके परमाणु समूह एथर वा आकाश नामक एक प्रकारके विद्यमानो रूप पदार्थसे परिचित है, लक्ष्मीक आधुनिकमत्रे (अङ्ग इन्द्रोके समस्त पण्य आन्दोकित होनेसे) ताप उत्पन्न होता है।

हुज्ज मो हो, तापके विषयमें यद्यो दो प्रधान मत प्रचलित हैं, जिनमें शिरोज मत जो सर्वत्र परिचरित रूप है।

१—ताप एक सुष्णतम तरल पदार्थ एथर (Ether) है। यह बह जगत् और समस्त वस्तुपक्षि मद्योममें अवस्थान करत पक्ष प्रयोजनकय पुनः उन सबसे पक्ष्य हो आनेमें समर्थ है। इन प्रकार अद्योग और विच्छेद

में तापको प्रसारण प्रवृत्त, आदि क्रियाएँ चलित कर सकतो हैं।

२—ताप पृथ्वीके कर्मणसे उत्पन्न होता है। जिन समय किसी पदार्थके समस्त पण्य क्षयित होये रहते हैं, उन समय उद्ये स्थान करनेसे बह कारणत हमारी जन्मि पाकर आघात करतो है और हमोसे हमें अणु-अणुमत्र होता है यह कर्मण मिश्रं यह पण्यमें जो पक्षस्थान करता है ऐसा नहीं बह समस्त पण्यपक्षि अवाकर प्रदेशगत इतरमें भी विद्यमान रहतो है। यद्यो शिरोज मत इस समय बिषय बुद्धिमत्त प्रतीत होता है। कारण इस म मारमें जो कुछ पदार्थ इतिगोचर होते हैं, बर्बादमें ही मद्यो पनबन्धिय मतिगोचर हैं।

यसुक्त यद्यार्थ स्थिति किसीको भी नहीं है यह स्थितिगोचर है, ऐसा किसीके विषयमें नहीं कहा जा सकता। तो मो बह गति किसी किसी स्थानमें प्रवृत्त और किसी किसी स्थानमें अनुमित होतो है। बह गति भी बन्धका अणुकार्य मात्र है। बहो वन फिर आकृतता वा अणुकार्य हो सकता है। कुछ मो हो, उस गति वा बन्धे ताप उत्पन्न होता है। पदार्थके परम्पर सङ्घर्षसे तापको उत्पत्ति होतो है। जिन पण्यसे बह पदार्थ बना है, उनके अन्तरे वा परम्पर सङ्घर्षसे तापकी उत्पत्ति होती है। आघात करनेसे वस्तुमें उत्पत्ता पा जाती है; पतः जितना अधिक बन् प्रयोग किया जायगा, उतना ही अधिक ताप उत्पन्न होगा। आप्योव गकट या आप्योव यान इसमें निर्दमनकक्ष्य है। अब बहो ताप अणुकार्यको प्राप्त होता है अद्यत् बह उद्ये पुनः किसी प्रकारको मतिमसुत्पादनमें प्रवृत्त किया जाता है, तब बह तिरोहित हो जाता है।

उदाहरण अणुकार्य (Sources of heat)—यद्यो तापक उत्पत्ति स्थानका कारण किया जाता है। जिनमें तापप्रवृत्त पदार्थ हैं उनमें सर्व एक प्रधानतम है। उद्येका ताप पृथ्वी पर पड़ता है एवं उनक अणुकार्य काय बहो स्थिति देते हैं। पौष्णकानमें अधिक तापका अनुभव होता है, वन समय अणुकार्यका परिवर्तनार्थ ताप क्रियाएँ चलित होना हैं। ताप उद्ये पर चलित हो कर उद्येकी उत्पन्न करता है उद्येके समस्त पदार्थ उत्पन्न



दीते हैं, किन्तु वह पृथ्वीके आभ्यन्तरमें केवल दो चार हाथ ही प्रवेश करता है, यह जानकर अनेक लोग ग्रीष्म-कालमें मिट्टीके भीतर घर बना कर रहते हैं। रेनगाड़ीके रास्तेमें रेन (नाइन) का जड़ों परस्पर संयोग होता है, उस स्थानमें ग्रीष्मकालमें अधिक तापके समय परिमरण होगा, यह जान कर जरा जरा अन्तर रखा गया है। इस समय नाना प्रकारके फल परिपक्व होते हैं इस समय तापके आधिक्य होनेमें परिगोपण क्रियाके विशेष लक्षण देखनेमें आते हैं। नहर, तालाव आदि सब सूख जाते हैं।

सूर्य की क्रीड कर संघर्षण (friction), पीपण, मंघटन (percussion) रासायनिक क्रिया आदि भी ताप-प्रभव हैं। तड़ित् और टहन, ये भी रासायनिक क्रियाको अन्यपरिणति माव हैं। इनसे भी तापकी उत्पत्ति होती है।

संघर्षण—वस्तुओंमें परस्पर संघर्षण होनेसे तापकी उत्पत्ति होती है। काष्ठ काष्ठमें संघर्षण होनेसे ताप उत्पन्न होता है। काचकी शीशोकी डाट लगा कर रस्मोंसे उसका गला-घर्षण करनेसे वह स्थान उत्तम हो कर प्रसारित होता है और डाट खुल जाती है। बरफ पर बरफ घिसनेसे वह गल जाती है। डेभि माइवने परोचा करके देखा है कि रेन (पटरो)-के ऊपर पहियोंके घर्षणसे अग्निस्फुल्लिङ्ग निकलते हैं। घर्षणसे ताप उत्पन्न न हो, इसीलिए रेनगाड़ोंमें चर्वी व्यवहृत होती है। इसीसे मशीनके समस्त कल-पुरजे भन्नाभाति यथायोग्य स्थानमें मजाये जाते हैं।

संघटन—संघर्षण और पीपण इन दोनोंको एकताकी संघटन कहते हैं। चकमक पत्थरकी परस्पर ठोंकने और घिसनेसे अग्नि उत्पन्न होती है। लुहारके हतोड़ेसे लोहा पीटते समय लोहा उत्तम हो जाता है।

रासायनिक क्रिया—वस्तुओंके परस्पर मिलित होनेसे जो नूतन प्रकार वस्तुको सृष्टि होती है, उसे रासायनिक क्रिया कहते हैं। कभी कभी इससे अग्न्युत्पात भी होता है, जो प्रायः देखनेमें नहीं आता। चूनेमें पानो डालनेसे और जलमें गन्धकद्रावक देनेसे ताप उद्भूत होता है। पानोमें पीटाथ डालनेसे वह जलने लगता है। प्रदीप

जलना आदि भी रासायनिक क्रियाके उदाहरण हैं।

ऊपर कहा गया है कि ताप दो प्रकारका होता है—एक प्रत्यक्षग्राह्य और दूसरा गूढ या अनुभूतग्राह्य। प्रत्यक्षग्राह्य ताप प्रायः स्यर्गशक्ति द्वारा अनुभूत होता है। विशेष धिवेचनापूर्वक देखा जाय तो स्यर्ग-बोध हम लोगोंका एक प्रकारका तापमानयन्त्र है। जब हम कोई उष्ण वस्तु स्यर्ग करते हैं, तब हमें उष्णस्यर्गानुभव होता है। इसी तरह जब हम एक गुपारपिण्ड पर हाथ देते हैं, तब हमें शीतलस्यर्गानुभव होता है, किन्तु वह कितना उष्ण या कितना शीतल है, यह नियय नहीं कर सकते। नियय न कर सकनेके कारण तापके वैलक्षण्य और ज्ञानसृष्टि आदिके बारेमें भी कुछ स्थिर नहीं कर सकते; इसीलिए तापमानयन्त्रको सृष्टि हुई है। इन्द्रियों द्वारा सामान्यतः जो कुछ स्थिर किया जाता है, वह यथार्थ ही हो, यह मध्य नहीं। क्योंकि यदि किसी गृहस्थके एक धातुकी, एक काष्ठकी और एक सतकी इस तरह तीन चीज हो और उनमेंसे प्रत्येकका यदि क्रमानुसार स्यर्ग किया जाय, तो हमें तीन विभिन्न प्रकारका स्यर्गानुभव होगा। यदि गृहस्थित वायु उष्ण हो, तो वस्त्र उष्ण, काष्ठ उष्णतर और धातुका पदार्थ उष्णतम मालूम पड़ेगा, किन्तु उसी वायुके शीतल होनेसे इसके विपरीत, अर्थात् धातुका पदार्थ शीतलतम, काष्ठ शीतलतर और वस्त्र शीतल प्रतीत होगा। वस्तुतः हमारी स्यर्गशक्ति विभक्तुल अनिश्चित है।

कोई एक पथिक किसी पर्वतसे उतर रहा है और दूसरा उसी पर्वत पर चढ़ रहा है; उतरनेवाला तो जितना नीचे उतरता है, उतना ही उष्णताका अनुभव करता है और चढ़नेवाला; क्रमशः शीतका ही अनुभव करता है; इन दोनोंमेंसे कोई भी उष्णता और शीतलता की उपलब्धि विशेष रूपसे नहीं कर पाता। और तो क्या; कभी कभी ग्रीष्मकालमें किसी किसी दिन शीतानुभव होता है और शीतकालमें कभी कभी गरम मालूम पड़ते हैं। इन वैलक्षण्यताओंकी सूक्ष्मरूपसे जाननेके लिए स्यर्ग-शक्तिके ऊपर किसी प्रकार विश्वास नहीं किया जा सकता। कोई कोई तापको एक सूक्ष्म तरल पदार्थ कहते हैं, किन्तु यह तरल पदार्थ की तरह सेरके

हिसाबसे होना नहीं जा सकता। एकता वाचायु सञ्चाल्यसे तापको किसी प्रकार भी भापा नहीं जा सकता, किन्तु हम पदाब्जि क्षयर माना प्रकारके परिमाण करके तापके परिमाण निर्धारणमें समर्थ होते हैं।

तापमान बेजो।

एकता और शीतलता—एकता और शीतलतामें कोई विशेष प्रमेय नहीं है। एक बस्तुके ताप तुलनामें जो पदु एक बोज होता है अन्य एक बस्तुको तुलनामें वही फिर शीतल माना जाती है। एक मात्र प्रति एक जगहमें और दूसरा मात्र बरपने पातेमें बुजो रखनेके बाद दोनों जाँचोको तुलनामें पातेमें बुजो देनेसे, जो मात्र एक जगहमें निमज्जित हुआ उसे शीतल और जो मात्र द्विमज्जितमें निमज्जित हुआ उसे एकताका अनुभव होता है।

तापके कारणके बहु बस्तुका कारण—तापके कारण प्रकाश परमाणु एक दूसरेको दूरोमूल करती हैं। इसी लिए तापके समानमसे प्रकाश प्रसारित होती है। उत्तम जोनेसे कठिन द्रव्यको पयेचा तरल द्रव्य और तरल द्रव्यको पयेचा वाष्पय द्रव्य पयेचाकृत पथिक विस्तृत होती है। इसी तरह उत्तम जोनेसे कठिन द्रव्य द्रव और द्रव-द्रव्य वाष्प हो जाती है। समी कठिन द्रव्य उत्तम जोनेसे प्रसारित होते हैं, इसीलिए एकको पटरो बनाते समय उनके बीचमें जोको जोको जाप जोड़ दो जाती है।

सम्य-द्वारा परोक्षा करके देखा गया है कि, जो शीतल शीतलदण्ड किसी विद्युत् पनावाम प्रकट होता है वह उत्तम होने पर उत्तम प्रथम नहीं कर सकता। जो कठिन पदार्थ तापके समानमसे विद्युत् नहीं होते, उत्तम करानेसे ही कठिन शीतल हो जाती है और पदार्थमें तरल हो जाती है। कठिन द्रव्यको तरल द्रव-द्रव्य में उत्तम जोनेसे प्रसारित होते हैं।

एसीजिसे कठोरपण पावने ताप देनेसे अत उत्पन्न होता है। वाष्पय समी वस्तुएं ताप जगहसे प्रतिगम प्रसारित होती हैं। यदि किसी वाष्पयणं पममयकता सुच बन्द कर लसमें ताप दिया जाय तो वह पयने पाप जून बढती है।

समान भागमें ताप प्राप्त होने पर भी सम्यु प्रकाश

के कठिन और तरल द्रव्य समान परिमाणमें प्रसारित नहीं होते, किन्तु समस्त मायवीय द्रव्य समान ताप प्राप्त होने पर प्रायः समान परिमाणमें ही बिन्दु त होते हैं।

तापका पद—इस विषयमें पदसे ही कहा गया है कि वन तरल वा वाष्पय समी पदार्थ तापसे प्रसारित और शीतले बहुचित होते हैं। यह प्रमथ वन पदार्थोंमें कम तरल पदार्थोंमें कुछ पथिक और वाष्पय पदार्थोंमें समी पथिक कचित होता है पदार्थ पदार्थोंके समस्त पथ जितने मिश्रकथ जों प्रसारण में उत्तम हो पथिक कचित होगा। सब पदार्थ एक प्रकारके तापसे एककर्ममें प्रसारित नहीं होते।

वन पदार्थोंका प्रसरण उत्तम पथ है कि उसे हम देख कर प्रमथ नहीं सकते। हाँ सूक्ष्मकर्म परिमाण करानेसे वह ज्ञाना जा सकता है।

नोकेवा घेता कतम जिसे बिना पदियेमें नहो पदनाया जा सकता। इसका पथ इधरे बिना और कुछ नहो कि उत्तापने कथका धायतन बहु जाता है। किन्तु वह उच्च इतनी पथ्य है कि सूक्ष्म इतिसे भी पगीकर है। काव मथका उत्तम या शीतल जोनेसे तद्वय जाता है, क्योंकि वह पपरिचासक है। उससे सम्युर्ण भागोंमें ताप प्रममान और शीततासे परिचासित नहीं होता।

इमजिप जिन स्थानका ताप अपिचासक पथिक हो जाता है, वह सम कुछ पथिक प्रसारित होनेकी शिष्टा करता है। इम प्रकार प्रमथ प्रसरणके कारण वह जाँच कटक जाता है। किसी बस्तुके पथकत उत्तम होने पर शीतल होने समय उससे बहुचमसे जो वन तापदित होता है, वह पथकत पथिक है। इससे लिए एक तदा करण देना ही यथिष्ट होगा।

पैरो जगहमें जिसे वरको मीत पट कर बाहरको और जून ठही जो नोइकथ द्वारा घर विहित किया गया। इसका बाद नोइके उष्ण गरम किये गये, कुछ उत्तम हो जाने पर उष्ण स्थले पथको तरल कथ दिये गये। ये उष्ण जिन समय जगहमें शीतल हो कर महचित होने लगे तो उनसे साध मीत में संकचित हो गईं।

तरल पदार्थोंका प्रसरण हम प्रकथ देख सकते हैं। यह दो प्रकारका है—पथक (cool) और प्रकथ

(apparent)। किसी भी तापक्रमयन्त्र वतु लाकार भागमें ताप देनेमें पारा नल्लमें चढ़ने लगीगा ; जितना चटना देखेंगे, उतना ही उसका प्रत्यक्ष प्रसरण है। कारण तापसे पारट जिन तरङ्ग प्रसारित हुवा, उभो तरङ्ग वतु-लाकार भाग भी इतन् प्रसारित हुवा, इसलिये वतु लाकार भागमें अब पारटको पूर्वापेक्षा अधिक स्थान पूर्ण करना पड़ा, किन्तु यदि वतु लाकार भाग अपने पूर्वावस्थामें ही रहता तो पारट नल्लके और भी ऊपर चढ़ता और वही पारटका यथार्थ प्रसरण कहलाता। इस तरह तरल पदार्थ किसी भी पात्रमें क्यों न रहे, तापसे तरल पदार्थके साथ उस पात्रका भी कुछ प्रसरण होता है। अतएव तरल पदार्थके प्रसरणमें हम लोग केवल प्रत्यक्ष प्रसरण ही देख पाते हैं।

तरल पदार्थका प्रसरण समस्त पदार्थके प्रसरणकी अपेक्षा अल्प नियमानुयायो है, तापक्रम जितना हो वाष्पोभाव-विन्दुके समीपवर्ती होता है, उतना ही उसके नियमका व्यतिक्रम भी बढ़ने लगता है।

धन और तरल समय प्रकारके कितने ही पदार्थोंमें प्रसरण-नियमका वैपरोत्य लक्षित होता है। गन्धक और किसी किसी मिश्रधातुके गलानेमें वह धनीभूत होनेके समय सङ्कुचित न हो कर प्रसारित होते हैं। जिस धातुसे छापनेके अक्षर बनते हैं, साचेमें ढालनेके बाद शीतल होते समय वह अल्प प्रसारित हो कर अक्षरका अग्रभाग सुस्पष्ट रूपसे विभिन्न कर देते हैं।

तापके अंश लिख कर प्रकाश करने हों तो उनकी संख्याके टाहनी और कुछ ऊपरमें एक छोटी विन्दो लगा देने चाहिए। और शतांशिक, फारेनहोर्ट अथवा रिमर जिन प्रणालीके अंश हों, उसके नामका आदि अक्षर लिखना चाहिये; जैसे २७° श, ६०° फा, १२° रि अर्थात् शतांशिकके २७, फारेनहोर्टके ६० और रिउमरके १२ अंश। शून्यसे नीचेका कोई अंश ही तो ऋण-चिह्न देना चाहिए; जैसे—१५° श अर्थात् शतांशिक तापमानके शून्यसे १५ अंश नीचे।

तरल पदार्थोंमें जन भी इतना उदाहरण-स्थल है। शतांशिक तापक्रमके ४० अंश पर्यन्त जल शीतसे संकुचित होता है। किन्तु जलका तापक्रम इसके नीचे जितना कम होता जाता है, उतना ही जल प्रसारित

होता है। कारण ४° श°में जन गाढ़तम अर्थात् संकीचनकी चरम मोमकी प्रात होता है। फिर चाहे इसे उन्नत करें या शीतल, यह प्रसारित ही होगा। जलमें यदि यह वैपरोत्य न होता, तो शीतप्रधान देशोंमें, शीतकालमें जो नद नदी ऊद आदि तुपाराहत रहते हैं, उन सब तलेका जल जब तक बरफ न हो जाता तब तक ऊपरके जलका बरफ होना असंभव होता। तलस्थ जलके बरफ हो जानेसे कोई जलचर हो जावित न रहता। किन्तु ४° श°में जल गाढ़तम होनेसे बरफ, जिसका तापक्रम ०° श है। जलकी अपेक्षा लघु होनेके कारण उसके ऊपर तैरता रहता है और बरफ अपरिचालक है, इसके ऊपर रहनेसे बाहरका शीत निम्नस्थ जलमें प्रवेश नहीं करता। उस जलका तापक्रम ४° श रहता है और उसी जलमें मत्स्य एवं अन्यान्य जलचर जीवन धारण करते हैं।

वाष्पीय पदार्थका प्रसरण अन्य पदार्थके प्रसरणकी अपेक्षा अधिक नियमानुयायो है और समस्त वाष्पीय पदार्थोंमें प्रायः समभावसे होता है। यह प्रसरण तरल पदार्थोंके प्रसरणको अपेक्षा १३ गुण अधिक होता है। वाष्पीय पदार्थोंके प्रसरणसे मानव-जीवनकी सैकड़ों लाभ पहुंचते हैं। केवल मानव-जीवन ही क्यों, ऐसा कोई जीवन ही नहीं जो इसके अभावसे नष्ट नहीं होता ही।

जिसके अभावसे हम सुहृत् माव भी जा नहीं सकते, उस वायुसे आच्छन्न रहने पर भी हम उसके ही अभावसे मर जाते। हम जो वायु निःश्वास द्वारा त्याग करते हैं, वह यदि प्रसरण गुणके कारण तत्क्षणात् जड़ गति न होती और उसके बदले यदि परिष्कार वायु न पाते, वही परिव्यक्त वायु हमें फिर ग्रहण करनी पड़ती, तो उसके द्वारा हमारे जीवनका संहार हो जाता। स्टु मलयानिल वायुसे ले कर प्रचण्ड तूफान तक, सभी वायुगतियोंका यही एक मात्र कारण है। इसके सिवा इस वायुगतिके न होनेसे मेघ जहां पठते, वहीं अर्थात् समुद्रके ऊपर ही रह जाते, पृथ्वीके प्रायः समस्त देशोंमें अनाहृष्टि होती, कृषिकार्य न चलना, इत्यदि अग्नि-विध अस्मात् होता। किन्तु तापके प्रसरण-बलमें पूर्वोक्त किसी भी प्रकारके अमङ्गल नहीं होते।

यहाँ प्रश्न ही रहता है कि जब ताप किसी पदार्थमें गूठ मात्रसे रहता है तो उस समय क्या वह ताप नहीं बढ़ाता? हाँ, उस समय भी वह ताप बढ़ता है; क्योंकि यहाँ पूर्वमें उसका परिष्कृत अर्थात् बुधा है और पचापुं मो उसका परिष्कृत दिखलाई देता है। परंतु जब पचस्या विधियमें दृष्टिगोचर न होने पर भी अनुमान किया जा सकता है कि यहाँ पर ताप वर्तमान है।

बाई एक मोटा ऊपर ढँका गया, वह नीचे न गिर कर किसी क्षण पर या किसी एक मूमि पर एक घण्टा तक पतन उस आधार म दीवने न हुआ, तो क्या यह कहा जायता कि उसकी पतनशक्ति नष्ट हो गई? नही कारण आधार गूथ होती ही नह मोटा अपने पाप जमोन पर बिना। अब यदि किये उस आधारमूमिने उस मोलेकी पतनशक्ति प्रतिरोध किया वा तुम्हारेविरोधिताए कारण वह शक्ति उस समय प्रत्यक्षोभूत नही हुई हो। इसी तरह ताप भी समझाविधियमें गूठ मात्रसे रहता है; वह ऊपर हुई है, वह मान्य नहीं होता पर्याप्तताका कोई कार्य जो यहाँ दृष्टिगोचर नही होता, किन्तु पचस्यात्ममें वह भली भाँति अर्थात् होता है।

ताप बहुधाकी पचस्याकी परिवर्तन करता है। पचस्या की वन, तरल और वाष्पिय इन तीन पचस्याधर्मों में से एक भाग है, उनका कारण ताप ही है।

पदार्थ तापके व प्रक्रममें अपने तरल, तरलसे वाष्पिय तथा तापके पचस्याके वाष्पियसे तरल और तरलसे वन पचस्यामें परिवर्तन होते हैं। वरन्, जब और ऊनीय वाष्प एक ही उत्पादामें वने हैं, किन्तु तापमें होने तोल पचस्यामें परिवर्तन हुए हैं।

कोडा इतना अठिन है किन्तु ताप देनेसे वह मो गठ जाता है; वधे मी पचिया ताप देनेसे वाष्प रूपमें परिवर्तन हो जाता है।

ममदा पदार्थकी इस पचस्याप्रयमें परिवर्तन नहीं कर सकते। किन्तु हम नहीं कर सकते, हमकिए होता हो न हो, ऐसा नहीं बाहु और हाइड्रोजन का मी पचस्यात्ममें परिवर्तन नहीं हुआ परलकोइव समी जमाया नहीं गया। किन्तु हमने कोई सन्धि नहीं कि यद्येह ताप पचस्या

किया जाव तो यह उद्देश्य सिद्ध हो सकता है। अतएव तथा किसी किसी वास्तुके पचस्या साधारण पचियमें नहीं रहते, किन्तु तद्विनाशमें कोई मो पदार्थ का न हो वह मल कर वाष्प हो जायगा।

ताप समी बहुधाका एक रूपसे परिवर्तन करता है, पर्याप्त वधेह उत्तम को जाने पर ममदा बहुधा वाष्प भूत और यद्येह ताप पचस्या कर सकते पर ममदा बहुधा वनोभूत हो जाती हैं।

तरल पदार्थ दो प्रकारमें बाष्पोभूत होते हैं। साधारण तापक्रमसे मो उच्चमोक्ष तरल पदार्थ पचायत पचस्यामें ऊपरसे भावने और और वाष्पाकारमें परिवर्तन होते हैं और तापक्रमको इतिके मात्र उस बाष्पोभावको इति होती है। इसी कारण बाई पाच ऊपर वर पचायत रहनेसे वह अमय कम हो कर निम्नित हो जाता है एक मनायशादि प्रोद्यमानमें उच्च प्राय हो जाती हैं। यही कारण है कि मोटा वध वधमें रहनेसे उच्च हो जाता है। इस बाष्पोय मादका नाम उष्णोष्ण (Evaporation) है। तापसे संयोगसे किसी पदार्थका ममदा भाव जब वाष्पाकारमें परिवर्तनयोग होता है और जब नीचेसे वाष्प अर्थात् उद्गत होने लगता है, तब जो बाष्पोभाव होता है, उसका नाम उद्गम है। इसे हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं, किन्तु पूर्वमें उष्णोष्ण वर बहु देखनेमें नहीं पाता। ऊपर कहा जा चुका है कि, तरल पदार्थके वाष्पोभाषमें परिवर्तन होनेके लिए वर बहु समान ताप नहीं लगता मू-वास्तुका पचिया पच्य होनेसे पच्य ताप और पचिया होनेसे पचिया ताप समता है। यहाँ मू-वास्तुका पचिया नहीं है यहाँ अल और परलकोइव यदि किसी तरल पदार्थके लिए किन्तु तापकी अद्वार नहीं होती। एक ऊपर पूर्व पावकी बाहु निष्कायक यन्त्रमें एक वर समी मीतरी भागका शून्य वर अठनेसे वन अपने पाप कोलेने हो सकता है पर वन उत्तम नहीं होता वरन् योग्य होता रहता है। साधारणतया १०० ताप ज्ञानमें वन ज्ञानता है किन्तु एक एक पच मेंके ऊपर, यहाँ मू-वास्तुका पचिया पचियायत पच्य होता है, यहाँ ८ या ८१ में जो पानो उचरने समता है।

इसके सिवा तापके और भी अनेक फल हैं। ताप रासायनिक संयोग और वियोगका एक प्रधान उत्तेजक है। तड़ित् चुम्बकाकर्षणके सम्बन्धमें तापके फल पोंछे निरिधे जायेंगे।

तापके कारण जड़वस्तुओंकी अवस्थान्तर्गत—उत्तापसे कठिन द्रव्य द्रव होते हैं। काष्ठ, कागज और पथम प्रभृति द्रव्योंकी द्रव नहीं किया जा सकता। उष्ण करनेसे इनके समस्त उपादान पृथक् हो जाते हैं। वट्टनोंकी धारणा है कि अद्वाराटि कतिपय द्रव्य गलाये नहीं जा सकते। किन्तु यह सिद्धान्त युक्तियुक्त नहीं मालूम पड़ता। अद्वार कोमल अवस्थामें परिणत किया गया है; सम्भव है कि कालान्तरमें यह द्रवोद्भूत भी किया जा सकेगा। द्रव्यमात्र एक एक निट्टि परिमाणकी उष्णतामें द्रव होते हैं। ०° ग (अथवा ३२° फा० परिमाण) उष्णतामें बर्फ गल कर पानी हो जाता है। भूतलस्थ समो द्रव्यों पर वायुरागिका टवाव है। नागरपृष्ठकी वायुरागिका टवाव प्रायः ३० इञ्चके समान है। ३० इञ्च टवाव और ०° ग उष्णतासे बर्फ गल जाता है, किन्तु अधिक टवाव होनेसे समधिक उष्णताके बिना नहीं गलता।

द्रवमाण वस्तुमें कितना ही ताप क्यों न दिया जाय उसको उष्णता किमी तरह भी नहीं बढ़ती।

और भी देखनेमें आता है कि, द्रवमाण द्रव्य तथा उससे उत्पन्न द्रव्यकी उष्णता समान होती है। ०° ग, अथवा ३२° फा परिमित उष्ण होने पर बर्फमें कितना भी ताप क्यों न दिया जाय, उसके तापको वृद्धि नहीं होती। किन्तु इसी तापके प्रभावसे बर्फ द्रव हो जाता है। द्रवमाण बर्फसे जो जल उत्पन्न होता है, उसको भी उष्णता ०° ग अथवा ३२° फा होती है।

अतएव यह निश्चित है कि ०° ग बर्फको ०° ग जलमें परिणत करनेके लिए कुछ तेज अन्तर्हित होना है। यही अन्तर्हित तेज जलके अन्तर्गत अप्रत्यक्ष प्रच्छन्न या गूठ तेज कहलाता है। ८०° ग प्रमाण उष्ण एक सेर जलके माय ०° ग प्रमाण उष्ण एक सेर जल मिलानेसे ४०° ग प्रमाणका दो सेर जल प्रसृत होता है।

किन्तु ८०° प्रमाण उष्ण एक सेर जलमें ०° ग प्रमाण एक सेर तुपार-चूर्ण मिला देनेसे ०° ग प्रमाण उष्ण दो

सेर जल होता है। इस तरह निश्चय होता है कि ०° ग प्रमाण एक सेर बर्फ गल कर ०° ग प्रमाण एक सेर जल होनेमें जो तेज अन्तर्हित होता है, उससे द्वारा एक सेर जलको उष्णता ८०° अंश बढ़ाई जा सकती है। अन्यान्य कठिन द्रव्योंके द्रव होते समय भी ऐसा ही हुआ करता है। किन्तु समस्त द्रव द्रव्योंके अन्तर्गत अप्रत्यक्ष प्रच्छन्न तेजका परिमाण समान नहीं होता।

०° ग परिमाण उष्ण होने पर जिम्न प्रकार बर्फ गलकर उसका पानी हो जाता है, उसी तरह ०° परिमाण शीतल होनेसे पानी जम कर बर्फ हो जाता है। बर्फके द्रव होते समय जितना तेज अन्तर्हित होता है, जल जमते समय ठोक उतना ही तेज विनिर्गत होता है।

तात्पर्य यह है कि जितनी उष्णतासे कोई वस्तु द्रव होती है, ठोक उतनी ही उष्णतासे तदुत्पन्न द्रव द्रव्य पुनः धनोद्भूत होता है। और गन्तव्य समय जिम्न परिमाणमें तेज अन्तर्हित होता है जमते समय भी उतना ही तेज निर्गत होता है। इसीलिए शीतप्रधान देशोंमें जव दारुण शीतके प्रभावसे जलाशयादिका जल जम कर बर्फ होने लगता है, उस समय उस हिमसमय जलके अन्तर्गत छिपा गूठ तेज प्रकाशित हो कर दुरन्त शीतका पराक्रम कुछ खर्व कर देता है।

द्रवोद्भूत होनेसे द्रव्यादिके आयतनको वृद्धि होती है। १०० घन इञ्च गन्धकको गलानेसे वह १०५ घन इञ्च जाता है, किन्तु बर्फ द्रव होनेसे संकुचित एवं जल जमने पर प्रसारित होता है। अन्यान्य तमल द्रव्य जमने पर भारी होते हैं, किन्तु जल जम कर बर्फ होने पर हलका हो जाता है, इसीलिए वह जलमें तेरतो है। जल जमते समय विस्तृत होता है, इसीसे शीतप्रधान देशीय नद, नदी छद्द समुद्र आदिका जल जम कर बर्फ होने पर वह ऊपर तैरा करता है एवं निम्नमें ४०° ग प्रमाण उष्ण जल रहनेसे मत्स्यादि जलचर जीवगण जलके अभावसे मरते नहीं। जल जम कर जब बर्फ होता है, तब उसकी आयतन वृद्धि कारण प्रसारणशक्तिकी भी अत्यन्त जनक वृद्धि होती है। यदि किसी जलपूर्ण नाइकी शीतलका मुख बन्द करके किसी अतिशय शीतल पदार्थके भीतर कुछ क्षणके लिए रक्का जाय, तो

उभये समेकं प्रीतरात्रा जल बर्षाणि परिगतं चो जायया  
 एव बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा  
 प्रथमं चो उठेगा किं एव प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा  
 प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा  
 प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा जल बर्षाणि प्रीतरात्रा

पर्वतस्य ऊपर ओ वृष्टिका जल निरता है, उभय  
 कुक्षयं च विप्रादिभिः प्रविष्टं होता है। ये वृष्टि मोल द्वारा  
 जल बर्षाण्युपरि परिचलितं होता है तत्र प्रसारणके  
 कारण प्रसारणके विद्योय चो जाते हैं।

कठिन द्रव्य उत्पन्न होनेसे वाष्प होते हैं। जलान्न, खाद्य  
 प्रभृति जितने चो कठिन द्रव्योंको जैसे जलाया नहीं जा  
 सकता उसी प्रकार मिट्टी और लौहदिग्गुलिन प्रभृति कति  
 पय तरल द्रव्योंको भी वाष्पोय रूपमें परिचलित नहीं किया  
 जा सकता उत्पापसे कारण इनके उत्पादान पृथक्  
 पृथक् मिश्र प्रसारण में प्रयुक्त होते हैं। ऊपर पायटीन  
 ( पदार्थ ) प्रभृति कतिपय कठिन द्रव्य द्रव्य न हो कर  
 एक दम वाष्प चो जाते हैं। जलो वाष्पोय द्रव्य पश्चि  
 कांश बर होत और प्रकट होते हैं। ईंधन पायटीन  
 प्रभृति कुछ द्रव्योंका वाष्प बर्षा विद्युत् होता है। वाष्प  
 और वायुमें कोई विद्युत् प्रभेद नहीं है। वाष्पको वायु  
 द्यता में मिलित और वायुको व्यापारित चोता है।

जो पदार्थ व्यापारित तबल होने हैं, तबके परिचालने  
 को वायुमत् द्रव्य उत्पन्न होता है, उने वाष्प कहते हैं।  
 वायुकोय बन्धुओंको तरल वाष्प भा विद्युत्-व्यापक हैं।  
 उत्पत्ता और दबावके तात्पर्य मुझार वायुकोय द्रव्योंमें  
 वायुमत्-परिचालनेमा तात्पर्य है, वाष्प-समूहका भी  
 ठोक बेसा ही तात्पर्य दुपा करता है।

सर्वाधिक एव च य परिमाणमें जलको वृष्टि  
 होनेसे वायुकोय और वाष्पोय बन्धुका पायन १६,  
 वा ००१६६६ परिमाणमें बर्षित होता है, पचास १ जल  
 १६ या १ जल पुट जलो वाष्प का पापको उत्पत्ता यदि  
 १ य बर्षाई आय तो उभयका पायन २६, ०११ ००१६६६  
 जल १६ या बन्धु प्रमाण होगा। इन तरल २०२  
 च य प्रमाण तापको वृष्टि होनेसे ताप दुगुना हो  
 जायगा।

जिम तरल कठिन द्रव्योंके द्रव करनेमें समान उत्पाप  
 प्रयोग नहीं होता उसी तरल द्रव द्रव्योंके वाष्प करनेमें  
 भी समान उत्पापको पावश्यकता नहीं होती। मिश्र  
 मिश्र द्रव द्रव्य मिश्र मिश्र उत्पत्तासे वाष्पाकार कारण  
 करते हैं। सुराकार, जल, तापीनिक और पारा इन द्रव  
 द्रव्योंको वाष्पानेके लिये यथाक्रममें प्रारम्भोत्पत्ते २०१,  
 २१२ ११६ और ६६० च य परिमित दरम करनेका  
 वाच्य।

एक जलको कठिन बन्धु जिम तरल एक प्रसारको  
 उत्पत्तामें द्रव होती हैं उसी तरल एक जलको द्रव  
 बन्धु में समान परिमाणमें उत्पन्न होनेसे उत्पन्न भगती  
 हैं। जैसे—यदि किसी और सब भयार्थि १०० ग या  
 १२० या प्रमाण उत्पन्न होनेसे पानी धोनेमें भगता है।

एक सिद्धांत का युक्त है, कि भूतलस्य भयो पदाय  
 पर वायु शक्तिका दबाव है। उभ दबावका प्रतिफल  
 बिना किये द्रव द्रव्य जमी धोने नहीं सकते। वायुमत्  
 अब किसी द्रव द्रव्य सन्त वाष्पको प्रसारण-शक्ति वायु  
 शक्ति दबावमें समान होती है, तभी वह धोता है।

जब वायुशक्तिका दबाव १० इंच दारदके समान होता  
 है ईंधन जलो समय प्रारम्भोत्पत्ते २१२ च यमें जल  
 उत्पन्न उठेगा। दबावें वा वाष्प होनेसे पुटन-बिन्दुका  
 ( Boiling point ) भी वा वाष्प होता है।

पर्वतस्य ऊपर वायुशक्तिका दबाव परिचालन चय  
 होनेसे वहाँ परिचालन चय उत्पापने जल धोनाया जा  
 सकता है।

परीचाल द्वारा निरूपित दुपा है कि जितना उ वा  
 बढ़ा जायगा ततना चो प्रति ११० पुटमें स्प दमबिन्दु  
 प्रारम्भोत्पत्ते १ च य कम होता जायगा। एव भी को  
 उत्पत्ता तापकेका यको एक उपाय है।

वायुशक्तिप्रदान प्रकट प्रारम्भ-वाष्पके भोतर एक जल  
 पूर पाय दम कर वायु शक्ति देनेसे पायनियन जल  
 ०० या परिमित उत्पत्तामें भी होनेसे धोनेमें भगता है।  
 प्रकृता ऐसा कोई नियम नहीं कि जल होनेसे जल  
 चरभता है या वहजनेमें जल माय होता है।

इव द्रव्य जल धोनेमें भगते हैं, तो उभ दमता को उत्पन्न  
 को न किया जाय, किन्तु तरल भी उभका उत्पत्ता

वृद्धि नहीं होगी। और भी देखा जाता है कि द्रववाण कठिन द्रव्य और उनसे उत्पन्न द्रव द्रव्योंकी उष्णता जिस तरह विलक्षण अभिन्न है, खोलती हुए द्रव्य और उनसे उत्पन्न वाष्पकी उष्णता भी ठोक उभी तरह समान है। विशुद्ध जल २१२° फा उष्ण होनेसे उबल उठता है एवं एक बार खोल उठने पर भी जितना उष्माप दिया जाय, उसके द्वारा उष्णताकी कुक्क भी वृद्धि नहीं होती। और खोलते जलसे जो वाष्प उत्पन्न होता है उसको उष्णता भी ठोक २१२° फा रहती है। अतएव यही प्रतीत होता है कि कठिन द्रव्यके द्रव होते समय जिस तरह किञ्चित् परिमाणमें तेज अप्रत्यक्ष रहता है, उसी तरह द्रव द्रव्यके वाष्प होते समय भी तेजका कियदंश प्रच्छन्न रह जाता है। जिस परिमाणमें ताप देनेसे १ दण्डमें तुपारिडम जल खोल उठता है, उसी परिमाणमें फिर ५३ दण्ड काल उत्तम न होनेसे वह वाष्प नहीं होता, अर्थात् त्रिम जलकी ३२° फारनहोर्टसे ०१२° फा प्रमाण उष्ण करनेमें जितने तापका प्रयोग करना पड़ता है, २१२° फा प्रमाण उष्ण जलको वाष्पमें परिणत करनेके लिये उसको अपेक्षा ५४ गुणा अधिक ताप प्रयोग करनेकी आवश्यकता होती है। अतएव जलोय वाष्पके अप्रत्यक्ष गूढ तापका परिमाण प्रायः  $150^\circ + 5 \times 8 = 192^\circ$  फा हुआ। ०° श एक सेर जलके साथ १००° श एक सेर जल मिश्रित करनेसे ५०° श प्रमाण उष्ण दो सेर जल प्रस्तुत होता है किन्तु १००° श एक सेर जलोय वाष्पकी शीतल जलके मध्यस्थित किसी नलके द्वारा परिचालित कर १००° श एक सेर जल उत्पादन करनेसे इतना तेज निकलता है कि उसके द्वारा ५४ सेर जल १° शसे १००° तक उष्ण होता है। सुतरां जलोय वाष्पका अप्रत्यक्ष तेज परिमाण हुआ  $100 \times 5 \times 8 = 4000$  श या ५७२ फा।

और भी देखा जाता है कि जलके वाष्प होने पर जो तेज अन्तर्हित होता है, वही तेज जलोय वाष्पके घनोभूत हो कर जल होनेमें पुनः प्रकाशित होता है। जो द्रव्य जलमें द्रवीभूत हो कर रहते हैं, जलके वफ या वाष्प होने पर उन सबको नियुक्ति ही जाती है। वफके द्रव या वाष्पके घनोभूत होनेसे जो जल पैदा होता है, वह इसीलिये विशुद्ध है। वृष्टिका

जल भी इसी कारणसे शुद्ध है। अधिकांश विशुद्ध जल प्रस्तुत करनेके लिये जलाशयटिका जल ले कर उसे उष्माप द्वारा वाष्प बनाते हैं और उस वाष्पको घनोभूत करके पुनः जल बनाया जाना है। इस तरह जो जल तैयार होता है, उसे तापका जल कहते हैं।

द्रव द्रव्यके ऊपरी भागमें सर्वदा ही वाष्प उत्पन्न हुआ करता है। यह सभी जानते हैं कि, नदी ऊद सरोवरादिके पृष्ठदेशसे नित्य ही वाष्प उत्पन्न होता है। दानकी न्यूनाधिकतासे वायुनिःसरणमें भी न्यूनाधिक्य हुआ करता है। जलादिके ऊपर वाष्प राशिका दबाव जितना श्लेष होता है, उतना ही वाष्प निःसरण अधिक हुआ करता है। वायु-निष्काशन-यन्त्रमें किञ्चित् इधर नामक तरल द्रव्य रख कर वायु-निष्काशन करनेसे वाष्प इतनी जोरमें निकलने लगता है कि फिर वह शीघ्र ही उबल उठता है। फलतः वाष्प परिणामशैल द्रव द्रव्यमात्र ही वायुविज्ञान म्थलमें पहुँचते ही उसी समय वाष्परूपमें परिणत हो जाता है।

यूडिकलोन, इधर आदि शीघ्र वाष्प-परिणामशैल वस्तुओंके स्थानसे शरीर शीतल होता है; इसका कारण यही है कि ये वस्तुएँ वाष्प होते समय शरीरसे तेज ग्रहण करती हैं। वृष्टिके बाद वायु शीतल हो जाती है, क्योंकि वर्षाके समस्त जलकण भूमि और वायुसे तेज ले कर वाष्प होते हैं। शोषणतुमें सुराहीमें जल रखनेसे वह साधारण जलकी अपेक्षा अधिक शीतल हो जाता है। इसका कारण यही है कि जलकण सुराहीके किट्टीमें प्रवेश करते हैं और बाहर निकल कर वाष्परूपमें परिणत होते समय मोतरके जलसे तेज खींच लेते हैं। इसी लिए जल शीतल हो जाता है। सुराहीका जल हवामें रखनेसे और भी अधिक शीतल होता है। धनाब्ध व्यक्तियोंके मकानोंमें पंखा और पानीसे भोगी हुई खमखसके द्वारा जो तरावट को जाते हैं, उसका कारण वाष्प होते समय जल-विन्दुओं द्वारा तेज ग्रहण किया जाना ही है।

ताप वंचालन—परिचालन, परिवाहन और विकिरण तीन प्रकारसे एक स्थानका ताप दूसरे स्थानमें लाया जा सकता है। इस बातकी तो सभी जानते हैं कि लोहेके उण्डिका एक किनारा आगमें रखनेसे क्रमशः दूसरा किनारा भी उष्ण हो उठता है।





चाहिए। यह परिवहन ही ममत्त वायु प्रवाहोंका एक प्रधान कारण है। वाणिज्य-वायु, मौसमी वायु आदि सभी वायुप्रवाह इसी तरह उत्पन्न होते हैं।

ताप-विकिरण—यदि किसी धातुद्रव्यके ऊपर कोई उच्च अथवा पिण्ड रखा जाय, तो उसके तापका कुछ अंश आधार-द्रव्य द्वारा परिचालित होता है, कुछ अंश चारों ओर स्थित वायु द्वारा प्रवाहित होता है तथा अवशिष्ट अंश किरणरूपमें चारों ओर निकल कर पार्श्ववर्ती द्रव्यादि द्वारा परिगृहीत होता है। इस कारण वह अथवा पिण्ड क्रमशः शीतल हो कर चारों ओरकी वायुके समान उष्ण हो जाता है। जिस क्रियाके द्वारा द्रव्यादिका तेज किरणाकारमें चतुर्दिक् विकीर्ण होता है, उसे विकिरण कह सकते हैं। अग्निके मामने खड़े होनेसे उसकी तेजस किरणोंके शरीर पर पड़ने तथा शरीर द्वारा परिशीलित होनेसे उष्णताकी उपलब्धि होती है। सूर्यका तेज किरणके रूपमें आकर पृथ्वी पर पतित होता है, परिचालित या परिवाहित हो कर नहीं आता।

सूर्यको किरणें वायुरागिमें ही कर पृथिवी पर पतित होती हैं, किन्तु उनके द्वारा वायुरागिकी उष्णताकी वृद्धि वैसा नहीं होती। पृथ्वीके ऊपरसे तेज प्रतिफलित परिचालित और परिवाहित हो कर उसे उष्ण करता है, इसीलिए वायुमण्डलका अधोदेश मात्र ही उष्ण है, उद्भवे प्रदेश अतिशय शीतल है। सब वस्तुओंकी विकिरणशक्ति समान नहीं होती। कालिखको विकिरणशक्ति सबसे अधिक है। इसीलिए किसी द्रव्यके ऊपरी भागमें कालिख पोत देनेसे उसकी विकिरणशक्ति अधिक प्रबल हो जाती है। परीक्षा द्वारा निरूपित हुआ है कि जो द्रव्य जिस परिमाणमें तेज परिशीलण करता है उसकी विकिरणशक्ति भी ठीक उसी परिमाणमें प्रबल होती है। तेजस किरणें उज्ज्वल और चिकने धातु द्रव्यके ऊपर पतित होती ही प्रतिफलित हो जाती हैं। इसी कारण उनके द्वारा तेज परिशीलित नहीं होता, सुतरां उनको विकीरणशक्ति भी नितान्त शून्य होती है। ऐसा नहीं है कि अतिशय उत्तम होने पर द्रव्योंसे तेज विकीर्ण नहीं होता। गरम हों या ठण्डे, ममस्त द्रव्य, सदैव तेज विकीर्ण करते हैं। वर्षा जो इतना शीतल है, वह यदि

ठोस पारे या ऐसा ही किसी वर्फमें ठण्डे वस्तुमें निकट रख दिया जाय तो उसमें भी इतना तेज निकलता है कि उस हिममय पारेको उन्नत की वृद्धि होती है। जो वस्तु नितना तेज विशीर्ण करती है उसके ऊपर अन्यान्य पदार्थोंमें यदि ठाक उसी परिमाणका तेज विकीर्ण हो कर पतित हो तो उसकी उन्नतामें किसी प्रकारका परिवर्तन घटित नहीं होता, इसके अन्याय होनेमें ही न्यूनत्व ही होता है। ममस्त तम पदार्थ तेज विकिरण करनेके बाद शीतल हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि चारों ओरके पदार्थोंमें उत्तम द्रव्य जिस परिमाणमें तेजको किरणें पाते हैं, उसको अपेक्षा अधिक परिमाणमें तेज उनके द्वारा चारों ओर विकिरण होता है।

यहां पर विवेचना कर देखनेमें प्रतीत होगा कि केवल उष्ण पदार्थोंके स्पर्शमें ही द्रव्य उत्तम नहीं होते, वरन् गरम वस्तुओंमें दूर रखे जाने पर भी ठण्डे पदार्थ गरम हो जाते हैं, गरम पदार्थोंके तेज, परिवाहन करनेमें पदार्थ गरम हो जाते हैं। गरम पदार्थोंके तेजका परिचालन या परिवाहन करनेमें पदार्थ जिस तरह उष्ण हो जाते हैं, उनके द्वारा निजिम्स तेजस किरणका शोषण करके भी उसी तरह उष्ण हो सकते हैं। शीतल पदार्थोंके स्पर्शमें उष्ण द्रव्य जिस तरह शीतल होते हैं तेज-विकिरण द्वारा भी वैसाही होता है।

यह विकिरणशक्ति शीतको उत्पत्तिका प्रधान कारण है। रात्रिमें धरातलकी समस्त वस्तुओंके वायुमण्डलको अपेक्षा अधिक शीतल होनेसे वायुके भीतरका कुछ अंश घनोभूत हो कर गिशिर बिन्दुओंके रूपमें पदार्थोंके ऊपरी भागमें विखर जाता है। वाष्पोय वस्तुओंके मध्यमें अब तक जो कुछ लिखा गया है, विवेचना कर देखनेसे उसमें जाना जायगा कि दिनमें सूर्य-किरणों द्वारा धरापृष्ठके उत्तम हो जानेसे वायुमें जितना वाष्प रह सकता है, रात्रिकालमें तेज विकीर्ण कर पृथ्वीके अधिक शीतल हो जाने पर उसके ऊपरकी वायुमें उतना ही वाष्प रहे, यह किसी प्रकार सम्भव नहीं। उष्णताका जितना ही कास होता है, वायुमण्डलमें उतना ही कम वाष्प रह सकता है, अर्थात् उतने ही अल्प वाष्प द्वारा वायुरागि

परिविक्त होती है। सुतल वायु दिनमें जो भाग रहती है, रातमें शीतल होनेसे यदि वह परिविक्त हो उठे तो शीतल द्रव्यके मध्यमांशके जो उसमें मोतरके बापका कुछ पत्र धनोन्मुक्त हो कर धोमके रूपमें परिविक्त हो जाता है। वायुमें जितने पचिन्न परिमाणमें बाष्प रहता है उतने ही पक्ष्य परिमाणमें शीतल होती ही धोम उत्पन्न होती है। यही कारण है कि घोषकालमें दिनमें वायुमण्डल पच्यमान उत्पन्न होता है। दिनमें रात्रिमें उतना ठण्डा नहीं होता इसीलिए वायुका बाष्प घासत्र रूपमें परिविक्त नहीं होता।

जिन वस्तुओंको विचित्रण गति पचिन्न प्रथम होती है, वे सब रात्रिकालमें पचिन्न शीतल हो जाती हैं। इसी कारण उन सब वस्तुओंमें पचिन्न धोम एकत्र होता है। इसी वायुओंको विचित्रण गति पच्यमान पक्ष्य है इसीलिए उनमें द्वितीय धोम नहीं उदरता किन्तु मिट्टी, काँच, शानू, पिट्टोले पत्तों जल प्रभृति द्रव्योंको विचित्रण-गति पचिन्न होनेसे कारण उनका ऊपर प्रचुर परिमाणमें धोम सञ्चित होता है।

घासत्र उदरितकारण—समस्त अन्न द्रव्योंके परस्पर संश्लेषणमें ताप उत्पन्न होता है। प्राचीन कालमें घासत्र लोग घासत्रि धूप का द्वारा पचिन्न उत्पन्न करके ही पच्यमान भाग हो कार्ठीको घासत्रमें विद्यमान कर पाया जाता है। विनयेने दिवाकालमें जल उठती है। उद्यमक पक्ष्य धोम उदरितमें परस्पर जोड़ करकेने घासत्रको विनयारियां निरूपणों हैं। यहाँ घासत्रि उदरता शीतल है। तथापि धूप का कारणसे उत्पन्न हो जाता है।

धंधोपन—जिस तरह तापसे निश्चल जानेसे बहुत सिद्ध हो जाती है उसी तरह बहुत निश्चलने पर ताप निश्चलता है। महीचलने पच्यमानका जितना ही काम होता उदरताही भी उतनी ही उदरि होगी। बारि-कटिल पच्यमान द्वारा पचिन्न ठण्डा बहुत उदर दबाव जालनेसे वह पाकुचित धोम उत्पन्न होता है। जल धोम तेज अकुचित होनेसे वरम होने है।

काषाण—यह सभी जालने है कि घासत्र-पक्ष्य दोनोंमें समस्त अन्न द्रव्य उत्पन्न होते हैं। निहारके जल भीमिका एक द्रव्यका एक एक धोमको जोड़ करकेने भीमिके

परिमाणु विकल्पित हो उर उत्पन्न हो जाती है। इसी समय धोममें जलनका उत्पन्न हो जानेसे किसी जलिन पक्ष्य या पतित जाने पर भी घास उत्पन्न होती है। पतनमान वस्तुमें धूतन पर पतित होनेसे उसको हवा मान गतिसे एक जाने पर पक्ष्यमान घासविक गति या ताप उत्पन्न होता है।

पटाव गालय विद्वान्नि परोक्षाने द्वारा यह प्रमाणित किया है कि कीर्ति एक मीर भारी पटाव १९८२ पुत्रने पच्यमान १९८२ मीर भारी पटावके एक टुकड़ेके निरन्तरमें जो धोम प्राय होता है, उससे तितोहित जाने पर उतना ताप उत्पन्न होता है कि समके द्वारा धोम उत्पन्नो उत्पत्ता यथासिद्ध तापमानको १ बर्धाई या मज्जती है।

रागाविक संश्लेषण—जहाँ पोटिने जो पचिन्न मात्र होती है उसमें जलनके भी पटावके साथ वायुमें रहने वाली पचिन्नलका रागाविक संश्लेषण हो इसका कारण है। टोपक पटिने जो प्रकाश निश्चलता है वह भी तेज पोटिने पक्ष्यको सञ्चित वायुकी पचिन्नलके संश्लेषण होनेसे उत्पन्न होता है। इस जो घासको लपट देखते हैं वह संश्लेषण पच्यमान वरम वायु है। वायु या वायव्योप द्रव्य पचिन्न उत्पन्न होनेसे पचिन्न मिथ्याके समान ही निश्चलने हैं।

उदिर—विजलाने भी ताप उत्पन्न होता है। वयको पचिन्न भी इसी विजलको घासका कपासत्र मात्र है।

गौरव काउका गौर भी तराका एक उत्पत्ति-जाल है। हमारे गौरकी उदरता धारा पर ही वायुकी समान नहीं है। तथा परर पच्यमान वायुका मध्यम पक्ष्य धोम का तुवारमिन्ड सुनिश्चल गिम्बर निश्चल जलें वरम, मध जलद मनुष्य गौरकी उदरता कारेन शीटके ८८ पत्र कांभी।

धूपके—काल सुनी पच्यमान निश्चली पचिन्न धोम धरनाके लपटी उदरता देव कर विजित जाल है कि घमाका भीतर भाग पचिन्नप पच्यमाने परिपूक है। पचिन्न उदरतापने ताप एक ही गीम पुत्र उत्पन्नो मिहा रात्रिका पचिन्न दिनमें पचिन्न उत्पन्न हो जाती है। धोम कालमें शीतकालको पचिन्न लुज पचिन्न दूर भाषे तत्र पच्यमान विजित होती है। जो जो ५० ०० वा १००

फुटमें अधिक नीचे सूर्यरश्मिका प्रभाव अनुभव नहीं होता। फ्रान्स देशको राजधानी पेरिस नगरके मान-मन्दिरके ५८ फुट नीचे एक तापमानग्रन्थ लगा है। जाड़ा गर्मी, रात, दिन कभी भी उसके भोतरके पारेका घटाव उतार नहीं देखा जाता। भूपृष्ठके सभी स्थानोंमें कुछ दूर नीचे एक ऐसा स्थान है जहाँ रात, दिन, जाड़ा गर्मी, कभी भी उष्णतामें घटतो वढतो नहीं होता। उम स्थलके उर्ध्व भागमें नीर और अधोभागमें पार्थिव तेजका प्रादुर्भाव देखा जाता है। इसे चिर-समोष्णस्थल कहते हैं, इस चिर-समोष्णस्थलको उष्णता मत्र जगह एकही नहीं है। मानचित्रमें समोष्णरेखामें जो उष्णता है, उसके निम्नक्ष्व चिर-समोष्णस्थलमें भी वही उष्णता देखी जाती है। चिर-समोष्णस्थलसे जितना नीचे जाया जाय, उतने ही शीतलन प्रति ६० फुटमें १०° फारनहीटके हिमावसे उष्णताकी हृदि होगी। इसीमें जाना जाता है कि पृथ्वीको मदहसे कुछ नीचे तापका इतना प्रादुर्भाव है कि वहाँ पर ले जाने पर लोहा गल कर पानोकी तरह हो सकता है।

सूर्य—जिन सब तैजोंका अब तक वर्णन किया है, सोर तेजके सामने ये नितान्त तुच्छ ज्ञात होते हैं। सूर्य ही तापका आदि कारण है। उनीमें हम ताप और प्रकाश पाते हैं। किन्तु सूर्यमें ताप और प्रकाश कहांसे पाया, यह हम नहीं जानते। ताप और प्रकाश मन्वभी जितने व्यापार हैं, सब सूर्य हीने सम्पादित होते हैं। दीप-शिखा और ईंधनकी आगमें भी सूर्य ही प्रकाशमान है। दावाग्नि, वज्राग्नि और विजलकी अग्नि इन सबमें भगवान् भास्कर ही विराजमान हैं। उन्होंने ही सागर की जलका शरीर और वायुको वाष्पीय आकार प्रदान किया है। वे ही समुद्रके जलको वाष्प रूपमें परिणत कर मेघ उत्पन्न करते हैं। उन्होंने नवपद्मवोंसे तरुलताओंको सुशोभित किया है। वे ही तेजके रूपमें प्रकट हो कर पुनः तेज-रूपमें अन्तर्धान होते हैं। उन्हींके आगमन और गमनकालमें समस्त प्राकृतिक व्यापार सम्पादित होते हैं।

अनुमितियाद्य ताप—जो ताप स्वयंशक्ति या तापमान वन्व किसेसे लक्षित नहीं होता और उसकी सत्ताको उपलब्धि होती है, उधीका नाम गूढ़ वा अनुमितियाद्य

ताप है। तापसे अनेक पदार्थ गल जाते हैं। यह देखा जाता है जब तक पदार्थोंके गमनका कार्य सम्पूर्ण रूपसे समाप्त नहीं हो जाता, तब तक उनका तापक्रम स्थिर और समभावमें रहता है। ताप दिया जाता है किन्तु तापमानमें उसका कोई लक्षण हो नहीं देखा जाता, इसका कारण क्या है? समस्त पदार्थ गमते समय कुछ ताप शोषण करते हैं, किन्तु वह ताप जाता कहां है। और वह लक्षित हो क्या नहीं होता? वह ताप उम पदार्थ की तरल अवस्थामें रखनेमें पर्यवसित रह जाता है। जब पदार्थ तरल हो जाता है, तो उम तापको उम कार्यके करनेकी आवश्यकता नहीं रहती। सुतरां तापमान प्रत्यक्ष किया जा सकता है। इसको पहली अवस्थामें अर्थात् पदार्थके तरल होते समय ताप अनलक्षित रहता है, किन्तु यदि वह न होता तो उम पदार्थको तरल अवस्थामें रखनेमें और कौन समर्थ हो? इस प्रकार अनुमान करनेमें उसकी सत्ताको उपलब्धि होनी है, जान कर उसे अनुमितियाद्य ताप कहा जाता है। यह और भी स्पष्ट किया जा सकता है। देखा जाता है कि यदि आध सेर जल जिसका तापक्रम ८०° और आध सेर जल जिसका तापक्रम ०° है, उन्हें एकत्रित किया जाय तो इनके मिश्रणका तापक्रम ४०° होता है। किन्तु यदि आधसेर चूर्णित वर्फ के साथ जिसका तापक्रम ०° है और आधसेर जल जिसका तापक्रम ८०° ही, मिलाया जाय तो वर्फ गल जायगा। इस मिश्रणसे जो एकसेर जल प्रसृत होगा, उसका तापक्रम ०° हो होगा। यहां ०° का आधसेर वर्फ अपने तापक्रमसे अर्थात् ०° से कुछ भी अधिक नहीं बढा, तब वह ८०° ताप गया कहां? वह वर्फ के जल बनानेमें लग गया। सुतरां समान परिमाणके वर्फ के समान तापक्रमको जलमें परिणत करनेके लिए जितना ताप आवश्यक होता है, वह उतने ही परिमाण जलको ८०° तक उष्ण कर देता है। तापका यह परिमाण गूढ़ या अनुमितियाद्य ताप कहलाता है। वर्फ के गलते समय जितना ताप लगता है उतना ही अधिक समय उसे गलानेमें लगता है क्योंकि जब तक वर्फसे तापका वह परिमाण बाहर न निकल जायगा तब तक वह जम नहीं सकता।

वायुद्विक ताप—एक ही तापक्रम के दो विभिन्न पदार्थों को एक ही पानी समान दूरी पर रख, एक मात्र एक ही धारणा प्रकृत ताप दो तो उन दोनों पदार्थों के तापक्रम में अंतर देखा जायगा। पारद घोर अन्न, इसी तरह रखने से देखेंगे कि अन्न को घपिया पारद प धर उन्नत हो जाता है।

पारेको • तापक्रम के किसी निर्दिष्ट तापक्रम तक उन्नति के लिए जितना ताप समता है उतनेसे नहीं होया; पर्याप्त पाप घोर पानो को समान तापक्रम तक उन्नत करने में पारेको घपिया अन्न के लिये अधिक ताप आवश्यक होना। इसी तरह यदि समान परिमाण का पाप घोर पानो १०० से शीतल करना शुद्ध किया जाय तो पारेके बराबर शीतल होने में पानोको अधिक समय लगीता। शीत इसी तरह अन्न पारदके समान उन्नत होने में जितना अधिक ताप लेगा उतने बराबर शीतल होने में कतना ही अधिक ताप ल्याम भी देना।

जब एक तापक्रम के एक पदार्थ के साथ दूसरे पदार्थ का मिश्रण किया जाय घोर दोनोंका परिमाण एक ही हो, तो उनसे तापक्रम में विभिन्न अंतर पड़ जाता है। यदि १०० तापक्रम का पाचघेर पारद • तापक्रम के पाचघेर पानो में मिश्रण जाय तो मिश्रण का तापक्रम प्रयोग ३ होना पचात् पारदका तापक्रम ८० तक ही कर पानोका तापक्रम शून्य ३ बढ़ेगा। सुतरां बराबर तोनके पानी घोर पारेको बराबर तापक्रम तक उठाने में पानोके लिए पारेको घपिया २२ गुणा ताप अधिक प्रयोग करना पड़ेगा।

इसो तरह यदि पन्थाय्य वस्तुओंको अन्तरे साथ तुलना की जाय तो सब वस्तुओंमें ही तापक्रमको एक विधमता अचित होमी। किसी पदार्थके तापक्रमको ० से १ तक बढ़ाने में बड़ पदार्थ जितना ताप शोषण करेगा घोर उन्को अन्तरेसे उतने ही अन्नको उन्को तापक्रम में आनेके लिए अन्न को ताप शोषण करेगा उन विभिन्न तापोंको तुलना करनेमें जो जाय पायया बड़े उस पदार्थका घापिचिक ताप है। पचात् मोसिका घापिचिक ताप आनेके लिए समान परिमाणका अन्न घोर कोसा सी, उस मोसिको • से १ तापक्रम में आनेके

निये जितना ताप आवश्यक होता है, उस तापसे अन्नका तापक्रम जितना बढ़ता है, उस तापसे अन्नका • • २१४ तापक्रम होगा। सुतरां मोसिका घापिचिक ताप तुलनामें • • २१४ गुना। धारा सेर अन्नका तापक्रम • से १ पदार्थ बढ़ाने में जितना ताप आवश्यक होता है, उन्से घे आनेके लोग तापाङ्क (Thermal unit) कहते हैं। यही घापिचिक तापका माप है।

शेस घोर तन्म पदार्थोंका घापिचिक ताप आनेके लिए तोन प्रकृते उपाय आनेमें आय आते हैं—बर्फका सतन मिश्रण घोर शीतलकोकरण। पन्तिम प्रकाली समयके द्वारा आना जाता है, पचात् किसी एक विभिन्न तापमें पा कर पदार्थमें शीतल होनेमें जितना समय लगता है उसी समयको घट-बढ़के अनुसार विभिन्न पदार्थके घापिचिक ताप का निरूपण किया जाता है।

पाचघेर वर्ष गणनाके लिए ८० तापाङ्कको अङ्कगत होते हैं। यदि किसी पदार्थका कोई एक निर्दिष्ट तापक्रम, मान लो १०० में आकर एकटम तुपारके अघर रकता जाय तो देखा जायगा कि बड़ शीतल हो कर १०० में • के तापक्रम में आनेमें कुछ वर्ष लगना कर पानो पना देता है। उस पानोका वजन घोर उस पदार्थका वजन उच्छा होति होति जितना तापाङ्क नीचे गिर पड़ेगा, उसको संख्या टैम कर उन पदार्थके घापिचिक तापका निरूपण महज ही किया जा सकता है। इन्से महजहोमें आनेके लिए सुप्रसिद्ध विद्वान् लाप लाने तापमिति (Calorimeter) नामक एक यन्त्र प्रस्तुत किया है। इन यन्त्रमें वायुके शीतल बलन एकके अंतर एक लगी रहते हैं। प्रथम दितीयके बीचको अन्तरे वर्षने भर दो जाता है घोर मोघरे बलनके शीतर जिन पदार्थका घापिचिक ताप आना होता है, उन्से रकता जाता है। प्रत्येक अन्तरे में उन्नत लगा दिया जाता है। प्रथम घोर द्वितीय बलनके बीचको अन्तरे में जो अन्तरे रहता है, बड़ द्वितीय घोर त्तोय बलनके पन्टरे अन्तरे वर्षके साथ वाचरो तापका मन्थन चलना कर देता है, यहाँ पर उन्नत मोघरे बलनका ही ताप पड़ेच नकता है घोर किसी तापसे बड़ा पड़ करनेका शकता नहीं; सुतरां उन तापसे बरच गन कर जितना अन्न होमा उन्से अन्न द्वारा कोमलपूर्वक निदान कर तोन

डालनेसे ही आपेक्षिक ताप निकाला जा सकता है।

ताप-विषयक निबन्ध एक तौर पर ग्रेप ही गया। विज्ञानवा यज्ञ भाग अत्यन्त विशद है। ताप, तडित् और प्रकाश इनके द्वारा दिनोदिन कितने आविष्कार होते हैं, उनका वर्णन दुःसाध्य है। इसी तापमें मैत्र, वर्षा, आधो, ओस और वर्षाको उत्पत्ति है।

तापक ( स० पु० ) तापयतीति तप-ण्चिच ग्व ल् । १ ताप कारक, ताप उत्पन्न करनेवाला । २ च्चर. दुग्धार । ३ रजोगुण । एकमात्र रजोगुण ही तापका प्रतिकारण है। ताप या दुःख ही रजोगुणका घर्म है।

दुग्ध और रजोगुण देवे।

तापतित्री ( छि० स्त्री० ) च्चरयुक्त ग्रीहा-रोग, पिनछो ददनेकी बीमारी।

तापती ( स० स्त्री० ) १ सूर्यकी कन्या तापी। तापी देवी। २ एक नदी। यह मातपुरा पहाडसे निकल कर पश्चिम और प्रवाहित हो खंभातको खाड़ीमें जा मिना है।

तापत्व ( स० पु० स्त्री० ) तपत्याः स्य कन्यायाः अपत्यं चतियत्वात् स्य । तपतीके वंशज कुरु।

तपती और तापी देखो।

तापत्रय ( स० स्त्री० ) तापानां त्रयः, ६ तत् । त्रिविध दुःख, तीन प्रकारका ताप, जैसे—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापदुःख ( स० स्त्री० ) तापरूपं दुःखं । दुःखभेद । पातञ्जलदर्शनमें इस दुःखका विषय इस प्रकार लिखा है

कर्मके पुण्यापुण्यके अनुसार सुख और दुःख हुआ करता है। पुण्यकर्मके फलसे उल्लस्य जाति, चिरायु और विषयभोगादि फल सुखप्रद होते हैं तथा पापकर्मके प्रभावसे परितापादि दुःख भोग रूप फल मिलता है। अतएव सुख और दुःखभोग कर्मफलानुसार हुआ करता है। जन साधारण उक्त दो प्रकारके फल भोग करते हैं, किन्तु योगिनस्य सुख-दुःखादि भोगरूप सभी कर्मफलोंनेको दुःख मानते हैं। क्लेशादिका ज्ञान हो जानेसे जिन्हें विवेक उत्पन्न हो गया है, वे भोग साधक सभी द्रव्योंको विषयक सुखादुःखके जैसा प्रतिकूल समझते हैं। योगिगण दुःखके लेशमात्रसे ही उद्विग्न हो जाते हैं। जिस तरह कोमलसे कोमल जनके डोरके स्पर्शसे आँखोंकी

मद्धतो पीड़ा होती है, उसी तरह अल्प दुःखके अनुभवमें भी विवेकीकी अत्यन्त कष्ट मालूम पड़ता है; क्योंकि सभी विषयोंका उपभोग करनेसे परिणाममें संस्कार-वशतः दुःख भुगतना पड़ता है। मनुष्य जितना विषय भोग करता है, उतने भोग अधिक भोग-मालमा बढ़ता है। किन्तु विषयभोगके समय किसी विषयके नहीं मिलने पर ही दुःख होता है, उसे कोई परिहार नहीं कर सकता; वरन् दुःखान्तर उपस्थित हुआ करता है। सुतरां विषयभोगमें कुछ भोग सुखको सम्भावना नहीं है। सुखसाधक सामग्रोंके उपस्थित होने पर उसके विरोधोंके प्रति हेष उत्पन्न होता है और सुखानुभवके समय भोग तापरूप दुःख पहुंचता है। उस समय तो सुख मिलता है और जब अनभिमत द्रव्य उपस्थित होता है, तब दुःख हुआ करता है। इस प्रकार पुनःपुनः सुख और दुःखकी उत्पत्ति होती है। अतएव सभीको दुःखमय समझ कर विवेकशाली मुनि लोग विषयभोगादिका परित्याग करते हैं। सुखानुभवके समय भोग तापदुःख उपस्थित होता है, क्योंकि सुखसाधक सामग्रोंके उपस्थित होने पर भोग उसके विरोधोंके प्रति हेष रहता है। अतः ताप-दुःख, संस्कार दुःख और परिणाम दुःख इन तीन प्रकारके दुःखों द्वारा मत्व, रज और तम इन तीन गुणको हतिका स्वरूप देखा जाता है। अतएव किसी प्रकारका विषयभोग क्यों न हो, उससे दुःखके सिवा सुखको सम्भावना नहीं है। विशेष विवरण दुःखमें देते।

तापन ( स० स्त्री० ) तप णिच् भावे ल्युट् । १ तापकरण। (पु०) कर्त्तरि ल्यु, २ सूर्य। ३ कामदेवके पांच वायुसिंसे एक वाण। ४ सूर्यकान्त मणि। ५ अर्कहृत्, मटार। ६ भानद्वयन्त, ठील नामका राजा। (त्रि०) ७ तापक, ताप देनेवाला। ( स्त्री० ) ८ नरकविशेष, एक नरकका नाम। ९ तन्त्रमें एक प्रकारका प्रयोग। इसमें शत्रुको पीड़ा होती है।

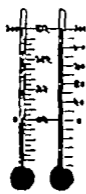
तापना ( छि० स्त्री० ) १ अग्निकी गरमीसे अपनेकी गरम करना। २ शरीर गरम करनेके लिये जलाना, फूंकना। ३ नष्ट करना, बरबाद करना।

तापनी ( स० स्त्री० ) १ उपनिषद्भेद, एक उपनिषद्का नाम। २ स्वर्णमय, वह जो सोनेका बना हो। स्वर्णसा

विचार। यह १ निष्क परिमाण सुवर्ण ( सि० )  
 ३ तापयोग्य सरमजोनेके कारिका ।

तापमान-यन्त्र—यन्त्रविधि एक यन्त्र जिसे थर्मोमीट्र ( Thermometer ) कहते हैं । इस यन्त्रके द्वारा उष्णताका निरूपण किया जाता है । उष्णता नाम तापमान कहते हैं । साधारणतः जिस तापमानका व्यवहार होता है, वह कन्ट्र स मुक्त जेवन एक कारिका होती है, जिसके कन्ट्र थोर नलका कुछ माग पारदसे भरा रहता है । उष्णताको ज्ञासत्रुहि जोनेके कारण यन्त्रके मोतरका पाग स कुचित थोर बिन्दुत रूप लकरता है । द्रवमान तुवार या हिमत्रुहि लोकेने पाग जिस पद्व तक जोके मिर जाता है, उसे द्रवभाण्ड कहते हैं थोर लोकेने द्रव पागेमें पयवा लगेमे निखसे मापमें डामनेसे जिस पद्व तक पाग चढ़ जाता ५ उसे फुटमाह (Boiling point) कहते हैं ।

— इन दो पदोंके बीचको प्रगहको कोरि १८ , कोरि १०० थोर कोरि ८० के बराबर भाग कर उष्णताके थ य-विज्ञोको चिह्नित करते हैं ।



इन्में जूमे प्रथमोक्त तापमान प्रचलित है । फारन होट नामक एक खोजनदार विद्वान्ने इनका आविष्कार किया था, इमीजिये यह फारनहोटेका तापमान कह-जाता है । फारनहोटेका द्रवभाण्ड १२ फुटमाह २१२, थोर इन दोनों पदोंके मोतरका खान १८० समान थ गोमें विभक्त है । द्रवभाण्डके १२ थ य गोके शून्य है ।

प्रायः देशमें हमरो तरफका तापमान प्रचलित है । हमका द्रवभाण्ड ० थोर फुटमाह १०० तथा इन दो पदोंके बीचका खान १०० सम न थ गोमें विभक्त है ।

तोमरी तरफका तापमान इनरोज्यमें प्रचलित है । रिठमर नामक एक खोजने हमका पदमे पदमे प्रचार किया इसका द्रवभाण्ड ० थोर फुटमाह ८० है थोर इन दो पदोंके बीचका खान ८० सम मागेमें विभक्त है । पतएव टोका जाता है कि जिस उष्णताके कारण हिम-जन लोकेने मयता है उसोके १८०, १०० थववा ८० नमामोके एक भागमे प्रत्येक खण्डको उष्णताका परि-मात्र प्रकाशित होना है ।

जिसयक्त जितना गरम जोनेके लखने समता है उतना हो गरम जोनेके फारनहोटे, यताधिक थोर रिठमर इन तोनों तापमान-यन्त्रोंमें पाग यथाक्रम—१२, ० थोर ० से २१२, १०० थोर ८० बिन्दु तक उठेगा । उष्णताके थ य लोकेने समय स ख्याके दक्षिण थोर थ यके तनिक खवर एक छोटा शून्य टोत है थोर यताधिक फारनहोटे या रिठमर जिस प्रभावोके थ य थीं उष्णके नामका प्रथम पथार निखा जाता है ।

यथा—२० य, ६० या १२ रि; यथात् यताधिकके २०, फारनहोटेके ६० थोर रिठमरके १२ थ य । शून्यके नोकेका कोरि थ य निखना जो लोकेने पामे शून्य थिन्न टोते है । यथा—१३ य; यथात् यताधिक ताप मानके शून्यके १३ थ य थोके ।

तापमानके विषयमें विविधरूपके निखनेके पदसे ताप का एक प्रधान गुण लखेन करणा बहुत जरूरी है । तापके उक्त गुणका नाम प्रसारण (Expansion) है । तापके लगेनेमे समस्त वस्तुएँ प्रसारित होतो हैं । वस्तुओंके परमाणु किलम जोनेसे बहुतका प्रसरण होता है । लन, तरन थोर वाष्पीक से तोनों पदार्थ तापके इन गुणके बगमें हैं जिसमें वायु, सवने पथिक तरन लगेको पपीका लम थोर लन सवको पपीका अत्य मयवर्तो है । द्रव तरन पदार्थ है ; किमो एक कड़ाजोमें द्रव रउ कर उष्णप र्दनेमे बह लजन लकरता है ।

खड़ाको लन पदार्थ है सुतराँ उष्णप लगेनेके लसधा प्रसरण लचित लर्तो होना । द्रव तरन है इसने लसधा प्रसरण लुख दिखारि देता है । किमी मयकमें द्रव पागा भर जवा मे कर गरम लगेनेके, मयक जवाने परिपुर्ण हो कर लख तरपके शून्य लठेमे, किन्तु यह प्रसरणका

नियम सर्वत्र एकसा नहीं होता। जलके सम्बन्धमें इस नियमका उल्लंघन देखा जाता है, जो आगे दिखाया जायगा। जो ही इसी प्रकार गुणके आधार पर तापमान-यन्त्रको सृष्टि हुई। यह तापमान कई पदार्थों का हो सकता है, जिनमें पारट, वायु और सुरामार, Alcohol सबसे अच्छे हैं। इन तीनोंको निर्माणविधि एकसी है। पारटका तापमान सर्वत्र प्रसिद्ध है, इनलिये उसीका वर्णन करना चाहिये, पहली यह बतलाया जाय कि यह किस तरह बनाया जाता है। एक काँचका नल जिसके बीचमें ऊपरमें नीचे तक बालके बराबर एक छेद रहता है। इन नलका एक भाग खुला रहता है और दूसरा भाग कुछ प्रसारित हो कर एक गोलाकार वर्तुलके अनुरूप होता है। इस नलका मुँह खुला होनेसे बाहरको हवा उसमें प्रवेश कर सकती है। नलीके मध्यभागमें भी वायु है, नलीका वर्तुलाकार भाग अग्निमें उत्तम करनेसे नलीके भीतरका वायु गरम हो कर प्रसारित होता है, अधिक ध्यान देनेके कारण नलीके भीतर नहीं रह सकती। ऊपरका मुँह खुला है, इसी रास्ते बाहर निकल आता है। इस तरह नलीके भीतरको हवा ठण्डी होनेके पहलें ही उसे एक पारिसे भरे पात्रमें डुबाओ। नलीके म तरको हवाके गौतल होने ही वायु संकुचित होनेसे नलके भीतरका ध्यान शून्य (खाली) हो जाता है। उस समय बाहरको हवाके प्रेणसे उस पात्रके पारिका कुछ भाग शून्यस्थलको पूर्ण करके करते नलीके वर्तुलाकार भागमें जा कर पड़ता है। इसके बाद नलीका वहाँमें निकाल कर पूर्ववत् वर्तुलाकार भाग और नलीका साग हिन्ना आगमें गरम करो। पात्र गरम होने लगेगा और क्रमशः उसमें कर जब वाष्पाकार धारण करेगा, तब नाल नलीमें विर जायगा और वायुके बचे हुए भागको बशने निकाल बाहर कर देगा। तब उस नलीके भीतर और उसके वर्तुलाकार भागमें पारट वाष्पको छोड़ कर कुछ नहीं रहता। उक्त नलीका खुला भाग पुनः पारट पूर्ण प असे निर्माजित करो। इस समय उस नलीमें वायु नहीं है, समस्त भाग केवल पारट-वाष्पसे परिपूर्ण है। यह वाष्प क्रमशः गौतल और संकुचित हो कर तरल पारटके रूपमें परिणत हो कर नलीका कुछ भाग शून्य

कर देता है। तब बाहरको हवाके प्रेणके कारण उस वर्तुलका पारट क्रमशः नलीमें बढ़ने लगता है। और नली एवं उसका वर्तुलाकार भाग पारटसे पूर्ण हो जाता है। पारट अभी सम्पूर्ण गौतल नहीं हुआ। ऐसी अवस्था में ऊपर कहा हुआ नलीका खुला भाग अग्निमें गला कर बढ़ाओ, जिससे उसमें और वायु प्रवेश न कर सके; इसके बाद नलीके सम्पूर्ण रूपसे गौतल हो जाने पर देखा जायगा कि केवल वह वर्तुलाकार भाग और नलीका थोड़ासा हिस्सा पारिसे पूर्ण है, बाकी हिस्सा शून्य ही गया।

इसी ली कर अब एक तुपारपूर्ण पात्रमें डुबाओ पहलें पहलें तुपार जरा गलने लगता है। तुपारके अत्यन्त गौतल होनेसे पारा संकुचित हो कर नलीके निम्न भागमें गिरता है। प्रायः १५ मिनट रखनेके बाद जब पारा नीचे नहीं गिरता, तब उस जगह एक रेखा खींचो। जब कभी यह पारट उबमाण तुपार या एमें हो किसी दूसरे गौतल पदार्थोंमें डुबाया जायगा वह इस रेखाके नीचे कभी नहीं गिरेगा। इसके बाद इस तापमान नलीको उबलते हुए पानीके पात्रमें डुबा कर १५ मिनट तक रहने दो, इसमें पारा जितना ऊपर उठेगा, उस चरम सीमामें एक और रेखा अंकित करो। जलको कितनी ही आग क्यों न दी जाय, पारा उससे ऊपर कभी न उठेगा। अब दो रेखाएँ मिलो। पहली, उबमाण तुपारके संभ्रमणसे नीचे गिरे पारिको अवनि-की चरम सीमा बतलाती है और दूसरी, खींचते पानीसे डालनेसे नलीके ऊपर पारिको उत्थानको चरम सीमा व्यक्त करती है। यहाँ पर यह कह देना जरूरी है कि खींचते हुए पानीका ताप सब समय एक सा नहीं रहता। वायुमण्डलकी प्रेण (टवाव)के कारण उसमें घटती बढ़ती होती है। जो ही मोटो तोर पर यहाँ यह मान लिया गया कि वह एकसा रहता है। अब यह जाना गया कि ये दो रेखाएँ दो चरम सीमाएँ जतलाती हैं। प्रथम रेखा जलका धनाभाव या तुपाराकार बतानेवाली और दूसरी वायोभाव बतानेवाली है। इन दोनोंके बीचका भाग एक ही बराबर हिस्सेमें विभक्त करनेसे गतवांशक शतांगिक तापमान होगा। पहली रेखाके पास

एक यून्याविन्दु दूमरो रैन्सि दाम १०० एकमीका यह निष्पा जाता है। नमोडे ऊपर यह लिफ्टमें स्थित होने मोम लगा कर चारों ओरसे ढक दो। इसका बाद प्रथम रैन्सिसे विनाय धर्यात् पन्निम रैन्सा तब ठोका जगह पर धर्याये यह दे कर सारो नमो हाइड्रोपन्निम (Hydro-fluoric) एसिड (तेजाब) में डुबायो। कुछ देर बाद निष्कास कर मोम पीक देने पर देखा जायगा कि (उस तेजाबके साथ काँचका एक विषय गुण होनेके कारण, उसके लक्ष्ययोगी) काँचके समो पड़ित प्वागोमें घत हो गये हैं। उपरोक्त नमोका नर्तुकाकार भाव नोचिकी ओर रणमेंसे प्रभुके ऊपर एकके बाद एक यह तापको क्रमम-उत्कृतिका मोच करारि हैं; सुतरां उपरोक्त रैन्साको मोचको किसो रैन्साके ऊपर ओ रैन्सा पपिबाजल पन्निम ताप प्रकाय करतो है।

उसके पहले यद्यो मतामिक तापमान-संज्ञक व्यवहारमें लाया गया। पञ्चम सुविधाजनक होनेके कारण यह कायकस पत्र प्रचलित है। स्कोडन दिय-बामो एक मेथानिकने हके निर्माय किया है। उनका नाम सेल्सियस (Celsius) था। हकींनि सन् १६०० ई०में लघ्म किया ओर सन् १७१६ ई०में इनको सन्तु दुरी:

फारिनहोड (Fahrenheit) नामक एक प्रुसिया दिय पासी मँज्ञानिकने एक दूरता तापमान संज्ञक बनाया। यही तापमान यद्युसैस्डमें पन्निम व्यवहारमें लाया जाता है। यह सेल्सियसके तापमानसे भिन्न है। यह तापमान पनोभावबोधिक्का ओर बायोभावबोधिक्का १८१ तक १८० ममभागमें विभक्त है। इस व्यवके बायोभाव बिन्दुमें २१२ ओर पनोभाव बिन्दुमें ३२ का यह निष्पा रक्ता है। यून्याविन्दु पनोभाव-बिन्दु ३२ य य मोचे रहता है। कारण, उनके मतमें ममक ओर तुपार हाय मिनामिसे निष्कतम तापक्रम उत्पन्न करती हैं इसीप्रिये उर्कोनि बर्हा पर प्रभु बिन्दु निर्धारित किया। इन दो तापमानोंको जोड़ कर एक ओर तापमान है; उसका नाम है रिडमर (Reaumur); रिडमर नामक किसी सामानिकने इसका निर्माय किया। यह कम मोचे उत्तरमें व्यवहृत होता है। यह बायोभाव बोधिक्का पनोभाव-बोधिक्का रैन्सा तक ८० य मोमें विभक्त है। प्रलोत्रनके पत्रमार

इन तीनों प्रकारके तापमान-जकोही दोषतामें घटबढ़ को जा सकतो है ओर पनोभाव बिन्दु उसके मध्यस्थमने कभो १०के मेदसे ओर कभो हके मीदसे पड़ित किया जाता है तथा तापमाय प्रकाय करती समय परपरके य काँचके ऊपर एक बिन्दु, दिया जाता है। जैसे य सँस्फुर्में पोषकामका तापक्रम ३२।

फारिनहोड तापमानके साथ सेल्सियस या रिडमर तापमानको तुलना किंवा सेन्सिबल या रिडमर तापमान के साथ फारिनहोडको तुलना करनेको हो तो इस प्रकार करनी चाहिये —

(फारिनहोड फ सेल्सियस स, रिडमर r) पनोभाव बिन्दु से बायोभाव तक फ १८० स १०० ओर r ८० य मोमें विभक्त हैं; सुतरां १८० फ = १०० स = ८० r। प्रकोर्कमें २० का भाग दे कर निम्नका—

$$\begin{aligned} & \frac{1}{180} \text{ फ} = \frac{1}{100} \text{ स} = \frac{1}{80} \text{ r} \\ \text{सुतरां } & \frac{1}{180} \text{ फ} = \frac{1}{20} \text{ स} = \frac{1}{8} \text{ r} \\ \text{ओर } & \frac{1}{180} \text{ स} = \frac{1}{20} \text{ फ} = \frac{1}{8} \text{ r} \\ \text{सुतरां } & \frac{1}{180} \text{ फ} = \frac{1}{20} \text{ स} = \frac{1}{8} \text{ r} \\ \text{ओर } & \frac{1}{180} \text{ स} = \frac{1}{20} \text{ फ} = \frac{1}{8} \text{ r} \\ \text{तथा } & \frac{1}{180} \text{ r} = \frac{1}{20} \text{ फ} = \frac{1}{8} \text{ स} \end{aligned}$$

यन इनके द्वारा किसी एक तापमानके यह टोमिसे ओर दो-तापमानके पय महत्त्व हो प्राप्त किये जा सकती है। इसके तान नियम मोचे दिक्कनाए जाती हैं।

यह याद रहना चाहिये कि फके ३२ = ८ ओर स के सुतरां फको र का मर्म परिणत करनेके लिए पक्षमें ३० बठाना होगा।

प्रथम नियम। फको स या र के मतानुसार करनेको प्रकानो इस प्रकार है:—

$$\begin{aligned} \text{फ} &= 32 \\ & - \\ \text{स} &= \frac{1}{180} \times \text{फ} \\ \text{फ} &= 32 \\ & - \\ \text{r} &= \frac{1}{80} \times \text{फ} \end{aligned}$$

फको मर्म परिणत करनेके लिये फ के पहले प्रथम ३२ घटा कर बाक्योका दे दे-गुना करा यथा—

$$32 \text{ फ} = (32 - 32) \frac{1}{180} = 180 + 32 = 212 \text{ स}$$



फर्मी रमें बदलनेके लिए फर्मी श्रद्धमें ३२ घटाओ,  
जो बाको बचे उमें ६ में गुणा करो।

$$२१२^{\circ}\text{फ} = (२१२ - ३२) \times \frac{१}{६} = १८० \times \frac{१}{६} = ८०^{\circ}\text{र},$$

दूसरा नियम। सको फर्मा रमें परिणत करना ही  
तो—

$$\text{फ} = \frac{५}{९} \times \text{र} + ३२,$$

$$\text{र} = \frac{९}{५} \times \text{फ} - ३२,$$

तीसरा नियम। रको स या फमें बदलना ही तो—

$$\text{स} = \frac{५}{९} \times \text{फ} + ३२,$$

$$\text{फ} = \frac{९}{५} \times \text{स} - ३२,$$

रको समें लानेके लिये ६ में गुणा किया जाता है।

$$\text{यथा—} ८०^{\circ}\text{र} = ८० \times \frac{६}{५} = ९६^{\circ}\text{स}।$$

रको फ बनानेके लिए ५ के साथ गुणा करो और  
गुणनफलमें ३२ जोड़ दो।

$$\text{यथा—} ८०^{\circ}\text{र} = ८० \times \frac{५}{९} = ४४.४ + ३२ = ७६.४^{\circ}\text{फ}।$$

पारदको छोड़ कर स्फिपरिट और वायुके भी तापमान  
बुझा करती हैं। एक स्फिपरिटका तापमान (Alcohol-  
thermometer) अत्यन्त निम्नतम ताप बता  
देता है क्योंकि अलकोहल कभी जमता नहीं।  
लेकिन पारा घनीभूतविन्दुके ४० अंश नोचे जम जाता  
है। इसलिए इससे भी नोचेका तापक्रम जाननेके लिए  
अलकोहल ही काममें लाया जाता है। पर इस प्रकारके  
तापमानसे अधिकतर तापक्रम नहीं जाना जाता,  
क्योंकि शतांशिक तापमानके ७८ अंश गर्मी लगते ही  
अलकोहल उबलने लगता है। तापक्रमको विशेष बारी-  
किया जाननेके लिये वायुका तापमान काममें लाया  
जाता है। इसे तय्यार करनेके लिए तापमानका वर्तुला  
कार भाग और दण्डाकार भागका कुछ अंश वायुसे पूर्ण  
करनेके बाद नलका बाको हिस्सा किसो तरल पदार्थके  
द्वारा पूर्ण कर दिया जाता है। नलीका मुख उस पदार्थ  
मज्जित रहता है। उसी तरल पदार्थका प्रसरण और  
सहीचन ही तापमानको ज्ञापकताका बोध कराता है।  
अवश्य ही जब यह तापमान व्यवहारमें पाया जाता है,  
तब इसका वर्तुलाकार भाग ऊपरको ओर रहता है।  
वायुके तापमान कई प्रकारके होते हैं किन्तु इनको  
निर्माण-विधि अत्यन्त सूक्ष्म और अवयव प्रतिव्य टोच

नीति है; इसलिए ये व्यवहारमें नहीं आते।  
किन्तु यदि अच्छी तरह बनाया जाय, तो और तापमानोंकी  
अपेक्षा सूक्ष्मतर रूपमें तापक्रम जाना जा सकता है।

इनकी छोट कर एक भेदभूतक तापमान-यन्त्र होता  
है। किमी एक जगहके तापक्रममें और उसके निकटवर्ती  
स्थानके तापक्रममें फिर्तना अन्तर है, यह जाननेके लिए  
इसका व्यवहार होता है।

दो घतुलाकार नलियाँ वायु-द्वारा पूर्ण और नोचेके  
हिस्सेमें एक एक नली-द्वारा जुड़ी रहती हैं। यह घक  
नली किमी रंगीन तरल पदार्थ से पूर्ण रहती है। नोचे-  
को इस बक नलीका तरल पदार्थ टानी और एक सम-  
तलमें रहता है। अब यदि एक ओरका वर्तुलाकार मुख  
दूसरी ओरके वर्तुलाकार मुखको अपेक्षा अधिक उच्च ही  
तो उस ओरको वायुके विस्तारके कारण पेषण अधिक-  
तर होगा; सुतराँ एक ओरकी नलीका तरल पदार्थ उस  
पेषणके कारण दूसरेमें चढ़ जायगा और इसी तरह यदि  
दूसरी ओर अधिक उच्च हो तो प्रथम नलीमें यही क्रिया  
देखनेमें आयेगी। मसमुच इस तरहके यन्त्र द्वारा ताप-  
क्रमका सूक्ष्म भेद जाना जा सकता है।

यद्यपि पारदका तापमानयन्त्र अच्छी तरह और जहाँ  
तक उल्कृष्ट हो सके यहाँ तक उल्कृष्टताके साथ बनाया  
जाता है, तथापि समय समय पर उसमें भी संशोधनको  
आवश्यकता होती है।

१. शून्यविन्दु-परिवर्तन—घनीभाषविन्दु भो. सहीनेमें  
शून्यविन्दुसे ६०-उठ जाता है। मभो तापमानोंकी  
विशेषतः आपात निर्मित समस्त तापमानोंको यहो दृश्य  
है। इसका कारण यह है कि तापमानयन्त्रमें पारद भर  
देनेके बाद वर्तुलाकार भाग सहसा शीतल हो कर संकु-  
चित होता है, किन्तु वहीं संकोचनको परमसीमा नहीं  
हो जाती, उस समय भी थोड़ा थोड़ा संकुचित होता  
रहता है एवं इसीलिए उसका पारद नलमें उठता  
जाता है। किन्तु यह संकोचनशक्ति क्रमशः कम  
होती जाती है। और इसीलिए आपात-निर्मित ताप-  
मानमें यह विशेषरूपसे लक्षित होता है। सुतराँ ताप-  
मानमें तापक्रम पढ़ने जहाँ तक निर्धारित था, उसको  
अपेक्षा तनिक ऊपर ऊपर उठने लगेगा। इस दोषके

दृष्टान्तिं चिद बीज बीजसं तापमान इन्द्रमात्र सुवर  
 मं निमम्ब विद्या जाता है। इर एक बार तापय चितना  
 हुआ यह बाद रपनेसे प्रमया उन मित्र मित्र परोक्षा को  
 द्वारा परस्पर चितना सेद हुआ यह आना जायया धनम्  
 यदि शून्यविन्दु ० तापय ऊपर छठ काज तो तापक्रममें  
 १ घटा कर स शीतल कर देना होगा।

२। इससे सिवाय और भी सामाजिक परिवर्तन हुआ  
 करते हैं। जिनका कारण तापमानय मन्त्रा कल्पम हो  
 कर सञ्जसा शीतल हो जाना है। इसीलिए किसी ताप  
 मानयमन्त्रा बाप्योमात्र विन्दु निर्दिष्ट करनेसे पहले ही  
 सञ्जसा शीतमानविन्दु निश्चय कर लेना उचित है, नहीं  
 तो मन्त्रामर्ष भ्रमण भूख होगी।

घातकन तापमानक ज्ञ द्वारा पांसी पानो इत्यादि  
 चितने विषय बताये जाते हैं। उनका वर्णन करना  
 दुःसाध्य है। अब पाने पर यह दुःसाध्य है या सुसाध्य  
 इसका निर्णय भी तापमानसे होता है जो भी धम धम  
 उपकार हो सके हैं। ताप देना।

तापविन्दु (स० वि०) ताप-वन्धुव । १ ताप नोय,  
 तापने बोध । २ कल्पनादायक जिससे पुत्र हो।  
 तापचित (स० शी०) तपसि चोपेत वि-प्र सार्धे पन् ।  
 १ यद्यदेव, एक यज्ञका नाम। यह देवो। २ यद्यस्मि  
 मीद, यज्ञकी पत्नी।

तापन (स० वि०) तपःशीतलस्य तपस्य-व्य। अग्निष्णे वा ।  
 वा ५।५।२६ । १ तपसी, तपसा करनेवाला। (गु) २  
 २ दमनकहण्य दोगा नामका पौधा। (श्री०) ३ तमात्र  
 पत्र, तत्रपता। ४ दक्षिणात्यके भन्तगत एक पौराणिक  
 जनपद। टसिमीने इसका Taberna नामसे उल्लेख किया  
 है। अनुमान किया जाता है कि इसकी वर्तमान पत्र  
 स्थिति कानदेशमें है। (गु) १ बक पक्षो, बगना  
 १ इक्षुविषय एक प्रकारकी रेश। (इष्ट १।५५)

तापसक (स० पु०) तापस चत्वार्यं कम् । सामान्य छोटी  
 छोटी तपसी बर तपको जिसकी तपसा गीने हो।  
 तापसक (स० शी०) तापसात् प्रापते जन् उ। तत्रपता  
 तापसक (स० पु०) तापसविपदाक मन्त्रपदकोवि  
 कर्मता०। इन्द्र दो सच त्रिगोष्ठ सच इ सुभाका पिङ्ग।  
 तपको भी बरमें इ सुदीका तप ही कान्ति भाति है।

इसीसे इसका नाम पड़ा है।

तापसुम (स० पु०) तापसप्रियः इम । इन्द्र दो सच,  
 ५ सुभाका पिङ्ग।

तापसदुमसचिमा (स० शी०) तापसदुमिच सचिमा  
 तुष्पा १ तत्। गर्भ टासी सुप, सञ्जेट मन्त्रकैद्या।

तापसप्री (स० शी०) तापसप्रिय पत्र यज्ञा बहुवी०  
 आतिहात् डीव। दमनकहण्य, दोगा नामका पौधा।

तापसप्रिय (स० पु०) तापसागो प्रिया, १ तत्। १ सच  
 विषय, चिरोत्रोका पिङ्ग। २ इन्द्र दो सच इ सुभाका  
 पिङ्ग। (त्रि०) १ तापस प्रियमात्र मो तपसियो को प्रिय  
 हो।

तापसप्रिया (स० शी०) तापसागो प्रिया, १ तत्। इरापा,  
 दास्य, सुमन्त्रा। दासा देवो।

तापससच (स० पु०) तापसतप देवो।

तापसा (स० शी०) इरापा, दास्य।

तापसो (स० शी०) १ तपसा करनेवाली शी। २ तपका  
 की छा।

तापसिष्ठ (स० पु०) इक्षुविषय, एक प्रकारकी रेश।

ताप सिद्ध (स० पु०) तापसिद्ध रन्ने।

तापसिद्धा (स० शी०) ताप-प्रिया देवो।

तापस्य (स० शी०) तापस्य धर्म काज। तापसधर्म,  
 तपसियाका कत म्य। वानप्रस्थका धितरुत धर्म को  
 तापस्य है। तापस्य ही मोक्षका प-प्रमाण मान्य है।  
 पञ्च राजर्षिगण इन धर्मको थे तने पञ्चन करते थे।

तापस्वीट (स० पु०) तापने स्वीट १ तत्। स्वीटक्रिया  
 विषय यरम बाष्प, नमक मला दास्य, पागको पांच  
 या दूध से क कर पजोना निकालनेको क्रिया।

तापहर (स० वि०) ताप हरति हट। तापनाशक,  
 पुष्कारको दूर करनेवाला।

तापहरो (स० शी०) तापहर क्षिया डीव। व्यञ्जन  
 विषय, एक प्रकारका पत्रवान। इसको प्रसुत-प्रकाशी—  
 उरदको बरो पार होए दुप पाकनको इन्द्रो सां  
 धार्मि तसुते हैं। तन कात पर धर्ममें उल्ला हो जन डान  
 कर उधानते है। यज्ञो तापसे बदन आने पर  
 धर्ममें यदरक और भीम उानते हैं। इस तरह जो  
 द्रव्य प्रसुत होता है, उसे तापहरो या तापहरो कहते हैं।  
 सुच—धनकारक, सुचपईक, कफकारक, धरोरको उप

फ को रमें बदलनेके लिए फर्क अर्द्ध है ३२ घटाओ, जो वाका वचे उमें ५ में गुणा करो।

$$२१२^{\circ}\text{फ} = (२१२ - ३२) \frac{५}{९} = १८० \times \frac{५}{९} = ८०^{\circ}\text{र}$$

दूसरा नियम। सको फ या रमें परिणत करना ही तो—

$$\text{फ} = \frac{५}{९} \times \text{र} + ३२$$

$$\text{र} = \frac{९}{५} \times \text{फ}$$

तीसरा नियम। रको स या फमें बदलना ही तो—

$$\text{स} = \frac{५}{९} + \text{प}$$

$$\text{फ} = \frac{५}{९} \times \text{र} + ३२$$

रको समें लानेके लिये ५ में गुणा किया जाता है ;

$$\text{यथा—} ८०^{\circ}\text{र} = ८० \times \frac{५}{९} = १००^{\circ}\text{स}$$

रको फ बनानेके लिए ५ के साथ गुणा करो और गुणनफलमें ३२ जोड़ दो।

$$\text{यथा—} ८०^{\circ}\text{र} = ८० \times \frac{५}{९} + ३२ = १८० + ३२ = २१२^{\circ}\text{फ}$$

पारटको छोड़ कर स्फिरिड और वायुके भी तापमान घुसा करते हैं। एक स्फिरिडका तापमान (Alcohol-thermometer) अत्यन्त निम्नतम ताप बता देता है क्योंकि अल्कोहल कभी जमता नहीं। लेकिन पारा धनीभूतविन्दुके ४० अंश नीचे जम जाता है। इसलिए इससे भी नीचेका तापक्रम जाननेके लिए अल्कोहल ही काममें लाया जाता है। पर इस प्रकारके तापमानसे अधिकतर तापक्रम नहीं जाना जाता, क्योंकि शतांगिक तापमानके ७८ अंश गर्मी लगते हैं अल्कोहल उबलने लगता है। तापक्रमको विगैप बारीकियाँ जाननेके लिये वायुका तापमान काममें लाया जाता है। इसे तय्यार करनेके लिए तापमानका वर्तुलाकार भाग और दण्डाकार भागका कुछ अंश वायुसे पूर्ण करनेके बाद नलका याको हिस्सा किसी तरल पदार्थके द्वारा पूर्ण कर दिया जाता है। नलीका मुख उस पदार्थ मज्जित रहता है। उसी तरल पदार्थ का प्रसरण और सङ्कोचन ही तापमानको ज्ञापकत्वका बोध कराता है। अवसर ही जब यह तापमान व्यवहारमें पाया जाता है, तब इसका वर्तुलाकार भाग ऊपरको और रहता है। वायुके तापमान कई प्रकारके होते हैं किन्तु रचना निर्माण-विधि अत्यन्त सूक्ष्म और अवयव अतिव्यय दीर्घ

होते हैं; इसलिए वे ग्राधारण व्यवहारमें नहीं आते। किन्तु यदि थन्को तरह बना पत्र, तो और तापमानोंकी प्रपेक्षा सूक्ष्मरूपमें तापक्रम जाना जा सकता है।

इनकी छोट कर एक भेदसूचक तापमान-यन्त्र होता है। किमी एक जगहके तापक्रममें और उसके निकटवर्ती स्थानके तापक्रममें कितना अन्तर है, यह जाननेके लिए इसका व्यवहार होता है।

दो वर्तुलाकार नलियाँ वायु-द्वारा पूर्ण और नीचेके हिस्सेमें एक नली-द्वारा जुड़ी रहती हैं। यह बक्र नली किमी रंगेन तरल पदार्थ में पूर्ण रहती है। नीचे की इस बक्र नलीका तरल पदार्थ दोनों और एक सम-तलमें रहता है। अब यदि एक ओरका वर्तुलाकार मुख दूसरी ओरके वर्तुलाकार मुखको प्रपेक्षा अधिक उत्तम ही तो उस ओरको वायुके विस्तारके कारण प्रपेक्षा अधिकतर होगा; सुतराँ एक ओरकी नलीका तरल पदार्थ उस प्रपेक्षाके कारण दूसरेमें चढ़ जायगा और उसी तरह यदि दूसरी ओर अधिक उत्तम ही तो प्रथम नलीमें यही क्रिया देखनेमें आवेगी। मधुसूच इस तरहके यन्त्र द्वारा तापक्रमका सूक्ष्मसे सूक्ष्म भेद जाना जा सकता है।

यद्यपि पारिका तापमानयन्त्र थन्को तरह और जहाँ तक उत्कृष्ट हो सके वहाँ तक उत्कृष्टताके साथ बनाया जाता है, तथापि समय समय पर उसमें भी संशोधनको आवश्यकता होती है।

१। थन्विन्दु-परिचयन—धनीभावविन्दु भी महीनेमें शून्यविन्दुसे १.०-उठ जाता है। सभी तापमानोंकी विशेषतः आपात निर्मित समस्त तापमानोंकी यही दृश्य है। इसका कारण यह है कि तापमानयन्त्रमें पारट भर देनेके बाद वर्तुलाकार भाग सहमा शीतल हो कर संकुचित होता है, किन्तु वही संकोचनको चरमसीमा नहीं हो जाता, उस समय भी थोड़ा थोड़ा संकुचित होता रहता है एवं इसलिए उसका पारट नलमें उठता जाता है। किन्तु यह संकोचनशक्ति क्रमशः कम होती जाती है। और इसीलिए आपात-निर्मित तापमानोंमें यह विगैपरूपमें लज्जित होता है। सुतराँ तापमानमें तापक्रम पड़ने जहाँ तक निर्धारित था, उसको प्रपेक्षा तलक ऊपर ऊपर उठने लगी। इस दोषके

दृष्टान्तिं चिद्वि बीच बीचमि तापमान इन्मात्र सुपर  
 में निम्नम विद्या जाता है । हर एक बार तापमि कितना  
 हुआ वह याद रखनेसे प्रथमम सन मित्र मित्र परीचाघो  
 द्वारा परस्पर कितना भेद हुआ यह जाना जायगा यथात्  
 यदि शुष्कविन्दु ५० तापमि सुपर सठ जाय तो तापक्रममें  
 १ घटा कर स मोशन कर लेना होगा ।

२ । इससे मिश्रण घोर मो सामयिक परिवर्तन हुआ  
 करती है । जिनका कारण तापमानय तथा उत्पन्न हो  
 कर सहासा मोशन हो जाना है । इसीलिए किसी ताप  
 मानयन्त्रका माथोमात्र-विन्दु निर्दिष्ट करनेसे पहले ही  
 उसका बनीमात्रविन्दु निश्चय कर लेना जरूरत है, नहीं  
 तो बचकामिं भ्रमग्र भूठ होगी ।

आजकल तापमानय म द्वारा पानी पानो इत्यादि  
 कितने विषय बताये जाते हैं । उनका वर्णन करना  
 दुःसाध्य है । अतः यानि पर नष्ट सुसाध्य है या सुसाध्य  
 इसका नियम भी तापमानले होता है यो भी यम स्य  
 कथकार हो रहे हैं । ताप रेखो ।

तापत्रिभ्यु ( स • त्रि ) ताप इच्छुच । १ तापमि  
 तापने योग्य । २ यन्त्रादायक त्रिसे पुत्र हो ।  
 तापत्रिभ ( स • त्रि • ) तापमि योवति चि त स्त्रात् पत्र् ।  
 १ उपमिद एक यन्त्रका नाम । नष्ट रेखो । २ यन्त्रमि  
 भेट, यन्त्रको पत्रि ।

तापम ( स • त्रि ) तापमिजन्मस्य तपसु-च । अत्रिभ्यो व •  
 वा ५५।१२ । १ तपसो, तपसा करलेवाका । ( पु • )  
 २ दमनकहच दोना नामका पोषा । ( जो • ) ३ तमान  
 पत्र, तपयता । ४ दाचिवात्रके चक्रगत एक योराचि  
 जन्मपद । टसिमौने दयका Tabasi नामसे सर्वत्र किये  
 है । अनुमान किये जाता है कि इसकी वर्तमान यम  
 जिति भामदेगति है । ( पु • ) ३ मक पत्रो, बगना  
 ६ इच्छुविशिय एक प्रकारकी रेख । ( इष्ट १११५ )

तापसक ( स • पु • ) तापस पश्चात् चत् । सामाच्च वोमी  
 छोटा तपसी नष्ट तपसो त्रिषको तपसा गीने हो ।  
 तापसक ( स • त्रि • ) तापमात् आपसि जन् उ । त्रिपयता  
 तापसक ( स • पु • ) तापमिपयस्य मध्यपदकोपि  
 वर्मभा • । इष्टुहो उच, डिमोट उच इ सुधाका पिङ् ।  
 तपसो मोम वर्मि र शुदीका तेल को जानमें जाते है ।

इसीसे दमनका नाम पड़ा है ।

तापसुम ( स • पु • ) तापमिपि सुम । इष्टुहो उच,  
 ३ सुधाका पिङ् ।

तापसुमसक्तिमा ( स • स्त्री • ) तापसुमिच पक्तिमा  
 तुष्ठा ३ तत् । गर्म दासि सुप, सदिद मठकट्टेया ।

तापसुमो ( स • स्त्री • ) तापसमिच यत्र यन्त्रा वक्षुवी •  
 अतिस्त्रात् ङीव । दमनकहच, दोना नामका पोषा ।

तापमप्रिय ( स • पु • ) तापसामां प्रिया, ३ तत् । १ इच  
 विशिय, चिरोजीका पिङ् । २ इष्टुहो उच इ सुधाका  
 पिङ् । ( त्रि • ) ३ तापस प्रियमात्र मो तपसियो का प्रिय  
 हो ।

तापमप्रिया ( सं • स्त्री • ) तापसामां प्रिया, ३ तत् । द्राचा  
 दाच, सुनका । राजा रेखो ।

तापसहच ( स • पु • ) तापसह रेखो ।

तापसा ( स • स्त्री • ) द्राचा, दाच ।

तापसो ( स • स्त्री • ) १ तपसा करनेवासी स्त्री । २ तपसा  
 को स्त्री ।

तापसिष्ठ ( स • पु • ) इच्छुविशिय, एक प्रकारको रेख ।

ताप सिष्ठ ( स • पु • ) तापसिष्ठ रेखो ।

तापमेष्टा ( स • स्त्री • ) तापसिष्ठ रेखो ।

तापस्य ( स • स्त्री • ) तापस्य वर्म नाम । तापमवर्म  
 तपसिर्विना कस्य च्च । बामसका धितकर वर्म हो  
 तापस्य है । तापस्य ही मोचका एकमात्र साधन है ।  
 पञ्चस राजविमच इस वर्मको य तमि यज्ञ करते है ।  
 तापस्यैद ( स • पु • ) तापने स्वेदा ३ तत् । १ वैदिकिया  
 विशिय । गरम बाजू नसच पत्र हाथ, धानको चाप  
 या दसे ही क कर पमोना निबाननेको क्रिया ।

तापहर ( स • त्रि ) ताप हरति हट । तापसायक,  
 सुकारको दूर करनेवाका ।

तापहरो ( स • स्त्री • ) तापहर जिमा ठोप । म्बुज  
 विशिय, एक प्रकारका पत्रफल । इसको प्रसुत प्रधासी—  
 सरदकी बरो पारे जोए हुए चाबसका इन्ने सर्ब  
 घामिं तहत है । तन जात पर उपमिं उन्ना हो मल हास  
 कर उभारते है । पच्छो तरुषी नरुस कामि पर  
 उपमिं यदरुच घोर होग जावते है । इस तरुच ओ  
 इच्छु प्रसुत होता है उसे तापहरो या तापहरो कहते है ।  
 शुच—बलकारक शुक्रवर्धक, कफकारक, यरोरको उप

ध्वजारक, ऋमिजनक, रुचिकर और गुरु । इसके त्रिवा  
इसकी उपादान नामगोमें जो जो गुण हैं, इन्में भी वे  
ही गुण पाये जाते हैं । ( भावप्रदास ) ( त्रि० ) २ ताप-  
हारिणी मात्र जिससे ताप दूर हो ।

तापा ( हि० पु० ) १ मछली मारनेका तन्त्र । २ सुरगोका  
दरवा ।

तापायन ( सं० पु० ) वाजसनेयो शास्त्राका एक मंद ।

तापिक ( सं० त्रि० ) तापे तापकाले भवं टञ् । योषभव  
वशादि, जो गरमसे उत्पन्न होता ही ।

तापिच्छ ( सं० पु० ) तापिनं क्लदयति क्लद-ड घृपोदरा०  
साधुः । तापिञ्ज देखो ।

तापिच्छ ( सं० पु० ) तापिनं क्लदति आच्छादयति क्लद-  
ड घृपोदरा० साधुः । १ तमानवृत्त । ( क्लो ) २ तापिच्छ  
पुष्प, एक प्रकारका फूल ।

तापिञ्ज ( सं० क्ली० ) तापिनं जयति जि-ड । १ धातु-  
माक्षिक, सोना मखो । ( पु० ) २ तमानवृत्त ।

तापिन सं० त्रि० ) तप णिच्-क्त् । १ तापयुक्त, जो तपया  
गया हो । २ दुःखित पोहित ।

तापिन् ( सं० त्रि० ) तापयति ताप-णिनि । १ तापक,  
ताप देनेवाला । तप णिनि । २ तापयुक्त, जिसमें ताप ही ।  
( पु० ) ३ बुद्धदेव ।

तापो ( सं० स्त्री० ) तापयति तप-णिच् अच् गौरादित्वात्  
डोप् । नदीमैट, एक प्रकारकी नदी जो पश्चिमवाहिनी  
और विन्ध्याचलसे आविर्भूत होती है, तापती नदी ।  
( मत्स्य-पु० १११ ) २७ विष्णुपुराणके मतसे यह नदी सद्य-  
पादोद्भवा है । ( विष्णुपु० २।३।११ )

इस नदीका जल गाढा, शोथल, पित्तघ्न कफहत्व,  
धातदोषहर, हृद्य, कण्ठ और कुण्डनाशक है ।

( हारित ७ अ० )

स्कन्दपुराणके तापीखण्डमें इसका विवरण इस प्रकार  
लिखा है—

जगत्प्रसिद्ध सोमवंशमें नरहरण नामके एक राजा  
थे । वरुणने अगस्त्य मुनिसे शापसे सम्हरणरूपमें जन्म  
ग्रहण किया । एक राजाने कठोर तपमाधन करके सुय-  
कन्या तापोको भार्यारूपमें ग्रहण किया । ये तापो अग्नि  
पापदहनी और अच्यन्त रूपलावण्यसम्पन्न थीं ।

तपती देखो ।

तापोके नाम । तापोके इकोस नाम हैं—सन्धा, मत्तो-  
द्भवा, श्यामा, कपिन्धा, कापिन्धा, अम्बिका, तापगो, तपनो,  
तपना, हार्ता, नामिकोद्भवा, साक्षितो मङ्गलकरा, सनका,  
अमृतस्यन्दना, सुपुत्रा मृच्छरमणो, सर्पा, सर्पाविद्यापहा,  
निगमतिरसरथा ( १ ), तारा और ताम्र ।

माहात्म्य ।—जो तापोमें स्नान करते हैं, वे समस्त  
पापोमें विमुक्त होते हैं और जो इसका नामोच्चारण करते  
हैं, उनका पाप दूर होता है ।

आपाट मासमें तापोमें स्नान करनेका फल ।—बारह  
महीनेमें कोई भी मास आपाटमासके समान नहीं, क्योंकि  
कि इस मासमें जगत्पति श्रीविष्णु लक्ष्मीके साथ अनन्त-  
गत्या पर गयन करते हैं तथा इस मासमें विश्वकर्माने  
भूतको सृष्टि की है । ( तापीख० ३०।१।१० )

आपाट मासमें तापोमें स्नान करनेसे सब तरहके पापोमें  
छुटकारा मिलता है । प्रयाग जा कर माघ मासमें बारह  
बार स्नान करके जो पुण्यलाभ किया जाता है, आपाट  
मासमें इस तापोमें एक बार स्नान करनेसे उससे भी  
अधिक पुण्यलाभ होता है ।

यदि कोई मनुष्य कष्टता करके इसमें स्नान करे,  
तो भी तापोके माहात्म्यानुसार उसके मनजन्मार्जित पाप  
ध्वंस होते हैं । यदि बालत्ववगनः आपाट मासमें तापोमें  
क्रोड़ा करते हुए स्नान करे, तो उसकी भी देवालय वापो,  
कूप, तडाग आदि वनवानीका पुण्य होता है । यदि कोई  
व्यक्ति किसी दुःखकी कामना करके इसमें स्नान करे, तो  
वह समस्त पापोसे मुक्त हो कर अश्वमेधका फल लाभ  
करता है ।

जो ज्ञानके वा बिना जाने आपाट मासमें स्नान  
करते हैं, वे समस्त पापोमें मुक्त हो कर सनातन ब्रह्म-  
पद पाते हैं । ( तापीख० ३।३० )

तापोकी मिट्टी शरीर पर लपेट कर अन्यत्र स्नान  
करनेसे जन्मान्तर-कृत पातक निश्चय हो ध्वंस होते हैं ।

आपाट मासमें तापोके किनारे जो दोषदान देते हैं, वे  
सहस्र कोटि कुलका उच्चारण करते हैं । ( तापीख० ३।४ )

कुरुक्षेत्रमें प्रभूत सुवर्णदान करनेसे जो पुण्य होता है,  
इस तापोतट पर केवल दोषदान देनेसे वही पुण्य हुआ  
करता है ।

कुबचेर, बामो नमंदा खादिने क्वाण करमेने  
 जितना पुच्छ होता है, चापाङ्ग मामने तपतीमें निभिय ई  
 खान करमेने उतना ही फल होता है ।

( तापीच • ११५ • )

तापी नदीके दोनी तट पर १०८ महालिङ्ग विद्यमान  
 हैं तापीखण्डमें उतना साहस्य बर्चित है । तपनेमें तप-  
 नेय, बमंसेत्रमें बनेंय, गोबर्षमें निवनाय पार्वतीभ-  
 में मण्डेय खवनसेत्रमें सुजातीयर, निव्यसह मुनिके  
 सेत्रमें पशुपतिके सिङ्ग पुबराबिके सेत्रमें नरबाहण सिङ्ग  
 बानसेत्रमें बाह, आबपसेत्रके कळोवासङ्गमें कोडा  
 सिङ्ग पाहानमुनिसे सेत्रमें पुच्छरोकेखर केमिनि सेत्रमें  
 परिबन्देखर याधिकेत्रमें मरिय, बैरोचनसेत्रमें त्रिरो-  
 चनेखर बहोबहुट पोर गाबोखर बडिसेत्रमे भनु द,  
 नलेखर, धनुमारेखर कर्कोटक, पलकोपिखर पोर इव  
 पोत्र महासिङ्ग खद्योतनाफसेत्रमे आतंभोर्पाक्यनिङ्ग,  
 कुबसेत्रमे श्रीकण्ठ पोर सुकण्ठ, बगुसेत्रमें चन्द्रबुध  
 पायपतसेत्रमे उष तारकेसेत्रमें तारिय, यथिमूयभसेत्रमे  
 बंस यथिहसेत्रमें सुबुहुन्देखर पोर कुलनाक निङ्ग, दुषिय  
 में विमनेखर, कुगमुनिके सेत्रमे बमत पोर मोसकण्ठ,  
 पदशतीबनमे शान्दिय, कुबखर, रोबक, पुबखर, लप्येय,  
 दुवीरेखर, आमदम्बेय पोर पागाप्रद्योतनेखर । पूर्वमें  
 बामनेय सुन्दरमे सुन्दरेय, राचबसेत्रमें राभिय, नन्दनमें  
 बबकण्ठ, यरमङ्ग मुनिसे सेत्रमे उखनेयेखर, बुरमसेत्रमें  
 महासिङ्ग, परनुक्तिमें सुरेखर सिङ्ग पोर अमयायति  
 नादिबसेत्रमें नन्देय, नारदसेत्रमें ज्वालेखर, ब्रह्मसेत्रमें  
 विबेय प्रकायके अपर मतङ्गसेत्रमें गङ्गखर, पशुंन  
 सेत्रमें पशुनेय, यौबिहिरसेत्रमें श्रीबरेखर, पञ्चिखापित  
 में अर्बेय, क्वायायिबसेत्रमें कस्मयापद, पशुमुखसेत्रमें  
 बामदेकेखर, कपिलसेत्रमें सिङ्गिखर पोर ब्याडेयखर चतु  
 बंकेसेत्रमें चतुर्भुसेत्र, हबबदीके बिगारे मन्कोखर  
 पोर भूलेखर, गौतमसेत्रमें भौतनेखर नारदसेत्रमें गनि-  
 रिय, इन खान पर रससनिपौरमें श्रीबकके सेत्रमें रसेय  
 निङ्ग पोर बोङ्गो यति, बबबसेत्रमें प्राचेतम पोर पाब  
 रिया भोमबसेत्रमें भोमिखर, बरङ्गपाबन सेत्रमें बरङ्गे  
 खर, कञ्चन मुनिसे सेत्रमें पञ्चनेखर पोर बचकेय ।  
 बालापके सेत्रमें कञ्चयेय भेरबी सेत्रमें भेरन, भोसेखर,

भेरबी शक्ति, धूमपाय पोर कामपासिखर ; मन्विसेत्रमें  
 मन्कोखर पोर परवोखर, नोबाम्बरेत्रमें कोटोखर,  
 पञ्चपासोखर पोर एबबीरा गडि, राचनसेत्रमें बइ  
 पोर दखपाचि धम्बरोपके सेत्रमें धन्वरोपिखर पय  
 वा पञ्चिगेकुमारसेत्रमें महागोय पोर आतरोखर  
 सिङ्ग गङ्गासेत्रमें सुन खर वा गुपेय्या भोमयके  
 सेत्रमें सोबेखर तपतोभट्टोको उत्तरवेदोमें विन्कोखर  
 पोर कापानिक निङ्ग ; पूबाबसेत्रमें सुोखर नारदेय  
 कामसेत्र, सन्बरसेत्र पोर तपतो क्वापिन तपनेय सिङ्ग-  
 कुबसेत्रमें खोरन नाम बमशानिङ्ग भोमसेत्रमें भोभिय अण  
 केखर पोर भोसेखर, कुमुदासेत्रमें पटकोखर राचबसेत्रमें  
 राभिखर पिच्छेय्या, दमावतापनि ; भरतुङ्गमारमुनिके  
 सेत्रमे पोर तपनासङ्गमे तोन नागिखर इध प्रकार  
 कुल १०८ निङ्गखान हैं । साइ ३ बमत इन १०८ सिङ्गके  
 नामका पाठ करे । पाठ करनेसे मन्कोखरमें पिच्छग  
 सुचारस-दारा वन होती है ; पशुव ब पुत्र निबना बन  
 पोर भोषार्थो भोष प्राप्त करती है तापोनदोमें खान  
 करके पाठ करनेसे दुबिबोके मन्मूय तोबाका फल  
 होता है । इनके सिवा तापीखण्डमें पोर भो एब प्रधान  
 तोबका उल्लेख है ।

योगानगे—बह नदी कुमपुत्रमे विनिद्वत हुई है,  
 इरुमें खानादि खरनेसे ब्रह्मभोवको प्राप्ति होती है ।

तापीके बिगारे योगानदीके अन्तमें खान करनेसे कुठ  
 रोय नष्ट होता पोर उधके मात ब्रह्म तक कुठ नष्ट  
 होता ।

अधमासातोय—तपोने विमबको दिख कर महाया  
 गौतमके बाबडे अधमासा गिर गई जो, लभोके यह  
 खान अधमासातोयके नामसे प्रसिद्ध है । यह एब  
 प्रधान तोब है । इसमें जो मनुष्य पिच्छदान पोर  
 खानादि करता है, उसको निरासय पट पोर पितरोंको  
 बचयावति होता है । इध तोबमें मङ्गमिखर नामक  
 गुब वाभ्यक निङ्ग है, त्रिनकोपूजा करनेसे समस्त  
 मनोरथोंको सिद्धि होती है ।

मन्कोब— तपतीके उत्तरकुनमें अर्धा गौतमीके माथ  
 तापीका नङ्गम दूपा है, उस जगह यह तोय है ।  
 पच तीर्के मनुकोबिभिये समस्त पापीका नाशक है ।

तावेदार ( अ० वि० ) आघ्राकारी, टहल करनेवाला ।

तावेदारी ( फा० स्त्री० ) १ सेवकाई, नौकरी । २ सेवा, टहल ।

ताम ( सं० पु० ) ताम्यतेऽनेन तम करणे घञ् । १ भीषण, डरावना, भयङ्कर । २ दोष, विकार । ३ मनोविकार, व्याकुलता, वैचैनी । ४ दुःख, हँस, कष्ट । ५ ग्लानि, लज्जा । ६ पाप ।

ताम ( हि० पु० ) १ क्रोध, गुस्सा । २ अन्धकार, अंधेरा । तामजान ( हि० पु० ) एक प्रकारको छोटी खुली पालकी ।

तामडा ( हि० वि० ) १ जिसका रंग तांबसा हो । ( पु० ) २ ऊट्टे रंगका एक प्रकारका पत्थर । ३ एक तरहका कागज । ४ खल्वाट मस्तक गंजेकी छोपडी ।

तामर ( सं० स्त्री० ) तामं ग्लानिं राति वा क । १ जन, पानी । २ घृत, घी ।

तामरस ( सं० स्त्री० ) तामरे जले सस्तीति सस-ड । १ पद्म, कमल । ताम्यतेऽनेन रस्यति इति रसं कर्मधा० । २ स्वण, सोना । ३ ताम्र, ताँबा । ४ धुस्तर, धतूरा । ५ सारस । ६ छन्दोमैट, एक छन्दका नाम । इसमें वारह अक्षर होते हैं । ५।५।१।१२ वा वर्ण गुरु रहता है ।

तामरघी ( सं० स्त्री० ) तामरस डोप् । पद्मिनी ।

तामलकी ( सं० स्त्री० ) भूम्यामलकी, भू-आँवला ।

तामलिग ( सं० पु० ) देशमैट, एक देशका नाम ।

तामलिगक ( सं० पु० ) तामलिग स्वार्थे कन् । तमलुक देश ।

तामलूक ( हि० पु० ) ताम्रलिग देखो ।

तामस ( सं० पु० ) तमस्तमोगुणः प्रधानत्वेनास्यस्येति अच् । १ सर्प, साँप । २ खल, दुष्ट । ३ उलूक, उल्लू । ४ चतुर्थ मनु, मन्वन्तरमें विष्णुके अवतार हरि, इन्द्र त्रिशिख, देवता वैष्टेतिगण, ज्योतिर्धाम आदि समर्पि, वृषस्थानि नरादि मनुके पुत्रगण । ( भा० ८, २४ अ० ) ५ क्रोध, गुस्सा । ६ अन्धकार, अंधेरा । ७ अज्ञान, मोह । ८ एक शस्त्रनाम ।

( वि० ) ८ तमोगुणयुक्त, जिसमें तमोगुण हो । १० तम-प्रधानगुणक, जिसका तमोगुण प्रधान हो । तमोऽधिकृत्य प्रवृत्तं अण । ११ तमोगुणाधिकार द्वारा प्रवृत्त शास्त्रविशेष

तामसशास्त्रका विषय पद्मपुराणमें इस प्रकार लिखा है —

प्राशुपत नामक श्रेयशास्त्र, कणादोक्त महत् वैश्विक शास्त्र, गीतमोक्त न्यायशास्त्र, कपिलोक्त सांख्य, जैमिनि-कथित मोर्मांसा, बृहस्पतिकथित चार्वाकशास्त्र, तुम्बुरुपो विष्णु कथित बौधशास्त्र, शङ्कराचार्य-कथित मायावाद-युक्त वेदान्तशास्त्र, ये सभी तामसशास्त्र हैं । इनके अर्थ करानेसे ज्ञानियोंका भी पातित्य होता है । इन तामस-शास्त्रोंमें वेदका यथाय पथ निरोद्धित हुआ है और इसमें कर्ममात्र हो त्याग्य है जोवात्मा परमात्मा में ऐक्य प्रतिपादित हुआ है । ब्रह्मका अदृश्य निगुणरूपमें दर्शित हुआ है जगत्के नाशके लिए कलियुगमें इन शास्त्रोंको उत्पत्ति हुई है ।

कूर्मपुराणमें लिखा है, कि तामस तन्त्रका विषय है । इस जगत्में नृति और नृत्तिके विरुद्ध जो शास्त्र है, वे सभी तामस हैं । करान, मेरुध, यामन, वाम—ये सभी तामसशास्त्र हैं ।

अष्टादश पुराणोंमें छह सात्विक, छह राजस और छह तामस हैं । जिनमें मत्स्य, कूर्म लिङ्ग, शिव, स्कन्द ये छह तामसपुराणोंमें शिवका माहात्म्य विशेषरूपमें कीर्तित हुआ है ।

विष्णु नारद, भागवत, गरुड, पद्म, बराह ये छह सात्विकपुराण हैं इन सात्विकपुराणोंमें विष्णुका माहात्म्य कहा गया है ।

ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य, वामन ब्रह्म ये छह राजसपुराण हैं । इनमें ब्रह्मका माहात्म्य वर्णित है । ( मत्स्यपु० )

कणाद, गीतम, शक्ति, उपमन्यु, जैमिनि, दुर्वासा, मृकण्डु, बृहस्पति, शंकाचार्य, जमदग्नि, ये सब तामस मुनि थे । गीतम, वार्हसत्य, सामुद्रयम, शङ्क, श्रीधनस ये तामस स्मृतियाँ हैं ।

मनुष्योंको स्वभावसे ही तीन प्रकारको अज्ञा होती है—सात्विकी, राजसी और तामसी । जो लोग भूत और प्रीतादि पर अज्ञा रहते और उनकी उपासना करते हैं, उनकी तामसी अज्ञा समझनी चाहिये ।

इसके सिवा आहार, यज्ञ, तप, दान आदि जगत्के सम्पूर्ण कार्य ही तीन प्रकारके होते हैं । अज्ञेयक तथा

विरधतामात्र ( जिसका पदको बाद विनष्ट गया हो )  
 पूर्वतन्तु पूर्वसित, लक्ष्मणादि धर्म्य पाहार तामस  
 पाहार और यह पाहार जो तामस सोमके निम्ने  
 प्रिय है ।

अति दुरापय दारा पूर्वरेके लक्षादनके विषय पात्रामे  
 नामा प्रकारको दोहा उत्पन्न करके जो तप किया जाता  
 है, उसे तामसतप कहते हैं और ऐसा तप तामसप्रकृतिके  
 सोम ही करते हैं ।

द्वय ब्रह्म-वाग्नादिका विचार न कर, जिमी मी  
 द्वय वा ब्राह्म चयवा पात्रमे असन्धार और अचरताके  
 धाम जो ज्ञान दिया जाता है, उसको तामसदान कहते  
 हैं ।

भविष्यत्का अष्टमपद, शत्रिभय, धर्मचय और  
 परिजनादिका अय तथा प्राविष्टि वा और धामधामर्था  
 दिवो पर्याधीचता न करके अज्ञान वा भविष्यतावय  
 जो ज्ञिया चतुर्द्विजोतो है, उससे तामसको ज्ञिया कहते  
 हैं ।

जो व्यक्ति अज्ञान असमाहित है पर्याप्त ज्ञियो मी  
 कार्यमे विशेषरूपसे मन नहीं लगता, जिसकी बुद्धि अस्थिर  
 अस्थिर है, जो नियुक्तार्थे धाय विचार न कर सकनेके  
 कारण प्रकृतियग कोई प्रकृति मनमें उदित हो और उसके  
 अनुसार काम कर जानता हो जो ज्ञान पर्याधीचताके  
 द्वारा कुछ मी परिमार्जित नहीं हुआ हो, अनुपदेश द्वारा  
 जिसको जियो तरफसे समझना नहीं जा सकता, अन्त-  
 कारविकीर्ण, भावामी, जो अन्तःकरणके मानको ज्ञिग  
 कर बाहरमें अन्तःकरण व्यवहार करता है और परवृत्तिकी  
 निराकुर्मिमें तत्पर है, बिना पादि करनेमे धामसो है,  
 धर्मदा अथसक और दोषसूतो है, ऐसे कर्ताको तामस-  
 कर्ता कहते हैं ।

जो मनके धर्मको धर्म और अकर्तव्य विषयकी  
 कर्तव्य धमभ्रता है, ऐसे विपरीत धर्मप्रकायक मनकी  
 तामसमन कहते हैं ।

त्रिस व्यक्तिके जियो विधीय धारवाके द्वारा सर्वदा जो  
 मनमें मोक्ष भय, अज्ञ, विषाद मत्ता पादि उदित  
 हुआ करते हैं, उन दुर्मेधा व्यक्तिको धारवाको तामस  
 प्रति कहते हैं ।

जिज्ञा पात्ररूप और प्रमादके द्वारा जो कुछ उत्पन्न  
 होता है जो धाम्यमें वर्तमान और परिधाममें मोक्षके  
 सिवा और कुछ भी उत्पन्न नहीं करता उस धामका नाम  
 तामस सुख है । ( शीवा ) योरोहित याचन, दैवक्य  
 ( श्रुतिदि द्वारा प्रतिष्ठित विषयदिक्की निम्नपूर्णा ), धाम-  
 याचन, निम्नवेवापराय विद्युन्नामापराय अष्टप्रतिपद,  
 धामिचार, पद्यत्रोवादि जन्म, पातक, उपपातक, अति  
 पाप, महापाप, अनुपातक लीम मोक्ष, अज्ञकार, काम,  
 मोक्ष ये समस्त तामसधर्म हैं । ( २२५०-३० ७० )

तामसवृत्तिके और तामसवृत्त्य द्वारा तामसभाव  
 अचरमन्य कर जो यज्ञ किया जाता है, उसका नाम  
 तामस यज्ञ है । इस प्रकारके तामस यज्ञ, तामस ज्ञान  
 और तामस तपस्या द्वारा नरकमें जन्म होता है ।

तमोगुण प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक है। जिस गुणके  
 द्वारा तम अज्ञान उत्पन्न हो उसको तम अज्ञान  
 धारक गुण कहते हैं इसविषय तमोगुण मोक्षका  
 कारण है । अज्ञ, रज और तम ये तीन गुण परस्पर  
 अज्ञान हैं जब एक गुणका प्राधान्य होता है, तभी  
 उससे तम गुणके नामसे पुकार सकते हैं । तम, रज  
 और अज्ञ भिन्न भिन्न नहीं रह सकते । ज्ञां, जब अज्ञ  
 और रजको पराजित कर अपना धर्म प्रकट करता  
 रहता है, तभी उसको तम कहा जा सकता है । किन्तु  
 पराभूत मानमें अज्ञ और रज अज्ञमें विद्यमान रहते हैं ।  
 तम तमोगुण, एक गुण अज्ञमें वैश्विकोक्त सुखपदाह  
 नहीं है इसको प्रथम पदाह समझना चाहिये ।

अज्ञ, रज और तम ये गुणत्रय अस्तुत्वभावमें अज्ञ  
 ज्ञान करने पर अस्थिर कहलाते हैं । ये गुणत्रय सर्व  
 कार्यकापो अविनायी और स्थिर होते हैं । जब ये गुण  
 अज्ञान होते हैं तब अज्ञानका अज्ञानशरदुक्त पुररूपमें  
 परिणत हुआ करते हैं । अज्ञ पुरके अज्ञ इन्द्रियां अज्ञ-  
 ज्ञान कर जोबको विषयनाशनमें प्रवृत्त करते हैं । अज्ञ  
 अज्ञ पुरमें रह कर विषयको अविनाश कर देता है, बुद्धि  
 अज्ञ पुरकी कर्मे है । सोम अज्ञानगुणके तम पुरको  
 जोबना कहते हैं । किन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है, जीव  
 अज्ञ पुरमें रह कर अज्ञ अज्ञ और अज्ञका मीम करता  
 है । गुणत्रय एक दुर्मेधा पात्रय से कर अचरमान करते



हैं। यह बात पहचानने को कहती जा चुकी है कि जिम स्थान पर उनमेंसे किसी एकका अधिक होना है, वहाँ दूसरोंको हीनता लक्षित होती है। सत्व और रज हीन होने पर तमोगुण प्रकाशित होता है। इसी तरह तमो हीन होने पर रज और रज हीन होने पर सत्व प्रकट होता है। तमोगुण अ-प्रकाशात्मक है, उसको मोह कह सकते हैं।

इस तमोगुणके प्राबल्यसे अनुप्यकी अधर्ममें प्रवृत्ति हुआ करती है। तमोगुणके कार्य ये हैं—मोह, अज्ञानता अत्याग, अनिश्चयता, स्वप्न स्तम्भ भय, लोभ, शोक, सत्कार्यदूषण, अस्मृति, अफलता, नास्तिकता, दुश्चरित्रता, सदृशद्विवेकराहित्य, इन्द्रियवर्गको अपरिस्पृष्टता, निरुद्ध धर्म प्रवृत्ति, अकार्यमें कार्यज्ञान, अज्ञानमें ज्ञानाभिमान, अमित्रता, कायमें अप्रवृत्ति, अयज्ञा, हवा चिन्ता, असरलता, कुबुद्धि, अज्ञमता, अजितेन्द्रियता, दूसरोंका अपवाद, अभिमान, क्रोध, अशहिष्णुता, मत्सरता, नोचकर्म में अनुराग, असुखकर कार्यका अनुष्ठान, अपात्रमें दान। जो उक्त कार्योंका अनुष्ठान करते हैं, उनको तामस-प्रकृतिका मनुष्य समझना चाहिये। तामसप्रकृतिके लोग जन्मान्तरमें स्यावर, राजस, सपे, हंस, कौट, पत्नी, विविध चतुष्पद जन्तु होते हैं। जो सर्वदा निरुद्ध कार्य करते रहते हैं, उनको तमोगुणके प्राधान्यसे तामस-प्रकृतिका कल्पना चाहिये। सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, सर्वदा प्राणियोंके शरीरमें अवच्छिन्नरूपमें रहते हैं। इसलिए उनको क्रमो भो पृथक् रूपमें नहीं देना सकते। उक्त तीनों गुण एक दूसरे पर अनुरक्त हो कर परस्परको आश्रय किया करते हैं। सत्वगुण सत्वसे, तमोगुण तमसे, रजोगुण मत्व और तमसे किसी समय भी तिरोहित नहीं होता। उक्त गुणत्रय परस्पर मिल कर सांसारिक समस्त कार्य करते हैं। केवल जन्मान्तरोग प्राणपुण्यके कारण प्राणियोंको देहमें इनका तारतम्य देखनेमें आता है। स्यावरसमुदायमें तमोगुणका अधिक प्रबल है, किन्तु वे रज और तमोगुणसे विरहित नहीं हैं। जागतिक प्रत्येक पदार्थमें तम प्रबल है। न्यायिक भाषसे रहनेके कारण किसी द्रव्यका नाम सत्विक और किसोका राजसिक वा तामस हुआ है,

अध्यवसाय, बुद्धि धर्म, ज्ञान, विराग, ऐश्वर्य ये सत्विक और उमर विपरीत तामस है। (सांख्यका०)

विपादका नाम है मोह, विपादका स्वरूप ही तमोगुण है, जब कभी इस गुणका आविर्भाव होता है, तभी विपरीतता या उपस्थित होती है। जब तमोगुण प्रकाशित होता है, उस समय वह रज और सत्वको पराजित कर अपनी वृत्ति प्रकाशित किया करता है।

मत्वगुण लघुप्रकाशक और दृष्ट है। रज उपट-शक और चञ्चल है तथा तमोगुण गुरु-वरणक है। गुण परस्पर विरोधी होते हैं, किन्तु विरोधी होने पर भी स्वयं सुन्द और उपसुन्दवत् विनष्ट नहीं होते। जिस प्रकार वर्ति और तैल परस्पर-विरुद्ध होने पर भी एकत्र मिलित हो कर परस्पर अर्थ प्रकट किया करते हैं तथा वायु, पित्त और श्लेष्मा परस्पर विरोधी होने पर भी एकत्र मिल कर शरीर-धारणरूप कार्य करते हैं, उसी प्रकार ये गुणत्रय परस्पर विरोधी होने पर भी एकत्र मिलित हो कर परस्परकी वृत्ति अर्थात् सुख, दुःख और मोह प्रकट करते रहते हैं। तम अर्थात् अविद्याके आठ भेद हैं—अज्ञान, मरुट, अहङ्कार और पञ्च तन्मात्र। ये आठ प्रकारके तम अज्ञान हैं। (सांख्यका० २८)

नैयायिक विद्वानोंका कहना है कि आलोकका अभाव ही तम है। प्रभाकरोंके मतसे रूपके दर्शनका अभाव ही तम है।

विशेष विवरणके लिये प्रकृति' शब्द देखो।

(पु०) तमसो राहोरपल्य' अण् । १०-राहुसुत,

तामसकौलक। ११ शिवका एक अनुचर।

तामसकौलक (सं० पु०) तामस राहुसुतः कौलकश्च । राहुसुत केतुभेद । तामसकौलक आदि संज्ञाविशिष्ट राहुसुत केतु तैत्तिरीय प्रकारके हैं। वर्ष, स्थान और आकारादिके द्वारा सूर्यमण्डलमें उनका लक्ष्य करके फल निर्णय किया जाता है। वे यदि सूर्यमण्डलगत हों, तो अमङ्गल होता है, चन्द्रमण्डलगत होने पर शुभफल, तथा यदि चन्द्रमण्डलमें वे काक, कवच वा प्रहरणरूपमें प्रकट हों, तो अमङ्गलदायक होते हैं। उक्त केतुओंके उदयसे सब कुक्क विरूप हो जाता है। जल मलिन और आकाश धूलिसमाच्छन्न होता है। प्रचण्डवायु चला करती है,

चारों तरफ चमिटतायि सपन्नित होती है। उक्त राहु सुमेतिं वटि मि ी घोर कान्वाटिहः। बिघट राहुभा टमन हो तो पूत वतु फल होया। ह्यु विभक्त्य वेतु जहां जहां दिव्य चार्दे गी नही नही रान् चोका चमत्कृत होया। चूर्णमपठनने वटि दण्डा इति २ तुम व्यान दिव्य-काई से, तो नरपतिको भूत्व, घोर कबन्धन फाल टोष पड़े, तो ध्यायिका भव होता है। भोजाकार टोषमसे चोरीका भय तथा क्रीनकाकार टोषने पर दुमिष होता है। (हरदशमिका १ न०) वटु रेको।

तामसभ्यान् ( स० खो० ) वटु, कर्म रवका भ्येयक्य मेद । वटु, कर्म रवका भ्यान् तौन प्रकारका है—भास्विक रात्रस घोर तामसे। ( वजरा० )

तामसमय ( स० खो० ) कर्म वारको खीको दुर्गे गराव । तामसवाच ( स० पु० ) एक मण्डका नाम ।

तामससन्ध्यायो ( स० त्रि० ) जो गाईका धर्मको छोड़ मोक्षको कामनाके लिये मनमें भूम भूम करे तोपन्ना करते हैं, वे जो तामससन्ध्यायो कहलारे हैं ।

तामसिद्ध ( स० त्रि० ) तमना तमोगुणैर्न निष्ठं त तामस ठज्ज । तमोगुणका कार्य । ठावरा रेको ।

तामसो ( स० खो० ) तमोऽन्वकारमावाशेन पदि चर्षां तमस पच खियां होय । १ चन्वकारकका राति चन्वो रो रात । २ महाकाको । ३ जटामानो, राम कर्क । ४ तमोगुणनुका वच निचर्म तमोगुण, हो । ५ एक प्रकारको मायाविद्या । गियलानि निरुग्निना यष्टने प्रभव हो कर इसी मिकनादको टिया जा । इस निष्कार प्रमावसे मिकनाद चर्षका हो कर बुद्ध करता जा । (गंगा०) तामासेव ( स० त्रि० ) तमान स क्वादि० ठज्ज । तमान वृष्टके पाषण्डा मायः ।

तामिन- दक्षिणापथको दक्षिणप्रान्तासो एक विष्टीक जाति घोर कनको माया ।

तामिन मन्त्रका स ज्ञातक्य द्राविड है। मनुमहिता महाभारत पादि प्राचीन पन्थीमें द्राविड नामक जनपद घोर कहलै पश्चिमासियोंका द्राविड नामसे कहलै है । द्राविड मन्त्रका मायवी ( पाति ) रूप दमिठो ० है। तामिष मायामें 'द' को जगह 'त' होता है इस तरहसे

'तमिन वा 'तमि' रूपों को गया है। पूर्वनिर्दिष्टानुसार द्राविड मन्त्र णि म यामें दमिठो तथा लसे तामिर वा तामिष कृपा है। अष्टराचार्यके शारोर्गभाषामें द्रमिष मन्त्रका उल्लेख है। इस द्रमिन मन्त्रका तामिन व्याकरणके अनुसार तिरमिड रूप होता है। बिद्योके मनसे इस तिरमिड मन्त्रमें भां तामिष मन्त्रको उत्पत्ति हो सकतो है।

प्रसिद्ध पाषाण्यटापं वित् मि० प्रिनिमी ईसाको १को यताष्टोमें इस तामिष देयका तरपिना ( Tropina ) नामसे उल्लेख किया है तथा तत्पुर्ववर्ती भूतुत्तान्तरमण्ड विटिष्टाण्डको तामिनामि दमिरिष ( Dauntio ) नामसे इसका उल्लेख मिलता है।

नामकाव।—जेनडि मन्त्र, अयमावाश्या ( ७१ )में लिखा है—

इत्यत्र पुनन्वामिपुत्रुद्रिद इत्यमृत् ।  
वशान इतियो देल पन्ने वडुसलम्यु इ

यहां पादिनाय श्वयमदेवके द्रविड नामक एक पुत्र हुए से बिनाके नामसे बहुयुगलको यह द्रविड देम प्रसिद्ध हुआ है। बिन्तु महाभारत, हरिष म पादिमें मतमें द्राविड नामक जातिके वासके कारण इस जनपद का द्रविड वा द्राविड नाम पड़ा है। मनुमहिता पादिमें मतसे द्राविड जाति पक्षी समिय हो। वेद तथा ब्राह्मणमें दय न न होनेके कारण ही उपबलको प्राप्त हुए हैं। ( मनु १ १४४ )

इसके लिका पादिगर्भमें लिखा है, कि विश्वामित्त अथ वयिष्ठको कामधेनु मन्दिनोको ले गये, लस समय मन्दिनार्क प्रस्तामसे द्राविडोंकी उत्पत्ति हुई।

"अदम्य इगन् पुष्कान् प्रजावाद्रिशाकम्पन् ।"  
( भाषि १ १२५१३ )

इपर जैनीके मन्त्रयमावाश्यामें लिखा है अयमदे पुत्र द्रविडो मन्तान हो द्रावि नामसे प्रसिद्ध हुई जा । ( मनु, वजरा० ७१२ )

जनपदका जनत्वान-महाभारतके निम्नलिखित श्लोकोंसे  
† इंसदि भव कलातीने चीन-वर्तमानक तुपयवु वि द्राविदेवमें जाने ने। उन्होंने इस स्वयंका 'चि मो-मो' (Chp-molo) नामसे लेख लिखा है बिच्छु इस देवका 'दिसक' वा 'विश' होता है।

• महावर्ष, १२वीं वरिष्ठेदे ।



दानका पून पोर ताण्डबलय पसन्द करी है । इनमें कोई बकरा, कोई सुपार बखे पोर कोई सुरमासे समुद्र होती है । पोर कोई कोई तो बिना शराब मिले समुद्र हो नहो होती । बहुतसे निम्न-श्रेणीके तामिसोंका विश्वास है कि भूलसे हो दुःखत्र होती है । एक प्रकार का भूत है जो साने समय परदन या दजाता है ।



तामिस जन ।

जिसोको रोग होने पर सब मो निम्न-श्रेणियोंमें योभन मुलाहे जाती है । बि निर पर पमको, गलेमें माया हाथमें बड़े पोर बाईमें टेंडिया पहन कर पाने पोर हाथमें पपेटोदार समुप जाती है । यह बड़े बारीके चिन्ता कर मुदते हुए मन्त्र पढ़ता पोर उस अनुपको बजाता रहता है । हमसे योभनके शरीरमें भूतालय होता है । फिर यह रोगको म्पबसा करता है । भूल-पूजा मोर्षोंका धर्म होने पर भी तब श्रेणीके लोमेंमें इसका प्रचार सब बिल्कुल नहो रहा है ।

बहुतो का विश्वास है, कि दासिनात्ममें ब्राह्मण प्राचायक स्थापित होनेमें पहले बहुत समय तक वहाँ जैनधर्मका प्राचल्य था । पछले ही निचा जा चुका है कि जैन-धर्म प्रमुञ्ज-महाशक्ति मतसे खादि तोर्षहर शीश्वपमदेवके पुत्रके नामानुसार इबिड़ नाम हुआ है । पौर तन्कोके पञ्चमन्य इबिड़ नामके प्रविष्ट हुए है । उपदुंत्त पौराणिक कहानि अष्ट ज्ञान पढ़ता है कि सिधो समय तामिस देशमें हैको का नमस्विक प्राचल्य था ।

ईसाकी ७वीं शताब्दीमें अब चीन परिव्राजक ह्युएन च्वांग इस देशमें धाये है तब हमस मो कर्तने निर्धन्य

वा दिगम्बर जेमीका प्राचाय देका बा । जे निधि समयमें इबिड़को यष्टि उन्नति हुई है । अब मो इबिड़के नामा स्थापित प्रभूत जैन श्रौतिका प्राचल्य जैन सभ्यिका निर्धिय परिचय दे रही है । यहाँके प्राचल्य जनवर्माचलनियोंको पचम्प, पनाय ना कोण्ड नहो कहा जा सकता, ये पचम्प ही सुसम्प पोर धाय है । जिसो जिसो भाषा बिदुका अनुमान है कि सुप्रसिध कुमारिक मनेम पाम्प इबिड़ मन्दी जिस इबिड़मायाका उन्नय किया है, यह तन्कोके ममकानोन जेनेमें अत्युन्नत तामिस भाषा है ।

पाण्डुराज सुन्दरपाण्ड्य परम येक से । तन्कोके ममबर्मे तामिस भूमि पर श्रेणीका प्राचाय पौर जैन धर्मको प्रचलित का सुस्यवात हुआ । मइराचाय के दौर दोरेसे यहाँ जैनधर्मका प्रभाव एकवारगो जोनपम हो गया था ।

तामिसोंमें बहुत दिनों तक शैवधर्म प्रचल था, इस समय शिवोपामन्त्रयक स्थाते लक्ष्मणते है । रामात्मके प्रयत्नमें शैवधर्मका प्राचाय स्थापित हुआ । तामिसोंमें अब दो श्रेणीक शैवधर्म दोष पढ़ते है, एकका नाम तेइल ना दक्षिणशैवी है पोर दूसरेका बड़यल ना उत्तर शैवी ।

इस समय उत्तर भारतमें जेसे पक्षीको तरह बिदुका प्रचलन नहो रहा है, वैसा इबिड़में धमी तक नही हुआ; तामिसमें अब मो शैवका यष्टि पाहर है । पौर तो अन्त इबिड़का देना कोई मन्दिर नहो, जहाँ प्रति दिन वेद न पढ़ा जाता हो । तामिस ब्राह्मण समस्त धर्म-धर्ममें बिदुपाठकोको एक प्रकार पढ़ समझते है । ब्राह्मणमय धर्म भी यवासाय शक्तिको मान कर चलते है । यहाँ धर्म-बिचारको प्रया मो मियिल नही हुई है । अब मो ऐसे बहुत स्तान है जहाँके ब्राह्मण शूद्रको श्रय करनेमें धरने धर्म-धर्मको धायडा करते है । ऐसे ही बहुतने ब्राह्मण-धाम है, जहाँ शूद्रोंको प्रिय करनेका प्रविचार नहो है ।

सुसममानाके धारिपकालमें बहुत बौद्ध तामिसीने हो रहलामधर्म माना था । उनको मन्थान मन्थतिको मंसे बहुतने ईसाको १६वीं शताब्दीमें प्राप्तिम मीसियरके प्रबन्धसे ईसाई धर्म मान लिया था । इस समय तामिसां में योमदो १ ईसाई निवनेना ।

भाषा और साहित्य—भारतमें जितनी भी वर्णमालाएँ हैं, उनमें तामिल-वर्णमाला अत्यन्त पूर्ण है। डा० युर्नलके मतसे, तामिल-वर्णमाला वत्तेलुत्तु नामक एक प्राचीन वर्णमालासे ही उद्भाविता है और अति प्राचीनकालमें फिनीक वर्णिकोंसे ली गई है। किन्तु इस विषयमें हमारा मतमेंट है। वर्णमाला देखो।

इस भाषामें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ( दीर्घ ) ए, ओ, ( दीर्घ ) ओ, ऐ, और औ ये वारह स्वर तथा क, च, ट, त, प, र, ड, ज, ण, न, म, य, र, च, व, उ, ल ये १८ व्यञ्जन वर्ण हैं।

इस भाषामें क, ख, ग, घ इन चार अक्षरोंका उच्चारण एकसा है, च, छ, ज, झ, इन चारोंका, ट, ठ, ड, ढ, इन चारोंका, त, थ, द, ध, इन चारोंका तथा प, फ, ब, भ, इन चारों वर्णका उच्चारण एकसा है। अर्थात् 'क'के रहने पर उससे ख, ग, घ, इन तीनों अक्षरोंका काम चल जाता है। इसके सिवा श, ष, स, ङ, ः, ं, ये वर्ण तो विष्कूल हैं ही नहीं। संस्कृतभाषामें जैसे बहुसंख्यक युक्तव्यञ्जन हुआ करते हैं, तामिल भाषामें वैसे नहीं होते। सिर्फ एट्ट, न्त, न्न, म्म, क्क, च्च, क्कृ एसे और ट्क, ट्प, र्क, र्च, र्प थ्य, ल्ल, व्व, न्न ये युक्तव्यञ्जन देखनेमें आते हैं। तीन व्यञ्जनोंका योग सिर्फ 'रुडु' और 'म्भ' है। संस्कृतकी तरह समस्त व्यञ्जन न होनेसे तामिल भाषामें जब कोई संस्कृत शब्द लिखा जाता है, तब उसका रूपान्तर हो जाता है। जैसे संस्कृतका कृष्ण शब्द तामिल लिपि में किरुट्टिनन् वा 'किट्टिनन्' लिखा जायगा।

यूरोपीय भाषाविदोंने स्थिर किया है, कि तामिल भाषा संस्कृतमूलक नहीं है। यदि संस्कृतमूलक होता, तो इसमें इतने थोड़े अक्षर वा अक्षरोंके वर्णमाला नहीं रहती। कोई कोई प्राकृतमूलक द्राविड़ भाषाकी ही तामिल समझ कर उसको संस्कृतमूलक बतानेकी तैयार हैं। आधुनिक तामिल भाषामें बहुतसे संस्कृत शब्दोंका प्रयोग होने पर भी, तामिल भाषामें लिखित जितने भी प्राचीनतम शिलालेख और ग्रन्थ मिले हैं, उनमें संस्कृतका प्रभाव विष्कूल नहीं देखता। इन कारणोंसे मूल तामिलको संस्कृतमूलक कहना सङ्गत नहीं।

तामिल भाषा भी नितान्त अप्राचीन नहीं है। गायट औरामचन्द्रने भी यहाँ वर्तमान तामिल भाषाके प्राचीन स्वर सुने होंगे। वाइविलके प्राचीन भागमें हिरमके जहाजमें मलीमानके पास मयूरने जनिका प्रसन्न है। वाइविलमें उस जगह मयूरका जो नाम लिखा गया है, वह तामिलभाषा-मूलक है। इसके अलावा गोक भाषामें धान्य आदि भारतके बहुत प्रयोजनीय शब्दोंके जो नाम लिखे गये हैं, और जो पहले पहल भारतमें ही यूरोपमें पहुँचे हैं, उनके अधिकार नाम हम संस्कृतभाषामें नहीं पाते, किन्तु तामिलभाषामें वे मिलते हैं।

तामिलभाषा दो प्रकारकी है। एकका नाम ग्रेन-टर्मर अर्थात् प्राचीन तामिल और दूसरोका कोट्टुन्दमिर अर्थात् आधुनिक तामिल। दोनोंमें इनका पायका है, कि दोनोंको यदि भिन्न भिन्न भाषा कहा जाय तो शक्यता न होगी।

जैनके प्रयत्नसे ही तामिलभाषाका उक्तपे हुआ है। अर्थ ब्राह्मणगण उक्त दोनों ही भाषामें संस्कृत शब्द लिखा करते हैं। द्राविड़के ब्राह्मण कहा करते हैं, कि मट्टिय अगस्त्यने ही विन्ध्याद्रि लङ्घन कर दक्षिणात्वमें संस्कृत-मध्यता और संस्कृत साहित्यका प्रसार किया था। द्राविड़ और मलवारके लोगोंका विश्वास है, कि अगस्त्य अब भी जीवित है और मलयाचलके अन्तर्गत अगस्त्याद्रिमें रहते हैं। अब भी कुमारिका अन्तरोपके निकट अगस्त्येश्वरके नामसे वे पूजे जाते हैं। कोई कोई द्राविड़ परिचित कहते हैं, कि सुन्दर पाण्डुरके समयमें ही अगस्त्यने आ कर तामिल-वर्णमाला और तामिल-व्याकरणका प्रचार किया था। ऐसी दृश्यां पाण्डुराजके समसामयिक अगस्त्यको हम पुराण-वर्णित अगस्त्य नहीं समझ सकते। सम्भवतः ये अगस्त्य-नामधारी और ही कोई व्यक्ति थे। तामिलोंका यह भी कहना है, कि अगस्त्यने ही उनके पूर्व-पुरुषोंको पहले पहल चिकित्सा शास्त्र, रसायन, इन्द्रजाल आदिको सिखा दी थी। और तो क्या, बहुतसे आधुनिक ग्रन्थ भी अगस्त्यके नामसे चल गये हैं।

\* वाइविलमें मयूरका 'दुकि' नाम लिखा है, यह शब्द तामिल 'दुगै' वा 'दुंगै' शब्दसे उही है।

जैनोके छर्पोमये तामिसभाषाके भाइज्यको समविष  
 उपति हुई है। अबबैसपोसाके शिवासीक और जैन  
 धर्मोके पढ़नेके मान्म होता है, कि पत्तिम धर्मकेसो  
 मद्रुवाइज्यासोने बहुत दिनों तक प्राविद्ध देयमें बास  
 बिद्या वा, सोयैयत्र चन्द्रग्रह वहां उनके घिब हुए  
 से। चन्द्रग्रह केको। यदि ऐसा हो है, तो मानना पड़ेगा,  
 कि पढ़से जो जैनियोंका वहां विद्वार हो गया वा।  
 जितने हो प्राचीन तामिस धर्म मिश्रते हैं, उनमें पश्चि-  
 माय जैन है। बहुतोंका अनुमान है कि तामिस भाषाके  
 जितने हो प्राचीन इन्द्रविद्योके प्राविन्धार हुआ  
 है, उनमें जैनधर्म को सबसे पश्चिम प्राचीन हैं। कुमा-  
 रिस और महराचार्यके प्राविर्भावके बादसे जो प्राविद्धमें  
 जैन प्रभावका आस होने लगा पोर जैनो को स क्या भी  
 बहुत बढ़ गई। ऐसो द्दयमें तामिस जैनभाइज्यकी  
 वजति पोर पवनति उनके पढ़से भी माननी पड़ेगी।

तामिस भाषामें कवि तिबबहूर-रचित कुरान धर्म  
 जो सर्वप्रधान है। ईसाको ८वीं शताब्दके पढ़से यह  
 धर्म रचा गया था। कविके निम्न चोकोको दरिया जति  
 में जय सेने पर मो उनका धर्म सर्वत्र पाइन होता  
 है। प्रसिद्ध विपुलो घोडेसर (पाविदार) तबबहूरको  
 भगिनो थीं। इनको कविताने हो द्वाविद्ध-समाजमें विविध  
 पादर पाया है। कम्मलको तामिस रामायणमें कविको  
 कविल्याविका सबसे परिषय मिश्रता है। सुन्दरपाण्ड्य  
 तामिस भाषामें कई गिण-श्लोक लिख गये हैं, तामिस  
 ये समय उनको तामिस-वैद मानते हैं। ऐसा हो ३०००  
 श्लोकोंका एक विष्णु-श्लोक भी है वह भी वे पद्योके  
 लिए से दखल है।

तामिस भाषामें रचित जैनशास्त्रोंमें १३०० श्लोका  
 अथ "चिन्तामणि" नामक धर्म की विविध पत्रिकाय्य  
 है। इस धर्मकी रचना-प्रधानो शम्भुदेवना और कर्क  
 भाषुयै कम्मलकी रामायणकी पविद्या श्रेष्ठ हैं।  
 तामिस (स० पु०) तमिस्रा तमस्पति रक्षारण धर्म। १  
 नरकाविधिय एक नरकाका नाम। इस नरकमें मदा और  
 धर्मकार बना रहता है, जो दूधरोको डम कर पपने  
 कोविका निर्बाह करते हैं जो इस नरकके पश्चिमाती  
 हैं, उनमें इस नरकमें पश्चिम धर्मका मोमने पढ़तो है।

( भागवत ५।१६ ) तमिस्रवा राज्य धर्म। २ श्रेष्ठ। १  
 पश्चिमाविधिय, एक पश्चिमाका नाम। मोगको चल्हा  
 प्रतिमें बाबा पढ़नेके जो जोय लक्षण होता है उसे तामिस  
 कहते हैं। उ जोय शुद्ध।

तामो (हि० श्लो०) १ तमि का तसत्र। २ एक प्रकारका  
 बरतन जिससे द्रव पदार्थ साया जाता है।

तामोस (ध० श्लो०) पात्राका पानन।

तामु (स० श्लो०) तम ठक्। श्लोता, श्रुति करनेवाला।

तामिसरो (हि० श्लो०) शिष्टके योग्ये बनाये जानेका एक  
 प्रकारका तामड़ा रम।

ताम्बुको (स० श्लो०) ताम्बुकी पयो० साधुः। ताम्बुल  
 पान।

तम्बुल (स० श्लो०) तम-कलक दुगागमी पोर्वय। पत्रि  
 निवाशिन उडेकनी। इ० ५।१०। १ पर्वनायवकी दन,  
 पान। पर्याय—ताम्बुलबलो, ताम्बुलो, तामिनो और  
 तामबहरो।

अनाम प्रविद्ध कृताविमेपके पत्तेको ताम्बुल वा  
 पान (Piper Beetle) कहते हैं। पान शब्द से सूत से  
 पर्व शब्दका पचन्य है, जिसका पर्व है—पता। पान  
 भारतवर्षमें सर्वत्र मिश्रता है पर ज्यादा उत्तरमें नहीं  
 होता।

पार्थके विविध धर्म—

हिन्दुओंमें	--	--	पान।
बहुनामें	--	--	पान।
बम्बईमें			पान, किलिट्टे।
मराठोंमें	---		विद्धेका-पान।
गुजरातोंमें	--		पान मानवेस।
तामिसमें			केलिकाई।
सेनगूममें			तमालपात्रु धर्मबरो।
बनाङ्गोंमें			विसेटेके।
मजबमें			केला, किलिना।
ब्रह्ममें	--		कुम्पियोई, कानिनेत्।
सिङ्गलमें	--		बलात।
परबीमें	---		ताम्बुल।
पारसीमें	--		ताम्बुल, बर्ग-पार्थोप।
पान उच्चदेशमें			कोली कमोन पर होता है। भारत,

मिंहल, और ब्रह्ममें पत्तों के लिए इसकी खेती होती है। बहुतांका अनुमान है कि यवहोप पानका आदि वासस्थान है, वहाँसे यह सर्वत्र फैल गया है।

पानीके खेतो बड़ो कटमाध्य है। इसकी खेतमें ताप और रसका परिमाण बराबर समान रहना जरूरी है। किसानको हमेशा देख-भाल रखनी पड़ती है। स्थान-सेटसे इनकी खेतोमें कुछ कुछ पार्थक्य है। मन्द्राजके कोडम्ब्यातुर जिलेमें पानको खेतो काफी होती है, वहाँ जमीन भी काम लायक बनानेके बाद उसमें दो फुट चौड़ा नाला खोद कर मंड बना देते हैं, जिसका आकार ठोक पानीको होना या लहर जैसा हो जाता है। भाद्रमासमें इन मंडोंके किनारे मौलसिरोके बीज बोये जाते हैं और आखिनमास तक उसकी जड़में पानी भी दिया जाता है। उसके बाद दो वर्षके पुराने पानके पौधोंको उपाट कर उनकी एक एक गांठसे एक एक टुकड़ा बनाते हैं। प्रत्येक मौलसिरोके नीचे दो टुकड़े गाड़ देते हैं। प्रथम १५ दिन तक एक दिन अन्तर पानी देते हैं। पौछे समाप्तमें एक बार पानी दिया जाता है और इन्हीं तरह तीन महीने बीन जाते हैं। उसके बाद साधमासके प्रारम्भमें गोबर, राख इत्यादिको खाद देते रहते हैं। नालेके ऊपर जमी हुई मिट्टीको उठा कर खादके ऊपर देते हैं। इससे बाद पानको लताओंको उक्त मौलसिरोके पौधोंसे बाँध देते हैं। एक वर्ष तक इसी तरह लताकी हडिके साथ साथ किसानकी उसे बाँधना पड़ता है। एक वर्षके बाद लता अपनेसे ही उस पर लिपट कर चढ़ सकती है। अनाद-सावनमें फिर खाद देनी पड़ती है। प्रथम वर्षके बादसे ही प्रतिदिन जड़के पासके पत्ते टूटते रहते हैं। इस तरह १६ महीने तक पत्ते तोड़े जा सकते हैं।

बहुत अच्छे खेतमें बीघा पौछे हर महीने ५ कीणि पान होते हैं। १०० पत्तोंका १ कतूस (गुच्छा) होता है, २५ कतूसमें पालागि और ८० पालागिमें १ कीणि होती है। प्रति पालागि ५ के भावसे विकती है। इस तरह प्रति बीघेमें हर महीने २० के पान होते हैं और १६ महीनेमें ३२० रुपयकी फसल होती है। पानको खेतोमें जैसा परिश्रम पड़ता है, वैसा लाभ भी

काफ़ी होता है। तो भी लोग इसकी खेती उतनी नहीं करते।

मध्यभारत—मन्द्राजकी अयेला इस प्रदेशमें पानका आदर अधिक है। इसलिए इसकी खेतोमें भी लोगोंका आग्रह ज्यादा पाया जाता है। इस देशमें जो लोग पानकी खेती करते हैं, वे 'वरे' नामसे प्रसिद्ध हैं। पानके खेतको यहां वरोजा कहते हैं। कहीं कहीं 'पानका टण्डा' भी कहते हैं। पानको लता बड़ी कीमत होती है और बहुत कम उत्ताप वा आनोकसे नष्ट वा दूषित हो जाती है। यदि अच्छी तरह देख-भाल रखी जाय तो लाभमें दो वर्षका परिश्रमफल मिलता है। पानका खेन बाँस और टट्टियेमें इस तरह टक दिया जाता है, कि जिससे फिर पानों पर धूप और जोरको डबा न लगे। पानकी लताओंको टकनेके लिए और लपेट कर चटानेके लिए बड़े बड़े पत्तोंवाला प्रकण्डक बीया जाता है। यहाँ पानका वरोजा बहुत बड़ा होता है और खेत हमेशाके लिए रहते हैं, तथा जितने भी किसान हैं, सभी काई एक वरोजाकी जमीन बाँट लेते हैं। यहाँ वरोजाके भीतर बहुत तरी रहतेसे गरमियोंमें व्याघ्र आदि जानवर आच्छिपते हैं। यहाँ भी २ वर्ष तक पानको खेतो होता है। प्रथम वर्षको उटक और द्वितीय वर्षको करवा कहते हैं। पहली फसलकी ही कीमत ज्यादा होती है। नोमार जिलेकी खेतोमें कुछ फरक है। यहाँ एक बार खेतो करनेसे १०।१२ वर्ष तक फसल होती है। यहाँको खेतो मन्द्राजको तरह हीतो है। मौनसरीके बदले यहाँ 'सरवा' वा जयन्तीहृच्च लगाते हैं। खेतके चारों ओर 'पाडरा' या मदारकी खूंटियाँ गाड़ कर बाड़ो लगा देते हैं। जयन्तीहृच्चके सूत्र जानि पर गुग्गुलुके पीड़ लगा देते हैं। दश बारह वर्ष बाद ये वरोजा बदल डालते हैं। अन्यान्य स्थानोंसे यहाँको खेतो परिश्रम और अह्वचनें कम पड़ती हैं।

बंगाल—बङ्गालमें जो लोग पानको खेती करते हैं, वे 'वारडे' कहलाते हैं। वे 'तामलो' या ताम्बूलो जातिसे पृथक् और जिम्बर्दोगोके हीते हैं। पानके खेतको यहाँ 'वरज' कहते हैं। वरज देखनेमें अच्छा होता है। यहाँ वर्तमान नामक स्थानमें तथा गङ्गाके निकटवर्ती

ज्वारमें इसकी खेती अधिक होती है। लघुभेदियाके निखटवर्ती बाटूच पामके पान सबसे समदा होते हैं, इधरिए वहीँको खेतोको तरबोव सिखो जाती है। बङ्गलमें तीन प्रकारके पान होते हैं—'माँपो', वा बासा बापूरकाठी पौर दीयो वा बङ्गला। बापूर काठी पान खानेमें सोडा पौर बापूरसम्बन्धित होता है। इधकी खेती बहुत कम होती है; खेतो न्यादा होने पर भी यह कम उपजता है।

पानका बरज किसी तासान वा गहरके निखटवर्ती जयि खान पर होना चाहिये। इधके सिधे चिबनी मिठी हो पच्छी है। बरजमें बास पादि नहीं होने देना चाहिये, होने पर बड़के बचाइ देना चाहिये। मिठीको १ या ११ पुट तक फाड़के कर चारों तरफ पाखी छोद दे पौर खँको बाड़ बना दे। बयेबरजमें तासानका पद देना पड़ता है। मिठीके बनीको थोड़ कर पंजि बार बर्माचियाँ माड़ देनी पड़ती हैं। इन बर्माचियाँके पाख ही नागरवेस (पान)को एक एक गाँठ गाड़ देवे; बर्माचियाँ ३१ हाथ लघु होनी चाहिये। बरजके ऊपर चारों तरफ पनकठो बा दो जाता है। इधियाँको मजबूत बरनेके लिए दोष नीपमें बाँसके छूँटे गाड़ दिये जाते हैं। 'बीज' बर्माच्यो बर्माचियाँ गड़ो जाता है, उनकी एक पंक्ति १८ इच पौर एक पंक्ति १० इच अन्तरमें होती है तथा १८ इचको पंक्तिधामने सामने हो 'बीजी'का पपमग खींच कर एकव बाँध देते हैं। पानकी गाँठ २० इच तूरकी कम बी (बीज)के नीचे माड़ते हैं। एक एक गाँठ एक हाथ या एक पुट लम्बो काठी जाती है। इमें तिरको माड़ कर बापूरके पत्तीसि ठक देते हैं। छिन्ने लगा कर कातिब तक रोपकाप बस लवता है। कताके लपव होतें ही एक बर्माचियाँके साथ मू जरी लघकी बाँध देते हैं। पोखे बरजके ऊपर तक पाड़ने पर लसकी नीचको तरफ मुक्का देसि हैं। बाँध बीचमें ताम्बाबका पद पौर पोखी पादिको सड़ा-सुखा कर बड़मे देसि हैं। इस तरह बर्जके बार मिठी होसि एंति 'बरज' बिलबब खँपा हो जाता है। बाँधन पामने एक एक सुराने बरजकी जमीन इबर्माचिके मखानके बराबर लघु की हो गई है। मोबरका पूरा ताम्बाके

कीचड़का पूरा, सरनोकी लसी पादि पामके भिजे बड़न कमदा बाद है। य डोको कमो नतापोंको नट कर देतो है। बरजमें मँका पानो न देना चाहिये। बरजमें पानोका जमना भी पनिबकर है। पानको नता भी निम्नलिखित दोष लज जाती हैं—

१ दाम कमना—पानके पत्तों पर खासि काले दाग कमना। यह दाम क्रमशः पावतनमें बढ़ता रहता है पौर पत्तें नट हो जाती हैं।

२ पानके छपटुकोंका बासा होना पौर पन्तमें पत्तें भर जाना।

३ सुरभ्रमा-पत्तोंका क्रमशः सूख कर सुरभ्र जाना।

४ पत्तोंके चिनारै काबा हो जाना।

५ पत्तोंके चिनारोका मुड़ जाना।

६ रोग सिधे पत्तोंमें बगते हैं।

१। पत्रारी—यद्य सन्नामव पोड़ा है, यह लताकी गाँठमें होता है, जिससे कता क्रमशः खानो हो कर सूख जाती है। जिस नतामें पत्रारी रोग लग जाब पौर लघवे यदि पन्थ लताका सम्पर्क हो, तो लघमें भी यह रोग कम जाता है। इस रोगके होने पर लघ नटाको बरजि तुरन्त लखाड़ देना चाहिये पौर बड़की छुब मिठी भी निखाब कर दिव देनो चाहिये।

०। 'गान्दी' वा 'गाँदो'—कतामें गान्दी रोग जयने पर लघकी नङ्ग बाल हो जाती है पौर अन्तमें सूख जाती है।

एक रोमीमें लडसुनका रस मिठीके माव मिठा कर लघ मिठीको कताको बड़में देना चाहिये इससे लाभ होता है।

इधिया-बर्जा भी लघासको तरह खेतो होती है। एक एक कताके १०१० बय तक पत्तें तोड़के जा सकते हैं। इस तरह लड़ियाँमें बोधा पोखे बर्ज बाद दे कर सालमें ४०० से ४२०, इधके तक लाभ होता है।

बर्ज—घर्रा पानको खेतोका लतना पादर नहीं होता। घबमदनबरमें पानके पत्तें ३ बवके पक्षे नहीं तोड़के जाते। लघाको खेती मन्दाब लैयी है। ८ दिन पन्तर दे कर पत्तें तोड़के जाते हैं।

पूनामें पानके खेतकी पानमासा कहते हैं; यहाँ



खेनोका काम कुएं के पानोसे होता है। धारवाडके पान आवाटकी वस्तु है। यह खुलो जमीनमें होता है, ऊपर मचान नहीं बांधा जाता। ३ बोघेमें प्रायः १ हजार बेलें लगाई जाती हैं। एक आवाटो ३ से ७ वर्ष तक रहती है।

कनाडाकी पान आम्रद्वजके नीचे बोधे जाते हैं। तीन वर्ष बाद पत्ते तोड़ते हैं। याना जिलेमें यह पथरीलो, दलदली और गीली जमीनके सिवा और सब जगह होता है। यहां १ फुट या १।१ फुट गहरे गड्ढे खोदते और पीप मासमें उनको पानोसे भर देते हैं। पानोके सुख जाने पर (मिट्टी कुछ कुछ गीली रहती है) एक एक गड्ढेमें एक एक हाथ लम्बे चार चार डण्डल गाड़ देते हैं, फिर उगने पर उनको कर्माचियोंसे बाध देते हैं। इन गड्ढोंमें प्रायः एक एक पाव सरसोंकी खली भो देनी पड़ती है। एक मास बाद फिर प्रत्येक गड्ढेमें एक एक पाव खुलो डालो जातो है। लताके बढ़ने पर इसका बन्धन खोल दिया जाता है, जिसमें वह जमीन पर लेटने लगती है। इसके बाद फिर खुली डालते हैं और जड़में राख-मिट्टी देते हैं। फिर लताकी गांठोंसे डालियां निकाल कर बढ़ने लगती हैं। और एक प्रकारकी खेती होती है, जिसमें लताकी जमीन पर न लिटा कर मंचि पर चढा देते हैं। एक वर्ष बाद पत्ते तोड़ते रहते हैं। कोलावा जिलेमें मछलीको खाद देते और ताड़पत्र ढकते हैं। पूना, सतारा और घाटपर्वतमें उल्कृष्ट पान होते हैं।

संयुक्त प्रदेश—बुन्देलखण्डमें अच्छे पान होते हैं। पर यहाँ पानकी खेती बहुत कम होती है।

ब्रह्मदेश—यहाँ करेनजातिके लोग ऊँचे स्थान पर बड़े बड़े जङ्गलो पेड़ोंके नीचे पानकी खेती करते हैं। उक्त पेड़ोंको नीचेकी डालियां काट दी जाती हैं। पनबेल हचके काण्ड पर चारों तरफ फौलती और लम्बे लम्बे पत्ते फैलातो है। यह देखनेमें वही मनोहर लगतो है। युवकगण पानके हच पर चढ़ना बड़े कौशलसे सीखते हैं। शायद इसलिये इसका नाम “कड़ी” पड़ गया है।—‘मघई’ नामक एक प्रकारका पान होना है, जो बहुत ही सुखादु होता है तथा ‘मीठा’ नामका पान भी खानेमें बहुत उमदा लगता है।

वैद्यकके मतसे पानके गुण—विशदगुणयुक्त, रुचिकारक, तोष्य, उष्णवीर्य, कपाय, तिक्त, कटुरस, सारक, वशोकरणक्षम, चारयुक्त, रक्तपित्तजनक, लघु, बलकारक तथा कफ, सुखगत दुर्गन्धमल, वायु और अन्तिनाशक है।

भोजनके बाद सुपारो, कपूर, कस्तूरी, लवङ्ग, जायफल अथवा सुखके लिए निर्मलत्वजनक कटु, तिक्त और कपाय संयुक्त फलके सुगन्धद्रव्यके साथ ताम्बूल खाना चाहिये।

रात्रिकी, निद्रावसान होने पर, सानके बाद, भोजनके बाद, वमनके बाद और परिश्रम कर चुकने पर, पण्डितसभा और राजसभामें ताम्बूल खाना अच्छा है।

(रत्नवल्लभ)

किसीके मतसे—ताम्बूल तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, अत्यन्त रुचिकारक, मारक, चारसंयुक्त, तिक्त, कटुरस, कामोद्दीपक, रक्तपित्तजनक, लघु, वय्यताजनक, कफघ्न, सुखकी दुर्गन्ध और मलका नाशक, वातघ्न, श्मामपहारक, सुखमें निर्मलता और सुगन्ध लानेवाला, कान्तिजनक, अद्भौष्टवकारक, हनु और दन्तगत मलनाशक, रमनेन्द्रियका शोधक तथा सुखस्त्राव और गलरोगका विनाशक है।

नूतन ताम्बूल ईपत् कपाययुक्त, मधुररस, गुरु और कफकारक तथा प्रायः पत्रकसष्टय है। पत्रशाकमें जो जो गुण होते हैं, नूतन ताम्बूलपत्रमें भी वे वे गुण मौजूद रहते हैं। जितने भी पान बङ्गालमें पैदा होते हैं, वे अत्यन्त कटुरस, सारक, पात्रक, पित्तवर्धक, उष्णवीर्य और कफनाशक हैं।

पुराने पान कटुरसविहीन, लघु, कोमलतर और पाण्डुवर्ण होते हैं; ये अत्यन्त गुणदायक हैं। अन्यान्य पान इसको अपेक्षा हीनगुणविशिष्ट हैं। पानमें सुपारो कत्या और चूना लगा कर खानेसे कफ, पित्त और वायु नष्ट होते हैं, मन प्रफुल्ल होता है, सुख निर्मल और भ्रगन्धित होता है तथा कान्ति और अद्भुतके सोन्दर्यकी वृद्धि होती है।

प्रातःकालमें ताम्बूल खावे तो सुपारो अधिक, दोपहरके समय कत्या अधिक तथा रात्रिकी चूना अधिक मिलाना चाहिये।

ताम्बूलके प्रथमागमें पामासु, मूकमागमें यम घोर मध्यादेयमें लक्ष्मी चक्रवर्तन करतो है। इसविध ताम्बूलके प्रथमाग, मूकमाग, घोर मध्यादेयको छोड़ कर बाकी का भाग खाना चाहिये। ( रामनिर्घण्ट )

ताम्बूलके मूकदेयके खानेके प्यादि, प्रथमागके खानेसे पापसञ्चय, वर्षे पान खानेसे पामासुका ज्ञास घोर ताम्बूलकी गिराखानेसे सुदि नष्ट हो जातो है।

( रामवचन )

पान, सुपारी पादिके खाने पर पड़से जो रस बनता है, वह विरोध, क्रूरगी बार जो रस बनता है, वह मीदक घोर दुर्गर तथा तीवरी बार जो रस बनता है, वह पञ्चतन्त्रे समान गुणदायक घोर रसाशन है। घत एव ताम्बूलका बड़ी रस पान करने योग्य है जो तीवरी बारके पचानेसे निकलता है। ज्वादा पान खाना भी हानिकारक है। इसके बाद तथा मूक समने पर पान न खाना चाहिये। इसके ज्वादा पान खानेबासीका घरोर, इडि, मय दात, पम्पि, खान, वर्षे घोर बच्चा बच होता है तथा पन्तमें पित्त घोर बाहुकी रुदि हो जाया करती है।

दातीकी कमजोरी घोर पशुपुत्र, विपरोय, मूच्छा रोम, मदात्थय, चय घोर रक्षपित्त, इनमेंसे कोई भी एक रोग होने पर पान न खाना चाहिये। ( अन्नप्रथम )

विषबा खी, यति, ब्रह्मचारी घोर तपस्वियोंके लिए पान खाना निषिद्ध है। इन लोगोंके लिए पान गोमार्ग तुच्छ है। ( मरु० )

बिना सुपारोके पान नहीं खाना चाहिये। यदि कोई सुपारोके बिना पान खाये तो वह तब बच गइल ममन न करेगा, तब तब उसे पापकाही घर बन्ध खीना पड़ेगा ( वरदोषन )

भोजनके बाद लुब्धा करके पान खाना चाहिये। बिना सोम देवता घोर ब्राह्मणोंको बिना दिये ताम्बूल नहीं खाते।

अंधाग घोर पानके भेदबहुतके बड़े पचपातो है। जलना प्रकारका पीपबोने चतुर्पानमें पानका रस खाम जाता है।

सुपुत्रके मतके—पान सुमन्वित, बाहुनिवारक,

घोर घोर ठण्डे तब है। इसके सेवन करनेसे निःश्वास में लुब्ध पातो है, घर साफ होता है घोर सुभके दोष नष्ट होते हैं।

पानका उक्त यदि बच्चोंके सुपुत्रदेयमें प्रयोग किया जाय तो उनको कोरुमहता नष्ट होती है। पानके पत्तेको मिगो कर कनपटियों पर रखनेसे मिरका हट जाता रहता है। माक घोर पत्तेके घुनने पर बस पर पानका पत्ता बांधनेसे कुछ फायदा पड़ता है। पानीमें कठिन पीड़ा का लुब्ध खाने पर लन पर पानके पत्ते बांध देने चाहिये इससे पीड़ा घात होती है। छोड़े पर पान बांधनेसे, बाव दूवित नहीं होता घोर भागम पड़ता है। पानके माक खून सुपारी, खता घोर पन्थाव्य मयानि मिला कर खाना भारतकी सभी जातिमें प्रचलित है। यह पानलुब्धको पञ्चमं ना करनेके लिए प्रति प्रिय घोर उपादेय उपहार रूपमें दिया जाता है। निम्न भोजनके उपरान्त भी सोम पान खाया करते हैं। यह परिपाक-कार्यमें सहायता पड़ जाता है। पञ्चरोपीके लिए ज्वादा पान खाना पञ्चन है। पानका रस गरम करने, खानमें जलनेसे खानका पीप घोर पश्चिम जलनेसे जलना प्रकारके चक्षुष्य तथा मनु या खानकीके साथ पाटनेके बच्चोंकी कैठी हुई खांसी खाली रहतो है। जिहिरिया (बिहोरी) रोममें बूबके साथ पानका रस सेवन करनेसे उपकार जाता है। इसको बड़ बच्चे रोकी जोतो है। जो यदि पानकी बड़को बट कर खाये, तो उसकी मर्म पञ्चककी गति अन्य भरके लिए नष्ट हो जातो है। विद्यमान पानके रसके साथ कपासकी ऊड़ बट कर कीरकपूरकी पीपबके निलय मीवित करते हैं। पानका एक मनु या वासमोके माक खानेसे खांसो जातो रहती है। खारी जमोन पर रश्मिबाणोंको पान खाना फाबदेम द है।

तब पानको पानोमें सुधानेसे कुछ पीछे र गका दो तरहका रस बनता है; एक तो खनके भारो होता है घोर दूसरा हलका। दोनोंमें जो पानकी सुमय होती है।

इसके साथ पानका पत्ता गसानेसे आराम नामका एक तरहका बार निकलता है; इससे कोहेनको मॉतिखा नपच बनाया जाता है।

ताम्बूलकर ( स० पु० ) ताम्बूलकर कर ६ तल।

ताम्बूलपात्र, पान रखनेका बरतन, वट्टा । इसका दूसरा नाम स्थली है ।

ताम्बूलद (सं० त्रि०) ताम्बूलं ददाति द-क । ताम्बूल-दाता, जो पान लगा कर अपने मालिकको देता है । इस का पर्याय — वाग्गुणिक है ।

ताम्बूलदायक (सं० पु०) ताम्बूल दा-ग्वुल् । ताम्बूल-दाता, वह नौकर जो पान इत्यादि लगानेमें नियुक्त किया जाता है ।

ताम्बूलघर (सं० पु०) वह नौकर जो पान लेकर खड़ा रहता है ।

ताम्बूलनियम (सं० पु०) पान, सुपारी लवंग इलायची आदि खानेका नियम ।

ताम्बूलपत्र (सं० पु०) ताम्बूलमिव पत्रमस्य । १ पिण्डाल, शकशा नामकी लता । इसके पत्ते पानके जैसे होते हैं । (स्त्री०) २ पानका पत्ता ।

ताम्बूलपात्र (सं० स्त्री०) ताम्बूलस्य पात्रं, ६-तत् । ताम्बूलकरद, पान रखनेका बरतन, वट्टा, पानदान ।

ताम्बूलपेटिका (सं० स्त्री०) ताम्बूलस्य पेटिका ६-तत् । ताम्बूलपात्र देखो ।

ताम्बूलवीटिका (सं० स्त्री०) पानका बोट्टा, बोट्टो । ताम्बूलराग (सं० पु०) ताम्बूलकृतो रागः मध्यलो० कर्मधा० । १ पानको पीक । २ मसूर ।

ताम्बूलवन्निका (सं० स्त्री०) ताम्बूल, पान । ताम्बूलवल्ली (सं० स्त्री०) ताम्बूललता, पानकी बेल । इसका संस्कृत पर्याय—ताम्बूलो, नागवन्निका, वर्ण-लता, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजगलता, भक्ष-पत्रा, ताम्बूलवन्निका, पर्णवल्ली, ताम्बूलिदिवाभोष्टा, नागिनी और नागवहरो । (भावप्रकाश)

ताम्बूलवाहक (सं० पु०) राजशुल्यविशेष, पान खिलाने-वाला नौकर ।

ताम्बूलवाधिकार (सं० पु०) वह नौकर जिसके हाथ पानका इन्तजाम हो ।

ताम्बूलिक (सं० त्रि०) ताम्बूलं तद्वचनं शिल्पमस्य ताम्बूल-ठन् । १ पान बेचनेवाला, तमोलो । २ तमोलो जाति ।

ताम्बूलिन् (सं० त्रि०) ताम्बूलं पण्यतया अम्यस्य

इति । ताम्बूलविक्रेता, पान बेचनेवाला, तमोलो । ताम्बूलो (सं० स्त्री०) ताम्बूल-गौरां डोप् । २ ताम्बूल-वल्ली, पानकी बेल ।

ताम्बूलो—साधारणतः तमोलो या तमोलो नामसे प्रसिद्ध एक जाति । बङ्गाल, बिहार और उड़ीसामें इनका काफी सम्भ्रम है । ये मूलतः ताम्बूल व्यवसायो होनेके कारण इस नामसे अमिश्रित हुए हैं । इस जातिको भी मिय जाति कहा गया है । बंगालमें इनको ताम्बो वा तामुली तथा ताम्बूल-वणिक कहते हैं ।

बिहारके ताम्बूलिणमें गोत्रभेद नहीं है । इनमें हमेशामें चने भाये नियमके अनुसार विवाह आदि मन्वन्थ होते हैं । 'धियानिया' सम्पर्कको पकड़ कर ६ पौटो तक और 'टियाडो' सम्पर्क पकड़ कर १४ पौटो तक विवाह मन्वन्थ नहीं होता ।

बङ्गाल और उड़ीसामें ब्राह्मणगोत्रके अनुमार इनके नाना विभाग हैं । कुलमानानुमार भी इनमें विभाग हैं । समानगोत्र और समान कुलमें विवाह नहीं होता । सपिण्ड वा समानोष्टक होने पर भी नहीं होता । सगो-त्रोय किन्तु भिन्न कुलके होने पर, वा समोपाधि किन्तु भिन्न गोत्रोय होने पर विवाह करनेमें बाधा नहीं ।

बङ्गालके ताम्बूली पांच धार्कमें विभक्त हैं, जैसे— सप्तग्रामी वा कुयदहो, अष्टग्रामो वा कटको, चौदहग्रामो, विद्यालोसग्रामो और वर्द्धमानो । सप्तग्रामियोंका कहना है, कि वे उत्तरभारतसे आ कर पहले सप्तग्राममें बसे थे, वहाँ उनके चौदह सौ घर हैं । किसी सुमलमान नवाबके इनकी किसी स्त्री पर अत्याचार करनेके कारण ये सप्तग्रामको छोड़ कर कुयदहमें आ कर रहने लगे । विशालीस ग्रामियोंका भी अपने भादि इतिहासके सम्बन्ध में ऐसा ही कहना है । ये बङ्गालमें सप्तग्रामियोंके पीछे आये हैं परन्तु संख्या इन्हींको अधिक है । चौदहग्रामियोंका फिलहाल ज्यादा सम्मान नहीं है । विशालीस-ग्रामो धार्कके पटोवरसिंह, वर्द्धमानो धार्कके श्रीमन्त पानकी एक कन्याके साथ विवाह करनेके कारण, पिताके द्वारा घरसे निकाले गये थे और शबरके साथ हुगली जिलेके बौद्धी नामक ग्राममें आ कर रहने लगे थे । ये

को चोदवामो यात्रके प्रयत्नक है। इन्दिने पयने बनेके प्रभावने निबटवतीं चोदवामोने ताम्रुकीको पयनो त्रैकोमें मिना कर इव वाकको व्यापना को यो। इम चटमाके कुछ प्रभाव मो मिलने है बौद्धकोमें एक देव-मन्दिरके प्रस्तावण पर विधि दूव बिबरयने मान्य होता है, कि पतीरके पुव मोकुम्भे मय म० ११०४ (११०२ ई०)में इम मन्दिरको गतिहा को जो। इन्दिने यह मट्टर हा कहना न सक्ता है कि चोदवामो यात्रका प्रवर्तन इमने पोर मो १० वर्ष पहने हुआ था। सर्वमानो यात्र चोदवामोने पहले प्रवर्तित हुआ था। बोरमूव पोर सर्वमानने इम यात्रके लोग को पबिब है। चटवामिवांका कहना है, कि पवने मयवामिगोंके समकालमें वो भी उत्तरभारतने पा कर पवने चकोसामि बने ये पोर इमोनिव से पवनेको पय्य थाकीने कुछ होन समझने है। इममें कई एक शाकोंके कायप्र, कुगम परापर, शाण्डिन्य पोर व्यास गीत है।

विहारो ताम्रुकीमें प्रकान्त पादि कामम्बानके मन्ने कई एक विधियां है—सपविवा, तिरहुतिया, कनोत्रिया, भोजपुरिया, कुगम खान, सूर्यदिन पादि। ब्रह्मन्ने ताम्रुकीमें चौधरी, बेल दन है, नूर, पान, पानि, रतिन निन पोर सिद्ध, ये कपाधियां हैं। विहारने मयत पिन्नाबाना, नागव मो पोर पेटो उपा धियां है।

विहार.—इमने काम्रविवाह प्रचलित है, तथा नङ्ग कोबानेको दंडन मिन। यहुता है। व द-मयादाके अनुहार दंडनमें कमी-को-यो होती है। हरिद्राज बख बा पोत-बर्षके रेशमो बख पवना परबख इन्ने बौवाविब बमन है। ये मयमान त्रैकोके पनवर्त है; किन्तु विब वाद ब्राह्मण कायको को विबवापो व ममान पाचरव कामो है। ब्रह्मन्ने पोर चकोसामि विबवापो का पुनर्विवाह नहो होता। विहारमें विबवापो का दूमरा विवाह हो जाता है। विबवान निव कनिष्ठ देबरक पाह विवाह लगना हो मय माजलक है। कोजा होने पर मो के इमको दूमरा विवाहके कुछ होन नहो समझने। पंचायतको अनुमति ने कर फोको म्याग नङ्गने है। दरिद्रता को फिर विवाह नहो कर सकती।

ब्रह्मन्ने ताम्रुकी पाचारवता वैष्य होते है। इममें ब्राह्मण त्रैको दृषक वा पतित नहो है तथा वेबदेवता पोर चन्द्रसूर्यको ये पूजा करते है। विहारमें बन्दो पोर नरसिंह नामके पाम्बदेवता है; गहक पिठक, मिटाक, केमि पोर इको पादिबे उनको पूजा होती है। चम्पान्य नमकोको बबिषप्रतिबोंको तरव इममें मो कोरे कोरे—बिषयकर्मो यखपूजाको तरव—बंगालो वि मा में चुनादान, पान, सरोता पोर बत(नो पादि)को पूजा क्रिया करते है। इममें १० दिनका पयोच होता है।

ताम्रुकीमें खेतो करना पोर पाल बचना इनका पादि-व्यवसाय है। उत्तरभारतमें पव मो पबिवांग तमोको पाल बचने बीका काम करते है, किन्तु ब्रह्मन्ने तमोकीदिने प्रायः जातीय व्यवसाय छोड़ दिया है दुकान टारो चनात्रवा रोजनार पोर चुना पादि बचनेका काम करते है। बहुतेने नीम दपतरोंमें केपामोका काम करते है पोर बहुतेने कसोदारीके यज्ञ गुमाफो का काम करते है। इन्ने मिना बहुतेने उत्तम श्रोविवाका पननगर कर लिया है। जो कविधायं करते है ने स्वय इम नहो बनते। मत्सूके विचयमें आ पोराचिब वा कान विधियां मिलता है, उनमें किमोने सिनो सो पोर सिनोने तमोकोको यह प्राति माना है। परापरके मतने तैको पो। ब्रह्मन्ने वनपुराचके मतने ताम्रुको मत्सू है। ब्रह्मन्ने पबिवांग क्याने ताम्रुको बैरावार मानने है। ये प वान, गोषा, ईटा पादि मन्ब होन मयार नहो धाने।

पूनाके तमोकीदिने पियगोंके मयममें नतारा पोर पदमदनगरने पा कर बहां पानका व्यवसाय क्रिया वा। ये मराठी कुनबियोंक नाम पाचार व्यवहार करते है पादान प्रदान मो होता है। इममें मयाराइयो उपा धियां प्रचलित है। समोपधि कानिद्योमें परम्पर पाशन प्रदान नहो होता। ये बय्या चुना लपारो पोर पान बचने है। इमको धियां रोबगारमें म्यामिन नहो होतो। नङ्गकोको पड़पा नहो जाता। इममें कुछ मुमनमान मो है मो उपायमें कुनको धिः पोर इमिबके प्रभावके मुननमान हो मये है। ये पायनमें चिन्दी पोर दूमरो के पाय मराठी कोरते है। इमको दोमाक मराठी त्रैको

के, ये पानका रोजगार करते हैं। इनकी स्त्रियां घब भो अनेक हिन्दू क्रियाकलापोंका अनुष्ठान किया करते हैं। वे अपनी ही श्रेणीमें आठान प्रदान करते हैं। धारवारके हिन्दू ताम्बूली खत्री और अत्यन्त शराब पीनेवाले हैं। दक्षिणात्यमें मभो स्थानोंके सुसलमान तम्बूली हानिकी सम्प्रदायके सुन्नी सुमलमान और सर्वत्र एकसे आचारके हैं। सुमनमान तंबूली पान खरोद कर लाते और दूकान पर बैठ कर बेचते हैं।

ताम्र ( सं० लो० ) तस्यते आकाङ्क्षते तम रक्ु दोर्घश्च ।  
अमितम्यादीर्घश्च । उण् २।१६ । १ तैजस धातुमेद, तांवा ।  
पर्याय—ताम्रक, शम्ब, स्नेच्छमुक्त, ह्यष्ट, वरिष्ठ, उडु-  
न्वर, द्विष्ट, उदस्वर, उदुस्वर, तपनेष्ट, अश्वक  
अरविन्द, रविलोड, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु,  
सुनिपित्तल, अर्क, सूर्याङ्ग और लोहितायस । (शब्दरत्ना०)

हिन्दी और बङ्गला	तांवा, तामा ।
गुजराती	ताम्बा, ताम्बु ।
कर्णाटक और मराठी	ताम्र ।
तामिल	शैवु, सेम्बु ।
तेलगू और मलय	रागि, ताम्रम्बु ।
भूटान	जङ्गल, नौलठोकर ।
पञ्जाबी	नौल टुसिया ।
अरबी	नौहस ।
फारसी और तुर्की	मिस ।
बरमा	केयानी ।
चीन	चिटुङ, टुङ, चिक्किन ।
टिनेमार	कोवार ।
फरसोमी	कुडभर ।
श्रीलन्दाज ( हॉलैण्ड ) सुडडेन	कोपर ।
जर्मनी	कूपर ।
इटली	रामे ।
नेटिन	किउप्रास ।
पोलैण्ड	मियेज ।
पुर्तगोज, स्पेन	कैम्बर ।
रुस	क्रीम्सनयजिड्, जेड् ।

पुराणोंमें इसकी उत्पत्तिका विवरण इस प्रकार लिखा है—पूर्वकालमें गुडाकेश नामक एक महासुरने ताम्रका रूप धारण कर विष्णुको आराधना की। विष्णुके सन्तुष्ट होने पर उस असुरने विष्णुके चक्रसे मरनेकी कामना की। विष्णुने भक्तको वासनाको पूर्ण करनेके लिए वैशाख मासको शुक्लद्वादशीके दिन उसको चक्रद्वारा मार डाला। उस असुरकी विष्णुलीक प्राप्ति हुआ। पोछे उसके मांससे ताम्र, रक्तसे सुवर्ण, अस्थिसे रोप्य आदि तथा उन सबके मलसे अन्याय धातुएं उत्पन्न हुईं ।

( बराह्मण० )

मतान्तरमें ऐसा भी है, कि कार्तिकेयका जो शूक्त पृथिवी पर गिरा था, उसमें ताम्रकी उत्पत्ति हुई। ( अवप्रकाश )

ताम्र धातु जिम आकारमें साधारणतः बाजारोंमें देखनेमें आते है, खानसे ठोस वैसी हो नहीं निकलने। अन्यान्य धातुओंकी तरह खानमें भी यह अधिकतासे विशुद्ध अवस्थामें नहीं मिलती ।

फिलहाल मालूम हुआ है, कि भारतके उपक्षीपांगों में ही ताम्रकी खानें अधिक हैं। सिंहभूम जिला तथा घनभूम राज्यमें ताम्रकी अधिकताके कारण वहाँ खनिके कामके लिए कितने ही वार कितने ही वणिक्-दलोंका संगठन हुआ है, किन्तु किसीकी भी सफलता नहीं हुई। हजारीबागमें बरागण्डा नामक स्थानमें ताम्रकी खान दिखलाई दी है और चिङ्गसे यह भी मालूम हुआ है, कि वहाँ पहले भी खदानका काम होता था। फिलहाल उन खदानोंके चलानेकी व्यवस्था हुई थी। राजपूतानेमें देशोय राज्योंमें कुछ ताम्रकी खानें हैं, अंग्रेजोंके अधिष्ठत अजमेरमें कुछ अंग्रेज-वणिकोंने खोदनेका काम जारी किया था, पर फिलहाल बन्द भी बन्द है। कुमायूं और गढ़वाल जिलेमें ताम्रकी खानें होने पर भी उनको अजमेर जैसी दुर्दशा ही गई है। दार्जिलिङ्गके बाच जोंगडो नामक स्थानको आकर-में एक खदानका काम चल रहा है। पश्चिम-हारमें जितनी खानें हैं, उन्हें नेपाली लोग चलाते हैं। मन्द्राजमें कमुल और नेल्लूर जिलेमें खानका काम चल रहा है। भारतमें ताम्रकी खानोंके विषयमें नवोन कुछ जानने योग्य विवरण नहीं है। पहले भारतमें देशीय लोग ही



आविष्कार हुआ है। काश्मीरमें जान्स्कार नदीके किनारे अति उत्कृष्ट तांबा मिलता है, जिनमें थोड़ा अंग चांदीका भी मिला रहता है।

तांबेका इतिहास — अति पुराकालसे ही तांबा मनुष्यों का परिचित हुआ है, यहां तक कि लोहेके आविष्कारसे पहले भी तांबेके गस्त्र प्रादि बनते थे। आदिम जाति लोहेसे पहले इसका व्यवहार करते थे। कारण शायद यह होगा कि अन्यान्य धातुओंके खानमें निकाल कर व्यवहारिक धातुरूपमें प्रस्तुत करना पड़ता है, किन्तु इसके लिए वह नियम नहीं, क्योंकि खानसे ही व्यवहारोपयोगी अवस्थामें निकलता है। यह अत्यन्त आघातको सहनेवाला है और इससे तार भी बनता है।

रोमकोंकी यह काइप्रास् (साइप्रास्) द्वीपसे पहले पहल मिला था, इसलिये इसको पहले 'कइप्रियाम्' कहते थे, क्रमशः विगड़ते विगड़ते उसको किउ-प्रान् (कु-प्राम वा कपर) रूप हो गया है।

खानमें तांबा नाना अवस्थाओंमें मिलता है, जैसे - अकसाइड, लोराइड, कार्बनेट, फस्फेट, सालफेट, आर्सेनेट, मिलिकेट भानाडिट, साल्फाइड और व्यवहारिक धातु। प्रकृतिके प्रायः सर्वत्र और सर्व पदार्थोंमें थोड़ा-बहुत तांबा है। मसुद्रके ढग आदिमें भी तांबेके अंग हैं, अतः यह मानना पड़ेगा कि मसुद्रके जलमें भी तांबा है। उच्च श्रेणीके जीव शरीरमें भी तांबा है। आटा पूला, घास, मांस, अण्डा, पत्तों आदि सभी चीजोंमें तांबा है। जब रक्तमें भी तांबेकी सत्ता है, यक्षत् और मृत्रयन्त्रमें तांबेको सत्ता शरीरके अन्यान्य अंशोंकी अपेक्षा बहुत ज्यादा है। ऊपर जितने तरहके तांबोंका वर्णन किया है, उनमें सभो प्रकारके तांबोंसे व्यवहारिक तांबा नहीं मिलता।

खदानके भीतर आकर तांबेके साथ व्यवहारिको तांबा सर्वदा ही मिलता है, — कहीं पतला, कहीं छोटे छोटे तुकड़ी लुकेके रूपमें और कहीं बड़ी बड़ी टुकड़ों (solid blocks) के आकारमें मिलता है। अमेरिकाके सुपिरियररदके किनारेको खानमें व्यवहारिक धातु ही अधिक पायी जाती है। यहां एक एक थानका वजन ५०० टन तक होता है। उत्तर-अमेरिकामें तांबेकी

सदी ३ अंग चांदी निकलती है। यह चांदो एक टुकड़े तांबेके साथ भली भांति मिश्रित रहती है और कहीं कहीं तांबेके साथ चुर्णवत् वा सूत्रवत् अवस्थामें पायी जाती है।

आकर-तांबेमें नाना वर्णव्यत्यय देखनेमें आते हैं, ये ही तांबे सल्फाइड अवस्थापन्न हैं।

१. घूसर तांबा (Grey sulphide of copper) — इंग्लैण्डमें यह कर्नवाल नामक स्थानमें सर्वदा मिलता है।

२. बंगने तांबा (purple copper, — तांबा और फेरिक सल्फाइड ( Cuprous and Ferric sulphides) विभिन्न अनुपातसे मिश्रित होने पर इस खनिजको उत्पत्ति होती है। यह तोन प्रकारका होता है, एकमें फो सटो ७० भाग, दूसरेमें ६० भाग और तीसरेमें फो सटो ५६ भाग असली तांबा रहता है। कर्नवाल, सुड्डेन और उत्तर-अमेरिकामें यह बहुतायतसे मिलता है।

३. पाइराइट्स वा पीला तांबा ( Copper pyrites or yellow copper ) — इस श्रेणीका तांबा अधिक मिलता है। इसमें फो सटो ३४ ४ अंग तांबा होता है। कर्नवाल, डेभनसागर, सुड्डेन, किउवा द्वीप, दक्षिण-अमेरिका और यूनाइटेड स्टेट्समें बहुत जगह ऐसा तांबा मिलता है। कर्नवालको खानमें हर साल यह एक लाख पचास हजारसे ३० हजार टन तक उत्पन्न होता है। इससे व्यवहारिक तांबा प्रायः १२ हजार टन बनता है।

४. फाल्लर वा असली भूरा तांबा ( Fahlore or true grey copper ) — इसमें बहुतसा धातुएं मिश्रित रहती है, जिनमें प्रोटोसल्फाइड तांबा (Proto-sulphide of copper), आर्सेनिक, रसाञ्जन, जस्ता, लोहा, चांदी और पारा ही अधिक है, फो सटो ३०से ४८ अंग विग्रह तांबा निकलता है। पारा फो सटो २से १५ अंग तक रहता है। चांदी जिनको कम होता है, विग्रह तांबेका परिमाण उतना ही ज्यादा होता है। गन्धक और रसाञ्जनके मिश्रणसे इसको और भी एक श्रेणी उत्पन्न होती है, जिसको 'सुल्फांटाइमिन्ट' ( Sulphantimonite of copper ) कहते हैं।

१ अटाकमिटाइट (Atacamite)—यह पीछे और चिन्तो  
 द्वयमें मिलता है। इसको Oxchloride of copper  
 भी कहते हैं।

२। जिस्कोकोला (Ohrroculla)—सब द्वयमें तथिडी  
 जदानेमें यह मिलता है। इसको Silicate of copper  
 कहते हैं। इन दो धातुओंमें से ताँबा पृथक् बिद्या जा  
 सकता है।

तथिमें तद्वित-परिष्कारण शक्ति चांदीके सिवा पन्थाः  
 धातुओंकी अपेक्षा बहुत ज्यादा है। इसीलिए हम  
 तारको सजावटाथे ताद्वितकाराँ वा तार भिजा जाता है।

ताँबा प्रायः सभी प्रकारकी मोलिक धातुओंके साथ  
 मिला रहता है, जिसका अधिकांश प्रयोग पादिमें व्यव  
 हार होता है। नाइट्रोमिनेरलिक एसिड और फामोनि  
 याके स योगमें ताँबा मरता है। अनोरदन धैर्यके  
 स योगमें ताँबा लस सकता है।

तथिमें निम्न काममें पाने कायक और कुछ मिश्रित  
 धातुएं बनती हैं। जैसे पोलन—पीक रेको। सुन्धको  
 धातु (Muntz's Metal) प्रिन्सको धातु (Prince's  
 metal), मोनेयिक स्वर्ण (Monale gold), सब डिम  
 स्वर्ण (Mannheim gold) लकन ब्रोन्ज (Immita-  
 tion bronze) सिमिलर (Similor) टोम्बाक Tom-  
 baco) और काँसा (Belo metal)

तथिका पारबिक शुद्ध ११.०५ है, पापिचिक तापदे  
 १०० से मज ०.०८१११ परफासिदसे पापिचिस सुवल  
 में मिलित होती है। यह तथिका पापिचिक शुद्ध  
 ८.०० है।

तथिका स्याद कमोना है, इसमें पाचिता गुण है।  
 तथिको ज्यादा देर तक हाथमें रखनेसे भी जो धूमने  
 सज्जा है। यह चाँदीसे ज्यादा और पक्कन सतसह है।  
 पीट कर इसका इतना भारोच करक बनाया जा सकता  
 है, कि वह इथामें डूबने लगता है। इसमें तार भी  
 बहुत महीन बनता है। ०.००८ इंच मोटे तार पर  
 १०१ १५ पीछे बरन लटकारने पर भी वह टूटना नहीं।

सर्वे या इथामें रखनेसे यह पर लह लान आती है जिसे  
 तथिका लकन कहते हैं। यह लकन विपाक होता है।  
 तथिमें टैन मिला कर उसको धीरे से सतसह बनाया

जा सकता है किन्तु उससे हमको मज्ज-प्रवचता बहुतो  
 है। जो सरो १ मान टोन मिन्मनिसे यह बनाईको  
 लिए योग्य कठिन, सन और धनि कर हो जाता है।  
 तबा लह नहीं लगतो। पतः टोनके मिन्मनिसे तथिके  
 द्वारा और भी अधिक कार्य होता है। १ भागमें पथिक  
 जितनी टोन मिन्मिगे उतनी हो उसको मज्ज-प्रवचता  
 बहुतो है।

१। Spoolum metal—तथिसे साथ; प ग टोन  
 मिन्मनिसे लो धातु बनतो है, उसमें पान्थाक प्रतिरोध  
 करनेकी शक्ति बहुतो है; इसीलिए हमको सन्धुक्कन धातु  
 कहते हैं। प्रिन्सका लकन है कि पहले हम धातुसे  
 दर्पक बनते हैं। हमारे द्वयमें भी कानिक दर्पक बनते  
 टीच पड़ते हैं। वर्मानमें बहुत प्रसह पूजा, बिनाइ  
 पादि कार्योंमें कानिका टुकड़ा (प्रिन्स होने पर भी)  
 दर्पकको तरह काममें लया जाता है।

२। Muntz's metal—अधात्र धीरे बहुतो बड़ो  
 नावोंके लोके यह धातु व्यवहृत होती है। १८२१ ई में  
 मि० लो एच० सुन्धको इसका पेटिप्ट दिया गया था।  
 ६० भाग तथि और ४ भाग अर्द्धसे यह धातु बनतो है।  
 टाक कर इसको बड़ो बड़ी चहरे बनाई जातो है।  
 चहरोके बन जाने पर उनको गन्धक प्राप्त करने से दिना  
 जाता है। यह टेकनेमें पोखी होती है, निष्कालि  
 तथिको चहरोके अपेक्षा यह धातुको चहरेसे सर्वेभ  
 पक्को तरह पाचित होता है। तथिको अपेक्षा इसमें  
 तना मज्जमें कम कार्य पड़ता है किन्तु कुछे कडाको  
 से लिए यह भी इसका व्यवहार नहीं होता।

३। Prince's metal—८० भाग तथिसे साथ २०  
 भाग अर्द्धा टोन और सोधा मिन्म का यह धातु बनाई  
 जाती है। इसमें श्रेष्ठ धातुको तरहसे न यकी बनईको  
 ल सकता है। ८१ १ भाग ताँबा और ११ १ भाग  
 अर्द्धा मिन्म लीनेसे हम धातु पर लीनी सजा कर मूर्ति  
 बनाई जा सकता है। इसका र स धीरे लान होता है।

४। Monale gold—बहुत लच्छे कान पर समभागमें  
 अर्द्ध और तथिको मिला कर मिलाया जाता है। उस  
 कथित रूपको लक लीटा जाता है, जोटमें समथ जि  
 उसमें जोड़ा गया मिलाया जाता है। जोटमें पीटने



अन्तमें उसका रंग बटन कर विस्फुल सफेद हो जाता है। उसके बाद ठण्डा होने पर उसका रंग सुनहरी हो जाता है। इसको Mosaic gold कहते हैं।

५। Mannheim gold—यह धातु भी प्रिन्स धातुके समान है, पर उपादानके भागोंमें कुछ तारतम्य होता है।

६। Tombac—८४.५ भाग ताँबा और १५.५ भाग जस्ता मिना कर वह धातु बनाई जाती है। यह कड़वा अत्युक्ति नहीं, कि इसके समान वातसह धातु और दूसरो नहीं है। इसका तार भी बहुत महान और बढ़िया बनता है।

७। Immitation bronze—ये दो वस्तुएँ भी प्रिन्स धातुके समान हैं। भागोंमें इतना तारतम्य है। कि इसमें ६६ भाग ताँबा पड़ता है और ३२ भाग जस्ता। इसका रंग साफ पोला है; इससे मूर्तियाँ बना करती हैं।

८। कॉपा (Bell-metal or bronze) काँस्य देखो।

टोम्बक धातुको घोट कर उसमें ८४.५० इंच पतलो चहर बनाई जा सकता है। इस तरहको पतलो चहरको “ओलन्दाजी धातु” (Dutch metal) कहते हैं। ब्रोन्जरंग और ब्रोन्जचूर्ण भी इसी ओलन्दाजी धातुको विरोजा और पानोके साथ पोस कर बनाया जाता है; कहीं कहीं तैलके साथ भी पोस लेते हैं।

ताँबा अति पवित्र धातु होनेके कारण, हमारे देशमें देवपूजाके सम्पूर्ण वरतन आदि इसीसे बनते हैं, जैसे—ताम्बकुण्ड, घट, घटी, पृथ्पमात्र, जलग्रह आदि। ताँबेके पुष्पपात्रमें नाना प्रकारके नक्षत्र खुदे हुए होते हैं। हिन्दुओंका विश्वास है, कि कलिकालमें ताँबेके पात्र पर रत्न कर भोजन करनेका निषेध है, किन्तु सुसलमान लोग प्रायः हमेशा ताँबेका बरतना काममें लाते हैं। वे हंडा, डेगची, रकाबी वगैरह सभी वरतनों पर कलई चढ़वा लेते हैं। ताँबा खरनेके लिए वे बड़े बड़े ताँबेके हंडे काममें लाते हैं।

आयुर्वेद, ऐलोपायिक, होमिओपायिक, हकीमी और भवधौतिक चिकित्सा-प्रणालीमें नाना तरहसे औषधके लिए ताँबेका व्यवहार होता है।

जो ताँबा जवापुष्पको तरह लाल, खिन्ध और कौमल है, जो आघातमें नष्ट नहीं होता। और जिसमें लोहा वा सीसा मिना नहीं रहता, वही ताँबा उत्तम है और मारणके लिए उपयोगी है।

जो ताँबा काला, रूखा, अत्यन्त खच्छ वा सफेद और आघातसे नष्ट हो जाता है, तथा जिसमें लोहा और सीसा मिना होता है, वह ताँबा दूषित है। ऐसा ताँबा मारणके लिए सम्पूर्ण अनुपयोगी है।

ताँबेको शोधनविधि—ताँबेका बड़न वारीक पत्र बना कर उसे आगमें जलावे। पीछे उसे ज्वलन्त अद्धारवत् तप्त अवस्थामें तैल, तक्र, काजो, गोमूत्र और कुलथोका काय, इन सब द्रव्योंमेंसे प्रत्येकमें तीन तीन वा डुबाने पर ताँबा चिश्क होता है।

अशोधित ताम्र विषसे भी ज्यादा अनिष्टकर है; क्योंकि विषमें तो मिर्फ एक ही प्रकारका दोष है और जिना शोधे हुए ताँबेमें ८ प्रकारके दोष भरे हैं। अशोधित ताँबेके सेवन करनेसे भ्रम, कं, दस्त, पसीना, उत्कोद, मूर्च्छा, दाह और अर्चि उत्पन्न होते हैं। यह अष्टदोषयुक्त ताँबा ही एक मात्र विष है।

ताम्रकी मारणविधि—ताँबेकी पतली पतली पत्तियों को आगमें जलावे, फिर तीन दिन अन्तमें डुबो कर खरल में डाले और उसमें चतुर्थांश पारद डाल कर अन्तके द्वारा एक प्रहर तक घोंटे। पीछे खरलसे निकाल ले। फिर दूना गन्धक अन्त द्वारा पोस कर उन ताम्रपत्रोंको लेप कर गोलकाकति करे तथा खरस (अदरख), हिलमोचिका वा पुनर्णवा पोस कर कल्क बनावे। उस कल्कके द्वारा उक्त गोलकके ऊपर दो अंगुल परिमित लेप दे। उसके बाद उस गोलकको एक पात्रमें स्थापन करें और वातुका द्वारा उस पात्रको भर कर उसका मुँह एक सरबेसे ढक दे। फिर मिट्टी, नमक और पानी एक साथ मिना कर पात्र और सरबेके बीचको सेँधको बन्द कर दें। पीछे चूल्हे पर चढ़ा कर चार प्रहर पर्यन्त अग्नि के उत्तापमें पकावे। अग्नि के उत्तापको क्रमशः बढ़ाते रहना चाहिये। इस तरह पाक करके, शीतल होने पर, गोलकको निकाल कर जिमीकन्दके (ओलके) रसमें एक प्रहर तक घोंटे और फिर उसे ओलके भीतर भर दें।

उमक बाट उम तिमो कलके चारो तरफ एक पशुन मोटो मिठो वोव कर यत्रपुटने बमका पाक करे । इम तरफ तास्य मारित होता है । यह मारित तास्य यमन, बिरेचन भ्रम, क्रम, चर्चवि बिदाह, छोट पोर लहोट को बमो मो लहो बोने नेता ।

मारित तास्ये पुन—यह कपाय मधुर, तिक्त, पच्य रस, कटु, विपाक, मााक विलगयय ककापडाक, बीय, ब्रह्मरोपक मधु सिपनसुपबुक् बिधिप् हृष्य तथा पाण्ड, उदर, पाय, ज्वर, कुष्ठ, काय, ध्याम, चय पोमन, चर्यवित्त शोष, कृमि पोर शूलबी नाय करमे माना है ।

यमभ्यञ्ज मारित तास्यके निहन करमेने दाह, स्वेद, चर्चवि, मुष्कः, छोट, बिरेचन बमन पोर भ्रम उपपिन होता है । ( भाष० )

रक्षिन्नुभारम यङ्के मतने तथिम पाठ प्रकारेण दोव है । इमनिय तास्यका शोधन करना चाययाज है ।

छाप्रपोवन—ककडु पोर पचकनके दूधमे तथिको पत्तोको सेप कर, पायमे जला कर मन्कामुके पत्तके यममे छोड़ दिनेमे तास्यका शोधन होता है ।

मनाभारमे पैना भी है, कि गोमूत्रमे तास्यपत डाप कर एक मकरतक गृह सित्र पाय वर पाक करमेने ताबा न शोधित होता है ।

याम्र व—दूमे गन्धकके साथ पारेको हुतकुमारोके एकमे छोट कर तांबेको पत्तो पर पोत, फिर उमको कचकपदमे चार पहर तक पकावे, शोतन बोने वर उमका चूच बना कर नव रोमेमे प्रयोग करे । तांबेके पत्र पर काशीरी नोबुका रम मेधा ममक पोर मस्यकना सेप दि कर मस्य बोने तक उमका पुटपाक करे । इम तरफ तास्यपाक होता है ।

बिकोके मतने—तांबेको पत्तोको कचक चार चार काशीरीके रबमे एक दिन छोट कर उन पर मित्र पोर पचकनका दूध पोत कर बार बार कनाथे पोर मन्कामुके रबमे निरिचक करे । दोहे मसमाम पाण्ड दूध, बो चोः गन्धक मिना कर तोन का पुटपाक करनेमे मस्य चो कायमी; पन्नामनने तोन पुट रहे ।

शोधित तास्ये पुन—यमुपान विमियठ माक शिवन

करनेमे चय कुष्ठ, पाण्ड, शूल, मीट, चर्म पोर नातरोग नट जाता है । एक रतोसे दो रती तकको मामा चर्च मर मेवन करनेसे मीट, मधु पोर उरु नट हो जातो है ।

शोधित तास्य उषता विवदोष, यक्ष्ण, डोडा, उदधो, कृमि शूल यामवात पक्ष्मो, चर्म पोर चर्चवित्त पादि नट करता है । ( रक्षेयवा० )

तांबा चर्यः स योग्ये यह होता है । उषवन्नेन पुष्ये ( मधु० )

तास्यके पाकमे मोहन न करना चादिदे । मेघपूजा पादिमे तास्यके पात्र की प्रयत्न है, देवपूजामे तास्य निर्मित पाक हो व्यक्त होता है ।

२ कुष्ठमे एक तरफका छोट । ३ रत्नचर्म, मान रस । ४ पोपमैद, एक दोपका नाम । ( भा व १/११/१० ) तास्य—मधियादुरवा एक प्रसिद्ध सेनापति । यह दानक इन्द्रबमादि नेत्रोके माय पातर कुष्ठ करनेके बाद चन्तमे देवोके हावमे निवत हुआ था ।

( हिरीनः ० ५५ १८५५ )

तास्यक ( म० क्षो० ) तास्यपायं कम् । तास्य, तांबा । ताक रेको ।

तास्यकपञ्च ( म० पु० ) १ निधानप्रधान कपञ्च पुष विमिय एक प्रकारका पेड़ । २ शिखरतिर इम मान चौर का पेड़ ।

तास्यकर्षो ( म० स्तो० ) तास्यवर्षो कर्षो यम्बा' कदुमोः श्रियो बीव । १ पथिमदिक्पत्तोको पत्रो पथिमके दिम्पत्रको पत्रो पञ्चना । २ तमिरा कच जो तांबेका बरतन बनाता हो ।

तास्यकार ( म० पु० स्तो० ) तास्य करोनि तास्यवातुमि पात्रादिक निर्धैति हृष्य । कच लहर जातिविमिय । इमके क स्तल पण्ये—ताम्विक शोधिक पोर तास्य कुष्ठक । इम प्रातिभे विपयमे पनेक ममनेट है । जिमे के मतने पायोग्य ( कर्कुरे ) के पोरम पोर बिपाके गर्भमे इम प्रातिभो उत्पत्ति है ।

“आरोपदेन विधाया कानागान्धोःशोधित ४”

शुद्धं चोरम पोर शैश्राथि ममके पायामव प्राति कचक दूर है । यह तास्यकार ( तमोरा ) जानि क मकार ( कथेरो ) जानिक यमार्गत है पोर फिर बिनीके मतने

यह जाति देश्या और ब्राह्मणके सम्भोगसे उत्पन्न हुई है। किसी तोमरेका मतानुसार विश्वकर्माके श्रोगम और शूद्रों गर्भसे इस जातिका उत्पत्ति हुई है। ये ताँबेके बरतन बना कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं।

कास्यकार देखो।

ताम्रकिलि (मं० पु०) लोहितवर्णका कोटविशेष, बोरघड़ो नामका कोड़ा।

ताम्रकृष्ट (मं० पु० स्त्री०) ताम्रकृष्टयति कुष्ट-अण् । १

ताम्रकार तमरा। ताम्रकार देखो। २ तमाकूका पीड़।

ताम्रकुट्टक (मं० पु०) ताम्रं कुट्टयति कुट्ट-ग्वुल् ।

ताम्रकार देखो।

ताम्रकुण्ड (सं० स्त्री०) कुण-ड ताम्रमयं कुण्डं । ताम्रमय जलाधार पात्रभेद, ताँबेका बना हुआ एक प्रकारका बरतन। इसमें जाने समय जल गिराया जाता है।

ताम्रकूट (सं० पु० स्त्री०) ताम्रम्य कूटमिव। क्षुपविशेष तमाकू। तन्त्रके मतसे सन्विदा, कालकूट ताम्रकूट, धुसुर (धुसुरा), अहिफिन (अफीम), खल्ल ररस, तारिका (ताड़ी), और तरिता (भाग, गांजा) ये आठ प्रकारके सिद्धद्रव्य हैं।

ताम्रकृमि (सं० पु०) ताम्रवर्णं, कृमिः कीटः मध्यलो०। इन्द्रगोपकोट, वीरबह्नी नामका कोटा।

ताम्रगर्भ (सं० स्त्री०) ताम्रगर्भ-इव उत्पत्तिस्थानं यस्य बहुव्री०। तुल्य, तृनिया। यह ताँबेसे उत्पन्न होता है।  
तुल्य देखो।

ताम्रचक्षु (मं० पु०) ताम्रचक्षुषी यस्य बहुव्री०। लाल नेत्रवाला, कपोत, कवूतर।

ताम्रचूड (सं० पु० स्त्री०) ताम्रा रक्त-चूडा यस्य बहुव्री०। १ कुकूट, सुरगा। सुरगा भौत हो कर 'कुकू कू' शब्द करता है। रातमें यदि वह उक्त शब्द छोड़ कर दूसरे तरहका शब्द करे तो भय होता है। किन्तु रात्रिके अवसान होने पर स्वस्थ चन्द्रचूड तारस्वरमें स्वाभाविक शब्द करनेसे राजाका राज्य और देशकी वृद्धि होती है।

(वृहत्सं० ८६।२४) कुकूट देखो।

२ कुकूरुद्रम, कुकरौधा नामका पौधा। ३ कुमार शुचर मातृभेद, कार्तिकेयके एक अनुचरका नाम।

“सुमगा लम्बिनी लम्बा ताम्रचूडा विकामिनी”।

(मातृ ४७ अ०)

(त्रि०) ४ रक्त शिखायुक्त, जिसकी चोटी लाल हो।

ताम्रचूडभैरव (मं० पु०) भैरवभेद।

ताम्रजात (सं० पु०) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न ओक्षणके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश १६२ अ०)

ताम्रतनु (सं० त्रि०) जिस शरीरका रंग ताँबेके जैसा हो।

ताम्रतुण्ड (सं० पु०) एक प्रकारका बन्दर। इसके मुखका रंग ताम्रवर्ण होता है।

ताम्रवपुज (सं० पु०) ताम्रवृक्ष तपु च ताभ्यां जायते जन ड। कास्य, कामा।

ताम्रत्व (सं० स्त्री०) ताम्रस्य भावः ताम्र-त्व। ताम्रका भाव, रक्तवर्ण।

ताम्रदुग्धा (सं० स्त्री०) ताम्रं रक्तं दुधं क्षीरं रसो-यस्या बहुव्री०। गोरचदुग्धा, गोरखदुग्ही, अमरसंजीवनो।

ताम्रद्रु (सं० पु०?) रक्तचन्दन।

ताम्रद्वीप (सं० पु०-स्त्री०) दक्षिणदिशिस्थित द्वीपविशेष। दक्षिणदिक् विजयके समय महर्षिने यह द्वीप जय किया था। ताम्रपर्णा देखो।

ताम्रधातु (मं० पु०) ताम्र, ताँबा। ताम्र देखो।

ताम्रधूस्र (सं० त्रि०) कृष्ण औरदुःशक्तवर्ण, समेडा, लाल रंग।

ताम्रध्वज (सं० पु०) रत्ननगरके राजा मयूरध्वजके पुत्र। इन्होंने युवमें अर्जुन और ओक्षणको पराजय किया था।  
ताम्रलिप्त और मयूरध्वज देखो।

ताम्रपत्ता (सं० स्त्री०) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न ओक्षणकी एक कन्याका नाम। (हरिवंश १६२ अ०)

ताम्रपत्नी (मं० पु०) ओक्षणके एक पुत्रका नाम।

ताम्रपट्ट (मं० स्त्री०) ताम्रनिर्मितं पट्टं मधालो०, कर्मधा०।

ताम्रमय लेखनपत्रभेद, ताम्रशासन। पूर्वकालमें राजा धर्मविद् ब्राह्मणोंको ताम्रपत्रमें भूमिका परिमाणदि समस्त विवरण लिख कर स्वमुद्रा चिह्नित करके प्रदान करते थे, ब्राह्मण पुरुषानुक्रमसे वह भूमि भोग करते थे। इसके बाद कोई भी अन्य राजा उस भूमिका कर नहीं लेते थे। इस तरहको भूमिदान करनेको

जमिना परदल मूमिओ रसा करना पकन्ना पुष्पजनक  
 है। भारतवर्षके सब खानेके ही एम तरफके मोकड़ा  
 ताम्रपात्र पविष्कृत हुए हैं। इनमें भारतीय राजाओं  
 को ब ग्राहको और इतिहास बहुत कुछ खिर होता है।  
 ताम्रपात्र ( न० पु० ) ताम्र रज पत्र यन्त्र बहुमो० ।  
 १ ओमगाक, एक प्रकारका माग। २ रजपत्र पत्रपत्र  
 माग, एक प्रकारका पीड़ विमने पत्रे नाम होते हैं।  
 कर्मका०। ३ ताम्रमय शिल्पकर्म ताम्रिकी चद्रका  
 टुकड़ा। ४ रजपत्र पत्र यन्त्र नामरजको लो पत्तियाँ।  
 ताम्रपात्र ( म० पु० ) ताम्रपत्र रेलो  
 ताम्रपत्र—नि एम दोपका नामान्तर ( Taprobae )  
 सि एम रेलो।

ताम्रपर्णी—मन्द्राक्षरे पत्तपत तिलेदिनि जिनको एक  
 नदी। इसका स्थानीय नाम "यवने" है। टनेमी  
 पौर वैश्वसु इसका उत्तरे कर गये हैं। यह पश्चिम  
 षाट पर्वतमें निम्न कर इतिव-पूर्वको पौर बहती हुई  
 मर्मटीको तक चली गई है। फिर बहति उत्तर-पूर्वको  
 पौर होती हुई तिबेदिनिमें पाकमकोटा तक पौर बहति  
 फिर कभी टपिबको पौर कभी पूर्वको पौर होती हुई  
 बड़ोपनागरमें जा गिरी है।

करके यह नदी निम्नको है, बड़ा बितार पाटि  
 इसको पनेक उपनदियाँ हैं। ताम्रपर्णीको लम्बाई ००  
 मीलके लगभग है। इस नदीमें तिबेदिनि जिनको  
 प्रायः १८५००० बीघा जमीन नीचे जाती है। इन  
 पहाड़को सुविधाके लिये इसमें पाठ सुब दिने गये हैं।  
 इनमेंमें पाठ लो विन्दुपत्रापीके समवेत है और पाठवा  
 को पौरके कुष्ठम् नामक स्थानमें है जेके इतिव बरमेष्टमें  
 १८८१ ई०में बनाया है। यह पुन पनुदरहके २० इ०  
 फुट लंबा है। इन नदीमें बाढ़ पत्रिक या प्रातो है, तब  
 जे सब पुन बूध जाती है। इनके बिनारेका कोनडिरे  
 नामक स्थान जमी अनुदनीरेके ३ ओम एट गया है।  
 जिन्नु टनेमीका वर्णन पत्रमेंके म्याम्न बहुता है कि यह  
 स्थान अनुदवर्ती एक बन्दर का। जमी यह यामके रूपमें  
 परिचत हो गया है। ताम्रिक प्राचामे स्थानकेको पत्रे  
 मेना एम वा मेना मिदि है। कथन नामक एक  
 दूतवा छोटा दाम है जो अनुदके बिनारेके दो मीलको

दूरी पर अवस्थित है। मार्मपोको हबो कथानको बसेल  
 बतका गये हैं।

ताम्रपात्र, महाभारत तथा कभी मुख्य पुरावर्तमें इस  
 नदीका उल्लेख है। मियदर्मी पयोबके १३३ पयुयान्तमें  
 इस नदीका जो उल्लेख है उसमें लिखा है, कि टपिनमें  
 पौडुगव और पाण्डुगव ताम्रपर्णी (ताम्रपर्णी) तथा राज्य  
 करने से, उन समय बड़ा बौधधर्मका प्रभाव जोरने  
 पना हुआ था।

जहाने यह नदी निम्नको है बड़ा ताम्रपर्णी नामको  
 एक और नदी है जो पश्चिमको पौर बहती हुई बिबा  
 हुर राज्यमें प्रवेश करती है।

२ बम्बई प्रदेशके पत्तर्गत बैलपाम जिलेकी एक  
 छोटी नदी। यह मिदिहम नामक स्थानमें षाटप्राता  
 नदीके या मिनी है।

३ सिंधुन दोपको एक नदी। एम नदीके कारण  
 मन्सूरे सिंधुनका ताम्रपर्णी नाम पड़ा है। ४ मन्सूटा,  
 मन्सूट। ५ मरोवर, तालाब, बावलो।

ताम्रपर्णी ( म० पु० ) सि इन्डोपनामो बौध।  
 ताम्रपात्र ( म० पु० ) ताम्रपत्र पत्रयानि यन्त्र बहुमो० ।  
 पयोबहुत। इनके मन्सूट पर्याय—हमपुप, मन्सूट  
 बहुमि, पिण्डपुप, मन्सूटपुप और मट। ( वाचस्पत्य )  
 ताम्रपात्र ( म० पु० ) पत्रके इति पात्र' पन्-बन् ताम्र  
 रजपत्र' पात्र' परिचरितरप्राय इति इनि। गटभाण्ड  
 ह्य, पाकरका पेट।

ताम्रपात्र ( म० जो० ) ताम्रनिर्मित पात्र कर्मका० ।  
 ताम्रमय पात्र, ताम्रिका बरतन। ताम्रपात्रमें तपत्र  
 करना प्रमत्त है। जिनो दिवकार्यमें ताम्रपात्रमें जो  
 कदम करना पड़ता है। ताम्रपात्रमें भोजन करना  
 निषिद्ध है। ताम्रपात्रमें मद्यपौर दुग्ध रजनेके बह  
 प्रयत्नकी जाता है।

"तारिकेबहके पारेके लाम्पारे रिचन मनु।  
 बन् न लाम्पारव' मनुए। इन रिना।"  
 ( श्रुतीपात्र )

ताम्रपात्रमें हल रचना प्रमत्त है। ताम्रपात्रमें इति  
 पौर मान दूषणके है जिन्नु द्रव्यकारक मान पौर हल  
 कुछ टपि दूषणको नहीं है। ताम्रका पात्र प्रमत्त है।  
 ताम्रपात्रके अन्तर्गत लाम्पार ही हितकर है।

“जलप्राप्तुनु ताप्रस्य तदभावे मृतोहितम् ।” ( भावप्र० )

२ ताम्रगामन, तंबिकी चहरका एक टुकड़ा जिस पर प्राचीन कालमें अक्षर खुदवा कर भूमि इत्यादिका दानपत्र लिखते थे ।

“ताम्रपात्रे कुलं लेख्य शासनानि बहूनि च ।

एतेभ्यो दत्तवान् पूर्वं कलौ बल्लालसेनकः ।”

( हरिसिंघकारिका )

ताम्रपादो ( स० स्त्री० ) इंसपटो लता, लाल रंगका लज्जालु ।

तन्त्रपुष्प ( स० पु० ) ताम्रवर्णं पुष्पं यस्य बहुव्री० । रक्त-  
काञ्चन पुष्पवृक्ष, लालफूलका कचनार । इसके संस्कृत  
पर्याय—कोविदार, चमरिक, कुहाल, युगपत्रक कुण्डलो  
म्बलाक और सत्यवेशी । २ भूमिचम्पक । ( त्रि० )  
३ रक्तपुष्पयुक्त मात्र, जिसमें लाल फूल लगते हैं । ( कौ० )  
ताम्रं पुष्पं कर्मधा० । ४ रक्तपुष्प, लाल फूल ।

ताम्रपुष्पिका ( स० स्त्री० ) ताम्रवर्णं पुष्पं यस्याः बहुव्री० ।  
कप. टापि अतइत्व । रक्तत्रिवृत्, लालफूलका निमोथ ।  
ताम्रपुष्पी ( स० स्त्री० ) ताम्रं पुष्पं यस्याः बहुव्री० स्त्रिया  
डौप् । २ धातुकोपुष्प, धवका पेड़ । पर्याय—धातु,  
पुष्पो, कुञ्जग, सुभिजा, बहुपुष्पो और वक्रिज्जाला ।  
( भावप्र० )

२ पाटलावृक्ष, पाटरका पेड़ । ३ नागरङ्ग वृक्ष,  
नारङ्गोका पेड़ । ४ श्यामाविवृत् ।

ताम्रप्रयोग—श्रीषधविशेष, एक प्रकारको दवा । इसको  
प्रसुतप्रणाली ८ तोली परिमित ताम्रपत्रको टण्ड कर  
यथाक्रमसे आकन्दके गौद सन्हालू रस, गोक्षुरके  
रस और श्लोत्रके गौदसे तीन बार प्रक्षिप्त कर उसे  
शोथन करना पड़ता है । बाद प्रायः ४ तोला और गन्धक  
८ तोला इन दोनोंको कज्जली करते हैं और कज्जलीके  
अर्धभागको जम्बोरो नीचूके रसमें डुबो कर उसे पूर्वोक्त  
ताम्रपात्र लिप्त करते हैं । बाद अन्धमूपामें रूढ़ कर ५ पुट  
देना चाहिये ।

इसे प्रतिदिन २ रत्ती मधु और घृतके साथ सेवन  
करना चाहिये । इससे सब प्रकारके भृगन्दर और घृत  
रोग हो जाते हैं । ( भृगुज्योत्सना० भृगुज्योत्सनाधिकार )  
ताम्रफल ( स० पु० ) ताम्रं रक्तवर्णं फलं यस्य बहुव्री० ।

१ अद्वोठ वृक्ष, टैरा, टैरा । ( त्रि० ) २ रक्तफलयुक्त  
वृक्षमात्र, जिसमें लाल फल लगते हैं । ( कौ० ) ताम्रं  
फलं कर्मधा० । ३ रक्त फल ।

ताम्रफलक ( स० स्त्री० ) ताम्रनिर्मितं फलकं मध्यलो०  
कर्मधा० । ताम्रनिर्मितं पट्ट, तंबिकी चहरका एक  
टुकड़ा । ताम्रपट्ट देखो ।

ताम्रमुख ( स० त्रि० ) ताम्रं मुखं यस्य बहुव्री० । अरुण-  
वदन जिसका मुख लाल हो ।

ताम्रमूला ( स० स्त्री० ) ताम्रं मूलं यस्याः बहुव्री० अजा-  
टैराकृतिगणत्वात् टाप् । १ दुर्गलभा, जवासा, धमासा ।  
२ लज्जालु. कुईसुई । ३ कच्छूरा वृक्ष, किवांच, कौंच ।  
४ मन्त्रिष्ठा, मजोठ । ५ रक्तमूलक वृक्षमात्र, वह वृक्ष  
जिसको जड़ लाल हो । ( कौ० ) ताम्रं मूलं कर्मधा० ।  
५ रक्तमूल, लाल जड़ ।

ताम्रमृग ( स० पु० ) ताम्रः रक्तवर्णः मृगः कर्मधा० ।  
लोहितवर्णं हरिण, लाल रंगका हिरन ।

ताम्रयोग ( स० पु० ) ताम्रस्य योगः, इ-तत् । चक्रदत्तोक्त  
श्रीषधविशेष एक टैगो दवा । प्रसुत-प्रणाली—पारद १  
माना और १ मासा गन्धक, इनका यथाविधि शोधन और  
मदन करके कज्जली बनावे, पीछे उस कज्जलीको एक  
दड़ और नूतन मृत्पात्रमें रच कर, उसमें चौलाईको  
जड़का चूर्ण २ मासा डाले, वाटमें उसको १५-मासे  
कण्टकवेध-योग्य नेपालदेशीय ताम्रपत्रकी अमरोलीके  
रसमें शोधित करके पात्रस्य श्रीषध पर टक दे तथा सैई  
बना कर ताम्रपत्रकी मृत्तिका पात्रके साथ इस तरह  
जीड दे कि जिससे उसको भेद कर नोचे वाला आदि  
के घुमने पावे । फिर उस पात्रकी वालूसे भर दें ।  
तत्पश्चात् उस पात्रके नोचे एक घण्टे तक आग जलावे,  
फिर पात्रकी उतार लें ।

शीतल होने पर पात्रके उपरिस्थित वालूको निकाल  
ले और निम्नस्थ ताम्रपात्र, कज्जली आदिको उठा कर  
एकत्र खलमें घोट लें ।

उक्त पेपितचूर्ण १ रत्ती, त्रिफलाचूर्ण, त्रिकटुचूर्ण  
और विडङ्गचूर्ण एक एक रत्ती, इनको एकत्र मिला  
कर घो घोर मधुके साथ चाट कर ऊपरसे ठण्डा पानी  
पीना चाहिये । उक्त द्रव्यको १ रत्तीसे ले कर १२ रत्ती

तत्र समय एक एक रक्तो बहना चाहिये । पीछे १२ दिनके बादके एक एक रक्तो छटा कर मेहन करे । उक्त शोधनके साथ त्रिफला और त्रिकटुपुष्प को मासा भी एक एक रक्तो बहाई जाती है । परन्तु त्रिकटुकी मासा बहा कर एकही रखनी चाहिये । यदि रोगीको कोष्ठबन्धता हो और उसमें विरैचन आबन्धन समझे, तो त्रिकटुपुष्प २ रक्तो देई, इससे कोठा साफ हो जायगा । यह ताम्ब्योव पचयोरोगको एक उत्तम शोधन है । इससे चक्रवर्ति, चतुष और शूलरोम बिनष्ट होता है, बस और बसको हवि भी कर भस्मिको हवि होती है ।

( चक्रवर्त - प्रह्वनिकार )

ताम्ररसायनो ( स० शौ० ) ताम्ररसज रजनिर्वापक चयनी, ३ तत् । मोरचतुष्प, एक प्रकारका पीड़ त्रिफला रस दुग्धसा सपेद होता है ।

ताम्रसिद्ध—एक प्रति प्राचीन ज्ञानपद । महाभारत मोक्ष पत्र ( ८१०५ ), हरिवंश ब्रह्माण्डपुराण, पचय परिमिष्ट आदि शौराचित प्रज्ञोति इसका उल्लेख है । शब्दज्ञानको त्रिकाण्डशेष और शिवशब्दके प्रतिपादनविश्वामित्रिमें इसका कई एक पर्याय दिये गये हैं—

तमोक्तिः, ताम्रसिद्ध, शैलाङ्गुल, ताम्रसिद्धा, ताम्रसिद्धा, शामसिद्ध, ताम्रसिद्धो, विष्णुसिद्ध ।

जैमिनिभारतमें रामनगर और बङ्गालके क्षत्रीदामके महाभारतमें राजासतोपुर नामके इसका उल्लेख है । इसका क्षत्रीय एक प्राचीन नाम राजावर भी है । वर्तमान नाम तमोक्त, तमसुक्त वा तामसुक्त है ।

पाठ्यायमोक्षिके द्रव्येमीनि ताम्रसिद्धि ( Tamil-lee ) एक महावय और हायव शब्दार्थने ताम्रसिद्धि नामके इस क्षान्द्रा उल्लेख किया है । दोनों को शब्द सजातके लक्षण है ।

— शीक-भूत मिगाक्षनिर्ममे यज्ञके उच पार ताकति ( Taloota ) नामको एक जातिका उल्लेख किया है । यद्युवादक मैलिचल्ल साधनके मतसे यह शब्द ताम्रसिद्धि काशियोका निर्देशक है ।

शाम्बरसिद्धको नामोत्पत्तिके विषयमें बहुतसे बहुतसे बातें कहते हैं । परन्तुमो तत्र उक्तका कोई निर्वय नहीं

हूया कि श्वो बह नाम पडा । तमसुक्त रेको । द्विचिन्मय प्रकाशमें नामके विषयमें एक चतुर्त श्यायज्ञान दिया गया है उसे यहाँ हम उद्धृत करते हैं—

त्रिन समय हृन्दातनमें वासुदेव राससोका कर रहे थे, उस समय उनको इच्छासे चन्द्र सूर्यका स्थापन हुआ था । पीछे सूर्यदेवने सारथिके कहा— मैं भारतमें दिन एक ना तुम उदवाचसे शीघ्र आओ । सारथिके उक्ति से कर चक्रित होने पर उस पर ज्योत्षा पड़ने फिर पश्य प्ररोभूत हो कर समुद्रप्रातमें तिर हो गया ; जिस क्षणमें चक्र हुए थे, वह क्षण ताम्रसिद्धके नामसे प्रसिद्ध हुआ । बादमें राससोकाका चक्रवान होने पर दिवाकरने पश्यना उदार किया और वह क्षण धनदान्यवान् हो गया ।

प्राचीन और आधुनिक व्यवहार ।—महाभारतके पङ्क्तिमें मान्य होता है कि यज्ञ ज्ञानपद समुद्रके त्रिनारे और बलिहारे बनसमें था । पाणि महाव शब्द पङ्क्तिमें प्राप्त होता है, कि ईसाके अन्वये १०० वर्ष पङ्क्तिके ताम्रसिद्ध नगर समुद्रक्षयती एक शब्दके नामसे प्रसिद्ध था । उस समय त्रिकटुके राजाके उक्त शब्दमें उद्धार पर घाते हुए किया था । इस व दरसे ही बोहोले पाठ्याय बोधिभूमि सिद्धनहोएको भिन्ने गये थे त्रिनारे किये समुद्रके त्रिनारे शब्द को कर सम्राट्, शर्माशोकेने विज्ञाप किया था । दाशर्भयमें लिखा है कि इन्द्रकुमार और कुम्भामा इस प्राचीन बदरसे ज्ञानवान द्वारा दुग्धस्य सिंहके से गये थे । उल्लेखका उपायान पङ्क्तिमें यह मान्य होता है कि ये शब्दों बलिक् यहाँ अज्ञान पर चतुर्ते थे । शिवाकी श्वी शताब्दीमें वीम-परिजायक का ज्ञियान् दो वर्ष तक यहाँ रहे थे और बोहोतम पन्नादिको प्रतिस्तिथि से उर समुद्रपत्रके निश्चय गये थे । उनके मो दो को

- ↑ चक्रवर्तसिद्धिर्वासीयुक्ते दि वाचकः ।
  - ↑ बहुद्रव्यसिद्धिर्वासीयुक्ते दि वाचकः । ५३ ।
  - ↑ अज्ञानक यमके केषमात् इत्येवम् ।
  - ↑ ताम्रसिद्धको ज्येष्ठे गवन्ति श्वरसिद्धः । ५० ।
- ( विद्वान्प्रकाश )
- ↑ महाभारत १२वीं और १५वीं परिच्छेद ।
- ↑ Bala's Fa Haa.

वर्ष वाट चीन-परिव्राजिक यूएनचुआंगने यहाँसे जहाज पर आरोहण किया था, किन्तु उस समय नगरसे सागर-स्रोत दूर हट गया था । \*

पाण्डवविजय नामक संस्कृत भौगोलिक ग्रन्थमें लिखा है—

‘तात्रलिप्तदेशयक्षे मागीरग्यास्तटे वृष ।

त्रियोजनपरिमितो गावो यत्र च भूरिः ॥’

मागीरग्योके तट पर उत्तरभागमें तीन योजन परिमित ताम्रलिप्त देश है, जहाँ बहुत गावें हैं ।

इससे ज्ञात होता है, कि किसी समय गङ्गाको किमी गाखाके निकट ताम्रलिप्त नगर अवस्थित था ।

दो सौ वर्षसे पहलेके लिखे हुए दिग्विजयप्रकाशमें लिखा है—

‘मण्डलघट्टदक्षिणे च हैजलदय च लुत्तरे ।

प्रलिप्तप्रदेशश्च वणिक्तस्य निवासभूः ॥

द्वादशयोजनैर्वृक्तः रूपानयाः सर्मापतः ॥’

मण्डलघाटके दक्षिण और हैजलको उत्तरमें वणिक्तोंको वासभूमि ताम्रलिप्त प्रदेश १२ योजन विस्तृत और रूपा अर्थात् रूपनारायण नदीके निकट अवस्थित है ।

दिग्विजयप्रकाशके पढ़नेसे मालूम होता है, कि उस समय ताम्रलिप्त नगर समुद्रकनसे बहुत दूर था । हाँ यह कहा जा सकता है कि कभी कभी वाटका पानी वहाँ तक आ जाया करता था ।

इस समय ताम्रलिप्त नगर समुद्रके किनारे नहीं, बल्कि समुद्रमें तोड़ कीसको दूरी पर अवस्थित है । तमलुक शब्दमें वर्तमान अवस्थाका वर्णन देखो ।

प्रपातल - ताम्रलिप्त प्रति प्राचीन जनपद है । विट. उपनिषद् अथवा रामायणमें इसका कोई उल्लेख न रहने पर भी महाभारत एवं प्रधान प्रधान सभी पुराणोंमें इसका उल्लेख पाया जाता है । रामायणमें ताम्रलिप्तके निकटवर्ती जनपदका उल्लेख है, किन्तु इस प्रसिद्ध स्थानका कुछ उल्लेख न रहनेके कारण अनुमान किया जाता है, कि उस समय यह स्थान समुद्रके गर्भमें होगा और महाभारतके समय यहाँसे समुद्र हट जानेसे वह जनपद

के रूपमें परिणत हुआ होगा । कोई कोई लिखते हैं, कि उस समय यह स्थान कलिङ्गराज्यके अन्तर्गत था । परन्तु—

‘कालिगम्ताम्रलिप्तस्य पतनभित्तिस्तथा ।’

( भारत आदि १८५११ )

महाभारतके इस वचनके अनुसार यही प्रतीत होता है कि कलिङ्ग और ताम्रलिप्त विभिन्न राजाके अधीन सिद्ध सिद्ध देश थे । द्रोणपर्वमें लिखा है कि यहाँ क्षत्रिय राजा भी परशुरामके निमित्त बराघातसे निहत हुए थे । ( भात द्रोण ७०।१६ )

सभापर्वमें ऐसा लिखा है, कि राजसूययज्ञके भोमसेनने यहाँके राजाओंको पराजित कर वसूल किया था । ( सभाप० २९ अ० )

कुरुक्षेत्रके महासमरमें यहाँके वीरोंने दुर्योधनका पक्ष लिया था । उनको स्त्रैच्छ कड़ा गया है ।

( द्रोणप० ११८।१५ )

सपथुक्त विवरणके पढ़नेसे यह मालूम होता है, कि महाभारतके समय यहाँ स्त्रैच्छोंका राज्य था । जैमिनीय आश्वमेधिक पर्वमें लिखा है—

जिस समय मयूरध्वजके पुत्र ताम्रध्वज पिताके अश्वमेधोय मुक्त अश्वको रक्षामें थे, उस समय अर्जुनका घोटक उनके घोड़ेके पाठ आया । ताम्रध्वजके सेनापति बहुलध्वजने उस घोटकके ललाटस्य पत्रको पढ़ कर ताम्रध्वजसे उसका हाल कहा । घोष हो श्रीकृष्ण गृध्र व्यूहको रचना करके अश्वके उदारके लिए अग्रसर हुए । अर्जुन, अनुशाल्व, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, हर्मध्वज, सात्यकि, धीमनाश्व, बभ्रुवाहन, घाटि महाद्रोहा भी उनके साथ थे । ताम्रध्वजके साथ इनका घोरतरुण्य हुआ । महावीर ताम्रध्वजने एक एक करके सबको परास्त कर दिया, औरको तो बात क्या, श्रीकृष्ण और अर्जुन भी मूर्च्छित हो गये । मणिपुरमें यह घटना हुई थी । दैवयोगसे मयूरध्वजका यज्ञोय अश्व और उसके साथ अर्जुनका घोड़ा भी रत्नपुर (ताम्रलिप्त)की तरफ दौड़ा । ताम्रध्वज भी क्षणार्जुनको मूर्च्छित अवस्थामें छोड़ कर घोड़ेके पीछे दौड़ते हुए अपने पिताको राजधानीमें उपस्थित हुए । उन्होंने पितासे सब हाल कह सुनाया । मयूरध्वज

पुत्रके सुखके लक्ष्याहुं नके उपमानको बात सुन कर निरालस सुगन्धित हुए। उन्होंने पुत्रको बहुत कुछ खड़ा सुना और मर्त्यना को। उपर मुष्कलं हुट कामि पर जो कल्प हट प्राण्यके नैशमि और परलुं न कालके नैशमि मय रूखके पास पडुके। वहाँ पडु व कर जोख्यनी कस्तनापूरक मय रूखके कहा कि 'पापके एक पुत्रको मि जने पकड़ लिया है; यदि राजा उसे अपना पाषा शरीर प्रदान करे, तो पापके पुत्रको छोड़ सकता है। वामि'क प्रवर मय रूखत्र इस पर राजो जो नके। सङ्घर्मि'को कुतुहलतो और पुत्र ताम्ररूख दोनों को अपना अपना शरीर लख्य करनेके लिए अपना हुए है। विन्दु राजा मि लनको बहुत बमझा-जुझा कर अपना शरीर दिखण्ड करनेके लिए पादेय दिया। भार्य और पुत्र दोनोंमि मिक कर पारोके राजाका मण्डक विदोष कर डाला। उन समय साङ्घेता मय रूखने सबको सन्वीचन करके कहा था—“अन्धके लपकारके लिए बिनका शरीर और धय है, जो धो ययार्थमि मनुष्य है। जो शरीर था जो पर्व सुपरीके लपकारमि नहीं आता, लखको दया सर्वदा शोच नीम रहती है।”

सासुदेव मय रूखके निःस्वार्थ आलोचनके चखल मुख हुए। उन्होंने अपने पसली रूपमे दर्शन दिने। नर नारायणका रूप दिख कर मय रूखने अपनेको कतलख समझा। अन्धमि धि जन-जन-राज सबको आन कर जो कल्पके शरणागत हुए। (१)

तमसुष्कर्मि पच मो ऐसा प्रवाद प्रचलित है कि परम-बे'ख्य राजा मय रूखने सर्वदा नर-नारायणरूपको लक्ष्या-हुं नके बह्मबाहमि रहने और लखे देखनेके लक्ष्यके एक बड़ा भारी मन्दिर बनवा कर लखमि दोनोंको मूर्तियाँ स्थापित की थीं जो पच मो विन्दु नारायणके नामके प्रसिद्ध हैं। बहुत दिन हुए, पच प्राचोन मन्दिर रूप-नारायणके मर्मशाबी हो गया है। इस समय के मूर्तियाँ पच दूसरे मन्दिरमि रखी हैं। नत मान मन्दिर चार पाँच दो चर्चके ल्यादा प्राचोन नहीं होता।

ताम्रलिपिमाहात्म्यमि लिखा है—तमोस्त्रिज तोषं श्रीलक्ष्म्या प्रतिपिप ज्ञान है। जोख'लमे लय परलुं न के कहा है कि “हे परलुं न' तमोस्त्रिजने प्यारा ज्ञान मेरा तुमरा नहीं है। लक्ष्मी नैशमि-मिर वचलनका नहीं छोड़ सकता वेमि जो मैं भी तमोस्त्रिजको नहीं छोड़ सकता। हे लौक्येय! तुम निधय समझना, बास ज्ञान मि और तुम बुद्धमि सत्र कुछ छोड़ सकता है पर तमो स्त्रिजको ज्ञानो मो नहीं छोड़ सकता।”

वर्तमानमि त्रिप्यु नारायणका मन्दिर, बर्गमीमा देवी और कपानमोचनतोषं प्रसिद्ध प्रसिद्ध है। ताम्र लिपिमाहात्म्यमि लिखा है—कपालमोचनतोषंमि ज्ञान करमिने त्रिप्यु नारायण और बर्गमीमाके दर्शन करमिने पुनर्जन्म नहीं होता। इन तरुके बहुतसे माहात्म्य रूपक लिखरख लख माहात्म्यप्रथमि वर्णित है।

जैनपद्यमे मो ताम्रलिपिका लखे है। सुप्रसिद्ध श्रीगार्धय जिनमेनकाभोने स्मरचित पादिपुराणमि ताम्र लिपि मन्तरका लखे किया है।

इस प्रकार बहुत समयसे विन्दु, बौद्ध और जैनमि प्रसिद्ध होमि पर भी बहुत दिनसे ताम्रलिपिकी सुगमो मन्त्रालयके जातो रहो है। पच वहाँ नैशमि मन्दिर नहीं रहे। विन्दु तोषंयावो रहे तोषं समझ कर वाताके लिए नहीं पावे।

ताम्रलिपितको पूव मध्यकि लीं और केशि बिलुव हुई, इन विषयमि दिग्बिजयप्रकाश नामक संस्कृत मोमो लिखि ग्रन्थमि एक उपाख्यान लिखा है, जो मोने लिखा जाता है।

कायलखमिमि परशुभार नामक एक पशुयासुखिया रद राजा लुप्यक हुए थे जो ताम्रलिपि और कायकोयाका प्राचन करते थे। लखमि बहुत पूरुदेयोधि वैदिक ब्राह्मणों को रुका कर मोमादेयोके प्राचादमि ज्ञान कराया था। हैकवय किमो ब्राह्मणने पाकर इनके १०० मर खांदा मांगी। राजा परशुभारमि पूजा—“पाप लखके पाये है और लीं जन मान रहे हैं? ब्राह्मणने उत्तर दिया—“भाग्यलोके कलरमि कोयिकोनदोके किनारे माङ्गबपुरका मि रहनेवाका है पाँच सनाख्योदमि मेरा जन्म है। सुमि तीन दिवाच करने होमि। यदि तुम अपने बहको

(१) वैश्विकिमत ४१६ २६ अथवा ५५५ काशीरथी महात्म्यमि की चर्च लख है, विन्दु मूफ नादमे इतका कानो-किज्ञान नहीं है।



भाङ्ग करना चाहे, तो इसी समय मुझे एक लाल सुद्रा दे दे।" राजाने ब्राह्मणको अमङ्गल बातको सुन कर लम्हे 'दूर दूर' कर निकाल बाहर किया। ब्राह्मणने राजाको शाप दिया कि, 'तू निर्वंश हो जा और आजसे ताम्रलिप्तकी भयशाली भूमि समुद्रके जलसे ज्वालित होती रहे। यह स्थान चारभूमिमें परिणत होवे। यहांके अधिवासी क्रियाहीन, श्लोपद तथा हृदरोगमें दुःख पावें। कोई भी यहां सुखी न होवे। कल्कि ४५०० वर्ष बौतने पर यहा भस्कोका अधिपत्य होगा और भोमादेवो भो अपने धामको चली जायगो।' (दिग्विजयप्रकाश, '०१-१०३)

इस समय कल्कि प्रारम्भ हुए करोव ५०२२ वर्ष हुए हैं। यदि दिग्विजय प्रकाशकी बात ठोक है, तो मानना पड़ेगा कि ५२२ वर्ष हुए भोमादेवो अन्तर्हित हो गई है, अब सिर्फ उनको स्मृति मात्र पड़ी है।

यहां कैवर्त्त जातिका ही अधिक वास है। ब्राह्मण और कायस्थ यहां बहुत हो कम रहते हैं। यहांके ब्राह्मण भी हीनावस्थामें पड़े हैं। शायद इसीलिए दिग्विजयप्रकाशके ताम्रलिप्त-विधरणमें ऐसा लिखा है—

‘प्रायो मानकविप्राद्व वभूवः पतिताः द्विजाः।

कैवर्त्तसदृशाः प्रायाः कृषिकर्मरताः सदा ॥’

‘वर्गभोमाके मन्दिरके ऊपर श्लेष्कोका लक्ष था, यह बात यहलके वादशाही पञ्जीके देखनेसे मालूम होती है।

पूर्वकालके ताम्रलिप्तके राजाओंका धारावाहिक विवरण नहीं मिलता। बहुत दिन हुए, यहांके प्राचीनतम राजवंशका नाश हो गया है। वर्तमान राजवंशके पुता-दिक्रमिक धारावाहिक तालिका इस प्रकार है—

१ विद्याधर राय	११ शम्भूचन्द्र राय
२ नीलकण्ठ राय	१२ शीपचन्द्र राय
३ जगदीश राय	१३ दिव्यसिंह राय
४ चन्द्रशेखर राय	१४ वीरभद्र राय
५ वीरकिशोर राय	१५ लक्ष्मणसेन राय
६ गोविन्ददेव राय	१६ रामचन्द्र राय
७ यादवेन्द्र राय	१७ पश्लोचन राय
८ हरिदेव राय	१८ कृष्णचन्द्र राय
९ विश्वेश्वर राय	१९ गोलोकनारायण
१० शशिंह राय।	२० बलिनारायण

२१ कौमिकनारायण	३० लक्ष्मीनारायण राय
२२ अजितनारायण राय	३१ चन्द्रदेवो (सुत्रोको कन्या और राजा निः- गढ़ रायकी स्त्री)
२३ कृष्णकिशोर राय	३२ कान्भूया राय
२४ चन्द्रार्क राय	३३ धाङ्गभूया राय
२५ मौञ्जीकिशोर राय	३४ सुरारिभूया राय
२६ इन्द्रमणि राय	३५ हरवावभूया राय
२७ सुधन्वा राय	३६ भाङ्गरभूया राय (शक सं० १३२५ में मृत्यु)
२८ मृगया देवो (सुधन्वाकी भगिनी और कुमार जमिनभञ्जको स्त्री)	
२९ भालुराय (मृगयाके पुत्र)	

३६वें राजा भाङ्गभूयाके बादके पुत्रादिक्रमसे प्रत्येक राजाका राज्यकाल लिखा जाता है।

नाम	राज्यकाल (शक संवत्)
३० धिताइ राय	१३२६—१३७०
३१ जगन्नाथभूया राव	१३७१—१४१७
३२ यदुनाथ भूया राय	१४१४—१४४२
४० रामभूया राय *	१४४३—१४८१
४१ श्रीमन्त राय	१४८२—१५३४
४२ त्रिलोचन राय	...
४३ हरिराय	(अनुमानसे) १५७०
४४ रामराय (हरिके पुत्र) ॥१॥	} १५७१—१६१८
४५ गम्भीरराय (मनोहरके पुत्र) ॥२॥	
४६ नरनारायण (रामके पुत्र) ॥३॥	} १६१८—१६५५
४७ प्रतापनारायण (गम्भीरके पुत्र) ॥४॥	
४८ कृपानारायण (नरनारायणकी)	} १६५६—१६८०
४९ कमलनारायण (दोनों स्त्रियोंके पुत्र)	

शकसं० १६७४में कृपानारायणको मृत्यु होने पर कमलनारायण सम्पूर्ण राज्यके अधिकारो हो गये थे। शकसं० १६८०में नवाब ससनदी महामदख्तांके अनुग्रहसे मिर्जा देदार अलोवेगने समस्त सम्पत्ति पर देखल कर लिया। उसो वर्ष कमलनारायणको मृत्यु हो गई।

\* इनके दो पुत्र थे, श्रीमन्त और त्रिलोचन। श्रीमन्तके ७ पुत्र थे। श्रीमन्तकी मृत्युके बाद उनके छोटे भाई त्रिलोचनको ज्येष्ठपुत्र केशवको और बकीरें छह पुत्रोंको ॥१॥के हिस्से हिस्सा मिला था।

राज-प्रासादके जातिके मोतर चक्र मो दिवार चको  
 धेनुको चक्र मोकुट है। तद्वत्तु देवो।

राजा लक्ष्मीनारायण चौर वज्रनारायणसे परम्पर  
 विवाह होनेके कारण प्रजाने कर न दिया चौर प्रथमके  
 जमींदारी नीलाम पर चढ़ गई। पाषाण य य तो सुन  
 मानवाजाके महावदन सुखोपाध्यायने चारोद निमा चौर  
 पाषाण य य कलकलके जातुवाग्नी। जातुवाग्नी य य  
 विजने पर छे महिवादनके राजाने चारोद किया।

१८२३ ई०में राजा लक्ष्मीनारायणकी मृत्यु हो गई।  
 उनके ही पुत्र ही चपेन्द्र चौर भरिन्द्र। चपेन्द्रके छोटे  
 सन्तान न थी। १८८८ ई०में नरैन्द्रनारायणको मो मृत्यु  
 हो गई।

ताम्रलिख (स० पु०) ताम्रलिख काचों का। देय  
 विधिय, एक देवका नाम।

ताम्रलिखिका (स० स्त्री०) ताम्रलिखिका।

ताम्रलिखी (स० स्त्री०) नगरोविधिय, एक नगरका  
 नाम।

ताम्रवर्ण (स० पु०) ताम्रवर्ण वर्णों यथा बहुते। १  
 पक्षिवादन, एक प्रकारकी घास। २ रत्नवर्ण, काल  
 रत्न। ३ भारतवर्षीय वीरपति, सिद्धन होय, भोजन।  
 ४ वैद्यकीय चतुर्नार मनुष्यके शरीर परकी चौथी  
 लक्षणाका नाम।

ताम्रवर्ण (स० स्त्री०) ताम्रवर्ण वर्णों यथा बहुते।  
 थोड़ा पुण्य, थोड़ा पुण्य, थोड़ा पुण्य।

ताम्रवर्ण (स० स्त्री०) ताम्रवर्ण वर्णों यथा बहुते।  
 वर्णका०। १ मन्त्रिणा, मन्त्रोः। २ चित्रकूट देवोया  
 कता, एक कता जो चित्रकूट प्रदेशमें होती है। इसका  
 व छत घर्षाय-ताम्रा ताम्रो, ताम्राणी, ताम्रिका, लुप्त-  
 बन्धो, सुखोम, मोधनी चौर तासिका है। इसका शुभ-  
 भाव, अपदोष सुख चौर अप्पोज दोषनाश तथा  
 धीमा वृद्धिकारक है।

ताम्रबीज (स० पु०) ताम्र बीज यथा बहुते०। १ कुलज,  
 कुलबी। (त्रि०) २ रत्नबीजक उपमात्, बहु उप  
 विषये यस काल होते हैं। (श्री०) ताम्र रत्न बीज  
 वर्णका०। ३ रत्नवर्ण बीज काल बीज।

ताम्रह्व (स० पु०) १ रत्नवर्ण ह्व। २ कुलज  
 कुलबी। ३ रत्नवर्ण ह्व, काल रत्नका पेट।

ताम्रह्व (स० पु०) ताम्र ह्व यथा बहुते। १ कुलबी,  
 कुलबी। (त्रि०) २ रत्नह्वक उपमात्, काल कुलबी  
 का भाव। (श्री०) रत्न ह्व वर्णका०। ३ रत्नह्व,  
 काल कुलबी।

ताम्रगोत्र (स० पु०) ताम्रवर्ण परिकल्पकारी गोत्र  
 स प्रहाय भेद, तबे रत्नका अपका पञ्चने काया बीजका  
 एक स प्रहाय।

ताम्रगोत्र (स० स्त्री०) ताम्रवर्ण लिखित यासर्ण।  
 ताम्रवर्ण रत्ननिर्दिष्ट चतुर्गोत्र ताम्रवर्ण चर्चमें सुट  
 भावा युवा राजानुगासन। ताम्रवर्ण देवो।

ताम्रगोत्र (स० पु० स्त्री०) ताम्रवर्ण गिष्ठा युवा  
 यथाय इति इति। कुलज, सुरगा। (त्रि०) ताम्र  
 गिष्ठावृत्त, विषकी चोटी काल जो।

ताम्रहार (स० स्त्री०) ताम्रवर्ण रत्नवर्ण सारो यथा  
 बहुते०। १ रत्नवन्दन, मानवन्दन। (त्रि०) २ रत्न  
 मारक उप मात विपका रस काल जो। (पु०) रत्नः  
 सात् वर्णका०। ३ रत्नसार, काल रस।

ताम्रहार (स० स्त्री०) ताम्रवर्ण रत्नवर्ण सारो यथा  
 बहुते०। (पु०) रत्नवर्ण। सारो यथा इति अप्। २ रत्न  
 चर्च, काल चर्च।

ताम्रहार (स० पु०) ताम्र वारोऽप्यप्य ठन्। १  
 रत्नचर्च, मान चर्च। २ रत्नवन्दन।

ताम्रा (स० स्त्री०) ताम्र-टाप। १ वीरको, निहको  
 पोषण। २ ताम्रवर्णकीकता। ३ युष्ठा वृषको नामको  
 कता। ४ द्यवप्रजापतिको कथा। बहु कथापत्नी  
 यथायमा पत्नी थीं। इससे १ कथायि उपपन्न हुई थीं  
 विनये नाम से हैं—इको च्छोको, भागो, सुभोको, यथि  
 चौर च्छिका। (मन्त्रपुत्र)

ताम्रा (स० पु०) उपपत्तयेद, एक उपपत्तयेका नाम।

ताम्रा (स० पु० स्त्री०) ताम्र रत्नानी पत्तिको यथा  
 बहुते०, पत्तिक यथा। १ वीरिन, वीरिन। (त्रि०)  
 २ ताम्रवन्दन, विषको पत्तिके काल थीं।

“उप आगत्य वरदा वार्षी भौतनीकृत।  
 वरुणानर्ष ताम्रवर्ण वध रत्नका कथा ॥”  
 (भाष्यसं० १।१।१३)

ताम्रा (स० पु०) ताम्रमिति पाठका उपपन्न बहुते०।  
 उपपत्तयेद, ताम्रवन्दन।

ताम्राभ ( सं० क्लो० ) ताम्रमय आभाइव आभा यस्य बहुव्री० । १ रक्तचन्दन । ( त्रि० ) ताम्रा आभा यस्य ।  
२ रक्तवर्ण आभायुक्त जिसमें मान रङ्गको कान्ति हो ।  
ताम्रायण ( सं० पु० ) याज्ञवल्क्यके एक गिष्यका नाम ।  
ताम्रायणि ( सं० पु० ) एक शक्य यजुर्वेदी ऋषि । ये याज्ञवल्क्यके गिष्य थे ।

ताम्रारि ( सं० पु० ) ताम्रवर्ण ग्रवुभेद ।

ताम्राण ( सं० क्लो० ) तोर्यभेद, एक तीर्थका नाम । इस तीर्थमें स्नानदानादि करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल होता है और पन्तमें ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है ।

‘ताम्राणं समापय ब्रह्मचारी समाहितः ।

अश्वमेधमवाप्नोति ब्रह्मलोकं च गच्छति ॥’ ( भा० ३।८।७० )

ताम्राई ( सं० क्लो० ) कांस्य, कांसा । कामिमें आधा तविका भाग है ।

ताम्रावती ( सं० स्त्री० ) ताम्रमाधियत्वेनास्तस्य ताम्र मतुप् मस्य व, संज्ञायां टोवः । नदीभेद, एक नदी का नाम ।

‘ताम्रवती वेप्रवती नयस्तिशोऽप कौशिकी ॥’

( भारत वनप० २२ अ० )

ताम्राश्र ( सं० पु० ) ताम्रं अश्र कसंधा० । पद्मगम मणि ।

ताम्रिक ( सं० पु० ) ताम्रं तत्यादादिनिर्माणं कार्यत्वेना स्वस्य ताम्र ठन् । १ कंसकार, कसेरा । ( त्रि० ) २ ताम्र निर्मित, जो तविका बना हो ।

ताम्रिका ( सं० स्त्री० ) ताम्रक-टाप् । १ गुञ्जा, सुँवचो । २ वाद्यविशेष, एक प्रकारका बाजा ।

ताम्रिमन् ( सं० पु० ) ताम्रस्य भावः ताम्र-इमनिच् । वर्ण-हृदिभ्यः ष्यञ् । ष ५।१।१२३ । ताम्रका भाव ।

ताम्री ( सं० स्त्री० ) ताम्रस्य विकारः इति अण् ततो-डोष् । १ वाद्यविशेष, एक प्रकारका बाजा । इसके पर्वीय—मानरभ्रा, विकारिका । २ भारतवर्षीय प्राचीन घटिकायन्त्र, प्राचीन कालकी एक प्रकारकी धर्म घडौं । यह समय जाननेके लिये व्यवहृत होती थी । आजकल क्लॉक और वाच का प्रचार हो जाने पर भी बहुत जगह घटिकायन्त्र काममें लाया जाता है ।

ताम्रेश्वर ( सं० पु० ) ताम्रभक्त, तावकी राख ।

ताम्रपजोविन् ( सं० त्रि० ) ताम्रस्य उपजोवति, ताम्र-उप-जोव-णिनि । जो ताम्र द्वारा अपने जोविका निर्वाह करते हैं, कांस्यकार, कसेरा ।

ताम्रीठ ( सं० पु० ) ताम्र इव श्रोठे यस्य बहुव्री० । जिसमें अक्षर और श्रोठ रक्तवर्ण हों । मसाम करने पर अक्षरके बाद श्रोठ शब्द रहनेमें श्रोठका प्रकार विकल्पमें लीप होता है । ताम्र श्रोठ ताम्रोष्ठ, ताम्रीठ, यहां पर एक जगह अक्षरका लीप हुआ है और दूसरी जगह अक्षरका लीप न हो कर अ-प्रोकारमें वृद्धि होकर प्रोकार हो गया है । ( पाणिनि )

ताम्र ( सं० क्लो० ) ताम्रस्य भावः ताम्र-अच् । ताम्रका भाव ।

तायन ( सं० क्लो० ) ताय भावे व्युट् । १ वृद्धि, बढ़ती । २ उत्तम गति, अच्छी चाल ।

तायना ( द्वि० क्लि० ) तपाना, गरम करना ।

तायना ( फा० स्त्री० ) १ नाचने गानेवाली वेश्याओं और समाजियोंको मण्डली । २ वेश्या, रंडी ।

ताया ( द्वि० पु० ) पिताके बड़े भाई, बड़ा चाचा ।

तायिक ( सं० पु० ) ताचे पालने सुश्रुति ठञ् । देशविशेष एक देशका नाम ।

तायु ( सं० पु० ) ताय-उन् । चौर, चोर ।

तार ( सं० क्लो० ) तारते विस्तार्यते ढ-णिच् अच् । १ रोप्य, रूपा, चांदी । ( पु० ) तारयति सूत्रापकान् संसारमसुद्रात् ढ-णिच् अच् । २ प्रणव, ब्रह्मबोज, प्रोकार मन्त्र ।

‘तारयेद् यद्ब्रह्मभोषेस्वल्पमकमानसं ।

ततस्तां इति ह्यगतां यस्त्वं ब्रह्मा व्यलोकयेत् ॥’ ( काशी ७२ अ० )

जो यह मन्त्र जप करते हैं, वे भव संसारसे उत्तर्ण होते हैं । ३ वानरविशेष, एक बन्दरका नाम । ये राम-चन्द्रजीके सेनापति थे । हृहस्पतिने अश्वसे इनका जन्म हुआ था । ( रामा० १।१७ अ० ) ४ शहमीतिक, शह मोती । ५ सुक्ता विशुद्धि, शुद्ध सुक्ता । ६ देवी-प्रणव, कूर्चबोज । ७ तारण, उद्धार, निस्तार । ८ शिव । शिवजोने त्रिजगत्का उद्धार किया था । इसीसे उनका नाम तार पडा है । ९ नक्षत्र, तारा । १० अज्ञानरूप प्रथम गौण सिद्धिभेद, साङ्ख्यके मतानुसार गौड

सिद्धिका एक मीठ। सिद्धिपूर्वक शुद्धसुखसे विदाख्ययन कर  
 इससे जो सिद्धि काम हो, उसका नाम तारसिद्धि है।  
 यह शोधसिद्धि है। (कालप्रौढ०) ११ बिल्द। १२ उच्च  
 यन्त्र खोरको पाषाण। (सि०) ११ उच्चयन्त्रसुख। १४  
 कृत्तित्तिरिचर, जिसमेंसे खिरके फरो हो। १५ निर्मल  
 सख्द। (शो०) १६ तोट, डिगारा। १७ उच्चोः स्वर। १८  
 मीठ-कनोनिक्का पाषाणको पुतलो। १८ प्रभव (पां औ  
 औ)। (उग)

२० पत्ररुद्र पत्ररोंका एक बर्चुलत। २१  
 धातुधोका छ्द, तपो धातुको पीठ धोर खींच कर बनाया  
 हुआ तागा। २२ धातुका बड़ तार या छोरी जिससे धार  
 बिजलीकी सहायतासे एक स्थानसे दूसरे स्थान पर समा  
 चार भिजा जाता है। ताहित-वर्णनह देको। २३ बड़  
 को तारसे पातो है। धार। २४ तन्तु-धुल, छ्द, तागा।  
 २५ घुतको। २६ पञ्चरुद्र परम्वरा शिकसिद्धा। २७  
 खींच, व्यवस्था, सुबोता। २८ कार्य सिद्धिका योग, हुक्ति,  
 उपाय, ठव। २८ कपूर, कपूर।

तारक (स० खी०) तारक कनोनिक्का कामति खे-ख।  
 १ चतु पांश। (पु०) १६ कार्य कन्। २ नचन, तारा।  
 (खी०) १ चतुर्धी कनोनिक्का पाषाणको पुतली। तार  
 इति देवान् तन्-चिप-सुख। ३ हादय मन्मत्तरीय  
 इन्द्रधनु, पदुरविधिय, धारकर्म मन्मत्तरीय इन्द्रधनु  
 एक पदुरका नाम। इसमें सब इन्द्रको बहुत घतावा  
 तब नारायणने नपुसकक्य धारक करके इसका नाम  
 दिया। (इन्द्र० अ०) ५ पपर पदुरमेव, तारका  
 पुर। ६ बर्चुलत नाम। ७ मीठक सिद्धावा। ८ कनो-  
 निक्क, एक बर्चुलत सिद्धसे प्रकृत चरकमें १८ पत्रर  
 होते हैं।

तारकजित् (स० पु०) तारक तारकापुर जयति जि-  
 क्षिपु तुपागमक। कातिशेय इकोने तारकापुरका नाम  
 कर इन्द्रको जगंधि सिद्धासन पर स्थापित किया था।  
 तारक धोर कतिशेय देको।

तारकजोड़ी—राजविधिय एक धनका नाम। इसमें खडम  
 धोर कोमल कर भरते हैं धोर पदम बर्चुलत होता है।  
 तारकतोर् (स० खी०) तारक तोर् कर्मका० तीर्ब  
 मीठ, गद्या तीर्ब। वहां पिच्छदान करकेसे पुरखे तर  
 जाते हैं।

तारकजत्र (स० खी०) तारक य शारङ्गारपरधारक  
 जत्र कर्मका०। राम पदुररमन्त रामतारक भन्त  
 'शं रामाय नमः'। पदुरागोयी कामोर्न चन्तु, जोनेसे महा  
 देव आप १४ मन्मको मनुष्यके ज्ञानमें पड़ते हैं तथा यह  
 घत मनुष्य पदुररमन्तके प्रभावसे भोग पाता है।

यह पदुरर मन्त सब मन्मोर्न खेच है, इस मन्त द्वारा  
 जो मन्मिर्बुच उपासना करती हैं, निचय ही उनको  
 सुखि होती है। इस मन्तके प्रभावसे सब दुःख जाती रहती  
 है तथा यह मन्त पापियोंके सिधे भी मोक्षप्रद है।  
 प्रतिदिन यह मन्त खप करनेसे समस्त पाप बिनष्ट  
 होते हैं।

तारकमानो (हि० खी०) चतुर्धके पाषाणका एक  
 प्रकारका यन्त्र। इसमें छोरोको जगड जोड़िका तार बना  
 रहता है। यह नयोने खाटनेसे काममें पातो है।

तारकय (हि० पु०) बड़ को धातु का तार खींचता हो।  
 तारकयो (हि० खी०) तार खींचनेका काम।

तारका (स० खी०) १ मचन, तारा, २ कनोनिक्का  
 पाषाणको पुतलो। ३ इन्द्रबाहुरो कटा। ४ नाराच नामक  
 इन्द्रका नाम। ५ बालिको खो। ६ सुखा, मोतो।  
 ७ देवताइ डक, रामबांस।

तारकाच (स० पु०) पदुरविधिय एक पदुरका नाम।  
 यह तारकापुरका बड़ा कटका था। यह देवताओंसे  
 जुद्धमें पराजित हो कर कमलाच धोर सिद्धपाणको  
 नामक पयमें दो छोटे भाइयोंसे साथ पञ्चल धोर तपसा  
 करने लगा। इसकी तपसासे सतुष्ट हो कर उग्र  
 ब्रह्माको बर देनेको उचल हुए, तब इसने प्रार्थना की,  
 "परमिय। समोसे पूर्य हो कर पुरजयमें भाव करे,  
 निचं यही बर हम चाहते हैं।" बाद ब्रह्माधि बरसे  
 इकीने तीन पुर पाये। वर देते समय ब्रह्माने कह दिया था  
 किसे खोय तीनों पुर पर धारोइय कर तुमारसे तिसुब  
 नका पर्यटन करते हुए एक डकार बर्चुलत यन्तमें लेवल  
 एक बार आपसमें मिलीये। उस समय यह खोई एक  
 पाकसे उच पुरजयको मीठ कर सके, तो इन भोयोंको धारु  
 होगी। उस पुरजयका निमाता मयदानव था। कर्मसे एक  
 सोनेका, दूसरा चाँदीका धोर तीवरा जोड़िका बना था।  
 यह पुरजय यथाक्रमसे धारोच, यन्तरीच खोच धोर मन्म

लोक माना जाता था। तारकाच स्वर्णनिर्मित पुत्रका अविनाशो था।

इस समय तारकाचकी हृदि नामक प्रबल पराक्रान्त एक पुत्रने कठोर तपस्या करके प्रजापति ब्रह्मासे एक वरके लिये प्रार्थना की, "मैं अपने पुरमें एक तालाब प्रस्तुत करना चाहता हूँ। उस तालाबके जलके जितने अस्त्र-निष्ठत वीरगण निक्षेप किये जाय, वे आपके प्रसाद-से पुनर्जीवित और समधिक बलशाली हो जावें।" 'ऐसा ही होगा' यह कह कर ब्रह्माजी चल दिये। क्रमशः ये अत्यन्त बल दायित हो तोनों लोकमें बहुत ऊधम मचाने लगे। देवताओंनि इन असुरोंसे अनेक प्रकारकी यन्त्रणाएँ पाकर शिवजीकी शरण लगे। शिवजीने उसी समय देव-तार्थोंका आधा बल ग्रहण कर द्विपुत्रको भेटते हुए उन्हें मार डाला। (भारत दर्ण ३५ अ०) त्रिपुर देखो।

तारकाख्य ( स० पु० ) तारकइति आख्या यस्य बहुव्री० । तारकाच । तारकाध देखो।

तारकान्तक ( स० पु० ) अन्तयति इति अन्तकः तारकस्य अन्तकः, ६-तत् । कार्तिकेय ।

तारकादि ( स० पु० ) तारक आदिर्यस्य । पाणिन्युक्त गणविशेष, सञ्जात अर्थमें तारकादिके बाद इतच् प्रत्यय होता है। तारका, पुष्प, कर्णक, मञ्जरी, ऋजोप, चण, सूत्र, मूत्र, निष्क्रमण, पुरोप, उच्चार, प्रचार, विचार, कुङ्कुम, कण्टक, सुमल, सुकुल, कुसुम, कुतूहल, स्तवक, किमलय, पञ्जव, रुग्ण, वेग, निद्रा, सुद्रा, बुभुचा, धेनुष्या, पिपासा, अहा, अन्न, पुलक, अङ्गारक, वर्णक, द्रोह, टोह, सुख, दुःख, उल्काष्टा, भव, व्याधि, वर्मन, व्रण, गौरव, शास्त्र, तर्ङ्ग, तिलक, चन्द्रक, अन्धकार, गर्व, सुकुर, धर्म, उल्कापण, कुवल्लय, गर्व, क्षुब्ध, सीमन्त, प्यर, गर, रोग, रोमाञ्च, पण्डा, कञ्जल, लप, कोरक, कक्षोल, स्वपुट, दल, कक्षुक, शृङ्गार, अङ्गूर, शैवाल, वकुल, शम्भ, आराल, कलह, कर्दम, कन्दल, मूर्च्छा, अङ्गार, इन्तक, प्रतिविम्ब, विप्र, तन्त्र, प्रत्यय, दोचा और गज ये तारकादिगण हैं।

तारकामय ( स० पु० ) शिव, महादेव ।

तारकायण ( स० पु० ) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम ।

( हरिवंश २६ अ० )

तारकारि ( स० पु० ) तारकासुरके शत्रु ।

तारकासुर ( स० पु० ) असुर विशेष, एक असुरका नाम ।

इसका विवरण शिवपुराणमें इस तरह लिखा है—

यह असुर तार नामक असुरका पुत्र था। देवताओं-की जीतनेके लिये तारकाने एक हजार वर्ष तक घोर तपस्या की, किन्तु तपस्याका फल कुछ न हुआ। तब इमके मस्तकसे एक बहुत प्रचण्ड तेज निकला। उस तेजसे देवतागण दम्भ होने लगे, यथां तत्र कि इन्द्र सिंहासन परमे विचने लगे। इमसे इन्द्रादि देवगण अत्यन्त भय-भोत हुए, और इमका उपाय सोचने लगे। उस समय मालम पडता था कि अकालमें यह ब्रह्माण्ड लीप हो जायगा। ब्रह्माण्डकी रक्षा करनेके लिये सब देवगण ब्रह्माके निकट पहुँचे और प्रणाम कर उनसे तारकाका तपोवृत्तान्त निवेदन किया। देवताओंकी प्रार्थना पर ब्रह्मा तारकाके ममोप वर देनेके लिये उपस्थित हुए और उससे वर मागनेके लिये कहा।

तारकासुर ब्रह्माका यह वचन सुन कर बोला, भगवन् ! जब आप प्रसन्न हैं तब कोई चीज असाध्य नहीं है, आप मुझे दो वर दीजिये। पहला तो यह कि मेरे समान संसारमें कोई बलवान् न हो, दूसरा यह कि यदि मैं मारा जाऊँ तो उसोके हाथसे जो शिवसे उत्पन्न हो। 'तयास्तु' कहकर ब्रह्माजी स्वस्थानको चले गये।

वर पा कर तारक भी अपने घरकी लौट आया। सब असुरोंने मिलकर उसे राजगद्दे पर अभिषिक्त किया और चारों ओर यह आज्ञा प्रचार कर दी कि इस जगत्में अब किशोका भी शासन प्रचलित नहीं होगा। तारक राज-पद पर अभिषिक्त हो कर घोर अन्याय करने लगा, विशेष कर देवताओंको अत्यन्त कष्ट पहुँचाने लगा। तब देव, दानव, यक्ष, राक्षस, किम्बु रूप प्रभृति सबके सब अत्यन्त दुःखित हुए।

इन्द्रादि देवगण निश्चिंत हो कर उसे सन्तुष्ट करनेके लिये प्रधान प्रधान रत्न प्रदान करने लगे।

इन्द्र उच्चैःश्रवा अश्व, धर्म रत्नदण्ड, ऋषि कामधुक धेनु और समुद्र सब रत्न उसे देने लगे।

सूर्य ङरके मारे तारकपुरमें प्रखर रूपसे अपनी किरण नहीं दे सकते थे, चन्द्रमा भी ण भावसे दोनों पक्षमें

लटप होती थी, बाबु चतुर्गुण की कर बर्बाद मन्द मन्त्र बनती थी। तीनों मुकन तारकको प्राणके पचोन की मये थी। देवगण लमकी सेवा करते थे। जितने शक्ति थी, वे लमके दूतका काम करते थे। देवताओंके चमके तारकापुर की पदच करता था।

पलमें जब देवगण एक सुन्दरी मङ्गल म मये तब एक दिन मङ्गल की मिन कर ब्रह्माने पास मये घोर थपना थपना दुपड़ा रोवा। ब्रह्माने कहा "गिबके पुत्रके पतिरिक्त तारकको घोर कोई मार नहीं करता। जिमा लयके गियर पर गिबको तपस्याकर रङ्गे घोर पार्वती दो पक्षियोंके साथ लमको परिचर्या कर रणे है। तुम लोम का कर सेवा लपाय रणे जि लमका ल योम गियके साथ हो जाय। गिबकोके पुत्रके बिना तारकको मारनेका कोई दूता लपाय नहीं है।

इन्द्रादि देवगण रतिके साथ लन्दपको लीकर गिबको का तप मङ्गल करनेके लिय जिमानय पहाड़ पर लयलित हुए। लन्दपके बर्बा पहुँचने पर लमल पूर्णमासके चिराञ्ज करने लमा। गिबको पञ्चालमें लमलका पाविर्भाव देव कर तपलपमें तन लमने लय मये।

एक लमय पार्वती पुत्र ल पामरकसे भूयित की कर गिबपुत्रके निमित्त महादेवके लमोप पहुँचो।

लन्दपके प्रभावके पाव लो विद्वत भावालय हो गई। महादेवको लो विरुविज्जति लम्बित हुई।

एक लमय महादेव लयलान विचार कर बोले 'क्या ! ईश्वर की कर लूनीको लोका पङ्क ल्यम करना लुम्बि लचित है ? कर लीरे लो लिलमें ऐलो विज्जति लाम लडेलो लो ल्या लुद्र लमुच लुम्बल लकी कर लकते !' ऐला लोच कर ली लिर लयलपामें निरुज हो लये।

गिबको पामलवड की कर लो लिल लिर ल कर लके। लमुलम्बान करके लमका लारक देखा जि लन्दप रतिके साथ लनका तप मङ्गल करनेके लिले पास लोमें लका है। लने देव कर गिबकीने ऐलो लोळमरो इति लमको घोर लामो जि लन्दप लनके लीकी विरुलकी हुई लम्बिले लमो लमल ईर लो लमा।

लदन ( लन्दप ) के लय लो लामे पर गिबकीने लड लान लोड़ दिया। पार्वती लो लपने लयकी लिला

करतो हुई लम्बानकी लोडे । बाद पार्वतीको गिबकीको पति लनलके लिले घोर लम्बामें लडल हुई। लकुत दिन लम्बाना करनेके बाद पार्वतीने महादेवकी पतिरुम्में पाया। लम्बामें गिबके साथ पार्वतीका विवाह लो लया। विवाह लो लामिके बाद लय गिबकीका पार्वतीके लोई पुत्र ल लुपा, लय देवगण लिर लो लकरा लडे। महादेव लोर पार्वती लोळामें पासल ली, लस लारक लनके पास लोई लो लकी लकते ली। लर तारकापुर दिनों दिन लयल लकल लवाने लया, देवगण ललार लो ली लल ल ल विमुडकी लार्द रलने लगी। बाद लयि लपोत लरुप लारुप लरके महादेवके पास लपलित हुई। गिबकीने लोळो लपोतक लारो लयि लो देव लो लो लने लका, "लु लपलकलपारो लपोत, तुम लोम लो ? तुमने लमारे लोय लो लारक लये।" लतना लड लर लनमें लोय लो लयि ल लयर लान लिया। लमो लोय लो ललल लोय लयल लु। लललके ल देकी।

लललके लयल लोने पर देवतालने लके लमना ले लाल लनलकर तारकापुरके लारनेके लिय लोचित लुर लीका।

लम लुरमें तारकापुरके लय लमलान लुड लुपा लय दिन लड लरलर लकार्द लोतो लडे। लनके बाद तारका लुरको लैम लीच लोने लगी लान ललल लके लडिन लरके तारकापुर लारा लया।

( गिरु० १ ल० ल० लौर देवो लयलत )

तारकित ( ल० लो० ) तारका लम्बाना लय तारकादि लानु ललच। लयलमुल लड लो लारीके लोमित लो। तारकिलु ( ल० लिल० ) तारका लयल लन। तारकापुत्र लामेके लमरा।

तारकिलो ( ल० लो० ) तारकिलु लो। लयलमुल लयि, लारिमें लरिमुर् लल।

तारकलु ( लिल० लु० ) लय ललारको लाल लो लारी लोर लोतलके लोमके लनी ली।

तारकेवर ( ल० लु० ) लोयलविडि, लय ललारको देवा। लमको ललल ललामो—लारा, लयल, लोका लड, लयल ललाना, लललार, लोयलके लोत्र लोर लड, लन लयल ललार लीकर लिलते है। बाद लिर लडेके लानो, लयलुल

के काढ़े और गोखरूके रसकी भावना देकर उसे घाटते और दो दो रत्नोंकी गोलियाँ बना लेते हैं। इन गोलियों को शहदके माथ खाना चाहिये। इसका पथर बकरोका दूध, चीनी और ईखका रस है। इस औषधके सेवनसे बहुमूल रोग दूर हो जाता है। (मैपज्यरत्ना०)

सरा तरौका—रससिन्दूर, लोहा, बड़, अन्नक इन सबको बराबर लेकर मधुके साथ एक दिन तक घिसते हैं और बाद एक मापसे परिमित गोलियाँ बनाते हैं। इसका अनुपान मधुसंयुक्त पक्क यज्ञदुस्वरका चूर्ण है। इसके सेवन करनेसे बहुमूल रोग जाता रहता है

(मैपज्यरत्नावली प्रमेहाधिकार)

तारकेश्वर—हुगली जिलेके अन्तर्गत एक पुण्यस्थान। यह अक्षा० २२° ५३' ७" और देशा० ८८° ४' ०" में अवस्थित है। तारकेश्वरके निङ्ग और उनके मन्दिरके लिये यह स्थान अत्यन्त प्रसिद्ध है।

कालीघाटमें नकुलेश्वरको जिस तरह उत्पत्ति हुई है, बहुतांका कहना है कि तारकेश्वरको उत्पत्ति भी उभी तरह है। किन्ती प्राचीनपुराण अथवा तन्त्रमें इसका विवरण नहीं रहनेके कारण यह आधुनिक प्रतीत होता है। तब भी यह दो तीन सौ वर्षसे पहलका है। भविष्य ब्रह्म खण्ड ( ७५८ ) में इस निङ्गका उल्लेख है।

तारकेश्वर राठवासियोंके परम भक्तिके देवता है। उनके निकट सैकड़ों दुःसाध्यरोगियोंने आरोग्य लाभ किया है। बहुतसे राठवासी अब भी वाया तारकनाथके नामसे उरते हैं। शिवरात्रि और चङ्क-संक्रान्तिके दिन यहाँ बहुत उल्लास होता है, जिसमें लगभग ५०।६० हजार यात्री एकत्र होते हैं। तारकेश्वरमें बहुत आमदनी होती है जिसे वहकि महन्त उपभोग करते हैं।

पहले तारकेश्वर जाते समय बहुतसे मनुष्य दुर्दान्त-डकैतोंसे आक्रमण किये जाते थे। इस यात्रामें यात्रियोंको कितना कष्ट भेलना पडता था; वह अकथनीय है। अभी तारकेश्वरके पास रेल-स्टेशन हो जानेसे उनका कष्ट और भय सदाके लिये जाता रहा। इससे तारकेश्वरके यात्रियोंको संख्या भी बढ़ गई है।

तारकीपनिपट ( सं० स्त्री० ) उपनिपट भेट, एक प्रकारका उपनिपट।

तारचिति ( सं० पु० ) तारा उच्चा चिति र्थत् । देश भेदं, एक देश जो पश्चिममें १८° १८' २०" नक्षत्रोंमें अवस्थित है। यहां ऋच्छिका निवास है।

तारधर ( हिं० पु० ) वह स्थान जहाँसे तारकी खबर भेजी जाती है।

तारघाट ( हिं० पु० ) कार्यसिद्धिका योग, व्यवस्था, आयोजन।

तारचरको ( हिं० पु० ) चीन, जापान आदि देशोंमें होने वाला मोमचोना नामका पेड़। इसके फलमें तीन बीज-कोश होते हैं। ये चरकोसे भरे रहते हैं। चीन और जापानमें मोमबत्तियाँ इसी पेड़की चरकोसे बनती हैं। इनके बीजोंसे भी एक प्रकारका पोला तेल निकलता है, जो दवा और रोगनके काममें आता है।

तारज ( सं० पु० स्त्री० ) धातव द्रव्यभेद।

तारटी ( सं० स्त्री० ) तारकी देखो।

तारण ( सं० पु० ) तारल्यनेन व्यु। १ तेलक, तेली। कर्त्तरि व्यु। २ विष्णु। ( त्रि० ) ३ तारयिता, तारनेवाला, उद्धार करनीवाला। भावे व्युत्। ( स्त्री० ) ४ तारण कारण, पार उतारनेकी क्रिया। ५ उद्धारण, निम्तार। ६ पट्टि संवत्सरका अष्टादश वर्ष भेद, साठ संवत्सरोंमेंसे अठारहवा वर्ष। इस तारणवर्षमें अत्यन्त वृष्टि होती है, जिससे धान्य इत्यादि दूसरे दूसरे अनाज नष्ट हो जाते हैं। ( ज्योतिस्तत्व )

चतुर्थ हृताय नामक तृतीय वर्षका नाम तारण है, इसमें अत्यन्त वृष्टि होती है। ( वृहत्सं० ८।३५ )

पट्टिःम्भारधर देखो।

तारणि ( सं० स्त्री० ) तार्यतेऽनया ढ षिच् अग्नि। नौका, गाव।

तारणी ( सं० स्त्री० ) तारणि ङीप्। कश्यपकी एक पत्नी जो याज और उपयाजकी माता कही जाती है।

तारणिय ( सं० पु० ) तारण्यः अपत्यं ठक्। तारण्यके वंशज।

तारतण्डुल ( सं० पु० ) तारं सुक्त्वा शुभ्रं लुण्ठनी यस्य। धवल यावनाल, सफेद चार।

तारतम्य ( सं० स्त्री० ) १ तरतमयोर्भावः तरतम-थञ् । १ न्यूनाधिक, एक दूसरेसे कमी बेशुकी हिसाब। २

उत्तरोत्तर ज्योतिषशास्त्रे पशुचार व्यवस्था कसोभे मोक्षे विनाशके निरसिद्धा । १ गुण, परिभाषा आदिना परस्पर मिथ्याम् ।

तारतम्यबोध ( स० पु० ) बर्हि वस्तुधर्मि भरी सुरे आदिबो पदचान ।

तारतार ( स० जो० ) तारयतोति तार तत्प्रकारः प्रकारे द्वित्व । अक्षय्याश्लेष गौच दशमे सिद्धिभेद शंभुके पशुचार गौचकी तोसरो सिद्धि । धाममके पाविरोधी न्यायदाता प्रभायं सुखिबुद्ध तर्कद्वारा धायमके चर्चको परोया कर मद्यय धोर पूर्वपक्ष मिराकरवद्वारा उत्तर पक्षका अक्षय्यापन करणा बी मगन समझा गया है, इससे जो सिद्धि प्राप्त होती है, उसीका नाम तारतार है । यह बोधसिद्धि है । सिद्धि देखो ।

तापतार ( हि० बि० ) जिसको धर्मिया पक्ष परतन हो मई हो, दुखड़ा दुखड़ा, लजड़ा हुआ ।

तारतोड़ ( हि० पु० ) कपड़े पर बिया हुआ छुरीका एक तरहका काम कारखोबी ।

तारदो ( स० जो० ) तारदो एव धार्यं पक्ष-ततो जोय । तारदोस्य, एक प्रकारका कटिदार पिट ।

तारन ( हि० पु० ) १ कतत्रो व्यन, जाननको बाल । २ कपूरका बड़ बाँध को कड़ियोंके मोचे रचता है । ३ तयन देखो ।

तारना ( हि० जि० ) १ पार बनाना । २ उबार करना, सुख करना, निरधार करना ।

तारनाह ( स० पु० ) तारनाह देखो ।

तारनाद ( स० पु० ) तारा नाद कर्मधा० । लखनाद, ओरकी शानाव ।

तारपरम—धरद पर भी परम बकरी है, आकाय बजाती समझ डिकी से बीगने तारमें मो से धर परम बजावे जाती है । बितार आदि बर्ची पर एक प्रकारकी प्रचालोमे शन आदिका आवाप बजाया जाता है इसमें तासको निताना आकम्पकता होती है । उस प्रचालोके बादनको तारपरम कहती हैं ।

तारपानि—जियोके एक कवि । रक्षोने ममोरको सोना-को रचना की है ।

तारपीन ( हि० पु० ) एक प्रकारका पेड़ जो चौड़े

पेड़के निकसता है । जमीनके दो हाथ ऊपर चौड़े पेड़में एक खोखला गूठका भाट कर बनाया जाता है और उधे मोचेको धोर कुछ गहरा बना दिया जाता है । इसी गूठमें चौड़ेका पंख निकल कर मोहने क्षममें समा होता है, जिसे मन्दाविरोधा कहती हैं । यह मोहने भवका द्वारा जो तेल निकाल किया जाता है, यही तार पोनका तेल कहलाता है । यह खोखले काममें धातव है । दुर्दके लिये यह रामबाण है ।

तारपुष्प ( सं० पु० ) तार रजतमिष पुष्प यक्ष । सुन्दरपुष्प, सुन्दरका पिट ।

तारबर्हि ( पु० ) वह तार जिससे बिजलीको यन्त्र द्वारा समाचार पट्ट चाला जाता है ।

तारमासिक ( स० जो० ) तार क्षममिष मासिक । उपधातुमिद क्षममको नामको एक उपधातु । उपधातु ० है, जिसमें तारमासिक चांदीको उपधातु है, यह भातु चांदीके समान गुणवानो है । इसमें कुछ चांदी मिश्री रहनेके कारण इसको तारमासिक कहते हैं । चांदीको अपेक्षा प्रथमानका होनेके कारण इसमें गुण मो कुछ कम है । तारमासिकमें सिर्फ चांदीका गुण ही नहीं, बल्कि पन्थाय प्रस्थाने मिश्रित रहनेसे पन्थ गुण भी मौजूद हैं । विद्यय तारमासिक विद्युत् तिलक हल महरारस महर विषाक, यन्त्रवर्धक रसावन, पन्थके लिये वित्तधारक, सय कपू धोर सिदीयनायक है । पवित्रय तारमासिक पवित्रय अर्ध मासिकको तरह मन्दाग्निजनक पतिप्रय बलनायक, बिरुधो मंत्ररोग कुहरीय, गण्डमाला धोर प्रथोयोत्पादक है । इसलिये तारमासिकका मोहन बहुत बढ़ता है । कर्बोटक, मेघबुद्धो धोर कम्पीरो जोधुके रक्षारा तीन दिन कड़ी धूपमें साधना देनेसे तार मासिक विद्यय होता है ।

तारमसिकका नामा—कुलकीके आधके घाय पोम कर तीव्र मठा पक्षका बकरीके मूतके पुटपाक करने पर तारमासिक मारित होता है । ( पार० ) मतामरमें पिशा भी है—एरुच या जिमोबन्दी मोतर साजिक रच कर मूक, काँको, पेश, गोमुष्प, कदलीरक कुसबोका काक धोर कोदों धानका काक, दनका कोट दी कर धार, पक्ष बय, पक्षयय, तिल धोर घोडे हाथ तोव बार पुट देनेके



यह विशुद्ध होता है। जम्बोरो नीवूके रस द्वारा खेद दे कर मोषमृङ्गी और कदलोरसमें एक दिन पाक करने से भी तारमात्रिक विशुद्ध होता है।

तारमूल (सं० लो०) स्थानभेद, एक स्थानका नाम।  
तारयिट (सं० त्रि०) उद्धार करनेवाला, तारनेवाला।  
तारल (सं० लो०) तरल एव अणु। १ तरल। २ सन्तुष्ट।  
तारल्य (सं० लो०) तरल वस्तुका धर्म, कठिन और तरल पदार्थमें प्रभेद। कठिन द्रव्योंके समस्त अणु सहज हो सञ्चालित नहीं होते; सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, पत्थर, ईंट आदि द्रव्योंके अणु एक औरसे दूसरी और नहीं ले जाये जा सकते, किन्तु जल इत्यादि तरल द्रव्योंके अणु थोड़ा बलप्रयोग करने पर सञ्चालित होते हैं और उनके एक औरके कण सहज ही दूसरी और ले जाये जा सकते हैं।

जिस गुणसे जलादि द्रव्योंके अणु सहजहीमें संचालित और प्रवाहित होते हैं, उसे तारल्य कहते हैं। यही गुण होनेके कारण जल आदि पदार्थोंको तरल पदार्थ कहा जाता है।

समस्त द्रव पदार्थोंमें यह गुण दिखाई देता है, परन्तु सबमें समान परिमाणमें नहीं होता।

इथर नामक द्रव पदार्थ अतिशय तरल है। घी, शहद, गुड प्रभृति द्रव्योंका तारल्यगुण अत्यन्त अल्प है; इसीसे ये समय समय पर कठिन भाव धारण कर लेते हैं।

आणविक आकर्षण और आणविक विकर्षणके तारतम्यसे समस्त जड़ पदार्थ कभी कठिन, कभी तरल और कभी वाष्पीय आकार प्राप्त करते हैं। आणविक विकर्षणको अपेक्षा आणविक आकर्षण अधिक होनेसे कठिनताका सञ्चार होता है। दोनोंका पराक्रम प्रायः समान होनेसे तारल्यकी उत्पत्ति होती है। और आकर्षणकी अपेक्षा विकर्षण अधिक बलशाली हो तो समस्त पदार्थ वाष्पाकार धारण करेंगे। उष्णताकी जितनी वृद्धि होगी विकर्षणका बल भी उतना ही बढ़ेगा। इसीलिये तापके प्रभावसे जिन वस्तुओंके उपादान विभिन्न नहीं होते, उच्च होनेसे वे ही द्रव्य कठिनसे तरल और तरलसे वाष्प हो जाते हैं।

कठिन वस्तुओंके परमाणु आणविक आकर्षण गुणसे

जिअ तरह टूटतया आवद्ध रहते है, तरल और वाष्पीय पदार्थोंके परमाणु वैसे नहीं होते।

कठिन वस्तुके परमाणु निविड मन्निवेशके कारण सहज हीमें अलग नहीं होते, किन्तु तरल और वाष्पीय द्रव्योंके परमाणु सहज हीमें थोड़े विनिवेशसे हो संचालित हो जाते हैं। कठिन (ठोस) पदार्थोंमें हर एककी एक निदिष्ट आकृति होती है, किन्तु तरल और वाष्पीय पदार्थोंको कोई निदिष्ट आकृति नहीं है। इन्हें जैसे वर्तनमें रक्खा जायगा, इनकी वेशी ही आकृति हो जायगी।

तरल और वाष्पीय द्रव्योंका प्रभेद—जिस प्रकार तरल द्रव्योंके परमाणु सहज हो संचालित होते हैं, उसी प्रकार वायवीय द्रव्योंके अणु भी थोड़े ही बलप्रयोगसे संचालित होते हैं; किन्तु वाष्पीय द्रव्य जिस प्रकार दबाव पडनेसे मंक्वचित होते हैं, तरल पदार्थ वैसे नहीं होते। जैसे समस्त वाष्पीय द्रव्य आकुञ्चनीय होते हैं; वैसे समस्त तरल पदार्थ दुराकुञ्चनीय हैं। परन्तु यह नहीं कि तरल पदार्थ विलकुल ही आकुञ्चनीय नहीं। पदार्थविद् विद्वानोंने परीचाद्वारा स्थिर किया है कि अधिक बलप्रयोग करनेसे सभी तरल पदार्थ कुछ कुछ आकुञ्चित होते हैं। फी इञ्च साढ़े सात सेर दबाव देनेसे दश लाख भाग जलके आयतनमें पाँच भाग कम हो जाता है, और दबाव हटा लेने पर जल या जलवत् सभी पदार्थ पुनः प्रसारित हो कर अपने पूर्व आयतनको प्राप्त हो जाते हैं। अतएव यह स्वीकार करना होगा कि सभी तरल वस्तुएँ स्थितिस्थापक गुणसम्पन्न हैं।

तरल पदार्थोंमें चाप संचालनका नियम—तरल वस्तुके एक अंशमें चाप प्रयोग करनेसे वह सब और समभागसे संचालित होता है। ईसवीकी सत्रहवीं सदीके मध्यभागमें पास्कल नामक एक फ्रांसोसी विद्वान्ने तरल पदार्थोंमें चाप संचालनके नियमका आविष्कार किया; इसी लिए यह नियम पास्कलका नियम नामसे प्रसिद्ध है।

जलादिके एक और चाप प्रयोग करनेसे वह उसके सभी और सम भावसे संचालित होता है। यह विशेष परीचा द्वारा देखा गया है।



ताराशुद्धिकर (सं० स्तो०) तारस्य रजतः शुद्धिं करोति क्लृप्त । सोषक, मोसा । इसमें चाँदोका मैल साफ किया जाता है ।

तारसार (सं० पु०) उपनिषद्भेद, एक उपनिषद्का नाम ।

तारहार (सं० पु०) तार्गनमित्तो ज्ञानः मध्यतो० कर्मधा० । स्थूल सुक्ताधार ।

तारा (सं० स्तो०) तारयति संशारार्थं वात् भक्तान् लब्धिव् अच् टाप् । १ बोहोको एक देव । २ वानराज बालोको पत्नी और सुट्ट वानरको कन्या । रामचन्द्रने मङ्गलमेद कर बालोका वध किया था । बालोके नामे जानके उपरान्त श्रीरामचन्द्र शत्रुघ्ने तारानि सुश्रोत्रको धपना पति बना लिया । इनके पुत्रका नाम अङ्गट था । (गमायण) प्रातःकाल उठ कर इनका नाम स्मरण करनेसे बच्चे दिन मङ्गलमय होता है ।

“अदृष्ट्या द्रौपदी कृष्णी तारा मन्दोदरी तथा ।

पञ्चकन्या स्मरयेदित्यं महापातकनाशनं ॥”

किन्तु प्रातःकालमें इनके नाम स्मरणका नियम रघु-नन्दनके आङ्गिकतत्त्वमें नहीं है ।

३ अश्विनो षादि नक्षत्र । जैसे—अश्विनो, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्या, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्ता, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद और रेवती, ये २७ प्रधान तारा हैं ।

खगोल देखे ।

अधिपति—अश्विनोके अधिपति अश्विनो । भरणीके यम, कृत्तिके दहन, रोहिणीके कमलज, मृगशिराके शशि, आर्द्राके शूलभृत्, पुनर्वसुके अदिति, पुष्याके जोष, अश्लेषाके फणि, मघाके पिष्टगण, पूर्वफाल्गुनीको योनि, उत्तरफाल्गुनीको अर्यमा, हस्ताके दिनहृत्, चित्राके त्वष्टा, स्वातिके पवन, विशाखाको अग्नि, अनुराधाके मित्र, ज्येष्ठाके शक्र, मूलाके निर्ऋति, पूर्वाषाढाका तोय, उत्तराषाढाको विम्बविरिञ्चि, अश्लेषाके हरि, धनिष्ठाके वसु, शतभिषाके वरुण, पूर्वभाद्रपदके अश्वत्थामा, उत्तरभाद्रपदके अश्विधेय और रेवतीका अधिपति पुष्यानक्षत्र है ।

नाम—आर्द्रा, पुष्या, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्लेषा, रोहिणी, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढा और उत्तरभाद्रपद इनका नाम हैं जटुर्ध्रमुख ; तथा मूला, अश्लेषा, कृत्तिका, विशाखा, भरणी, मघा, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढा और पूर्वभाद्रपद इनका नाम अधोःमुख ; एवं अश्विनो, रेवती, हस्ता, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, मृगशिरा और अनुराधा इन नक्षत्रोंका नाम तिर्यङ्मुख तारा है ।

जाति—अश्विनो और शतभिषा नक्षत्र अश्वजातीय है, रेवती और भरणी हस्तो, कृत्तिका मघा, रोहिणी और मृगशिरा सर्प; आर्द्रा, हस्ता और स्वाति व्याघ्र, पुनर्वसु मेष, पुष्या, अश्लेषा और मघा इन्दुर, पूर्वफाल्गुनी और चित्रा मत्स्य, विशाखा और अनुराधा हृग्णि, ज्येष्ठा कर्कुर; मूला और अश्लेषा वानर; पूर्वाषाढा नकुल जातीय तथा धनिष्ठा, पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद सिंह जातीय है ।

मृगशिरा, हस्ता, स्वाति, अश्लेषा, पुष्या, रेवती, अनुराधा अश्विनो और पुनर्वसु नक्षत्रमें जन्मग्रहण करने पर देवगण होता है, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्रपद, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वभाद्रपद, रोहिणी भरणी और आर्द्रामें नरगण तथा ज्येष्ठा, मूला, अश्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा, चित्रा, मघा, धनिष्ठा और विशाखा में जन्म लेनेसे राक्षसगण होता है ।

किसी शुभकार्य के करनेके पहले उमके लिए चन्द्र और ताराशुद्धिका देखना जरूरी है । विशेषतः शुक्लपक्षमें चन्द्रशुद्धि और कृष्णपक्षमें ताराशुद्धि न देख कर कार्य करनेसे नाना प्रकारके असङ्गल होते हैं ।

ताराशुद्धि । यथा—जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र ये ८ तारा हैं ; इनमें जन्म, विपत्, प्रत्यरि और वध वर्जनीय है, इनकी सिवा अन्य समस्त तारे शुभकर होते हैं ।

जन्मतारामें विवाद, आह, भयवन्ध, यात्रा और और कर्म निषिद्ध है ।

निषिद्ध तारमें यात्रा करनेसे वन्धन, कृषिकार्यमें शस्य-नाश, औषध सेवनमें मरण, गृहारभ्रमें गृहदाह, और-कार्यमें रोगोत्पत्ति, आहमें अर्थनाश, विवादमें बुद्धिभ्रष्ट और युद्धमें भय होता है ।

अन्ततारासे मन्त्र को जानते हैं। चन्द्र और तारा  
 युधि होने पर अन्य समस्त दोष नष्ट हो जाती हैं।  
 विशेष विवरणके लिए ब्रह्म उचर देवो।

४ दश महाविद्याओंमेंसे पञ्चको विद्या।  
 'वाक्ये तारा महाविद्या सोमधी सुवनेश्वरी।  
 वैश्वी विमलान्ता च विद्या ब्रूमारती तथा ॥  
 ब्रह्मा विदविद्या च वातवी अथकरीतका।  
 एता एव महाविद्या विद्विद्याः प्रकीर्तिता ॥"

( उचरवार )

आज्ञा तारा पौडुमो सुवनेश्वरो, भैरवो जिवमस्था,  
 भ्रूमावतो, वामना, मातङ्गो और कामला ये दश महा  
 विद्याएं हैं।

मतोर्नि दण्डद्वर्गि आनेके लिए महादेवसे बार बार  
 अनुमति मांगी जो किन्तु महादेवने जिसो तरह मो  
 ल्के आनेको अनुमति न दी। इस पर सतोनो चोर चोर  
 महादेवको डरनेके लिए दश दण्डकारण किया से।  
 पेशे महादेवने महसोत हो कर लम्बे दण्डकार्गर्गि आने  
 को अनुमति दो दी। ब्रह्मवाक्त्रिका देवो।

प्रथमा तारा जो और बिलोवा महाविद्या ( लोकेर्गि  
 "बानौ तारा महाविद्या" है ) विद्या नही। जानो और  
 तारा दोनों को पाया महाविद्या है। काकिवाये की  
 ताराको वर्णित है।

- "ब्रह्मसन्तवविषयदेववर्गनि- शान्धोपच ।  
 शिर्षं परमशिवं बरतायाः प्रकीर्तिता ॥  
 सर्वभक्तकर्मणि शिवु वाचय वारवेद ।  
 विराट्कादभेरज्ज्वालायोरुक्तिवर्कशिव ॥  
 वाद्यार्षा वरिषन्धन इतिविशी सर्वस्व जानो भवेत् ॥  
 शिवजने मरु तथा सुवेकत वारो छद्मान्धने ।  
 धीरे दीपवनायको बुधिका अन्धेऽवनाकस्तथा ।  
 वादे द्विदिविवाक बुधि नवशासितेव वरुणने ॥  
 पागमवस्तु शिविका व वन्दुर्देवनि वहीशिविपुता ।  
 विद्विषयविषयी विवाद्यर्शुश्रुत्वाय कपिवा ॥  
 तारावन्दके इन्द्रे दोष त्वाग्ने नवमित है ।  
 ते सर्वे शिवक वासित सिंह रक्षा वना इव ॥"

( श्रीभक्तिपुत्रव )

कहा है, कौपिकोने ह्यवन्ध हो कर काकिवाया  
 रूप धारण किया था काकिवा सर्वमदो है। तारा  
 विद्यामेंसे चरित्रोत्कृष्टको और सर्वसिद्धिदायिनी है।  
 काकिवाको यदि तारामन्त्रादिवा ज्ञान हो तो वह शीघ्र  
 हो सुखि नाम करता है। नसको चमगंन कविता कहने  
 की शक्ति हो जाती है और वह सर्वशक्ति पाण्डित्य  
 नाम कर जनपति हो जाता है।

१ इच्छातिशयी श्रो। एक दिन अङ्गिरासनय चन्द्र  
 ताराके प्रसीधसामान्य रूपको देख कर लम्बे वरुण  
 के मदे। इच्छातिशयी मान्य होती हो लकीर्गि देवताओंसे  
 कहा। देवताओंने श्रुतियोंके साथ मिल कर चन्द्रके तारा  
 मांगी। परन्तु दुर्बुधि शोमदेवने ताराको भौडाया नहीं।  
 इस पर देवाचार्य उच्छ्रति पञ्चम कूट हो ठठे। यज्ञा  
 चार्य इनके पञ्चात्कर्ती हुए। महातेजा ब्रह्म पक्षी उच्छ्रति  
 के पिता अङ्गिराके शिष्य थे, वे भी कुछ कुछके स्निहके  
 कारण उच्छ्रतिके प्रहपोयक हुए। महात्मा ब्रह्मदेव शिष्य  
 ब्रह्मशिव नामक परमात्मका प्रयोग ठे श्रौं पर किया गया  
 था और उससे देवोंको यमोरामि विनष्ट हुई थी, उसी  
 प्रतिभीयक पात्रवय वरासनको धारण कर लुब्धके लिए  
 प्रवृत्त हुए। ताराके लिए हम तुझका मारुण हुआ था  
 बरुणिय यह तारकामय नामसे प्रसिद्ध हुआ। इस देव  
 दानव समर्थने पनेत्र लोभोंका चप होनी लगा। पाण्डि  
 देवोंने पनयोपाय हो कर ब्रह्माकी मारण की। देवोंको  
 प्रायमाने कीकपितामह ब्रह्मा क्षय वसरभूमि पर पावे।  
 लकीर्गि यज्ञाचार्य और ब्रह्म ब्रह्मदेवको साङ्गना दे  
 कर बुद्धके निवृत्त होनेका पादेय दिया और ताराको  
 चन्द्रने ले कर उच्छ्रतिकी प्रार्थना किया। उस समय  
 ताराको पन्नामन्त्रा देव कर उच्छ्रतिके कहा—“तुम  
 मरे क्षेपने पञ्चजनित चर्मधारण न कर सकोगी।”  
 ताराने उसी समय धम पत्र कुछ दण्डुबन्धनको प्रसव कर  
 शरणात्म पर कि व दिवा। मधुपल्लव कुमार शरणात्म पर  
 गिर कर अस्मत्त पात्रकनी तरह दोष्यमान हो गया,  
 उसको शरीर-आन्ध्रिये देवगव मानो तिरस्कृत होने लगी।  
 देवोंने स महापद हो पूजा—“देवि। सत्य कहना यह  
 कुछ शोमदेवका है वा उच्छ्रतिकी ?” किन्तु ताराने कुछ  
 उत्तर न दिया। इस पर सद्योजात ब्रह्म इनाम अपने

माताको शाप देनेके लिए तैयार हुआ, तब ब्रह्माने उसको निषेध कर तारामे पुनः पूछा—“तारे । तुम सच सच कह दो, यह पुत्र किसका है ?” ताराने हाथ जोड़कर कहा—“यह महात्मा कुमार टस्युहन्तम भगवान् सोमदेवका पुत्र है ।” यह सुन कर प्रजापति सोमदेवने अपने पुत्रको ग्रहण किया और उसका नाम बुध रक्खा । यह बुध अब भी गगनाङ्गनमें चन्द्रको प्रतिकूल दिशामें उदित होता है ।

सोमदेव इस पापसे सहसा राज्यक्षारोगसे आक्रान्त हो दिन दिन क्षीणमण्डल होने लगे । अन्तमें चन्द्रने इसकी शान्तिके निमित्त अपने पिताकी शरण ली । महातपा भद्रिने इनके पापकी शान्ति कर दी । पीछे चन्द्र पापमुक्त हो कर पूर्ववत् दीप्तिशाली और पूर्णमण्डल हो गये ।

६ अक्षिमध्य चन्द्रका तारा, आंखकी पुतली । पर्याय—कनीनिका, तारका और बिम्बिनी ।

७ बुध अमोघसिद्धकी स्त्री । ८ जैनशक्तिविशेष ।

ताराकूट ( स० क्लो० ) ताराणां कूटं, ६-तत् । ताराविषयक कूटभेद, फलित ज्योतिषमें वरकन्याके शुभाशुभ फलकी सूचित करनेवाला एक कूट । इसका विचार विवाह स्थिर करनेके पहले किया जाता है ।

विवाह और नक्षत्र देखो ।

ताराक्ष ( स० पु० ) दैत्य भेद, एक दैत्यका नाम ।

तारकाक्ष देखो ।

तारागङ्गा—रङ्गपुर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम । यहां धान, पाट और तमाकूका व्यवसाय अधिक होता है । तारागढ़—१ अजमेरके मौरवारके अन्तर्गत एक गिरिदुर्ग । यह अक्षा० २६°२६'२०" और देशा० ७४°४०'१४" पू०में अवस्थित है । अजमेरकी ओर शैलशृङ्ग जिधर ढालू हो गया है, उधर ही यह दुर्ग अवस्थित है । इसके चारों ओर दुर्भेद्य प्राचीर हैं । पूर्व समयके सभी राजगण इसी दुर्भेद्य दुर्गमें रहते थे । राधोन और चौहानके साथ जब लड़ाई छिड़ी थी, तब १२१० ई०में जहा मैयद हुसेनने प्राणत्याग किया था, वहाँ तुलुशृङ्गके ऊपर उनको भी एक सुन्दर मसजिद बनी है । अभी नहीरावादके अंगरेज सैनिक लोग यहां वायुसेवनको आते हैं ।

२ पञ्जावकी नालगढ़ राज्यके अन्तर्गत एक गिरिदुर्ग । यह अक्षा० ३१° १०' ३०" और देशा० ७६° ५०' पू०के मध्य शतद्रुनदीके बायें किनारे अवस्थित है । १८१४-१५ ई०में युद्धके समय गोरखा सेनाने इस दुर्गमें आश्रय लेकर अंगरेजोंके विरुद्ध युद्ध किया था ।

ताराग्रह ( स० पु० ) मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पांच ग्रहोंका समूह ।

ताराचक्र ( स० क्लो० ) ताराणां चक्रं, ६-तत् । तन्वीत चक्रभेद । इस चक्रद्वारा टीजणीय मन्त्रका शुभाशुभ जाना जाता है । नक्षत्र और वीक्षा देखो ।

ताराचमन ( स० क्लो० ) तारायाः आचमनं, ६-तत् । तारापूजाविषयक आचमन । तारापूजामें यह आचमन करना पड़ता है । ताग देखो ।

ताराचरण व्यास—हिन्दुके एक अच्छे ग्रन्थकार । ये १८८८ ई०के लगभग विद्यमान थे । इन्होंने नाथानन्द-प्रकाशिका नामक ग्रन्थ रचा है ।

ताराज ( स० स्त्रो० ) एक वंराज । (शुक्र प्रति १५४)

ताराज ( फा० पु० ) १ लूट पाट । २ नाथ, वरवादी ।

ताराभकनचक्र ( स० पु० ) तारोंका समूह जो आकाशमें क्रान्तिवृत्तके उत्तर और दक्षिणकी ओर रहता है । इस समूहमें अश्विनी भरणी आदि हैं ।

तारादेवो ( स० स्त्रो० ) १ एक महाविद्या । तारा देखो ।

२ हिमालयका गहरा और अन्धकारमय गूढस्थान तथा भोषण दृश्यका एक गिरिशृङ्ग जो शिमलाके निकट विद्यमान है । ३ जैनोंकी एक शासनदेवी ।

ताराधिप ( स० पु० ) ताराणा अधिपः, ६-तत् । १ चन्द्र, चन्द्रमा । तारायाः अधिपः । २ शिव, महादेव । ३ वृहस्पति । ४ बालि और सुगोव । ५ नक्षत्राधिप, अश्वि, यम प्रभृति नक्षत्रोंके अधिपति । ताग देखो ।

ताराधेश ( स० पु० ) तारायाः अधीशः, ६-तत् ।

ताराधिप देखो ।

तारानगर—वरद प्रदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम ।

(भ० ब्रह्मख० १९।४०)

तारानाथ ( स० पु० ) ताराणा नाथः । १ चन्द्र, चन्द्रमा ।

२ तिब्बतके एक सुप्रसिद्ध बौद्धपण्डित । इन्होंने १७वीं शताब्दीमें एक बौद्धधर्मका इतिहास रचा है । भारतीय पुराविद्गण इनका यथेष्ट आदर करते हैं ।

ताराणां चर्कवाचस्पति—एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षी विद्वान् ।  
 १८१२ ई०में बर्हमान जर्मिने ज्ञानना प्राममें इन्का  
 जन्म हुआ था । बचपनसे ही इनको पढ़नेका बहुत  
 शौक था । जोड़े ही दिनोंमें इन्होंने स स्कूलमें पच्छी  
 व्युत्पत्ति नामकी पौर 'तर्कवाचस्पति' उपाधिसे विभूषित  
 हो गये । फिर बागो जा कर इन्होंने विद्यानाथजीका  
 अध्ययन किया । अध्ययन कर चुकने पर इन्होंने अपने  
 प्राममें चतुष्पाठो ध्यान दो पौर निपाठसे तीसमकी  
 सङ्की मया कर समस्त रोगकार करने लगे । विष्णु  
 पुमान्बध इतने घाटा हो गया पौर ये कष्टदार  
 हो गये ।

व्यक्त-वाचिर्भने के आकरचर्क अध्ययन विष्णु हुए ।  
 कामिनेके अध्ययने इन्के प्राचीन स स्कूल पन्थ हया कर  
 प्रचार करनेको सहाय दी । इन्होंने काठवाल साइबकी  
 सहायसे पन्थ प्रकाशन कार्य प्रारम्भ कर दिवा पौर बर्ह  
 पुत्रा कर निधित्य हुए । इससे बाद इन्होंने शब्दकर्म-  
 दुग्मे तुलनाका "वाचस्पत्य" नामक एक उद्भव चमिधान  
 मङ्कित किया । इस कोयने प्रकाशनमें बर्ह १२ वर्ष  
 समय पौर ८०००० रुपये व्यय हुए थे । इससे सिवा  
 इन्होंने शब्दकोश-सङ्गानिधि ( कोष ), तल्लोसुदो  
 डोका, पाणिनिको मरक डोका चातुर्ध्यादयं आदि  
 बहुतसे स स्कृत पन्थ लिखे हैं ।

ताराण ( स० पु० ) ताराणां पन्था ६ तत् पन्थ समा  
 मान्तः । आकाश ।

ताराणोद् ( ध० पु० ) ताराणां आणोद्ः भूयश्मिन्, ६-तत् ।  
 १ चन्द्र चन्द्रमा । २ चन्द्रावलीके एक पुत्रका नाम । जे  
 धयोन्नाके राजा थे । इनके पुत्रका नाम चन्द्रगिरि था ।  
 ३ काश्मीरके एक विख्यात राजा । कायौर राजे ।

तारापुर—बम्बई प्रदेशके सङ्घात राज्यका एक नगर । यह  
 जन्माल नगरसे ३ कोस उत्तरमें अवस्थित है ।

२ धाना जिलेका एक बन्दर । यह पन्था १८१०  
 ७० पौर दिया ७२ ३० पू० पर पड़ता है । यह  
 आण्डोके दक्षिण बैरर स्टेशनसे ३ कोस उत्तर-पश्चिममें  
 अवस्थित है । आण्डोके उत्तरमें यह तारापुर जिलेको नाम  
 से मया है । यहां आण्डेके पवित्र कपड़ेका कारोबार  
 होता है ।

तारापुर जिलेको—बम्बईके धाना जिलेके पन्थागत माहिम

पौर दावानू तासुक्का एक प्राचीन शहर । यह पन्था  
 १८ ३२ ७० पौर दिया ७२ ३१ पू० के मया अवस्थित  
 है । शौकस का मगमन ००१२ है । जिनमेंसे पवित्राय  
 पारसो पौर वानो हैं । पारसो बिजिता निष्ठाको सङ्-  
 रबीका १८२० ई०का बनाया हुआ यहां एक मन्दिर है ।  
 यहां बावन, मसक, गुड़, मरुके तिल तथा लोड्डेको धाम  
 दनो तथा धान, मङ्कनी पौर सङ्काको उद्गतनो होता है ।

ताराप्रमाच ( स० स्त्री० ) ताराणां प्रमाच, ६ तत् ।  
 पश्चिमो प्रवृत्ति मचरकी सङ्क-निष्कयक संस्था । उद्  
 सङ्कितार्थे दस स क्कासे विषयमें दस प्रकार सिद्धा है—  
 मिथि १, शुच २, रस ३ इन्द्रिय ४, चमन ५, मयी ६  
 विषय ७, सुच ८, सङ्क ९, पक्ष १०, पय ११, एक १२,  
 चन्द्र १३, भूत १४, चर्चन १५, पश्चि १६ चन्द्र १७, पश्चि  
 ८, दक्ष २ शत १०० तथा दाहिंयात् १२, यह  
 ताराका-प्रमाच है । पश्चिमो आदि मचरोंके साथ पूर्व  
 जिनित तारास कुल हैं । इनका पन्थ तारीको पन्थाके  
 अनुसार हुआ करता है । ( पुराणितो १०० )

ताराबाई—१ मझाराङ्गनायक राजारामकी स्त्रिय पत्नी पौर  
 भारतपनिद्ध विद्याजीको पुत्रवत् ।

१००० ई०में सि इमदुमें राजारामको पत्य हुई । बाद  
 माह पौरउज्ज्वने सि इमदु पौर निवा । राजारामको  
 ज्मे ५० मङ्कनी ताराबाईने इस समय शौक मञ्जा पौर  
 मङ्कनी जन्मावृत्ति दे कर अपने धर्म, देश पौर पति-  
 राक्षको रक्षासे लिए पन्थप्रारम्भ किया । इस समय बहुत  
 से मराठोंने पौरउज्ज्वका पन्थ पन्थसम्भन किया था, जिन्हु  
 रानो ताराबाईकी सुमपूर भर्खा ना पौर उन्नाचबाईसे  
 बहुतसे मझाराङ्ग-बीरोंने उत्तोजित हो कर पुनः तारा  
 बाईका साथ दिया था ।

पन्से ताराबाईने रामचन्द्र पन्थ प्रमाच, यहरको  
 आण्डके सचिप पौर जनको यादवको महातासे १० वर्ष-  
 के कालक ( २५ ) गिवाजेकी सि द्वापन पर विद्याया  
 पौर छोटी सपयी राजसबाईको श्रेय कर रक्का ।

१००० ई०से १००३ ई० तक पौरउज्ज्वने सि इमदु  
 पन्थके कर पन्थमें पवित्रार कर किया । गङ्का नाम  
 बदन कर 'बकनिन्दकली' (धर्मात् ईश्वरका दान) नाम  
 रक्का मया ।

१००३ ई०में सुपन्थाङ्गमाह विनाचहित पूना जोड्ड



ने क्रिमको द्विपी तोरने पामा या पत्र मने उमका प्यारा पोत्र रामराजका उत्तराधिकारी हुपा। पियमा बालाजोने माहुको ( मधुसे पक्षी ) निजा बा बि, "ताराबाईका पोत्र राजा होने पर मो राज्यमानन भिने ही जाक रहेमा तथा जिधने गिबात्रीने य शीयोका नाम उमका रहे, ही उम पर विधिय मत्प एक मा ।"

इम समय ताराबाईको उम्र ०० वर्षको हो । इम उमकापामि मो उमको पदमीको चेष्टापो घोर बुद्धिबलिका जगामो ज्ञान नही हुपा बा । रघुभीके छपर राम राजका मार दि कर बालाजो पूना पने घामे । पत्रमे पूना हो महाराष्ट्र-भारत-भारती राजधानी हुई, रामराज नाममात्रके लिए मताराके राजा के उमने शक्ति कुञ्ज मो नही हो । इम समय बालाजी ही मर्षप्रधान थे । जिन्तु ताराबाईको प्रकृति ऐमो र ही हो बि, से किमीको पत्रो मतामि रहे । बालाजी भी ताराबाईको उत्तमी परमाइ नही करति थे । पत्र ताराबाई बालाजीके जाबमे राम शक्ति से कर म्मद परिचालन करनेके लिए बेहिर हुई ।

ताराबाईने पत्रसचिवको चतुरीधपुर्षक कहलबा भेजा कि "मै नि इमदुर्म पतिनी समाधि दर्शन करने जाउंगो, उस समय पाप मुक्त हो साम्राज्यको जेतीदुर्मि प्रचार करनीको चेष्टा करे । बालाजो इम स बादको पा कर कुञ्ज बिचलित हुए से । उमने ताराबाईको जाबमे रक्षनेके लिए कहलमा भेजा कि, "पाप औषो सदायया बुद्धिमतो घोर उच्चकृतिओ मन्त्रा इमरो नहो है; पाप पक्षिकीय स्थान पर राजशक्ति परिचालन कर खने इमने इमि कोई पापित नहो है किन्तु इमने मो राजा साहुने समता प्राप्त हुई है उमको रामराज जिन्धि भीकार कर से, इसकी कोमिग पाप पत्राङ्गी करेगो ।"

महाराष्ट्र सामन्तमण बालाजोको कूटनीति समझ गये । इम समय प्रधान ए पत्रके लिए उमने बहुत भयङ्क होने लगा । इमो बीचमे बालाजोने भोतर की भोतर महाराज्यता पात्रा कर दो । रामराज मता। दुर्मि कौड कर भिने गये । ताराबाईने कोम्हापुर जा कर पात्रा कर लिया । कुछ दिन बालाजीने उम व विवाह एक टन लेना भेज दे, किन्तु इमने कुछ हुपा नहो ।

ताराबाई बालाजीका सब नाय करनेके लिए चारो

तारके महाराष्ट्रकी कत्ते जित करने लगे । पियमा बाला जोने विचार कि ताराबाईके प्रति पवित्र पापपत्र कर भिने कोई छन नहो निकलेगा । उमने ताराबाईको कहलमा भेजा कि, पाप साक्षात्पुर्षक शुभमे मानमे घोर उमने सब प्रधान है; पापक विवाह पापपत्र करना इमको उचित नहो । पाप पूना या कर प्रधानशक्ति पत्रक कोमिग ।

१०२० ई०मे ताराबाई इम प्रकार पूना बुलाई गई । रामराज मो कुछ दिनोंके लिए मुक्त हुप, किन्तु रामराज ताराबाईको इच्छाके विषय खर्च करने ली । इमने ताराबाई रामराज पर पत्राका पत्रमत्तुड जा गई, उमने रामराजो यावतवाइ घोर रघुओ मो मछीकी सहायतासे रामराजको हट कर लिया घोर स्वय सर्वमया हो गई । बालाजी बुद्धके लिए निजामराज्यमे गये से उमके शोडते हो ताराबाईको सम्यक् पक्षिकारनेका पत्र भेजा पड़ा । मानमिन्न कहने कुछ दिन बाद ताराबाईका स्वर्णनाम हो गया ।

२ शेटनूरी प्रसिद्ध घोरबाका । शेटनूरीके सोनहो राज राव कूटनीतिको बन्दा थो । पत्रकमवाइके प्रसिद्ध मन्त्रक इमि सुरतानका कर्म हुपा बा ।

सुरतानके पूर्वपुत्रपिनी कुछ समय तक तीहकोकामि राज्य किया था । मयमा नामका एक पक्षमालके सुरतानको कहने भगा कर उम राज्य पक्षिकार कर लेने पर सुरतानने शेटनूरी या कर पात्रय लिया बा ।

जिम समय जितिका भाग्य-परिचलन हुपा था, उम समय ताराबाई बिजोरो को वसन भूयण इर्ष पक्षक नही मन्ते थे से मर्षदा तनकारने खेला करतो हो घोर घोड़े पर चढ़ कर बाबप्रशोय किया करतो थो । घोरबाका सब दा घोरवेमने रहलमा पन्मद खातो थो । नेमने नेकने वारबालाके इममोय पत्रमि घोवन भाव दिनलाई दिने । इमने क्षा, गुण, बाधयिथा घोर पत्रुत तन्मारा विरतिनी पत्रा यात्र हो राजपुतानेके घोर समाजमे फैल गई । भिवाइके राजा रायमन्के वतोय पुत्र जयमन्ने तागाई मात्र विवाह करनके लिए प्राथना को । घोरबाकाने जयमन्को कहलमा भेजा कि "मो बाइका उदार करेगी, ताराबाई उमको





विषट् प्रच्छेदका १ पल इत्यं चर चन्द्रपत्रिने धीरे चोरे  
पात्र क्षति है । मरुको पिण्डो चो क्षति पर चने स्निग्ध  
माण्ड्रि रक्षते है । भोजन करनेके बाद १ तोला मेवन  
करनेका विधान है । इनके गितगून कामता पाण्डुरोग,  
शोथ मन्दाग्नि, चर्म रक्षको मुक्तामोदर प्रसूति रोग क्षति  
रक्षते है । ( भैरवरासा० एकादि० )

तारावयो ( म० पृ० ) ताराया स्वदपा स्वदपे मयट् ।  
तारास्वदप ।

ताराव्यम ( म० पु० ) ताराव्यम मृम मृगधिरः । मृग  
धिरा मवत ।

ताराव्यम ( म० पु० ) पात्राय ।

तागरि ( म० पु० ) ताराया परिः ६ तन् । विट् मालिख  
नामकी उपधात् ।

तारावती—१ राजा चन्द्रसिंघरको पत्नी । पार्श्ववती पत्नी  
यैत भोगवती नदरीमें इन्द्राक्षुष शोथ अक्षुष्य नामके  
एक शत्रु थी । अर्घदेवको कन्या मनोन्मादिकोके भाव  
उन्मत्तमें विवाह किया था । इनके समय १०० पुत्र हुए ।  
चिन्तु कन्या एक भोग क्षीमेंसे अक्षुष्यकी पत्नीमें कन्या  
की इच्छामें अण्डिकाकी पारावती को । तीनों वर्ष बाद  
अण्डिकामें मनुष्य हो कर उन्मत्तको स्वर्गमें पक्ष कर दिया  
कि "क्षीनत्तकन्यया मार्गभोग्य शत्रुाडी को चोर  
नक्षत्रमानातुत्र तुम्हारे एक कन्या भोगी ।" यथासमय  
मनोन्मादिकीके समामान्य सुन्दरी एक कन्या हुई ।  
ऐक्यताके साथै इन कन्यामें व्यामामिख ताराका विज्ञ  
था, इसलिये विताने उनका नाम तारावती रखा ।  
तारावतीका योग्यकाल उपस्थित देखे उत्तम विताने  
बैशाखमास मा०श्रुमें इन्द्रचन्द्र पौर युमदिकी कार्यकर  
समा करके शरीर दियाकीकी कृत मित्रे । इन म बादको  
दा कर सभी शत्रु समामें उपस्थित हुए, वीर्यतनय चन्द्र  
सिंघरराज भी म्गापन्द्वादि विभूषित हो कर स्वयं  
बानमामें पधारे ।

तारावतीमें स्वयं बरका हस्तान् सुन कर अण्डिकाके  
मन्दिरमें जा देको कालिकाको पारावती को । अण्डिका  
नि श्रुय हो कर कहा—"चन्द्रसिंघर नामके महेश्वररावतार  
वीर्यतनय मनोहर उपधाक्षु है । उन्मत्तको तुम बरमाना  
नेम ।" तारावतीमें कालिकाके पादमाधुरार नामाने जा  
कर चन्द्रसिंघरको हो बरमाना प्रदान को ।

पत्न्यार चन्द्रसिंघर पत्नी पत्नी तारावतीको भी कर  
राजधानीको लोटे । अक्षुष्यकी विवाहदा नामकी दूमरी  
एक कन्या मो को दुर्मि तारावतीके समान की स्वयं  
दामिर्दाकी पत्नीवरी बन कर बड़ी बहनके साथ पार  
दी । इनका उर्वशीके गर्भमें अन्ध पुत्रा था । बादकाल  
में एक दिन मर्षिमें पटावकको म्पूत्र करनीके उन्मत्त  
प्राणके ये तारावतीको दामो हुए थी । महाराज चन्द्र  
सिंघरने इन्द्रतो नदीके बिनारे अरधोरपुर नामका एक  
नगर बनाया था पौर बड़ी नि बहुत दिन सुखके रहती थी ।  
एक दिन तारावती इन्द्रतो नदीमें स्नान कर रही थीं  
इतनेमें एक कपोत नामक पक्षिकी इन पर इष्टि पड़ी  
पौर भी इन पर पापश्रु का मये । ये पक्षि प्राणिकवको  
पायङ्गने कपोत मरीर धारण कर विचरक कर रही  
थी इसलिये इनका नाम कपोत पक्षि पड़ा गया था ।

कपोतने पयन्त कामातुटु हो कर इनके विपयभोग  
को इच्छा प्रयत्न को । तारावती उर मई पौर सुनिको  
प्रणाम कर कहने लगी— "मैं चन्द्रसिंघरको पत्नी हूँ,  
मेरा नाम है तारावती, मैं किस तरह मतोत्सर्गको छोड़  
सकती हूँ ?" मर्षिमें कहा— "उरो मन मैं तुम्हारे द्वारा  
मर्गनक्षत्रमय्यय महावमगामो पुत्रदय उत्पन्न करूँ ना  
यदि तुम मेरो बात न मानोगे, तो मैं शायद दाय तुम  
दास्यकी भ्रमण कर दूँगा ।" तारावतीने उत्तर दिया—  
"बाप कुछ देर ठहर जाये । इतना खर कर तारावती  
करकी चलो गई पौर पत्नी बहनके कहने लगा— "तुम  
मेरे समान रूपवती हो तुम्हारे निवा पक्ष सुनि इस  
विषयके पक्ष्य खाई हो उठार नहीं कर सकता ।"  
विवाहदा कुछ देर तन् पुत्रबाप पक्षी रहते, वीके तादा  
वतीके पादमाधुरार सुनिके पाप बन दी ।

विवाहदाके पत्न्यावस्थामें हो सुनिके चोरसने  
सुबका पौर तुम्बुब नामक दो पुत्र हुए । इन तरह चिता  
इटा कपोत सुनिके पाप रक्षने लगी । पौर एक दिन  
तारावती उर इन्द्रतो नदीमें स्नान कर रही थीं । इसी  
समय उर सुनिने विवाहदाके पुत्रा— "यह पत्नीक  
मामान्ता सुन्दरी कोन है ?" विवाहदाके उरने हुए उत्तर  
दिया— "बैशाख चन्द्रसिंघरकी पत्नी पौर मेरी बड़ी  
बहन तारावती है । पुत्र इत नदीमें स्नान करनेकी पार

है, आप इनको जन्मा कीजिए।" कथितको मंत्र मंत्र मान्म पड़ गया। वे उत्पन्न हुए, तारावती पान जा कर कहने लगे—'तारावती! तूने मुझे घोवा दिया है, उसका फल भोग। मेरे शापने वीभक्तवेगधारी विरूप धनहीन नरकगान कोई लोभो वृद्ध सझमा तुझे ग्रहण करेगा और एक वर्षके भोत्रर तेरे गर्भमे दो पुत्र उत्पन्न होंगे।' इस पर तारावतीने कहा कि 'यदि मैं सच्ची सती हूँ और मेरो मातानि यदि मुझे चण्डिकाको आराधना करके प्राप्त किया हो, तो निश्चय समझें, देवताके सिवा कोई भी मेरा स्पर्श न कर सकेगा।'

इतना कह कर तारावती अपने घरको लौट गई और राजा चन्द्रशेखरसे मुनिके शापका हाल कह सुनाया। राजा चन्द्रशेखर इस वृत्तान्तको सुननेके बाद सर्वदा तारावतीके पास रहने लगे। एक दिन कुछ दिरके लिए चन्द्रशेखर पास न थे, तारावती उद्वेगचित्तसे चन्द्रशेखरके ध्यानमें नियुक्त थीं। इसी समय महादेवने पार्वतीसे कहा—'हे पार्वती, तूमे इस तारावतीके शरीरमें प्रविष्ट होओ, मैं उस पर उपगत हो कर मुनिका शाप मोचन करूँ। तारावती तुम्हारा ही अंश है। इसके गर्भमे भृङ्गी और महाकाल उत्पन्न हो कर तुम्हें शापसे मुक्त करेगे।' पोछे पार्वतीने तारावतीके शरीरमें प्रवेग किया। महादेवने तारावतीको सुषु करके अस्थिमात्यधारी वीभक्तवेग दुर्गाभदेह उराजोर्ण और अति विरूप शरीर धारण कर तारावतीसे सम्भोग किया।

उसी समय तारावतीके गर्भसे वानरमुख दो पुत्र उत्पन्न हुए। पुत्र उत्पन्न होते ही पार्वती तारावतीकी देहसे निकल आईं।

जब मोड़ दूर हुआ, तब तारावती सामने वीभक्तवेगधारी महादेव और मद्योजात वानरमुख दो पुत्रोंको देख कर अत्यन्त विमर्ष हुई और अपनेकी भ्रष्ट समझ कर नाना रूप विलाप करने लगीं। इतनेमें चन्द्रशेखर भी वहाँ आ पहुँचे, वे भी तारावतीको इस अवस्थामें देख कर अत्यन्त दुःखित चित्तसे विलाप करने लगे। इसी समय आकाशवाणी हुई—'राजन्! तारावती पर किसी तरहका मन्त्र न करे। सन्मुख महादेव ही मायाके पास आवे थे, वे दोनों महादेवके ही पुत्र हैं।

आप इनको रक्षा करें। इसका पूरा वृत्तान्त नारदवे प्राणम पड़ेगा।' एक दिन नारदने चन्द्रशेखरके घर उपस्थित हो कर तारावती और चन्द्रशेखरके कहा—'राजन्! महादेवने मायिकोके शापने पार्वतीको इस देहमें प्रविष्ट करा कर उस पर उपभोग किया था, आइए इनको भ्रष्ट न समझें। आप स्वयं भी महादेव हैं और तारावती भी साक्षात् पार्वती हैं, अब आप अपनेमें शिवत्वका अनुभव करें।'।

नारदजी इस बातको सुन कर, चन्द्रशेखर अपनेमें शिवत्वका और तारावती अपनेमें साक्षात् पार्वतीका अनुभव करने लगीं। पूर्वकालमें विष्णु मायाने अपनेको दो मनुष्य योनिमें सुषु किया था। इसी कारण मनुष्य शरीर द्वारा अपने शिवत्वका अनुभव नहीं कर सके थे। इस तरह उनका मन्त्रेह दूर हो गया। तारावतीके गर्भसे उत्पन्न चन्द्रशेखरके तीन पुत्र हुए—बड़ा उपरिचर, मझना टमन और छोटा अन्नक। तारावतीके गर्भसे वेतान और भैरव महादेवके सद्योजात दो पुत्र थे। इस तरह कुल ५ पुत्र थे। पोछे पति-पत्नी दोनों मनुष्यदेह छोड़ कर शिव और गौरीमें मिल गये। (कालिकापु० ४८-५३ अ०) २ काञ्चनपुरके राजा धर्मभञ्जकी पत्नी। तारावर्ष (सं० क्लो) तारापतन, ताराओंका गिरना। तारावन्तो (सं० स्त्री०) मणिभद्रयज्ञकी कन्या। तारापोदा (सं० स्त्री०) ताराया: पोदा, ६ तत्। तारापूजाङ्ग पोदा:न्यासमेद।

तारास्थान—एक सूरका नाम।

तारिक (सं० क्लो०) तृ-णिच्-ठन्। अ० इनिठनी। पा ५।१।१५। तारणमूल्य, नदी आदि पार उतारनेका भाड़ा या महसूल, उतराई।

"गर्भिणी तु द्विधासादिस्तथा प्रव्रजितो मुनिः।

ब्रह्मणा त्रिगिन्शैव दाम्पास्तारिकं तरे ॥" (मनु ८। ४०९)

गर्भिणी स्त्री, भिक्षु, वानप्रस्थाद्यमौ मुनि, ब्राह्मण, निड्रो और ब्रह्मचारी इन सबसे तरपण्य (महसूल) नहीं लेना चाहिये।

तारिका (सं० स्त्री०) तादिका इत्यर। तालरसजात मद्यमेद, ताडो नामक मद्य।

तारिणी ( स० स्त्री० ) तारिन् स्त्री० । १ शीतोष्णो एक द्वीपः । २ एक पद्याय—तारा, महाशो, शोकार स्वाहा शो, मनोरमा, बया, धनन्ता, मित्र, लोकेश्वरामन्त्रा, कपुर कामिने, मङ्ग श्रेष्ठा मोनवस्ततो, यज्ञिनी, महानारा, बन्धुवारा धनदा, त्रिमोचना शोर मोचना । ३ द्वितीया महाविद्या । मन्त्रोपा, तारा, उपा, बया, कानो धरस्त्रतो, कामेश्वरो शोर शत्रुवदा जे पाठ तारियो है । इनको पारावना खरनिने मनुष्य कबिल, पाखिल शोर धन पाती है तथा राक्षसमार्गे शोर विबाह प्रकृति सब कामेनि सब नाम कामे है ।

१ उदारियो उदार खरनेवालो ।

तारिन् ( स० स्त्री० ) तारयति इ विधे चिनि । तारय, उदार करमेवाला ।

तारो ( हि० स्त्री० ) १ एक प्रकारको चिड़िया । २ धर्माधि भ्याम ।

तारोच ( वा० वि० ) १ उदाह, काडा । २ कुंघन, पंजिरा ।

तारोको ( वा० स्त्री० ) १ उदाहो । २ धर्मकार ।

तारोच ( वा० स्त्री० ) १ महोत्सवा इत्ययं दिन । २ मह तिथि जिसमें पूर्वकाकडे किसी बरमें कोई विधिय घटना हुई हो । ३ तिगत तिथि । ४ इतिहास, तारोच ।

तारोच ( वा० स्त्री० ) १ लक्ष्य, परिभाषा । २ विवरण, वर्णन । ३ प्रथमा, उदाहा बयान । ४ प्रथम शब्दो वात सिद्धत ।

तारुचःसि ( स० पु० ) तारुचके न मत्र ।

तारुच्य ( स० पु० ) तारुचस्य श्यपिरपत्त पुमान् । तारुच यादित्वात् यत् । तारुच श्यविधे न मत्र ।

तारुच्योपनी ( स० स्त्री० ) तारुचस्य श्यपिरपत्त स्त्री तारुच स्य । सर्वत्र भेदितारिचउत्प्रेत्यः । पा ४।१।२० । तारुच श्यविधी उपपत्त स्त्री ।

तारुच्य ( स० पु०-स्त्री० ) तारुचस्य उपपत्त उच्चादित्वात् यत् । १ तारुच श्यविधे न मत्र । ( वि० ) जिवां स्त्री० । २ तारुच, शीतो उच्चा ।

तारुच्य ( स० स्त्री० ) तारुचस्य भावः तारुचभावाद्वादित्वात् यत् । योवन, उवालो ।

तारुच्य ( स० पु० ) ताराया उपपत्त ताराउच्य । १ कानिचि सुप्र पाठ । २ उच्चत्यिको स्त्री तारुचं पुंय सुच ।

तारुच्य ( स० वि० ) तारुचिंकार' तारुचस्य इति वा तर्हु पञ्च । श्येवाच । पा ४।१।२० । तर्हु वा टेरुपाया विकार ।

तारुच्य ( स० वि० ) तर्हु श्चि तर्हुयाश्चमचोते वा तय ठक् । १ तर्हुयाश्चरेता तय याश्चका जाननेवाला । २ तय याश्चाश्चयनकारो तर्हुयाश्चका पढ़नेवाला । तर्हुयाश्चके न मद्र है—वरीयिक, पोतुच्य, वाईयाच्य, नादिक मोचायतिठ ( बौद्धिक ) शोर तारुच्य । जो इन सब याश्चोको पढ़ते हो या पच्छो तरह जानते हो वे ही तारुच्य है । तर्हु हैको

तारुच्य ( स० पु० ) उच्य यय यच । १ उच्चय श्यवि । २ निजताके गर्भसे उत्पन्न उच्चयका पुत्र गवङ्ग ।

तारुच्य ( स० स्त्री० ) उच्चायन ।

तारुच्य ( सं० पु०-स्त्री० ) उच्चा श्यय उपपत्त उच्चाय यच । शिराश्रेणोत्पत्त । पा ४।१।२२ । उच्चायके न मत्र ।

तारुच्यो ( स० स्त्री० ) तारुच्यो शोर । पातासगवङ्ग मता विरेटो, शिरिचटा ।

तारुच्य ( स० पु० ) तारुच्ये उपपत्त तारुच्य-उच्य ( नगरी म्भो न्त् । पा ४।१।२४ । १ उच्चत्युनिचे गोवत्त । २ गवङ्ग यच यचय, गवङ्गे नङ्गे भाई यचय । ३ नवङ्ग । ४ यच्य, शोङ्ग । ५ मय, सीव । ६ मानुच्य ७ कर्च, मोना । ८ यच्यकचं उच्य एक प्रकारका मासुच्य । ९ यच्यन, रय । १० पर्वतमिद एक पहाड़का नाम । ११ विद्वग भास, एक प्रकारका पयो । १२ चतियविधिय । १३ मद्रा हैम । ( स्त्री० ) १४ उच्चायन ।

तारुच्यैतन ( स० पु० ) तारुच्यैतन यच नङ्गो । यच्युच्यन, विष्णु ।

तारुच्य ( स० स्त्री० ) तारुच्यैतन यच नङ्गो । उच्चायन, रजोत ।

तारुच्य ( स० पु० ) तारुच्यैतन यच नङ्गो । गवङ्ग यच, विष्णु ।

तारुच्यनायक ( स० पु० ) तारुच्यैतन यच नङ्गो नायक' प्रायक' । तत् । मद्र । इतने यचो माताके नामक कार्त्तमें सर्पोको बहन किया था ।

तारुच्यनायक ( स० पु० ) तारुच्यैतन यच नङ्गो नायक' । तत् । सर्पनायक गवङ्ग ।

ताक्ष्यप्रसव ( स० पु० ) अश्वकर्णवृत्त, एक प्रकारका शालवृत्त । ( राजनि० )

ताक्ष्यशैल ( स० स्त्री० ) रसाञ्जन, रमोत ।

ताक्ष्यसामन् ( स० स्त्री० ) सामभेद । ( लाट्यागान १।६।१६ )

ताक्ष्ययण ( स० पु०-स्त्री० ) तृचस्य ऋपेरपत्यं युवा गर्गादित्वात् यञ्, य्नि फक् । तृचऋषिके युवा अपत्य ।

ताक्ष्ययणी ( स० स्त्री० ) तृचस्य गोत्रापत्यं स्तो तृच-लोहितदित्वात् स्फ । तृच ऋषिकी वंशज स्त्री ।

ताक्ष्यी ( स० स्त्री० ) वनलताविशेष, एक वनलताका नाम ।

तार्ण्य ( स० त्रि० ) तृणस्य इदं शिवादित्वात्-अण् । १ तृणसम्बन्धी, जो घाससे बना हो । २ तृणजन्य वस्त्र, घाससे उत्पन्न अग्नि । तृणात् तद्विक्रयात् स्थानादागतः शुण्डिकादि० अण् । ३ तृणविक्रयरूप अर्थ स्थानजात कर, वह कर या महसूल जो घास पर लगाया जाता है ।

तार्ण्यक ( स० त्रि० ) तृणानि सन्त्यस्मिन् कृण कुक् च तोर्णकोयास्फस्मिन् भवः विल्वकादित्वात् छ मात्रस्य लुक् । तृणयुक्त देशभेद, वह स्थान जहाँ घास बहुत होती ही ।

तार्ण्यकर्ण ( स० पु०-स्त्री० ) तृणकर्णस्य ऋपेरपत्यं शिवादित्वात् अण् । तृणकर्ण ऋषिके वंशज ।

तार्ण्यविन्द्वोय ( स० त्रि० ) तृणविन्दुः देवता अस्य तृणविन्दु-छ । छ च । पा ४।२।२८ । तृणविन्दुके उद्देशसे जो दिया जाय ।

तार्ण्ययन ( स० पु० स्त्री० ) तृणस्य ऋपेर्गोत्रापत्यं नडादित्वात् फक् । तृण नामक ऋषिके वंशज ।

तार्ण्ययि ( स० त्रि० ) तृतीय एव स्वार्थे अण् । तृतीय पादन्त्यास ।

तार्ण्ययिसवन ( स० त्रि० ) तृतीय सवन सम्बन्धीय ।

तार्ण्ययिहिक ( स० त्रि० ) तृतीय दिन सम्बन्धीय, जो तीसरे दिन होता हो ।

तार्ण्ययिक ( स० त्रि० ) तृतीय एव स्वार्थे ईकक् । तृतीय, तीसरा ।

तार्ण्य ( स० स्त्री० ) तृप-खत् । तृपा नामक लताजात वस्त्रभेद, तृपा नामक लतासे बना हुआ वस्त्र । इसका व्यवहार वैदिक कालमें होता था ।

तार्ण्य ( स० त्रि० ) तर-फस्येणि खत् । १ तरणीय, पार होने योग्य । तरे तरणे देयं परञ् । २ तरणार्थं देय शुभ्र, नदी घाटि पार उतारनिका भाडा, उतराई ।

तार्ण्यध ( स० पु० ) वृचभेद एक पेड़का नाम ।

तान ( स० पु० ) तल एव-अण् । १ करतल, हथेली । तावते तड-कर्मणि अच् उच्य ल । (क्रो०) २ हरिताम, ज्रतान । ३ तालीगपत्र, तीजपत्तेकी जातिका एक पेड़ । ४ दुर्गाक मन्त्रामनका नाम । ५ करतलध्वनि, ताली । ६ वह शब्द जो अपने जंघे या बाहु पर जोरसे हथेली मारनेसे उत्पन्न होता है । ७ हाथियोंके कान फटफटानिका शब्द । ८ लम्बाईको एक माप, वित्ता । ९ ताला । १० मजोरा या भाँझ नामका वाजा । ११ चम्बेके पत्थर या काँचका एक पत्ता । १२ विल्वफल, बेल । १३ तलवारको सूट । १४ एक नरक । १५ महादेव । १६ वृचविशेष, ताड़का पेड़ । ताड़शब्द देखो । १७ पिप्रलमें टगणके दूसरे भेदका नाम जो एक गुरु और एक लघुका होता है— ५ ।

१८ गीतके काल और क्रियाका परिमाण नाचने और गानेमें उसके काल और क्रियाका परिमाण जो बीच बीचमें हाथ पर ठोक कर सूचित किया जाता है । यह स्वर इतने समय तक गाया जाता है, इस काल तक बिलम्बित होता है, इस काल तक द्रुत है, इत्यादि विषयों तथा अंगुलियोंके आकुञ्चन और प्रसारण आदिके द्वारा गीत और नृत्यादि विषयके काल और क्रियाके परिमाणका नाम हो ताल है । गाने और बजानेमें उसके काल और क्रियाके परिमाणविशेषको ताल कहते हैं । क्रियाके द्वारा अखण्ड दण्डायमान कालके छन्दोनुयायिक परिमाणविशेषका नाम भी ताल है ।

महादेव और पार्वतीके नाचनेसे तालकी उत्पत्ति हुई है । महादेवने ताण्डव और पार्वतीने लास्य नृत्य किया था । ताण्डवका 'ता' और लास्यका 'ल' इन दो अक्षरोंसे "ताल" शब्दकी उत्पत्ति हुई है ।

( मधुसूदन, अमरटीकाया भरत )

गीत, वाद्य और नृत्य, ये तीनों ताल द्वारा प्रतिष्ठित हुए हैं । इसके दो भेद हैं—मार्गताल और देशो ताल । भरतमुनिके मतानुसार मार्गताल ६० प्रकारका है :

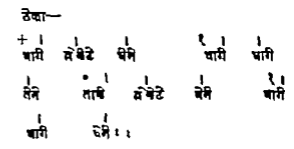
बैशा—१ चयत्पुष्ट २ चायपुष्ट, ३ पदपितायुत्रय, ४ उक्-  
 कथक, ५ सविपात ६ कडक, ७ कौशिकारक, ८  
 रात्रकोशाहक, ९ रश्मिचाचर, १० शचीविय, ११ पार्वती-  
 सोचन, १२ राजपुङ्गामि, १३ जयश्री, १४ नादिबाहुक,  
 १५ कर्म्य, १६ मलकुवर १७ टपेच १८ रतिगोन, १९  
 मोचपति, २० चोरङ्ग, २१ मि जविक्रम, २२ दीपक, २३  
 मङ्गिकामोदक, २४ गजलीक, चर्चरी, २५ कुडक २० विज-  
 यानन्द, २८ चोरजिक्रम, २९ टेरिक ३० गङ्गाभरक, ३१  
 श्रीकोति, ३२ मनमाळी ३३ चतुसुच, ३४ वि जगन्दन,  
 ३५ मन्दोग, ३६ चन्द्रविम्ब ३७ द्वितीयक, ३८ जयमङ्गल,  
 ३९ गन्धर्व, ४० यक्षरम्, ४१ विमर्दि, ४२ रतितान ४३  
 बसक ४४ जगभ्रम्य ४५ गाहचि, ४६ कविगीचर ४७  
 घोष, ४८ करबकम, ४९ मौरव, ५० गतप्रभागत ५१  
 मङ्गतामो ५२ मौरवमण्डक ५३ सखतीगण्डामरक,  
 ५४ झोडा, ५५ निःसाह ५६ सुत्रावन्तो, ५७ रङ्गराज, ५८  
 भरतानन्द, ५९ पादितानक पौर ६ सम्यकैटाक इना  
 मकार ६० शैवी ताल वतावे मये हैं। मित्र मित्र मतके  
 प्राचीन पन्थीमि मित्र मित्र मकारक तालीके नाम पौर  
 चक्ष्मापीमि मो पार्यक्य पाया जाता है। इन तालीमि  
 शै पात्रकक बहुत जो जोड़े प्रचलित हैं। किन्तु उनमें  
 मात्रा पादिक नियम नहीं मिलते। उनमें नाम पौर  
 मात्राका विवरण नीचे प्रकाराधिकमसे दिया जाता है।

चिह्निका परिचय इस प्रकार है—अक्षमात्राका चिह्न  
 ( १ ) दीप्रमात्राका चिह्न ( २ ) द्रुतका चिह्न ( ३ )  
 द्रुतका चिह्न ( ४ ), चतुद्रुतका चिह्न ( + ), विराम-  
 चिह्न ( ), विभिन्नताका चिह्न १२ इत्यादि।

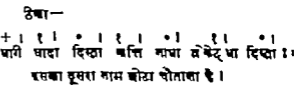
- घट्टताली—१ ( " १ १ )—२ ( " " १ १ )
- पन्ध्रतान—१ ( १ १ १ १ १ )—२ ( " " १ १ १ )
- पन्नाझोड़ा—( " " " )
- पमङ्ग—१ ( १ १ १ )—२ ( १ १ १ १ )
- पमिमन्द—( १ १ " " )
- पमनतान—( " १ १ " " १ १ )
- घट्टताली—( × × " १ )
- पद्यम ( कङ्कान )—( १ १ १ )

पाङ्क पियटा—यह पद्य भी प्रचलित है, इसमें १२  
 मात्राय होते हैं। बिछो बिछोके मतमें, यह ताल साङ्के

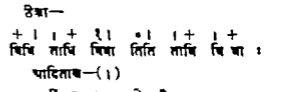
तिरङ्ग मात्रापीका होता है, इसमें तीन पद्यको क्या कर  
 एक बार विराम होता है।



पाङ्क चौताका—यह वर्तमानमें प्रचलित है। इसमें  
 ० मात्राय होते हैं; चार ताल पौर तीन बाली।



पाङ्क ठेका—यह ताल प्रचलित है इसमें ८ मात्राय  
 हैं; तीन ताल पौर एक बाली झोड़ना पड़ता है।



पादिताल—( १ )  
 इसमें एक द्रुततान होता है।  
 इकावान्—( " " १ )  
 लखन—( १ १ )  
 लखीचक—( १ १ १ )  
 लक्ष्म—( १ १ १ )  
 लक्ष्म—१ ( " " १ )—२ ( " " १ )  
 एकताली वा एकतालिबा—

- १। रामा ( " ) २। चन्द्रिका ( १, १ ), ३। प्रमिता ( " १ ), ४। विपुला—( × " १ ), ५। ( " १ ), ६। ( × " " १ ), ७। ( " १ )

प्रचलित एकतालिमें ६ दोष मात्राय पाई जाते हैं।  
 यह बारह मात्राका ताल है। कोई कोई इसको तीन  
 पौर कोई चार पद्यमें विभक्त करते हैं। जो तीन पद्यमें  
 विभक्त करते हैं, वे जहमें हैं कि इसमें खालो ताल नहीं  
 है। पौर जो चार पद्यमें विभक्त करते हैं, वे इसमें खालो  
 है, पिया बतलाते हैं।

ठेका—

(१) धिन् धिन् धा धा, तिन् ता क्त् तै

धागे नागे धिन धा ::

(२) धिन् धिन् धा धा, युन् ना, क्त् तै

धागे त्रैकेटे धिन् धा ::

कोई इसमें वारह मात्राओंकी जगह ६ ही मात्राएं बतलाते हैं, सो एक ही बात है।

कङ्कण—( ॥ ३ ॥ ३ ॥ )

कङ्काल—२। पूर्ण ( ° ° ° ° ॥ ) मतान्तरमें—( ° ° ° °

॥ ) , २। खण्ड ( ° ° ॥ ॥ ) मतान्तरमें ( ° ° ॥ ) , ३। रुम ॥ ॥ ) , ४। असम ( ॥ ॥ ॥ )

कन्दताल—१। ( ॥ ॥ ॥ ° ° ॥ ॥ ) , २। ( ° ° ° )

कन्दर्प—१। ( ° ° ॥ ॥ ) -२। ( ° ° )

कन्दुक—१। ( ॥ ॥ ॥ ॥ ) , २। ( ° ° )

करण—( ॥ )

करणयति—( ° ° ° ° )

कलध्वनि—( ॥ ॥ ॥ ॥ )

कल्याण—( + + + )

कव्वाली—यह ताल अब भो प्रचलित है।

कव्वालोंने कीकी गायक प्रायः इस तालका व्यवहार करते हैं, इसलिए इसका नाम कव्वाली पड़ गया है।

यह त्रिताली और द्रुतत्रिताली नामसे परिचित है। द्रुत-त्रिताली ( जलदत्रिताली ), अथत्रिताली ( धोमा त्रिताली ), मध्यमान घोर आड़ा ठेका ये सभी एक जातिके हैं; सिर्फ द्रुतविलम्बित वजानेसे एक ही बोलेसे उक्त सभी वाद्य साधे जा सकते हैं। मध्यमानको दूना द्रुत करनेसे कव्वाली, मध्यमान और द्रुत कव्वालीसे विलम्बित होनेसे जलदत्रिताली और मध्यमान विलम्बित होनेसे धोमा त्रिताली हो सकता है। मध्यमानको कुछ आड़ा वजानेसे आड़ा ठेकाका बोल हो सकता है, इसका ताल चार मात्राओंका है और एक गालो पडता है।

ठेका—

(१) धा धिन् दिन्त, तै धागे त्रैकेटे दिन

१० ता धिन् तिन् ता, क्त् तागे त्रैकेटे दिन ::

(२) धा धिन् धिन् धा, ता धिन् धिन् ता,

१० ता तिन् तिन् ता ना धिन् धिन् ता ::

(३) धा धिन् धा, ना धिन् धा,

१० तिन् तिन् ता, ना धिन् धा ::

तीसरा ठेका द्रुत वजाने समय और सितारकी साथ अधिक वजाया जाता है।

कहरवा—यह ताल बत मानमें प्रचलित है। इसमें

दोताल और पांच मात्राएं हैं। ठेका—

+ १ १ १ १  
धिधि क्त् नाक् दिन ::

काश्मीरो खेमटा—वर्तमानमें प्रचलित है। ठेका—

+ ° ° ° °  
धिकना धा तिता ::

कीर्तिताल—१। ( ॥ ॥ ॥ ॥ ) , २। ( ॥ ॥ ॥ ॥ )

कुडुक्क—( ° ° ॥ )

कुण्डनाचि—( ° ॥ , ° ॥ , ° ° ° ° ॥ )

कुण्डल—१। ( ° ° ॥ ) , २। ( ° ॥ ॥ ॥ ॥ )

कुविन्दक—( ॥ ° ° ॥ ॥ )

कुमुद—१। ( ॥ ° ॥ ) , २। ( ॥ ॥ )

कुम्भताल ( × , १ × ° , ॥ )

कीकिलप्रिय—( ॥ ॥ )

क्रोड़ाताल ( ° ° , )

खण्ड—( कङ्काल )—( ° ° ॥ ॥ ) , २। ( ° ॥ )

खण्डताल—( ° ° ॥ + )

खयरा—प्रचलित है। कोई कोई इसकी खरता भो कहते हैं। ठेका—

+ १ १ १ १  
धाक् धिधा धिधि धाक् तित् ::

खामसा—प्रचलित है; ठेका—

+ ° ° ° °  
धा केटे नाक दित् यूना केटे ताक युत्रा ::













हो जायेगी। जब उसका वर्ण सफेद हो जाय और अग्निमें देनेमें धुंआ निकलने लगे, तब जानना चाहिये कि हरि-ताल मन्त्र ही गई है। इस प्रकार प्रसूत को हुई औष-धका सेवन करनेसे कुष्ठादि रोग दब जाते हैं। इसकी मात्रा १ जी है। इसके अनुपानमें मसूर, चने और मूंग-की टाल पथ्य है।

रसेन्द्रमारके मतसे—हरिताल, पारा, गन्धक, लोह, अभ्रके समभागकी मधुमें घोंट कर १ मापिकी गोली बनाती है। अनुपान एक तोला पका यक्ष्ण्डुबुर और मधु है। यक्ष्ण्डुबुरके अभावमें केवल मधुमें ही काम चल सकता है। इस औषधसे बहुसूत्र रोग वातकी घातमें प्रशमित हो जाता है।

तालक्रीश ( स० पु० ) छत्तमेट, एक पेड़का नाम।

तालचोर ( स० पु० ) तालजात चीरमिव शुभ्रत्वात्। शर्करा भेद, खजूर या ताड़का चीनी।

तालचोरक ( स० क्लो० ) तालचोर स्वार्थे कन्। ताड़की चीनी।

तालगर्भ ( स० पु० ) तालस्य गर्भः इति। तालमज्जा, ताड़का गूदा या पशैव। तलवारमें यदि तालमज्जाका पानी दिया जाय तो उसमें हाथीकी सूड छेदो जा सकता है।

तालगुण्डा—महिसुरके शिमोगजिलेके अन्तर्गत शिकारपुर तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १४°२५'उ० और देशा० ७५°१५' पू० वेल्गामोसे २ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १००५ है। प्रवाद है, कि ३० शताब्दीमें कदम्बके राजा मुक्कनने इसे स्थापित किया था। उस समय तालगुण्डामें एक भो ब्राह्मण न रहनेके कारण वहाँमें १२००० ब्राह्मणोंकी दक्षिणसे ला कर यहाँ बसाया था। फिलहाल इसकी लोकसंख्या पहलेसे बहुत घट गई है। अनेक शिलालिपियोंमें इस ग्रामका उल्लेख देखा गया है।

तालग्राम—युक्तप्रदेशके फर्रुखाबाद जिलेकी छिन्नामौ तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २७° २' उ० और देशा० ७८°३८' पू०में फतेगढ़से २४ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ५४५७ है। अकबरके समयमें वह परगने भरमें एक महान्-शहर था। आजकल यह

उतनी उन्नतदशामें नहीं है। शहरमें कुल दो विद्यालय हैं।

तालघाट—दक्षिणप्रदेशमें दम्बड़ेमें नामिके जानिके रान्ते पर अवस्थित एक प्रधान गिरिपथ। यह मसुद्रमें १८१२ फुट ऊँचा है। यह अक्षा० १८° १४' उ० और देशा० ७३° ३३' पू०में अवस्थित है।

तालह ( स० पु० ) तालह अस्य लः। भूपणविगेष, एक प्रकारका गहना।

तानचर ( स० पु० ) १ टेगमेट, एक टेगका नाम। २ उस देशके रहनेवाले। ३ तालचर टेगके राजा।

तानचेर—उड़ोनाके टेगोय राजाके अधीन एक काट राज्य। यह अक्षा० २०°५२' से २१°१८' उ० और देशा० ८४°५४' से ८५°१६' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ३८८ वर्गमील है। इस राज्यके उत्तरमें पानलहरा, पूर्वमें धेकानन तथा दक्षिण और पश्चिममें अद्मल राज्य है। लोकसंख्या प्रायः ६०४३२ है। यहाँ कोयने घोम मोहोको नाने हैं। जिस जगह ब्राह्मणोंके नदी पानलहरा और धेकाननके तालचेर राज्यकी प्रत्यक्ष करतो है, उम जगह नदीके किनारे नाना पाया जाता है। इस नदीकी बालू धोनेसे स्वर्णरेणु संकटोत होता है।

इस राज्यके मध्य ब्राह्मणोंके नदीके किनारे अवस्थित तालचेर नगर ही प्रधान है।

तानचेरके राजगण कहते हैं, कि ५०० वर्ष व्यतीत हुए अयोध्या-पतिके एक पुत्रने यहाँ आ कर अमध्य अधिवासियोंको भगा राज्य स्थापन किया था। वर्त्तमान राजा उन्हींके वंशधर हैं। अद्मल-विद्रोहके समय यहाँके राजाने ब्रिटिश गवर्नमेंटको सहायता दे कर महेंद्र वहादुरको उपाधि प्राप्त की है।

१८७४ ई०की २१वीं मईको राजा रामचन्द्र वीरवर हरिचन्दनने ब्रिटिशगवर्नमेंटसे पुरुषानुक्रमिक राजाकी उपाधि पाई है। राज्यकी आमदनी ६५००० रु०की है। ब्रिटिशगवर्नमेंटकी १०४०, रु० टैने पढ़ते हैं। राजाके प्रायः नौ सौ सेना हैं। इस राज्यमें, एक मिडिल वर्नेक्यू-लर तथा दो अपर प्राइमरी स्कूल और एक दातय चिकित्सालय है।

तालजह ( स० पु० ) १ एक देशका नाम। २ उस देशका



धनुकस्य पुरं गत्वा मया दृष्टं सुरोत्तम ॥  
 तत्र गौरी शची मेघा सावित्री चापरापरा ।  
 देवीमारोप्य तत्रैव तालस्य पञ्चवे शुभे ॥  
 काचिद्दम्भानपरा तत्र जपस्तुतिपरायणा ।  
 तास्तु दृष्ट्वा मया पुष्टं व्रतं कस्येदमुत्तमं ॥  
 किं फलं किं स्वरूपं च तन्मे कथयत त्रियः ॥

त्रिय ऊचुः—

यस्येदं शस्त्रं चास्य शृणु वीर सुरोत्तम ।  
 इदं व्रतं चाम्बिकाया त्रिपु लोकेषु विश्रुतं ॥  
 तालनवमीति विद्ययातं धनधान्यविषदं ।  
 सौभाग्यमयं चोन्मद्यं पुत्रपौत्रादिकं ततः ॥  
 इदंैव कुशलं सर्वमन्ते गौरीपदप्रदं ।  
 विधानं शृणु धर्मज्ञ येनेदं क्रियते व्रतं ॥  
 अष्टम्यां नियमीभूत्वा नवम्यां तमारभेत् ।  
 मात्रे मासि सिते पक्षे तादस्य पञ्चवे शुभे ॥  
 गौरीमारोप्य यत्नेन विधानेन प्रपूजयेत् ।  
 फलं तादस्य नवकं दत्त्वा नैवेद्यमुत्तमम् ॥  
 पाद्यादिभिः समभ्यर्च्य गन्धपुष्पादिभिस्तथा ।  
 निरामिषं व्रतान्ते च कर्तव्यं तालभक्षणं ॥  
 नव वर्षव्रतं कृत्वा प्रतिष्ठा कारयेत्ततः ।  
 व्रताचादीय दातव्यं काशनं रौप्यमुत्तमं ॥  
 दण्डकं शोभनं दत्त्वा व्रतसर्गं भवेत्ततः ।  
 इत्येतत् कथितं भद्र व्रतानां व्रतमुत्तमं ॥

श्रीकृष्ण उवाच—

ताभिः कृतं मया दृष्टं सत्यं सत्यं व्रतं शुभे ।  
 तस्मात् उरु प्रयत्नेन सौभाग्यवर्द्धनं शुभे ॥  
 इति श्रुत्वा ततो देव्या व्रतं कृत्वा यथाविधि ।  
 शक्तिमथ्या कृष्णपरया सौभाग्यं लब्धमुत्तमम् ॥  
 या नारी च प्रयत्नेन करोति व्रतमुत्तमम् ।  
 सा सर्वफलमाप्नोति इहलोके परत्र च ॥”  
 इति भविष्ये तालनवमीव्रत कथा समाप्ता ।

इस कथाकी सुन कर भोव्य उत्सर्ग करें, पौछे ब्राह्मणों-  
 की भोजन करा कर स्वयं भोजन करें । इस तरह ८  
 वर्ष बीस ज्ञाने पर प्रतिष्ठा करावें । व्रतप्रतिष्ठा देखो ।  
 प्रतिष्ठाके वर्ष प्रतिष्ठाविधिके अनुसार होमादि पर्यन्त  
 करके तालडण्डक उत्सर्ग करना चाहिये ।

तालके उल्लेखी वक्षसे ठक कर "जमोऽद्य त्वादि यो  
 भ्रमुकी देवी त्रोगोरोप्रतिकाम" इमं नवफलयुक्तं  
 सबस्रं तालडण्डकं त्रिविण्णुदैवतं यद्यमभ्रवगोत्रनाम्ने  
 ब्राह्मणायाहं ददे" इस प्रकारसे डण्डक उत्सर्ग करके  
 दक्षिणान्त करें ।

"अथ त्वादि कृतेतत् तालनवमोव्रतकर्मणः साद्र-  
 तार्यं दक्षिणामिदं काञ्चनं त्रिविण्णुदैवतं ययाभ्रव  
 गोत्रनाम्ने ब्राह्मणाहं ददे" इस तरह दक्षिणान्त करें ।  
 पीछे ब्राह्मणोंकी भोजनद्वारा परित्यक्त करके स्वयं भोजन  
 करें । जिन्होंने इस व्रतका प्रनुष्ठान किया है, उन्हें ताल  
 भक्षण और तालवृन्तद्वारा वायुसेवन वर्जन करना  
 चाहिये । इस व्रतमें ८ प्रकारके फल चटाने पड़ते हैं,  
 जैसे-पिण्डखर्जूब, जातिफल, एला, हरितको, नारिकेल,  
 पूग, रम्भा, पकफल और ताल ।

भविष्यपुराणमें इसका और एक प्रकारान्तर है ; उसमें  
 विशेषता इतनी हो है, कि उक्त व्रतमें नारायण और  
 नन्द्योकी पूजा करनी पड़ती है । कथा इस प्रकार है—

“मरुष्टे मुखामीनं कृणु” इमदया सद् ।

उवाच मरुं वाक्पथं दिनतपूर्वं मुदात्सिका ॥

शृणु मे वचनं देव श्रीणां सौभाग्यकारणम् ।

केन वा सुभगा साधीव केन वा दुर्भगा भवेत् ॥

किं कृतेन विमुच्येत किं कृतेन फलं शुभे ।

तन्मे ब्रूहि सुश्रेष्ठ नारीणा कारणं पुत्रं ॥

धामशत्रुवाच—

पूर्वं हि मम मायें द्वी सत्यमामा च रुक्मिणी ।

रुक्मिणी सुभगा साध्वी सत्यमामा च दुर्भगा ॥

तस्याः कर्मविपाकेन सौभाग्यमन्यया गतं ।

केनचित् वाक्यदोषेण सत्यमामा च दुर्भगा ॥

दुःखार्ता शोकसन्तप्ता रुदती बहुशु सुहुः ।

क्रियत्काले च सम्पन्ने व्रजन्ती च तपोवने ॥

अरण्ये विजने गत्वा कस्मिन्पुनिबराश्रमे ।

रुदित्वा च विधानेन सर्वदुःखं त्यजेदयत् ॥

तच्छ्रुत्वा तु मुनिश्रेष्ठः प्रोवाच रुदती शुभा ।

भव्ये पुत्रिणि मारोदीः सौभाग्यं ते भविष्यति ॥

संत्यमाभवाच—

दुःखं मे बहुशस्तात् ! शरीरं दुर्भगं कथं ।

कथ्यतां सुनिष्ठादूक स्वामि लौकप्रयकारक ॥

दुमिस्त्राय—

नरो मांश्चि शिते पक्षे वनमी वा तिर्भिमिदेव ।  
तस्यां वारावक इन्दी पूववैचक विवालय ॥

धरमाम्भेनाय—

विवाय वीरक तस्य कि दान कि न पर्वव ।  
उमे दूहे सुमिरेष्ट करन कि बहुचरते ॥  
दुमिस्त्राय—

रचिदके मन्त्रक इत्या वट तत्र निवैचवैव ।  
तत्र वरावक इन्दी म्भयुगादिनर्तवैव ॥  
वैवैचि व वरा म्भयुगादिनर्तवैव ।  
ताम्रपूरवैव वैवी ताके वैवमिदिगि ॥  
तस्यै तत् पिष्टक इत्या म्भयुगादिनर्तवैव ।  
मन्त्रमन्त्रैः समन्वयर्ष विप्रदस्ते तमर्षित ॥  
स्वर्षीष्टे म्भयुगादिनर्तवैव तत् पंग वमापरेव ॥

वने वनेन सापरीष्टि कर्षणमर्षितवत्पत् ॥  
वचन वरवरे वाचर मांश्चि म्भयुगादिनर्तवैव ।  
पुनर्षीष्टे वरीष्टया पौमन्वयमनुक भवेव ॥  
वचनमन्त्रतपुकि न वरीचम न मिष्टकः ।  
नवीष्टकमन्त्रोष्टि नववीष्टकमन्त्राव ॥  
सन्वैव त् तस्यै म्भे प्रविष्टां तत्रमन्त्रे ।

विद्याय दक्षिणा वैवा इन्दीमन्त्र न विवायतः ॥  
एव इव वरा मिष्टे म्भु म्भयुगादिनर्तवैव ।  
तथा वने न वा सापरी सुवैवैचनमौवाव ॥  
मते वैवर्षीष्टां वाते वैववस्तुमुवावव ।  
जनौमन्त्रैव नवर्षीष्टे तस्यै वरी विनवन्तु ॥  
लौकप्रयमन्त्रक म्भयुगादिनर्तवैव नवी ॥  
कनौव पुष्टतव रटी न मन्त्रवय न ॥

पवा पाठमने वरुषीष्टकाल मव लोमने ।  
इति तस्मै वरी वला पर्वीष्टा तां वरु वनी ॥  
इव पा इष्टे वानी इव पा इष्टमवा मवेव ॥  
इव इष्ट न वा वनी इष्टे वरुषीष्टका ॥  
तत्रवधव मवने वरुषीष्टकाल मिष्टकाले नवेव ।  
कम्भयुगादिनर्तवैव वानी वरीचम वरा पुनः ॥  
कम्भयुगादिनर्तवैव वानी वरुषीष्टकालमन्त्रवैव ।  
वचनमन्त्रवर्षीष्टे तस्यै मांश्चि म्भयुगादिनर्तवैव ॥

इति मन्त्रिष्ठापणेक ताम्रपूरमौवतवका प्रमाता ॥

इम ताम्रपूरमौवतके प्रमाताके छित्रीको इष्टलोचने  
समस्त प्रकारके सुख, परलोचने कार्य और अक्षय्याकार  
में प्रवेश्य पात्र होता है । तत्र चरने सफ़ो निचय  
हो कर रहती है ।

ताम्रपूर ( स० खो० ) ताम्रक पत्रमिष । १ वर्ष मूषक  
मिष्ट एक प्रकारका मङ्गल को जानने पङ्गल जाता है ।  
ताम्रपूर, पर्ष ३ तत् ॥ १ ताम्रपूरका पत्र ताम्रक पत्रा ।  
ताम्रपूर द्वारा वाहु विषम करनेके गुण—इष्ट, ईश्वर  
उप्य वातायानिकार, निशुकारक, प्रीतिकारक शोय  
रोग और विकारनाशक, दाह पिष्ट अम और स्वादि  
नायक है । ताम्रपूरको मि गा कर वाहु विषम करनेके  
वाहु इष्टि होती है । (शरीर भ्रम०)

ताम्रपर्विका ( स० खो० ) ताम्रपूरको सर्षी कन् टाप  
इक्षक । सुषो, ताम्रमूको, मूमको ।

ताम्रपूर ( स० खो० ) ताम्रक पत्रमिष पत्र यस्याः  
वृष्टी० । मूषिकपर्षी, मूषाकानो मूटो ।

ताम्रपर्ष ( स० खो० ) ताम्रक पत्रमिष । मूष नामक मक्ष  
द्रव्य, कपूरकचूरी ।

ताम्रपर्षी ( सं० खो० ) ताम्रक पर्षमिष पर्षमस्याः । १  
मङ्गलिका, शोष । २ कपूरकचूरी । ३ ताम्रमूनी, मूषकी ।  
४ शोषा, शोषा नामक माग ।

ताम्रपुष्प ( स० खो० ) ताडारक, ताडके पिकुको वटा ।

ताम्रपुष्पक ( स० सु० ) १ प्रयोषरीक, सुषरिया । २ ताड  
उप्य, कुसुम, ताडको वटा ।

ताम्रपूर—चिन्मुदेगके धर्मिष्ठापणके चमोरोको व समत  
उप्यमि । चिन्मुदेगमें वार मङ्गलके म्भयुगादिनर्तवैव  
वाचनमन्त्रके पुन मोर वरुषीष्टकाले कस्तुरीकचूरीको उचति  
हिये पनेक कष्टसाध्य कार्य किये है । ताम्रपूरमें  
वर्षीका नाम सत्रके पक्षके देखा जाता है । ये नोय  
वर्षीको सुसलमानीको एक शाखा है । सुसलमशाखके  
राजत्वकालमें मोर वरुषीष्टकाले कस्तुरीकचूरीको पुन मोरके मरवा  
काहा । १००० ई०में कस्तुरीकचूरीक मोन सुसलम नवो  
प्राय मोर वरुषीष्टके अन्ततम पुन मोरविषय ताम्रपूरका



एक घमसान युद्ध हुआ। इस युद्धमें मोरविजयको ही जेत हुई। युद्धके बाद गुनाम नवीके भाई अबदुल नवीखाने सिन्धुदेशके राजा हुए और मोरविजय उनके मन्त्री बने। १७८१ ई०में मोरविजयने शिकारपुरके समीप सिन्धु आक्रमणकारी कन्धार सेनाको परास्त किया। इनका पराक्रम और चमत्ता देख कर अबदुल नवी बहुत जल उठे और उन्होंने मोरविजयको मरवा डाला। १७८८ ई०में यह घटना हुई थी। नारको अबदुल नवीने भयभीत हो कर राज्य छोड़ खिलानमें जा कर आश्रय लिया। मोरविजयके पुत्र अबदुलखाने तालपुरने मोर फतरखानेके साथ मित्रता करके सिन्धुके शून्य-सिंहासनको हथिया लिया। अबदुल नवीने फिरसे सिन्धुराजको पानेके लिए बहुत कोशिश की तथा जहा तक हो सका अपनी चाल लगाई, पर कोई फल न हुआ। पछि उसने बहुत हीनवृत्ति द्वारा अबदुलखाने तालपुरको मरवा भो डाला, तो भो उसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ। मोर फतेहलोखाने उसे पुनः सिन्धु देशसे निकाल भगाया। फतेहलोखाने सचेष्ट हो कर कन्धारके शासनकर्त्ता जमालशाहसे एक सनदपत्र ग्रहण किया, जिसमें सिन्धुराज्यका शासनभार तालपुर लोगोंके हाथ आया, ऐसा लिखा था। फतेहलोखाने ही तालपुरवंशके लोग उन्नतिको चरमसौमा तक पहुँच गये थे।

१७८३ ई०में मोर फतेहलोखाने सिन्धुके सिंहासन पर बैठे। उनके पुत्र मोर फरोखाने शाहबन्दरमें और मोरसाहबखाने रोहरी प्रदेशमें शासन करने लगे।

तालपुरवंश साधारणतः ३ शाखाओंमें विभक्त है, (१) हैदराबाद (या शाहदादपुर), (२) मोरपुर, (३) खैरपुर (या सोहरवानौ)। पहली शाखा मध्यसिन्धु प्रदेशोंमें, दूसरी मोरपुरमें और तीसरी खैरपुरमें बास करती थी। हैदराबादसे कुछ दूर जूटवाड़ नामक स्थानमें तालपुरवंशीय अधिक संख्यामें रहते थे। हैदराबादके तालपुर लोगोंको सभी शाखाएँ अर्द्धा और सम्मान को निगाहसे देखती थीं। उनकी सलाह लिये बिना कोई तालपुर शासनकर्त्ता किसी गुरुतर काममें हाथ नहीं डाल सकता था।

१७८८ ई०में तालपुरवंशीय मोरोंके साथ बाण्ड्य

कार्यका बन्दोबस्त करनेके लिये एक अंगरेज दूत वहाँ गया, लेकिन कोई फल न निकला, मोरोंने जब कराचोकें अंगरेज दूतका शहर छोड़ देनेको कहा, तब वे उसी समय शहर छोड़ चले गये। १८०८ ई०में तालपुरके साथ अंगरेजोंको एक सन्धि हुई। धीरे धीरे अंगरेज लोग अपनी गोठो जमाने लगे।

काबुलमें जब लड़ाई छिडो गी, तब प्रमोरोने अंगरेजोंको अच्छी सहायता न की थी। इसी विषयामघातकताके कारण इतिशगवर्मण्ट सिन्धुराज्यको हस्तगत करनेके लिए अग्रसर हुई। इस समय तालपुर लोगोंके गृहविवाद जोरेंसे चल रहा था। उन्होंने अन्तमें अंगरेजोंके साथ इम शर्त पर सन्धि कर ली, कि वे उन्हें वार्षिककार दिया करेगी। किन्तु चार्ल्स नेपियरने देशको अच्छी तरह अपने दखलमें लानेको इच्छा रखते हुए नये नियमोंसे सन्धि करनेका प्रस्ताव पेश किया। अन्तमें गृहकलहमें नियुक्त होनमति तालपुर लोगोंके साथ इतिशगवर्मण्टका लड़ाई छिड़ ही गई। युद्धमें तालपुर लोग हार गये और उनके राज्यशासनका अस्तित्व सदाके लिये जाता रहा।

तालपुरोंका कहना है, कि हसीमके पुत्र मोर हमजा उनके आदिपुरुष हैं। ये लोग अरब-जातीय बलोची-शाखासे उत्पन्न हुए हैं। इनके मोर शाहदादखाने नामक एक दूसरे आदिपुरुष थे, जिन्होंने अपने चाचासे मनोमालिन्य ही जानिके कारण कलहोरा-राज मियाँ सहलके अधीन नोकरी को थी और सियासतकी अवलम्बन किया था। उनके साथ अनेक बलोची सिन्धुदेशमें आये थे। भातिथियता और अभ्यागतकी अभ्यर्थनाके लिए तो तालपुरवंशीय राजा बड़े प्रतिष्ठ थे, किन्तु वे इतने पढ़े लिखे न थे। खैरपुरके तालपुरगण अपनी सेनाको यथेष्ट जागोर देते थे। ये लोग बड़े मितव्ययी थे, किन्तु छोड़े तथा अस्त्र शस्त्र खरीदते समय मितव्ययताको और ध्यान नहीं देते थे। शिकार खेलनेमें भी इनका प्रचुर अर्थ खर्च होता था।

तालपुर मोरगण बहुमूल्य लुप्त तथा कश्मीरो शाल पहनते थे। सिन्धुदेशमें आज कल जैसे टोपोका व्यवहार है, वे लोग उसी तरहको टोपो पहनते थे। इनकी

तनवार और अतिबन्धना कुछ पत्र खर्च लिखित होता था ।

राजशाह्य के निचे से लोग पचीस बलोच सामन्तीको जागीर देते थे । शरीर-रक्षकके सिवा इनके पास दूसरो सेना हर बन्ध मोलद नहीं रहते थे । बुद्धके समय प्रथमके पदातिक सेनिकको हर रोज ५ पाणा और पध्दारोही को ५ पाणा तनद्याद मिलती थी । यद्यपि तासपुरो मौरके मन्त्रित सेना नहीं थी तो भी बुद्धके समय से बातको बातमें प्रायः १०००० सेना लुटा क्षिते थे ।

हर म पञ्चवा नियम उमींदारी मरोखा था । राज हर विधीपत धनकुसे लुकाया जाता था, जो बटाई कहते थे । कहीं कहीं बसोनके ; ; पञ्चदा ३ पत्र का मूख खानोय पर्यं राजवरमध्य निर्दिष्ट था । इन हरको से मरशून कहते थे । छेतमें जन खीचने के लिये एक प्रकारका हर लगता था । इनके सिवा गृहकी पर श्रिजिया कर भी प्रचलित था । परतो बसोनका बोड़े करमें बन्दोबस्तु हर टिका जाता था । कबूरके पीड़ पर भी एक प्रकारका हर था । इनके पचीस जितने उमींदार मो थे जिनकी मोरोंके यहाँ खूब खातिर होती थी । उमींदार लोक मानवानों, उमींदारी और राज खर्च से तोल प्रकारके सापो लपञ्च घडुमार बल्लु करती थे । धामदनी और रथ तनोके ऊपर भी खर्च निर्दिष्ट था । बाजारमें जितनो वस्तु बिको जाती थी, उनका तराजू कर देना पड़ता था । बिना कारयेक्सके कोरे मादक द्रव्य तैयार नहीं कर सकता था । बोबो, तांती और पूषानदारकी बोड़ा घोड़ा कर लगता था । मौर लोग अपने काम चारिवाँको वषिष्ठ इनाम और जागीर देते थे ।

तासपुरीके शासनकाक्रमे हरदार, खेतवाक और पन्नाथ काम चारिवाक खोजदारो विचार करती थे । कसो कसो मोरवाक समय इधका फैसला कर देते थे । मित्र मित्र पराशोमें इन्दापदकूडेम, सेनावात, बन्धन और पर्यं दण्ड खादिको भडा थी । कब्र दण्ड प्राय देखने में न पाता था । इन्दावागी कसो इन्दाकतमें सब दण्डोंके लुटकारा पाता था, सब बह अतप्यत्रिके कट खोको बन दे कर लपुष्ट कर देता था । पमिबुद्ध खलि धपनीको

निर्दोय वतम्नामे पर भी अब तब बह पन्थि वा जनपरोखा द्वारा मायातु प्रमाक न देता था तब तब बह लमको सुनि नहीं होती थी । पमिबुद्ध खलि जन्मके गोसे रक्ता जाता था । एक मनुष्य धनुषमें तोर लगा कर 'पपनो कुत्रत मर लये कि कना था । वूमरा खाइमो उस तोरको जानिके लिये सेना जाता था । जब तब वह लोट कर बह न था जाता था तब तब यदि पमिबुद्ध खलि प्रमक गोसे रह जाता, तो निर्दोय सपन्ना जाता था । यदि वह तोर जानिके पडके हो जन्ममें पपना बिर लटा सेना तो वह होयो डहराया जाता था । पन्थिवरोखा इससे भी कठिन थी । ७ हाथ लम्बा एक नया जना कर लये नजको से मर देते थे । पीछे लसमें पाग लजा कर पमिबुद्ध खलि को बिसिडे पर ली हाथ घेर बाँध कसो गहुँमें डोड़ देता था । बाद लये एक खोःभी सीकर पूरे खोर तब जाना पड़ता था । इसमें यदि वह बच जाता तो सभो लमे निर्दोय समझती थी । हर जन घोर पन्थि परोखाका नाम कर थी। दुबो था । कैटियाके निचे लपुद्ध निक नहीं था । दिनके समय पण्डु लोय लर्न मोख मांगिडे लिये गहरमें घुमती थी । राजवरकारके उक्के भोजन नहीं मिलता था । रातको लके भुइकावह पञ्चकामे पपना इधकको पपना कर रखते थे । दोवानो बिचार खोजदारो बिचारकींके हो जाक था । उस समय दोबानी मामरीमें बहूत रूपसे खर्च होते थे, इसो कारण दोबानो सुकदमीको स ख्या प्राय नहींके बराबर थी ।

इतिहासमें तासपुरीको मुद्राका कब्रदार नामसे उल्लेख है ।

तानप्रलम्ब ( स० क्र० ) तानपुत्रे पन्थ्यते प्र मन्थ-पण । ताडको कटा ।

तासवन्द ( हि० पु० ) वह हिमाच विममें धामदनीको हर एक मद दिखकारे मई थी ।

तासवदत—बुद्ध प्रदेयके सत्तपुर जिलेके पन्थार्यत एक प्राचीन नगर । यह पञ्च। २१ १ ७० और दिशा० ७८ १६ पूर्वमें बँट वल्लिवन पिनलकुना रन्धे घोर खानपुर-सागरके पत्र पर प्रकथित है । मोक्षस ख्या प्रायः १६८३ है । यहाँ एक बहुत बड़ा कुद था तास है, उसीके नामसे हम नगरका नामकरक हुआ है । एत

समय यह स्थान विशेष समृद्धिशाली था। भग्नदुर्ग, पहाड़के चारों ओर सुशोभित दुर्भेद्यदुर्ग प्राचीर, प्रासाद और अट्टालिकाएं प्राचीन समृद्धिका झिलचण परिचय देती हैं। सर हिंड रोजने १८५७ ई०में यहाँका प्राचीन दुर्ग धूलमें मिना डाला। नगरकी आय प्रायः ६००) रु० है। यहाँ अनेक प्रकारके अन्न और कपासका व्यवसाय चलता है। पुलिमका खर्च निभानेके लिये प्रत्येक गृहस्थसे कुछ कुछ कर लिया जाता है। यहाँ एक प्रकारका कस्बल तैयार होता है।

तालवैताल ( हिं० पु० ) दो देवता या यक्ष। प्रवाद है कि राजा विक्रमादित्यने इन्हे मिड किया था और ये बराबर उनकी सेवामें रहते थे।

तालभृत् ( सं० पु० ) ताल विभर्ति ध्वजहृपिण भृ-क्तिप् । बलराम।

तालमखाना—( हिं० पु० ) गोलो या मीड़ जमीन पर होनेवाला एक पौधा। यह ओषधके काममें आता है।

संस्कृत	अतिच्छत्रा।
कर्णाटकी	कालवद्धवीज।
तामिल	निमली।

वम्बई	तालमखाना, कोलशुण्डा।
मद्राज	
म्याल?	गोकुलजनम।

यह एक तरहका छोटा कण्टकवृक्ष है। यह भारतमें सर्वत्र विशिषतः पानो या दलउलोंके निकट होता है। इसके बीज, जड़, पेट सभी दवाइके काममें आते हैं। यह कण्टकारी, गोखरू आदिको नातिना है। सुपलमानो और आर्यवेद्याशास्त्रमें इनका बहुत व्यवहार देखनेमें आता है। इसमें शैत्य और मूत्रकारक गुण अति प्रसिद्ध हैं। मूत्रकृच्छ्र, उदरो वात और निद्रसम्बन्धो रोगोंमें इसका व्यवहार किया जाता है। इसके बीज कामवर्धक हैं। इसकी जड़का उबाला हुआ पानो आधा आध चक्षुच दिनेमें दो बार पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और अश्वरो रोगमें फायदा पहुंचता है। मलवार प्रदेशमें चिकित्सकसे बिना परामर्श लिए ही लोग उक्त रोगोंमें इसका व्यवहार करते हैं। यूरोपीय डाक्टरोंने भी फिलहाल इसकी परीक्षा की और निम्न प्रकार गुण बतलाए हैं।

बीज—स्निग्धकारक, मूत्रकारक, वलकारक और लिङ्गदोष-प्रशमनक है।

मूल—स्निग्धकारक, तिक्त, मूत्रकारक और बलकारक है।

पत्र—स्निग्धकारक और मूत्रकारक है।

वम्बई प्रदेशमें इसके बीजोंका रोजगार होता है।

पर्याय—कोकिलाज, काकेचु, इचुर, भिचु, कागडेचु, इचुगन्धा, शृङ्गनो, शूरक, शृगालघण्टो, वल्वास्थि, शृङ्गना, वनकण्टक, वज्र विचुर, शृङ्गपुष्प, छत्रक और अनिच्छत्र। धतिच्छत्र देखो।

तालमटक ( सं० पु० ) वाद्यमेद, एक प्रकारका बाजा।

तालमूलिका ( मं० स्त्री० ) तालमूलो देखो।

तालमूलिका ( सं० स्त्री० ) तालमूलो स्वार्थिकन् टाप, छस्त्रय। तालमूलो, मूमली।

तालमूलो ( मं० स्त्री० ) तालस्य मूलमिव मूलमस्रां, बहुव्री०। खनामखानत लुपविशेष, मूसली। संस्कृत पर्याय—तालिका, तालमूलिका, अशीतो, मृपत्तो, तालो, खलिनी, सुवहा, तालपत्रिका, गोधापदी, हेमपुष्पो भूताली और दोषकान्दिना। गुण—गोत, मधुर, हृष्य, पुष्टि, बल और करुपट, पिच्छिल, पित्त, दाह और अमहारक है। इसके दो भेद हैं, श्वेत और कृष्ण। श्वेत अल्पगुणयुक्त और कृष्ण रसायन होता है। श्वेत तालमूलो सफेद मूमली और कृष्ण तालमूलो काली मूसलीके नामसे मशहूर है। गुण—मधुर, रस्य, हृष्य, उष्णवीर्य और हृंहण, गुरु, तिक्त, रसायन तथा गुदज रोगान्निनागक है। ( भाष्यप्रकाश )

तालमेल ( हिं० पु० ) १ तालसुरका मिलान। २ लपयुक्त योजना, मिलान, मेल जोन। ३ अनुकूल संयोग, अच्छा मौका।

तालयन्त्र ( सं० स्त्री० ) मत्स्यतालुवत् हादशाङ्गुल परिमित यन्त्रमेद, वारह जंगलोका एक यन्त्र जिसका आकार मछलीके तालूमा होता है। कान, नाक और नाड़ीके शस्य निकालनेके लिये यह यन्त्र व्यवहृत होता है।

तालरस ( सं० पु० ) ताड़के पेड़का मद्य, ताड़ो।

तालरचनक ( मं० पु० ) तालीन रचयति रिच-णिच्-व्यु स्वार्थिकन् । नट।

तालसप्तशतक (म० पु०) तासो लक्ष्ये धर्मो एव बहुव्री० ।  
तासध्वज, बलराम ।

तालसप्तशतक (म० पु०) तास एव लक्ष्ये विज्ञे एव ।  
बलराम ।

तालवत (सं० श्लो०) १ इन्द्रावतमर्षि स्मित ताड बहुवृत्त एक  
वन । यद्वा तासवन वारुण वनोर्मिणे एक है । यद्वा मनुवन  
के पास प्रयत्नित है । बलरामने यज्ञं विभुज्ज्वा बच  
दिया था । विभुज्ज्वावसे पहले यद्वा वन जोवज्ज्वापोके  
लिए धयम्ब वा लक्ष्मि वाटके यद्वा पुष्कलीर्ष समम्भा  
ज्ञानि ज्ञाना । (पुराणवर्गीकरणे नक्षत्राड )

यद्वा तासवन गोवर्धन पर्वतमे लक्ष्मणे घोर वसुधा  
के किनारे पर प्रयत्नित है । यद्वाको सूम्पि समतल  
क्षिप्र प्रयत्न घोर कुम्भसमाजोर्ष तथा ताडके वृष्टीमे  
मरो हुई है । इस वनमें मनुषीका जाना नहीं होता  
यद्वा धवन्त सुम्पविक्र है । इस वनको मित्रो ज्ञासो है,  
लक्ष्मि के लक्ष्मि प्रयत्नोला सन्ध्याको नहीं है । इस वनमें  
नरनासोसुम्प गर्भमन्थ्यवासे प्रति दुर्भगनोय प्रमृत बल  
यासो विभुज्ज्वा नामका एक देव रहता था । एक दिन  
लक्ष्मि घोर वनदेन कासिपुत्रमन बरके इस वनमें पहुँचे ।  
विभुज्ज्वा देवने इन पर पादप्रणम किया, इस पर बलदेवने  
लक्ष्मि पर एक लक्ष्मि कर हुआमा शब्द किया घोर प्रमर्ष  
एक ताडके वृक्ष पर दिग्ग दिवा जिनमे लक्ष्मि पृथ्वी  
को गई । विभुज्ज्वाके पाज्जोवर्धनके साथ निहत होने पर  
तालवत निवपद्रव हुआ घोर तमोचे यद्वा तोर्षमे परिचल  
हो गया । ( हरिवंश ६१ ब० )

२ तालवतान्, यद्वा लक्ष्मि जिधमें प्रयत्नितर ताडके हो  
पिड़ हीं ।

तालवाही (स० त्रि०) यद्वा वावा जिसके तास दिया  
जाता है ।

तालवन्ता (स० श्लो०) तासि करतके इन्द्र वन्धनमन्थ  
तासलोव इन्द्रावत्स वा, बहुव्री० । १ मन्थन ताडके  
पत्तिका पत्ता । २ एक प्रकारका सीम ।

तासवैचनक (स० पु०) तासल वैचन प्रयत्न करके  
स स्मार्तन नियमन यद्वा यत् । नट ।

तासव (स० त्रि०) तासोर्षात तासु यत् (घटीकवद  
लक्ष्मि नट । य ५११६) तासुजात, तासुके प्रकारके किया

जानेवाला यद्वा । १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० घोर प्र  
ये यद्वा तासुके प्रकारके किया जाति है ।

तासवयम् (स० श्लो०) तासालिमम्भा, ताडके फलके  
भीतरका गुदा ।

तासवत्त (स० श्लो०) इरितावमरम, इरितालकी मन्थ ।  
तासनाम (सि० पु०) ताडके फलके भीतरका गुदा । यद्वा  
जानिके काममें जाता है ।

तासवत्त (स० पु०) एक पत्र । इसका विवरण बास्मीके  
रामायणमें पाया है ।

तासा (सि० पु०) कषाट प्रयत्न करकेका यन्त्र, कन्दार,  
कुम्भ ।

तासा-कुलो (सि० श्लो०) १ शिवाङ्क, स लक्ष्मि भादि बंट  
करकेका यन्त्र । २ लक्ष्मिोंका एक खेल ।

तासाञ्जा (स० श्लो०) तास तत्पत्रमिव पाञ्जायते पाञ्जा  
क वा तास पाञ्जा यद्वाः । सुरा नामक मन्थइत्य, कपूर् ।  
कचुरी ।

तासाङ्क (स० पु०) तासवत्तकपिञ्जित कष्ट धर्मो यद्वा  
बहुव्री० । १ बलदेव । २ करपत्र । ३ शास्त्रिण, एक  
प्रकारका लान । ४ महालक्ष्मिप्रयत्न प्रयत्न, यद्वा लक्ष्मिवान्  
मनुष्य । १ पुष्कल । २ इर महादेव ।

तासाङ्कर (स० श्लो०) १ तासालि मन्थ, ताडके फल  
के भीतरका गुदा । २ मन्थिजा, मन्थिज ।

तासादि (स० पु०) पाणिपुष्कल यद्वाविभिन्न, पाणिभिके  
एक गणका नाम ।

तासाव (सि० पु०) कलायम, सरोवर, पोखरा ।

तासावचर (स० पु०) तासोव प्रयत्नरति पृथ्वी प्रयत्न-पर  
पत्र । नट ।

तासि (स० श्लो०) तासयति प्रतिष्ठानया तस विष-इत् ।  
बन्धनमनुलोद । इत् ५११० । मन्थामकसी, सुई  
पाणिजा । २ लक्ष्मिवाही । ३ पादात, चोट ।

तासिक (स० पु०) तसल करतकेन जिह्वा तस डक् ।  
वेन ६१५ । य ५१५०९ । १ प्रवारिताङ्कुलियादि, चोसो  
हुई इपीसी । इसके पर्याय—कपेट, प्रतल, तल प्रयत्न  
घोर तास । २ तासवत या कामका मुक्ति दा । ३ कपट,  
तमाचा । ४ लक्ष्मि या तासा जिसके मित्र मित्र विपक्षके  
तासवत या जागक यद्वा हीं ।

तालिकट—तालकट देखो।

तालिका ( सं० स्त्री० ) तालिक स्त्रियां टाप् । १ चपेट, चपत, तमाचा । २ तालमूलो, मूसली । ३ मख्खिडा, मजोठ । ४ ताली, कुंजो । ५ तालपत्र या कागजका पुलिंदा । ६ सूची, फिहरिस्त ।

तालिकोट—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत बीजापुर जिल्लेके सुई-विहाल उपविभागका एक प्रधान नगर । यह अक्षा० १६° २८' ०" और देशा० ७६° १८' ०" पूर्णमें कलाहमी नगरसे ६० मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है । १५६५ ई०की २५ वीं जनवरीको इस नगरसे प्रायः ३० मील दूर क्षणा नदीके दाहिने किनारे विजयनगरके राजा रामराज और उनके तीन भाइयोंके साथ निजानगाही, कुतुबशाही और आदिलशाही राज्यके मुसलमानोंका युद्ध हुआ था । इस युद्धमें बीजापुरका हिन्दू राज्य बिलकुल नष्ट हो गया निजामशाहीने विजयी हो कर तालिकोट अधिकार किया । महाराष्ट्रके अश्वयुद्धके समय इस जगह बड़े बड़े मकान मन्दिर इत्यादि बनाये गये थे ।

तालित ( सं० स्त्री० ) ताद्यते यत् नड-गिच्-क्त डस्य लत्व । १ वाद्यभाग्य, एक प्रकारका वाजा । २ रञ्जित वस्त्र रंगा हुआ कपड़ा । ३ गुण, रस्मी, डोरो ।

तालिन् ( सं० पु० ) तलेनपिंषा प्रोक्तं अधीयते शौनकादि-गिनि । १ तलोक्षाधेता, वह जो तलमृषिका कहा हुआ अध्ययन करता है । ( त्रि० ) ताली वाद्यत्वेनास्वस्य इति । दत्तताल । २ ( पु० ) ३ शिव, महादेव ।

“वैष्णवी पणवी ताली खली कालंकटः कटः ।”

( भारत अनु० १७ अ० )

तालिब ( अ० पु० ) वह जो अन्वेषण करता हो, तलाश करनेवाला ।

तालिबअली—विलग्राम-वामी एक कवि । रस पचकी इन्होंने अनेक कविताएँ रची हैं । ये १८०३ ई०में विद्यमान थे ।

तालिबइस्लम ( अ० पु० ) विद्यार्थी, छात्र ।

तालिबशाह—हिन्दीके एक कवि । इनका जन्म १७६८ ई०में और मृत्यु १८०० ई०में हुई थी । इनकी कविता खडो बीली मिश्रित है ।

तालियामार ( हिं० पु० ) पानो काटनेवाला जहाज या नावका अगला भाग ।

तालिश ( सं० पु० ) तलतोति तल-गतो इश-गित् । इशः क्षयार्थं षड्विलस्तलेदु गित् । उण् १।३३९ । पर्वत, पहाड़ । तालो ( सं० स्त्री० ) तालेन तन्निर्यागेन निर्धृत्ता अण् । १ ताही । तल-ख्यन्तात् अच् डोप् । २ वृत्तभेद, एक प्रकारका पेड़ । ३ भूम्यामलको, भूभावाला । ४ तालमूलो, मुसली । ५ भरहर । ६ तालीशपत्राख्य वृत्त, एक प्रकारका छोटा ताड़ जो दंगाल और बगमामें होता है । ७ तालोघाटनयन्त्र, कुंजो । ८ ताम्रवल्लीलता । ९ कन्दो-भेद, एक वर्ण वृत्त । १० मेहरावकी वोचोवीचका पत्रा या ईंट ।

ताली ( हिं० स्त्री० ) १ करतलध्वनि । २ छोटा ताल, तलैया । ३ प्राँवके मध्य उँगलोकका घोर । ४ घात्री ।

तालीका ( अ० पु० ) १ मकानको कुर्की । २ वह फिहरिस्त जो कुर्क फिए हुए असवावके लिये बनाई जाते है ।

तालोपल ( सं० स्त्री० ) तात्या इव पत्रमस्य । तालोशपत्र ।

तालोम ( अ० स्त्री० ) शिला, उपदेश ।

तालोयक ( मं० पु०-स्त्री० ) करताल ।

तालोश ( सं० स्त्री० ) तालोव रोगान् श्यति शो-ड । स्वनाम-ख्यात वृत्तविशेष ।

तालीशपत्र ( सं० स्त्री० ) तालोशं रोगनाशकं पत्रं यस्य । भूम्यामलको, भूभावाला । यह तमाल या तेजपत्तीकी जातिका होता है और हिमालय पर सिन्धुसे मतलज और सिक्किम तक बहुत होता है । इसके संस्कृत पर्याय—शुकोदर, धात्रोपत्र, अर्कवैध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय और तालीशपत्रक । इसका गुण—तिक्त, उष्ण, मधुर, कफ, वात, कास, हिक्का, क्षय, श्वास और हृदिदोष, गुल्म, आम और अग्निमान्द्यनाशक तथा लघु और अरुचिकर है । इसके पत्ते तेजपत्तीसे लम्बे होते हैं । इसको लकड़ी बहुत खरी होती है ।

तालीशपत्रो ( सं० स्त्री० ) तालीशपत्र ।

तालीशायमोदक ( सं० पु० ) चक्रदत्तोक्त मोदकभेद, चक्रदत्तके मतानुसार एक प्रकारका मोदक । इसकी प्रसृतप्रणाली—तालीशपत्र १ तोला, मिर्च २ तोला, सोंठ ३ तोला, पीपल ४ तोला, वंगलीचन ५ तोला, दार-चीनी ॥ (आधा) तोला, इलायची ॥ (आधा) तोला,

कोनो ( पादा ) धर इन सबको मिना कर मोलक प्रयुक्त करना पड़ता है । कोनोके समान अन्तर्ग सक्को यथाविधानके पाक करनेके बाद मोली प्रयुक्त करती है को मोदकको पपिया कुछ छोटी कोनो चाँदिये । इसके भिन्न करनेके भास, भास पदवि और श्लोका इत्यादि समस्त रोग वाते रहते हैं ।

तालु (स० श्लो०) तरकारनेन वर्णा इति य ज्ञान रस्य कश्च । भोज्य क० । वच १५ । जिह्वेन्द्रियके परिष्कारका ज्ञान सु इके मोतरको खपरी ज्ञान को खपरीके दातीको य जिने लया कर कोबा (घांटी) तब होते है ताब । पर्याय— काकुट, तालुक ।

सु श्वे ताबू निर्मिच कृपा है तममें जिह्वा कल्पक हुई है । इसमें भागा प्रकारके रस कल्प्य होती है जोम लनको पचन करतो है ।

विशद पुष्यका तालू निर्मिच पश्चात् पृथक्कल्पये कल्प्य होने पर लोकापान बहव पपनी य मीमं जिह्वापि साव परिदेवताप्राक्कप्य तसमिं प्रविष्ट भूप । (भा० २।१।४१)

तालुगत रोम होने पर लक्षका प्रतीकार सुशुभमें इन प्रकार निष्ठा है—गलस्युक्तिकारोगमें घमूटे घोर दूधरो ल मनीको घटा कर मसगणिकाको खींचे घोर जोमके ऊपर रस कर लके मसगणाय प्राक् द्वारा सिद्ध है ; इसको पन्थाय वा पुष्पा ममें नहीं सिद्धे घोर न खींचे, किन्तु पक्षांगको छोड़ कर तोल य म सिद्धे । पक्षका सिद्धन करनेके बादनके बारव पशु जो सकलो है । जोमच्छेद हीनिधि मोक्ष, लाकास्त्राव निश्रा, म्म घोर तमोद्विदि ये सब लपत्रक होते हैं । इसलिये इष्टकर्मा घोर चिकित्सा विचारद वैद्यको चाँदिये, वि यनयच्छा रोयमें सिद्धन करके गोचे निधी प्रविष्टा करे । मरिच पतिविवा, पाठा, बच, कुङ्कु घोर शोण्डक, इनका ज्ञाय वा चूचं मसु घोर मेथव लक्षवच नाव प्रतिमारनमें प्रयोग करे । बच पतिविवा पाठा राधा सुटको घोर भीम इनका ज्ञाय कबलपचमें प्रयोगमेव है । इङ्गुटो, दन्तो, सरन काठ, दिवदाघ घोर पपामार्ग, इनको पोष कर बसो बसने घोर सुबह घाम लक्षका चूष्यवान करे । इसमें धारुवुक सूयका ज्ञय ज्ञाना चाँदिये ।

पद्मज्वप, तुषिचिरी, मँसहात घोर तालुपुष्पटरोयमें

रोयके पशुमार यज्ञकार्य करे । तालुपाक रोगमें पित्त भाषक ज्ञिया करनी चाँदिये । तालुघोषमें खँड, खँड, घोर वातुगानिकर ज्ञिया करे ।

( इष्टयु पिनिमिषतन्वा २९ व० )

तालुव (स० श्लो०) तालु शार्शं बन् । १ तालू । २ तालुका एक प्रकारका रोम ।

तालुकप्यक (न० पु० श्लो०) एक रोग को बहोके तालूम होता है । इसमें तालूम अतिसे पड़ जाने है घोर तालू र्धस जाता है । इसमें बहोको पनसे दस्त मो वाते है ।

तालुकदारो घाम—बई एक घाम । न वातुगानिकर बन्दो बन्दके पशुमार लक्ष घामोंका राजस मधुमें प्य तथा तालुकदार भापसमें बई सेते है घोर तालुकदारको घामके घासन तथा क्लयकाके सम्बन्धमें बई एक निर्दिष्ट कार्य करने पड़ते हैं । अब जसो तालुकदारगव पपने कस म्य बार्शिके सुख मोड़ते हैं, तब मधुमें प्य लनके बादके परिष्कार कोन सेतो है ; किन्तु राजसका ज्ञिया देती है । इन समस्त घामोंको तालुकदारो घाम कहते हैं । राकपुत कोनि घोर कुयबतो सुममनानेमें को इस तरह को तालुकदारो देखी जातो है ।

तालुका (स० श्री०) तालुकी दो गाड़ो ।

तालुव (स० पु० श्री०) तालुवर्षेमीतायक बन् । १ तालुव स्थिति मोलक । (श्री०) भोरितादिखात् श्व पिखात् डोय । २ तालुव्यापयी ।

तालुजिह्व (स० पु०) तालु एव जिह्वा यज्ञ, बह्वी० । १ कुषीर, चक्रियान । इसमें जीम नहीं होती । बच तालुके को रकासादन करता है; इसीके कुषोरका नाम तालुजिह्व पड़ा है । २ पालजिह्व, मनेका कोबा (urpala) ।

तालुन (स० श्लि०) तालुनप्रापाक तालुन-पच । कशाकि०: ५ न । य ४।१।५९ तालुन सम्बन्धोय ।

तालुपाक (स० पु०) सुशुतोक्ष तालुगत रोपमेद एक तालूको बोमारीका नाम । इस रोमका विषय सुशुनमें इस प्रकार सिद्धा है ; तालुगत रोम ८ प्रकारका है, केसे— गलस्युक्तिका तुषिचिरी पद्म, मांसकल्प्य चर्बुट, मांसमहात, तालुपुष्पट, तालु शोय घोर तालुपाक ।

जैसा घोर रसद्वारा तालु मूलमें वातुपुष्पे मदिशको तरह (स्थोत मयकभी भांति) दोसं कलत शोय कल्प

होता है तथा उससे विपासा, खाद्य और काश होता है ; इसकी गलशुण्डीरोग कहते हैं। सूज जाना, मोटा घाव होना, वेदना, दाह और पक जाना ये सब तुण्डो-केरीके लक्षण हैं। तालु में सूजन, स्तब्धभाव (भारोपनका होना) और ललाई होनेसे उस रोगको अर्धुप समझें। यह रोग रक्तके द्वारा होता है। इसमें अत्यन्त ज्वर होता है, तालुदेश कलुवेकी तरह जं चा ही जाता है। वेदना घटती और सूजन बढ़ती रहनेसे उसको कच्छुपी रोग कहते हैं। यह श्लेष्माके द्वारा उत्पन्न होता है। तालुमें पद्माकार शोफ होने पर उसको रक्तजन्य अर्बुद कहते हैं। अर्बुदका लक्षण पहले निष्ठा जा चुका है। तालुके भीतर श्लेष्मा द्वारा मार्स दूषित हो कर वेदनाहीन जो सूजन होती है, उसको मार्सघात कहते हैं। तालु-देशमें वेदनाहीन स्थायी और वेरकी तरहकी जो सूजन होती है, वह कफभेदजन्य पुष्पुटरोग है। वातपित्तके कारण तालुके सूत्र और फट जाने पर, तथा उससे तालुखास होने पर, उसे तालुशीष कहते हैं। पित्तके द्वारा तालु का पक जाना यह तालुपाकका लक्षण है।

तालुपात ( स० पु० ) एक रोग जो छोटे बच्चोंके तालुमें होता है।

तालुपोडक ( स० पु० ) तालुपात रोग।

तालुपुष्पुट ( स० पु० ) तालुगत रोगभेद, तालुमें होने-वाला एक रोग।

तालुयन्त्र ( स० स्त्री० ) वारह उँगलिका एक यन्त्र जो मङ्गलीके तालुसा होता है। ताठयन्त्र देखो।

तालुर—तालूर देखो।

तालुविद्रधि ( स० पु० ) तालुगत शोधविशेष। त्रिदोषके कारण तालुमें दाहरोग मिल जानेसे यह रोग उत्पन्न होता है।

तालुविशेषण ( स० स्त्री० ) तालुका सूख जाना।

तालुशीष ( स० पु० ) सुश्रुतके तालुगत रोगभेद, एक रोग जिसमें तालु सूख जाता है और उसमें फटकर घावसे ही जाती है।

तालु ( हि० पु० ) १ तालू देखो। २ खोपड़ीके नीचेका भाग, दिमाग। ३ घोड़ोंका एक रेश।

तालुफाड़ ( हि० पु० ) हाथियोंका एक रोग। इसमें हाथोंके तालुमें घाव हो जाता है।

तालूर ( स० पु० ) तालुयति तल-णिच् वाहुलकात् ऊरु आवत्, जलका भवर।

तालूपक ( स० स्त्री० ) तल वा उपक। तालू।

तालेवर ( हि० वि० ) घनाय्य, धनी।

तालेश्वर नदी—जशोर जिल्लेको एक नदी। यह नरेन्द्रपुरके निकट अठारा-वांकाको गाछा नदी चित्रासे निकल है और तालेश्वर ग्रामके निकट भैरव नदीमें मिली है। इसकी लम्बाई लगभग ५ मील होगी। वर्षाश्रुतमें इसकी चौड़ाई करीब ५० गजकी ही जाती है। छोटी छोटी नावें इसमें मज टिन आती जाती हैं।

ताल्प ( स० वि० ) तल्पके वंशज।

ताम्रुक ( हि० पु० ) तमलुकु देवो।

तास्त्वुट ( स० पु० ) रोगविशेष, एक रोग। इसके होनेमें तालुमें एक कमलके आकारका बढामा अद्दुर या काँटा मा निकल आता है। इसमें बहुत पोड़ा होता है।

ताव ( हि० पु० ) १ वह गरमो जो किमो वस्तुको तपाने या पकानेके लिये पहुँचाया जाय। २ अधिकारयुक्त क्रोधका आवेग, घमण्ड लिए हुए गुस्सेको भौंक। ३ अहङ्कारका आवेग। ४ तत्काल होनेकी आवश्यकता। ५ कागजका एक तख्ता।

तावक ( स० त्रि० ) तव इदं युष्मद् अण्, एकवचने तव कादेशः। त्वत् सम्बन्धनीय, तेरा, तुम्हारा।

तावकौन ( स० त्रि० ) तव इदं युष्मद् खञ्। युष्मदस्म-दोस्व्यतरस्यां चञ्। पा ४।१। एकवचने तवकादेश। त्वदोय, तुम्हारा।

तावत् (अथ तत्परिमाणमस्य तत् भावतु। १ साकल्य। २ अवधि। ३ मान। ४ अवधारण, निश्चय। ५ प्रशंसा। ६ पदान्तर ७ संग्राम। ८ अधिकार। ९ तदा, तत्र तक। १० वाक्यालङ्कार। (त्रि०) तत्परिमाणमस्य तद्वतुप्। ११ परिमाणविशिष्ट, उतने परिमाणका।

तावत् शब्द क्रियाका विशेषण होनेसे वह क्लोव-लिङ्ग होता है।

तावत्क ( स० त्रि० ) तावता क्लोतः संख्यात्वात् कन्। उतनी कीमतमें खरोदा हुआ।

तावत्कृत्वस् ( स० त्रि० ) तावत्कृत्व इति वत्त्वात् क्रियाभ्याहतिगणने कृत्वसुच्। उतना संख्या, उतना अंक।

तावतिह ( स० वि० ) तावत क इट् । बगोरिह वा । पा ३।१।१ । उत्तमं चरोदा वृषा ।  
 तावतिव ( स० वि० ) तावतो पूरव' इट् वा "बतो रिट्" इति सूत्रेण इटुक । तावत्का पूरव ।  
 तावत्यास ( स० वि० ) तावत्पू तावत्-मासव् । क्लृप्तात् स्वर्ये इट्कन् मासवो वृहत् । पा ३।१।१० । उत्तमा चो परि माच, उत्तमेका ।  
 ताववन्ट ( वि० पु० ) एक प्रकाशो पीयूष जिसके प्रयोग-से चांदीका कोटायन तपनी पर मो प्रकाय न हो ।  
 तावमाव ( वि० पु० ) परिक्रान्ति, मोक्षा ।  
 तावर ( म० स्त्री० ) वसुधुं व, वसुधुको जोरो ।  
 तावरो ( वि० स्त्री० ) १ कलन ताप । २ धूप, घाम । ३ ज्वर, बुघार । ४ सूक्ष्म ।  
 तावान ( पा० पु० ) दण्ड डीङ् ।  
 तावि—वर्षर प्रदेयके आम्ब्यावाङ्का एक छोटा राव्य ।  
 ताविप ( स० पु० ) तपति मन्वते कन्वमिभिरत् तव शीत वातुः तव-टिपव् । तपैर्बिह । वन् १।३८ । १ स्मर्त् । २ वसुधु ।  
 ताविपो ( स० स्त्री० ) तवति सोम्यर्था मण्डति तव टिपव् क्वियां कोप । १ दिवकन्या । २ मन्दो । ३ पृथिवी ।  
 तावोत्र ( स० पु० ) १ यन् मन्त्र या चवच । वच सोमे चादौ तावो चादिषु बीबीर या पाठ पठते स पुठके भोतर रव्य कर मसिं या बाह पर पठना जाता है । इस के रोग दुःख वा अपदेवताको इहिव दूर होती है पढ़ने यूरोपमें मो तावोत्र पढ़नेको प्रथा हो । मिछटेरोनमो के १३३ अध्यायके १८३३ पदमें इस विषयका सामान पाया जाता है, उसमें लिखा है—'Therefore shall ye lay up these my words in your heart in your soul and band them for a sign upon your hand that they maybe as frontlets between your eyes' हिन्दुधर्मि राजाभि और भवनिवारकर्म निवे रोय घोष दुःख बह भ्राम करनेके लिये घोर प्रह दोष धान्तिके लिये अपने देवदेवो तथा अहदेवताके चवच धारण करनेको प्रथा प्रचलित है ।  
 २ पसहरावियेप । वच शोभा वा चांदीका प्रका कर हाथमें पहना जाता है ।

तावोप ( स० पु० ) ताविप धवो० दोर्त् । १ स्मर्त् । २ वसुधु । ३ वाहन, मोना ।  
 ताविपो ( स० स्त्री० ) ताविपो धवो० दोर्त् । १ चन्द्रकन्या । २ इन्द्रकन्या ।  
 तावुरि ( पु० ) समराधि ।  
 ताम ( वि० पु० ) १ खेलनेके लिये मोटे आगजका चोबूटा टुकड़ा जिस पर रंगीको बूटियां या लसबोरे बनी रहती है, खेलनेका पत्ता । ( Playing oard )  
 इसके एक कोर्केमें बावन पत्ते होती हैं जो चार रंगोंमें विभक्त रहते हैं । रंगोंके नाम कृष्ण, शिङ्गो, पाव और ईट हैं । एक एक रंगके तीरह तीरह पत्ते होती हैं । इन प्रकार चारों रङ्गके पत्ते मिला कर बावन होती हैं । प्रत्येक रंगके तीरह पत्तोंमेंसे एकसे दस तक तो बूटियां होती हैं जिन्हें क्रमशः रक्षा, पुष्पो ( या दुष्पो ) तिष्ठी शोष्ठी, पष्ठी, कक्षा यत्ता यथा मन्त्रका धोर दक्षका कहते हैं ; शेष सोन पत्तियोंमें क्रमशः शुक्लाम बोधो और बादमाहवो लसवोरे होती हैं ।  
 इन बावन तार्योंको से कर अपनेक प्रकारके खेल खेले जाते हैं, जिनमें साधारण वा रगमार खेल सबसे प्रसिद्ध है । इस खेलमें विशेष कर दोहो मनुष्य खेलते हैं । खेलनेके समय पहले तार्योंको पष्ठी तरह धिरधार कर पांच पांच तार्य पक्षको बार बाँटते हैं । इस खेलमें बिसो र गव्ठी अधिक बूटियांकासा पत्ता लवी र मन्त्रो काम बूटियोंकासे पत्तोंको मार मरता है । इस प्रकार दक्षके को शुक्लाम मार सकता है और शुक्लामको बोधो, बीबोको बादमाह धोर बादमाहको रक्षा । रगमारमें पक्षा मन्त्रके चैठ माना जाता है और मन्त्र सब पत्तोंको मार सकता है । इसी प्रकार रमसे मार कर जब हाथके पाँचों तार्य चर्च हो जाते हैं तब फिर पांच पांच तार्य बाँट लेते हैं । इसी क्रमसे यावनी तार्यके बट जाने पर खेलनेवासी अपने अपने कीर्ति हुए तार्योंको लठा कर रन समाते हैं । पर खेल फिर पक्षके काम शुरू होता है । अन्तमें जिसके पास अधिक तार्यके पत्ते पा जाते हैं, उसको जीत समझे जाती है । कोट घोष नामक एक सुघरा खेल है । इसमें चार मनुष्य एक भाग खेलते हैं । दो दो मनुष्य का जोड़ा या गौहर्यां होता है । दाहिने धोरसे चार



चार ताश पहली बार बटि जाते हैं। पहले जिसको ताशके पत्ते दिये जाते हैं, वह उन्हें ले कर जिस रंगके पत्तोंको बनवान् या अधिक देवता है, वही रंग बीनता है। सब पत्तोंके बट जाने पर वे पहले रंगमार जैसा खेल खेलते हैं। लेकिन खेलते समय दूसरेके पाम उस रंगका पत्ता न रहे तो रंगसे मार सकता है। 'रंग'की दुक़ो 'बटरंग'के एकाको भी मार सकती है। इस प्रकार जब हाथके सब पत्ते खतम हो जाते हैं, तब जिसके पाम जीते हुए ताशके अधिक पत्ते रहते हैं, वही जीतता है। 'गैम' नामका एक तीसरा खेल है। यह भी 'कोर्ट-फीस' की तरह खेला जाता है। फर्क इतना ही है, कि 'कोर्ट-फीस'में चार मनुष्य खेलते हैं, लेकिन इसमें छः। तीन तीन आठमीका जोड़ा या गोइयां होता है। इसमें चारो रंगको दुक़ो अलग रख दो जाते हैं। गैप अटतालीस ताश छद्मके बीच आठ आठ करके बाट देते हैं। इसमें 'हाथ' बीननेके लिये कड़ा जाता है अर्थात् कितनी बार वह स्वयं वा अपने जोड़ेसे ताग काट सकता है। पांचसे ले कर सात हाथ बीन सकता है। जब हाथ में ऐसे ऐसे पत्ते आ जाय कि उनसे लगानार आठ बार काट सके, दूसरा एक बार भी काट न सके, तब वैसा हालतमें 'गैम' बीना जाता है। छहों खेननेवालोंको जब बराबर बराबर ताशके पत्ते मिल जाते हैं, तब वे क्रमसे 'हाथ' बीनते हैं; कोई पांच, कोई छः और कोई सात। जो जिस तरहका अपना ताश देखता है, बीन उठता है। जिसको संख्या अधिक रहती है, पहले वही 'रंग' बीनता है। बाट 'रंगमार' जैसा खेल शुरू होता है। जो जितना हाथ बीनता है, उतना जीत लेने पर उस अद्मकी कागज पर लिख लेता है अथवा उसको याददास्त रखो जाती है। अगर वह उतना हाथ न जीत लेता तो उसे 'पेनैलटी' लगती है अर्थात् उसके विरुद्ध पत्तका उससे दूना हाथ होता है। इसी प्रकार खेलते खेलते जिसके वावन हाथ पहले होते हैं, उसको जीत होता है, तब एक गेम कहलाता है। यदि हाथ बीनते समय 'गैम' कड़ा जाय और जीत न सके, तो दूसरेका दो 'गैम' हीना साधित होता है। ताश खेलते समय खिलाड़ीकी अपने ताश इस तरह छिपाये रखना चाहिये कि दूसरा कोई उसके

नागको देख न सके। ऐसा नहीं करनेमें उसको घोल खुल जाती है और अन्तमें हार भी उसको होती है।

'गुलाम चोर' नामका एक और खेल है। इस खेलका जैसा नाम है, वैसा इसको करने भी है। इसमें चार खिलाड़ो रहते हैं, उपर्युक्त खेलों जैसा जोड़ा नहीं रहता। सभी एक दूसरेके विपक्ष रहते हैं। खेलके प्रारम्भमें वावन पत्तोंमेंसे किमो एक पत्त की चुना रखते हैं। पोछे सब पत्ते आपसमें बाटि जाते हैं। बाट करएक खिलाड़ो अपने पामके पत्तोंका जोड़ा लगा कर अर्थात् चिह्नोकी दुक़ोके साथ चुवनको दुक़ो, निहोके साथ तिहो, इत्यादि इसो प्रकार पामके साथ हेंटको बटिगाहे संख्यानुसार पत्तोंका जोड़ा लगा कर अलग रखते हैं। अब बचे हुए पत्तोंको वे अपने अपने सामने इस तरह पकड़े रहते हैं कि कोई दूसरा उसे देख न सके। बाट एक खिलाड़ो दूसरेके हाथसे पत्ता खींच कर, अगर उसके पाम उसका जोड़ा रहता है तो उसोके साथ मिला कर अलग रख देता है, या नहीं तो अपने हाथके पत्तोंमें ही उसे उलट पुलट कर दूसरेको खींचने कहता है। इस प्रकार खेलते खेलते सब पत्तोंका जोड़ा लग जाता है, केवल एक ही पत्ता जिसका जोड़ा चुग कर रखा गया है, बच जाता है। जिसके हाथमें वह पत्ता रह जाता है, वह चोर समझा जाता है। इसको 'गुलाम चोर' कहते हैं। इसके सिवा और भी ताशके कई खेल हैं जिनका विस्तारके भयसे उल्लेख नहीं किया गया।

ताशका खेल पहले पहल किम देशमें निकला, इसका ठोक पता नहीं है। कोई मिस्र देशको, कोई बालिलोनियाकी, कोई अरबको और कोई भारतवर्षको इसका आदि स्थान बतलाते हैं। फिर बहुतांका कहना है कि फ्रान्सके राजा एडो चार्ल्स वायुरोगग्रस्त थे। उन्हींके जो बहलानेके लिये ताशके खेलको सृष्टि हुई। मेक्सपियरमें ताशके खेलका उल्लेख है। अभी जो 'ग्रेट मुगल' मार्काका ताश मिलता है, वह पहले पहल यूरोप से इस देशमें लाया गया था। साहब, बीबी, गुलामको तमबोरोंसे भारतवासीकी उतना सुख न देख कर, उसके बटले तरह तरहकी देवदेवियोंकी तसबोरे' हो गई है। फिलहाल बेलजियमसे जो 'कदम्बकेलो' नामका

ताम्र पाता है, धर्ममें कल्पभोगाओ को पवित्र तमबोर है ।

राम खेत्तकी उत्पत्ति किम दीर्घमें पौर किम समयमें हुई इसका पता हमभोगोंको हमोसि कम जायगा, कि विद्यालयमें रावेक पयिपाठिक मोसाइडो नामको एक माइडरो है जहाँ हजार वर्ष पहलैका एक जोड़ा ताम्र मिलता है । किन्तु यह ताम्र एक हजार वर्ष पहलैका है इसका कोई प्रमात्र नहीं मिलता । भारतवर्षके त्रिस ब्राह्मणने यह ताम्र खरोदा गया था, उनने कहा था, कि यह हजार वर्ष पहलैका है ।

पर विविधम बोला लिख गये हैं, कि भारतवर्षमें पतु राजो नामक एक खेत्त बहुत दिनोंके प्रचलित है । धार्मिक द-पक्षबरोमें पयुक्तप्रसन्ने कहा है,— 'माओन धवियोंमें स्थिर बिद्या था, कि तागके कुल बारह रंग हैं, पौर बारह रंगके बारह बारह ताम्र हैं ; पर है प्रसन्न र नके मिथ मिथ बारह राजा नहीं मानते हैं ।'

पक्षबरेके समयमें भारतवर्षमें को ताम्र प्रचलित है, उनके रंगके नाम मिथ है ; जैसे, (१) पक्ष पति—यह पक्षने प्रधान रंग था । ताम्रके ऊपर दिबोके बादमाइ पक्षबरेकी तमबोर जोड़े पर बनो रहती थी । उनके हाथमें जल पौर पताका मोहित थी । बाद दृष्टकाने से कर एका तमके पत्तों जोड़ेको तमबीर पर चिहित है । (२) गजपति—इसमें ताम्रके पक्ष पत्तों पर लड़ोमाके राजाकी तमबोर हाथी पर बनो होती थी । उनके बजोरको तमबीर भी बनो तरह थी । बुटियोंबासि ताम्र काशी पर लप रहते हैं । (३) भरपति—इसमें बीजापुरके राजा नि हासन पर बैठे हैं, पास जो उनके बजोरको मो तमबोर को, पौर सब ताम्र पदाति संध्यके चिह्नके चिहित रहते हैं । (४) गजपति—मरुके ऊपर नि हासन पर बैठे हुए राजाकी तमबीर पौर मरुके ऊपर बजोरको तमबोर रहती थी । (५) बगपति—राज नि हासन पर बैठे हैं, घामने पर्वरायि है पौर बगलमें बजोर बैठ कर राजकीयका डिपार कर रहे हैं ; ये पत्तों पर मोने पौर चंदोसि मरी हुए लड़ोको तम बोरे रहती थीं । (६) टकपति—बर्माइजके राजा नि हासन पर बैठे हुए हैं पौर चारों पोरके लड़के सोम उन्हें

धरे हैं । ये ताम्रिं जिन्हें बर्माइजके मुहवीके को विर धी । (७) नौपति—राजा लहाइके ऊपर नि हासन पर बैठे हैं पौर जोको पर बजोर । मुहवर ताम्रिं नामको तमबीरे रहती थीं । (८) खोपति—प्रथम ताम्रिं नि हासनके ऊपर रामो पौर दूसरमें बजोरको खो जोको पर बैठे रहती थीं । दूसरे दूसरे ताम्रिं भां खोको तमबोरे को । (९) टकपति—यहसे ताम्रिं इन्द्र नि हासनके ऊपर पौर दूसरमें लकके मन्को बीको पर बैठे रहते हैं । ये ताम्रिं बिबतावीको तमबीरेके चिहित रहते हैं । (१०) पक्षपति—दावदके पुत्र सुखेमान नि हासन पर पौर बजोर पाको पर बैठे रहते हैं ; पौर सब ताम्रिं टकोको तम बोरे रहती थीं । (११) बगपति—पक्षके ताम्रिं पक्षपति नि हासा पौर दूसरमें चोताका बिब पौर ये ताम्रिं लड़को पक्षपति प्रतिमृति रहती थी । (१२) पक्षपति—मकरक ऊपर घर्षराज पौर सपके ऊपर बजोर बैठे रहते हैं । दूसरे दूसरे ताम्रिं सर्वत्र चित रहते हैं ।

प्रथम कः रंगके ताम्रिंको 'बिगबर' पञ्चात् बिगबर या 'पक्षबरेक' पौर ये लको 'कमबर' पञ्चात् कम बन या 'पक्षबरेक' कहते हैं ।

बादमाइ पक्षबरेके ताम्रिं पौर मो लई प्रकारके परि-र्जन किये हैं जैसे—घनपति बगदान कर रहे हैं, बजोर मङ्गारकी खबर से रहे हैं । ये तम ताम्रिं राजकोपमें निजुक्त प्रतिमृतिंयों कीं यथा—बोइरो, शातु मसानेवाला कप्या सुहर पादि छाटनेवाला, वजल करनेवाला हाथ दिनिवाला, सुहर गिननेवाला, 'मान' नामक सुद्रा बिलनेवाला पोहार तथा शातु पीटनेवाला रहता था । एक पौर प्रकारके ताम्रिं बादमाइ पक्षबरेके मृति हाता राजापीकी तमबीरे दो हैं । उनके सामने कर मान, दागपत्र टपतरके आगजात रहे हुए हैं ; मोके बजोर बैठे हैं पौर घामने दृष्ट तर है । पञ्चाथ सुहरा ताम्रिं राजक मन्कीय काम पारिवीर बिब हैं, यथा—आमकी, आगत्र पर दल पीचनेवाला, टप तरके आगत्र पर लिबनेवाला आगत्र पर सुनहरो बपहरो काम करने वाला, लकगा पीचनेवाला मोनेके जल पौर मोन र गये हैका को बनेवाला, करमान लिबनेवाला आता बांके वाला तथा रभरेक । जिर एक प्रकारके ताम्रिं पक्षबरे

वादगाइने शिल्पकार्यके राजाओंकी खूब भडकीली 'तसबोरे' डी है; वे रेशम और रेशमके कपडोंका निरोचण कर रहे हैं। खुबरा ताशोंमें भार ढोनेवाले जन्तुओंकी प्रतिमूर्त्तियाँ हैं। फिर एक प्रकारके ताशमें वंशो-राज सिंहासन पर बैठ कर गान सुन रहे हैं। वजीर गायक और वादकोंको तद्वोर कर रहे हैं। अबशिष्ट ताशोंमें गायक और वादकोंकी प्रतिमूर्त्तियाँ चित्रित हैं। और एक प्रकारका ताश है जिसमें रौप्यराज रौप्यमुद्रा विसरण कर रहे हैं। वजोर दानका तदारक कर रहे हैं शेष ताशोंमें रौप्यमुद्रायन्त्रके कर्मचारियोंकी तसबोरे' हैं। एक दूसरे प्रकारके ताशमें अमिराज तनवार चला रहे हैं। वजोर आयुधागारका तदारक कर रहे हैं। अन्य दश ताशोंमें आयुधागारके कर्मचारियोंकी प्रतिमूर्त्तियाँ चित्रित हैं। ताजपति—राजा राजचिह्न प्रदान कर रहे हैं, वजोरको पौदा दिया है, पौदेमें भी राजचिह्न है। क्रोतदासपति—राजा हाथो पर और वजोर बैलगाड़ी पर जा रहे हैं। अन्यान्य ताशोंमें कोई श्रुत्य तो बैठा हुआ है, कोई शराब पी रहा है, कोई गान कर रहा है और कोई टेषताकी उपासनार्थ हो मस्त है। आईन-इ-अकबरोमें लिखा है, कि वादशाह अकबर जिस ताशसे खेलते थे, उसमें बारह रंग थे और १४४ पत्ते रहते थे। अबुल फजलने उन सब ताशोंको भारतवर्षसे हो प्राप्त किया था। वे सब ताश यदि भारतवर्षके न होते, तो उनमें भारतीय नाम नहीं रहता। पहले हर एक रङ्गके केवल बारह ही पत्ते होते थे। 'गुलाम' तो पाश्चात्य देशोंकी नई सृष्टि है। आजकल जो ताश खेले जाते हैं, वे यूरोपसे हो आते हैं।

दशावतार ताश देखो।

ताशा ( अ० पु० ) एक प्रकारका बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा हुआ रहता है। इसे गलेमें लटका कर दो पतली लकड़ियोंसे बजाते हैं।

ताश्र ( स० त्रि० ) तष्टृ-ण्य। त्रिशकर्सका बनाया हुआ। तासला ( हि० पु० ) भातुओंके गलेकी वह रस्सी जिसे पकड़ कर कलन्दर उसे नचाते हैं।

तासोर ( अ० स्त्री० ) प्रभाव, गुण, असर।

तासुन ( स० पु० ) तस वाहुलकात् उणन् । १ शण्वृच,

सनका पेड। तस्येदं षण् । २ तसम्बन्धो।

तासुनो ( म० स्त्री० ) तासुन स्त्रियां डोष् । शणनिमित मेखला, मनको डोरी।

तास्कर्य ( स० क्री० ) तस्करम्य भाय तस्कर-पञ्ज । तस्करता, चोरी।

तासगन्ध ( म० स्त्री० ) सामभेट।

ताहम . फा० अश्व० ) तोभो, तिसपर भो. फिर भो।

ताहीरपुर—१ बङ्गालका एक विख्यात परगना। यह टिनाजपुर जिलेमें अवस्थित है। इसका परिमाण लगभग ७६२ वर्ग बीघा है। यह परगना केवल एक जमोदारो है।

२ राजसाहो जिनेके अन्तर्गत एक विख्यात जमादारो। यहाँके जमोदाराने बङ्गदेशमें विविध ख्याति प्राप्त की है और गवर्मेण्टसे उन्हें उपाधि भी मिली है। जमोदार वारेन्द्र श्रेणोके भादुङ्गोग्रामोण ब्राह्मण हैं।

ति ( स० अश्व० ) इति चेदे । पृषा० माधुः । इति शब्दार्थ । तिक ( म० पु० ) तिकृ-क । श्रयि भेद, एक ऋषिका नाम।

तिककितवादि ( स० पु० ) पाणिनिका एक गण। तिक कितव, वहरभगडोरथ, उपकलमक, फलकनरक, वकनख-गुदपरिणड उलककुभ, कलद्वागन्तुम्व, उत्तर-शलद्धट, क्षण्णाजिनक्षणसुन्दर, भ्रष्टककपिठल और अग्निवेशदशैरुक ये शब्द तिककितवादिगण-भुक्त हैं।

तिकडो ( हि० स्त्री० ) १ वह जिसमें कडियाँ हों। २ तोन तोन रस्त्रियोंको एक साथ लेकर चारपाई आटिको बुनावट।

तिकादि ( स० पु० ) पाणिनिका एक गण। अपत्य अर्थमें तिकादि शब्दके वाद फिन् होता हैं। तिक, कितव, सजा, वासा, शिखा, उरस, शाव्य, सैन्यध, यमुन्द, रूप्य, ग्राम्य, नोल, अमित, गोकस, कुरु, देवरथ, तैतिल, शोरस, कौरव्य, भोरिकि, मोलिकि, चोपत, चेटयत, शोकयत, जैतयत, ध्यानवत्, चन्द्रमस शुभ, गङ्गा, वरेख्य, सुयामन, आरव्य, वाह्यक, स्वल्प, षव, लोमक, उदन्य और यज्ञ इन शब्दको लेकर तिकादिगण बना है।

तिकानी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारको तिकानो लकडो जो पहियेके बाहर धुरोके पास पहियेको रोकनेके लिये लगी होती है।

तिक्षीय (म० वि०) तिक्-ख । अश्वत्थिः । पा ३।२।८० ।  
 तिक्के कश्चित् देवादि । तिक्के पाण्डवा देव ।  
 तिक्कुप (दि० पु०) पसमको तोम बराबर राशि, जिनमें  
 एक राशि जमींशर क्षेपि है ।  
 तिक्कोना (दि० वि०) १ तिक्कोषकुक्ष, जिनमें तोम कोने  
 को । (पु०) २ एक मयकोन पदवान ।  
 तिक्कोनिया (दि० वि०) तिक्का देवा ।  
 तिक्को (दि० खी०) तोम दूरोदार तायका पदा ।  
 तिक्क (म० पु०) तिक्कति तिक्क पावुसकात् कर्त्तरि क् ।  
 १ दसमेंट, २ रसोमिने एक होता रस । (खी०) ३ पपे  
 टकोपधि, पित्तपायदा । ४ सुमन्व । ५ भूदरप्रप । ६  
 वरुप ह्य । इन सब ह्योमिं तोता रस पश्चिक्क रसनेके  
 कारण रसको मिनतो तिक्कमेंको गर्ई है । (वि०) तिक्क  
 रसका तोता रसका । ७ तिक्करसव, तोतारसके  
 समान ।

इस रसके विषयमें पृथुतमें एक प्रकार किया  
 है—पाण्डव, वायु पश्चिक्क जन पोर मूमि इन पक्  
 मूर्तेमिं उतागोतर एक एक करके बड़ कर मन्द, स्पर्म,  
 ह्य रस पोर मन्व के पांच गुण उत्पन्न होते हैं । पत  
 एक रस जमीय गुणमें तिक्कका है । एक दूररेके क मर्गे  
 रपता है, पान्द्रुका है पोर एक दूररेके मिन कर मर  
 मूर्तेके मर प मीमि मिन है । मिनिक बड़ उच्छृट पोर  
 पपकट्टक अरेके पक्क बिद्या जाता है ।

जमीय गुणवमूर्त बर रस तथा पोर मर मूर्तेके  
 माय मिन कर निरुप हो जानेके १ प्रकारमें विमक हा  
 जाता है । ये जो क रस है, जिनके नाम जमम मपुर  
 पक्क, लक्क, अट्ट, तिक्क पोर क्काय है । विपेय विररक  
 रसमें देको । कायक पोर पाण्डव गुणके पश्चिक्क रसनेके  
 तिक्क रस उत्पन्न होता है । बिमी बिमी पन्डितका  
 क्कना है, कि जगन्का पश्चिमोमेद्वय प्रमुक्क रस दो  
 प्रकारका है—पाम्केय पोर मोम्य । मपुर, तिक्क पोर  
 पक्क मोम्य है एवं अट्ट पक्क पोर लक्क पाम्केय ।  
 अट्ट, तिक्क पोर क्काय म्मु है । मोम्यका यह मोमन  
 है ।

तिक्क रसके गर्भमें ज्वाला, मुपमें बेरका पक्क रसि  
 पोर रसि हा, हने तिक्क रस क्कने है ।

तिक्करस बेदन, रसि, दामि पोर मोमनकर एक  
 क्कन्, कोप, पन्दा, मूर्च्छा पोर क्करमात्तिक्करस म्मु प  
 मोपक एवं बिहा म्मु, लैद, मिट बसा पोर पूयमोप  
 कर है । पिसा गुणवि मट होने पर मो पश्चिक्क मावा-  
 मी मियन क्कानिने म्गोर क्कन्दरहित हो ज्ञाना घटनेको  
 म्मि घट जाती हाक पावामिं पायेय होना तथा म्मि  
 म्मल म्मर, तोद, मिद, बिद पोर मुक्कमें बेरक्य उत्पन्न होता  
 है । पसमनाम गुणक म्मोठ क्कनेर इम्दी, इम्प्यक  
 दाक्कइदी बरकप्रप, गोक्क, मसपक्क क्कतो, मट  
 कट्टेवा, मूर्चिक्कपर्णे निमीय, पोपाम्मता क्ककोटिक्क कार  
 केक्क (क्कैना) क्कान्कु, क्करीट, क्करोट, मानतो,  
 म्मकुम्भो, पयामार्ग क्कना, पयोक्क, कुटको, क्कयन्तो,  
 क्कामो, पुनर्कना क्कविक्कानो पोर ज्योतिक्कतो म्मता पादि  
 तिक्क कर्गके पन्मर्गत है । इनमें पट्टेन पोर क्कान्कु  
 क्कट्ट है । (इ उ म्मु० इ२ म० )

तिक्क (सं० पु०) तिक्केन तिक्करनेन कायति के क्क वा तिक्क  
 म्म ज्ञानो क्कन् । १ प्पट्टेन परबन । २ बिरतिक्क बिप  
 यता । ३ क्कप्यपदिर, क्कानादिरे । ४ इम्पु, दोउप । ५ तिक्क  
 रस, तोता रस । ६ निम्पुप, मोमका पिङ्ग । ७ कुटन  
 क्कन, क्कुरेवा । (वि०) तिक्करसवुक्क जिनका रस तोता  
 को ।

तिक्कइन्दिक्का (कं० खी०) तिक्क(मरकाना) क्कन्दो म्मन  
 मोपेकर तिक्कइन्दिक्क क्कन् टाय रस । गन्पमता, क्कन  
 क्कपुर, क्कनामट ।

तिक्कका (म० खी०) तिक्केन रसेन कायति के-ज टाय ।  
 कट्ट, तुम्बी क्कङ्क पा क्क । इनके संस्कार पयाय-पप्पाङ्क,  
 कुट, तुम्बी, तुम्बी पोर म्महायना है । इनके गुण—मोत  
 कोक, इदपयाको, तिक्करस कट्ट, बिद्याक तथा विर, क्काम  
 विप, वायु पोर पित्तकरनायक । (भा२०) २  
 क्कान्कु, क्ककनेतो । ३ क्करपमना क्कना ।  
 ४ पुङ्क, हाक ।

तिक्ककात् (म० पु०) मूर्चिक्क बिगायता ।  
 तिक्ककाको क्कना (म० खी०) कट्ट, क्कना, कुटको ।  
 तिक्ककोपातको (म० खी०) तिक्ककोका क्कङ्क ई तरीई ।  
 तिक्कगम्मा (म० खी०) तिक्क गम्मा यमा क्कङ्को । १  
 क्कपाण्डवता, क्करोक्कम्प । २ पात्रिक्क, क्कपेट क्कनेतो ।

तिलगण्डिका ( सं० स्त्री० ) तिलगण्डिका टैको ।

तिलगुञ्जा ( सं० स्त्री० ) गुञ्जा व तिलका राजदन्तादित्वात्  
पूर्वनिपातः । करञ्जकांजा, करञ्जुषा । इमके पर्याय—  
कुट्टरसा, रमघा और विदपकटो ।

तिलकृत ( सं० स्त्री० ) सुश्रुतोक्त कृतभेद, सुश्रुतके प्रथमा  
कई तिलक औषधियोंके योगसे बना हुआ एक कृत । इम-  
के प्रसूतप्रणाली - विफला, पटोल, निम्ब, वामक,  
कटुकी, दुरालभा, वायमाणा और पपट प्रत्येकका दो  
दो पल जलमें डलवाते हैं । जब जलका चौथा भाग रह  
जाय तो नीचे उतार लेते हैं । वायमाणा, सूया इन्द्रियव,  
चन्दन, भूनिम्ब और विषली प्रत्येकका आध तोला ले का  
रक काथमें पीसते हैं । उसी चूर्णके साथ प्रत्येक परिमित  
कृत पाक करना चाहिये । इममें कुठ, विषमञ्जर गुल्म,  
अर्य, यद्गणो, शोफ, पाण्डु, विमर्ष और पण्डता रोग  
जाति रहते हैं । ( सुश्रुत चिकि० ९. ध० )

तिलकतण्डुला ( सं० स्त्री० ) तिलकतण्डुलोऽन्तः गण्ड  
यस्याः । विषली, पीपर । इमके पर्याय—चपला, गौण्डो,  
वैदेही, मागधो, कणा, कण्योपकुम्भ्या, मगधो और कोन  
हैं । ( वैद्यकरवमाला )

तिलका ( सं० स्त्री० ) तिलक्य भावः तिलक-तन्-टाप् ।  
तिलकरम, तिताई ।

तिलकतुण्डी ( सं० स्त्री० ) तिलकतुण्डी प्रुपोटरादित्वात् माधुः ।  
कुटुतुम्बोन्ता, कडुई तरोईकी लता ।

तिलकतुम्बो ( सं० स्त्री० ) तिलका तुम्बो । कडुआ कडु,  
तिललीकी ।

तिलकदुग्धा ( सं० स्त्री० ) तिलकं दुग्धं निर्यासी यस्याः ।  
१ चोरिणीवृक्ष, गिरनी । २ अजशुद्धी, मिठासिंधो ।

तिलकघातु ( सं० पु० ) तिलकः तिलकरसप्रधानो घातुः । पिक्त ।

तिलकपत्र ( सं० पु० ) तिलकानि पत्राणि यस्य । १ कर्कोटक,  
ककोडा, खोखसा । ( वि० ) २ तिलकपत्रक वृक्षमात्र, वज्र  
वृक्ष जिमकी पत्ती कडु ई हैं । ( स्त्री० ) ३ तिलकं पत्रं ।  
कडुई पत्ती ।

तिलकपर्णिका ( सं० स्त्री० ) गोरक्षकर्कटो, कचरो, पेहँटा ।

तिलकपर्णी ( सं० स्त्री० ) गोरक्षकर्कटो, कचरो ।

तिलकपर्वा ( सं० स्त्री० ) तिलकं पर्वं अत्रिय र्यस्याः, बहुव्री० ।  
१ दूर्धा, दूध । २ हित्तमोची, इलइल । ३ गुडुची, गुचं,  
गिकोय । ४ यटिमञ्जना, जेदीमधु, मुनेठी ।

तिलकपुष्पा ( सं० स्त्री० ) तिलकानि पुष्पाणि यस्याः ।  
१ पाठा । ( वि० ) २ तिलकपुष्प वृक्षमात्र, वज्र पेह जिममें  
कडु ए फल लगते हैं । ( स्त्री० ) ३ तिलक फूल, कडुआ  
फल ।

तिलकफल ( सं० पु० ) तिलकानि फलानि यस्य । १ कतक  
वृक्ष, रोठा । ( वि० ) २ तिलकफलक वृक्षमात्र, वज्र पेह  
जिसमें कडु ए फल लगते हैं । ३ तिलक फल, कडुआ  
फल ।

तिलकफला ( सं० स्त्री० ) तिलकानि फलानि यस्याः । १ यव-  
तिलका लता, भटकटैया । २ वार्ताकी, कचरो । ३ पड-  
भुजा, खरवृजा ।

तिलकभद्रक ( सं० पु० ) तिलकस्मिन्कारमप्रधानो भद्रकः तत,  
स्वार्थं कन् । पटोल, पशव ।

तिलकमरिच ( सं० पु० ) तिलको मरिच इव । कतक वृक्ष, रोठा ।

तिलकयवा ( सं० स्त्री० ) तिलकं यव इन्द्रियव रसोऽस्मात्प्र  
यच । १ गदिनो । २ यवतिलका लता ।

तिलकरमा ( सं० स्त्री० ) तिलकः रसो यस्याः । ब्राह्मोशाक ।

तिलकरोहिणिका ( सं० स्त्री० ) तिलकरोहिणो स्वार्थं कन्-  
टाप पूर्वङ्गस्य । कटुका, कुटको ।

तिलकरोहिणी ( सं० स्त्री० ) तिलका मतो रोहित रुह-णिनि  
डोप् । कटुका, कुटको ।

तिलकना ( सं० स्त्री० ) शद्रिनो ।

तिलकवर्ग ( सं० पु० ) तिलकाना वर्गं, ह-तत् । तिलकरमात्मक  
द्रव्य समूह ।

तिलकवम्बो ( सं० स्त्री० ) तिलका वम्बो । १ मूबोन्ता, सुरा,  
सरोरफलो । २ तिलकलता मात्र, कडुई वन ।

तिलकवोजा ( सं० स्त्री० ) तिलकं वोजं यस्याः । कटुदुम्बो,  
कडुआ कडु, तिललीकी ।

तिलकशाक ( सं० पु० ) तिलकः शाको यस्य । १ खदिरवृक्ष,  
खैरका पेह । २ वरुणद्रुम, वरुणवृक्ष । ३ पत्रसुन्दर  
वृक्ष । ( स्त्री० ) ४ एक प्रकारका कडुआ साग ।

तिलकशाकतरु ( सं० पु० ) खैरप्रसूनक वृक्ष ।

तिलकशाकद्रु ( सं० पु० ) वरुणवृक्ष ।

तिलकसार ( सं० पु० ) तिलकः सारो निर्यासीऽस्य । १ खदिर,  
खैर । २ विटखदिर वृक्ष । ( स्त्री० ) ३ दोषरोहिणिक  
वृक्ष, रोहिंस नामकी घास । ३ तिलकसारक वृक्षमात्र, वज्र

पैड विमरिद्या एव तोता हो । ४ तिज्ञानार कहुपा रस ।  
 तिज्ञा ( स० खो० ) तिज्ञादिभारमोऽप्युपात्ता भव्य ततदाप ।  
 १ कटु, रोचिषो हृदको । पर्याय—कटु, रोचि, कटु, का,  
 तिज्ञा, कश्मीदा, कटु, फाटा, चयोका, मन्दायकका,  
 पलाङ्गो, यजुःसादनो, मन्दापिता, काष्णिकवा रोचिषो  
 पोर कटु, रोचिषो है । २ पाटा । ३ यन्तिज्ञा कता ।  
 ४ पङ् मुक्ता, चरकूषा । ५ तिज्ञानो, मलकिकनो ।  
 ६ मत्ता कस्तुरी ।

तिज्ञाक्या ( सं० खो० ) तिज्ञेति भाष्या यस्याः । कटु, तुम्बो ।  
 कहुपा कहु, तितलौको ।

तिज्ञाडा ( स० खो० ) तिज्ञा यज्ञ यस्याः । पाताम  
 मन्दाकोमता चिरे टा ।

तिज्ञाघटा ( स० खो० ) मन्दादि, एक प्रकारकी बीज ।  
 ( *Menispermum glabrum* )

तिज्ञाह्वया ( स० खो० ) तिज्ञेति भाष्यो यस्याः । कटु  
 तुम्बो, तितलौको ।

तिज्ञिका ( स० खो० ) तिज्ञा काये कहु टाप यतइव ।  
 १ कटु, तुम्बो, तितलौको । २ काकमाचो । ३ कटु, का,  
 हृदको ।

तिज्ञिरो—घाई भोकोका एक प्राचीन दुग्धा वायव्यम् ।  
 यह देशमें बहुत कुछ यूरोपीय बगपाएव ( Bagpipe )  
 यन्त्रको तरङ्ग वा ; यात्रकाल तुम्बोके नामसे प्रख्यात  
 है । चाहितुचिह्न कोम इसका व्यवहार करते हैं । इसका  
 दूधरा नाम पूमी है । यह यन्त्रके निष्कर्षार्थमें किञ्चिद्वृत्त  
 दो मल परस्पर बराबर स हृत्त रहते हैं पोर छपरके भाग  
 में एक कहुमें कटु, तुम्बो स जोडित रहते हैं । बड़ो  
 बाहुकोय है, इसका छपरके भाग मलाकार पोर हृत्त वक्र  
 रहता है । इसीमें एक किञ्च रहता है । तिज्ञातुम्बी कोनेके  
 कारण इसका नाम तिज्ञिरो को भवा है ।

यूरोपीय स मोतइतिज्ञासके सिक्क चिल यात्रकर्म  
 Travel, in Sibens घाईरिजा-ब्लमन् नामक  
 ग्रन्थमें तिज्ञि ( Titty ) नामसे इसका उल्लेख किया है  
 पोर यूरोपीके Bag pipe के साथ तुलना को है । किन्तु  
 प्साह्निक तिज्ञिरी पोर यम-वायमें यज्ञो पन्तर है कि  
 बगपाएवका बाहुकोय चर्मनिर्मित होता है । प्राचीन  
 कालमें अविमल कनो कनो तिज्ञा कहु है जभाकर्म धग-

चर्म द्वारा यह यन्त्र तयार करते थे, सुतरां प्राह्निक बग-  
 पाएव उस धमयकी तिज्ञिरोके-समान कथा का चलता है ।  
 यह कनो कनो नाचके बजाया जाता है इसीसे इसका  
 दूधरा नाम नामाव भी भो है । इससे एक नलमें एक स ग-  
 भी पन्तर से चर पोर दूरमें किञ्चि होती है । नलके सब  
 से नौसेके दो किञ्च मोम द्वारा बन्द रहते हैं ; वे छपरकासी  
 नलके दोनी तरफ होती हैं । दूररी नलके पाँच छेदार्थमें  
 दूररा पोर चौका कला रहता है पोर तोम भीम द्वारा  
 बन्द रहते हैं । प्रथम नलके मात दूर बजाये जाती है,  
 दूधरा नल केवल दूर कोने किञ्च बजाया जाता है । यह  
 दिनकयन्त्र प्रायः पूमीके समस्त प्रधान देशोंमें यति प्राचीन  
 वासके व्यवहारमें जाया जाता है । कोम्बटूर सोनेप्ट  
 ( Cosmobotour Sonnerat ) के भीपेनेम् एक रच्य स  
 योरियन्टस ( Voyages and Indes Orientales )  
 नामक ग्रन्थमें यह Tourte नामसे वर्णित है । जिस  
 साहबने लिखा है कि उन्होंने यह यन्त्र मन्डोवियाके  
 मोमाकर्म देखा वा ; जोस्को साहब ( Sir William  
 Ously ) पारसमें देखा एक यन्त्र देखा वा ; वहाँ  
 यह 'नेर पम्बाना' ( Nei Ambana ) नामसे  
 प्रसिद्ध है । मिनके प्राचीन 'जुझारा' ( Zouggarah )  
 एवं प्राह्निक 'जामू' पोर 'जुझारा' ( Jummarrah )  
 यन्त्र इसी तरहका होता है । दो विभिन्न प्रकारके नल  
 पोर बिना तुम्बोका 'जाम' नामक एक यन्त्र है, वाइ-  
 बिलमें 'जामपोनिदा' नामके एक ऐसे को यन्त्रका उल्लेख  
 है, वही यन्त्र प्राह्निक हटोकोके 'जामपोना' ( Zam-  
 pogna ) पोर हिन्डके 'मार्पो'को तरह है ।

तिज्ञ ( चि० बि० ) जो तोम बार होता यवा वा ।

तिज्ञरा ( चि० बि० ) शिष रको ।

तिज्ञाई ( चि० खो० ) तोच्छता, मौचापन, सेजो ।

तिज्ञूटा ( चि० बि० ) तिज्ञोचतुङ्ग, जिसमें तोम कोने  
 ही, तिज्ञोका ।

तिज्ञना ( चि० जि० ) इति वाकना, देवना ।

तिगर—सिन्धु प्रदेशके जन्मार्थ विचारपुर जिलेके किञ्च  
 उपविभागाके जन्मार्थ एक तापुज । इसका दूधरिमाच  
 १०१ वर्ग मील है ।

तिमरिद्या—उड़ोकाके करद राक्षसीके एक छोटा राक्ष ।

यद् अक्षां २०° २४' से ३०° ३२' उ० और देशां ८५° २६' से ८५° ३५' पू०में अवस्थित है। इसके उत्तरमें घेंका नल राज्य, पूर्वमें आठगढ राज्य, पश्चिममें वडस्वा राज्य और दक्षिणमें महानदी है। करट राज्योंमें यह सबसे छोटा होने पर भी यहाँ बहुत मनुष्योंका वास है। भूपरिमाण ४६ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः २२६२५ है। हिन्दुओंको मंख्या सबसे अधिक है। यहाँ पार्वतीय और जङ्गलो अंश कोठ कर और सब जगह अच्छे फसल होती है। मोटा चावल, तमाकू, रुई, ईख और तेनहन सरसों आदि यत्रांके प्रधान उत्पन्न द्रव्य हैं। प्रायः ४०० वर्षों पहिले सुरतुङ्ग नामक किसी उत्तर-भारतीय मनुष्य-ने जगन्नाथतीर्थसे लौटते समय यहा आ कर इस देशके असभ्य आदिमें निवासियोंको भगा राज्य स्थापन किया। ये ही वर्तमान राजवंशके आदिपुरुष है। पहिले यहाँ तीन गढ़ थे, उन्हीं तीन गढ़ोंसे इसका नाम तिगडिया वा तिगरिया हुआ है। महाराष्ट्रके अभ्युदयके समय इस राज्यके कई अंश पाञ्चवर्ती राजाओंने अधिकार कर लिये थे। इसमें कुल १०२ ग्राम लगते हैं। राज्यको आय १८,००० और राजस्व ८८२, ६० है। इसको सैन्य संख्या ३०० है। राज्यमें १२ स्कूल हैं। अबसे कुछ पहिले यहाँके राजा बनमानी चत्रियवर चम्पतसिंह महाराज थे।

तिगित (सं० त्रि०) निश्चित, चोखा, तेज।  
 तिगुना (हिं० वि०) तीन बार अधिक, तीन गुना।  
 तिगुचना (हिं० क्लि०) तिगुना देखो।  
 तिगम (सं० क्लो०) तेजयति उत्तेजयति तिज मक्।  
 गुमिहजितिजाङ्घ। उण् १।१४५। १ वञ्च। २ पिप्पलो।  
 ३ पुरुवंशोय एक चत्रिय। (मत्स्यपु० ५०।८४) ये राजा  
 तिमि नामसे प्रसिद्ध है। तिमि देखो। (त्रि०) ४ तोच्छा,  
 तेज। ५ तोच्छास्यशुक्ल।  
 तिगमकर (सं० पुं०) तिगमः करः किरणो राजयाह्नो वा  
 यस्य। १ सूर्य। २ उच्चराजयाह्न नृप, एक मशहर  
 राजा। तिगमः करः कर्मधा०। ३ प्रखर किरण, तेज  
 प्रकाश।  
 तिगमकेतु (सं० पुं०) भ्रुववंशोय बक्षरके औरस और  
 सुवोद्योके गभसे उत्पन्न एक पुत्रका नाम।

( भागवत० ४।१३।१२ )

तिगमजम् (सं० त्रि०) तीक्ष्णमुख, जिमका सुँह तेज हो।  
 तिगमता (सं० स्त्री०) तिगमस्य भावः तिगमभावे तन्  
 टाप। तीक्ष्णता।  
 तिगमतेजम् (सं० त्रि०) तिगमं तेजः यम। तीक्ष्ण तेज-  
 युक्त, अत्यन्त तेज।  
 तिगमदोषिति (सं० पुं०) तिगमा दोषितिर्यस्य, बहुरो०।  
 तिगमांशु, सूर्य।  
 तिगमभृष्टि (सं० त्रि०) तिगमाभृष्टिर्यस्य, बहुरो०। तीक्ष्ण  
 तेजयुक्त, अत्यन्त तेज।  
 तिगममन्यु (सं० त्रि०) तिगमः मन्युर्यस्य। १ उग्रक्रोधक,  
 जिसे बहुत गुस्सा हो। (पुं०) २ महादेव, शिव।  
 ( भागवत १३।१७।४८ )  
 तिगमरश्मि (सं० पुं०) तिगमा रश्मयो यस्य। १ सूर्य।  
 (त्रि०) २ प्रखररश्मिक, जिमकी किरण बहुत तेज हो।  
 (क्लो०) ३ प्रखर रश्मि, तेज किरण।  
 तिगमरुच (सं० त्रि०) तिगमा रुच यस्य। तिगमरुचि,  
 तेज कान्ति।  
 तिगमवत् (सं० त्रि०) तीक्ष्णयुक्त, अत्यन्त तेज।  
 तिगमशृङ्ग (सं० त्रि०) तीक्ष्णशृङ्ग, तेज सींगवाला।  
 तिगमगोचिस् (सं० त्रि०) तिगमं गोचिः यस्य। तीक्ष्ण-  
 ज्वाल, तेज लपट, तेज आंच।  
 तिगमहेति (सं० त्रि०) तिगमा स्तीक्ष्ण हेतयोर्यस्य,  
 बहुरो०। तीक्ष्णज्वाल, तेज आगकी शिखा, तेज लो।  
 तिगमांशु (सं० पुं०) तिगमा अंशवो यस्य। १ सूर्य।  
 (त्रि०) २ प्रखर किरणयुक्त, जिमकी किरण तेज हो।  
 (क्लो०) ३ प्रखर किरण, तेज प्रकाश।  
 तिगमात्मन् (सं० पुं०) उर्ध्वके पुत्र, एक राजकुमार।  
 तिगमानोक (सं० त्रि०) तिगमं तीक्ष्णं अनीकं यस्य।  
 तीक्ष्ण मुख, तेज सुँहवाला।  
 तिगमायुध (सं० त्रि०) तिगमं तीक्ष्णं आयुधं यस्य।  
 तीक्ष्णायुध, तेज हथियार।  
 तगमेपु (सं० त्रि०) तीक्ष्णवाण, तेज तोरि।  
 तिङ्गुद (सं० पुं०) इङ्गुदी हस्त।  
 तिलरा ((हिं० पुं०) वह बुखार जो तीसरे दिन आता हो,  
 तिजारी।  
 तिजर्वासा (हिं० पुं०) किसी स्त्रीके तीन महीनेका गर्भ  
 होने पर उसके कुटुम्बसे किये जानिका उत्सव।

तिजारास ( ४० श्लो० ) प्राचिष्य व्यापार, राजघर ।

तिजारास—राजपूतानाके अन्तर्गत राजघर राज्यका एक शहर । यह अक्षा० २० ३५ उ० पौर देशा० ८५ ३१ पू० अक्षांश नगरके ३० मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है । लोकसंख्या १६५०० है । इन स्थानके राजपूताना मान्यता केविषयके औरतान्त्रिक दृष्टान्त बहुत समीप है । कहा जाता है, कि तीजरास नामक जाटों राजपूत एक शहर के प्रतिष्ठाता हैं । अतिशय बड़ा दुर्ग तथा कानून प्रयुक्त करना यहाँके अधिकारियोंको प्रधान व्यवसायिका है । यह शहर मीरत राज्याकी प्राचीन राजधानी है । यहाँ म्युनिसिपैलिटीका बन्दोबस्त है । शहरके दक्षिणमें भरतरो नामक प्रसिद्ध पुरान समाधि विद्यमान है, जो उत्तरो भारतवर्षके सभी समाधिघोषे बड़ी है । कहा जाता है, कि यहाँके पूर्व मानसकहाँ सिद्धन्दर जोदेके माई पत्ताउद्दोहन पालमघनि इके निम्नस्थ किया है । यहाँ शाहजहाँ के मकबरा भी अवस्थित है ।

२ इठी राज्यके उत्तर-पूर्वमें अवस्थित एक तहसील । इसमें कुल १२८ ग्राम समिते हैं । यहाँको लोकसंख्या प्रायः ६५००० है, जिनमें एक तिहाई सिन्धी हैं । सुगन्धीके शासनकालमें यह ज्ञान पागारा प्रदेशका प्रचार का बिना बा । १०६३ ई०में यह तहसील जाटोंके प्रधान सुरजनके अधीन आई । इसके बाद १०६३ ई०में सिख इहाँतोंने यह तहसीलमें नूट-मार मचायो, तथा जाटोंको मगा कर इके अन्तर्गत अधिकारमें कर लिया, किन्तु १०८६ ई०में यह पुनः भरतपुरके जाटोंके अधिकार अन्तर्गत हुआ । भरतपुरके प्रधान मन्त्रके अन्तर्गत जो जगन्नी जलका राज्य जौन कर राजघरकी पर्याप्त किया गया । १०८६ ई०में महाप्राय बन्धीमि इने इस तहसीलको अधिकारमें कर लिया । अन्ततः कि इने निम्नस्थान अन्तर्गत प्राचिष्य विद्या बाद १०८६ ई०में यह राजघर राज्यमें मिला दिया गया ।

तिजारा ( हि० श्लो० ) बड़ा बुजार जो हर तीसरे दिन आजा दे कर जाता है ।

तिजिन ( स० पु० ) तिज इनका अर्थ है ।

तिजिन ( न० पु० ) तीजघाति तोपोंकेरहित तिज-बन्दूक ।

तिजुगारिन्— १६५० ई० १५०० । १ अन्तर्गत । २ राजघर ।

तिजु ( हि० श्लो० ) तीन कूटियोंका तामका पैसा ।

तिजु ( स० श्लो० ) विजय, विजय ।

तिजुवनम्— १ मन्त्रालयके आरक्षक अन्तर्गत व्यवसाय । इसमें तिजुवनम् तिजुवनसक और बिजुपुरम नाम के तीन तामके समिते हैं ।

२ एक व्यवसायका एक तामके । यह अक्षा० १२ १ ३५ ३८ उ० तथा देशा० ८८ १३ ३० पू०के मध्य अक्षांशको अक्षांशके बिन्दुके अवस्थित है । मन्त्रालय ८१६ वर्षमोक्ष और लोकसंख्या समस्त ११६०१८ है । इसमें एक शहर और ३०० ग्राम समिते हैं ।

३ एक तामके एक शहर । यह अक्षा० १२ १३ उ० पौर देशा० ८८ १० पू०में अवस्थित है । इसका एक नाम तिमसिन्धुवनम् है, जिनका अर्थ इसकोका अन्तर्गत होता है । यहाँ इसकोके बहुतसे वन देवताके भी पाते हैं । लोकसंख्या प्रायः ११६०१ है ।

तिज ( न० पु० ) तन्मन्त्र अन्तर्गत अर्थति तन-दर । अन्तर्गतः अन्तर्गत । वन १५११ । १ आरक्षक, अन्तर्गत, अन्तर्गत । २ अन्तर्गत ।

तितर तितर ( हि० श्लो० ) जो एकत्र न हो, अन्तर्गत हुआ बिधवा हुआ ।

तितरोषो ( हि० श्लो० ) एक छोटी बहिया ।

तितरो ( हि० श्लो० ) १ एक अन्तर्गतका अन्तर्गत छोड़ा या अर्थिता । यह छोड़ा अन्तर्गतमें अन्तर्गत पर अन्तर्गत हुआ दिखाई पड़ता है और अन्तर्गतके अन्तर्गत और एक अन्तर्गत जो अन्तर्गत निर्वाह करता है । इसका अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत । २ गिरा आदि अन्तर्गत अन्तर्गतका एक अन्तर्गतका नाम । यह अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है । इसकी अन्तर्गत बहुत अन्तर्गत अन्तर्गत होता है । अन्तर्गत और अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत ।

तितरोषा ( हि० पु० ) अन्तर्गतका अन्तर्गत तितरोषो ।

तितरा ( हि० पु० ) १ एक अन्तर्गतका अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है । २ अन्तर्गतकी तीसरी अन्तर्गत अन्तर्गत । ( हि० ) ३ अन्तर्गत तीन तार हो ।

तिजरा ( स० पु० ) १ अन्तर्गत । २ अन्तर्गत । ३ अन्तर्गत, अन्तर्गत ।

तिजरा ( स० श्लो० ) तित अन्तर्गत अन्तर्गत । १ अन्तर्गत



ष्णाटि इन्द्रसहनगोल, जो मरदो गरमी समान भावसे सह्य कर सकता हो। (पु०) २ ऋषिमिद, एक ऋषिका नाम। तस्य गोत्रापत्यं गर्गादित्वात् यञ् । त तित्त्र, इसी गोत्रके युवा वंशज।

तितिक्षा (सं० स्त्री०) तितिक्ष-अ-टाप् । १ क्षमा, क्षान्ति । २ शीतोष्णादि इन्द्रसहन, मरदो गरमी आदि सहनेकी सामर्थ्य ।

शीतोष्णादि सहनेका नाम तितिक्षा है, सुमुचुकी पहले शम, टम और उपरनि साधन कर पोछे तितिक्षाका साधन करना चाहिए। शम, टमको साधे बिना तितिक्षा साधी नहीं जा सकती।

अप्रतीकार पूर्वक चिन्ता और विनापर-रहित हो कर सब प्रकारके दुःखोंका सहना ही तितिक्षा है। जब तितिक्षा साधी जाती है, तब सुखसे हृदय न तो प्रफुल्लित होता और न दुःखसे सन्तप्त ही होता है। तब सुख दुःख और मोह अन्तःकरणको किसी तरहसे जुध नहीं कर सकता।

तितिक्षित (सं० द्वि०) तितिक्षा सञ्जाता अम्य ताणकादि-त्वात् इतच् । क्षान्त, सहिष्णु।

तितिक्षु (सं० द्वि०) तितिक्ष-उ । अनाशंसभिधटः । पा ३।२।१६८। १ क्षमागोल, क्षान्त, सहिष्णु। (पु०) २ पुरुवंशीय एक राजा। ये महाभारतके पुत्र थे।

तितिम (सं० पु०) तित्तिती गण्डे न भणति भण-ड । इन्द्र-गोपकीट, खद्योत, जुगनू।

तितिक्षा (अ० पु०) १ अवशिष्ट अंग, वचा हुआ भाग। २ परिशिष्ट, उपमंहार।

तितिरि (सं० पु०-स्त्री०) तित्तिरि शृपोटगटित्वात् साधुः । तित्तिरि पक्षी, तोतर नामकी चिड़िया।

तितिल (सं० स्त्री०) तिलति स्निह्यति तिल वाङ्मलात्-क हित्त्वच् । १ नन्दक, नाट नामका मट्टीका वरतन। २ तिलपिण्ड, एक प्रकारका पकवान। ३ ज्योतिषमें जात करणोंमें से एक।

तितोषी (सं० स्त्री०) १ तैरनेकी इच्छा। २ तरजानेकी इच्छा।

तितोषुं (सं० द्वि०) १ जो तैरनेको इच्छा करता हो। २ जो तरने या उड़ार पानेकी इच्छा करता हो।

तितुमीर—चीवोम-परगना जिलेके वादुडिया थानाके अन्त-

र्गत हैटरपुर ग्राममें तितुमीरका घर था। १८३० गताब्दीके जैप भागमें इसका जन्म हुआ था। उस समय भी अंगरेजोंका प्रभुत्व बढ़ानेमें उतना अटल न था। चोर उकौतेंके उपद्रवसे लोग तहमें आ गये थे।

बचपनसे ही तितु अपने धर्मके प्रति अदावान् था। अपने धर्म पर इसका जैसा अनुराग था, अपने सम्पदायके ऊपर भी उतना ही ममता थी।

१८२८ ई०में यह मका तोर्यकी गया। यहाँ वा-हावि सम्पदायके नायक मैयट अहमदके साथ इसकी जान पहचान हो गई। उक्त मैयटमें टोछित हो कर तितु अपने देशकी लौटा और अपने नये मनका प्रचार करनेके लिये इच्छा क हुआ। उस समय बङ्गालके सुमन-मानीका आचार व्यवहार प्रायः हिन्दुओंसा था। तितुने उन्हे 'मन्धर्म'को गिना देनेकी चेता की, टेयस्य सभो सुमनमानीको अपने धर्ममें लानेके लिये हमने एक भी कसर उठा न रखी। किन्तु सम्भ्रान्त सुमनमानीमेंसे कोई भी इसका मतानुवर्ती न हुआ। घोड़ेसे सुसज-मान इसके उपदेश-वाक्यमें आकृष्ट हुए। इसने अपने गिर्धाने टाढ़ी बटानेकी कहा। इसका उपदेश था, कि वे पर्वीपल्लवमें वा पुत्रकन्याके विवाहमें नाच गान न करें, सूट पर रूपये न लगावें, काकू दे कर धोते न पहने इत्यादि। धीरे धीरे लोग इसके उपदेशमें ऐसे आकृष्ट हो गये कि रात दिन वे अपना काम धन्धा छोड़ कर इसीके पास बैठे रहने लगे, बाल बच्चे तथा गृहस्थोंकी और कुह भी ध्यान न देते थे। बङ्गके राजाको जब इसको खबर लगी, तब उन्होंने इस बातकी घोषणा कर दी कि कोई भी अपना कार्य नष्ट कर तथा बाल बच्चोंकी अवहेला करते हुए धर्मोपदेश नहीं सुन सकता। जो इस आज्ञाका उल्लंघन करेगा, उसे उचित दण्ड दिया जायगा। राजाने सबोंको यह कह कर डरा दिया, कि उन्हे टाढ़ी पोछे सवा रूपये कर देना होगा। तितुमीर को यह बात मालूम पडने पर वह आग-बबूना ही गया और विधर्मों हिन्दुओंको बलप्रयोग द्वारा अपने मतमें लाने लगा। १८३१ ई०में हमने दल बंध कर राजाका घर लूट लिया और बलात् उनकी लड़कीकी आबरू बरबाद कर दी।

बाद इतने घोर डूबने हुए देखा पर चढ़ाई करने को पाया ही। खातिरकी पूर्णिमाका दिन था, पूजा नामका घाममें बड़ी सुमनामसे एक लम्बा शोनिनाका था। तितुमीरका धामनम सुन कर सब कोई तितर बितर हो गये घोर डूबने लगे तहां का द्विपः वहां पहुंच कर तितुमीरने एक गीहवा कर डाली। यह देख मुझारीने रक्षा न गया उसने तुरंत देनोके पायने खड़ से कर डालाबाणे सुपसामांकी पच्छ पच्छ कर दिया। जोखे यहूतोंके धरे बानी पर पाप भो मारे गये। इस समय बहाई अमीदार तथा घामबाभो मो तितुमीर पर टूट पड़े। बचावका कोई रास्ता न देख तितुमीरने अपने बचे बचे पतुचरोको नौट मानीका हुकम दे दिया। जारि समय इसने देव-मन्दिरमें गोमांस नष्टकरा दिया घोर हो ब्राह्मणोंके सु धर्म मो बरखपूर्वक ठूस दिया।

बारामातके व्याख्य मबिहूटको यह बात मासूम होने पर लक्ष्मी बहाई दरोबा को तितुमीरके बिबह भिजे। दरोगा जातिके ब्राह्मण थे। लक्ष्मीने लगमम छिट्ट सो कर लम्बाघ घोर बहुतसे शौकीदारोंको साथ ले तितुमीर पर चढ़ाई कर दो। तितुमीरके पास भी १००+१०० मो खियारबन्द थे। बाखर दीनेमें सुभीह हो ही गई। दरोमा साहब बहुतसे पतुचरोके साथ मारे गये। इस जोत पर तितुका साहस घोर मो बढ़ गया। उसने अपनेको मारतका पहिलोच पबीखर समझ कर तमाम सोपका कर दो घोर सबको खपना से दो सि जो लसे पाधिपक न मानेमा घोर तदुत्सार कर न भेजिका, इसका मिर बड़े पसन कर दिया जायगा। जहां तक कि लमने बांसका एक सिना भी बना लिया था। लसो बिनैके मोतर तितुके पतुचर खोम रक्षी से घोर लनका दरबार मो लसो जयह लमना था।

इस समय इसकी तुती तमाममें बोली लसो। खोम लक्ष्मी देग जोड़ कर भावने ली। कुछ तो डाबीमें घोर कुछ गोवरडांगामें रहने ली। किन्तु वहां मो लक्ष्मी तनिक भी सेन न थी। गोवरडांगेके अमीदारने लन-कत्ते से दो मो बबमी, दो तीग मो साठीबाव तथा कुछ जायो तितुके बिबह भेजे। चलतः तितु गोवरडांगामें अपना प्रमुख जमा न सक्ता घोर बाब जो कर लसे नौटका पड़े।

बाद मोबाहटो जोलोके मेनीकर कैबिष साहबने भो इसमें अमीदारका साथ दिया। सरने मिन कर तितु पर चढ़ाई कर दो। दोनों पक्षे बहुतसे खोम लक्ष्मीमें मारे गये। खितनेने योखा गोबिन्दपुरमें जा कर भावय लिया। तितुको सब मासूम पड़ा कि यलुके खितने जो खोम लक्ष्मी घाममें जा खिपे हैं, तब लसने वहां जाया मारा। दोनों पक्षमें हज्जामतो नदोके विनारे समसान जुब हुआ। तितुब पहिकाम लोत मारे गये घोर कुछ नदोमें डूब मरे। लक्ष्मीने नदोका नल साथ जो मया, तितुमीर बिसी मखार साथ से कर भागा। इस लक्ष्मीमें तितु इतना विपदपदा हुआ का कि लसे खोजित देख लसके पतु कर लोग लसे ईखरपेरित समझने लनी थे। इतना होने पर भी तितुके धने गिने पतुचरोका साहस तनिक मो बटा न था।

लखर लदम्बनाको बानाके दरोगाके मारे जाने पर वहां से व्याख्य मबिहूट निबेट हो न बैठे थे। वे गबमेंप्यको इस बातको सूचना देकर लपतुक्त देखेनम स यह कर रहे थे। गबमेंप्यने सोचा का कि तितुके वांकेसे पक्ष मयल बिजोन मनुष्योंके लिये पहिले मेन्टपको लदरत नहीं। इसलिये लक्ष्मीने पुनः कुछ योतोदार, बरकम्बनाक कुछ अनियमित सिना घोर ४ मोरा पय्यारोको तितुके बिबह भिजे। वे पाखर तितुका बास बांका भी न कर मन्, बल्कि एक पहरके पय्यारोको घोर कुछ धियाको मारे गए। इस समय तितुमीरका टल खून बका लड़ा था तथा दिनोंदिन इसको घोर मो पुष्टि होतो जातो थी। जो कुछ भी, काक जो मनुष्यको लयत बनाता है घोर काक जो लसे गहूमें मिराता है। तितुमीरको मो लसो जाकत हुई। लसको बादमाको सदा एक मो न लको, मोर जो लसका दपे लूके जो मया घोर पक्षमें पयापतल-को धाम हुआ।

१८११ ई०की १८वीं नवम्बरके लक्ष्मीने लेख्टेनेप्य ल पाठ द्वारा परिचालित एक दल पहरको सिना युक्त दल दीवीव पदातिक घोर कुछ मोकम्बनाक सिना पूर्वपरित सिनाके साथ मिन लई घोर लक्ष्मीने मिन कर तितुमीरके बांसके बिसेको पारो पोरसे लर लिया। बिडीधियो की धर्मोमक्षताने लक्ष्मी इतना लक्ष्मीकर दिया का, कि

वे तनिक भी भीत वा विचलित न हो कर इस सुघिञ्चित अङ्गरेजी सेनाके साथ भिड़ गये। पहले दिन उन्होंने जितनी भी अङ्गरेजी सेना नष्ट की थी उनके मृतशरीर वासके किलेके बाहर छयचिह्नस्वरूपमें रख दिया था।

तित्तुमीरके बहुसंख्यक लोगोंकी मार डालनेकी लफटेनेगटकी जरा भी इच्छा न थी। इस कारण उन्होंने तित्तुमीरकी आत्ममर्पण करनेके लिये कहला भेजा। किन्तु तित्तुमीरने उनके दूतकी ही मार डाला। सेनापतिने विद्रोहियोंको डरानेके लिये खाली तोपको आवाज की। इसकी पहली ही धामके किलाके चारों कीर्णों पर चार कमानें रख दी गयी थीं। अब उनमें खाली आवाज होता देख मुसलमानोंने समझा, कि यद्यार्थमें फकीर की उनके सब गोली निगल रहे हैं, जिससे खाली आवाज मात्र निकलती है। इस पर वे मक्के सब एक खरमे चिन्ना उठे, 'हजरतने गोला खा डाला'। यह कहते हुए वे एकवारगो अङ्गरेजी सेना पर टट पड़े। तब सेनापतिने बाध्य हो कर गोला चनानेका हुक्म दिया। इसका फल यह हुआ, कि वासका किला तड़म नहस हो गया और तित्तुमीर तथा उसके कितने ही अनुचर जहाँ तहाँ मर गये। वचे खुचे अनुचर कैद कर लिये गये। बहुतसे जान ले कर भाग गये। किन्तु अङ्गरेजी सेनाने इन इतभागियोंका पोछा कर पशुपतियोंकी तरह उनको शिकार किया। कोई तो प्राणभयसे वासके वनमें और कोई आमके वनमें जा छिपे थे। अनुचरणकारो अङ्गरेजी सेनाने उन्हें उसी अवस्थामें मार गिराया। इस प्रकार ४५ सौ निरन्तर लोगोंको जीवलोला समाप्त हुई।

तित्तिर (सं० पु०) तित्ति इति शब्दं राति दृष्टाति रा-क। १ तोतर नामका पक्षी। २ तितली नामकी धाम।

तित्तिरि (सं० पु०) तित्ति इति शब्दं रीति रु-डि। पक्षी भेद, तोतर चिड़िया। संस्कृत पर्याय—तैत्तिर-याजुषोदर, तित्तिर, कपिञ्चल, लघुमांम, खरकोण, चित्र-पक्ष, तित्तिर और वसन्तगौर। इसकी मांसके गुण-- रुच्य, लघु, वीर्यवृद्धिप्रद, कपाय, मधुर, शीत और विदोष शमन। यह क्षुण्य और गोरवर्णका होता है। काले तोतरको क्षुण्यतित्तिरि और चित्र विचित्र तित्तिरि की गौरतित्तिरि कहते हैं। क्षुण्यतोतर बलकारक, धारक,

एवं हिका, त्रिदोष, श्वास, काम और उरनाशक है। गोर तोतरमें उसमें कुछ अधिक गुण है। ( मावप्रकाश )

२ यजुर्वेदको एक शाखाका नाम। ३ नागविशेष, एक सर्प का नाम। ४ याभक मुनिके एक शिष्य। इन्होंने तोतर पक्षी बन कर याज्ञवल्काके उगले हुए यजुर्वेदको चुगा था। भागवतमें इसका विवरण इस प्रकार निरवा है—यजुर्वेदमंहिताके जाननेवाले वैशम्पायनके शिष्यों का नाम अध्वर्यु था, और ब्रह्महत्याजनित पापक्षय साधन करने तथा अपने गुरुके अनुष्ठेय व्रतका आचरण करनेमें उसका दूमरा नाम चरक पड़ा। उस व्रताचरणके समय याज्ञवल्का नामक उनके एक दूमरे शिष्यने कहा, 'भगवन्! इन अन्धमार शिष्योंके आचरित व्रतद्वारा आपका क्या होगा? मैं इससे सुदुःख व्रताचरण करके आपको पापके विमुक्त करूंगा।' यह सुन कर उनके गुरु वैशम्पायन क्रोधने अधोर हो उठे और बोले 'याज्ञवल्का! तुम मेरे शिष्य हो कर ब्राह्मणोंको निन्दा करते हो; इसलिये तुमने जो कुछ मुझसे सीखा है उसे परित्याग कर दो और यहाँसे दूर हो जाओ।' तब देवराजके पुत्र याज्ञवल्का पढ़े हुए यजुर्वेदको धमन कर वासि चले आये। इसके बाद मुनियोंने उस उगले हुए यजुर्वेदको देखा और उन्हें पानेके लिए तोतर पक्षी बन कर उस यजुर्वेदको चुग लिया। तभीसे उस रमणोय यजुःशाखाका नाम तैत्तिरीय हुआ है।

( भागवत० १२।६।५४-५८ )

तित्तिरि (सं० पु०) तित्तिरि स्वार्थं कन्। तित्तिरि देखी। तित्तिरोक (मं० लो०) तित्तिरं: पक्षदाहेन जातं तित्तिरि-बाहुलकात् इक। एक प्रकारका अञ्जन जो तोतर पक्षीके पंखके जलानेसे तैयार किया जाता है। तिथि (सं० पु०) तिजयति तिज-यक्। -तिपृष्ठगृह्ययशोला:। उण् ०।१२। १ अग्नि। २ काम, कामदेव। ३ काल। ४ प्राष्ट-काल, वर्षाका समय।

तिथि (सं० पु०-स्त्री०) अततोति अत-सातत्वगमने अत-इधिन्। १ पन्द्रह चन्द्रकलाओंकी क्रियारूप प्रतिपदा आदि तिथियां। २ अमावास्यासे ले कर पूर्णिमा तक और पूर्णिमासे ले कर अमावास्या तकको चन्द्रमाकी कलाओंको तिथि कहते हैं। (तिथित्व) जो काल विशेष

योगमान वा वर्षमान चन्द्रकलाका विस्तार करता है, उस काकविद्येयका नाम ही तिथि है। चाक्षरज्यमा महाभाष्या को दिकित्तोकी दिकित्तारको ही कर चक्रवर्तित है तथा जो चन्द्रमण्डलके पौड्यमाग परिमित चन्द्रको दिकित्तारको धमा धोर महाकला नामसे प्रसिद्ध निज धोर चयोदयरहित है, उनका नाम भी तिथि है। यैसो तिथिवा दो भागोंमें विभक्त है—रुद्रा धोर कथा। धमा कथाके बाद प्रतिपदाने पूर्वमा तक धोर वीचिंमामोके बाद प्रतिपदाके धमाकथा तक चन्द्र चन्द्र दिनोंका एक एक पद्य होता है। इस प्रकार सिद्धे चन्द्रकी ज्ञान छवि हुआ करता है। ध्यात् महाचार्यने इस प्रकार लिखा है—“उदितः यज्ञः कृत्वाचन्द्रपयामत्र” अर्थात् जिन चन्द्र दिनोंमें चन्द्रकी छवि होती है, वय पद्यको यज्ञ कहते है धोर जिन चन्द्र दिनोंमें चन्द्रका ज्ञान होता है, उनको कृत्वाच कहते है। चन्द्रमासमें पहले दशपद्य धोर जोके कृत्वाचपद्य व्यवहृत होना है। यही तिथियां प्रायः १० दण्ड परिमित है। पूर्वमण्डलके विभिन्धत हो कर चन्द्र को वि यज्ञागामक रागिने द्वादश मात्र तक समन करता है बड़ो एक एक तिथि है, रागिणा परिमाच ११ दण्ड है, सुतरां उसके १० भागके १२ भागमें हो १० दण्ड हुए, इस तरह १० दण्ड को एक एक तिथिका परिमाच है। जिनका नाम धमा है धोर को चयोदयरहित, जुन, पौड्योपका है वह काल ही समान्यतः तिथि है।

इतिवचनरुद्र पद्यदयकलाकप को काकविभाग है, यैही चन्द्र तिथिवा है। वक्रि चादि चन्द्र देवता रुद्र चन्द्र कलायौको क्रमसे पान करते है। अेधे—वक्रि देवता प्रथम कलाको पान करते है इसलिये उनका नाम प्रथम है एक तदुक्त काकविद्येयका नाम ही प्रतिपद है।

इसो प्रकार द्वितीया चादिके विचयने धमकला चादिसे। इस तरह कलाए क्रम पीत होती है, तत्र कृत्वाचपद्य होता है। धोर तदुष्टारप्रथम कला द्वितीय कला होतो है एक तदुक्त ज्ञान ही प्रतिपदा द्वितीया रक्षादि कथकाता है। इस प्रकारसे क्रम समस्त कलाए चन्द्रमण्डलको पूर्य करती है, तत्र वस धमयज्ञा नाम अक्षयपद्य होता है।

चन्द्रकी प्रथम कलाको प्रथि चितोय कलाको रवि चतोयको विषयदेव, तदुक्तको सविचाविप, पद्यमको वपद, धार, पद्यको नामक धमयको प्रथिमण्डल, पद्यमको पद्यकथापद्य कथमको धम दगमको बाहु, एकादयको धमा द्वादयको पियङ्गवच, तयोदयको कुबेर, चतु दगको पद्यपति धोर पद्यन्य कलाको प्रजापति पान करते है। समस्त कलाए क्रम पीत हो जाती है, तत्र चन्द्रमण्डल विषयक टिकाई नहीं देता। जो पौड्य कलाए मर्बदा कालमें प्रविष्ट होती है तत्रा धमामे धोम धोयजिको प्राप्त होतो है तत्रा धोयजिगत धोर चन्द्र गत होने पर उनको जो पान करतो है वह मोक्षभूत धोरसमूह प्रकृतधकप है, द्विजाति द्वारा मन्थपूत हो कर यद्योत्र धमिनें इत होता है, उससे चन्द्रमा पुना इतिको प्राप्त होता है। इस तरह दिनों दिन छविप्राप्त हो कर पूर्वमासें वद्य पूर्वताको प्राप्त करता है।

द्विजातयिरोमचिधे मतके चन्द्र सूर्यके विभिन्धत हो कर पूर्व को धोर समन करता है।

धमाकथाके दिन योद्यमासो चन्द्र सूर्यमण्डलके धक-पदिममें धोर मध्यामासो सूर्य चन्द्रमण्डलके कूर्व प्रदेशमें रहता है। सूर्यको मध्य चं खिरके चन्द्रके उपरिभागमें पड़तो है, निम्न या पार्श्व बिधो सी तरफसे नहीं निजल सकता है। चन्द्रके उपरिभागमें पतित हो कर उसी तरह धमकित रहतो है, इस तरह चन्द्र धोर सूर्यके गति-बिधिके कारण तत्रा सूर्यरिमयोंके चन्द्रके धमिमूल कोमिने कारण चन्द्रमण्डल धरा भी दिखाई नहीं देता। योके चन्द्र शोभयतिने द्वारा सूर्यसे विभिन्धत हो कर पूर्वदिशाको समन करता है अर्थात् जि गत-ध क्र इज रागिने द्वादश पद्य द्वारा सूर्यका चक्रवर्तन कर समन करता है। अतएव उस समय चन्द्रके पद्यदय मामोमेंके प्रथम भाग द्ययन्योम्य होता है। सूर्य की खिरके उस प्रथम मानमें निजकतो है इसोखिय चन्द्रको उस प्रथम कलाको वच देख नहीं पाते धोर उसी कलाको प्रथम कला कहते है। रुद्र कलानिम्धत्ति परि मित कालको ही नाम तिथि है। द्वितीया चादिमें जो इसो तरह समस्त सीना चादिने।

चन्द्र धोर सूर्यको गतिने द्वारा जिन समक कालका

परिच्छेद होता है, उस समय चन्द्र और सूर्य के गति-विशेषका आन्वय करके तिथिका स्वरूप-निर्णय करना चाहिये। समय नक्षत्र बारह राशियोंका भोग करते हैं, ३० अंशोंमें राशिका भाग होता है। सूर्य से निकल कर चन्द्र जब तक त्रिंशत्-भागत्क राशिके द्वादश भागमें गमन करता है, तब तक चन्द्रमातिथि अर्थात् शुक्लपक्ष है। (विष्णुधर्मोत्तर) चन्द्र नित्य राशिवृत्तके मध्य १३ अंश १० कला ३४ विकला ५२ अनुकला पश्चिम-दिशासे पूर्व-दिशाकी गमन करता है। सूर्य प्रतिदिन पश्चिम दिशासे पूर्व दिशाकी ५८ कला ८ विकला गमन करता है। इस तरहसे चन्द्र सूर्यसे दिन दिन १२ अंश ११ कला ४७ विकला गमन करने पर एक एक तिथि होती है। यह मध्यगति द्वारा संघटित होता है। किन्तु चन्द्र और सूर्य की शीघ्रगति और मन्दगतिके अनुसार इसका व्यतिक्रम भी हुआ करता है। स्फुटगणना द्वारा ज्योतिर्विद विद्वानोंने स्थिर किया है, कि चन्द्रके सूर्यसे द्वादश अंश गमन करने पर एक एक तिथि होती है। इस प्रकारसे ३६० अंश गमन करने पर प्रतिपदा आठ ३० तिथियाँ हुआ करती हैं। जब चन्द्रमें वृद्धि और क्षय होता रहता है, तब उसे शुक्ल और कृष्णपक्ष कहते हैं। शुक्लपक्षके दिन चन्द्र सूर्यसे ८० अंश पूर्वांशमें अवस्थित रहता है, इस कारण उस दिन अर्द्धचन्द्र दिखलाई देता है।

चन्द्र स्वयं तेजोमय नहीं है, सूर्यरश्मि द्वारा चन्द्रमें प्रकाश होता है; इसलिये चन्द्रमण्डलके एक ओरका हिस्सा लगातार १५ दिन तक दीर्घमान और दूसरी तरफ का हिस्सा नियत निमिराहत रहता है।

“तरणिक्रियसंघा देष पीयूषिणो

दिनकरदिशिचन्द्रत्वन्द्रिकामिश्च कांति।

तदितरदिशि वालाकुन्तलस्यामलभीः

घटश्च निवभूतिच्छाययैवातपस्थः ॥” (ज्योतिष)

चन्द्रके जो अंश सूर्यकी ओर होते हैं, वे जो अंश सूर्यकी किरण पा कर प्रकाशित होते हैं। इसके सिवा चन्द्रके अन्य अंश वाला स्त्रीके केशीके समान प्र्यामवर्ण है। जैसे धूपमें रक्के हुए घड़ेका एक हिस्सा अपने छायासे आच्छन्न रहता है, उसी तरह इसको भी समझें।

हम चन्द्रमण्डलके जिस अर्द्धांशको देख रहे हैं, वह अर्द्धांश जब सूर्य-किरण द्वारा सर्वतोभावसे प्रकाशित होता है, तब उसे पूर्णचन्द्र कहते हैं और उसी दिन पूर्णिमा तिथि होती है। उस उज्वल अंशको न्यूनाधिकताके अनुसार चन्द्रकलाकी क्रासवृद्धि होती है, इसलिये तिथि भी प्रतिपदा आठ नामोंसे पुकारी जाती है। अभाव-स्याके बाद शुक्ल-द्वितीयामें चन्द्र पश्चिमदिशामें उदित होता है तथा उक्त तिथिसे चन्द्रमण्डलका पश्चिमांश सूर्य-किरण द्वारा क्रमशः एक एक कला प्रतिदिन बढ़ता है और अन्तमें पूर्णिमाके दिन पूर्णचन्द्र हो कर प्रकाशित होता है। और जब कृष्णपक्ष प्रारम्भ होता है, तो प्रति दिन चन्द्रमण्डलके दृश्य अंशसे एक एक कलाका क्रास हो कर अभावस्याके दिन चन्द्र सम्पूर्णरूपसे अदृश्य हो जाता है।

शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे ले कर पूर्णिमा तक चन्द्र क्रमशः सूर्यसे दूरगामी होता है, एवं तदनुसार चन्द्रमण्डलका प्रदीप्त अंश पृथिवीके समीपवर्ती हो कर प्रकाशित होता रहता है। शुक्लपक्षमें प्रतिपदासे ले कर पूर्णिमा तक चन्द्र अपने वृत्त वा पथमें १८० अंश भ्रमण करता है; इतने समय तक चन्द्र सूर्यसे (पृथिवीके सम्बन्धसे) पश्चिममें अवस्थित रहता है और कृष्णपक्षमें पूर्वकी ओर अवस्थित होता है। इस तरह चन्द्र जितना जितना सूर्यके पास पहुँचता जाता है, उतना ही पृथिवीके लोगोंको उसमेंसे एक एक कला घटती दिखलाई देती है। अन्तमें अभावस्याके दिन इसके समस्त प्रदीप्त अंश पृथिवीसे विपरीत दिशाकी ओर हो जाते हैं और निमिराहत अंश पृथिवीके सामने आ जाते हैं।

तिथियोंकी व्यवस्था.—जो प्रतिपदा त्रिसन्ध्यास्थापिनी होती है, वही प्रतिपदा याद्य है, इधमें युग्मादरता अर्थात् दो तिथियोंका पूज्यत्व नहीं है। केवल त्रिसन्ध्यास्थापिनी तिथि पूज्य है। यह सर्वत्र ही होगी, सिर्फ हरिवासरमें इसके भेद होते हैं। कृष्णपक्षीय प्रतिपदा अभावस्यायुक्त होने पर आदरणीय है। परन्तु उपवासके लिये ऐसी व्यवस्था नहीं अर्थात् प्रतिपदाके दिन उपवास करना हो तो कृष्णा-द्वितीयायुक्त प्रतिपदाको उपवास करना चाहिये।

श्राद्धमासकी शुक्लपक्षीय प्रतिपदाके दिन बनिराज-  
को पूजा को जाती है। वह तिथिमें जो वसिराजको  
पूजा करता है, उसे धर्मविषय सुख होता है। पूजा करने  
रात्रि-कारणकर करना पड़ता है। इस प्रतिपदाका नाम  
यत्प्रतिपदा है।

श्राद्धमासके प्रथम दिन पक्षात् शुक्लपक्षीय प्रतिपदा  
को हरगोरिने यत्प्रतिपदा भी को, इसलिये उक्त तिथिमें  
यत्प्रतिपदा कहते हैं। इस श्राद्धमासमें गृहपर गणित  
रूप से और गृहरोने विजय पाई को इसलिये विष  
दुःखों को धोर दुःख सुखों हुई थीं। यत्प्रमाण समर्थों में  
उक्त दिवसमें मोम लूणा रोखा करती हैं। वसमें उखाको  
बस धोर पराक्रम होती है, सम्यक्कर उनको सुख धोर  
दुःख होता है। स बतुआ पलापक ज्ञाननेके लिए उक्त  
तिथिमें यत्प्रतिपदा विधि है। उक्त तिथिमें यदि गृहा  
ज्ञान धोर दान किया जाय, तो यत्प्रतिपदा सुख होता है।

“स्वामं दानं वत्प्रतिपदाके उत्पत्तिवै मथैर ३” (शिवित०)

यदि पचासव्यय मासकी शुक्लपक्षीय प्रतिपदा रोहिणी  
मघमनुष्य को धोर उक्त समय यदि गणनादान किया जाय,  
तो यत्प्रतिपदा सुख शान्ति गणनादानका फल प्राप्त हो।  
उक्त तिथिमें कुशाग्र-भक्षण, तैलमहन धोर औरकर्म  
नहीं कराना चाहिये।

द्वितीया—जो द्वितीया प्रतिपदागुण को वह पाद्य  
है, यह नियम शुद्ध धोर शुद्ध दोनों पक्षोंके लिये है।  
विष्णु कीर्ति कीर्ति परबुद्धको ही पाद्य मतलब है।

उपवास-तिथिमें जो तिथिवां पातो है, इनमें परबुद्ध  
धोर पूर्वभुक्त इस प्रकार दो प्रमेद है, जैसे द्वितीया,  
एकादशी, पञ्चमी, ऋषोदमी धोर अमावस्या, उपवास-  
विधिमें परबुद्ध पाद्य नहीं है। शुक्लपक्षीय तिथिमें  
जिसे उक्त नियम लागू है, शुक्लपक्षके लिए नहीं।

शुक्लपक्षीय एकादशी, पञ्चमी, षष्ठी, द्वितीया, चतुर्दशी  
ऋषोदमी धोर अमावस्या, इनका उपवास धर्मको पत्रक  
कर करे। (विष्णुसूत्र)

पचासव्ययमासको शुक्लपक्षीय पूष्यमघमनुष्य द्वितीयाको  
अगस्त्यदेवकी रथयात्रा पूजा करती है, इसलिये उस-  
दिन यात्रा-अभोजन धोर ब्राह्मण भोजन करायें। यदि  
नवमनुष्य न भी हो तो भी उक्त तिथिमें माहात्म्य-

के कारण उक्त कर्म करने उचित है। इससे भयवान्को  
पञ्चना प्रीति होती है।

यमद्वितीया—श्राद्धमासको शुक्लपक्षीय द्वितीयाको  
श्राद्धद्वितीया कहते हैं। इस दिन बनिनेको मासको  
पूजा करने चाहिये।

धन-द्वितीयामें बस धोर यमुनाको पूजा को जाती है।  
बसपूर्वक उस दिन बहनके हाथका भोजन करे, बहनका  
दिवा पूजा दान प्रतिग्रह करे एवं बहनको दान दें।

उपरपक्षके बादकी शुद्धद्वितीया, शोभाग्रह बादको  
शुद्धद्वितीया, वैश्वको धोर श्राद्धको पूर्वमासके बाद-  
को शुद्धद्वितीया, इन सबका इतोवाके पात्र कुम्भार  
है। यत्प्रतिपदा दिन पनप्रायके हैं।

यमद्वितीयाके दिन यात्रा नहीं करने चाहिये, यात्रा  
करनेसे बन्धु, होती है। इस तिथिमें इहती (बड़े बड़े)  
जाणा मना है।

द्वितीया—रथाश्राद्धके दिवा दोष धोर वैश्वकर्ममें  
चतुर्भुक्त द्वितीया पाद्य है। श्राद्धमासको शुक्लपक्षीय  
द्वितीयामें रथाश्राद्ध पूजा करता है। वैशाखमासकी  
शुक्लपक्षीय द्वितीयामें कलिका धोर रोहिणी मघमनुष्य, तो  
विधिये उक्त होता है।

इस दिन ज्ञान धोर दानदि करनेसे उसका पचास  
फल होता है, इसलिये उक्तका नाम पचास-द्वितीया पड़ा  
है। उस दिन अन्नदान करनेसे महापुण्य होता है तथा  
विष्णुको चन्दनगुण देसनेसे विष्णुकीर्तिमें बाल होता है।

यह पचासपक्षीय प्रथम तिथि है। वैशाखको शुद्ध-  
द्वितीयामें भयवान्ने वज्रको छटि कर सम्यक्को छटि  
को को, इसलिये इनके विष्णुकी पर्वना धोर होम  
करे एवं ब्राह्मणको यथाशक्ता भोजन करायें। उक्त तिथि  
में गृहा ऋषोदमीके पूर्वकी पर जतरी को, इसलिये गृहपर,  
गृहा, विमलपद श्रेयसा धोर सगर स्वयंतिको पूजा करे।  
उक्त दिन को यथाशक्ता गणनादान धोर तपकोमादि करता  
है, उसका पननावाक पर्वना भर्गवाम होता है। इस  
द्वितीयामें कुम्भार नहीं है। द्वितीया तिथिमें मांस धोर  
पटोल आदिका भक्षण निषिद्ध है।

चतुर्दशी—चतुर्दशी धोर पचमी संवृत पाद्य होने पर  
एकादशी, पञ्चमी, षष्ठी, अमावस्या धोर चतुर्दशी, इनमें

शेषकी पकड़ कर उपवास करना पड़ता है। किन्तु ब्रह्म-  
वैवर्तपुराणान्तर्गत गणेशव्रतमें द्वितीयायुक्त चतुर्थी  
याज्ञ है।

सोमवारमें समाधसगा, रविवारमें सप्तमी और मङ्गल-  
वारमें चतुर्थी पडने पर वे तिथियां अक्षया होती हैं  
अर्थात् उन दिनोंमें गङ्गान्नाटि करनेसे अक्षय तिथिका  
फल होता है। तद्योदगी, चतुर्थी, सप्तमी और द्वादशी  
इन तिथियोंमें प्रदोषमें अध्ययन न करना चाहिए। हेमा-  
द्रिके मतसे प्रदोषका शब्दार्थ प्रहर है। भाद्रमासके ऋण  
और शुक्र दोनों हो पक्षकी चतुर्थीका नाम नष्टचन्द्र है।  
इस चन्द्रमाका कभी दर्शन न करना चाहिये। अकस्मात्  
दर्शन हो जाने पर शान्तिको व्यवस्था करना पड़ता है।  
माघमासको शुक्लपक्षीय चतुर्थीमें गौरीपूजा की जाती है  
उस दिन स्नाना खाना और लीरकर्म कराना निषिद्ध है।

पञ्चमी - जो पञ्चमी चतुर्थी और चतुर्थीके चन्द्रमें युक्त  
हो, वही याज्ञ है, पर युक्त याज्ञ नहीं।

‘चतुर्थीसंयुक्ता कार्या पंचमी परया ननु’ (हारीत)

पञ्चमीके समस्त कार्य चतुर्थी संयुक्त होने पर करें,  
पर युक्त याज्ञ नहीं है। ऋणपक्षमें पञ्चमी पूर्वविद्ध  
याज्ञ होनेसे, शुक्ल पक्षमें परविद्ध ग्रहणोय है, यदि  
पञ्चमी पूर्व दिवसके पूर्वाह्णमें चतुर्थीयुक्त हो और बादके  
दिन पूर्वाह्णमें पठोयुक्त हो, तो पूर्वदिन उपवासमादि देव-  
कार्य करने चाहिये। पूर्वाह्णमें चतुर्थीयुक्त पञ्चमी यदि न  
हो और दूसरे दिन पूर्वाह्णमें सृष्टतेके भीतर यदि कमसे  
कम पञ्चमी या जाय, तो पूर्वाह्णके अनुरोधसे दूसरे दिन  
पूजा करना चाहिये और उसी दिन पूजाको प्रधानकार्यके  
कारण उपवास करना चाहिये।

श्रावणमासको ऋणापञ्चमीको नागपञ्चमी कहते हैं।  
उस दिन प्राङ्गणमें मनमादेवो और अष्टनागकी पूजा की  
जाती है। इस तरह प्रति पञ्चमी अर्थात् भाद्रमासको  
ऋणपञ्चमी तक पूजा करना चाहिए। इससे संप्रभय  
निवाणित होता है।

माघमासको शुक्लपक्षीय चतुर्थीकी वरदावसन्त चतुर्थी  
कहते हैं। उस दिन गौरीकी पूजा की जाती है, इसके  
शिवा उक्त पञ्चमीमें लक्ष्मी और सरस्वतीको एकल पूजा  
करके दावात और कलमको पूजा करनी चाहिये। श्री-

पञ्चमीके दिन अध्ययन वा लिखना न चाहिये तथा संम  
दिन सरस्वतीका उत्सव करना चाहिये। इस तिथिमें  
बेल न खाना चाहिये।

पठो - सप्तमीयुक्त पठो ही ग्रहण की जाती है। उक्त  
मासकी शुक्लापथीकी अरण्यपथी कहते हैं। इस कारण  
उक्त पठोकी स्त्रियां एक एक पंखा हाथमें ले कर वनमें  
पठोकी पूजा करने जाती हैं। इसको “जमाईपठो” भी  
कहते हैं।

भाद्रमासकी शुक्लापथीकी अक्षयापठो कहते हैं। इस  
दिन स्नानादि करनेसे अक्षय फल होता है।

अग्रहन मष्टीनेकी शुक्लापथीकी शुद्धपठो कहते हैं,  
उसमें गिवाको शान्ति की जाती है।

चैत्रमासकी शुक्लापथीकी स्कन्दपठो कहते हैं। उस  
दिन कार्तिककी पूजा करनेसे इस जन्ममें सुख-सोभाग्य  
और परलोकमें वैकुण्ठकी प्राप्ति होती है।

श्रावणमासकी शुक्लापथीकी वीधनपथी कहते हैं।  
ऋणापथी अर्थात् जन्मापथी, स्कन्दपथी और गिवा-  
रात्रि इनमें शेषको पकड़ कर कार्य करें। तिथिके अन्तमें  
पारणा करनी चाहिये।

सप्तमी - पठोयुक्त सप्तमी युग्भाद्रके कारण ग्रहणोय  
है। पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी, पतिपदा और  
नवमी, ये तिथियां उपवासविधिमें सम्मुखी अर्थात् त्रिष-  
न्ध्याव्यापिनी, परयुक्त ग्रहणोय हैं। सिर्फ हरिवासरमें  
अर्थात् एकादशीमें शेषको पकड़ना उचित है। उपवास-  
विधिके अनुसार पठोयुक्त सप्तमीमें ही उपवास करना  
चाहिये, अष्टमीयुक्त होने पर नहीं। यदि शुक्लपक्षीय  
सप्तमीमें रविवार पड़ जावे, तो उसका नाम विजयासप्तमी  
है, उस दिन स्नान, दान और सूर्यपूजा करनेसे फल  
होता है।

भाद्रमासकी शुक्ला सप्तमीको ललितासप्तमी कहते  
हैं। इसमें कुक्कुटीव्रत किया जाता है। जो इस व्रतकी  
करता है, दूसरे जन्ममें उसके लिए पृथिवी पर कुछ  
दुःप्राप्य नहीं रहता।

माघमासकी शुक्ला-सप्तमीकी माकरी सप्तमी कहते  
हैं। इसकी युगाद्या भी कहते हैं। उस दिन अरुणो-  
दयमें यदि गङ्गास्नान किया जाय, तो शतसूर्यग्रहण-

आजोन गङ्गाबानका फल हो। भावरी सत्रमीको सत्र बदरोपत्र पौर सत्र पक्षपत्र मन्दाक पर चारख करके छान करे। मन्दावमो हाइमी, मरुको मन्ववपुत्र दिन, पक्षप दतीया पौर रचाका सत्रमी अर्थात् माघ माघकी सत्रमी एन दिनमिं पक्षपत्र न करना चाहिने।

मन्वतरा तिथि—पायिनको यज्ञा नवमी, कार्तिक की हाइमो, शैव पौर भाइकी यज्ञादतीया, पोषकी एकादसी, फाल्गुनको अमावस्या, पावाङ्गकी यज्ञा सत्रमो, माघकी यज्ञा सत्रमी आबचकी राधाइमो, पावाङ्गको पूर्णिमा एव कार्तिक, फाल्गुन चैत्र पौर अर्थात्की पूर्णिमाको मन्वतरा कहते हैं। इन तिथियेमिं दानादि करनिसे मन्वापचकी प्राप्ति होती है।

पटमी—यज्ञपत्रको पटमी नवमीतुल्य पौर ह्यपत्रकी पटमी सत्रमीतुल्य होने पर ही धात्र है। कृष्ण पत्रको पटमी पौर चतुर्दशी उपवासविधिसे अनुसार पूर्व तिथिवुल्य हो धात्र है। परन्तु ह्यपत्रके लिए परवुल्य पटमीय है।

अनि पौर मङ्गलवारकी यदि ह्यपत्रमीय पटमी पौर चतुर्दशी पड़े, तो वह पत्रक सुप्रबलक तिथि होती है। उद्यत्तिवारकी पटमी, सोमवारकी अमावस्या, रविवारकी सत्रमो पौर मङ्गलवारकी चतुर्दशी इनमें को सोय प्रमं वा पाप बर्मे करते हैं वह १० हजार वर्ष तक पक्ष रहता है।

अकाइमी—भाइमासकी अष्टादशोके दिन साबिं मन्वतराय प्रथम दुर्गम दिनकोसे गमने ओक्ष्णने अथ पक्ष चिया या। आबचमें हो पाड़े भाइमें, रोहिणीतुल्य अष्टादशीको अयको कहते हैं, अयकी-पटमीका ही पपर नाम अमाइमो है। विधिबनापूर्वक सेका बाय तो इय अथ एव अर्थ हो सकता है कि एक बार आबच मासमें पौर एक बार भाइ मासमें अष्टादशी कभी गई, इहका तात्पर्य क्या ? तात्पर्य यह है, कि आबचके सुप्रबलमें पौर भाइके गोचरमें अष्टादश्यादशी होती है। इसी कारण आबच पौर भाइ के दोन पद प्रमुक्त हुए हैं। विन्तु प्रथम लिए भाइ मासका उल्लेख करना पड़ेगा। भाइमासकी अष्टपञ्चमे रोहिणीतुल्य पटमीमें अष्टादशो ज्ञत है पौर उद्यो दिन

उपवास करनेका विधान है। अमावसी देखी।  
दोनों दिन नियोज्य सन्मन्व होने दान होने पर पूर्व दिन प येको विभाके अमावस्या पाटि तिथि गयनाके निवम ११०के अर्थमें लिखे जाते हैं।

प्रथम विधि—त्रिम साक्षी त्रिस अहोर्निधि गोत्रे को स ज्ञा दो गई है, वह सख्या उद्य मकोको तिथिके लिए आबचक होमी उद्य माघकी तारीखको उद्य सख्याके माघ जोड़नेके को स ज्ञा होमी दहो तिथिको स ख्या है।

प्रमाण—तासिकांमिं १८०१ सन्के जून मासके अष्टमको ११ स ख्याको अम मासको ही तारीखके जोड़ने पर २३ होता है १२ तारीखको पूर्णिमा है। यदि १० हो, तो उसे जोड़ देना पड़ेगा।

अमावस्याके दिननिष्पत्रकी विधि—अपरको अनु अमविश्वामिं सन्के पूर्वभागमें को स ख्या है उद्यका १० वि बियोग करनिसे को स ख्या बनेगी, उद्यने स ख्यक दिन अमावस्या है। यथा—

१८०१ सन्के जून मासके अष्टमकी ११ स ख्याके अपर १० रख कर यदि बाकी निष्काको बाय, तो १० बाको बचते हैं। इस तरह जून मासके १०मिं दिन अमावस्या हुई।

तिथियेके पविपति—यज्ञ पौर ह्यपत्रको प्रतिपदा तिथिके पविपति अम्बिदेव, द्वितीयाके प्रजापति, तृतीया की गौरी, चतुर्थीके गणेश, पञ्चमीके पद्मि, षष्ठीके कार्तिक, सत्रमीके रवि, अष्टमीके शिव नवमीको दुर्गा, दशमीके यम, एकादशोके विष्णु, द्वादशोके ब्रह्म, त्रयोदशीके काम, चतुर्दशोके हर पूर्णिमा पौर अमावास्याके पविपति चन्द्र हैं।

मासदत्ता तिथि—बैशाख मासको अष्टावहो, पावाङ्ग मासको अष्टादशो भाइमासकी अष्टादशमो, कार्तिकको अष्टाहादशो, पोषकी अष्टादशतीया पौर फाल्गुन मासको अष्टाचतुर्थी मासदत्ता होती है। आबचकी अष्टपञ्चमी, पायिनकी अष्टादशो अष्टपञ्चमको अष्टादशमो, माघ की अष्टाहादसी, चैत्रकी अष्टादशतीया पौर अर्थात्की अष्टाचतुर्थी मासदत्ता होती है।

अम मासदत्ता तिथियेमें को अथि अथ शिता वा वासा करता है, वह अथि इन्द्रतुल्य होने पर मो आबचका



## तिथियोंकी तारिका ।

ईसवी सन	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सेप्टेम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१८७१	८	११	१०	११	१२	१३	१४	१५	१७	१७	१८	१८
१८७२	२०	२२	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२८	०	०
१८७३	१	३	२	३	४	५	६	७	८	८	११	११
१८७४	१२	१४	१३	१४	१६	१६	१७	१८	२०	२०	२२	२२
१८७५	२३	२५	२४	२५	२६	२७	२८	२९	१	१	३	३
१८७६	४	६	५	६	७	८	९	१०	१२	१२	१४	१४
१८७७	१५	१७	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२३	२५	२५
१८७८	२६	२८	२७	२८	२९	०	१	२	४	४	६	६
१८७९	७	९	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१५	१७	१७
१८८०	१८	२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२६	२८	२८
१८८१	०	२	१	२	३	४	५	६	८	८	१०	१०
१८८२	११	१३	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	१९	२१	२१
१८८३	२२	२४	२३	२४	२५	२६	२७	२८	०	०	२	२
१८८४	३	५	४	५	६	७	८	९	११	११	१३	१३
१८८५	१४	१६	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२२	२४	२४
१८८६	२५	२७	२६	२७	२८	२९	०	१	३	३	५	५
१८८७	६	८	७	८	९	१०	११	१२	१४	१४	१६	१६
१८८८	१७	१९	१८	१९	०	२१	२२	२३	२५	२५	२७	२७
१८८९	२८	०	२९	०	१	२	३	४	६	६	८	८

ग्रास वनता है तथा उसके विवाहमें विधवा, कृपिकर्ममें फलका अभाव, विद्या आरम्भमें सूख, स्त्रो-सङ्गममें गर्भ-पात और बाणिल्यमें मूलधनका नाश होता है। इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति दग्धा तिथियोंमें कोई भी शुभकार्य नहीं करते।

प्रतिपदासे ले कर अष्टमी तककी व्यवस्था पहले लिखी जा चुकी है।

जन्माष्टमीको पारणविधि-रोहिण्युक्त अष्टमी होने पर पारण न करें। अन्यथा पूर्व कृत कर्म और उपवास-जनित फल नष्ट हो जायेंगे। जन्माष्टमीके पारणके लिये यह नियम है, अन्यान्य व्रतोंके लिए भी ऐसी विधि है। जिस तिथि और नक्षत्रके योगमें उपवासादि करें, उसमें एकका अद्य न होने तक पारण करना उचित नहीं।

जन्माष्टमी रोहिण्युक्त होने पर उपवासादि करें तथा पहले दिन पशुदण्डात्मिका अष्टमी है, किन्तु रोहिणी योग नहीं है, दूसरा दिन यदि रोहिण्युक्त हो तो उस दिन उपवासादि करें।

यदि जयन्तोयोगके पूर्व दिन उपवास हो और दूसरे दिन रात्रि सार्धप्रहर बीत जाने पर तिथि-नक्षत्र दोनोंसे या एकसे विसृक्त हो तो उस दिन सबेरे पारण करें। उपवासके दूसरे दिन तिथि और नक्षत्रके अन्तमें पारण करें और जब महानिशाके पूर्व एकका अवसान और अन्यको महानिशामें स्थिति हो, तो एकके अवसान होने पर पारण करें। महानिशामें यदि दोनोंको स्थिति हो तो उस दिन सुबह पारण करें। किसी विद्वान्ने बारह महीने ही रोहिणीयुक्त अष्टमीको जयन्तो-अष्टमी

बतलाया है, किन्तु ऐसा ही नहीं सकता। क्योंकि, सूर्य की समस्त जगत परबलाने प्रभावस्था होती है। ज्योति शास्त्रमें ऐसा नियम है। यहाँ मानना पड़ेगा कि सूर्य का दस भासमें हादस राशियोंमें प्रत्यक्ष करता है। यदि ऐसा ही है, तो माघमासमें जिन राशिका भोग करता है, अन्य मासमें उच्च राशिका भोग किस तरह कर सकता है ? अतएव वारह महीनें रोहिण्योनुक्त अष्टमीका जोगा नितान्त धम भव है।

**दूर्वाष्टमी**—माघ मासको शुक्लपक्षीय अष्टमीको दूर्वाष्टमी कहते हैं, यह पूर्वतुल्य प्राय है।

**महाष्टमी**—पश्चिम मासकी शुक्लाष्टमीको महाष्टमी कहते हैं; इसमें दुर्गा-पूजा और उपवास करे। पुत्रवान् पश्चिमे शिष्ट उपवास नहीं है, पश्चिममें समो कर सकते हैं दूसरे दिन वारह करना चाहिये। सवस्त्र खोटे एकादशो पानमें जितना फल है महाष्टमीके उपवास करने पर भी उतना ही फल मिलता है। महाष्टमीका व्रत नवमीतुल्य होने पर ही करे।

**योषाष्टमी**—बार्ताहको शुक्ला अष्टमीको योषाष्टमी कहते हैं, उस दिन गो-पूजा, योषाशदान और महातु गमन करनेसे महापुण्य होता है।

**अष्टमी**—अथवायव वीथ और मासको अष्टमाष्टमीको अष्टमी कहते हैं। अथवायवमानकी अष्टमाष्टमीका नाम पूषाष्टमी है, उस दिन पितृका द्वारा पितरोंका याद किया जाता है। वीथमासकी अष्टमाष्टमीका नाम मांशाष्टमी है इसमें पितरोंका नाम द्वारा याद होता है। माघमास की अष्टमाष्टमीको शाकाष्टमी कहते हैं, उस दिन याद द्वारा पितरोंका याद किया जाता है।

**भीमाष्टमी**—माघमासकी शुक्लाष्टमीको भीमाष्टमी कहते हैं। इस दिन चारों वर्षोंको भोगका तर्पण करना पड़ता है। तर्पण देखो।

**अयोध्याष्टमी**—अयोध्याको शुक्लाष्टमीका नाम अयोध्याष्टमी है। इसमें ८ अयोध्या कलिका पार्य जाती हैं तथा क्षानदानादि करनेसे शोकसे मुक्तकारा मिथता है। मोहित अक्षरमें स्नान करना ही विधीय है।

अयोध्याकलिका भक्षण करनेका मन्त्र—

‘श्यामकोक इराभीष्ट भद्रमासकमुत्तरम् ।  
विश्वि शोककल्पता मासकोकं वरा कुम् ॥’ -  
अथोक्तवनी देखो।

**नवमी**—अष्टमीतुल्य नवमी प्राय है, क्योंकि अष्टमीके प्राय नवमीका तुल्यगतर होता है माघमासको पार्श्वतुल्य अष्टमासकोमें शोकन तथा कष्टारथ किया जाता है। इस नवमीको शोकननवमी कहते हैं। यदि उस दिन पार्श्व गच्छ न हो, तो तिथिमासमासके वारह उस दिन कार्य करना होगा।

**कार्तिकाको शुक्लपक्षीय नवमीको अज्ञाने-पक्षी-पूजा** को ही पौर नष्ट दिन तुल्यका प्रथम दिन था, इसविषय उस दिन अष्टमीपूजा की जाती है।

माघमासकी शुक्लानवमीका नाम है महाजन्मा उस दिन स्नानादि करनेसे उसका फल अत्यन्त होता है।

**ज्योतिषनवमी**—अज्ञानको पुनर्पुनः पुनः पुनः शुक्ला नवमीके दिन भगवान्ने रामके रूपमें जन्म लिया था, इसविषये उक्त तिथिका नाम रामनवमी पड़ा है। खोटे सूर्यपक्ष काणको तरह उस दिन भी कुछ किया जाता है, उनसे अत्यन्त फल प्राप्त होता है।

**अष्टमीके शिष्ट अष्टमीजिज्ञा रामनवमीका मानना** अर्थनहीं अर्थात् विष्णुपरायण पश्चिमी दशमीतुल्य होने पर उपवास पादि करना चाहिये। उपवासके उप रास दशमीको वारह करे, यदि दूसरे दिन दशमी न हो एकादशो हो, तो अष्टमीजिज्ञा ही मावारण उपवास करे।

**दशमी**—शुक्लपक्षीय दशमी एकादशोतुल्य और अत्यन्त पक्षीय दशमी नवमीतुल्य अथवीय है अर्थात् उपवास और दीव वीथ अक्षरमें उक्त प्रकार अस्ति है।

**दशहरा**—अष्टमासकी शुक्लपक्षीय दशमीको दशहरा कहते हैं। उस दिन गङ्गाक्षान करनेसे दशविध पापोंका क्षय होता है इसविषय समस्त नाम दशहरा पड़ा है।

अष्टमासकी शुक्लपक्षीय दशमीमें यदि अक्षानक्षत्र योग हो, तो गङ्गाक्षान मात्रमें दश अक्षानक्षत्र पाप नष्ट हो जाते हैं।

**विजयादशमी**—पश्चिमको शुक्लादशमीका अथ विजयादशमी है। यह दशमी तिथि अद्ययमें प्रयत्न है। इस

दशमीमें देवीका विसर्जन होता है। यह परयुक्त होने पर अग्राह्य है।

एकादशीके साथ युग्मादर होनेके कारण परयुक्त अर्थात् द्वादशयुक्त एकादशो हो प्रगस्त है। दोनों पक्षको एकादशीमें गृहस्थ, यति, ब्रह्मचारी और साग्निक सभीको उपवास करना चाहिये। किन्तु पुत्रवान् गृहस्थ क्षणपक्षमें उपवास न करे। शयन और मोधनके मध्य जो क्षणपक्षीय एकादशो पड़ती है, उसमें पुत्रवान् गृहस्थको भी उपवास करना पड़ता है। इसके सिवा अन्य क्षणपक्षीय एकादशीमें उपवास न करे। पुत्रवती सधवा स्त्रीको तो कोई भी उपवास करना उचित नहीं। उपवास करनेसे स्वामोकी प्रायु चय होती है। किन्तु स्वामोकी अनुमति नै कर उपवास कर सकते हैं। जो नारी विधवा हो, उसको दोनों पक्षोंमें एकादशोव्रत करना चाहिये। यदि न करेगी, तो उसके समस्त पुण्यादिका नाश होगा और भ्रूणहत्याजनित पातक लगेगा।

वैष्णवोंके लिए शुक्र और क्षणपक्षके कारण एकादशीमें कुछ प्रभेद नहीं है। जो व्यक्ति इस प्रकारसे समान ज्ञान रखता है, वही वैष्णव है। विष्णुभक्तिपरायण वैष्णवोंको भक्तियुक्त हो कर प्रत्येक पक्षमें एकादशोका उपवास करना चाहिये। इनमें गृहस्थ पुत्रवान् है। इसका भी कुछ भेद नहीं। विष्णुभक्तके लिए एकादशो नित्यव्रत है। विष्णुको प्राप्तिके लिए एकादशो उनका नित्य-कर्त्तव्य है।

ब्रह्महत्या आदि जो पातक हैं, वे एकादशीके दिन अन्नका आश्रय ले कर वास करते हैं; अतएव उस दिन अन्नभक्षण करनेसे उक्त समस्त पाप शरीरका आश्रय लेते हैं। इस लिए एकादशीके दिन अन्न न खाना चाहिये। और ८ वर्षसे लगा कर ८० वर्ष तक एकादशीका उपवास करना चाहिये।

एकादशीकी व्यवस्था—पूर्ण एकादशी अर्थात् षष्टि-दण्डाक्षिका एकादशोका परित्याग करना चाहिये। यदि द्वितीय दिन कुछ समय तक एकादशी हो, तो पूर्ण एकादशोको छोड़ कर दूसरे दिन उपवास करना चाहिये। और यदि द्वादशीमें पारणयोग्य समय न मिले अर्थात् यदि पूर्व दिन ६० दण्ड एकादशी, दूसरे दिन १ दण्ड फिर

द्वादशी और रात्रिके शेषमें द्वादशोका अय हो कर त्रयोदशी हो, तो पूर्णको ग्रहण करना चाहिये। कारण ऐसे स्थल पर पारणयोग्य समय नहीं मिलता। यदि पूर्व-दिनमें दशमीयुक्ता एकादशो हो तथा दूसरे दिन द्वादशीयुक्ता, अर्थात् पूर्वदिनमें यदि १५ दण्डके उपरान्त एकादशो हो और दूसरे दिन पारणयोग्य समय तक द्वादशो रहे वा न रहे, तो भी दशमीयुक्त एकादशोको छोड़ देना चाहिये।

दशमोविद्धा एकादशो कभी भी न करे। यदि सूर्योदयके बाद अल्प समय तक दशमी, पौषिके एकादशो और उसका अय हो कर द्वादशो हो तो शुद्ध द्वादशीमें ही उपवास करके त्रयोदशीको पारण करे। इस प्रकार एकादशो करनेसे शत यज्ञका फल होगा। किन्तु ऐसा हीना अत्यन्त दुर्लभ है।

यदि एकादशी षष्टिदण्डाक्षिका दूसरे दिन न रहे और द्वादशो आ जाय तो द्वादशोके एक पदका परित्याग करके पारण करे। कारण, द्वादशोका प्रथम पाद एकादशो व्रत नित्य है, इस कारण अशौचादिकी प्रतिबन्धकता होने पर भी व्रत भङ्ग नहीं होता।

यदि एकादशीके दिन स्त्री रजस्रलादि कारणोंसे अशुद्ध हो, तो वह स्वयं उपवास करके दूसरेके द्वारा पूजा आदि करावे। एकादशी न कर सके तो उसके अनुकल्प है, उपवास करनेमें असमर्थ व्यक्ति यदि फल-मूल वा जलाहार करे वा एक धार हविष्य वा विष्णुका नैवेद्य खावे, तो वह प्रत्यवायो नहीं होगी। और उपवास करनेमें यदि शिक्कूल हो असमर्थ हो तो एक ब्राह्मणको जिमा दे वा भोजनसे दूना मूल्य दे देवे।

इस जगह विशेष नियम यह है, कि विष्णु शयन, पार्श्वपरिवर्तन और उत्थानको एकादशीमें उक्त नियम लागू नहीं होंगे।

भगवान् नै स्वयं कहा है, कि मेरे शयन, उत्थान और पार्श्व परिवर्तनको एकादशीमें जो फल-मूल और जलमात्रका आहार करेगी, वह मेरे हृदयमें शब्द निक्षेप करेगी। इसलिए सभीको इन एकादशियोंका पालन करना चाहिये। भोग एकादशीके विषयमें भी ऐसा ही नियम है।

एकादशीके दिन पतितप्राह और मपिपुत्रोकरव  
चादि करना पड़ता है । रतितप्राह देखो ।

द्वादशी ।—बुधवार हैतु अर्थात् बुधवार बुध द्वादशी  
को प्रयत्न है ।

बैशाख मासकी शुक्ल द्वादशीकी बेलको विधि वा  
विधोक्तकी द्वादशी कहते हैं । पतयय उस दिन प्रियत  
को मत करे ।

ज्यैष्ठ मासकी शुक्ल द्वादशीको विधोक्ता-द्वादशी  
कहते हैं । उस दिन बिन्दुको पूजा को जानते हैं ।

पाषाण मासकी शुक्ल द्वादशीको रातको बिन्दुका  
शयन, माद्रुको शुक्ल द्वादशीको पाश्व परिवर्तन और  
कार्तिककी शुक्ल द्वादशीको सनका उद्यान होता है ।  
यद्यपि उक्त तिथिकी अनुराधा नक्षत्र होता है तो भी  
नक्षत्रम है नहीं तो तिथिमाहात्म्यके कारण रात्रिके  
ममय बिन्दुका शयन करावे । अथवा नक्षत्रमें 'पाश्व'  
परिवर्तन और देखते सनकमें उद्यान करावे । बिन्दुका  
रात्रिके शयन, दिनमें उद्यान और मंथ्राको पाश्व-परि  
वर्तन करावे ।

बटि उक्त नक्षत्रोंको तिथिके सम्बन्ध योग न हो, तो  
पाद योग जोनिसे भी उक्त काम अर्थात् शयनोत्थानादि  
करे । बिन्दु किसी समय भी दिनको शयन और रातको  
उद्यान वा पाश्व परिवर्तन नहीं करे ।

यदि शयन, पाश्व-परिवर्तन और उद्यानको द्वादशी  
में उक्त नक्षत्रोंका योग न हो, तो एकादशी, त्रयोदशी  
चतुर्दशी, और पूर्णिमा इन चार तिथियोंमेंसे जिस तिथि  
में नक्षत्रका पादयोग हो वही तिथिके शयनादि कृत्य  
करे । किन्तु एकादशीमें पूर्णिमा तक किसी भी तिथि  
में नक्षत्र योग न होने पर, द्वादशीमें संध्याके समय उक्त  
कार्य ईति । यदि द्वादशीके दिन रात्रिको शयनोत्थान  
पश्चात् हो, तो दिनके अन्तमें शयन करना ।

माद्रुको शुक्लपक्षके द्वादशीमें बटि अथवा नक्षत्रका  
योग हो तो उस तिथिकी अथवाद्वादशी और बिन्दुका  
द्वादशी कहते हैं । उस दिन उपवास और बिन्दुपूजा  
करनेके अत्यन्त फल होता है । यदि उक्त नक्षत्र द्वा-  
दशीमें बुध हो, तो एकादशीके उपवासमें ही द्वादशीके  
उपवासका फल होता । क्योंकि द्वादशीके एकादशीका

सम्बन्ध है । और यदि एकादशीमें योग न हो कर द्वा-  
दशीमें योग हो, तो एकादशी और द्वादशी दोनों दिन  
उपवास करना पड़ेगा । उपवासपक्षके उपवासमें पारव  
किया जाता है ।

पंचमास्य मासकी शुक्ल द्वादशीको चक्रपत्र द्वादशी  
कहते हैं ।

फाल्गुन मासकी शुक्ल द्वादशीमें बुधा नक्षत्रका योग  
जोने पर वह गोविन्दद्वादशी कहलाता है । उस दिन  
गङ्गास्नान करनेके महत् फल होता है । गङ्गास्नानका  
मन्त्र—

“गङ्गातटस्थमि गमि गामि धरि दे ।

गोविन्दद्वादशी गन्ध धामि मे हर वासुधि ॥”

त्रयोदशी ।—शुक्ल त्रयोदशी द्वादशीबुध और ज्ञान  
त्रयोदशी चतुर्दशीबुध की प्रयत्न है ।

माद्रु मासकी ज्ञान त्रयोदशीमें यदि मवा नक्षत्रका  
योग हो, तो मनु और चोरसे घिनटोका न्याह करे । यह  
अपह विचार कर दिखें, कि मनु नक्षत्रमें मनु और चोरसे  
मनुनक्षत्रमें यन्त्रिचित् मनुके और बिन्दु धर्मोत्तरमें उक्त  
न्याह निम्न कहा गया है । किन्तु पत्र सिद्ध मनु और  
चोरसे करना चाहिये । इस अन्देहको दूर करनेके लिये  
बिन्दु, धर्मोत्तर और यातातपमें इस प्रकार किया है—

“गिरा गृह्णन्मन्त्रमन्त्राद्यु मन्त्राद्यु च ।

उत्सार्पण्य वसेतुके विदग्ध मन्त्रेणु च ॥”

( भाष्यतः )

“अथानुक्त च उन्नामि अन्ना रात्र अन्तोदयी ।

उन्नाद्यु नवैत् भाद्र अन्तुना नावरीन च ॥”

( विष्णुपर्वेत्तरः )

इस अंगके प्रथमोक्त नक्षत्रमें ब्राह्मणके लिये शयन  
महाहवादि ममदा पटका न्याह करनेकी और दूसरे  
नक्षत्रमें मनु और चोरसे न्याह करनेकी विधि है । प्रथ  
अंगके अन्तमें महाचार्यने ऐसा कहा है—“तथाशुक्ल  
क्षयपक्षे च मन्त्राद्यु लम्बुजोमेन पायसयोर्मेन वा  
चय भवेत् ॥” और मनु-नक्षत्रके अन्त पर “पतोऽय सुतरां  
गुरुस्वायम्बिकारा” ऐसा कहा है ।

प्रायिक मानके द्वादशे दिन तक द्वादशी नक्षत्रका पत्रि  
कार है, अर्थात् १० दिन तक पूर्ण द्वादशानक्षत्रमें रहता है ।

उसमें यदि मधानचक्रयुक्त कृष्णा त्रयोदशी पड़े, तो उसको गजच्छायायोग कहते हैं। उसमें उक्त आहुति करनेसे पूर्वापिप्पा फल अधिक होता है। इसमें विभक्त अविभक्त का भेद नहीं है, अर्थात् ज्येष्ठ-कनिष्ठ सभी कर सकते हैं।

जैसे वार्षिक एकोद्दिष्ट आहुतिमें ज्येष्ठ-कनिष्ठका भेद नहीं है, इसमें भी वैसा ही है। इस आहुतिमें पुत्रवान् व्यक्ति को पिण्डदान न करना चाहिये। जिम्न आहुतिमें पिण्डदानका निषेध है, उसमें खधावचन ("खधां वाचयिष्ये") का पाठ करने पवित्र मीचन न करना चाहिये। किन्तु इसमें अग्निदग्धका पिण्ड देना पड़ता है।

वारुणो—चैत्रमासकी शतभिषानचक्रयुक्त कृष्णा त्रयोदशीको वारुणी कहते हैं। इसमें गङ्गास्नान करनेसे शतसूर्यग्रहणकालीन गङ्गास्नानका फल होता है। इसमें यदि शनिवार-योग हो, तो उसको महावारुणी कहते हैं। उस दिन स्नान करनेसे कोटि-सूर्यग्रहण-कालीन स्नान का फल होता है। यदि शनिवारमें शतभिषा नक्षत्र शुभ योगके साथ संयुक्त हो, तो उसको महामहावारुणी कहते हैं। उस दिन गङ्गास्नान करनेसे तीन कोटि कुलका उच्चारण होता है। इस जगह फाल्गुनका मुख्य चन्द्र और चैत्रका गौणचन्द्र होने पर भी स्नानके संकल्पमें चैत्रका उल्लेख होगा। सधवा स्त्रीको वारुणोमें स्नान न करना चाहिये तथा मामान्य शतभिषामें (अर्थात् पूर्वोक्त प्रकार योगादिके बिना मिले जो शतभिषा हो उसमें भी स्नान करना ठीक नहीं। शतभिषा नक्षत्रयुक्त चन्द्रमें जो स्त्री स्नान करती है, वह निश्चयमें सात जन्म तक विधवा और हतभागिनी होती है। वारुणोमें स्नानके लिए दिन रातका विचार नहीं, अर्थात् चाहे दिन हो, चाहे रात्रि वा संध्या हो, जब तिथि और नक्षत्रका समागम हो, तभी स्नान करना चाहिये। उस दिन गृहस्थित गङ्गाजलसे स्नान करने पर भी अश्वमेधका फल होता है।

चैत्रमासकी त्रयोदशीमें मदनकी पूजा की जाती है। चैत्रमासको शुक्ला त्रयोदशीमें जो मदनको पूजा करके व्यजन करता है, उस पर वर्ष भर की ईश्वरपत्ति नहीं पड़ती।

चतुर्दशी—शुक्ला चतुर्दशी पूर्णिमायुक्त और कृष्णा

चतुर्दशी त्रयोदशीयुक्त होने पर ग्रहणीय है। कृष्ण पक्षकी अष्टमी और चतुर्दशीमें उपवासादि कार्यमें परविद्याकी छोड़ कर पूर्वविद्याकी ग्रहण करना चाहिये।

ज्येष्ठकी कृष्ण चतुर्दशीका नाम सावित्री चतुर्दशी है। उस दिन अश्विघवकी कामनासे स्त्रियोंको अडा और भक्तिपूर्वक सावित्रीव्रत करना चाहिये। यह अनन्तचतुर्दशीको भांति १४ वर्ष पाला जाता है।

सावित्रीव्रत परविद्या तिथिमें करना चाहिये। यदि दोनों दिन व्रतका समय हो, तो दूसरे दिन व्रत करें और यदि दोनों दिन प्रदोषके समय चतुर्दशी पड़े तो भी दूसरे दिन व्रत करना उचित है। व्रतका समय प्रदोष अर्थात् रजनोमुखका समय है।

"चतुर्दश्याममावस्या यदा भवति नारद।

उपोष्या पूजनीया या चतुर्दश्या विधानतः ॥" (ज्योतिष)

भाद्रमासको कृष्णपक्षीय चतुर्दशीको अघोरा चतुर्दशी कहते हैं। इसमें शिवपूजा और उपवास करनेसे शिवलोकको प्राप्ति होती है।

भाद्रमासको शुक्लाचतुर्दशीको अनन्त-चतुर्दशी कहते हैं। इस-चतुर्दशीमें व्रत करनेसे सर्वकाम और सर्वफलका लाभ होता है। अनन्तव्रतके निमित्त पूजा हीमादि करना चाहिये। यह व्रत पूर्वाह्नकालमें न हो सके, तो मध्याह्नकालमें भी व्रत सिद्ध होता है।

चतुर्दशी देखो।

कार्तिककी कृष्णपक्षीय उदयगामिनी चतुर्दशीका नाम भूत-चतुर्दशी है। उस दिन गङ्गास्नान, होम और तर्पण किया जाता है। अपामार्गके पक्षे मस्तक पर फेर और प्रदोषमें दोपदान करें। उस दिन दोपदान करनेसे नरकसे उद्धार होता है। और-यमतर्पणके जो मन्त्र हैं, उन मन्त्रोंको बोल कर एक एकके लिये तिलके साथ तीन बार जल चढ़ावे।

अपामार्ग-पल्लव फेरनेका मन्त्र—

"शीतलोष्णसमायुक्तस्रष्टकदलान्वित।

हर पापमपामार्गं त्रास्यमानः पुनः पुनः ॥"

अग्रहायण मासकी कृष्णा चतुर्दशीको पाषाणचतुर्दशी कहते हैं। उस दिन रात्रिको गौरीको पूजा करके पाषाणकार पिष्टक भक्षणपूर्वक व्रत करें।

माघमासको कृष्ण चतुर्दशीको रत्नो-चतुर्दशी कहति है। इसमें पक्षबन्धनयज्ञे समस्त स्नान करनेसे यममय जाता रहता है। खान पान तय्यब द्वारा समस्त पापोंसे छुटकाय सिद्धता है। इस चतुर्दशीको रत्नो पूजा होती है। यदि यह तिथि दोनो दिन पक्षबन्धन काय पावे, तो पक्षी दिन स्नान करे और जिस दिन सम्झा सुष पावे उस दिन रत्नोपूजा करे। यह रत्नोपूजा पौषके गौणपक्ष और माघके सुष्य पक्षमें होती।

माघमासके पक्षमें जो या पञ्चानुभासके प्रारम्भमें, कृष्ण चतुर्दशीको शिवचतुर्दशी कहते हैं और उस दिन शिवरात्रिका मत होता है। किन्तु माघका मोक्षपक्ष और पञ्चानुभास सुष्यपक्ष पक्षौष्य है। माघमासको कृष्ण चतुर्दशीको रविवार वा मङ्गलवार पड़े तो इससे पक्षमें पाषिण्य होता है। रविवार वा मङ्गलवारपक्ष प्रत्येक दिन यदि शिवयोग पड़े तो इसका फल उत्तमसे हो उत्तमतम हो जाता है। इस तिथिमें यदि पक्षसे दिन महाशिवि और दूसरे दिन प्रदोष पड़े, तो प्रथम दिन व्रत और उपवास करे। पक्षी दिन महाशिविमें चतुर्दशी न हो कर यदि दूसरे दिन प्रदोष साम हो तो दूसरे दिन व्रतादि करे।

पक्षसे कृष्णचतुर्दशीके प्रकारमें कहा या चुडा है, कि तिथिसे पक्षमें पारण्य करे, किन्तु यह निवम शिष्य कृष्ण-चतुर्दशीके लिए है, कहा यह शिष्य नहीं है। यहाँ जिन तिथिमें उपवास हो, उसी तिथिमें पारण्य करना उचित है। महाशिविआपिनी चतुर्दशीको यदि शिवरात्रिप्रतका समय हो पञ्चात् दिनको चतुर्दशी पतित हो कर यदि महाशिविआपिनी हुई हो, तो उसी चतुर्दशीमें पारण्य करे। इसमें पाषाणिक है—

“महाशिवेदमपरेणु नाति हीमैमि लपि है।

पुनरापि मन्वीह मूपावा पारने कुले ॥” (१२५३०)

इस पृथिवी पर जितने भी लोग हैं, चतुर्दशीमें पारण्य करनेसे उन सबको पूजा करनीका फल होता है। यदि दूसरे दिन यह चतुर्दशी न रहे और दूसरे दिन प्रदोष आपिनी तिथि न हो, तो पूर्व शिवीयआपिनी चतुर्दशीको उपवास और पञ्चानुभासमें पारण्य करे।

चैत्रमासका कृष्ण चतुर्दशीका नाम चन्द्राव-चतुर्दशी

है। उन दिन मङ्गाखान और यज्ञमें मोहन करनेसे विद्यापक्षको प्राप्ति नहीं होती। इसमें पाशुगुणके सुष्य पक्ष और चैत्रको मोक्षपक्षको खबरना है।

पूर्णिमा—चतुर्दशीके साध हुप्रमल हेतु पूर्णिमा पञ्चम और देवदमके लिए पादरक्षोय है। पञ्चानुभास और पूर्णिमाके चन्द्र और इन्द्रपति पक्षका योग हो, तो उसको महापूर्णिमा कहते हैं। इसमें स्नान और उप-वासका फल होता है।

ज्येष्ठ मासको पूर्णिमाको ज्येष्ठानुष्यममें यदि गुह्य और शोभो हो तथा उन दिन सुखवार हो तो यह महा-पूर्णिमा होती है पञ्चमा ज्येष्ठानुष्यममें या चतुरावाणपक्ष में गुह्य पक्ष दोनो हो, तो ज्येष्ठमासको पूर्णिमा महा-पूर्णिमा कहलाती है। यदि ज्येष्ठमा या चतुरावाण पक्षमें सुखपति हो तथा रोहिणी और श्रृंगघिषा पक्षमें रवि हो एवं ज्येष्ठानुष्यमपक्ष शोभो हो, तो यह पूर्णिमा महापूर्णिमा होती है।

ज्येष्ठ नामके सम्बन्धमें ज्येष्ठमासको पूर्णिमा ज्येष्ठा नक्षत्रपक्ष होने पर महापूर्णिमैयोन होता है।

जिन वर्षमें ज्येष्ठमा मूला नक्षत्रमें इन्द्रपतिका वदय वा पक्ष हो, उस वर्षको ज्येष्ठमासा बन्दे कहते हैं।

पूर्णिमा मन्वन्तराका विषय पक्षमें कहा या चुका है, कि माघ और आश्वी पौर्णमासोंमें तथा पाषाणिको कृष्णपक्षोदशीमें याव करना बन्दो है। यदि पक्षसे दिन सङ्गमके समय पूर्णिमा तिथि पात्र न हो तो उस दिन हो याव करना उचित है। यदि दोनो भी दिन नक्षत्र-कासका काम न हो, ता दूसरे दिन याव करे। सूर्योदयके सुष्यपक्षको प्रातःकाय और बसके बादसे सुष्यपक्षको महाशकाय कहते हैं।

श्रीवागर् पूर्णिमा प्रदोषके पाने पर हो प्रोत्रा होता है, पञ्चात् जिस दिन प्रदोष और शिवोबआपिनी तिथि हो उनो दिन श्रीवागर् पूर्णिमा समझा जावयो। यदि पक्षसे दिन शिवोबसमयमें और दूसरे दिन प्रदोषमें व्रत तिथिका साम हो तो दूसरे दिन बसका फल होमा। यदि पक्षसे दिन शिवोब समयमें उचित तिथि हो और दूसरे दिन प्रदोषके समय उक्त तिथिका पतन न हो,

तो निशेचय्यापिनो तिथिमें, अर्थात् पहले दिन को जागर कृत्य होगा। कार्तिककी पूर्णिमामें राधयात्रा और मन्वन्तरा होते हैं।

पौषमासकी पूर्णिमाके वाटसे माघमासकी पूर्णिमा तक प्रति दिन यथानियम विष्णुको पूजा करें और उस समय तक मूली न खावें। माघमासमें मूली खानेसे ज्यादा दोष लगता है।

फाल्गुनीकी पूर्णिमाका नाम दोल-पूर्णिमा है। इसमें शोक्लणको दोलयात्रा करें। दोल देखी।

अमावस्या—अमावस्या प्रतिपद्युक्त होने पर हो ग्रहणयोग्य है। भाद्रमासकी अमावस्याकी महालया कहते हैं। उस दिन विहित पार्वणश्राद्ध और षोडश पिण्डदान किये जाते हैं।

कार्तिककी अमावस्याकी दोषान्विता अमावस्या कहते हैं। उस दिन पार्वणश्राद्ध किया जाता है। जो व्यक्ति महालयामें उक्त श्राद्ध नहीं करते, दोषान्वितामें यह श्राद्ध करें।

कार्तिककी अमावस्याकी स्नानके बाद दही, घोर और गुड़ आदि द्वारा देवों और पितरोंकी भक्तिपूर्वक अर्चना एवं पार्वणश्राद्ध करें। इसमें दोषदान करना पहला है। क्योंकि पिष्टगण आ कर श्राद्धभागकी ग्रहण करते हैं और प्रतिगमनकालमें उस आलोकसे उनको मार्ग दिखाना पड़ता है।

इसके सिवा उस दिन लक्ष्मीपूजा और उसी समय देवदृष्टमें दोषदान किया जाता है। उसके मन्वमें उस दिन कालिकापूजाकी व्यवस्था देवनेमें आती है। यह पूजा प्रदोषकालमें की जाती है। यद्यपि दोनों दिन यह तिथि प्रदोषय्यापिनो होती है, तथापि शुभमासके कारण दूसरे दिन हीमो। दोनों दिन प्रदोषकाल न प्राप्त हो तो पार्वणके अनुरोधसे दूसरे दिन उक्तादान करें।

यदि दिनको चतुर्दशी और रातको अमावस्या हो, तो उस दिन लक्ष्मीपूजा करें। इसका नाम सुखरात्रिका है। किन्तु इसके एक विशेष बचनमें ऐसा है, कि दूसरे दिन एक दण्ड रजनो तक अमावस्या हो, तो पूर्व दिनको छोड़ कर दूसरे दिन लक्ष्मीपूजा करें। ( तिथितत्व )

यदि दोनों दिन प्रदोषके समय अमावस्या न पड़े,

तो आदने दूसरे वणमें दिनको हो उक्तादान करें। पहले दिन प्रदोष समयमें अमावस्याका योग हो कर दूसरे दिन श्राद्धकाल प्राप्त हो, तो पहले दिन प्रदोष-समयमें उक्तादान करके दूसरे दिन श्राद्ध करें और दोनों दिन अगर प्रदोषकालमें अमावस्या प्राप्त हो, तो दूसरे दिन करना होगा। ( तिथितत्व )

प्रतिपदादि तिथियोंमें जन्मफल।

प्रतिपदामें जन्म होनेसे सर्वदा नाना रत्नमें विभूषित, मनोहरकान्तिविशिष्ट, प्रतापशाली और सूर्यविस्यके समान अपने कुलरूप कमलका प्रकाशस्वरूप हुआ करता है।

द्वितीयाका फल—द्वितीयामें जन्म होनेसे वह निर्विण्ण गुणयुक्त, अतिगम्य शूर, अपने कुमुदकुलके लिए चन्द्रमासदृश, विपुलकोर्तिशाली और अपने भुजबल द्वारा परातिसुलको पराजित करनेवाला होता है।

तृतीयाका फल—तृतीयामें जिसका जन्म हुआ है, वह सकल गुणयुक्त, गम्भीर, नृपानुशासक, वायुरोगयुक्त, सबका उपकार करनेवाला, अन्यके अधिकारमें आशय्यी, कौतुकप्रिय, सत्यवादी और समस्त विद्यासम्पन्न होता है।

चतुर्थीका फल—जो चतुर्थीमें जनमा है, वह सर्वदा स्वयं पुत्रमिव और प्रमदा, प्रमोदी, हृताभिलाषी, कृपान्वित, विषादशाल, विषादमें विजयो और कठोर होता है।

पञ्चमीका फल—पञ्चमीके दिन जन्म ही, तो वह राजसान्य, सुन्दरशरीर, दयावान, पण्डिताग्रगण्य, कामी, गुणवान् और बभ्रुजनोंमें एकमात्र माननीय होगा।

षष्ठीका फल, षष्ठीमें जिसका जन्म हुआ है, वह विद्वान्, वरिष्ठ, चतुर, सुन्दर, कोर्तिसंपन्न, आलम्बित नाहु-विशिष्ट, व्रणाकोर्णदेह, सत्यप्रतिष्ठ, धनपुत्रयुक्त और विशायु होता है।

सप्तमीका फल—जिसका जन्म सप्तमीकी हुआ है, वह कन्यासन्ततियुक्त, अरातिमातङ्गके लिये नृग-स्वरूप, विशालनेत्रवाला, प्रसिद्ध प्रभावशाली, देवहिंजका अर्चना-परायण, रक्षक, महात्मा, और पिष्टघनकारी हुआ करता है।

अष्टमीका फल—अष्टमीकी जन्म लेनेवाला, राजसन्ध,

वनसंपन्न, जगाड, सुखी सुवनीमिद, चतुष्पद, वन  
 प्राम्थस पत्र धोर वनस धोर होता है ।

नवमीका पत्र—वनमीके टिन जिसका अरुम हुआ  
 है, वह बिरोधकर, पाहुदीके लिए प्रगम्यकर, दूनरेके  
 लिए पतिविकार मतिम पत्र पुचरिम, पाचारमिकोन,  
 व पत्र धोर ख्येर होता है ।

दशमीका पत्र—दशमी तिथिमें अरुम सिनेवाका  
 पियाबिनोदी धन-पुत्र बुद्ध, अरुमे वानोवाना, अरुम्यं  
 धीमी पवित्र यौस पत्र, सदादेता प्रगम्य पत्रावरण  
 विमिष्ट धोर दयालु हुआ करता है ।

एकादशीका पत्र—एकादशी तिथिमें अरुम जोनिसे,  
 वह जोतोव्यत्तुमिदिष्ट, जोत्रसइगयोम सुभापो  
 योगदिका मर्ता, आनोपवर्गका एकमात्र मर्ता महा  
 मतिम पत्र, देवगुदका दिव धोर पावला हूट होमा ।

द्वादशीका पत्र—द्वादशीमें अरुम सिनेवाका बहु  
 सन्तान-विशिष्ट, सर्वजनानुरागे, उपमात्र, पतिविप्रिय  
 प्रवासवासहोन धोर व्यवहारमें दख होता है ।

त्रयोदशीका पत्र—दस तिथिमें अरुम सिनेवाका सुख-  
 धरीर सावित्र-भावन्य, वाक्यवानमें सुखी, जननोको  
 मित्रकर, सर्वदा भासलहुक धोर एकमात्र मित्रगुचकेता  
 होता है ।

चतुर्दशीका पत्र—चतुर्दशीको जिसका जन्म होता  
 है, वह निवहइभाव, सर्वदा रोपपरायण, धोर, कठोर  
 परकंधक, पराक्रमीको धोर परदारामें चतुरा होता है ।

अष्टमपचीय चतुर्दशीका पत्र प्रथम हुआ करता है ।

अष्टमा चतुर्दशी तिथिमें परिमात्र दखको ६ भागमें  
 विभक्त करे । प्रथम भागमें अरुम जोने पर बासकका अरुम  
 होगा, द्वितीय भागमें अरुम जोनेसे पिलाकी ज्ञानि,  
 तृतीय भागमें जननीको ज्ञानि, चतुर्थ भागमें मामाको  
 ज्ञानि, पंचममें व शशा नाम एव षष्ठ भागमें वनकी  
 ज्ञानि, और सातव शका नाम हुआ करता है ।

पूर्वमांमें अरुम जोने पर, वह अरुम्यंतु, अरुमवान,  
 सुवनीमिद, व्यानोपार्जित वनसम्पन्न, सर्वदा स्वयंभु  
 शूर, वरुवान् धोर वाक्यार्थमें दख होता है । १.१

अष्टमवक्त्रा तिथिमें जिसका अरुम होगा है, वह अरु,  
 सावसिक, जनपद, तवागोत्र धोर सर्वदा धोरके काममें  
 रत रहता है ।

सिनोवाको तिथिमें यदि दामी पत्रो, ज्ञानो चोड़ा  
 मन्थियो पादि जिसे सो एकका प्रसव हो तो पृष्ठक्षामो  
 को वनदानि होता है । यदि देवराज पन्थके वरुं मा  
 ऐसी घटना हो, तो उनको मा वनको ज्ञानि सजानो  
 पड़तो है । जैसे गण्ड-प्रसूत दोष वर्जित हैं, सिनोवाको-  
 में प्रसव जोनेसे वने जो दोष होते हैं इन तिथिमें प्रसव  
 जोनेसे पृष्ठक्षामोको धायु धोर वनका नाश होता है ।

प्रतिपदा पादि पन्थ तिथियां मन्दा मद्र, अया, रिता  
 धोर पृथा वन प्रांथ मर्त्यमें विभक्त है ।

उनमें प्रतिपदा एकादशो धोर पन्थो वन तोन तिथिमा  
 को नाम मन्दा है । द्वितीया द्वादशो धोर सत्रमो भद्रा  
 कचकाती है । तृतीया, षष्ट्यो धोर तयोदशोको अया  
 कहती है । चतुर्थी, नवमी धोर चतुर्दशो ये तोन तिथिमा  
 रिता है । पंचमी दशमी पूर्वमा, धोर अमावस्या वन  
 चार तिथियोंका नाम पूर्वा है ।

मन्दा तिथिमें जिसका अरुम हुआ है, वह महामानो,  
 पण्डित, देवता-भक्ति निष्ठ धोर ज्ञातियोंका मित्रवक्त्र  
 होता है ।  
 मद्र तिथिमें अरुम सिनेवाका वन्धुवर्ममें माननीय,  
 राजकेमी वनवान्, संसारके भयभीत धोर परमार्थतत्त्व  
 पण्डित होता है ।

अयातिथिमें अरुम सिनेवाका राजपण्य, सुखपीसादि  
 स युद्ध शासनकर्ता, दोषाय विमिष्ट धोर महाविद्य  
 होता है ।

रिता तिथिमें जिसका अरुम हुआ है, वह वनहोन,  
 प्रमादविशिष्ट, शुद्धमन्दाकर, शास्त्रवेत्ता, अरु, वक्ता धोर  
 धार्मिक होता है ।

पूर्वा तिथिमें जिसने अरुम बिबा है वह वनपुत्र,  
 साध्यार्थमें अयो, तक्षषिता, सत्यवादी धोर सुद्वेषिता  
 होता है । (अभितर—अवर्तिका)

सुपु-तिथिमा सिनेव ।

अरु, राशि धोर अराहको एक साव जोड़ कर  
 युक्ताहको भाग करमें पर जो बाकी बचेगा, उदकं हाय  
 मन्दा पादि तिथियोंका निर्णय होमा । एक वाको वचनेमें  
 मन्दा तिथिमें अरुम जोने । दस तारह शोको वचनेमें भद्रा  
 तिथिमें, १ वचने पर अयामि, २ वचने पर रितामें धोर



५ वाकी बचने पर पूर्णा तिथिमें मृत्यु होगी ।

मतान्तरमें ऐसा भो है—वयसका अङ्क, राशिका अङ्क और स्वरङ्क इनको एकत्र जोड़ कर युक्ताङ्कका ५ से भाग लगावें, जो बाकी बचे उससे नन्दा भद्रा आदि तिथियांका निर्णय करें ।

उन्न राशि और स्वरङ्कको एक साथ जोड़ कर, युक्ताङ्कका ६ से भाग करने पर जो अवशिष्ट बचे, उससे मृत्यु-तिथिका निर्णय करें । वयसाङ्क, स्वरङ्क और राशिके अङ्कको एक साथ जोड़ कर, युक्ताङ्कको ६ से गुणा करें, फिर उस गुणफलका १५ से भाग करने पर जो अवशिष्ट रहे, उससे मृत्यु-तिथिका निश्चय करें । १ अवशिष्ट होनेसे प्रतिपदामें, २ वचनेसे द्वितीयामें, ३ अवशिष्ट रहने पर तृतीयामें मृत्यु होगी, इसो तरह भाग समझें ।

चन्द्र-मल-सावन—शुक्ला प्रतिपदासे १० दिन अर्थात् दशमी तक चन्द्र मध्यबल रहता है । एकादशीसे ले कर दश दिन अर्थात् कृष्णा पञ्चमो तक चन्द्र पूर्णबल और कृष्णाषष्ठीसे ले कर दश दिन अर्थात् अमावस्या तक चन्द्र होनबल होता है ।

तिथिविशेषमें द्रव्यादि भक्षणका नियम—प्रतिपदाके दिन कुष्माण्ड भक्षण करनेसे अर्थको हानि होती है । द्वितीयाको हहती, तृतीयाको पटोल, चतुर्थीको मूली, पञ्चमीको वेल्, षष्ठीको नीम, सप्तमीको ताड़, अष्टमीको मांस और नारियल खाना निषिद्ध है, तथा नवमीको तुम्बी ( लौकी ), दशमीको कलम्बी, एकादशीको सेम, द्वादशीको पूतिका, त्रयोदशीको वार्त्ताकु, चतुर्दशीको छहद और मांस तथा अमावस्या और पूर्णिमा तिथिमें मांस खाना निषिद्ध है ।

आपादकी शक्ता एकादशीसे ले कर कार्तिककी शक्ता द्वादशी तक सफेद सेम, पटोल, वरबटो, कदम्ब, कलमीशाक, वार्त्ताकु और कैथ खाना निषिद्ध है ।

कार्तिककी शक्ता एकादशीसे पूर्णिमा तक मत्स्य और मांस खाना निषिद्ध है । ( स्पृति )

तिथि-विशेषमें योगिनीका निर्णय—प्रतिपदा और नवमीको योगिनी पूर्व दिशामें रहती है; तृतीया और एकादशीको अग्निकोणमें, पञ्चमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें, चतुर्थी और द्वादशीको नैऋतमें, षष्ठी और

चतुर्दशीको पश्चिममें, महासो और पूर्णिमाको वायु कोणमें, द्वितीयाको और द्वादशीको उत्तरमें तथा अष्टमी और अमावस्याको ईशानकोणमें योगिनी रहती है ।

यात्राका फल—षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, पूर्णिमा, कृष्ण प्रतिपदा, अमावस्या रिक्ता, यमद्वितीया, अमम और वरहस्पतिमें यात्रा करना निषिद्ध है; इन तिथियोंके सिवा अन्य दिनकी यात्रा शुभ होती है ।

रविवारको द्वादशी, सोमवारको एकादशी, मङ्गलवारको दशमी और बुधवारको सप्तमी होनेसे, वह तिथि दिनदग्धा होता है । उनमें कोई शुभ कार्य न करना चाहिये ।

वर्षप्रवेशमें तिथिका आनयन—गतवर्षको संख्याको ११ से गुणा कर लालें, फिर उसके गुणफलमें १७०का भाग लगावें । जो भागफल उपलब्ध हो, उसका उपर्युक्त गुणफलके साथ जोड़ लगावें । इस युक्ताङ्कको ३०से भाग करने पर जो बाकी बचेगा, उसके साथ जन्म-तिथिके अंकका जोड़ लगानेसे जो अङ्क हींगी, उस अङ्कके द्वारा वर्षप्रवेशको तिथिका निर्णय हो जायगा । वह अङ्क ३०से अधिक होने पर ३०से उसका भाग करें, जो बाकी बचे, उसे ग्रहण करना चाहिये । कभी-कभी निरूपित तिथिसे पूर्वकी वा बादकी तिथिमें भो वर्षप्रवेश हुआ करता है । ( ज्योतिष )

तिथिमेदसे देवपूजाभेद ।

“यद्दिने यस्य देवस्य तद्दिने तस्य संस्थिति ।” ( नारद )

जिस देवताके लिए जो दिन निर्धारित है, उस दिन उसी देवताकी संस्थिति होती है । प्रतिपदमें अग्निकी, द्वितीयाको वेधाकी, दशमीको यमकी, षष्ठीकी गुहकी, चतुर्थीको गणनाथकी, तृतीयाको गौरीकी, नवमीकी सरस्वतीकी, सप्तमीको भास्करकी, अष्टमी, चतुर्दशी और एकादशीको शिवकी, द्वादशीको हरिकी, त्रयोदशीकी मदनकी, पञ्चमीको फणीशकी तथा पर्व ( अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा )-के दिन इन्द्रकी पूजा करने चाहिये, इस प्रकार पूजा करनेसे शीघ्र ही फलकी प्राप्ति होती है । ( अग्निपु० )

तिथिक्रम ( न० क्री० ) तिथिषु कृत्यं, ७-तत् । तिथिविहित कार्य, विवाहादि माङ्गलिक कर्म जो निर्दिष्ट तिथिमें किये जाते हैं ।

उदाह, याज्ञा, उपनयन, प्रतिष्ठा चोपनयनं वासुधर्मं, यज्ञप्रवेगं पौर मन्त्र्युक्तं मङ्गल-कार्यं शुक्रपक्षी प्रति पदाब्जो न करन चादिप । ( श्रीकृष्णार्णव वीठ )

विनो किमोक्ता कथना है, कि युद्धा प्रतिपदाको मति हत्या प्रतिपदा भी बर्जनीय है किन्तु यह मनुज नहीं है । आर्य इन बचनमें "मासाद्य त्रिपैः" एसा उक्ति है यदि कृष्णपक्षीय प्रतिपदाका विषय होता तो "पसाद्य त्रिपैः" एसा पाठ होता । द्वितीयमें राज्ञे मन्त्राश्चिञ्च वाशु पौर व्रत प्रतिष्ठा याज्ञा विवाह विद्यारम्भ, यज्ञप्रवेगं पादि ममष्ट मातृविक्र कारं शुभजनक है । तृतीयमें उक्त कार्यं परितत्पर है । पञ्चमीमें अथप्रदानके सिवा पन्थान्थ मङ्गल कार्यं शुभ कर है । षष्ठीमें अथ्यु पौर यात्राके प्रतिष्ठित पोटिक मङ्गल-कार्य विषय है । द्वितीया तृतीया पौर पञ्चमीमें जो जो कार्यं शुभ कर है, सप्तमीमें जो जो कार्यं शुभजनक है । अष्टमीमें मयाम-उप्य अथिन वाशु कामं, गिष्य, विवाह पादि विषय है ।

द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी पौर सप्तमीमें जो जो कार्यं कहे गये हैं, दशमीमें वे कार्य विषय हैं । एकादशमीमें व्रत उपवाच, विद्वान्, ममय भ्रमकार्यं पौर गिष्यकर्म विषय है । द्वादशमी याज्ञा पौर नवपक्षके सिवा पन्थान्थ शुभ कार्यं हितकर है । त्रयोदशमी द्वितीयां तिथि वीथि ममो कार्यं विषय वा मन्त्र है । पूर्वमाको वस्र क्रिया पोटिक पौर मङ्गलकार्यं, सयाम योष्य अथिन वाशुकर्म उदाह, गिष्यप्रतिष्ठा पादि ममय मङ्गलकार्यं विषय का मन्त्र है ।

पमावस्थाको विनयनं न सिवा अन्य शुभकर्म बर्जनीय है । यदि कोई मोक्षवय निषिद्ध कार्यका अनुष्ठान करे तो वह विनयन हो जाते हैं । ( श्री वा० विनयनचन , तिथिसय ( म० पु० ) तिथोन्मं तिथ्य फलचिन्तनमङ्गलानां सयौ सयान्थो यस्मिन् बह्वो० । १ दश, पमावस्था । ( अथान्थ० ) तिथोन्मं सयः ६-तत् । २ तिथिका नाम, दिनसय । ( श्रीवि० ) )

एक दिनमें तोत्र तिथि जो तो उने दिनसय कहते हैं । इसमें वेतिथि क्रिया करनेमें सफल शुभ फल होता है । नवम और दशमः देवैः ।

तिथिपति ( म० पु० ) तिथोन्मं पतय, ६-तत् । तिथिवीथि अथिपति । ब्रह्मा, विधाता, हरि, यम, ययाह पदान्म, यज्ञ, वसु, भुवय, ब्रह्म, ईश, अविता, मन्मथ तथा कनि ये सत्र देवता प्रतिपदादि तिथिके यथाक्रमसे अथिपति हैं । पमावस्थाके अथिपति विद्यमथ हैं । ( ए लं० ११ न० )

शुक्र पौर कृष्ण पक्षके प्रतिपदा अथिपति अथि द्वितीयाके प्रजापति, तृतीयाके गौरी चतुर्थीके गणेश पञ्चमीके अथि, षष्ठीके शुक्र मममोक्ष अथि अष्टमीके गिष्य नवमीके दुर्गा, दशमीके यम एकादशमीके विष्य द्वादशमीके हरि, त्रयोदशमीके काम, चतुर्दशीके वर, पूर्वमा पौर पमावस्थाके अथिपति मयि हैं ।

तिथिपत्नी ( म० पु० ) निधि प्रचवति तिथि प्रती-विद्य अन्तमा ।

तिथिवृत्त ( म० जो० ) तिथोन्मिधि विधिययो शुभ ६ तत् । तिथिका जोड़ा दो तिथि ।

तिथिमन्त्रि ( म० पु० ) तिथोः सन्धि ६ तत् । तिथिको सन्धि दो तिथियांका पक्षमें मिश्रण ।

तिथो ( म० जो० ) तिथि ह्रदिकारादिति वा ङीप । तिथि देवो ।

तिथ्यई ( म० जो० ) तिथोनां चर्च, ६ तत् । करण ।

तिथरो ( द्वि० श्री० ) वर ङीठरो जिसमें तोत्र दरवाशे वा निवृत्तियां हो ।

तिथारी ( द्वि० श्री० ) एक प्रकारको विद्विया । यह वतकभी तरह होतो पौर सदा अन्धके जिनार रहतो है । यह लङ्गनेमें बहुत तेज है पौर जसोण पर सुखो कामका घोसना बनतो है । नोय इसका गिष्कार करते हैं ।

तिथारो ( द्वि० श्री० ) वर ङीठरो जिसमें तोत्र दरवाशे वा निवृत्तियां हो ।

तिथर ( द्वि० श्री० वि० ) उभर, उम पौर ।

तिथार ( म० पु० ) एक प्रकारका यज्ञ । इसमें पक्षे नहीं होती पौर सगमियो का तरह थायाएँ ऊपरको निवृत्ततो हैं । बगोवा पादिको बाह या टहोके निवे दने अगति है । इनका दूसरा नाम वसा वा नरसिञ्ज है ।

तिथारीकाण्डिक ( म० श्री० ) वरु ङीठ ।

तिथकना ( द्वि० श्री० ) ङीठित होना, चिह्नना मात्र होना

तिनका ( हि० पु० ) दृण, सूखो घास ।

तिनगना ( हि० क्रि० ) तिनकना देखो ।

तिनगरी ( हि० स्त्री० ) एक एकवान ।

तिनतिहिया ( हि० पु० ) मनुवा कपाम ।

तिनधरा ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारको रेतो जिममें तीन धार रहते हैं । यह धारीके दांतोंको तेज करनेके काममें आता है ।

तिनपहल ( हि० वि० ) तिनपहला देखो ।

तिनपहला ( हि० वि० ) जिममें तीन पार्श्व हों जिसमें तीन पहल हों ।

तिनमिगा ( हि० पु० ) वह माला जिमके बोंबमें मोने का या जहाज जुगन हों ।

तिनवा ( हि० पु० ) बरमा और छोटा-नागपुरमें होनेवाला एक प्रकारका वॉम । यह देमारतोंमें लगता है और चटाइयां बनानेके काममें आता है ।

तिनाशक ( सं० पु० ) तिनिश स्वार्थे कन् प्रपोटरादित्वात् श्वात् । तिनिश वृक्ष ।

तिनिश ( सं० पु० ) वृक्षविशेष, मोसमकी जातिका एक पेड़ । इसकी पत्तियां शमी या खैरको सी होती हैं । संस्कृत पर्याय—स्थन्दन नेमो रथद, अतिमुक्तक, वञ्जून, चित्रकृत, चक्रो गताङ्ग शकट, रथ, रथिक, भस्त्रगर्भ, मेघो, जन्धर, स्थन्दनि, अचक और तिनाशक ( Dalbergia Ougeensis ) । इसके गुण—कषाय, उष्ण, कफ, रक्त, अतिवातामयनाशक, ग्राहक, टाह, जनक, श्लेष्मा, पित्त, रक्तदोष, मेट, कुष्ठ, प्रसेह, श्वेत, टाह, व्रण, पाण्डु और कृमिनाशक है ।

तिन्दि ( सं० पु० ) तिन्दिहो प्रपोदरादित्वात् साधुः । वृक्षान्न, इमली ।

तिन्दिङ्का ( सं० स्त्री० ) तिन्दिहो स्वार्थे कन्-टाप् पूर्व झस्य । तिन्दिहो, इमली ।

तिन्दिहो ( सं० स्त्री० ) तिम्यते क्लियते मुग्धाभ्यन्तरमनेन तिम-ईकन् प्रपोदरा० । वृक्षविशेष, इमली । इसके संस्कृत पर्याय—चिञ्चा, अस्त्रिका, तिन्दिङ्क, तिन्दिङ्का, अस्त्रोका, आस्त्रिका, आस्त्रोका, चुक्र, चुक्रा, चुक्रिका, अस्त्रा, अत्यस्त्रा, मुक्ता, मुक्त्रिका चारिवा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, ग्राकचुक्रिका, सुचुक्रिका और सुति-

न्दिहा । ( Tamarindos Indica, कच्ची इमली अत्यस्त्र, कफ और पिचकारक तथा वातनाशक होती है ।

पको इमली टोपन, रुचिकारक, मीटक, उष्ण, कफ और वातनाशक, विटभनाशक, मधुरास्र, पित्त, टाह, अस्त्र और कफदोषप्रकोपक है । पको इमलीका मधुरास्र, रुचिपद, शोफ और पाककर है ; इमलीके लेप टैनेसे व्रण-दोष जाता रहता है । इमलीके पत्तेके गुण—ग्रीफ, रक्त-दोष और ध्वानाशक है । इमलीकी सूखी छाल—गुल और मन्दाग्निनाशक है । इमलीके पके फलकी जलमें अंशुको तरह पोम कर गुड और मिर्च मिला दे, घाद लवङ्ग और हींगसे सुगन्धित करे ; इस तरहमें जो पानोय प्रस्तुत होता है, वह अत्यन्त मुखरोचक, वात नाशक, पित्तश्लेष्मा र और वृद्धिरोधक है । ( गार्धप्रदान ) तिन्दिङ्क ( सं० पु०-स्त्री० ) तिम-ई-कन् निपातनात् साधुः । वृक्षान्न, इमली ।

तिन्दिङ्कोका ( सं० स्त्री० ) वृक्षान्न इमली ।

तिन्दिङ्गोद्युत ( सं० स्त्री० ) तिन्दिङ्गोभिः तिन्दिङ्गीजात-द्युतैः यद्युतं । चुचुरो वर जूआ जो इमलीके चिञ्चो-से खेला जाय ।

तिन्तिराङ्ग ( सं० पु० ) वञ्जलोद्, इमपात ।

तिन्तिनिका ( सं० स्त्री० ) तिन्दिङ्का अस्य सत्वं । तिन्दिहो, इमली ।

तिन्तिली ( सं० स्त्री० ) तिन्दिहो अस्य सत्वं । इमली ।

तिन्तिलीका ( सं० स्त्री० ) तिन्दिङ्कोका अस्य सत्वं । इमली ।

तिन्तिलौफल ( सं० स्त्री० ) जयपालवीज, जमालगोटिका बोया ।

तिन्द्य ( सं० पु० ) टिण्डिश वृक्ष, टिंडसो नामक तरकारो, डेडसो ।

तिन्दु ( सं० पु० ) तिम्यति भार्द्भीमधति तिम-कु प्रत्ययेन निपातनात् साधुः । तिन्दुक वृक्ष, तेंदूका पेड़ ।

तिन्दुक ( सं० स्त्री० ) तिन्दुरिव कायति कै-क । १ कर्ष-परिमाण, दो तोला । ( पु० स्त्री० ) तिन्दु स्वार्थे कन् ।

२ रक्तलोध वृक्ष, तेंदूका पेड़ । इसके संस्कृत पर्याय—स्फूर्जक, कानसकम्भ, शितिधारक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुको, नोनसार, अतिमुक्तक, स्वर्गक, रामण, स्फूर्जन, स्थन्दनाश्रय और कानसार ।

इसके कच्चे पत्थरें शुच—कपाय, पाडी, बातकारज, मोतक और कहु। पके फलके शुच—महुट, चिन्म, दुर्वा रोजद, सुव, प्रच और बातनायक, पित्त, मीह और रज्ज-दोषकारक तथा विषद। (राजनि०)

भावप्रदायक मत्तये इसके कच्चे फलके शुच—चारक, बाहुवईक, मोतकोय और कहु। पके फलके शुच—महुररस, शुच, पित्तदोष पमिह, रज्जदोष और कफ नाशक।

तिन्दुकोर्ष—तोष विदेश एक तोषका नाम। यह ब्रज मन्थनके फलमंत है। इस तोषमें रसाभादि करनेसे विषु, लोचका प्राप्ति होती है। (श्रीरामायणभाष्य)

तिन्दुकाहतिप्रस (स० पु०) होपान्तर कर्कर, एक प्रकार का कर्कर।

तिन्दुकाकि (स० श्लो०) तिन्दुकोष, सिंद फलका शेष।

तिन्दुकि (स० श्लो०) तिन्दुको निपातनात् प्रसः। तिन्दुक, सिंघुका पिड।

तिन्दुकिनी (स० श्लो०) तिन्दुकस्तोकाकार फलेऽस्तोकाः तिन्दुक-रजि होय। पावतकी कता, भगवत बडी।

तिन्दुकी (स० श्लो०) तिन्दुक मीराः होय। तिन्दुक, सिंघु।

तिन्दुक (स० पु०) लोहग्रह कोषका पिड।

तिन्दुक (स० पु०) तिन्दुक प्रयोदरादिनात् अण् क। तिन्दुक, सिंघु।

तिन्दुरिया—बङ्गालके दार्जिलिङ्गके फलमंत कारसेयङ्ग उपनिमायका एक भाग। यह पचा० २५ इ० ३० और दिसा० ८८ २० पू०के मध्य समुद्रपथसे २०८८ फुट ऊँचे पर अवस्थित है। यहाँ दार्जिलिङ्ग-हिमालय रेलवे (Darjeeling Himalayan Railway) का एक कारखाना है। इसके निवा यहाँ उच्च रेलवे कम्पनी को धोरसे एक चिबिन्हालय भी है।

तिन्नेवेसी—सन्ध्याक प्रदेशके फलमंत मधुरा राज्यका एक जिला। यह पचा० ८ ८ और ८ ३२ ३० तथा दिसा० ०० १२ और ०८ २५ पू०में अवस्थित है। मूलरिमाक ११८२ वर्ग मील है।

मधुरा नर १०३४ ई०में पालकडे नवाबके राज्यभुक्त

हुया। उसी समयसे तिन्नेवेसी एक स्वतन्त्र जिला रूपमें यथा हुआ है। भारतवर्षके दक्षिण-पूर्व कोणमें स्थित यही जिला उपकुञ्जकर्षी है। इसके उत्तर और उत्तर पूर्वमें मधुरा जिला, दक्षिणमें सान्धार उपसागर तथा पश्चिममें पश्चिमघाट पर्वतमाला है। इसी पर्वतमालामें यह जिलाहुङ्ग राज्यके अन्तर्ग हो गया है। गैन्वर नामक खानके कुमारिका पन्तरोप तकका उपकुञ्ज माम ८३ मील लम्बा है। बिन्नेवेसी कम्पाई १२२ मील और चौड़ाई ०४ मील है। यहाँकी भूमि साधारणतः समतल है, किन्तु पूर्वको धोर हुङ्ग झरू है। पश्चिममें पर्वतमाला ३०० फुट ऊँची है। पर्वतके मोचेकी अमोचकी ऊँचाई समुद्रपथसे ८०० फुटसे अधिक नहीं है। इस जिलेमें १३ नदियाँ प्रवाहित हैं, जिनमेंसे प्रधान ताञ्ज पूर्वी ८० मील लम्बी है और पश्चिमघाटसे उत्पन्न हुई है। पापनायम् खानमें इसका एक सुन्दर जलप्रपात है। बिन्नामदी इसके प्रधान उपनदी है, जो कुतालन् नामक खानके ऊपरसे निकली है। ताञ्जपूर्वीके किनारे तिन्नेवेसी धोर पत्तानकोटा नगर अवस्थित है। बेपार मो एक दूसरी बड़ी नदी है। इसके किनारे घातुर नगर पड़ता है। इस जिलेका उत्तरो भाग प्रायः हथारवित है और दक्षिणी भागमें ताकलन है।

इतिहास—इसका स्वतन्त्र इतिहास नहीं है वरन् मधुरा धोर जिलाहुङ्गके इतिहासके साथ मिथा हुआ है। यहाँ बहुत दिनोंसे द्रविड-सभ्यता प्रचलित है। धोर यहाँके मोती निष्काशनेका व्यवसाय लोक शोषीको भी मालूम था। कोलकेई नगरमें पाण्डव, चिर, धोर चोस राजगण राज्य करती हैं। फलमें सङ्घाई भङ्गा कोमिंके नाद पाण्डव भी इस देयके अधिकृत हुए। धरन्ध्र शक्ति ने पहले पहले इस देयमें धायः शङ्कर उपनिवेश स्थापन किया। प्रवाद है कि धरन्ध्र शक्ति ताञ्जपूर्वी नदीके उपनिष्ठागमें पनखपवर्ग पर धात्र मो जीवित है। शङ्करोंका कहना है कि धरन्ध्र ही तामिल भाषाके सृष्टिकर्ता थे। पाण्डव राजाधीको पड़की राजधानी कोलकेईमें धोर दूसरी मधुरामें थी। कोलकेईका लकैच टनेसीके राज्य तथा पिरिजास फलमें पाया जाता है। उच्च फलमें यह नगर सुन्न निष्कालीके व्यवसायका प्रधान

स्थान कङ्क कर उल्लिखित है। यह नगर अभी एक छोटे ग्राममें परिणत हो गया है तथा समुद्रमें केवल ५ मील की दूरीमें पड़ता है। यही स्थान प्राचीन कथाल नगर था। मार्कोपोलोने इसे कैडल बतलाया है। इसका वर्तमान नाम कोरडेई है। वर्तमान रामेश्वरम् नगरका प्राचीन नाम कोटो है। यह भी सुक्ता-व्यवसायके लिये शोकवामियोंके निकट परिचित था। "कोलकेई" का अर्थ सैन्यदल वा स्कन्धाधार है। कोलकेई और समुद्रके मध्यस्थित एक स्थानकी अब भी प्राचीन कथाल कहते हैं। यह प्राचीन कथाल समुद्रके तीरमें दो मीलकी दूरी पर अवस्थित है। कथालके अर्थमें समुद्रके साथ स योग विगिट लहत् इद आता है। चीन और अरबके गद्य कथाल नगरका वाणिज्य-मस्त्रम्य था। इसका चिह्न अब भी पाया जाता है। पुर्तुगोजोंने आ कर कथालको समुद्रमें दूरवर्ती देख तुतिकोरिण (तुतकुडो) शहरको वाणिज्यका बन्दर बनाया। अब भी तिन्नेवेली जिलेमें तुतकुडो एक प्रधान बन्दर है। वर्तमान कोरडेई शहर प्राचीन कथालका अग्रविशेष था, जो मन्दिरको खोदी-हुई लिपि तथा टुकसाल इत्यादिके देखनेसे प्रमाणित होता है। प्राचीन चीनके वाणिज्य-मस्त्रम्यमें कथालमें किर्मा जगह जमोनके नीचे नाना प्रकारके चीनो मष्टीके टुकड़े और चीनोके प्राचीन जड्ड नामक जहाजके भग्न-खण्ड पाये जाते हैं। अभी यहाँ लावि नामक टेगीय सुमनमान और रोमन-काथालिक मस्त्रम्यवसायो वास करते हैं। मार्कोपोलो कहते हैं, कि पाण्ड्य वंशीय पाँच भाइयोंमेंसे अशाय नामक बड़ा भाई कैडलमें राज्य करते थे। एडेन, हरमस प्रभृति अरबीय देशोंसे जहाज इस देशमें आते थे। उन जहाजों पर प्रायः घोड़ोंकी आमतनो होती थी। राजाके यथेष्ट मणि माणिक्य था। उनके ३०० स्त्रियाँ थीं। इस स्थानकी खोद कर मि-कॉल्डवेलने बहुतसे कलसके आकार मिष्टीके बरतन पाये थे, जिनमें प्राचीनकालकी एक जाति सुदें गाहती थी। जितने बरतन पाये गये थे उनमेंसे एकका घेरा १६-फुट था और उसमें मनुष्यका अस्थिपञ्जर पाया गया था। यहाँ जगह जगह बुद्ध-मूर्तियाँ देखी जाती हैं, उनकी पूजादि नहीं होती। एक जगह एक

बुद्ध-मूर्तिको उल्टा कर घोड़ी उम पर कपड़ा फींचता है। पुर्तुगोज जब पड़ने पहल इस देशमें पाये, तब उन्होंने इस देशमें कुडलनके राजाकी राज्य करने देखा था। शायंठ वे त्रिवाङ्करके कोई राजपुत्र होंगे, क्योंकि पुर्तुगोज आगमनके समय यह त्रिवाङ्कुर राज्यके अन्तर्भुक्त था। १०६४ ई० तक पाण्ड्य राजाओंके अधिकारमें रह कर पोछे यह प्रदेश सुन्दर-पाण्ड्यद्वारा अधिकृत हुआ। १३१० ई०में सुमनमानोंने एक बार इस पर आक्रमण किया, किन्तु पाण्ड्य राजा विजयो हुए। इस समय २५० वर्ष तक एक प्रकारकी अराजकता फैली हुई थी। पाण्ड्य राजाओंने तथा कर्णाटके नायकोंने इस प्रदेशकी सगद खण्डकर अधिकार कर लिया था। १५५८ ई०में विजयनगरके सेनापति नायकोंने मदुराका नायकवंश प्रतिष्ठित किया। १५६३ ई०में विजयनगरके ध्वंस होने पर यह स्वाधीन हो गया। १७वीं शताब्दीके अन्तकी उपक्रममें पुर्तुगोजोंका प्रभाव बढ़ने लगा, किन्तु श्रीलन्दाजोंने उन्हें उक्त स्थानसे मार भगाया। इन्होंने तुतकुडोमें प्रथम युरोपीय कौठो स्थापन को। १७४४ ई०में यह स्थान आर्कटके नवाबके नाम मावका अधोन हुआ। प्रकृतपक्षमें यह कई एक पालैशकार (पल्लिगार)के सर्दारोंके अधोन था। १७८१ ई० तक यहाँ केवल सर्दारोंमें परस्पर छोटी छोटी लड़ाई होती रहनेके कारण एक प्रकारकी अराजकता फैली हुई थी। १७५६ ई०में महम्मद युसुफखाने मदुरा और तिन्नेवेली इन दोनों राज्योंमें सुम्हला स्थापन करनेके लिये तिसवेली एक हिन्दू सर्दारके हाथ, (११००००) रु० वार्षिक कर स्थिर कर अर्पण किया। १७५८ ई०में महम्मद युसुफखाने चले जाने पर पुनः पूर्ववत् अराजकता दोबारे लगी। उन्होंने फिर आकर स्वयं दोनों राज्योंका शासनभार ग्रहण किया। १७६३ ई० तक वे राज्य करते रहे, बाद वे राजस्व देनेमें अममर्त्य होनेके कारण सैन्यदलसे पकड़े गये और उन्हें फाँसीकी आज्ञा दी गई। १७८१ ई०में बहुत राजस्व हो जानेसे आर्कटके नवाबने यह जिला अहमरेजोंको दे दिया।

१७८२ ई०में चक्रणपत्ति और पाञ्चालमूर्जारिषि नामक पल्लिगारके सर्दारोंके दो राज्य कर्नल फुलाटोने

कीर्ति। बहुतसे वसिष्ठार मंदार उस समय भो कई एक  
 आनोंके पासनबन्नी है। बिन्नु १०८६ ई०में ये जिन्नेरको  
 को छठे पौर यादव के टोपू मुक्तानका मदद करे। इस  
 इरसे पट्टेरीजोके बनके पञ्च ज्योतिये पौर दुर्गा तइस  
 नइस कर डाखा। १५०१ ई०में पुन बिन्नेर पारण  
 कृपा, बिन्नु इस समय समय वर्षाट पौर तिन्नेरकेनां  
 पट्टेरीजोके बाबू रहनेसे कोरि विजये गडुबडो न मयो।

इस ज़िमेमें २८ गहर पौर नवमग १४८२ पाम नगरी  
 है। कोकम क्या प्रायः २०३८६०० है। यहाँ बिन्नु  
 मुसलमान पौर ईसाइयाका नाम है। मुसलमानोंकी  
 धरिया ईसाइयोंको स ख्या पचिख है। मुसलमान प्राचीन  
 परकीर्तीके व गहर है। ये पचनेको सोनाबर या मोनायर  
 कहते पौर पट्टेरीज काग ठकी जाधि कहते है। ये सब  
 मन्ना-व्यवसायो है।

बिन्नुजोके मध्य बबौय (मजदूर पौर हलवा) बैजा  
 हर (कविश्ववसायो) ग्रामान (ताडुवासे), परिया  
 (चग्राम मरोको मोच जाति पौर जातिभट्ट), कव्या-  
 नर (मिलो) ब्राह्मण, कोडनर (तातो), सगानो (बन्ध  
 महर पौर मोच जाति) पय्यलम (नारी) बबन (बाबो),  
 शिरो (बनिर्दा) कुमवम, कुनर, चक्रिय विन्नाडुवन  
 (बोबर), कचकन (काडव) प्रभृति जातियां प्रधान  
 है। ग्रामान पौर परवर जातिके नाम इस देगमें एक  
 प्रकारके प्रधान है। परवर जातिके मनो मनुवा रोमन  
 काइलिक ईसाई है। ग्रामान लोग केबल ताडुके पंचको  
 धितो करती है। इन लोकोमें प्रीतोपापना प्रचलित है।  
 ब्राह्मण धर्मका प्रमाण यहाँ बहुत कम है। बहुतसे  
 ब्राह्मण भी मेलपूजा करते है।

बिन्नागर जातिके कोहाई बैजागर नामक एक कन्द  
 टाय है। ये महीके दुर्गमें बास करते है। इनको जो  
 जाति इस दुर्गके बाहर नहीं पातो।

समुद्रके किनारे सिद्धेन्दुर, ताडुपरकोइ ऊपर पाप  
 वायम् पौर बिनाके किनारे कोरुत्तुम नामक स्थानमें  
 तीन प्रसिद्ध बिन्नु मन्दिर है, कोत्तासुमका विषमन्दिर  
 गहरके दक्षिण 'मिड्यायो' पक्का दक्षिण कायो नामसे  
 मयाहर है।

१४४२ ई०में पुर्तगोत्र विष्णु प्राचिन सीमियर नामक

पादरोने परबरीको पइसे पइस ईसाई बनाया। सुमन  
 मानो पम्माचारके समय इन्हांमें पुत्त गीजोंका धान्य  
 लिया जा। तमीसे ये पचनेको विष्णु सीमियरको सन्मान  
 कहते पावे है।

मपुरा पौर तिन्नेरके जिसेके कहना पौर चायके  
 विप मि इस देगको पादरोने भेजे जाते है।

यहाँके १८ नयरोमें तिन्नेरको पामनकोट्ट, तुनकुडो  
 पौर कोविन्दपतुर नगर प्रधान है। यहाँको प्रधान भाषा  
 तामिल है। इसके सिवा यहाँ तेलु कर्णाटो, गुजरातो,  
 हिन्दा पौर पतनुन भाषा मा प्रचलित है। यहाँ बान,  
 चना, बंगनो, चिना, छरद प्रभृति पञ्च उपजाते है।  
 तन्नाजू कडवा, प्यात्र पाम, माल मिच, खनिया, तिल,  
 ई डो, कई ईस पौर ताडु यहाँ प्रधान कविश्व है।  
 तुनकुडोके भेंडू, घोडा पौर बैलको रफ्तना सिंहरमें  
 जोतो है पौर कचना ताडुकी मिसरो पौर मान मिर्च  
 दूसरे देगमें भेजे जाता है। उपजुच माममें कोडो  
 पौर मोप पकड़नेका व्यवसाय विख्यात है। एक समय  
 पोन्नाकोने गडू पकड़नेका व्यवसाय ऊपर पचने पचि  
 चारमें कर जिना जा। साम्यार उपमानमें प गरीजो-  
 न १०८६ ई०में पइसे पइस मुक्का निक्कामनेका व्यवसाय  
 पारण किया। यहाँके मुक्का लतना लच्छुर नहीं  
 है गडू व गदेगमें पचिख भेजे जाते है।

यामनको सुविधाके लिए यह जिना ४ भागों पौर ८  
 तन्नुजामें बाँटा गया है जेमे-गिय केको तातुन्न (पामन-  
 कोट्ट) तापोडारम् पौर तेडुगई तातुन्न (त तन्नुजो)  
 नागानुरो पम्पामसुद्रम्, तिनकायो (यम देवो),  
 योबिन्नपुत्तुर, मातूर, गहरनाहनारकोबिन्न (याकिवि  
 पतुर)। रेल लाइन मो इस ज़िमेमें भर है। माच पौर  
 बून मदिनेमें यहाँका ताप परिमाच इन्को जायामें ८३  
 नका दिसम्बर पौर जनवरो मजोमें समान ७७  
 है। वार्षिक उद्विपात २५ इंच है।

२ मन्नाइके पन्मर्त लक्ष जिसेका एक उपबिमान।  
 यह तिन्नेरकी पौर स करनाहनार-कोविन्न तातुन्न सेकर  
 ल मन्नि कृपा है।

३ लक्ष जिमेका एक तातुन्न। यह पचा ८ १६  
 से ८ १० ई० पौर देगा ७७ १४ से ७७ ११

पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ३२८ वर्गमीन और लोकसंख्या प्रायः १८४६४७ है। इस तालुकमें दो गहर और १२३ ग्राम लगते हैं। कोदगन, पालयन, तिन्नेवेली, पूर्वीय मरुदूर और पश्चिमीय मरुदूर नामक नहरोंमें जन मिन्नका कार्य होता है।

४ इमी नामके तालुक और जिलेका एक प्रधान गहर यह अक्षा० ८°४४' उ० और देशा० ७७°४१' पू०में ताम्ब-पर्णी नदीके किनारे मन्द्राज गहरकी रेलसे ४४६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इसका ऐतिहासिक विवरण अस्पष्ट है। १५६० ई०में नायकवंशके अधिष्ठाता विखनायन इस गहरका संस्कार किया था। यहाँका एक प्राचीन शिवमन्दिर बहुत प्रसिद्ध है, अन्यान्य बड़े बड़े मन्दिरोंकी नाईं इसमें भी सहस्रस्तम्भ-नाट-मन्दिर है।

इस गहरकी लोकसंख्या प्रायः ४०४६८ है, जिनमें ३४६६४ हिन्दू, ४६८८ मुसलमान और ८०७ ईसाई हैं। १८६६ ई०में यहाँ म्युनिसिपलिटी स्थापित हुई है। इस गहरकी वार्षिक आय ३६,५०० और व्यय ३४,८०० रु० है। यहाँ दो कालिज, एक गिल्पविद्या सिखानिका स्कूल तथा कई एक छोटे छोटे स्कूल हैं।

तिन्मुकिया—आसामप्रदेशके लखिमपुर जिलेके अन्तर्गत डिब्रूगढ़ उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २७° २८' उ० और देशा० ८५° २१' पू०में अवस्थित है। यहाँ एक चिकित्सालय है। आसाम-वङ्गाल और डिब्रू-मटिया रेलवेका यहाँ मङ्गल होनेके कारण यह स्थान दिनों दिन प्रसिद्ध होता जा रहा है।

तिपटा ( डि० पु० ) कमखाव बुननेवालोंके कारखेको एक लकड़ी। इस लकड़ीमें तागा लिपटा रहता है और यह दोनों बेशर्तके बीचमें होता है।

तिपतूर—मडिपुरके तुमकूर जिलेका तालुक। यह अक्षा० १३° ०' और १३° २६' उ० और देशा० ७६° २१' और ७६° ५१' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ५०८ वर्गमीन और लोकसंख्या ८०७०८ है। इसमें चार गहर और ३८१ ग्राम लगते हैं।

तिपसा ( डि० वि० ) १ जिसमें तीन पत्त या पागर्न हैं। २ जिसमें तीन तागे हैं।

तिपाई—दक्षिण-आसामकी एक नदी। मणिपुरमें तुम्बाइ और लुसाइ पर्वत पर तुइवर कहते हैं। लुसाइ पर्वत पर यह नदी घूमती हुई कछाड़के दक्षिण-पश्चिमकोणमें 'वराक' नदीसे मिल गई है। इस मङ्गलस्थान पर तिगाडेसुख नामक एक ग्राम है। इस ग्राममें लुसाइयोंके साथ व्यवसाय चलता है। लुसाइ लोग रुई, एक प्रकारका मोटा कपड़ा, भारतीय रबर, हाथीके दाँत, मोम इत्यादि वनजात द्रव्योंकी अपने साथ ला कर यहाँके चावल, नमक लोडिके यन्त्रादि, कपड़े, नकली मोतीको माला और तमाकूमे बटका करते हैं।

तिपागढ़—मध्यभारतका एक प्राचीन स्थान। यह चम्पा जिलेमें अवस्थित है। यहाँ तिपागढ़ पर्वतके ऊपर तिपागढ़ नामक एक किला है। इस किलेके निकट एक सरोवरसे तिपागढ़ी नामको एक नदी निकली है। यह प्राचीन दुर्ग, कनिंङम माइवके मतसे गौड़ राजाओंकी कौर्त्ति है। दुरारोह पर्वत, वामके जङ्गल तथा गम्य पथके अभावसे इस दुर्गमें महजमें नहीं जा सकते। राम्हा इतना दुर्गम है, कि तिपागढ़ी नदीको डो सात बार पार करना पड़ता है। यह दुर्ग तिपागढ़ पर्वतको एक दुर्गम उपत्यकाके ऊपर अवस्थित है। इस दुर्गके नीचे एक बड़ा सरोवर है जो पार्वत्य भोलकी नाईं दीख पड़ता है। यह दुर्ग सरोवर चारों ओर दीवारसे घिरा हुआ है। केवल दक्षिण-पूर्व की ओर दीवार नहीं है। दीवार पर्वतके अधिरोह और अधरोहके अनुसार एकक्रममें पांच गिखरकी घेरे हुए है। इस वेष्टित स्थान में बहुतसो समतल उपत्यकायें हैं, जिनमें तिपागढ़ी नदीकी उपनादियाँ प्रवाहित हैं। उन नदियोंका जन प्रायः पहाड़के ढालवाँ स्थानसे न बह कर इधर उधर समतल भूमिमें गिरता है। बहुतसे छोटे बड़े सीते उत्पन्न होनेका यही कारण है। दुर्गके ममत्त अंशको निकटवर्ती हरनदन्द ग्रामके लोगोंने भी नहीं देखा है और पहाड़के उभे अंश पर जानिकी सुविधा न होनेके कारण कोई भी वहाँ नहीं जा सकता। प्राचीन बड़े बड़े प्रस्तर-खण्डोंसे गठित है, किन्तु अभी तककी ऊँचाई किसी जगह भी ५ फुटसे अधिक नहीं देखी जाती है। पर्वतके दक्षिण-पश्चिम गिखरके निकट बहुतसे नकानोंके

भिन्नाभयय द्वेषमिहं पारि है । कदा जाता है, कि यहाँ एक राजमन्य था ।

पर्वतमें एक इनुमानको पाइजिन कुदो हुई है । यहाँ कहीं भी कठोर चिन्ताके नहीं पाया जाता । एक तासाय चारों ओर बड़े बड़े पर्वतोंके बंधा है । गुना, सुर्की पर्वतों ओर बिचो प्रकाशके मत्तानेका व्यवहार कहीं भी नहीं है । पर्वतों इतने छोड़ियां नमो हुई हैं । इसके एक तरफका भाग टूट फूट गया है । प्रवाद है, कि इसी भस्मनुष्यने तिपागडो नदो निकली है, किन्तु इस ज्ञानके अन्तका निश्चयना पतुमान नहीं किया जाता है । बिचो पूरवो दिग्गये तिपागडोको उत्पत्तिका कारण अज्ञानी है । प्रवाद है, कि इस दुर्गकी पर्वतों रामो एक दिन मोबाहित करने कतरते कतरते उदके मध्य रखके जाय पड़य हो गई, तमीये यह कालमें परिश्रत हो गया है । एक दूसरा प्रवाद है, कि हुपदराजने इन दुर्गका निर्माण किया है । ये सुहरागडमें रहते और अमीनकी एक सुरग को कर यहाँ पारि है । यहाँ उनका एक पचाड़ा था । पाइकोने राका भी सुरग हो कर इस पचाड़में पारि है, किन्तु हुपदराज कबे कहीं भी देख नहीं सकते है । तिपाङ ( वि० पु० ) १ तोन पाट जोड़ कर बनारि हुई थीक । २ वह बिचमें तीन पर्व हैं । ३ वह जिनमें तीन बिचने हैं ।

तिपारी ( वि० जी० ) बरमातमें पापके पाप जिनकासा एक प्रकारका जोड़ा मध्य है । इसके पर्वो छोटे और सिंघे पर सुकीये होते हैं । इसमें सर्वेट फूल गुच्छोंमें कमरे हैं । इसके दूसरे नाम—भखीय, परपोटा और जोटो इस मरी ।

तिपारा ( वि० पु० ) बड़ा छपा जिनमें तीन चरये एक साथ पल पवे ।

तिपडो ( वि० वि० ) जिनमें तीन रथियां एक साथ एक एक बार खींचो जाय ।

तिपारा ( वि० वि० ) १ तीपरो बार । ( पु० ) २ वह मध्य ओ तीन बार चलाया गया हो । ३ वह चर या कोटरी जिनमें तोन द्वार हैं ।

तिपासी ( वि० वि० ) तोन दिनका नामो ।

तिथी ( वि० जी० ) देसरो ।

तिम्बत—हिमाचलमें कतरमें एक देस । तिम्बतो भाषामें इसका नाम 'पो' है । इसके कतरमें कोनताता, पूर्वमें कोन दक्षिणमें हिमाचल पर्वत और पश्चिममें गुान है । इसका परिमाणफल १८०००० वर्गकोस और लोक संख्या प्रायः १००००० है । इसके दक्षिणमें कंधा हिमाचल पर्वत है । उत्तरमें मो बीसा ही एक पश्चिम बिन्धीके पर्वत है । सोमो इस पहाड़को 'विमुत्तन' हिन्दुस्थानो कैलास कहते हैं । पूव ओर पश्चिममें बहुतसे पर्वत हैं । इन पर्वतोंके पश्चिमको बहुतसो नदियां निकली है । यह देस पश्चिम उत्तर ओर मोत-प्रमान है । मोतका अधिक प्रादुर्भाव जर्मिने यहाँ बहुत उद्भिद नहीं जनमते हैं, इससे यहाँ अभावक दुष्प्राय है । इस देसमें तरह तरहके पक्षी पाये जाते हैं । माय, भैंस और चौके तथा खरर हो यहाँके साधारण पय हैं । हिमाचल-यक पर बेलमाडो पर्वतों मवेशी इत्यादि नहीं जा सकते हैं, इसीकारण मैडों ओर बकरे हो मोर डीनेका काम करते हैं । पर्वतो नामक एक प्रकारको गोब्राति पाई जाती है, इसकी पूरवें चामर बनता है । चपटी देके । कपूरु री सुग मो इस प्रदेशमें बहुत है । इस देसके बकरिके रोपसे दुग्घाली बनते हैं । एक देगे ।

तिम्बतके कुछे बहुत बड़े पौर बनवान् होते हैं । यहाँको ज्ञानिमें मोना, पारा, सुझाया और नमक पाया जाता है । तिम्बतके सोम देसमें बहुत कुछ तातारोसे मिलते सुकते हैं । ये पत्तक माल पौर सन्तुष्टचित्त है । यान पौर जने बड़ा तुलना हो इन सोगीका प्रधान स्थल स्थल है । इनका वाणिज्य कोनके साथ चलता है । सुर्दको लकाने तथा गाड़मेंभी प्रवा इध दिग्गमें नहीं है । ये पारसियोंकी गाई सुर्दकी स्थानमें खे क पारि है, किन्तु वात्रकको देखको अत्यन्त है । मैडोका माल इन सोगीका प्रधान पद्य है । बहुतसे मोन कंधा माल पारि है । ये सब भारि मिल कर एक जामे बिकाइ करति हैं । बड़े भारि प्योपसन्द करनेके अधिकारी हैं । तिम्बतवासो मोह है । इनका वात्रकमन्थदाय कामा नामके प्रविष्ट है । दुर्द-कामा मवेशी प्रवान पौर तयि-नामा उद्यक कोये है । तिम्बतवासियोंका विश्वास है कि दुर्द नामा जय ईश्वर है मनुष्यके मयमें मनुष्यके मध्य रहते है,



उनको 'मृत्यु' नहीं है; लेकिन कभी कभी शरीर बदला करते हैं। दलई-लामाको मृत्यु होने पर शास्त्रोक्त विधिप नक्षणयुक्त शिशुको दलई-लामाका 'नवशरीरधारण' जान कर उसको उक्त पद पर अभिषिक्त करते हैं। सब कोई पहले दलई लामाको देहको मन्दिरमें रख पूजा करते हैं। तब लामा बुढ़ने अंश ममके जाते हैं। ये चीन-मन्नाटके गुरु और धर्मोपदेशक हैं।

तिब्बतके समस्त मन्दिरोंमें बुढ़प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। यज्ञको भाषा स्वतन्त्र है। अक्षर बहुत कुछ नागरी अक्षरसे मिलते जुलते हैं। इसको ७वें गताब्दोंमें यह लिपि भारतवर्षसे तिब्बतको चला गई है। ये काष्ठ-फलकमें खोद कर पुस्तकादि मुद्रित करते हैं।

ले लामा और टिमुलम्बू ये तीन नगर इस देशमें सर्वप्रधान हैं। लामा नगरमें दलई-लामाका मन्दिर है। इसीमें यह बहुत पवित्र स्थान माना गया है। काश्मीरके समीप लद्दाख (लडाक) प्रदेशको छोड़ कर तिब्बतके और समी अंश चीनके अधीन हैं। चीनराजके एक प्रतिनिधि यहाँके शासनकर्त्ता है। लामा नगरमें ही ये रहते हैं। लडाकको राजधानी ले है। लडाक देखो।

आमदो नामक स्थानके लामा सोनपो नोमनखन तिब्बतका भू-विवरण लिख गये हैं, जिससे निम्नलिखित विवरण संगृह्यते हुआ है—

तिब्बत देशमें शीत और उष्णताका अंश बराबर रहनेके कारण यहाँ न तो अत्यन्त गर्मी पड़ती है और न अत्यन्त शीतहीमा प्रादुर्भाव है। इसी कारण यहाँ दुर्भिक्ष नहीं और हिंसक पशु तथा कीटादि नहीं पाये जाते।

पर्वतमाला।—लोहत्रा प्रदेशमें तिपो, चोमोकनकर, कुलहरी, कुल-कन्यो, उत्तर नाग प्रदेशमें ह्वे; टो-कान्दस प्रदेशमें छि-कङ्करचित और नाड-छेन-मङ्गल है। इनके सिवा यरलुङ-सहस्र, तीश्रोकोर्पो, खवा-लोदि, सहत्राकोर्पो, मछेनपोमर इत्यादि वर्णसे ढकी हुई सफेद शिखरयुक्त ऊँचे पर्वतमाला है। छोति-गोङ्गिया, मरि-वर च्यम, जोमोनगरौ, कोन्स-तुखन छेमी प्रभृति पर्वत शृङ्खला घास, जड़ी वृत्तोंके उद्भिद् और सुन्दर तरुलता-शुल्भसे परिपूर्ण है। इसके अतिरिक्त क्वाणपर्वत देश-मय व्याप्त है।

हर।—मफम् यु चहो (मानस-मरोवर), नम-चहो फि-उग-मो, चहा-चहो, यर त्रो गयु चहो, फग-चहो, चहो कियरेंग न्योरङ्ग, खो-स-हो, गीया-मो प्रभृति ऋत हैं। एतद्भिन्न और भी कई एक परिष्कार मीठे और स्वच्छ जलयुक्त ऋत इस देशके नाना स्थानोंमें देखे जाते हैं।

नदी।—चांग पो (ब्रह्मपुत्र), सेङ्गेखुम्बू (सिन्धु), मञ्चिय खुब्ब, चहा-सङ्कि, जङ्गू, डूङ्गू, त्रि-कू, मङ्गू (छोयाङ्ग हो), से-कू, वे-कू, माङ्ग-कू, हजुनगा-कू और चाङ्ग-कू अपनी अमंश उपनदियोंके साथ इस देशके नाना स्थानोंमें प्रवाहित हैं।

विस्तृत अरण्य, चारणभूमि, लणमय प्रान्तर, लणपूर्ण उपत्यका, कर्पित क्षेत्र और अनुर्वर अधित्यका वालुका-मय मरुदेशके नाना स्थानोंमें है। ग्यनग (चीन), ग्यगर (भारतवर्ष), पेरमिग (पारस्य) प्रभृति वृद्ध देशोंको सोमामें जिन तरह बड़े बड़े समुद्र हैं, इससे चारों ओर भी उसी तरह बड़े बड़े पर्वत हैं। इन पर्वतोंके दूमरे पारमें ग्य-नग (चीन), ग्य-गर (भारतवर्ष), मोन् (हिमालय प्रान्तवर्ती प्रदेश), व-या (नेपाल), ख-छे (काश्मीर), स्तग-सिसगम् (ताजिक वा पारस्य) और होर (तातार) प्रभृति बड़े बड़े देश अवस्थित हैं। इन देशोंको उर्वरता जिन बड़ी नदियों द्वारा होती है, उनका अधिकांश ही इस 'पो' (तिब्बत वा भोट) देशसे उत्पन्न होनेके कारण यह प्रदेश जम्बुलिङ्ग (जम्बूद्वीप) खण्ड-का वैन्दस्थान कहा जा सकता है।

'पो' देश प्रधानतः तीन भागोंमें विभक्त है—

- १। तोङ्ग-रो कोर-सुम—ऊँचा या छोटा तिब्बत।
- २। बु-साङ्ग (चार प्रदेशोंमें विभक्त)—प्रकृत तिब्बत।
- ३। टो, खम और गङ्गू, बड़ा तिब्बत।

ऊँचा तिब्बत (संज्ञेमें पो कुङ्गू)—इसके कई उप-विभाग हैं—तनग-मो लद्दाख, मङ्गू-यू-सहाङ्ग सहाङ्ग, गुगुलुहरङ्ग (पुरङ्ग)। प्रत्येक उपविभाग नौ जिलोंमें विभक्त है।

पहले 'पो' देशको शासन-धीमा तुरुष्क या तुर्कोंके देशके कोण तक विस्तृत थी। ऊँचा तिब्बत प्रकृत उत्तर और दक्षिण इन दो भागोंमें विभक्त है। उत्तरभाग वद-कशानके मध्यमें है। यहाँ तिब्बतियोंका एक दुसोङ्गू

(दुर्ग) है। दोष नामक दुर्गात् आति पर शासन करनेके लिये दुर्गके साक्षात् तिम्हलचिपतिके पचीन प्रतिगिचि खरुप हैं। ये पक्षी लोकपराज कइसते थे। उच तिम्हलके पूर्वमें तुपारमपिगत उच तीम (कोलास पर्यंत), मयस (मानस-सरोवर) उच और कुहु घोळ नामक तिम्हलरखा कइ बहुत पवित्र जाना गया है। जो इसे पीते हैं वे सुखि पाते हैं। उच तिम्हल तोगर नामक स्थानके एक क्षतम्ह मारपोन (बनर) या शासनकर्ताके पचीन है और ये मो सासाके प्रधान शासनकर्ताकी मात वृत्तमें है।

मानससरोवर पौग के नाम पर्यंतकी महिमा एक तिम्हलोक मुद्राकर्म लिखी है, कि कोनासके चार प्रधान नदियां निकली है। इन नदियोंका उत्पत्तिस्थान कसमय बरको, गिह, घोड़े और सिद्धके सुख सरोखा है। यन्हाव्य मुद्राकर्ममें उन्हे कसमयः माय, बोड, मय र और मि वसुधके तुम्ह बतलाया है। इन्हीं जानोसे गङ्गा, नौदिह (ब्रह्मपुत्र), नयु (यन् सस्) और सिन्धुको उत्पत्ति हुई है।

सिन्धुनदी पश्चिम दिगामें तिम्हलके पर्यंतत कइति प्रदेशमें होती हुई कायकोरके पर्यंतत कविज्ञान नामक स्थानमें दक्षिण-पश्चिमकी ओर मारतमें प्रवेश करती है। पयु नदी कोनासके उत्तरपश्चिमापके निकल कर बोकर प्रदेशके मन्ध होती हुई पश्चिमकी ओर तुकिंकीके देशमें प्रवेश करती है। कोलास पर्यंतके सोता नामक और एक पृथगे नदी पूर्वाधिके निकल कर पची मानस खोबरमें गिरती है। कहा जाता है, कि पक्षी यथ देशके मन्ध जो कर पूर्व सावरमें गिरतो हो।

कोलासपर्यंतके सामनेका गोपदेशी नामक एक छोटा पर्यंत तीर्थकी द्वारा इतुमन्ध कहजाता है। इस पर्यंतमें बसके जमीन कोदने पर लैये गई हो जाता है बंसे दाग दोष पड़ते हैं। इसमें विषयमें कई एक गल्प हैं तिम्हलो कोम कहते हैं, कि श्री-सुधन मिशरय पौर मरो पोमसुच नामक दो तिम्हलोय प्राणी पक्षितोंके चर्म विचारके समय उनमेंसे पीप ल्याकि मीचे विर पड़े थे, उन्हींकी देखके भारते स्थि चिन्न हो गये हैं। भारत भाषिणीके मारी आर्त्तकके नाथ विद्याकाष्ठमें उनके

मराजातके यथ चिन्न लतपत्र हुए हैं। उनका यह मो कहना है, कि पक्षी यथ पर्यंत कोलासके ऊपर हो पवञ्जित जा, सिन्धु इतुमान इसको कोलासपर्यंतके पन्ध कर क्षतम्ह काय-सुबंके लप पर रहते थे। इसी से जाना जाता है कि तीर्थिक (ब्राह्मण)-जन्म रहे इतुमान पर्यंत कहते हैं। इस पर्यंतके ऊपर कई कइय ऐसे चिन्न हैं। भारतप्राप्तो उन्हे गिहदुर्गा, कात्ति क, बकासर, इतुमान मधुतिने पदचिह्न बतलाते हैं। यहाँ जितने-श्रीमद्विदुयेर नामक एक पवित्र सुधा है। कोलासके पूर्वाच्छके सोम कहते हैं कि ये समस्त चिन्न सिद्धपुत्रोंके हैं। 'नदाक' प्रदेशमें से कर (से) दुर्ग पवञ्जित है। यहाँके कोय काश्मीरकी गाई परि कइसारे हैं। इनको डोयी चोम ऐशके अणुरचिर्को डोयापी होतो हैं। राजसगव कास पौर कासे रंजको डोयो पवन्ते हैं। कइयके पूर्वको पौर सुमी प्रदेश है। यहाँका बोडिहका पायस बहुत निख्यात है, जो लोचन-रिम्हने भाङ्गो द्वारा प्रतिष्ठित हुआ है। इसके पूर्वमें सुह्य प्रदेश है। यहाँ पक्षी कोन-सुधन-सम्पे व शोच-पना राज्य करते थे। राजा बोड इन वर्षमें बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं। इसके दक्षिणमें परम्हल पुराना और प्रसिद्ध शोमो बमनी का मन्दिर है, जिसे सुरकोय मन्दिर भी कहते हैं। पक्षी इस स्थानके सुह्य दुर्गमें एक सन्धाने रहते थे। उन्हींके अणुके छोटोंमें ७ धार्य बोडपक्षितों को पान्नद दिया था। ये धार्याय लव मारतवच को कोटि थे, तब इक्षमि सन्धानोके पाप छान बोरे रइ कहते थे। बहुत वर्षों बोल चुकने पर सी से नापस न गये। अन्तमें स न्यासीने कोरोंको सोल कर देखा, कि उनमें कई एक बैबिडां हैं और उन पर 'बमको' नाम लिखा हुआ है। सन्धानोने उन बैबिडांको मो कोला उन्में कई एक चांदोके टुकड़े पाये। ये समस्त टुकड़ोंको से का सुमलस नामक ज्ञानको गये और यहाँ उन्हींको कयो चांदोके एक सुचसुति निर्माक करार्ये। जब प्रतिमाके छुटनेतक तैयार हो गया तब वह पापने पाप चलने लगी। इस पर सन्धानो बहुतसे कोणोंको अपने साथ ले उच प्रतिमाको तिम्हल से पाये। यहाँ पयु च कर बच प्रतिमा कपच हो गई। उन्को ज्ञान पर स न्यासीने

‘ट्हे’ प्रतिष्ठित कर एक मन्दिर बनवाया और उसका नाम ‘जमलो’ रखा। जमलोका अर्थ ‘अवल’ है। तिब्बत पुराणके पूर्वमें ल्दवमत्यम नामक एक बहुत विम्बित समतल क्षेत्र है, जो पहाड़ों लामा ग्रामनरुत्तीर्षाके अर्धोत्तम था। अगले यह नैजालके अधिकारमें है। इसमें पूर्वमें जोङ्ग द्मोङ्ग नामक एक स्थान है। यहाँ एक बड़ा दुर्ग और कारागार तथा बहुतसे मठाराग हैं। इसके दक्षिणमें किरोङ्ग नामक स्थान है, यहाँ उच्च तिब्बतकी अन्तिम सोमा है। यहाँका समनल-निद्र नामका आद्यम पुराणन और पवित्र है। तिब्बतके चार विख्यात चोमो (बुद्ध) मन्दिरोंमें एक को क्रया पद्मे कही जा चुकी है, एक दूमरा अर्थात् चोमो-ओयनि स्माङ्ग-यो नामक मन्दिर इस स्थानमें विद्यमान है। इसके दक्षिणमें मन्वु नयाकोट (नवकोट) और अत्यात्य स्थान नेपालाधिष्ठित है। इसके पूर्वदोनों ननन वा ननम तथा उसके समोपका गुणयङ्ग नामक स्थान जैतुमुम मन्दिर, व-नोचव और तैपङ्ग नामके तीन पण्डितोंके जन्मभूमि है। लुम्बर नामक स्थानमें मन्दिरपको म्यु हुई थी। ननमके नीचे नलम नामक गिरिवर्त्म (घाटा) नेपालमें प्रवेग करनेका एक पथ है।

प्रकृत तिब्बतके प्रधानतः दो भाग हैं—तुमाङ्ग और ऊ (वू) ये भी फिर चार न अर्थात् सामरिक विभागोंमें विभक्त हैं; यथा—रु. चेरु, थानरु और रुनसु। और राजाओंके समयमें यड प्रदेग छ थि-कीर नामक विभागोंमें विभक्त था। याम्दो नामका छटप्रदेग एक स्वतन्त्र थि-कीरके जैमा गिना जाता था। नेपाल-सोमाके जोमो-कङ्गकर नामके ऊँचे तुपारमण्डित पर्वतके निकट मन्दिरप पण्डित पाँच परो-विद हुए थे। ल्दव-छो नामक गिखर पर त्गिरिङ्ग त्गि-ङ्गा नामक एक आनोका वाम स्थान था। इसके मूलदेगमें पाँच तुपार-ऊट है, जिनके जलका वर्ष परस्पर विभिन्न है। ये छट उक्त आनोके नाम पर उल्लग किये गये हैं। इस स्थानके आद्यमके उत्तरमें कोमा नामक एक बड़ा तुपार-ऊट है, जो तिब्बतके चार प्रधान तुपार-ऊटोंमेंसे एक है। इसके समोप रिवो नगसमाङ्ग नामक एक बहुत पवित्र स्थान है। यहीं पंग्सम्भव नामके प्रसिद्ध बौद्धाचार्यको स्तो

लचम् मन्दरवाका प्रिय-आवास था, यहाँ उस देवकी स्तोका पदविष्णु देखा जाता है। ननमके उत्तरमें गुङ्ग मडला नामके ऊँचे पहाड़ पर विख्यात तम्बुपो नामक वारह अम्भराश्रीका वास था। पद्मभवने इन्हीं उपय टिना कर तोरिङ्ग (ब्राह्मण)के पंजिमे बौद्धधर्मको रचा तथा मागनवर्षने गत्रुभावने ब्राह्मणोंका आना बन्द कर दिया था। तिब्बतों लोगोंका विश्वास है, कि तमामे गत्रुभावमें कोई तोरिङ्ग तिब्बतमें प्रवेग नहीं कर सकता; किन्तु यह ठीक नहीं है। भारतवर्षमें अब भी ब्राह्मण परिव्राजक तिब्बत देखने जाते हैं। इस पर्वत पर गुङ्ग यङ्गला गिरिवर्त्म है। इस राह छो कर उत्तरको और जानिसे टेरिङ्ग नामक जिन मिलना है। यहाँका तम्प-माङ्गे नामक पण्डितका तपोवन, गुहा और समाधि-स्थल है। ये ही तिब्बतोय धर्मके गिद्येत् ग्राह्यके मत-प्रवर्तक थे। यहाँ चीन राजाको एक टल मन्त्र और एक सोमान्तराजक सेनापति हैं। इसके पूर्वमें तिमि जोङ्ग (दुर्ग) और उत्तरमें गेकरटोङ्ग जोङ्ग (दुर्ग) तथा उसके समोप एक कारागार अवस्थित है। इसके निकट गेकर छोटे आद्यम है। इस आद्यमके पाम पा-शाक्य नामका मठाराग है। जिनमें एक इतना लम्बा चौड़ा घर है कि उसमें बहुत अमानोसे घुड़दौड़ हो सकती है। इस घरका नाम दुखङ्ग-कर्मो है। यहाँ तास्विक बौद्धमत प्रचलित है। पा-शाक्य आद्यमसे उत्तरमें एक टिनके राक्षी पर, महु तग जोङ्ग (दुर्ग) नामक स्थानमें खुडलामा गोनगो मादुव नामक महापुरुष सिद्ध हुए थे। यहाँ पा-गोन्यिम नामको एक गुहा और थारिग-कर्वो नामक एक प्रकारके अवेतवर्ष अक्षरोंमें उल्कीर्ष शिला-लेख है। इसके समोप त्रिकोण आकारका एक काला पत्थर देखा जाता है जिसे लोडोन कहते हैं। प्रवाद है, कि यह पा-गोम लामाके छत्पिण्डको प्रस्तरोभूत भवस्या है। बहुतसे मठ इसके चटके हुए टुकड़े उठा ले जाते हैं। यह-जोङ्गके उत्तरमें एक तुपारगत ऊँची पर्वतमाना है। इसके दूरमें पारमें म्दुसो नामक और (मनुष्य-मञ्ज) जातिके लोग रहते और तारि-होर कहलाते थे। ऐसा साधारण लोगोंका विश्वास है, कि उक्त पर्वत-मानाको तुपारगणिके गल कर जमीन पर गिरनेसे

तिब्बतका बहुत पवित्र जगह है। इसके पुराना इतिहास (सुमनमान) भी वाम करते हैं। ये काम गुरुक प्रयोग हैं। इन लोगोंके देसके बाद म्यानम् न मको विस्तृत मन्त्रमि पड़तो है और फिर लघु-बाग-गिहवा नामको एक सुमनमान जाति रहती है। उन लोगोंके पास बौद्धधर्मकी विरगता नथी था रही है। जोन लघु नामके स्थानमें बहुतसे मृत मनुष्योंकी हड्डी और कोपड़ी पाई जाती है। शाक्य और सिंगुय पाचमको सङ्घर्षमें जितने मनुष्य मारे गये थे, शायद ये सङ्घर्षकी पक्षिमाम्ना होंगी। पा शाक्य सङ्घागमके निष्कट तमाङ्गी यो नदी प्रवाहित है। इनके तोरवर्ती लघु-बन्धे कुम रिङ और पुन-तुम जोन-गो-प्रधति स्थान मान् गवर्मेण्डर प्रयोग है। इन मन्त्र स्थानोंमें बहुतसी पवित्र मूर्तियाँ स्थिता जाती हैं। यहाँका पोपु-वाम-दीन नामका प्रथम प्रोपुमोचकने बनवाया है। पुन तुमको निङ नामके पाचम कुन विद्येन-ओमी मङ्गलमे बनाया है। इस स्थानमें तथा पुन-तुमो निङ प्रधति स्थानमें गैन्ध नामके षोडशार्थकी शिष्यपरम्परा नाम बरती तथा षोडशार्थकी शाक्यभक्त ब्याहारक यो विचार प्रत्यादि पड़ती थी। पुन-तुमो-निङमें जोनङ्ग मत् प्रचलित हुआ है। यहाँ कुन्वर नामके सन्घाटके मुख टोमीन फग-वा रहते थे। बाद जोनङ्ग प सम्प्रदायिक मतको जोड़ते हो जानेसे यह प्रायः जोपना ही रहा। इससे दक्षिणमें तयि-स कुन-पो सङ्घागम है, जो स्पे-गदुन्तुन द्वारा स्थापित हुआ है। यहाँ पश्चिमताम सुव मनुष्यके धाकारमें पम्बेन मन् पा खनया नामने स्थापित हुए थे। तयि-स कुन-पो नामके पाचममें उनकी कई एक लक्ष्यकी समाधियाँ हैं। इनके बसोप कुन लक्ष्य निङ नामका प्राकार प्रदेन-तनगर मिमने बनाया गया है। तयि-स कुन-पो पाचमके पूरबकी उत्तर म्यङ्ग नामके स्थानमें तिब्बतका तीसरा प्रसिद्ध नगर म्वन्-तुमि प्रचलित है। इस नगरका व्यवसाय बहुत बढ़ा चढ़ा है। पक्षमें यहाँ मित्पु-बुल कुन म यज्ञ नामके राजाको राजधानी थी। उन राजाने यहाँ गोमङ्ग मन्थीन दिनके नामके सङ्घागम स्थापन किया। तयि-स कुन-पो पाचमके दक्षिणमें जोई-किन्-टोमि नामके एक सन्ध्यामीका तपोवन है जिसे जोन-यमी चार्-जोङ्ग कहते

हैं। यहाँ एक पाचमजगह निर्मांर है जिसके अन्तमे रोग नाश होता है। इसके सिवा-चरपाद-तोको निङ्ग-मूर्ति परत पर खुदो हुई है। त्माङ्ग-यो नदीके किनारे त्माङ्ग-रङ्ग लक्ष्यकामे रिम्बे-लुङ्गप जोङ्ग प्रचलित है। यह रिम्बेन पुङ्ग नामके राजाके द्वारा बनाया गया है। निङ्ग-बुल-गो चर-म्व नाम उ घाममें पम्बेन रिन-योके नामके तयिनामाका नाम हुआ था। इस उपलब्धकामे माना स्थानमें बहुतसे खासा पाने अमपचन किया था। यहाँ पक्षमे तपोवन है जिन्को जोङ्ग तथा पक्षिमे लगी है। म्वन्-तुमि नामके दक्षिणमें परतमानाके दूसरे प्रयत्न रङ्ग नामके स्थान है। इनके पूर्वमें सिन्धु योन्ध नामके राजाका अममभान फोला उपाम है। तयि-स कुन-पो पाचमके दक्षिण-पूर्वमें किङ्ग चर-म्व नामको परतमानाके दूसरे पारमें खोन्-जोङ्ग नामका दुम पीर एक प्रदक्षे मन्ध बाधामार निर्मित है। इस स्थानके बाद डिङ्गि-जोङ्ग है। इसके दक्षिणमें जोन-ट-जोङ्ग नामका राज्य है जिसे भारतवासो सिक्किम कहते हैं। म्वन्-तुमि नामके डोब-न-चिचमें परतमानाके दूसरे किनारे एक रो जोङ्ग नामका दुम प्रचलित है। यहाँ माना गवर्मेण्डका सोमाना दुम है। इसके दक्षिण-पूर्वमें म-पो-दुङ्ग (मुटान) राज्य है। उत्तर म्यङ्ग नामके स्थानके लक्ष्मण परतमाना पार होने पर यरदोक (यम-दो) नामके स्थान मिलता है, जो डोब-पग-रीके उत्तरमें पड़ता है। यहाँ तिब्बतके प्रथम चार अदोमियेयर दोक-सुन-तुमो नामके एक प्रद है। गोल-हालमें प्रदका उपरो मान कम जाता है। उस समय बृहमेंके बव्यभनिजो मारि शब्द इमिया निष्ठकता रहता है। जिसेके मतसे यह प्रद मसुद या विंङ्को गरक और जिसेके मतसे बाबुका मन्द है। इस प्रदको महानियां हीटी पीर सब एक ही धाकारको होते हैं। बरदोक नामके स्थानमें पूर्वमें म्यङ्ग-पो और किन्-तु नाम-की नदीके लगनस्थानसे कुछ पूर्वकी बट-चर जङ्ग नामके स्थानमें प्रतिषर्ष नामा जोनांकी मभा होती है। इनके निष्कटवर्ती यका नदीके किनारे कुनङ्ग दोर-न-चरङ्ग नामका मन्दिर राजा रन्पुचन द्वारा निर्माण किया गया है। इनके पूर्वमें सिन्धुय शीरव सुपोन नामके स्थानमें होम-कोटन शीरव नामके देवताको दो लक्ष्य प्रतिमाके हैं।

पहली प्रतिमामें गिरा-मंस्थान और मांसपे समूह-माफ साफ टोख पडती है। साङ्गु उपत्यकामें नेहुओङ नामका प्रासाद और दुर्ग है। यहां फगमो-दुववर्षीय मित्तु चङ्ग-कुर-श्वगान नामके राजा रहते थे। उसका भग्नावशिष्य अथ गन्धर्वाका वासस्थान कहा जाता है।

कुछ दूर पूर्वको और जानिसे विभो-गेकेल नामक पर्वतके समोप पटन्ट-पुङ्ग नामका आश्रम है, जो समस्त उत्तरो एशियामें विख्यात है। यहांके बड़े उपामनाष्ट्रमें मैत्रेय (अम्पयोङ्गटो)-की बड़ी प्रतिमा स्थापित है। इसके सिवा यहां भारतवर्षके चन्द्र पण्डितके हस्तलिखित ग्रन्थ, श्वलोक्तिखर (चनरमिग)-की प्रतिमा और रज लोचवको समाधि भी है। यहां टनङ नामका एक प्रासाद है। यहांके तान्त्रिक मतके देवता वज्रभैरवकी प्रतिमा बहुत प्रसिद्ध है। यहां विनथ, अभिधर्म और साध्वमिक दर्शनकी गिचा दो जाती है। इसके सिवा प्रजापारमिना तथा नि-ता-तुङ्ग तान्त्रिकके मतका कुछ अंग भी पढ़ाया जाता है। इसके पूर्वमें तिब्बतकी राजधानी पा-लु हदन (नासा) नगर है। आर्यावर्तके किसी बृहत् नगरके साथ इसकी तुलना नहीं होने पर भी तिब्बतके मध्य यह एक प्रधान नगर गिना जाता है। नासा नगरके बीचमें एक ऊँचा तिमजला शाक्य-बुद्धका मन्दिर है। इसमें शाक्यसिंहकी जो प्रतिमा है, वह उनके बारह वर्षकी अवस्थाका प्रतिकरूप है। राजा स्त्रीन्त्सन गम्पोने चीनको राजकन्यासे विवाह किया और वहींमें इस प्रतिमाको अपने देगमें लाये थे। यह श्वलोक्तिखर (चनरमिग) और मैत्रेय बुद्धकी स्वयंभू प्रतिमा है। इसके सिवा त्सीङ्ग लप, स्त्री-सुन, श्वमोट्टेनो (भारतमें भवै कामिनी नामसे ख्यात) प्रभृतिकी मूर्तियाँ हैं।

तिब्बतके अधिकांश सम्भ्रान्त और जमींदार नासा नगरमें रहते हैं। चीन, काश्मीर, नेपाल, भूटान प्रभृति स्थानोंसे यहाँ वणिक् आते हैं। इस नगरसे आध मीलकी दूरी पर पोताना नामक प्रासाद है। प्रवाद है, कि इस प्रासादमें जगन्नाथ श्वलोक्तिखर वाम करते थे। वे ही टनङ-नामाके रूपमें वर्तमान हैं। स्त्रीन्त्सन गम्पो नामक राजाने इसे निर्माण किया था। यहां लोहित प्रासाद

(को-दुङ्ग-मर्पो) है। इस प्रासादमें लोकेश्वरकी प्रतिमा और कोनगम-द्रुप नामक ५म दण्ड नामाकी समाधि है, जिसमें तिरङ्ग खन लगे हुए हैं। पोताना प्रासादके दक्षिण-पश्चिममें चग-पोइरो पर्वत पर चिकित्साशास्त्र सिखानेका विद्यामन्दिर है। यह मन्दिर वज्रपाणिके नाम पर तथा पर्वतके पश्चिममें तरि पर्वत आर्यमञ्जु, योके नाम पर उत्सर्ग किया गया है। यहाँ टनङ्ग बुद्धदुङ्ग राजा हैं। पोताना और नामाके मध्यमें शम्पन नामके एक राजकर्म चागेका वास है। वे टनङ्गनामाकी गतिविधि पर टटि रखनेके लिये चीन-सम्भाट् द्वारा नियुक्त किये गये हैं। इस नगरके उत्तरमें मेर घेग छे-लिङ्ग नामक आश्रममें श्वलोक्तिखरका श्वारह सुश्रुती प्रतिमा विराजमान है। उ-कू नदीके किनारे होकर पूर्वको और जानिसे एक जङ्गल पार होना पडता है, उसके बाद तम्बे नामक पहाड़के ऊपर अतिपदेवका तपोवन और गुहा, आचार्य (टफुग) पद्ममध्वके तथा ८० योगियोंकी गुहाएँ देखी जाती हैं। यहां श्वलोक्तिखरमूर्ति, क्षणप्रस्तर-सम्भूत स्वयंभू मणि, नोनप्रस्तरचैवके मध्यगत श्वेतप्रस्तरसे स्वयं जात तारामूर्ति, जम्भल (कुरेव)-मूर्ति, रिगचोम (विटमती) मूर्ति और दुव्त्वाव विवर्षमूर्ति हैं। चार मैत्रेयोंमें थेरप चामडेनने इस प्रदेशमें अन्तकी वर्षा को थी। यहां पलु हग्वि नामक एक अद्वितीय देवताकी प्रतिमा है। उछू नदीके टाहिने किनारे प्रसिद्ध संस्कारक शरचोङ्ग-द्वारा स्वयं स्थापित गधन नामक आश्रम और उनका समाधिस्थान है। इसके सिवा यहां यमान्तक महाकाल कालरूप नामक देवताकी प्रतिमा और शुद्ध-समाजका मण्डल है। गधनके उत्तर पूर्वमें डगल पर्वतके दूसरे पारमें रटेङ्ग नामका आश्रम है। इसके दक्षिणमें चीनका युनान नामक स्थान पडता है। नङ्ग नामक स्थानके पूर्व पूर्वतक दूसरे पारमें खम लुहरी अवस्थित है। इसके पूर्वमें झु-कु (रौप्य) नदीके बायें किनारे रिभोछे नामक प्रसिद्ध महाराम है और महारामके पूर्वमें मरखम् प्रदेश है। यहां राजा स्त्रीन्-त्सन गम्पोके समयमें निर्मित कई एक मन्दिर हैं। इसके पूर्वमें कोङ्ग चे-ख नामक स्थान है, यही चीन और तिब्बतकी सीमा है। कोङ्ग-चे-खके पूर्वमें वाह विभागके मध्य श्रु-व-

जेन च्यान्निङ्ग नामका सद्धाराम सिपङ्ग नामक स्थानमें  
 धबस्थित है। यहाँ चन्-नि ग्यान्मताबन्धुओं २८००  
 म ग्यासी रहते हैं। सिबङ्ग नामक स्थानके उत्तरपूर्वमें  
 नामरङ्ग जिन्ना पड़ता है। यहाँ ग्याङ्गु ग्नेके बिनारी  
 बौद्ध नामका मन्दिर भारतवर्षीय पाचार्यक पत्न्य सङ्ग  
 (सिन्धेयमाक्षमत पवर्तक)का योगाश्रम मन्दिर है।  
 स्वामी रोच नामके प्रदेशमें लोचन बिरोजनको तजम्बाका  
 स्थान धोर गुहा है। धामदो प्रदेशमें च्य-च्युङ्ग नामक  
 स्थानके उत्तर पूर्वतले पारमें बौद्ध म जिन्ना है। बर्त  
 मान बुद्धके द्वितीय बुद्ध धार बौद्ध-च्यु लोचं तग्यु नामक  
 प्रसिद्ध सन्धारकको अथामूमिके ऊपर लुमुमु नामका  
 सद्धाराम स्थापित है। यहाँ एक लुङ्ग चन्दनका पिटू  
 है। प्रवाट है, कि उत्तर सन्धारकको अथामूमके लमके  
 दरवाज पर्वतमें निङ्गुगारो बुद्धको बलि टीकने लगी जो।  
 इस स्थानके उत्तरपूर्वमें धामदो योगङ्ग लोचन का निर  
 चङ्ग गोन्प नामका सद्धाराम धबस्थित है। इस सङ्ग  
 रामके प्रमान पाचार्य लन्चे जोमो नामाके धबतार है।  
 वे ही इस मूर्तिबन्धनके प्रथिता है। यहाँ चन्-नी मताय  
 बन्धो २००० म ग्यामो बास करतें हैं। इनके उत्तरमें  
 धामदो परो नामक जिनके लोमोघोर सद्धाराम बहुत  
 विख्यात है। च्यमिङ्ग नामके एक मन्दिरमें १ लाख बुद्ध  
 मूर्तियाँ धोर मेर्यय बुद्धकी ८० फुट लंबी प्रतिमा है।  
 लोन्कागुन सद्धाराममें लम्बर नामको तास्त्रिक देवताको  
 मूर्ति है। यह देवता धपगो हा गन्धि चानिङ्गन करके  
 विद्यमान है। इसके उत्तरमें लो लोन्र नामका ऋट है  
 जिनके बीचमें सङ्गाटें नामका एक पर्वत है। यहाँ  
 लो लोन्र मोङ्गोन नामको एक लंबी लोकी धोर जालि १३  
 मर्दानिके पथोन बास करतो है। ये बौद्ध धर्मावलम्बी हैं।  
 पाचकल तिब्बतके पूबाङ्गनके लोचन धरर जो लमपुवि  
 मत पद्धत करते हैं। लदाकके मनुच नामके प्रताय  
 लम्बो है। इस देशमें कहीं कहीं चोन्-ताता, तुकिं  
 स्थान धोर सङ्गोसियाके मुचनमान रहते हैं। लम्बे इस  
 देशके दक्षिण-पश्चिमार्थो लोङ्गोकी लुचनमान बनाया है।  
 बर्तमान तिब्बत राज्य पचा० १० से १० ल० धोर  
 डेमा० ०१ से १०१ पूर्वमें धबस्थित है। इनके उत्तरमें  
 गोरो नामको विस्तृत मङ्गलूमि है। इनको बर्षके लो जो

मसलम भूमि मनुव्रतमने ४० हजार फुट लंबी है।  
 यह तिब्बतमें इस तरहको भूमि १२६ ११ हजार फुट  
 लंबी है। तिब्बतको चोना भाग 'चङ्ग' वा 'मितङ्ग' देश  
 कहते हैं। तिब्बत शब्द इ-पिक-लीङ्ग (तुबो) शब्दका धव-  
 म्ब ग है। तिब्बतके लोचन पवने दिग्गो 'पो' वा 'यो बुन्'  
 कहते हैं। यो शब्दने प्राचीन भारतवासियोंके इनके मोट  
 को पारना दो है। यो शब्द सिपङ्गमें 'बोट' इस तरह  
 जिन्ना जाता है। सुतां लसका मोट शब्द होना धबस्थान  
 नहीं है। यो सुलका चर्च 'पो' देश है, 'यो-प'का चर्च  
 यो दिग्गोय पृथक् तथा 'यो-मो'का चर्च यो दिग्गोय लो  
 होता है। तिब्बती लोचन मन्च तिब्बतको लो प्रकृतपक्षमें  
 यो कहते हैं। पूर्व तिब्बत माहारजन' पम वा बङ्गा  
 तिब्बत नाममें पुञ्जारा जाता है। चोचन गवमें स्थाने  
 तिब्बतको दो भागोंमें विभक्त किया है। पय तिब्बत  
 धोर पकाल-तिब्बत। चङ्ग प्रदेश (प्रकृत तिब्बत) माचार  
 बतः चार भागोंमें विभक्त है—पूर्वमें चोचिन चङ्ग (पम)  
 मध्यमें बुङ्ग चङ्ग, पश्चिमोत्तरमें इव, चङ्ग (प्रकृत युति)  
 धोर पश्चिममें भरि (मदाक)।  
 लदाक प्रदेशमें 'से' प्रमान नगर है धोर इच्छार्दी  
 बन्धति प्रदेशका प्रमान नगर है। बन्धतिमें सिन्धु नदीके  
 बिनारी बन्धति धोर रोङ्गदो सिङ्ग-पी-चु नदीके बिनारी  
 करटबको, लोन्तो, पङ्गुत शहर नदीके बिनारी शहर  
 धोर ल्विङ्ग नदीके बिनारी ल्वेबचु चोर्बत तथा कि बस  
 शहर है।  
 तिब्बतवासो हिमालय पर्वतको बङ्गिज कहते हैं।  
 भिस्वन—भारतवर्षके शनङ्गु नदीके बिनारी लो कर  
 एक राजा गया है। यहाँ राज्या तिब्बतका प्रमान  
 राजा माना जाता है धोर यह मन्च पथिया तक विस्तृत  
 है। मङ्गवान राज्यके मन्च टेङ्गरो प्रदेशमें लोचनपाट  
 विरिपथ है। पय लोकाके पञ्चिङ्गत मङ्गवान राज्यमें  
 लोति धोर माना विरिपथ, कुमायू प्रदेशमें योचर धिरि  
 पय, कुमायू राज्यके सोमान्नीमें दम धोर ग्याल विरिपथ  
 है। इनके बिना भारतवर्षके तिब्बतमें प्रवेश करनके  
 धोर लो कई एक पय है।  
 अधिवासी—तिब्बतके लोचन मङ्गोचोय जातिके हैं।  
 निपान धोर मुङ्गानके लोचन लो इसी जातिके ल्यपच

हुए हैं। तिब्बती लोग इन समस्त पार्वतीय प्रदेशों के मनुष्यों की मोन कहते हैं। सटाकके लोग अपनेको भोटिया बतलाते हैं। गोवि-मरुकी दक्षिणमें थोपा नामक जाति वास करती है। ये उद्दगुर जातिसे उत्पन्न हुए हैं। शोर वा शोर-प जाति मद्रोलियाकी इलुय जातिसे उत्पन्न है। ये उत्तर-तिब्बतमें वास करते हैं। मुसलमान लोग साधारणतः ललो नामसे विख्यात हैं।

बेधम्या—धनी शोर मध्मान्त लोग ग्रीष्मकालमें चोना-मटन और शीतकालमें टसी साउनके नोचे पशुके रोए लगा कर पढ़नते हैं। साधारण लोग योषमें रोएके बुके हुए कपड़े और शीतमें मेंटके चमड़े पहनते हैं। सभालो, चूता पहनते हैं। साधारण लोग योषमें प्रायः स्नान नहीं करते तथा कपड़े भी रुबदा नहीं धोते हैं, इसी कारण उनके शरीरमें थोड़ा जल पढ़नेसे डी चमड़ा फट जाता है। गहरके लोग जो प्रायः घरमें बाहर नहीं जाते स्नान नहीं करते हैं और वे स्नान करनिको अप्रकर्म समझते हैं। यहां कोई भी मातुन-या व्यवहार नहीं करना; एक प्रकारके झुंके नियासको जन्में बट कर उसीमें कपड़ा साफ करते हैं।

द्ववशाः—पार्वतीय प्रदेशके सभी मनुष्य व्यवसाय करते हैं। ये सार्वथे नवस्वर मास तक उपत्यकामें रहते हैं। इन लोगोंकी स्त्रियां कुछ कुछ कृषिकार्य्य करती हैं। उत्पन्न अनाजोंमेंसे पुरुष खावन्न, आटा, रूई और चोनो तैयार कर तिब्बनको ले जाते और वहांमें सुहागा, नमक और पगस लाते हैं। नवस्वरसे सार्व तक वे पर्वतको छोड़ कर यलङ्गनन्दाके किनारे कुकप्रयाग और नन्दोप्रयागमें आ कर नजावात्रादके वणिकोंके साथ वाणिज्य करते हैं। ये चमरा गौकी वीभ टोनीके काममें नियुक्त करते हैं। यह पशु १५०से २०० पीण्ड अर्थात् २॥ मन वीभ दी सकता है। तिब्बतमें पर्वत और नटोमें स्वर्णरेणु पाया जाता है, किन्तु सुहागाका आटर वाणिज्य व्यापारमें बहुत अधिक है। बहुत दिन हुए, कि यहां चायका व्यवसाय चल रहा है। लगभग चार सेर चायका एक बगडन २४ रूपयमें विक्रता है। भंड और बकरीके रोएके लिए इन दो प्रकारके पशुओंका पालन ही यहाँके निम्न श्रेणियोंके अविवासियोंका मुख्य व्यवसाय है। पशु-पालक

उन्हें 'वरानिके लिए' १४१२६ हजार फुट ऊपर तक चले जाते हैं, इसमें अधिक ऊपर जानिका माहस नहीं होता।

धर्म—बोधधर्म ही समस्त देशका प्रधान धर्म है। छोटे तिब्बतके लोग मिया मुसलमान हैं टनडे-नामा बोधधर्मके सर्वप्रधान याजक हैं और वे लामा नगरमें रहते हैं। तगिनामा द्वितीय याजक हैं और वे माम्पु, (ब्रह्मपुत्रके किनारे) तगिन्, हुनपो नगरमें रहते हैं। साधारण याजक (यमण 'गधुन्द्' नामसे पुकारे जाते हैं। इनके वाट 'तोहव' वा 'तुप' गण धर्मशास्त्र-व्यवसायके शिष्या हैं। ये ८१० वर्षको अवस्थामें क्रिमा धम मन्दिरमें गिजाके लिये प्रवेग करते हैं। १५ वर्षको उमरमें इन्हें 'तुप' उपाधि और २४ वर्षमें 'गद-लद्' उपाधि मिलती है। बोधधर्मके लोग यहां दो सम्प्रदायोंमें विभक्त हैं—'गिलुग्' और 'गम्पर'। प्रथम सम्प्रदायके याजक पोलि बन्ध पहनते हैं और विवाह नहीं करते; किन्तु द्वितीय सम्प्रदायके याजक लाल बन्ध पहनते और विवाह करते हैं। लामा, गडलद् और तुपोंके विवा इनमें और भी कई एक सन्दासों हैं जो सभी तरहके काम काज करते हैं।

द्ववशः—किसी गोनूप वा गुन्वके लामाको 'सृत्व' तिथिके उगनस्थमें प्रति वष उसी गुन्वमें उत्सव और शोधनो को जाती है। तगि ल हुनपो गुन्वमें प्रतिवष तीन बार इसी तरहका उत्सव होता है। जिस दिन यहां पढ़ने पहल बोधधर्म प्रचार हुआ था, उसी तिथिके अनुसार प्रतिवर्ष लामा नगरमें 'लामा मिउहलुम नामक उत्सव होता है। इसके विवा कनसुपेच, तुसुपेच, गिसुपेच, मेसुपेच, गोसुदुपेच, गैजिपेच, लक्षुपेच, चिन्दूपेच दुःपेच, कग्युरपेच और लुककोपेच नामके बारह वार्षिक उत्सव हैं। इन लोगोंमें बाह्यस्वयं-संस्कार प्रचलित हैं। १०२५ ई०से इन लोगोंका अन्ध शुरु हुआ है।

• ६३८से ६४३ ई०के मध्य शाक्यकालमें, दूसरे भगोकेकालमें (शाक्यको सृत्वके ११० वर्ष बाद) और तीसरे कान्ककालमें (शाक्यको सृत्वके ४०० वर्षसे भी अधिक समय बाद) भारतवर्षमें जो बोधप्रत्य संस्थापित हुए थे, तिब्बतवासो बोधोंके ग्रन्थ भी उन्हींके मतानुगामी थे।

पंथः-विधि—इं न तो शकईच खैरते हैं। योग न माइते, बरन् खैरे खानमें दिख जाते हैं। मोटङ्ग मान था जिते पौर चको को कु मते हैं। चनोकी देवको तकते पररख कर एक खैरे पर्वत परसे जाते हैं, (अमयानकी चहुं झले हो यह पर्वत व्यवहृत होना है) पौर बहा सुदंके शरीरके धे मांघ खाट कर पसग करते हैं, बाह इकोको घूर घूर कर पाममें डालते पौर हुपां सत्याहन करते हैं। हुपांकी दीख कर गिह, मोटङ्ग भादि पर्वत जाते पौर चनोको काटा हुपा मांघ दे दिया जाता है। प्रधान प्रधान नामाको अतडेह चनोके गोनपरी मन्थ नकोन प्रशुत धमाचिमन्दिरमें माइते हैं। निम्नपद के आयाकी देह अताई जाते हैं, किन्तु मकराशिमिनी घालव-मुतलिकामें बन्द कर मन्दिरमें रख जोइते हैं। माहारक कोयोके लिए पारसियोंकी नाई दोवारके चिरा हुपा 'मृतकापमयान' है। मडोकिवामें कोरे कोरे अतदिहको अवास पौर कोरे प्यारके टेरमें माइते तथा कोरे निजंन खानमें दिख जाते हैं। ये इटात् अत विद्यको दिहकी राष्ट्रमें दिख देते हैं।

रमसिस्तम कोर बर्षवत—तिब्बतमें बौद्धधर्म प्राचीन था। म्दर पौर धातुनिष्क वा जिं दर इन दो मार्गमें विभक्त है। मङ्ग-विष्णुसम्भो राजाके समयमें पचस्रान २६ पुषव नमरि-कोन-सुचन राजाके राजत्वकाल तक तिब्बतमें बौद्धधर्मकी बात कोरे नही जानता था। म च-को रि नन्-सुचन नामक राजाके राजत्वकालमें राजमासाद पर कई भाग प को ज यग म्ब सुष्टक पाञ्चांगने गिरी की, इन सुष्टकका पद नही जाननेके कारण तिब्बती कोमों निहसका नाम 'न-दोर्पा-ब' रखा। यहीके बौद्धधर्म का लुब्धगत हुआ। राजाको अन्नमें सालूम हो गया, कि उनके पचस्रान पचम सुषवमें इस सुष्टकका पद प्रचारित होया। इधोके अनुसार बोधिसत्व चक्रकोकिरीधर के पवतार चोन्-सुचन सम्भो राजाके पचिबहारके समय उनके मन्त्री थोन्-मि सखोट भारतवर्षमें उपस्थित हुए पौर चनोके बौद्धधर्मके ज्ञाना माछ पचबन किये। हे हिन्दुधोके माफोमें भी ध्युत्पत्ति नाम कर तिब्बतको सौट मये। तिब्बतमें आ कर चको ने दो तिब्बतकी 'सुचन' नामक पचरमाकाकी सृष्टि को। माताहुक नामरी पचर

पौर माताहुन हुपु, 'पचपी' (बाकिरिस्तान वा बाक इयामें प्रचलित भाषा पौर पचरमाका)के तोड़ पीड़ कर माताहुक 'सुचन' पचर निष्काये गये हैं। यही तिब्बत देस की प्रथम बर्षमाका है। राजा थोन्-सुचन-अम्भो निवास-को राजकुमारीके विवाह कर बहादि पचीम्ब-सुहको (पच प्पानो सुदमें एक) पौर चोनको राजकुमारीके साथ विवाह कर बहादि माक् 'सुनिको प्रतिमा' काये है। ये जो लोगो तिब्बतकी मन्थे पड़को पौर प्राचीन बौद्ध प्रतिमा हैं। रस-सु-मन विष्णु-सक नामक मन्दिर बनवा कर राजाके उन दो मूर्त्तियोंको स्थापित किया। इसी मन्दिरके नामानुसार उनको राक बालाका नाम 'बासा' पड़ा है। जोन् मि-सखोट पौर उन के पधुगामियक राजाके धादेयके तिब्बतके मन्थक पचरोमें तिब्बतोब भावामें सखै, तथे बौद्धधर्म अनुवाद करनेमें निकुञ्ज हुए। सखै फलपु-के प्रभृति पन्थ जो मन्थे पड़से अनुवादित हुए थे।

जि थोन्-के सुचन् राजा मन्थु-धोयके पवतार माने जाते थे। उनके राजत्वकालमें मङ्गपञ्चित शास्त्ररचित पचपचक पौर पन्थाम्य भारतवर्षीय बौद्ध-पञ्चित तिब्बतमें धामन्वित हुए। इन थोमोके साथ सात पचक बौद्ध सन्धासो भी धाये थे, जिनमें बरोचन प्रधान थे। इनके सिद्धादानके ईशमें शोम ही बहुतके शोचन (स खलतत्र तथा दो या तीन भाषावित् तिब्बतीय थोय) हो गये। शोचवर्ति सुह-चनपु, धिगेर बरोचन, पाचार्य रिष्थन शीम, येके अनयो, कञ्चोय मङ्, प्रभृति प्रधान हैं। इनमें सुत्र, तन्त्र पौर ध्यानमाकका तिब्बतीय भावामें अनुवाद किया। ये शास्त्ररचित पुस्त (विनय) शास्त्रके धार्मिक शास्त्र तक सिद्धा देसे थे। पचपचक ज्ञानो ज्ञानोको तन्त्रमाक सिधायते थे। इन समय ज्वन् महायान धामन्थ एक चोन देवीय पञ्चितने तिब्बत था कर एक नया मत प्रचार किया। हे कर्ते थे "मन्थ जो वा पमन्थ, मन कड तक पासक इहिय, तब तक चक्रको सुखि नही है; म्दरक कोषिका हो या थोनिका यह समान भावके धरि रचना है। विना निरासक हुए बार बार कचपचकके परिताप नही है। यह मत प्रचारित होने पर शास्त्ररचितका 'धर्म'न्याक



ज्ञानलुप्त हो गया और ह्यन महायानका मत बहुत जल्द फैलने लगा। राजा धि-स्नोन-टे-त्सन आकुल हो कर भारतवर्ष से पण्डित कमलशीलकी लाये। कमल-शोलसे तर्कमें चीन पण्डित परास्त किये जाने पर उनका मत धोरे धोरे लुप्त होने लगा। कमलशील तिब्बतमें पुनः शिक्षा प्रचार करने लगे। शान्तरचित और कमलशील दोनों स्वतन्त्र-माध्यमिक मतावलम्बी थे। इनके बाद और कई एक योगाचार्य पण्डित यहाँ आये थे, किन्तु वे स्वतन्त्र माध्यमिक मतको विरुद्ध कुछ विशेष नहीं कर सके। राजा रल-पचनकी राजत्वकालमें पण्डित जिन-मित्रने आकर अनेक धर्मग्रन्थोंका देशीय भाषामें अनुवाद किया था।

इसके बाद जब लन्दर्म नामके राजा सिंहासन पर बैठे, तब उनके यौवसे कुछ समयके लिये बौद्धधर्म तिब्बतसे जाता रहा। इस समय तोन सन्यासो पल-छेन-छु-वौरिसे भाग कर आमदो देशमें गोन-प-रव-सल नामक लामाके शिष्य हुए। इनके वाट और भी दश मनुष्य लामाका शिष्यत्व ग्रहण कर सन्यासी हो गये। लुम छल-थिम इनमें प्रधान थे। लन्दर्मकी मृत्युके वाट वे लौट कर अपने अपने सद्धाराममें पहुँचे और पुनः बौद्धधर्मके संस्कारमें प्रवृत्त हुए। उन्होंने अमर्णाकी संख्याको बढ़ानेके लिये उ और तसन् प्रदेशमें कार्य आरम्भ किया। इस तरह पुनः आमदो प्रदेशके लामा गोन परव सल और लुम छल-थिम द्वारा तिब्बतमें बौद्धधर्म प्रतिष्ठित हुआ। लह-लामाके समयमें लोच वरिण छेन ससपो भारतमें शास्त्रादि सीखनेकी आये। उन्होंने लौट कर सूत्र और तन्त्रशास्त्रका अनुवाद किया।

लन्दर्म राजाके पूर्ववर्ती कालको 'न दर' और परवर्ती कालको 'छि-दर' कहते हैं।

रिणछेन ससपोने तान्त्रिक मतावलम्बीके अनेक आचार व्यवहारका भी संस्कार किया। धर्मकी दुहाई देकर बहुतेरने अश्लील व्यवहार अवलम्बन किया था। ये प्रसङ्ग माध्यमिक मतावलम्बी थे।

राजा लह-लामाने भारतवर्षसे धर्मपाल और उनके तोन शिष्योंको बुलाया। पूर्व भारतसे धर्मपाल अपने शिष्य सिद्धपाल, गुण पाल और प्रज्ञापालके साथ इस

देशमें आये। इनसे ग्यल वे-गेख टोचित होकर नेगाममें विनयशास्त्र सीखनेके लिये ज्ञोनयान मतावलम्बी पण्डित प्रेतकको निकट पहुँचे। इन्होंने शिष्य तोदुख (उत्तर देशीय विनयवित्) कह कर प्रसिद्ध है। इसके बाद राजा लहदके समयमें काश्मोरके पण्डित शाक्यो बुलाये गये। उनसे कई एक शास्त्र अनुवाद कराया गया। उन्होंने जो आचार-विधि प्रचार की, वह 'पब्बेन डोम ग्युण' नामसे मशहूर है। आमदो देशीय पब्बेनने दूसरे प्रकारको आचार विधि निवद्ध की जो 'लछेन डोम ग्युण' नामसे प्रसिद्ध है। इस तरह विनयशास्त्र हो तिब्बतोय बौद्धधर्मके प्राचोरूपमें और डोमग्युण वा आचार-विधि बौद्धधर्मके भानुष्ठानिक आचरण-रूपमें प्रतिष्ठित हुई।

कालक्रमसे नाना पण्डितोंके नाना व्याख्यावले तिब्बतोय बौद्धधर्म भारतवर्षके १८ प्रकारके वैभाषिक मतकी नाईं नाना साम्प्रदायिक मतोंमें विभक्त हो गया। इन लोमोंमें अनेक मत प्रवर्तयिताके नामसे, अनेक मतप्रचारके प्रथम स्थानके नामसे और अनेक मत प्रवर्तकके भारतीय गुरुके नामसे प्रसिद्ध हो गये तथा बहुतसे मत अपने अपने क्रिया विशेष नामसे भी अभिहित हुए।

समस्त साम्प्रदायिक मत पुनः पुरातन और संस्कृत (गेलुगप) इन दो भागोंमें विभक्त हो गये हैं। पुरातन सम्प्रदायमें निम-प, कह-दम्प, कह-ग्युप, शि-थ्ये-प, जोनप और निछेप ये सात शाखायें हैं। पुरातन सम्प्रदाय साधारणतः दो भागोंमें विभक्त है- निम-प और शर्मप। इस भेदको कया नाकि तन्त्रशास्त्रमें लिखी गई है। जो सब ग्रन्थ पण्डित स्मृतिके पहले तिब्बतोय भाषामें अनूदित हैं, वेही निम-प और जो रिन् छेन-ससपोसे अनूदित हैं, वेही शर्मप कहलाते हैं। मञ्जुश्रीमूल तन्त्रके राजा धि-स्नोनके राजत्व कालमें अन्तर्दित होने पर भी वे शर्मतन्त्रमें गिने जाते हैं। इस तरह और भी दो एक गोलमाल रहने पर भी रिन्छेन-ससपोही शर्म तन्त्रके प्रतिष्ठाता कह कर सर्वत्र स्वीकृत हुए। लोचव रिन्छेन-ससपोने प्रज्ञापारमिता, मातृ और पिता तन्त्रका प्रचार किये। सर्वापरि योगतन्त्र

उन्हींके द्वारा तिष्ठतमें प्रचार किया गया। जो नामक  
 तान्त्रिक पद्धतमें मागाङ्गुनके मतमें समाग्रगुण मतका  
 प्रचार किया और सर्व नामक तान्त्रिक पद्धतमें पिष्ट  
 तन्त्रके अनुसार ममाक गुणमत माङ्गतन्त्रके अनुसार  
 महाभाया अनुष्ठान, यन्त्रके और मन्त्र अनुष्ठान विधि  
 प्रचलित की। ये समस्त शोधोंके प्रतिष्ठित तान्त्रिक  
 अनुष्ठान और विधि 'शर्मतन्त्र' वा नन्तन्त्र नामसे  
 ज्ञात हैं।

राजा श्रीगु तुसन-गन्धो जय शर्मोपदेष्टा थे। इनके  
 ज्ञान जो सब पुस्तक स्पष्टकार करती थे, वे 'शेरिम'  
 नामसे और यन्त्रोक्तिप्रकारके उपदेशमन्त्र 'श्रीमरिम'  
 नामसे प्रचार जाते थे। श्रीगुतुसन-गन्धोने जो सबसे  
 पड़ेसे 'श्रीं मन्त्रि पदमे हैं' यह मन्त्र प्रचलित किया तथा  
 जलविधिको किया दो। वे जो भारतवर्षके कुहर और  
 महर शास्त्र नामके दो शास्त्रोंको तथा काम्योरसे  
 पद्धत शोचमन्त्रको लाये। इनके पाँचमें प्रथमके बाद  
 राजा शि-श्रीगु पहले शास्त्ररचितको लाये। इन्होंने देशीय  
 शैलीके शर्मोचरणको प्रथमका देन कर लके कुछ कुछ  
 अनुष्ठानादि शिक्षाके लिये पदके 'दशमम' शर्मात्  
 प्रायो हि शानिपिथ, शोयनिर्घ्न स्थानिचारनिपिथ सिन्धा  
 कञ्जनिपिथ परनिष्ठा वा कुवाक्यवचननिपिथ,  
 इवा वाक्यव्यनिपिथ शोमनिपिथ, परमज्ञसिन्धानिपिथ  
 मन्त्रका प्रवनापनिपिथ, इन इय विधिपूर्वका प्रचार  
 किया। इसके बाद तन्त्रमत सिन्धानिसे जिसे  
 शास्त्ररचितके अनुदेशसे वे प्रधानसे पद्यप्रथमका  
 लाये। इन्होंने बड़ा मुद्राकारको नाई एक विहार  
 स्थापन किया। पद्यप्रथमके राजाको योगविद्या  
 दो। राजा और शर्मोचन नन्त्रको सिन्धि शोधसे निधि  
 नाम कर नामा शोचिक्रम समतापक हुए। बाद शर्म  
 शोर्ति, विमलमित्र पुष्टगुण, शान्तिमर्म प्रचलित  
 पण्डित इय देयमें पाये। शर्मशोर्तिमें नन्त्रानुशोम  
 नामक तान्त्रिक प्रचार और विमलमित्रने तन्त्रके मुख  
 रचकको सिन्धा दो : नि मके मतमें जो प्रचारके अनु  
 ठान हैं—

- (१) न-शो (२) र चन (३) चव् वैम (४)
- जिया (५) उप (६) शोच (७) शोय महायोग (८)
- शु अनुशोम (९) शोभान-दीप्यो प्रतिशोम ।

इसमेंसे पहले तीन निमाचकाय-सुदके (सुद शास्त्रनिर्घ्न)  
 उपदेश हैं। शर्मोका नाम साधारण 'यान' है। इनके  
 तीन सन्धोगकाय-नन्त्रप्रथमके उपदेश हैं जिनका नाम  
 माङ्ग वा नन्त्र तन्त्रज्ञान रचा गया है। शिव शोच शर्म काय  
 नामकमन्त्र वा कुन्तत संघोके उपदेश हैं और ये ही  
 अनुस्तर चन्तरयानत्रय नामसे ज्ञात हैं। कुन्तत न पो  
 यहाँके सर्व प्रधान सुद मानि जाते हैं। नन्त्रपर संज्ञातके  
 मतमें सम्यक्-विद्योति (सिन्धुगय) प्रधान सुद हैं। नन्त्रप्रथ  
 नि मके मतमें दूसरे और शास्त्रविद सुदके प्रथमतर नन्त्र  
 कर तोयरे सुद रूपमें स्थापित होते हैं। माङ्ग और  
 चन्तर तन्त्रोंमें सुदशास्त्रविद काई सिन्धातन्त्रोंके उपदेश  
 हैं और उप मा शर्मतन्त्र तथा शोचतन्त्र शेरचनसे उप-  
 दिष्ट हैं। पद्य ज्ञानि वा ध्याने सुदोंके नाम— (१) शोचोच  
 (२) शेरचन (३) रजसमन्त्र (४) शर्मिताम और (५)  
 शर्मोचविद। शर्मोचमें सुद प्रथमके पाँच शर्मोंका प्रति  
 मा कल्प है। नन्त्रपर अनुस्तर वा चन्तर तन्त्रके उपदेश  
 कता हैं। नि मके मतानुसार नामाको गो शोचिमा हैं—

(१) सुद शैवे शास्त्रविद, कुन्तत स पो, दोर्मे शर्मन,  
 शर्मिताम। २) रिगजिन। जो शंभु ज्ञानमें जो मन्त्र  
 गुणसम्यक और पोछे शर्मो शिष्टा और शब्दसाधसे  
 महाशिवान् और चन्त्रमें विद्याशरिदोके (से शिष्टदान)  
 से अनुभाचित होत हैं। शैवे-व्य सभम, शोचि ह मान  
 पुर और शर्म्या श शोचिसत्त्वमः। (३) म शय-नन वा  
 अनुशोचित संश्यानी, जो बहुत यजने गुण विपयकी  
 रचा करती हैं। (४) शरद्वन्-सुन तन-क्यादिष्ट और  
 श्यानु-गवित नामाचन। (५) शि-शो तिर—जो सब  
 नामा शुभ शर्म पुस्तक पाकर बिना शिष्यकी महायतासे  
 लके समस्त सकरी और निष्ठ सकरी हैं। (६) शोच-नम  
 तन्त्र-को सब नामा कपामनामें निधि नाम कर शिष्टरिच  
 शक्ति पाते हैं। इन सब लके शोचोके मंदके शर्मिरिच  
 प्रागुशानिच प्रथमके और शोच मंद, हैं—(१) रि कवम्  
 (निधिको कृष्ण शोचो) २) शि-शोर्मे (निधिको निकटन्त्र  
 शोचो) और (३) मव शो-रग-नन (सन्धोर शान शोचो)  
 पदशो शोचोमें पुन शोच उपविभाग हैं—स्य-कुन दुपैदो  
 और शिभोजन।

शु सुद शोचो—ठ श और जस प्रथममें ज्ञात है।

पण्डित विमलमित्र हम श्रीलोक प्रतिष्ठाका हैं। दुर्धरो श्रीलोक। मूलगान्धरी प्रारका श्री-सूक्तत्व घोर धारा तन्त्र। भारतीय पण्डित ट नरवितने कागमोरके धर्मभोधि घोर वसुधर नामक दो पण्डितोंकी उक्त दो पुस्तकोंकी गिजा दो। छोटे उरानि श्री इमे तिल्वतमें प्रचार किया।

सेम-होग श्री गो भारतीय पण्डित कानाचार्यके अच-तार रोन-सेम लोचयमे स्थापित हुई। एयथाय (नामन) हम श्रीगोक तान्त्रिक देवता हैं। वे क्रोधप्रकृतिक घोर दैत्वविनामक हैं। इन लीगेकि मताशुमार जम्पन कु, पद्मशुच, शुम्भदुचि, नीतनन घोर कर्पयिनने नामक पञ्च देवोपमना मात्तसाधक हैं। जम्पन-कु नामक देवता-की पूजा शाक्तिगर्भमे प्रवर्तित है। इस देवताको मन्त्र, श्रीके प्रतिरूप मानते हैं, किन्तु प्रतिमाको शालति भय-द्वर भनेक मन्त्रकयुक्त घोर वांछमें बुरो तरहमे पात्रि-द्वित स्त्री मूर्ति है। यंङग नामक देवोपमना हृदार नामक तान्त्रिक योगिने प्रतिष्ठित है। एयथोव, फर्ष और दुचि उपासना विमलमित्रमे स्थापित हुई है।

अनुत्तरयानतन्त्र श्री पभो नेपालमें प्रचलित है। इसका टार्गनिक भाव बहुत बड़ा है। अभिषेग इसका प्रधान अनुष्ठान है। इसमें सेमटे, लोनटे और मननगटे नामक तीन प्रकारके शास्त्रग्रन्थ हैं। सेमटे ग्रन्थ १८ है, जिनमेंसे ५ वैरोचनसे घोर १३ विमलमित्रमे बनाये गये हैं। लोनटे ग्रन्थ ८ है, जिनके रचयिता वैरोचन और पमिकम गोनवे हैं। नामा धर्मबोधि घोर धर्म-सिंह इस शास्त्रके प्रधान उपदेगक थे। मननगटे शास्त्रके तीन ग्रन्थ सुन्दर आनन्दारिक भाषामें बने हैं। विमल-मित्रने इसे राजा विश्वोनका सिखाया। बुद्ध वज्रधरमे पहले पहल भारतवर्षके पण्डित आनन्दध्वजने इसे पाया था। पीछे उरानि यह अपने गिष्य श्रीसिंहकी दिया। उरानिसे पहलमध्वने इसे पाया।

इतिहास—शाक्यसिंहके पहले कुरु पाण्डवके युद्ध कालमें रूपति नामक एक चतुर्थ राजा युद्धमें भय खाकर सुपाराहत तिष्ठतकी भाग गये। वे कीरवके पत्रके सेना पति थे। दुर्धनके भयमे वा पाण्डवके पयाटानुसरणके भयमे उरानि स्त्रीके सेवमें एक हजार अनुचरोंके साथ पुण्डल देगमें प्रायय निरा। यहांके आदिम पधिवि-

सिंघने उनको राजा मान लिया। वे अपने मन्त्र और गान्धरी प्रिय व्यवहारमे उन लोगके यथाभाजन राजा राज्य प्रभुने लगे। इसमें वाट देमा जम्पने घोरवी धर्म गन्ने नष्ट तिल्वतका घोर क्रोध इतिहास बना नहीं जाना घोर न लो ली पयाट छो मना जाना है। ई-पनके पन छोयो मनायाका विपरण पटनेमे मानम पोता है, कि रूपति वंङ धर्म लोने पर गिञ्चन करेण्ड छोटे छोटे घाव न भागोंमें विमल छो गया।

भोट-पण्डित वृत्तानकी मानिराके अनुचार बुद्ध नियोगके ४१० वर्ष बाद अर्थात् १२४ ई०की पहले भारत वषमें सिञ्चनके प्रथम लया राजा नह-यि तनम्पने ज म निरा। उनका भारतीय नाम राजा था, यह सिञ्चने इतिहासमें नहीं लिखा है। उसके पिता प्रमेभसिञ्च-कोमल देगके राजा है। प्रमेभसिञ्चके पटन पुत्रने एक पट्टत आकारमें जूना बहण किया। तर्फीका काई उमरा गाव यन, भौर राधे नीनयन, दाना पाप पममान घोर उंगलिया अनवर पाणोको नहरे वतनी चमडेमे पाप्पर मंगुल थीं। मद्योभात गिगुके मभो टांताया पूर्ण विभाग हो गया था, घोर ये गांठके ईसा मकेट टोप पटने थे। प्रमेभसिञ्चने इस पुत्रको तननना क्राक समझ कर उमे तांथेडे वरनभने रख गडामें बहा दिया। एक लयकने उमे निहान कर प्रतिपादन किया। यह लयक भोलाभावा मनुष्य था, पत, उसने यह पुत्र उमके श्रीरममे उत्पद्य हुआ है ऐसा कर्षो भी प्रचार न किया, वरन् यह उमे राजकुमार कहा करता था। जब नहका बहा हुआ तब उसने अपना जन्म वृत्तान्त सुन मन ही मन बहुत दुख हो प्रतिष्ठा की, "राजपुत्र होकर मेने जन्म लिया है, किन्तु घट्टट दोयमे लयकके घरमें लयक-वृत्तिमें समय व्यतीत करता हूँ, इसमे मरना हो अच्छा है। यदि राजा जो मकूँ तभो में अपना जावन रख सकता हूँ, अन्यथा हम घट्टटायक जावनको किसी हानतमे रख नहीं सकता।" कुछ दिन बाद वह वानक प्रतिपालकके घर घोर जन्मभूमिको छोड़ कर पुपके जङ्गलमें भाग गया। जङ्गली फनमे जीवन धारण कर वह नहका कुछ दिन पीछे हिमालय पवतकी पार कर उसमे श्रीर भो उत्तरको घोर जाने

समा। चिरतुवाराहत पर्वतमानाको पार करमेले उस  
 कष्ट होने लगा सको, विष्णु उसके श्रिते मरना पौर  
 कीना दानो बराबर था, इस कारण वह क्यों बतोजाह  
 होता? ज्ञानम' धार्य' पबकोकितेअरको छपाये  
 बानक तिम्बकले तुपारमश्रित सहरि पर्वत पर पडु वा।  
 इस ज्ञानको योग्याये सुध जोकर वह ज्ञानम' पार करता  
 हुआ चारा पौर चार पबविदित बनन्यव नामक  
 मासमूमिं जा पडु वा। यहाँके मोमोने लकड़े मडिमा  
 नित पाकारको देवकार चयने परिचय पुत्रा। लडुका उस  
 देमको माया तो नहीं जानता था, शैब्य इगारेसे लकड़े  
 सूचित किता बि बह एक राजपुत्र है पौर सहरि पर्वतका  
 पौरसे था रहा है। तिम्बकवासिनेने मममा बि यह  
 उपरसे था रहा है, पन यह बानक देवतासे सिवा पौर  
 सुपरा कोई नहीं हो सकता। समोने लकड़े बखबल  
 कर कम देगक राजा जोनेने निजे लकड़े पगुरीश किया।  
 इन पर वह आसक सो राजा हो गया। बाद के लकड़े  
 एक आठके पासल पर बिठा। अपने बन्धे पर चढ़ाकर  
 देयको से मये। पानल पर बैठ कर मनुवाके बन्धेसे  
 डोरे जनेके कारक लकड़ेका नाम लखि सम्यो ( नह-  
 पीठ। बि वा वि, आठका पासल रूप्यो-राजा ) रखा  
 गया। पयो बहाने कामा नबरो पबलित है उसो लख  
 नये सुपतिने दण्ड-समय नामको एक बडो पशुनिहा  
 निर्माच को।

उस लवोने सुपतिने नम मूस-मूग नामक एक तिम्ब-  
 तीव रमकोसे साथ बिबाह किया। पन्धन प्रथमा पौर  
 अपघपातसे प्रजाको पासल करी हुए पन्धने से पर  
 कोकको सिकार। पौहि रमके पुत्र भृगुबि-तसम्यो राजा  
 हुए। नये राजासे निम्ब कान राजा "नमखि" नामसे  
 इतिहासमें परिचित हुए है। पाठमें राजा हि-सुम-  
 तमस्योमें सुतसमरि चम भामको बन्धाको आहा। इससे  
 गर्मसे राजाके तीन पुत्र हुए। राजसको सोनमने लका  
 भिन्नावसे जयमें था कर बिदोह डाल दिया। जममान  
 सड़ाई हुई राजा मारे मये। इसो सुपने तिम्बकतम  
 पडके पवन यून ( लोह-वर्म ) ब्यवहृत हुआ था। जम  
 प्रदेशसे मारचम नामक ज्ञानो यह लखक पडको बार  
 इन देगमें लाया गया था। मन्को सड़ाईमें जब प्राक कर

राजा बन बैठे पौर लकींने एक विधवा रामोधि बिबाह कर  
 लिया। तोनो राजकुमारने सोनयो नामक ज्ञानमें मान  
 कर प्राच रखा को। नई रामी पौर राजकुमारो को माता  
 ने योन बन्धने यह लक तसम्यो नामक अपदेनताको  
 प्रसक कर एक पुत्र प्राप्त किया। यह पुत्र बानजमने  
 मन्कोसे पद पर परिचयिह हुए। बाद लकींने पुत्र मन्धि  
 राजको निहत कर उन मने हुए तोनो राजकुमारोको  
 अपने उभरों कुलवा म माया। उनमेंसे बड़े पान-वि नसम्यो  
 गया हुए। लकींने रोम-व नामको एक बन्धासे शादो  
 को। इस बन्धके राजा पडसेमे २० सुपय तख "योन"  
 नामक बर्मावनको से। इस बर्मासे पनेक प्रकारसे अप-  
 टिवतापो को उपामना है। पडसेमे पाठमें राजा दि-सुम  
 तमस्योके राजक-वासिमें इस बर्माको विधिय लकति हुई।  
 इन राजापो के नाम रकते समय उनके पितामाताके  
 नाम हा कुक कुक पय किया जाता था। दि सुम-नमस्यो  
 पौर बन्धके परबलीं एक राजा तिम्बकतमें पीकि टि नाम  
 से पुकारे जाते थे। राजाको सुखु है समय रामो अपने  
 अपने ज्ञानोको से कर अपनेको चरो जातो बी उनका  
 एक से बिज एको पर नहीं रह जाता था। अ-वि  
 तसम्योके परबलीं यह राजा "शैबन" ( मौमबर ) नाम  
 से इतिहासमें परिचि हुए। इनके बाद ८ राजापोके  
 नामके पडने "हे" उपसग लमाया गया को सखत  
 "बिन" शब्दाय प्रजायक है। उनके बाद तो-रि को तसम  
 नामसे राजा हुए। इनके पांच राजा तसम" ( राजा )  
 नामसे विख्यात हुए। यद्यपि इस समय मी बोनबर्माका  
 प्रमुख प्रबन्ध था, तो भी बौध बर्माका बिन्दुमान तिम्बकतमें  
 प्रचारित न हुआ।

६४१ ई०में तिम्बकके सुविख्यात राजा लख को को रि  
 नलतसमने लख पडक किया। ये बोन बर्माके प्रधान  
 देवता कुन्दु तसम्यके परतार माने जाते थे। ये इकोस  
 नय की पन्धनमें राजसिंहासन पर बैठे। राजा लखको  
 पोरिके ८० वर्षकी उमरमें ३२१ ई०को यम्बुका प्राषादके  
 अपर पाषाणके एक कोमतोसम्बक निरा। उसमें "दोहे  
 नमनोव" ( सूत्रान्तापिटक ) "शिल्पि-कोर्त्तन" ( शीनेकी  
 बनी हुई एक छोटी वेदी ) 'पनको-व्य च बिन यो'  
 ( भासुद्विज माष ) पौर "चिन्तामणि नयो ( चिन्तामणि

श्रीर पात्र ) भर घे । इन्हीं ने ही उस तरह तिब्बतके राजाओंसे सवसे पहले देव प्रसाद प्राप्त किया तथा तिब्बती लोगोंसे देवसम्मान पाया है । एक समय राजा सन्तीके साथ इन द्रव्योंकी आलोचना कर रहे थे, इतने ही आकाशने देववाणी हुई, कि उनमें निम्न बोधि पुत्रोंके वाट पाँचवें राजाके समय इन समस्त विषयोंका अर्थ प्रकाशित होगा । इस पर राजाने यत्पूर्वक उन्हें मन्वन्वी ( अपरिज्ञात द्रव्य ) नाम देकर राज-प्रासादमें रख दिया और उसी दिनसे वे प्रतिदिन उनको पूजा करने लगे । ५६१ ई०की १२० वर्षकी अवस्थामें उनको मृत्यु हुई । इनके प्रपौत्र जन्मके ही अर्थ थे, किन्तु कोई उत्तराधिकारी न रहनेके कारण अनेक तर्कवितर्कोंके बाद यन्त्र राजकुमार ही राजसिंहासन पर बैठे । इनके अग्रपैकके समय उन समस्त देवदत्त द्रव्योंकी पूजा करनेसे उनका दमस्त दूर हो गया । प्रायुक्त स्वल्पी समय सवसे पहले उन्हें मानूस पटा, कि लघि पर्यंत पर एक भेड़ भागा जा रहा है । इसी कारण इनका नाम लघि नन सिग रखा गया । इनके वाट इनके पुत्र नम-रि-स्त्रोन तमन राजा हुए । इनके राजत्व कालमें तिब्बती लोगोंने चीनमें चिकित्साशास्त्र और भद्रयान्त्र पहले पहल मोखा । इस समय प्रशुपालन और गोधनका इतना आदर था और अधिकता भी इतनी थी, कि राजाने अपना राजप्रासाद बनाते समय गाय और चमरोके दूधमें सभी समाना भिगी दिया था । इन्हीं ( लासाके निकटवर्ती २० सोल विस्तृत ) ब्रह्मसुम-दिनम नामक झटके किनारे एक सुन्दर घुतगामी और वल्लशाली घोड़ा पाया । यह घोड़ा उनका बहुत प्यारा था और इसका नाम टोव'च' रखा गया । एक दिन इस घोड़े पर सवार हो एक दुर्हान्त चमरोका शिकार कर लौटते समय राजाने विख्यात च्यम गि छ नामक लवण चैतका सवसे पहले आविष्कार किया । ६३० ई०में इनको मृत्यु होने पर इनका पुत्र सुविख्यात गद्दुतकर्मा स्त्रोन-त्सन-गम्पो राजा हुए । इनके समय तिब्बतमें एक नया युग आविर्भूत हुआ ।

स्त्रोन-त्सन-गम्पोने ६००से ६१७ ई०के मध्य जन्म ग्रहण किया था । इनके सिर पर एक उभड़ा हुआ छोटा चिह्न था, जिसे लोग अमिताभ बुद्धकी मूर्त्तिका चिह्न

अनुमान करते थे । यह चिह्न बहुत माफ माफ टोखता तथा उनमें ज्योति भी निकलती थी, इसी कारण राजा उसे एक लाल साटनको टोपीमें मटा टकी रहते थे । तेरह वर्षकी अवस्थामें राजसिंहासन पर बैठे । इनके राजत्व कालमें अनेक पर्यतगुप्त और पर्यतके नामा म्यामंगि अवलोकित्वर, तागा, ह्यप्रोव प्रभृति देयतापीकों स्वयम्भूमूर्त्तियां आविष्कृत हुईं । इनके अनावा वदुतमें उत्कीर्ण गिलासोप भी पाये गये, जिनमें 'भो' मणिपद्मं हुं' यह पट्टर मन्त्र भी खोटा हुआ था । राजा एक दिवसमूर्त्तियोंका दर्शन कर अपने हाथमें पूजन करते थे । अभी जिन जगह पौनाला प्रासाद अर्थात् स्थित है, उस जगह राजाने लो-पुगका एक प्रासाद निर्माण किया । उन्हें बहुतसे मैन्यटन थे और विशावनमें उन्होंने अनेक भूत-पैतोंको बग कर उनका एक मैन्यटन बना लिया था । ज्ञान और बलवार्थमें राजाने अधिक प्रमिति पाई थी । प्रतिवेगो राजगण इन्हीं बहुमूल्य उपहार भेजते थे । राजा भी उन लोगोंको मभामें दून प्रेरण करते । इनके राज्यकालके पहले भी तिब्बतमें कोई निरुत्प्रणाली-प्रचलित भाषा नहीं थी, किन्तु राजा विदेगो राजाओंकी उन्हींके देगोंका भाषामें पत्रादि लिख कर मित्रता रखते थे । संस्कृत, चान और नेवारो (नेपालकी) भाषामें उनका पूरा प्रवेग था । राजाने पास पासके कई एक प्रदेशोंको लड़ाईमें जीत कर अपने राज्यमें मिला लिया । अन्तमें वे लडाख और भे धान छोटाकर बर्मादेशिका और विशेष धान रखने लगे ।

राजा स्वयं वीरप्रिय और भक्त थे । वे स्वराज्यमें बौद्धधर्म प्रचारके लिये विशेष यत्नवान् हुए । उन्होंने देखा, कि लेखनप्रणालीविशिष्ट भाषाके बिना धर्म प्रचारको सुविधा नहीं हो सकती तथा देग शासनके लिये राज-विधि भी प्रचारित नहीं हो सकती है । यह स्थिर कर उन्होंने अनुके पुत्र थोन्-मि-सम्भोटको १६ महचरोके साथ भारतवर्षमें संस्कृत भाषा और बौद्धधर्म-शास्त्र सीखनेके लिए भेजा । राजाने उन लोगोंको संस्कृत अक्षरके आधार पर तिब्बतीय भाषाके उच्चारणके अनुसार उस भाषाके लिए उपयुक्त वर्ण निकालनेको चेष्टा करनेकी कहा ।

सम्मोड थापाईर्वासीं पदुं कर पछिउतीको बहुत सुप  
 पादि रुपहार से विविधर नाम ह बौद्ध पछिउतीये ठर  
 भाया सोखने ली। सम्मोडने बहुत थोडो हो दिनामि संस्कृत  
 भाया पौर ६३ प्रकारको विविधपाथो तथा पछिउत  
 टेरसिइको निरुद्ध वनाय, चान्द्र पौर मारकत व्याह  
 रण सोय लिया। इपके बाद उको मे तथा मङ्गचरो ने  
 २३ बौद्ध प्रवचन पौर १४७७ ग्रन्थ पचायन जिये। देयमें  
 मोट कर उको ने बिया पौर ज्ञानदेवता मन्त्र, बीजा  
 पूजन जिया। बाद तिब्बतोय भाया जिननेके निते सम्मोड-  
 ने "ड चन्" (मासाविधिष्ट) बर्षमानाको छटि को  
 पौर उनी भाषामि प्रथम व्याकरण थाए 'सुमसु दम  
 यिम' प्रथम बिबा। राजाको हुक्मे ज्ञानवान् समो  
 मनुष्य लिखना पढ़ना सोखने ली पौर ज्ञमय उन नये  
 पचरोको सहायतामि धर्म पन्थादि संस्कृतये तिब्बतो भाया  
 में चन्दिन होने लये। रामामि प्रजाको धर्मनिष्ठ करनेये  
 छिय तिब्बतिष्ठित १५ पाद प्रपचार कर उको उको  
 नियमके अनुसार चलनेको बाध बिबा।

- (१) खोन-खोगमि (ईश्वरमि) निग्राम करो।
- (२) धमातुहात पौर धर्म शास्त्रका पाठ करो।
- (३) पितामाताको सेवा करो।
- (४) ज्ञानोको सेवा करो पौर विद्वान्को इषामन दो।
- (५) उच्च व श्रेय तथा नयोद्धाका मन्थान करो।
- (६) विनय पौर न्यायो बना।
- (७) धनभावको पच्छे कामोमें छर्न करो।
- (८) रक्षा का पदातुपण करो।
- (९) उपकारोका प्रत्युपकार पौर उनको प्रति उत्तर  
 हो।
- (१०) मद्राव पौर मोति रख कर हि मा देव छोडो।
- (११) पाकोय खजन वस्तु धान्यको को सेवा उपस्था  
 करो।
- (१२) देयके बिन साधन पौर देयके कामोमि तत्पर  
 हो।
- (१३) सको लोका (बटपरा) व्यवहार करो।
- (१४) पिप्यो का बात मत सुनो।
- (१५) मन्त्रता पौर मन्त्रताका व्यवहार नोको।
- (१६) बौध पौर जपताये विपद् पौर श्रेयका सहन  
 करो।

रन समस्त व्यवहारोये प्रजाका सुख सखन्द पौर  
 योकरता टिनो दिन बढ़ने लगे।

बडा जाता है कि राजा खोन तुचन गम्पोने भारत  
 मद्रामान्त्रके खिनारिये चवकोखिसिखरके नामधार  
 चन्दको व्यवस्था प्रथमा प्राप्त हो।

राजा नेपालधिपतिने ख्यातिवर्माको व्यवस्था बिबाइ  
 विवा। योतुखमि राजाको मात चन्मूक प्रथम मिलि से,  
 जिनमिसे चचोम्ब बुद्ध पौर मजेसको प्रतिमा, तारा  
 देकोको चन्दन प्रतिमा तथा रत्नदेव नामक बौद्ध मन्त्रि  
 प्रधान से।

बाद मोटपतिने खोनराज सेङ्गे-तुमन-योको कन्या  
 दुपयिन कुमारोको धर्म प्रदान कको गरवे कोशयसि  
 मजा कर उनमे विबाइ दिया। खोन राजकुमारो अपने  
 भाव बुद्धमूर्ति, एक बौद्ध धर्म ग्रन्थ तथा शिक्षा पौर  
 ज्योतिषशास्त्र लाई यो।

मोटके पछिबासो राजा खोन-तुचन गम्पोको सेन १८  
 सिमका ( पब नोदिस्तिगरका ) पवतार पौर छपरोड दो  
 राबियोंको तारादेकोसो मानने से। यथार्थमि इको लोनीके  
 यमये तिब्बतमें बौद्धधर्म एक र्थसे गिखर पर पडू च  
 गया था। राजामे १०८ बडे बडे मन्दिरोंका निर्माण कर  
 उनमें बुद्धमूर्ति प्रतिष्ठित को कीं। २३ वर्षकी उमरमें  
 उकीने मन्त्र-योका मदन धैकिनसे उत्तरमें १०८ मठ  
 बनानेके निमि अपने कको भिजा था।

११८ ई०में खोन तुचनने तिब्बतको विप्लव कासा  
 नवरी स्थापन को। समो प्रतिष्ठ बौद्ध धर्मोका अनुवाद  
 करानेच निमि उकीने भारतमे कुथर पौर मङ्गर पछिउत  
 को, निपाचने पछिउत शोचमन्त्र को पौर चीनसे ज्ञ-यन  
 मद्रो-नये नामक प्रविष्ट भाचार्यको बुनवाया था।

खोन-राजकुमारो पौर नेपाल राजकुमारोके कोई  
 सम्मान न हुई, इकोमे खोन-तुचनने की बि-कर पौर  
 यि-चन् नामको दो राजकुमारियोंका पाचिपहच किया।  
 पछलेके गर्भने मन-खोन-मन-तुचन पौर इमरेशि गुन-  
 गुन-तुचन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। गुन-रि बर  
 १९ वर्षका हुआ तब खोन तुचनने उये राजा बनाया  
 पौर आपने कामग्रह चबनमन किया। किन्तु दुःखका  
 विषय है, कि १८ वर्षकी अवस्थामि राजकुमारोको इमन्

मृत्यु हो गई। अतः स्त्रोत त्मन पुनः राजदण्ड धारण करनेकी बाध्य हुए। गीपावस्थामें उन्होंने अपना समय केवल शास्त्रचर्चा, धर्मचिन्ता और मन्दिर प्रतिष्ठामें धिताया। बुढ़ापेमें यथासमय वे अमिताभके धर्मकार्यमें मंयुक्त हुए। उनको दो प्रधान स्त्रियां भो तुपित लोकमें जा कर उनके साथ मिलीं। इस लोककी छोड़नेके पहले राजा जययोग और धर्मपूजाविधि प्रचार कर आये।

उनके बाद मन-स्त्रोन् मन त्मन राजा हुए। इधर चीनराजने देवावतार भोटराजका मृत्युसम्बाद पाकर तिश्वत पर अधिकार करनेके लिये बहुतवी सेनाएँ भेजी। लासाके निकट घममान युद्ध हुआ। युद्धमें चीन-सैन्य परास्त हुई। तिश्वतीय सेनाने भो चीन राज्य पर आक्रमण करनेके लिये शत्रुओंका पीछा किया था। किन्तु इस धार वे चीनसे सम्पूर्ण रूपसे पराजित हुए। इस युद्धमें वृह सेनापति गरने प्राणत्याग किया।

चीनानिःआकर लाभा नगरों पर आक्रमण किया। तिश्वतो लीगोने बहुत कष्टमें चीन राज-नन्दिनेसे लाई हुई सोनेकी शक्यमूर्त्तिकी छिपा रखा।

चीनाने राजभवन जला डाला। अज्ञेय्य मूर्त्ति भो वे अपने साथ लेती आते थे, किन्तु बहुत भारी होनेके कारण एक दिनके पथ पर ला ससे वहीं छोड़ कर चले गये।

:७ वर्षकी अवस्थामें मनस्त्रोन्को मृत्यु हुई। पीछे उनका छोटा लड़का दु-स्त्रोन्-मनपो राज्यसिंहामन पर बैठा। दु-स्त्रोन्के राज्य कालमें ७ महावीर तिश्वतमें आविर्भूत हुए थे।

दु-स्त्रोन्के पीछे उनके पुत्र मेग-अगतपोम राजा हुए। उन्होंने अपने प्रपितामह स्त्रोन्सनका लिखा हुआ एक ताम्रानुशासन पाया था। उसके पट्टनेसे वे जान गये, कि सर्वोंके समयमें तिश्वतमें बौद्धधर्म समधिक प्रबल होगा। अभी उस अनुग्रामन-वाक्यको सुसिद्ध करनेके लिये उन्होंने कैलासवासी भारतीय-पण्डित बुद्धगुह्य और बुद्धशान्तिको बुला भेजा। दोनों पण्डितोंने आनेसे अस्वीकार किया, किन्तु जो दूत उन्हें बुलाने गये थे वे पांच भाग महायान-सूत्रान्त कण्ठस्थ कर आये। पीछे उन्होंने ही उसे तिश्वतो भाषामें प्रचार किया। राजाने

पांच बड़े बड़े मन्दिर निर्माण कर उनके दरएकमें एक भाग करके महायानसूत्रान्त रखा। इसमें सिवा उन्होंने यत्ने सेरहोड तम्य प्रभृति कई एक शास्त्र अनुवादित हुए। उस समय भो तिश्वतमें कोई संन्यासायम ग्रहण नहीं करता था। वे भिक्षुसङ्घ स्थापन करनेके लिये जेपान (सियुल) में बहुतसे बौद्धसंन्यासियोंकी लाये थे। उन्होंने एक अत्यन्त बृहत् वैदुर्यमणिकी पाया था। प्रवाद है, कि उस तरहका बड़ा वैदुर्य और किमोके पाम न था। उन्होंने जन-राजकुमारी शि-तमुककी साथ विवाह किया। उस रानीसे उनके जौनतपा लापोन नामक एक अत्यन्त रूपवान् पुत्र उत्पन्न हुआ। राजाने उस पुत्रके विवाहके लिये अपने राज्यके चारों तरफ एक रूपवती कन्या टटनेकी आटमी भेजा, किन्तु उपयुक्त कन्या कहीं भो न मिली। अन्तमें चीनसम्राट् वैदुर्यके निकट दूत भेजा गया। उनकी कन्या काइम यन अक्षमात्या सुन्दरी थी। राजकुमारोंने भो तिश्वतके राजकुमारके अनुपमरूपको कथा सुन उनमें विवाह करनेको इच्छा प्रगट की। बाद वह पिताकी आज्ञा ने तिश्वतका चला। किन्तु तिश्वत पदुंचनेके पहले ही तिश्वतके किसी सामन्तने विव्वास घातकतासे राजकुमारको मार डाला था। राजा अगतपो-मने शोधसे यह निदाराण सम्बाद चीन राजकुमारीकी कहला भेजा। यह सुन कर राजकुमारीको शोक-सोमा न रही और वह फिर चीन देशको न लौटी। तिश्वतका तुपार राज्य और शक्यमूर्त्तिके देखनेके लिये वह यहीं ठहर गई। भोटराजने उस कन्याका स्वयं सत्कार किया। इसी राजकुमारीके यत्ने ही तीन वर्षके बाद पुनः अज्ञेय्य मूर्त्तिके निकाले गईं।

उस चीनकुमारीके रूप पर भोटराज भो मोहित हो गये। उन्होंने उससे विवाह करनेको इच्छा प्रगट की। पहले तो चीन राजकुमारी सहमत न हुई, लेकिन पीछे न मालूम क्या सोच कर राजासे विवाह करनेकी राजी हो गईं। इस तरह पुत्रकी जगह पिताने चीनराज-कुमारीका पाणि ग्रहण किया।

नई रानीसे शि-स्त्रोन् दे-तसन नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। सभी इस राजकुमारकी मञ्जुश्रीका अवतार मानने लगे। तिश्वतके इतिहासमें इन्होंने विशेष

प्रतिष्ठा प्राप्त की है। इनका जन्म ७३५ ई०में हुआ और ७४१ ई०में वे राज-सिंहासन पर बैठे। यह एक बिलम्ब पक्षिप्रकृत थे। राजपुत्रकास्यमें जितने पक्ष्य ही उन पक्षियों का लोचन करके वे विपुल धर्ममत्तके प्रचारमें लग गये थे। इस समय राजदरबारमें दो दमकें लीम थी, एक बौद्ध दम और दूसरा बौद्ध विद्वांसो दम। बौद्ध विद्वांसो मन्त्रिगण स्वर्दा राजाको कष्टा करती थी कि बौद्धधर्मसे राज्यमें बोर अनिष्ट हो रहा है, इन कारण राज्यके अन्त्यापके लिये राज्यके समो बौद्धोंको मगा देना उचित है। प्रधान मन्त्रो मयन मो इसो दममें शामिल थे। किन्तु बौद्धधर्म पर राजाका प्रगाढ़ अनुराग था। बौद्ध सम्प्रदायके प्रधान मनुष्योंमें दैवज्ञ और ज्योतिषि योंको गिणवत दे कर अपने धर्ममें भर दिया। यह वे कहने लगे कि राजाका शोध हो अनिष्ट होनेकी संख्या बना है। यदि सबसे प्रधान दो राजधर्मकारी पन्थकार कन्दरामें लीम साथ काम करें तो राजाकी जीवन रक्षा हो सकती है। राजाने समाने समो धर्मचारियोंको यह बात कह सुनाई और यह सो कहा, कि जो इनके लिये धान्योसर्ग करेगी, उनके धर्मपर दिवे जायगे। प्रधान मन्त्रो मयन राजाके इस प्रस्ताव पर सहमत हो गये। बौद्ध मन्त्रो लोमने उनका अनुसरण किया। दोनोंने पन्थकार कन्दरामें प्रेष्य किया। लीम मनुष्योंको समारं के समान यह कन्दरा गइरी थी। दो पहर रातको लोमने मनुष्यात्मकोमें पूरं सङ्कतके अनुसार एक पिङ्गमें रखी संख्या कर लोको धावर निष्कास किया और एक बड़े पत्थरके उस सङ्करो गुहाका मुह बन्द कर दिया। इस तरह प्रधान मन्त्रो मयनको प्राणवाहु लगी गइरके भीतर लड़ गई। राजाके बय प्राण होने पर वे लघयनके शास्त्रविद और पण्डित पद्मसम्भवाको बुधा तिम्बतमें बौद्ध धर्मका प्रचार करने लगे। राजाको सहायतासे पद्मसम्भवने लड़ा संख्ये नामक एक बड़ा मठ निर्माक किया। इहाँ राजाके समय ज्वलन मशायान कोलसे था जहाँ बौद्ध मतका प्रचार कर निष्क खेलेके मनुष्योंको अपने मतमें लाने लगे। भारतके जमल कोलने था कर लके शास्त्रोय तर्कमें पराजित किया। तब राजा मो लीम धर्मविश्वामियों पर विषय रुपये

शानन करने लगे। लोमने अपने शासन विधिको एक सुदृढ़ प्रणालीमें निष्का कर राज्य भरमें प्रचार कर दिया। प्रजा नाशकारके मनुष्यके लिये दोषाको घोर दण्ड विधि प्रचलित हुई। ३६ वर्ष राज्य करने बाद राजा एक सोहसे चल गये। उनको बहो लो तरे-नी माइके लीम पुत्र थे, जिनमेंसे बड़े सुनि-त-सम्बो पिण्ड-नि हासन पर पाठ्य हुए। ये नाबालिका पक्ष्यामिं राजा हुए थे इस-लिये उनके धार्मिक मन्त्रिगण लगेके बदले राज्य शासन करती रई। राजा सुनि-त मययोने अपने प्रतापके राज्यके धनो दरिद्र लक्ष गोच समो मनुष्योंको एक सा बना दिया। जगै दरिद्रोंका समाज पूर करनेके लिये अपने सम्पत्तिमें कुछ कुछ लक्ष बाँटने लगे। सचमुच लो दिखो राजाके समयमें न हुआ था यह रनके राजत्व कालमें इहाँके यज्ञके हो सुखप। किन्तु राजाने देखा कि उनको इनको चेष्टा लक्ष्य करती है। दरिद्रोंको दरिद्रता घटनी नहीं है और लो मनुष्योंके लन नितरक करनी पर लो वे लो-के लो धर्म शाको लने हुए हैं। इस पर राजा बहुत विचिंत हुए। पण्डित और लोचकने राजा को समझाया कि मानव अपने पूर लक्ष्यको सुलति और दुष्कृतिके अनुसार कुछ कुछ सुयमें और लक्ष गोच लो कर लक्ष्यपथक करती है। जो कुछ लो राजाके साधु बह्यके लिये शरीर प्रजा तब लो उनका नाम लोमने लगे। किन्तु इस तरहके राजा बहुत काल तक राजत्व कर न सके। एक वर्ष लो माय नहीं होने पाया था कि, लोको माताने लोटे पुत्रको राजा बनानेके लिये निय लिखवा कर लोका प्राण नाम किया। लोटे माई सुतिन संघनयोके राजा होने पर राजमाताकी इच्छा पूरी हुई। सुतिनने पद्मसम्भवके निष्कट मित्रा काम लो ली। पाठ या लो लोकी पक्ष्यामिं से राज सिंहासन पर बैठे। लोको समयमें राज्यको यथेष्ट लोचवि हुई लो और तिम्बतों भावामें बहुतसे मच्छत बौद्ध धर्म अनुवादित हुए थे। उदाहरणामें पक्ष पुत्र लोचकर लो पर लोचको विधारे। लोको प्रथम दो पुत्रोने बहुत धोड़ समय तक राज्यशासन किया था। बौद्ध मन्त्रियोंके पक्ष्यामिंके पक्ष दिनोंमें लो लोकी मन्त्र, हुई। अनिष्ट रस-पक्षनने मन्त्रियोंके निर्वाचनके राजपद प्राप्त किया।



८४५ से ८६० ई०के मध्य रत्न-पचनका जन्म हुआ। इनके समयमें तिब्बतो भाषाका एक युगान्तर उपस्थित हुआ। इन्होंने मगध, उज्जयिनी, नेपाल, चीन प्रभृति नाना स्थानोंमें लोगोंको भेज कर असंख्य ब्राह्मण ग्रन्थ संग्रह किये। तिब्बतो भाषामें उन समस्त पुस्तकोंको अनुवाद कर प्रकाश करनेके लिये उन्होने भारतवर्षसे तत्कालीन विख्यात बौद्ध पण्डित जिनमित्र, सुरेन्द्रबोधि, भिनेन्द्रबोधि, दानशील और बोधिमित्रको बुलाया। पहले जिस अनुवादमें भद्र या और जो असम्पूर्ण था, उसीका संप्रोधन करनेके किये रत्नरत्नित, मञ्जुश्रीधर्मा, धर्म रत्नित, जिनसेन, रत्नेन्द्रशोल, जयरत्नित, कव-पलतमेग, चोटेश्यल-तपन प्रभृति पण्डित नियुक्त हुए थे। व्यवसायियोंको सुविधाके लिये राजा रत्न-पचनने चीन देशकी तोल और भाषाका अपने राज्यमें प्रचार कर दिया। भारतीय बौद्ध यात्रकगण जिस तरह विधि और रीतिनोतिका पालन करते थे, उन्होने यहाँके यात्रकोंमें भी वे ही नियम प्रचलित किये। वे जानते थे, कि यात्रकोंके हाँ हाथमें धर्म शासन है। इसीसे वे उपयुक्त मनुष्योंको देख कर उन्हें यात्रक बनाने लगे।

इन्हींके समयमें चीन और तिब्बतमें विद्रोह छिड़ा था। चीन पर आक्रमण करनेके लिये राजा रत्न-पचनने बहुतसी सेनायें भेजीं। चीन और तिब्बतकी युद्धमें रत्न की नदी बह चली थी। दोनों देशके ज्ञानियोंने इस अनर्थकर रक्त-पातके निवारणके लिये खूब चेष्टा की। उन्हींके यत्नसे लड़ाई रुक गई और सन्धि भी हुई। इस समय गुड्डुमेत नामक स्थानमें एक पत्थरका स्तम्भ गाड़ कर दोनों राज्यकी सीमा निर्दिष्ट हुई। एक-प्रखर स्तम्भमें बह सन्धि-पत्र खोदा गया था।

रत्नपचनके समय तिब्बतमें अनेक सुनियम प्रचलित हुए थे। इस समय मन्थासो और यालकमगडलोकें प्रति गजाका विशेष लक्ष्य था, जिससे कि वे शास्त्रविधि लक्ष्मण न कर सकें। अन्तमें किसी दुष्टने गला घोट कर राजाके प्राण लेलिये। ८०८ से ८१४-ई०के मध्य राजाके भाई-लन्दर्मकी उत्तजनासे यह दुर्घटना घटी थी।

अब दुष्ट लन्दर्म राजा बन बैठे। उनके समान बौद्ध विहपो राजा और कोई देखे नहीं गये थे। वे सदा ब्रम

धूम कर कड़ा करने थे कि बुद्धकी प्रधानता होनेसे उनके असत्य उपदेशमें आ कर हो भारत और चीनके मनुष्योंनि अपने सुख शान्ति खो दो है। बौद्ध पण्डित उनके दोरा-त्पासे देश छोड़ कर भग चले। लन्दर्मने किसी अमणको तो गृहस्थ बनाया और किसीको उनके वास्तु पशु शिकार कर लाने वनको भेजा। जहाँ जितने बौद्ध ग्रन्थ पाये गये, वे जला और फाड़ दिये गये। कितने बौद्ध मन्दिर उनके आदेशसे विध्वस्त हुए। जिन मन्दिरको तोड़नेको सुविधा न थी, उसके सामने टोवार खड़ा कर उसका दरवाजा बन्द कर दिया गया। उनके मन्त्रो और खुशामदो टूटनेनि फिर दोवारमें बहुतसे बुरो तसवोरे अङ्कित कर दीं। ये सब अत्याचार धार्मिक तिब्बतवासियोंको अमद्य मालूम पहुँच लगे। लहलुन पल पल-दोर्जे नामक एक साधु पापिष्ठ राजाके हाथसे धार्मिकोंको बचानेके लिये एक दिन रणतट्य करते करते राजाके निकट जा पहुँचे और एक तीक्ष्ण शर द्वारा उन्हें विध्वंसक बचासे बहुत शोष चम्पत हो गये। उस शराघातसे ही राजाकी प्राणवायु उड़ गई। उनके साथ साथ तिब्बतोय राजाओंका एकाधिपत्य भी जाता रहा।

लन्दर्मके दो रानियाँ थीं। छोटी रानो गर्भवती थी। इससे बड़ी रानोको बहुत ईर्ष्या हुई। उन्हींने भी-गर्भ होनेका एक टोंग रवा। यथा समय छोटी रानोके एक पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ, जिसका नाम नम-दे होद-सुन रखा गया। बड़ी रानोने उसका बध अथवा हरण करनेको चेष्टा की थी, किन्तु उस नवजात शिशुके निकट एक जलती हुई वत्ती रहनेके कारण उनका उद्देश्य सफल न हुआ। इससे बड़ी रानो और भी-क्षुब्ध हो गई और उसी समय उन्हींने बदला लेनेके लिये एक गरोब लडुकेको ला कर उसे अपने पुत्रसा-प्रचार-किया। बड़ी रानोसे सभी भय खाते थे, इस कारण किसीके सन्देह होने पर भी वे उस पुत्रके विषयमें कोई बात नहीं छिड़ते थे। उस बालकका नाम थिदे-युमतेन पड़ा।

पहले बौद्ध मन्त्रिगण ही राज्यशासन करते रहे। उन्हींने पुनः सभी बौद्धकीर्त्ति-श्रीको स्थापन करनेकी यद्यत् चेष्टा की थी। लन्दर्मके दोरात्पासे जो सब मन्दिर अङ्ग हीन हो गये थे, मन्त्रिगण उनका संस्कार कराने लगे।

जब टोनी भार्द बड़े हुए. तो राज्यके सिधे थापसमें बिबाद लडा। चन्तमें समथ राज्य दो भागमें बांटा गया। होटसुनने पयिम भाग और सुमतेनने पूर्व भाग पाया। राज्यके थापसमें बंड जानेसे राज्यभरमें बुबकिपड चकने लगा। इससे राज्यको साम्यत्तरिक थवन्वा छोरे जाई पराब होने लगे।

८८० ई०में होटसुनका देहाल हुआ। उनके पुत्र पल-खोरलमन मिर्क १३ वर्ष राज्य कर (८८३ ई०में) ३१ वर्षकी अवस्थामें मरे। उनके दो पुत्र थे तपेदप-पल और सि-कि-देंत निमगोन। कनिष्ठ निगप भाइरि ( लडाक ) देहाकी गन्धे और बकी लकीने राजा होकर 'पुराच नामकी राजधानी और नि सुन नामक दुर्गकी प्रतिष्ठा की। उनके तीन पुत्रीमेंसे बड़े पनथि-देंरि गन्ध-गोन मल बुन प्रदेगमें मंभने तपि-दे गोन पुरान प्रदेगमें और छोटे वंतसुगगोन गानसुम (बतमान गुणमि) प्रदेगमें राजा हुए। वंतसुग-गोनके दो पुत्र थे, बड़ा किराई और छोटा खोलने। फ्लेण्ड डेरी-होट नाम चारथ कर न ग्यापो जा गये।

तनि तवेग प वितान्का पन्धुके बाद राज्य सिंहासन पर पभिविज हुए—उनके तीन पुत्र थे—पसदे, होद-दे और खे दे।

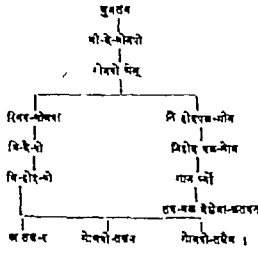
इस समय तिब्बतमें बौध धर्मका पुनरुत्थान हुआ। लन्धर्मके समयसे इस समय तक कोई भारतीय पंडित तिब्बतमें नहीं पाये। बहुत समयके बाद एक निपासी

बिभापो पण्डितने ( तिब्बतमें सिद्ध तवे नामसे परिचित ) पण्डित थल-रिचब और स्थानिको तिब्बतमें बुलाया। जिन्हु खब से पण्डित तिब्बतमें पहुँचे, तो इनको मुहूर्त हो गई, पोकि बिद्योने उन पण्डितको पाश्चा मो न किया। स्थानि यहाँ निबोधन चरमामें रच तमय नामक प्सागमें पय पाकसुति शा चकस्यन काकि जाबिहामिबाध करने लगे। कुछ दिन बाद तिब्बतो भापामें उन का मरीय हो जानेसे उनको बिद्याको लबा छोरे छोरे दीजने लगे। पन्तमें लकीने धम प्रदेगके पण्डितोंके साथ शास्त्रालोचना की। लन्धमें तिब्बतो भाषामें एक 'गन्धमाना' बनाई जिन का नाम लकीने "कथायाप्त्र" रखा।

राज्य गीय जमच डेरीहोदके थक, परियम और वेहासे तिब्बतमें बौद्धधम का पुनरुत्थान हुआ। १०१३ ई०में इसका सूत्रपात हुआ था। लक जमचने मगधम भारतीय पण्डित धर्मपालको बुलाया। उनके साथ तीन सिक् मो पाये हुए थे। राजाने इन लोयीको मन्त्रायतानि देसमें पुनः बम काना थाप और बिनवयाफ्ठे प्रचारने बिधीय सुविधा पाई।

घोर र जमचके पुत्र लक देने पण्डित सुमूति योयानि को बुलाया, इस मन्त्रापण्डितने इस देसमें थाकर ममपत प्रथापारमिताका (धर बिन) चनुबाद किया। बिष्पात चनुबादक रिगडिन सभानयो सुमूति द्वारा यात्रक पद पर प्रतिष्ठित हुए। लकटके तीन पुत्र थे होद दे गिय होद और थल-सुब होद। कनिष्ठ पुत्रने बौद्धधम और लकके बिद्वर मतने दमन याफ्रादिमें बिधीय पभिव्रता नाम की। बौद्धधर्मको बकतिसे लिए इस पण्डित राजपुत्रने पापान्तमें मन्त्रयापनिवारण प्रानो पण्डितोंको बुकने के लिए पादपो भेजा। तानाय करने पर प्रसु पतिय पण्डितका नाम और वय तिब्बतमें मन्त्राका मान्यम हो गया। थल-सुब होदने उनको बुलानेके लिए मयतपो लोचनके साथ घोर मो कई एक मनुष्यामें भेजा। लोचन पायाबलमें बहाके बौध धर्मक प्रदान स्थान बिह्वमयोन मगरकी पहुँचे। बहाके तन्वाकान राजाने उनका खुब सम्भार किया। बह राजा तिब्बतोय थोयोके पय तनोन बिली नामने पभिविज हुए हैं। बाद बकने पण्डित प्रसु पतियके नामने लाहाइ प्रविषात हो लन्ध राज्यभरित

१. पुनरुत्थान संस्थापकी इस तरह काथो जाती है—



स्वर्णादि बहुमूल्य उपहार दिये और पीछे तिब्बतमें बौद्ध धर्म का प्रचार, श्री हृदि, धर्म और पुनः प्रचारको चेष्टा का सारा विवरण उनसे कह सुनाया। कातर हृदयसे उन्होंने यह भी कहा, "अभी आपके मित्रा और कोई दूसरा मनुष्य नजरमें नहीं आता जो तिब्बतको इस धर्म विप्लवसे उद्धार कर सके, अतः आपको एक बार तिब्बत जानिका कष्ट दिया जाता है।"

लोचव और उनके अनुयायी पण्डित अतिशय ही शिष्टाचार ग्रहण कर उनको सम्मति पानेके लिए दासको नाई' भेवा करने लगे। अन्तमें अतिशय ताराटोवोकी आकाशवाणीसे तिब्बत जानिको राजो हुए। वे तिब्बतका बहुत उपकार और एक महासाधक (उपासक) का विशेष सहायता करेगी, २५ प्रकारको आकाशवाणी होनेसे उन्होंने ५८ वर्षकी अवस्थामें १०४२ ई०को अपने प्राणकी उपेक्षा करके विक्रमशालकी सहायताको परित्याग कर तिब्बतमें प्रस्थान किया। नहरि प्रदेशके थोङ्गि सहायतामें अतिशय रहते थे। उन्होंने राजाको तन्त्रसूत्र सिखाया, वाद उ और तसन प्रदेशमें धर्म प्रचार किया। उन्होंने कई एक शास्त्र ग्रन्थ प्रणयन किये, जिनमेंसे लमटोन (सत्यप्रदोष) प्रधान है। ७५ वर्षकी अवस्थामें १०५५ ई०को अतिशकी मृत्यु हुई। होट-दे के पुत्र अक्केटके राजत्व कालमें अतिशने उ, तसन और खम प्रदेशोंके ममस्त नामा और अमणको एकत्र कर कालगणनाके नूतन नियमका प्रचार किया। उत्तर भारतके शम्भन प्रदेशमें पष्टि-संवलरको वर्षचक्रकी गणनाके जो नियम अतिशने पाये थे, वे ही इस समय प्रचारित किये गये। तिब्बतो लोमो'ने इसका नाम रक्ष-जून रखा। १२०५ ई० तक अतिशकी मतसे ही शिष्टा दो गई थी। इस समय विख्यात लोचवने बहुतसे संस्कृत ग्रन्थ तिब्बतोय भाषामें अनूदित किये। तैरहवीं शताब्दीमें पण्डित मर्प, मिलगोनपो, काश्मोरीय पण्डित शाक्यन्धो और अन्यान्य भारतीय पण्डितोंने तिब्बतमें बौद्ध धर्म प्रचारके लिए विशेष सहायता की। तसेदसे निम्न नवम पुरुषमें राजा तग-प-देके\* राजत्वकालमें मैत्रेय बुद्धकी एक प्रतिमा बनाई गई

जिसमें १२०० टोटपद (अर्थात् १५ लाख रुपये) खर्च हुए थे। उन्होंने मञ्जुश्री देवको एक प्रतिमा बनवाई थी जिसमें ७ ब्रह्म अर्थात् एक मन सोना लगा था। इनके पुत्र असोदे पिताको अपेक्षा भक्तिमान् थे और प्रतिशय बुद्धगयाके वज्रामन (दाज-टन) नामक बौद्धपोठमें पूजा भेजते थे। इस पथाको इन्होंने अपने जीवन काल तक जारी रखा था। इनके पौत्र अननूमलने 'कह्युर' नामक धर्मशास्त्रको सम्पूर्णरूपसे सोनेके पत्ररामें लिखवाया था। अननमलके पुत्र रिहुमलने लामा नगरमें बहुत खर्च करके बुद्धमूर्त्तिको प्रतिष्ठा की, तथा उनके मन्दिरके गुम्बजको स्वर्णमण्डित करा दिया था। रिहुमलके पुत्र सङ्ग-ह-मल शाक्य-प नामाशंसि बौद्धधर्ममें दीक्षित हो राजमिहासन पर बैठे। इस वंशके अन्तिम राजा अपुत्रक थे। उन्होंने पर-तव-मलके आख्योय सो-नम-टे का नाम पुष्कमल रख कर राजगद्दी पर बिठाया।

वश तसेग-प राजाके पुत्र पलदेके वंशधरोंने गुणयन् सुगयवल, चित-प, लहतसे, ननलुन और तसकोर प्रदेशों में छोटा छोटा राज्य स्थापन कर वहाँ राज्य किया। किय-टे के वंशधरोंने सु, जन, तनग, य-क-लग और ग्यल-तसे जिलोंमें छोटा छोटा राज्य बनाया। होदके चार पुत्र थे—फवदेसे, थिदे, थिकुन और नग-प। प्रथम और

(१) तसेद	(१०) असो-दे
(२) वरदे	(११) जे-दर-मल (१५)
(३) काशि दे (१५)	(१२) अनन मल
(४) मने	(१३) रिहु-मल
(५) नागदेव	(१४) सङ्ग-ह-मल
(६) तसल-फुगुग	(१५) जे-दर मल (२५)
(७) कशि-दे (२५)	(१६) थ-जिन-मल
(८) प्राश-तसन-दे	(१७) कलन-मल
(९) तग-प-दे	(१८) पर-तव-मल

चतुर्थी तदन-योग प्रदेय पर, द्वितीयमे कामदो चोः  
ततोन्वय प्रदेय पर चोः तृतीयमे च प्रदेय पर च अधिकार  
जमाया। ततोय चिन्तन पंच सुन नगरमें राजधानी ठका  
कर से गये। चिन्तनके पंचस्तन पंचमपुत्रच श्रीमोनात्  
चोर चो न-न-रिन-योहि चोर पत्त-प्रगामो-पु-व नामके रा-  
नामा-पौत्रा विविष्ट-रूपसे परियोजक करते थे। इन्हें  
पौत्र शास्त्रयोग प्रसिद्ध शास्त्र पण्डितके परियोजक थे।  
शास्त्रयोगके पौत्र तन्व प-रिन-योहिको बोन-सम्पाटके बर्ष  
बृह-व्यतिर-चोती थी। तन्व-चो-पौदनमें जो विष्णवात्  
प्रासाद है, वह इहाँका बनाया हुआ है। इन्हें पुत्र  
शास्त्र-योग-पौ (२४) में मुख्य वर्गान प्रासादमें एक  
सङ्घारामकी प्रतिष्ठा थी।

तिम्बलमें सुगक बधिकार—विष्णुनव गीव रावबन  
बहुत जो सुबंन थे। जिस सुवकबोरने भारतवर्ष पर  
पाम्मव चित्रिया दा लयी ब्रिटिसवर्गने ११वीं शताब्दीके  
प्रथमभागमें बातकी बातमें समस्त तिम्बल पर अधिकार  
जमा लिया। ब्रिटिसके बाद उनके एक पुत्र गोगान राज्य

१ विष्णुनव गीवरावके—

विष्णुनव गीवराव	जोगीराव
शेखर विष्णु-न-वर	बाबन-गोत्र (१२)
सुमचन (१ पुत्र बोर)	बाबनब्रह्मि
श्री बर	प्रग के रिन पोके
वर्ष (अध्यात्म कई मनुष्य)	राजवगामपो (२४) व चोर
बोनो-नक-बोरा	के-बाबन रिपुके

\* बा-गियर्का शिखरमें सेमिर रवकोरा वा बौद्ध-बुने नामके  
मठकर है। वे चोर्ष बाहुर (बहादुर) नामके चारकेका  
(बदरचंद) राजाके औरत और राणी हुकाय (बर्कत) के  
वर्षके इन्धे जन्म हुआ था। १८ वर्षके उमिरमें वे पौत्र  
के दाहमें भर बैठे। २१ वर्षके एक के मारके, शीव-शिखर  
और एहिवाके अध्यात्म प्रदेको वर भागजय करके रहे। बहुत  
तोषे इन्होंने जीता था और बहुतसे मूला भी था। ६१ वर्षके  
अवस्थामें इन्धे वैद्यक हुआ।

बा-गियर् वा वेमिचका हैकी।

पूजाके अधिकारो हुए। तिमिलके दो सुबंन मोदन और  
गोमुननमें चोपनी केमिमें गोकके पण्डितके हुकोवा था।  
इस बटनके शास्त्रज्ञ ११मके प्रधान पौत्रकेमि तिम्बलके  
राजनीतिक सुंममें सुंमोके के बर्ष-मंत परिचितके मिला एक  
मिंथा सुंम मिला।

तिम्बलमें बाबकधिकार—(१२००-११० ई.में)  
चोन दीगके प्रथम सुवकसम्पाद प्रसिद्ध कुबरी (बहबरी)  
ने शास्त्र पण्डितके मतके प्रथम कोदोई पन्तवन्  
नामके पण्डितको पपनी जमामें बुलाया। वे १८ वर्षकी  
पंचजामें चोन-राजसमामें पण्डित थे। उनके पानिके सम्पाद  
ने उनके अर्ध-सम्पत्, पपनी सुवर, मभिसुताके पत्तहार,  
मभिसुताका सुहृद, अर्ध-दण्ड चोर अर्ध-सूत्रका सुहृत्  
अथ तथा मित्रान आदि स्वधारमें दिने। जोके सम्पादने  
उर्ध्व अपना सुब बनाया चोर बीहर्षमें पंचकम्पन जिवा।  
प्रथम सम्पादने सुबको प्रकृत तिम्बल (च चोर तदन प्रदे  
गये ११ ब्रिक्कापोंके धाकी) कन् चोर-धामदो प्रदेय दामने  
दिये। इस प्रथम शास्त्र जामा तिम्बलके साधोन प्राप्त

१ सुबके (अन्तर) वा अर्ध-नवता वा अन्वैधिक जगन  
विक्रि है।

१ तिम्बलके ११ बिके दिने कुबकेकानि चणपके दावने  
दिने, इन्के बाव नीके दिने काठे हैं—

उर्ध्व-मरेरमें —

- १ १ इतर और दोकेकभयो (को-मो)।
- २ सुभो (कुभो) ५ वन्।
- ४ कुमिग १ वक।
- ४ बरबर्ष १ —
- १ इन्म ४ वन्— जो-के-न
- २ शिप ५ वन्—सु।
- १ उरक-व ६ वर-वन्।

६ और उर्ध्व-मरेरमें वर दण-वर्षकेके १६ बिके  
(बरोव वा बन्-पो-की वितामोके बाव) अर्धविक्र है।

कर्त्ता ठहराये गये। फगुप और टोगन फगुप नामसे विज्ञेय प्रसिद्ध हुए। १२ वर्ष तक चीन देशमें रह कर फगुप शाक्यभूमिमें लौट आये।

फगुप टो-गोनकी जब शाक्यभूमिमें ३ वर्ष हो चुका था, तब उन्होंने कङ्गुकी पुस्तकको एक प्रस्य प्रति-लिपि तैयार कराई। यह प्रतिलिपि स्तर्णाचरमें लिखी गई थी। प्रकृत तिब्बतके तीरह जिलोंका राजस्व वसूल कर शाक्यभूमिमें उन्होंने एक ऊँचा मन्दिर बनवाया। इसके सिवा उन्होंने एक स्वर्गकी प्रकाण्ड बुद्धप्रतिमा, एक बहुत ऊँचा क्षीरतेज (चैत्य) और अन्यान्य देव प्रतिमा की स्थापना की, और प्रति दिन एक नौ अमणोंको आहार तथा भिक्षा देनेकी पूरी व्यवस्था कर दी। चीन सम्राटके प्रायः नालुमार ये दो बार चीन देशको गये थे। अबकी बार लौटते समय इन्हें ३०० त्रे स्वर्ण, ३०० त्रे शीष और १२००० त्रे माटनकी योगाक मिली थी। शाक्यनामाश्रमिं ये हो सबसे अधिक चमत्कालो थे। इनके परवर्त्ती प्रतिनिधिगण दुर्बलमना और अक्षम प्रकृतिके समझे जाते थे। उनके समयमें राजाका सुख स्व-

शाक्यराज-प्रतिनिधिगण —

(१) शाक्य ससनयो

कुनगाइ ससनयो (इन्होंने राज्य नहीं किया)।

- |                    |                         |
|--------------------|-------------------------|
| (२) पन् तसुन्      | (१२) हो ससेर सेगे (१म)  |
| (३) बन कर्पो       | (१३) कुन रिन्           |
| (४) च्यन-निन-क्योन | (१४) दोन-पो-पल          |
| (५) कुन-पन         | (१५) फोनत्-सुन          |
| (६) पन्-दुन्       | (१६) हो-ससेर-से'गे (२म) |
| (७) च्यन दोर       | (१७) गाल-व ससन पो (१म)  |
| (८) बन दोन         | (१८) हुन्-क्युण पल      |
| (९) वेग-या-पल      | (१९) सो नम् पल          |
| (१०) सुंगेपल       | (२०) ग्यल-व-ससन-पो (२म) |
| (११) हो-ससेर-पल    | (२१) वन्-उसुन           |

च्छन्द्य जाता रहा, सामन्त और सम्भ्रान्त लोग भी बागो हो गये। शाक्यनामा लोग इन सब प्रतिनिधियोंके हाथोंको कठपुतली हो रहे थे। यत' वे इसका कुछ भी प्रतिकार कर नहीं सकते थे। कलह, युद्ध, पङ्क्यन्व, खून खराबो आदि होने पर भी उन सब प्रतिनिधियोंमें किशोने भी नामाश्रमिंको क्षोभनता न छोड़ी।

फगुप परवर्त्ती चतुर्थ प्रतिनिधि च्यन्-रिन् द्योपको चीनसम्राटने एक पन्ट मिली थी, किन्तु इसके कुछ समय बादने वे अपने एक नोकरके हाथसे मारि गये। इनके परवर्त्ती दानें प्रतिनिधियोंने आरुनादिका संस्कार किया था। अनलेन नामक प्रथम प्रतिनिधिने शाक्य सद्धारामके बैठने प्राचारादिका निर्माण किया। उन्होंने हो खन्-पर निन और फोन-गाई रि नामक दो सद्धाराम प्रतिष्ठित किये। इस समय दिगुण सद्धारामको जमत सबसे प्रबल हो गई थी। यहा उस समय १८ हजार अमण वाम करते थे। शाक्यसद्धाराम और दिगुण सद्धाराममें इस प्रधानताकी ने कर विवाद उठा। उस विवादको उत्तर तर हडि होतो गई, यहाँ तक कि शन्-ने अनलेनने सेना भेज कर दिगुण सद्धारामको लुटवा लिया और जलवा डाला। सद्धाराममें आग लगनेसे कितने अमण त' प्राण ले कर भागे और कितने उमोंमें जल सरे। इस दुर्दुर्गाके कई वर्ष बाद पुनः यह सद्धाराम प्रबल और जमतागानो हो उठा। उस समय फिर गलुग-प मतावलखियोंके साथ विवाद चला। इस बार भी सद्धारामपूर्वसा तहस नहस कर डाला गया। लेकिन यह सद्धाराम अभी शाक्यसद्धारामका सुकाविला कर रहा है। अनलेन जब दिगुण सद्धारामका धंस कर लौटे आ रहे थे, तब रास्तेमें भी किशोने इन्हें मार डाला। वनतसुन नामक श्रेय प्रतिनिधि फगुदु नामक प्रधान मन्त्रोंके साथ युद्धमें परास्त हुए। इसके साथ साथ तिब्बतमें जो ७० वर्षसे याज-काधिकार चला आ रहा था, वह भी जाता रहा।

तिब्बतमें चीनाधिकार — शाक्य सद्धारामका प्रभुत्व लीप हो जाने पर दि-गुण, फगु-दुव और तमल नामक सद्धाराम क्रमशः प्रभूत जमतागाली हो उठे। १३०२ ई०में

विद्याल म वि खान सुव-व्यसतवन को पगमो-दु ७ नामसे प्रसिद्ध है उनका अर्थ पगमोदु नगरमें हुआ था। उन्हींके जो प्रकृत तिम्बटके १३ त्रिंशों पौर खान प्रदेशको बधीभूत कर बर्षा पपना राजस्य स्थापित किया। तीन बर्षोंकी उमरमें इन्हींके लिखना पढ़ना सोच लिया था। जब बर्षोंकी उमरमें हो-खि-नोनचन नामाने इन्हे धर्मशास्त्रादितो गिथा दो। सात बर्षोंकी उमरमें ये खानचन नामाने उपदेश धर्ममें दाखिल हुए। जब ये चौदह वर्षके हुए तब इन्हींके शास्त्रसंहाराममें जा कर प्रधान नामा उपदेश रिलोकोशै साथ पाश्यात किया पौर उन्हे एक टह उपहारमें दिया। कुछ काल तब शास्त्राहारांममें रहनेके बाद एक दिन प्रधान नामाने जाति समय इन्हे पपना प्रमाद पानेकी बुनाया। १० बर्षोंकी उमरमें उनको विद्या-गिथा पौर परोषा अतम हुईं थे। जब उनको उमर निर्र १८ वर्षोंकी हो, तब खोन-सम्पाट्ने इन्हे १० हजार सेनापोंके पत्रिनाउककको मजद मिलो हो। इस मन्धान पर दि गुनु तयन यह तमन पौर शास्त्र प्रदेशके सदार नोन जन पडे। पन्नामें दोना पन्नामें खूब समतान सुख चला। प्रथम बुद्धमें तो पगमोदु पराप्त हुए सेखिन द्वितीय बुद्धमें उन्हींकी जीत हुई। यह बुद्ध फिर कई बर्षों तक चलता रहा। पन्नामें पगमोदुर्न किजयो हुए। विपक्षके मरदारमच पकड़े गये पौर कैद कर लिये गये। इन्हे बाद उन पौर तमन प्रदेशके मरदार तथा सामापोमि मिल कर खोन सम्पाट्ने मिले टन किया, कि पगमोदु बड़े पन्नाचारी हो गये हैं। विविधतः शास्त्र-भरदारोंकी इन्हींके कैद कर रखा है।

७ अर्थसे-दु की व कताकिया—

- |                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| (१) अर्थ-मो-दु ( तिब्बती ) |                           |
| (२) अर्थ-अव-गुण ठेगणे      | (८) रिभडेन-रोजेवन         |
| (३) अर्थ-परिचयेन           | (९) गठनग-वन               |
| (४) अर्थ-नन घग-पन          | (१०) वरन् कपि             |
| (५) अर्थ-परिचयेन           | (११) अर्थ-वन प्रगणे       |
| (६) अर्थ-अव-कण्ड वन        | (१२) अर्थ-वनको            |
| (७) अर्थ-अव-अनुवने         | (१३) अर्थ-पौर वन् वन् कुन |

इस पगमोदुने भी चीनमें खर्च जा कर तन्धानीन हो मन ध म नामक प्रसिद्ध खोन सम्पाट्ने को तरह ताइकी बहुमुद्रा मामपो दुर्लभ पनग्य पौर अंत मि नचर्म उपहारमें दे कर प्रकृत घटना कह सुनाई। सम्पाट्ने यह रचण सुनकर पगमोदुका पदनेके भी पत्रिच मन्धान किया पौर प्वावरताके पुरस्कार करण म शातुकमये भोग करनेके लिये स प्रदेशतमके पत्रिहारमें कर दिया। तमन् प्रदेश यास्त्रोंके जाव रहा। खोनने नोट कर पगमोदुने राश्यामनको सुष्यवस्था पौर नियमादि फिर कर दिवे। प्रायोन राजनोति पौर पाईनका स स्कार किय गया। शास्त्र शासनकलापोने खोन तमन मन्पो पौर खि खोनके पाईनादिवा प्यान कर दिया था। इन्हींके उनका स्कार कर पुन उन्हे काम में लावा। इन्हींके नेदेन तने नामका एक दुर्ग बनवाया था, जहां जियो का प्रवेश निषिद्ध था। विनयमाफ्फानुमार पगमोदु सयनका पावरक करवेके पौर मध्य तथा राजिमोत्रन इनके लिये इरास था। ये गोनकर, अयकर पादि १३ दुर्गके तथा अने-यन संहारांमके प्रतिष्ठाता ये शास्त्र सरदार बच दुर्गकता पौर पचमताका तथा खोन सुगभोय नियमका पचममन करतीं ये इस कार्य प्रजा उनके बहुत प्रममवरइतो थी। उनके साथ प्रजाका प्राय विवाह हुआ करता था। पगमोदुने यह सुनातल खोन-सम्पाट्नेको कह सुनाया। उन्हींके उन्हे वन् पौर तिम्बटके पन्नाच्य प्रदेशोंकी अराज्यभूत करतीका दुष्क दे दिया। कहतीं है कि पगमोदुने समस्त तिम्बटका एकाधिक्य पा कर एक करोड़ शात प्रतिमा स्थापित को पौर पपना नाम 'खि सुत' रखा।

पगमोदुके पन्नाचान सतुर्षे पुत्र्य शास्त्ररिखलेन खोन-सम्पाट्ने को मन-कमके लिय मन्पो ये। खोन सम्पाट्ने इन्हे पक्षी सम्पाट्ने-पुरोके रचक पद पर पीछे खोन साम्राज्यका राजस्य-बदलके सर्वाधिक्यके पद पर नियुक्त किया। किन्तु शास्त्र रिखलेन सम्पाट्ने को पुन कृताको करनेके लिय खोनके प्रधान मन्पोके साथ पदवन्धमें शामिल हो गये। उन्हींके बहुत भी शैल माङ्गियों पर मयज्ज निनापोंको हुना अवरने नाटनके अर्थमें एक कर सम्पाट्नेपुरोमें भिज दिया। सम्पाट्ने को इस बानको

४। *Balaena Japonica* or the Japan whale  
जापान देशीय तिमि—जापान सागर।

५। *Balaena antarctica* or *Balaena Antipodarium*  
or the Newzealand whale—न्यू जिलैण्ड  
देशीय तिमि—दक्षिण महासागर।

६। *Balaena gibbosa* or the Scrag-whale—  
अखिसार-तिमि—अटलाण्टिक महासागर।

७। *Balaena Hunterius Temminckii*—दक्षिण  
देशीय शिकारो तिमि—उत्तमाशा अन्तरोप।

८। *Balaena Hunterius Swedenborgii*—उत्तर  
देशीय शिकारो तिमि।

इन आठ प्रकारके तिमियोंमें वृहत्तिमि (The Right whale) अत्यन्त विख्यात है। ये हिमाच्छन्न उत्तर महासागरमें ही रहते हैं। कभी कभी इन्हें फ्रान्सकी उत्तर सीमा तक आते देखा जाता है। इनकी लम्बाई ६०।७० फुट होती है। इनकी पूँछ ठीक गंगादेवीके वाहन मकरकी तरह २०।२५ फुट विस्तृत होती है। सामनेका पर ८।८ फुट लम्बा और ४।५ फुट चौड़ा होता है। सुन्न १५।१६ फुट दीर्घ होता है। दोनों आँखें सुन्नगर्तसे एक फुट ऊँचे पर होती हैं। इनके जल फेंकनेके दो छिद्र खूब सूक्ष्म और मस्तकके सर्वोच्च स्थानमें बने होते हैं। इनके शरीरका रंग चिकना और काला (काली मखमलकी तरह) और पेटकी तरफ सफेद होता है। ये कितने दिनमें गर्भ-धारण करते हैं यह विदित नहीं। एक गर्भमें एक ही सन्तान प्रसव करते हैं। सद्योजात सन्तान १० से १४ फुट दीर्घ होती है। इनका सन्तान-क्षेत्र अत्यन्त प्रचल होता है। इसीलिए वृहत्तिमिके शिकारो समय समय पर शावकोंकी हत्या कर शावकोंकी जननीकी अपेक्षाकृत अल्प अयसे पकड़ लेते हैं। तिमिप्रसूति स्थानमें जाके चित होकर पड़ जाती है और सन्तान पेटके ऊपर चढ़कर स्तन्यपान करती है। ये साधारणतः घण्टेमें ४।५ मील चल सकते हैं। जलके बहुत नीचे ये नहीं फिरते। चलते समय मुँह फाड़ कर चलते हैं और गालमें जलके साथ खाद्य द्रव्यके पड़ते ही मुँह बन्द करके मछलीकी तरह जल बाहर कर देते हैं। दौड़ते समय ये और ज्यादा तेज चलते हैं, शिकारके समय

ये वर्षासे आहत होते हैं कुछ सेकेण्डोंमें पानीके तले चले जाते हैं। इनका बल अत्यन्त प्रचण्ड है। पूँछके भूपाटोंमें ही बड़े बड़े लड़ाइके जहाज डूबा देते हैं। तिमि पानीके भीतर लगातार आघ घण्टेसे कुछ अधिक रह सकते हैं। सांस लेनेके लिए प्रति ८।१० मिनटमें मुख उठा कर तैरते हैं। सांस लेते समय ही जल फेंकते हैं। जल फेंकते समय इनके मल्यके छिद्रोंसे फुवारेकी तरह जल ऊपर उठने लगता है। यह जल १०।१५ हाथ ऊपर तक उठता है। कभी कभी ये कौड़ा करनेके लिए मस्तक नीचे कर और पूँछ जलके ऊपर कर—ठोक भीषे खड़े हो कर एक प्रकारका शब्द करते हैं जो २।५ मील दूर तक सुना जाता है। ये दल बाँध कर नहीं घूमते। प्रायः अकेले कभी कभी नर मादा एक साथ घूमते हैं। उत्तमाशा अन्तरोपके तिमिका मस्तक अपेक्षाकृत छोटा, वर्ण विलकुल कृष्णवर्ण होता है। ये तीरके निकट थोड़े जलमें घूमते हैं। इस जातिके तिमि विषुवत् रेखाके निकटसे दक्षिण महासागरके तुपारचेन्नके मध्य तक घूमते हैं और उत्तर जापान तक आते जाते हैं। दक्षिण आफ्रिका और न्यू जिलैण्डके निकट तिमि-शिकारो इन्हें ही ज्यादा पकड़ा करते हैं। आइसलैण्डके निकट वृहत्तिमिका (The Right Whale) एक उपविभाग है। आइसलैण्ड निवासी उन्हें Nord-kapper कहते हैं। इनका शरीर वृहत्तिमिको अपेक्षा सबल, मस्तक छोटा, नोचिका जवड़ा गोल और चौड़ा, वर्ण धूसर, मस्तकका निम्न भाग उज्ज्वल श्वेतवर्ण और यह वृहत्तिमिको अपेक्षा अधिकतर चतुर एवं भयंकर स्वभावका होता है। ग्रीनलैण्डके अधिवासी और ऐस्कुइमो जातिके लोग वृहत्तिमिको सांस खाते हैं और अदरका पतला चमड़ा पहनते हैं।

दन्तहीन तिमिके द्वितीय भागका नाम *Megapates* or the Humpbacked whale वा कुम्भपृष्ठ तिमि। इस श्रेणीकी पीठमें ऊँठकी तरह कूबड़ होता है। बहुतांशके मतमें कूबड़ और कुछ नहीं, केवल पीठके पङ्क या पीठके काटोंका ही रूपान्तर मात्र है। इनके वारोंमें और अधिक कुछ नहीं जाना जाता। केवल यही, कि साधारणतः ये समष्टि तिमि श्रेणीके ही अनुसार हैं। इनको देशभेदसे निम्नलिखित शाखाएँ हैं—

१। *Megaptera Longimana* or The Johnstone's Hump-backed whales हडत् कुकपट तिमि—उत्तर वा बर्मन सागर ।

२। *Megaptera Au-ira* or the Kazira कुण्डोय तिमि या जापान देशदि कुकपट तिमि—जापान सागर ।

३। *Megaptera Americana* or the Bermuda Humpbacked whale बाम'हा होपोव कुकपट तिमि ।

४। *Megaptera postley* or the Cape Hump-backed whale उत्तमाया पत्तरोपका कुकपट तिमि—दक्षिण पारिजात ।

५। *M. Echrictus Robustus*—बहुमहाय कुकपट तिमि । *Balaenoptera* or the Borqual (or the pike whales) फोडन ।

दन्तहोन तिमिचे बीके वतलय विभागका नाम है च सुमुष तिमि ।

इतका सुव सुम्न होनेके कारण इतका यह नाम पड़ा है । इतको पीठमें एक छोटेमें पक्षको तरह पृष्ठकण्ठक होता है । तिमिजातोय मोर्षीमें यही यको हडत् है । इस तिमिको घोषा घोर बड़ा जोष समारमें सुना नहीं है । उत्तर टोका चहुमुष तिमि १०० फुटने भी बड़ा होता है । यह हडत् खो हो पत्र-श्रीमें *Borqual* नामने प्पात है । इतमिचे हिन्दोमें इमें रकु'यान या हडत्'जाय चहुमुष तिमि कहा जा सकता है । इस भी'कीमें २३५६ फुट होच' तिमिकी एक जाति है जिसे प व कोमें pike-whale या बर्पोतु व तिमि कहते हैं । इतके सुपको पाञ्जति प व को पारत नामक कहा पक्षको तरह होती है । इमी यो'की तिमि न ब्यामें पक्षक पाये जाते हैं । उत्तर यूरोपके रकु'यानो का वहा स्मेटको तरह बू'धर घोर बट्टर मर्केट होता है । ये ब्रिटेनदीपके दक्षिणमें नहीं जाते । कर्क एक स्थानमें फिर दो बार कहा नहीं करते बरन् नेर बार वृमा करते हैं । अटेमें ये चार पाँच मोन वृम नक्षी घोर पतितक मन्द करते हैं । ये बर्षोंके पावत होने पर एक दोड़ने

१००० फुट पर्यन्त चले जाते हैं । गिबरो मोम इस जाति के तिमि पकड़नेको नहीं करते । पक्षी तो इनका पकड़ ना बड़ा कटकार घोर हडत्तिमिको पपीसा विपद्रजनक है, उस पर इनकी चर्बी बहुत काम घोर तिम्यकि सुद्र घोर निहट होती है । रकु'यानको मनेची नाम घोराँको पपीसा टीर्ब होती है । इसमिप वे महाविषा इत्यादि धा मक्षते हैं घोर छोटे छोटे ःकोड़े मकोड़े तो एक ही भ्रयाटेमें इड्याकार जाते हैं । एक बार एक रकु'यानके पीठमें का भी काठ महाविषोके पखिव कर पाये गये थे । इस जातिके विषय दो उपमें दे देखे जाते हैं ।

१। *Balaenoptera rostrata*—उत्तरदेसीय चहु'मुष तिमि—उत्तर वा बर्मन सागर पर्यन्त ।

२। *Balaenoptera Sivalas* or chinensis—चीन देसीय चहु'मुष फर्माँका दोपके निहट ।

दन्तहोन तिमिचे घोषि विभागका नाम *Phyala* पक्षात् पृष्ठकण्ठकी है । ये दिग्नेमें ठोस रकु'यानको तरह होते हैं । पक्ष'इतनाही बि लक्ष जो पीठ बड़ो नम्बी घोड़ी घोर सममें बटि होती है । ये मो चहु'मुष हो हैं घोर यथावर्षमें तो लक्ष चहु'मुष तिमि का पत्र लय विभाय कचना हो सुञ्जित गल जान पड़ता है । इतका प्पभाव इत्यादि मो रकु'यानको मर्ति होता है । इनके वे भेट हैं—

१। *Phyalus Antiquorum* or the Razor back—पुरपृष्ठ—चीनके छ घोर उत्तरमहासागर ।

२। *Phyalus Loops*—वृय—उत्तरसागर ।

३। *Phyalus fasciatus* or the Peruvian Fin ner, पीद देसीय पृष्ठकण्ठक—पिच उपजून ।

४। *Phyalus Inari* or the Japn Finner—जापानी पृष्ठकण्ठक—जापान उपजून ।

५। *Phyalus Australis* or the Southern Finner दक्षिण महासागरका पृष्ठकण्ठक—दक्षिण महासागर ।

६। *Phyalus Dugallii*—पाइलो होपका पृष्ठ कण्ठक—पारिमी उपजून ।



७। *Physalus Patachonicus*—अमेरिकाका पृष्ठ-  
कण्टक—रायोप्लाटा उपकूल ।

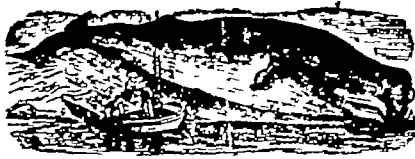
८। *Physalus Sibbaldii*—गिवाल्डी पृष्ठकण्टक—  
उत्तर सागर ।

९। *Physalus sibbaldii borealis* तुपारदेशीय  
गिवाल्डी—उत्तर सागर ।

१०। *Physalus sibbaldii schlegelii*—यवहोपका पृष्ठ-  
कण्टक—यवहोपका उपकूल ।

११। *Physalus sibbaldii Antarcticus*—दक्षिण मेरु  
का पृष्ठकण्टक—वोर्नियाका उपकूल ।

१२। *Physalus Rudolphus laticeps* रौडल्फका  
पृष्ठकण्टक—उत्तर सागर ।



तिमिको दूसरो श्रेणी है दन्तयुक्त । यूरोप-  
के प्राणीतत्त्वविद् इन्हें डेंटिसिटे ( Denticete )  
कहते हैं । ये प्रधानतः तीन शाखाओंमें विभक्त  
हैं (१) *Oatodontidae* या तैलकर तिमि, (२) *Kogia* or  
Short headed whales या छुद्रशीर्ष तिमि और (३)

*aler* या तैलपृष्ठ तिमि । प्रथम शाखाके तिमियोंके  
नामा-छिद्र दो अलग अलग, तालू समतल, मस्तक खूब  
बड़ा और डार्टीमें दांत होते हैं । अंग्रेजोंमें ये साधारणतः  
*Catodon*, *Cachalot* या *Sperm whale* नामसे  
कहे जाते हैं । इनकी पुरुषजाति कमसे कम ६५ फुट  
और स्त्रीजाति कमसे कम ३५ फुट दीर्घ होती है ।  
इनके शरीरका रङ्ग सब जगह एकसा नहीं, प्रायः उदर  
और पूँछका भाग सफेद और बाकी अंश काला होता  
है । ये अपनी पूँछकी चोटसे पानी फेंक कर झोडा  
करते घूमते हैं । नासाछिद्र द्वारा ये भी १०।१५ मिनटके  
बाद पानी फेंका करते हैं । इनके शरीरकी तैलकर चर्वी  
खूब गाढ़ी और प्रायः ८०।८० मन निकलती है । इनके  
पानी फेंकनेवाली छिद्रनालोंके नोचे दक्षिण भागके गह्वर-  
में तैलकी तरह तबल पदार्थ होता है । वही असलो  
तिमि-तैल ( Spermacete oil ) है । यह तैल तबल क

प्राणोंमें प्रायः ४०।५० मन पाया जाता है । इनको चर्वी-  
के तैलको Sperm-oil कहते हैं । असलो तिमि तैल  
चर्वीके तैलके साथ मिला रहता है । इस जातिके तिमि  
भूमध्य-सागरमें भी आते हैं । ये ८० फुट तक दीर्घ होते  
हैं । इनका मस्तक इतना बड़ा होता है कि वह समस्त  
शरीरका तृतीयभाग कहा जा सकता है । साधारणतः  
इनका वर्ण गाढा धूसर होता है । पूर्ण वयस्क तिमिको  
शिकारो लोग Bull-whale ( द्वपभ-तिमि ) कहते हैं ।  
इनका मुख-विवर भी खूब बड़ा और चौड़ा होता है ।  
नोचेके मसूदासे ऊपरका मसूदे कई फुट बड़ा होता  
है । इनके तिम्यस्थि या दन्त नहीं होते । नोचेके मसूदोंमें  
दात होते हैं । मुख बन्द करते समय इन दांतोंके प्रवेशके  
लिए ऊपरके मसूदेमें छेद होते हैं । इनको बाईं भाँख  
दहिना भाँखसे छोटी होती है । इनकी पोठका मध्य भाग  
कुलपृष्ठ तिमिका तरह जं चा जाता है । तैरते समय कुल  
भाग जलके ऊपर उठा रहता है । ये घण्टेमें सात मोल  
तक चलते हैं । शिकारियों द्वारा छेड़े जाने पर और भी  
तेज चलते हैं । इनके पंखे अपेक्षाकृत छोटे होते हैं । पूँछ  
का पखा खूब चौड़ा होता है । यह जिस समय माथा  
उठा कर जलके ऊपर विराम करते हैं उस समय मालूम  
पड़ता है मानो कृष्णगिरिका एक खण्ड जलके ऊपर उठा  
हुवा है । इनको चर्वीवाली खाल हृत्सिमिकी तरह  
मोटी नहीं होती । वक्षमें १४ इंच और अन्यत्र ७।८  
इंच होते हैं । मस्तकके तैल-गह्वरके नोचे एक चक्रता  
चर्वीका होता है जिसे Junk ( जङ्ग ) कहते हैं ।  
इससे चर्वीका तैल निकलता है । चर्वीवाली खाल  
निकाल कर गलानेसे तैल निकलता है । यह तैल  
गलाते समय तिमिका चमड़ा ही लकड़ोका काम करता  
है । ये जलचर जीव अन्यान्य जीवोंको भक्षण करते  
हैं । ये ५।६ सौ एक साथ मिल दल बांध कर चलते हैं ।  
इनके दलमें स्त्री जाति ही अधिक पाई जाती है । इनके  
पुरुषोंमें प्रायः जो युद्ध होता है, जिससे दन्त मसूदे और  
दुष्टोकी हड्डो टूट जाती हैं । इस तिमिकी प्रथम शाखा  
के ये सद हैं—

१ *Catodon Macrocephalus*—समसण्डलका तैल  
कर-तिमि—समसण्डलका समुद्र ।

२) *Oxyodon cabanos* भी विश्वो देसोय तैसकर तिमि—  
मन्त्रिको उपद्रव ।

१) *Catodon polycephalus* दक्षिण सागरोय तैसकर  
तिमि—दक्षिणसागर ।

इस तिमिको दूसरो माथा सुदमस्तक है । इनको  
पाहतिमें मस्तकको सुदरा छोड़ कर घोर कोई मीट नहीं  
है, इस कोबीके शयन दो उपविभाग हैं । (१) *Kogia*  
*Manireps* or short honed sperm whale सुद  
मस्तक तैसकर तिमि दक्षिण-प्राशियाके उपद्रवमें थी।  
(२) *Kogia masbayli* भारतोय सुदमस्तक तैसकर  
तिमि पड़ोसिवा घोर भारत-भवासागरमें निवास  
करते हैं ।

इस तिमिको तमीव माथा कुलपट तैसकर तिमिका  
उपविभाग है । (१) *Physeter taurus* or the black  
fish कृष्णमस्तक—पटलनेकडा उपद्रव घोर (२)  
*Euphysetes Grayii* वा पड़ोसिवाके तैसकर तिमि—  
दक्षिण महासागर ।

तिमिको यह जाति गिबार्दिनीके बड़े सोमको  
सामथी है । गिबार्तो नाम इसे पाकर घोर कृष्ण नहीं  
चाहते । इनके गिबार्द करमें बड़ो बिपदोका सामना  
करना पड़ता है । ये पूरुके भ्रष्टते होने मोका लसटा  
दिते हैं । इनके गिबार्दको मचानो वृहत्सिमिके गिबार्दको  
तरह है । गिबार्द सोम मोकामें बड़ु हारपून (Har-  
poon) नामक ब्रह्मोके बाणरक करते हैं घोर एकके  
ऊपर एक बर्होको बर्हो कर मार डालते हैं । हारपूनके  
पाजातके दुर्बल हो जाने पर इन्हे मार जानना पड कर  
नहीं होता । हारपूनमें न्यूर बड़ो रसो ब लो रहतो है ।  
पाजात पाकर ये दूक जाती हैं । उन समय मज्जको पत्रक  
मिठी तरह रसो छोड़ कर मोकामें तिजोके लनके साथ  
धूमना होता है । फिर ऊपर उठ जाने पर बर्हो छोड़  
कर इन्हे पत्रका जाता है । हारपूनका कला ठोक बर्होके  
(मज्जको पत्रकनेके ढांटे)को तरह लनको घोरको हुमाया  
होता है । यह देखनेमें लडाके पलको तरह होता है ।  
मोकामें ३-५ गिबार्दो दो हारपून घोर १-१ बर्हो होते  
हैं । मोकामें हारपून के बर्हो जो मोका पक्षमें एक दम

पछे उठावी पड़तो है । चोट लगनेके तिमि मज्जके मार  
मज्जु ल नहीं दीकृति हमिया बलके मोके दूबते हैं । यही  
तक सि २०० हाय मोके दूव जाते हैं । हारपूनको रसो  
इसके मो बड़ो रसको होता है । पानोके मोके तिमि २०१२३  
मिन्ट दूबे रहते है परन्तु इनको बाद ध्यामकड होनेके  
कारण फिर ऊपर उठ पाते हैं । जसो ये मज्जहा मार कर  
मोका लसट देते हैं । ये बर्होके पाजातके हो मरते हैं ।  
चोट याकर कोई कोई तिमि ऊपर नहीं उठते घोर जो  
ऊपर नहीं उठते वे हाथ नहीं पाती । इनके भ्रष्टतेके  
बचनेके लिए मोकामें बड़े बड़े लोडोके ढांटे लगे रहते  
हैं । तिमिके मरजाने पर गिबार्दो मोकाको लसके निश्चय  
से जाते हैं घोर जसमें जो लसके शरोरके ऊपर बड़े हो  
कर इसको खान घोर चर्हो निखानना पारण्य कर दिते  
हैं । इन लोयोके साथ लडाक रहता है । मोकाको लडाक  
के बाव कर वा कड्डु खान कर हम तरह से तिस चर्हो  
इन्हादि स पड करते हैं । यलक कासमें गिबार्द पारण्य  
होता है घोर अरद समयमें समान हो जाता है । मोरके  
निवाधी मज्जम धताम्दोमें वृहत्सिमिका गिबार्द करना  
जानते हैं । ययोइम धताम्दोमें फराहीसो फोनियडोयो  
को मित्र सोमोने इनका गिबार्द करना पारण्य किया ।  
प यो जने इसे २१वीं सदीके एक किया है । इन्हे लोडोके  
खान ल सुताविक इन्हे लोडोके उपद्रवमें तोन मोकाके  
लोचमें जो तिमि पकडे जाव, वे सब राजसम्पति मिमी  
जातो है इनके दूर मानमें जो सवके पक्षके बलही बका  
कर तिमिको रोक दे बको व्यक्ति उसके चर्हो शका चर्हि  
कारो होता है; परर पक्षोके ये पक्षिकारो पक्ष चतुचर  
पानि होती हैं । इनको छोड़ घोर मो कोई क्वाणोय  
नियम हैं ।

२ चतुद्र । १ राजविमिग, सुदम योय दूर्बके सुव ।  
इन्ही तिमिरामने ७० वर्ष राजल किया पा ।  
तिमिकोय (सं० पु०) तिमि कोय इव । मनुद्र ।  
तिमिद्रिड (सं० पु०) तिमि मिरुति तत; सुनु । (मिद्रिडिड  
११। वा ११। २०) १ वृहत्काय मज्जविमिय, जेक नाम  
को बडो मज्जको । २ होपविमिय एक होपका भास ।  
३ लज देगके निवासी । ( वि० ) ४ तद्दोपज्जाल को लज  
होपमें लपक हो ।

तिमिङ्गल (सं० पु०) तिमिङ्गल-गिलति तिमिङ्गल-  
ग-क, रस्य ल, अगिलस्येति पर्यु दासात् न सुम् । अति  
बृहत् मत्स्यभेद, एक प्रकारकी बहुत बड़ी मछली ।

तिमिङ्गलाग्न (सं० पु०) तिमिङ्गलो मत्स्यः अश्रयते यत्र  
अग्न आधारे ल्युट् । १ दक्षिणस्य देशभेद, दक्षिणका एक  
देश-विभाग जिषके अन्तर्गत लद्दा आदि है । यहाँके  
निवासी तिमिङ्गल मछलीका मांस खाते हैं । २ उक्त देश  
के निवासी । ३ उक्त देशके राजा ।

तिमिज (सं० क्ली०) तिमितो जायते जन-ड । मुक्ताभेद,  
तिमि नामक मछलीसे निकलनेवाला मोती । यह मोती  
वेधनीय है ; किन्तु अपरिमित गुणधालो जान कर इसका  
मूल्य शास्त्रमें निर्दिष्ट नहीं हुआ है । यह राजाओं का  
सुत, अर्थ, सौभाग्य और यशः-सम्पादक, रोग शोक-  
हारक तथा कामप्रद है । (बृहत्सं० २१ अ०)

तिमित (सं० त्रि०) तिम कर्त्तरि क्त । १ निचल, स्थिर ।  
२ क्लिन्न, आर्द्र, भीगा ।

तिमितिमिङ्गल (सं० पु०) महामत्स्यभेद, एक प्रकार  
को बड़ी मछली ।

तिमिध्वज (सं० पु०) दानवविशेष, शस्वर नामक दैत्य  
जिसे मार कर रामचन्द्रने ब्रह्मासे दिव्यास्त्र प्राप्त किया  
था । (रामा० २।२०।११)

तिमिर (सं० क्ली०-पु०) तिम्यतीति तिम-कारच् । इषि  
मदि मुदोति । उण् १।१० । १ अन्धकार, अंधेरा । २ चक्षु  
रोगविशेष, आँखका एक रोग । इसका विषय सृष्ट्युतमें  
इस प्रकार लिखा है—

दृष्टिविशारद पण्डितोंका कहना है, कि मनुष्योंको  
दृष्टि पञ्चभूतोंके गुणसे बनो हुई है । बाह्य पटलमें  
अध्वय तेज कर्त्तृक आहत, शीतल प्रकृतिविशिष्ट,  
खद्योतके दोनों विस्फुल्लिङ्गोंसे निर्मित और मसूरदल परि-  
मित विरवाकृतिविशिष्ट, इन सब दृष्टिगत रोगोंके तथा  
पटलके अभ्यन्तरस्य तिमिर रोगके लक्षण कहे जाते हैं ।

दोष विगुण हो कर शिरा-समूहके अभ्यन्तर जाता  
है और उसके दृष्टिके प्रथम पटलमें ठहरनेसे सभो रूप  
अव्यक्त भावसे देखे जाते हैं । विगुणित दोषके द्वितीय  
पटलमें रहनेसे दृष्टि विकल हो जाती है और सब जगह

मन्त्रिका, मगक, केशजाल, सङ्कल, पतका, सरोचि और  
कुण्डल समूह देखनेमें आते हैं, अथवा जलमग्न वा वृष्टि  
होतो है, ऐसा मालूम पड़ता है; अथवा मेघाच्छन्न वा  
तिमिराच्छन्नके जैसा दोष पड़ता है । दृष्टिको भ्रान्तिसे  
दूरस्थित वस्तु निकटमें और निकटस्थित वस्तु दूरमें मालूम  
पड़तो है और कोशिश करनेसे भी सूचीपाश्वर्ष नहीं  
देखा जाता । दोषके तृतीय पटलमें रहनेसे बृहटाकार  
और वस्त्राच्छन्नके जैसा दोष पड़ता है और कर्ण,  
नासिका तथा चक्षुःविशिष्ट सभो आकृतियाँ विपरीत  
भावसे देखनेमें आतो है । दोष बलवान् हो कर जब  
दृष्टिके अधोभागमें रहता है, तब समीपस्थ द्रव्य, ऊर्ध्व भाग-  
में रहनेसे दूरस्थ द्रव्य और पार्श्वभागमें रहनेसे पार्श्वस्थ  
द्रव्य नहीं दोगता । दोष जब दृष्टिमें चारों तरफ  
फैल जाता है, तब सभो वस्तु सङ्कुचित दोष पड़तो हैं ।  
दृष्टिके ऊपरी टो स्थानोंमें यदि दोष रहे, तो एक आकृति  
तीन बार और यदि अवस्थित भावसे रहे, तो बहुत बार  
देखतो है । चतुर्थ पटलमें दोष रहनेसे तिमिर रोग  
उत्पन्न होता है । तिमिर रोगमें, एक ही समयमें दृष्टिरोध  
होनेसे वह लिङ्गनाश रोग हो जाता है । तिमिर रोग-  
के अत्यन्त गंभीर होने पर चन्द्र, सूर्य, विद्युत् और  
नक्षत्रविशिष्ट आकाश तथा निर्मल तेज और ज्योति-  
पदार्थ देखनेमें आते हैं । लिङ्गनाश रोगकी इस अवस्था-  
को नोलिका वा काच कहते हैं । यह लिङ्गनाश रोग  
यदि वायुसे उत्पन्न हो, तो सभो पदार्थ लाल, सचल और  
मैले दोगते हैं । पित्त कर्त्तृक उत्पन्न होनेसे 'आदित्य,  
खद्योत, इन्द्रधनु, तद्वित् और मयूरपुच्छके जैसा  
विचित्र वर्ण अथवा नील वा कृष्णवर्ण, वा श्वेत चामर  
वा श्वेतवर्ण मेघके जैसा अत्यन्त स्थूल अथवा मेघमूल्य  
समयमें मेघाच्छन्नके जैसा, अथवा सभो पदार्थ जल-  
झावितसे दोगते हैं । रक्त कर्त्तृक उत्पन्न होनेसे सभो  
रक्तवर्ण और अन्धकारमय, क्रफसे उत्पन्न होनेसे सभो  
श्वेतवर्ण और सिग्ध तैलाक्त जैसे दोगते हैं । पित्त  
कर्त्तृक उत्पन्न होनेसे परिस्नायिरोग होता है । इसमें  
सभो दिशाएँ नवोदित सूर्यको नाईं वा खद्योतपूर्ण हृत्  
समूहको नाईं देख पड़तो हैं । वायु कर्त्तृक दोष  
उत्पन्न होनेसे दृष्टिमण्डल रक्तवर्ण, पित्तसे परिस्नायि,

रोगबुद्धि पर्यन्त मोक्षबन्ध-सुखमे श्रैतवन् मोचितसि रश्मि  
बन्ध, और सतिपातसि निविद्यबन्ध होता है।

परिष्कारिरोमसि इष्टिमच्छन्मि रश्मिप्रत्य पर्यन्तवन्  
मण्डनाकार मण्डना सत्य होता है पर्यन्त समुदा-  
मण्डल कुण्डल मोक्षबन्ध हो जाता है। इस रोगसि कभी  
कभी पापसि पाप दोष सत्य हो कर इष्टिकी मन्त्रि बद्ध  
जातो है।

इसके सिवा पित्तविदग्धइष्टि, कफविदग्धइष्टि,  
रश्मिप्रत्यता, वृद्धमूर्ति, उल्लस्राय मण्डलप्रत्यता और गन्धो  
रश्मि से मात प्रकाशके रोम सत्य भी है। इष्टिके क्षान्तमे  
दुष्टपित्तके रश्मिसे बद्ध क्षान्त पोषा हो जाता है तथा  
समो मनु पोषो मन्त्रर पातो है। इसे पित्तविदग्धइष्टि  
कहते हैं। दोषके वस्तोय पटलसि रश्मिसे रोगीको दिनके  
ममय नहीं लक्ष्मता, रातको लक्ष्मता है। इष्टि जब प्रथमासि  
विदग्ध होती है, तब समी पदार्थ मन्त्रि होकर पड़ते हैं।

तौमो पटलसि यदि छोड़ा छोड़ा दोष रहे, तो मन्त्रा  
स्वता तुरत सत्य होती है। इसमे दिनके समय पूर्व  
किरचमे लक्ष्मको पर्यन्तके बारण इष्टिमन्त्रि प्रकट होतो  
है। मोक्ष, अन्तर, परिचम और मण्डलके परिमिताय द्वारा  
इष्टिके परिमिता हो जाने पर समी पदार्थ बद्धबन्ध टिके  
जाते हैं। इनको मन्त्रि कहते हैं। इसमे दिनके समय  
बारीक मनु बद्धन कठिनतासे मन्त्रर पातो है।

रातको मोक्षमुच द्वारा पित्तको पर्यन्तके बारण से सब  
पदार्थ टिके जाते हैं, इसे उल्लस्राइव कहते हैं। जिस  
रोमसि इष्टिके दोषामिभूत हो जानेसे मण्डलकी इष्टिके  
वृद्धान सिय तकी धामा निश्चलतो है, उसे मण्डलप्रत्य कहते  
हैं। बाहु बन्धु, क इष्टिकान्तके विरुप होनेपर भी सत्यका  
पर्यन्तर भाग बद्धत यन्त्रार भावसे प्रकाशित होता है।

इस सब कीमति सिवा इष्टिकान्तमे मन्त्रिमित्त और पन्नि  
मित्त नामक दो प्रकारके और भी माण्डुरीय हैं। मण्डल  
के परिमितायसे इष्टि वत होने पर अनिमित्त होता है।  
यह रोग परिमित्त निदग्धन द्वारा जाता जाता है।  
ऐवता अवि मन्त्रबन्ध, मण्डोरग वा अष्टोत्ति पर्यन्त दोषि  
मान् पदार्थके लक्ष्म्यं लक्षे इष्टिमत् होने पर निमित्त  
निष्प्रमाण होता है। इस रोमसि इष्टि कष्ट विमन् बद्ध  
मन्त्रिको तरक दोष पड़ती है। इष्टि द्वारा परिमिता इत

कीमे पर बिटोष, पर्यन्त या होन भासूय पड़तो है।  
(समुत्त विविध ० ५०)

कुपित्त दोषके बाह्य पटलसि रश्मिसे इष्टि विदग्धन बन्ध  
हो जातो है इसको कीर्ति तिमिर और कीर्ति निष्प्रमाण  
कहते हैं। यह तन्ममद्वय तिमिररोग यदि परिचरजात  
हो तो रोगीको मय पदार्थ मन्त्र, सूर्य मन्त्र विषय, वृ-  
पन्नि पादिका तेज और सुवर्णादि कोर्मिगोच पदार्थके  
समान दीवने मन्त्रि है। इसे निष्प्रमाण रोगको भीतिवा  
और काच कहते हैं, (पन्त्र ०) इन दोमन्त्रे सत्य पड़से  
हो सिय सुके हैं। श्लेष विचरन मण्डोरग और ऐवमेकेके।  
तिमिरमुद् (म० पु०) तिमिर इष्टिमि अष्टमिति मुद्  
क्षिप्। १-२। (इष्टिम ० ५०) (ति०) २ पर्यन्तकार  
मागक, ५ बन्धारका माय करनेवाला।

तिमिरामिद् (स० पु०) तिमिर निमित्त मिद् क्षिप्।  
१ सूर्य। (ति०) २ पर्यन्तकारको माय करनेवाला।

तिमिररिपु (स० पु०) तिमिररिपु, १-तत्। १ सूर्य।  
(मि०) २ तिमिरमायक, ५ बन्धार मूर करनेवाला।

तिमिररश्मि (स० पु०) १ सूर्य। २ दीपक।  
तिमिरा (म० जो०) हरिद्रा, इन्दो।

तिमिरारि (स० पु०) तिमिररश्मि, १-तत्। १ सूर्य।  
२ पर्यन्तकारका मन्त्र।

तिमिराश्वि (स० जो०) पर्यन्तकारका समूह।  
तिमिरि (म० पु०) तिमि मन्त्र, तिमि नामको मन्त्रही।

तिमिरिन् (स० पु०) तिमिर पर्यन्त तिमिर विनि।  
१ पर्यन्तकारकारी, ५ बन्धार करनेवाला। २ इन्द्रगोच  
कोट, सुगम।

तिमिर्य (स० पु०) दीवन्तुत।  
तिमिय (म० पु०) तिमि इत्यम्। १ पर्यन्तकारकी, बद्धकी,  
पूट। २ कुण्डला, कुण्डला। ३ मादाय, तरबूज।

तिमी (म० जो०) तिमि सुषोटादिकात् जोय। १ तिमि  
मन्त्र। २ दक्षको एक कन्या। यह अष्टमपको अष्टी और  
तिमिइष्टिकी माता हो।

तिमोर (स० पु०) इष्टिमत्, एक पितृका नाम।  
तिमुराणी (मि० जो०) १ बद्ध क्षान्त कदां तोन और तोन  
राज मर्दि हीं। २ बद्ध क्षान्त कदां तोन औरसे अविद्या या  
अर मिष्टी हो।

तिम्भ (तिम्भप) — इस नामके दाक्षिणात्यमें बहुतसे छोटे छोटे राजा, सामन्त वा सरदार हो गये हैं। कृष्णा जिनसे आविष्कृत बहुतसे शिलालेखोंमें उनका नाम उल्लिखित हुआ है। इनमेंसे एक कृष्णदेवरायके मन्त्री थे, जिन्होंने १४३७ शकमें क्रोण्डवीह अधिकार किया था। मङ्गल-गिरिके शिलालेखमें इनका साहाय्य वर्णित है। मङ्गल-गिरिके गरुडल्वर मन्दिरमें एक शिलालेख है, जिसमें उड्डराजपुत्र तिम्भका परिचय पाया जाता है। विजय-नगरकी एक शिलालिपिमें चिह्न तिम्भय्यदेवका महा-भरसुके पुत्र तिम्भराजके नामसे उल्लेख मिलता है। वेङ्कट-गिरिके नायडूवंशमें भो. गणि-तिम्भ नामके एक परा-क्रमशाली पुरुषका जन्म हुआ था। इनके समयमें पलनाड और कृष्णाके दक्षिणाश्रित्य प्रदेशोंमें कुछ दस्यु-सरदारों ने मिल कर बहुत उपद्रव किया था। इन्होंने विजय-नगराधिपति अच्युतदेवरायके आदेशानुसार वहाँ जा कर उनका शासन किया था। इसी तरह १५३० ई०में मल्लपुरके कृष्णाके कुछ सरदारोंके परास्त किया था। आखिरकी रणक्षेत्रमें ही वे मारे गये थे। इनके पुत्रने भी सुसलमान सरदारोंसे धीर युद्ध किया था।

तिपला ( हि० पु० ) स्त्रियोंको पोशाक।

तिया ( हि० पु० ) तीन बूटियोंका ताशका एक पत्ता।

२ नक्कीपुरके खेलका एक दाँव।

तिरकट ( पु० ) अगला पाल।

तिरकट गावासवाई ( पु० ) वह पाल जो सबसे ऊपर और आगेमें रहता है।

तिरकटगावी ( पु० ) ऊपरका पाल।

तिरकट डोल ( पु० ) अगला मस्तूल।

तिरकट तवर ( पु० ) छोटा और चौकोर अगला पाल। यह सबसे बड़े मस्तूलके ऊपर आगेको और लगाया जाता है। जब धीमी हवा चलती है तो यह पाल काममें लाया जाता है।

तिरकट सवर ( पु० ) वह पाल जो सबसे ऊपर रहता है।

तिरकट सवाई ( पु० ) रस्सेमें बंधा हुआ अगला पाल। यह मस्तूलके सहारेके लिये लगाया जाता है।

तिरकाना ( हि० क्रि० ) १ ढोला झूलना। २ रस्सा ढोला करना।

तिरकुटा ( हि० पु० ) मोंठ, मिर्च, घोपल इन तीन कड़ुई टवाइयोंका समूह।

तिरखूटा ( हि० वि० ) त्रिकोणयुक्त, जिसमें तीन कोने हों।

तिरच्छु. मं० पु० ) तिनिग हस्त।

तिरछरडी ( हि० स्त्री० ) मालगुम्भको एक कसरत।

तिरछा ( हि० वि० ) जो ठीक सामनेकी ओर न जा कर धर धर छट कर गया हो। २ अक्षरके काममें आने-वाना एक प्रकारका रेशमो कपड़ा।

तिरकाना ( हि० क्रि० ) तिरछा होना।

तिरछापन ( हि० पु० ) तिरछा होनाका भाव।

तिरछो ( हि० वि० ) तिरछा होना।

तिरछो बैठक ( हि० स्त्री० ) मानगुम्भको एक कसरत।

तिरछोछाँ ( हि० वि० ) जो कुछ तिरछापन लिए हो।

तिरछोहँ ( हि० क्रि०-वि० ) बकता, तिरछापन लिए हुए।

तिरना ( हि० क्रि० ) पानीको सतहके ऊपर रहना, उतराना। २ तैरना, पैरना। ३ पार होना। ४ सुक होना, उधार पाना।

तिरनो ( स्त्री० ) एक डोरो जिसमें घावरा या धोतो नामके पाम बाधते हैं, नीचे तिसो। २ नाभिके नीचे लटकता हुआ घाघरे या धोतोका एक भाग।

तिरप ( हि० स्त्री० ) नाचमें एक प्रकारका तान।

तिरपटा ( हि० वि० ) जो तिरछो भ्रम करके देखता हो, ऐंघाताना।

तिरपन ( हि० वि० ) १ जिसको संख्या पचाससे तीन ज्यादा हो। ( पु० ) २ वह संख्या जो पचास और तीनके योगसे बने हो।

तिरपाई ( हि० स्त्री० ) वह चौकी जिसमें तीन पाये लगे रहते हैं, स्टूल।

तिरपाल ( हि० पु० ) १ काननमें खपड़ोंके नीचे दिष्ट जानेका फल या सरकण्डोंके लम्बे फूल। २ वह कन-वस जिसमें रोगन चढ़ा रहता है।

तिरपौलिया ( हि० पु० ) वह बड़ा स्थान जिसमें तीन फाटक हों और जिसमें होकर हाथी, घोड़े, ऊँट इत्यादि सवारियाँ अच्छी तरह निकल सकें।

तिरफसा ( हि० पु० ) तिरफा देखो ।  
 तिरबो ( हि० खो० ) सिन्धु देशमें एक प्रकारकी मा-  
 का नाम ।  
 तिरमिरा ( हि० पु० ) १ कमजोरीके कारण नजरका  
 एक दोष । २ तीक्ष्ण प्रकाशमें नजरका न ठहरना  
 चक्काकी घ । ३ वीं सेम इन्जादिके अर्द्ध जो पानी  
 बूब तरल पटापके ऊपर फैरते दिखाई देते हैं ।  
 तिरमिनामा ( हि० जि० ) रोशनीके मामले नजरका न  
 ठहरना, चौबना, झपना ।  
 तिरकट ( हि० पु० ) तिरकानेकी जातिका एक प्रकारका  
 रस ।  
 तिरका ( पा० पु० ) बिबो खानको लतमें पूरे बड़ा तक  
 एक तोर का पत्ते ।  
 तिरक ( ब० खो० ) मयाधारका तिर्यक् पत्रकम्ब,  
 चारपाईके तिरके पाये ।  
 तिरयता ( स० जि० ) तिरचीन तिरका ।  
 तिरबया ( स० पद्य० ) मुद्रकपत्रे क्षिपये ।  
 तिरबिराजि ( स० पु० ) पाक्षिरस व शर्षे एक अविष्का  
 नाम ।  
 तिरबी ( स० खो० ) तिर्यक जाति' फिला' कीय् । १ पय  
 पचिसीकी खो, मादा । ( पु० ) २ पाक्षिरस व शर्षे एक  
 अविष्का नाम ।  
 तिरबीन ( स० जि० ) तिर्यकीव आये' ख । १ तिर्यग्  
 भूत, तिरका । २ कुटिल, टेढ़ा ।  
 तिरबोनगति ( स० खो० ) मन्त्रबुद्धी एक मन्त्रि, कुञ्जोका  
 एक वीं ख ।  
 तिरबीननिबन ( स० खो० ) नामभेद ।  
 तिरबीनपत्रि ( स० जि० ) जिसमें तिरका दाग दिया  
 गया हो ।  
 तिरस् ( सं० पद्य० ) तरति इष्टिये ख-पुसुन् । १ पन्तर्धान,  
 भाव्य । २ तिर्यग्, तिरका । ३ तिरकार ।  
 तिरकठ ( हि० बि० ) १ जिसकी म ध्या नाटके तीन  
 पक्षिक हो । ( पु० ) २ बज व क्या को काठ पोर तोमके  
 बोगये बनी हो ।  
 तिरसा ( हि० पु० ) एक तरका यान जिसका एक  
 सिरा चौड़ा और दूसरा तण' हो ।

तिरकार ( स० जि० ) तिरकारोति निच् लनोप' तिरयति  
 आच्छादयति । तिर करोति छ-ट । आच्छादक, परना  
 करनीबासा, टाँकनेवाला ।  
 तिरकारिन् ( स० जि० ) तिरा करोति छ निनि । आच्छा  
 दक, टाँकनेवाला ।  
 तिरकारिबो ( स० खो० ) तिरकारिन् म चापूरु' क-  
 विरिगिन्नात्तात् इवामाक' तनो डोय । १ पटमय आच्छा  
 दक पदाक, परदा, बन-त, चिक्क । २ छोट, पाङ् ।  
 ३ मनुष्यको पट्टक करनेको एक प्रकारको विद्या ।  
 तिरकारो ( हि० पु० ) आच्छादक परदा ।  
 तिरकार ( स० पु० ) तिरम छ घञ । १ पनादर, पय  
 मान । २ मन्'ना फटकार । ३ पनादरपूर्वक म्याग ।  
 ( जि० ) ४ अथप्राकारक, अपमान करनेवाला ।  
 तिरकारिन् ( स० जि० ) तिरम् करोति छ चिनि । १ आच्छा  
 दक, टाँकनेवाला । ( पु० ) २ पट्टक वनात चिक्क ।  
 ( जि० ) ३ अथप्राकारक, अपमान करनेवाला ।  
 तिरकृत ( स० जि० ) तिरक्-कर्म चिक्क । १ पनादरत,  
 जिसका तिरकार किया गया हो । २ आच्छादित, परदे  
 में छिया हुआ । ३ पनादरपूर्वक म्याग किया हुआ ।  
 ( खो० ) ४ तन्त्रकारोक्ष मन्त्रविशेष तन्त्रसारका एक  
 मन्त्र । इसमें मन्त्रमें द्वाक पोर मन्त्रक पर दो अक्षर  
 पोर पक्ष होत है ।  
 तिररिजवा ( स० खो० ) तिरस्-ह माथि य । १ पनादर,  
 तिरकार । २ आच्छादन । ३ बज पहरावा ।  
 तिरर्य ( स० पु० ) तिरक अथप्रादित्यात् यक् । पन्तर्धान,  
 भाव्य ।  
 तिरहुत—यह संस्कृत तोरमुञ्जि मन्त्रका अन्वय है ।  
 १८०४ ई०के शेष तक यह भारतवर्षके पन्तर्गत  
 विहार प्रदेशके पटना विभागके सर्वोत्तरवर्ती एक जिल्ला  
 था । बहामके कोटे साठके पक्षोन पिसा बड़ा चौदू अक्षिक  
 अक्ष्याविमिष्ट जिन्ना पुकरा नहीं था । इसमें सुब्रजवरपुर,  
 बामोपुर, घोतामकी, दरभङ्गा, महुवको पोर ताजपुर से  
 बज अर्धविभाग लगते थे । जन समय इसमें उत्तरमें  
 शैवालराज्य उत्तर-पूर्वमें भागलपुर जिल्ला, दक्षिण-पश्चिम  
 में सुब्रज जिल्ला, दक्षिणमें गङ्गानदी, दक्षिण-पश्चिममें  
 चारक जिल्ला वा मण्डक नदी, उत्तर-पश्चिममें अम्बारक

जिना था। उत्तर मोसामें नेपालराज्यके साथ अंग रेजो राज्यके सोमानिर्धारणके लिये खाई, नदी, ईंटे और काठ आदिके स्तम्भ है।

१८७५ ई०को १ली जनवरीसे यह बडा जिला शासनकार्यकी सुविधा और सुव्यवहारके लिये दो स्वतन्त्र जिलाओंमें विभक्त हुआ। मुजफ्फरपुर, हाजोपुर, सोतामट्टी इन तीनों उपविभागोंको ले कर मुजफ्फरपुर तथा दरभङ्गा, मधुवनी और ताजपुर इन तीन उपविभाग लेकर दरभङ्गा जिला मंगठित हुआ है। वास्तवमें अभी बङ्गाल-विहारके मानचित्रमें तिरहुत जिलेका अस्तित्व लोप हो गया है। मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा इन दो जिलोंका विवरण अब भी स्वतन्त्र भावसे संगृहीत नहीं हुआ है; सुतरां तिरहुत नाममें ही इनका कुछ कुछ विवरण दिया जाता है।

१७६५ ई०में जब सूबा विहार अंगरेजोंके हाथ आया, तब गङ्गाके उत्तरकूलवर्ती सारण, चम्पारण, तिरहुत और हाजीपुर ये चार स्थान सरकारमें विभक्त थे। उस समय सरकार तिरहुतका परिमाण ५०५३ वर्गमील और सरकार हाजीपुरका परिमाण ७८३५ वर्गमील था, किन्तु उस समय सारे तिरहुत जिलेका परिमाण केवल ६३४३ वर्गमील था, पहले सरकार तिरहुत और सरकार हाजीपुर इन दोनोंमें १०४ परगनें थीं। इन सब परगनोंके नामको तालिका नहीं पाई जाती, पर सरकारी कागजातसे जाना जाता है, कि उस समय भागलपुर और सुङ्गेर जिलोंके अधिकांश स्थान इन्हीं दो सरकारोंके अधीन थे।

१७८५ ई०में भागलपुर और सुङ्गेरके अन्तर्गत बलिया, मस्जिदपुर, वादेभुसारो, इमादपुर, कुडा, गावखण्ड, कवखण्ड, नारादिगर, छय, फरकिया, मालको बनीया, मानले गोपाल और नयपुर ये तेरह परगनें तिरहुत कलेक्टरीके अन्तर्गत हुए, किन्तु १८३७ ई०में ये पुनः तिरहुतसे अलग कर दिये गये। १८६५ ई०में सारणके अन्तर्गत परगना बाबरा और सुङ्गेरके अन्तर्गत परगना वादे भुसारो तिरहुतके अन्तर्भूक्त हुआ तथा १८६८ ई०में गङ्गानदीकी गति परिवर्तित हो जानेसे पटनाके अन्तर्गत भीमपुर, गयासपुर तथा आजिमाबाद इन परगनोंके कई अंश तिरहुतके अन्तर्भूक्त हुए।

तिरहुत जिलेका भूभाग साधारणतः पट्टमय है, बीच बीचमें नदी है, कई जगह जङ्गल भी है। बांस और आमके वन यथेष्ट हैं। समस्त भूभाग जमीनकी प्रकृतिके अनुसार तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। दक्षिण-पश्चिममें हाजोपुर, बालागाछा, सरसा, विपाड़ा-रति और गटेखर परगनेंको लेकर एक विभाग बना है; इसको जमीन ऊँची और उर्वरा है। बाढ़ छोटी गण्डक और वाघमती नदियाँके अन्तर्गत दुष्भाव भूभाग है; इसकी जमीन पट्टमय है, वर्षामें नदी बढ जाती है। यहां का प्रधान शस्य खरोफ है। तृतीय विभाग वाघमतो नदीके उत्तर और पूर्वमें है, यहांको जमीन भी पलडो है और जिलेका मध्य भाग सबसे अधिक स्वास्थ्यकर है। हैमन्तिक धान हो इस अञ्चलका प्रधान शस्य है।

जमीन स्वभावतः रेतिली है, कहीं कदर और कहीं मट्टीमें सौरा तथा नमक पाया जाता है। बुनिया नामको एक जाति सौरा और नमकसे अपने जीविका निर्वाह करते हैं।

तिरहुतमें गङ्गा, बहो गण्डक, बया, छोटी गण्डक और तिलगुजा ये चार नदियाँ प्रवाहित हैं। इनमेंसे गङ्गा, गण्डक, छोटी गण्डक, वाघमतो छोटी वाघमतो, तिलगुजा और कराई इन सात नदियोंमें वर्षाभरमें सभी समय जा आ सकते हैं। इनके सिवा केवल वर्षाकालमें कमला और इसको शाखा नदी वमान, चारम, भिम, लाखवा-ण्डाई, पुरानो वाघमतो और बयामें भी गमनागमन होता है।

गंगा—शिकमागोपुरके निकट गङ्गानदी इस जिलेको दक्षिणी सोमाके रूपमें गिनी जाती है। हाजीपुरके निकट चामताघाटसे कई कोस उत्तर-पूर्वमें बाढ़ नामक स्थानके सामने गण्डक गङ्गामें जा मिलो है। वर्षाकाल छोड़ कर दूसरे समयमें गङ्गाकी चौड़ाई प्रायः कोस तक रहती है, किन्तु वर्षाकालमें बहुत बढ जाती है। सारण दियारासे गङ्गाकी एक स्वाभाविक खाहो निकल कर हाजीपुरके निकट नेपाली मन्दिरके नीचे गण्डकके साथ मिली है। इसको चौड़ाई इतनी थोड़ी है कि इसे किसी हालतमें नदी नहीं कह सकते। गङ्गामें जब जल बढ जाता है, तब तीरवर्ती सभी स्थान जलमग्न हो जाते

है और मन्दाकिनी नदी भी प्रतिवह हो कर उसमें गड़ा था उस प्रयोग को जाता है जिसमें तोरवर्ती काण्डावित हो जाती है ताबपुर उपनिभासमें प्रतिवर्ष ड्रावन होता है। मन्दाकिनी तिरहुतमें बौरि निष्पात कान नहीं है। बाढ़के सामनेसे गङ्गा उत्तरपूर्वको और पून कर बाजितपुर तक घाटी है और दक्षिण-पूर्वको और तिरहुत जिलेसे दूर दूर गई है।

गण्डक—हाओपुरसे निष्कट यह गङ्गाके घाट मिली है। यह नदी बर्ही बर्ही नारायको तथा मानवामी नामसे भी सुकारी जाती है। हिमासवसे उत्पन्न हो कर सुब्रह्मपुरसे बर्हीसे नोलकोलेके निष्कट यह तिरहुतमें प्रवेश करतो है बाद दक्षिण-पूर्वकी ओर प्रवाहित हो कर हाओपुर तक घसी घाटी है। गण्डकके किनारे काननक हो प्रधान गङ्गा का बाजार है। इसका खेत बहुत प्रबल है। नाव द्वारा पानि कानमें बहुत खतरा है। इत्रार मन बोध लाद कर नाव भासमन्त्र तक पच्छी तरह का बसतो है। मण्डकको तरह तीर मूमिभी पणे या ल पो है। इदीसे बाढ़ रोक्नेके लिये दोनो किनारों पर बांध टिये गये हैं। सारथ जिलेको और जो बांध है, यह बहुत ल था है, किन्तु तिरहुत जिलेका बांध उत्तमार्थ था नहीं है, इयो कारण बांध पार हो कर ड्रावन हो जाता है।

बघा—बघारथ जिलेमें गण्डकसे बया निकल कर बरकोल नोनकोलेके निष्कट तिरहुत जिलेमें प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्वको और यह कामय कुरिया, मरिदा भटोलिका, बितभारा और घाहपुर पतौरो लोक-कोलेके बगल हो कर जिलेके दक्षिण-पूर्व भासमें गङ्गाके साव जा मिलो है।

भेटी गण्डक—यह बघारथ जिलेसे निकल कर सुब्रह्मपुर बिभागमें घोषेकात घामके निष्कट तिरहुत जिलेमें प्रवेश करती है, बाद सुब्रह्मपुरसे घमोप टेडी हो कर पठाणकोलेके गोषे होती हुई सुब्रह्म महरसे जोष घामले गङ्गामें गिरो है। बघाकासे नान गङ्गासे दो बजा मन बोध से कर बर्ही तक और इत्रार मन से कर सुब्रह्मपुर तक जा बसतो है। अमर बन्धोके निष्कट इस नदीके खपर हो कर, 'दरमहा डेट रनब' गई है।

इसके किनारे सुब्रह्मपुर घमपोपुर, और बर्हीका प्रधान बाचिन्म रेन्ड है।

बघम—यह ताबपुरसे निष्कट छोटी गण्डकसे निकल कर माबपुर दक्षिण ब्रमरापके घमोप होती हुई अहा कामबघारो नदी सुब्रह्मसे पास छोटी गण्डकमें मिलो है जोष लवने कुछ खपरमें कामबघारोके साव मिली है।

बाघमटी यह नेवानसे काठमाण्डू नगरके निष्कट उत्पन्न हो कर पीतामको उपनिभासमें मवियाको घाटके निष्कट तिरहुत जिलेमें प्रवेश करतो है। कुछ दूर जा कर इसमें काकबाबिया नदी जा मिलो है। बाद यह नरबदा तक छोटी गण्डकके माघ समान्तर भासमें जाकर पक्षी एषे एके निष्कट छोटी गण्डकमें जो मिलो हो, किन्तु घमो पून कर जम्पाघाटके निष्कट काटई नदीके सहारे तिस-गुजा नदीमें जा मिलो है। बाघमतीका पुराना यम पात्र भी पुरानो बाबमती नामसे सुकारा जाता है। दरमहा और सुब्रह्मपुर गङ्गाके दूर गाईघाटो नामक कानसे नूतन बाघमती दरमहा और सुब्रह्मपुर घाटीको काटतो हुई चलो गई है। तुर्को नामक कानमें बाढ़का पानो रोक्नेके लिये बांध है। इस नदीमें पदौरो नामक स्थानके पान मानबाबिका, मवियारी घाटके पास मूरको नदी, सोतामतीके गोषे दरमहा और सुब्रह्मपुरके राखीके काट मोल दक्षिणमें काबहचहार नदी मिलो है। कम तीव्र नामक कानमें कामला नदी और पानोमें पूर्वके बाउस और पचिमके मिमनदी छोटी बाघमतीमें मिल गई है। इसके बाद छोटी बाघमती दरमहा गङ्गाके इसोस दक्षिणमें जम्पाघाटके निष्कट बड़ो बाघमतीमें जा मिली है।

काई—बाघमती जब पुरानो बाबमती नदीके भोतर होकर बहतो हो, तब बह एक मामान्य नदी हो, प्रमो पक्षी जम्पाघाटके गोषे बाघमतीका प्रधान खेत हो गई है। सुब्रह्मको नोमामें तिखडनगर नामक स्थानके निष्कट यह तिखगुजा नदीमें मिलो है।

तिखगुजा—यह नेवानसे निकल कर लडोमगावके पास तिरहुतकी गङ्गामें गिरो है। राहनाको पामके निष्कट यह दो भासमें विभक्त हो कर अजापामक घमोप पुनः



मिल गई है। पश्चिमको शावामें वागता नामक स्थानके पास यह बलान नदीमें मिली है। राइसारीमें ले कर नदीके गर्भ तक जगह जगह बांध टिये हुए हैं। नाव जाने आनेका कोई रास्ता नहीं है।

कमला—यह नेपालमें निकल कर जयनगर नामक स्थानमें तिरहुतमें प्रवेश करतो है। पहले यहां गिनानाथ नामक एक शिवमन्दिर था जो क्लमगः नदीको गति बटल जानेसे, नदीके गर्भमें पड़ गया है। कमतोलके निकट कमला वाघमतीमें मिली है। कमलाको पुगानो खाई तिलेश्वरके निकट तिलगुजा नदीमें गिरतो है।

इनके सिवा छोटी बलान नयाधार, कपला, पण्डोन नाला आदि नदियां हैं।

ताजपुरसे ५ कोस दक्षिण-पश्चिममें सरसा परगनेके मध्य तानवैला नामक नाला ही विख्यात है। इसकी लम्बाई ३ कोस और क्षेत्रफल २० वर्ग मील है।

तिरहुतमें खनिज द्रव्य कुछ भी उत्पन्न नहीं होता, लेकिन मटोके माथ सोरा और नमक पाया जाता है। हरीलो नामक स्थानमें छोटी गण्डकसे कड़ूर निकला जाता है।

वन्य द्रव्योंमें मधु, शम्बुक, सोय, आदिकी देहोंमें प्रसून चूना, चिरायता, सहकरोग, गुग्गु, सुगिड, तालनूलो तथा मकाइ प्रभृति भेषज उत्पन्न होते हैं। जङ्गलमें भांगका पेड़ भी होते हैं। यद्यार्थमें इन जिलेमें उनना जङ्गल वा परतो जमीन नहीं है। जासुन, शोशप, भाव, आम, कटहल, सहुआ आदिके वृक्ष भी यद्येष्ट हैं।

इस देशमें सैकड़ों पोछे ८८ हिन्दू और ८ मुसलमान हैं। घोषवात नामक स्थानमें एक पार्षतोय जाति वास करती है। पहले वे एक नेपाली सुवेदारके भृत्यके रूपमें थे। सुवादरका वंश लुप्त हो गया है। उनके भृत्य खेती करके अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं।

ब्राह्मणोंमें मैथिल और गौड हैं, जो विशेष कर मधुवनी और दरभङ्गमें रहते और तिरहुतिथा ब्राह्मण कहलाते हैं। मैथिल ब्राह्मणोंमें त्रिविद्य लोग शुचि हैं। ये मजरीतो, योगिया और गृहस्थ वा मैथिल, त्रिविद्य, योगचन्द्रोला तथा पण्डित इन पांच भागोंमें विभक्त हैं। त्रिविद्य लोग सबसे माननीय हैं। दरभङ्गके महाराज

भी इसी त्रिविद्यके अन्तर्गत हैं। ये ब्रह्मणको कुलीन ब्राह्मणोंको नाई वद-विवाह और इच्छागुमार कुछ दिन एक श्वशुरालयमें और कुछ दिन दूमरे श्वशुरालयमें रहते हैं। श्वशुरसे प्रति वार ये भोग रहनेकी नियं रूपसे आदि ले लेते हैं। मोराठ नामक स्थानके देव-मन्दिरमें यावदोय ब्राह्मणोंका मेला लगता है। इस में नेमें अपनी अपनी त्रिविद्यके पण्डित प्रत्येक व्यक्तिको वंशतालिका खोलकर विवाह-उपस्थका निरूपण करते हैं। उच्च कुलको सन्तानके पिता निम्न कुलमें विवाह होनेसे कुलपरीटा स्वरूप रूपसे आदि पाते हैं। इस सेलेके दिन वर और कन्याका नाम निरूपित होता और उनके पिताको सम्पत्ति-सूचक एक तालिका निम्नो जातो है। त्रिविद्य लोग यदि अपनी त्रिविद्यके सिवा भिन्न त्रिविद्यमें विवाह करें तो वे उभो त्रिविद्यके हो जाते और आत्मीय स्वजन परित्यक्त होते हैं। ये लोग अपने हाथमें कुटाल द्वारा पारते और जमोन मोचते हैं। केवल हल जीतनेके नियं किमो दूसरे (निम्न त्रिविद्यके लोगों) को नियुक्त करते हैं। पहले ये लोग किसीके यहां नोकरी नहीं करते थे, किन्तु अभी बहुतसे तहसीलदार और गुमस्ते हो गये हैं। इन लोगोंमेंसे बहुतसे भामके बगीचे लगा कर जोशिका चनाते हैं। मैथिलशासन देखो।

ब्राह्मणोंके वाट इस देशमें राजपूतोंका सम्मान अधिक है। ये अधिकार्य जमोदार और रूपक हैं। आज कल कुछ पुलिसके चोकोदार, व्याडे और खोड़ोदारका काम करते हैं। राजपूत और ब्राह्मणके वाट बाभन नामको एक दूसरे जातो है। वे राजपूतोंको अपेक्षा हीनमर्याद होने पर भी दूमरो दूसरी जातिकी अपेक्षा गण्य मान्य है। ये लोग जमोन्दार वा अस्त्र-जोवो ब्राह्मणके नामसे परिचित हैं। बाभन देखो।

तिरहुतमें निम्नलिखित शहर विशेष प्रसिद्ध हैं—

सुजफरपुर—यह सुजफरखुर्वा नामक एक व्यक्ति द्वारा स्थापित हुआ था, इसीसे इसका नाम सुजफरपुर पड़ा है। यह शहर अक्षा० २६° ७' २३" उ० और देशा० ८५° २६' २३" पू०में छोटे गण्डकके किनारे अवस्थित है। इसी नगरमें जिनेकी सदर अदालत है। यहां म्युनिसिपालिटी, कलेक्टरी, दोवानी और फौजदारो अदालत, जेल,

प्रयत्नान् पौर मंडल है। शहर बहुत परिष्कार पौर मंडलें प्रगत हैं। यहां के बाजार बड़े बड़े हैं पौर सुबह शाम ७-११ बिक्री होती है। पञ्चालके समोप मान नामक एक मंडलके मद्राज जमागढ़ के जो जिनको लदोके सुपातन-यर्मका पञ्च मान है। बाजारमें तासाबको जिनके राम-मोता पौर शिवका मन्दिर है। यह शहर बहुत पाषाण कालका नहीं है। इसको स्थापनकर्त्ता सुत्रपकर ११ एक 'धामिक' का 'सबका नाद (नातक) है। अन्यको दोबानी मिलनेके बहुत पहले उर्ध्वमें उत्तरमें मिखन्दर पुर धाम, पूर्व में बबो'ओ धाम दक्षिणमें सैयदपुर पौर पश्चिममें मारिकागञ्जमें ७५ बांधि जमोन निकाल कर उसी में अपने नाम पर नगर स्थापन किया। क्रमशः इसकी वृद्धि होती गई। १८२० ई में छोटी गण्डबबके बहुनिने इसको बहुत घति हो गई है।

रुघुया—यह सुत्रपकरपुरमें १ कोस दूर पूर्वा राक्षीके ऊपर अवस्थित एक छोटा धाम है। यहां सुल्तान महो निमें ७ दिनका एक मेला लगता है। यहां पौरका एक खान है जहां बहुतने बानो एकदम होवे हैं।

हरिया—यह सुत्रपकरपुरमें दक्षिण-पश्चिम ८ कोस दूर, बवा लदोके जिनारे अवस्थित है। यहां मोहनी एक कोठी है। बवाके ऊपर हरिया राक्षी पर तीन गुम्बजका एक मठ है। यहदि बौद्धो हूरफ फातने पर पत्थरका एक स्तम्भ है जो जिनो एक ब्राह्मण द्वारा स्थापित हुआ है। लोग इसे 'भीमनि बबो नाठा' कहते हैं। यह २४ फुट लंबा पौर चिर्च एक पत्थरका बना हुआ है। इसमें ऊपर चौकीन पत्थर पर एक पत्थरको निहमूर्ति है। निहमूर्ति तक पश्चोकोर्णकार २० फुट है। डा राजा रामेन्द्र साह मित्रके मतसे यह एक पयोक्षपाथ है। इसके बगलमें एक गहरा कुवा है।

बलनपुर—हरियाको मोनकीठीने कुछ दक्षिणमें यह ४३५ धाम अवस्थित है। यहां धाम्यमिति है।

मारिकगञ्ज—सुत्रपकरपुरमें १५ कोस उत्तर-पश्चिममें बवा लदोके जिनारे पर यह शहर अवस्थित है। यहदि मोतिशारो मोतीपुर पौर आम्पगञ्ज तक मंडलें गई हैं। यहांका बाजार बहुत मध्या बौद्धा है। विलसन चन्द्राज सिंह, उत्तर पौर नमजका व्यवसाय पबिध होता है।

जर्कोनको मोन जोडो बाजारसे बहुत समोप है। यहदि जने दूनो दिगमिं गिनि जाते हैं।

खण्डारि—यह सुत्रपकरपुरमें ४ कोस दूर मोतिशारोके राक्षीपर अवस्थित है। इसो स्थानमें खण्डारि मोन जोडो है। पहले यहां मोर(को भी जोडो जो। सन्नाहमें दो बार जाट आयतो है। यहां मोनापुरका राक्षी सुत्र पकरपुरके राक्षीमें या मिखा है।

बैबसण्ड कर्ना—यह सुत्रपकरपुरमें १४ कोस दूर खोतामण्डोके राक्षी पर अवस्थित है। यह स्थान सुगमी बाधमती लदोके जिनारे बसा है। यहां एक बड़ी मोनका कोठी है।

राजकण्ठ—सुत्रपकरपुरमें ११ कोस उत्तर पूर्वमें यह बड़ा धाम अवस्थित है। यहां भैरव नामका एक बड़ा मेला लगता है। इस मेलेमें गाय बैबको बिक्री होगी है। यहां एक मोलका कोडो है। पहले यहां पानीका खार खाना था। इसके पश्चिममें लाकड़बजार लदो प्रचारित है।

कटवा वा पंकरपुर—यह साकड़बजार लदोके जिनारे पर अवस्थित है। इसके पश्चिममें एक ठूटा कुंडा मठका जिनका है। बिलेका परिमात्र प्रायः ६० बोधा पौर दोबार १० फुट लंबो है। राजकण्ठ नामक एक क्विइ इस दुयके पविर्पति है। दरमहा जाति समय में पश्चिम परिवारबगले लह गये थे कि यदि उनको भ्रष्टा गिर जाये तो उनको लुब्धु निचिन समझना चाहिये। एक कुतलो राजाका शत्रु था, उसने भ्रष्टा तोड़ डालो पौर राजपरिवाशको इसको पथर से। इस पर में जगतो हुई बितानि वन गये।

मधुबनी—दरमहा शहरमें ८ कोस उत्तर पूर्वमें यह शहर अवस्थित है। यह मधुबनी उपनिभायका मन्दर खाना है। यहांका बाजार खूब विस्तृत है। माय मजो पौर नपके पादि प्रधान वाणिज्य द्रव्य है। शहरके उत्तरमें दरमहा राज मधुनि इके तोमने लड़के कोर्ति निहका मय "मधुबनीके धानू" नामसे प्रविध है उर्ध्वमें खबदी परमनेके लई धाम राजपरिवाशि पाये है। इस शहरके भीतर नेपाल जातिका प्रधान पय है।

भोवावा—मधुबनीके पाद कोस दक्षिणमें यह बड़ा

ग्राम अवस्थित है। इसके दक्षिणमें एक दुर्ग का भग्नावशेष देखा जाता है। पहले इस दुर्गमें ईंटोंको ढोवार था। रघुसिंह नामक एक व्यक्तिने यह दुर्ग निर्माण किया था। ये दरभङ्गा-राजके वंशोद्भव थे। १७६२ ई०में इनके वंशोद्य प्रतापसिंह यहाँसे अपना वामस्थान उठा कर दरभङ्गा ले गये। यहाँ एक मसजिद का भग्नावशेष है। अकबरके मसामयिक शासनकर्त्ता अलाउद्दीनने यह मसजिद निर्माण को था।

विराटपुर (विराटपुर)—यह खजोलो यानाके अन्तर्गत एक ग्राम है। यहाँ भी एक दुर्ग का ध्वंसावशेष और गढ़-प्राचीरादिके चिह्न हैं। एक जगह गढ़में महादेवको लिङ्ग मूर्त्तिके कुछ अंश हैं। कहा जाता है कि महाभारतके अनुसार राजा विराटने इस दुर्गको निर्माण किया था। तेजो लोग राजाको खजाना और गढ़के शिवलिङ्गको कोल्हका मूसल बतलाते हैं।

सीराठ—यह मधुवनोसे ४ कोसको दूरी पर है। ३० वर्ष पहले दरभङ्गाके राजाओंने यहाँ एक शिवमन्दिरको प्रतिष्ठा को है। उसी मन्दिरके निकट तिरहुतीय ब्राह्मणोंका वापिक मेला लगता है। कभी कभी लावसे षडिक ब्राह्मण एकत्रित हां जाते हैं। इस मेलेमें वरकर्त्ता और कन्याकर्त्ता पुत्रकन्याका विवाह सम्बन्ध स्थिर करते हैं।

भञ्जहारपुर—यह मधुवनोसे पूर्व दक्षिणमें ७ कोसको दूरी पर अवस्थित है। इस छोटे ग्राममें दरभङ्गा राजवंशीय प्रतापसिंहके नाम पर प्रतापगञ्ज और राजा मधुसिंहको बहन शोदेवीके नाम पर शोगञ्ज नामक दो बाजार हैं। दरभङ्गा राजको सभी सन्तान इस ग्राममें भूमिष्ठ हुई हैं, इसीसे यह प्रसिद्ध है। राजवंशके बहुतांश निःसन्तान अवस्थामें मरने पर राजा प्रतापसिंहने निकटवर्त्ती सुर्णमग्रामवासी महन्त शिवरतनगिरिको सेवा-सुश्रुता को। महन्त भञ्जहारपुर श्राये और अपनी जटाको एक शिखा इस स्थानमें जला कर बोले कि जो यहाँ वास करेगा उसके पुत्रत्व होगा। उनके कथनानुसार प्रतापसिंहने यहाँ एक वासस्थान निर्माण किया, किन्तु मकान तैयार होनेके पहले ही अपुत्रक अवस्थामें उनकी मृत्यु हुई। बाद उनके भाई मधुसिंह मकान तैयार करा

कर रहने लगे। यह ग्राम पहले राजवृत्तीका था। महाराज छत्रसिंहको शो गभिर्णो हो कर प्रभवज्ञान तक इस घरमें थीं, इसीसे छत्रसिंहने इस ग्रामको खरोट लिया। यहाँ रक्तमानादेवोका एक मन्दिर है। इस ग्रामका पोतनका पनवटा और 'गङ्गाञ्जली' नामका जलपात्र बहुत प्रसिद्ध है।

मधेपुर (मध्यपुर)—यह बरहमपुर, हरसिंहपुर, गोपालपुरघाट और दरभङ्गाके मङ्गमस्थान पर अवस्थित है। प्राचीन मिथिलाका केन्द्रस्थल होनेसे यह मधेपुर और मध्यपुर नामसे प्रसिद्ध है। महाराज मधुसिंहके चौथे लडके रमापतिमिंह पश्चिम परगनापा कर इस ग्राममें रहते थे। तिरहुत और पूर्णियाके रास्ते पर यह ग्राम अवस्थित होनेसे व्यवसायका केन्द्रस्थल माना गया है।

वासुदेवपुर—मधुवनोसे ५ कोस पूर्वमें यह ग्राम अवस्थित है। पहला इसका नाम गडरपुर था। पछे इसका नाम शङ्करपुर-गधवार पड़ा और अन्तमें वासुदेवपुर हुआ है। इस विषयमें किम्बदन्ती इस प्रकार है यहाँ गन्ध और भैरव नामके दो भाई रहते थे। दोनों पराक्रमशाली और नाम मात्रकी तिरहुत राजाके अधीन थे। तिनगुजाके पूर्व-तोरवर्त्ती कई स्थानोंमें गन्धको जमींदारो थे और कराई नदोके दक्षिणमें भैरवका अधिकार था। तिरहुतके राजाने स्वयं उन्हें दमन नहीं कर सकने पर किसी दो विदेशियोंसे उन्हें मरवा डाला। जिस हत्याकारोने जिसे मारा, उसने उसीको जमींदारो पुरस्कारमें पाई। गन्ध हन्ताके वंशधर 'गन्धमारिया' और भौर हन्ताके वंशधर 'भौरमारिया' नामसे प्रसिद्ध हुए। गन्धमारियावंश शङ्करपुरमें और भौरमारियावंश सिंघिया ग्राममें रहते हैं। इसीसे शङ्करपुरका गन्धवार नाम पड़ा है। महाराज छत्रसिंहने विवाहके समय यह ग्राम यौतुकमें पाया था। महाराजो छत्रपति कुमारी मरते समय यह ग्राम अपने मंभले लडके वासुदेवको सौंप गई। छत्रसिंहको मृत्युके बाद कुटरसिंहने राजा हो कर वासुदेवको जराइल परगना दान किया, उन्होंने इस राज्यपर अपना दावा करके विवाद ठान दिया। अन्तमें कुमारी वासुदेवने जराइल परगनेको ग्रहण न कर, मातृदत्त शङ्करपुरका नाम बदल कर अपने नाम पर रक्खा और वे वहीं जाकर रहने लगे।

निर्जापुर—मध्यमनेमि ४ कोस उत्तर-पूर्वमें यह ग्राम  
 अवस्थित है। इहाँके बाजारमें मियाणकी तराईसे पनाज  
 जाता है। इहाँके ६ कोस उत्तर-पूर्वमें बलराजाका  
 एक भावमिष्ट दुर्ग है। इस ग्रामका नाम मो वनराजपुर  
 है। दुर्गकी लम्बाई ४० गज और चौड़ाई २ सो मज है।  
 बलराजा लोग ये इसका पता नहीं।

अयनवर—यह मियाणकी मोमा पर अवस्थित है और  
 एक अस्वय दुर्गका मन्दाग्रीय है। पहाड़ियोंकी  
 शासनमें रक्तीके निचे किसी मुगलमामनी यह दुर्ग  
 निर्माक किया जा। दुर्ग बनवाये समय पृथ्वीसे एक अत-  
 र्दिष्ट पारि गई थी इसी कारण यह स्थान पद्ममकर  
 समझ जाता है। सन्धतः १६११ ई. में मन्दासब शासन  
 कर्ता पनाइहोलने कामरूपसे बैतिया तक जो  
 मोमान्त दुर्ग निर्माक किये थे, इहाँमेंसे यह एक दुर्ग  
 होना। मियाण युद्धसे समय यहाँ पर गरीबोंका अन्धाकार  
 था। इस ग्राममें मोहको कोठी और चोमोका कार  
 खाना है।

मिनानाथ—अयनगरके निचट कमलाके बिगारे  
 मिनानाथ ग्राम है। वैशाख महीनेमें यहाँ पन्द्रह दिन  
 तक भिजा लगता है। इस महीनेमें तिरहुतसे पनाज और  
 मधेयी तथा मियाणसे मोहपिच्छ, कुठार क्षेत्रपता और  
 कपटूरी आते हैं। महीनेमें पक्षी मिमदगंनके लिए बहुत  
 संख्याको पाते हैं, किन्तु कमसायममें कम मन्दिर और  
 प्रतिमाका शोष हो जानेसे संख्यामें बहुत कम आते हैं।

बकरोन—दरमहाके ६ कोस उत्तरमें यह ग्राम  
 पड़ता है। यहाँ तिरहुतीय वास ब्राह्मणोंका नाम अधिक  
 है। कुली कपड़के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है, मियाणकी  
 मोमा इस कपड़केको अधिक व्यवहारमें आते हैं। इन्सेन  
 पुर नामक ग्राममें अविनेश्वर महादेवका एक मन्दिर है।  
 प्रवाद है कि पुराणोक्त अविने लुनि यहाँ रहते थे। ये ही  
 मिषके प्रतिज्ञाता माने जाते हैं। भाव माकमें यहाँ एक  
 भिजा लगता है, जिसमें कुली कपड़के पीतलके बरतन और  
 पनाज आदि विक्रय हैं। यहाँको पुष्करियोंमें मोहन  
 नामक एक प्रकारका सुसादु फल उपजता है।

दरमहा—यह तिरहुतमें समथे बड़ा नगर है। यह  
 लम्बा २८ ई० ६० और चौड़ा ८२ ई० १४ फू०में छोटी

बाहमतोके बगि बिगारे पर अवस्थित है। यह एक लघु  
 विभागोव सदर बाग है।

दरम गज लक्ष्में विस्तृत विवरण देखो।

त्रिमच—यह दरमहासे छेड़ कोस पूर्व कमलाके  
 बिगारे पर है। यहाँ कार्तिक और माघी पूर्णिमामें एक  
 भिजा लगता है जिसमें सुवाचिने को चिन्तू खिया कमलामें  
 खान करने आते हैं। उनका विश्वास है कि खान करने  
 से बन्ध्यात्वदोष दूर हो जाता है।

मिहरा—यहाँ तोन बहो दिगो है। हुकुदौड नामकी  
 एक दिसी (दिम्बो) २ सोन लम्बी है। दरमहाके राजा  
 मिषसिंह पुष्करियोंको खनन करनेका सङ्कल्प करके एक  
 डाकमें जनपूर भ्रष्टो से चोड़के पर सवार हुए और  
 अल मिशति गये। लक्ष्में प्रथम जिजा का जि भ्रष्टोका  
 अल इहाँ अतम हो जायगा, पुष्करियोंकी लम्बाई मो  
 अतमो ही दूर तक रखी जायगी। वह यही दोषिका है।  
 पानी इसमें अतमा अधिक अल नहीं है। इससे एक  
 संममें सामान्य जन है और पन्थान्ध संममें कितो होती  
 है। कमला नदी किसी समय इस दोषिकाके समोप हो  
 कर बहतो हो यह इवका सब लक्ष निश्चाय से गई है।  
 इससे निचट १३ कोडा कमोममें मिषवि इन्से ममादका  
 मन्दाग्रीय है।

सिंहिया—बकरोने ६ कोस दक्षिण सिंहिया ग्राम  
 में कराई नदीके बिगारे एक खोमको दूरो पर मङ्गल  
 नामका एक दुर्ग है। इस दुर्गकी परिधि प्रायः छेड़ सोन  
 है। इसके चारों ओर १०१० फुट लंबाको मिठोको दीवार  
 और अर्धसे बाट गहरो पारि है। मङ्गलबद्धके भीतरमें  
 पानी कोई पश्चात्तिका नहीं है, कसिक इहाँ कितो होती  
 है। किन्तु १४ दि २ फुट तकको बहुतमो ईँडे दिव  
 मेंमें आते हैं। इसका इतिहास कुछ भा जाना नहीं  
 जाता है। प्रवाद है, कि बलराजाने दुर्गाधिपति राजा  
 मङ्गलको परास्त और विनष्ट किया था। यद्धके पूर्वमें  
 नौसकी कोठे है।

अडियागो—कामटोल ग्रामके दक्षिण पूर्वमें यह ग्राम  
 अवस्थित है। यहाँको खोमस पना प्रायः छेड़ इन्हार  
 है। वैशाख महीनेमें पश्चात्तान्ध का मिष्केश्वर नामक  
 स्थानमें एक भिजा लगता है जो केवल एक दिन तक रहता

द्वे और लगभग १० हजार मनुष्योंका समागम होता है। इस मेलेमें न कोई चोज खरोटी जानो है और न बेचो जातो, केवल पुण्यकार्यका अनुष्ठान होता है। यात्री लोग यहाँ आ कर पड़ने देवकालो नामक पवित्र कुण्डमें स्नान करते हैं, बाट एक पत्थर परके एक पदचिह्नको देख कर आते हैं। यह सोता वा रामका पदचिह्न कह कर प्रसिद्ध है। इसी चिह्नके ऊपर एक मन्दिर बना है जिसे अहल्यास्थान कहते हैं। रामायणके अहल्यागीतमसम्बादमें इसकी उत्पत्ति बतलाई गई है। यहाँ दरभङ्गाके राजका बनाया हुआ एक बहुत ऊँचा देवालय है।

मालोनगर—छोटो गण्डकके उत्तरी किनारे पर अवस्थित एक ग्राम। यहाँ रामनवमोसे ले कर पाँच दिन तक मेला लगता है, जिसमें २ हजारसे ४ हजार तक मनुष्य एकत्रित होते हैं। १८४१ ई०में यहाँ एक शिवमन्दिर प्रतिष्ठित हुआ है उसी मन्दिरके निकट "राम नवमो" नामक उल्ल मेला लगता है। गिव नामक कोई मध्यविक्रत वैश्य थे। गुरुके उपदेशमें उन्होंने एक देवमन्दिर निर्माण किया। इनके वंशधर क्रमशः धनो हो गये और सिपाही-विद्रोहको समय इसी वंशके बाबू नन्दोपत्सिंहने गवमेंगणको सहायता कर रायबहादुर उपाधि पाई थी। पूसा जमींदारो इन्हीं लोगोंको है। इस वंशके मुखियाके मतानुसार शिवके पुरोहित निर्वाचित होते हैं।

पूसामें मालोनगर और बख्तियारपुर नामके गवमेंगणके दो खास ग्राम हैं। मालोनगर पड़ले दरभङ्गा राजको मिलक्रोयतमें गिना जाता था। पहले यहा गवमेंगणके घोड़ेके बछड़े आदि उत्पादन तथा पालन करनेका स्थान था। किन्तु १८७२ ई०में वह काम बन्द कर दिया गया। यहाँ अफीम तथा कुसुमफूल उपजाये जाते हैं।

सोतामढी—लाखण्डाई नदीके पश्चिमी किनारे पर अक्षा० २६°३५' ००" और देशा० ८५°३२' ००"में यह शहर अवस्थित है। यहाँ प्रायः ६ हजार मनुष्य वास करते हैं। यह सोतामढी उपविभागका सदर थाना है। सरसों आदिका तेलहन अनाज, धान, गायका चमड़ा और नेपालके द्रव्यादि ही यहाँके प्रधान वाणिज्य द्रव्य हैं। सखुआ

नामका काठ वर्षाकालमें नदीमें बहा ले जाते हैं। चैत्र-मासमें यहाँ पन्द्रह दिनका एक मेला लगता है। मेलेमें रामनवमोके दिन ही खूब उत्सव होता है। इसमें भव प्रकाशको चोजोको आमदनी होती है। हाथ और घोड़े भी विक्रने पाते हैं, किन्तु वैलोंके विक्रयके लिये ही यह मेला प्रसिद्ध है। सोतामढीके वैल बहुत ताकतवर और सुन्दर होते हैं। प्रवाट है—सोतामढी हो राजर्षि जनकको कर्पित यज्ञभूमि थी। इसी जगह सोताका जन्म हुआ था। खेतके जिस गट्टेमें सोताको उत्पत्ति हुई थी, वह अभी पुष्करिणीके रूपमें परिणत हो गया है। फिर किमोका मत है, कि निकटवर्ती पनौरा नामक स्थानमें सोताका जन्म हुआ था। सोतामढीमें सोताका एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके निकट हनुमान, गिव, टाहो आदिके और भी ८ मन्दिर हैं।

शिवहर ( गिवहर )—सोतामढीसे ८ कोस दक्षिण-पश्चिममें यह ग्राम अवस्थित है। यहा वेतिया राजके एक ज्ञाति राजा हैं। उन्होंने एक लाख रुपये खर्च करके ग्राममें बहुतसे मन्दिर बनवाये हैं।

पनौरा—यह सोतामढीसे तीन मोल दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। लोग इस स्थानको सोताटित्रीको जन्मभूमि बतलाते हैं। यहाँ एक मढीका धना हुआ बड़ा राजम और वानरको मूर्ति है। जो हनुमान तथा रावणके युद्धका दृश्य कह कर प्रसिद्ध है। राघव मूर्ति के दो मस्तक हैं। इन दोनों प्रतिमाके निकट एक महन्त रहते हैं और प्रतिवर्ष उनका अन्नराग होता है।

देवकालो—शिवहर ग्रामसे २ कोस पूर्वमें यह ग्राम अवस्थित है। यहाँ फाल्गुन महोत्समें एक मेला लगता है और एक बहुत ऊँचा शिवमन्दिर भी है। शिवको जल चटानेके लिये बहुत दूरसे यहाँ आते हैं।

भैरगिन्या—उत्तर सीमान्तवर्ती एक स्थान। यहा एक बड़ा बाजार है। जहाँ नेपाली और पहाड़ी वणिक पण्य द्रव्य बेचा करते हैं। इसको दक्षिणको और वे नहीं जाते हैं।

वेलामो चपकोनी—इस ग्रामका नाम विला है, किन्तु यहाँका जल बहुत खराब है।

हाजीपुर—यह गण्डकके उत्तरी किनारे अक्षा० २५°

३० ५० ८० घोर दिया ८१ १३ २३० पू०में पवस्वित  
 ६। यह हमो लम्बे लघुविभागका मंदर जाना है।  
 मोक्षक व्याघ्र २२५ हजार है। यह पटना गहरने  
 विपरीत दिगामें पड़ता है घोर इसठ तीनों घोर नदो  
 रहनेके कारण जिनमें यह एक द्वितीय प्रयोजनके  
 वाचिन्वसिद्ध हो गया है। यहां एक दुर्ग कई एक  
 मराय, मन्दिर घोर मसजिदके सम्भावये हैं। जिनमें एक  
 सराय है जहां निवाणके मन्वो जमी कमी पाया करते  
 हैं। मरायके मन्व एक होतहाकी बौद्धमन्दिर है। इस  
 मन्वुए बाइको गिण्यकारो तथा पशानिकाको बनाइत  
 प्रय कनयो है। मन्दिर ८० वर्ष पड़सेका बना हुआ है।  
 गोनपुरदाके निवट जामोमसजिद नामको प्यरकी कनो  
 हुई एक मसजिद है। जामोइविषय नामके जिनो सुमन्य-  
 मानने हुयो तर्पे पड़ने यह गहर स्थापन किया बा। मस-  
 जिद मो कर्कोको बनाई हुई है। मोनापुर घोर जामोपुरके  
 बाबादमें घोर हो मसजिद है। मोनापुरको मसजिदके  
 प्रतिज्ञाताका नाम हमामकव है। गहरके पक्षिममें राम  
 मन्दिर है। प्रयाग है जि जलकपुर आते ममय राम-  
 चन्द्रको यहां कुछ खान तक उड़ी है। उनके पवस्विति  
 स्थान पर हो यह मन्दिर बना हुआ है। यमो मारक  
 जिनमें को गोनपुरका सेना मगता है पड़ने यह जामो  
 पुरमें ही मगता बा। लज मैकेमें, नकोमें बहारा के क  
 दिनका को नियम बा यह पव मण्डकक उत्तरो किनारे  
 पर्यान् जामोपुरमें बुधा करता है। पड़से जिन दुर्गके  
 सम्भावयेपका उल्लेख किया बा हुआ है लके भी जामो  
 इन्वियनने १५ बोवा जमीनके खर बनाया है।

१९०२ ई०में पञ्जबरे एक निनापति सुत्रपञ्जवनि  
 पञ्जमान विद्रोहियकि जाके जामोपुर खोन किया, किन्तु  
 के नदोके विगारि टकलमें समय मनुषे मार जासे गये।  
 दो वर्षके बाद हुनेमाल कररानोके छोटे मण्डके दाऊदन  
 पटनेके दुग को लहस लहस कर दिया। इस पर दाऊद  
 को पकटने तथा बिहार पर शासन करनेके लिये वी  
 शासनको जिन्नेने नुद्व मिना। दाऊदने जामोपुरके  
 किनेमें धायय किया। सुमन्यनेमाने दुः पवरोक किया।  
 पञ्जबको यह म बाद मिनत पर ये एव पटनेको घोर  
 बन पड़े। उन्नेमि तोन हजार सेना पाव से जामो-

पुरके नदुकी ओतनेका सङ्घट किया। जामोपुरके जमी  
 दार मजपति बेनापति हो कर बड़ने गने। हुनाधिपति  
 पकगाल पसेका तथा घोर मो बहुरसे मैनिज मारे गये।  
 समोके मन्वक दाऊदके निवट मीज गये, जिनका उल्लेख  
 यह बा कि ये इससे पचना परिचाम मसम्भ सहेरी। पक  
 कर अपना पुन सेपनेके लिये पक-पहाड़ीको खर भये  
 घोर फिर लौट पाये। पांच दिनके बाद दाऊद बहाउ-  
 से उड़ीसा भाग पाये; वहां से परास हो कर सधि  
 करनेको बाध हुए, किन्तु १९०० ई०में उन्नेमि विद्रोहो  
 हो कर सुपक सेनाको जामोपुरके निवास बनाबा। पीछे  
 सुत्रपञ्जवनि कने पच्छो तरफके परास किया।  
 १९०२ ई०में विद्रोहो परब बहादुरने इस दुर्गमें धायय  
 किया। जामोपुरके दोनान सुत्रा तानिबा द्वारा उनका  
 जामोर खोन ली जाने पर वे भागी हो गये। सुत्रा मजदो  
 (धमोन), परखोतम (बक्यो) घोर समयोर (बखिया)मि  
 परब बहादुरका पव किया। पल्लमें परब बहादुरने  
 परखोतमको मार कर धारा बिहार प्रदेश हस्तगत किया,  
 किन्तु पटनेके दुर्गमें पराजित हो कर उन्नेमि जामोपुरके  
 दुर्गकी गरब हो। महाराजकनि एक भाग कोयिय  
 करनेके बाद उन्ने यहांसे निवास दिया। १९०३ ई०में  
 मधुमन्वके निनापति खिता इरी स्थान पर पर-  
 जित हुए थे। जिसो समय यको जामोपुर सरकार  
 जामोपुरका प्रधान महर बा, उस समय इस  
 में ११ परने लवते थे। यमी इसके कई एक परगने  
 सुत्रोर जिनमें मिना दिये गये हैं।

भासगञ्ज-पञ्जकके पूर्वी किनारे पर जामोपुरसे ६  
 कोस उत्तर-पूर्वमें पवस्वित एक प्रधान वाचिन्व केशू  
 घोर बिस्पात महर। इससे कुछ दूरमें वि हिवा लोख  
 कोठे है। पड़से पोखन्दाज कोग इस कोठीमें मोरीका  
 खाओबार करते थे। मिरहुतमें यूरोपोय कोइन्नेमि कैवल  
 दो हो पादि घोर पुरातन है। १८८१ ई०में पोखन्दाज  
 इटरखिया कम्पनीमें यह कोठो घोर इसके स मन्व १३  
 बीवा जमीन जयवाह सरकार नामक एक कश्चिने एक  
 ना रूपमें परादो थी। इन निवकयके खानजात पर  
 मो निवमान है। जिके जगवाय सरकारके प पंज  
 गवमें पटने करीद किया है।

तिरहुतमें भ्राम, कटहन, वेल, नौवू, अनार, कीला, अमरुद, और जामुन यथेष्ट उपजते हैं। तालाबमें मवाना बहुत होता है।

धान तीन प्रकारका होता है—प्राउम वा भटई, अगहनो वा हैमन्तिक और माठो। यहाँको प्रधान उपज गेहूँ, जौ, चना, जई, कोदी, जुनहरो, मडुआ, कोटो, श्यामा, चेना, अरहर, खेसारी, मूँग मसर आलू, तिल, तिमो, रेड्डी, रुई, पान, ईख, तमाख, अफोम, कुसुमफूल आदि हैं। खनिज द्रव्योंमें मोराका काम हो खूब बढ़ा चढ़ा है।

शासनविभाग—तिरहुत जिला टरभङ्गा और मुजफ्फरपुर इन दो जिलोंमें विभक्त हुआ है। इसके प्रत्येक जिलेमें तीन उपविभाग हैं। इन छः विभागों वा पूर्वतन तिरहुत जिलेमें अभी कुल निम्नलिखित ८४ परगने लगते हैं— १) अहिलवर (२) अहीम (३) अकवरपुर (४) आलापुर (५) बावरा नं० १ (६) बावरा नं० २ (७) बावरा तुर्की (८) बाटेसुमारो (९) बहादुरपुर (१०) बालागछ (११) बानूयन (१२) बरौल (१३) बमोतरा (१४) बगई (१५) भटवार (१६) भाला (१७) भरवारा (१८) भीर (१९) बिचोर (२०) बीसुहा (२१) चकमणि (२२) धरोरा (२३) डटनवांगरा (२४) टिलवरपुर (२५) फखरावांट (२६) फरफपुर (२७) गटेश्वर (२८) गडचौट (२९) गरजौल (३०) गौर (३१) गोपालपुर (३२) हाजोपुर (३३) हमोदपुर (३४) छाटो (३५) हवेलो दरभङ्गा (३६) हावो (३७) हिरनो (३८) जवदो (३९) जहाँनाराबाद (४०) जखनपुर (४१) जाखर (४२) जराल (४३) कखरा (४४) कलहौलो (४५) कसमा (४६) यन्द (४७) खुरसन्द (४८) लदुयारो (४९) लोवन (५०) महिला (५१) महिला जिला तुर्की (५२) महिन्द (५३) मकरवपुर (५४) महवाकला (५५) मडवाखुर्द (५६) ननपुर (५७) नारङ्गा (५८) नौतन (५९) निजामउद्दौनपुर वोगरा (६०) भोघरा (६१) पक्को (६२) पखिम (पखिम) भोगो (६३) पट्टी (६४) परहारपुर जवदो (६५) परहारपुर भोवाम (६६) परहारपुर राघो (६७) पिण्डारुज (६८) पिट्टी (६९) पूरव (पूर्व) भोगो (७०) रामचन्द (७१) रतो (७२) सहोरा (७३) सलोमा वाद (७४) सलीमपुर महवा (७५) सराय हमीदपुर

(७६) सरमा (७७) शाहजफ़ानपुर (७८) ताजपुर (७९) तथा भातगला (८०) तिरमान (८१) तिरयानी (८२) तिनकचान्द (८३) तिरमत (८४) चौकला १।

मिणाही विद्रोह—१८५७ ई०में म'वाट आया, कि मिणाही विद्रोहमें उन्मत्त बलतमें विद्रोहो मिणाहो स्वटेग तिरहुतकी लोटे आ रहे हैं। यहाके अंगरेज पक्षमें हो रक्षाका उपाय खोज रहे थे। वनो मनुष्य भयभीत हो कर अपने अपने परिवारको अत्यन्त मेहनतीकी व्यवस्था कर रहे थे। खून महीनिके तोमरे मगाएमें ऐसा सुना गया कि वारिमप्रनो नामक एक व्यक्ति निम्नरा जन्म दिवसके वाट-गाछ अंगमें था, पटनेके सुमनमानेके साथ इस विषयमें पत्र प्रेषण कर रहा है। इस पर एक नवयुवक मिविलियम और चार नौलकर साहब उसे पकड़नेके लिये गये और पटने तथा गयाके मध्यवर्ती किमो स्थानके एक मगहर उदभागको, जो इस विषयमें विद्रोह लिख रहा था, पकड़ लाये। वारिमप्रनोको फाँसो हुई। वाट जरोफखाने इन लोगोंके अधिनायक हो कर मुझरे को डाक तथा कलकरका घर लूट लिया। पीछे उन्होंने राजकीय कोषागार पर धावा मारा, यिन्तु पुलिस और नाजिमोंने इन्हें मार भगाया। विद्रोही लोग अन्तोगंजको भाग गये। इसके सिवा यहा और कोई गडबडो नहीं हुई, मगर अनेक तरहको अंगाण अवश्य हुई थीं।

तिरहुतिया ( हि० वि० ) १ तिरहुत मन्वन्धी, जो तिरहुतका हो। ( पु० ) २ वह जो तिरहुतमें रहता हो ( स्त्री० ) ३ तिरहुतकी बीनी।

तिरा ( हि० पु० ) एक प्रकारका पौधा। इसके बीजीसे तेल निकलता है।

तिराटो ( सं० स्त्री० ) निसीतं।

तिरानवे ( हि० वि० ) १ जिसकी संख्या नब्बेसे तीन अधिक हो। ( पु० ) २ वह संख्या जो नब्बे और तीनके योगसे बनो हो।

तिराना ( हि० वि० ) १ पानीके ऊपर ठहराना। २ तैरना। ३ पार करना। ४ निस्तार करना, तारना।

तिरासो ( हि० वि० ) १ जिसकी संख्या अस्सीसे तीन अधिक हो। ( पु० ) २ वह संख्या जो अस्सी और तीनके योगसे बनो हो।

तिराहा ( हि० पु० ) यह जगान बरचि तोन राखे तोन घोर गबे हीं, तिसुहाली ।

तिराही ( हि० खो० ) तिराह नामक जगानकी बनो बहार या तबवार ।

तिरिबिबिच ( स० पु० ) हनमिन् एक पिडुका नाम ।

तिरिटि ( स० पु० ) दसु-पनि ईशकी मिरच या मठ ।

तिरिबीकष्ट ( स० पु० ) पारिजातका पिडु ।

तिरिन्दिर ( स० पु० ) एक राजाका नाम ।

तिरिस ( स० पु० ) टा इमक् । गालिमिट, एक प्रकारका धान ।

तिरिया ( हि० फी० ) फी, घोरत ।

तिरिया ( स० पु० ) टा-इवक् । गालिमिट, एक प्रकारका धान ।

तिरोट ( स० खी० ) तोरयें तिरोगिपरो-नेनेति टा-खोटम् । इन् इमिन् खीम् । इन् ११८४ । १ किरोट, सुकुट । २ खर्च, मोना । ३ लोहदण्ड, लोहडा पिडु ।

तिरोटो ( स० जि० ) तिरोट भन्नाति तिरोट भिनि । मण्डाकाकादन-कुड, जिनका मिर डका हो ।

तिरोपच ( हि० पु० ) दमोदुच ।

तिरोबिरो ( हि० बि० ) शिरोपिरी हो ।

तिरोप्यासि ( स० पु० ) तोन मकोनिमें कोनेबाका एक प्रकारका धान ।

तिरहबिल्लूर—बेहलपट्टु, जिलेके मज्ज बिहलपट्टु, नवरवे ३३ कोन दक्षिण-पूर्वमें स्थित एक ग्राम । यहाँ दो प्राचीन शिवमन्दिर हैं जिनमें बहुतसे प्राचीन शिवलिंग लोहद हैं ।

तिरहजालिवर—तिगिरापको बिलेका एक ग्राम घोर नदी । यह बरहई स्टेमनके पाच मोलको पूरो पर पच स्थित है । इसको प्राचीन हैट, थोक घोर पाण्ड ब राज्य की डीमा समझना चाहिए ।

तिरहबलर—तखोर जिलेके पलमंत मबारशुडीके ८ कोन पूर्वमें स्थित एक छोटा ग्राम । यहाँका शिवमन्दिर पञ्चम प्राचीन है, जिनमें प्राचीन शिलालेख घोर पाच ताभरवीच मिले हैं ।

तिरहबनर—तखोर जिलेके भागपट्टनके ७ कोन दक्षिण पश्चिममें पञ्चकित एक ग्राम । यहाँ एक प्राचीन शिव मन्दिर घोर तवमें एक शिलालेख है ।

तिरहबिल्लूर—एक प्रसिद्ध ग्राम । यह तिलकेलि जिलेके पलमंत तखेकुण्ड नामक स्थानसे २ कोस दक्षिण-पूर्वमें पञ्चकित है । यहाँ एक पञ्चम प्राचीन शिवमन्दिर घोर एक विशु मन्दिर है । यहाँके लखपुराचमें विशु मन्दिरका माहात्म्य बर्णित है । यहाँका शिवलोकपाण्डे खर नामक शिवमन्दिर भी पञ्चम प्राचीन है । यहाँके एक शिलालेखमें लिखा है कि १५१२ ई०में तिराहा-कुषि राका भारत-रजमनि देवसेबाके सिने ग्रामन दिया था । ग्रामके बीचमें एक प्रहरदण्ड पर शिलालेख है ।

तिरहबिल्लूर—एक प्राचीन ग्राम । यह मन्वार जिलेके पलमंत मकोरोके १ कोन दक्षिण-पश्चिममें पञ्चकित है यहाँका शिवमन्दिर पञ्चम प्राचीन है । दोपू सुखतानके समयका यहाँ एक कुम्भ है । दक्षिण पलामा यहाँ कई एक पञ्चरवी नदी हैं ।

तिरहबिल्लूर (तिरहोबिल्लूर) —१ मन्वारके दक्षिण पार्श्वमें जिलेका एक उपविभाग । इसमें तिरहोबिल्लूर घोर बल्लूरको नामके दो तालुक बगते हैं ।

२ एक उपविभागका एक तालुक । यह पचा० ११ इ० से १२ इ० घोर देगा० ७८ इ० से ७९ इ० पूर्वमें पञ्चकित है । बेतफक इन्ड बर्गमोड है । लोकसंख्या प्रायः २०२२०५० है । इसमें दही नामका एक ग्रहर घोर १३० ग्राम लगते हैं । पोनिघर घोर गदीसम नामकी दो बहिरां इन तालुकमें प्रबाहित हैं ।

३ एक तालुकका एक प्रधान ग्रहर । यह पचा० ११ इ० ७० घोर देगा० ६८ इ० पूर्वमें पोत्रेवार नदी दक्षिणतट पर पञ्चकित है । लोकसंख्या प्रायः ८,६१० है । इस ग्रहरमें शोन्खल मद्रदायका एक प्रसिद्ध विशुमन्दिर है । इसको पट्टन प्राचीन तिरहबमलकके शिव मन्दिरके बर्णो पच्छी है । कञ्चन-मण्डपके स्थान पर पञ्चम सुन्दर कारकार्य है घोर बाहरके धागन की डीवारके ऊपर तोन तथा मन्दिरके दरवाजेके ऊपर एक ओपुर है । इस मन्दिरमें बहुतसे शिलालेख हैं । किरहबूरके शिव मन्दिरकी पथिका यज्ञ मन्दिर नया मालूम पड़ता है । इसमें विशु-मूर्ति विद्यमान है । तनके जयमें ग्रह बल्ल, गदा, पण्ड, बण्डमें १०८ मण्ड युक्त ग्रामग्राम मासा, वकाजल पर मन्वारको हैं ।



इनका भार बाये' पेर पर है और दक्षिण पेर ब्रह्मलोक की ओर फैला हुआ है। प्रतिमाके पास ही पञ्चयोगिन सनकादि ऋषि पूजा कर रहे हैं। माघ मासकी शुक्ल-पञ्चमीसे ले कर पूर्णिमा तक विष्णुके वार्षिक उत्सव, दोलीउत्सव, रथोत्सव आदि बहुत समारोहसे मनाये जाते हैं।

यहाँ मित्य वेदपाठ और देवनत्त' किरीका नाचगान हुआ करता है। प्रति शुक्लवारको अभिषेकादिका उत्सव होता है। उस दिन बड़ा बहुत मनुष्योंका समागम होता है। इस मन्दिरके खर्चके लिये गवमेंगट प्रति-वर्ष १८ सौ रुपये देते हैं। मन्दिरके धर्मकर्त्ताकी उक्त रुपये खर्च करनेका अधिकार है। यहाँ विट्टवपुर-गुण्टा-कुल रेलवेका एक स्टेशन है, जो पेन्नर वा पिणाकिनो नदीके बाये' किनारे देवनूर नामक ग्रामके समोप अवस्थित है। स्थलपुराणमें वर्णन है, कि पूर्व समयमें बालग्विल्व मर्हर्षियोंने देवनूर ग्रामके निकट पिणाकिनोके किनारे तपस्या' की थी, लेकिन तपस्या करनेके स्थानका पता नहीं चलता।

इतिहास—पहले यह शहर जिञ्जीके हिन्दू-राजाओंके अधीन था। पीछे विजयनगरके राजाओंके हाथ लगा। प्रायः १६५४ ई०में गोलकुण्डाके सूवेदारने बेलूरके नरसिंहरायकी जीत कर जिञ्जीको मुसलमान राज्यभुक्त कर लिया और आप वहाँके नवाब बनाये गये। वे ही यहाँके शासनकर्त्ता थे। १६७७ ई०में शिवाजीने जिञ्जी अधिकार कर वहाँ एक सुदृढ दुर्ग स्थापन किया। शिवाजी स्वदेशकी लौटते समय वहाँ एक शासनकर्त्ता छोड़ आये थे। किन्तु उनके आनेके बाद ही मुसलमान शासन-कर्त्ताने इस पर अपना अधिकार जमा लिया। जिञ्जीके हिन्दू राजाओंने ही यहाँका मन्दिर स्थापना किया था। निगिडवनम् रेल-स्टेशनसे तिरुवन्नमलयकी ओर २८ मील दूरमें भग्नावशिष्ट जिञ्जीका दुर्ग है।

तिरुकोडलूरके विष्णु-मन्दिरसे आध मीलकी दूरीमें पिणाकिनो नदीके किनारे किल्लुर ग्राम अवस्थित है। यहाँ एक पुरातन शिवमन्दिर विद्यमान है। यह मन्दिर लगभग ५०० वर्षका होगा। मन्दिरका प्रवेश सुचारु रूपसे चलाया जाता है। फाल्गुन मासमें यहां एक

उत्सव मनाया जाना है जिसमें दूर दूरकी लोग आते हैं। तिरुकोडलूर - गज प्राचीन ग्राम, जो मदुरा जिलेके मन्वर्त्ती शिवगण्डाने ८ कोम उत्तरमें अवस्थित है। यन्का शिवमन्दिर बहुत विख्यात है। यहाँके शिलालेख पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि रघुनाथ तिरुमलय सेतुपतिने १६०२ ई०में मन्दिरके खर्चके लिये बहुत जमोन दानको था।

तिरुक्करकावूर-तञ्जोर जिलेके अधीन कुम्भकोणम्से ७ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक अत्यन्त प्राचीन शिवमन्दिर और उसमें एक शिलालेख है।

तिरुक्करकुण्डम् चेन्नलपट्टु जिलेके मन्वर्त्ती चेन्नलपट्टु-शहरसे ४ कोम दक्षिण पूर्वमें स्थित एक मनोहर प्राचीन ग्राम। यहाँ हिन्दूराजाओंके समयका एक बड़ा मण्डप है जो पहाड काट कर प्रस्तुत किया गया है। इसके सिवा यहाँ एक सुन्दर शिल्पकार्ययुक्त प्राचीन मन्दिर है।

तिरुक्काटुप्पल्लो—तञ्जोरसे ६॥ कोस उत्तरमें अवस्थित एक प्रसिद्ध ग्राम। यहां चोलराज-निर्मित एक प्राचीन शिव-मन्दिर है जिसमें खुदा हुआ शिलालेख देखा जाता है। बहुतसे यात्रो यहाँके शिवलिङ्ग देखनेके लिये आते हैं।

तिरुक्कारवाशाळु—तञ्जोरके तिरुवालू रेल स्टेशनसे ४॥ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ शिवमन्दिर है जिसमें प्राचीन कालका शिलालेख पाया जाता है।

तिरुकोलकुडुडु—मदुरा जिलेका एक अत्यन्त प्राचीन ग्राम जो मदुरा शहरसे १५ कोम उत्तरपूर्वमें अवस्थित है, यहांके प्राचीन शिवमन्दिरमें पाण्ड्य राजाओंके समयके खुदे हुए बहुतसे शिलालेख हैं जिनमेंसे दो त्रिभुवन चक्रवर्त्ती सुन्दर पाण्ड्यके ११वें और २०वें वर्ष में तथा एक त्रिभुवन चक्रवर्त्ती वीर पाण्ड्यदेवके राज्यस्थ ३१वें वर्षमें उक्तीर्ण हुए हैं।

तिरुचङ्गगोडू—सलेम जिलेके अन्तर्गत तिरु चोङ्गड तालु-कका सदर। यह अक्षा ११° २२' ४४" उ० और देशा० ७७° ५६' २०" पू० शङ्कगिरि दुर्गसे आठे तोन कोस दूर एक ऊँचे पर्वतके नीचे समतलभूमिसे १२०० फुट ऊँचे पर अवस्थित है। शहरमें तथा गिरिचूडामें कई एक शिवमन्दिर हैं, जिनमेंसे अर्धनारीश्वरके मन्दिरमें १५२२से १५८१ शकमें उक्तीर्ण बहुतसे शिलालेख हैं। कौलास-नाथेश्वरके मन्दिरमें भी कई एक शिलालिपि हैं, जिनमेंसे

एकरी पड़नेसे मानस होता है कि उस मन्दिरका सम्पूर्ण बर्तों गोपुर १५५३ ई०में मरुपुरासे विजयराजे चोङ्गिण्ण नायक द्वारा निर्मित हुआ है। वहाँके एक ताम्रपत्रमें निम्ना है कि शैलेश्वरका मन्दिरको देवसेवासे शिवसे १५३३ ई०में मरुपुराके लक्ष्मणराम रुद्रेय्यारने बहुतसी भूमिगत दान को दी।

इस शहरको अमम ल्हा इकारने पश्चिम है। नया बुनमिका अममय जो यहाँ प्रधान है। यहाँ पश्चिम लक्ष्मण चन्दनबाठने कोठी प्रसृत होती है।

तिरुचेन्द्र—तिरुवेण्णि जिनेने तिरुवारे तालुक्के मञ्जवर्तो एक शहर। यह पचा० ८ ३८ ५० ८० घोर देगा ७८ (० १०० ५० योवैल्लुच्छम्ले ८ कोम पूर्व-दक्षिण कोचने मरुपुरा पर पश्चिम है। यहाँका सुब्रह्मण्यनामोका मन्दिर पश्चिम दिशात है। काञ्चपुराचने यहाँका महाशय्य बर्चित है। प्रतिवर्ष यमिक वातो यहाँ पावा करती है। मन्दिरका शिवशैलेश्वर पश्चिम सुन्दर है जिसमें पनेल प्राचीन दिशानेच पाये जाते हैं। मरुपुरे किनारे मोल्लु सतह सङ्गे हैं उनमें मो प्राचीन जेव सदे हुए हैं।

तिरुवान्तूर—पार्वट जिनेका एक पुष्पनाम। यह तिरु पतिसे १३ कोम दक्षिण-पूर्वमें पश्चिम है। यहाँ लम्पो वरदराजनामो, लक्ष्मणांमो घोर पश्चिम प्रकृति प्राचीन शिवमन्दिर है, जिनेसे अङ्गिके स्वामपुराचने लक्ष्मीका महाशय्य विस्तारपूर्वक बर्चित है। लक्ष्मणांमो घोर पश्चिम मन्दिरमें कई एक विद्यालय हैं।

तिरुवुनरि—मरुपुरा जिनेका एक नाम। यह शेरुने ७३ कोच उत्तरमें शिगिरापडोडे राक्षो पर पश्चिम है। यहाँ जाता है कि यहाँका देवमन्दिर पराक्रम द्वारा जोरवाशसे बनाया गया है। उस मन्दिरमें बहुतसे मिश्रासेव देखे जाते हैं। जिनेसे एक प्राथमिक मिश्रा नेचने पड़नेसे मानस पड़ता है कि १००३ ई०में उस मन्दिरका स स्मार हुआ था।

तिरुचूर्णरि—मरुपुरा जिनेसे मञ्ज रामनादसे ३२ कोम पश्चिम उत्तरमें पश्चिम एक तालुक्का सदर। यहाँ पराक्रम पाश्च निमित्त एक इच्छा मिनाशय है। प्रति वर्ष बहुतसे यात्री शिवशिवको देखने पाते हैं।

तिरुचिररि—तन्धोरसे मञ्जवर्तो कुम्भकोचमसे ३ कोच दक्षिण पूर्वमें पश्चिम एक प्राचीन धाम। यहाँ एक प्राचीन विष्णु मन्दिर है जिसमें बहुतसे मिश्रासेव हैं। तिरुतनि (तिरुतनि)—१ मन्नाचके पाळट जिनेको एक अमो दारो तहसील। जेवण्ण ७०२ वर्ग मोल घोर मोल स ल्हा प्राया १०१००३ है। इसमें इवो नामका एक शहर घोर ३२० धाम लगते हैं।

२ लक्ष अमो दारो तहसीलका एक प्राचीन शहर। यह पचा० १३ ११ ८० घोर देगा० ७८ १० ५० मोलि इम्वे १३ मोचको दूरो पर पश्चिम है। लोचम ल्हा लक्षमय ३५८० है। 'तिरुतनि' इस नामको उत्पत्तिसे विषयमें स्थानीय प्रवाद ३८ तरह प्रकृत है—

प्राचीन कालमें सुब्रह्मण्य नामोने तारकापुर, मिच, चलापुर, सुतपापुर प्रकृति पसुरोको मार कर इस स्थानमें आ विद्याम किया था। "तिरुतचिमी अक्षुका पथे सुविद्याम चं, इसीसे यह नाम उत्पन्न हुआ है और उसोका पण्यम तिरुतनि है। इन्द्र कपट-पहित जो अमराचनेमें रहने लगे और सुब्रह्मण्य नामोके साथसे पसुर जो अमोमें अपने लम्हा देवसेनासे लखे पण्य किया। सुब्रह्मण्य इनसे विवाह कर यहाँ रहने लगे। इससे पोछे इमोने लकोका नामको एक वृक्षी रूपको रामकोका पाणिपण्य किया। इस विषयमें दो प्रवाद सुने जाते हैं। १ था प्रवाद—लकोप्पा जिनेो एक ब्राह्मणसे घोरम घोर पाप्माल-लम्हासे गर्भसे उत्पन्न हुई थी। लकोका माताने अपने कामीके निकट गङ्ग प्राञ्णको जो कि मयोकात दिवलो अ मर्भमें जोड़ कर वह पापका मरुपुरक करेगी। सुतर्ग लकोके लक्ष होने के साथ जो उसको माता कसे अ मर्भमें जोड़ पाप पति-को अनुमानो जो गई। जिसे पश्य ज्ञातिने उसका भरण पोषण किया। सुतर्ग होने पर वह ( बहुत रूपको होनेसे ) सब जगत् प्रसिद्ध हो गई। लकी पहाड़ पर बैठ कर अपने पापक पिताके शपथको रक्षा करती थी। एक दिन सुब्रह्मण्य नामो उसे देख मोहित हो गये। वाद उससे विवाह करनेसे अङ्गिके तिरुतनिसे एक घर न खोद कर लकीके हाथ प्रति दिन लकीके निजट पाने आने लगे, पोछे लकी मरती कर तिरु

तनिमें ली आये। उत्तर आकांठके भन्तर्गत चित्तूर तालुकके मेलपाटि ग्राममें बल्लोम्माका पालक पिता रहता था। इस ग्रामसे १ मील पश्चिममें जहां पहले दोनोंमें मुलाकात हुई, पीछे मिलन और विवाह हुआ। वहाँ अब भी एक मन्दिरमें सुब्रह्मण्यस्वामी और बल्लोम्माकी मूर्ति विराजित है। बल्लोम्माकी माता किमो अस्पृश्य जातिकी कन्या थी। कोई कोई कहते हैं, कि बल्लोम्माकी माता सुप्रसिद्ध तामिलकवि तिरुवल्लुवरकी बहिनके सिवा और कोई नहीं है।

२ग प्रवाद—किसी समय लक्ष्मी और नारायणने हरिण और हरिणीके रूपमें कौतुक क्रोडा को था। हरिणी रूपकी लक्ष्मी इस समय एक कन्या प्रसव कर उसे उसी स्थान पर छोड़ स्वस्थानकी चली गई। पीछे सपत्नीका नगरोकी कुरव नामकी राजने बल्लोमलय नामक पहाड़ पर उमका पालनपोषण किया। बल्लोमलयकी निकट पाये जानेसे लक्ष्मीका नाम बल्लोम्मा रखा गया। किसी समय सुब्रह्मण्य स्वामीने शिकार करते समय उसे देखा। पीछे वे उसकी रूप पर मोहित हो कर राजाके निकट इस कन्याके कर प्रार्थी हुए। इस पर राजाने बल्लोम्माको उसे अर्पण किया। सुब्रह्मण्य उससे विवाह कर अपने देशको चले गये।

तिरुतनिका मन्दिर बहुत पुराना है। ग्यारहवीं शताब्दीको चोल राजाओंके समयमें इसका मूलपत्तन और विजयनगरके राजाओं द्वारा इसका संस्कार हुआ। यह मन्दिर एक ऊँचे पहाड़ पर अवस्थित है। पहाड़के ऊपर जानेके लिये दो पथ हैं और दोनोंमें सुन्दर भौटियाँ बनी हुई हैं। यात्रियोंके रहनेके लिये, पथके बगलमें बहुत सी कोठरियाँ हैं। मन्दिरके पास ही कुमार, ब्रह्मा, अगस्त्य, इन्द्र, शिव, राम, विष्णु, नारद और सप्तर्षि नामके छोटे बड़े नौ तीर्थ हैं। प्रत्येक माहात्माका विषयक स्तन्य इतिहास है। मन्दिरके सामने जो पुष्करिणी है, उसे लोग कौलासतोर्थ कहते हैं। सुब्रह्मण्य स्वामीको पत्थरमय मूर्ति चतुर्भुज है और उसकी लम्बाई मनुष्य-सी है। कहा जाता है, कि ये शैशवकालमें क्षत्तिका द्वारा बंधे गये थे, इसीसे प्रति वर्ष कार्तिक मासके क्षत्तिका नचत्रकी इस मन्दिरमें

विशेष समारोहकी साथ उत्सव होता है, जिसमें दूर दूर के देशोंकी यात्री आते हैं। टेवसेना और बल्लो माताका मन्दिर घृयकरूपसे निर्दिष्ट है और पूजादि भी अलग अलग होते हैं। तिरुतनि चार अंशोंमें विभक्त है। १ ला स्थान तिरुतनि, यह पर्वतकी ऊपर और टेवालयके बगलमें है। यहाँ अधिकांश वैदिक अर्चक वाम करते हैं। २रा, मठ ग्राम, यहाँ ३० मढ़े १० ऊँ—और २३ मण्डप है, इसीसे इस स्थानकी मठम कहते हैं। ३रा, नल्लोनगुण्टा, नल्लोन नामकी किमो राजाने ८० वर्ष पहले एक बड़ी पुष्करिणी खुदवाकर पहाड़के चारों ओर ब्राह्मणोंके लिए एक पक्कीका घर बनवा दिया है, तभीसे राजाके नाम पर उक्त ग्रामका नाम पड़ा है। ४ था, अमृतपुर—यहाँ ऐसा प्रवाद है, कि यहाँके वर्तमान जमींदारकी पितामह विद्वत् पेरुमल राजाने किसी समय अत्यन्त कठिन रोगाक्रान्त हो इस स्थानपर दूध और मद्य पीकर आरोग्य लाभ की थी, तभीसे इस स्थानका नाम अमृतपुर हुआ है। देवालयके दक्षिण १ मीलकी दूरीमें एडुवन नामक एक जङ्गलमें ७ कुण्ड है। इनकी समीप समस्तुमारियोंका एक मन्दिर है। जो अभी भग्नावस्था में पड़ा है। कारवेट नगरके जमीन्दारा मन्दिरका खर्च देते हैं।

तिरुडतुरैपुण्डि—तञ्जौर जिल्लाके तिरुडतुरैपुण्डि तालुकका सदर। यह तञ्जौरसे १८ कोस पूर्व-दक्षिणमें अवस्थित है। यहाँ अत्यन्त प्राचीन शिवमन्दिर है जिसमें उल्लोर्ण शिलालेख है।

तिरुत्तल—तिरुवेलो जिल्लाके ग्रातुर तालुकके मध्यस्थित एक प्राचीन ग्राम। यहाँके विश्वामन्दिरकी बाहरो दोवारमें प्राचीन शिलालेख खुदे हुए हैं।

तिरुत्तरकोशमडू—मदुरा जिल्लाके रामनादसे ४ कोस दक्षिण-पश्चिम अवस्थित एक प्राचीन ग्राम। प्रवाद है कि यहाँ पाण्ड्य राजाओंको प्राचीन राजधानी थी। यहाँ का भास्कर और शिल्पकार्ययुक्त शिवमन्दिर देखने योग्य है। मन्दिरमें बहुतसे शिलालेख खुदे हुए हैं जिनमें सबसे प्राचीन लिपि १३०५ ई०में वीर पाण्ड्य देवकी राजत्वकालमें उल्लोर्ण हुई है।

तिरुनरियूर—तञ्जौर जिल्लाके भायावरमसे ३ कोस दक्षिण

पविममें पवस्वित एक प्राचीन ग्राम। यहाँ एक पत्तन प्राचीन शिवमन्दिर है जिसमें बहुतसे शिवासेक दिखनेमें पाते हैं।

तिरुनरंङ्कलम्—दक्षिण पार्श्वमें पत्तनगत तिरुचोदरुरसे ३३ मील दक्षिण-पूर्वमें पवस्वित एक ग्राम। यहाँ पत्तन प्राचीन शिवमन्दिर और जेनमन्दिर है। शिवमन्दिरमें बहुतसे बड़े बड़े शिवासेक हैं। यहाँके श्वन्मुपायमें जैन मन्दिरका साक्षात्क वर्णित है।

तिरुनकारि—मन्वार जिलेके पोगानो तालुकके पत्तनगत एक प्राचीन ग्राम। यह कुम्पियुम् चोर तोडट एकसे नृपतिके मोघोमोच पवस्वित है। नौबसे पास ही कृषि क्षेत्रके ऊपर एक बाँध है। पक्षी प्रति बारह वर्षके पत्तनमें राक्षामियेक कपकपमें यहाँ नरबलि होती थी। कम मग १०० वर्ष हुए, यह प्रया मदाके शिवे नद को कई है। इससे पास ही एक पहाड़को कन्दरा है इसो जगह ऊपर ऊपर राक्षा बलि देखा जाते थे। शिवमें रामचन्द्र कोका एक मन्दिर है।

तिरुनामनरुर—दक्षिण पार्श्वमें पत्तनगत तिरुचोदरुर यहरके प्रायः १० मील दक्षिण-पूर्वमें पवस्वित एक प्राचीन ग्राम। यहाँ एक शिवमन्दिर है, जिसमें बहुतसे प्राचीन शिवासेक हैं। १११३ ई०के पक्षी मो यह मन्दिर विधमान था था कि इन ई०के लम्बे शिवासेकमें सुरोहितोय नाम देवदेवाके प्रबन्धकी कथा वर्णित है। इससे सिवा विद्वत स वन्दरमें लम्बे मन्त्र मन्त्रकी नरसि हदेव और चोखराम जोगिरि-नन्दर कोषणको कई एक पत्तनग्राम-सिपिया हैं।

तिरुनगीम्बर—तञ्जौर जिलेके कुम्पकोपम् तालुकके पत्तनगत एक ग्राम। यहाँको जनसख्या प्रायः सा हजार है। जिलेमें यहाँ मन्त्र मुनेका प्रधान स्थान है। यहाँ प्राचीन शिवमन्दिर भी है।

तिरुनिरइरुर—एक प्राचीन ग्राम। यह तञ्जौर जिलेके कुम्पकोपम्के ठाँई मील दक्षिण-पूर्वमें पवस्वित है। यहाँ शिवमन्दिर है जिसमें प्राचीन शिवासेक दिखते हैं।

तिरुपति (त्रिपति)—कन्नड-पार्श्व (पक्षकडू) जिलेका एक प्रधान शिवासेक और चन्द्रगिरि तालुकका प्रधान ग्राम। यहाँ पार्श्वक मयगन ब्राह्मण-स्थानका एक स्थान है जो

ग्रामसे १ मील दूरी पर है। यहाँ पहाड़के ऊपर श्रीनिवास-देवका मन्दिर प्रतिष्ठित है। उक्त पहाड़ तिरुमलय नामसे प्रसिद्ध है। यह निम्न तिखपतिये ३ मील पूर्वमें है। तिरुमलय पर चढ़नेके लिए चार प्रधान मार्ग हैं। पहाड़ा मार्ग निम्न तिखपतिये उत्तरकी तरफ, कुमरा चन्द्रगिरिकी धोरसे पूर्वोत्तर दिशामें, तोमरा नागपट्टनसे पश्चिमकी तरफ और चौका मार्ग वास्तवमें पूर्वकी तरफ है। इनसे सिवा और भी कई-एक छोटे छोटे मार्ग हैं। इस पर चढ़नेकी सोझी निम्न तिखपतिये १ मील दूर होगी। इस पहाड़को बात प्रधान शिखर है। प्रकृत शिखर मिन्न मिन्न नामसे प्रसिद्ध हैं। इनमेंसे शिवासेक नामकी शिखर पर श्रीनिवासदेवका मन्दिर है; इसलिये जोई जोई इसे 'शिवासेकम्' भी कहते हैं। इस पर्वतका कुमरा नाम 'कूडट' है। स्वन्मुपायके श्वन्मुपाय-स्थानमें इसका शिखरच इस प्रकार लिखा है—

शिवी समय विष्णु पत्तनपुरमें रमाके साथ श्रौंका कर रहे थे। शिवगत सुरदार पर द्वारघाके लिए निम्नक थे। इनमेंसे वाहुने था कर पत्तनपुरमें प्रेष्य करनेकी चेष्टा की। शिवनामने उन्हें मोतर जानेके लिए निषेध किया, किन्तु वाहु उनको बातकी कुछ भी परवाह न कर करन मोतर जानेको शोभिय करनी ली। दोन्हींमें कुछ भगवां होमे गया। कलक-यन्त्र सुन कर विष्णु द्वार पर पाये और कहने लगे—'तुम शोय विवाद क्यों कर रहे हो?' विष्णुने विवादका कारण जान कर शेषसे कहा—'य सारमें वाहु को रंभके बन्धवान् है?' शिवने कहा—'भगवान्! दोन्हींमें कौन बन्धवान् है, पाप इसका प्रकृत कर कोत्रिये। वाहु नरतटमें श्वन्मुपाय है, मैं लये हीरे रत्न का। वाहु बन्दि सुम्ने स्थानपत्तन कर सके तो समझूँगा यह कबके बन्धवान् है?' शिवनामने श्वन्मुपाय गिरिकी शिष्ट करने पर वाहुने उन्हें प्रकृतिये लड़ा कर पहाड़ द्वार मोहन दूर, दक्षिणसेतुमें ३२ मील उत्तरमें पूर्वसेतुमें पश्चिममायकी शिखरसेतुको नदीके पारमायमे कि न दिया। शिवका शरीर बिदेई को गया। शेषमेंको शपमानित समझ लम्बेसे शिवमाय को गिरि नर पर भयवान् विष्णुका ध्यान करनी ली। विष्णुने प्रसन्न हो कर उनसे पर भाँयनेके लिए कहा। शिवने यह

वर मांगा कि "आप जैसे मेरे कुण्डल पर वैकुण्ठमें सर्वदा अवस्थित हैं, उची तरह व्यङ्ग्यस्थित शैलरूप मेरे शरीर पर सदा वास करें।" भगवान् 'तथास्तु' कह कर तभीसे शङ्खचक्र हाथमें लिए श्रीपाचल पर वास करते हैं। वे व्यङ्ग्यगिरिके ऊपर हैं, इसलिए व्यङ्ग्यदेश वा व्यङ्ग्यपति कहलाते हैं। वराहपुराणमें लिखा है त्रेतायुगमें योरामचन्द्रने लड़ा जाते समय अपने दल-सहित स्वामितोर्थमें स्नान किया था। उक्त पुराणके ४१वें अध्यायमें यह भी लिखा है कि पाण्डवोंने वनवासके समय इन पर्वत पर एक वर्ष तक वास किया था और जिस तीर्थतट पर वे थे, उसका नाम है पाण्डवतीर्थ। स्कन्दपुराणके व्यङ्ग्यटाचलमाहात्म्यमें लिखा है—रामानुजाचार्यने व्यङ्ग्यगिर पर जा कर आकाशगङ्गाके किनारे विष्णुके पञ्चानरमन्त्रका ध्यान किया था और विष्णुने तृप्त हो कर उन्हें दर्शन दिये थे। रामानुजने कालिके ४११८ अष्टमें जन्म लिया था; इस हिसाबसे ८०० वर्षसे पहले भी यह स्थान महातीर्थके नामसे प्रसिद्ध था।

पर्वतश्रेणिके भिन्न भिन्न स्थानमें भरना और उसके नीचे बड़े बड़े जलाशय हैं, जो पुण्यतीर्थके नामसे प्रसिद्ध हैं। इनमें सात तीर्थ प्रधान हैं,—१म स्वामितीर्थ, २य विद्यदगङ्गा, ३य पापविनाशिनी, ४य पाण्डवतीर्थ, ५म तुम्बोरकोण, ६य कुमारवारिका और ७म गोगर्भ। स्वामितीर्थ १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा है, इसके चारों तरफ श्रीनाइट-पत्थरकी सौदियां बनी हुई हैं। यह तीर्थ देवालयके पास ही है। त्राविगण इसमें स्नान किया करते हैं। पापविनाशिनोतीर्थ देवालयसे ३ मील दूरी पर एक सामान्य जलप्रपातके नीचे अवस्थित है। इस जल प्रपातके नीचे खड़े हो कर स्नान करनेसे ब्रह्महत्या आदि महापातक विनष्ट होते हैं। यहां ऐसी किम्बदन्ती है कि, पापके तारतम्यके हेतु जलका वर्ष तक मलिन हो जाता है। पचाहके पूर्व को और जा जलप्रपात है, वही तुम्बुरकीण (तुम्बुरकीण) कहलाता है। स्थलपुराणके मतसे—पहले ऋषिगण यहीं वास करते थे। इस समय यह स्थान जङ्गलसे भरा हुआ है। यहां कोई मादत करनो ही, तो कपिलतोषमें स्नान करके स्वर्ण वा रौप्यनिर्मित व्यङ्ग्यदेशका कौटा गलेमें

धारण करना चाहिए। ऐसा प्रवाद है, कि पोङ्गे स्वामितोर्थमें स्नान करनेसे वह कौटा उसके कपोल-देशसे अपने आप खुल जाता है। कपिलतोर्थके पोङ्गे जो वृहत् गोपुर है, वह आलपिलि नामसे प्रसिद्ध है। इस गोपुरके द्वार तक सब श्रेणिके मनुष्य जा सकते हैं; इसके आगे हिन्दुश्री-शिवा अन्य किमो भो जातिकी गति नहीं है। इस जगहसे ऊपर चढ़नेके लिए पको सोढ़ी शुरू होती है। यह सोढी करीब एक मील लम्बी और समतल भूमिसे १ हजार फुट ऊंचो होगी। बीच बीचमें विश्रामस्थान भी हैं। सोढीके सर्वोच्च स्थानमें एक वृहत् गोपुर है जो "गालि-गोपुर"के नामसे मशहूर है। इसके पोङ्गे वैकुण्ठ नामके मन्दिरमें राम कृष्णको मूर्ति विराजमान है। इस मन्दिरके ईशान कोणमें वैकुण्ठ-गुहा नामक एक गुफा है। योरामचन्द्रके श्रीगैल आने पर उनके अनुचरगण इसी गुफामें ठहरे थे। इस स्थानसे व्यङ्ग्यदेशके मन्दिरकी जानिकी पको सहक है।

तिरुमलय-गिरिस्थित नगर बहुत मामूली है। यह स्वामितोर्थके व्यङ्ग्यटस्वामिके मन्दिरके चारों तरफ अवस्थित है। यहाँ हिन्दुश्रीके शिवा अन्य कोई भो जाति वास नहीं कर सकते। यहाँको जनसंख्या १६ हजारसे ज्यादा न होगी। यात्रियों-टहरनेके लिए यहाँ बहुत से ऊत हैं जिनको महिसुर और कोचोनके राजा तथा कालहस्ती और व्यङ्ग्यगिरिके जमींदारोंने बनवा दिया है। मन्दिरके पार्श्वमें सहस्रस्तम्भ मण्डप हैं, इसका शिल्प-नैपुण्य उत्तम है। यह श्रीनाइट पत्थरके स्तम्भ पर विस्तृत है। रास्तेको तरफ प्रत्येक स्तम्भ पर मूर्ति खुदो हुई है। इस मण्डपका एक अंग गिर पड़ा है। एक लाख रुपयेसे इसका जीर्ण संस्कार हुआ है। इसके एक बगल एक अपूर्व प्रस्तररथ पड़ा हुआ है। चन्द्रचोल नामक किमो राजाने इन प्रस्तर-रथको बनवाया था। यहाँके स्वामितोर्थमें स्नान करना चाहिये। तोनी देवालय भिन्न भिन्न प्राचोरोंसे वेष्टित हैं। बाहरकी दीवार काले श्रीनाइट पत्थरकी बनी है जिसके एक पार्श्वमें एक वृहत् अनुशासनलिपि खुदो हुई है। इसके द्वार पर एक साधारण गोपुर है। यह प्राचोर १२७ गज लम्बी और ८७

यंत्र लोको है। मन्दिरमें धनुर्मुख विष्णुमूर्ति पक्की है जिनके दाहिने हाथमें चक्र, दूसरा हाथ भूमिको तरफ धोर बादे हाथमें शङ्ख धूम्रमें पद्य है। इस मूर्तिके साथ शक्ति न होनेके कारण नौम धनुमान करती है कि पड़ती पडाँ शिवक शिवमूर्ति हो यो, रामानुजके प्रययने उसी मूर्तिमें शङ्ख धोर चक्रसे घोमित दो भीनेके हाथ लगा लिये गये हैं। पचास है, कि कुम्भोत्सुधु खोनेके पुत्र तोङ्गमन चक्रवर्तने इस पवित्र मन्दिरको प्रतिष्ठा की थी।

इस मन्दिरमें देवदर्यान करने पर कुछ दर्याने सेने पड़ते है। देवदा दुष्काल देवनेसे १७) रुपये धोर धर्षु रामोकेने देवदर्यान करनेसे १) ५० दिनां पड़ता है। दिनके १२ बजेसे २ बजे तक पूजा पादि होती है। साधारणके दर्यानेके लिए पाठ प्रण्ये तक धार लुना रहता है। एककाङ्क प्रण्ये करने प धेकोने शापनापीन हुआ है तबसे १७७० ई तक यह मन्दिर प दीकीको देव-रूपमें था। पोखे इसका मार मङ्गलके उपर भोपा गया। धव भी मङ्गल पर ही इसका मार है। इस देवान्यको कार्पिक पाय करीब २१ हजार रुपये धोर श्वर ११ हजार रुपये है। परमान्य देवान्यकी मांति हमने देवाङ्गनाय नहीं है। पड़ने यहाँ कोई से कुम्हटा प्रयेय न कर मङ्गती यो, विन्दु धव यह बात नहीं रको उनका बहुत कुछ व्यतिक्रम हो चुका है। जिन महात्माधोने इस मन्दिरकी उन्नति की थी, उनका नाम धव भी मन्मपुत्रके साथ उच्चारित होता है। देवा न्यको उल्लिखितमें उधका इस प्रकार विवरण मिलता है—“परीक्षितने श्राद्धको दूसरो प्राचोर धोर उनसे पुत्र जननेउपने बाहरको प्राचोर बनबाई यो। पोखे विक्रम नामके किसी दूसरे राजाने इस मन्दिरका संस्कार कराया था। कोई कोई कहते हैं, कि तन्ममन चक्रवर्ती महाराजने वत्समान भूमनन्दिर बनवाया था। ब्रह्मपुरा षोप ध्याहटेम माहात्मने स्पष्ट लिखा है कि—“किमो समय नारद प्रथिवी पर्यटन करके भगवान् वैकुण्ठनाथ के दर्याने करने गये थे, उन्होंने यह कहा था कि ‘गङ्गामे एक हजार भीम दक्षिण धोर पूर्वनामने २१ भीम दक्षिणमें एक मनोहर पर्यत है।’ विष्णुने शवके

उत्तरमें कहा—“किमिषुपने खोम रात्रपुत्र चक्रवर्ती द्वारा प्रतिष्ठित हो करमें कहा रह्य ना।” यहाँका प्रधान उद्यम पाश्चिम मार्गमें १० दिन तक होता है। उद्यमके पाँचवें दिन नक्षत्रोत्थन धोर दशवें दिन नारायणवर्तने पर्या-वर्तीके साथ वास्तविक लक्ष्माचोत्थन हुआ करता है।

ध्याहटेपरशामोके मन्दिरके बाहर लामो पुष्करिणी के बिनारे एक सामान्य मन्दिर है, जिनमें बराहलामोकी मूर्ति है। किशोके मतके, कोई मन्मबराह विचारके वरते हुए उच्च स्थानमें पावे थे इसलिये वे उन मङ्गके पवित्रता देवता हैं। लामो यहाँ बराहलामो प्रतिष्ठित हैं। यात्रिणय ध्याहटेम लामोने पड़ने हमकी पूजा करती है। ध्याहटेम लामोके मन्दिरके समोप गीमर्तोक है धोर उनके पास जो सेम वसिष्ठुकि नामक एक प्रस्तर मय प्दाथ है। इस प्दाथके पास कोई भी मिखा यजन करनेका साधन नहीं करना। जिन विपयोंको सत्वताया निर्यय करना विचारकोंको शक्ति बाहर है, वे विषय भी यहाँ उलभ्य जाते हैं। बादो धोर प्रतिबादो योगमर्-तोक में श्वाणपूर्वक मोमो योती पड़ने प्दाथके पाथ ला कर जो कुछ कहते हैं, वह सब समझा जाता है। इस प्रकार शयक करनेके लिए बादो धोर प्रतिवादोको शात मात रुपये वमा करनी पड़ते है। उसको बाद निचडो पूर्वोः पथ धोर दक्षिणकोका मोम होता है औरामियों को उस मोयका प्रसाद मिलता है।

तिब्बतपुर—मन्मत्र प्रदेशके ससेम त्रिसेका एक तासुध धोर उम तासुलका प्रधान नगर। यह महर पचा० २० २८ इ ० धोर देमा० ७८ १६ ३० पूर्वमें अव स्थित है। कोकस ज्या नगमग १६७८८ है, जिनमें पवित्राथ हिन्दू धोर कुछ सुमनमान हैं। यहाँ समस्त राजकोय कापालय है। त्रिसेमें इस स्थानने चारी धार राष्ट्रे गये हैं। जिस कारण यहाँ धनात्रका पामदनी पवित्र होता है। यहाँ चमडका स्ववधाय भी होता है। इस महरमें एक बहुत बड़ा तालाब है जिसके सुचारुसेका धोर दूसरा तालाब जिन्नेभरमें नहीं होला जाता है।

निष्परजराहु—एक माकोन धाम। यह दक्षिण पाथे ड किशे के चत्तनत पाथे ड महरसे इस कोय पूर्वमें पय

स्थित है। यहाँके प्राचीन मन्दिरमें कई एक शिलालेख हैं।

**तिरुपुडैमरुदूर**—एक ग्राम। यह तिरुवेलि जिलेके मध्य अम्वासमुद्रसे डेढ़ कोस उत्तर-पूर्वमें, जहाँ घटना नदी ताम्रपर्णीके साथ मिली है उसी सङ्गमस्थान पर अवस्थित है। यहाँ अनेक पवित्र देवमन्दिर हैं। प्रधान मन्दिरमें १५ वीसे १७ वीं शताब्दीके मध्य प्रदत्त कोलम्बाद-अङ्कित कई एक शिलालेख और एक ताम्रशासन देखनेमें आता हैं।

**तिरुपुर**—कोयम्बतूर जिलेके अन्तर्गत एक शहर और रेल स्टेशन। यह अक्षा० ११° ३७' ३०" और देशा० ७७° ४०' ३०" पूर्वमें अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या प्रायः ४००० है।

**तिरुपोलूर**—चेन्नलपट्ट जिलेके अन्तर्गत कोभलङ्गु शहर से ३½ कोस दक्षिण-पश्चिम और चेन्नलपट्टु शहरसे ७ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित एक स्थान। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है। ४० वर्ष पहले प्रधान अष्टौष्ट कलक्टरकी इस मन्दिरके पास ही कई एक प्राचीन ताम्रशासन मिले थे।

**तिरुप्पुतिरुत्ति-तञ्जोर** जिलेमें तिरुवाडीसे १ कोस पश्चिममें अवस्थित एक स्थान। यहाँ शिल्पकार्य खचित एक प्राचीन शिवमन्दिर है, जिसमें बहुतसे शिलालेख हैं।

**तिरुप्पट्टूर**—त्रिशिरापल्ली जिलेमें सुसीरी तालुकका एक ग्राम। यह सुसीरी शहरसे १२ कोस पूर्वमें अवस्थित है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है और उसमें कई एक शिलालेख हैं।

**तिरुप्पत्तूर**—मदुरा जिलेके मध्य तिरुमङ्गलम तालुकका एक ग्राम। यह तिरुमङ्गलम शहरसे १ कोस उत्तर-पश्चिममें पड़ता है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर और उसमें बहुतसे शिलालेख हैं।

**तिरुप्पदिकुन्ऱम्**—चेन्नलपट्टु जिलेके काञ्चीपुर तालुकका एक स्थान। यह काञ्चीपुरसे १½ कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है, यहाँ एक प्राचीन, अत्यन्त सुन्दर शिल्पकार्य विशिष्ट शिवमन्दिर है जिसमें बहुतसे शिलालेख हैं। एक शिलालेख कृष्णदेव महाराजके राजत्वकालका (१५१८का) खुदा हुआ है। उसमें मन्दिरके लिये भूमि दानका उल्लेख है।

**तिरुप्पट्टिरिनियुर**—टञ्जिण अर्काट जिलेमें कूटालूर शहरसे ४ मील उत्तरपश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। इसके पास जो रेल-स्टेशन है। यहाँ एक उत्तम शिल्पकार्य विशिष्ट प्राचीन मन्दिर है, जिसमें बहतसे शिलालेख हैं।

**तिरुप्पनन्दान**—तञ्जोर जिलेमें कुम्भकोणम् शहरसे ११ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक सम्पत्तिगालो शूद्र द्वारा प्रतिष्ठित मन्दिर है। उस मन्दिरमें ताम्रिन भाषामें लिखे हुए बहुतसे प्राचीन ग्रन्थ पाये जाते हैं। इसके सिवा मन्दिरमें एक तेलगू भाषाका और तीन ताम्रिन भाषाके ताम्रशासन हैं। तुरङ्गुव नामक स्थान इस मन्दिरके लिये दान किया गया है जिसका दानपत्र तेलगू भाषामें है और वह १७४४ ई०में धनगिरि नामक स्थानमें वेङ्कटपतिरायके राजत्वकालमें खोदा गया है। उक्त ताम्रिन भाषाके शासनमेंसे एक १७५३ ई०में रामेश्वरके पास उक्त मठको कुछ भूमिदान करनेके लिए रामनादके सेतुपति सर्दार किरण्णगर्भ-याचिकुमार सुत्तु विजय रघुनाथ सेतुपतिके द्वारा खुदाया गया है।

**तिरुप्परक्कम्**—मलवार जिलेमें वल्लवनाद तालुकका एक ग्राम। यह अङ्गदपुरसे ५ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। यहाँ ३८ डोलमेन (प्राचीन कालमें प्रमथ्य जातियोंमें मृत मनुष्योंके स्मृतिचिह्नके लिये चार पत्थरोंके ऊपर एक बड़ा चौड़ा पत्थर रख कर आसनवत् स्थान बनता था, इसीको डोलमेन कहते हैं)।

**तिरुप्पलङ्गुडि**—मदुरा जिलेकी रामनाद जमींदारोका एक स्थान, जो रामनाद शहरसे १८ मील उत्तर-पूर्वमें ससुद्रके किनारे पर है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है, जिसमें एक ताम्रशासन और मन्दिरके सामने बहुतसे शिलालेख हैं।

**तिरुप्पलात्तूर**—त्रिशिरापल्ली जिलेका एक स्थान जो त्रिशिरापल्ली शहरसे ३½ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है और उसमें एक शिलालेख है।

**तिरुप्पाक्कुडी**—चेन्नलपट्टु जिलेके काञ्चीपुर तालुकका एक स्थान। यह काञ्चीपुर शहरसे ३½ कोस पश्चिममें

एता है। यहाँ एक प्राचीन विश्वाम्बुदेव मन्दिर है, जिसमें  
विभिन्न दक्षिणीय पुरे हुए शिलालेख हैं।

तद्व्याख्यान—उत्तर पार्श्व में जिनके धर्मार्थ तथा राजपट  
में ४ कोस दक्षिण-पूर्व में अवस्थित एक पुस्तकालय है।  
यहाँका विश्वाम्बुदेव मन्दिर विख्यात है। स्थानीय स्थानपुराणमें  
विश्वाम्बुदेव मन्दिर और उक्त तीर्थका माहात्म्य वर्णित है।  
यहाँ बहुतसे प्राचीन शिलालेख हैं। जिनमें मत्स्य पर्वण  
में विश्वाम्बुदेव मन्दिर का, फिर यहाँ एक विश्वाम्बुदेव मन्दिरके रूपमें  
परिचित हो गया है।

तद्व्याख्यान (विद्यापुर)—वेङ्कटपुर, जिनकेका एक शहर।  
यह विश्वाम्बुदेव १ कोस पश्चिम पश्चात् ११ ८ २० ८  
कोर देगा ०८ ११ पूर्व में अवस्थित है। लोकमय्या  
प्रायः काठे तोन शहर है।

यह स्थान एक पवित्र तीर्थ ममत्ता जाता है। विश्व  
राजाधीन समयमें निर्मित यहाँ एक प्राचीन विश्वाम्बुदेव  
मन्दिर है। यहाँके स्थानपुराणमें इस स्थानका तथा विश्वाम्बुदेव  
माहात्म्यका विचारपूर्वक वर्णन है। मन्दिरमें अनेक  
अनेक शौन-राजाधीन समयके शिलालेख हैं। यहाँके  
स्थानपुराणमें लिखा है, कि महााराज हरिबालन शुरम्ब-  
रियोंको जीता था।

यहाँ पवित्रारिधीके दोराभारसे रचा लामके जिने  
बहुतसे मनुष्य इन दुर्गमें पायय लेते थे। १०८२ ई०में  
नर पावर कूटने इस दुर्ग पर पारक्रमण किया। चम्पली  
के समयमें यहाँ विभिन्न अनेके मैनिक भास करत  
थे। बाद कभी कभी गोरोंकी फौज भी यहाँ आ कर ठह  
रती थी।

विश्वाम्बुदेव—यह स्थान लखौर जिनमें, कुम्भकोणमें  
२३ कोस उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यहाँ एक पति  
प्राचीन विश्वाम्बुदेव मन्दिर है, जिसमें अनेक तम बहुतसे शिला  
लेख हैं।

विश्वाम्बुदेव—लखौर जिनके नामपहन शहरसे २ कोस  
दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित एक स्थान। यहाँ एक प्राचीन  
विश्वाम्बुदेव मन्दिर है जिसमें बहुतसे शिलालेख देखनेमें  
आते हैं।

विश्वाम्बुदेव—कृष्णा जिनमें विजुकोण शहरसे ३ कोस  
उत्तरमें अवस्थित एक स्थान। यहाँ एक स्थान आतिथीके  
अन-धर्मादि निर्देशक बहुतसे प्रस्तावना हैं।

विश्वाम्बुदेव—इसका म स्तन नाम दर्भ शयनम् है। यह  
स्थान मनुष्य जिनके नामनाट जमींदारोंके मन्त्र रामनाट  
शहरसे ३ कोस दक्षिणमें पड़ता है। स्थानपुराण और  
सेतुमाहात्म्यमें इस स्थानका एक पवित्र तीर्थके नाम  
वर्णन किया है। रामेश्वरके यात्रिभय प्रायः इस स्थानकी  
देखने आते और यहाँके विश्वाम्बुदेव दर्भ शयन मूर्त्तिकी  
पूजादि करते हैं। सेतुमाहात्म्यमें लिखा है, कि रामचन्द्र  
की सहा आगे समय मनुष्यके बिनाये आ कर बहवदेवकी  
पुत्र करके किये तोन दिन तक दर्भ वा कुय शय्या पर  
छोटे थे; इसीसे यह स्थान दर्भ शयन नामसे विख्यात  
है। यहाँकी मूलमन्दिरके शेष शेषोंके विश्वाम्बुदेव मूर्त्तिकी  
हो पश्चात् लोग रामचन्द्रको दर्भ शयन-मूर्त्तिकी बनवाते  
हैं। देखनेके जो मान म पड़ता है, कि जिनके समय यह  
स्थान मनुष्यके बिनाये पर था। यही उस जगहमें  
मनुष्य प्रायः तोन मोन पीछे हट गया है। मूल मन्दिरके  
धामने एक बड़ा सरोवर है, जिनके सेतुमाहात्म्यमें पत्र  
तीर्थ बननाया है। यह सरोवर चारों ओर पत्थरसे बना  
जा, किन्तु धर्मो उसका पवित्रार्थ नष्ट हो गया है। इसके  
उत्तरमें एक पुस्तकालय है, जिनके रामतीर्थ कहते हैं।  
मन्दिरको दोबारको लम्बाई तथा चौड़ाई प्रायः ४००  
फुट होतो। प्रवेश-द्वारके ऊपर एक बड़ा गोपुर है।

मूल मन्दिर यद्यपि बड़ा नहीं है, तो भी इनके चारों  
ओर बड़े बड़े मच्छप हैं। विश्वाम्बुदेव मत्स्यपतिने इन  
पत्थरके मच्छपोंको बनवाया था। यहाँके जयपावत्रोका  
मन्दिर भी धर्मसे प्रधान है। प्रवाद है—विश्वाम्बुदेव  
पत्थर नामक एक स्थानके शेषोंके लिए आ कर यह मन्दिर  
निर्माण किया था। मूलमन्दिर मरुत तोन पत्थरने बना  
हुया है। यह मन्दिर अब बनाया गया इसका निरव  
नहीं है। किन्तु यहाँके शौन राजाधीन समयमें लखौर  
नरको शताब्दोंके शिलालेखमें इस मन्दिरका प्रस्ताव रच-  
निये अनुमान किया जाता है कि यह मन्दिर लखौरके पर्वण  
की बनाया गया होमा।

दर्भशयनके मन्दिरके समीप लखणकुण्ड है। सेतु-  
माहात्म्यमें लिखा है—रामचन्द्रजी तोन दिन दर्भ-  
शयनमें रह कर जब देखा कि बहवदेव नहीं पाये, तब  
लखौरमें शुभा आर मनुष्यकी सुपानिके किये तोर छोड़ा।



मसुष्ट भयसे किनारा छोड़ कर एक योजन पीछे हट गया तब वरुणने उक्त कुण्डने निकल सुतिवाटपूर्वक रामचन्द्रकी प्रसन्न किया, तभीसे वरुण कृप वरुणकुण्ड नामसे मगड्डर हो गया है।

चक्र, वरुण घोर रामतोयके थलावा यहाँ सेतु और अगम्य ना प्रक्री और टो तोय है। यात्रिगण नियमपूर्वक इन पञ्चतीर्थोंमें स्नान करते हैं। दर्भग्रयन मूर्त्तिके सिवा मङ्गलम्बी, ओट्टेवो, भूट्टेवो, जगन्नाथ, कोटण्ड राम स्नामी और मन्तान रामस्नामीके कई एक मन्दिर है। मन्दिरोंमें बहुतसे प्राचीन शिलालेख हैं।

तिरुप्रह्लीत्तुर—मल्लवर जिलेमें कोट्टयम् शहरसे ३ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहाँके पहाड़ पर ( खुदो हुई) एक कन्दरा है।

तिरुमङ्गलम्—मन्दाज प्रदेगके मदुरा जिलेका एक तालुक और उसका प्रधान सदर। तालुकका भूपरिमाण ६२५ वर्गमील है। शहर अक्षा० ८°४८'२०" उ० और देशा० ७८° १'१०" पू०में पड़ता है। शहरकी लोकसंख्या प्रायः छः हजार है। १५६६ ई०में यहाँ वैष्णवर जाति आ कर बस गई है।

तिरुमङ्गलम्, री—यह स्थान तञ्जौर जिलेके कुम्भकोणम्से ४ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है जिसमें अग्राक्षरमें उत्कीर्ण शिलालेख पाये जाते हैं।

तिरुमनुर—त्रिशिरापक्षी जिलेके उट्टैयारपनेयम् तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहाँ सुन्दर भास्करप्रयुक्त एक शिवमन्दिर है। जिसमें कई एक शिलालिपि उत्कीर्ण हैं।

तिरुमल नायक—मदुराके एक विख्यात राजा। इनका प्रकृत नाम 'महाराज मान्यराज श्री तिरुमल शिवरी-नायकि आव्यलु गारु' था। इन्होंने त्रिशिरापक्षी परित्याग कर मदुरामें अपनी राजधानी स्थापन की थी। इनके यत्नसे मदुरामें सुन्दर राजप्रासाद और बहुतसे देव-मन्दिर बने थे। इन्होंने पहले ही पहल विजयनगरका अधीनतापत्र विच्छिन्न कर एक बार स्वाधीन होनेकी चेष्टा की थी। इस समय महिसुरने सेना दण्डि-गुल नामक स्थानमें आकर उन्हे मघायता दी, किन्तु वे सम्पूर्ण रूपसे पराजित हुए थे।

१६२३ ई०में रोवट्ट डि नोवलिथम नामक प्रसिद्ध जेसुट मदुरा पहुँचे, उस समय मदुराके राजा तिरुमल-के साथ रामनादके सेतुपतिका घमसान युद्ध हो रहा था। इस युद्धमें तिरुमल हतकार्य न हो सके थे।

वे इसेशा विजयनगरके राजाको अपनी अधीनताका चिह्नस्वरूप उपहार भेजते थे, किन्तु एक बार उसको अवज्ञेला कर १६५७ ई०में विजयनगरके राजकुमारने तिरुमल पर शासन करनेके लिये उसके साथ युद्ध-घोषणा कर दी। इस पर तिरुमल तञ्जौर और जिञ्जोर नायकोंके साथ मिल गये। विजयनगरकी सेनानि जिञ्जो पर आक्रमण किया। इधर तिरुमलके बहकानेसे सुसलमानोंने भी विजयनगर पर धावा किया। वे क्रमशः सुमलमानराज्य-को विस्तार करते हुए दक्षिणमें आ विजयनगरके करद राज्य पर आक्रमण करने लगे। उस समय तिरुमल भाग कर मदुरामें आ टिके। अन्तमें वे गोलकुण्डके मुसलमान राजाओंके साथ मिल कर महिसुर और विजयनगराधिपति अवशिष्ट राज्य पर आक्रमण करने लगे। महिसुरके राजा उट्टैयारने तिरुमलकी दिग्भ्रामघातकताका बदला लेनेके लिये तिरुमल पर आक्रमण किया। भोपण युद्धके बाद मदुराके राजा तिरुमलको जोत हुई, किन्तु इसी साल इनका देहान्त हो गया।

तिरुमल देव—विजयनगरके एक प्रसिद्ध राजा। वे सुविख्यात राम राजके भाई थे। विजयनगरके नानास्थानोंमें तिरुमलके समयमें उत्कीर्ण शिलालेख आविष्कृत हुए हैं जिनके पढ़नेसे जाना जाता है कि तालिकोटके युद्धमें रामराजका अधःपतन होनेसे तिरुमलने ही विजयनगरके राजवंशमें प्राधान्य लाभ किया था तथा पेत्रकोण्ड नामक स्थानमें राजधानी बनाई थी। इन्होंने १५६०से १५७१ ई० तक राज्य किया था। इनकी मृत्युके बाद इनके बड़े लड़के औरङ्ग राजा हुए थे।

तिरुमलपुरमा—उत्तर आर्काट जिलेमें बालाजापेट तालुक का एक ग्राम, जो पुल्लूर रेल-स्टेशनसे २१ कोस उत्तरमें अवस्थित है। यहाँ एक अति प्राचीन भग्न विष्णु-मन्दिर है, जिसमें बहुतसे शिलालेख देखे जाते हैं। तिरुवेलो जिलेमें भी इसी नामक स्थान है जो तिरुवेली शहरसे ६ कोस उत्तर पश्चिममें पड़ता है। इस

यामके पास ही एक बड़ा प्रस्तर निर्मित श्यामिकाका मन्मार्थीय पहाड़ा हुआ है।

तिरुमाळञ्जाताम् कोट्ट—मदुरा जिल्लाके रामनादके १० कोस पश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक प्रति सुन्दर भास्करनेत्रुप्पुयुक्त पुरातन शिवमन्दिर है और उसमें बहुतसे शिवालय हैं।

तिरुमुञ्जुङ्गम्—तिरुगिरापकोके कुलितसव ग्रहरसे ६ कोस पश्चिममें एक पुष्करस्थान जो अमरावती और कावेरी नदी के मध्यस्थान पर अवस्थित है। यहाँके प्रति प्राचीन शिवमन्दिरमें बहुतसे शिवालय मिलते हैं।

तिरुमुत्तमगन्धुक्—डोयम्पुत्तम जिल्लाके तिरुपुर ऐल-ट्टे ग्राम से २ कोस उत्तर-पश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। यहाँके दो प्राचीन मन्दिरोंमें बहुतसे शिवालय देखे जाते हैं।

तिरुमूर्तिक्काविन्—डोयम्पुत्तम जिल्लाके एक प्राचीन ग्राम। यह पचास १० २० सौ योर् देगा ०७ १२ पूंमें अवस्थित है। यहाँ एक बड़े और सुन्दर मन्दिरमें ब्रह्मा विष्णु और महेश्वरको मूर्तियाँ विराजमान हैं, इन्होंने किए यहाँका स्थान मय्यन्न है। स्वस्वपुराणमें इनका साक्षात्कृत अवस्था वर्णित है। यहाँ प्रति रवि वारको यात्री लुटते हैं।

देवताके बायिक लक्षणके समय यहाँ हजारों मनुष्य पत्तन होते हैं। यहाँके सहस्र पत्तन मत्स्य देखने योग्य है। ग्रामके पास ही एक पहाड़ है। पहाड़ पर बड़ी बड़ी विष्णुके पदचिह्न खुदे हुए देखे पड़ते हैं।

तिरुमोडूर—यह ग्राम मदुरा जिल्लाके मदुरा ग्रहरसे २ कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। यहाँ प्रति प्राचीन शिवमन्दिर और विष्णुमन्दिर हैं। दोनों मन्दिरोंमें बहुतसे शिवालय मिलते हैं। एक शिवालयमें निवा है कि १६२२ ई.में दत्तवाय विठ्ठलपतिने यहाँके शिवमन्दिरका लक्षण किया था।

तिरुवर्दर—दक्षिण पाण्डु जिल्लाके विष्णुपुरम् ग्रहरसे ६ कोस उत्तर-पश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है। जिनमें एक गोपुरमो है और उसके चारों ओर पनेक तरफके शिवालय इतिहास होते हैं। कहा जाता है कि यह मन्दिर बैरुर्के बिन्दो राजा द्वारा निर्माक किया गया है।

तिरुवर्दोर—यह स्थान त्रिवाङ्गु राज्यके पत्तनामतेयेंसे ४ कोस उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यहाँ ताम्रिल पत्तनमें लिये हुए दो प्रस्तरपत्तन हैं। इस पत्तनावा यहाँ एक देवास्थांतर प्राचीन गिर्जा मो है। पत्तने एक प्रदेशमें एक कुपवा यो कि लक्ष्मणेयका हिन्दू रमबियेके सिद्धा निर्दिष्ट दिनमें बाहर निकलने पर पुनिया नामक मोच दासप्राति लक्ष्मणेयका लक्ष्मणेयका आती थी। यहाँके एक शिवालयमें इस कुपवाको राजनेके लिये देवागोय राजाको घोरसे लठोर पाद द दिया गया है।

तिरुवर्दर—त्रिवाङ्गु पत्तनमें कल्लुङ्गुसे १ कोस उत्तर-पश्चिममें अवस्थित एक ग्राम। यहाँ पनेक प्राचीन देवमन्दिर है जिनमें शिवालय मो देखे जाते हैं।

तिरुवर्दुत्ते—चेन्नपट्टु जिल्लाके चेन्नपट्टु ग्रहरसे ७ कोस उत्तर पूर्व तथा कोवम्पुसे १ कोस दक्षिण-पश्चिम ससुत्तु के बिन्दुके अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक प्राचीन शिव मन्दिर है जिनमें लक्ष्मणेयका शिवालय भी देखे जाते हैं।

तिरुवर्दु भादूर—तन्कोर जिल्लाके कुम्भकोवम्पु तासुम्पुके पत्तन में एक ग्राम। यह पचास ११ सौ योर् देगा ०८ २० पूं कुम्भकोवम्पु ग्रहरसे १ कोस उत्तर-पूर्व योर् कोलनार नदीके बिन्दुके अवस्थित है। यहाँ देवने खुद्यन है। लोक्षणका प्राय ११२६० जोमो। यहाँ एक प्रति प्राचीन शिवमन्दिर है। जिनमें ताम्रिल मायामें लक्ष्मणेयका ११४४ ई.के रामराज यज्ञ लोकरायके राजलकानका एक शिवालय शिवालय है। मन्दिरका शिवालयके लक्षण देखने योग्य है। इसको सामने एक सुन्दर गोपुर है।

तिरुवर्दु—तिरुवर्दुके है।

तिरुवर्दु मूल—एक ग्राम। यह चेन्नपट्टु जिल्लाके चेन्नपट्टु तासुम्पुके पूर्व एक पहाड़ पर अवस्थित है। यहाँ एक प्रति मन्दिर है। कहा जाता है कि कुम्भकोवमें यहाँ मो एक दुर्ग १२वीं शतीमें निर्माक किया था। विजयनगरके प्रतापके समय दो सदी यहाँके दुर्गका लक्षण कर विजयनगरके प्रमुखको भवनेका करतें है। विजयनगरके लक्षणका नाम होने पर दुर्ग मो जिनके जो मवा। इस विषयको पनेक कहानियाँ सुने जाते हैं।

तिरुवन्नमलय—तटीय जिल्लेके मय्यागुडि शहरमे ३ कीम दक्षिण पूर्वमे अवस्थित एक ग्राम। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है जिम्में १३५३ ई.का खुदा हुआ एक गिनानेप है। इसमें मन्दिरकी विषयवा पूरा पता चलता है।

तिरुवन्नमलय—मन्दाज प्रदेशके चेन्नैनपट्ट, जिल्लेके अन्तर्गत मैटापिट तालुका एक शहर। यह अक्षा० १३°१०' उ० और देशा० ८०°१८' पू० में ट जोर्ज किलामे ६ मील उत्तरमें अवस्थित है। यहाँकी जनसंख्या प्रायः १५८१८ है। यहाँ एक अति प्राचीन शिवमन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर भीतर अन्य शहरमें खुदा हुआ गिनानेप मया जाता है। १६०३ ई०में लायर साहब इस मन्दिर और गिनानेपकी देख गये हैं।

तिरुवन्नमलय—मन्दाजके उत्तर अरुकाट्टु (आर्कट) जिल्लेका एक शहर। यह आर्कट शहरमें ११ कीम दक्षिण-पूर्व चैयार नदीके उत्तरकूल पर अवस्थित है। पहले यह जैनियोंका एक प्रधान शहर था। यहाँका देवमन्दिर पहले स्थानाय पौराणिक मताचारियोंके हाथ था। इसके सामने नदीके दूरी पर पूर्णवत्तो नामका ध्यानमें एक जैन मन्दिरका एक भाग अवशिष्ट है। कहा जाता है, कि उस मन्दिरको तक्षम नक्षम कर उसको दृष्ट्यादिमें तिरुवन्नमलयका मन्दिर निमित्त बना है। पूर्णवत्तोके मन्दिरको जैन प्रतिमा अभा पुत्रों पर पडो हुई है। उसमें ग्राम हो एक नहर है; सुना जाता है कि उस नहरमें मन्दिरके पीतलका किवाड़ और धनसूत्र रखा हुआ है। मन्दिरके ध्वंजके समय बरुनने जैन फालो पर अस्ताघातमें तथा कीटहमें पर कर माने गये थे। मन्दिरमें खुदे हुए चित्रमें इसका पूरा प्रमाण भ्रमकता है। मन्दिरको एक खुदो हुई तमबोरमें एक नाटका पेट है। वहाँकी लोगोंका विश्वास है कि महादेवकी पहनारोगर मूर्तिके प्रतिमा स्वरूप यह पेट खुदा हुआ है। इस तमबोरका निम्न अत्यन्त विख्यात है। यह एक मण्डप पर अवस्थित है और इसमें जहाँ जहाँ नगभग द पुत्रको छोड़ो। मन्दिरको दोवारमें बरुनमें पत्थर उखाव गिनानेप देखे जाते हैं।

तिरुवन्नमलय—दक्षिण-आरुकाट्टु (आर्कट) जिल्लेका एक शहर। यह कुट्टन्नरु शहरमें २१ कीम उत्तर-पश्चिममें

पडता है। यहाँ एक प्राचीन विष्णु मन्दिर है, जिम्में नाना स्थानों में भिन्न शहरमें खुदे हुए बहुतसे गिनानेप पाये जाते हैं। मन्दिरके भीतरकी दोवारमें भी एक गिनानेपि है। इसके पास ही तिरुमणिकुनि नामका ग्राम है, यहाँ बहुत बड़े बड़े कारकाय विधिष्ट एक शिवमन्दिर है। प्रवाद है कि यह मन्दिर १३वीं शताब्दीमें निर्माण किया गया है। इसमें भी बहुतसे गिनानेप हैं। पूर्वकी ओर प्रवेगहार पर १८ इंच चौड़ी और १५ गज लंबी एक लिपि है। हारके दोनों बगल दोवारोंमें बहुतसे गिनानेप खुदे हुए हैं।

तिरुवन्नमलय—मन्दाज डेदक्षिण आर्कट जिल्लेका उत्तर-पश्चिमोय तालुक। यह अक्षा० ११°५८' से १२° ३५' उ० देशा० ७८° ३८' से ७९° १७' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण १००८ वर्ग मील और लोक संख्या प्रायः २४४७०८५ है। वारामल्लमे चेन्नमगिरिपयको राहमें यहाँ नवमे पहला शहर पडता है, इसीसे घाट पर्वतके उपरिस्थित स्थानमसूडका व्यवसाय इस शहरमें चलता है। पर्वतके ऊपर स्तम्भावार है। १७५३ ई०में १७८१ ई०के मध्य इस पर दस बार घावा मारा गया था। १७६० ई०में यहाँ अंगरेजोंका एक स्तम्भावार था। १७६७ ई०में कर्णल स्थित हैटाश्ली और निजामके साथ युद्धके समय चेन्नमगिरिपय ही कर आते हुए इस स्थानमें उनके सहयोगियोंकी एक एक करके परास्त किया; किन्तु १७८१ ई०में यह टोपूके हाथ लगा। टोपूके अधःपतनके बाद यह फिर अंगरेजोंके टवलमें आया।

तिरुवन्नमलय दक्षिण प्रदेशमें मन्दाजके मध्य एक प्रधान तीर्थ है। यहाँ एक रेलवे स्टेशन भी है जो शहरमें ३ मीलकी दूरी पर पडता है। स्टेशन अरुणाचल पहाड़के पूर्वकी ओर है। यह तीर्थ संस्कृत शास्त्रोंमें अरुणाचल नामसे प्रसिद्ध है। यहाँ महादेवकी पाञ्चभोतिक मूर्तिको तेजोमूर्तिके विराजित हैं। अरुणाचल गिरियुद्ध मसुद्रपटमें २६६४ फुट और शहरमें २०१५ फुट ऊँचा है।

महादेवकी तेजोमूर्तिके आविर्भावके विषयमें एक रोचक कहानी इस प्रकार है—किसी समय हर और पार्वती कौलामके पुष्योद्यानमें भ्रमण कर रहे थे

पार्वती को तृप्त करने की इच्छा है बिचने या कर महा  
 दिवसी पाँच मूढ़ो; महादेवको पाँच बंद हो जानेसे  
 मन्मथ विषय सार पन्थकाराच्छय हो गया। यद्यपि वह  
 देवमौला कोड़े हो समय तकने निवे हो तो मो हूको  
 पर पन्थकार बहुत काम तऊ रहे। चन्द्रसुयंका उदय  
 बंद हो गया। प्रभावसे प्रभावसे बिमुनन वावाकार  
 करता हुआ प्रियकोषे निबट पड़ जा। विचको सारी  
 बात सुन कर पार्वतीके लपर पसनुह हुए पौर कने  
 याप टीसि हुए बोली 'अब तुमने प्रकोका चमकन हुआ  
 है तब तुम्हें हूकी पर आ तपप्रा करने प्रायचित्त करना  
 पड़े ना। इस तरह याप दिव्ये जानि पर पार्वती मनुके  
 लिपार तपप्रा करने लगी। बहुत समय व्यतीत होने पर  
 आकाशवाको हुई 'वाकोपुरमें जा कर तपप्रा करो।'  
 इस पर पार्वती वाकोपुरमें जाकर तपप्रा करने लगी।  
 उस स्थान पर बहुत समय बीत चुकने पर पुन देववाकी  
 के प्राप्तिमातुसार पार्वती पदबाचस पर आ तपप्रा  
 करने लगी। इस समय पार्वती पञ्चाम्नि तप धारण  
 किया। कुछ कालके बाद महादेवकोने स तुष्ट हो कर  
 पद तपिचरके लपर व्यतीतमंथकमें कने दर्शन दिया।  
 पार्वतीका प्रायचित्त समाप्त हो गया। कर-पार्वती को  
 मूर्तिमें पदबाचन पर हो रहने लगे। पदबाचन पर  
 पत्नी महादेव पौर महादेवको मूर्ति है। महादेव तिस-  
 बचमसवेधर या पदनाचनेधरकी नामसे पौर महादेव  
 पयोत कुपाम्बल या लक्ष्मण नामसे परिचित है। यहाँ  
 विश्वेश्वर, ब्रह्महृदय, शंखेश्वर प्रकृति टंकमूर्ति  
 यात्री प्रकृ प्रकृ पूजा होती है। दाक्षिणात्यके विद्या  
 मातुसार पदबाचनेधरको मो हो मूर्ति या है एक  
 आकारमूर्ति पौर मूढ़को लक्ष्ममूर्ति। मूलमूर्ति प्कार  
 की पौर लक्ष्म मूर्ति धातुका बनी हुई है। पदबा-  
 चनेधर जिस समयको प्रतिमा है उसका कोई निबन्ध  
 नहीं है, किन्तु पशुमान किया जाता है वह जोसाराबाधी-  
 के समथमें स्थापित हुई है। मन्दिर सुरसुरा (Granite)  
 प्कारका बना हुआ है।

मन्दिरके चारों पौर मण्डप है पौर मण्डपके चारों  
 तरफ दुरारोह प्कारको होवाए। दक्षिण प्रदेशके  
 द्वादिशके समय ये ममस्त उच्च प्राकार-सहित देव

मन्दिरदि एक प्रकार सुहृद स्थान सद्य प्यबद्धत  
 होते थे। १०५१ ई०में मूर्तिका पत्नीका पौर मञ्जारहीय  
 विनापति सुरारिरावने वह मन्दिर पदवीच किया जा,  
 किन्तु कर्णाटकके नवाबद्वारा मन्दिरको रक्षा को गई।  
 १०५६ ई०में प्राप्तीसियोंने यह स्थान अधिकार किया।

१५२० ई०में तियावर्कके छत्रवार्कने पुनः इस पर हकल  
 किया। १०५० ई०में कमान टिकिनने कर्णाटकके नवाब  
 को पौरने हकका उद्धार किया। १०८१ ई०में यह टोपूके  
 हाथ गया। पत्तने १०८१ ई०को टोपूके भाय सन्धि  
 हो जाने पर यह पत्तनेकी अधिकारमें आया।

मन्दिरके बाहरकी होवार पर चार पोपुर हैं। मन्दिर  
 सात प्रकोठमें विभक्त है। सायनेका प्रकोठ लक्ष्य  
 मण्डप लक्ष्मणाता है। दक्षके पोषि शिव का प्रकोठ है।  
 ये प्रकोठ लक्ष्मण कोटे पौर पन्थकारमय हैं।  
 प्रकोठ प्रकोठके दरवाजे पर प्रकाश दीपको पच्छी  
 वावका को गई है। दिनके समय मो यहाँ रोगी हो  
 जाती है। पश्चिम प्रकोठ सबसे कोटा पौर पन्थकार  
 मय है। इस तरका नाम मूकस्थान है पौर यहाँ देवता  
 को आकरमूर्ति विराजित हैं। जर्मने वातुवा प्रकाश  
 पानेकी पच्छी लक्ष्मणा नहीं है। इस पन्थकारको दूर  
 करके निवे नैया रोगीको लक्ष्मण पड़तो है। मूल  
 स्थानमें पूजकके विद्या दूनरेको जानिका अधिकार नहीं  
 है। यातो लोण मूर्ति देखनेके किये दरवाजे पर लड़  
 रहते हैं पौर पूजक मोतर आकर लक्ष्मण प्रतिनिधि-लक्ष्य  
 पट्टालरगत या ससुर नाम पाठ द्वारा प्रथमा करती  
 हैं। नारियन केका पान पौर सुपारोनेविद्य दिया जाता  
 है। पोषे पूजक लपर बना कर विद-पाठ करते हुये  
 पातलो उतारते हैं पौर लक्ष्मणप्रभापमें यातो लोय देवता  
 दय न करते हैं। कानि लक्ष्मण लक्ष्मणतोवाधि पूजि मा तल  
 पदबाचनेधरका वार्षिक लक्ष्मण होता है, जिसे लक्ष्मण  
 कहते हैं। लक्ष्मणके पश्चिम दिग्में जगताको चदिश  
 लमान होता है। इस लक्ष्मणके लक्ष्मणमें प्रायः  
 १।० लाख मनुष्य पञ्चम होते हैं। विपुलि मन्दिरे  
 यान्तिरवाधि किये जर्मने पड़ते हैं। सुनिस-लक्ष्मण  
 लक्ष्मण मन्दिर द्वार पर रक्षकको करते हैं। मण्डपको  
 लक्ष्मणके एक बन्धने वाहकीके पायन देखे जाते हैं। लक्ष्मण

मनुष्योंमें भर जाता है। संस्थाकी वाद हो अरुणाचलेश्वर और अपीतकुचास्वल् देवीकी उल्लवमूर्त्ति नाना मणिमुक्ताको अलङ्कारमें भूषित कर कंधे पर मण्डप स्थानमें लाई जाती है। मूलस्थानसे उन्नत कपूरका प्रकाश कपड़ेसे ढाक कर प्राङ्गणके मध्यस्थलमें लाया जाता है। उसी समय एक प्रकारको आतशवाजो होती है और तब कपूरके प्रकाशका आवरण अलग किया जाता है। आतशवाजोके ऊपर जाने पर अरुणाचलका सर्वोच्चमूर्त्ति प्रकाशमय हो जाता है। वहाँ एक कुण्ड है जिसे स्थलपुराणके मतमें भगवतोकी तपस्याका अग्नि-कुण्ड कहते हैं। इस कुण्डमें पहलेसे वो, नया कपड़ा और कपूर इत्यादि 'दिये जाते हैं और वहाँ एक मनुष्य रोशनो ले कर हमेशा खड़ा रहता है। मन्दिर-प्राङ्गणसे आतशवाजो ऊपर उठने पर जो उस कुण्डमें आग उत्पन्न हो जाती है और यह प्रकाश बहुत दूरसे देखनेमें आता है। यहांकी बहुतसे लोग इस दिन उपवासी रहते और प्रकाशको देख जलग्रहण करते हैं। इस मन्दिरका खर्च निम्नानिक लिये ब्रिटिश-सरकार प्रति वर्ष ८ हजार रुपये देती है। मन्दिरके अभिभावक 'धर्म-कर्त्ता' नामसे पुकारे जाते हैं। प्रवाद है, कि गौतम मुनिने यहां तपस्या की थी। वे चिरजीवी हैं, अभी भी हर एक रातकी वै अरुणाचलेश्वरको पूजा कर जाते हैं।

२०से ४० तक ब्राह्मणकुमार यहां वेद अध्ययन कर सकते हैं। नित्य प्रति जो नियमित भोग चढ़ाया जाता है, उसे अभ्यागत ब्राह्मण और पूजक लोग पाते हैं। दाक्षिणात्यके नियमानुसार इस मन्दिरमें भी देवनर्त्तको हैं जिनकी संख्या लगभग ५० है।

यहां बहुतसे धर्म क्षेत्र हैं, जहां ब्राह्मण यात्री तीन दिन तक बिना खर्चके भोजन पाते हैं। शूद्र जातिके लिये पृथक् धर्म शाला भी है जहां वे कीचल रह सकते हैं, किन्तु भोजन नहीं मिलता। रमोई करनेके लिये स्वतन्त्र घर हैं।

इस देशके नटकोटा श्रेष्ठो प्रधान घनो है। उन्होंने अनेक स्थानके अनेक देवाल्य और यात्रियोंके सुविधाके लिये बहुतसे छत्र बनवा दिये हैं।

तिरुमुवर्त्तुर—दाक्षिण-आर्कट जिलेके तिरुवपुरम् शहरसे

३ कोस पूर्वमें अवस्थित एक म्यान। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है, जिसमें बहुतसे गिनालेख देखे जाते हैं। तिरुवयार (तिरुवाडो) - मन्द्राजके अन्तर्गत तञ्जोरतालुक और जिलेका एक शहर। यह अक्षा० १०°५३' ३०" और देशा० ७८°६' ५०" पूर्वमें तञ्जोर शहरसे ६ मोल उत्तर कावेरी नदीके किनारे अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७८२१ है। तञ्जोरके प्रथम आक्रमणके समय शिवाजोने यहां स्कन्धावार स्थापित किया था। यहाँ पत्थरका एक प्राचीन शिवमन्दिर है। मन्दिर दंखनेमें सुन्दर और कारकायं-विशिष्ट है। इसके गिनतो प्रधान तोथोंमें की गई है। उल्लवके समय हजारों यात्री एकत्रित होते हैं। उल्लवका नाम सरथस्थान है। इस स्थानकी देवताका नाम तिरु-नन्दि वा त्रिनन्दिकेश्वर है। एक तो उल्लव, दूसरे पञ्च-नाथी नामको पुष्करणीमें स्नान करनेके लिये यात्रियोंकी संख्या और भी बढ़ जाती है। यात्री बहुत दूर दूर देशोंसे आया करते हैं। दशहराके दिन गङ्गास्नान करनेमें जो फल लिखा है, वही फल पञ्चनाथीमें भी स्नान करनेका है। शिवमन्दिरके प्राङ्गणमें यह पुण्य भरसो अवस्थित है। कहते हैं न्यायमिश्र नामक किसी ऋषिने यहां स्वयम्भू शिवलिङ्गकी तपस्या की थी। तपस्यासे सन्तुष्ट हो कर शिवजोने उनसे कहा, 'लिङ्गमूर्त्तिके समोप उत्तरकी ओर तीन गोपद चिह्न हैं। उन्हींको खोदनेसे आपको मनस्कामना पूरी होगी।' तदनुसार ऋषिने जब उन्हीं खोदा, तो पहिलेमें इटोंका, दूसरेमें चूना सुरखीका और तीसरेमें सोनेका ढेर मिला। बाद ऋषिने उसी सामानोसे स्वयम्भू लिङ्गके ऊपर वर्तमान मन्दिर बनवाया। सरथस्थानके विषयमें प्रवाद है, कि त्रिशूली नामके कोई ब्राह्मण थे। श्रीशिवकालमें जब वे जङ्गलमें खिल रहे थे, एक ऋषिकी दृष्टि उन पर पड़ गई। कौतुक करनेके लिये बालक त्रिशूलीने ऋषिके भिक्षापात्रमें भयदानके वचनो एक लोठ्ट डाल दिया। ऋषि बिना कुछ कहे चल दिये। वयःप्राप्त होने पर त्रिशूली इस सामान्य घटनाको भूल गये। क्रमशः विवाहादि कर संसारधर्ममें प्रवृत्त हुए। बहुत दिन बीत गये, पर उनके एक भौ सन्तान न हुई। अतः वे बहुत दुःखित हो नाना धर्मानुष्ठान और व्रतनियमादि करने लगे। एक

दिन सपत्नीमें बस श्रद्धामें दर्शन दिया और उनके श्रेयस चरितके सुखमेंके निचे बहुत तिरस्कार करते हुए कहा, सभी कामों दोषमें पावने पर तब मुझसुख दर्शन नहीं किया है। बाद त्रिगुणोंमें इतके निचे प्राबलित करने को ही विचार—“मोक्षमदमें पड़ कर योगवचनमें श्रद्धाको धामिनि क्षिप्र मेंने ओ पत्तर मिशामें दिया या धर्मो मुझे कबो मोक्षन करना लयित है।” ऐसा फिर कर ने पन्थान्त खाद्य खाग कर छोटे छोटे पत्तरके टुकड़े धामि भूमि। उनका नाम शिवातरन ( शिवाभय ) पडा। प्रावचिनामे मन्नुड हो कर भक्तान्ते भयना दर्शन दिया योग कहा, 'अमोन चोइने पर एक ब स और लभमें एक गिग मिलेगा। वैना मो हुआ। त्रिगुणोंको जो कहा मिना लसका मनुष्य या शरीर और गोवा सुख या। गिगको पा कर त्रिगुणोंमें कभी महादेवके नाम पर धर्यण कर दिया। महादेवने लखे धपने अनुचरी का अधिनायक बनाया। इसोका नाम या तिरुवत्तुन वा त्रि अन्दी। जो शिवजीका बाहन कह कर प्रसिद्ध है। उ श्रद्धाको बहनके साथ त्रिनन्दोका विवाह हुआ या। त्रिनन्दोको धर्मशास्त्रिपल-यानके समय जब धर्मियेक होता है तब लभके मन्दाक पर शिवके वपुसक कामचतुका लक्ष, शिवके मन्दाकका महाभक्त, शिवबाहन उपमके सुधका लक्ष और चन्द्रमाके चपलतारा गिरतो है, त्रिनन्दीके मन्दाक परसे यह चार प्रकारका लक्ष मिर कर नन्दोको चारके साथ एक गङ्गामें जमा हो जाता है। इसी गङ्गामें वर्तमान पञ्चामनी बनीकर है। वर्तमान गिपाको शहरके समीप प्राचीनकालमें इन्का एक गिप कालन था। एक बार वर्षा नही होनेसे यह बिलकुल सूख गया था। पक्षके अधिधारमें अन्नगि रइनेके कारण चन्द्र इसका लुप्त मो प्रतीकार कर न लभे। बाद नारदने पा कर लभके कहा 'परियम् नामक पर्वत गिघर पर पगल्य श्रद्धामें कामचतुमें गाङ्गास रण होहा है। यदि पाप विनिहर नामक देवताको महायताने हम जनको सुरा नाथे तो पापको इच्छा पूरी हो इन्द्रने वैना हो किया। विनिहर गो मूर्ति कारण कर कामचतु लुका लभ पीने गये। पक्षनेने माम्भ गो जान कर लभे चटा दिहा। ऐसा करनेमें कामचतु लुप्त गया और जब

नदोके रूपमें बह गया। यही नदी पूर्वोक्त धर्मियेक लयने साथ मिन कर पहले पञ्चामनीको दर्शन गितो है, पोछे इन्को लयने खाबेरो नदोको उत्पत्ति हुई है।

त्रिनन्दो लक्षमें समय वाङ्मनल्य पर मात धतल स्तानोंमें लाये जाते हैं। कहते हैं कि इन मात स्तानोंमें मात श्रद्धा गुणमावके लपना करती है। लक्षोंको दर्शन देनेके सिधे ही ऐसा किया जाता है। प्राचीनकालमें सूर्य व योग महाप्राक सुरक इन लक्षमें बहुत रूपये धर्यण करते थे। तक्षोर-तासुख बोर्डके निरोधकमें यहाँ एक स स्तल डाईस्स है। इसके मिया एक वैदिक स्तल और एक पत्तरीकी डाई स्तल मो है।

तिरुवत्तु—दक्षिण पावट जिन्में कथकृषि शहरसे १० कोस दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित एक स्थान। यहाँ एक प्राचीन विष्णुमन्दिरमें बहुतमो गिप्तानियिवा पाई जातो हैं।

तिरुवत्तु—दक्षिणपावटो जिन्में तक्षोरके रास्ते पर अवस्थित एक स्थान। यह शिरिरा पत्तो शहरसे ३ कोस पूर्व और लक्षमें पड़ता है। यहाँ एक रक्षके स्तयान है। इसके पाप हो एक लखे पहाड़के लपर एक सुन्दर शिवमन्दिर है। दूरसे इस मन्दिरकी गोभा भव्य शोष पड़तो है। इसको दोबारमें बहुतसे गिप्तानिये मिलते हैं। इस स्थानका दूसरा नाम पम्बेम्बर है।

तिरुवत्तु—तिरिवाडु नामका एक स्थान जो कुईलनु शहरसे १० कोस लक्षमें अवस्थित है। यहाँ एक प्रति प्राचीन मन्दिर है। त्रिबन्धुके प्रसिद्ध मन्दिरके बाद ही इस स्थानके मन्दिरका लक्षेण किया जाता है।

तिरुवत्तु—तक्षोर जिन्मेंके शिवाको शहरसे ३ कोस दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित एक पाम। यहाँ एक प्राचीन शिव मन्दिर है जिन्में बहुतसे गिप्तानिये पाये हुए हैं और यहाँके कालमन्थविधि मन्दिरमें एक ताम्रयामन है।

तिरुवत्तु—तक्षोर जिन्मेंके कृष्णकोषम् तासुका एक स्थान। यह कृष्णकोषम् शहरसे ६६ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है जिन्में बहुतसे लक्षोप गिप्तानिये पाये जाते हैं। यह मन्दिर पञ्चम लक्ष और सुन्दर मोपुर नियमित है।

तिरुवल्क—उत्तर-आर्काट जिलेके वेल्डूर शहरसे ५ कोम उत्तर-पूर्वमें अवस्थित एक ग्राम और रेलवे स्टेशन। यहाँके विश्वनाथेश्वर स्वामीका मन्दिर अत्यन्त बड़ा है। उसकी दीवार पर बहुतसे अस्पष्ट शिलालिख खुदे हुए हैं।

तिरुवल्कूर—एक प्रसिद्ध तामिल कवि और दार्शनिक त्रिवन्दूर देवो।

तिरुवाङ्गोड—मन्द्राज प्रदेशके त्रिवाङ्गुड राज्यका एक ग्राम। यह अक्षा० ८° १५' ३०" और देशा० ७७° १८' ५०" त्रिवन्दूर शहरसे २४ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। यहाँकी जनसंख्या १८३८ है। यह त्रिवाङ्गुड राज्यको प्राचीन राजधानी है। यहाँ एक प्राचीन शिवमन्दिर है जिसमें बहुतसे शिलालिख भी खुदे हुए हैं। त्रिवाङ्गुड देवो।

तिरुवालूर—१ मन्द्राज प्रदेशके तञ्जोर जिलेके अन्तर्गत नागपट्टन तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १०° ४६' ३०" और देशा० ७८° ३८' ५०" में तञ्जोर-नागपट्टन रेलवे पर अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या प्रायः १५४३६ है। यहाँ डिप्टो तहसिलदार और जिलेके मुंसिफ रहते हैं। यहाँ चावलकी कल, हार्ड-स्कूल तथा बहुतसे प्राचीन देव-मन्दिर हैं।

२ चेन्नलपट्टु जिलेमें और एक विष्णुधाम है, वह भी तिरुवल्कूर नामसे प्रसिद्ध है। यह मन्द्राजसे १३ कोसकी दूरी पर अवस्थित है। यहाँकी लोकसंख्या प्रायः पाँच हजारसे अधिक नहीं होगी। यहाँ एक रेल-स्टेशन भी है। यहाँकी विष्णु-मूर्ति देखनेके लिये दूर दूरके मनुष्य आते हैं। यहाँ हत्तापनाशिनो नामका एक तीर्थ है। प्रवाद है, कि शालिहोत्रज ऋषिने बहुत समय तक इस हत्तापनाशिनोके किनारे कठोर तपस्या की थी। तपस्यासे सन्तुष्ट होकर विष्णु ने उन्हें दर्शन दिया। ऋषिने वर मागा कि इस सरोवरमें स्नान करनेसे महा-पापीका भो पाप दूर हो। विष्णु उनके मस्तक पर हाथ रख 'ऐसा हो हीगा' कह कर अन्तर्धान हो गये। तभीसे यह तीर्थ हत्तापनाशिनो नामसे प्रसिद्ध है। यहाँकी अन्तर्धारी घटुमुंज विष्णु-मूर्ति का एक हाथ शालि-होत्रज ऋषिके मस्तक पर रखा हुआ दोख पड़ता है। एक मन्दिरमें कनकवल्ली देवी विराजमान है। कहा

जाता है कि यह मूर्ति स्वर्ण सोताके अनुरूप है। यहाँ भी कई एक शिलालिख देखे जाते हैं।

तिरु—मन्द्राजके मलवार जिलेके अन्तर्गत पोनाई तालु-कका एक ग्राम। यह अक्षा० १०° ५३' ३०" और देशा० ७५° ५६' ५०" में अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ४४४४ है। यह एक रेलवे स्टेशन है।

तिरुवङ्गाडी—मन्द्राजके मलवार जिलेके अन्तर्गत अर्णाड तालुकका एक शहर। यह अक्षा० ११° २' ३०" और देशा० ७५° ५६' ५०" में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५४०० है। यहाँ डिप्टो-तहसिलदार और महकरो मजिस्ट्रेटको अदालत तथा प्रसिद्ध मायिन्न फकीर तारामल टङ्गलको एक समाधि है। मच्छो, सुपारो और नारियल यहाँका वाणिज्यद्रव्य है।

तिरिंदा ( हिं० पु० ) मसुद्रमें तैरता हुआ पोषा। मसुद्रका पानी जहाँ छिड़ता रहता है वहाँ पर संकेतके लिये यह रखा जाता। २ मच्छो मारनेकी वंशोमें वंधो हुई पाच छः अंगुली लकड़ो। यह लकड़ो पानीमें तैरते रहते हैं और इसके डुबनेसे मच्छोके फंसनेका पता लगता है।

तिरिं ( हिं० पु० ) फोलवानोंका एक शब्द। जिसे वे नडाते हुए हाथियोंको निटानेसे प्रयोग करते हैं।

तिरोअर्रा ( वै० त्रि० ) अहनि भव' अर्रा भवेच्छब्द-सोतियत्। तिरोहितोऽङ्गाः। एक दिनसे अधिकका।

तिरोगत ( सं० त्रि० ) अष्टय्य, गायत्र।

तिरोजन' ( सं० अथ० ) मनुष्यसे पृथक्।

तिरोध ( सं० स्त्री० ) तिरम्-धा-क्विप्। अन्तर्धान, अदर्शन।

तिरोधातव्य ( सं० त्रि० ) तिरम्-धा-तव्य। आच्छादन, योग्य, टाकने लायक।

तिरोधान ( सं० स्त्री० ) तिरम्-धा-भावे ल्युट्। अन्तर्धान, अदर्शन, गोपन।

तिरोधायक ( सं० पु० ) गुप्त करनेवाला, छिपानेवाला। आड करनेवाला।

तिरोभविट ( सं० त्रि० ) तिरस्-भू-टच्। १ तिरोभाव, अन्तर्धान। २ गुप्तभाव, गोपन, छिपाव।

तिरोभाव ( सं० पु० ) तिरस्-भू-भावे घञ्। १ अन्तर्धान,

धर्म, बोध । २ पाश्चादन । ३ सुप्रमाण, ज्ञियाम ।  
तिरोभूत ( स० त्रि० ) तिरस भूत । पञ्चार्चित, सुत  
ज्ञिया बुधा ।

तिरो—सम्भ-प्रदेशके भवत्प्राथ जिनके लक्ष्मण तद्वसोक्त ।  
यस्य पञ्चा० २१ १० चोर २१ ३० च० तथा दिगा०  
७८ ३३ चोर ८० ३० पू०के सम्भ पञ्चार्चित है । मूर्परि  
मात्र ११२८ वर्गमोक्त चोर लोकास ज्ञया प्रायः २८१५२३  
है । इस तद्वसोक्त १०१ घाम चोर ११ जमोदारियों है ।  
जमोदारो डेट्या रक्का ७६८ वर्गमोक्त है, जिनमें १६१  
वर्गमोक्त ज मन है ।

तिरोवर्ष ( स० त्रि० ) तिर तिरोहित, नया यत् । इति  
से दक्षित जिनका बरसावे यथाय बुधा हो ।

तिरोचित ( स० त्रि० ) तिरम्-वा ज । १ पञ्चार्चित, पदट,  
ज्ञिया बुधा । २ पाश्चात्कृत, जका बुधा ।

तिरोऽज्ञय—शिष्यवृत्त देवे ।

तिरोदा ( द्वि० पु० ) तिरैवा देवा ।

तिरोर—पञ्चावके जर्मस तद्वसोक्त चोर जिनका एक  
घाम । यस्य पञ्चा० २८ ३८ च० चोर दिगा ७६ ३८ पू०  
के सम्भ पञ्चार्चित से १३ मोक्त दक्षिणमें पञ्चार्चित है ।  
११८१ ई०में पञ्चमिरक चौहान राजा एकोरावर्त महमद  
चोरको इसो ज्ञान पर पराधा जिया या चोर फिर  
११८२ ई० में प्राय मो यहाँ पर पराधा हुए है । इसका  
प्राचीन नाम पञ्चमावाद है, जहाँकि यहाँ चोरपञ्चमेक  
पुत्र पाश्चात्पराधा बन्ध बुधा बा । १०३८ ई०में तादिर  
ग्राहने ईके जोता बा । पश्चो यस्य सञ्चदवालो पदर बा,  
पञ्च कञ्च इसकी पयका मोचनोक्त है ।

तिर्य ( स० त्रि० ) तिन-निर्मित जो तिरका बना हो ।  
तिर्यक् ( स० त्रि० ) बन्ध, टेढा, पाड़ा, तिरका । मनुष्य-  
को जोड़ प्रविशोके समस्त बीच तिर्यक् कञ्चरानि है  
जहाँकि पक्षे दोमें उभके मरीरका विस्तार ऊपरकी  
चोर नहीं रहता, पाड़ा जो जाता है । इनका ज्ञाया  
बुधा पञ्च पेटमें सीधे ऊपरवे लोचको चोर नहीं बा बर  
पाड़ा जाता है ( पु० ) । २ पञ्चक बाहु, पारा ।

तिर्यक् चित्र ( स० त्रि० ) तिर्यक् यन्त्रभावेन चित्र बन्ध  
भावके चित्र, जो तिरका तिरा हो ।

तिर्यङ्गा ( स० श्लो० ) तिर्यक् भावे तन । बन्धन तिरका  
पन, पाड़ापन ।

तिर्यक्त्व ( स० श्लो० ) तिर्यक् भावेत् । १ बन्धन  
तिरकापन ।

तिर्यक्कृति ( स० श्लो० ) तिरयो गति बर्मादा० । बन्ध  
गति तिरको चाल ।

तिर्यक्पातो ( स० त्रि० ) तिर्यक् पतति पतःकृति ।  
१ बन्ध प्रसारित पाड़ा प्रोक्षया बुधा । २ कुटिलकृति-बन्ध,  
जो कुटिल कृतिका हो ।

तिर्यक्प्रमाथ ( स० श्लो० ) तिर्यक् प्रमाथः बर्मादा० ।  
विस्तार प्रमाथ, चोडाई ।

तिर्यक्प्रोक्षत्र ( स० त्रि० ) तिर्यक् प्रोक्षत्र यत्न, बन्धो० ।  
बन्धकृतिकारो, तिरको जन्मसे देखनिपाका ।

तिर्यक्प्रेषो ( स० त्रि० ) तिर्यक् बन्ध यथा तथा  
प्रेषते प्र ईत्त विनि । यन्त्रकृतिकारो, जो तिरको जन्मसे  
देखता हो ।

तिर्यक्मिद ( स० पु० ) दा पाधार पर चलो हुई बहुका  
बीचमें दबाव पड़नेके दृष्टता ।

तिर्यक्लोक ( स० पु० ) जैनमतानुसार यस्य लोका बर्हा  
मनुष्य, देव चोर नारदियोंका पक्षित न हो । यस्य लोक-  
कृत नाड़ोके बाहर है । जैनमें कर्ममें जेवका देवे ।

तिर्यक्कृतियन्त्र ( स० पु० ) जैनमतानुसार दिग्गतका एक  
पतोचार ।  
तिर्यक्कृतियन्त्र देवे ।

तिर्यक्स्त्रोतस ( स० पु० ) तिर्यक् बन्ध स्त्रोतः पाधार  
सञ्चारो बन्ध बन्धो० । पयु पचो प्रवृत्ति । मानवतमें  
इन्के निययमें इय प्रकार निष्ठा है—तिर्यक्स्त्रोतापी  
पञ्चात् पयुसियोंको छत्रि चष्टम है । जे २८ प्रकारके  
मानि मने है । ये ज्ञानगुण तथा तमोगुणविशिष्ट है,  
इन्के पाधारान्मात्र परायण है । जे जेवक प्राधिगुण  
दारा भी पयने चर्चकी निधि करते है इन्के चक्राधार  
में जिनो प्रकारका ज्ञान नहीं ब्रतनावा गया है । तिर्य  
क् स्त्रोतापीं नाम—( दो सुरवाली ) माय, बन्धरी मेंस,  
कञ्चसारण्य, सूधर, लोचगाव इव नामक मृग, मीड़  
चोर कंटः ( एक सुरवाले- ) यदशा चोड़ा, अन्ध, गोर  
ध्वन मरम, सुरागायः ( पञ्चनक ) कुला, गौडक,  
मेडिया, बाध, बिलो करवा, सिद्धव दृष्ट हाको, कण्ठ्या,



मेढक, ( जलचर— ) मकरादि जन्तु ; ( नभचर— )  
गोध, बगला, मोर, हंस, कौवा, पेंचक इत्यादि ।

तिर्यग ( स० पु० ) तिर्यग ग, कुटिलगामो पशुपनगादि,  
वे पशुपक्षी जिनको चाल टेढ़ो हो ।

तिर्यगतिक्रम ( स० पु० ) जैनमतानुसार दिग्गतके पांच  
श्रुतीचारोंमेंसे तोसरा श्रुतीचार । पर्वतादिको गुफाओं  
तथा सुरंग आदिमें टेढ़ा जाना, जिमसे व्रतमें टोप लगे,  
तिर्यक्-श्रुतिक्रम कहलाता है । ( तत्त्वार्थसूत्र ७३० )

तिर्यगन्तर ( स० क्लो० ) दो दृश्योंके मध्यस्थानका परि-  
माण ।

तिर्यगयन ( स० क्लो० ) तिरयां श्रयनं, ६ तत् । १ पशु-  
पक्षियोंको गति तिर्यक् श्रयनं कर्मधा० । २ वक्रगति,  
टेढ़ो चाल ।

तिर्यगागत ( स० त्रि० ) तिर्यक् वक्रभावेन आगतः ।  
जो वक्रभावसे आता हो ।

तिर्यगोक्ष ( स० त्रि० ) तिर्यक् ईज-श्रच् । वक्रभावसे  
देखना, जो तिरको नजरसे देखता हो ।

तिर्यगोश ( स० पु० ) क्षणका एक नाम ।

तिर्यगेकादश—जैनमतानुसार ग्यारह तिर्यक् प्रकृतियोंका  
नाम । तिर्यच्चगति आदि २, एङ्निद्रादि जाति ४, आताप  
उद्योत, स्यावर, सूत्र श्रौर साधारण—ये ११ तिर्यक प्रकृ-  
तियां हैं । इनका उदय तिर्यच्चगतिमें ही होता है, इसीसे  
'तिर्यगेकादश' ऐसा पडा है ।

( गोम्पटसार कर्मकांड ४१२ ) देखो ।

तिर्यग ( स० त्रि० ) तिर्यक्, गच्छति तिर्यक्-गम-उ ।  
कुटिलगामी, जिमको गति टेढ़ी हो ।

तिर्यगत ( स० त्रि० ) तिर्यक् वक्रभावेन गतः । वक्रगामो ।

तिर्यगति ( स० स्त्रो० ) तिरयो गतिः, कर्मधा० । १ वक्र-  
गति, तिरकी या टेढ़ी चाल । कर्मवग पशु-योनि-मास ।

तिर्यगति देखो । ( त्रि० ) २ तिर्यक् गति यस्य । ३ वक्र-  
गमन शील, जिमको चाल टेढ़ी हो ।

तिर्यगम ( स० क्लो० ) तिर्यक् गमं गमनं । वक्रगमन,  
टेढ़ो चाल ।

तिर्यगमन ( स० क्लो० ) तिर्यक् गम-ल्यट् । १ वक्र गमन,  
टेढ़ी चाल ( त्रि० ) तिर्यक् गमनं यस्य । २ वक्र ।  
३ गतिशील वायु ।

तिर्यग्ज ( स० त्रि० ) तिर्यक् जन उ । १ जो पक्षी इत्या-  
दिमें उत्पन्न हो । ( पु० ) पक्षी इत्यादिको जाति ।

तिर्यग्जन ( स० पु० ) तिर्यक् जनः कर्मधा० । कुटिल,  
कपटो मनुष्य आदमी ।

तिर्यग्जाति ( स० स्त्रो० ) तिरयां जाति ६-तत् । पक्षि-  
जाति ।

तिर्यग्दिग् ( स० स्त्रो० ) तिर्यक् दिग्-क्तिप् । उत्तर-  
दिशा ।

तिर्यग्धार ( स० पु० ) तिर्यक् धृ-घञ् । वक्रधार, जिमका  
किनारा तेज हो ।

तिर्यग्नासा ( स० स्त्रो० ) तिर्यक् नासा यस्य, बहुव्री० । वह  
जिसकी नाक निम्नो या टेढ़ी हो ।

तिर्यग्भागवतिक्रम ( स० पु० ) सागारधर्मासृज नामक  
जैन ग्रन्थमें वर्णित श्रुतीचार-भेद ।

तिर्यग्यवोटर ( स० क्लो० ) जोकाटाना (Barley corn)

तिर्यग्यान ( स० क्लो० ) तिर्यक् यानं यस्य, बहुव्री० ।  
कुलीर, केकडा ।

तिर्यग्योन ( स० पु० ) शुकवारिकादि पक्षी-जाति, मोना  
शौर मेना पक्षीको जाति ।

तिर्यग्योनि ( स० स्त्रो० ) पशुपक्षादि तिर्यक् जाति ।  
गृहस्थ यदि ब्रह्मचारियोंका वेग धारण कर भिक्षादि  
द्वारा जीविका निर्वाह करे, तो वे तिर्यग्योनिको प्राप्त  
होते हैं । पशु, पक्षी, मृग, मरीच्युष्य शौर स्यावर इन्हीं  
पाच भागोंमें तिर्यक्योनि विभक्त है ।

तिर्यग्योन्यन्वय ( स० पु० ) तिर्यक् योनोना अन्वयः ६-तत् ।  
पशुपक्षादि जाति ।

तिर्यग्विड ( स० त्रि० ) तिर्यक् भावेन विडः । सुन्दुतीक  
एक प्रकारका शिगावेध । तिर्यक् (वक्र)-भावसे शस्त-  
पात होनेसे यदि ममस्त अन्न कट जाय, केवल थोडा ही  
बच रहे तो उसे तिर्यक्विड कहते हैं । यह तिर्यग्वेध  
श्रवन्त दूषणीय है । (सुन्दुत चिकि० ८३०) २ जो तिर्यक्-  
भावसे विड किया गया हो ।

तिर्यङ्नास ( स० पु० ) वह जिसको नाक टेढ़ी हो ।

तिर्यच् ( स० पु० ) तिरो भ्रष्टति तिरप् भ्रष्ट क्तिप्, तिरसः  
तिरि आदेशः आह्वेर्न लोपश्च । विहङ्ग प्रसृति, पक्षी  
इत्यादि । पाप करने पर मनुष्य पक्षी-योनिमें जन्म लेता

के। ( भाष० १२।२।१२५ ) (त्रि०) २ दक्षयामोः त्रिसुबो गति टेटो बो।

तिर्यङ् (स० पु०) औनमतामुदार मनुष्य, देव घोर मार किर्बिंके सिवा जगतुर्मे जितने मो बोध हैं, ये सब तिर्यङ् हैं। तिर्यङ् बीजके दो भेद हैं—अस घोर खानर।

धेवनने कर्ममें बीर-रत्न खरम देखो।

तिर्यङ्मातृपूर्वो (स० श्री०) औनमाप्तामुदार बोधको एक भति। इसमें उभे त्रिय प्योनिमें जाति हुए कुछ खान तक रहना पड़ता है।

तिर्यङ्को (स० श्री०) तिर्यङ् अर्थात् छोपू। तिरको, पद्य पक्षियों को श्री मादा पद्य या पक्षी।

तिन् (स० पु०) तिन्मति सिद्धति तैस्मि एषो भवति तिन्मन्। अनामप्यात् रविदाम्बिक्रिये (Sesamum Indicum)। इसके पर्याय—होमसाय, पवित्र, पिष्टतर्पण पापक, पुत्रदायक, छेड़पत्र घोर चमपूर।

तिन्को गिनती 'पञ्चमय'में की गई है। इसका व्यवहार म स्मृतमें प्राचीन है, यहां तक कि अब घोर किचो बोझसे तैल नहीं निकाला गया था तब तिलने निकाला गया। इन कारण उसका नाम हो 'तेल' (तिलने निकाला हुआ) पड़ गया। पर पात्र एक अन्वय तैलके बोझसे (असो घोरत, बादाम पादि) को निर्यात निष्कलता है, वह भी 'तेल' नामसे हो प्रसिद्ध हो गया है। पमो तैल' कहनेसे तिलका तैल न समझ कर सरसीका तैल हो समझा जाता है।

तिन् पौषमण्डलका मण्ड है। पाशात्य उद्भिद् शास्त्रज्ञतापो का अनुमान है कि तिलका पादि खान पत्रोका मन्दाहोय है। पात्र तक केवल १२ त्रितिके तिल पाये गये हैं। पत्रोकारमें प्राक् बारह प्रकारके तिकी भेद पाठ प्रकारके तिल अद्भुतो उपपन्न हैं। तैलहन बोझकी छितो पत्रोकारमें भी बहुत पक्षसे प्रचलित है। यीह फ्राटिन घोर खरबोय प्राचीन पत्रकारोंके चर्यामें विवेक वा निवेकम मन्द (खरबोय सिम्बुन्) पाया जाता है। विरुद्धे इस घोर दिग्ग बोहिदिम में निष्ठा है, कि 'मिस्मि निवेक नामक तैलहन बीजको छितो होतो है।' डीको कुछ घोर को निष्क गये हैं—कि तिल भारतवर्षके इन देशमें खाया गया है। खरबोय 'विमवेम' वा 'मिमवम' मन्दके दो पौक 'मिनेम' मन्द निष्कना है।

पाशात्य पक्षित लोग जो कुछ कर्म पर तिलका व्यवहार भारतवर्षमें बहुत पक्षसे भना पा रहा है। यद्यप्य पत्रोकारका विचार विम्वुल नवो जानता था पत्रोकारको खर खरबोय अन्वयता विरुद्ध नवो हुई थी तभीसे भारतमें तिलका व्यवहार प्रचलित है। इसीसे प्राचीन पत्र बोधमें इसका उल्लेख है (पञ्चवेद शां०, ६।१।४०।१, अल्ल यतुर्बेद १८।१२ घोर अतपयवाद्यममें ८।१।१।१)। इसके सिवा सिम्बुन्के पाद घोर तिर्यङ्गदिमें बहुत प्राचीन खानके तिलका व्यवहार खला पा रहा है। एतद्भिद् भारतवर्षके विभिन्न खानोंकी विभिन्न भाषाओंमें इस मण्डके जितने भी नाम प्रचलित हैं, उन ममोमें तिल यह नाम एक प्रकार प्रचलित मानके भी लिया गया है। जिधो दूररे मण्डके नामोंको एक प्रकार समता भारतवर्षमें नवो है। सिद्धि, सिद्धि पादि चर्मित नाम यद्यपि खरबोय 'शुन, लुका' मन्दका क्याकर है, तो मो पत्रो पादिम नाम हैं, ऐसा नवो कह सकते। भारतीय पात्रुर्बेद शास्त्र सबसे प्राचीन है। उनमें भी तिलके भातिमिद्के गुणभेद पादि बतलाये गये हैं। पौषमण्डलका मण्ड खान कर मन्धमारतके किचो खानमें अद्भुतो निष्क यद्यपि नहीं भी मिलता है, तो मो हिमान्य, अफगानिस्तान फारस, खरब मित्र पादि देशों में जो इसकी छितो होतो है, उससे अनुमान किया जाता है कि यह भारतका पादि मन्ध न हो जो, पर यह पार्थी हाप इस देशमें पक्षसे पक्ष लाया गया था, इसमें कर्ण्ड नहीं। इसका पार्थ-नाम तिल घोर ईरानो नाम 'सिम नेम देव' कर अनुमान किया जाता है कि बहुत पक्षसे तिल एक छिे खानमें उपपत्ता वा अद्भिद् इसको छितो पूर्व घोर पक्षिको घोर खैलत पक्षसे बहुत दूर तक फैल गई है। प मरेत्र मय इसीसे पाधार पर अद्भिद् है कि उल्लेख नवो किनारेके भी कर उत्तर-भारत तक मन्धपरिवाके किचो खानमें इसका पादि खान पा-। उनो खानके पाद' मय इधे भारतवर्षमें, यीसे भारतीय होपुण्डमें जाये। भारतमें प्रकार जोसेके पक्षसे तिल खरब वा यूरोपमें नहीं भेजा जाता था, यह व कृतपापके प्रमाणके पता चलता है। तिलकाके गवर्मेंपक्षो तरय छे भारतोव पक्ष इरानीका विवरण म पक्ष खरमेंके विवर

को बस चाँदो नियुक्त हुए हैं, उन्हें अनुभवार्थक प्रकाशित हुआ है कि चारमास पछाईमें १५०० फुटमें से कर ३५०० फुटको ऊँचाई पर तथा हिमालय पर उन्नत-स्थिति पाँचगंज इस जिनका मध्य अनुभवार्थक पाया गया है। जूनीयों और गोती तिनमें बहुत फर्क पड़ता है। गोती तिनका फूल मजेट और जूनीयोंका काया होता है। पत्तों उँठम और मूलमें भी अनेक भेद देखनेमें पाते हैं।

जिन और परिपूरक दोनोंमें चारा जाता है, कि तिनका तेज गुजरात और सिन्धुदेशमें मोहितमातर होता हुआ यूरोपको जाता था।

आदन-५-पकवाँमें अनेक तिन और अनेक तिनका उल्लेख है। यह चादु या चाउम पनाईमें मिला गया है। आगरा, इलाहाबाद, अयोध्या, डिंडी, लाहौर, मुम्बई, मानवा आदि स्थानोंमें इसको खोजी जाती थी।

यहाँ ही टिनमें इसका कारोबार बहुत बढ़ गया है। विदेशोंकी भी यह खेजा आ रहा है।

नोट—भारतवर्ष के प्रायः गारम देशोंमें इसका खोजी होती है। अफसफ्जानम्य प्रदेशमें यह शोतखानका मध्य, दूसरी जगह गारम मध्य और नात प्रदेशमें अफसफ्जानका मध्य है। अन्ध्र प्रदेशमें गार्वाकानमें इसको खोजी होती है। मध्यभारतमें और मन्द्राकमें नमरा तथा शरतू कानमें इसकी फसल ही बार उज्जायो जाती है। मध्यभारत और उत्तर-भारतको पानुकामय भूमिमें इसका जैसी हदि और पृष्टि देखा जाता है। ब्रह्म, आमाद और बङ्गालको मजल भूमिमें यैसी नहीं देखा जाती। तिन साधारणतः चार अर्थियोंमें विभक्त है। लेकिन यह नहीं कह सकते कि, वे चार अर्थियों जातिव अनुसार हैं अथवा नैतिक अर्थियोंनुसार। यहाँ देख कर यदि इसको अर्थों कायम को गई हो तो भी इसका संख्या चार हो है; खेत, कृष्य, रक्त और धुमर। भारत-वर्षमें कहीं भी इसका पोधा १८ इंचमें अधिक ऊँचा नहीं देखा गया है, कहीं कहीं तो इसकी ऊँचाई केवल तीन हो चार फुट है। इसको पत्तियों पाठ-दग अंशुन तक लंबा और तीन-चार अंशुन चौड़ा होता है। वे नोचको और तो ठोक पामने सामने मिनो

पर लगती है, पर छोटा अथवा बस बस कुछ अन्तर पर होता है। पत्तियोंके निचारे भी गहरी होती, ट्रेड-नेट होती है। फूल निचामने आकारका होता और अन्तर पर दलमें विभक्त रहता है। फूल मजेट रंगका होता है, फूल मजेट पर भेतरकी और वेगनी पत्तों टिपटि देते हैं। यह सब देखा कर मालूम पड़ता है, कि तिन और धातुको मिला प्रायः एक ही समयमें आरम्भ हुई है। पत्तों देखा। किन्ती किन्ती तिनकी पत्तोंमें तीन मास और शिथिली दाह मास लगने हैं। इन्हें प्राचीन विपदका पत्तों अन्तमें मध्य विपदम आता है कि तिनमें प्रकाश तिनहन धार है, अन्तमें तिन ही मध्यमें पत्तों मजुलीय कारोबारमें पाया और इसका तेज मंगारमें प्रथम देखा गया।

पूर्व भारतमें तिनका खोजी अन्तर्गतमें खनमता है। फुट तिनको पत्तियोंका पत्तों तिनकी पत्तियोंमें खोजी होती है। फुलका रंग अन्तमें पाए पत्तियोंका माटा, बज्जा, मज होता है। मजेट तिनका माटा मोजा, दासा मोटा और बड़ा होता है।

भारतवर्ष अनेक तिनका खोजी कहीं और किम प्रकार जाती है, यह भी देखा जाता है -

शाम—मजुलीय मजुलीय तिनका खोजी खोजी होती है। यह भागमें मात ही मिया कर देखा जाता है। मजुलीय खोजी मजुलीय पत्तों यहाँ के भागकी उन्नयुटि खोजी रक्त मजुलीय, तो पत्तों जन्म देते हैं। बाट जन्म जन्म है। जमोज मजुलीय पत्तों मजुलीय मजुलीय तो खोजी माद माद ही खोजी देना चाहिये चार छटि मजुलीय, तो खोजी खोजी प्रकाश नहीं पड़ती। पत्तों बार मजुलीय खोजी खोजी पत्तों टिन बाट फिर एक बार तिनकी खोजी है। इसी प्रकार तीन बार मजुलीय कर प्रति खोजीमें खोजी मजुलीय और १० दग मजुलीय पामन धार एक माय मिया कर खोजी है। प्रायः मागुनने मजुलीय खोजी तक खोजीका पत्तों मजुलीय है। प्रथम इसका अंशुन ४५ इंचका होता जाता है, तब खोजी एक बार कुदानमें खोजी है और अनेक पत्तों अंशुन पर अन्तमें किन्तीको काट जानते हैं। दग पत्तों टिनके दाद खोजीको एक दफा और खोजी देनेने सब चोम मर जाती है। जहाँ

महोत्सव दिवस पञ्चमे वर षाट् क्षेति हैं पौर लखे कई दिनों तक धरमें रहते हैं। बाद माघे पोट वर पनाक निवाक क्षेति हैं। प्रति बोधेमें २१ मन तिल उपजता है। हाकामें कहीं कहीं पाण्डस, घामन पौर तिल तौनों एक साथ मिला कर होते हैं। चैत्र मासके पन्तमें एक बार पानो हो जानेके पूर्व भूत् क्षेति तैयार करते पौर प्रति बोधेमें १। धेर तिल, १० धेर पाठय पौर ६ धेर घामन क्षेति हैं। चतुरधे लदने पर एक बार लखको चौको धिर क्षेति हैं। श्रैत मासमें सब तिल एक साथ हैं, तो लखे षाट् क्षेति हैं।

वेदपुर—इत्यतिल पौर श्वेततिल जड़को जमीन में पापाङ्क मासमें क्षेति पौर घनहन वा पूस मासमें काटती हैं तथा पयसा तिल दैखि क्षेतिमें शैत बँशाक मासमें क्षेति पौर श्रैत पांवाङ्क मासमें काटती हैं। मईके वा माशुय तिल टसदन जमीनमें पापाङ्क ग्याबक मासमें बोया पौर माइमें काटा जाता है।

दुग्ध—इत्यतिल पापाङ्क-घामन मासमें क्षेति पौर पश्चिम-कात्तिल मासमें काटती हैं। घिसारीको तरह इस जिलेमें तिल मो घानको जमोनमें दूमरी पपलके रूपमें बोया जाता है। पर यह लघो जालमें होता है, जब पतितुहिले खान सड़ जाता है।

वरीपुर—यहां जूरी जमोनमें माघ पश्चिम मासमें खाना तिल क्षेति पौर पापाङ्क माघमें षाट् क्षेति हैं। जो जमीन लोपो है, लघमें खण्डित तिल माघ माइमें क्षेति पौर पपहायक पीपमें काटती हैं। इन जिलेमें तिल पौर तिलका तिल दोनों ही प्रयुज होते हैं।

एतपुर—यहां ग्याबक माइमें इत्य तिल बोया जाता पौर पपहायक पीपमें काटा जाता है। ल जो जमोनमें हो यह जयन पच्छी लगती है। कहीं कहीं लरदके नाम हो साथ दधि क्षेति हैं। पच्छो पपल लदने पर प्रति बोधि (१ वा २ मन दाना निखलता है। कहीं कहीं दरमें दधकी बिन्ना क्षेति है। लाल वा पाठय तिल बहुत कम बोया जाता है। पीप माघ मासमें दधि क्षेति पौर श्वेत पापाङ्क में काट क्षेति हैं। इसको दर सरदीके काम रहती है।

रावणारी—घानको जमोनमें चैत्र बँशाकमें क्षेति पौर पापाङ्क माघमें काटती हैं। इत्यतिल बँशाक मासमें बोया जाना पौर पपहायकमें काट लिया जाता है। इस जिलेमें तिलको क्षेति बहुत काम क्षेति है।

बहुधा—यहां तौन प्रकारके तिल उपजती है। खाने तिल जोको फलस पच्छी होती है। वर्षाके पन्तमें बोया जाना पौर जमिने पारपमें षाट् लिया जाता है।

शेरकाय—तिल या तिलको भाइ पश्चिममें लूँको जमोनमें क्षेति पौर चैत्र बँशाकमें काटती है। पनाम् बिमानका यह एक प्रधान बँशक है। इतिहासमें खापो उपजता है। इस दिग्गमें तिल प्रति बोधि ११ मन पैदा होता पौर (२१) धे से कर २) ६० मन बिन्नाता है।

माघान-यहां तिलको क्षेति क्षेति है पौर बहुधा दिग्गमें रहती क्षेति है।

मग—तिलको क्षेति यहां बहुत काम है। मन्दाजके लखको घामनको क्षेति है। इस दिग्गमें तिल नहीं क्षेति पर भी इच्छवानी रमका व्यवहार कूज करती है।

वटा—यहां १८२५७८ बीबा जमोन तिलको क्षेतिके बिधे है। प्रति बोधि सवा मनके डिशाके उपजता है। निजाम राज्यका पौर बरार प्रदेशका तिल बहुतावतके बन्दे क्षेति बुधा यूरोप भेजा जाता है।

वपरायक-माघपुर नर्मदा पादि जगोंमें तिलकी क्षेति कूज होती है। यहाँके तिलको रवाना मो बन्दे क्षेति हुए है। इस प्राकमें मारद पौर बाकली दोनों फसकमें ही तिल उपजता है। मरुधि तिलको मरुधि तिल पौर बल लखे तिलको खानको तिल लखती है। मरुध इत्यक ही कई जमोनमें इसको क्षेति करते हैं। इसमें इन्के ल तो पश्चिम परिवार करना पड़ता है पौर न पश्चिम रूपसे ही लय होते हैं। जमोन-वर्षके ल गण पादिको फास कर एक दो बार इस क्षेति क्षेति पौर तब बीज को क्षेति है। एक सुद्धो तिलके तौन बोधा जमोन बोई जाती है। एक बार कोङ्गा भी पड़ता है। जब तक यह पच्छी तरह पक नहीं जाता, तब तक मो, बकरे, भैंसे पादि दधका कुछ बनिद नहीं कर सकती। पकनेके साथ ही इन्के काट लेना चाहिये। पच्छोके पच्छो जमीनमें यह प्रति बोधि २५-३ मन उपजता पौर (२१)-३, ६० मन बिन्नाता है। दधके दिवा प्रति बोधिमें दधसे पाठ जाने लखे मो पड़ती हैं। तिल काट कर लख जमीनमें बाजरा वा ज्वार बोई जाव तो लख पाठको पूर्ति हो कर बाध हो सकता है। यहां ८ धेर तिलमें ३ धेर लख निखलता है

शौर २ मेर खनी । प्रली के शोभाका वर्षा १५३ या १०) है । यामि तेन निकामनेका कोई मानस रागा नहीं रहता है । तेन शौर खनी दोनो एक साथ मिल कर वांनिके ऊपर चली जाती है । याद यामि छे पर खनी शौर तेन चपल चपल कर लिया जाता है, इसीमे यहाँका तेन पराव होता है ।

पञ्चम - प्रायः सभी जिनमें खीला बहुत तिन घुषा हो करता है । कर्षाका बन्दर हो पर इसकी अधिकता रहती होती है । रायनविण्टीकी पहाड़ी जमीनमें इसकी कमन पच्छी होती है । इस देशमें तिन प्रायः चल्याय गण्ययुक्त सिद्धि किनारे किनारे जाता है । काना तिन हो यहाँ अधिक उपजता है । गरम जल द्वारा इसकी भूमि पलन कर बाजारमें धनते है । यहाँ ५ मेर तिनमेंमे २ मेर तेन निकलता है ।

संग - मरस हल्की मरामें तिन पच्छा होता है । इस देशमें पतनी महीकी तरह पाच्छादिन धानके ऊपर तिन बोया जाता है शौर उपजता भा गुण है । प्यार, उरद, मूंग, चादिके साथ मिला कर इसे बोते है । एक ही दो बार जोतनेमे गेत तैयार हो जाता है आगत भाद्र मासमें इसे धानमें मिश्रित कर प्रति बोधे १५ मेर बोते है । उत्तरी वायुके लगनेमे फूस भङ्ग जाता है ।

मोठगोवा - यहाँ प्यार, मीठा, मूंग चादिके साथ मिला कर बोया जाता है । वर्षाकालमें इसकी रोगी होती है । जल सींचनेकी व्यवधा रहनेमे दूसरे समय भी हो सकते है । वर्षाके बाद जलसे रोगकी एक बार जोत लेते शौर तब मही या किसी दूसरे पनाजमें मिला कर इसे बोते है । बोनेके बाद एक बार फिर जलमे जोत देना अच्छा है । प्रति बोधे तीन पाय बोझ लगता है । यदि पीटे घने जगे हो तो कुछ उराल डालने चाहिये । जन-साधारणमें प्रयाद है, कि जोके फरक फरक बाने, तिनके घने बीने, भँमके वछटा जनने तथा स्त्रीके कन्या जननेमें जो कष्ट होता है, यह कष्टा नहीं जाता । यहाँ केवल काना तिन हो उपजता है । इस देशमें विजलीके अधिक कड-कनेसे खेतोंमें बहुत नुकसान होता है । तिन काट कर उमके उठनाके सुत्रकी एक शौर करके टेर कर रखते है शौर ऊपरमे कोई भारो चोज टवा देते है । ऐसा

करनेसे तिनके बीमो नरम हो जाता है । बाद पोलीकी एक एक करके रगोंमें गुंग कर धूममें खीमे पच्छा होते है । ताँचे प्रपटा भी बिडा रहता है । धूममे जब होयो पच्छ जाता है, तब तिन काँचे भर का कपड़ेमें जमा हो जाता है । इस देशमें १५ मेर तिनमें मे २ मेर तेन निकलता है । गिनता घुषा उठेन जलाने के काम जाता है ।

बागव - यहाँ तिनका खेतीमें द नहीं है । जे बादो जमीनमें यहाँ तिन उपजता होता है । इसी कारण बटेनके समीप तिनका रोगी कुछ अधिक होता है । यहाँ इसे प्यारके साथ मिला कर बोते है, प्यार, तिन तरद प्यारका रोगी बीमो है, उमा तरद इसकी भी । तिन याद कर धूममें गुणाते है । पच्छा तरद गुण जाने पर होयो याद सेते है शौर फलकी किंज देते है । यहाँ धीमे मेर तिनमें एक मेर तेन मिलता है । रमीके तथा दोपने यहाँ तेन काम जाता है । इस देशमें तिनके खेतीमे एक प्रखरका कोला लगता है । तिनके एक बार मरस में फिर बोनेका बनावाना मुश्किल हो जाता है ।

दुधमेर - इस देशमें लण्य शौर गेत तिन उपज होता है । लण्य तिनको 'तिन' शौर गेत तिनको 'तिलो' कहते है । ताँगेको चपेला तिन देखीमे पकता है । तिनकी प्यारके साथ शौर भाँगीकी जयामके साथ मिला कर बोनेमे कमन पच्छी होयो है । तिनके तेनका चपेला ताँगेका तेन रखन कार्यमें अच्छा मास गवा है । शिमानयके नाँचे टैरा, पोनिभीत, बस्ता, गोरगपुर चादि म्यामीने तिनको खेती साधारण तोर पर होता है, पर दुधमेरपच्छमें अधिक है । इलाहाबादमें भी तिन उपजाया जाता है । इस देशमें इसको गिनती गरीकमें को गई है । मोसुममें यह बोया जाता शौर कातिक चगहनमें काटा जाता है । जलकी जमीनमें यह गृध होता है । दुधमेरपच्छमें इनकी पानी मही इसके निचे उपयोगी है । तिनके बाद उम जमीनमें निकट कीटों या फुटकीके मिथा शौर कुछ नहीं उपजता । तेन बार खेतकी भनी भाँति जोत कर कपास प्यार चादिके साथ इसे मिला कर बोते है । किसान अपनी इच्छानुसार तिन मिलाते है । सिर्फ तिन

प्रति बीजे २३ घेर लगता है। तिसै एक जाने पर उसे खाट खेति घोर चटिया बाँध कर रूपमें सुजाति है। उम्र बोमी षट् जातो है तत्र तिस भरने लगता है खाट उसे परिष्कार कर पत्तन रम्य देती है। तिसका संस्मर जगामि के काममें पाता है। यममय हृष्टि जो वा प्रसूत लगति ममक जो, तो इसका बहुत सुखसाग होता है। पाश्चिममें हृष्टि बोनेके तो यह फसक बिलकुल जो नहीं बगती। ज्वार वा ज्वारजके माय बोनेके प्रति बोने पाध मन तोम घेर घोर यदि प्रकृत बोवा जाय तो १३ मनसे २ मन तक उपजता है।

विश्वप्रदेश— यहाँका तिस एक प्रधान फस है। यह जिलेमें इसको खेती होती है। मध्यप्रदेशों जिलेकी जमीन तिसके लिए बहुत उपबोमी है। इस जिलेमें प्रति पठारक दिन तिसका खेत घींचा जाता है। साढ़े बार मसोनेमें तिस पकता है घोर प्रति बीजे २३ मन उपजता है। नोयहर जिलेमें तिस आवाड़ मासमें सरस लकड़ जमीनेमें बोमा जाता है। हर एक खेतमें ७८ बार जस देना पड़ता है। यहाँ पीच मसोनेमें तिस पकता घोर प्रति बीजे बीस घेर उत्पन्न होता है।

बम्बई प्रदेशके गुजरात, आन्ध्रदेश, पूना, नासिक, ज्वार-टक जोड़क, रसमिरि प्रादि जगामिं तिसकी खेती होती है। कनाड़ा में पश्चिम वर्षा होनेके कारण यहाँ बिलकुल तिस नहीं होता। उक्त जगामिं ज्वार घोर रवेत दोमी प्रकारके तिस उपजते हैं। यूपर तिस केवल गुजरातमें जो होता है। यहाँ बाजराके भाव मिला कर इसे बोते हैं। काठियावाड़ प्रदेशमें खैर, लकड़ घोर रस तीनों प्रकारके तिस मारि पाते हैं। खेत तिसका किन पन्थ जिलेके तिसके सुझाद घोर पश्चिम तैलक होता है। यहाँ सुर्घिया तिस काफी उपजता है।

मद्रास प्रदेशके गोदावरी जिलेमें तिसको खाट कर चटियामें बाँधने घोर ताड़के पत्तीके बन्ध कर पाक दिन रूपमें रस जोड़ते हैं। पोडे चटियाँको झाड़नेके बारह पावा तिस नीके मिर पड़ता है घोर जो कुछ रक जाता है वह भी दो तोन दिन तक यूप जानेके बाद मड़ जाता है। कोयमतीर जिलेमें क्वा टनदस घोर क्वा सुपी जगामिं समीमें तिस उपजता है। यहाँ 'बार'

घोर 'टह' यँहो जो प्रकारके तिस मिलते हैं। प्रथम बारका तिस जो बम्बुट होता घोर पोषकत्वमें उपजता है। उत्तर परुषाडु जिलेमें बड़े घोर कोटे-के मेटवे दो प्रकारका तिस होता है। यहाँ काठोसे पीठ कर तिस निकालते हैं। 'रस' टोशमें ४ घेर तिसमें १ घेर तिस निकलता है। यहाँ समो प्रकारके तिसके तिसके सेवका जो पादर यमेष्ट है। यह तिस रमोईमें तथा समो कामोमें बावजूत होता है। यद्यपि पश्चिमाय तिस यूरोपको भेजा जाता है।

मद्रिचुरमें 'बोम एडु,' 'बार एडु,' घोर 'गुर एडु' येही तीन प्रकारके तिस उपजते हैं। तिसके पीधो जो क्वा कर जो रास बनतो है उसे वे खाटकी तरह खेतमें पावते हैं।

तिरुवा म्परथाव — तिसका बावधाय बहुत बिष्टत है। बङ्गाल घोर आधामिं जो तिस पैटा होता है जमनेके कुछ तो बङ्गालमें ही खप जाता है घोर पश्चिमाय मद्रास भेजा जाता है। मद्राजमें जो कुछ उप जाता तथा बङ्गालके जितना मो पाता है उसमेंसे बारह पावा इक्का इण्डोईको रफतनी होती है। इसीके मद्राजमें तिसका बावधाय यूप चकता है। पयोधा घोर सुभयदेशको उपजनेके कुछ तो बम्बई घोर कुछ बङ्गालको भेजा जाता तथा पश्चिमाय जसो देईमें खर्च होता है। मध्यभारतका समस्त तिस बम्बई भेजा जाता है। बम्बईमें जो कुछ उपजता तथा जो कुछ पामदमी जातो है उसमेंसे पश्चिमाय उद्यो देईमें खर्च होता है घोर जो जाता है, वह यूरोपका रचना होता है। मिन्मुदीय या पश्चिमाय तिस यूरोप जाता है। यूरोपमें तिसके कोट मॉयिन्, पस्लिम मॉयिन् प्रादि तैयार हो कर, खिर रच देयमें पाते हैं। त्रिपुराके पार्बन्धप्रदेश तथा काप्रमोर प्रदेशके भी तिस भारतवर्षमें पाता है।

तिसको मूषो मथियो प्रादिको निखाई जातो है, पन्थाव तथा निच बङ्गालके गरीब मनुष्य मूषोको चाटेमें मिना, पोडो बना कर खाते हैं। पश्चिममें इसको बिकता है।

तिरुवा मेवन्गुन - तिस परंतुरोगका रामबाण है। रज्जुका जो घर्ममें, तिसके पानीमें मन्थन मच कर

उसका प्रलेप देनेसे रोगी बहुत जल्द आरोग्य हो जाता है। तिलका लड्डू, तिलकुट, तिलका बड़ा आदि तिल-द्रव्य अर्थां रोगीका पथ है। तिल और तिलका तेल आमाशय तथा मूत्र-रोगमें बड़े कामको चोज है। यह स्निग्ध-कारक है। रज-रोध रोगमें तिलका चूर्ण कमर-भर गरम जलमें डाल कर यदि उसमें रोगी खुड़ा रहे, तो वह बहुत जल्द आरोग्यता प्राप्त कर सकता है। तिल-सिद्ध जलमें चीनी मिला कर रखनेसे खाँसी जाती रहती है। तिल और तोमै-सिद्ध जलसे कामोद्दीपन होता है तथा बन्धादोष भी दूर हो सकता है। अग्नि-दग्ध स्थानमें तिल पोस कर लगानेसे चंगा हो जाता है। तिलका फूल चक्षुरोगका अन्वर्थ महीष है। मृदु विस्त्रिचिका, आमाशय, दमा, पौनस, श्वेत-प्रदर और मूत्र नालीके रोगोंमें इसकी पत्तियोंकी भिगी कर जलके साथ खानेसे बहुत उपकार होता है। दो ताजी पूर्ण-पुष्ट पत्तियां लगभग छेड़ पाव जलमें डाल कर कुछ समय तक छोड़ देनेसे वह जल पीने योग्य हो जाता है। यदि पत्तियां सूखी हों, तो गरम जल देना उचित है। भारतवर्षमें तिलको पत्तियां छोटी होती हैं, अतः वे बहुत लगती हैं। डाक्टर एमर्स कहते हैं (मार्च १८७५) कि 'मैंने तिलकी पत्तियोंकी भिगी कर उसका पानो जितने आमाशय रोगोंमें प्रयोग किया है, सभी आरोग्य हो गये हैं।' गर्भिणीके लिये तिल अप्रय्य है। इससे गर्भस्त्राव होनेको सम्भावना है। तिलको पत्तियोंको जलमें भिगी कर यदि वह जल बालमें लगाया जाय, तो बालको श्रेष्ठि होती है। भुने हुए तिलसे अन्तमें शिथिलता आ जाती है।

कलमें चीनी प्रसृत करते समय चीनीके मैल काटनेके लिये तिल व्यवहृत होता है।

आयुर्वेदके मतसे—तिल चार प्रकारका होता है, क्षीण, शुक्ल, रक्तवर्ण और एक जो छोटा छोटा होता है, उसे जंगलो तिल कहते हैं। तिलके गुण—कटु, तिक्त मधुर-कषाय-रस, गुह, कटु, मधुर, विपाक, स्निग्ध, उष्ण-वीर्य, कफहन, पित्तनाशक, बलकारक, बालका, हित सम्पादक, शीतलस्पर्श, चर्मके, हितकर, स्तन्यवर्धक, व्रण हितकारक, और दातीका दृढ़तासम्पादक, शैपता मूत्रकारक, मलघोषक, वायुनाशक और अग्नि तथा

बुद्धिप्रदायक है। उक्त चार प्रकारके तिलोंमेंसे क्षीणतिल मधुमे उत्तम, शुक्लतिल मध्यम और रक्तवर्णादि तिल प्रथम माना गया है। (मायप्रकाश)

जंगलो तिलको उपतिल कहते हैं। इस तिलके गुण—अनद्वार, बालको हितकर, कषाय, उष्ण, तोक्ष्ण मधुर, तिक्त, बलकारक, कफ, वात, व्रण और कण्डूनाशक, कान्तिप्रद, वस्त्रि, अभ्यङ्ग, पान, नस्य, कर्ण शो। पलि-पूरणमें हितकर है। (राजनि०)

तिल तेल—मरसोंको नाईं तिल भी घानोंमें फट कर तेल निकलता है। तिलतैल स्वच्छ, परिष्कार और तरल होता है। इसका वर्ण मलिन पीताभ रक्त है। इसमें गन्ध नहीं होती, पुराना होने पर भी यह न तो गाढ़ा होता और न सड़ी बूड़ो निकलती है। भारतमें तिल-तैल रस्यनमें. गात्र मर्दनमें तथा दोषमें व्यवहृत होता है। देशो सावुन भी तिलतैलसे बनाया जाता है। यूरोपमें यह केवल दोष और सावुन बनानेके काम आता है। वाशमके तेल और घोंमें तिलका तेल मिला रहता है। भारतमें जो यूरोपीय 'अलिभ आयिल' भेजा जाता है, उनमें अधिकांश शुद्ध तिलका तेल हो रहता है। चीनमें वादाम, तिल और कुसुमफूलकी एक साथ पीस कर एक प्रकारका तेल बनाया जाता है, जिसे 'गोरा तेल' कहते हैं। सभी प्रकारके फुलेल तिलके तेलसे हो बनते हैं। तीन गुण फूल और तीन गुण तेलको एक साथ मिला कर बोटलमें भर रखें और बोटलके मुँहको कागसे बन्द कर धूपमें कुछ काल तक छोड़ दें, तो एक प्रकारका सुन्दर फुलेल तैयार हो जाता है। अथवा एक सूत फूलके ऊपर तिल और फिर द्विगुण फूलके ऊपर तिल रख कर उसे फूलोंसे ढके रहें, तो थोड़ी देर बाद तिलमें फूलोंकी गन्ध आ जाती है। अथ इस तिलसे जो तेल निकलेगा, वह बहुत सुगन्धयुक्त होगा। व्यवसायी लोग अतरमें तिलका तेल मिला कर अतरकी दरमें बेचते हैं।

तिलतैलका भेषज गुण—सभी प्रकारके जलमेंमें यह व्यवहृत होता है। खोट ऑयल वा अलिभ ऑयल जिस तरह व्यवहृत होता है, यह भी उसी तरह व्यवहृत होता। मेहरोगमें तिलका तेल बहुत उपकारी है।

बन्धी धरोरमें जब एक प्रकारका नीम वा अष्टबन्धु रोग उत्पन्न होता है, तब डाक्टर नीम गहरनीके छर्के बाहर निकालनेको सप्याह देते हैं। बिन्दु यदि उसमें तिनका तैम प्रथम किया जाय तो वे सब नरम हो कर मोथे गिर पड़ते हैं और प्रत्येक कटिही जड़में सु लो पड़ कर फट जाती है। पोखे तिसके लेनेसे यह पाराम हो जाती है। जो तिस मूसो रहित तिनके निश्चलता है, यह बहुत लच्छुट होता है। कच्छ तिन प्रवेक चर्म कार्यमें व्यवहृत होता है। तिनका दान सेना पाय है। सेखिन तिनदानसे परिय पुष्क प्राप्त होता है।

जो ब्राह्मण प्रातःकाल उठ कर तिस दान करते हैं वे सब प्रकारके पापोंसे मुक्तता पाते हैं। प्रेतोद्देश्ये तिनदान किया जाता है। जो प्रेतोद्देश्ये ईमगमं तिनदान करते हैं, उनसे पिण्डमय तिस स खलक वर्ग जगत्को जर्म बाध करते हैं। ईमगमं तिस दान पाय एकोद्दिष्ट स्वास्ति दिन किया जाता है।

पशोबान्तासे द्वितीय दिन और पाचब्राह्मे दिनके पहले ग्लिन-दान कर पोखे दूपरे दानादि चिजे खाते हैं एत निम्नदानको जो ब्राह्मण ग्रहण करते हैं वे अपवित्र समझे जाते हैं। इसी कारण यह दान महाब्राह्मण (चय दानो) किया करते हैं। नाश देवी।

तिससे पिण्डमयका तपंच किया जाता है। बिन्दु समो दिन तिस तपंच करना निषिद्ध है। महादि तोर्षे में और प्रंतपक्षमें (प्रतिपक्षे महात्मया अमावस्य पर्यन्त) तिस-तपंच कर नशते हैं। तपंच देवी।

अशुभदिने दिन जो तिन द्वारा जान तिन-मिश्रित, तिसहोम, तिसप्रदान तिनवपन और तिसोदत्तं च करते हैं, वे चिरायु होते तथा दुग्धसे सब बह्य जाते रहते हैं।

रातको न तो तिस खाना चाहिये और न तिन मियक कोही प्रबु है। सप्तमो नवमे, चतुर्दशो चतुसो चमा नभ्या पूर्णिमा और स क्वास्ति इन कौरे एक तिथिटीमें तिसका सेक समाना निषिद्ध है।

२ तिनकासक, दिग्दक्षित तिन्नाकार चिह्नविधेय, काले रङ्गका छोटा दाम जो धरोर पर होता है। सातुद्दिक्ष तिन्नीके। ज्ञानसे अनेक प्रकारके

शुभायुक्त, बतकामे जाते हैं। जब तिस यदि पुत्रवधे धरोरमें दाहिने ओर ओर छोडे धरोरमें बाई ओर हो तो शुभ है। ब्रह्मिषोका, तिस मौमाय्यसुचक अमश्रु जाता है। १ तिसकुम्भजल प्रसाध, तिनके बराबरको कोई वस्तु। ४ एक प्रकारका मोदना जो कासो बिन्दोके आकारका होता है। किया मोमासे तिस इसे अपने माथ टुब्बो पादिमें गुदातो है। ५ पांच बी पुतनीके बोधो-बोधको मोच बिन्दो। इससे घामने पड़ी हुई वस्तुका छोटासा प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। तिस गनो (हि० ओ०) एक प्रकारको मिठाई जो धोने में तिसको दान कर बनाई जाती है।

तिस गटा (हि० पु०) हिमालय पर्वतसे लगा कर नेपाल पश्चात् तथा पञ्चगानिश्तानमें जोमिवाला एक प्रकारका पेड़। इसको बहुरो इमारतोंमें खनतो है तथा इस ओर भ्रम्याणका उला पादि बनानेके काममें खातो है। तिस ना (हि० पु०) प मरेजो पौत्रके देयो सिपाही। पक्षी पक्षम ईदद इ द्विपाय धनोने मन्त्राजमें खिला बनवा कर बहने तिबन्धियोंको अपने सेनामें भरतो किया का। तमोने च मरेजो पौत्र इ देयो सिपाही मान तिस ग कश्तानि स्त्री।

तिस गना (हि० पु०) तैमज्ज देय। तिसहो (हि० वि०) तिसह्वननाका रहनेवाला, तैसह। तिसक (व० ओ०) तिनवत् तिसपुष्कर आकृति के-क। चन्दनादि द्राप लनाट पादि द्वादश पत्रों पर चारबोस चिह्न, नव चिह्न। जिन गोसे चन्दन और बेजारादि ननाट, बचकल, बाहु पादि पत्रों पर मोमा पत्रका साम्यदायिक सङ्केतके लिये लगाया जाता है। चकलो बोधोमं—इसे टोका मो कहते हैं। पर्याय—तमाचपत्र, चिचक और विधीयक। (अन०)

द्वादश तिसक अगानिधी विधि—प्रबुके के स्यवको जानके बाद बिन्दुके द्वादश नाम लेकर अपने द्वादशपत्र पर तिसक समाना चाहिये। (इतिविधि०)

सकाट पर तिसक समाने समय सेवकका नाम लेना चाहिये। इसी तरह चक्र पर नारायण, बचकल पर माधव, कण्डूकूप पर योगिन्दु दक्षिण कुदिमें विष्णुबाहु पर महासुदन, अश्वरमें विविजय, वामपाशमें कामल,



वाम बाहु पर ओधर, वाम कंधरमें हृषीकेय, पृष्ठ पर पद्मनाभ और कटि पर टामोटरका नाम लेकर तिलक लगाया उचित है। (१६५०) तिलके लगाने समय ननाट पर प्रथम उर्ध्व पुण्ड्र, धारण करना चाहिए। फिर ननाट पर क्रमशः तिलक लगाना चाहिए। (१६५०)

सम्प्रदायानुसार सर्वार्थसिद्धिके लिए मस्तक पर करीटमन्त्र (न्यासपूर्वक) धारण करना चाहिए।

करीटमन्त्र—“ओं श्रीक्रीटनेयूरहारमकरकुण्डल-चक्र-शंभ-गदा-पद्महस्त पांताम्बरधर श्रीवत्स्यकिन्-पद्मःस्यल-श्री मूर्ति-प्रदित्त-स्वाम्योविशीर्षि-सिद्धगयतद्वादि-रवेनेने नमो नमः।”  
(हरिमन्त्रिका ४ वि०)

ननाटाटि हादश अङ्गोंके तिलक हरिमन्दिरके नामसे प्रसिद्ध है।

वाम पक्षः, निदान्त, शृङ्ग और स्कन्ध, इन स्थलों पर शङ्ख चिह्नित तिलक करना चाहिए। इसी प्रकार दक्षिण निदान्त आदि स्थल पर चक्र-चिह्नित तिलक लगाना चाहिए।

ऊपर लिखे अनुभार हादश अङ्गों पर विष्णुका नाम लेकर तिलक लगानेवाले वैष्णवकी प्रति दिन प्रेम और भक्तिकी प्राप्ति होती है। (हरिमन्त्रिका)

जो वैष्णव गलेमें तुलसीकाष्ठकी माला धारण करते, हादश अङ्गों पर पूर्वोक्त प्रकारसे तिलक लगाते और ओक्षण पर दृढ़ भक्ति रखते हैं, उनके द्वारा जगत् आशु पवित्र होता है।

मध्यदेश-छिद्रयुक्त ऊर्ध्व पुण्ड्र, अथ तिलक हरिमन्दिरके नामसे प्रसिद्ध है। यह तिलक नासिकामूलसे लेकर शिरोमध्यगत पर्यन्त लगाया जाना है।

ऊर्ध्व पुण्ड्रके बीचमें पीली रेखा होने पर, वह रामानुजतिलक कहलाता है। (१६५०)

जो लोग रामोपासक हैं, उनके तिलकमें यदि ऊर्ध्व-पुण्ड्रक तथा मूत्रयुक्तके बीचमें विन्दु हो तो उसे हरिके मन्त्रादि श्रवतारोंको उपासकोंका तिलक समझना चाहिये।

ब्राह्मणोंको ऊर्ध्व पुण्ड्रक करना चाहिए, जिनके लिए भो एसी ही व्यवस्था है वैश्यों और शूद्रोंको मण्डलाकृति तिलक लगाना चाहिए। जो ऊर्ध्व पुण्ड्रके

बीचमें छिद्र नहीं करते हैं, वे नराधम हैं; एवं उनके ननाट पर यह तिलक कुत्तेके पैरके समान है। यदि किसी हिजातिके मस्तक पर इस प्रकारका तिलक दोष पड़े तो क्षणिके नामका स्मरण कर वस्त्रमें मुँह टक लेना चाहिये।

ननाटके दक्षिणमें ब्रह्मा, वामपार्श्वमें महेश्वर और बीचमें विष्णु, वाम करते हैं, इसलिये बीचका अंश शुभ्य रखना चाहिए। गोल, टेटा, छिद्रहोन, छोट्टा, लम्बा और विस्तर, ये पङ्क-लक्षणयुक्त तिलक निरर्थक हैं।

त्रिपुण्ड्रका प्रमाण दोर्व छोटा; नामिकाके मूलसे लेकर ब्रह्माण्ड तक, शूद्रके लिए इसका प्रमाण एक अङ्गुल और ब्राह्मणोंके लिए चार अङ्गुल है। नासिकको तीन भागोंमें विभक्त करने पर जो भाग होता है वह अर्थात् मूत्रयुक्तके मध्यभागके अर्धःस्थानको विहानेनि मूल कहा है।

ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ और यतिगण जो ऊर्ध्व पुण्ड्रक करते हैं, उसका नाम है हरिमन्दिर। वैष्णव विप्र, भूपाल, वैद्य, शूद्र और अन्तर्जोके ऊर्ध्व पुण्ड्रकी भी हरिमन्दिर है। नर वा नारी यदि क्षणपटमें विलगनासेकी इच्छा करें, उन्हें यह पूर्वक तुलसी माला और हरिमन्दिर (तिलक) धारण करना चाहिए। टण्डाकार दो रेखायें मूलदेशमें कोणक (अर्थात् कोणयुक्त और मध्यमें छिद्रयुक्त होने पर उसे ऊर्ध्व पुण्ड्र कहा जा सकता है। (१६५०)

अधोमुख पद्मकलिकाके आकार, मध्यदेश छिद्रयुक्त और दो युग्म रेखाएं होने पर, उसे ऊर्ध्व पुण्ड्र-तिलक कहते हैं। तीर्थ-सृत्तिका, यज्ञकाष्ठ, विल्क, अश्वत्थ और तुलसी मूलको, सृत्तिका गोप्यदसृत्तिका, गङ्गा-सृत्तिका, महानिम्ब, तुलसीकाष्ठ-सृत्तिका, कस्तूरी, कुङ्कुम फला, छिन्दूर रक्त चन्दन, गोरोचन, गन्धकाष्ठ, जल, भगुर, गोमय और धात्रीमूलके द्वारा संध्या आदि सम्पूर्ण कार्योंमें तिलक लगाया जा सकता है।

प्रति दिन स्नान करनेके बाद तिलक लगाना सभी वर्णोंका कर्त्तव्य है। नित्य, नैमित्तिक, काम्य ये तीन प्रकारके कर्म तथा पैवादि कर्म बिना तिलकके निष्फल होते हैं। तिलक और दर्भके बिना स्नान, संध्या

पद्मपत्र, वैज्र पौर होमादिभूमि मन्त्र निष्पन्न है, ब्राह्मणों को अर्धपुण्ड्र, सन्नियोंको त्रिपुण्ड्रक ब्रह्मोंको चर्धपुण्ड्रा स्तनि पौर शूद्रोंको वसुंसाकार तिलक करना चाहिये ।

( भाद्रिकपत्रम् )

अर्धपुण्ड्र, त्रिहोत्रे, त्रिपुण्ड्र, मन्त्रसे पौर तिलक चन्दनसे करना चाहिये । ( भाद्रिक ) को चर्धपत्र पौर पनाचारी हैं तथा मन्त्रमें पापाचरण करते हैं ये भी त्रिपुण्ड्र क तिलकके धारण करनेसे समस्त पातकीने मुक्त हो जाते हैं । अर्धपुण्ड्र का धारण चाहे जहां मरे पौर मर कर पण्ड्या हो लीं न बुपा हो वह कर्षकोर्धमें जाता है । ( पपपु० )

आइकजाको वैश्विक कार्यं पणोम् आइ करते समय चर्धपुण्ड्र, त्रिपुण्ड्र, वा चन्द्राकार तिलक करने आइ वा वैश्विक कार्यं न करना चाहिये । ( विप्रम० )

वेदनिष्ठ ब्राह्मणोंको अर्धपुण्ड्र, त्रिगुल, वसुंसाकार रत्न वा चर्धपुण्ड्रादि चिह्न नहीं धारण करना चाहिये । वेदनिष्ठ ब्राह्मण पादि पश्चान्ताम्य इन चिह्नोंको धारण करे, तो वह पचम्य हो पतित होया, इनमें तनिक भी सन्देह नहीं । ( निर्धेयलि० सुव० )

तिलकनेवा वैश्वकीका एक सुख्य वाचन है । ये लोग मनाटादि हादम पत्रों पर मोषोचन्दन पौर अन्य अतिशया द्वारा मना प्रकार तिलक लगाया करते हैं । इनके तिलकद्रुषींमि दारुकाका मोषीचन्दन हो मर्षपिपा प्रयुक्त है । च्चटादि को अतिशया भी तिलकके लिए उत्कृष्ट कहो गई है । \*

परम मङ्गिपूर्वक च्चटादिहं उदको अतिशया से कर अर्धपुण्ड्रक तिलक धारण करना चाहिये । पिपा करनेसे हरिहं च्चय मोक्षको प्राप्ति होती है । जोर्षेयन गन् महासुखसे नि कर किम पर्यन्त दो अर्ध वैश्वार्थं अहित करते हैं पौर उन दोनों वैश्वार्थोंके नासामूलक, उ समसमात्त अन्य एक म्मू म्मजगत वैश्वार्थे द्वारा य युयु हो जाते हैं तथा उन दोनों अर्धपुण्ड्रके बोधमें पोत भवना रत्नबर्धकी पौर एक वैश्वार्थ अहित करते हैं ।

इकसे निवा ये लोग हृदय पौर बाहुयों पर मोषी

चन्दनसे गृह चक्र, गण पौर पद्मका प्रतिकल्प चिह्नन किया करते हैं ।

गृह पादिसे मोषमें एक रत्नवर्धकी वैश्वार्थ रत्नो है जो मन्त्रीमन्त्रक समझो जाता है । चायोमन्त्रमें इन वैश्वार्थाचारोंसे विषयमें वृस प्रकार लिखा है,— ब्राह्मण, सन्निय, वैश्व पौर गृह वा अन्य कोई यदि शरीर पर गृह-चक्र पादि चिह्न अहित करे तो उन्हें देखते हो प प विमल होति हैं ।

बहुतोंके पाम इन तिलकोंको मङ्गुली वा चातुकी काप रहतो है । ये उभे हो पञ्चविधिय पर अहित कर शरीरको पवित्र बनाते हैं । कोर्ध कोर्ध उन्न चातुमय सुद्राको उत्तम करर्ध शरीर पर अहित करते हैं । परन्तु यह शास्त्रनिष्ठ है । इहवारदोयपुराचर्धमें लिखा है— यदि कोर्ध पृथप गृहपादि चिह्नको उत्तम करर्ध शरीर-रवे मनाये, तो वह पातामका मोम करता बुपा यत कोटि अन्धार्थम्ल च्चकासोनिमें रहता है पौर नरकमें जाता है । पृथे स्वच्छिडे म्मय वातचोत करनेसे वरक मोतना पड़ता है । \*

मोसम्भदायको तरु रामानन्दिदीर्घमें भी तिलकनेवा प्रशंसित है । परन्तु यह वे पणो पणमी अचिडे पनुशंर अर्धपुण्ड्रकी पनाचर्ती वैश्वार्था रूप पौर परिमाण कुल नियम कर देति हैं पौर प्रायः रामानुशंको भविषा कुल छोटा बनाते हैं ।

दास्यम्मे मोम तिलकनेवा पौर माका धारण नहीं करते । मुसकदासो मन्धदाय सखाट पर एक छोटी वैश्वार्थ अहित करता है ।

रामानेडी सम्भदायके मोम सखाट पर एक अंतवर्ध दोर्धपुण्ड्र लगाया करते हैं ।

सनरदि सम्भदाय पञ्चागु निमात भोग मोषोचन्दन की दो अर्ध पौर उसके बोधमें एक काता वसुंसाकार तिलक लगाते हैं ।

- ० "तवदि उत्तपुण्ड्रके विगचिह्नवसुंरुंर ।
- ४ तवपानचर्धनीपी च्चम्भका वम्भकोटिदिः ॥
- ७ दिव उत्तवाह्मार्थिभ्याधिकउत्तु इर ।
- ४ म्माम्भ पौर शशि वासविहृत्तपुंरुंरका इ"

\* इतिनिधि० इन नारकचम, इतिनिधि० २१ वां अ० ।

विटल-मङ्गल सम्प्रदायके लोग वैष्णवोंकी तरह ललाट पर दो श्रैतवर्ण ऊर्ध्व रेखा चिह्नित करते हैं।

वल्गुभाचारी सम्प्रदायके लोग ललाट पर दो ऊर्ध्व-पुण्ड्र बना कर फिर उसे नामामूलमें अर्धचन्द्राकृति करके मिला देते हैं, इन दो पुण्ड्रके बीचमें एक वतुलाकार रक्तवर्ण का तिलक बनाते हैं। इस सम्प्रदायके भक्तगण श्रीवैष्णवोंकी तरह बाहु और घचःस्थल पर गद्ग, चक्र, गदा और पद्म अङ्कित करते हैं तथा कोई कोई ज्याम-विन्दी नामकी काली मिट्टी अथवा अन्य प्रकारकी काली रंगकी धातु द्वारा अङ्कित वतुर्लाकार तिलक धारण करते हैं।

चरणदासी सम्प्रदायके लोग ललाट पर चन्दन वा गोपीचन्दनको एक लम्बो रेखा खींच कर तिलक करते हैं। उदासीन शैव ही वा वैष्णव, तिलक देख कर उन्हें सहजमें पहचाना जा सकता है।

वैरागी लोग नामामूलमें ले कर केश पर्यन्त ऊर्ध्व-रेखा और शैव लोग ललाटके वामपार्श्वमें लगा कर दक्षिणपार्श्व तक विभूतिसे तीन रेखाएँ खींचते हैं। प्रथमोक्त तिलककी ऊर्ध्वपुण्ड्र कहते हैं और शेषोक्तकी त्रिपुण्ड्र। वैष्णव ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाते हैं और शैव त्रिपुण्ड्र। उक्तलमें जैसे तिलकके पाठ्यकथमें अतिवडो और विन्दु-धारी आदि सम्प्रदायोंकी पहचाना जाता है, उसी प्रकार हिन्दुस्थानमें भी हरिव्यासी, रामप्रसादी, बड़गल आदिकी अनायास ही पहचाना जा सकता है।

निमात सम्प्रदायी हरिव्यासी लोग अन्यान्य अंशमें रामानन्दियोंकी भांति दो तिलकसेवा करते हैं, विशेषता सिर्फ इतनी ही है कि ये ललाटस्थ पुण्ड्रके बीचमें रक्तवर्ण 'त्र्यो' (ऊर्ध्वपुण्ड्रका मध्यरेखाका नाम 'त्र्यो' है) न बना कर भ्रू-युगलके बीच श्यामविन्दी नामक कृष्णवर्ण सृष्टिका द्वारा एक छोटी विन्दी बनाते हैं। श्यामविन्दीका अभाव ही तो गोपीचन्दन द्वारा शुभ्रवर्ण विन्दु बनाया जा सकता है। रामानन्दो लोग भ्रूयुगलके नीचे तथा नासिकाके ऊपर गोपीचन्दनका लेपन कर जो अर्धगोला कृति वा तदनु रूप एक प्रकारकी आकृति बनाते हैं; उसे सिंहासन कहते हैं। हरिव्यासी लोग इस तरह सिंहासन बना कर अर्ध-गोलाकृति रेखामात्र अङ्कित करते

हैं। उम रेखाके उभय प्रान्त ललाटस्थ ऊर्ध्वपुण्ड्रके निम्न-भागमें लगी रहते हैं। भारतवर्षके दक्षिणपार्श्वके अन्तर्गत सुगोपट्टन हरिव्यासियोंका आदि वामस्थान है। रामानन्द सम्प्रदायी रामप्रसादी लोग भ्रूके बीचमें काली विन्दी न लगा उममें कुछ ऊँचे (ललाटके बीचमें) सफेद विन्दु लगाते हैं। यह विन्दु हरिव्यासियोंकी अपेक्षा बड़ा होता है। इस तिलकको वेणोतिलक कहते हैं। इनमें ऐसो किम्बदन्तो प्रसिद्ध है, कि मोतादेवोंने अपने हाथमें राम-प्रसादके ललाट पर यह तिलक अङ्कित किया था। बड़गल नामक रामानन्दसम्प्रदायके वैष्णव ऊपर निखे अनुमार विन्दु न करके रामानन्दियोंकी तरह ऊर्ध्वपुण्ड्रके बीचमें रक्तवर्ण 'त्र्यो' अङ्कित करते हैं। परन्तु उनको तरह नामिकाके ऊपर और भ्रूके नीचे सिंहासन नहीं बनाते। इसी सम्प्रदायके लम्करो नामक वैष्णव रामानन्दियोंकी भांति सिंहासन बनाते हैं, पर उनकी तरह रक्तवर्ण नहीं बल्कि श्रैतवर्ण।

चतुर्भुजोंका तिलक रामानन्दियोंके समान होता है, सिर्फ ललाट पर 'त्र्यो' नहीं होता। 'त्र्यो'का स्थान खाली रहता है। वैष्णवधर्ममें तिलकको बड़ी महिमा वतलाई है। बङ्गालमें भिन्न भिन्न वैष्णव सम्प्रदायोंमें विभिन्न प्रकारके तिलक प्रचलित हैं। नित्यानन्द प्रभुके परिवारमें वेणुपत्राकृति, अर्धत प्रभुके परिवारमें वटपत्राकृति, आचार्यप्रभुके परिवारमें तिलपुष्पाकृति, गौरीदामके परिवारमें रसकलिकाकृति इत्यादि नाना प्रकार तिलक प्रचलित हैं। ये सभी तिलक नामिका पर लगाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उपयुक्त वैष्णव-परिवारके लोग ललाट पर भी नाना प्रकारके ऊर्ध्वपुण्ड्र देखनेमें आते हैं।

गोपीचन्दनमें सफेद रङ्ग, श्यामविन्दी नामकी मिट्टीमें काला रङ्ग तथा हल्दी, सुहागा और नौवुका रस मिला कर पीला और लाल तिलक लगाया जाता है। इस (शेषोक्त) तिलककी उपादानमें सुहागाका अंश अधिक होनेसे रंग लाल हो जाता है, 'नहीं' तो एक तरहका पीला रंग हो जाता है।

२ सौवर्चल लवण, मोचर नमक। ३ कृष्णवर्ण सौवर्चल लवण, काला मोचर नमक। ४ राजसिंहासन पर अधिरोहण, राव्याभिषेक, राजगद्दी। ५ विवाह-सम्बन्ध

निर करनेको एक प्रथा वा रिवाज बिने टोका कहते हैं। इसमें अन्त्यापसके लोग बरके लखाट पर दधि चघत पाटिका निम्नत जगती और उनको साथ कुछ द्रव्य मो देते हैं। १ क्रियो का एक गहना जो मांसे पर पहना जाता है, टोका। ० छोम, पीठको तिन्नो। ८ त्रियो पन्थकी पर्वस्यक टोका वा म्याफ्या।

( पु० ) ११ मोड्डच, मोड्डका पीड़। १ मन्वजउच प्रथमा। १२ रोयभित्त, तिलकारक रोम। १३ अयभेद, एक आतिहा जोड़ा जोड़ेका एक भेद। १४ पयन्तउच विगिय, एक प्रकारका चण्ड, पोतकके पीठका एक भेद।

१५ पुण्याचविगिय पुष्पागको आतिहा एक पीड़। काण्ड काट कर रोपनेके अथ मृगः कोवित होता है। बनका अतुमें पुष्पाटिके लगनेसे इसमें अपूर्व सुन्दरता या आतो है। इससे पुण्य जन्तेके आकारके होते हैं। मोमाकी इतिकाे लिए इसका पीड़ बसोबनिं जमावा जाता है। इसको जाल और मकड़ी पौषके काम आता है। पर्याय—विगियक, तुलमच मरु, पुण्ड, पुण्डक निरपुमेके बिबरह, दन्धरह, अन्धोव तदुकोकदाचकाम, वाचकतुन्दर, दुग्दह, भाग विभूपयच, पुषाग ईचक, चुरक, भोमान् पुषव, जय पुषक। ( तात्रि० नात्र० )

मुच—यह पाकेमें कट्ट, घात, पिच और अयमायक, बक, मुदि और भेद-कारक हृदय और लहू होता है। इसको जाल—अयय, कय, सुल्ल, दन्धोप हामि योच, मच और रजहोव-मायक है।

१३ कुडकविषोच, कुडकका एक भेद। इसके प्रयोग करके पक्षोप चरते होते हैं। ( संकेतचोकर ) १४ मृजाभार।

( त्रि० ) १० अँह, शिरोमचि बिडी अमुदायका जोड़ व्यति। ( भाष ३।११ )

तिष्ठक—लोकमान्य बालमन्नाथर तिलक। मन्नाथ-द्वितीय सर्वजन-मान्य सुप्रसिद्ध टिप्पणायक। आचार्य जनता एके "तिष्ठक मन्नाथ" कहा करते थे।

१८११ ई०में दक्षिण बिन्नागन आन्ध्रप्रदेशमें तिलक का जन्म हुआ था। चाणके पिता स्वर्गीय गङ्गाधर राम चन्द्र तिलक परसे रसगिरि-विद्यालयके अन्ततम सहकारी

शिष्ठक थे। बादमें वे दाना और पूनाके विद्याविभागके सहकारी डिप्टी-रिजिस्ट्रार नियुक्त हुए थे। विद्यकका कार्य करते समय गङ्गाधर रामचन्द्र पन्थक लोक प्रिय हो गये थे। उन्होंने व्याकरण तथा त्रिकोणमिति-सम्बन्धी कई पुस्तकें भी लिखी थीं। बाळगङ्गाधरने अपने पिताके पान से मचितकी विद्या प्राप्त की थी और इस विषयमें वे इतने निहडप्र हो गये थे कि सोसक वर्षकी उम्रमें पिताको मो कबा दिया करते थे।

पिताकी मृत्युके चार मास बाद, १८०२ ई०के अन्तमें पाप मैट्रिक परीचामें उत्तीर्ण हुए और फिर पूनाके डिप्ट-कलेजमें अध्यापन करने लगे। १८०५ ई०में पाप की० ए०में पागर हो कर पाय हुए। १८०६ ई०में अन्ध-विद्यविद्यालयको फाईन-परीचामें उत्तीर्ण हो कर आपने एक एक० को, को उपाधि प्राप्त की। फाईन कांसा पढ़ते समय परसोकगत मि० पागरकरके पापको मिदता हो गई। इन दोनों मिदतिं मिश कर निहय विद्या कि "इसमेंके कोई मो सरकार को भोकरी नहीं करेगा। एक राज्ञोय ( वै-सरकारो ) विद्यालय वा महाविद्यालय ( कालेज ) कीत कर जहोको अस्तित्वे लिए आत्मसमर्पक करेगी। दीयके होनहार मुचकोंको कम खर्चमें यवायोच विद्या दी कर उन्हें मनुष्य बनानेका प्रयत्न करेगी।"।

इसो समय मि० बिन्धुलक्ष विपक्षोन्मत्त सरकारी विद्या विभागके कार्यको छोड़ कर अय स्याभोल-भावके विद्या दिनेके लिए उद्युक्त हुए। पापको साधारण जनता में बिन्धु, माषोके अयसे प्रतिदि घो। पाप एक प्राक्-हावान लेयक थे। इतके सहस्यको बात मुचक तिलक और पागरकरके जानमें पड़ो। दोनोंने जा कर बिन्धु, माषोके सुसजात को। इसो समय परसोकगत एम० बी० नामजोयो मा इतमें मिल गये। इत एम योगके फलके तथा अर्गोय मि० नामजोयोके उषाह और अथयसयके धानुवचित हो तिलक और विपक्षोन्मत्तने १८०८ ई०का १री जनवरीको "पूना न्यू-रिजिय स्कूल"को प्रतिठा को। पून मातमें मि० जो० एम० चाणके एम० ए० ने इतके विद्या दान-अय एमकार्यमें योग दिया और एको वर्ष पागरकरने एम० ए० पाय कर, जसो-अनुकमें अङ्गना क क कर दिया। विद्या-दानके साथ साथ पीको

युवकोंने मिल कर "केशरी" और "मराठा" इन दो संवाद पत्रोंका निकालना शुरू कर दिया। "केशरी" मराठोंमें निकला और "मराठा" अंग्रेजोंमें। ये दोनों संवादपत्र अब भी महाराष्ट्रके श्रेष्ठ पत्र समझे जाते हैं। तिलक महाराज "केशरी"के लिए ही अधिकतर परिचय किया करते थे। कारण, उन्हें मालूम था कि देशको जनशक्ति को उद्वृद्ध करनेके लिए देशीय भाषामें लिखित संवादपत्रको ही आवश्यकता है। अंग्रेजों भाषाके जानेवाले बहुत कम हैं। इसलिए तिलक महाराजने देशकी भाषामें देशकी बात प्रगट करनेका निश्चय कर लिया। "केशरी"का महाराष्ट्रमें जितना प्रभाव था, उतना प्रभाव भारतके और किसी भी पत्रका नहीं था। "केशरी"को क्या घनी और दरिद्र, सब समान भावसे पढ़ते थे।

'न्यू-इंग्लिश स्कूल' धोरे धोरे उन्नति करता गया और पूनाके समस्त स्कूलोंमें उसोने श्रेष्ठ स्थान पाया। विशु शास्त्री विप्लोचनकरने दो प्रेस खोल दिये। इन कार्यों क्षेत्रोंमें पाचों युवक मिल कर पूर्ण उत्साहसे कार्य करने लगे।

इसी समयसे देशके काममें तिलकने आत्मत्याग किया और साथ ही उन पर विपत्तियाँ भी पड़ने लगी। 'केशरी' और 'मराठा'में कोल्हापुरके तटानीन्तन महाराज शिवाजीरावके प्रति दुर्ब्यवहारके सम्बन्धमें तीव्र प्रतिवाद करके अपना मन्तव्य प्रकट किया था; इसके लिए तिलक महाराज और आगरकर पर मानहानिकी नालिश हुई। अदालतने दोनोंको ४१४ महीनेकी कैदकी सजा दी। पर इस कारादण्डके फलसे तिलक और आगरकरकी जन-प्रियता सौ गुना बढ़ गई और वे नवीन उत्साहसे सारे शक्ति लगा कर जन-सेवा करने लगे।

इस समय इन निर्यातित देश-प्राण युवकोंको सहायताके लिए एक नाटक खेला गया, जिसमें स्वयं गोखलेने नाटककी भूमिका ग्रहण की थी।

१८८४ ई०के अन्तमें तिलक महाराजने "दाक्षिणात्य-शिक्षा-समिति"की स्थापना की। इसमें पहली सिर्फ उनके मित्रगण ही सदस्य थे; पर कुछ दिन बाद बहुतसे युवक इस समितिके सभासद हो गये और उत्साहके साथ काम करने लगे। कैलकर, पटनकर और गोखले

भी इस समितिमें शामिल थे। धोरे धोरे इनके मञ्चने कालेजका रूप धारण कर लिया, जो कि "फर्ग्युसन कालेज"के नामसे पूनामें अब भी मौजूद है। शिक्षा समितिके सदस्योंने प्रतिज्ञा कर ली कि "श्रीम वर्ष तक नाममात्रको वेतन लेकर इस कालेजमें अध्यापना करेंगे।" दाक्षिणात्य शिक्षा-समितिके अधोनस्य सभो संस्थाए धोरे धोरे उन्नति करने लगीं। समितिने युवकोंके खेनन-कूदनेके लिए दो सदान खरोद किए। बम्बईके पूर्ववर्ती शासनकर्त्ता सर जेम्स फर्ग्युसनको प्रतिशुतिके अतुसार परवर्त्ती शासनकर्त्ता लार्ड रोथेने उक्त कालेजको बड़ा करनेके लिए और भी कुछ जमोन दे दो। युवक-सङ्घने चतुरसिंगोके पास कालेजके लिए एक बड़ा सुन्दर भवन बनवाया। तिलक कालेजमें गणितको शिक्षा देते थे और आवश्यक होने पर कभी कभी विज्ञान तथा संस्कृत भी पढ़ाया करते थे। तिनके उक्त तीनों विषयोंमें समान कृतित्व दिखलाते थे। गणितकी शिक्षा देनेमें तिलककी समानता और कोई भी नहीं कर सकता, ऐसी छात्रोंको धारणा थी। अध्यापकोंमें इनका यश सर्वत्र व्याप्त हो गया था।

परन्तु १८८० ई०में आपको अध्यापकका पद त्याग देना पड़ा। बहुत दिनोंसे समितिके सदस्योंमें मनो-मालिन्य चला आ रहा था। समाज और धर्मके विषयमें आपका मत कष्टर हिन्दुओंके समान था। इसलिए राष्ट्रको सहायता लेकर किसी समाजके संस्कार करनेकी आवश्यकता है, इस बातको आप स्वीकार नहीं करते थे। परन्तु आगरकरका मत इनसे सम्पूर्ण विपरोत था। वे समाज-संस्कारको आशु प्रयोजनोय समझते थे। समितिके अन्यान्य सदस्य भी आगरकरके मतानुवर्ती थे। किन्तु इस समय तिलकके पदत्याग करनेका और भी एक गुरुतर कारण उपस्थित हुआ। १८८८ ई०में अध्यापक गोखले पूनाकी 'सार्वजनिक सभा'के सम्पादक (वा मन्त्री) नियुक्त हुए। इसमें तिलकको आपत्ति थी। आपका कहना था कि "जो दाक्षिणात्य समितिके भाजोवन सभ्य हैं, उन्हें अपनी सम्पूर्ण शक्ति और समय कालेजको उन्नतिके लिए व्यय करना चाहिए।" गोखले शिक्षक हो कर भी राजनीतिक सभाके मन्त्री होते हैं

पौर प्रतिष्ठिते पन्थास्य नदेष्व् चतस्रि मन्वति ऐति ई  
यदी तिलकस्ये पदञ्जानका मूल कारक मा । इस तरव  
तिलकस्ये पपने पमोष्ठ काय — पन्थापकत्वको छोड़ दिया  
पौर राजनोतिक ओवन यावन करमेंमें पवृत्त हो गये ।

इसी समय वरकारने "सहवास-सम्पत्ति" काका  
प्रस्थाप पाय करन्य जाहा, जिन पर देय-व्यापो तुमुक  
पान्दोसन शरु हो गया । तिलक इस कानूनके पाय  
होनेके बिह्वर जोमानसे खोबिय करने क्ये । जिस मोति  
पनुसार बिदेयो बिज तोय मवमेंप्य प्रभाडे बर्यं पौर  
समाज सम्बन्धी कम नियमोंमें इस्तार्सेप कर माध्यात-  
मूलक पार्ईन बनानेके निय पपसर को, तिलक महाराज  
उस मोतिके बहर बिरोधो धे । सहवास मन्वति पार्ईनका  
पाय होना कितना ही कितकर क्यो न हो; गवमेंप्य  
कनपूर्वक ऐनो ख्यवसा करतो को इस कारक ममात्र  
न सकारके बिसेय पवपातो पौर मो बहुतेके ख्यति सर  
कारके पौर बिरोधो हो गये धे ।

काश्चित्के पन्थापकका पद ज्ञान कर तिलकने पुनः  
कानून पकानेको ख्यवसा को । कम्पै-रेसिडेन्समेंमें यही  
पवृत्त-न्या-जाखेक है । काश्चित्में पार्ई कोर्टके लिए बका-  
नतो विद्या पकानेका बन्दोबस्त हो गया । इधरे बाद  
दाविदास्य प्रतिष्ठिते सम्भोर्में एक बटवार कृपा जिसमें  
तिलक पक्षी "क्षेयरी" पौर "मराठा" पवने खलाधि-  
कारी पौर सम्पादक हुए । "क्षेयरो"के सम्पू-  
भाकके तिलकके कर्त्तव्यजोवन होने पर, दिने दिन उसको  
उन्नति होने लगी ।

तिलकने राजनोतिक सिद्धि चयतन्य करने पर भी  
पपनो पमाधारक ममीपाको क्षेयकमात उसोमें निवह  
नहो रकता जा; मरुत विद्यामें मो उनका पसीम पनु  
राम बा । पवसर पाते हो पाय मास्त्राप्यवन करने धे ।  
बेदके जाक-निक पक्षे विपवमें पापने कर्त्त निवन्ध जिडे  
है कियेके पापके पसाधारक पापिडकाका यपिड परि-  
चर मिलता है । १८०२ ईमें कच्छमें प्राथविद्यावित्  
विद्वानोंको एक पन्थाजातीय बंधक हुई धे, कश्में तिलक  
महाराजके उन्न निवन्ध धैत्रे गये धे । उनके तिलकको  
बिह्वरता पौर प्रतिष्ठा पार्ई पौर ध्यात्र हो गई । १८०९  
ईमें ये निवन्ध हुस्तकारारमें प्रकाशित बिजे गये; पुस्तक

का नाम "पोरावन" रक्ता गया । इस पुस्तकमें पोक  
को पपिका हिन्दू सम्प्रदायो प्राचोनताके विपयमें  
पापने बहुतेके प्रमाण दिजे हैं । पोक पाष्ठाविकासमें  
मूल शिकारोके "पोरापीन नामक मचमरागिमें खान-  
सामको जा कता है, उसके माव ( कन्न मचमरागिका  
हिन्दू-नामकरक ) मवमिरा पौर सुवोवखानकाक मागं  
मोयं मासका को इन्दवत साइक है इस विपयको  
बिस्वत पाकोपना कर तथा 'पपइवय' ( मागंमोय )  
मन्वका पय 'मप'का प्रयम दिन, क्यो है, इनका विचार  
कर तिलक मबोदयमें टिकनाका है कि प्यपुषेइके जिन  
प्योखोमें उन्न पपइवय मन्वका पवृत्त है वा उन  
विपयको नाता पाष्ठाविका है, वे जिन समय रपो गई  
यों उन समय तक पोक सोग हिन्दुधोमें पवृत्त नहो हुए  
धे । सुवदेवके मगमिरानकसमें पवखान करती समय  
पव बकरका प्रवम साम शरु होता था, तव ( पकात्  
ईसासे पार क्त्रार बर्यं पवने ) कपुवृत्त दोनो प्राचोन  
कातिवा एक ही खानमें रहती यो पौर उन्न समय म्बन्डे  
को गाहाए रची गई धे । प्राथ पौर प्रतोप्य विद्यामें  
केसो प्रमाड बिह्वता होने पर पौर केसी तीप्य इटिने  
यथेयना करने पर ऐसा सिद्धान्त खिर किये जा सकता  
है, यह बात मइज ही समझ सकती है । उन्न गचित  
विद्यामें तथा पकित ख्योतिपने तिलकके पन्थाधारक पवि  
कारका परिचय रसीने सिक्त बकता है । इस पन्थके  
प्रकाशित होने पर पन्थापक मोम्बमुरर, जेसोको बेबर  
पौर कृष्टनो पाटि प्रसुप पावाय विद्वानोंमें तिलकको  
मो सु इसे प्रय मा को धे । "कन इपकिण्ड विधविद्या-  
नय के कान्कर ध्यमकिण्डने विगविद्यालयके कार्विक  
पबिबेयन पर कहा जा, कि "पोरायनके सेवकने अपने  
प्रतिपाय प्रथान विपयो पर लुभि विधाम करनेके लिए  
माथ किये है, यह बात मैं सुखकण्ठसे कहता हू ।  
पोरायन पव साधिम्य जगत्में कुल समबधे किये महा  
पान्दोमनको छडि करता रहैगा ।" माहित पौर इति  
हायके केसमें मचसुक ही 'पोरावन'में विग्रहको पाडि  
को है ।

इसी समय तिलक महाराज कम्पैरेसिडेन्स कानून-  
के मन्वी नियुक्त हुए । क्त्रातार पाव पबिबेयना तक

आप ही इसका कार्य सन्हालते रहें। पांचवें अखिवेगनमें सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई। १८८० ई०में इसका एक अखिवेगन हुआ। इसके दूसरे वर्ष लाड उफरिनकी भेटनोतिके कारण हिन्दू-मुसलमानोंमें बड़ा भारी टंगा हो गया। तिलकने अपने आख्यानमें भेटनोतिको बात प्रकट कर दी, जिससे सरकार भोता हो भीतर तिलक महाराजसे जलने लगे। यहाँसे तिलक पर सरकारकी कड़ो निगाह रह्यो, उनके प्रत्येक कार्य पर सरकार लक्ष्य रहतो थे। तिलक महाराज कुछ सरकारो कर्म-चारियोंको अनुसृत नोतिके विरोधो हो गये। कर्म-चारियों तो इसो सम्झके, जनसाधारण पर तिलकके असाधारण प्रभावकी बात मालूम हो गई। "केशरी"को सहायतासे हो तिलकने अपना प्रभाव समग्र मराठा-समाजमें फैला दिया था। तिलकके प्रभावसे मराठा-जातिमें इस समय एक नवोन भाव जाग्रत हुआ था। अिचिन समाजमें भी तिलकका काफी प्रभाव था, इसी वीचमें आप दो बार बम्बईको व्यवस्थापक-महाके मध्य निर्वाचित हुए थे और बम्बई-विश्वविद्यालयके 'फेलो' हुए थे। १८८५ ई०में आपकी पूनाकी शुनिसिपालिटीने मदस्य चुना। इसी साल पूनामें कांग्रेसका ग्यारहवां अखिवेगन होना निश्चित हुआ और आप उसको अभ्यर्थना समितिके मन्त्री निर्वाचित हुए। तिलकने सेशेभर मास तक इसके लिए बहुत परिश्रम किया। उपरान्त कांग्रेसके पण्डालमें समाज-संस्कारके विषयमें आलोचना हुई, जिसका तिलक महाराजने विरोध किया और आखिरकी इसी कारणवश आपने मन्त्रि-पदसे इस्तोफा दे दिया। परन्तु कांग्रेसका सफलताके लिए आपने एक दिन भी परिश्रम करना न छोड़ा था।

१८८५ ई०में आपने मराठा जातिमें स्वदेश-प्रेम लानेके अभिप्रायसे शिवाजीको पूजाका प्रवर्तन किया। जातीय देशनायकोंके जीवनचरित्रको आलोचना करनेसे जातीयताकी वृद्धि होती है, ऐसा समझ कर ही तिलक महाराजने इस अनुष्ठानका प्रचार किया था। शिवाजीकी स्मृति-रक्षाके आन्दोलनमें योग देनेके बाद तिलक महाराजने 'केशरी' में इस विषयका लेख लिखा। उस लेखके परिमाणस्वरूप २० हजारका

चन्दा हुआ, जिसमें गायगदमें शिवाजीके समाधिमन्दिरका संस्कार हो गया। तभीसे यहाँ प्रति वर्ष शिवाजी-पूजाका अनुष्ठान चिरस्थायी हो गया।

१८८६ ई०में महाराष्ट्र-प्रदेशमें भांपण दुर्भिक्ष और प्रग फौल गई। लोकहितमें प्राण विमर्जन देनेवाले महामति तिलकका हृदय क्रन्दन करने लगा आपने इस समय स्वार्थ-त्यागका ऐसा अपूर्व दृष्टान्त दिखलाया कि उसीसे आपका नाम अक्षय हो सकता था। दुर्भिक्षके समय विपन्न नरनारियोंको सहायता पहुँचानेके लिए जो सरकारो अथस्या है, उसको काममें लानेके लिए आपने बम्बई सरकारसे विशेष निवो-पटो की थी। परन्तु तिलकका अनुरोध व्यर्थ गया सरकारने कुछ भी सुनाई न की। आखिर तिलक विपन्नोके क्लेश-निवारणार्थ स्वयं हो प्रयत्न हुए। आपने पूनामें स्वल्पमूल्यमें खाद्यशस्य बेचने और अन्नवितरण को व्यवस्था कर दो। इस समय यदि ऐसी व्यवस्था न होती, तो टंगा फसाद हुए बिना कभी न रहता। शोलापुर और नागरके जुमाहोंकी दुर्घ्यवस्थाके विषयमें संवाद पाते हो आप वहाँके लिए रवाना हो गए। आपने स्वानोय नेताओंसे परामर्श किया और सरकारी कर्मचारियोंके साथ मिल कर विपन्न नरनारियोंको सहायता पहुँचानेको व्यवस्था कर दो। युक्तप्रदेशके दुर्भिक्षके समय वहाँके तदानोस्तन छोटे लाट सहोदयने जिम व्यवस्थाके अनुसार काम कर सुयश प्राप्त किया था, तिलक महाराजने शोलापुर प्रान्तके लिए भी वैसे ही व्यवस्था की थी। परन्तु तिलक महाराजके कार्य-कलापोंसे उस समय बम्बई-सरकारकी सहायभूति न होनेके कारण, वह उस व्यवस्थाके अनुसार कार्य करनेको तैयार नहीं हुई। तिलकके अन्यान्य प्रस्ताव भी इसी तरह सरकारके द्वारा उपेक्षित हुए थे।

पूनामें प्रेग उपस्थित होते ही महाप्राण तिलकने वहाँ हिन्दू-प्लेग-अस्पतालको स्थापना कर दो। इस अस्पतालके वर्यके लिए आपने आवश्यक अर्थ-संग्रह करनेमें भी यथेष्ट परिश्रम किया था। प्लेगके भयसे पूनाके प्रायः सभी नेता बाहर खसक दिए। यह देख तिलक दून उस्ताहसे कार्य करने लगे। प्लेगके रोगियोंकी सेवा आप उसी तरह करने लगे, जिस तरह एक योग्य स्वयं

सैबक करता है। इससे विवाह पञ्चमालकी देक-रेक से  
 पाप हो खरते थे। ब्रह्मको पापहाथि त्रिन पाप-मियोंको  
 महत्तये बडा कर सावनीमें रक्खा गया था। उनको निप  
 पायने पञ्चसत्र खोज दिया। प्रजा सरकारकी जापक  
 ये कह पा रहे थे, इससे त्रिप तिलक महाराजमें बहुत  
 विद्या-पढ़ो की घोर लक्ष्मण-पारियों को साब जा कर  
 मिले। किन्तु पायने पयने दोनो सवाहपकोमें ब्रह्म-  
 दमनको सरकारो काबलका सपूर्व ममबन किया था।

१८८० ई० ता० १६ जूनको "अयोधे"में विवाहो-  
 लकाका एक विवरण प्रकाशित हुआ। उसमें १०  
 जूनको हुआ था। इन साल ब्रह्मके कारक विवाहको  
 लकादिनको यह लक्ष्मण न हो पाया था। सुकुटोकावने दिन  
 हुआ था। पञ्चको बार इन लक्ष्मणों उपदेश, व्याख्यान,  
 पुराण-पाठ आदि पञ्च प्रकारको व्यवस्था हुई थी।  
 इस लक्ष्मणों एक खोज पढ़ा गया था। तिलक महाराजने  
 इसे "अयोधे"में जाप दिया। २२ जूनको मि० रेणु  
 पोर सेव टिनेण्ड पवार गुन घालकके पञ्चदि मारी मने।

"विवाहो-लक्ष्मण" गोपक सेवसे इस जन्माका सम्बन्ध है  
 इस सन्देह पर सरकारने तिलक महाराजको गिरफ्तार  
 कर लिया। आई-बोटमें तिलकके नाम राजद्वीपका  
 प्रमका पन्ना। बम्बई बर्सेप्यने ता० २६ जूनको तिलक-  
 को गिरफ्तारका कुछ निश्चाना। २० तारीखको तिलक  
 गिरफ्तार हुए। आखिर ता० २ चमराको एक ममना  
 आई-बोटमें पाया, तब बहबसे विचारपति बटरहोन  
 तयावकोमें पापको बमोन पर छोड़ दिया। ता० ८  
 सेनेवरको सुबहदमा दाबर हुआ पोर एक मनाइ तब  
 उसको सुनवाई हुई। लक्ष्मणोंसे बैरिटर ज्० तिलकसे  
 पञ्चका समर्थन करनेसे निवे बम्बई से मि० पाब  
 य्० की सहायतासे किए उपजिन से। माननीय विचार  
 पति मि० इट्टीने इस सुबहदमाका खसला किया। नो  
 अरियोमिसे ६ सेविबनोमें तिलको होयो कहरावा पोर  
 १ विन्दुस्थानियोंने लक्ष्मण निर्देन बतलया। परिवाम यह  
 हुआ कि तिलक महाराजको १६ वर्ष मन्थन कारादण्डका  
 पापिय दिया गया। 'पुन-पै-व'की प्राबना थी, पर बह  
 खर्च हुई। आखिर प्रिविबोन्सिलमें पपीक को गई।  
 निष्ठावतने मि० पाब इरमने तिलकके पपका लम्बन

किया। मन्त्र-समाधि पय्यतम सटप साब ईनस वेरोने  
 प्रिविबोन्सिलमें (१८८७ ई०के लखनवर मामने)-तिलकके  
 सुनहमिका विचार किया। मि० पाब इरमने बम्बईके कूरि  
 कीको मना करपा पोर इट्टीके विचारसे विपयमें बहुत  
 कुछ लम्बाया पर कुछ फल न हुआ। पन्थमें पञ्चापक  
 मोक्षमूलर पोर विलियम इप्परने तिलकको सपूर्व  
 विवाहपताका लक्ष्मण कर महागो विन्दोरियासे  
 टयासे निप प्राबना को। तिलकको भी यह प्रतिबुद्धि  
 सेनो पढ़ो कि 'कमो मो लखनवरके विद्वत् पपलप-कया  
 दव बनलता न पूगा पोर न खिलूना।' तारोख ६ सेमे  
 लर (१८८८ ई०)को तिलक बूट मने।

कारागारमें तिलकका शरीर पञ्चमण दुबक हो गया  
 था इसलिए लेखने बूटनेके बाद क मरीमें तब से  
 प्वास्थोबतिलो बोगियमें रहे। पढी कुछ दिन सिंहापके  
 लाम्ब निबामने रहे फिर दिनलर महानेमें मन्त्राकको  
 खोपेमें शांतिन हुए। म द्वागने पापने सि बल म्रमबसे  
 लिए यात्रा को।

कारागारमें रहने समय पाबको जितना मो पञ्च  
 काग मिलता था उतना समय पाप पन्थ निबनेमें व्यब  
 करते थे। पापका लक्ष्मणसे वैदिक निबाध' नामक  
 पन्थ इसो समयका निबाध हुआ है। इस पन्थमें पापने  
 नामा बुद्धिया द्वारा यह प्रमाचित किया है, कि प्राचीन  
 पापों का वेदो निबाम लक्ष्मण सेकमे था। इसको  
 मूनिबामे पापने लिखा है कि 'इस पुस्तकसे निबनेमें  
 सेने द्य वर्ष समय व्यतोत किया है।'

तिलक प्रारम्भसे जो दागिदूके भाव दुब करते  
 पाये थे। इसलिए से कमो बिसोके सामने हाब न पसा  
 रते थे। अब पापको भोवक चाइदोके मामनेमें क सना  
 पढ़ा, उस समय मो जापक बिसोका कुछ नहीं ताका।  
 पापने बान लका एक कासीन खोना था पोर लापूरमें  
 पापका कारबाना मो था। लमोको धामदकोसे पापके  
 परिवारका खर्च बनता था। पापने प्रीक बसे जने पर  
 पापका आई-ल-बनेक ईमको गढ़ककेमें बन्द हो गया  
 पोर मातुरके कारपानिसे प्रबन्धको पनाबजानोसे  
 मुबसान हो गया। जिस समय तिलक "बेयपो"के  
 मालिक हुए थे, उस समय उसको कुल ३००० घाबक



थे, किन्तु अब उसको ग्राहक संख्या काफी बढ़ने लगी। राजद्रोहकी मुकदमाके समय इसके सात हजार ग्राहक ही गये। जेलसे लौट कर आपने "केशरी"का पत्रलेका कर्ज सब चुका दिया। आईन-कालेजके बन्ध हो जाने तथा कारखानेमें नुकसान पड़ जानेसे अब आपकी अर्थ-गमका उपाय सिर्फ "केशरी" ही रह गया। इसलिए आपको "केशरी"के लिए और भी अधिक परिश्रम करना पड़ा।

श्रीवावा महाराज नामक एक सरदार तिलकके मित्र थे। उनका भो वामस्थान पूना था। श्रीवावा महाराजकी स्त्रीका नाम था ताई महाराज। मरते समय उन्होंने एक 'इच्छापत्र' लिखा जिमें तिलकको वे अपने सम्पत्तिके परिचालक नियुक्त कर गये। यह घटना तिलकके राजतमे छुटनेके बात ही हुई थी। श्रीवावाका कुछ ऋण भी था, तिलक महाराजने ऋण चुका दिया और विगैप शूढ़नाके साथ उनकी सम्पत्तिका रक्षणवेक्षण करते रहे। श्रीवावाके कोई पुत्र न था, इसलिए आपने ताई महाराजकी दत्तकपुत्र ग्रहण करनेका परामर्श दिया। ताई महाराजने अपने इच्छानुसार एक वाशककी पुत्ररूपमें ग्रहण कर लिया। तिलककी सुव्यवस्थासे ओगोंके स्वार्थमें बाधा पड़ी। आखिर स्वार्थी लोग ताई महाराजकी कुपरामर्श टे कर बहकाने लगे। ताई महाराज भो बातोंमें आं गईं। उन्होंने पवित्रदृष्टय तिलक महाराज पर जान, प्रवचन, सन्मति न होने पर भी दत्तक-ग्रहण करना आदि टफा सातमें नालिश कर दी। १८०१से १८०४ई० तक, चार वर्ष मामला चला। छोटी अदालतने तिलकको दोषी ठहरा कर ११ वर्षकी सजाका हुकम दिया। सेशनमें अपील की गई। जजने दण्ड घटा कर ६ महोनेकी सजाका हुकम दिया। फिर हाई कोर्टमें अपील हुई और खलाम हो गये। जजने स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट कर दिया कि मि० तिलकने किमो प्रकारकी भो प्रवचन नही की, जालका अभियोग मिया है। इसके बाद आपने ताई महाराजकी सम्पत्तिके तत्त्वावधारकका पद छोड़ दिया।

इसके दूसरे वर्ष तिलक महाराजका ध्यान अपने सम्पत्ति पर गया। आप अपने दो संवादपत्रों और प्रेसके

इन्तजाममें लग गये। इस समय "केशरी"की ग्राहक-संख्या बहुत ही बढ़ गई थी। इसलिए आपको प्रेसके लिए एक अच्छी मशीनकी जरूरत पड़ी। महाराज गायकवाडने आपको स्वल्पमूल्यमें पूनाका 'गायकवाड-बाडा' बेच दिया। उस जमाने पर आपने प्रेसके लिए मकान बनवाया। तिलक महाराजने मुद्रण-यन्त्रकी उन्नतिके लिए अपने असामान्य प्रतिभा नियोजित कर वहां भी एक अद्भुत कार्य कर डाला। लोनो-यन्त्रमें काम आने ऐसा मराठी टाइप बनाया जा सकता है या नहीं, आप इस विषयको चिन्ता करने लगे। आपने लोनो-यन्त्रके लिए जैसे मराठी टाइप बनानेकी कल्पना की थी, उसका विनायतवालीने अनुमोदन किया। परन्तु वैसे हर्फोंके साथ लोनो-यन्त्रके मंगानेमें बाधा पड़ गई, विनायतके कारखाने उस तरहकी सिर्फ एक ही मशीन ढाल कर भेजना स्वीकार नहीं किया।

समय भारतमें, एकता स्थापनके उद्देशसे एक ही लिपिके प्रचारके लिए तिलक महाराजने यथेष्ट प्रयास किया था। १८०५ ई०में "एकलिपि-विस्तार-समिति" के अधिवेशनमें वावूरमेशचन्द्र दत्त महाशय सभापति हुए थे, जिसमें तिलक महाराजने भारतके सर्वत्र नागरो अचरके प्रचलन पर जोर दिया था और नाना युक्तियों द्वारा उसे उपयोगी बतलाया था। वास्तवमें देखा जाय तो एक लिपि हुए बिना सम्पूर्ण जातियोंमें एकताका होना असम्भव है।

तिलक धार्मिक और सामाजिक उन्नतिके परिपन्थी न थे। १८०६ ई०में आपने काशीमें हिन्दूसमाजके संस्कारके विषयमें जैसे मत दिया था, उससे ऐसा ही प्रतीत होता है। आपने कहा था, कि वैदिक युगमें भारतका बाहरकी किसी भो समाज वा जातिसे संस्पर्श न था; भारतको अधिवासी उस समय परस्पर एक दूसरेके माथ घनिष्ठ संबन्धसे संबद्ध थे और सबको मात्र एक ही विराट् जाति थी। भारतको नेताओंका कर्तव्य है कि उस एकताको पुनः प्रतिष्ठा करें; -काशीके हिन्दू जैसे हैं, बम्बई, मद्राजके हिन्दू भी ठोक वैसे हो हैं। विभिन्न देशवासो हिन्दुओंकी भाषा और पहनावेमें अन्तर ही सकता है, पर जिस अनुप्राणनासे वे अनुप्राणित

इस वचन को है। परन्तु विभिन्न देशोंके हिन्दू, चीन तथा  
एकताकी पूर्ण आवश्यकता आवश्यक है।

लोकमान्य तिलक कांचेपत्रके माध्यमसे ही  
उनके संघटित थे। कांचेपत्रके नामसे पाप प्रतिपद उस  
का माध्यम है। १८८२ ई०को प्रथम-कांचेपत्रको विप  
निर्वाचितमितिसे सम्बन्धित पापका नाम चुना गया था  
इसके अर्थ पापने ब्राह्मणायुक्त समाज सम्बन्धी प्रस्तावका  
अमर्षन किया था। नामपुरको मतस्य कांचेपत्रमें पापने  
पार्लमण्टमें न बरन्धमें प्रस्ताव उठाया था, लाहोरको  
नवम कांचेपत्रमें बिरन्धायो बन्दोबस्त प बन्दो प्रस्तावका  
अमर्षन किया था पूनाको ध्वरजकी कांचेपत्रमें प्रजा  
स्वयं स बन्धोय प्रस्तावके पाप पर्यन्तम बन्धा है और  
कलकत्ताको ध्वरजकी कांचेपत्रमें पापने प्रादेशिक गव  
मेंस्त्रीको राजस्वके विषयमें पत्रिका त्रिभुवारी और  
स्वाधीनता देनेका प्रस्ताव किया था। सोलहवीं कांचेप  
में मो तिलकने जन-साधारणके एक प्रस्तावका अमर्षन  
किया था। कलकत्ताको मजहबी कांचेपत्रमें गिधा सवन्ध-  
कोई प्रस्ताव पिय हुआ था जिन पर पापने एक बड़ी  
बहुता दी थी। इससे पहले प्रतिनिधि सभनेके विषयमें  
स्वीय सत्र वैदरबर्नमें जो प्रस्ताव पिय किया था तिलक  
महाराजने उनका अमर्षन किया था। कइनेका तात्पर्य  
यह है कि राजनीतिक पान्दोलनमें पापका क्व उन्हाड  
और विख्यास था। पाप प्रायः यह बडा करती है कि  
“हमारे कार्योकार्यके विचारकता १८८०में है।”  
पाप ब्रिटिश-प्रजातन्त्रको और इगारा करती है। इटिय  
प्रजा साधारण पर पापको यडा जो। १८८१ ई०में जब  
कांसोमें कांचेपत्र हुई तो, उस समय तिलक महाराजको  
विशेषरूपसे सम्बन्धना की गई थी इस कांचेपत्रमें पापने  
दुर्बिध, अरिष्ट और भारतको अर्पणोति अथवाकाके  
विषयमें अनुसन्धान तथा मैकुमैण्डके अर्पण एक प्रस्ताव  
उपस्थित किया था। १८८१ ई०में कलकत्ताको कांचेपत्रमें  
कांचेपत्र प० पान्दोलन में अर्पणो पान्दोलनके विषयमें  
जो प्रस्ताव किया था उसका पाप अमर्षन के।

परन्तु भारतको राजनीति-क्षेत्रको शक्ति पर नड  
को गई। विभिन्न-राजनीतिक पान्दोलन पर जो  
भारतवासियों की यडा थी लार्ड कर्जनने उसको मूल

पर हुआपावत किया। लार्ड कर्जनको यह महत्त्व था  
भारतवासियोंमें जैसा भारत इतिहासमें अमृतपूर्व  
पान्दोलन उठाया, क्वर नीकरवायोने मौ वैधे की  
कठोरताम शासनमें देशको विमोचिकायुक्त कर दिया।  
साधारणमें समाजमितिमेंका होना बन्द कर दिया अन्धे  
मध्यमान्य जन मानको जो बिना विचारके निर्वाचित  
किया गया बहुतो को कामो पर मो नडकावा गया।  
जो मोय कमी राजनीतिक पान्दोलनको कायामि मो न  
कति है ने मो इस बड़ पक्षमें बरडा ठहरे। इस विमो  
पिका कृष्टिका परिचाम यह हुआ कि भारतमें कुछ  
वासियोंने पुरानो “अविदन-निवेदन”की प्रथा सर्वथा  
स्वाग दी। राजनीतिक सुदयेवमें ये इङ्गतर और प्रथम  
पक्ष-प्रदोमके पक्षपातो को नये। एक एक करके  
बहुतेने पुरानो विचारका सुच कान्ता किया। भारतमें  
इस नव-कठिन “अरम-पन्थि”में मो विभिन्न दमो की  
यष्टि हुई। इस दम-पन्थिके कारण कृतज्ञो कांचेपत्रमें  
विच्छेद हो गया। भारतमें इस राजनीतिक विच्छेद-  
और महत्त्वके समयमें लोकमान्य तिलकने “अरम-पन्थि”  
का निरालपद पञ्च किया।

लोकमान्य तिलकने अपने राजनीतिक मतवादकी  
निम्नलिखित रूपसे व्याख्या की—“हमारे यह राज  
नीतिक सम्प्रदायको जो अरम-पन्थि”की पापका प्राप्त हुई  
है वह उससे अर्ध-राजको विभिन्नताके लिए नहीं,  
बल्कि अम-पन्थिके वैयिक्तके कारण सिनी है।  
भारतमें अमी ब्रिटिश-शासनका उच्छेद करना चाहते  
हैं वा ब्रिटिश-शासनमें जिनो तरङ्गका अन्त्य नहीं  
रखना चाहते हैं, ऐसे राजनीतिक मतके अमर्षन का  
पोषक भारतमें बहुत कम हो है। उनसे बाव हमारा  
कोई अन्त्य नहीं है—यह सुदूर भविष्यकी बात है।  
जम मोयोंमें जिनो तरङ्गको अन्त्य नहीं है, सम्पूर्ण  
निरल है, अर्ध-विच्छेदके कारण दुर्बल है, तथा जम  
कैसे ब्रिटिश-शासनके कृतकारा या सवते है ? ये सब  
कारणें सुदूर भविष्यके लिए छोड़ देना ही हमारे लिए  
सुदूर भविष्यके लिए है। अर्ध-मान्यमें, हमारे देशका शासन-  
भार अन्त्यः पश्चिमत हमारे ही हाथमें पावे यही  
हमारा अर्ध-ग्रह है। हमारे यह भविष्यकी पाप है—

भारतके विभिन्न प्रदेश सम्मिलित हो कर एक युक्त-राज्यका मङ्गल कर 'गे तथा ब्रिटिश औपनिवेशिक स्वायत्त-शासनके द्वारा, देश-देशवासियोंके द्वारा और भारतके प्रधान केन्द्रीय गवर्मेण्ट इंग्लैण्डमें रद्द कर निखिल भारत सम्बन्धी समस्याओंका समाधान करेगा। स्वायत्त-शासनकी व्यवस्थासे प्रादेशिक गवर्मेण्टोंमें भी सुव्यवस्थाको आकांक्षाका हम पोषण करते हैं। परन्तु ये भी बहुत दूरकी बातें हैं, अबसे शुरु होने पर बहुत दिनों बाद सम्भव पर हो सकती हैं। फिलहाल हम अपनी कार्य-पद्धतिके जरिये नौकरशाहीको समझाना चाहते हैं, कि उनको सभी कार्य पद्धति अच्छी हों, ऐसा नहीं। हम्यति हमारे ब्रिटिश-कर्मचारियोंको गतिविधि बहुत ही विगड गई है। ..... किस प्रकारसे हम नौकरशाहीको सचेत कर सकते हैं, यही हमारे वर्तमान समस्या है। इस नौकरशाहीमें हमारे प्रतिनिधि स्थानोय व्यक्ति उत्तम नहीं हैं, निम्नपदों पर अधिकार करनेके सिवा हमारा नौकरशाहीके साथ और कोई सम्बन्ध नहीं हो पाया है। यहीं पर 'माडरेट'के साथ हमारे मत का पार्थक्य है। 'माडरेट'-गण अब भी यह आशा रखते हैं, कि हम इंग्लैण्डमें प्रतिनिधि भेज कर अंग्रेज जन-साधारणकी मतिगतिके परिवर्तन ला सकते हैं। इस देशमें जितने भी अंग्रेज हैं, उनके मति-परिवर्तनको आशा तो दोनों ही दलोंने, बहुत दिन हुए छोड़ दी है। 'माडरेट' गण इंग्लैण्डके लोगोंसे अब भी आशा रखते हैं पर 'चरमपन्थो' गण ऐसी आशा नहीं रखते। ..... हमारा आदर्श है, 'आत्म-निर्भरता'—मिच्छा हतिका तिरोधान।

'साधारण स्वदेशी-आन्दोलनके सिवा बायकाट और निष्क्रिय प्रतिकूलता भी हमारे अस्त हैं। हम बायकाटके लिए किसी पर बल-प्रयोग करनेके पक्षपातो नहीं हैं। हम किसीको विनायती चीजें खरीदनेके लिए मना नहीं करते और न दूकानदारके दरवाजे पर जा कर धना देनेको हीं सलाह देते हैं। और निष्क्रिय प्रतिकूलतामें भी हम सिर्फ 'राजद्रोहमभा-निषेध'को आईन जैसी व्यवस्थाकी उपेक्षा करेंगे। हमारे भाग्यमें जो कुछ है, होने दो, उसको लिए हम चिन्तित नहीं हैं।

हम भारतवासी जन-साधारणके महान् उद्देश्यको सिद्धि के लिए त्रती हुए हैं। नौकरशाही यदि हमारे ३।४ हजार भाइयोंको एक माय कौद कर ले तो भी विव्रत होनेको सिवा उन्हें कोई सुफल नहीं प्राप्त हो सकता। व्यवसायक्षेत्रमें असुविधाको सृष्टि कर एवं सरकार वा नौकरशाहीके विरोधो हो कर हम इंग्लैण्ड की दृष्टि आकर्षित करना चाहते हैं। रेल चला कर, शिक्षाको व्यवस्था कर और सरकारी कार्योंमें एक मात्र अंग्रेजी भाषाका व्यवहार कर इंग्लैण्ड और भारतका एकताको आदर्शको परिपुष्टि तो को है, पर यह सब कुछ उन्होंने अपनी इच्छासे नहीं किया। ब्रिटिश-आधिपत्यको प्रबल प्रतापसे भारतवासी अपने ही आप ही एकताको सूत्रमें आवद्ध होना सोच रहे हैं। किन्तु इन एकताको परिपुष्टि कई पोटियोंके बाद हो सकती है। अतएव हमें अभीसे ही अपने उद्देश्यको पुष्टिके लिए सम्युखीन होना चाहिए; हमको दूसरे मार्ग पर न चल कर पहले इसी मार्ग पर चलना उचित है।"

लोकमान्य तिलक महाराजने एक जगह कहा है—  
"हमारा यह विद्रोह सम्पूर्ण भावसे बिना रक्त-पात के हो होना चाहिये। किसीकी भी ऐसा न समझ लेना चाहिये कि रक्त-पात न होगा, इस कारण लोगोंको दुःख कष्ट भी न होगा, कष्टोंका सामना तो हर हालतमें करना पड़ेगा। बिना रक्त-पातके ही हमें जिन कष्टोंकी भोगना पड़ेगा, वे सामान्य नहीं हैं। यह बात निश्चित है कि यदि हम दुःख-कष्ट सहनेके लिये तैयार नहीं हैं, तो हमारे द्वारा किसी भी उद्देश्यको सिद्धि नहीं हो सकती।"

सूरत-कांग्रेसके विच्छेदके बाद भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें और भी भौषण घटनाएं होने लगीं। सरकारने अपनी दमननैतिको कठोरताका किञ्चिन्मात्र ही ज्ञास नहीं किया। परिणाम यह निकला कि बङ्गालमें विद्रोह उपस्थित हो गया। मजफ्फरपुरमें बम फटा। जिसे मारना चाहते थे उसे तो मारा नहीं, आतनायियोंने दो अङ्गरेज रमणियोंको मार डाला। बम फेकनेके वारेमें स'वादपत्तोंमें आलोचना होने लगी। 'केशरो' में भी इसके प्रतीकारके विषयमें कई धारावाहिक लेख प्रकाशित हुए। इन लेखोंमें देशकी तदानोम्न अवस्थाका

घण्टे भायामें बर्षन किया गया था और बतलाया गया था कि "हम कि कर्नेका कार्य" पस्यना गहित है, इसमें मन्त्रेण नहीं किया गया। भारो दमनमीति और पन्थाय ध्यवस्थाके दोषसे जो पैसा चुपा है। अब यदि हम पस्यनाहितके सिद्धे खिरी कठोरतर दमनमीतिको ध्यवस्थाको नहीं, तो हमका पक्ष यह होगा कि देयमें बिद्रोहका विस्तार होने लगेगा। बिद्रोह निवारणका उपाय यही है, कि देयके पादमियों पर सहासुमूर्ति-पूर्वक हृदयसे उनके मित्रे जाना विद्योमें सुखदम्बा कर देना। हम परने अर्थमें स्थले प्रमाचित किया कि 'देयके से सेकोमें कीयन्ते बमके ध्यवहारका समर्थन किया गया है और उनके लिए लोको को उत्तेजना दो नहीं है। तिनके महाराज जो सेयरो के सम्पादक है, पैसा सरकारको माग्मूमा था। पनपक उनके प्रेश और सिद्धाङ्कके ध्यवहार-निबाममें सागातन्त्रयो हुई। तन्नामीमें एक पोष्ट-खाई निकला त्रिधर्म बिल्लोटेकको दो पुष्टको का नाम लिखे थे। तिनके महाराज मिरफतार हो गए। सरकारने उन्हें बामान पर मो नहीं छोड़ा। पाप पर दो धर्मियोग लगाए गए। ११ सुहाईको धार्मिकोडमें सुखदमा यह हुआ धैयम सुरोमि सात पहरके और दो पारको चुने गये। 'देयके'के जिन सेकोके लिए तिनके गिरफ्तार हुए थे, वे सब मराठो भायामें लिखे हुए थे। अत्र और कूरियोंमें कोई मो ध्यजि पैदा नहीं था जो मराठो भाया जानता थी। तिनकेने अपने पक्ष समर्थनके लिए बहूना दो। सुखदमाके तीसरे दिन बार बजेसे पापको बहूना यह हुई जो, परवर्ती सुबहारको (सुखदमाके पाठके दिन) दो पहरके बसत बहूना परत हुई। अपना पक्ष-समर्थन करते समय पापने ध्यवहार शास्त्रमें अपनी विमोय दक्षताका परिचय दिया था। एहमोकेट जनरकेने तिनकेको बहूनाका उत्तर देते समय कुछ ध्यव किया था। जनकी बहूनाका उनो दिन मामके समाप्त हो गई। अजने कहा - 'हम रात तक सुखदमा करने और पाप ही इध मामकेको क्षतम कर देंगे।' विचारपति मि० दाहरने कूरियोंको मामना समभरति समय तिनकेके विरुद्ध बहूना दी। रातके पाठ बजे कूरी सींग पापसमें लडाइ करनेके लिए इच्छानसे उठ कर हुएरे क्षमरेमें

पक्ष मये। ८। १० बजेके समय कूरी सींग इच्छानसे पाये। सात कूरियोंने तिनकेको दोपो ठहराया और दोने गिर्दोय। अजने पश्चिमाय कूरियोंके मतामुसार तिनके को परराको ठहराया और उन्हें 'ह' वर्णके लिए दोयान्तर बाध तथा एक जत्रार रुपये सुर्वाकाका हूयम सुनाया। दण्ड देने समय तिनके महाराजके लिए अजने कहा था—'पापमें पसामाध्य प्रतिमा है, पलोम शक्ति है और जन-समाह पर पापका यथेष्ट प्रभाव है। इस प्रतिमाको यदि पाप अपने देयके हितके लिए नियोजित करते तो पात्र जिस जन ममात्रके लिए ध्याय चिन्तित है, उसके सुख-सन्तोषमें कारक हो सकते थे। राजनीतिक धान्दोहनमें बमका ध्यवहार विधि-सङ्गत उपाय है, यह बात विद्वत-मस्तक और उपायागामीके सिवा और कोई मो नहीं कह सकता। और तो क्या इसको चिन्ता भी नहीं कर सकता। और पापने जो सुख लिखे है, वे विविध सङ्गत है यह बात मो विद्वतमस्तकके सिवा और कोई नहीं कह सकता। पाप जैसे पन्थायय और उद्यमके ध्यवहारके सेना दण्ड देनेके मारून और निवारण का उद्देश्य सिद्ध हो सकता है, उसको में चिन्ता कर रहा है। पापको वयसु और पन्थाय पापरिार्थिक पन्थाका विचार करते हुए मैं विवेचना-पूर्वक विचार करता हूँ कि देयको मानि और सुखको रक्षाके लिए तथा जिस देयकी रक्षाके लिए ध्यापने पाप नियोग किया है उस देयके मङ्गलार्थ पक्ष पापको कुछ दिनीके लिए उस देयके दूर रचना ही विमोय बाध्यको है।'।

विचारपतिके इन मन्त्र-वाक्ये तिनके महाराजने अपना अपमान समझा। मि० दाहरने जब तिनकेको पापना शेष कर्तव्य कहनेके लिए कहा, तब पाप कुछ धर्मिके अलदगधोर-धर और मर्म-धर्मो भायामें होल लठे—'मैं तिनके इतना ही कहना चाहता हूँ कि कूरियोंके द्वारा परराको ठहराये जाने पर मो, मैं विरापरह हूँ। एक महाशक्ति जगत्के भावका नियन्त्रण किया करते है मयमानको रक्ष्य मायट एनो को है, कि मैंने जिस उद्देश्यको सिद्धके लिए पाप-नियोग किया था, मैंने आधीन रहनेको पचेवा धीरे दुःख बढे सङ्घनेके ही उसमें पश्चिब सजकता प्राप्त होगी।'।



लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक ।

तिलक महाराजके इस दण्डके प्रतिवाद करनेके लिए महाराष्ट्र प्रदेशमें प्रबल आन्दोलन और उत्तेजना फैल गई। मध्यवित्त व्यक्तियोंने एक सप्ताह तक कोई कामकाज हो नहीं किया। देशो और विदेशी प्रायः सभी स'वादपत्रोंमें इस-दण्डाज्ञाके विरुद्ध प्रतिवाद-प्रकाशित हुआ था। जनता तिलकके लिए इतनी लुब्ध हो गई कि शहरमें जहाँ-तहाँ दह्रा-फिसाद होने लगा। इसके दमनके लिए शहरमें सेना लाई गई, जिनको गोलियोंसे १५ आदमी मर गये और १८ बायल हुए। मध्यवित्त शिक्षित समाजने भी एक सप्ताहके लिये अपना व्यापार बन्द रक्खा था।

दण्डाज्ञाके अनुसार तिलक, महाराज शीघ्र ही बन्धे-

से अहमदाबाद भेजे गये। परन्तु मालूम नहीं, सरकारने क्या सोच कर, उन्हें आन्दासन नहीं भेजा। छः वर्ष तक आप मन्दालयमें ही रक्खे गये। अहमदाबाद पहुँचते ही सरकारने लुर्मनिके एक हजार रुपये माफ कर दिये थे। आपके आत्मोद्य वन्सु जब हाई-कोर्टमें वार वार आवेदन दे कर व्यर्थ मनोरथ हो गये, तब प्रिविकौन्सिलमें अपील करनेके लिये मि० खापर्डे को विनायत भेजा। परन्तु प्रिविकौन्सिलका विचार भी भारत गवर्मेण्टके परामर्शानुसार होता है, इसलिए उससे भी कोई सुफल नहीं हुआ।

मन्दालयमें निर्वासनके समय तिलक महाराजने अपने प्रिय-ग्रन्थ 'त्र्योमदभगवद्गोता' की आलोचना

हरना प्रारम्भ कर दिया। गोताको पानोचनमें पाप निर्वाहनको निर्जन्मताको विनकुल भूय गये और पाप हो पापका सामयिक चरमाट मो पूर हो गया। परन्तु 'हाय' इसो समय पापको बर्ष ज्योसमर कोचनको चिरकर्मिनी, सबधर्मिणीका दिहान्त हो गया। त्रिमने पाप पापका कर्मित रूप। 'पाप विद्वान् धि, शोष वा टर्गन और धर्म-सम्बन्धीय पानोचनमें मन गया कर पापने कुछ शान्ति पात को। पापने बहुत पानोचनका करनेके बाद मोनिक गरीयका-पूर्वक 'गोता रक्षम्' नामक एक विद्याम पत्रकी रचना को। निवासन-स्थानके लोट कर पापने एक पत्र प्रकाशित किया, त्रिमने देगमें एक नव-कादरककी धाराक गुञ्ज लठे। तिनकको पनामाप्य विद्वत्ता, गभोर अनुभूति और हिन्दू शास्त्रकी मर्यादा हम 'गोता-रक्षम्'ने ही प्रकट हो जाती है।

१८१३ ई०में तिनक सुक्ति पाकर अपने देगमें पाये। पापने एक पत्रमें अपनी पक्षि न राजनीतिक मतबाट प्रकट किया कि—'गर्भमण्ड घोरे घोरे भारतको लक्षित निवे प्रयत्न कर रही है, धतपन र मनैच्छके दृष्ट दुःसमय में प्रत्येक भारतवासोको सहायता देनो चाहिए।' इनने पर भी पूना पहुँचते ही सरकारने पाप पर तोच्छ इटि रखनेको व्यवस्था को हो।

जुन १८११ की कार्थमने तिनक महाराजने गरम पोर गरम टनका विरोध मित्रा दिया। पापके लघोपमे १८१६ ई०के डीप्लर मानमें, पूनामें 'होमरुन मोय' नामकी एक बन्धा स्थापित हुई। एक बार पापने लक्ष नरको कार्थमने आगत यापनके सम्बन्धमें बहूना हो को पोर अपना मनसाय प्रकट किया बा। ११ की नव धर्ममें मोर्धनि पापको १ नाम कपणको ईनी मीटमें ले को।

१८१० ई०में मर्णैगु पाहव जब भारतवर्षमें मन्वोन याजन-प्रथा प्रवर्तन करने पाये तब तिनक महाराजने 'होमरुन मोय'को तरफसे लने घाब सुनावात को थी। पापने विभावतकी इटिय बनताको भारतको पत्र प्याका परिप्राण बरानेके लिए विहायत आनेको इच्छा प्रकट को, किन्तु नवनमैण्डने इन्को बर्षा जनिकी पाप्रा न हो ११०१८ ई०में इन्वोरियन बार कानकरीयने पत्रने

तिनक महाराजको निमन्त्रण नहीं दिया या किन्तु पोक्षि जन माहारपरके पान्दोसनके पाप निमन्त्रित हुए थे। तिनकने बर्षा राजमन्त्रि प्रकाशक प्रस्तावका समर्थन करते हुए कहा था—'जब तक देगमें भावत याचनको व्यवस्था विरोध करनेवाला कानून रक्षिया तब तक कोरे मो कृपने राजमन्त्रि नहीं दिना मकता।' बाद म-रवने तिनकको बहूना देनेके रोका हम पर तिनक पोर लने क्यु नाथबनि अपना अपना समझा पोर लगे समय सब प्रभाते लठ कर लसे पाये। बापकने तिनक राजमन्त्रि दि भनिके विरोधो न थे। पूसरो ममा में इन्को भी शप्य हम बातको भनो भाति समझ दिया था। बाद माहकके लक्ष धवहारके विद्वह कर्मईमें एक ममा हुए। तिनकने लक्षमें कहा कि "यदि सरकार भारतवासियोको संस्था-विभागमें पत्रक करे, तो मैं इसो समय पत्र कजार मैना इकठ्ठा करने दे सकता हूँ।" परन्तु नवनमैण्डने पापको यह क्षण-पमोदित सहायता पत्रक करनेमें शायद अपना अपना समझा।

मन्वोन याचन नकारका कान न जब हय कर प्रकट मित हुआ तब तिनकने लक्ष पर पत्रनीय प्रकट किया था।

सर डेनेच्छाहम चिरोलने अपनी 'मा-रतमें पशान्ति' नामक पुस्तकमें तिनकके विद्वह बहुतको भूयो बार्ति निष्क मारो यो। इगनिय विरोध पर मुकदमा चलानेके लिए १८१८ ई०में पाप विहायत गये। बर्षा मुकदमा करके पाप लक्षकार्य न हुए। पापने विहायतके नय लोको मन्वदाइकी इटि भारतको याचनप्रथाकी पोर पाकर्वित को था। विहायतमें पाप कायकके हाबकी रसोई भीमने थे।

भारत लोट कर १८१८ ई०में पाप पत्रतकरको कार्थमने धामिन हुए पोर लमका प्रबन्धकारिको मर्मिनि को पापने पत्रने पाटयमें अनुधाचित किया। हम बार कार्थमका कार्य 'लिक' पाप को के मतानुसार चला था।

१८१० ई०के सुनारि माममें तिनक महाराजको कोमारोने पोर निहा। सुयाय विद्विक्तको न बहुत परि शय करने पर भी पापको पुन-व्याच्छ प्रार नहीं हुआ।

अन्तमें ३१ जुलाई, शनिवार रात्रिको १२ वज्रके ४० मिनट पर आप सवेदाके लिए धराधाम त्याग कर स्वर्ग सिधारे। दूसरे दिन महात्मा मोहनदास करमचंद गान्धो, खापर्डे, सुनलो, देशपाण्डे, कारन्धिकर, शोकतन्त्रलो, छोटेनो, वैपटिशा आदि हिन्दू-मुसलमान नेतागण विषम्य हटयसे अपने सम्मानित महयोगीको अन्तिम क्रिया सम्पादनके लिए पैटल भरयोके साथ गये थे। भारतके सर्वत्र ही इस महापुरुषके लिए शोकप्रकाश किया गया था।

तिलक वास्तवमें भारतमाताके लनाटक उब्जल तिलक थे। आपको चरित्रसे हमें अमाधारण दृढ़ता, आत्यन्तिक सरलता, अक्षत्रिम देशभक्ति और समाजनिष्ठा की शिक्षा मिलती है। आपको मृत्युसे जातीय-जीवनको जो चति हुई है, महजमें उसको पूर्ति न हो सकती।

तिलकक (स० पु०) काश्मीरके एक राजाका नाम।  
(राजतर० ८१६६)

तिलककामोद (स० पु०) एक रागिणीका नाम। यह कामोद और विधिव अथवा काहड़ा कामोद और पद योगसे मिल कर बनी है।

तिलकट (स० स्त्री०) तिलस्य रजः तिल-कटच्। तिलका चूर्ण।

तिलकत्वक् (स० स्त्री०) तिलका छिलका।

तिलकना (हि० क्लि०) ताल पादिको मटोका सूख कर दरारके साथ फटना।

तिलकमुद्रा (स० पु०) चन्दन आदिका टोका और शङ्खचक्र आदिका छाप। इसे भक्त लोग लगाते हैं।

तिलकराज (स० पु०) काश्मीरके एक राजाका नाम।  
(राजतर० ७१३१९)

तिलकस्त्र (स० पु०) तिलस्य कल्कः इ-तत्। तिलकुट, तिलका चूर्ण।

तिलकस्त्रज (स० त्रि०) तिलकस्त्रात् जायते तिल कस्त्रक, जन-ड। जो तिलको चूर्णसे उत्पन्न हो।

तिलकसिंह (स० पु०) काश्मीरके एक राजाका नाम।  
(राजतर० ८०१४३२)

तिलकहार (हि० पु०) वह मनुष्य जो कन्याको भोरसे धरकी तिलक घटानेके लिये जाता है।

तिलका (स० स्त्री०) तिलभ्रित्तल वोजकोप इव कायति तिल-कै-क टाप। १ हारभेद, कण्ठमें पड़नेका एक आभूषण। २ शरीरमें गन्धदि द्वारा तिल पुष्पके आकारका चिह्न। ३ ऊन्दोभेद, एक वृत्तका नाम जिसके प्रत्येक चरणमें ६ अक्षर होते हैं।

तिलकालक (स० पु०) तिल-इव कामक. क्लृण्वर्णः। १ देहस्थित तिल, शरीर परका तिलके आकारका काला चिह्न, तिल। इसके मंस्कृत पर्याय—तिलक, कालक, पिम्ब, और जडुल। जिसका परिमाण तिलके समान तथा वर्ण काला होता और जिसको वृद्धि नहीं होती और जो कष्टदायक नहीं होता, उसे तिलकालक करते हैं। वात पित्त और कफकी अधिकता होनेसे यह तिल उत्पन्न होता है। २ रोगविशेष। इसके वर्ण काला अथवा विचित्रवर्ण विपाक होता है। इसमें पुरुषको इन्द्रिय पक जातो है और उस पर काले काले दागसे पड़ जाते हैं और थोड़े दिनोंके वाट मांस गल कर गिरने लगता है। ३ तिलयुक्त व्यक्ति, वह मनुष्य जिसके तिल हो।

तिलकाय्य (स० पु०) तिलकस्य आग्रयः इ-तत्। यह ध्यान जहाँ तिलक लगाया जाता है, लनाट।

तिलकित (स० स्त्री०) तिलस्य क्लिष्टं इ-तत्। तिलमत्त, तिलकी खली।

तिलकित (स० त्रि०) तिलकीऽस्य सम्भ्रातः तारकादि-त्वादितच्। अद्भित, छापा हुआ।

तिलको (स० त्रि०) तिलकमस्यस्य तिलक इति। तिलक युक्त, जो तिलक लगाता हो। तिलक धारण कर सब काम करना चाहिये।

तिलकुट (हि० पु०) कुटे हुए तिल जो खाँड़की चायनीमें पगे हों।

तिलकेश्वरतीर्थ (स० स्त्री०) तिलकेश्वर नामका तीर्थ। शिवपुराणोक्त एक तीर्थका नाम।

तिलखलि (स० स्त्री०) तिलस्य खलिः इ-तत्। तिलकी खली।

तिलखा (हि० पु०) एक चिडियाका नाम।

तिलङ्ग—एक प्राचीन जनपद। स्कन्दपुराणके कुमारिका-खण्डमें इस जनपदका उल्लेख है। मालूम होता है कि यह त्रिकलिङ्ग शब्दका अपभ्रंश है। अभी यह तैलङ्ग नामसे मशहूर है। तेलंग देखो।

तिस्रबटा ( वि० पु० ) एक प्रकारका मोहर ।  
 तिस्रवानकी ( वि० खो० ) १ तिस्र घोर चामनकी  
 खिचको । ( वि० ) जो कुछ सप्रेम घोर कुछ जाना हो ।  
 तिस्रचित्रपत्रक ( स० पु० ) तिस्रचित्राणि तिस्रवत् चित्रि-  
 त्राणि प्रकाशि यत्र बहुभू० अथ । तैलकम् ।  
 तिस्रचूर्ण ( स० खो० ) तिस्रज चूर्णं इत्यत् । चुर्णीकृत  
 तिस्र, तिस्रकुट्ट । पर्याय—तिस्रकलक, पसल घोर पिडक  
 है इसका मुख बच्य पित्त रक्त वल घोर पुट्टकायक  
 है ।  
 तिस्रच्छत्र । स० पु० ) ईशान्य ओक, मीडिया ।  
 तिस्रन ( स० खो० ) पैक, तिस्र ।  
 तिस्रभटा ( स० खो० ) तिस्रमन्त्रो, तिस्रका मन्त्र ।  
 तिस्रना ( स० खो० ) तिस्रनामिनो ब्रह्म एक प्रकारका  
 नाम तिस्रको सुगन्ध तिस्र औषो होतो है ।  
 तिस्रनगा—ब्रह्मरविहारी प्रकाशित एक नदी । यह निपात्र  
 को तटाईके निकल आमसपुर त्रिना होतो हुई तिस्र  
 केकर घामके निकट टाचिचपूर्वको घोर घूमकर सुहरेके  
 पञ्चद्विधा परतमें प्रविष्ट हुई है । फिर बरहवर नामक  
 ज्वालपर भागसपुर ज्वालमें प्रवेश कर ठोक पूर्वको घोर  
 जा कर भौ।बती घामके निकट कोसो भदोमें गिरो है ।  
 इस नदीमें बारको माय नाव पातो जाती है । इससे  
 कई एक झण्डा नदी घोर जाक निकली है ।  
 तिस्रना ( वि० खि० ) वैशेन योगा, विषय रचना ।  
 तिस्रडा वि० वि० ) १ तिस्रमें तीन नङ्गे बीं ।  
 ( वि० पु० ) २ पञ्चर यदुनीवालीको ; एक छिनो इससे न  
 टेडो लकोर या लहरदार नगायो बनती है ;  
 तिस्रको ( वि० खो० ) मोन लको को एक माहा । इससे  
 बोधमें सुयमो लटकतो है ।  
 तिस्रतच्छुलक ( स० खो० ) तिस्रज तच्छुल इव ज्ञापति  
 के क । १ चाचिइन । ( पु० ) तिस्रज तच्छुल, इत्यत् ।  
 २ तिस्रज तिस्र, बना भूलोका तिस्र । २ तिस्रनिमित्त  
 तच्छुल, तिस्र सिधा बुधा चामन ।  
 तिस्रवेला ( स० खो० ) तिस्र इव वीजवति सुपदि तिस्र  
 पत्र टाप । कतामिह, एक प्रकारको वेल ।  
 तिस्रवेण ( स० खो० ) तिस्रज वेणु तिस्र-तौवत् ।  
 लोहे तैवण । स० ५२१२१ १३३ सुन्दर नागेश्वरना तैवण् ।

तिस्रवेण, तिस्रका तिस्र । सब प्रकारके तैवोके तिस्रका  
 तिस्र प्रसन्न है ।  
 इसको मुख—कटाव झाडु, लम्ब, पित्तकृत् घा-  
 नायक श्रेयानर्कक भिधा लच्छू कुल घोर भिधा  
 नायक हृष घोर यमनायक ।  
 द्विज, मित्र, चत, हृष्ट, घत, मन्त्र, यन्निदाह,  
 यन्त्रक, विद, यज्ञाभगाहन, पान, यद्विनिधा, मन्त्र,  
 लच्छूयूरक इन सब ज्वालोंने तिस्रका तिस्र विधिय है ।  
 ( घटीपत्र० )  
 तिस्रका तिस्र चाम्नेय, लच्छू तोच्छ, महर सुद्विहर  
 द्विभार, चाम्नेय-यममें उत्तोजक, लच्छू, विमन्त्र, सुद,  
 मारक, विनायो, वीजवत, भिधा, यदोके चोमकता,  
 घोर मोनको इदु करनेवाला, लच्छूकर, बलकर, इष्टि  
 यद्विज माधक भूतरोचक शिवनकर तिस्र, शवाय,  
 याचक, नामने चामनायक द्विभज योनिगुल, यिरःगुल  
 घोर लच्छूगुलमें शान्तिकर, गमायक या योपचकर, द्विज  
 भिज, यत्पिष्ट, विच, लच्छू, मयित घत मन्त्र ह्युद्वेत्  
 चारदन्ध, यन्निदाह विनिधित दारित, यमिहत्, सुमन्त्र  
 घोर चमम्यावादि हृष्ट इन सब ज्वालोंने तिस्रका तिस्र  
 बयुत द्वितकर है । ( सुन्दर )  
 तिस्रदामो ( वि० खो० ) इरकोको चर्च, तामा, य सु  
 ज्ञाना पादि जोकार रचनेको लच्छूको खोना ।  
 तिस्रदेखरतीव ( स० पु० ) तिस्रदेखर इति नाथा प्रविष्ट  
 तीव । रवानदोके तोरवर्ती तोव विमिय, एक तीवका  
 नाम जो रवानदोके बिनारे यमकित है । इसका दूसरा  
 नाम तिस्रदेखरतीव है । रवानादल्प ।  
 तिस्रदाहो ( स० खो० ) दाहयोमिद । इरकी हैको ।  
 तिस्रधेनु ( स० खो० ) तिस्रनिमित्त धेनु मन्त्रको  
 यमभा । बिधानपूर्वक तिस्रनिमित्त धेनु एक  
 प्रकारका दान जिनमें तिस्रोको माक बना कर  
 दान करती है । यद्यपराधमें बिधा है जोकृम पाकृल  
 पर्याय चोसठ घेर तिस्रके माक घोर चार पाकृल पर्याय  
 बोधक घेर तिस्रके लच्छूक बनाया पाद्विजे । इससे ईशके  
 दुःखकृति घेर, लच्छूके इति, लच्छूमयी बोध घोर लच्छू  
 की श्रीम होतो पाद्विजे । इसी तरह तिस्रधेनु प्रकृत होतो  
 है । योके कथे काके यमयममें स्थापित कर लच्छू हाट



आच्छादन और पञ्चरत्नोत्सव सुगोभित करते हैं। घाट मन्त्रपूत कर दान किया जाता है। तिलधेतु दान करनेसे सब कामना सिद्ध होती है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं।

तिलनामा ( मं० स्त्रो० ) एक प्रकारका धान।

तिलनानभूति ( मं० स्त्रो० ) तिलका चार। तिलको राख।

तिलनी ( मं० स्त्रो० ) शाल्यविशेष, एक प्रकारका धान।

तिलपट्टे ( हिं० स्त्रो० ) खांड ॥ गुडमें परो हुए तिलोंका कतरा।

तिलपपट्टी ( हिं० स्त्रो० ) निम्पट्टे देवी।

तिलपर्ण ( मं० पु० ) तिलस्यैव पर्णं मस्य। १ त्रीविष्ट सरलका गोष्ट। ( क्लो० २ रक्तचन्दन। ३ तिलं येदुका पत्ता।

तिलपर्णिका ( मं० स्त्रो० ) तिलपर्णी स्वार्थे कन् टाप् च रक्तचन्दन।

तिलपर्णी ( मं० स्त्रो० ) तिलस्यैव पणोऽन्यथाः डोप्।

तिलपर्णी नदो आकरोऽस्यनाः इति अच् डीच्। १ रक्तचन्दन। २ नदोविशेष, एक नदोका नाम।

तिलपिष्ट ( मं० स्त्रो० ) तिलस्य पिष्टकं प्रयोटरादित्वात् मायुः। तिलपिष्टक, तिलोंको पोठो।

तिलपिष्ट ( मं० पु० ) निष्कलस्तिलं तिल-पिष्टं। निष्कल तिलवृक्ष, वृक्ष तिलका पौधा जिसमें फूलफल नहीं लगते, वंशा तिलका पेड़।

तिलपिण्डो ( मं० स्त्रो० ) तिलकल्क, तिलका चूर्ण।

तिलपिष्टक ( मं० स्त्रो० ) तिलस्य पिष्टकं इ-तत्। तिल-पिष्टक, तिलोंको पोठो। इसका पर्याय पल्ल है। गुण—यह बलहृत्, वृष्य, वातघ्न, कफ, पित्तहृत्, वृंहण, गुरु, स्निग्ध, मूत्राधिक्यकारक और निवर्त्तक है।

तिलपौड ( मं० पु० ) तिलं पौडयति पौड-अच्। तैलिक, तैली।

तिलपुष्प ( मं० स्त्रो० ) तिलस्य पुष्पं इ-तत्। १ तिलका फूल। २ श्यामनखवृक्ष, बघनगौ।

तिलपुष्पक ( मं० पु० ) तिलस्यैव पुष्पमस्य कम्। १ विभे-तकवृक्ष, बहेडा। २ तिलका फूल। ३ नामिका, नाक। इसका उपमा तिलके फूलसेको जाती है। इसलिये नाकको तिलपुष्प कहा गया है।

तिलपेज ( मं० पु० ) निष्कलस्तिलः तिल-पेज। १ निष्कल तिल, वंशा तिलका गाऊ। २ श्वेततिल, सफेद तिल। तिलवटा ( हिं० पु० ) चौपायोंका एक रोग। इसमें गलेके भीतरके मांसके बट्टे जानसे वे कुछ खा-पी नहीं सकते। तिलवर ( हिं० पु० ) एक प्रकारका पत्तो।

तिलमार ( मं० पु० ) टेशमेद, एक टेशका नाम जिसका दिवरण महाभारतमें आया है।

तिलभाविनी ( मं० स्त्रो० ) तिलं भावयति तिल सू-णिनि स्त्रियां डोप्। तैलभाविनी, चमेलीका पेड़।

तिलमुष्त्रा ( हिं० पु० ) तिलकुट।

तिलभृष्ट ( मं० स्त्रो० ) तिलेन भृष्टं इ-तत्। तिल हाग भर्जित, तिलके साथ भूना या पकाया हुआ। महाभारतमें लिखा है कि तिलके साथ भूनी हुई वस्तुका खाना निषिद्ध है। स्मृतियोंमें तिल मिना हुआ पदार्थ विना देवापित किए खाना वर्जित है।

तिलमेद ( मं० पु० ) खाखुम, पोष्टीका दाना।

तिलमय ( मं० वि० ) तिलस्य विकारः असंज्ञायां भयत्। तिलका विकार।

तिलमयूर ( मं० पु०-स्त्रो० ) तिलपुष्पचिह्नितः मयूर मध्यलो०। मयूरमेद, एक प्रकारका मोर जिसके शरीर पर तिलके समान काले चिह्न होते हैं।

तिलमापट्टो ( हिं० स्त्रो० ) एक प्रकारको कपाम जो दक्षिणमें विनारो और करनूलमें होती है।

तिलमिल ( हिं० स्त्रो० ) चकाचोष, तिरमिराहट।

तिलमिलाना ( हिं० स्त्रो० ) तिरमिराना देखे।

तिलमिथ्य ( मं० वि० ) तिलेन मिथ्यः इ-तत्। जिसमें तिल मिला हो।

तिलमोटक ( मं० स्त्रो० ) तिलोंका लुब्ध, तिलवा।

तिलरस ( मं० पु० ) तिलस्य रसः इ-तत्। तिलका तेल।

तिलरा ( हिं० पु० ) कसेरेको एक छिनो जिससे वे टेढो लकीर बनाते हैं।

तिलवट ( हिं० पु० ) तिलपट्टो, तिलपपट्टो।

तिलवन ( हिं० स्त्रो० ) जंगली और बगोचोंमें मिलनेवाला एक पौधा। इसके दो भेद हैं—एक सफेद फूलका, दूसरा नोलापन लिये पोले फूलका। इसके बीज, फूल आदि देवाके काममें आते हैं। इससे गरम और वातगुणम आदि जाते रहते हैं।

तिरुवा ( हि० पु० ) तिरुवावा मन्त्र, ।  
 तिरुवालिने ( स० पु०-श्लो० ) एक प्रकारका चान त्रिसको  
 सुगन्ध तिरुको होती है ।  
 तिरुवतो ( स० त्रि० ) तिरुवत्त इतमस्त्वम् तिरु-वत्त-  
 इति । तिरुवत्तवारो, ओ तिरुवत्तवा पनुदान  
 करता है ।  
 तिरुववरी ( हि० श्लो० ) एक प्रकारकी मिठाई जो तिरु  
 पोर कोनेके मेनने बनाई जाती है, तिरुपपुत्रो ।  
 तिरुवयम् ( स० चय० ) तिरु तिरु तत् परिमित चरो  
 तोति मन्नाईत्वात् वीचायां कारणात् यम् । वीरे कोने,  
 पाचिन्ने पाचिन्ने ।  
 तिरुवायि ( स० पु०-श्लो० ) वायवियेय, एक प्रकारका  
 सुगन्धित चान ।  
 तिरुवय्ये ( स० पु० ) तिरुनिर्मिता शैलः मय्यन्वो-  
 वर्त्तन्वाः । दान करनेके लिये तिरुवय्यित शैल । दानके  
 लिये दान परत करिवात् इत्ये तिरुवय्ये तिरुवय्ये पत्र  
 है । तिरुवय्ये दो मीठ हैं, यथा यत्तत्वा तिरुवय्ये  
 प्रदान मीठ, दूसरा तिरुवय्ये वचात् करिवात् तिरुवय्ये  
 विष्णु-व्यतिरि । इस शैलदानका विधान इस प्रकार  
 लिखा है—

पयन, विपुन, वनोपात, दिनचय अन्नदोया, चमा  
 चमा विवाह उषय, यज्ञ, दादयो, सुष्पदिन पादिमें  
 यह शैलदान करना पड़ता है । यथायाज इस शैल-  
 के दान करनेके समुक्त मनातन विष्णुकोचको पति है ।  
 दय द्रोच परिमित तिरुवा ओ शैल करिवात् होता है,  
 यह उत्तम यह शैलका मध्यम पोर तोन शैलका अधम  
 माना गया है ।

इस तरह यथायाज १०,१ वा १ द्रोच द्वारा एकमे शैल  
 बनाते हैं ; जोकि इस मन्त्रके पाठनकर करना पड़ता है ।  
 मन्त्र— 'वराहं वपु वचं विष्णोरेतरवपुत्रवा ।  
 शिवा कुम्भक शिवाय तरुवय्यको वरविह ।  
 इत्ये इत्ये च वस्त्राय दिवा एवायाजयम् ।  
 वराहवरा ये वैन्दु निवायन वनागुत्रे ॥'

इस मन्त्रके पाठनकर कर शैलको दान करना चाहिये ।  
 इसमें विष्णु-कोचको शक्ति होती है पोर पुत्रवय्ये नहीं  
 होता । तिरुवय्ये-व्यतिरि करनेमें इसी तिरुवय्ये-व्यतिरि

पनेक सुगन्धित पुष्प, सुवर्ण, विप्ल पोर विरुष्णय वंश-  
 पुत्र बनाना पड़ता । जोकि पूर्वार्ध रूपसे सञ्चारिण दान  
 करती है । ( मत्तपु० ६१,६२ प० )

तिरुवपुत्र ( स० त्रि० ) तिरु वृद्धति सुद-पुत्र मम् । तिरुको  
 परिभाषा सिद्धी ।

तिरुववे ( स० पु० ) तिरुववे चैव, इत्ये । तिरुवा  
 वेव ।

तिरुवय ( हि० पु० ) १ इन्द्रजात, आहू । २ चमकार,  
 करमात ।

तिरुवो ( हि० वि० ) इन्द्रजात सम्बन्धो, आहूवा ।

तिरुवद ( हि० पु० ) एक प्रकारका पोवा । इसमें वीरुवे  
 मित निवसता है ।

तिरुवदर— सुखवदेयके माङ्गलानुपुर त्रिसको एक  
 तहसोच । यह पचा० २० ११ से २० ११ ७० पोर  
 देगा० ७८ २० से ७८ ११ पू०में पचसित है । शैल-  
 फल ७१८ वर्गमील पोर लोचक देगा प्राय २१०-२१ है ।  
 इसमें तिरुवदर, सुदाग व पोर अट्टरा नामके तीन महर  
 पोर ११८ पास मवते हैं । इस तहसोचमें रामयज्ञके  
 बर्णने यज्ञको मही बहुत उपजाव हो गई है ।

२ तह तहमीलका एक महर । यह पचा० २० १८  
 ७० पोर देगा० ७० ७७ पू० माङ्गलानुपुरके ६ मीम  
 पचिममें पचसित है । लोचक देगा प्राय १८०-८१  
 है । इसी समय यह महर चारों पोर ई टोचो होवारने  
 बिरा या चमी लकवा केवल व पावयिय रह गया है ।  
 सिपाके विद्रोहके समय यज्ञके सम्मान सुसममानय  
 विद्रोही इत्ये, इसीमें लकवा सारो चम्पति जव त कर  
 नी गई । यह यज्ञ बनी सुसममान बहुत चोई है ।  
 यह महर शुद्धके वायवायके लिये प्रसिद्ध है ।

तिरुवा ( हि० पु० ) निरुसेय, यह मित जो निरुद्रिय पर  
 लकको विजिजता पूर करनेके लिये लगाया जाव ।

तिरुवा ( हि० श्लो० ) जो सुवर्णके सम्बन्धका टूटना । ईका  
 रवों पोर सुसममानमें यह प्रचलित है । ये चपनी बिबा  
 चिता श्लोके एक विधिये लियेमें पदुमार सम्बन्ध तोड़  
 देती है । सम्बन्ध टूट जाने पर श्लो वीर सुवर्ण दोनीको  
 सुवर्ण इत्ये बिबाच करनेका अधिकार हो जाता है ।

तिरुवाहितदन ( स० पु० ) तिरुवत्त पदित न यन्न,  
 वदुको । तैवकम् ।

तिलाञ्जलो (सं० स्त्रो०) मृतक संस्कारका एक अङ्ग । सुरटेके जल चुकने पर स्नान करके यज्ञ क्रिया की जाती है । इसमें हाथको अङ्गुलियोंमें जल भर उसमें तिल डाल कर उसे मृतकके नामसे छोटते हैं ।

तिलान्न (सं० स्त्रो०) तिलमिश्रित अन्न, मध्यलो० कर्मधा० । लघु, तिलकी विचट्टे ।

तिलपत्या (सं० स्त्रो०) तिलस्येव लुप्तः अपत्य वीजमस्याः, बहुव्रो० । क्षणजोरक, काला जोरा ।

तिलासु (सं० स्त्री०) तिलमिश्रितः अम्बु, मध्यपदलो० कर्मधा० । तिलकोटक, तिलमिला हुआ पानी ।

तिलाई (सं० स्त्री०) तिनस्य अई, इ-तत् । तिलका आधा, बहुत छोटा पदार्थ ।

तिनाषा (हिं० पु०) १ बड़ा कुर्मा । २ रातके समय कोतवाल आदिका शहरमें गश्त लगाना, रौंद ।

तिलिक (सं० पु०) गोनस मर्ष, एक प्रकारका सर्प ।

तिलिन—ऊपर ब्रह्मके पकोडू, जिलिका एक शहर । यह अक्षा० २१° २७' और २१° ५७' ६० तथा देशा० ८३° ५८' और ८४° २२' पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण ४८८ वर्ग मील और लोकसंख्या १०८४३ है । इसमें कुल १२० ग्राम लगते हैं । शहरमें माव नामकी नदी प्रवाहित है ।

तिलिया (हिं० पु०) सरपत ।

तिलो—बङ्गालकी एक प्रभावशाली हिन्दू जाति । इस जातिमें धनाढ्य और जमींदारोंकी संख्या काफी है । भारतवर्षके अन्यान्य प्रदेशोंमें जो तेलो जातिके लोग रहते हैं, उनके साथ इनके आचार-व्यवहार और सामाजिक सम्मानमें बिलकुल सौसादृश्य नहीं है; इसलिये इसको हम स्वतन्त्र जाति कह सकते हैं ।

तिली जाति क्षत्रिय, धाणिज्य, ध्यवसाय, महाजनो आदिका कार्य कर जोविकानिर्वाह करती है ।

शास्त्रोंके प्रति दृष्टिपात करने पर भी हमें देख पड़ेगा, कि तिल तेलो और तैलकारक जातिको उत्पत्तिमें कितना अन्तर है । ब्रह्मवैवर्तपुराणमें तैलिक जातिकी उत्पत्ति-विषयमें इस प्रकार लिखा है—

“गावालिन्या वारजीषात् तैलकस्य च सम्भवः ।”

अर्थात् वारुजोवि वा तमोलीके औरस और ग्वालिनके गर्भसे तैलिक जातिकी उत्पत्ति हुई है । किन्तु तेलोके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—

“कुम्भकारश्च वीर्येण सद्यः कोटकयोपितः ।

वभूव तैलकस्य कुटिलः पतितो भुवि ॥”

अर्थात् तैलकार वा तेलोजाति कुम्भकारके औरस और राज (वा संगतराज)के गर्भसे उत्पन्न हुई है, जो कि कुटिल और पतित है ।

इससे मालूम होता है कि तैलकार वा तेली जाति हिन्दू-समाजमें बहुत समयसे पतित है । परन्तु तैलिक-गण किसी शास्त्रमें शङ्करोंमें मध्यम श्रेणियोंके और किसी शास्त्रमें उत्तम श्रेणियोंके माने गये हैं ।

पराशरपद्धतिमें तैलिकोंके सामाजिक अवस्थानके बारेमें इस प्रकार कहा गया है—

“गोपो माली तथा तैली तन्त्र भोदको वारुजिः ॥

कुलाढः कर्मकारश्च नापितो नवपायकाः ।

एते सत्शुद्धजाताश्च नवशाखा प्रकीर्तिताः ॥”

इस प्रमाणसे तैलिक तथा तैलो जाति एक ही सकते हैं । तैलिक जातिकी बृहद्बर्मपुराणमें एक स्थल पर तैलिक कहा गया है, जिसका स्थान उत्तम शङ्करोंमें तथा शुवाकविक्रय-जोविकोंमें निर्दिष्ट हुआ है । ब्रह्मवैवर्तपुराणके ब्रह्मखण्डमें भी लिखा है,—

“तासां सद्भुजजातेन वभूवुर्वर्णसद्भुराः ।

गोपनापितलीलाश्च तथा भोदककूचरौः ॥

ताम्बुलीवर्णकारौ च तथा शणिजजातयः ।

इत्येवमाद्या विप्रेन्द्र सच्छुद्राः परिकीर्तिताः ॥”

इस श्लोकसे तोल वा तिलो जाति सत्शुद्ध प्रमाणित होती है ।

ऊपर जितने भी संस्कृत वचन उद्धृत किये गये हैं, उनमें एक भी ऐसा नहीं जिसे हम प्राचीन शास्त्र-सम्मत कह सकें । पराशरपद्धति अथवा परशुराम वा भार्गवरामकृत जातिमानाकी दुहाई दे कर जितनो भी वर्णसद्भुरोत्पत्तिकी कथाएं कोर्तित हैं, वे सब बङ्गालको निजस्य हैं; बङ्गालके बाहर कहीं भी उनका प्राचीन अस्तित्व नहीं मिलता । बंगालके नाना स्थानोंसे उक्त पद्धति वा जातिमालाकी जितनो भी पौथ्रियां निकली हैं, उनमेंसे कोई भी सौ वर्षसे ज्यादा पुरानी नहीं है । किसी भी महापुराण वा उपपुराणोंकी सूचोंमें बृहद्बर्मपुराणका नाम नहीं मिलता; अथवा यों कहिए, कि प्राचीन स्मृतिके-

निश्चयमें उच्चरमं पुराणके बचन उद्धृत नहीं हुए। कल-  
कालमें विभिन्न आशयि जितने भी उच्चरमं पुराण सुप्रिप्त  
हूए हैं उनमें उत्तरकण्ठमें ( शेषमाममें ) ११६ और  
११६में पञ्चायने जो बर्षसङ्हरप्रकरण बलिप्त हुआ है, बर  
एक पृष्ठ वसु हो मात्रम पङ्क्ति है। जिन बर्षसु  
पौर स्मृतिविहितार्थमें बर्षसङ्हरका प्रसङ्ग है, उनमें  
मर्षज पद्यजोम पौर प्रतिलोम सङ्घोका प्रसङ्ग, प्रयत्न  
रत्नेक विद्या गया है, परन्तु उच्चरमं पुराणमें पद्यजोम  
पौर प्रतिलोम दोनों प्रकारको २० सङ्हरशास्त्रियोंको थोडा  
बच सङ्हर कहा गया है। पादबर्षको बात है कि उच्चरमं-  
पुराणके पाठभेदके तैलिक वा तौलिक आतिका एक मान  
सेमि पर भी उच्च पुराणको 'वैश्या द्विवर्षम्भावां मथेठा  
म्बुकेतौकिमे' (११११) अर्थात् 'वैश्याके पौरस पौर  
ब्राह्मणकाम्याके गमने ताम्बुसि पौर तौलिक जाति उत्पन्न  
हुई है' इस प्रकार उत्पत्तिको मान कर ताम्बुसि पौर  
तौलिक आतिका बिन्नी प्रकार भी थोडा बच सङ्घामि  
नहीं विधा जा सकता। एषो दृग्गमि उच्च प्रतिलोमका  
जोम बर्षसङ्हर माना जा सकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि ब्रह्मवैवर्तपुराणके ब्रह्म-  
व्युत्पत्त्या १०वां अध्याय, जिसमें एक सङ्हर आतिमाका  
कोर्तित हुई है बर भी नितान्त प्राहुनिक समयकी  
रचना है। उक्त अध्यायमें यह श्लोक मिलता है—  
'अथैकस्मिन् सुप्रिप्तम्भावां कोकवादिर्बृह ह ।' (१०१२६)  
अर्थात् अथैक वा सुप्रिप्तमानके पौरस पौर सुविन्द-काम्याके  
गमने 'ओसा' आति उत्पन्न हुई है।

'ओसा' शब्द केवल ब्रह्मवैवर्तमें ही प्रचलित है, ब्रह्मव-  
र्षको हीइ बर उत्तरपश्चिम प्रांतोंमें 'कुमना' कहते हैं।  
बर्षाशर्त सुप्रिप्तमानोंके पानिके बाद, उनमें सम्पन्न है इस  
कुमना आतिका उत्पत्ति हुई है पौर इमोकिए ब्रह्मवै-  
वर्तपुराणके ब्रह्मव्युत्पत्तमें बर्षसङ्हर आतिमाका  
थय प्राहुनिक विद्व होता है। यङ्गुङ्गके बुद्धमें 'राजोव'  
पौर "बर्षा" कोरींका उच्चर (प्रबलितकण्ठ ५० ५०) है  
यह बात प्रमाणित होती है कि प्रचलित ब्रह्मवैवर्तमें  
बहुतसे श्लोक ऐसे भी हैं जो पौडिसे ब्रह्मवैवर्तमि बना  
लिए हैं। इतनिय पूर्वोद्धृत श्लोकोंके अनुसार 'तिसो'  
'तैलिक' वा 'तौलिक' पौर 'तैलिक' आतिका उत्पत्तिका

निर्बन्ध करना आदयमङ्गत नहीं है। आतिने विषयमें  
उद्धृत श्लोक जिसो बिन्नी प उच्चरमं साधनके लिए प्राहु-  
निक समयमें रचे गये हैं, इसमें कोई भी सन्देह नहीं  
है।

इ नाममें साधारणतः तिसो, तिसो पौर 'कोलू' ये  
तीन आतिर्षा पाई जाते हैं; जिनमेंसे तिसो आतिका  
पाचार-व्यवहार उच्चरमंको ही हिन्दूश्रीके समान है; उच-  
नयनके सिवा वल आतिर्षा प्रथम सकार सुख वा शौच  
कामे प्रचलित है। इस समाजमें विधवा विवाह प्रचलित  
नहीं है, किन्तु विधवाए यवारीमि ब्रह्मव्युत्पत्त्या पालन  
करती हैं। तिसो पौर तिसो आतिमें परस्पर कोई सम्बन्ध  
नहीं है। तिसो आतिका सामाजिक प्राधन तिसो  
आतिने बहुत लोपे है। बर्षो कर्षो तिसो आतिका  
गामी नहीं चलता, परन्तु तिसो आतिका पानो सर्वत्र  
पौर उच्च ब्राह्मण भी पश्य करते हैं। उक्त तिसो पौर  
तिसो आतिका अर्थात् 'कोलू' आतिका सामाजिक  
प्रवृत्त्या पौर भी हीन है। बर्षो भी इसका पानो नहीं  
कमता; सर्वत्र ही यह अल्पप्रजातिको तरह मानी जाती  
है। नमोय गाण्डवारीमें तिसो आतिका 'तैलिक' नामसे  
तथा 'कोलू' आतिका 'तैलिक' नामसे उच्चर विद्या  
है; एषो दृग्गमि परदृग्गम वा पराशरपदति ब्रह्मवैवर्त  
वा उच्चरमं पुराणमें ही तैलिक आतिका प्रसङ्ग है अर्थात्  
इस तिसो मान लगत है पौर बर्षा तैलिक आतिका  
प्रसङ्ग है, अर्थात् 'कोलू'। यह पश्ये हो विद्या वा शुद्धा  
है कि उच्चरमं पुराणमें 'तैलिक'को अर्थ 'तौलिक' भी  
पाठ है। पौर भी देखिये—

'तैलिके शरणीरात्रां गुणाकिके बह ।' (१४)५२

अर्थात् तैलिकको शुद्धा (दुपारो) विद्वय बर्षमेंसे लिए  
पाया दो गई हो। यहाँ बिधो बिधो सुप्रिप्त पुस्तकमें  
तौलिक पाठ रङ्गमें कोई कोई ऐसा समझते हैं कि  
तिसो आतिमें कोई कोई दुपारोका रोजवार करती हैं।  
इतनिय तिसो पौर तौलिक दोनों एक ही आति हैं।  
परन्तु यह उक्तका ध्यम है। तौलिक वा तौलिक शब्दका  
पानिजाजिक अर्थ विद्वय (अर्थात् वा 'तूतो वा  
तू कोमि विद्वयद्वय द्वारा मेविकानिर्वाह करे) है।  
प्राहुनिक उच्चरमं पुराणमें तौलिक आतिका शुद्धा-

व्यवसाय निर्दिष्ट किया गया है; परन्तु जरा विचार करनेसे सहज ही मालूम हो सकता है कि सिर्फ तिलो जातिमें ही नहीं, वल्कि ताम्बूलि, वारुई, गन्धवणिक् आदि सभी जातियोंमें बहुत समयसे गुवाक वा सुपारोका व्यवसाय प्रचलित है। फिलहाल तिली जातिका कोई निर्दिष्ट व्यवसाय ही नहीं है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि यह जाति क्षपि, वाणिज्य, वावसाय, महाजनो आदि द्वारा जीविका निर्वाह करती है। यह कहना फिजूल है, कि शास्त्रानुसार उपर्युक्त कार्य ही वैश्याजातिकी उपजीविकाके लिए योग्य हैं।

तिली शब्दका मुख्यार्थ तिलोत्पादनकारो है। अमरकोषके वैश्ववर्गमें इस प्रकार लिखा है—

“तिल्व तैलीनवदामापोमाण्णुम गाद्धिरूपता ॥” ( २।८।७ )

अर्थात् तिल्व और तैलीन शब्दसे तिलोत्पादक (तेलादि) का बोध होता है। तिलो शब्द ‘तिल्व’ और ‘तैलीन’ शब्दका एकार्थवाची है। ऐसो दशामें ‘तिली’ शब्द भी वैश्ववर्गमें पड़ता है।

महाभारत शान्तिपर्वमें तुलाधार वैश्य और जाजलि संवादमें लिखा है—

“विक्रीणतः सर्वैरसान् सर्वगन्धाश्च वाणिज ।

वनस्पतीनोपधीयाश्च तेषां मूलफलानि च ॥

अव्यगा नैष्ठिकी बुद्धिं कुतश्चामिदभागतम् ।

एतवानक्ष्व मे सर्वे निखिलेन महामते ॥” (२६।२।२)

जाजलिने तुलाधारसे पूछा—“हे वाणिज पुत्र! तुम सर्व प्रकार रस, सर्व प्रकार गन्ध, वनस्पति, औषधि और फल-मूल वेचा करते हो, तुमने किस प्रकार ऐसा निश्चय बुद्धि और ज्ञान प्राप्त किया है? हे महामते! मुझे सब समझा दो।”

इस प्रकार विस्ततरूपमें धम तत्त्व प्रकट करते हुए तुलाधारने कहा—

“ये च छिन्दति वृषणान् ये च भिन्दति नस्तान् ।

बहन्ति महतो भारान् वभ्रन्ति दमयन्ति च ॥३॥

इत्या सत्वानि खादन्ति तान् कथं न विगर्हसे ॥३८॥

पंचेन्द्रियेषु भूतेषु सर्वे वसति दैवतम् ।

आदिरप्यश्चन्द्रमा वायुं ब्रह्मा प्राणः क्रतुर्यमः ॥४०॥

तानि जीवानि विक्रीय का भूतेषु विचारणा ।

अजोर्ध्वरुणो मेघः ऽसूर्यो ऽश्चः पृथिवी विराट् ॥४१॥

वैश्वेत्सश्च सोमो वै विक्रीयैतन्न सिद्धति ।

का तैले का धृते ब्रह्मन् मधुन्युप्यौषधेषु वा ॥४२॥”

अर्थात्—‘जो गो-समूहका मुष्कमोषण और नासिका भेदन करे उनकी गुरु-भारसे प्रपीडित, वह और दमित करते हैं तथा जो नाना प्रकारकी जोषहिंसा कर मांस भक्षण करते हैं, उनकी क्यों न निन्दा की जाय? पञ्चेन्द्रिय-विशिष्ट जीवमात्रमें ही सूर्य, चन्द्र, वायु, ब्रह्मा, प्राण, क्रतु और यम वास करते हैं; सुतरां जोषदेह विक्रय द्वारा जो अपनी देह त्याग करते हैं, वे भी क्या निन्दनीय नहीं हैं? छागमें अग्नि, मेघमें वरुण, अश्वमें सूर्य, पृथिवीमें विराट् तथा धेनु और वल्गमें चन्द्र अवस्थान करते हैं; इसलिए जो व्यक्ति इनको विक्रय करते हैं, उन्हें कभी भो सिद्धि प्राप्त नहीं होती। परन्तु तैल, घृत, मधु और औषध-विक्रय द्वारा किसी पापस्पर्शको सम्भावना नहीं है। उद्धृत विवरणसे धार्मिक वैश्याका क्या क्या कर्तव्य है? सो मालूम हो जाती है।

मनुसंहिताके दशवें अध्यायमें लिखा है—

“अपः शाकः विपं माघं सोमं गन्धांध सर्वशः ।

क्षीरं क्षौद्र दधि घृतं तैलं मधु गृहं कुशान् ॥”

अर्थात्—जल, शास्त्र, विप, मांस सोमवल्ली, सर्व प्रकार गन्ध, दुग्ध, चोर, दधि, घृत, गुड़, तैल, मधु और कुश इन वस्तुओंको ब्राह्मण नहीं बेच सकता; यह वैश्यके लिए पालनीय है। परन्तु आपटुकालमें ब्राह्मण भो उक्त वैश्यके वावसायको ग्रहण न कर सकता है।

अब देखा जाता है कि अमरकोष, महाभारत और मनुसंहिताके अनुसार तिलोत्पादन, तिल और तैल बेचना वैश्यकी उपजीविकामें था; परन्तु गाय वा बैलका अण्डकोष छेदन और नासिका-भेदन निन्दित समझा गया है। कोलू जाति, कोरुहमें लुत कर बिना सड़ोचके काम करेगा इस खयालसे, बैलका मुष्क छेदन करती है और इसी निन्दितकर्मके द्वारा वह हिन्दू-समाजमें अस्पृश्य एवं पतित समझी जाती है। तिलीजाति ऐसा हीन कर्म न करने पर भी चक्रमें जीत कर बैलकी कष्ट देती है; इसलिए वह कोलूकी तरह अतिहीन न होने पर भी विपरीत आचरण द्वारा वैश्यसमाजके बाहर

धनो गई है। बड़ासमें धनो नबयाहमें मानिक किने जाते हैं। तिन्ने जातिमें पच बहुतीनि कोरुन चराना कोरु दिया है पोर भिय चरबसाह करी ली है। इनमें जो 'धानो' (कोरुन) चरती है, वो 'धनतिनो' बहती है। यह कहना बाय है कि उक्त विभिन्न प्रकार जायिक तिलो जातिका कोरु सम्पन्न नहीं है। सम्भवतः यह जाति बहु पूर्वकाहमें तिल उत्पादन पोर तिलका म्बव भाग करतो ही पोर इसीसे इसका नाम तिलो पड़ा है।

तिनो जातिका मत मान हिन्दूसमाज पर कितना प्रभाव है, इन बातका निर्णय उनको सिधा दोसा पोर धनकताको पालोचना करनेमें हो हो सक्त है। तिलो सोम पाषाण-कालमें ब्राह्मण पोर कायस्थोंकी तरह सदाचारो होत है। जो-जातिका परिचय कर जोबिधा निर्बाह करना सामाजिक मोचताका चिह्न है; किन्तु तिन्नेमें ऐसो क्रिया बहुत कम हैं जो कायिक परिचय दार जोबिधानिर्बाह करतो हो।

इस जातिमें हजार पोछे १८ मिथित व्यक्त हैं।

तिनी जाति बहुत प्राचोन है, इमें सम्पन्न नहीं। बड़ासमें बहुतीनि सद्यानजनक काह कर कोर्ति प्राज्ञ को है। पुष्पकोर्ति रामो मवानोने इसी जातिके दयागामको दोबानीका पद दिया बा। प घेजोके पम्पुदवके प्रारथ में कामिमबाजार-राज्य गंधे प्रतिहाता कान्त बाबूनी बारीन् ईति प् खादि उचपदक खड्गियोका सीहाध प्राज्ञ किया था। कान्त बाबूके पान्तरिक प्रयत्न पोर शिवाधि, ईति सबो इस उद्यमें सुयासन कायन करनेमें बहुत कुछ सहायता मिळो हो। कहा जाता है कि उचप नमरुध सुमनिह राजा उचपचन्द्रने तिलोत्रातोय एक खड्गको राजके पदक पद दिया बा।

इस युगमें उचपदास पान इय जातिका सुखोपजन कर गये हैं। पाप असामान्य प्रतिभाकी शिखर पोर चहासाधक कामो है। पापका राजनीतिक मतवाद उस समय सर्वत्र पाहरके खाह रखीत होना बा। तिनो-जातिके राजकाल राय मो सुप्रसिद कवि पोर नायकार एव पोपन्थामिक हो गये हैं। किमदान कामिमबाजारके जोबमान्य महाराज घर माकोन्द्रचन्द्र मन्दो बहादुर, जिन्होंने इलो तिलोजातिमें जन्म लिया है, पपने

पोदम्यं सदायता, धमाबिधता पादि सुखेधि बडासके एक पादम्यं सुखके इमें सम्मान पा रहे हैं।

बहानमें तिनी जातिके घनाब्धोंकी म प्या बालो है। कामिमबाजार, दोसापतिया, राबावाट, बयडा मैघपुर, जोरामपुर, फरासडाबा, फरोदपुर, भायबहुत, सुडामन पादि कानामि धनो दार इसी जातिके हैं।

तिन्नेतो (हि० श्री०) निचनको प्युटो जो फसक बाटरी पर शितमें बच जातो है।

तिलेदानो (हि० जो०) शिकरानी देवे।

तिइन् (हि० जो०) टेकन् देवी।

तिलोबपति (हि० पु०) विष्णु।

तिलोको (हि० पु०) तिलोई देवी।

तिलोचन (हि० पु०) तिलोचन देवी।

तिलोत्तमा (म० श्री०) तिन्नेप्रमाके सबरजामों पंगे बसता। सर्वेश्या जगोंको एक सिद्धा। सुन्द पोर लप सुन्द नामके दो पसुर है, जो देवतापीं द्वारा पचक पोर प्रकल पराज्जमो पी। जे दोनों माई यदि परस्पर न मड़ते, तो इनको पचक होनी पुर्वत हो। मोच-वितामह मग-यान् ब्रह्मनि इन दीनों पसुरोंके बिनायाग्यं समस्त रजोंका तिल तिल पचक कर तिलोत्तमाको खडि हो पी०।

इसके समान रूपवतो रमयो कर्मराजमें दूमरो न हो। तिलोत्तमाके रूपनाव्यका विषय इस प्रकार बर्णित है—'एक दिन एक पलामान्य रूपसाहखयतीने महा देवको प्रबोमित करनेके लिए उनके पारों पोर भूमना रुक कर दिया। उस समय महादेव मो उस पर मोहित हो गये पोर उसको देखनेको पमिसापाये, जिस तरह कह गई, योगवसधि लही तरह से पपना सु च बनाने ली। इस प्रकार तिलोत्तमाके दम्यंके लिए महादेवको पार सु च बनाने पड़े है १।

\* "शिरं शिरं सतीव सजामां वडिभिविता।  
शिलोत्तमेति उतस्व। नाम चके पिताकइ" इ"  
(भारत जति- २११ अ०)

‡ "वतो वत" बा इरही मातृशुभा वरुभिते।  
उतस्ततो सुचकाह मम देवि शिविर्मतम् ॥  
तं पिरपुरई गोपचन्द्रमूर्तिरबावत"।  
चन्द्रमूचक पंडितो रईवन् भोगप्रपमम् ॥"  
(भारत जनु० १२१११)

तिलोत्तमाकी पानिके लिए सुन्द और उपसुन्दमें परस्पर विवाद हो गया और उभी युद्धमें दोनोंकी मृत्यु हो गई।

तिलोयु—शाहाबाद जिलेके ससेराम उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षां २४° ४८' ३०" और देशां ८०° ६' ५०" में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २५८२ है। यहाँ शीतलादेवीको एक प्रतिमूर्ति है, जिस पर १३३२ ई० अर्द्धित है। इस देवीके कारण यह स्थान बहुत मगहर हो गया है। प्रति वर्ष कार्तिक मासमें यहाँ एक मेला लगता है जिसमें १००००० मनुष्य एकत्रित होते हैं।

तिलोदक ( म० क्लो० ) तिलमिश्रित उदक, मध्यलो० कर्मधा०। तिलमिश्रित जल, तिल मिला हुआ पानी।

तिलोरी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी मैना।

तिलोच्छना ( हि० क्लि० ) तेल लगा कर चिकना करना।

तिलोदन ( स० क्लो० ) तिलमिश्रित ओदन, मध्यलो० कर्मधा०। कृशर, तिलकी खिचड़ी।

तिलौद्धा ( हि० वि० ) जिसका खाद या रंग तेलसा हो।

तिलोरो ( हि० स्त्री० ) तिल मिलो हुई उरद या मूंगको बरी।

तिलपिञ्ज ( स० पु० ) तिल पिञ्ज वेदे लिख। बन्धुतिल, बंधा तिल।

तिल्य ( स० क्लो० ) तिलानां भवनं क्षेत्रं वा तिल-यत्। विभावा तिलमापोमार्गगुग्गुः। पा ५।२।४। १ तिलकी खेत। ( त्रि० ) २ तिलाय हितं हितार्थं यत्। तिलका हितकर। ३ तिलोत्पादक।

तिल्लना ( हि० पु० ) तिलका नामक वर्णवृत्त।

तिल्लर ( हि० पु० ) १ एक प्रकारका चिड़िया। ( वि० ) २ तिलड़ा।

तिल्ला ( अ० पु० ) १ कलावत्तूका नाम। २ पगड़ी, दुपट्टे या साडीका कलावत्तूका काम किया हुआ अंचल। ३ वह वस्तु जो शोभा बढ़ानेके लिये किसी चीजमें लगाई जाती है।

तिल्लाना ( हि० पु० ) तराना देखो।

तिल्ली ( हि० स्त्री० ) पेटके भीतरका एक अवयव। यह मांसकी पोली गुठलीके आकारको होती है और पसलियोंके नीचे पेटकी बाईं ओर रहती है। इसमें खाए

हुए पदार्थका रस कुछ समय तक रहता है। जब शरीरके रक्त द्वारा यह रस सोख लिया जाता है तो तिन्नी चिपक कर पूर्ववत् हो जाती है लेकिन इसके पहली यह रसमें बढ़ो हुई देख पड़ती है।

ज्वर होने पर यह तिन्नी कुछ बढ़ जाती है, क्योंकि उसमें रस आ जाता है। ऐसी अवस्थामें उसे छेदनसे लाल लेह निकलता है। इस रोगमें मनुष्य बहुत कमजोर हो जाता है और सुं ह सुखा रहता है। वैद्यकशास्त्रमें लिखा है कि टाहकारक तथा कफकारक पदार्थोंके विशेष सेवन करनेसे लोह कुपित हो कर कफ द्वारा मोहाकी बढता है तब तिन्नी बढ़ आती है। आयुर्वेदके अनुसार जवाखार, पनासका चार, शङ्खको भस्म आदि मोहाकी उपयुक्त औषध है। डाक्टरोमें कुनेन, स'ग्विय' और लोहा-मिश्रित औषध तिन्नी बढ़ने पर दी जाती है। इसे मोहा और पिलहो भी कहते हैं।

२ तिल नामका अन्न। ३ ग्रामाम और वरमामें ऊँची पहाड़ियों पर मिलनेवाला एक प्रकारका वांस। इसकी ऊँचाई पचास फुट तक और गांठें दूर दूर पर होती हैं। तिल्व ( स० पु० ) तिलतोति तिल-वन्। उवाचयश्च। उग् ५।६५। इति सूत्रेण निपातनात् साधुः। १ लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़। २ श्वेतवर्ण लोध्र। ३ रक्तलोध्र, लाल लोध्र।

तिल्वक ( स० पु० ) तिल्व-स्वार्थं कन्। १ लोध्र, लोध्र। २ तिनिश्र।

तिल्वनो ( स० स्त्री० ) कर्णस्फोटा, एक प्रकारकी बेल। तिल्विल ( स० पु० ) देवयजन-स्थान, वह जगह जहाँ देवताको पूजा की जाती है।

तिवारी—ब्राह्मणजातिको एक उपाधि। इस नामके ब्राह्मण गौड़ व कान्यकुब्ज आदि सम्प्रदायमें विशेष हैं। यह शब्द त्रिवेदी-शब्दका अपभ्रंश रूप है। पूर्वकालमें जो लोग तीनों वेदोंके ज्ञाता थे, उन्हें राजधर्मसभासे और विश्वविद्यालयसे त्रिवेदीको उपाधि मिलती थी। तदनुसार उनका कुल भी त्रिवेदी कहते कहते भाषाभाषियों द्वारा तिवारी कहाने लग गया।

तिवारी ( हि० वि० ) तिवारी देखो।

तिवो ( हि० स्त्री० ) खेसारी।

तिष्ठना ( धा० पु० ) ताना शिष्टना ।  
 तिष्ठ ( स० श्लि० ) धरक्षान करो, उड़ो, रहो ।  
 तिष्ठद्गु ( धा० पु० ) तिष्ठन्को गाभोयविमन् काप्ति तिष्ठद्गु  
 षष्ठीयात् निपातनात् अन्वयोमाकाः । दोहनआह वङ्  
 पस्य वङ् गात्रे ष्यन्ते ष्टुटे पर वर वर वा जाता ई  
 म ध्या, माम ।  
 तिष्ठद्गुप्रभृति ( स० क्लो० ) वाचिद्गुञ्ज गचबिद्येय, पाचिनि  
 की एव गचका नाम । अन्वयोमाच समामने निपातप्रबुञ्ज  
 तिष्ठद्गु प्रभृति वई एव गन्त् सिद्ध होते हैं, यथा—  
 तिष्ठद्गु, वङ्गद्गु धावतोमन्, ष्यमेयञ् चमेवुम, तुन  
 यञ् पुनश्च पूयमानयञ्, सङ्गतयञ्, सप्रमाययञ्,  
 नङ्गतञ्, समसुम, ममपशति, सुयम, विषम दुःप्रम,  
 नियम, अपसम, धायतौसम, प्रोङ्, पापमम, पुच्छमम  
 याङ्, प्ररङ्, प्रश्चञ्, प्रहृञ्चिञ् अपरटञ्चिञ्, सञ्चति चोर  
 अचञ्चति । ( वाचिनि )  
 तिष्ठहोम ( स० चि० ) तिष्ठता होमो अच् । अत्रतिष्ठप  
 यागमेद । षच अग्निं वयट कार मन्त्रद्वारा होम करना  
 पड़ता है ।  
 तिष्ठा ( स० श्लो० ) तिष्ठा नामको नदी । यह हिमालय  
 पर्वतसे पारसे निकल कर नवाबय अर्धे पास गमामे  
 ला मिली है ।  
 तिष्ठ ( स० पु० ) तुष्यम्बिन्नु तुष्य अथ निपातनात्  
 साङ् । १ पुष्य नक्षत्र । ( क्लो० ) त्विय-दीप्तो अङ्गादि  
 त्वात् यञ् निपा० साङ् । २ अस्तिबुञ् । तिष्ठ नङ्गञ्-  
 मस्तरञ् योर्भ्राञ्चो षच् । १ योवमास । पुष्यानक्षत्रमे  
 योवमासको पुषिमा होता है । ( जि० ) तिष्ठे नक्षत्रे  
 जात षच् तथ् सुञ् । ३ पुष्यानक्षत्रात् जो पुष्य  
 नक्षत्रमें उत्पन्न हो । ३ माङ्गञ्, अस्याचवारी ।  
 तिष्ठञ् ( स० पु० ) तिष्ठ एव आर्धे ङन् । योवमास ।  
 तिष्ठयुष्वा ( स० स्त्री० ) तिष्ठा माङ्गञ् सुञ् यष्वा,  
 बहुव्री० । धामसकी प्राञ्चत्ता ।  
 तिष्ठयष्वा ( स० श्लो० ) तिष्ठ यत् यष्वा, बहुव्री० ।  
 धामसकी ।  
 तिष्ठा ( स० श्लो० ) तिष्ठ्य माङ्गञ् ईत्तु लोनास्त्वष्वा षच् ।  
 धामसकीङ्गञ्, प्राञ्चिका ईत् ।  
 तिष्ठयुर ( हि० स्त्री० ) तिष्ठर रेको ।

तिष्ठरायत ( हि० स्त्री० ) तोषरा होनेका मास ।  
 तिष्ठरैत ( हि० पु० ) १ मध्यक । २ तीर्थे तिष्ठेका  
 मासिक ।  
 तिष्ठका ( स० श्लो० ) त्रिमासे ङन् तिष्ठ पादेय । तिष्ठ-  
 काये ईङ्गां ङ्गुपईवन्त । वा २३१२६ । धामसेद, एव  
 गाञ्चका नाम ।  
 तिष्ठकन्व ( स० श्लो० ) तिष्ठभिरिष्टुमिष्टुं तं षञ् ष्यु, षैदिक  
 प्रयोमि षच समासात् प्राचमन्त्रावपि षेदे त्रिष्ठादेवाः ।  
 वङ् ष्युप जिष्मिं तोन वाच लगी हो ।  
 तिष्ठा ( स० श्लो० ) गङ्गपुष्पो ।  
 तिष्ठा ( हि० पु० ) धर्मोक् राजाई सगी भाईका नाम ।  
 तिष्ठत्तर ( हि० चि० ) १ तिष्ठको मष्ठा उत्तरमे तोन  
 पश्चिक् हो । ( पु० ) २ वङ् सष्ठा जो उत्तर पौर तोनके  
 योगसे बनो हो ।  
 तिष्ठरा ( हि० पु० ) वङ् अग्न अर्धं तोन सोमा मिष्ठतो  
 हो ।  
 तिष्ठन् ( स० पु० ) तुष्ट षट्मं अन्निन् निपातनात् साङ् ।  
 १ आचि, रोम, पोका । २ वीचि, धान । ३ अन्, अन्वुप ।  
 ३ सङ्गान ।  
 तिष्ठरा ( हि० चि० ) १ देहा रेको । ( स्त्री० ) २ महीका  
 वरतन जिसमें इङ्को लमाया जाता है ।  
 तिष्ठराना ( हि० श्लि० ) तीन बार करना ।  
 तिष्ठरो ( हि० श्लो० ) १ तोन सङ्कोको माका । २ कृञ्  
 अमानेका मङ्कोका वरतन । ( चि० ) ३ शिरा रेकी ।  
 तिष्ठवार ( हि० पु० ) श्लोङ्गात्, पर्वका दिन ।  
 तिष्ठवारो ( हि० श्लो० ) श्लोङ्गात् रेकी ।  
 तिष्ठारै ( हि० पु० ) १ वतोर्वाय, तोषरा तिष्ठा । ( श्लो० )  
 २ श्लिक्तो अयत्र, अतन ।  
 तिष्ठानो ( हि० श्लो० ) चूङ्को वनामिने अग्निमें पाने  
 काको एक प्रकारका षचङ्को । यह एक वासिष्ठ्य ष वी  
 पौर तोन अशुन चोङ्को होता है ।  
 तिष्ठायत ( हि० पु० ) तिसरैत मध्यक ।  
 तिष्ठानी ( हि० श्लो० ) एक प्रकारको कपाचकी चोङ्की ।  
 तिष्ठैया ( हि० पु० ) वतोर्वाय, तोषरा माग ।  
 तोङ्कर ( हि० पु० ) श्लिक्तो अयत्रको षट्कारै । १ मंमिं  
 तिष्ठारै ष म अग्निं वर पौर दो तिष्ठारै ष्यञ्च सिता है ।



तीक्ष्ण ( म० क्ली० ) तेजयति तेज्यतेनेन वा तिज क्स्व  
 दीर्घञ् । तिजेर्दीर्घश्च । ङण् ३।१८ । १ उष्णता, गरमो ।  
 २ विप, जहर । ३ लोहभेद । इस्मात् । ४ युद्ध; लडाई ।  
 ५ मरण, मौत । ६ शस्त्र, हथियार । ७ मामुद्र लवण,  
 समुद्रो नमक, करकच । ८ मुष्क, मोखा । ९ चय्यक,  
 चाव । १० मरक, महामारो, मरो । ( त्रि० )  
 ११ तीक्ष्णतायुक्त, तेज या तोखे स्वादवाना । प्रतिभा,  
 होरक, कटाक्ष, दुर्वाक्य, नख, लवण, रविकर ये सब  
 तीक्ष्ण वस्तु है । ( कविकल्पलता ) १२ आत्मचागी ।  
 १३ निरालस्य, जिसे आलस्य न हो । १४ तेज धारवाना ।  
 १५ तोत्र, प्रखर, उग्र । १६ कर्ण कटु, जो सुननेमें अप्रिय  
 हो । १७ असह्य, जो सहन न हो सके । ( पु० ) १८ यव  
 चार, जवादार । १९ श्वेतकुग्ग, सफेद कुग्ग । २० कुन्द-  
 रुक्, कंदुर गोंद । २१ ज्योतिषोक्त नक्षत्रगण, आर्द्रा,  
 अश्लेषा, ज्येष्ठा और मूला नक्षत्र । २२ योगी ।

तीक्ष्णक ( म० पु० ) तीक्ष्ण मंज्ञार्या कन् । १ श्वेतमर्षप,  
 सफेद सरसों । २ सुष्कक, मोखावृक्ष ।

तीक्ष्णकण्टक ( स० पु० ) तीक्ष्णानि कण्टकानि यस्य,  
 बहुव्री० । १ धुस्त्र, घत्रा । २ इङ्गुटीवृक्ष । ३ बर्वूर,  
 बज्रलका पेड़ । ४ करीर, करीलका पेड़ । ( त्रि० ) ५ तीक्ष्ण  
 कण्टकयुक्त, जिसमें तेज कांटे हों ।

तीक्ष्णकण्टका ( स० त्रि० ) तीक्ष्ण कण्टक-टाप् ।  
 कन्वारो वृक्ष एक पेड़ ।

तीक्ष्णकन्द ( स० पु० ) तीक्ष्णाः कन्दोमूलं यस्य, बहुव्री० ।  
 पलाण्डु, प्याज ।

तीक्ष्णकर्म ( स० त्रि० ) तीक्ष्णकर्मं यस्य, बहुव्री० । कार्य-  
 दक्ष, जो काम-काज करनेमें तेज हो ।

तीक्ष्णकन्क ( स० पु० ) तीक्ष्णः कल्को यस्य, बहुव्री० ।  
 तुम्बुरुवृक्ष, धनिया ।

तीक्ष्णकान्ता ( स० स्त्री० ) तीक्ष्णा उग्रा कान्ता कमनोया  
 कमं धा० । मङ्गलचण्डिकाकी मूर्त्ति विशेष, तारादेवो,  
 उग्रतारा ।

कालिकापुराणमें लिखा है, कि दिक्करवासिनी  
 देवीकी पीठ पर स्वयं भगवान् शम्भु, लिङ्गरूपमें, विष्णु  
 गिलारूपमें और ब्रह्मा लिङ्गरूपमें अवस्थित हैं । फिर  
 वहाँ देवी दुर्गा तीक्ष्णकान्ता और उग्रतारा इन दो रूपमें

विहार करती हैं । नलितकान्ता नामक परात्परा मङ्गल-  
 चण्डिकाका नाम ही तीक्ष्णकान्ता है । तीक्ष्णकान्ता देवी  
 क्षणवर्णा, लम्बोदरो और एकजटाधारिणी हैं । साधक-  
 को इस देवीका पूजन सर्वदा करना चाहिये । मन्त्रपाठ  
 पूर्वक इसका त्रिकोणमण्डल करना चाहिये—“रेने  
 घुरेवे तथा तिष्ठन्तु” यहो तीक्ष्णकान्ताका मन्त्रन्यास  
 मन्त्र है ।

नरान्तक, त्रिपुरान्तक, देवान्तक, यसान्तक, वेता-  
 लान्तक, दुर्हरान्तक, गणान्तक और श्यामान्तक ये तीक्ष्ण-  
 कान्ताके द्वारपान हैं । मण्डलके घाट और इन सर्वोकी  
 पूजा करना चाहिये । पूजा करते समय मन्त्रोपनास  
 एक नाम, पोढ़े “वध्वपुष्पं” तब “स्वाहा” सबकी मिला  
 कर जो बने वही इन द्वारपालकीका मन्त्र है । तीक्ष्ण-  
 कान्ता और उग्रतारा इन्हीं दो मूर्त्तियोंमें पाद, उप-  
 करण, स्नान, न्यास प्रभृति कहना पड़ता है । चामुण्डा,  
 करान्ता, सुभगा, भोषणभगा और विकटा ये छ देवीकी  
 योगिनी हैं ।

‘हे भगवत्येकजटे विद्महे वि षट्दष्टैः श्रीमहि तप्रस्तारे प्रचोदयात् ।’

यही पीठदेवी तीक्ष्णकान्ताकी गायत्री है । विकट-  
 चण्डिका देवी इनकी निर्माल्यधारिणी हैं ।

मृगमय वा रुद्रानमे इनकी जपमाला करने पड़ती  
 है । तीक्ष्णकान्ता देवीकी पूजामें यहो विशेष है । इसके  
 सिवा उपचार वलिदान जप आदि समस्त कार्य कामा-  
 ख्या पूजाके अनुसार करने पड़ते हैं । तीक्ष्णकान्ता देवीके  
 जलमें मदिरा, वलिमें नरबलि और नैवेद्यमें मोटक,  
 नारियल, मास, व्यञ्जन और ईख ही प्रयुक्त और प्रोत्तिप्रद  
 हैं । इनकी पूजा करनेसे साधक अशोभ लाभ करता है ।

( कालिकापु० ८० अ० )

तीक्ष्णकील ( स० क्ली० ) १ अककर, अकरकरा । २ शक-  
 मदनवृक्ष, सफेद मदनका पेड़ ।

तीक्ष्णचोरो ( स० स्त्री० ) वंशलीचन ।

तीक्ष्णगन्ध ( स० पु० ) तीक्ष्णः प्रचण्डो गन्धो यस्य, बहुव्री० ।  
 १ श्रीभाञ्जनवृक्ष, सँहजनका पेड़ । २ रक्ततुलसी,  
 लाल तुलसी । ३ श्वेततुलसी, सफेद तुलसी । ४ कुन्दरु  
 नामक गन्धद्रव्य ।

तीक्ष्णगन्धा ( स० स्त्री० ) तीक्ष्णगन्ध-टाप् । १ श्वेतवचा,

सहित बच। २ कन्यारीका ह्य। ३ रात्रिका रात्रि।  
 ४ बचा, बच। ५ बोकली। ६ सुप्न वा, सोटी प्रहा-  
 पची। ७ प्रसन्नोरक, सविद कोरा।  
 तीक्ष्णश्लोषा (स० श्लो०) सुक्ष्णवा सवेद मय।  
 तीक्ष्णश्लुका (स० श्लो०) तीक्ष्ण श्लुका यस्व, बहुवो०।  
 विष्णो, पोषण।  
 तीक्ष्णव (स० पु०) पिशुवच, पक्ष पिङ्ग।  
 तीक्ष्णता (स० श्लो०) तीक्ष्ण माव तीक्ष्ण भावे तत्र  
 टाप। तोमता, तित्री।  
 तीक्ष्णताप (स० श्लो०) तीक्ष्ण तापा यस्व। महादेव  
 शिव। --  
 तीक्ष्णतैले (स० श्लो०) तीक्ष्ण तैले चंदे तैले च  
 तीक्ष्ण तैले चंदे वस्व। १ चूरी चीर, सिद्धुका  
 पूर। २ मंत्ररस, राम। ३ मय, यथा। ४ सरसोका  
 शिव।  
 तीक्ष्णत्व (स० पु०) तुम्हुर धनिया।  
 तीक्ष्णदृष्ट (स० पु० श्लो०) तीक्ष्ण दृष्टा यस्व, बहुवो०।  
 १ वारा, वाय। (वि०) २ तीक्ष्ण दृष्टा यस्व, तिसरे दंत  
 तीक्ष्ण।  
 तीक्ष्णदन्ता (स० श्लो०) दाहनाय ह्य।  
 तीक्ष्णदन्त (स० पु०) यह ज्ञानवर तिसरे दंत बहुत  
 तेज या मुखासी हो।  
 तीक्ष्णदृष्टि (स० श्लो०) तीक्ष्ण दृष्टि कर्मधा०। सुप्न  
 दृष्टि तिसको दृष्टि सुक्ष्मे सुप्न वात पर पड़तो हो।  
 तीक्ष्णदृ (स० पु०) पिशुवच एक प्रकारका कटिहार  
 पिङ्ग।  
 तीक्ष्णधार (स० पु०) तीक्ष्णधारा यस्व, बहुवो०। १ चक्षुः।  
 (वि०) २ तीक्ष्ण धारयुक्त, तिसको धार बहुत तेज हो।  
 तीक्ष्णधम (स० पु०) तीक्ष्णधामि पञ्चापि यस्व बहुवो०।  
 १ तुम्हुर, धनिया। २ कुमरिच, लाव तिसका पिङ्ग।  
 (वि०) ३ महाप्रबुद्ध तिसके धामे तेज धार हो।  
 तीक्ष्णपुष्प (स० श्लो०) तीक्ष्ण पुष्प यस्व बहुवो०।  
 १ लवङ्ग शोभ। (वि०) २ तिस पुष्पयुक्त तिसके  
 धामे तेज धार हो।  
 तीक्ष्णपुष्पा (स० श्लो०) तीक्ष्ण पुष्प-टाय। शितको।  
 तीक्ष्णमिय (स० पु०) यव जो।

तीक्ष्णपल (स० पु०) तीक्ष्ण पल यस्व, बहुवो०।  
 १ तुम्हुर, धनिया। २ तेजा पल।  
 तीक्ष्णकला (स० श्लो०) तीक्ष्ण कल टाप। राजधर्मय,  
 रात्रि।  
 तीक्ष्णवृद्धि (स० पु०) तीक्ष्णवृद्धियं यस्व, बहुवो०। प्रथम  
 मति तिसको वृद्धि बहुत तेज हो।  
 तीक्ष्णमन्त्रो (स० श्लो०) यक्षकता, मानका योवा।  
 तीक्ष्णमूल (स० पु०) तीक्ष्ण मूल यस्व बहुवो०।  
 १ यामाक्ष, चंद्रि कन। २ कुशाक्षय। (वि०) ३ तिसम-  
 मूलक, तिसको वृद्धि बहुत तेज यस्व हो। (श्लो०)  
 तीक्ष्ण मूल कर्मधा०। ४ तिसम मूल, तेज कर्तु।  
 तीक्ष्णमि (स० पु०) तीक्ष्णमयो यस्व, बहुवो०।  
 तिसाद्य, सुयं। (वि०) २ तिसम रमितुक्त तिसको  
 तिसको बहुत तेज हो।  
 तीक्ष्णरस (स० पु०) तीक्ष्ण रसो यस्व बहुवो०। १ यव  
 धार, चक्षुधार। तीक्ष्ण रस कर्मधा०। २ तिसमर,  
 याव। (वि०) ३ तिसमर वृद्धि तिसका रस बहुत तेज  
 हो।  
 तीक्ष्णशौच (स० श्लो०) तीक्ष्ण शौच कर्म। शौचमेद,  
 इत्यात।  
 तीक्ष्णवस्त्र (स० पु०) तुम्हुर, धनिया।  
 तीक्ष्णवच (स० पु०) पिशुवच, एक प्रकारका कटिहार  
 पिङ्ग।  
 तीक्ष्णविम (स० श्लो०) तीक्ष्ण विम यस्व, बहुवो०। यक्षिण  
 विमयुक्त तिसके तेज मति हो।  
 तीक्ष्णगू (स० पु०) तीक्ष्ण गूको पय यस्व, बहुवो०।  
 यव, जो। (वि०) २ क्षरगूकयुक्त, तिसको भोज तेज  
 हो। (श्लो०) तीक्ष्ण गू, कर्मधा०। ३ क्षरगू तेज  
 भोज।  
 तीक्ष्णमाग (स० श्लो०) तीक्ष्ण कर्मिः मारी ब्रह्मा  
 बहुवो०। १ यि मयावच, योगका पिङ्ग। २ महकयुक्त,  
 मयुवीका पिङ्ग। ३ शोच लावा। ४ (वि०) तिसमर  
 युक्त, तिसका रस बहुत तेज हो। (श्लो०) ५ क्षरधार,  
 तेज रस।  
 तीक्ष्णा (स० श्लो०) तीक्ष्ण टाप। १ बचा, बच। २ यव  
 कटिहार। ३ कपिलक, शोच। ४ महाश्लोति

अती क्षता, वही मालकंगनी । ५ अत्यन्तपर्णी क्षता ।  
६ जलोका, जीक । ७ कटु वीरा, सिर्च । ८ तारादेवोका  
एक नाम ।

तोच्छांशु ( स० पु० ) तोच्छाः अश्वो यस्य, बहुव्री० । तिग्म  
रश्मि, सूर्य ।

तोच्छांशुतनय ( स० पु० ) तोच्छांशुः सूर्यस्तस्य तनयः,  
६-तत् । सूर्यतनय, सूर्यके पुत्र ।

तोच्छाग्नि ( स० पु० ) १ छातीका एक रोग । २ अजोर्ण  
रोग । ३ जठराग्नि ।

तोच्छाग्र ( स० त्रि० ) तोच्छाःअग्रे यस्य, बहुव्री० । सूक्ष्माग्र,  
पैनी नोकवाला, जिसका अगला भाग तेज या नुकीला  
हो ।

तोच्छाग्रम ( स० स्त्री० ) अय एव आग्रसं तोच्छाञ्च तत्  
आग्रसञ्चेति, कर्मधा० । लौहविशेष, इत्यात लोहा ।  
इसके संस्कृत पर्याय—लौह, शस्त्रायस, शस्त्र, पिण्डा,  
पिण्डायस, शठ, आग्रस, निशित, तीव्र, खड्ग, मुण्डित,  
अग्रस, चित्रायस और चोर्नज । इसके गुण—उष्ण,  
तिक्त ; वात, पित्त, कफ, प्रमेह, पाण्डू, और शूलनाशक  
तथा तोच्छ ।

इत्यातका चूर्ण और त्रिफलाका चूर्ण एकत्र मिला  
कर दूधके साथ सेवन करनेसे शूलरोग जाता रहता है ।

तीक्ष्णीषु ( स० पु० ) असन्न वाणयुक्त ।

तीक्ष्ण ( हि० वि० ) १ तोच्छ, जिसकी धार या नोक  
बहुत तेज हो । २ प्रखर, तीव्र, तेज । ३ उग्र, प्रचण्ड ।  
४ जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो । ५ बड़िया, अच्छा ।  
६ अभियं वचन । ७ जिसका स्वाद बहुत तेज या  
चरपरा हो ।

तीक्ष्णो ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारका काठका औजार जो  
रेशम फरने वालोंके काममें आता है । इसके दोचमें गज  
डाल कर उस पर रेशम फीरा जाता है ।

तीखुर—हलदीको जातिका एक प्रकारका पौधा । इसको  
जड़से अरारूट प्रसृत किया जाता है । अरारूट देखो । मध्य  
भारतमें यह प्रचुर परिमाणमें पैदा होता है । बङ्गाल,  
मन्द्रास और बम्बईके पहाड़ी प्रदेशोंमें भी इसकी खेती  
होती है । हरिद्रा, कचूर और आमहल्दी प्रभृतिकी  
तरह, मध्यभारतके रायपुर जिलेमें तीखुरका भी खूब

बड़ा व्यवसाय होता है । उत्तर-पश्चिम हिमालय, कनाडा  
जिलेके रामघाट पर्वत, त्रिवाङ्गोर और कोचीनमें भी  
यह उगता है । यह दो प्रकार होता है ; अश्वेजीमें इन  
दो जातियोंके नाम Curcuma augustifolia एवं  
Curcuma Leucorrhiza हैं । हिन्दोमें दोनों  
श्रेणियां तीखुर और तेलङ्गमें अरारूटगड्डालू नामसे  
कही जाती हैं ।

कई लोगों का कहना है कि इसकी प्रथम श्रेणिका  
देशी नाम कुभा या कुया और दूसरीका नाम तीखुर है ।

इसकी खेती ठीक हलदीकी खेतीकी तरह होती है ;  
लेकिन इसे खोदते समय इन चलानकी जरूरत होती  
है । इसको जड़ इतनी कठिन होती है कि बिना इन  
चलाये निकालो नहीं जा सकता । यत्र पूर्वक इसकी खेती  
करने पर इससे विलायती अरारूटकी तरह उत्कृष्ट द्रव्य  
बनता है ।

कनाडा, कोचीन और त्रिवाङ्गोरमें इससे अरारूट  
प्रसृत होता है । इसका आटा कागाड़े बाजारोंमें विक्रता  
है वहाँके हलवाई इससे एक प्रकारके मोटे लुब्धू बनाते  
हैं, जो खानेमें अत्यन्त सुखादु होती है । इसके विस्फुट भो  
अच्छे बनते हैं । यह कुछ कोठवहकर ( कज करने-  
वाला ) है । बम्बईमें पानो मिलाया दूध या चार गाढ़ा  
करनेके लिए यही आटा काममें लाया जाता है । यह  
रोगके लिए भी हितकर है । नाना स्थानोंमें यह नाना  
उपायोंसे प्रसृत किया जाता है । उनमेंसे गोदावरी जिले-  
में जो उपाय अवलम्बित किये जाते हैं, वे ही अरारूट  
शब्दमें लिखे गये हैं । अधिक धूप लगानेसे इसमें तनिक  
खटापन आ जाता है । यद्वसे, प्रसृत करने पर एक वीषमें  
छेद सौ उपया लाभ हो सकता है ।

तीखुरल ( हि० पु० ) तिखुर देखो ।

तीज ( हि० स्त्री० ) १ प्रत्येक पक्षको तीसरी तिथि । २  
हरतालिका तृतिया, भादों सुदी तीज ।

( हि० वि० ) हरतालिका देखो ।

तीजा ( हि० पु० ) १ सुसलमानोंमें किसीके मरनेके दिनसे  
तीसरा दिन । ( हि० वि० ) २ तृतीय, तीसरा ।

तीतर ( हि० पु० ) समस्त एशिया और युरोपमें मिलने  
वाला एक प्रसिद्ध पत्ती । इसकी दो भेद हैं, चितकबरा



यथाशक्ति पुंखोपाज नमै यत्नवान् होना चाहिये । ( पु० )  
२ सीमक, सोसा नामंज घातु । ३ वाण, शर । ४ वपु,  
टीन । ५ समीप, निकट, पास ।

तीरंदाज ( फा० पु० ) वह जो तीर चलाता हो ।

तीरंदाजी ( फा० स्त्री० ) तीर चलानेकी विद्या ।

तीरगर ( फा० पु० ) १. तीरप्रस्तुतकारो, तीर बनानेवाला  
कारोगर । २ एक श्रेणोके मुसलमान । अहमदाबाद  
जिलेमें इनका वास अधिक है । पहले ये युद्धके लिये  
तीर बनाते थे; इसीके इनका नाम तीरगर पड़ा है ।  
अभो तीर भा आदर जाता रहा; सुतरा इन्होंने भो जातोय  
व्यवसायका परित्याग किया है । अभो ये चोबदार या  
दामका कार्य कर जोशिका निर्वाह करते हैं ।

तीरग्रह ( सं० पु० ) देशभद्र, एक देशका नाम ।

तीरण ( सं० स्त्री० ) लताभेद, करञ्जिका, करंज ।

तीरभुक्ति ( सं० पु० ) देशविशेष, इसका नामान्तर  
विदेह है । तिरहुत देखो ।

तीररुह ( सं० त्रि० ) तीरे रोहित रुहक । वृक्ष, पेड़ ।

तीरवर्ती ( सं० त्रि० ) १ जो तट पर रहता हो । २  
पास रहनेवाला, पड़ोसी ।

तीरस्थ ( सं० त्रि० ) तीरे तिष्ठति तीर-स्थाक । १ तीर  
स्थित, तट पर रहनेवाला । २ नदीके तीर पर पहुँ-  
चाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति । बहुत जगह जब रोगो  
मरनेको होता है, तब उसके सम्बन्धी पहलेहीसे उसका  
नदीके तीर पर ले जाते हैं । धार्मिक दृष्टिसे नदीके  
तीर पर मरना अधिक उत्तम समझा जाता है ।

तीराट ( सं० पु० ) लोभ, लोष ।

तीरान्तर ( सं० स्त्री० ) तीरस्थ अन्तर, ६-तत् । दूसरे,  
पार ।

तीरित ( सं० त्रि० ) तीरस्त । फार्य समाप्ति ।

तीरु ( सं० पु० ) १ शिव, महादेव । २ शिवकी  
स्तुति ।

तीर्थ ( सं० त्रि० ) तृप्त । १ उत्तीर्ण, जो पार हो गया  
हो । २ अभिभूत, धराया हुआ । ३ आइत, जो  
भोगा हुआ हो । ४ अतिक्रान्त, जो सीमाका उल्लंघन  
कर चुका हो ।

तीर्थपदा ( सं० स्त्री० ) मूलस्रो, तालमूल ।

तीर्थपदा ( सं० स्त्री० ) तीर्थः पदोः मूलमस्थाः अन्त्य-  
लोपः कुन्धपथा० डोप् । तालमूलो, मूलस्रो ।

तीर्णा ( सं० स्त्री० ) प्रतिष्ठास्थ वृत्तिविशेष, एक वृत्त  
जिम्मेके प्रत्येक वर्णमें एक नगण और गुण होता है ।

तीर्थ ( सं० स्त्री० ) तरति पापादिकं यस्मात् त-थक ।

'पातृ तुदि वचोति । उण् २।३ । १ शास्त्र । २ यज्ञ । ३ चेत,  
स्थान । ४ उपाय । ५ नारोज, रजस्वला स्त्री का रज ।

६ अवतार, अवतरण । ७ ऋषियुष्ट जन, वह जन जिसे  
ऋषिगण सेवन करते हैं । ८ पात्र, वरतन । ९ उपा-  
ध्याय, गुण । १० मन्त्रो, वजोर । ११ योनि, भग ।

१२ दर्शन । १३ खाट । १४ विप्र । १५ आगम ।  
१६ निदान । १७ वक्ति, अग्नि । १८ पुण्यस्थानादि ।

काशोखण्डः तीर्थका विषय इस प्रकार निरुा है,—  
तीर्थ तीन प्रकारका है, जङ्गम, मानस और स्थावर ।

जगतमें ब्राह्मणगण जङ्गम तीर्थ हैं । ये पवित्रस्वभाव  
और सर्वकामघट्ट हैं । इनके वाक्योदकके द्वारा मलिन

मनुष्य विशुद्ध हो जाते हैं । ब्राह्मणोंकी सेवा करनेसे  
पाप नहीं रहते और समस्त कामनाओंकी सिद्धि

होती है ।

मानसतीर्थ—सत्य, चमा, इन्द्रियनिग्रह, दया, श्रेयुता,  
दान, दम, सन्तोष, ब्रह्मचर्य, विप्रवादिता, ज्ञान, धैर्य

और तपस्या ये मानसतीर्थ हैं, इनमें भो मनको विशु-  
द्धता ही सबसे श्रेष्ठ है । देशभ्रमण करनेसे आत्माकी

उच्चति वा बहुदर्शिता होती है, इसलिये भो तीर्थयात्रा  
की हिनूगण अति पुण्यदायक समझते थे । तीर्थमें

जानेसे मन विशुद्ध होता है और साधुओंके दर्शनसे  
आत्मा भी पवित्र होती है । जिन महात्माओंके आश्रममें

जाते हैं, उनका वृत्तान्त स्मरण करनेसे जगतको अनि-  
त्यता स्पष्ट ही प्रतीयमान होने लगती है, नैकहों मनुष्य

उन आश्रमोंमें आ कर जन्म और मृत्युके हाथसे उधार  
हुए हैं । इन सब विषयोंकी चिन्ता करनेसे मनमें एक

उदारभावका उदय होता है और सर्वदा पापोंसे दूर  
रहनेकी इच्छा जाग्रत होती है । अतएव प्रत्येक

मनुष्यको आत्माकी उन्नतिके लिए तीर्थयात्रा करनी  
चाहिये । शरीरशरीरको पानोमें डुबा कर स्नान कर

लेनेसे तीर्थस्थान नहीं होता; यथाथ तीर्थज्ञानो बहो

हैं जिनमें अपने पांशों इन्द्रियोंको मोत दिया है। जो मोती, मूर, दाशिक का शिववातन हैं और मं कर्तों का तोर्षं दान करते हैं वे सभी मो पाप ने मुक्त नहीं होते। केवल शरीरका मोक्ष दूर करनेके दो मनुष्य निमित्त नहीं हो जाता, मनुष्य मोक्षको निश्चय देनेमें दो मनुष्य यथाथ में निमित्त हो सकता है। तोर्षं वाक्त्राका वाक्त्रिक उद्देश्य विषयका उद्दिष्ट प्राप्त करना है। यदि यथाशक्त यथा भाव पवित्र न हुआ तो दान, तप, यज्ञ, शौच शीघ्र सेवा मन्त्रका स्वयं पादि मनुष्यज्ञान करने पर भी कोई फल नहीं होता। मनुष्य अपने इन्द्रियोंको त्रय करने चाहें नहीं क्यों न बंधे रहें नहीं तबके लिए कुशलेत नैमिषारण्य और सुम्बर आदि तोर्षं ध्यान हैं। जो लोग राग द्वेष आदि मनोको दूर करनेके विद्युद्विमानकय अन्त में जान करते हैं उनकी उच्छ्रित मति प्राप्त होती है।

आबरतोर्षं—यथा पादि सुष्मप्रदंशोको ध्याकर तोर्षं उच्छ्रित है। केही शरीरका प्रवचनविशेष पवित्र माना जाता है, उसे तरङ्ग पृथिवीके भी कुछ पर्यय सुष्म तम माने जाते हैं। आबर और मानसतीर्षं में जो श्लेष निश्चय प्रवगाहन करते हैं, उनको उच्छ्रित फलको प्राप्ति होती है। (प्राचीनं.)

तोर्षं यात्राके द्वारा जो फल होता है, वह फल विपुल इच्छाके साथ बहुत यत्नद्वारा भी नहीं होता। जो श्लेष श्राव घोर और मनको मंथन करनेके विषया, तपस्व और श्रुति मन्त्रकी पुत्रे हैं, इनकी उर्ध्वार्धमें तोर्षं फल प्राप्त किया है। प्रतिपद्ये-निष्ठत हो कर जो व्यक्ति जिस किसी तरङ्ग समुद्र रहता है, उसीको तोर्षं का फल मिलता है। जो व्यक्ति दाशिक नहीं है, जिनका धारण्य निश्चय हो चुके हैं, जो सम्यक् चन्द्रके निष्ठत आबरहित, त्रिभेन्द्रिय, सम्यक्पादो स्थिरजन और समस्त प्राणियोंको अपने समान देखते हैं, वे ही तोर्षं का फल मोगते हैं। इन्द्रियोंको संयत करने, यथा धीर धीरताके साथ तीर्षं स्वयं करनेके पापों मनुष्य विद्युद्व हो जाते हैं। चाण्डालीको तो बात हो क्या? तीक्ष्णवचन करनेमें तिष्ठं गुणित या कुट्टियमें अन्ध नहीं होता। तीक्ष्णवचनकारो अन्ति दुःखी नहीं होता और फलमें स्वर्ग पाको होता है। जिसके यथा नहीं, जो पापात्मा धीर

नातिकर है, जिनका संशय दूर नहीं हुआ है, जो निर्विकल्पक करता है, उसे तोषका फल नहीं मिलता।

जो मोतोषको सहकर धोरताके विकिपूर्वक तोर्षं-वात्ता करते हैं वे स्वर्गमागो होते हैं।

तोर्षं यात्राके लिए जानेवाले व्यक्तिको प्रथमतः परमं संयत हो कर उपवास करना चाहिए। ऐसे यथाशक्ति श्लेष, पिष्टगन्ध, ब्राह्मण धीर शान्तिपूर्णक पूजा करना उचित है। तदनन्तर पारथ करके जिनमें अथलम्बनपूर्वक ध्यानस्थिता करना करना चाहिए। तोर्षं यात्राके शीघ्र कर पुनः पितरोंको पूजा को आतो है। ऐसा करनेमें प्रसन्न फल मिलता है। तोर्षं में ब्राह्मणको परीक्षा न करनेको चाहिए। कोई पक्ष मति तो उसे यथाशक्ति टिना चाहिए और किसी पर श्लोभ न करना चाहिए। तिल-पिष्ट धीर सुष्मे त्राह भी करना पड़ता है। आहं पर्यं यद्दान धीर ध्यानाहन करना उचित नहीं। काष्ठ विद्युद्व हो या न हो, किसी तरङ्गका विषय न करनेके ही त्राह धीर तपस्व करना चाहिए। मनुष्यकोन तीर्षं में न कर यदि ध्यान किया जाय, तो उसका फल प्राप्त होता है, किन्तु तोर्षं यात्राके निमित्त जान करनेके फल लाभ नहीं होता। तोष यात्राके पापात्माओंके पाप नष्ट होते हैं और यथा-सम्भव व्यक्तिोंको श्लेष फल प्राप्त होता है। जो दूसरेके लिए तीर्षं यात्रा करते हैं उन्हें पौंड्र्य र्थय फल प्राप्त होता है और जो प्रसन्नचित्त ध्याना करते हैं, उनको ध्याना फल प्राप्त होता है। जिसके लिए कुशको प्रतिफलित बना कर उसे तोर्षं में ध्यान कराया जाता है। उस व्यक्तिको चन्द्रमाय फल प्राप्त होता है। तोर्षं-में उपवास धीर मन्त्रक-सुष्ठुत करना चाहिए। तोर्षं में मन्त्रक मुष्मनिमें शिरोगत मन्त्रक प्राप नष्ट होते हैं। जिस दिन तोर्षं में जाना जा, उसके पहले दिन उपवास करना चाहिये और तीर्षं में वृक्ष चले ही त्राह करना चाहिए। कायो बाह्यो, माया, प्रयोध्या, हारका मनुष्य धीर प्रवक्ती ये सात सुखों मोक्षद एक शोर्षक धीर वेदार इनके भी उपादा सुष्ठुप्रद हैं।

तोर्षं रात्र प्रयासके पवित्रुक्त ऐत्र श्लेषिय मुष्ठियद है। पवित्रुक्तऐत्र में जो निर्विकल्पक सुष्ठु होत है, वे फिर नहीं भी अन्ध नहीं होत। धन्याय्य जिनमें मो सुष्ठुप्रेत्र

है, वे सब काश्योंमें मिलते हैं, अन्य किमो क्षेत्रमें ऐसा नहीं होता। ( काशीखं० ३ अ० )

ब्रह्मपुराणमें तोर्थका विषय इस प्रकार लिखा है,—विशुद्ध मन हो पुरुषका तोर्थ है। तोर्थ वही यथायत् और आवश्यक है, जिससे अन्तःकरण निमल हो, जब तक मन विशुद्ध न हो, तब तक किमो भो तोर्थका फल प्राप्त नहीं होता। जैसे मद्यपात्रको सो धार धोने पर भो वह पवित्र नहीं होता, उसी तरह अविशुद्धात्माओंको सैकड़ों धार तोर्थ-जलसे धोये जाते पर भो कभो फलको प्राप्ति नहीं होती। दुष्टाशय दाम्भिक लोगोंका व्रत, दान आदि सब निष्फल है। मनुष्य इन्द्रियोंकी दमन करके चाहे जिस जगह वास करे, वह स्थान उसके निष्ठ पुंकर नैमिष्यारण्य आदि तोर्थ हो जाता है। ( पद्मपु० )

तीर्थमें जा कर जिनके चित्तका मन दूर नहीं हुआ, उनको तोर्थ करने पर भो कुछ फल नहीं मिलता। प्रयागतोर्थमें जा कर पितरोंका याद और केशमुण्डन करना चाहिये; अन्यथाके उचित नहीं। तोर्थयात्रासे पहले और तोर्थसे लौट कर पितरोंका याद करना उचित है। ऐश्वर्यमत्त धनो जो मानादि द्वारा तोर्थयात्रा करते हैं, उनको तोर्थयात्रा ब्रह्मा है। ( मत्स्यपु० )

सत्ययुगमें पुष्कर, त्रेतामें नैमिषारण्य, द्वापरमें कुरुक्षेत्र और कलियुगमें गङ्गा हो अष्ट तीर्थ है। तीर्थमें प्रतिग्रह नहीं करना चाहिए। नारायणक्षेत्र, कुरुक्षेत्र, धाराणसी, बदरौनाथ, गङ्गासागरसङ्गम, पुष्कर, भास्कर, प्रभास, रासमण्डल, हरिद्वार, केदार, सरस्वती, हृन्दावन, गोदावरो, कोशिकी, त्रिवेणी आदि तीर्थोंमें जो लोग इच्छापूर्वक प्रतिग्रह करते हैं, उनको कुम्भीपाक नरकमें आना पड़ता है। तोर्थमें जा कर, प्राण कण्ठगत होने पर भी दान ग्रहण न करना चाहिये। अकाल, मलमास और यात्रोक्त निषिद्ध दिनको छोड़ कर तोर्थयात्रा करना चाहिये। किन्तु गयाक्षेत्रको अकालमें भो जा सकते हैं, अथवा संक्रान्तिमें सभी तीर्थमें जा सकते हैं।

इस पृथिवी पर कितने तोर्थ हैं, इसका निर्णय कामा दुःसाध्य है। एक पद्मपुराणमें हो साढ़े तीन करोड़ तीर्थोंका उल्लेख है। ऐसी दशमें सम्पूर्ण तीर्थोंका निर्णय करना असंभव है। एकमात्र इस भारतवर्षमें ही इतने

तोर्थ हैं, जिनकी शमार नहीं। जहाँ कहीं भो कोई महापुरुष आविर्भूत हुए हैं, अथवा जहाँ किमो देव वा महात्मानि लीला को है, धर्मप्राण ह्यनुष्ठान उभो स्थानको तोर्थ मान लिया है। इसलिए समस्त तीर्थोंके नाम एकत्र प्रगट करके ग्रन्थको कलेवरखंडि करना ब्रह्मा है।

तीर्थोंके नामानुसार उन्दी शब्दोंमें विवरण दिया गया है।

यहाँ महाभारतके अनुसार कुछ प्राचीन तीर्थोंका उल्लेख किया जाता है।

पुष्कर—इसका नाम तीर्थराज है। इस तोर्थमें त्रिमश्या दश कीटि तीर्थोंका आगमन होता है, इसमें स्नानादि करनेमें अश्वमेध यज्ञका फल और ब्रह्म लोककी प्राप्ति होती है। जस्यु मागं—इसमें श्वामेध-सदृश फल और विष्णुप्राप्ति होती है। तुण्डुलिकायम—इसका फल है दुर्गातिविनाश और ब्रह्मप्राप्ति। अगस्त्य-सरोवर—इसमें तीन रात उपवास करनेमें वाजपेय यज्ञका फल और शाकभोजन करनेसे कोमारलोककी प्राप्ति होती है। धर्मारण्य—यहाँ कश्यायम है, प्रवेश करते ही पापक्षय होता है। देवपिठपूजा द्वारा अश्वमेधफल और देवलोककी प्राप्ति होती है। यशतिपतन—यहाँ जाते हो अश्वमेधका फल होता है। कीटीतीर्थ—यहाँ महाकान्तित्य विराजित रहते हैं। स्नान करनेसे अश्वमेध-तुल्य फल होता है।

भद्रवट—नर्मदा नदी, यहाँ पितरोंका तर्पण करनेसे अग्निष्टोम करनेका फल होता है। दक्षिणसिन्धु—यहाँ ब्रह्मचर्य आचरण करनेसे अग्निष्टोम तुल्य फल और स्वर्गप्राप्ति होती है। चर्मण्वतो नदी—यहाँ इन्द्रिय-निग्रह करनेसे ज्योतिष्टोम तुल्य फल होता है। अर्जुदाचल—यहाँ वशिष्ठायम है, एक रात्रि उपवास करनेसे सहस्र गोदानके समान फल होता है। पिङ्गतीर्थ—यहाँ इन्द्रिय जय करनेसे सवत्स शत कपिलादान तुल्य फल होता है। प्रभास—यहाँ हुताशन स्वयं विराजित है, अतः अग्निष्टोम सदृश फल होता है। सरस्वती सागरसंगम—यहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानतुल्य फल और तीन दिन उपासे रह कर देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेसे अश्वमेधतुल्य फल होता है।

धरदान—यहाँ दुर्वासाने विष्णुकी वर प्रदान किया

का, यतः ज्ञान करनिये मोदानतुल्य फल होता है।

द्वाराबतोका विष्कारबतौर्ब—यहां पदचिह्नबुद्ध सुद्धा घोर मूषचिह्नित यत्र यत्र भी देहनिर्मि पाति है। महादेव जय इव ज्ञाननि है। यहाँ ज्ञान करनिये सुवर्चदान यत्रसद्धा फल प्राप्त होता है।

बहुदुष्टिन्बुद्धम—यहाँ ज्ञान घोर पितरोंका तर्पण करनिये बहवसौक्यी प्राप्ति होती है। द्विमोतोर्ब—यहाँ महादेव स्वय विराजित है; ज्ञान करनिये परममेवका फल घोर महादेवके दर्शन वा पुत्रपत्नी सम्पूर्ण पाव नष्ट होती है। बहुवाप्यतोर्ब—इसके दर्शन करनिये परममेवका फल, ज्ञान घोर तर्पण द्वारा पित्रबोधकी प्राप्ति होती है। चिन्तुसमतीर्ब—यहाँ ज्ञान करनिये बहुवप्यतुल्य फल प्राप्त होता है। यदुदुष्टतोर्ब—यहाँ ज्ञानिये ब्रह्मसौक्यको प्राप्ति होती है। कुमारिका घोर मूषतोर्ब—यहाँ ज्ञान करनिये सम्पूर्ण पापोंका नाश होता है। पञ्चनदीतोर्ब—इसमें पञ्चवप्यका फल प्राप्त होता है। भीमाश्वानतोर्ब—यहाँ ज्ञान करनिये मनुष्य देवो पुत्र होता है घोर सङ्घन मोदानतुल्य फल मिलता है।

गिरिकुञ्जतोर्ब—यहाँ फल ब्रह्मा विराजित है। उरुको प्रथम करनिये सङ्घन मोदानतुल्य फल होता है। विमलतोर्ब—यत्र भी यहाँ मोक्ष घोर रत्न मल्ल मोक्ष है। ज्ञान घोर पानहारा बाह्यिय सङ्घन फल प्राप्त होता है। जितफानदो—यहाँ तर्पण करनिये बाह्यिय फल घोर भग्नसौक्य समन होता है। भासरोरमें बितप्टा नामक तपकनाबसङ्घन तीर्षमें ज्ञान करनिये बाह्यिय फल घोर कर्मसौक्य प्राप्त होता है। प्रपरातोर्ब—यहाँ मन्वाजाननि स्नान घोर उन्नतियोंको बह प्रदान करनिये सङ्घन परममेवका फल प्राप्त होता है।

ब्रह्माभ्यदतोर्ब—यहाँ महादेवके दर्शन करनिये परममेव सङ्घन फल होता है। मतिमान् वर्षत—यहाँ तीन दिन तपबाध करनिये ज्योतिष्टोम सङ्घन फल होता है। देविजानदो—यत्र महादेवका स्नान है यहाँ स्नान, महादेवके दर्शन घोर महादेवकी बह प्रदान करनिये जसप्टा कामनाधोको सिद्धि घोर दीव मम, राजस्य घोर परममेवका फल होता है। विमलतोर्ब—यहाँ स्नान करनिये बाह्यिय सङ्घन फल होता

है। प्रयपानतोर्ब—यहाँ स्नान करनिये मिमकी मति ज्योति घोर सङ्घन मोदान तुल्य फल होता है। कुमार कोटितोर्ब—यहाँ स्नान तथा पित्र घोर देवताधोका पूजन करनिये यवामपनधाम ज्ञान फल होता है। ब्रह्मकोटितोर्ब—यहाँ एक करोड़ श्रवितोनि मिल कर एका प्रथ ब्रिवा वा कि 'इम पञ्चके महादेवको देवेमि'। उनके प्रदान करनि पर ब्रह्म समुद्र भी कर यहाँ कोटो रूप है। यहाँ स्नान करनिये परममेव पञ्चका फल घोर कुलका उद्धार होता है। नरककोटिपुत्रतोर्ब—यहाँ जगदंन स्वय विराजित है; यतः स्नान करनिये बहु सुवर्चज्ञानका फल प्राप्त होता है। मयावसानतोर्ब—यहाँ ज्ञानिये सङ्घन पीटानका फल होता है।

कुक्ष्यतोर्ब—यहाँ ज्ञानिये जसप्ट पापोंका नाश घोर मन्वाक द्वारपालको पूजा करनिये सङ्घन मोदानका फल होता है। विष्णुज्ञान—यहाँ ज्ञान घोर दर्शन करनिये परममेवका फल घोर विष्णुसौक्यमें वसन होता है। परिपन्नतोर्ब—यहाँ ज्योतिष्टोम घोर पतिरात्र यत्रका फल मिलता है। पृथिवी तोष—यहाँ सङ्घन मोदान तुल्य फल होता है। शान्कितनीताय—ज्ञान करनिये सङ्घन मोदानका फल होता है। सविंयोतोर्ब—यहाँ ज्ञानिये पम्बिष्टोमका फल घोर नागसौक्यका प्राप्त होता है। यवर्चकारपान तोर्ब—यहाँ रात्रिनाश करनिये सङ्घन मोदानका फल होता है।

पञ्चनदीतोर्ब—यहाँ ज्ञान करनिये परममेवका फल होता है। ज्योतिष्टोम—फल उत्तमदप्य। बराह तोर्ब—फल ज्योतिष्टोमसुख्य। जयन्तोर्ब—फल राजसुवयसुख्य। एकवधतोर्ब—फल सङ्घन मोदानतुल्य। ज्ञानयोक्तोर्ब—फल सुखरौक्यसङ्घन तुल्य।

सुखावटोर्ब—यत्र महादेवका स्नान है; यहाँ एक रात्रि वात करनिये साधकत्वको प्राप्ति होती है। कामदम्बसङ्घतपुष्कर तोर्ब—यहाँ ज्ञान पूजा करनिये इष्टमेवका फल होता है। रामङ्घरतोर्ब—परपरात्मके ज्योतिष्टोम विनाश करने पर उनके रत्निये १ रुद्र तप्यक रूप है। यहाँ जिनरीका तर्पण करनिये बहु सुवर्चसङ्घन फल होता है। ब्रह्मसूत्रकतोर्ब—यहाँ ज्ञान करनिये कुलका उद्धार



होता है। कायगोधनतीर्थ—यहाँ स्नान करनेसे देवकी शुद्धि होती है। नौवींअर्गः—फल, स्वर्गव लोकों-हार। त्र्योतीर्थ—फल, उत्तम प्राप्ति। कपिलातीर्थ—यहाँ स्नान तथा देवता और पितरोंकी पूजा करनेसे महस्र कपिलादानका फल होता है। सूर्यतीर्थ—यहाँ उपवास, पितृपूजा और स्नान करनेसे अग्निदाम फल और देवलोककी प्राप्ति होती है। गोभवनतीर्थ—यहाँ अग्नि-पिक करनेसे महस्र गोदानका फल होता है। गन्धिनो-तीर्थ—यहाँ स्नान करनेसे उत्तम वीर्यको प्राप्ति होती है।

ब्रह्मावर्ततीर्थ—स्नानका फल, ब्रह्मलोककी प्राप्ति। सुतीर्थ—यहाँ स्नान, पितृ और देवपूजा करनेसे अश्वमेध-तुल्य फल और पितृलोककी प्राप्ति होती है। अश्वमेध-तीर्थ—यहाँ स्नान करनेसे समस्त रोगोंका नाश और ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। ग्रीतवनतीर्थ—यहाँ वैश्वानर करनेसे पवित्रता होती है। ग्यानलोमाव-तीर्थ—यहाँ स्नान करनेसे परमगति प्राप्त होती है। दशममेधतीर्थ—स्नानका फल, निश्चलागति-को प्राप्ति। मानुषतीर्थ—यहाँ व्याधोत्थित रुग्ण-मृगोंकी, शवगाहन करनेसे मानुषत्व प्राप्त हुआ था। फल, पापोंका विनाश। आपगानदी—यहाँ देवता और पितरोंके उपलक्षमें ब्राह्मणभोजन करनेसे कोटि ब्राह्मण-भोजनका फल लाभ होता है। प्रचोदुस्वर तीर्थ—यहाँके समर्पिकुण्डमें स्नान करनेसे सम्यग् पापोंका नाश और ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है।

कपिलर्षदारतीर्थ—यहाँ तपस्या करनेसे समस्त पापोंका नाश और अन्तर्दानको प्राप्ति होती है। सरक-तीर्थ—दृषध्वजको प्रणाम करनेसे समस्त कामनाओंको निधि और गिवलोक प्राप्ति होती है। इनाम्यदतीर्थ—स्नान, देवता और पितृपूजासे दुर्गतिका विनाश और वाजपेयका फल प्राप्त होता है। किन्दानतीर्थ—स्नानसे अश्वमेध दानका फल प्राप्त होता है। किंजल्पतीर्थ—स्नान-से अश्वमेध जपका फल होता है। अश्वाम्बतीर्थ—यहाँ नारदका स्नान है, यहाँ मृत्यु होनेसे अतुल्य लोककी प्राप्ति होती है। वैतरणोदतीर्थ—यहाँ महादेवकी पूजा और स्नान करनेसे समस्त पापोंसे मुक्ति और परम-

पदको प्राप्ति होती है। फलकीतीर्थ और मित्रकतीर्थ—नारदके यहाँ सभी तीर्थ मिलाने से; स्नान करनेसे सर्व तीर्थ स्नानका फल होता है। मधुपटोतीर्थ—स्नान देवता और पितृपूजन करने महस्र गोदानतुल्य फल होता है। शोषकोदृषदतीमद्मतीर्थ—स्नानसे पापोंका नाश होता है। किन्दत्तकूप तीर्थ—तिनप्रस्यदान करनेसे अश्वमेध-से मुक्ति और परमसिद्धि प्राप्ति होती है। वेदोतीर्थ—स्नान करनेसे महस्र गोदानका फल होता है। अष्ट-और रुदोतीर्थ—यहाँ दान करनेसे सूर्यलोक प्राप्ति होती है।

सृगभूतीर्थमें स्नान और वामनपूजा करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश और सूर्यलोकप्राप्ति सरस्वतीतीर्थमें स्नान करनेसे स्वर्गवास और नैमिषकुञ्जतीर्थमें स्नान करनेसे इयमेधका फल होता है। कन्यातीर्थमें स्नान करनेसे ज्योतिष्टोमका फल ब्रह्मस्नानतीर्थमें स्नान कर के शूद्रकी ब्राह्मणत्व-प्राप्ति, समभारत्ततीर्थमें स्नान और जप करनेसे ब्रह्मलोक-प्राप्ति, अग्नितीर्थस्नानसे अश्वमेध नाम, विद्यामित्रतीर्थ स्नानसे ब्राह्मण्यप्राप्ति, ब्रह्मयोनितीर्थ स्नानसे ब्रह्मलोकवास, पृथुदन्तीर्थमें अभिषेक करनेसे अश्वमेध-फल और पापियोंको स्वर्गलभ होता है। मधुस्रवतीर्थमें स्नान करनेसे महस्र गोदानका फल होता है। मरुत्स्रवतीर्थमें तीन रात्रि उप-वास और स्नान करनेसे ब्रह्महत्याजनित पापका नाश होता है।

अवकोणतीर्थ-स्नानसे दुर्गतिका नाश होता है। गतसहस्रतीर्थ और साहस्रकतीर्थमें स्नान करनेसे महस्र गोदानका फल होता है, दान और उपवाससे फल-को शतगुण वृद्धि होती है। रेणुकातीर्थमें अभिषेक, देवता और पितृपूजन करनेसे समस्त पापोंका नाश और अग्निदामयज्ञका फल होता है। विमोचनतीर्थमें स्नान करनेसे समस्त प्रतिशय पापोंसे मुक्ति मिलती है। पञ्चषट् तीर्थ—फल, महत् पुण्यलाभ और स्वर्गगमन। तैजस-तीर्थ—यहाँ ब्रह्मादि देवोंके क्रांति केयको सेनापति पद पर अभिषेक किया था। कुरुतीर्थमें स्नान करनेसे रुद्रलोक प्राप्त होता है। स्वर्गहारतीर्थमें जानसे अग्निदामयज्ञका फल प्राप्त होता है। अनरकतीर्थमें जानसे दुर्गति नष्ट

वातो है। पश्चिमुरतोर्ब—एक अक्षर पित्त और देवता घोडा तर्पण करनेसे पश्चिमहोमका फल होता है। यज्ञ अक्षरपुतोर्बमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोकाको प्राप्ति होती है। स्नायुवटतोर्बमें स्नान और एक रात्रि उपवास करनेसे इन्द्रभोजको प्राप्ति होती है। बदरोपायनतोर्ब—यहां वसिष्ठ का वाचन है; तोग रात्रि उपवास और बदरो फल मन्वस करनेसे वाचनेयका फल और इन्द्रभोजको प्राप्ति होती है। इन्द्रमाव तोर्बमें चकोराव उपवास करनेसे इन्द्रभोजकी प्राप्ति होती है। पादिष्ठा यमतोर्ब—स्नानसे स्वर्गभोज प्राप्त होता है। सोमतोर्बमें स्नान करनेसे सोमभोजमें गमन होता है। अन्वायमतोर्ब—यहां तोग रात्रि उपवास और उपवास करनेसे ब्रह्मभोजमें गमन होता है। द्योचिंतोर्ब—स्नानसे वाचनेययज्ञका फल होता है। पवित्रतोर्ब—यहां धमावप्राजे दिन अम्युर्ब तोर्बका समानता होता है। धमावप्राजे दिन और सूर्यपक्ष से समस्त स्नान करनेसे शत अम्बुनिकका फल होता है। सूर्यपक्षमें स्नानमात्रसे अन्न वापाका नाय और ब्रह्मभोजको प्राप्ति होती है। गङ्गाइदतोर्बमें स्नान करनेसे राजसूय और पश्चिमिबब्रह्मका फल होता है। उसका वाद कारावपनतोर्बमें स्नान करनेसे पश्चिमोमयज्ञका फल और विष्णुभोजको प्राप्ति होती है।

सोमन्धिकवचतोर्ब—यहां ब्रह्मा पादि देव प्रति दिन प्राया करने है, एक बर्गमें भवेयमात्रसे जो समस्त पापीका विनाश होता है। इक्ष्मररजतोर्बमें स्नान, पित्त और देवपूजा करनेसे पश्चिमिबयज्ञका फल होता है। ईशानान्धु विततीर्ब—यहां विराजोपवास और शाकाहार करनेसे हादयमर्ष शाकाहारका फल होता है। सुवर्चतोर्ब—यहां महादिन अर्घ्य विराजित है; विष्णुका द्वारा पश्चिमिबयज्ञका फल और गावपत्नको प्राप्ति होती है। इमावतोर्बमें सिराव उपवास द्वारा मन्वप्राप्तमाका सिद्धि होती है। रवावतोर्बमें पारुष्य करनेसे महादिनके प्रसादसे परमगति होती है। धारातीर्बमें स्नान करनेसे शोक नष्ट होता है। यज्ञाहारतोर्बमें स्नान करने से पुण्डरीक प्राणका फल होता है।

मन्वयज्ञ विगाह और सवावतोर्ब—इन तोग तोर्बमें पित्त और देवताघोडा तर्पण करनेसे पुण्डरीकको

प्राप्ति होती है। यज्ञावसुनामज्ञमतोर्बमें स्नान करनेसे इगावभेयका फल और कुनका उधार होता है। अन्वक्ततोर्बमें स्नान और सिराव उपवास करनेसे वाग्भेय फल और ब्रह्मभोजको प्राप्ति होती है। अविष्ठावटतोर्बमें एक दिन उपवास करनेसे पक्ष्म मोदानका फल होता है। कपिष्ठागाराजतोर्बमें पश्चिमिब करनेसे सक्षर कपिष्ठादानका फल होता है। सप्ततिज्ञातोर्बमें स्नान करनेसे दुग् तिष्ठा नाम होता है। सुगन्धातीर्बमें जानिसे समस्त पापीका नाश और ब्रह्मभोजको प्राप्ति होती है। गङ्गासररजतोर्बमें स्नान करनेसे पश्चिमिबका फल और अन्न यमन होता है। मद्रकच तोर्ब में स्नान और शिवपूजा करनेसे दुर्मति नहीं होती। कुलान्धुवतोर्ब में जानेसे धर्मनाम, पश्चिम्यतीवटतोर्बमें एक रात्रि वास करनेसे पक्ष्म मोदानका फल और कुजोहार होता है। ब्रह्मावतोर्बमें जानेसे पश्चिमोम यज्ञका फल और ब्रह्मभोजको प्राप्ति होती है। यमुनायमवतोर्ब—स्नानसे पश्चिमिब-फल और ब्रह्मभोजगमन होता है। मित्रुप्रमवतोर्बमें पश्चात्त वास करनेसे बहुदुर्घर्षयज्ञका फल होता है। पर्यवेदोतोर्बमें जानेसे पश्चिमिबयज्ञका फल और अर्घ्यभोजका नाम होता है। वाग्भेयतोर्बमें जानेसे यमो बर्बको विजयको प्राप्ति और स्नानोपवास करनेसे अविभोज प्राप्ति होती है। म्युगुहोर्बमें जानेसे पश्चिमिबका फल, कोरप्रमोघतोर्बमें जानेसे समस्त पापीका नाम, विष्ठातोर्बमें स्नानसे उर्बय विष्ठाका नाम और महा अमतोर्बमें उपवास करनेसे दमनीकको प्राप्ति होती है।

महावचतोर्बमें उपवास और एक मास वास करनेसे अपने साह २१ पीड़ीका उधार होता है। शितनीतोर्ब समनसे पश्चिमिबपक्ष और योगनक्षत्रि प्राप्ति, सुन्दरिकातोर्ब-ममनसे स्वप्राप्ति ब्राह्मणिकातोर्ब समनसे ब्रह्मभोज लाभ, मेमिपतोर्बमें प्रवेय करनेसे सक्षर पापीका नाश स्नान करनेसे अन्नकुजोहार और प्राचन्दाय द्वारा अर्घ्यको प्राप्ति होती है। गङ्गोईदतोर्बमें तोग दिन उपवास करनेसे वाग्भेयका फलनाम और विष्णुभोजमें वास होता है। देवता और पित्रतर्पण करनेसे कारकतकोर्बमें वास होता है। बाहुदानवीतोर्बमें एक रात्रि वास करनेसे ब्रह्मभोजकी प्राप्ति होती है।



दिन उपवास करनेसे सहस्र मोदानका फल प्राप्त होता है।

ह्रस्वव्रततोर्षमें स्नान और उपवास करनेसे चन्द्र-मोक्षको प्राप्ति होती है। देवप्रद, वाग्देव्या-स्तुतम्ब, प्योतिर्मांशप्रद और कल्याणम्, इन चार तीर्थोंको यात्रा करनेसे पश्चिमोत्तरका फल होता है। पयोष्यो मन्वेमें स्नान और तीर्थ करनीसे सहस्र मोदानका फल तथा इन्द्रधारण, धरमज्ञानम् और कृपाव्रतमें जानेसे दुर्भतिका नाम और अशुभोद्धार होता है। पूर्णव्रत, रामतोर्ष, सप्तगोदावर, देवप्रद तन्त्रधारण में भाविक, काव्यधारण, देवप्रद, सिद्धव्रत, मन्त्रज्ञान, ज्योतिष्य, अश्वमेध, सुष्वाद्यु, सुष्वाद्यु आदि तीर्थमें स्नान, दान, पूजा, तीर्थ आदि करनेसे अशुभों आदि यज्ञका फल और अन्नकाही प्राप्ति होती है।

प्रयाग वाद्युकोतोर्ष, पयोष्या, महारा, गया, प्रायो, काशी, पबन्ती, पुरी और इतरावतो ये सब तीर्थ मोक्षदायक हैं। पुष्कर, वीदार, इन्द्रमतो महेश्वर आदि तीर्थ पित्रकार्य में लिये प्रयुक्त हैं। यमोर्ष, इरोर्ष, यमोर्ष, मन्त्राव, सर्वेश्वर, विष्णु, नर्मदाहार और गया ये सब पित्रतोर्ष कहलाते हैं। मयाकी तरह यहाँ भी पित्रदायक करनेसे सुखि होते हैं। ये तीर्थ समस्त पापोंको हरण करनेवाले हैं; इनका नामस्मरण करनेसे जो पवित्र पुण्य होता है, पित्रदानकी तो बात ही क्या? मयागीर्ष, चक्रवर्त, चरमकण्ठकवर्त, बराह पर्वत नर्मदातोर्ष, मन्त्रा कृपाव्रतो, विष्णु, सुम्ब्या, यावधरो, चक्रु, मन्त्राद्यु कुमारधारा, प्रभास, चर स्वतो, प्रयाग महाराधाराद्यु नैमिषारण्य, शारावमो चमस्त्रावम, कौत्रिको, सरयुतीर्थ गोपी गोपार्थती, विद्याया वितस्ता गन्तु, चन्द्रभागा और ईशारतो ये सब तीर्थ आदि लिये प्रयुक्त हैं। (निन्दवर्षिता)

अपने जो कुछ तीर्थोंका फल कहा गया है वह सब कर्त्तव्य है जो निर्विन्द्य है। पश्चिमिन्द्योके तीर्थमें जानेसे अन्नका मन पवित्र होता है, विद्यासुखि अन्न जाता है, इन्द्रिय प्रयुक्तको तीर्थ यात्रा करना उचित है। तीर्थमें पापाकरण करनेसे वह पाप प्रलय हो जाता है। पतपत्र तीर्थमें वृष्ट, पद और इन्द्रियोंको निन्दक-पदसे च यत रचना चाहिये।

१८ इन्द्रियत तोर्ष शायनेके कोई विग्रह स्नान। दाहिने हाथसे पश्चिममें उत्तरसे जो रखा गरी है उसका नाम ब्रह्मतोर्ष है। पापमनसे समय इस ब्रह्मतोर्षमें जल ले कर पापमन करना चाहिये। तब भी पौर भंगुठका दीपभाग पित्रतोर्ष है। इस तीर्थसे द्वारा मान्योत्पत्तिके विनाचम्य समस्त पापोंमें पित्रदादि दिव्ये प्राप्ति है। पशुसिद्धि पयमागमें देवतोर्ष है। इससे द्वारा देवकार्य करना चाहिये। कनिष्ठा पशुसिद्धि पयो-मामका नाम काय या माजापयतोर्ष है; इससे द्वारा पितरोंसे भाव देवतापौजा काय किया जाता है।

( मार्क० पु० १५।१०१-१०० )

२० मन्वो आदि राहुकी पठारह सम्भक्तियाँ, जिनके नाम इन प्रकार हैं—१ मन्वो, २ सुरोचित, ३ हुबराज, ४ भूपति, ५ इतरावक, ६ चक्रवर्त्त, ७ शारावाराजि-कारी, ८ ब्रह्ममन्त्रधारक, ९ कृपाव्रतमें शर्षका विनि-योत्रक १० प्रदेष्टा, ११ नगराभय, १२ काव्यनिर्वाच-कारक, १३ धर्माजक, १४ समाजक १५, १६ इन्द्रयाक, १७ पुत्रपाण, १८ राहुन्याक, १९ अटकीयाक। राजा इन पठारह तीर्थोंमें अन्नगाहन करने अन्नदाय्य होती है पर्याप्त इन्द्रको मन्वोमति जान लेनेसे ही राजा राजकार्य सुचारुपणे चला सकते हैं। ( गीर्षक )

२१ पुष्कराक। २२ चक्र को तार दे, तारनेवाका। २३ ईश्वर। २४ अतिवि महामान। २५ पितामाता। २६ वैरसावका ज्ञान कर परस्पर उचित व्यवहार।

२० अलापयका परस्त्रिमास प्रदेश। परस्त्रिमास स्नानको जोड़ कर शौचकार्य करना चाहिये।

( वादिकण्ड )

२८ चन्द्रासिद्धीको उपाविभिये। जो तक्षमज्यादि लक्ष्यकप्य त्रिषुवीश्वरमें तत्त्वार्थमाथसे स्नान कर पुत्रे हैं, वे जो तोर्ष उपाधिके योग्य हैं। २९ चक्रवर्त्त। तीर्थक ( स० त्रि० ) तोर्ष कर्त्तु। १ योग्य, सावक। ( पु० ) २ तोय आरो, वह जो तीर्थोंको यात्रा करता हो। ३ ब्राह्मण। ४ तीर्थहार।

तोर्षकर ( स० पु० ) तोर्ष यात्रा करोति अ-ट। १ जिन। २ विष्णु, ३ शौचक विद्याको वाङ्मिषाधिनि प्रथिता तथा प्रथिता है, इन्हीं उपायक कर्म मह पौर श्रेष्ठको मार

कर सृष्टिसे पहले ब्रह्माकी समस्त श्रुति और अन्य विद्याओं-  
का उपदेश दिया था तथा फिर और दलोंकी मोहित  
करनेके लिये वाद्यविद्याका प्रदान किया था। ( त्रि० )  
३ शास्त्रकार ।

तीर्थकाक ( म० पु० ) तीर्थ काक इव शानुपन्वात् ।  
'तीर्थ' स्थित काककी नाईं व्यवहारी, जिस तरह कीवा  
रुधर उधर भोजन टूटनेमें व्यस्त रहता है, उसी तरह  
बहुतसे मनुष्य तीर्थमें जा कर कीवकी नाईं श्रयानुम-  
न्यानमें व्यस्त रहते हैं वे श्वन्त पापी होते और अन्तमें  
नरक वाम करते हैं। ( पुराण )

तीर्थकृत ( म० पु० ) तीर्थ करोति तीर्थ कृत्वा तुगा-  
गमश्च । १ जिनदेव । ( त्रि० ) २ शास्त्रकार ।

तीर्थद्वार ( स० पु० ) तीर्थ संसारसमुद्रतरणं करोति  
कृत्वा मुमुक्षुः । जिन, जिनन्द भगवान्, जिनके उपास्य  
देव जो देवताओंमें भो यो ठ और सब प्रकारके देवोंमें  
रहित, मुक्त और सुखिताता हैं। इनकी मूर्तियाँ दिग-  
म्बर होती हैं और इनकी आकृति प्रायः एकमे होती  
है। केवल उनका वर्ण और सिंहासनका आकार ही  
एक दूसरेमें भिन्न होता है। तीर्थद्वारोंको जितनी भा-  
मूर्तियाँ देखनेमें आती हैं, वे सब या तो पद्मान्न होती  
है या खड्गामन । इनके आसनके नीचे हृषभ, गज, अश्व  
आदि विभिन्न चिह्न अर्थात् अङ्कित रहते हैं, जिनमें उनका  
परिचय मिलता है कि ये असुक्त ( अल्पभनाय वा अजित  
माय आदि ) तीर्थद्वारकी प्रतिमूर्ति हैं।

जैन-हरिवंश, जिनन्दोषकम्पाणक आदि ग्रन्थोंके  
अनुसार नीचे तीर्थद्वारोंका संक्षिप्त विवरण लिखा जाता  
है—

जिस समय तीर्थद्वार भगवान् स्वर्गके विमानोंमें  
चयन कर अपने माताके गर्भमें अवतरण करते हैं, उसमें  
हः महीने पहलेमें ही सौधर्म नामक प्रथम स्वर्गके इन्द्र  
उस नगरकी शोभा वर्धनके लिए कुवेरकी भोजते हैं।  
कुवेर नगरमें आकर वहाँ रत्नोंके मन्दिर, वन, उपवन  
कूप, वावडो आदि निर्माण करते हैं; और साथ ही नगरमें  
रत्नोंकी वर्षा करते हैं, जिससे नगरस्थ कोई भी व्यक्ति

उरिट नहीं रहता। सब धानन्दमें कामातिपात करते  
हैं। इन्द्रकी आज्ञा पा कर रुचिक पर्वत पर रहनेवाले  
देवियों का कराना प्रारम्भे माताकी सेवा करने  
लगते हैं। हः महीने बीतते पर तीर्थद्वारकी माताकी  
रात्रिके अन्तमें वेत परावत हस्तो आदि १६ स्वप्न  
दिखाई देते हैं। स्वप्नोंमें माता पिताकी यह नियम हो  
जाता है कि उगरी विमुक्षनयित्रयो पुत्रत्वकी प्राप्ति  
श्रीमो। दोनों भगवान्के जन्मादि महाप्रथमे कामाति-  
पात करते हैं। गर्भमें ही उनके मति, श्रुति और अश्वि  
ये तीन ज्ञान होते हैं। जिस समय मति-श्रुत-अश्विधारा-  
विशिष्ट तीर्थद्वार भगवान्का जन्म होता है, उसी समय  
तेन लोकके प्राणा धानन्दित होते हैं और इन्द्रका आसन  
कापने लगता है। इसमें उनको तीर्थद्वारके जन्मका  
संवाद मान्य ही जाता है। साथ ही भयनशोको,  
अन्तर और श्रोतिका देवोंके भवनोंमें घण्टा आदिका  
रव होने लगता है, जिनमें उनको भो मान्य ही जाता  
है कि भगवान्का जन्म हुआ। उसी समय कुवेर नर  
योजन परिमित; इन्द्रकी रचना करते हैं, जिन पर  
इन्द्र अपने परिवार सजित चट्ट कर मर्त्यलोकमें अवतरण  
पूर्वक अय अय गण्ट करते हुये नगरकी प्रदक्षिणा देते  
हैं। इन्द्राणी प्रसूतिरुद्धमें जा कर भगवान्को माताकी  
मायावन्तमें निन्दित कर देती हैं और वहाँ दूसरे मायामयो  
बालककी रक्ष कर तीर्थद्वार भगवान्को वाहर ले आते  
हैं। इन्द्र जब भगवान्के रुग्णों देखते देखते तब नहीं

५ गोलह स्वप्न इस प्रकार है— १ स्वप्नवध ऐगवत हस्ति, २  
मुन्दर रूपविशिष्ट श्वेत हृषभ ( बैल ), ३ उछलते हुये मुन्दर  
काग्निविशिष्ट केवरी वा सिंह, ४ निर्मलजलपूर्ण दो स्वर्णपट्टोंसे  
नशारी हुये रत्नो, ५ आकालमें लटकने हुये स्वप्नदलोंके पुष्पोंकी  
दो माला, ६ पूर्ण चन्द्र, ७ सूर्य, ८ अन्तमें केलि करती हुई दो  
मण्डलियाँ, ९ केवरी चन्द्रनादित्त रत्नपूर्ण दो पट, १० निर्मल  
जलपूर्ण सरोवर, ११ सुप्त, १२ रत्नसजित सुवर्णका सिंहासन,  
१३ देव-देवायनाओंसे शोभित रत्नसजित इन्द्रका विमान, १४  
शुषिबोकी नीर हर निरुत्थना हुआ परदेहा भवन, १५ पंच  
वर्णविशिष्ट रत्नराशि और १६ सप्तसहस्रशिक्षा विशिष्ट अग्नि।

‡ यह दृष्टि देवदूत मायादयी होता है, इसलिए इसके नाम-  
नागमनसे किसीको बाधा नहीं होती।

• चिन्दीछा विवरण 'जैनधर्म' ग्रन्थमें 'जिनपाल' अध्यायके  
तालिकामें देखना चाहिये।

होता तब वह भी मरती १००० मरना होता है। प्रथम स्वर्गके सोचमें इन्द्र प्रथमा कर ममबान्धुकी गोदमें खीरे हैं और द्वितीय स्वर्गके ईशान इन्द्र उन पर क्रम करती हैं। तोसरे और चौथे स्वर्गके इन्द्र दोनों तरफ बड़े हुए भगवान् पर चमर डारते हैं। अथ सप्तम इन्द्र एक दिन पादि 'अथ अथ इन्द्र उवाच' करते हैं। चमत्कार मम बान्धुकी रिरावत बन्धुको पर चढ़ा कर महासमापौडके साथ सुमैत्र पक्ष त पर भी जाते हैं। वहाँ 'पईबन्धाकार पाण्डु' कृष्णा पर रक्ते हुए रत्नमयो नि हासन पर मम बान्धुकी विराजमान करते हैं। उस समय पक्षि प्रचारके कान्ति बहते हैं, शशिपान महाबलमान करते हैं और देवा इनाय मृत्यु करते हैं। देवगण हाथों हाथ घोर-समुद्रके १००८ कलस मर कर क्षति हैं घोर सोचमें एव ईशान इन्द्र उनसे भगवान्का पक्षिपक्ष करते हैं। फिर इन्द्रको तोषण्डर मयबान्धुकी बन्धामुपक पड़नाती है। पद्मान् उच प्रकार समारोहके साथ नगरकी घोर झोटेते हैं घोर मग पान्धुकी भाताके हाथमें सीप कर तापण्डनृत्न करते हैं। चमत्कार माताकी सेवाके लिए सुमैत्रको मनुष्य कर इन्द्र, इन्द्राक्षिपान घोर सप्तम देव पक्षि पक्षि बान्धुकी चले जाते हैं। वासुक धवक्षामि तोषण्डरके साथ जग के देवगण वाकबका रूप चारख कर छोड़ा करते हैं। तोषण्डर जिहोके निकट पक्षयण नहीं करते।

इसी तरह अथ भयबान्धु उवाचि ज्ञान कर दोषा पक्ष करते हैं, तब १५ ब्रह्मजगत् ब्रह्मर्षि नामक देव था कर उनसे वैराग्यकी प्रशंसा करते हैं घोर इन्द्र पावक पर चढ़ा कर उन्हें नगमें पड़ना पाते हैं। तोषण्डर 'नम' शिर्षमा' कह कर केसु चत करते हैं। इन्द्र उन केसीकी रत्नमयो पिटाईमें रख कर औरसागरमें निक्षिप करते हैं। इससे बाद शिवब्रह्मण प्राप्त होने पर इन्द्रकी पात्राके सुषिर पादि देवगण धमधमरच ( तोषण्डरकी समा ) को रचना करते हैं। इससे सिवा निष्कक्षिपत क्रियेयताप हो जातो हैं। एक ही सोचन तक क्षमिष हो जाता है। तोषण्डर बिना इच्छाके पात्राया शार्गके निहार करते हैं घोर उनसे चारोंके भीषे देव क्रमर चते जाते हैं उनका मुख घाटी दिशाधिम होखता है किन्तु होता एक ही है। उन पर किसी तरहका उपसर्ग

नहीं जाता घोर न ही सोचन हो करती है। धमधमरचमें पात्रे हुए पात्रो मो परस्पर पक्षिरोको मैत्रोभाव धारण करते हैं। पात्राया, दिग्गाय घोर पक्षिबो निर्मल हो जातो है। इन्होंने स्वतुषोके फल एक साथ मल जाते हैं। पतुषण्डरके २०००। इससे बाद अथ उनको मोक्षको प्राप्ति होतो हैं, तब स्वर्गसे इन्द्रादि देव पाते हैं। चन्द्रनादिके माय पक्षिकुमार जातिब देवोंके सुकुटोंको पक्षिसे हाक-झिपा सम्पन्न होती है। इन्द्रादि देव उनका मध्य मध्यसे नगरी घोर सुति पूजादि करते हैं।

तोषण्डर वसिमा २४ हो होते हैं, इसमें न्यूनाधिक नहीं होता, न तेरेन हो दो सजती है घोर न पक्षोस। केनामममें उक्तवि को घोर पक्षपि को इन दो काक विमावाका उक्त है। वैश्वर्म देवो। उक्तपि को काकमें निष्कक्षिपत २४ तोषण्डर हो गये हैं, जिन्हें साधारणतः 'पक्षोत चौकोनो' कहते हैं। यथा -

- ( १ ) श्रीनिर्वाण ( २ ) सामर ( ३ ) महासाधु, ( ४ ) विमलप्रभु, ( ५ ) चोवर, ( ६ ) सुवरा, ( ७ ) पमचयसु, ( ८ ) उवर, ( ९ ) चन्द्रि, ( १० ) सपति, ( ११ ) विष्णुनाथ ( १२ ) कुसुमाक्षति, ( १३ ) विभवय, ( १४ ) उमाच ( १५ ) प्रानेय, ( १६ ) परमेश्वर, ( १७ ) विमलेश्वर, ( १८ ) ययोवर ( १९ ) उक्तमति, ( २० ) प्रानमति ( २१ ) उक्तमति, ( २२ ) सोमर, ( २३ ) पतिव्रत, घोर ( २४ ) शक्ति ।

वतमान पक्षपि'कोनाममें जो २४ तोषण्डर हो गये हैं उक्त साधारण 'वर्तमान चौकोनो' कहती हैं घोर उनके नाम इस प्रकार हैं—( १ ) स्वयमदेवक वा पादिनाथ ( २ ) पक्षितनाथ, ( ३ ) सन्धवनाथ, ( ४ ) पक्षिनन्दनाथ ( ५ ) सुमतिनाथ, ( ६ ) पद्मयम, ( ७ ) सुपार्थनाथ, ( ८ ) चन्द्रयम ( ९ ) सुभद्रना, ( १० ) मोतल नाथ ( ११ ) शैशवनाथ ( १२ ) वासुपुण्य ( १३ ) विमलनाथ ( १४ ) चमत्नाथ ( १५ ) धर्मनाथ, ( १६ ) शक्तिनाथ, ( १७ ) कुसुमाय ( १८ ) चरनाथ ( १९ ) मक्षिनाथ, ( २० ) सुमिधुवतनाथ, ( २१ ) ममिनाथ ( २२ ) निमिनाथ ( २३ ) पार्थनाथ घोर ( २४ ) वर्तमान वा महाबोर श्रामो।

• श्रीमद्भागवतके मूलके ही किन्तुके प्रथम अक्षर है।

इनमेंसे १५ तीर्थहर श्रौतपभनाथ भगवान् केलाग पर्वतसे, १२वें श्रोवासुपूज्य चम्पापुरीसे, २२वें श्रोनिमिनाथ गिरनार पर्वतसे, २४वें श्रीमहावीरस्वामो पावापुरसे और शेष बोन तीर्थहर श्रोमन्मदगिखर वा पागर्वनाथ पहाडसे मोक्ष वा निर्वाणप्राप्त हुए हैं।

भविष्यमें होनेवाले २४ तीर्थहरकी सचराचर "श्रनागत चौबीसो" कहते हैं; जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) श्रीमहापद्म, (२) सुरदेव, (३) सुगर्भ, (४) स्वयंप्रभु, (५) सर्वाभूत, (६) श्रोदेव, (७) कुलपुत्र-देव, (८) चन्द्रदेव, (९) प्रोष्ठिमदेव, (१०) जयकोर्ति, (११) सुनिस्रत, (१२) अरह (अमम), (१३) निष्पाप (१४) निःकपाय, (१५) विपुन, (१६) निर्मल, (१७) चित्रगुप्त, (१८) समाधिगुप्त, (१९) स्वयंभू, (२०) अनिष्ट, (२१) जयनाथ, (२२) श्रोविमल, (२३) देवपाल और (२४) अन्तर्वीर्य।

इनके सिवा जैनग्रन्थोंमें यह भी वर्णन है कि सम्प्रति विदेहक्षेत्रके विभिन्न स्थानों वा क्षेत्रोंमें २० तीर्थहर अब भी विद्यमान हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) सोमश्वर, (२) युगश्वर, (३) वाहु, (४) सुवाहु, (५) सुजात, (६) स्वयंप्रभु, (७) हृषभानन, (८) अन्तर्वीर्य, (९) सुरप्रभु, (१०) विशालकोर्ति (११) वल्लभर, (१२) चन्द्रानन, (१३) चन्द्रवाहु, (१४) भुजङ्गम, (१५) ईश्वर, (१६) जैमप्रभ. (१७) वीरसेन (१८) महाभद्र (१९) देवयग, और (२०) अजितवीर्य। विशेष विवरणके लिये जैनधर्म शब्द तथा जैन-पुराण ग्रन्थ देखना चाहिये।

तीर्थहरनामकर्म (सं० क्लो०) जैनधर्मानुसार यह शुभ कर्म-प्रकृति जिनके उदयसे अचिन्त्य विभूति-संयुक्त तीर्थहरत्वको प्राप्ति हो। दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्ना आदि षोडश भावनाओंका पूर्णतया अनुगोलन करनेसे भव्य पुरुष (आत्मा) जन्मान्तरमें तीर्थहर हो सकता है। श्रुतीतकालमें जितने भी तीर्थहर हुए हैं तथा भविष्यमें जितने भी होंगे, सबमें यही कर्म-प्रकृति कारण है। जैनगण इन पवित्रपावन षोडशभावनाओंकी पूजादि करते हैं। षोडशकारण और जैनधर्म देखो।

तीर्थतम (सं० क्लो०) अयमेवामतिगयेन तीर्थं तीर्थतमम्। श्रेष्ठ तीर्थ, तीर्थराज।

तीर्थदेव (सं० पु०) तीर्थमिव श्रेष्ठः। शिष्य, सहायक। तीर्थधातु (सं० पु०) तीर्थं धातु इव तीर्थकाट डगो।

तीर्थपति (सं० पु०) तीर्थराज देखो।

तीर्थपद (सं० पु०) तीर्थ पादो यस्य, बहुव्री० समामे पठ शब्दस्य पदादेशः। हरि, विष्णु।

तीर्थपाटीय (सं० पु०) वेषुव।

तीर्थभूत (सं० त्रि०) तीर्थभुक्त। तीर्थस्वरूप।

तीर्थमहाशुभ (सं० पु०) तीर्थरूपो महाशुभः। स्वर्गाम्भ्यात तीर्थभूतः।

तीर्थमृत्युयोग (सं० पु०) तीर्थं मृत्युविपशकः योगः। योगविशेष, इस योगके रहनेमें मनुष्यकी मृत्यु तीर्थमें होती है। इसका विषय उद्योगमें इस प्रकार लिखा है। जन्म कालीन चन्द्रमा यदि उग्र स्थानमें रहे तथा दृश्य स्थानमें बृहस्पतिको दृष्टि रहे, अथवा अष्टम स्थानमें शुक और द्वितीय स्थानमें बृहस्पति रहे तो जात मनुष्यको तीर्थमृत्यु होती है।

हृष राशिमें रवि, नवम स्थानमें बृहस्पति, लग्नमें शुक रहे और अष्टम स्थानमें बुधको दृष्टि पड़ती हो तो मनुष्यकी मृत्यु, गद्गाजन्ममें होती है।

लग्नमें शुक और बृहस्पति रहे, अष्टम स्थानमें चन्द्रमा रहे और उमके प्रति लग्नाधिपतिको दृष्टि पड़ती हो तो मनुष्यको मृत्यु काशमें होती है।

जिम मनुष्यका जन्म मिंहनग्नमें हुआ हो और उसके अष्टम स्थानमें शनि, मिथुनमें बृहस्पति तथा अष्टम स्थानमें लग्नाधिपतिको दृष्टि पड़ती हो, तो उस मनुष्यको मृत्यु तीर्थ स्थानमें होती है।

जिसके जन्मकालमें तीन ग्रह राशि और लग्नसे भिन्न किसी भी राशिमें रहे तो वह मनुष्य विविध सुख सम्पद भोग कर जाइवो जन्ममें प्राण परित्याग करता है।

यदि लग्नके चतुर्थ, अष्ट, सप्तम, अष्टम या दृश्य स्थानमें बृहस्पति रहे और वह बृहस्पति यदि उच्च स्थानमें हो तथा जात बालकका लग्न यदि मोन हो, तो उसकी तीर्थमृत्यु होती है और वह अन्तमें मोक्ष पाता है।

(ज्योतिष०)

तोर्बराजा (स० खी०) तोर्बसुविद्य बाजा । पवित्र  
प्यात्मिं द्यम स्नानादिषु चिये जाना ।

तोर्बराज (स० पु०) तोर्बराजा राजा । प्रबायोतोर्ब ।  
तोर्बराजि (स० खी०) तोर्बराजा राजिन्द्र, बहुश्री० ।  
पवित्रुक्त कायोधिज । यहाँ समो तोर्ब विराजित है,  
रसविषे काशीकी तोर्बराजि कहा जा सकता है । किंच  
किंच देवसे जोन जोन तोर्ब कायोधिं पाये है, उनका  
बर्चन कायोधिसिं रस प्रकार बिबा है—

वर्ग, मर्ज और पाताकर्मिं बितने मो सुविद्यत सम  
पायतन है, से समो कायोधिं काये मये है । कुबचेचके  
देवदेवके ल्याप नामक महाविद्य यहाँ पाविर्भूत हुए है,  
वहाँ उनको क्लामास पबक्षित है । इससे पाप ही  
कोबाबके पवित्रको तरफ लक्षिही नामक महापुत्र हरिषो  
है, यहाँ कुबचेचकेतोर्ब है । मैमिपचेचके देवदेव  
ब्रह्मावर्त रूपके नाथ पाये, जो दुग्धराजके उत्तरको पोर  
पबक्षित है पोर उनके पाप ही ब्रह्मावर्त रूप है । जो  
बर्चसे महाबल नामक सिद्ध पोर प्रभाबतोर्बसे यधि  
भूषण नामक सिद्ध पाये, जो ब्रह्मोचनतोर्बके पूर्वको  
पोर पबक्षित है । ब्रह्मविभोषे पापनाशन सिद्ध पाये,  
जो पौडरिखरसिद्धके पूर्वको तरफ बिद्यमान है । पुष्कर  
से पायोम्पेखर सिद्ध पाये जो मन्त्रोदरोके उत्तरमें है,  
पट्टापने महापदियरसिद्ध पाये जो जितोचनसे उत्तर  
में है, मन्त्रोदरे मन्त्रोदरेसिद्ध पाये जो कामेखरसे  
उत्तरमें है, बिद्यमानसे बिद्यसेखर सिद्ध पाये जो खर्षीन  
से पबक्षित है । मन्त्रोदरसे महाबल नामक महाविद्य  
पाये जो खर्षीखरसे पाप है, पोर मयातोर्बसे फन्गु  
धादि माईकोटि परिमित तोर्बोपहित पितामेखर यह  
था कर पबक्षान कर रहे है । गवातोर्बसे शून्यत  
नामक मन्त्रिखर तोर्बराज सहित पाबकर विनाचमखपने  
दक्षिणमें पबक्षान कर रहे है तथा महासेस यह, बर्चसे  
महासेसोदरिप्रद महासेस सिद्ध, ब्रह्मोदितोर्बसे महा  
योयोखर सिद्ध, भुवनेखर देवसे रूप कसिबान पोर  
कुबचाइलसे चणोखर यहाँ पाये है ।

कासकर तोर्बसे अथ मगवान् मौलकण्ड पाये है  
तथा कामोरसे बिबवनिद्ध था कर शाङ्करदहसे पूर्वमें  
पबक्षान कर रहे है । जिदकापुरोसे मगवान् लक्ष्मीता

यहाँ पाये है पोर कुचाण्डक नामक मखपतिको सामने  
रख कर पबक्षान कर रहे है । मन्त्रसेखर देवसे  
कोकण्ड नामक सिद्ध का पागमान हुआ है, से मन्त्र नामक  
विनायकको उत्तरदिगामिं रख कर पबक्षान कर  
रहे है ।

कागनाण्ड नामक महातोर्बसे मगवान् लक्ष्मीखर  
विनायकोचनतोर्बमें अथ पाविर्भूत हुए है । पाबान  
सेखरदेवसे ल्योखर पाये जो विकटदण्ड गणपतिसे समोप  
पबक्षित है । मन्त्रसेखरसे जयल नामक महाविद्य का  
पागमान हुआ, से ल्योखर मखपतिसे सामने पबक्षित  
है । योदेवसे देवदेव त्रिपुरान्तन पाये जो बिद्येखर  
जानसे मगवान् कुबचेचके जानेखरसे मगवान् मिशुकी  
रामेखरसे जटोदेव, बिमन्त्राचनेसे देवदेव ब्रह्मक हरि  
बन्ध देवसे मगवान् हरिखर मन्त्रोदरेखरसे मगवान् गव  
लसेखरसे यर्षेखर महाविद्य, हरितसेखरसे तमोहारो  
हरितमिन्द्र, इयमन्त्रसेखरसे मगवान् ल्येखर, सुदारसेखरसे  
ईयानिखर सिद्ध, ईयानसेखरसे मन्त्रोदर सेरबसूति, कन  
कनतोर्बसे लक्षिप्रद मगवान् लय, ब्रह्मापन नामक  
महासेखरसे मगवान् मन्त्रेव दाक्षकने मगवान् दण्डो,  
मन्त्रोदरेखरसे मन्त्रोदरे-इहित मासात् पित्र हरिखर,  
पुरसे मगवान् गहर पोर कावातोर्बसे देवसे पाचायै मन्त्र  
लोय पापुपल्लवताबन्धो पवने सिध्दसे साथ पाबकर यहाँ  
पबक्षान कर रहे है । मन्त्राभातरसे यमसेखर सात  
मोदाखरसे मगवान् मोमिखर भूतेखरसेखरसे मगवान्  
मन्त्रनाथ मन्त्रोदरेखरसे मगवान् ल्येखर, ईमन्त्रुद पवत  
से बिद्यपाप यत्रादारसे इमादोखर, कैलामसे सत्रकोटि  
पन्थाय महाबल मखनिचयोसे साब गणाधिप, मन्त्रमादन  
पवतसे मन्त्रुव नामक सिद्ध अन्त्रसिद्धकण्डसे पबित  
अन्त्रसिध सिद्ध पोर कोटोयतीकने अन्त्रसिद्ध का यहाँ  
पाममान हुआ है । से समो तोर्ब कामीने पबक्षान कर  
रहे है, इनसिधे इसका नाम तोर्बराजि पड़ा है । लय  
कुंठ तोर्बमें प्यान, दान पादि करनेसे बितना पुष्क  
होता है, कामोन्त्र लक्षी तोर्बमें स्नानादि करनेसे  
होता है लयसे लक्षी मोगुना पबित पुष्क होता है ।

( बटोकाह० ६६ न० धापी हैको )

तोर्ब वत् (स० वि ) तोर्ब विद्योत्पन्न तोर्ब-समुप मख



घाटेगः । चतुस्रस्यैव तीर्थविशिष्ट, बहुत तीर्थसंघि  
विरा दृष्ट्या ।

तीर्थवाक ( सं० पु० ) तीर्थस्यैव याको वचनं यस्य,  
बहुव्री० । क्रेग, धाल ।

तीर्थवागस ( सं० पु० ) तीर्थवायस इव । तीर्थकाक  
तीर्थवाक देवो ।

तीर्थगिना ( सं० स्त्री० ) किमो तीर्थसंज्ञान करनेकी  
पत्थरकी सोढ़ो ।

तीर्थग्रीच ( सं० क्लो० ) तीर्थस्य खट्टस्य ग्रीचं परिष्कारः  
६-तत् । खट्टादि परिष्कार ।

तीर्थसेनि ( सं० पु० ) कुमारानुचर मातृभेद, कात्तिकेय-  
को एक मातृकाका नाम ।

तीर्थसेवा ( सं० स्त्री० ) तीर्थसेवा, ७-तत् । तीर्थगमन,  
तीर्थयात्रा ।

तीर्थसेवो ( सं० पु० स्त्री० ) तीर्थघटाटिजलप्राप्तिस्य  
सेवते सेव-णिनि । १ वकपत्रो, वगना । (त्रि०) २ तीर्थ-  
यात्रो, जो तीर्थमें जाता है ।

तीर्थघाटन ( सं० पु० ) तीर्थयात्रा ।

तीर्थिक ( सं० पु० ) १ तीर्थकारो ब्राह्मण, पंग । २ बौद्ध-  
मतानुसार बौद्ध धर्मविद्भिषो ब्राह्मण, ३ तीर्थद्वार ।

तीर्थिया ( द्वि० पु० ) तीर्थद्वारको माननेवाले, जैने ।

तीर्थकरण ( सं० द्वि० ) पवित्रीकरण, जिसमें आदमो  
पवित्र हो जाय ।

तीर्थभूत ( सं० द्वि० ) तीर्थ-भू अभूतहावे च्चि्व । तीर्थ  
स्वरूप पवित्र । गौ जिस स्थान पर विचरण करता है,  
वही स्थान पवित्र अर्थात् तीर्थ स्वरूप है ।

तीर्थ ( सं० पु० ) तीर्थ भव यत् । १ रुद्रभेद, एक रुद्रका  
नाम । २ महाध्यायो, सहपाठो ।

तीर्थखा ( द्वि० पु० ) एक प्रकारकी चिडिया ।

तीर्थो ( फा० स्त्री० ) १ बडा निनका, सींक । २ धातु  
आदिका पतला पर कडा तार । ३ पटवोंका एक शोजार ।  
इसमें रेशम लपेटो जातो है । ४ नरो पहनाई जानिको  
कारवेमें दरकोकी सींक । ५ जुलाहोंके सूत साफ करने  
को तोलियोंकी कूँची ।

तीर्थर ( सं० पु० ) तीर्थते द्वावरच । शिष्वरछत्तरेति ।  
उण् ३१ । १ समुद्र । तीर्थयति कर्मसमाप्तिं करोति तीर्थ-  
वरच । २ व्याघ्र, वहेलिया ।

७ वणमङ्गर जातिविशेष । ब्रह्मवैवर्तके मतमें,  
यह जाति क्षत्रियके पौरव पौर राजपूतखोके गर्भमें  
उत्पन्न हुआ है । पराशर पद्धतिके अनुसार यह जाति  
वर्णकके शौरभमें उत्पन्न हुई है और प्रधानतः मत्स्य  
और जनश्रवणमाथो है । यह जाति अन्तर्गत है । 'इमो  
तीवर जातिमे तेनोको स्त्रो-द्वारा दृश्य शौर नैट जातिः  
उत्पत्तिं दृष्टे है । तोवरी शौर नैटमें भव, मव, माठर  
भट,कोल और कन्दर इन हः जातियाँको उत्पत्ति है ।

वद्मान शौर विचारके किमो किमो म्यानमें यह  
तीयर, तोशोर, राजवंशो अथवा मरुपा नाममें प्रसिद्ध  
है ।

किमो किमोने तीयर पौर धोमर इन दोनों जाति  
योंको एक वतनाया है, पर ऐसा समझना भ्रम है ।  
धोमर कशर जातिको एक श्रेणी है । परन्तु तोवरोंका  
कशरोंमें कुछ भी सम्बन्ध नहीं है । आकृति और  
पद्धतिमें भी धोमरोंको अपनेजा तीयर निकट मानना  
पडते हैं ।

भागलपुरके तीयरोंमें वामनशौच्य और गोवरिया ये  
दो श्राक पाये जाते हैं । वामनशौच्य सशुद्ध समझे जाते  
हैं और मथिल ब्राह्मण उनका पीरोहिष्ठ करते हैं । ये  
दृगनामो गुरुके शिष्य हैं । परन्तु गोदावरिया लोग  
होन समझे जाते हैं और शराव, सूफरका मांस खादि  
भक्षण करते हैं । वद्मानके गोवामो लोग गोवरियामें गुरु-  
का काम करते हैं । पतिव ब्राह्मण इनके पुरोहित हैं ।

पूर्ववद्मानमें तीयर लोग अपनेको राजवंशो कहा  
करते हैं । मेमनसिंहके तीयर अपनेको तिनकदल  
वतनाते हैं और गङ्गा किनारेके तीयर सूरजवंशी ।

तीयर जातिमें चौधरो, कड़ोदार, मजाह, ममभन  
(महाजन), सरर, सुधियार आदि उपाधियाँ पाये जाती  
हैं । इनमें इतबाल, काश्यप और जयसिंह इस तरह  
तेन गीत है ।

पूर्ववद्मानके तीवर तेन भागोंमें विभक्त हैं—प्रधान,  
परासाधिक और गण । प्रधान सबसे श्रेष्ठ हैं, उसके

\* "सयः क्षत्रियवर्षेण राजपूतस्य योषिति ।

बभूव तीवरश्चैव पतितो राजदोषितः ॥"

( महाभ० ब्र १० अ० )

बाह्य पगमाविष्णु धोर समने मोने गग । मोने घात्रि  
तोयरो को उच्यते कोको कथा भिनो पड़तो है इसके  
मिवा कथाके पित्तो को अधिक हयने न देनेने इनका व्याप  
नहो होता । इनमें विधवा विवाह प्रथमिन नहो है ।  
जो मरीच विचरने परतो इच्छामे मरहो वैचरी है,  
छल को करवतो वनातो है परहवा वैच्यो जो मोय  
मांय कर अपना मुभारा कहतो है ।

तोषरो (म० स्त्री) तोषर शिपाय कोय । १ तोषरपवा  
तोषरवो स्त्री । २ व्याधयको व्याधको स्त्री ।  
तोष (म० स्त्री) तोष रक्त् वा नित्र निगाने इन् दोष ।  
(प्रशयोः) । छत्र १ । २२७ नूरे उरररर) १ प्रतिगय, पत्न्यम् ।  
२ तोष्य, तीक्ष्ण । ३ पत्युश्च बहुत गरम् । छत्रट्,  
कट्टुना । ४ प्रतिगयबुद्ध, निताम्, विष्ट । ५ पशुघ्न,  
न मरुते योय । ७ प्रपण्ड । ८ तोषा । ९ विगबुद्ध, तीक्ष्ण ।  
(म० स्त्री) मोहमेद, दयात् । ११ तोर, नलोका  
जिनारा । १२ ज्योष, टोम । १३ मोहमात्र नावाय  
कोहा । (स० पु०) १३ शिब, महादेव । १४ शैश्याका  
ध्यायविशेष । (वात३३ १।११ २२)

जिसो जिसो मनुष्यको तोष योगो कहते हैं । सोय  
साधनका उपाय तोम तरहका है मनु भय धोर परि  
मात्र पर्यात् तोष । जो जे क्रिमिष उपाय परमभय करते  
हैं, उर्ध्व घटेय फल प्राप्त होता है । यह भी तोम प्रकार  
का है मनु उपाय सब उपाय धोर तोष उपाय । फिर  
इसके तोम शब्द है—मनुष्य भय, मध्य म बर्ग धोर तोष  
अर्थ । सुतरां येनियाके उपाय भी प्रकारसे हैं । जो तोष  
स बर्ग हैं उनको निद्रि नत्रिकट है । (वात व्याकरण)

तोषत्रय (म० पु०) तोषः कच्छो यथात् बहुषोः ।  
शूर्य पत्न्य, इमोचन्द, धीम ।  
तोषत्रय (स० पु०) तोषः कच्छो मूल यय । १ शूर्य  
कमोचन्द । २ पत्न्यात्, पत्न्या ।  
तोषवति (म० स्त्री) तोषा गतिपंथ बहुषोः । १ त्रिसको  
चाप तीक्ष्णो । (पु०) २ बाहु इवा ।  
तोषग्रन्थ (म० स्त्री) तीक्ष्ण गन्धो यय । तावग्रन्थबुद्ध  
वच पदाब्ध शिबको मन्थ बहुत तीक्ष्णो ।  
तोषग्रन्था (म० स्त्री) तोषग्रन्थ टाय । यवानो,  
परवायन ।

तीक्ष्णमिक्षा (म० स्त्री) यवानो यतवायन ।  
तामघागो (स० वि०) तोषग्रन्थ-विनि । परवत्-ग्रामो  
बहुत पत्न्यम् ।

तोषज्वाला (म० स्त्री) तोष यवा तथा ज्वालावनि  
पुत्र विष्-पच टाय । चातको प्रवका फूल । कोय  
कहते है कि इसके ज्वाले शोरसें चाय हो जाता है ।  
(मि०) २ तोषज्वालाबुद्ध त्रिसमें बहुत प्रवत्त हो ।  
तोषा ज्वाला कामधा० । तोषज्वाला, तीक्ष्ण जलन ।

तोषरा (म० स्त्री) तोष्य भावः तोष-तच् । उच्यता  
तोष्याता, तेजो, तोषायन ।

तोषदाह (स० स्त्री) तोष दाह कर्मधा० । तोषदाह,  
ध्वं कश्चिद् ।

तोषकम्ब (म० पु०) तोष कम्बो यस्मात् बहुषोः । ताम्र  
शुक्ल, तमोशुक्ल ।

तोषवेदना (स० स्त्री) तोष वेदना कामधा० । पत्यन्  
कन्धना बहुत पोद्दा ज्वाला तत्रलोफ ।

तोषनवेग (स० पु०) तोषः मवेगो कर्मधा० । तोष  
वैश्याय । तीक्ष्ण वेको ।

तोषनव्याप (म० पु०) ज्ञानवयो, वात्र ।

तोषसक (म० पु०) पश्चाद् व्यापमेद, एक दिनमें जोने  
पाका एक प्रकारका यय ।

तोषसुत (स० स्त्री) मोमका धवयवमूल प्रायः  
सकलिक ।

तोषा (म० स्त्री) तोष-टाय । १ कट्टु रोडियो कटको ;  
२ मयच्छुना, गाँडरूय । ३ राजिका राई । ४ महा  
ज्योतिषतो, बहुो मानकर्मगो । ५ तरहीहय, तरको  
का पिङ्ग । ६ तुलसी । ७ मदीविशेष, एक मदीका  
नाम । ८ पदत्र प्ररको चार मुतिपामिने पदको मुति ।  
९ मदीकारिषो, सुरासामो पत्रनायन । (मि० १० तोष  
वेद्युद्ध त्रिसमें बहुत तीक्ष्ण गति हो ।

तोषानन्द (स० पु०) तोष धानन्दो यस्य । शिब,  
महादेव ।

तोषाक्त (म० स्त्री) तोष या तोष्य पच ।

तोषानुराग (स० पु०) नैम-मत्तानुराग एक प्रकारका  
पत्तोपा । बीसे—परसी या परपुरवने कन्धना पनुराग  
करना परहवा कामको इतिव निवे पयोम, कच्छु-रो

आदि खोना । इससे खटार-सन्तोष व्रतमें दूषण लगता है ।  
तोस ( हि० वि० ) १ जो इकतिसमें एक कम हो । ( पु० )

२ वह संख्या जो बीस और दशके योगसे बनी हो ।

तीसट ( म० पु० ) एक वैयक-ग्रन्थकार ।

तीसरा ( हि० वि० ) १ जो टोके बाद आता हो । २ सम्बन्ध रखनेवालोंसे भिन्न ।

तीसवा ( हि० पु० ) जो उनतीसके बाद आता हो, जिसके पहले उनतीस और हों ।

तोमी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारका तेलहन-अनाज । भिन्न भिन्न भाषामें इसके नाम इस प्रकार हैं—

हिन्दी ( भाषामें ) अलसी, तीसी । बङ्गाल—तीमो, मसोना । बिहार—तीमी, चिकना । उड़ीसा—पेशु । युक्तप्रदेश—विजरो । कमायुज—तीमो, अलसी । काश्मीर—फियुन्, आलिस । पञ्जाब—आलाग, तीसा, अलसी । काश्वर—जिधिर । बम्बई—अलसी, जरसा, जरस । गुजरात—अलसा । तामिल ( भाषामें ) अलसी विराइ । तेलगु ( भाषामें ) आतसी, उल्लू, मुलू, मदन-गिल्लालु । कर्णाटक—अलसी, अनासी । मलया-चेरु, चाना, वित्तिले, विलसा । तुर्की-गिगर । अरब-कत्ताम वा वजरत कत्ताम । पारस्य-जव जधिर, कुतान वा तुखमें कुतान । हिन्दु ( भाषामें ) पिस्ता । संस्कृत ( भाषामें ) अतसी, उमा, सुमा, मालिका, मसृणो, गण । लाटिन ( भाषामें ) लाइनम् । इंग्लैण्ड—लिनसीड । केल्तिक ( भाषामें ) सिन ।

इसका वैज्ञानिक नाम *Linum usitatissimum* है । तोसोंसे तोसोका बीज, तेल और खरो बनते हैं, किन्तु यूरोप और अमेरिकामें इसके पौधेसे सन सरोखा एक प्रकारका सूत प्रसृत होता है जो लिनन (Linen) वा विलायतो साटिन नामसे इस देशमें प्रसिद्ध है । यूरोपीय पण्डितोंका कहना है, कि यूरोपमें आर्य लोगोंकी विस्तृतिके समय तोसोका व्यवहार प्रचलित हुआ था । मिस्रके प्राचीन समाधि-मन्दिरकी दीवारमें जो अद्विष्ट छवि हैं, उनमें तोसोके पौधेसे सूता तैयार कर कपड़ा बुननेके सब काम अच्छी तरह चित्रित हैं । प्राचीन मिस्रवासियोंका समाधिघेन्द्र इसी तोसोके सूतसे बनता था । ईसा-जम्हके २३ गताब्द पहले मिस्रमें तोसोके सूतका व्यवहार हर एकको मालूम था, यह प्रमाणित

है । हिन्दू और योक्त-ग्रन्थोंमें तोसोके सूतका २५३०० बार उल्लेख है । स्त्रीजनें गड़के हड़नालाके निकट जो सब प्राचीन स्तूपकार वामस्थान आविष्कृत हुए हैं, उनमें तोसोका पोधा आदि पाया गया है । उत्तर यूरोपमें गालि-मेने अन्यान्य प्रयोजनीय वृक्षोंको नाई तोसोको खेतों प्रचलित की, किन्तु नरीवे और स्वीडनमें बारहवीं शताब्दीमें इसका प्रचार हुआ है ।

प्लैनचन नामक यूरोपीय पण्डितने १८४८ ई०में यह प्रकाश किया कि तोसोके तीन भेद हैं—(१) *Linum usitatissimum* (२) *L. humile* और (३) *L. angustifolium* । हियर नामके एक दूररे पण्डितने प्रमाण कर दिखना दिया है, कि उक्त त्रय त्रयीकी तोसो ही सबसे उत्कृष्ट है तथा प्रथम त्रयीमें इसकी गिनती होती है । इस प्रथम त्रयीकी तोसोके फिर भी दो भेद हैं,—(क) सामान्य ( *alpha vulgar* ) और हुमिलि ( *Beta humilji* ) इनमें से पहला भेद भारतवर्षमें और दूसरा पारस्यमें प्रचलित है । लाइनम अगिटिफोलियम ( *L. angustifolium* ) भूमध्यसागरके दोनों ओर पारस्यप्रदेशमें जंगली अवस्थामें उपजता है । भिन्न भिन्न मूल भाषामें इसका नाम जिस तरह स्वप्रधान है, उससे जाना जाता है, कि विभिन्न देशोंमें विभिन्न जाति द्वारा यह प्राचीनकालमें प्रचलित है ।

भारतमें भी तोसोका प्रचार बहुत पहलमें है । आजकल इस देशमें तोसोके बीज और तेलके सिवा उसके सूतका व्यवहार नहीं है, किन्तु पहले था । संस्कृत शास्त्रमें चौरवस्त्रका यथेष्ट व्यवहार देखा जाता है । बहुतरे चौरवस्त्रका अर्थ रेशमी वस्त्र लगाते हैं । किन्तु वह नहीं है । क्योंकि तोसोका एक नाम 'जव' 'सुमा' है तब उसमें प्रसृत वस्त्रको हूँ चौरव वस्त्र कहते हैं । चीनमें सुमा नामको एक प्रकारको घास होती है उसके रेशे या सूतसे एक प्रकारका वस्त्र प्रसृत होता है, जो देखनेमें ठीक रेशमी सा मालूम पड़ता है और रेशमी नामसे प्रचलित भी हो गया है । इससे अनुमान किया जाता है कि चौरव वस्त्र भी इसी प्रकार रेशमी वस्त्र कहलाता है । मनुसंहितामें लिखा है, कि वैश्वानर चौरव वस्त्रका उपवीत धारण करतये ।—

दीर्घाद्यः । मातृवर्षं तौषोभिः पोषिसे तौषोका  
 भोज, बीजसि तिस्रः चौरः चारी वा पशुो वनतो वै । एष दीप-  
 मं तौषोचि रये नहीं निराकृतं वै, एष कारयः भोजः बभूव  
 पतका बोया जाता वै । पतने दीपमिं टण्डिवां चौरः पशु  
 बभूव निवृत्तमं वै । पून भङ्गनेपरः कोटीः शुद्धिवां न चती  
 वै । रवीं शुद्धियोमं भोजः एतं वै । यः रोपमं वेवसः रधि  
 का चो धादरः पचिच वै । इमः कारयः चि बभूव वना भोज  
 बोसि वै, त्रिसधे पोषिमं टण्डिवां न निवृत्ते चौरः पोषि भी  
 बभूव हीं । मातृवर्षं कितीये दीपः वा शुचये तौषोका  
 दाना पतका चौरः मोटा कुपा करता वै तथा एव मो  
 कई तरुमं हो जाति वै । तौषो सफिदः चौरः साकारः मकी  
 होती वै । खेतोकी प्रवाकी वीरः कइवी शुचये जान  
 तौषोके मो फिर कई मंद वै जिन्हीं वेवसः महाबलः लोग  
 हो पचपासमं वै ।

- सफिदः तौषोका भोजः कायः तौषोके बीजसि सुष्टः चौरः  
 भोजका किनका पतना होता वै । इससे तेल मी काफो  
 निवृत्तता वै । इसका पितका (धूसर) मो कल्प  
 चौरः काहु होता वै । सफिदः तौषी मीकः चौरः सनिधि  
 मोकमं विवृत्तो वै । जम्बहपुरमं एसः प्रकारकी तौषी  
 बभूव उपजतो वै । नमः दाके दक्षिणमं एसः तौषोकी  
 व्यवहारः पचिच वै । जम्बहपुरकी सफिदः तौषो दूनरे  
 देयमं उपजामिं जान हो जातो वै ।

बभूव वयां जोनेये तौषो मुबसान हो जात] वै क्योंकि  
 इससे पतः मं मोटोसा दानः पड़ जाता वै, इससे प्रायः  
 पायसे पचिच पोषि नष्ट हो जाति वै । इससे सिवा एसमं  
 चौरः मो कई तरुके कौड़ुं नमकरः इसका उखानाय  
 करः जालसि वै ।

बहानके मध्यः वर्षः मान-विभासमं सभं एसः  
 चेतो नहीं होती वै । दिवारकी तौषो पच्यो होती वै ।  
 इसकी तथा पचसवः जमोनः तौषोको कितीये सिधे उपजोयो  
 वै । कहीं म्योमिं तौषो नहीं उपजतो । तौषोके खेत-  
 का पानो पच्यो तरुः वाचरः निजाचः दिना भङ्गः वै  
 क्योंकि खेतमं पानोके एवः कामिसे एसका बभूव मुबसान  
 होता वै । त्रिसः खेतका पानी एवः गया हो तथा  
 त्रिसमं जानके पोषि जनी हो हीं, वेके खेतमं प्रति बोये  
 ५२ डेर तौषो बोईं जाता वै । भनमं जवः दानः पचता

वै तवः नवः काटः सिवा जाता वै चौरः तौषो उचमं वैतः  
 मायः तवः लगे रहतो । दिवारकी जमोनमं तौषो पचिच  
 होतो वै । निजः जने, सरसं वा क्षिसारोमं एधिः मिखा  
 करः बोसि वै पचना बिना किसे दूररे पनासमं मिखाये  
 मो यह बोईं जाती वै, जो खेतः बभूव गहरा जाता गया  
 हो उचमं तौषो पच्यो नहीं उपजतो वै । तौषी बो कर  
 खेतको चौरसः करः देना पच्यो वै । पचनी पचनः बोईं  
 जानके बादः वितमं एवः करः जवः पचाया जाता वै,  
 पोषि तौषी बो कर दो बार चो चो देनो पड़तो वै । एवः  
 पचनः पाचिनः चौरः कार्तिवः जममं बोको जाता चौरः  
 चेतमं बाटो जाता वै । वेवसः तौषो बोनेमं प्रति बोये  
 ६ डेर चौरः मिखाकरः बोनेमं १६ डेरः भोजः समता वै ।  
 सिधः तौषो प्रति बोये २ मनः उपजती वै । गहाके  
 विनारः इसकी पतलः पच्यो समती वै । पचलः पच्यो  
 तरुः एवः जानके पच्यो हो एधे कइये काटः जालसि वै ।

गहाबादमं यहः चो मसुरः पादिके सावः मिखा कर  
 बोईं जाता वै । मुबसदेयः चौरः जयोप्राके समी जिन्हींमं  
 एचको चेतो होतो वै । काभोरके पचिमोचमं भी यह  
 कामः नहीं उपजतो वै । इसका तेलः उचः देयमं बभूव  
 व्यवहृतः होता वै । मद्राजः चौरः जम्बः देयमं इसकी चेतो  
 प्रायः नहींके बराबरः समझना पाचिये । बम्बईः प्रदेशमं  
 मी इतका खूबः पादरः वै । पूना, थोलापुर, नाचिक,  
 खामदः यः इमदमगर, गुजरातः पादिः खानीमं मी यह  
 कुछः कुछः उपजायो जाता वै । मध्यभारतः चौरः नवारमं  
 कुछः पचिचः होती वै, ईदराबादमं मो कामः नहीं उपजतो ।

दीर्घाद्यः टण्डः । भोजकी सुष्टिः चौरः चोचोके चनुनारः  
 इससे तिनका परिमाणः जाना जाता वै । घुपनि बीजसि  
 नये बोसमं तथा पतले दामिसे मोटे कामिं पचिचः तेल  
 निवृत्तता वै । कामये कामः ३६ डेरः भोजमं १ डेरः तेलः पाका  
 जाता वै किन्तु दाना पच्यो रहमिं ३३ डेरमं एवः डेरः  
 तिजः निवृत्तता वै । गहाबादमं यहः तेलः दोडेमं व्यवहृतः  
 होता वै । लखानके समयः एवः तिनके सुर्षः निवृत्तता  
 वै । बिलासतसे भी तौषोका तिलः एवः देयमं पाता वै,  
 नवः बिपुवः होता वै चौरः रसकाको तथा निचोके कापिको  
 पानोके बगानके काममं पाता वै । इससे सिवा उचः तिलमं  
 सुकानेका शुचः पाचिचः वै ; किन्तु इमः कोमीके देयको

तोसों अन्य तेल्हन बोजके साथ मिलकर खराब हो जातो है तथा इसके तेल्हमें सुखानिका गुण कम रह जाता है। इस देशका तेल्ह एक टफा विलायतमें बेचनेके लिये भेजा गया था किन्तु वहाँ जव यह तेल्ह जाँचा गया, तब बाजारको दरसे दश पन्दह रुपये क्रममें बिका। तभीसे इसको रफतनी बहुत कुछ बन्द हो गई है। मिर्जापुरको लाल तोमोका तेल्ह विलायतके तेल्हसे बनी और अच्छा होता है, किन्तु कोल्हमें घरे जानिके कारण उतना घाटर नहीं है। घानोसे तेल्ह निकालनेमें खर्च भी ज्यादा पड़ते हैं। १०० मन तेल्हमें प्रायः ८० रु० खर्च होते हैं। विलायती वाण्येय कालमें १०० मन तेल्ह निकालनेमें लगभग १८५ रु० खर्च पड़ते हैं।

तीसका सूत। अभी यूरोपीय विद्वानोंके यत्न और चेष्टासे भारतवर्षमें कई जगह तोमोका सूत तैयार होने लगा है। १७८०से १७८८ ई०में पहले पञ्चल इस विषयमें चेष्टा की गई। इस देशके किसान लोग पहले तोमोसे रेशा निकालनेमें किसी तरह महमत न हुए। इन लोगोंका विश्वास था, कि जो काम बाप-दादाने नहीं किया है वह काम करनेमें विधि अनिष्ट होगा। इन सब अज्ञान मनुष्योंके दृष्टि विश्वासको हटानेमें साहसीकी जितना कष्ट भोला पड़ा था वह अकथनीय है। लामको कथा उदाहरण वा उपदेश किसीसे भी इन लोगोंका ध्यान इस और आकर्षित न हुआ। डा० रक्सवर्गने सबसे पहले इटलीय कम्पनीके राज्यमें रिमडाके सनको कोठोंमें सूत तैयार करनेको व्यवस्था कर दो। उनका प्रस्तुत सूत बहुत उमड़ा होता था। १८२८ ई०में लण्डनमें एजाम नामक एक व्यक्ति अधोन एक कम्पनी संगठित हुई। रिगा और ओलन्दाजी बीजने साथ एक वेनजियमका क्लपक और एक वेनजियमवासी तोमोसे सूत प्रस्तुत करनेवाला यूरोपीय यन्त्रादि लेकर इस देशमें आया। यहाँ उन्हें इसके लिये खेतो नहीं करने पड़े। क्योंकि उनके उपदेशमें हो यहाँके मनुष्य इस विषयमें चेष्टा करने लगे। काशोके निकट वलिया नामक स्थानमें १७४० ई०को जो खेतो की गई, वह संतोषजनक न हुई थी। क्योंकि अमयमें खेतो करने

और सूत निकालनेमें सब बरबाद हो जाता है। १८४१ ई०में सुडोरमें इसका प्रयत्न किया गया। तीन वर्ष परिश्रम करनेके बाद १८४४ ई०में सूत कुछ कुछ परिष्कार और कोमल होने लगा, किन्तु गवर्नमेण्टकी औरसे किसी प्रकारकी सहायता नहीं मिलनेसे कुछ समयके बाद कारखार बन्द हो गया। अन्तमें नर्मटाके किनारे जव्वनपुरमें इस विषयको और लोगोंका अच्छा ध्यान था। यहाँके तोमोके पेशिमें उल्लट सूत तैयार होता है। शाहाबादमें १८३७ ई०को इसको पराचा आरम्भ हुई। यहाँ जो सूत तैयार होता है वह बहुत कड़ा होता है। रूकियाके सूत मरोखा यह भी विलायतमें कम दरमें बिकता है। एक समय ब्रह्माल देशमें भी इसको खूब उन्नति हुई। चट्टग्राममें जो सूत तैयार होता था, वह नब्बाईमें स होने पर भी कम्पनीको परोजा द्वारा बहुत उल्लट प्रमाणित हुआ था। वर्तमानमें चार प्रकारके सूत प्रस्तुत हुए, जिनमेंसे तोमरा प्रकारका सूत सबसे उमड़ा मसभा जाता था।

इस तरह नाना स्थानोंमें तोमोके सूतके लिये जव खेतो आरम्भ हुई, तब धीरे धीरे किसान लोग अपनेमें हो बहुत कुछ इसमें उपनि लगे।

१८५५ ई०को पञ्जाबमें लाहौरके निःशुद्धी मियालकोट और दोननगरमें इसने जो सूत बनता वह चार पाई आठको रस्सोके काममें आने लगा। काङ्गहा उपत्यकासे १८५८ ई०में जो सूतशा नमूना विलायत भेजा गया, उसका वहाँ खूब घाटर हुआ और ऊँचे दरमें बिक गया। अतः भारतवर्षमें रोनिमनने व्यवसाय चनानेकी इच्छासे वेनफाट शहरमें १८६१ ई०को वेनफाट भारतीय तोमो सूतका कम्पनी नामक एक दल अंगरेज इस काममें प्रवृत्त हुए।

मियालकोटमें इन लोगोंका एजराट-आफिम स्थापित हुआ। पहले इनको इनकी चलि हुई कि कारखार प्रायः उठने उठने पर हो गया था। अन्तमें रोम-गवर्नमेण्टके वार्षिक साहाय्यसे इन लोगोंका प्रस्तुत सूत आरिण सूतसे मिलता-जुलता था, किन्तु अधिक जमोन और क्लपकके नहीं मिलनेसे उक्त कारखार बन्द हो गया। १८६८ ई०में एक दूसरी कम्पनीने इस काममें हाथ डाला।

पेशावरमें तोषोषे पृथक्कर्म-संबंधकारके लिये रचना तैयार करती हैं। इनके पञ्चाभा पञ्चावमें बीर जिनो वृद्धी काममें तोषोषे स्त्रीका व्यवहार नहीं होता है और न बर्ताने लोम रक्ष पो। ध्यान हो देती हैं। जिन्यु नहीं जो हृदय दृढ तैयार होता है उदको गिनतो पञ्चोमें है। सुखवदेयमें भी सुत तैयार नहीं होता है; बर्ताने तोषोषा बीज निष्कास कर लयके पोषोको घट्टियेमें बांधते और लके छात घाट दिन तक तासावने लक्षमें रख जोकृति हैं। प्रति दिन घट्टियां लम्पटानो पड़तो हैं। ७८ दिन बाद (पञ्चिच सर्तके समयमें ७९ दिन बाद) रसको लड़की पाइ कर बना पड़ता है, कि पट्टीके समान रसको लच्छल पसल हुआ है ना नहीं। ऐसा होने पर पन्द्रह दिन तक लके बाहर उल्ले पलसा करके सुषामा पड़ता है। यदि उल्ले होनेको पायसा हो, तो घट्टियोंको बोपाकारमें बाहर बना कर रखना चाहिये। पोके मोगरो या मूसनके उठलको बुर बुर करना पड़ता है। तब परिष्कार कर लच्छलमें बांधकर रख जोकृति है। यह लच्छल हो कर निष्कासत भिजा जाता है। दियो लच्छलमें धर्मो इसका व्यवसाय धारण नहीं किया है।

सम्भारतमें तोषोषा बीजा एक पुष्टी पचिक ल या नहीं होता है, जिन्यु तोषो बहुत ल्यादे निश्चलती है। रस देयमें यह प्रायः रम्भो पादिने नाब बीरे जाता है। बरारमें मो दिसा बी है। इन दो स्थानोंमें नहीं मो सुत नहीं होता है।

जिन्युपदेयको उत्तरो घोमामे तोषोषे सुत हैयार होता है, लसीदार लोम इसको रम्भो बनवाते हैं। जिन्युके और किलो मागधे तोषोषो येतोषा नाम मो नहीं है। बम्भेमें बीजके संकलन रिक निष्कासा जाता है सुत नहीं मो तैयार नहीं होता। मन्दात्रमें भी बहो जात है। बङ्गालमें यदि यज्ञ किया जाब तो सुतेके रम्भो लडाई पादि बन सकतो हैं। लच्छलकेमें निष्कट लड़ाके पूनरे लिनारे लच्छले एक समय तोषोषे मूषिका पान और मिपासका बहुत कट्टियां कपड़ा हैयार हुआ है।

भारतमें धर्मो यह जगह तीसोषा बीज न पड़तीत होता है। बीजा या तो भवेयीको जिहासा जता या बना दिया जाता है। यदि यह बरबाद न किया जाब, कर

पट्टियोंको सुषा कर कायबकी लक्षमें भिजा लाय तो दोनोके लिये विरिय नाम हो।

श्रीश्रीधर स्वरकार—भारतवर्षमें तोषोषा जितना वर्ष है वह ठीक लेक जाना नहीं जाता। इस दियमें तोषोषो पुन्दर लक्ष लकी भी देखनेमें नहीं पातो है। इसको पका कर पाड़ा करके एक प्रकारका बारणिय मो बनता है। धनो लोरीके घरमें बिबाकू तथा भरोयेमें मो सजा रक देखा जाता है, वह यको बारणिय है। प्रति वर्ष कई मो भन लोम विदेयमें भिजे जाते हैं।

श्रीश्रीधर स्वरकार। यदि प्रसुत कर लके तो रसके रसके रसको घट्टाई, मिपास पास पादि बन सकती हैं। यदि लूत निष्कास न भके तो रसके पोषोको सुषा कर कायबकी लक्षमें भिजे सुतेके बहुत काम होता है। सेयोके बापिबी खाओ, र गवाबी तथा बारणिकके सिवा इससे सिधे लच्छल-लच्छया रबर और गरम छाजन बनता है। रिक बिच्छु होने पर ये सब पोर्न पञ्चकी बनतो हैं। जिन्यु भारतमें मिथित सेन हो पचिक है।

तोषो पोषके काममें मो पातो है। इसको लरोको पोष कर लमकी मुकटिस बांधनेसे सुजन बँड जातो है वा लखा जोड़ा मोत्र पक कर बह जाता है। दुद भी कम जाता है। घट्टु बाप रोममें मो बह काममें पातो है। सिध और मुन्नरोम तथा निज्जयलकी पोड़ामें मो बह बहुत उपकारी है। दातक बिबिभ्यान्धीं तासोको लक्ष में सिध कर लके मिहरोको भी बन कराती है। जोषके लुच लो लोकोसे साब मिया कर कामिसे मिहरोग भाव होता तथा कामान्नि लड़ती है। लच्छमें मो यह तिनको नाई मिनाई जाती है। इस दियमें तेल कम होता है। इसलिये लरो मा कम होता है। जिन्यु ल्पिमामें परोषा कर देखा गया है, कि लरो गोको जिहामिसे लच्छे पूषमें मल्लन पचिक होता है।

तु (१० पय्य) १ निरर्लक वाहपूरण, २ सिद, ३ पय-धारण ४। मसुषय १९ पयान्तर, ६ जिन्वोवा, ७ प्रमसा, ८ निप्रह, ९ सम्पक, १० जिन्यु, ११ पाचिक।

तु जाक (हि० सु०) पु टने लगी हुए एक प्रकारका जान। यह मन्त्रो पादिने लच्छलेके लिये बीजाके लपर कामा जाता है।

तुंदिका ( हि० वि० ) मस्वीदर, बड़े पेटवाला, तोंट-वाला ।

तुवडी ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारका छोटा पेट । इसकी लकड़ी मकानोंमें लगती है जो सफेद, नर्म और चिकनी मान्य म पड़ती है । मवेगी इसके पत्ते बड़े चायसे खाते हैं ।

तुधर ( हि० पु० ) परहर, आठकी ।

तुई ( हि० स्त्री० ) एक प्रकारकी वेन जो कपड़े पर बुनी हुई रहती है ।

तुक ( सं० पु० ) तुज क्लिप् । अपत्य, मन्तान ।

तुक ( हि० स्त्री० ) १ किसी पद्य या गीतका कोई खण्ड, कड़ी । २ वह अक्षर जो किसी पद्यके अंतमें रहता है । ३ अक्षरसंज्ञा, पद्यके दोनों चरणोंके अन्तिम अक्षरोंका परस्पर मेल ।

तुकज्योतिर्विदु—एक प्राचीन हिन्दू ज्योतिर्विदु ।

तुकवंदी ( हि० स्त्री० ) १ भद्दे कविता करनेकी क्रिया ।

२ ऐसा पद्य जिसमें काव्यके गुण न हो, भद्दापद्य ।

तुकसा ( फा० पु० ) घुंडो फमानेका फंदा ।

तुकान्त ( हि० स्त्री० ) अत्यानुप्रास, काफिया ।

तुका ( फा० पु० ) बिना गांसोका तोर, वह तोर जिसमें गांसोकी जगह घुंडीसी बनी हो ।

तुकासीरी ( सं० स्त्री० ) तुगाचीरी छपोदरादित्वात् साधुः । वंशलोचन ।

तुकार ( हि० स्त्री० ) अष्टिष्ठ सम्बोधन, 'तू' का प्रयोग जो अपमान-जनक समझा जाता है ।

तुकारना ( हि० क्ति० ) अष्टिष्ठ सम्बोधन करना, तू तू करके पुकारना ।

तुकाराम—महाराष्ट्र देशके एक प्रसिद्ध भक्तकवि । भारत-वर्ष धर्म विद तथा महापुरुषोंको लोलाभूमि है । प्रति युगमें और देश देशमें भगवद्भक्त महापुरुष जन्मग्रहण करके इस देशका गौरव बढ़ाते हैं । कोई भक्ति, कोई ज्ञान, कोई वैराग्य, इत्यादि सदगुणों द्वारा स्वदेश-वासियोंका बहुत उपकार साधन कर गये है । वैदिन मन्त्रोंसे लगाकर वर्तमान समयके धर्म सङ्गीत तक सभी धर्म भावमें अनुप्राणित हैं । हमारे देशको आधुनिक आध्यात्मिक धर्म-भावोद्दीपक पदावलियोंका अभाव नहीं

है । हिन्दीमें तुलसीदास, ब्रह्मनामि रामप्रसाद, तामिळमें तिरुवन्नुवर तथा मराठीमें तुकाराम प्रत्येक नरनारे-के हृदयमें विराजित हैं । हिन्दुस्तानमें ऐसी कोई हिन्दू-मन्तान नहीं है, जिसने तुलसीदासके कवियोंको न सुना हो । राजपथमें, नगरमें, ग्राममें ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ तुलसीदासको कविता न सुनी जाती हो । तुलसीदासने युद्धप्रान्तमें जै माव्यान पाया है, तुकारामने भी महाराष्ट्रदेशमें भी वैसा ही गौरवका प्राप्त किया है । ये भक्तमहापुरुष अपने जन्मभूमिमें देवांग या देवानुष्ठितके ममान प्रतिष्ठाभाजन हुए हैं । इनके समस्त पद प्रभङ्ग नामसे परिचित हैं । ये सब प्रभङ्ग महाराष्ट्र जातिके हृदयके रत्नस्वरूप हैं । भिन्नकसे लेकर राजघक्रवर्ती सम्राट तक इनके प्रभङ्गको आदरमें गाते और सुनते हैं । बहुतसे धर्म मन्दिर में यह देवोमाहात्म्य या गीताको नाई आदरमें पढ़ा जाता है ।

महाराष्ट्रको राजधानी पूनामें आठ कोम पश्चिमोत्तरमें इन्द्रायणी नामक एक छोटी नदी है । इसके किनारे देहु नामका एक ग्राम अवस्थित है । इस ग्राममें "भोरि" उपाधिधारी शूद्र जातिका एक महाराष्ट्र-परिवार वास करता था । वाणिज्य हो उनका प्रधान व्यवसाय था । यह वंश अत्यन्त धर्म परायण था । तुकारामके पूर्वपुरुष भक्ति और वैराग्यमें उस समय सबसे अग्र थे । तुकारामके ऊर्ध्व ममम पुरुषका नाम विजयभर था । ये वाणिज्य-व्यवसायो से किन्तु माधाराण बणिकको नाई अन्यायाचारो न थे । जब कभी अतिथि और सन्ध्यासे मुलाकात हो जाती, तो ये बहुत यत्नसे उनकी सेवा करते थे और रातको भक्तहृद्योंके माथ मिला कर यद्युत आनन्दसे सङ्गीतन करते थे ।

पष्टरपुरके विठावादेवको पूजा करना इन लोगोंकी कोलिक रीति थी । उसीके अनुसार प्रत्येक एकादशीकी वे पष्टरपुर जाकर विठोवा देवकी पूजा करते थे । किन्तु एक दिन उन्होंने स्वप्नमें देखा कि विठोवा देव स्वर्ग उपस्थित होकर उनसे कह रहे हैं कि "वत्स ! मैं तुम्हारी भक्तिसे बहुत प्रसन्न हुआ हूँ, अब तुम्हें पष्टरपुर जानेकी कोई आवश्यकता नहीं । तुम अपने ग्राम देहुतमें ही

मुझे यादी है।" १९३६ बाद विष्णुधरने जैसी मूर्ति स्वयंमें देवो को जोड़ बैसो जो एक त्रिकोणाको मूर्ति पान्थ खानमें देवो। देवुके पास जो इन्द्राकोके तीर पर लकीने मन्दिर बनवा कर लकीने उन मूर्तिको स्थापना को पौर पाप स्वयं जो उनको पूजाक नामें निगुण जो गये। ये बहुत जो कर्मपापयक से इकोने लकीने तुकाराम जैने न यथे मोरव चक्रादिनामे पुत्रको प्राप्त किया था।

तुकारामका जन्म १६०० ई०में हुआ था। इनके पिताका नाम बोजाबा पौर माताका नाम बनकाण्डा। बोजाबा मनुगुणमें विभूषित थे पौर बनकाण्डा पञ्चल पतिपरायण थे। इनके प्रथम पुत्रका नाम शालाका था। तुकाराम पिताके हितोपयुक्त थे। बनकाण्डा जब यह बतौ दुई, तब न मांके प्रति उनका पञ्चल विराग उत्पन्न हुआ था पौर वे सर्वदा निश्चल ज्ञानमें बैठ कर चरिनाम जप करते थे। वे पशुमेंने जो खानतो जो कि उनका पुत्र (तुकाराम) एक मत्स्यरोगमें जोगा। तुकारामके बाद भी बनकाण्डके एक पुत्र पौर एक बन्धा उत्पन्न हुई थी। तुकारामके पिता इतर जैसे पुत्रजन्यानि सम्पन्न थे, जैसे जो उनसे जनसम्पदको भी जमी न थे। जबका लक्ष्मण होनेने ही मायः सभो मयशान्का नाम भूय जाया करते हैं किन्तु बोजाबा पौर बनकाण्ड ये दोनो लक्ष्मण प्रकृतिक मनुज नहीं थे। सांसारिक सब प्रकारके सुखको प्राप्ति करने पर मो से मयशान्की जथा न भूमते थे। यथावयव पुत्रजन्याका विवाह हुआ किन्तु बन बन पुत्र प्रकृति रोजिपर भी लक्ष्मण पक्ष कारने हुआ तब न था। लक्ष्मण पुत्र शालाकोके जप शाला होने पर जनके लक्ष्मण न मारका मार पञ्च कर लकीने निर्बिघ्न विदुषि मयशान्की पाराधनामें शोचन ज्ञानोत्त कामिका कहना किया पौर तरुणवार लक्ष्मण पुत्र शालाकोको यज्ञकीका मार पक्ष करनेके लिये पशुरोक किया। किन्तु शालाको शान्कानने जो विरक्त थे। सुनते लकीने इस मारको सेना लोकार न किया। तब शोकापाने मन्थमपुत्र तुकारामने कहा। पिताको पापा गिरोबाह कर तुकारामने तिरह बर्षकी जबव्यामें यज्ञकीका पुत्र तर मार पञ्चने लक्ष्मण से किया।

तुकारामके दो विवाह हुए थे। उनको पहली लकी का नाम बजाबाई पौर दूसरीका पञ्चबाई था। पञ्चबाई साधारणतः जोशोबाई या शोबाई नामसे प्रसिद्ध थीं। पहली लकी खामरोगग्रस्त थी, इसीसे लकीने दूसरा विवाह किया था। इनकी दोनो लियोंने जोशोके लक्ष्मण जो यज्ञकीका मार था। तुकारामने यद्यपि लकीको पचव्या में न मारका गुहतर मार पक्ष किया था तो मो से इस गुहतर(मारको बहन करनेमें पञ्चलकार्य न हुए थे, बल्कि पचव्या दक्षतासे पाप सांख्यिक कर्मकीका सम्पादन करने लगी।

शौचिक वाचिक्य व्यवसायमें उनको विविध प्रतिष्ठा हुई एक लोके जो दिनमें लकीने बहुतसे पनाथ्य बलि लोके विनासमात्रन लोकर यथेष्ट पक्ष लयार्जन किया। तुकारामके शोभाण-लक्ष्मण सब विपरीत जो दिहाई देने लगी। मनुष्यको पचव्या जब दिन एकमो नहीं रहती। प्रायः लक्ष्मणके बाद पुत्र था कर पञ्च शान पश्चिमार कर लिया करता है। तुकारामको भी यह लक्ष्मणको पचव्या पश्चि दिग्ग तक न रहो। मयह बर्षको पचव्यामें लक्ष्मण पञ्च पिताका पौर फिर माताका विधोय-पु ल मङ्गला पड़ा।

तुकाराम माता-पिताके विधोयमें विनम्र पुत्र पौर लकीने लकीने मार कर्मके ममत्त मनको पञ्चनीत कर तुकारामके विरक्तको निर्मलता सम्पादन किया। मयशान्कि पौर वैशाख तुकारामने पुत्रपानुक्रममें बत मान था। किन्तु मयद माता पिताके लोच, विर यानुक्ति पौर न मारके मामें एकत्र हो कर इनके दिन लक्ष्मण शान्किक लकीने मारनेमें पचव्य प्रदान नहीं किया। दुःख जिसे कहते हैं, तुकारामने रने एक दिन भी पनुमन नहीं किया। इनके दिन न मार लकीने निकट लक्ष्मण, पौर किन्तु माता पिताको मङ्ग से उनका प्राण लक्ष्मण लीन हो गया। मंशर पक्षिक है, दुःख पचव्या लकीने है यह से पचव्य तरह जान गये। तुकारामने तिरह बर्षके जो प मारका मार पक्ष किया था। लकी किन्तु जहनक माता पिता लोहित रहे, तब तक जब मार इनका गुहतर नहीं मान्य होता था। परन्तु जब यह मार लकीने लिये



अत्यन्त कष्टदायक मान्म पहने लंगा। भवितव्य अनतिक्रमणीय है, यह सोचकर वे सार्वारिक कार्य के करनेमें यत्नवान् हुए। दुःखके घाट दुःख आता है, इस समय एक दूसरो दुर्घटनासे उन्हें और विपद्में डाल दिया। इस समय इनके बड़े भाईकी स्त्रोका अकाल ही प्राणान्त हुआ। शान्तजी एक तो सब विषयोंमें उदासो न थे हो, दूसरे माना पिताको मृत्यु से उनकी उदासो नता और ज्यादा बढ़ गई। अब स्त्रीके मर जाने पर अपनेकी सारके सब वस्त्रनसे सुक्त ममभक्त कर उन्होंने तोर्थ-पर्यटन और धर्म-चर्चाके लिये घर छोड़ दिया।

इस समय तुकारामको उच्च अठारह वषको थी। तुकाराम जिम कार्यके लिये इस पृथिवी पर प्राये हुए थे, क्रमशः उनका वह पथ उन्मुक्त होने लगा।

भ्रातृजायाको मृत्यु, और ज्येष्ठ भ्राताके मृत्युवागसे भगवद्भक्ति तुकारामके हृदयमें लागरित हो गई और वे क्रमशः भगवद् प्रेममें निमग्न होने लगे तथा सारके प्रति क्रमशः उनको उदासीनता भलकने लगे। व्यवसायके प्रति ध्यान नहीं रहनेसे वाणिज्यमें उन्हें बहुत घाटा लगा। तुकारामका धन क्रमशः नाश होने लगा। व्यवसाय-वाणिज्य चलानेमें आदान प्रदान विशेष आवश्यक है; किन्तु, इसे प्राप्त होत देख व्यवसायिगण तुकारामके साथ आदान-प्रदान बंद करने लगे, परन्तु तुकाराम जिनसे रूपये पाते थे, वे इन्हें व्यवसायमें उदास देख कर ऋण-परिग्रहमें विलम्ब करने लगे। सुतरां दिनों-दिन तुकारामको अवनति होने लगी। सार्वारिक व्यय जैसाका तैसा बना रहा, आयका पथ क्रमशः घटने लगा। तुकाराम अत्यन्त विपद्में पड़ गये। पूर्वको भवस्याको पलटानेकी इन्होंने सैकड़ों यत्न किये, लेकिन वे मफलता प्राप्त न कर सके। उनका हृदय जिस भगवद्भक्तिसे पूर्ण था, वह क्रमशः बढने लगा। इस समय तुकारामने पहलैको नाई महानजी व्यवसायमें उन्नतिको सम्भावना न देख कर एक साधारण टाल-चाधनकी दूकान खोलो। इस समय तुकाराम जहां बैठते थे, वहीं हरि-कीर्तन करते थे।

ग्राहकके जाने पर वे सोचते थे कि उन्हें द्रव्य कम देनेसे अधम होगी, यह सोच कर ग्राहकको इच्छाके अनु-

मार द्रव्यादि देते थे। इस व्यवसायमें लाभको बात तो दूर रहे, अमलमें भी बहुत घाटा हुआ। जब इन्होंने देखा कि दूकानदारोमें कोई लाभ नहीं; तो वे एक नवीन व्यवसायमें प्रवृत्त हुए। किन्तु उसमें भी उन्हें सुविधा न हुई। इस समय चारों ओरसे इनको निन्दा होने लगी। एक तो सार्वारिक कष्ट और दूसरे चारों ओरसे आक्षोय स्वजनोंके कटुवचनको वीछार; वे अधीर हो उठे। कोई कहता कि तुकाराम अत्यन्त निर्बल है, कोई कहता कि तुकाराम अकर्मण्य और व्यवसाय-कार्यमें नितान्त मूर्ख है। इन्हीं कारणोंसे तुकारामका मन अत्यन्त चञ्चल हो उठा। अनेक चेष्टा करने पर भी वे अपने मनको सारके प्रति आलस्य कर न सके। उनका हृदय जिस भावमें पूर्ण हो गया था, उसके वेगको दमन करना असाध्य था। तुकाराम काम-मात्र तो करते थे; किन्तु उनका अन्तःकरण सर्वदा हरिभक्तिमें रहा करता था। धीरे धीरे तुकारामका समस्त मूलधन जाता रहा। इस समय उनके अत्यन्त सार्वारिक कष्ट उपस्थित हुआ।

तुकाराम इस कष्टको निवारण करनेके लिए फिर भी व्यवसाय कार्यमें प्रवृत्त हुए। किन्तु अब उनके पास मूलधन कुछ भी न बचा था। तब वे भार ढोनेवाली बैलको पोठ पर धान लाद कर गांव गांव बेचने लगे। रात-दिनके परिश्रमसे, आहार-निद्रा समय पर न होनेसे, शोथ-शोथसे क्रिसीसे, भी वे विचलित न हुए, किन्तु इस कार्यमें भी उन्हें लाभ न हुआ। उनका दुःख जितना हो अधिक बढने लगा, उतना ही वे बिठोवाके चरणमें आत्म-समर्पण करने लगे। इस समय तुकारामका भलद्वार इत्यादि जो कुछ था, वह धीरे धीरे निशेष होने लगा। तब प्रतिवासो वणिक् आ कर उनका कागज पत्र देखने लगे। बाद उन्होंने अनुमान किया कि तुकारामको रक्षाको अब कोई उपाय नहीं है, तुकाराम दिवालिया हो गये। व्यवसायोके लिए दिवासा निकलने और निन्दा फैलनेसे बड़ कर और कोई कष्ट नहीं। यह सब्बाद सब जगह बिजलोकी तरह फैल गया। सब महाजनोंने आ कर उनका दरवाजा घेर लिया। इसी समय तुकाराम पर बड़ी भारी विपत्ति थी, वे बिलकुल हतबुद्धि हो गये। तब उनके आक्षोयस्वजनोंमेंसे किसोने अर्थसे सहायता

द्विहर पौर किरीने प्रमाण दे कर तुकारामची हम  
बिपत्तिचे रत्ना हो। तुकारामचे मनुबाह्यवाची विना  
धारणा हो जि बिरोधाको भक्ति हो उनको पचननिष्ठा  
कारण है। एव दिन करे मनुपनि तुकारामचे कह -

“तुम बिरोधाको भक्ति होइ कर मांसारिह जावैसं नग  
जापो, एव संसारमें बिरोधाको भक्ति करेते सिमने उन्नति  
प्राप्त होई ?” एव तरह तुकाराम चारों पोरने निरस्त  
होने लगे। चरमें पचनायाको मो भनी धारणा हो, मे  
मो मर्दा कहतो हीं जि बिरोधा-प्रतिमे हो हम लोगां  
को पचननि हई है। चरमें एतो बाहरमें मनुबाह्य  
ममो उनको उचर करेने मने। एकर एदह्योका दाबन  
कह पा उचर नग मोगाहा भ्रष्ट। तुकाराम ममोको  
धाति कह मने हो। हो बिरोधाचे प्रेममें निमग्न रहते,  
इमोने मांसारिह दुःख चके उतना कहहर नहीं  
मानस वृत्ता वा। भोगाको ताकनामि, एकोको मर्दा नामि  
उनका मगनद्वयम पोर मो पथिह बढ़ता जाता वा।

बकिरीके निर व्यवायह विना कोबिका-निर्वाह  
का कोई दूमा उगाय नहीं है। सुनरां तुकारामने इस  
कार धनिम उद्यमका जोड़ा उठाया। उनमें पाम को  
कृष्ण पू जो बचो नी उमोने उन्मि नाममिर्ण एरोहो  
पोर उने वैचनेके लिए कोहनदेय मने। यद्यपि हे  
नने इयको मे कर मिय देमने गय से तोमी उनके स्वयं  
मायको रीति पूववत् हो। मूलन व्यवायोको दिव  
कर भु उके मु क पावक पाने लगे पोर मूल्य दे कर  
इच्छानुसार मोटा परोदने लगे। बढ़नेने उधार मो  
निपा। एव तरह पोकु को निमोमें कामकी धान तो  
दूर रही, मूलचन मो मायव हो गया। मिर्ण वैचन  
को उने पाम बचा, उने मेकर एन्गेको लोटे। बिन्तु  
देबको एकी बिद्वन्ना दई जि राक्षमें पाते ममय के  
एव उगई उमभनेमें कंठ मने। यह उग उने बहुतने  
कविम सुवर्णनहार टे कर एवको मव पू जो मे मो हो  
प्यारह हो गया। तुकाराम पर था कर एव दुर्बिमाने  
नरान पाकोय स्वयमोके मिच्छत बड़े आम्हिन हुए।

एकर कर एदहकोड कहने भी पचना पूरा रग  
निपाया; एतको कोने निपा जि ममो मर्दावाला हो  
मने, उनके लपर मोमहा विद्याम ज्ञान रहइ एव

जिनोमे कर्ष मिपना दुर्लभ है। चरनार महतिपव  
एवम्को लकुरो हो, उमके लपर बहुतो वा विद्याम  
वा। उमने २००० व कर्ष मे कर ममोको दिवे पोर  
बहुत समझा हुआ कर व्यवसाय करनके लिये कहा।  
तुकाराम स्वयं मेकर व्यवसायके लिए भागापाट नामक  
जगमें गये। इस बार एरोट वैचकर उने एव-ए १००० म  
नाम हुआ। एर लोटेने ममय तुकारामने देखा कि रात्रा  
मुचमव एव झाड़वको लय न हुआ लकनेने कारन  
शुध कर मे जा रई है, उमको एतो मो रोगो दई उमके  
पेडी जा रहा है। झाड़वने व्यन परिपीचके लिये २०  
वर्ष तक जगामत भोज मांगो किन्तु वह कुछ भवक न  
कर मका। झाड़वको एमो दुर्दमा टैल कर तुकारामका  
हृदय एयवे विचन गया। उन्मि पचना व्यवसायने प्राप्त  
मव प्रथम झाड़वको देकर उने उमो ममय शयन-मुत्र  
द्विया गया झाड़वने पौरकार पोर दानको टपिचामि  
दग मपनिका भोजन कराया। इस बार तुकारामकी  
बचा-पुचा मव पू जो ममम हो गई।

तुकारामने एर पामने पकने हो एव म बाट चारा  
पोर कन गया पोर नव उने पायन ममभने लगे।  
चरनार रिद्रताको पोकुमे कठारव्यमाका हो गई हो।  
मामोके एव व्यवहारने उमने पन्थिमूर्ति धारणको।  
एव तुकारामका चरमें रहना मो कर्मिण हो गया। इमो  
ममय दाबन दुर्मिच मो उपलित हुआ। स्वयंमें टो बिर  
वात बिचने लगा। इस दुर्मिचमें तुकारामका परिवार  
ममें पचके पचनाके दाबन कोम भोगने लगा। यह  
तुकाराम पकोसिचामे सहायता मानने जामे, तो दे चने,  
पचप्राक माय मगा टैवे हो कीरे कीरे तो उने मव  
कह कर बिकृति हो जि “यव तुकारा विद्वन देवता कहा  
गया ? विद्वन्-प्रतिष्ठा परिचाम देव पुके न।” एम  
कचनाने तुकाराम बहुत ही मर्माहल होने हो। किन्तु  
इम ममय दुर्मिचका प्रकोय बढ़ता हो जाता था, तुका  
रामकी बहो एतो तो एनेमें हो काबरीमने पोकित  
हो। पनाहार पोर उने एमि इम ममय उमने इम भीकर  
परिचाम दिया। उमको म्यपुने ममी तुकारामको विद्व  
मने लग। उमके कृष्ण निर बाद तुकारामके बड़े पुव  
इ.श्रीकाशो मो प्राणजन्त हुआ। तुकाराम मभीमो पर

प्रत्यन्त स्नेह करती थी। पुत्रकी अकालमृत्युसे तुकारामके हृदय पर गहरी चोट पड़ चुकी।

तुकारामका ज्ञान अब तक पूर्ण विकसित न हुआ था; किन्तु इस तरह बार बार विपत्तियोंके सहते रहनेसे वे अच्छो तरह समझ गये, कि इस संसाररूप क्रमचक्रमें कहीं भी सुखका स्थान नहीं है। सांसारिक-सुख अलौकिक और भ्रान्तिभाव है। पहली स्त्री और पुत्रको मृत्युसे तुकारामका संसार मोड़ देने दिनों तक अन्तर्ग्रस्त था। तुकारामने सोचा, कि सांसारिक सुखको प्राप्तिसे कितने ही चेटाये हैं; किन्तु कुछ फल न हुआ, वरन् दुःख ही बढ़ता गया। संसारका दुःख पवत-प्रमाण और सुख भ्रान्तिभाव है। ऐसा विचार कर तुकाराम संसार-बन्धनको छिन्न कर देहृतके निकटवर्ती भास्वनाय नामक पवत पर जा भगवदारोपनामें लौन हो गये। इस पवत पर पहुँच कर उन्होंने शान्ति-लाभके लिये समाह्वय्यापी भविष्यात् आराधना और चिन्तनके वाद शान्ति-लाभ की।

तुकाराम जब भास्वनाय चले गये, तब उनके आत्मीय-स्वजन चारों ओर उनको पर्यटन कर उभरी स्थान पर आ पहुँचे। बार बार अनुरोध करने पर तुकाराम पर्वतसे उतर कर इन्द्रायणीके किनारे आये। सात दिनों तक उन्होंने कुछ खाया-पोया न था। भोजन करनेके वाद उन्होंने रोते हुए अपने भाईसे सांसारिक अवस्था कही। ब्रह्मसायमें तुकारामको समझ सम्पत्ति नष्ट हो जाने पर भी उनके पिताने लोगोंको जो ऋण दिया था, वह उन्होंने पूर्णतया वसूल न किया था। भाईने रोते हुए इनसे कागजात मांगी। तुकारामने कागजात ला कर छोटे भाईसे कहा—'भाई अब हृया आशा क्यों करते हो आज इन कागजातोंको इन्द्रायणीके जलमें फेंक दो।' इस पर भाईने कहा—'आप संसारत्वागो हैं; आपसे यह काम ही नकता है; किन्तु मुझे जब इस परिवार-वर्गका प्रतिपालन करना हो है तब मुझसे यह काम होना असम्भव है।' तुकारामने छोटे-भाईको इस बातको सुन कर उसका अर्थात् उन्हें दे दिया और अर्हायकी इन्द्रायणीके जलमें फेंकते हुए कहा—'आजसे तुम निश्चिन्त हो जाओ, भिचासे ही मैं जीवन निर्वाह करूँगा।'

तुकारामको इस अवस्थामें देख लोग तरह तरहकी बातें कहाने लगे। कोई कहता था कि ब्रह्मसायमें अतिप्रसन्न हो कर तुकारामका मन्त्रिक विहृत हो गया है, कोई कहता था कि तुकारामने जोविकाके लिये यह साधु-भाव धारण किया है; इत्यादि किन्तु तुकारामके लिए निन्दा और स्तुति एक ही समान थी। वे इच्छानुसार नाना स्थानोंमें घूम-घूम कर धर्मचिन्तामें समय व्यतीत करते थे।

तुकारामके पूर्वपुरुष विग्वम्भरने देहृतमें विठोवाके लिये जो मन्दिर निर्माण किया था, वह संस्कारके अभावसे भग्नप्रायः हो गया था। तुकारामने मन्दिर संस्कार कराना चाहा; किन्तु इतना धन उनके पास नहीं जिससे उनका अभीष्ट मिद हो; परन्तु साधु-उद्देश्यसे निरस्त होना इस भगवद्भक्तके लिये सुकठिन थे। तुकारामने अपने हाथमें मन्दिर-संस्कारका संकल्प किया एवं स्वयं मष्टी खोद कर मन्दिरनिर्माणका कार्य आरम्भ किया। षट्दिच्छा-प्रणोदित-कार्य कभी अम-पूर्ण नहीं रहता। क्रमशः प्रतिवादी इस कार्यमें सहायता देने लगे। तुकारामने आदिसे अन्त तक साधारण ग्राम जीवियोंकी तरह मन्दिर निर्माणके कार्यमें परिश्रम किया तथा सर्व साधारणकी सहायतासे मन्दिरको प्रतिष्ठा कर दो। अब तो तुकाराम नव-प्रनुरागसे विठोवाकी पूजा करने लगे और रामकोत्तर्नमें नियुक्त हुए। अन्यान्य भक्तगण अभिनव पदावली रचना कर विठोवाके चरणमें उपहार प्रदान करते थे; किन्तु तुकारामके इस तरहकी पदावली रचकर भेंट देनेकी यद्यत् इच्छा करने पर भी भक्ति-ग्रन्थोंमें अभिज्ञता न होनेसे उनको वासनाकी पूर्ण न होती थी। इसलिये वे पूर्वतन साधु भक्तोंको ग्रन्थावलीका मनोयोगके साथ पाठ करने लगे। महाराष्ट्र देशीय प्राचीन भक्त-कवि नामदेवकी अभङ्ग, कवीरकी पदावली ज्ञानेश्वररहस्य गीताश्याख्या, अमृतानुभव नामक मध्याह्न-ग्रन्थ, योगवाशिष्ठ और योगज्ञागवत प्रभृति भक्ति-ग्रन्थोंका अनुशीलन करनेसे उनका हृदय और भी भक्तिसे परिपूर्ण हो गया। इनकी स्मृति-शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण थी, इससे थोड़े ही समयमें वे उक्त ग्रन्थोंके तत्त्वावधारणमें समर्थ हुए। उस समय वे ध्यान, धारणा,

निर्मिष्यामव प्रभृतिं धर्म्यं होमैः तव । इव तैश्च  
तुकारामका धर्मजोवन म मडित होने लगा ।

तुकाराम दिवत मोठ प नेके बाट हो मातु पीर घञ्जनी  
को संभामि नियुक्त हुए । दिन स्थान पर हरिकहोतंनके  
जिये १० मनुष्य पञ्ज होतें, इन स्थानको से पर्वत  
धायसे परिष्कार कर दिया करते थे, जिससे कि भक्तीसे  
परचमि कठिन कहड़ोका पाषाण नमनी। जब इन कोई  
हरि कथा श्रवणाद हरमें प्रवेश करते, तब से इनके  
जुनोको रचा करते थे। दूनरेका उपकार पीर  
मातुपुको सेबाके पतिरिख उनके जोवनका पीर दूनरा  
कोई कल्प हो न था। तुकारामको ऐसो पचसा देख  
बहुतमे मोग उनमे ध्यसे परिग्रम करतां थे। यह  
प्यइवार तुकारामको एो मजन न कर सकतीं हो, इन  
कारण कह मर्भानि कह कह करतां हो। तुकारामके  
कीवनो नेपकोनि तुकारामको फोडा बर्षे न करते समय  
उके सुनका प्रभृति कह कर दूवित दिया है किन्तु  
पयानोपना करके देया ज य तो उके प्रकृत-पतिपरा-  
यबाके सिवा पीर कुछ नहीं कह सकतें। पचसाईं इन  
बादकी कथा कीं। जब उनका विवाह हुआ था, तब  
तुकारामको पचसा पच्छी हो। बादमें पइठ दोपरी  
कामय हरिदुताके कारण कह मर्भदा पचको चित्तानि  
खन रहतो थीं। तुकारामने विठोबाकी भक्तिमें पयना  
मर्भय्य हो दिया है, यह कारण उनके हृदयमें बैठ गई  
थी। इसी कारण पचसाईं तुकारामको कमी कमी  
तिरस्कार करते हो, किन्तु उनमें एक प्रधान गुण यह  
था कि वह जामोको बिना चित्तये पाप कमी न लातीं  
थी। इसलिये तकाराम जब कमी चरके पइठ  
हो जाते थे, तब पचसाईं मदीतोर प्राकार, परंत, गुडा  
पयवा ज्ञमि हो बहभे कह उके मोज लातीं पीर  
भोजन करानी थीं उके चित्तये बिना कह किसे  
काममें न लगती थीं। जब तुकाराम मरुवनयाद वर्षत  
पर रहते थे, तब बहामि पचसाईं पाहायंद्रय लेका  
पहु चतो थीं। एक दिन इसी पचसाईं कडो रूप पीर  
पय यधने काल होकर कह मूर्च्छित हो पडो कीं।  
तुकाराम चपने फोके इन क्रेमको देख कर बहभे  
देहत चने मय पीर करी रहने लगी थी।

तुकारामने नामदेव शक्ति पमजुसे पयने धर्म जोवन  
के विकासमें विधेय महायता पायो हो। इस समय  
एक दिन उनोंने स्वप्नमें देखा, कि विठोबा दिव उपस्थित  
हो कर उनके कह रहे हैं—“तुकाराम। मेरे भक्त नाम  
देवने जितने पमजु रहनेको इच्छा को को उतने पूरे न  
रूप रहलिये तुम उके समाज कर जोबीका कल्याण  
करो। मैं तुमको नमोम प्राण प्रदान करता हूँ।” इतना  
कह कर विठोबा पमार्दान हो गये।

तुकारामने पइसे भावकतके दयम छत्रयमें वर्चित  
शोकायकी वाप्यनोकाका ८०० सो घोषामें पर्वन कर  
एक पय बनाया पीर मदीर्त्तनके समय उनके मुखसे  
भावमयो कविताय पनर्गन निःसृत होने लगे। धर्म  
विदेही मोग तुकारामको उम उपदेश-मूर्च्छं पहावमोको  
सुन कर भाव-विरम्यत हो जाते थे। इनके महात नमें  
ऐसो एक मोहिनो यति हो कि जो इसे एक बार सुन  
निता कह कने कमी न मूलता था। प्रायत कह जमके  
हृदयमें इद्रूपमे अहित हो जाता था।

पचमे जो तुकारामको पागल समझ कर हुआ करते  
थे, पमी से उनका भाव देख कर विस्मित होने लगे।  
जसम तुकारामका मीरव पौ प्रतिष्ठा बड़ने लगी। मबकी  
पूरा विम्वश हो गया कि तुकाराम यचार्यमें एक प्रकृत  
मातु हैं। तुकारामने पइसे शिर बिदा था कि निश्चन  
खान हो तपस्याके लिये तपसुक्त है, किन्तु पमी उनके  
मनका भाव बटन गया। संसारमें रह कर से नामा प्रकी-  
रने श्रीवका कल्याण साधन कर मरने। यह मोज कर  
संनारके प्रति उनका विराग बटने लगा। वे पुनः संनारमें  
प्रवेश हुए पीर पनामक भावसे संसारमें रह कर नाम-  
कोर्त्तन करने लगे। उनके इस कोर्त्तनको सुननेके लिये  
दूर दूर देसोंमें पने क लोग पाने लगे। इन समय दनके  
दुन तुकारामके सिष्य होने लगे। तुकाराम जने पनु  
पय पीर उमाहने कोर्त्तन करते थे। तकारामके  
सिष्योंने वि गडाहरपय नामक एक ब्राह्मण पीर मन्नाको  
नामक एक तैलक से हो हो मनुष्य प्रधान थे। तका  
रामके पीछे पीछे कोर्त्तनके समय से करतान पीर पीचा  
ने कर धूमने चितते थे। महाहरपयके जय तकाराम-  
की कविता लिपिकका भार था। इह समय अयत

धार्मिकगण तुकारामके ऊपर श्रद्धाचार करने लगे। मन्वाजी वाचा गुसाईं नामक एक ब्राह्मणने इनके प्रति पहली श्रद्धाचार आरम्भ किया। मन्वाजी इस ग्राममें एक मठ बनाकर यहाँका महन्त हो गये थे, पहले इनकी मठ कीई भक्ति करते थे। अब तुकारामके प्रति मठोका अनुसाराग देख कर वे उन्हे स्थानान्तरित करनेके लिये विशेष चेष्टा करने लगे। तुकारामको एक भूमिमें एक दिन मन्दिरको तोड़ फोड़ दिया। इस पर गुसाईंने उन्हे गाली दी। एक दिन सन्ध्या समय एकादशीकी विठोवाका दर्शन करनेके लिये इस मन्दिरमें अर्चनमें लोग एकत्रित हुए थे चारों ओर काटिके रहनेके कारण दर्शकोंकी श्रद्धा कट हीता था इसलिये तुकारामने श्रद्धासे हाथसे काटिकी उखाड़ कर स्थान परिवर्तन किया था। मन्वाजी गुसाईं तुकारामको कांटा उठाते देख क्रोधित हो उठे और उन्ही कांटेमें तुकारामको नारने लगे। एकते वाट एक करके १०१५ कांटी कड़ी तुकारामको पीठ पर टूट गईं, वाट इमके मन्वाजी क्रान्त हो कर बैठ गये। गुसाईं प्रभु इस तरहसे तुकारामको प्रहार कर मन्दिरमें प्रत्यावृत्त हुए। तुकारामने बिना शब्द किये इस कष्ट को सहन कर लिया। तुकारामको ऐसी अवस्था देख मठके नवने आसू भर आये। तुकारामने इस प्रकारको उपलक्ष करके कई एक श्रद्धालुकी रचना की।

तुकाराम किन तरहके श्रद्धाधारण पुरुष थे, उन्का वर्णन करना शक्य है। वे इस प्रकारने दर्शित हो कर घरको लौटे, उनको स्त्री अन्नलाई उनको श्रद्धा वेदनाको दूर करनेके लिये सेवा शून्यतामें लग गईं। तुकारामके सुख होने पर एकादशीके हरिनागरणके लिये समस्त आयोजन हुआ, कीर्तन सुननेके लिये भुण्डके भुण्ड मनुष्य आने लगे, किन्तु मन्वाजी गुसाईं नहीं आये। इस पर तुकारामने उनको बुनानिके लिये किसी एकको भेजा। शरीर असुख कह कर गुसाईंजोने उस आदमीको लौटा दिया। तब तुकारामने स्वयं जा दण्डवत् कर कहा, "अपने हाथसे बहुत क्लेशक कड़ी प्रहार करनेमें प्रभु यत्न गये होंगे, इसमें मेरा हो दोष है। अभी मुझे क्षमा कर कीर्तनमें योगदान करनेको

कृपा करें।" मन्वाजी तुकारामके इस व्यवहारमें एकदम स्तब्धित हो गये, उन्ही दिनमें उनका विद्वेष भाव जाता रहा और तुकारामके प्रति श्रान्तिक प्रेम उत्पन्न हो आया।

दोचा नहीं होनेमें ज्ञान सम्पूर्ण नहीं होता, इसमें एक दिन विठोवाने स्वयंमें ब्राह्मणका रूप धारण कर तुकारामको 'राम, कृष्ण, हरि' इस मन्त्रमें दोषित किया। स्वप्रदष्ट महापुरुषके अन्तर्धानमें तुकाराम अत्यन्त व्याकुल हो गये। उन्हे कुछ भी गान्ति न मिली। अन्तमें उन्हीं सोचा कि पुनः संसारमें प्रवेग हो गान्ति नहीं पानेका कारण है। यह सोच कर फिर कुछ दिनके लिये उन्हीं संसार परित्याग किया। उस ग्रामके निकट वल्लभर धन नामक एक श्रद्धालु जाकर वे रहने लगे और प्रति दिन प्रातःकाल इन्द्रायणी नदीमें स्नान कर विठोवाका दर्शन करनेके लिये प्रसन्न होते थे। एक दिन जब वे वहाँमें न लौटे तब उनको स्त्री अन्नलाई अत्यन्त व्याकुल हो उन्हे कोर्जन लगीं; अन्तमें इन्द्रायणी तीर पर उनमें भेंट हुई और बहुत कह सुन कर उन्हे घर लौटा लायो और बोली "आज दिनने मैं फिर कभी धर्मकार्यमें व्याघात न करूंगी।" किन्तु अन्नलाई इस प्रतिज्ञा को अनेक दिन तक धारण न कर सकीं, क्योंकि तुकारामके तीन कन्या और दो पुत्र थे। तीनों कन्याओंका नाम भागोरी, कागोरी और गद्दा तथा पुत्रका नाम महादेव और विठोवा था। एक तो पुत्र कन्याओंका प्रतिपालन, दूसरा प्रभूत श्रद्धा-समागम, इससे अन्नलाई बहुत व्यस्त रहती थीं। इसी कारण अनेक बार वह तुकारामको दो चार बातें कहा करती थीं। इसके सिवा प्रथमा कन्या विवाहके योग्य हो गई थी, जिसके लिये वह मर्दा वर ढूँढ़नेके लिये हठ वारती थी। एक दिन तुकाराम पावानुसन्धानको गये और स्वजातीय तोन बालकको देखकर उन्हे अपने घर लाया और एक ही दिन तीनों लड़कीका विवाह करा दिया गया।

तुकारामने इस वार अन्नलाईके हाथसे कुटकारा पाया। इनको स्वाति धीरे धीरे फूलने लगी। दूर दूर देखिके मनुष्य आकर उनका उपदेश ग्रहण करने लगे। तुकाराम शूद्र होकर ब्राह्मणको उपदेश देने थे,

शाहीशासनद्विजत होने पर भी शाहीका भर्मा भाषाएकी निश्चय प्रचार करते थे जो किमो किमोको पसन्दा भाषाम पढ़ने लगा। मन्त्राजीको भाई रामेश्वरमद नामक एक ब्राह्मण तुकारामके ऊपर शताचार करने लगे। रामेश्वर राजमात्य शाहीपर पछित कहकर परिचित थे। उन्होंने धामाधिकारोसे समझा कर कहा कि तुकाराम शुद्ध होकर श्रुतिवा मर्म प्रकाश करते हैं। जब धामाधिकारोको भाषाम हुआ कि तुकाराम सब कामको उत्पाटित कर नाम महिमा प्रचार और मजिद्वय स्थापनमें सिद्धा कर रहे हैं तब उन्होंने तबका रामको निर्वासनका आदेश प्रदान किया। तुकाराम विषम विपदमें पड़ गये। घरमें उन्होंने सोचा इस समय रामेश्वरका शरणापन होनेसे इस विपदसे उबार हो सकता है, यह सोचकर उन्होंने रामेश्वरको शरण ली। रामेश्वर अत्यन्त मर्बित थे, इनसे रणका विपरोत फल हुआ। रामेश्वरने कहा, 'तुमने जो समय धमइको रचना की है, उसमें श्रुतिवा धर्म प्रकाशित होता है इस कारण तुम उस धमइको इन्सायनोरे कहते होक जानो।

ब्राह्मणको भाषा अपरिचार्य समझकर तुकारामने अपने हृदयके धन उस धमइको इन्सायनोरे अर्पणमें दे कर दिया।

तुकाराम इस काम पर बहुत ही श्रद्धित हुए और एक बस परिधायन कर विठोबाके घरमें धनधरत ध्यान करने लगे। इन तरङ्गसे तेरह दिन व्यतीत हो गये। घरमें विठोबाने खबर दिया किने उस धमइको रचा ली है तुम उसे उबार करो। धामके लोगोंने उस कविताको उबार कर तुकारामको प्रशंसक किया। तुकारामने इस उपपद्धमें ७ धमइको रचना की। बाद रामेश्वर भी उनमें एक प्रथम शिको हो गये थे।

इस समय बाहुबल, ज्ञानबल और मजिद्वयके महा शक्तिसे धमइके गौरवमें गौरवान्वित हो गया था। बाहुबलके धनधारकाय धिवाको, तथा ज्ञानबलके धनधार रामदास आसो थे, इन्हें मजिद्वयके तुकाराम महाराष्ट्र देशमें शोषणानोय हो गये थे। तुकाराम, धिवा तथा रामदास आसो केवल एक समयमें

नहीं हुए थे बरन् एक दूसरेके साथ संनिष्ठ सम्बन्ध में थे। तुकारामके भाव गिवाकोका साक्षात् पौर सम्मेलन के दोनों उनमें शीघ्रनका एक एक विषय उल्लेख्य घटना है। गिवाको तुकारामको पूनामें लानेके लिये सम्मेलनपूर्वक ज्ञान, धाम और एक कारकुल भेजी किन्तु तुकाराम व्यक्तिको विपत्ते समान मानते थे। बहुजना कोर्ष पूना धमइमें पानेका उनको तनिक भी उच्छा न हुई। उन्होंने गिवाकोके लिये कई एक धमइ रचना कर कारकुलको विटा किया; किन्तु गिवाको; तुकारामका धमइ और शुभ सुनकर एक ठम मोहित हो उठे थे इतलिये वे फिर रचना मने। गिवाको राजपदको उच्छ समझ कर तुकारामको पर्वकट्टी पर मने। उन्होंने तुकारामको प्रभूत स्वर्णसुत्रा प्रदान की; परन्तु तुकारामने गिवाको-प्रदत्त प्रभूत स्वर्ण राशिभी पौर दृष्टि तक भी न छापी पौर गिवाकोमें कहा, — "महाराज! इति-सिद्धके निश्चय श्रुतिवा पौर स्वर्ण सुत्राके कुछ भी पार्श्वक नहीं है इसने केवल मोक्ष पौर धामा बढ़तो है। यह इत्य यथायम ही धमइकोनोय था। इधर राजधमवर्षी गिवाको ज्ञानाधिक श्रुतके उपायमान थे, उधर प्रभूत स्वर्णसुत्राका डेर लगा था। गिवाको उनको निश्चयता देख कर बिलकुल श्रद्धित हो गये पौर अपने राजपदको उच्छ समझ कर इस सन्धासोकी समताको ही धनिक मानने लगे। उन्होंने राजकार्यमें धमइकाकर तुकारामके कोर्षन पौर धम वर्षीमें जोधन व्यतीत करनेका इच्छा महका कर लिया बाह तुकारामने धम उपदेश्य देकर पूना-धमइमें भेज दिया। इस तरह तुकारामको प्रतिपत्ति पौर शिष्यसंख्या दिन दुनो पौर रात चौगुनो बढ़ने लगे; सब कोर्ष तुकारामको दिवाकतार पौर दिवानुपदकीत शुभय समझ कर धम ला करने लगे; इस समय तुकाराम धर्मदा कहा करते थे, 'ममो। पर सुमि वेत्तुष्ट ही पछिये।'

प्राणुको-शोकपूर्वकभरिं यहाँ पनेक प्रचारका क्लिप्त धामोद प्रमोद हुआ करता था, इस बार तुकारामने कोर्षके इस क्लिप्त धामोदको बन्द कर हरि कोर्षनको उच्छाहके साथ प्रचार किया। इस धर्ममें उन्होंने २४ धमइकी रचना की, जो "काय प्रकाशक",

अर्थात् "ब्रह्ममें देहसमर्पण" नामसे परिचित है। दूसरे दिन मधेरे उद्योगों को र्त्तन कर शिष्टों को अपने प्रकारके उपदेश देने हुए कहा 'मैं वैकुण्ठ जाऊंगा' बाद अपनी स्त्री अनन्दाईको भी यह संवाद भेजा कि 'तुम्हें वैकुण्ठ जाना होगा। आपो, हम दोनों' मिन कर एक साथ वैकुण्ठकी चले।' अनन्दाईने मोचा, कि प्रभु सायद कोई तीर्थ जा रहे हैं, यह सोच कर उद्योगको प्रकाश नहीं करके खबर दी कि 'एक तो मैं गभवती हूँ दूसरे इस संसारको फेंक कर क्यों कर जाऊँ ?' इस तरह तुकाराम सभसे विदा ले कर नाम-वोपणा करके हुए बाहर निकले। तुकारामने सत्य हो जो महा-प्रस्थान किया वह किसीको भी विश्वास न हुआ। १५०२ ई०को फाल्गुनी कृष्णा द्वितीया तिथिमें तुकारामने महाप्रस्थान किया। उस दिनसे तुकाराम फिर कभी नहीं देखे गये। तुकाराम अस्तधान हो गये हैं, यह संवाद चारों ओर विजलीको नाई फैल गया। सब कोई हाहाकार करने लगे। उनमें चरित्र-लेखकोंने ऐसा निर्देश किया है कि वे स्व-शरीरसे स्वर्गकी चले गये। तुकारामने जाते समय अपनी स्त्री अनन्दाईको कहा था कि तुम्हारे गर्भसे इस बार जो सन्तान उत्पन्न होगी उसका नाम नारायण रखना और यह-सन्तान विशेष भक्तिवान् होगी। तुकारामकी यह भविष्यवाणी सफल हुई थी। यथार्थमें नारायण विशेष हरिभक्तिपरायण निकले। कुछ दिनों बाद शिवाजी हरिभक्त शिष्टको देखने के लिए देहृत ग्राम आये थे और इन्हीं इस परिवारके भरण-पोषणके लिए कोई एक ग्राम जागोर दी थी। आज भी उनके वंशोद्योग उस जागोरका भोग कर रहे हैं।

तुकारामने जिन सब अभङ्गोंको रचना की थी वे सब प्रायः निम्नलिखित भावोंमें लिखे गये हैं—

१। सुख, दुःख, सम्पत्, विपद्, सब अवस्थामें भगवान्की भक्ति करनी चाहिये।

२। मीठा और शरीरमें आये हुए व्यक्तिकी अभयदान देना चाहिये।

३। ईश्वर-केवल-भक्ति-लभ्य है। बाह्यानुष्ठानसे वे प्राप्त नहीं किए जा सकते।

४। जोयके प्रति अनुकम्पा, चरित्रको निर्गमता, आर्त्ता समृति ये सब धर्मके लक्षण हैं। शरीरमें भय लगाना, यह भिन्न धर्मका निकट अंग है।

५। हिज, गूट, स्तो, पुरुष प्रभृति मधके सब भगवान्की कृपाके अधिकारी हैं।

६। भगवान्के साथ जीवोंका सम्बन्ध अत्यन्त निकट तथा अत्यन्त मधुर है। ये हम लोगमें दूर नहीं हैं। व्याकुल हृदयसे पुकारने पर हमें दर्शन देते हैं।

ये हो तुकारामके प्रचारित धर्मके मूलमन्त्र हैं, तथा इन्हींमें उद्योगने महाराष्ट्रदेशको आधानहृदयनिताको मोहित किया था।

तुकोजीराव होलकर—इन्दौरके एक अधिपति। मल-हाररावके पुत्र खण्डेरावके पितृके जीवन कालमें ही (१०५४ ई०) कुम्भके दुर्ग घेरनेके समय मारे गये थे। खण्डेरावका विवाह भारतप्रसिद्ध अहल्याबाईके हुआ था। उसके गर्भसे मल्लिकार्जुन नाम प्रसन्न किया। मल्लिकार्जुनके मरने पर मल्लिकार्जुन मिहामन पर अभिप्रेत हुआ। किन्तु उसने अधिक दिन राज्य नहीं किया। अभिप्रेतके ८ मास बाद ही वे काल्याणमें पतित हुए।

इस समय मल्लिकार्जुनके और कोई उत्तराधिकारी न थे। अहल्याबाईको एक कन्या थी सही किन्तु एक भिन्न श्रेणीके सामन्तके साथ उसका विवाह हुआ था, इस-लिए हिन्दूधर्ममाप्स्तानुमार वह उत्तराधिकारी न हो सकी। इसी समय अहल्याबाईने अपने श्रावमें राज्य-गामन टण्ड प्रसन्न किया। किन्तु सैन्यपरिचालना करना शिष्टोंके लिए संगत नहीं है, यह सोच कर उसने स्वजातीय तुकोजी होलकरको १०६० ई०में सेना-पतित्वमें नियुक्त किया। इन्दौरके इतिहासमें तुकोजी होलकरका अभिप्रेत इसी समयमें गिना जाता है।

मल्लिकार्जुन होलकरके साथ तुकोजीका कोई निकट सम्पर्क न था। वे मल्लिकार्जुनके अधीन काम करते थे। उनकी वीरता, प्रभु-भक्ति और साहससे समुत्पन्न हो कर मल्लिकार्जुनके उन्हें बहुत सी सेनाओंके नायकपद पर नियुक्त किया। बुद्धिमति अहल्याबाईने तुकोजीको दक्षता और विचक्षणतासे समुत्पन्न ही कर उन्हें राज्यका प्रधान बनाया। अहल्याबाईको अनुमतिके अनुसार

तुकोजी अपने उद्योगों के निर्देशनवत्पन सेनात जानेके लिए महाराष्ट्र-राजधानीको घोर घबराव हुए। पूनामें तुकोजीने सदेह सम्मान नाम किया।

उनके समयमें गङ्गाधरने प्रधान मन्त्रित्व प्राप्त किया। होनकर राज्यमें इनका भी यथेष्ट भादर था। पञ्चम्या बाईने सेनापतित्वके निम्ना शोध ही तुकोजीको 'होतकर' पञ्चमा रात्र सम्पन्न-सूचक तथापि प्रदान की। पञ्चम्या बाईने कोशकर्मसे वह नयाग प्रदान किया था, जिससे कि कोई भी उनके साथ सम्पत्तिय प्रकाश कर न सके। तुकोजीने निर्विबादमें २० वर्ष तक वह उच्च स्थान भोग किया था। इनके दिनोंमें पञ्चम्याबाईके सुखसे एक निम्नके लिए भी राज्यमें कोई विषय न हुआ।

पञ्चम्याबाईने जो उपकार किया था, उसे तुकोजी एक दिनके लिए भी विस्मृत न हुए। पञ्चम्याबाईके पवित्र उद्गार होने पर भी वे उन्हें 'मातृसम्बोधन' करते थे। किन्तु पञ्चम्याबाईके अधिमायसे उनके सुपुत्रों 'सन्धारण' होनकरके पुत्र तुकोजी अधिन हो।

तुकोजीने होनकर तथापि पञ्चम्याबाईके बाद बारह वर्ष तक मधेश्वर दक्षिण देशमें बास किया। इस समय सातपुरा मिरिमाणाका दक्षिणार्ध उनके अधोग तथा उत्तरार्ध पञ्चम्याबाईके शासनार्थक था। जब कि हिन्दुस्थान में वे, तब वे राजपूताने घोर दुन्दुलकचरके अन्तर्गत देशोंमें गए। पर वसुध करती है। वे सर्वदा पूर देशमें रह कर अपने इच्छानुसार कार्य करते थे सही, किन्तु पञ्चम्याबाईके निकट कार्यनिर्वाहके नियमित सेवा करते तथा उनके सम्बन्धानुसार कार्य करते थे।

महत्त्वक पञ्चम्याबाई जितने दिन सको थीं, उतने दिन राज्यद वा कर भी तुकोजी केवल प्रधान सेनापति और अपने निकटवर्ती स्थानके राज्य-पादायकारों केवल चारों को नहीं काम करते थे। ऐसे इतने घोर ऐसे उच्च प्रकृतिके मनुष्य होनकरराज्यमें काम नही देखे गये।

वे जैसे प्रसन्न थे वैसे ही निरप्रिय भी थे। पानोपकरी कर्माईके बाद तुनमान-राज्य भी च...कारके प्रतिगोचर होनेके लिए महाराष्ट्र-घोरीकी इच्छा पूरी हुई। उस-समय तुकोजी पूना का कर पेशवाके निकट रहते थे। पेशवाके पादशयके सम्बन्धवर्षिके अन्त में सुसप्त

मान समरमें लेने गये। इस समय नाजिब-उद्दौला एक प्रचान सुसप्तमान मदार थे। पञ्चमे महाराष्ट्रमें १७०० ई०में कर्मीके पवित्रत नाजिबव्याददुर्ग पर धातमक किया। नाजिब कोसे माय मसहारराज होतकरकी मित्रता हो। तुकोजी उसी सुखसे उनके साथ कथा वार्ता करते गते। किन्तु इस पर माओजी निश्चिन्ता शक्यत पीड़ कर बोले, 'हम लोग प्रतियोग लेनेके लिए पर रहें हैं न कि सन्धि स्थापन करनेके लिए। मैं अपने माई घोर मतीके के शोषितका प्रतियोग क्यों न नू ? तुकोजी सुसप्तमान समाराष्ट्रके माय श्यायमान स्थापन कर रहें हैं। पूनामें पेशवाको सम्वाद देना चाहिये। हम लोग उनके केवल पादेशवाही हैं उनके पादेशानुसार जो काम करेंगे।' किन्तु तुकोजीने निश्चिन्ताका प्रत्याग पाठ नहीं किया। जिनको कर्मीने एक बार बचन दे दिया है उनमें विवह जिनो प्रकारको कारंवाई करनेमें के सहमत न हुए। उन्होंने नाजिब-उद्दौलाके साथ पूर्व मित्रताकी रक्षा की। इनके महाराष्ट्रोंको अन्तिक सुविधा हुई। वे अष्ट घोर राजपूत राज्यमें बहुत बट्टमार घोर कर वसूल करने गते।

नाजिब उद्दौला तुकोजीका उदार प्रकृतिसे अत्यन्त धातुत हुए थे। वहां तक कि वे कल्पसे पक्षी अपने मित्रपुत्र अविता थांकी तुकोजीके हाथ समर्पण कर मये थे। वे जानते थे कि उनको मृत्युके बाद महाराष्ट्रों के अशान्तवस्तुके तकोजीके निम्ना दूसरा कोई भी उनके परिचारकर्ताके रक्षा नहीं कर सकती।

यथावत् उनके शव के बाद महाराष्ट्रोंमें हिन्दु स्थानका पवित्रार्थ अपने दक्षकर्म कर लिया। इस समय विन्धिया हिन्दुस्थानमें मगसे बड़ी पड़े थे। तुकोजी मधयोनीको उचितसे सन्तुष्ट थे सही, किन्तु उनके पत्नी मामलाको गई कार्य करनेमें प्रसुत नहीं थे। इसलिये वे सोठ कर मानवको बसे पाये।

कुछ दिनेके बाद पेशवा महाराजकी श्चु, तथा राजव वस्तुके पीडवाके कतिपय माई मारायपरायको श्चु, होने पर महाराष्ट्र सामन्तवक दक्षिणदेशमें पर पहुँचे। अन्धकारोंके विवह इस समय बार भार' नामक-महा-अङ्ग-अर्चारीके एक दृष्ट-अ गमित किया था। माओजी



मिन्धिया और तुकोजीने इस टनमें योग दिया था। इसीसे वृष्टिगणवर्मेण्टके साथ तुकोजीको युद्ध करना पडा था। नारायणरावकी मृत्युके बाद मधुराव नामक उन्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ। सर्दारोंने उसी मधुरावको पेशवाके पद पर नियुक्त किया, किन्तु प्रकृत-जमता बान्नाजो जनार्दनके हाथ रहो। इतिहासमें ये नानाफडनवोतके नामसे विख्यात है। गवर्नरके विरुद्ध जो सैन्यटल संगठित हुआ था, उसमें जनार्दनने यथेष्ट कार्य किया था। १७७३ ई०में कर्नाल आपठन ने मध्यस्थतासे दोनों दलमें सन्धि हो गई। किन्तु वह सन्धि कायम न रहो। अन्तमें सालवाड़े नामक स्थानमें दूमरी बार सन्धि स्थापन को गई इससे युद्ध कुछ जालके लिए शान्त रहा।

पूना गवर्मेण्टने निजामको सहायतासे टिपु सुलतानके विरुद्ध जो युद्ध किया था, उसमें तुकोजीने प्रधान कार्य को भार लिया था। दूमरे वर्ष उन्होंने महेस्वर पडुच कर अहल्यावाड़ेके साथ सुनाकात को और इसीसे सब गडबडो मिट गई।

प्रथम बाजोरावके औरस और एक सुमलमान-रमणोके गर्भसे अन्नी वडादुर नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वुन्दलखण्डके अधिकांगमें अन्नी वडादुरका अधिकार तथा समस्त भारतवर्षमें माधोजो मिन्धियाका अधिकार फैलानेके लिये महाराष्ट्राने यथेष्ट चेष्टा की, इस विषयमें योग देनेके लिये तुकोजो तैयार हुए, किन्तु तुकोजो, माधोजो मिन्धियाके प्रति सहायता करनेमें सहमत न हुए। इसी सूत्रसे लडाईं छिडो, किन्तु इसमें तुकोजीने कोई उपकार न पाया। अन्तमें हिन्दुस्थानके राज्यमें होलकर और मिन्धियाका बराबर बराबर अंश शोक्त हुआ। रणजो मिन्धिया और मलहारराव होलकरके टैन-लेनमें जो गडबडो हो वह इस समय मिट गई। अण परिशोधके लिये कई एक जिला तुकोजीको देने पडे, किन्तु माधोजोके प्रावत्यसे तुकोजीने कोई विशेष लाभ प्राप्त न किया। माधोजो इस समय पूनाके दरवारमें अपना प्रभुता स्थापन करनेके लिये जब उपस्थित हुए तब तुकोजी सर्दारोंके साथ विवादमें लिप्त हो-गये। १७८२ ई०में मिन्धियाके प्रतिनिधि लुकटाद-नाखिरो गिहड़ सडटमें तुकोजीके डि-बयन नामक

फरामोसो सेनापतिके पदातिक टनमें पराजित हुए। जब मिन्धियाको सेना भागने लगी, तब तुकोजीको सेनाश्रेणि इन्दौर तक उनका पोछा किया। किन्तु मानवके मध्य मिन्धियाको कोई चत न हुई। इस युद्धमें मिन्धिया और होलकरका कुछ भो साथ न था। दोनों दलके सर्दारोंको स्पर्श प्रकाश करना हो उद्देश्य था।

तुकोजो मानवमें कई एक मास रहे। इस समय बहुत दिनोंसे सङ्घटित निजामशहो खार्कि विरुद्ध युद्ध करनेके लिये पूनामें सर्दारगण एकत्र हो रहे थे, उन्होंने तुकोजीको बुलाया। १७८५ ई०में यह लडाईं छिडो। इस समय तुकोजीको उम्र ७० वर्षको थी। माधोजो मिन्धियाके मरने पर, ये सबसे प्राचीन सर्दार कह कर सम्मानित होते थे, किन्तु दोलतराव मिन्धियाको समत हो सबसे अधिक थी। निजामको पराजित करनेके लिये जितनी लडाईयां हुईं, उनमें होलकरने प्रकृत पक्षमें मिन्धियाको केवल परामशदानमें सहायता की, विशेष कार्यमें कुछ भी नहो। इस युद्धके समाप्त होनेके पहले ही तुकोजीको मृत्यु हुई। ये वीर पुरुष, समर-कुशल और कृतज्ञ थे। उन्नतिके पथ पर प्रयत्नर होते हुए मृत्युपर्यन्त अहल्यावाड़ेके निकट, जैसे वाध्य, वगी-भूत और कृतज्ञ थे उसके लिये सो मुखसे उनको प्रशंसा करनी चाहिये।

तुकड़ (डि० पु०) वह जो भट्टो कविता बनाता हो।

तुकल (फा० स्तो०) मोटोडोर पर उडाईं जानेको एक प्रकारकी बडी पतङ्ग।

तुका (फा० पु०) १ बिना गांसोका तोर। २ सुदृपवर्त, छोटी पडाहो, टोला। ३ सोधो खडो वस्तु।

तुकोश्वरो पहाड—आसामके मध्य ग्वालपाडा जिलेका एक पहाड। इसके शिखर पर विजनेके किसी एक राजासे बना हुआ एक सुन्दर प्राचीन मन्दिर है, जिसमें दुर्गा-देवीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। मन्दिर अत्यन्त सुदृश्य कारुकार्यविशिष्ट है। इसकी गठन प्रणालीमें यथेष्ट कौशल देखे जाते हैं। यहां भिन्न भिन्न स्थानके सन्ध्यासो और यात्री आते हैं। पर्वत केवल सन्ध्यासियोंका वाम-स्थान है। सन्ध्यासियोंसे एक राजाकी और सन्ध्यासी-नियोंसे एक रानीको उपाधि ग्रहण करती है। ये ही

यहकि सामाजिक नियमोंके अवसर कक्षा माने जाते हैं । तुष ( स० पु० ) १ हिमालय, सुमेरु ; २ पश्चिमे अफरिका हिमालय ।

तुषार ( स० पु० ) विष्णुपर्वतम्य जातिमैतः । ( इति० ५ अ० )

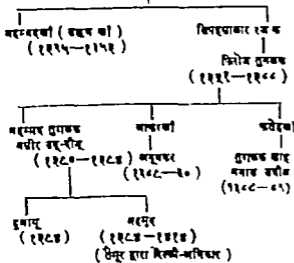
सर्वाधिक मोक्षाय चौर मद्रमजित् विषको नियम करके मज्जन किया था उसी समय इस जातिको उत्पत्ति हुई थी । ये विष्णुः पश्चात् पर रचते हैं । ये प्रथम तथा प्रथम रत हैं चौर तुष्य र या तुषार नामसे प्रसिद्ध हैं ।

२ एक देशका प्राचीन नाम । इसका उल्लेख प्रथम वैदिक परिशिष्ट रामायण, महाभारत इत्यादिमें पाया है । पश्चिमाय पर्वतोंके मत्तमें यह देश हिमालयके उत्तर-पश्चिममें बतवासा गया है । वर्तमान नाम तुषारिस्तान है । यहकि छोड़े प्राचीनकालमें बहुत प्रचलित माने जाते हैं ।

तुषार देवो ।

तुष्यक ( तुष्यक )—सुप्ततान मयास् उद्दोल बलवर्गसे एक ज्योतिदास । इसके पुत्रमें ( १३२१ ई०में ) सुयम्प्याह को मार कर मयास उद्दोल तुष्यक नाम प्रथम-पूर्वक दिवाके विज्ञापन पर बैठे थे । इस वंशके राजा जो तुष्यकवश शके नामसे इतिहासमें प्रसिद्ध हुए हैं । तम मन्त्रवर्गमें जो राजा हुए हैं उनको एक मयासमी से जानी है ।

गयास, चहोन् तमसक  
( ११२१—११२२ ई० )



तुष्य ( स० श्री० ) तुष्य बाहुनकात् स हिम । म गणोचन । यह चर-बाण, आर्य चौर खान-बिनागक है ।

तुष्यचौरो ( स० श्री० ) तुष्य ना एक चौरो । व ग चौपना ।

तुष्य ( स० श्री० ) तुष्य रक्त्त्वह पादिस्त्रात्त्वह म' । वैदिक कालके पत्निक श्रेय एक शक्ति । ये पश्चिमोत्तमार्गके उपायक थे । इसके पुत्रका नाम सुष्णु था । इसोंने होपान्तर वाली शम्भुचौको परास्त करनेके लिये अपने पुत्रको अज्ञान पर चढ़ा कर समुद्र पक्षसे भेजा था । पुत्र वैकी । मार्गमें जब एक बड़ा तुष्यक पाशा चौर बाहु नौकाको उल्टाने लगे तब सुष्णुने पश्चिमोत्तमार्गको सुनि को बो । पश्चिमोत्तमार्गमें व तुष्य को कर सुष्णुको सेना दित अपने नौका पर से कर तोल दिगमें समुद्र पिताने पास पहुंचा दिया था । ( ५७ १।११६।१ )

तुष्य ( स० श्री० ) १ अर, पानो । २ तुष्यके पुत्र सुष्णु ।

तुष्या ( स० श्री० ) तुष्य-द्राप । अर, पानी ।

तुष्यगहम् ( स० श्री० ) तुष्या-स-क्षिप । उदकापयिता अरको बगानिकासा ।

तुष्यन् ( स० श्री० ) तुष्य-क्षिप गह् पादिस्त्रात् अर मय । क्षिपक, क्षि सा करनेकासा ।

तुष्यरिज खाँ—ये दिवाके सुप्ततान पक्ष-तमसे एक ज्योति दाम है । इसका पूरा नाम मासिक रक्षितियार उद्दोल उद्दवक-५ तुष्यरिज खाँ था । उनके समयमें ये बाद शाको पाक्षयाकाके पक्षवारी पञ्चक ( मास्य चायमीव नीव ) है । सुप्ततान एक महोत्तम खिरोत्र शाहके समयमें इसी में दरबारमें सुष्णुपात्र ( पमीर व संक्रान्तिक )-का पद पाया था । इसके बाद, इतिहासाके पञ्चक हुए ।

सम्बन्धके ज्योतिदास अब बिन्दोही को लडे थे तब तुष्यरिजखाने भी बिन्दोहीमें योग दिया था, किन्तु सुप्त तान रजियाके राजा-ब-आलमें ये पक्षयाकापञ्चके पद पर नियुक्त हुए । बहराम शाहके शासनमें ( ६१८ खिजरोमें ) तुष्यो मानिक चौर पमीरो ने जब दिल्ली पर पाक्षमच किया, तब मासिक तुष्यरिज खाँ चौर मानिक करारकस खाँ विपक्षदक्षमें रक्ष कर भी सम्बन्धके दलमें मिल गये चौर विपक्षियोंने लड़ने लीं । किन्तु गुज शम्भुके मन्देशमें पराधारा मिले गये । प्रथम दिवाके उदार होने पर उनका सुनि हुई । पनाउद्दोन्ने राजस्वकासमें इसीने

तवर-हिन्दू और लोहनाका शासनभार पाया, इसके बाद ये कन्नौजके शासनकर्त्ता हुए। इस स्थानका अधिकार पा कर ये विद्रोहो हो उठे, किन्तु मालिक कृतवर्द्धोन् हुसेनसे पराजित हो कर दिल्लीको लौट आये। इसके कुछ दिनोंके बाद इन्होंने अयोध्या तथा लक्ष्मणावतोका शासनभार ग्रहण किया। इनके साथ जाजनगरके अधिपति (सखालके राजा)-को लडाईं किलो। जाजनगर अधिपतिके मन्त्रो सेनापति हो कर आये थे, किन्तु तुघरिल दोनों लडाईंमें पराजित हो कर भाग चले। तोसरो लडाईंमें मालिक तुघरिलखाने दिल्लीसे सैन्यमाहायिको प्राथना को, बाद लक्ष्मणावतोसे एक हृद्दत् मैन्यटल ले कर जाजनगराधिपतिके अधिकारभुक्त अमर्दन देश पर हठात् आक्रमण किया।

यहांके राजा अपने परिवारवर्गका छोड कर भाग गये। धनरत्न हाथो छोडे सब तुघरिल खांके हाथ लग गये।

तुघरिल राजधानो लौट कर रक्त, श्वेत और लाल वर्णके चन्द्रातप व्यवहार करने लगे; बाद अयोध्या पर चढ़ाई करनेके लिये अग्रसर हुए। अयोध्या नगरमें प्रवेश कर मव जगड इन्होंने अपने नाम पर खुतवा \* पाठ करनेका आदेश किया तथा अपनेको सुलतान मुघिस उहोन् नामसे प्रचार किया। एक पत्रके बाद सम्राटके अधीन् एक अमोरने हठात् आ कर संवाद दिया कि सम्राटको मैन्थ बहुत नजदीक पहुँच गई है। यह सुनते हो तुघरिल खांने नौरा पर चढ़ कर लक्ष्मणावतोको और प्रस्थान किया।

इस विद्रोहाचरणसे मुसलमान और थोडे हिन्दू भी उन पर विरक्त हो गये थे। जो कुछ हो, उन्होंने लक्ष्मणावतो लौट वाघमती नदीको पार कर कामरूप पर आक्रमण किया। कामरूपाधिपति पराजित हुए। तुघरिलने कामरूप नगर और धनरत्न अधिकार किया।

\* कुरानका कोई विशेष भाषा मंगलविधानके लिये पाठ किया जाता है जो हम लोगोंके चण्डीपाठकी नाईं है। किसी व्यक्तिविशेषके नाम पर खुतवा पाठके अर्थमें हम लोगोंके 'थ-विष्णु प्रीतिधाम' बचनकी नाईं भगवान्के नामकी उगह उष 'शक्तिनामोल्लेख किया जाता है।

कामरूपाधिपतिने कर दे कर राज्य पानेको आग्रह एक विग्रवासो मनुष्यको उनके पाम भेजा, किन्तु तुघरिल इस पर सहमत न हुए। तब कामरूप-पतिने अपनी सैन्य और प्रजाओंको धन दे कर कड़ा कि जितना मृत्यु संगी उतना दे कर कामरूपका सब अनाज खुरोद लायो। प्रजाओंने उनके कथनानुसार वैसा ही किया। तुघरिलने देशकी उर्वरता पर विग्रवास कर असम्भव दरमें सब अनाज वेंच डाला। इसके बाद काठनेके समय कामरूप-पतिने चारों ओरके जलपथ या नाना खोल दिया जिससे कि प्रसृत क्रिया हुआ अनाज बह गया। मुसलमानोंने निराहार मरनेके डरसे लक्ष्मणावतोको भाग जानेका विचार किया। देश जलसे बह रहा है, राप्ता कहीं न मिल्दा, किन्तु पघटगर्कको सहायतासे सब कोई पहाड़ी राप्तासे भाग निकले। अन्तमें एक मझीण राप्तासे आकर हठात् हिन्दुओंने आक्रमण किया; इस युद्धमें शरा घातसे तुघरिल खां हाथोकी पोठ परसे नोचे गिर पडे और हिन्दुओंके हाथसे बन्दो हुए। घातुर सैनिक भी बहुतसे मरे और बहुतसे बन्दो हुए। तुघरिलकी सन्तानादि तथा पत्नोवर्ग भी बन्दो हुआ था।

तुघरिल कामरूपपतिने मारने लाये गये। यहाँ उहोने अपने सन्तानसे भेंट करनेको इच्छा प्रकट की। पुत्रके उपस्थित होने पर उहोंने उसे अपने गोदमें ले सुख-सुखन करते करते प्राणत्याग किया।

तुघान खां—दिल्लीके सम्राट् अन्तमसका एक क्रांत-दाम। इनका पूरा नाम मालिक आइजुहीन-तुघिल-तुघान् खां था। ये सुन्दर रूपवान्, पुरुष थे। इनमें गुण भी यथेष्ट थे। दया, दानिष्ण, महिमा, भद्रता, उच्चाशय और लोकप्रियतासे सभी इनको बडाई करते थे।

सुलतान अल्तमसने इन्हें खुरोद कर सबसे पहले साकि-इ-खास (पानपात्र वाहक)के पद पर तथा उसके बाद सरदौबत-दार (प्रधान लेख्याधार-रचक)के पद पर नियुक्त किया। इसके बाद ये क्रमशः बादशाही पाकशालाके अध्यक्ष और अन्नशालाध्यक्ष नियुक्त हुए। इसके बाद ६३० हिजरोमें ये बदायूँ प्रदेशके शासनकर्त्ता बनाये गये। इस स्थान पर सुस्थिति लाभ करनेके बाद इन पर विहारका शासनभार सौपा

गता । ६२१ हिजरीमें मन्सूबानतोजे शासनकर्ता माबिक मुघलतातकी पद्वे डोने हर तुघान खाँ जो शासनकर्ता हुए । अब सुनमान पान तमसको पद्वे हुई तब त चाग खाँ पोर पादशक नामक राठुप्रदेशके शासनकर्तामें विवाह हुआ । मिनहाजने लिखा है, कि इस समय मन्सूबावती दो भागोंमें विभक्त हो—एक भाग सल्तनत या राठु पोर दूसरा भाग यधमकोट का बरैन्दू का । तुघान खाँ वरैन्दूमंडके पोर पादशक राठुके शासनकर्ता है । मन्सूबावती नगरोके पन्तगत यधमकोट शहरके पबिखारके निचे दोनोंमें मन्सूबाई बिड़ो । पादशक साइसी पुसव के इक मय कोई पापोर खाँ बइसे है । तुघमें तुघान खाँ पापोर खाँ ममन्बानमें धरावात कर मार छाया । पादशकको मरने पर दोनों प्रदेश तुघान के धरीन था मये ।

सुलताना रजियाके राजत्वकालमें तुघान खाँने टिकोके दरबारमें पनेक उपबुक्त खाँके पोर उपहार प्रेरण किया । सुलतानानि भी सन्तुताप, राजदण्ड, पन्ना, मन्सूबत रत्नादि प्रदान करके तुघानको मन्सूबानित किया । इसके बाद तुघानने विपुल पर पात्रमन्च किया पोर बहुत मनरक स्रुट कर कर साये ।

सुलतान सुदर-उद्दोन् बकरम शाहके राजत्वकालमें भी तुघान खाँ मन्सूबाके माब पन्ना रक्षते है । सुलतान पनाबको मयापूट शाहके राजत्वके पबके तुघानके जिते जो विन्दासी मन्सो बहाउद्दोन् बिनास सुदियातीने पयोधा कोर-माबिकपुर पौर उरुदिय पबिखारमें खाने के लिये प्रतिष्ठा की । ६३० हिजरीमें तुघान खाँ कीरा माबिकपुरमें उपस्थित हुए, बाद पयोधाको यीमामें कुछ दिन रह कर सल्तनतको लौट पाये ।

६३१ हिजरीमें आजमनर (काकच)के राजाने सल्तनतको राजमें उत्पात पारण किया । तुघान खाँने आजमनर-से मन्सोके उत्पात-निवारणके लिये कई अतासीनके निवृत्त दो मन्सूरके पार मार भगाया । वे एक है तकी बहाउलमें शिव रहे । पन्तमें अब सुलतानाल सेनिख खाँने पोनेके लिये मिर्जिखो जाये, तब हिन्दू-सैन्यमें पोनेके पात्रमन्च कर बहुतेके सुलतानाओंको विनष्ट कर छाया । तुघानखाँ विपन्न मनोरथ हो राजधानी लौट

पाये । राजधानीमें था कर उरुदिये पने मन्सोको दिखो मन्सूबा । मन्सूब-सुलताने टिको-दरबारमें था कर मन्सूबा पन्नाउद्दो मयापूट याइने साहायको माब ना का । सन्नाट ने खाँको बलाउद्दो मयापूटको बिनास, बन्दातप तास पौर राजविड है कर प्रेरण किया तथा मन्सूबको मन्सो भयो । हिन्दूखानो मन्सूब दुसको एक बहा मन्सोके पूर्विय पानके सैन्यदलको मन्सो । पयोधाके शासनकर्ता तमरखानि मो बिनारको समन्वय मन्सूबावतीके सहायताय प्रेरण किया ।

६४२ हिजरीमें आजमनराधिपति कतासोन्के सुद का प्रतियोध सेनेके निचे, मन्सूबावती पर पात्रमन्चके उद्देश्यसे बहुमन्सूब पन्नाउद्दो पौर पद्धानि से म्बे शीकर बहा का पड़े । राठुमें इन समय तुघानके धरीन पवर-उन्-सुदर खरोम-उद्दोन् माधरी शासनकर्ता थे । आजमनरके नेनापतिने पदने राठु मिय पर हो पात्रमन्च किया । तुघमें खरोम-उद्दोन्को बहुतमो मिया मारो बई । पन्तमें खरोम दन्-सहित मन्सूबावतीको माम मये । पादशक पन्च हैने । आजमनरके नेनापति ने सनका पोका बिबा बिन्दु जब सन्सोने सुना कि टिको है मिया था रहो है तब वे भूच करनेकी माध हुए । टिकोके प्रेरित मन्सूबदलने उपस्थित हो कर दिया कि विपन्न नरीं के पोर न सुद हो हो रहा है । पन्तमें तमर खाँके माय तुघान काँबा सुद बिड़ा । बिन्दु करै एक चँटा हुँद करनेके बाद एक खाँकी मन्सूबता से मन्सूबाई बन्द हो गई । नमरके दार पर ही तुघान काँबा मिर्जि खा, वे सन्सूब मिर्जिमें का पन्नादि त्वाय कर बिबायका उपयोग करने लगे, बिन्दु तमर खाँके मिर्जिसे कुछ दूरकीमें रह कर सन्सोने पन्नादि ज्ञानके कसके मिर्जिमें का पबगिष्ठ मन्सूबोके पन्नादि बिबा पौर इलाक़ पा कर त-बान खाँ पर पात्रमन्च किया । तुघान खाँने बोक पर मया हो नगरमें प्रवेश कर अपने हाथ बचाये । तुघानके पन्सुदोपने मिनहाज-उद्दोन् बिराजीने दोनोमें सन्सूबा प्रस्थाप किया । तमरखानि प्रस्थाप बिबा कि तुघान खाँ बदि सन्सूब, सल्तनतको राज बोक कर दिखो पने खाँक, तो सन्सूब ही सन्सूबता है । तुघान खाँ रह पन्ना प्रस्थापने समझ गये कि यह तमरखाँ-

का प्रस्ताव नहीं है, दिल्लीके सम्मेलने जो उन्हें ऐसा करनीका उपदेश दिया है, नहीं तो ऐसा समझकर प्रस्ताव तमर खां कभी करनीका माहम नहीं करते। जो कुछ ही, तुघान खां राजभक्तिके बलसे बँसा ही कर अपना धनराज, हाथी, घोडा और अनुचरोंकी साथ ले ६४३ हिजरीमें दिल्लीको गये। लक्ष्मणावती नगर तमरखांके अधीन हो गया। तुघानखाने दिल्लीमें जा कर महा सम्मान प्राप्त किया और उनकी राजभक्ति तथा क्षतिपूर्ति स्वरूप उन्हें तमर खाने परित्यक्त अयोध्याका शासन-कर्तृत्व दिया गया। इसके कई एक महीने बाद मन्दाट नजीरहोन् महमूद गार्हके सिंहासन पर आरूढ़ होने पर तुघान खाने अयोध्या जा कर वहाँका शासन-भार ग्रहण किया। यहाँ पर उन्होंने यद्यपि सुख-शान्ति पाई थी, किन्तु कुछ कालके बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। आशयका विषय यह था कि जिस रातमें अयोध्यामें तुघान खांकी मृत्यु हुई, ठीक उसी रातको अज्जालमें तमर खांकी भी जीवननीला शेष हुई।

६५—( स० पु० ) तुषरिख्वाया यज्ञ-न्यासादित्वात् कुत्वं । १ पुष्याग्रहच । २ पर्वत, पहाड़ । ३ नारिकेल । ४ बुधग्रह । ५ गण्डक । ( ति० ) ६ उच्च, ऊँचा । ( को० ) ६ ग्रहविशेषका राशिमें, ग्रहको उच्चराशि । ज्योतिषमें इनका विषय इन प्रकार लिखा है,—यवनाचार्य्ये मतसे मेषादि सप्त राशि, सूर्यादि सप्तग्रहोंके दशमादि अंश यथाक्रमसे उच्च और परमोच्च हैं। मेष राशिका दशम राशिसे उच्च तथा दशमशका शेष अंश ही परमोच्च है। मेष राशिसे तीन अंश चन्द्रसे उच्च और तृतीयांशका शेष अंश परमोच्च है। मकर राशिका अष्टादशवा अंश मङ्गलसे उच्च तथा अष्टादशवाका पूर्वांश ही परमोच्च है। कन्याराशिका पन्द्रहवा अंश बुधसे उच्च और पन्द्रहवाका पूर्वांश ही परमोच्च है। कर्कट राशिका पाँचवा अंश उच्च और पाँचवाका शेष अंश ही परमोच्च है। मोन राशिका सत्ताईसवा अंश शक्रसे उच्च और सत्ताईसवाका शेष अंश ही परमोच्च है। तुला राशिका बीसवा अंश शनिसे उच्च और बीसवाका शेष अंश ही परमोच्च है। इन मेषादि सप्त राशियोंके सानवें घरमें रवि प्रभृति सप्तग्रहोंके दशमादि अंशके यथाक्रमसे नोचै और दशमशका शेष

अंश और भी नोचै है। इसे मरु चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक और शनि इनके व्यक्तिक, कर्कट, मोन, मकर, कन्या और मकरागिमें पूर्वोक्त उच्चांगके अनुभार नाच परमोच्च विचार करना पड़ेगा। इन सब अंशोंका तोमरा अंश स्फुटगणनामें महानता चाहिये।

मेषराशि रविका उच्च ग्रह, मेषराशि चन्द्रमा, मकर मङ्गलका, कन्या बुधका, कर्कट बृहस्पति, मोन शक्रका और तुला शनिका उच्च ग्रह है। सब ग्रह उच्च गृहस्थितमें यदि अथांग उच्चांगमें रहे, तो ग्रहोंको सम्पूर्ण बनी समझना चाहिये। इन्हीं ग्रहोंके ऊँचे स्थानका नाम तुषरि है तथा परमाच्च स्थानका नाम सुतुषरि है। ग्रहगण नोच घरमें यदि नोधांगमें रहे तो उन्हें बलवान जानना चाहिये। जन्मकालमें मेष, मृग, कन्या और कर्कट राशिमें राहुग्रहके रहने में तुषरि होता है। राहु तुषरि होनेसे मनुष्य नाना धनराज भूषित राजाजाधिपति और शिरायु होता है। ( कोटी प्र० )

मूल त्रिकोणको भी तुषरि कहते हैं। मेषराशि रविकः त्रिकोणग्रह, मेष राशि चन्द्रमाका मूल त्रिकोण है; मेष मङ्गलका, कन्या बुधका धनु बृहस्पतिका, तुला शक्रका और कुम्भ शनिका मूल त्रिकोणग्रह हैं। त्रिकोण अंश रवि प्रभृति सप्त ग्रहोंके सिंहादि मेषराशिका विंशति अंश यथाक्रमसे मूलत्रिकोणांग कहकर प्रसिद्ध है। यथा, रविको सिंहराशिका बीसवा अंश, मङ्गलकी मेषराशिका बारहवा अंश, बृहस्पतिको धनुराशिका दशवा अंश, शक्रकी तुला राशिका पन्द्रहवा अंश और शनिकी कुम्भराशि बीसवा अंश मूलत्रिकोण अंश है। इनमें बुध और चन्द्रमें विषयता यह है कि बुधके सु-उच्चांगके बाद दशमश और चन्द्रमाके सु-उच्चांगके बाद सत्ताईसवा अंश मूलत्रिकोण अर्थात् बुधका पन्द्रहवा अंश सु-उच्च है, इनलिये कन्याराशिके पन्द्रहवें अंशके बाद दशमश मूल त्रिकोण तथा चन्द्रमाके तृतीयांश सुउच्चके बाद सत्ताईसवा अंश मूल त्रिकोण होता है। मिथुनराशि राहुका उच्च गृह है, कुम्भराशि मूल त्रिकोण, कन्या राशि स्वग्रह शक्र और शनि मित तथा, सूर्य, चन्द्र और मङ्गल ये शत्रु और मिथुनकी बीसवें अंशकी उच्चांग सम्भन्ना चाहिये। सिंहराशि केतुका मूलत्रिकोणग्रह है; धनु

संघे मोनरायि अष्टक, द्वात्रिंशत् पौर यानि भद्र, सुयं  
मङ्गल पौर चन्द्र के मित्त हैं, इन्द्रपति पौर तुष्य के न  
तो मन्त्र हैं पौर न मित्त, पौर ब्रह्मरायि के बठि प यको  
कमुखा उवाचि समप्रका वाचिपे ।

मिथं रवि, इधमं चन्द्र चन्द्रादि सुक, कुम्भोरमि सुव  
मीनमि युक्त, मन्तरमि मङ्गल एव तुष्ठादि यानि रश्मि  
तुष्ठा होता है ।

“वाहितमैत्रे वृषभे कर्कटि कर्मागटे व कुरी कुम्भीरे ।  
मीने व-दुक्त मन्त्रे महीके धनी तुष्ठावामिधि तुष्ठागेहा ॥  
( उभयान्त )

तुष्ठाका फल—रवि अपने चरमि रश्मिसे मनुष्य पञ्चित  
गामिन्का होरकामावसम्पत्, धरोगो बहूतो के प्रति  
पाण्डव, दाता बहु सुख स भोगकारो तथा मन्त्रलेख्य  
श्रुति होता है ।

अथ समयमि तुष्य यदि अपने उच्च ज्ञानमि रश्मि तो  
मानव चन्द्रा, पुत्र पौर उत्तम राजसम्पत् राजाधि मान  
भोग राज्यके एकदेयका अधिकारो, शास्त्राकारमि धामोद  
बुद्ध तथा मन्त्रे का सोमायविधि होता है ।

अथ समयमि इन्द्रपति यदि अपने उच्च राशिमि रश्मि  
तो मनुष्य उत्तम मन्त्रिसम्पत् अथवा बसवान् मान  
भोग ज्ञोको, पञ्चम बसवान् इष्टो, पञ्च दान पौर  
उत्तम ज्ञोका स्वामी तथा बहूत मनुष्योंका प्रतिपालक  
होता है ।

अथ समयमि शुक्र यदि अपने उच्च राशिमि रश्मि तो  
मनुष्य मित्राकमोत्रो, सफल शुचिबुद्ध राजसम्पत्, दोहासु  
दाता, देवदास्य अत्र तथा उत्तम मोनी होता है ।

अथ समयमि यानि यदि अपने उच्च चरमि रश्मि, तो  
मनुष्य ज्ञो विद्याधर, उत्तम शक्तिगोत्रो, पञ्चम  
बसवान् दोहाकमो, राज्यके एकदेयका अधिकारि,  
पञ्चम, दाता तथा मोहा होता है ।

“एक शुभे नवेद्वीमि द्विभे व चनेरवः ।  
मिदु गेव अथेरावा वसुं व चरसिन् ॥”

अथ कालीन एक पृष्ठ तुष्ठा जोनके भोगी, दो पक्षमि अपने  
धर तोनमि राजा पौर चारमि राजसम्पत्ती होता है ।  
यदि मन्त्र, मित्रल पौर अथपुष्टमि पञ्चम तुष्ठा ही तो  
अहित समया पञ्च मन्त्रे ही हैं, पौर किन्तु या मित्रोच

मि जोनसे यद्योक्त पक्ष होता है । कर्मका उत्तम मनुष्य  
पौर दमम ज्ञान केन्द्र माना जाता है । ( श्रीपरीप )

८ किष्कल । ८ उष्य । १०-प्रधान । ११ उच्यत ।  
( पु० ) १२ मित्र, मन्त्रादि । १३ अतिवपुत्र । यथोमि तपश्चि  
प्रमाणके नारायणको मनुष्य का रक्षक नामक इन्द्र-पुत्र  
एक पुत्र प्राप्त किया था । १४ एक प्रविष्ट क्षत्रिय राजवंश ।  
तुष्ठा ( स० पु० ) तुष्ठा ज्ञायो क, स ज्ञायो कन् वा । { पुष्याग  
इव नागवेधर । ( ज्यो० ) २ तुष्ठी मन्त्रार्थ । ३ परप्ल  
फ्य तोषमिद, एक तोषका नाम । परप्ले यथा सारकत  
मुनि श्रुतियोंको बंद पढ़ाया करती है । एक बार जब  
बंदपठ हो गये तब पञ्चराशि मुनि श्री मन्त्रका  
यथाविधि उच्चारण किया था । ४४ मन्त्रके उच्चारणके  
साक्ष्यको पूर्वोक्त सब बंद उपलब्ध हो गया । तब  
श्रुति पौर देवगण बहव, अग्नि, प्रजापति, ऋषि, नारा  
यण मगवान् पितामह श्रुतिदिने मन्त्राश्रुति श्रुतको  
यथा करके सिधे निबुद्ध किया । व यथाविधि  
श्रुतियोंके पठन यथा करमि करी । पञ्च शरी अग्नि  
मनुष्य को मर्द । बाह्य देवता पौर श्रुति अपने अपने ज्ञान  
को गये । यह परप्ले न तुष्ठाको नामके प्रविष्ट बुधा ।  
पुत्र या जोके इस ज्ञानमि ज्ञानिसे सब पाप नष्ट हो जाती  
है पौर एक माघ यथा रश्मिसे ज्ञानकोभी प्राप्ति होती है  
तथा यह कुम्भका उद्धार होता है ।

तुष्ठाकृत ( म० पु० ) तुष्ठा कृतमप्ल । उच्यते परममेद,  
अथो चोदोवा एक पञ्चाङ्ग ।

तुष्ठा ( स० ज्यो० ) तुष्ठाका भाव तुष्ठा तथा । उच्यता,  
अथार्थ ।

तुष्ठा ( स० ज्यो० ) तुष्ठाका भाव, भावो ल । उच्यता,  
अथार्थ ।

तुष्ठाकृत ( म० पु० ) तुष्ठा उच्यते मनुष्यके बहूतोको  
बहुमन्त्रादेया । उच्यते मनु ।

तुष्ठाका ( म० पु० ) विमान्य पर एक मिथसिद्ध पौर  
तीक्ष्ण ज्ञान ।

तुष्ठाका ( स० पु० ) तुष्ठाका मन्त्रके बहूतो । कोटमिद,  
एक प्रकारका विष्णु ज्ञोहा । तुष्ठाका वेको ।

तुष्ठाकृत ( म० पु० ) रामकृतके निकटवर्त एक परमंत ।  
तुष्ठाकृत ( स० पु० ) तुष्ठा वेको ।

तुङ्गभद्र (सं० स्त्री०) तुङ्ग भू कर्मधा० । सूर्यादिको उच्चराशि  
सिध प्रभृति । तुंग देवो ।

तुङ्गभद्र (सं० पुं०) तुङ्गोऽपि भद्र । मद्रमत्त हस्तो, मत-  
वान्ना हाथो ।

तुङ्गभद्रा (सं० स्त्री०) तुङ्गप्रधाना भद्रा निर्मला च ।  
नटोविशेष, एक नदोका नाम ।

‘तुंगभद्रा सुप्रयोगा वाग्वा कविषो नैव हि ।

दक्षिणापथनवस्थाः सगगाद द्विनिःस्रवा ॥’

( मत्स्यप० ११३।२९ )

यह दक्षिण प्रदेशको एक बडो नदो है । तुङ्ग तथा  
भद्रा नामक दो नदोके संयोगसे यह उत्पन्न हुई है ।  
महिसुरको दक्षिण-पश्चिम सीमामें सद्यः पूर्वतः गङ्गासून  
नामक शिवरसे ये नदियाँ निकल कर दक्षिण-कनारडा  
होती हुई प्रवाहित है । महिसुरके मध्य १४' उत्तर  
अक्षांसे और ७५' ४३' पूर्व-रेखांसे सिमोगा जिलेके  
कूदलो नामक ब्राह्मण-ग्राममें ये दोनों नदियाँ आ कर  
मिली है । यह नदो प्रायः आध मील चौड़ी है और  
इसको गहराई भी कम नहीं है । पश्चिमस्थ वनके बड़े  
बड़े काष्ठानि नदोमें बहा कर ले जाते हैं । ३०० वर्ष  
पहले विजयनगरके राजाओंने इस नदोमें ७ 'शानिकट'  
निर्माण किये थे । महिसुर और धारवार जिलेसे बर्धा  
और कुमुदती नामको दो नदियाँ तथा दक्षिणमें विनारो  
जिलेसे हगरी तथा कर्णूलसे हिन्दरी नदो आकर इसमें  
मिली है । तुङ्गभद्रा ८ कोस बह कर कृष्णा नदोमें मिलो  
है । इस नदोकी लम्बाई कुल २०० कोस है । बांस या  
बेत द्वारा जोग नदो पार होते हैं । इसके किनारे महि-  
सुरके मध्य हरिहर, विनारोके मध्य काम्पिल तथा कर्णूल  
नगर अवस्थित है । हरिहर नगरमें एक ईंट और पत्थर-  
का बना हुआ सेतु है । नदीमें कुम्भोर अधिक हैं ।  
बेलारोके मध्य रामपुर नामक स्थानमें ५१ खंभोंके ऊपर  
बना हुआ मन्दार रत्नवेका पुल है ।

इस नदोका चर्चित नाम तुंगभद्रा है । आयुर्वेदमें  
इसका जल सिद्ध, निर्मल, स्वादु, गुरु, कण्डु और  
पित्तास्रदायक, प्रायः स्नायकर तथा शिवाकर कहा गया  
है । ( राजनि० )

तुङ्गमुख ( सं० पुं० ) गण्डक, गौडा ।

तुङ्गरम ( सं० पुं० ) तुङ्गः यदो रमो यस्य । गम्बुर्ग-  
भेट ।

तुङ्गवाह ( सं० पुं० ) तनवारके ३२ हाथोंमेंसे एक ।

तुङ्गबोध ( सं० स्त्री० ) तुङ्गस्य शिवस्य बीजं, ६-तत् ।  
पारट, पारा ।

तुङ्गवेणा ( सं० स्त्री० ) नदोमें दे, एक नदोका नाम ।  
'विनदी विंगला वेगां तुंगवेणा महानदी' ( भारत भाष्य० ९ अ० )

तुङ्गवज्र ( सं० पुं० ) नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़ ।

तुङ्गशेखर ( सं० पुं० ) तुङ्ग सन्नतं शेखरं यस्य । १ पर्वत,  
पहाड । ( स्त्री० ) तुङ्गं शेखरं, कर्मधा० । २ पहाडकी  
ऊँची चोटी । ( वि० ) ३ उच्च शेखरशुक्ल जिमकी चोटी  
ऊँची है ।

तुङ्गस्तम्भफल ( सं० पुं० ) नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़ ।  
तुङ्गा ( सं० स्त्री० ) तुङ्ग-टाप् । २ वंगलोचन । २ शमी  
वृक्ष ।

तुङ्गारण्य ( सं० पुं० ) एक जङ्गल जो भूमोमें ६ कोस दूर  
श्रीलंकाके पास है । यहाँ एक मन्दिर है और प्रतिवर्ष  
मेला लगता है ।

तुङ्गारि ( सं० पुं० ) श्वेत करवीरवृक्ष, सफेद कनेरका  
पेड़ ।

तुङ्गिन् ( सं० स्त्री० ) तुङ्गं मेघाटिकं स्थानमाश्रयत्वेनास्ति  
अस्य इति । १ उच्चस्थित श्व । ( वि० ) २ प्रधान स्थानस्थ ।

तुङ्गिनी ( सं० स्त्री० ) तुङ्गिन्-डोप् । १ महागतावरो,  
बडो गतोवर ।

तुङ्गो ( सं० स्त्री० ) तुङ्गं गोरदित्वात् डोप् । १ हरिद्रा,  
हल्दी । २ रात्रि, रात । ३ श्वरोहण, उम्बई, ममरो ।

तुङ्गीनास ( सं० पुं० ) तुङ्गो हरिद्रैव पीता नामा यस्य,  
बहुवो० । कोटभेद, एक विषीना कीडा । तुङ्गीनास,  
विचलिक, तालक, वाहक, कोटागारो, कर्मिकर, मण्ड-  
पुच्छक, तुङ्गनाम, सर्पपोक, प्रवल्गुनो और शम्बुक ये  
चार प्रकारके कीडे प्राणनाशक हैं । इन कीडोंके  
काटनेसे भाँपके काटने जैसा विषका कोप देखा जाता  
है, एवं मान्निपातिक जन्म बेटना और तोत्र यातना  
उत्पन्न होती है । चार या आगसे जला हुआ शरीरका  
भाग जैसा हो जाता है, काटा हुआ स्थान मो वंगा हो  
ही जाता है और उसमेंसे पीला, काला और लाल रंगका

मोह निवृत्तते देखा जाता है। अर, पञ्चमर, रोमाच  
बेटन, बसम, अतीमार, टण्डा, दाह, पञ्चम्य भोत,  
घोफ, चिडा, टाह, मोह, बन्ध, झास, प्रन्धि, मन्डवा  
कार चिडा, टण्डा, बर्बिबा, बिसर्प पञ्चति, बोहोको पञ्चति-  
के अनुसार ये समस्त उपद्रव होते हैं।

(इन्द्र ६९० = ४०)

तुङ्गोपति (म० पु०) तुङ्गा राते पति। चन्द्रमा।  
तुङ्गोप (म० पु०) तुङ्गी यर्षपशावा ईम, चर्मपा०।  
१ यिष। २ कण्य। ३ सुर्ष। तुङ्गा ईमः, ४-तत्।  
५ चन्द्रमा।

तुच (म० पु०) लक्ष्मिप सम्भवारर्ष तुच क्षिप प्रयो  
दरानिवात् माहुः। १ पञ्चक, सन्तान।

तुच्छ (म० क्री०) तोति घमाःल गच्छति तुच्छ। ४६  
निचयिन्प्रोद्गन्मात् सिद् शीरो ररम्। ३२३ २७३  
१ पुनाच, भूमि हिनचा। २ होम, सुद्र माचोत्र। (वि०)  
तुच्छ क्षिप तिन त वा ह्येति हो क। ३ शूच्य, निवार  
योमका। ४ पण्य, बोद्धा। (पु०) १ मोमोह्य, मोमका  
योका। २ तुच्छ तृतिवा।

तच्छदान (म० क्री०) तुच्छप दान ६ तत्। सामान्य  
शेष।

तुच्छना (घ० श्लो०) तुच्छस्य मावः तन टाप। सामा  
न्यता, होमता शोचता। २ सुद्रता योहापन।  
३ चक्षता।

तुच्छन्य (घ० क्री०) तुच्छन्य भावः। १ श्रियता, श्रियता।  
२ चक्षता, योहापन।

तुच्छद्रु (मं० पु०) तुच्छो होमोतुर्षा। चर्मपा०। ४९३  
४५, १६३। ५६६।

तुच्छकण्यक (घ० क्री०) तुच्छ कायः पत्वार्ये कन्।  
पुनाच, भूमि हिनचा।

तुच्छा (म० क्री०) तुच्छ भेदे स्त्राय इहाये वा यत्।  
१ तुच्छकण्यक। २ तुच्छकण्य।

तुच्छा (घ० श्लो०) तुच्छ-टाप। १ तुच्छ, तृतिवा।  
२ मोमोह्य, मोमका पिङ्ग। ३ शूचीना, कोटी रत्नायको।

तुच्छोन्नत (म० वि०) अनुच्छ तुच्छ उन्नत धमूतनशावे  
विः। चक्षता, त्रिनचा चक्षमान विद्या गया हो।

तुच्छगितुच्छ (म० वि०) पाचनस्युद्, कोटी है कोटा।

तुत्र (म० श्लो०) तुत्र-क्षिप। १ रचसमर्ष, बह जो  
रथा करनेमें समर्ष हो।

तुत्रि (म० वि०) वनवान् तावतवर।

तुत्रि (म० पु०) एक राजाका नाम।

तुम्व (वि० श्लो०) अनुप्य वमान।

तुम्ब (म० वि०) तुत्र हि भागो पत्राटवयेति यत्।  
विष्णु हि सा करने शेष्य।

तुम्ब (घ० पु०) तुत्रिभने पच। १ नम। २ उन्न फल  
दानकथा।

तुम्बो (म० पु०) काञ्जोरके एक राजाका नाम।

तुम्बिट (म० पु०) मिन।

तुम्ब (म० पु० श्लो०) तुर्दन नागयति इत्यत्रात् तु  
पाह्वनात् उम। १ न्यूर, चूडा।

तुम्बाना (वि० क्री०) तोङ्गिका काम किलो दूमीके  
कराना।

तुम्बाई (वि० श्लो०) १ तुङ्गिका क्लिया या भाव।

तुम्बाना (वि० क्री०) १ तोङ्गिका काम किलो दूमीके  
कराना। २ न्यून तुम्बाना। ३ सम्बन्ध तोङ्गना। ४ वपवा  
तुम्बाना सुम्बाना।

तुम्बि (घ० श्लो०) तुम्ब-रम्-विष्णु। तोङ्ग, तोङ्गिका  
क्लिया।

तुम्बु (वि० पु०) तुम्बो, विष्णु।

तुम्बि (म० पु०) तुम्ब स बोधि इन् प्रबोदराटित्वात् माभ्र  
वा तुम्बति मद्बोधयति तुम्ब इन् (वरनाश्रुन इन्।  
इन् १। २) तुम्बक तुम्बका पिङ्ग। बह लसरोप भारतमें  
सिन्धु नदीमें लेबर सिद्धिम् गौर मूटान तक होता है।  
यह यानोमने लेबर पक्षान हाथ तक लवा थोर दम  
बारह हाथ मोटा होता है। गिरिधरतुम्बि रनके सब  
पत्नी गिर जाती हैं। वनमर्ष पारथर्ष हो इक्षमें मोमके  
फलको तरङ्गके कोटे कोटे फूल तुम्बुमें कयते हैं। इन  
फलमें यक्ष प्रकारका पोषा चमको र म निवृत्तता है।  
रनके फूल अरु भङ्ग जाती हैं तो र व वनमर्षके निचे लोच  
कके रङ्गका करके लवा मिते है। इनको मङ्गली लाल  
र गको थोर बहूत मङ्गुन होती है। इक्षमें लोचक थोर  
हून मयनेका इर मर्षी ररता है। रनका चक्षत  
पर्याय—तुम्बि तुम्बक पापोम, तुम्बिच, चक्षक कुठेरक,



कान्तलक, नन्दिष्ठक नन्दक । इसका गुण—कटु, विषाक, कषाय, मधुर, तिक्तारस, लघु, धारक, शोतवोर्य, शक्रवर्द्धक तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तनाशक ।

तुणिक ( सं० पु० ) तुणि स्वार्थे कन् । नन्दिष्ठक, तुनका पेड़ ।

तुण्ड ( सं० स्त्री० ) तोड़ने अच् । १ सुख, सुंह । ( पु० ) २ महादेव । ३ राक्षसविशेष, एक राक्षसका नाम । ( भारत० ३।२८४।८ ) ४ एक दानव जो अत्यन्त बलशाली था । यह आशुके पुत्र नहुष द्वारा मारा गया था । ( पद्मपु० ) ( स्त्री० ) ५ चञ्चु, चींच । ६ यूधन, निकला हुआ सुंह । ७ खड्गका अग्रभाग, तलवाका अगला हिस्सा ।

तुण्डकेरिका ( सं० स्त्री० ) कार्पासो कपासका वृक्ष ।

तुण्डकेरो ( सं० स्त्री० ) प्रशस्तं तुण्डं प्रशंसायां कन् । तदोक्तं ईरयति वा ईर-अण् स्त्रियं डोप् । १ कार्पासो, कपास । २ विम्बिका, कुंदरू ।

तुण्डकेशरो ( सं० पु० ) सुखका एक रोग । इसमें तालुकी जड़में सूजन होती और दाढ़ पीड़ा आदि उत्पन्न होती है ।

तुण्डदेव ( सं० पु० ) तुण्डरूपो देवः तुण्डेन दोष्यति टिव अच् । एक राजाका नाम ।

तुण्डि ( सं० पु० ) तुण्डते निष्पीडयति तुण्ड-इन् । सर्व धातुभ्य इन् । षण् ४।११० । १ सुख, सुंह । २ चञ्चु, चींच । ३ विम्बिका, विंबाफल, कुंदरू । ४ बन्दा । ( स्त्री ) ५ नाभि ।

तुण्डिका ( सं० स्त्री० ) तुण्डिरेव तुण्डि-स्वार्थे कन् टाप् च । १ नाभि, टूंडी । २ विम्बिका कुंदरू ।

तुण्डिकेरी ( सं० स्त्री० ) १ कार्पासो, कपास । २ विम्बिका, कुंदरू । इसके पर्याय—तुष्टि, रक्तफल, विम्बो और विम्बिका । ३ कौटविशेष, एक कौड़ा । ४ तालुगत रोगविशेष, सुखका एक रोग । इसमें तालुकी जड़में सूजन होती और दाढ़ पीड़ा आदि उत्पन्न होती है । इस रोगमें शास्त्रकार्य उचित है ।

तुण्डिकेशी ( सं० स्त्री० ) विम्बिका, कुंदरू ।

तुण्डिभ ( सं० त्रि० ) तुण्डिहवा नाभिरस्य तुन्दि-भ । तुन्दि-बालवटैः । १ पा ५।२।१४० । हृदनाभि जिसकी नाभि निकली हुई हो ।

तुण्डिल ( सं० त्रि० ) तुण्डि सिन्धादित्वाटिसञ् । १ बृह-नाभि, जिसकी नाभि निकली हुई हो । २ तोंदवाना, निकला हुआ पेटवाला । ३ सुखर, वक्रवादी, सुंह और ।

तुण्डो ( सं० त्रि० ) १ सुखयुक्त, सुंहवाला । २ चञ्चुयुक्त, चींचवाना । ३ यूधनवाला । ( पु० ) ४ गणेश । ( स्त्री ) ५ नाभि टूंडी ।

तुण्डोगुष्टपाक ( सं० पु० ) एक रोग । इसमें बच्चोंकी गुदा पक जाती और नाभमें पोड़ा होता है ।

तुण्डोरमण्डल ( सं० पु० ) दक्षिणके एक देशका नाम । तुतकुडो ( Tuticorin )—समुद्रतोरवर्ती एक प्रसिद्ध बन्दर सत्रहवीं शताब्दीके प्रारम्भमें पुर्तगालीोंने यहाँ प्रथम आवास स्थापन किया । १६५८ ई०में वे इसे अपने अधि-कारमें लाये । इसके बाद प्रायः १७०० ई०में डेनमार्कीने यहाँ एक छोटा दुर्ग निर्माण किया । उन समय तिब्बे व लोके सन्निहित समुद्रसे मोती, सोप और शङ्ख संग्रह करनेके लिये ७ सौ नावें रखा करती थीं ।

इस कार्यका भार उन्हीं लोगों पर सौंपा गया था । उन लोगोंका यह व्यवसाय बहुत दिनों तक चलता रहा और इससे उन्हीं यथेष्ट प्राय होतो रहो ।

१७८२ ई०में अंगरेजोंने तुतकुडो पर अधिकार जमाया और १७८५ ई०में उन्हींने इसे फिर डेनमार्कीको प्रत्यर्पण किया । १७८५ ई०में अंगरेजोंने इसे पुनः अपने अधिकारमें कर लिया । १८१८ ई० तक इसे अपने अधिकारमें रख कर उन्हींने फिर डेनमार्कीको लौटा दिया । १८५२ ई०में डेनमार्कीने इसे पुनः अंगरेजोंको दे दिया । आज तक यह अंगरेजोंके अधि-कारमें है । यात्री इसो बन्दरसे कलकत्तो जाते हैं । इसके किनारे अधिक जल न होनेके कारण बड़े बड़े जहाज किनारेके निकट नहीं आते हैं । टोम-लख हारा यात्रिगण जहाज पर चढ़ते हैं, यहाँ कई एक रुई और सूतीकी कले हैं । यहाँ रुई और सूते गांठमें बंधे जानेके बाद विलायत भेजा जाता है । इस स्थानसे मन्नार उपकूल पर मोती-सोप निकालनेका बन्दोवस्त किया गया है । समुद्रके किनारे बोच-नामक एक प्रशस्त रास्ता है । यहाँ आम, नारंगी और केला आदि अनेक प्रकारके फल पाये जाते हैं, नारियल तथा ताड़के वृक्ष भी यथेष्ट

हैं। ताड़ना मुड़ घोर ताड़को चोरो यहाँ यधेष्ट पाई जाती है। यहाँका स्नायु उत्तम है, बिन्दु मीठे बज्जका बहुत प्रभाव है। पात्रकक चाट्टिंकिन जूय घोड़े गले हैं। शहरके मसूद्रोरवतीं बहुत पय प्रभावित घोर सचविद्याको हैं। यहाँ बिन्दुघोड़े रचनेके कईएक बत घोर साजबोके बिये एक उत्तम झोटन है। यहाँ 'तुतलुङ्को डारमिन्ग' नामक रेभको एक स्टेशन है।

त तराना ( हि० लि० ) शुभमग रणी ।

तुत्ताना ( हि० लि० ) यन्दी घोर बर्षोंका पकट उबा रच खरना साफ न वाकना ।

तुत्तो ( हि० लि० ) जेवकी रेको ।

तुत्तान ( स० पु० ) मोमासकर्मद ।

तुत्तुरी—एक तरहका झोटा शूइयन। यह यन्म माइसिक बस घोर सेबमन्दिरोमें ब्यवहृत होता है।

तुत्तुवाचिं ( स० पु० ) तुर्षाबिनिर्मत्रमय धेदे द्योदरादि-त्वात् साधु । तुर्षा भजन, बन्दो बन्दो भजन करनेको जिया ।

तुत्त ( स० पु० ) त दति पोड़यन्मिन त द-बक । १ त् दुदेति । २ १ । १ प्रसूद, प्यर । २ पन्नि घाम । ३ कचनमद । ४ मोलहक मोलका पोवा । ५ सूफैमा, झोटे इत्तावकी । ६ उपचातुबिधिय, तुतिया । ७ सके स कृत प्याय—नोसाखन हरिताम्र, तुम्बक, मयूपोवक तामगर्भ, पचतोडिव, मयूरतुथ, गिखि-कपड, मीक, तुत्ताखन, गिखिपोव, विनुचक, मय रक, मृतक मूपातुत्त, चतामद घोर डिसार । इसमें तबिका भाव बीड़ा हो है। इसमें पन्थान्क इत्थ ल हुक है, इसीसे इसमें दूरी दूररि मुच मो है। इसको शुच—घारलुङ्क, कट्ट, खयायरस, बमनकारक, कतु खिलनगुचुच, मीदक, योतबोय, पक्षुवा हितकर एक कर्षयित्त बिय, पयगरो, कृष्ट, घोर कपुभायक है। ( कान-४ ) रनेन्द्रसारक पदके मतने इसकी योधन-प्रकाशो इस तरह है—जिन्को घोर कपुतरको मोटसे तुतिया पील कर उससे दम मातोमिने एक मागके बरा कर सुझामा मिनाते घोर म्दु पुटमें पाक करते हैं। इसके बाद सेन्थक लकचके साथ महु दे कर मुट देनेसे वह बिहद होता है।

दूररि प्रकारसे—जिन्को बटके साथ तुतिया पोसने घोर लसमें शतुर्बांय महु घोर सुझामा मिना कर तोन बार मुट देनेसे यमन घोर बमिहर यति रहित होनेसे मुह हो जाता है। शोबनको दूररो रोति—तुतियामि उसका पर्याय यन्मक मिनाकर बार दण्ड पाक करते हैं। यमन घोर भ्रमयति-रहित होनेसे पाक मिह होता है। तुतियाके शुच—कट्ट, घार, खयायरस, विपद, कतु, खिलन, बिरेचक, पाक्षुप कपु, लमि घोर विपामयक है। ( रसेवकारसं )

तुत्त ( स० लो० ) तुत्तमेव धार्ब कन् । तुत्त, तुतिया ।

तुत्ता ( स० लो० ) तुत्त-टाप् । १ मोनो उच, नामका पोवा । २ सुद्वैता, झोटे इत्तायपो ।

तुत्ताखन ( स० लो० ) तुत्तस तत् पचनकेति कर्मधा० । उपचातुबिधिय, तुतिया, मोसाकोवा ।

तुत्त (सं० पु०) तु यत् तुदायक । द्यो० साधु । १ इनन कर्ता, मारनेवाका, कतक खरनेवाका । २ ब्रह्म । ३ दक्षिणामिनायक, ब्रह्मकप खलिय मदे ।

तुदन ( स० पु० ) १ क्वा देनेको जिज्ञा पोड़न । २ क्वाया पोका । ३ तुमाने या गङ्गामेको जिया ।

तुदादि ( स० पु० ) चातुपबबिधिय । इस पचको धातु के बाद 'स' जाता है। 'तुदादिन्व' ब' इस 'स' प्रकयके होनेसे शुच लगे होता, इसीसे इसका नाम चतुच कृपा है। गिषेन निररक बाद खरने रेको ।

तुन ( हि० पु० ) एक बहुत बड़ा पेड़ । तुनि रेको ।

तुनकामीन ( ध्य० पु० ) झोटा ससुद ।

तुनकी ( जा० लो० ) एक तरहकी खद्या रोटे ।

तुन्तुनो ( हि० लो० ) तुन तुन यन्म देनेवाका एक प्रकार का बाजा ।

तुनि—१ मन्नात्रने योदानरो जिरीको एक जमींदारोका तहलोन। यह पचा० १० ११ घोर १० १२ स० तया दिया० ८२ ८ घोर ८२ १६ पु०में बयकित है। मूर्प(भाप २१६ बर्गमोन घोर लीकस प्ला १८०६२के सममग है। इसमें एक शहर घोर ३८ ग्राम खयते हैं। तहकोलका पबिजाय पकाइ घोर कपुलके पाष्वादिता है।

२ रक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० १७' २२' ३०" और देशा० ८२' ३२' ५०" मन्द्राजसे ४२५ मीलको दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ८८४२ है।

तुनी ( हिं० स्त्री० ) तुनका पेड़।

तुनीर ( हिं० पुं० ) वृणीर देखो।

तुन्तुभ ( स० पुं० ) सर्षपहृत्, सरसीका पौधा।

तुन्द ( स० स्त्री० ) तुदतोति तुद दन् ( अन्दादयश्च । उण् ४।६८ ) उदर, पेट।

तुन्दकूपिका ( स० स्त्री० ) तुन्दस्य कूपिकेव । कुड्र कूप, नाभि, टुडो।

तुन्दकूपो ( स० स्त्री० ) तुन्दस्य कूपोर्यस्य । नाभि, टुडो।

तुन्दपरिमाजं ( स० त्रि० ) तुन्दं परिमष्टि तुन्दं परि-सृज-क तुन्द परि-सृज-अण् । मन्द, सुस्त । २ अलस, अलसी।

तुन्दसृज ( स० त्रि० ) तन्दं माष्टि-सृज-क।

तुन्दपरिमाजं देखो।

तुन्दवत् ( स० त्रि० ) तुन्दं वियति अस्य । तुन्द-मतुप् ।

तुन्दिल, तौदवाला, निकला हुआ पेटवाला।

तुन्दादि ( स० पुं० ) पाणिनिकथित शब्दगणविशेष, इस तुन्दादि शब्दके बाद अस्यर्थमें इलच् प्रत्यय आता है।

तुन्दि ( स० स्त्री० ) तुद-इन् प्राङ्लकात् तुमच् । १ गन्धर्व विशेष एक गन्धर्वका नाम। (स्त्री०) २ नाभि, टुडो।

तुन्दिक ( स० त्रि० ) अतिप्रथितं तुन्दमुदर मस्यस्य तुन्द-ठन् । विशाल जठरयुक्त, ब्रीदवाला, बड़े पेटवाला।

तुन्दिकर ( स० पुं० ) तुन्दिकरोति क-अव् । तुन्दिल, बड़े पेटवाला।

तुन्दिकफला ( स० स्त्री० ) खीरेको बेल।

तुन्दिका ( स० स्त्री० ) तुन्दिक-टाप् । नाभि।

तुन्दित ( स० त्रि० ) तुण्डिल, सिसको नामो निकलो हो।

तुन्दिन ( स० त्रि० ) तुन्दोऽस्तस्य इनि। तुन्दयुक्त, निकले हुए पेटवाला।

तुन्दिभ ( स० त्रि० ) तुन्दि वृद्धा नाभिरस्यस्य तुन्दि-भ।

तुन्दिगलिवटेर्मः । पा ५।२।१३८ । तुन्दिल, तौदवाला।

तुन्दिल ( स० त्रि० ) तुन्दकस्यास्ति तुन्द-इलच् । तुन्दा-दिभ्य इलच् । पा ५।२।११७ । स्थूलोदर, बड़े पेटवाला।

तुन्दिकफला ( स० स्त्री० ) तुन्दिलं वृद्धत्फलं यस्याः । त्रिपुपो, खीर।

तुन्न ( स० पुं० ) तुद-क्त । १ नन्दि, तुनका पेड़ । २ फटे हुए कपड़ेका टुकड़ा। ( त्रि० ) ३ व्यथित, दुःखित।

४ छिन्न, कटा या फटा हुआ।

तुन्नकारिका ( स० स्त्री० ) भूम्यामलकी, भृश्रावना।

तुन्नवाय ( स० पुं० ) तुन्नं छिन्नं वयति तन्न-वै-अण् । सौचिक, कपड़ा सोनेवाला, दरजी।

तुन्नसेचनी ( स० स्त्री० ) तुन्नं छिन्नं सीचतेऽनया सिच् कारणे ल्युट्-डोप् । सूचोभेद, एक प्रकारका दरजी।

तुपक ( हिं० स्त्री० ) १ छोटी तोप। २ बन्दूक, कडाबोन।

तुफंग ( हिं० स्त्री० ) १ इवाई बन्दूक। २ एक लम्बो नली। इसमें मट्टो या चाटेको गोलिएया तथा छोटे तोर आदि डाल कर फूंकके जोरसे चलाए जाते हैं।

तुभना ( हिं० त्रि० ) स्तब्ध रहना, ठक रह जाना।

तुम ( हिं० सर्व० ) 'तू' शब्दका बहुवचन।

तुमकूर—१ महिसुर राज्यका एक जिला। यह अक्षा० १२' ४५" और १४' ६" ३०" तथा देशा० ७६' २१" और ७७' २८" पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४१६८ वर्ग मील है। इसके उत्तरमें मन्द्राजके अनन्तपुर जिला, पूर्वमें कोलर और बंगलूर जिला, दक्षिणमें महिसुर जिला और पश्चिममें चितलद्रुग, कडूर तथा हसन जिले हैं।

जिलेका पूर्वीय भाग छोटे छोटे पहाड़ोंसे भरा है, पर्वत उत्तरसे दक्षिण तक फैले हुए हैं। यों तो यहाँ अनेक नदियां प्रवाहित हैं, पर जयमङ्गली और शिमशा ये ही दो प्रधान हैं। यहाँका जलवायु बहुत मनोरम तथा स्वास्थ्यकर है। जिलेका दक्षिणी भाग बहुत कुछ बंगलूर जिलेसे मिलता जुलता है। वार्षिक वृष्टिपात ३८ इंच है।

कहते हैं, कि प्राचीन कालमें यह स्थान गङ्गवंशके अधिकारमें था। पीछे यह होयसल राजवंशके अधिकारमें आया। वे अधिक दिन तक राज्य न कर पाये। कालक्रमसे यह जिला विजयनगरके अधीन आ गया। विजयनगरके अधःपतन होने पर १६३८ ई०में बीजापुरराजने इस पर घपना पूरा देखल जमाया और इसे शिवाजीके पिता शाहजीके निरोक्षणमें

बोड़ दिया। १६८० ई० में मुगलोंने इसे जीता और मोरारि राजधानी स्थापित की। मुगलोंने पहले यहाँ खान मन्तार बर्षों के लगभग रखा। पीछे यह १७५० ई० में महाराष्ट्र के शाह सया, सिक्किम दो बर्ष बाद को लकीने पुनः ध्वि को जाने पर मुगलोंने प्रत्यर्पण किया। मन्त्रि टूट जाने पर १७६६ ई० में महाराष्ट्र के फिर से इसे अपने अधिकार में कर लिया। बहुत दिनों तक वे इसका भोग न कर सके। १७७४ ई० में टोपू सुल्तानने इस पर अपना अधिकार जमा लिया।

तुमहरको भोजन म्या भगभग ६०२१२२ है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान, ईसाई तथा मन्थान्य जातिये लोग रहते हैं। हिन्दुओंको न क्या लक्ष्ये अधिक है। इसमें १८ गहर और २०५२ ग्राम हैं। जाम, चना, ईश, बट, रायो और मोन यहाँके प्रधान उत्पाद-द्रव्य हैं। यहाँ सुतके मोटे कपड़े, कस्यन, रम्मे नारियलके रीमे तथा कारोके रमनका सूत प्रसृत होता है। दक्षिण महाराष्ट्रके ये ही त्रिलोमें को कर बहुरूपी पूजा तक गई है।

राजधानीको अधिकारके लिए यह जिला पाठ तासुकी-में विभक्त है। डिपटी कमिश्नर जिसेके प्रधान मानी जाते हैं। इसे पनेके उपविभागोंमें बाँटे कर हर एक उपविभाग को एक एक महकागे कमिश्नरके अधीन रखा गया है।

१ तुमहर जिलेका पूर्विय तासुक। यह जिला ११ ० घोर ११ १२' उ० तथा ७६ १८ घोर ०० २१ पूर्विके मध्य परबन्धित है। मूर्परिमात्र ३५१ वर्ग मील घोर भोजन म्या प्रायः १००१११ है। इस तासुकमें १ गहर और ३०० ग्राम लगेते हैं। इसका पूर्विय भाग बङ्गल तथा पञ्जाबमें परिदूक है। बङ्गाली लालीन बहुत उबंश है, घत प्रति बर्ष पञ्ची कलन होती है। सुपाने तथा नारियलके पैक मय बगल नगर धामि हैं।

२ पठ तासुकका एक गहर। यह जिला ११ २१ ४० घोर म्या ०० ६ पूर्विके मध्य ३३ मील उत्तर पश्चिममें परबन्धित है। जनन म्या ११८८८ के लयमय है। यह गहर एक उच्च स्थान पर बसा हुआ है। इसके चारों ओर क्षेमे घोर तासुकें वन हैं। प्रवाट है जि जल-मान गहर महिहरक मडे जाला धरसु लमक एक म्पत्तिदारा स्थापित हुआ है। यहाँ १८०० ई० में म्ब निम पाकिटो कायम हुई है।

तुमको (हि० खो०) १ बहए मोन कर्हा सुपा धन। २ यह पाठ को सुमे मोट कर्हा की लोमन्ध कर के बनाया जाता है। ३ म्बे कर्हा एक बाजा जिसको मुहमे म्बूक कर बजाते हैं।

तुमतडाक (हि० खो०) एववण रेके।

तुमसर—मध्यप्रदेशके मन्जारा तहसील घोर त्रिलोका एक गहर। यह जिला २१ २१' उ० घोर ७८ ३६ पूर्विके मध्य मन्जारा गहरके २० मील घोर बम्बईमें ६० मीलकी दूरी पर परबन्धित है। जनन म्या प्रायः ८१६ है। यहाँ १८६० ई० में म्बु विविधजिदो स्थापित हुई है। यह एक प्रधान वाणिज्यकेन्द्र है। गहरके चाम पाम धानको पञ्ची कलन लयती है। यहाँ बेलगाड़ोका कूद बढ़िया पड़िया तैयार होता है जो विदेश कर लाग पुर घोर बरारको भेजा जाता है। गहरमें एक वर्तमानु नर मिहिन म्बून एक वाणिजापोका म्बून तथा एक विधिखानम है।

तुमाना (हि० खि०) तुमानिका नाम बिनी वृहसे खराम।

तुमिनबटो—बम्बईके धारवार त्रिलोके पन्नात रामोबेधूर तासुकका एक छोटा गहर। यह तुम्हभद्रा नदीके किनारे रामोबेधूर गहरमें ११ मील दक्षिणमें परबन्धित है। भोजन म्या प्रायः ६१४ है। यहाँ जेबन दो विधा लय है।

तुमुतो (हि० खो०) एक प्रकारको बहिया।

तुमुन (म० खो०) तुमुन लम्बर। १ तुमुन, निनाका लोलाहन। २ अविद्याको एक जाति। इनका लकीन पुराणेमें पाया है।

तुमुन (म० खो०) तु मीत्र धातु, बाहुनधातु, मुनक। १ एवमकूल, लुगारिको कलन। २ धनि हथ, बडेकु-का पैक। ३ धातुन हुन, महरो लुड मीक। (वि०) ३ प्रबण्ड उष, तिब।

तुमुनयुड (म० वि०) तुमुन युड। धौगतर न धाम, धममान लुगारि।

तुम्ब (म० पु० खो०) तुम्बति मायकम्बर्धक तुम्ब धक्। पनातु लोको।

तुम्बक (म० पु०) तुम्ब-वृण। पनातु, मोषा, लोको। २ बन्धाक, धनिवा।

तुम्बर ( सं० स्त्री० ) तुम्ब तदाकारं राति रा क । वायु भेद, एक प्रकारका बाजा । २ तुम्बरु गन्धर्व ।

तुम्बरचक्र ( सं० स्त्री० ) तुम्बरं चक्रं, कर्मधा० । नरपति-जयचर्याक्त चक्रभेद । चक्र देखो ।

तुम्बर ( सं० पु० ) गन्धर्वभेद, एक गन्धर्वका नाम । तुम्बवन ( सं० पु० ) वृहत्संहिताके अनुसार एक देश । यह दक्षिणमें १२।१२।१४ नक्षत्रके मध्य अवस्थित है ।

तुम्बा ( सं० स्त्री० ) तुम्ब-टाप् । १ अलावु, कड़ुआ कड़ु । २ गवो, एरु प्रकारका जङ्गली धान । यह नदियों या तालोंके किनारे आपसे आप होता है ।

तुम्बि ( सं० स्त्री० ) तुम्बति नाशयति अरुचिं तुम्ब-इन् । अलावु, कड़ुआ कड़ु ।

तुम्बिका ( सं० स्त्री० ) तुम्ब-गवल् टापि अत इत्वं । १ अलावु, कड़ु । २ कटु तुम्बी, कड़ुआ कड़ु ।

तुम्बिनी ( सं० स्त्री० ) तुम्ब णिनि-डीप् । कटु तुम्बी, कड़ुआ कड़ु, तित लौकी ।

तुम्बी ( सं० स्त्री० ) तुम्बि-डोप् । १ अलावु, छोटा कड़ुपा कड़ु । २ कुलिक वृक्ष, वहेडे का पेड़ । ( रत्नमाला )

तुम्बीतेन ( सं० स्त्री० ) अलावुतेन, कड़ुका तेल ।

तुम्बापुष्प ( सं० स्त्री० ) तुम्बाः पुष्पमिव पुष्पमस्य । अलावु पुष्प, कड़ुका फूल ।

तुम्बुग ( सं० स्त्री० ) तुम्ब बाहुलकात् रुकः । अलावु फल, कड़ुका फल ।

तुम्बुकी—भारतवर्षीय एक प्राचीन आनन्द यन्त्र, चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक प्रकारका बाजा ।

तुम्बुगुठ—महाराष्ट्र ब्राह्मण जातिका एक भेद ।

तुम्बुर ( सं० पु० ) विन्ध्यपर्वतस्थित जातिभेद, विन्ध्य पहाड़ पर रहनेवाली एक जाति । ( हरिवंश ५ अ० )

तुम्बुरो ( सं० स्त्री० ) तुम्बरं आकारं राति रा क डोप पृथ्वादरादित्वादुत्वं । १ कुषकुरी, कुतिधा । २ धन्याक, धनिया ।

तुम्बुरु ( सं० स्त्री० ) १ धन्याक, धनिया । ( पु०-स्त्री० ) २ तपस्वीविशेष, एक तपस्वीका नाम । ३ एक जिन उपासकका नाम । ४ फलवृक्षविशेष । इसका बीज धनियेके आकारका पर कुछ कुछ फटा हुआ होता है । इसके संस्कृत पर्याय—शूलघ्न, सौरज, सौर, वनज, सानुज, धिज,

तीक्ष्णकल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णधातु, महासुनि, स्फुटस्य, सुगन्धि । इसके गुण—कफ, वात, शूल, शुद्ध, उदराधान, क्षमिनाशक और अग्निप्रदीपकारक है । भावप्रकाशके मतसे इसके पर्याय—सौरभ, सौर, वनज, सानुज और अम्यक । इसके गुण—तिक्त, कटुरस, कटु, विपाक, रुच्य, पण्यवोर्य, अग्निदीपि-कारक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, लघु, विदाही एवं वात-क्षैपिक रोग, चक्षुरोग, कर्णरोग, श्रोत्रगत रोग, शिरो-रोग शरीरका गुरुत्व, क्षमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, खास और झोड़ा प्रभृति रोग-नाशक ।

तुम्बुरु ( सं० पु० ) १ एक गन्धर्वका नाम । ये मधु अर्थात् चैत्र मासमें सूर्यके रथ पर रहते हैं । सङ्गोत विद्यामें ये विशेष पारदर्शी थे । इन्होंने ब्रह्माके निकट सङ्गोतविद्या सीखी थी । वे विष्णुके अत्यन्त प्रिय पार्श्व-चर थे ।

अद्भुत-रामायणमें लिखा है,—वे तासुगमें कौशिक नामके एक ब्राह्मण थे । वे वासुदेवके अत्यन्त भक्त थे और सर्वदा उन्हींका गुण गान किया करते थे । हरिगुण गानके सिवा उनका कोई दूसरा कार्य ही न था । वे विष्णुस्थल नामक अनुत्तम हरिचित्रमें जा कर वहाँ मूर्च्छनाके उत्तियोगमें तालवर्णसे पूरित अत्यन्त भक्तिके साथ हरिगुण करनेमें प्रवृत्त हुए तथा भिन्ना द्वारा जीवनयात्रा निर्वाह करने लगे । वरा पश्चात् नामक एक ब्राह्मण रहते थे । वे कौशिकका गान सुन कर सर्वदा उन्हें अन्न दान करते थे । जब कौशिकको अन्न-चिन्ता जाती रही, तब वे और भी हरिप्रभमें उत्तम ही कर हरिगुण गान करने लगे । पश्चात् भी उस गानको भक्तिपूर्वक सर्वदा सुनते थे । धीरे धीरे कौशिकके सत्विय, वैश्य और ब्राह्मणकुलोत्पन्न ज्ञान और विद्यामें अष्ट ७ शिष्य हो गये । पश्चात् समीको अन्नदान देने लगे । उसी स्थानमें मालव नामक विष्णुभक्तिपरायण एक वैद्य रहते थे । वे हृष्टचित्तसे हरिको प्रतिदिन दीपमाला प्रदान करते थे । मालती नामकी एक पतिव्रता स्त्री भी प्रोत-मनसे हरिचित्रके चारों ओर गोमय लेपन करती थीं । हरिके निमित्त कुशस्थलसे ५० ब्राह्मण आकर कौशिकके कार्य साधनार्थ वहाँ रहने लगे । क्रमशः यह गान अत्यन्त

कपड़ा बुनकर लपेटते जाते हैं। २ वह बोलन जिस पर गोटा बुन कर लपेटते जाते हैं।

तुरई (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी बेल। इसके लम्बे फलोंकी तरकारी बनाई जाती है। 'तुरही' देखो।

तुरक (हिं० पुं०) तुर्क देखो।

तुरकटा (फा० पुं०) सुसलमान। यह घृणासूचक शब्द है।

तुरकाना (हिं० पुं०) १ तुर्का जैसा। २ तुर्काका देश या बस्ती।

तुरकानो (फा० वि०) १ तुर्कीकी जैसी (स्त्री०) २ तुर्क की स्त्री।

तुरकिन (फा० स्त्री०) १ तुर्ककी स्त्री। २ तुर्कजाति को स्त्री।

तुरकिस्तान (सं० पुं०) तुर्क देखो।

तुरकी (फा० वि०) १ तुर्कदेशका। २ तुर्क देश सम्बन्धी। (फा० स्त्री०) तुर्किस्तानको भाषा।

तुरग (सं० पुं०-स्त्री०) तुरेण वेगेन गच्छति गम-ड। १ घोटक, घोड़ा। २ चित्त। (त्रि०) ३ शीघ्रगामी, तेज चलनेवाला।

तुरगगन्धा (सं० स्त्री०) तुरगस्यैव गन्धो यस्याः बहुव्री०। १ अश्वगन्धा, असर्गंध।

तुरगदानव (सं० पुं०) तुरगाकारः दानवः मधुली० कर्मधा०। केशी नामक दैत्य। यह दैत्य कंसकी आज्ञासे कृष्णको मारनेके लिये इन्द्रावनमें घोड़ेका रूप बना कर रहता था। इसके अत्याचरसे वह स्थान जन-प्राप्तिशून्य हो गया। दुरात्मा तुरगवेधी दैत्य गोपीको मारने लगा। यहां तक कि उसके डरसे समस्त धन कम्पित हो उठा। कोई भी दूसरी वार वन जानेका साहस न करता था। एक दिन वह दैत्य काल प्रेरित हो धीष-पत्नीमें प्रविष्ट हुआ। उसे देख घोषविष्टने भयभीत हो श्री-कृष्णकी शरण ली। केशी भी जपकी मुख किये, आख फँलाये, दांत दिखलाते, और बहुत जोरसे गरजते हुए कृष्णकी ओर अग्रसर हुए। बहुत देर बाद कृष्ण-ने उसे मार डाला। (हरिवं० ८० अ०)

तुरगप्रिय (सं० पुं०) तुरगाणां प्रियः, इ-तत्। यव, जी।

तुरगब्रह्मचर्य (सं० स्त्री०) तुरगस्यैव ब्रह्मचर्यं ततः स्वार्थे कन्। स्त्रीके अभाव हेतु अङ्गनात्याग रूप ब्रह्म-

चर्यभेद, वह ब्रह्मचर्य जो केवल स्त्रीके न मिश्रणके कारण ही हो।

तुरगमेध (सं० पुं०) तुरगीय मेधः इ-तत्। अश्वरचक, वह जो घोड़ेकी रक्षा करता हो।

तुरगरचक (सं० पुं०) तुरगस्य रचकः इ-तत्। अश्व रचक। (बृहत्सं० १५।२६)

तुरगलीलक (सं० पुं०) सङ्गीतका तालविशेष, सङ्गीत ढामोदरके अनुसार एक तालका नाम।

तुरगातु (सं० वि०) तुरेण गातु, गम वेदे गतु। १ शीघ्र-गमनकारक, जल्दी चलनेवाला। (क्तो०) तूर्णं गमन, जल्दी जानेकी क्रिया।

तुरगानन (सं० पुं०) तुरगस्य आननमिव आननमस्य। किन्नरभेद, एक प्रकारके देवता, जिनका मुख घोड़ेके जैसा और शेष अङ्ग मनुष्य जैसा हो।

तुरगारोह (सं० पुं०) अश्वारीही, घुड़सवार।

तुरगिन् (सं० त्रि०) तुरग वाहनत्वेनास्थस्य इति। अश्वारीही, घुड़सवार।

तुरगो (सं० स्त्री०) तुरगवत् गन्धोऽस्त्यस्य, अर्थात् आदि-त्वात् अच ततो ङोष्। १ अश्वगन्धा, असर्गंधा। २ अश्वो, घोड़ी।

तुरगोय (सं० पुं० स्त्री०) अश्वसम्बन्धीय।

तुरगुला (त्रिं० पुं०) कर्णफूल नामक कानके गहनेमें लटकाने जानेका लटकन, भ्रूमक, लोलक।

तुरगोपचारक (सं० पुं०) अश्वसादो, घुड़सवार। शनिके अश्विनोत्सवमें विचरण करनेसे घोड़ा, घुड़सवार, कवि, वैद्य और अमात्याको हानि होती है। (बृहत्सं० १०।३)

तुरङ्ग (सं० पुं०-स्त्री०) तुरेण गच्छति तुर-गम-सुच वा डिञ्च। १ घोटक, घोड़ा। (क्तो०) २ चित्त। ३ सैन्धव-नमक। ४ सातकी संख्या। (त्रि०) शीघ्रगामो, जल्दी चलनेवाला।

तुरङ्गक (सं० पुं०) तुरङ्ग इव कायति कौ-क। १ हस्ति-घोषावृत्त, बड़ी तोरई। स्वार्थे कन्। २ घोटक, घोड़ा।

तुरङ्गगन्धा (सं० स्त्री०) तुरगगन्धा देखो।

तुरङ्गगौड़ (सं० पुं०) गौड़रागका एक भेद। यह वीरे या रौद्र रसका राग है।

तुरङ्गहिणियो (सं० स्त्री०) तुरङ्गो द्विष्यतेऽनया तुरङ्ग-द्विष-वाङ् ० क्यु ङोष्। महिषो, भैंस।

तुरङ्गमिब (स० पु०) तुरङ्गमिब प्रिय, ३ तत्। यन्, जो।  
 तुरङ्गम (स० पु०-श्लो०) तुर मन्कति मन्-खच मुम्।  
 १ घोडक, घोड़ा। २ पित्त। ३ एक वृत्तका नाम।  
 इसका प्रयोग चरचर्म हो मगव पौर हो गुह होते हैं।  
 (सि०) ४ घोडगामो, अरबी चर्मबाका।  
 तुरङ्गमयाका (स० श्लो०) तुरङ्गमय प्राका यङ, ३ तत्।  
 पम्बयाका, हुङ्गसार।  
 तुरङ्गमिब (स० पु०) पम्बमेव।  
 तुरङ्गमय (स० पु०) तुरङ्गमय मन्कमय। पम्बमुका  
 कार किचरभेद, घोड़ेबाका सुबबाका किचर।  
 तुरङ्गमदन (स० पु०) तुरङ्गमय मदनमय। पम्बमुका  
 कार किचरभेद, घोड़ेबाका सुबबाका किचर।  
 तुरङ्गारि (स० पु०) तुरङ्गमय परि, ३-तत्। १ करबीर,  
 कर्मर। २ महिष, भेस।  
 तुरङ्गिका (स० श्लो०) तुरङ्गमय पाचारोस्तारणा।  
 तुरङ्ग-म्। देवदाको कटा चरचोब।  
 तुरङ्गिन् (स० सि०) तुरङ्ग माङ्गमोम पदमय। तुरङ्ग  
 दन्। पम्बारोहो, हुङ्गसार।  
 तुरङ्गी (स० श्लो०) तुरङ्गमय मन्धोस्तारणा पच मोरा  
 दिवात् डोय। १ पम्बमया, पचगन्ध। जातो डोय।  
 २ पम्बो, घोड़ी।  
 तुरय (स० श्लो०) तुर मावे क्,। चिप्र ममम, कन्दोधि  
 जानिको मिबा।  
 तुरय (स० पु०) तुरय मन्कामिवात् मावे चम।  
 जरा मोय।  
 तुरयसद् (स० सि०) तुरय-यद सिप,। जो कबुत बच  
 जाते हैं।  
 तुरत (सि० पम्ब०) तुरयच, मोर, यदपट।  
 तुरत—चिन्कोषि एक कवि। ३ १०५४ पूर्वमं विद्यमान  
 थे। सुजाचपरिचर्म इत्याद्याम प्राया है।  
 तुरपदे (सि० श्लो०) एक प्रकारकी चिकारै।  
 तुरपन (सि० श्लो०) एक प्रकारकी चिकारै। इतमं  
 कोडुको पदसे चम्पारैके बच यके काच कर मिबा जेते  
 हैं फिर निम्बसे हुए कोरको मोड़ कर तिरछे टांकोधि  
 म्मा देते हैं। सुडियाचन।  
 तुरपबाणा (सि० सि०) तुरपाना, तुरपानिका नाम  
 पूषाके बरामा।

तुरय्या (सि० सि०) तुरय्याको।  
 तुरपया (सि० सि०) सुडियाणा।  
 तुरम् (स० पम्ब०) तुर यम्। जरा, कन्दो।  
 तुरम (सि० पु०) तुरको।  
 तुरमतो (सि० श्लो०) एक चिकारैको नाम जो तरङ्ग  
 मिचर करतो है। इसका पाचार नामके छोटा  
 होता है।  
 तुरमनो (सि० श्लो०) मारियल ऐतनीकी ऐतो।  
 तुरया (स० सि०) तुर्य मोर, कन्द।  
 तुरय् (स० श्लो०) जरा, मोर।  
 तुरय्यिय (स० श्लो०) तुरय-या यत्। तुर्ययेय।  
 तुरयो (सि० श्लो०) एक प्रकारका बाका जो सुबके  
 प्क कर बनाया जाता है।  
 तुरा—पासामने मारीचिल त्रिकोका एक महर। यह  
 पचा २५ ३१ व० पौर देया ८० १४ पूर्वमं चरचिन  
 है। काकस फ्या प्राय १३०५ है। यहाँको पाचबना  
 गरम पौर फ्यासुबकर है। जहाँ एक छोटा चारापार  
 पौर एक पक्षताक है।  
 तुराय—एक प्रसिद्ध हिन्दो कवि। इनकी रम-  
 पयकी कविता पराहमोय है। उदाहरणय एक मोचे  
 देते हैं—  
 "आलोरी जाके बहन्त उदाचन।  
 बापेरी कवितां पर हिन्दिमिबके मन्क द्द पार्श्वे वचन देणवन।  
 मई महर मई म्दु कन्धि मई मई मई कवितां विनन्धे रिवाचन।  
 मन्की बहन्त पिवा बाचनमं जायो मो वर क्का मचारन ४  
 मई उदाच विन की क्का म्बहे न दोरीके पूय मचारन ४"  
 तुरायय (स० श्लो०) तुरय-य तुरय पम्ब। १ पचङ्ग।  
 २ यदमिद, एक प्रकारका यक जो जैत य्का पदमो पौर  
 है याच य्का इमोको होता है। ३ परायय, पासक,  
 सोमता।  
 तुरावत् (सि० सि०) देवमुक, मंमनाका।  
 तुरावतो (सि० सि०) मंमनाको, म्बोके पाच  
 बहनेबाको।  
 तुरावान् (सि० सि०) तुरयय देको।  
 तुरावाट (स० पु०) कन्द।  
 तुरयाच (स० पु०) तुर म्बति चरचयति चरचिच,

पुराणमिथ (स० पु०) पुराणमिथ, ६ तत्। यन्, जो।  
 पुराणम् (स० पु०-ओ०) पुराणमिथ मन्-व्यय सुम्।  
 १ शीटक, घोड़ा। २ चित्त। ३ एक सप्तका नाम।  
 इससे प्रत्येक चरचरमे दो गण्य धीर दो शुद्ध होते हैं।  
 (ति०) ४ बीजगामो, अर्द्धी चन्नेवाला।  
 पुराणमयाला (स० ओ०) पुराणमय मयाला यद्, ६ तत्।  
 पययाला, हुड़कार।  
 पुराणमिथ (स० पु०) पययतेव।  
 पुराणमय (स० पु०) पुराणमिथ मयमय। पयमयुक्ता  
 कार विचरमेद, घोड़ेवाला सुनवाला विचर।  
 पुराणमयन (स० पु०) पुराणमिथ मयनमय। पयमयुक्ता  
 कार विचरमेद, घोड़ेवाला सुनवाला विचर।  
 पुराणारि (स० पु०) पुराणमय परि- ६-तत्। १ अरधोर,  
 अनेर। २ मद्यिप, भैस।  
 पुराणिका (स० ओ०) पुराणमय पाकारोऽप्यप्या।  
 पुराणम्। टिकदाको कता, चरचरेव।  
 पुराणिक (स० ति०) पुराणमय पाकारोऽप्यप्या। पुराण  
 मय। पयकारोको सुदुधवार।  
 पुराणी (स० ओ०) पुराणमय मयोस्तप्या। पय गोरा  
 दिलात् डोय। १ पयमय्या पयगम्य। जातो डोय।  
 २ पयो, घोड़े।  
 पुराण (स० ओ०) पुराणमय मय, विप्र गमन, अस्वोपे  
 कामीको मिया।  
 पुराण (स० पु०) पुराणमय कथादित्यात् मात्रे वय।  
 खरा मीत्र।  
 पुराणसदृ (स० ति०) पुराणमय सद-द्वय। जो बहुत बय  
 जाति हैं।  
 पुराण (वि० पय०) लयय, मीत्र, चदपट।  
 पुराण—विन्दोके एक कवि। से १०१६ ई०में विद्यमान  
 थे। सुमानचरित्रमें इसका नाम पाया है।  
 पुराणरि (वि० ओ०) एक प्रकारको सिद्धारि।  
 पुराण (वि० ओ०) एक प्रकारको सिद्धारि। इसमें  
 जोड़ोको पदके सम्बन्धमें कथ टांके काय कर सिद्धा जेते  
 हैं विर निबन्धे हुए धोरको मीढ़ कर तिरछे टांकोके  
 अभा देते हैं। मुड़ियावन।  
 पुराणनामा (वि० द्वि०) पुराणना, पुराणनामा काम  
 । मूयैके अयना।

पुराणना (वि० द्वि०) पुराणना देको।  
 पुराणना (वि० द्वि०) मुठियाना।  
 पुराण (स० पय०) पुराणमय। खरा, अस्वो।  
 पुराण (वि० पु०) पुराणो।  
 पुराणतो (वि० ओ०) एक चिड़िया जो बाज जो तरफ  
 मिथार करतो है। इसका पाकार बाजसे छोटा  
 होता है।  
 पुराणतो (वि० ओ०) मारिवल ऐतनेको ऐतो।  
 पुराण (स० वि०) मूय, मीत्र, अन्द।  
 पुराण (स० ओ०) खरा, मीत्र।  
 पुराणिय (स० ओ०) पुराणमय यत्। मूयपेय।  
 पुराणो (वि० ओ०) एक प्रकारका बाजा जो मुयके  
 पृथक् कर बजाया जाता है।  
 पुरा—पासामने गरीबिक त्रिसिका एक शहर। यह  
 पय २५ ११७० घोर देमा ८० १४ पू०में अवस्थित  
 है। साकय कला प्राय १३०१ है। यहांको पादकवा  
 गरम धोर पलाक्यकर है। यहां एक छोटा आरागर  
 धोर एक पयताक है।  
 पुराण—एक प्रसिद्ध हिन्दो कवि। इसकी रच-  
 पयको कविता सराहनीय है। उदाहरणार्थ एक नीचे  
 देते हैं—  
 “आगरी जाने बधुत सुखव।  
 आगरी कवितां वन द्विक्रियके नय नय रंगको बहन रैगावय।  
 नई बहा नई चद्रु कयो नई नई नई कवितां विराको रिहावर्न।  
 अणको बकत पिवा मानमे जायो सो पर अय अर्पण इ  
 मरे सुख पिच की छुवा काहे बहोटीकी चूद नवावय इ”  
 पुराणय (स० ओ०) पुराणमय तय पयमय। १ पयसु।  
 २ बधुपेद, एक प्रकारका कव जो पैत्र यद्धा पयमो धोर  
 नैसाक यद्धा इमोको होता है। ३ पुराणय पाणक,  
 योगता।  
 पुराणय (वि० वि०) पयसु, अयना।  
 पुराणतो (वि० वि०) अयनाको, अयनके साय  
 बहनेवालो।  
 पुराणाम् (वि० वि०) पुराणमय देको।  
 पुराणाय (स० पु०) इन्द्र।  
 पुराणाय (स० पु०) पुराणमय अयनय चक्र-विच



क्षिप् । अन्येषामपि दृश्यन्ते इति सूत्रेण दौघः । इन्द्र ।  
तुरादि शब्दके वाद सङ्घातुका जव पाठ रूप होगा  
तभो सह धातुका स पत्व होगा, पाठ रूप नहीं होनेसे  
नहीं होगा । तुरापाठ् जनापाठ् प्रभृतिका स पत्व हुआ ।  
किन्तु त्वरासाह् जनासाह प्रभृतिका स पत्व नहीं हुआ ।

तुरि—एक शुद्धप्रिय जाति । अफगानिस्तानकी निकट  
वर्ती कुरम नदीके किनारे इस जातिका वास है । इन  
लोगोंमें ५५०० योद्धा हैं । वे लोग दूसरो दूसरो  
जातिके साथ मिल कर मोरञ्चाइ उपत्यकामें बहुत  
उत्पात मचाते हैं । यह अंगरेज-होपो हैं और सर्वदा  
अंगरेजाधिकृत कोड़ाट जिलेमें लूट-पाट किया करते हैं  
तथा दूसरो जातिको भी अङ्गरेजोंके विरुद्ध उत्तेजित  
करते हैं । १८५३ ई०में कप्तान कोकने एक टल तुरि  
विद्रोहियोंकी, जव वे नमककी खान खोदने जा रहे थे,  
पकड़ा था । १८५४ ई०में दोनोंमें सन्धि हो गई, लेकिन  
घोड़े समयके बाद २००० तुरियोंने मोरञ्चाइ पर आक्रमण  
कर सन्धि तोड़ दी । काबुल-युद्धमें ( १८७८—८०  
ई०में ) इन्होंने कोई उपद्रव नहीं किया था ।

दासदपुत्र, विजानोट, नोक, लोकायेट, उदुर आदि  
स्थानोंमें एक टल तुरि वास करता है । ये लोग अपने  
ऊँटकी किराये पर देते हैं किन्तु बाउरो और खेज़ारों-  
की नाईं चोरीमें प्रवृत्त होनेके कारण ये लोग शैतानके  
वंशधर तथा भूत-प्रेत कहलाते हैं ।

तुरि ( सं० स्त्री० ) तुर-इन् । तन्तुवायका काष्ठादि-  
निर्मित वयन-साधन, जुलाहोंका काठका बना हुआ  
तोड़िया नामका औजार ।

तुरी ( सं० स्त्री० ) तुरि-डोप । १ तुरि, जुलाहोंका तोरिया  
या तोड़िया नामका यन्त्र । पर्याय—तन्त्रकाष्ठ, तुली,  
तुलि । २ जुलाहोंकी कूचो, हल्यो । ( त्रि० ) ३ त्वरायुक्त,  
वेगवाली ।

तुरी ( हिं० स्त्री० ) १ घोड़ो । २ बाग, लगाम । ( पु० )  
३ अश्वारोहो, सवार । ( अ० स्त्री० ) ४ फूलोंका  
शुष्का । ५ मोतीकी लड़ोंका भन्ना जो पगड़ीमें कानके  
पास लटकाया जाता है ।

तुरीय ( सं० त्रि० ) तुरीय अच् चतुर्णां पूरणः चतुर छ् ;  
भायलोपश्च । १ गतियुक्त, जिसमें चाल हो । २ चतुर्थ-

का पूरण, चौथा । ३ तारक, तारण वा उद्धार करने-  
वाला । ( पु० ) ४ चतुर्थी वैश्वरौरूप वाक्य ।

वेदमें वाणो वा वाक्के चार भाग किये गये हैं—  
परा, पश्यन्ति, मध्यमा और वैश्वरो । वैश्वरो वाक्का  
नाम तुरीय है । नादात्मक वाणो सूनाधारसे उठो है ।  
इसका निरूपण नहीं हो सकता । इसीसे इसका नाम  
परावाक् हुआ । परावाक्को योगो भोग ही ज्ञान  
मकते हैं, इस कारण इसे पश्यन्तिवाक् कहते हैं । फिर  
जव वाणो बुद्धिगत हो कर बोलेकी इच्छा उत्पन्न  
करतो है, तब उसे मध्यमा कहते हैं । अन्तमें जव वाणो  
सुषुम्न आ कर उच्चारित होती है, तब उसे वैश्वरो या  
तुरीय कहते हैं । इनमेंसे परादि तीन वाक्य हृदयके अन्त-  
वर्त्तित्वके लिए भोतर रखे गये और चौथे तुरो वाक्य सब  
कोई उच्चारण करने लगे । ( ऋक् १।६।४।५ प्राण )  
५ सर्वधारभूत अनुपहित चैतन्य परब्रह्म ।

वेदान्तभारमें इसका विषय इस प्रकार लिखा है,—जव  
वा तत्रस्थ आकाश और वृक्ष वा तत्रस्थित आकाश एवं  
जलाशय वा तत्रत प्रतिविम्बस्थित आकाशादिका आन्वय-  
रूप अनुपहित महाकाशकी नाईं यह समष्टि, व्यष्टि,  
प्रज्ञान, और तदुपहित चैतन्योका आधार जो अनुपहित  
चैतन्य है, उसे तुरीय ब्रह्मचैतन्य कहते हैं । इस  
विषयमें श्रुति प्रमाण इस प्रकार है—मद्बलस्वरूप अहि-  
तोय चैतन्यकी चौथा मानते हैं । वे हो आत्मा हैं, वे हो  
विज्ञेय हैं । जिस तरह दग्ध लोहपिण्डके साथ अभिन्न-  
रूप अग्नि “अयो दहति” इस वाक्यका वाच्य है, लोहपिण्ड-  
भिन्नरूपमें उसका लक्ष्य कहते हैं, उसी तरह यह समष्टि,  
व्यष्टि, अज्ञान, और तदुपहित चैतन्यके साथ अभिन्नरूप  
यह तुरीय चैतन्य “तत्त्वमसि” इत्यादि महावाक्यका वाच्य  
और भिन्नरूपमें महावाक्यका लक्ष्य होता है ।

तुरीयक ( सं० पु० ) तुरीय स्वार्थे क । चतुर्थ, चौथा ।  
तुरीयन्व ( सं० पु० ) सूर्यकी गति जाननेका एक यन्त्र ।  
तुरीयवर्ण ( सं० पु० ) तुरीयः वर्णः कर्मधा० । चतुर्थे  
वर्ण, शूद्र ।

तुरूप ( हिं० पु० ) ताशका एक खेल । इसमें कोई एक  
रंग प्रधान मान लिया जाता है । इस रङ्गका छोटोसे छोटो  
पत्ता भो दूसरे रङ्गके बडेसे बडे पत्तेको मार सकता है ।

तुवरुण ( हि० जि० ) प्रायः वैष्णो ।

तुवरुण—महिषसुरेण विततदुग्ग जिनेषि पत्तनगतं वितत  
दुग्ग तासुत्तका एक शहर । यह पचा० १४ २४ ००  
घोर देशा० ०१ २१ पू० विततदुग्ग शहरसे ११ मील  
उत्तरपूर्वमें अवस्थित है । लोकसंख्या लगभग २०२४  
है । यहाँ सुती कपड़ा घोर कम्बल तैयार होता है ।  
१८८८ ई०में म्यू निम्पिसिडेो स्थापित हुई है ।

तुवरुण ( तुर्की )—एशिया घोर यूरोपके पत्तनगत एक  
देशका नाम । यह देश प्रकान्त हो मार्सेमि विभक्त है  
एशियाक तुवरुण घोर यूरोपीय तुवरुण । इन दोनोंमें  
एशियाक तुवरुण ही बड़ा है । एशियाक तुवरुण ही एशिया  
का पश्चिमांत देश है । इससे उत्तरमें इज्जनागर  
घोर एशियाक अरबिया, पूर्वमें पारस्य दक्षिणमें परब घोर  
मूलज-सागर तथा पश्चिममें मूलज-सागर है । धाकारमें  
यह देश भारतवर्षसे आधा है । इस प्रदेशमें निम्न  
लिखित प्रदेश वर्गीत हैं—एशिया-सागर, मिरावा  
पार्सेनियाके कई शय, कुर्दिस्तान, पल बेजिराह ना  
मिकोरोर्देमिया, ईराक परबो ( वा काकहिया ) घोर  
परबिस्तान ( वा तुवरुणविज्जतपरब ) ।

बागसपुरापरमें भारतवर्षको उत्तरोत्तरीमा जिन  
तुवरुण देशका उत्तरेक है, वह न बरुण नहीं है वह  
पहले सुविज्ञान नामसे प्रसिद्ध है ।

एशिया-सागर (बोटा एशिया)—यह एक बड़ा उप-  
द्वीप है घोर इज्ज-सागर तथा मूलज-सागरके बीचमें पन  
बिस्त है । इससे पच्छिमर मार्सेमि क हो मात्सुमि है ।  
इस प्रदेशको प्रधान नदियाँ बिबिस इमांज (बोहितनयो  
इसका प्राचीन नाम काबिज है ) घोर कुरेरिया इज्ज  
नागरमें जा गिरो है । सिन्दर बरुमूज घोर सरावत  
नदियाँ निबण्ड उपसागरमें गिरो है । यदोरा नामक  
खानमें सोमय जाग पाया जाता है । इनके रोर्षे इस  
देशमें शास बनता है । यह प्रदेश पुन पश्चिममें आना  
तोखिवा, मज्जकर्म कायामानिया उत्तरपूर्व में तुवरुण  
वा शिबक इन कई एक मार्सेमि विभक्त है । आरना इस  
देशमें सबसे बड़ा शहर घोर बाबिबिज्ज नाम है । स्कुडारि,  
यदोरा, गिनोधि बिबिबन्द, कोनेइ (प्राचीन नाम पार-  
कोनियम), गिबस प्रसूति नगर प्रधान हैं । इसके पश्चिमक  
देशा पत्तरीय ही एशियाके सब पश्चिम पत्तरीय है ।

मिरोया एशिया सागरके दक्षिण तथा पारबके उत्तरमें  
अवस्थित है । ईनाद्योका पवित्र खान पसेस्ताइन इसो  
मिरोयाके मज्ज पड़ता है । यो इस प्रदेशका पश्चिम  
विभाग है । लीबमसेम इनका प्रधान नगर है । शिबज्जतम  
शहरमें घोडका मज्ज बुरा था । मिरोयाको राजधानी  
पसेयो है । पन्तिज वा पान्ताबिया मैटा (प्राचीन  
सिदीन ) तावर, एकर, बायफा, गाजा प्रसूति कई एक  
बिख्यात शहर हैं ।

पार्सेनिया प्रदेश इज्जसागरके दक्षिणपूर्वमें पन  
बिस्त है । इसका समस्त भाग पारबे तुवरुणके अन्तर्गतमें  
जा पोषे कस तुवरुण तुवरुण बाद इसका पूर्वाय कस  
राजको अर्पण किया गया । इससे पूर्वमें पारावट परंत  
पारवट कस घोर तुवरुण इन तीन बड़े नामान्त्रोके सोम-  
ज्जक्य दखमयमान है । इसको गिबुर डेडु खोम तथा  
वर्कसे ठको है । इस प्रदेशमें सुखेतिम नने दक्षिणको  
घोर कुर घोर परस पूर्वको घोर वा कास्वोड अर्द्धमें  
गिरोते है । पार्सक्य इसको राजधानी है घोर माननवर  
मानज्जकडे किनारे अवस्थित है ।

कुर्दिस्तानका प्राचीन नाम असीरोया है । यह  
प्रदेश पार्सेनियाके दक्षिण ताइयोस नदीके उत्तरमें पड़ता  
है । यहाँके लोग कुर्द नामसे प्रसिद्ध हैं । वे अरबियोंको  
हैं, किन्तु दख्खुबशायो घोर मजानकस्यमाक हैं ।  
इन लोगोंका धर्म सुससमानधर्म है यद्यपि, किन्तु उनमें  
प्रंतको उपासना घोर पन्तिजो उपासना मिसित है ।  
यहाँ ताइयोसके किनारे प्राचीन नगर मिर्मोका  
अ नावयेव देखनेमें आता है ।

अन-की बिबिबका प्राचीन नाम सेवोपटिमिया है ।  
यह कुर्दिस्तानके दक्षिण ताइयोस घोर सुखेतिम इन दो  
नदियोंके बीचमें अवस्थित है । ताइयोसके किनारे  
सीजन नगर इसको राजधानी है । यहाँ प्राचीन खानमें  
बहुत मजोम कपड़ा तैयार होता था जिसे मज्जिबिज  
( मसहिन ) कहते हैं ।

ईराक-परबो प्रदेशका प्राचीन नाम काकहिया वा  
बाबिलोनिया है । यह पारवट सागर । निज्जट अवस्थित  
है । यहाँ यह प्रदेश बहुत उत्तरका । किन्तु पहलो  
रुका अरबिया कसुमि हो गया है । बागदाद नगर

इसको राजधानी है इसी नगरमें पहले खलीफाओंको राजधानी थी। युफ्रेतिसके किनारे प्राचीन नगर बाबिलनके ध्वंसावशेषके मध्य वर्तमान हिक्केह नगर अवस्थित है। युफ्रेतिस और ताइग्रोस नदीने इस प्रदेशमें मिलकर साठ अल्-अरब नाम धारण किया है। इस युक्त-नदीके किनारे वसीरा या बजरा नगर अवस्थित है। इस नगरका वाणिज्य बहुत फैला हुआ है। यहाँका गुलाबका फूल बहुत उमदा होता है।

यूरोपीय तुर्क—इसके उत्तरमें अट्रिया, सर्भिया और रुमानिया, पूर्वमें कृष्णसागर, दक्षिणमें इजियन-सागर और शोम तथा पश्चिममें आड्रियाटिक सागर है। टानियुव नदी उत्तरमें शाखा प्रशाखाओंके साथ संपूर्णदेशमें बहती हुई कृष्णसागरमें गिरी है। दक्षिणाश्रमं बहुत मो कोटी नदियाँ हैं। इस देशका जलवायु स्वास्थ्यकर और साधारणतः न अधिक उष्ण और न शीत है। किन्तु समय समय पर बहुत शीत और शीत पड़ता है। यूरोपीय तुर्कमें निम्नलिखित कई एक प्रदेश लगते हैं—रूमि-निया, पूर्व-रूमिनिया अल्बानिया और बुल्गेरिया।

कनस्तान्तिनोपल वा इस्ताम्बुल शहर तुर्क साम्राज्य की राजधानी है। यह नगर बसफरसके किनारे अवस्थित है। नगर देखनेमें बहुत सुन्दर लगता है। अट्टालिकायें प्रायः नहीं हैं। अधिकांश घर काष्ठके बने हुए हैं। रास्ते बहुत तंग और गलीज हैं। कलकत्तेकी अपेक्षा यह शहर छोटा है।

गसिपोलो शहर दर्देनेलिस प्रणालीके किनारे अवस्थित है। यह शहर तुर्क-राज्यके नो-सेनाके रहनेका प्रधान अड्डा है। एड्रियानोपलमें (रोमके सम्राट् एड्रियन द्वारा प्रतिष्ठित) तुर्कीको प्राचीन राजधानी थी। यही राज्यका दूसरा शहर है। सलीनिका (प्राचीन थेमालीनिका) दूसरा बन्दर है।

बुल्गेरिया प्रदेशमें बुल्गेरिया और स्कुमला, बलकान पर्वतको घाटी पर अवस्थित है। यह सुदृढ़ दुर्गमें घिरा हुआ है। वर्णा कृष्णसागरके किनारे एक बन्दर है। मिलिट्रेया, त्रिनोमा और सोफिया (बुल्गेरियाकी राजधानी) तथा और भो कई एक प्रधान नगर हैं।

अरविस्तान वा तुर्काधिकृत अरब प्रदेश-इसका क्षेत्र-

फल १ लाख ४० हजार वर्गमील है। बोगदाद ही इसको राजधानी है। शासनविभागके अनुसार कुर्दिस्तानके कई अंश इसके अन्तर्गत हैं। मेसोपोटेमिया भी इसके अधीन है। अंगरेज नाग इट-इगिडिया-कम्पनीके नामसे जब भारतवर्षमें आये थे, तभीसे इस प्रदेशके साथ उनका सम्बन्ध बना आता है। उस समय बबोराने उनकी एक कोठी थी और बन्दर अज्वा नामक स्थानमें उनके एक एजेंट रहते थे। १८३३ ई०में इस एजेंटको राजनीतिक क्षमता बोगदादके अंगरेज-प्रतिनिधिके हाथ चली गई है।

यूरोपीय तुर्कके अधिकांश स्थल ही पर्वताक्षीर्ण हैं। बलकान पर्वत अभी यद्यपि रूसके अधीन है, तो भी इसके गिरिपथ तुर्कके काममें आते हैं। यहाँके खनिजोंमेंसे लोहा ही अधिक है, इसके अनावा चाँदी मिला हुआ सीमा, ताँबा, गन्धक, नमक, फिटकरी और कोयला भी पाया जाता है।

यूरोपीय तुर्कमें ७६८ मोल और एशियाक तुर्कमें केवल ५०० मोल तक रेल लाइन गई है।

यूरोपीय और एशियाक तुर्कके अधीन अफ्रिकामें कई एक देश हैं। ये सब मिल कर यूरोपमें तुर्क साम्राज्य वा अटोमान-साम्राज्य कहलाता है। तुर्क साम्राज्य एक समय समस्त दक्षिण-यूरोप तथा उत्तर-अफ्रिका तक फैला हुआ था। रूस-तुर्कयुद्धके बाद अभी तुर्क साम्राज्यके अधीन अफ्रिकामें त्रिपली, बार्का, मिगर और एशियामें एशियाक तुर्क तथा तुर्काधिकृत अरब मात्र रह गया है।

तुर्कमें तुर्की, यहूदी और ग्रीकचर्चके ईसाई तथा अन्योन्य श्रेणिके लोग भी वास करते हैं।

तुर्कमें इसलामधर्म प्रधान है। सम्राट् भो सुसलमान थे। अबसे कुछ पहले यहाँके सम्राट् का नाम सुलतान अबदुल हमीद (२५) था। इनका जन्म १८४२ ई०में हुआ था। ये १८७६ ई०में राज्य सिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे। अब साधारणतन्त्र प्रचलित हुआ है।

राज्यकी शासनप्रणाली—तुर्कके सुलतान खैष्का-चारी राजा थे। उनको इच्छामें कोई भी बाधा नहीं हो सकती है। आइन देशकी प्रचलित प्रथा वा प्रजाका

परिमण्डल इन्फैन्ट्री बोर्ड मो लन्दे जिन्को कामसे लिए बाबू लर्नी कर सञ्चालना जिन्को कुरामसे मतामुपार लन्दे चलना पड़ता है। कुरामसे पनुपार लन्देको विधि विधि करमेके जिन्के लन्देको एक पञ्चित-समा है। से सब पञ्चित पञ्को तरफ कुराम जानते है और से 'लन्दे' नामसे पुकारे जाते है। पञ्चितसमाके समापतिको मन्त्र लन्दे लन्देसमा तथा सुसम्भको सुस तो कहते है। इस समासे धर्म मन्त्रश्रीय, राजनीतिक फोबदारो दोबानी पोर सामरिक विषयको सीमासा कुरामसे मतामुपार लो जातो है। इन्के सिवा और मो कई प्रकारको फोबेन है। कुरामसे पनुपार लो सब विधि बाबूदरके समये पात्र तक पञ्चित-समा तथा सुसत्तान द्वारा पहाई गई है। से जो 'बालू-नामो' नामसे लन्दे पा रही है। सुस प म् विषयके विषयसे सुसत्तान पहेले सुस लन्दे कर सकते, लन्दे पञ्चितसमाका मत सेना पड़ता है।

राजसमाका सम्मानकर पद दो प्रकारका है— विद्याका सम्मान पोर पञ्चका सम्मान; विद्याका सम्मान तोन प्रकारका है— विद्याका पञ्च पोर पात्र। राजको मन्त्र-समाके सदस्य विद्याका कहते है। इन लोकोके सुस-पात्र लन्दे प्रधान लन्दे है। इनके लन्देयासे (राजको लन्दे सब विद्याकोके विभिन्न मन्त्रियके), रईस-पदिन्कि (विदेशी मन्त्रियके) आराम-नामो (शासन-परिपालक लन्दे पोर प्रधान कामचारिन्दन) प्रधान है। राजस-विभागेके प्रधान लन्दे चारो 'बाबू' कहजाते है। पहेले, दूसरे पोर तोनरे प्रधान काम चारो दफ्तरदार नामसे पुकारे जाते है। नियानको-नामो (सुसत्तानके मोहर-रक्षक) पोर एक तर धर्मो (राजस-विभागेके परिदगंके) लन्दे लन्देके पञ्चम ल है। इनको मन्त्र-समाके सदस्य लन्दे लन्दे कहजाते है। लन्दे मन्त्रकोका नाम 'दोबान' है। पनेके तरफके दोबानो पोर सामरिक लन्देचारी 'पाया' नामसे मयहूर है। इन्के 'बसत्तानको बायो' (पञ्चापुरोपानरकाके पञ्च) तोपको बायो 'तोप-पानम गोला गोला, बाबूद पोर तोपके पञ्च', मोरो बाबू (महम्मदका विजयुस पताका-बाबू) प्रभृति ल है।

सामरिक सम्मान भी तोन प्रकारका है— लन्दे, पाया

के-सब। लन्दे तोन विज्ञापरो पाया है, प्रादिमिक शासनकर्ता दो विज्ञापरो पाया पोर ल लन्दे एक विज्ञापरो है। के-सब पाया लन्दे कहजाते। लन्दे सेनापति लन्दे लन्देको लन्दे लन्दे तोन विज्ञापरो है, लन्दे 'गिरफ्तार' कहते है।

मन्त्र-समाका एक प्रदेशमें विभागे है। प्रथम विभागमें एक पाया शासनकर्ता है जिन्के 'बालो (प्रतिनिधि Vicaroy) कहते है। बाबूके पञ्चो लन्देके कारक प्रकोके 'बानियत' कहते है। प्रकोके बानियत पुनः कई एक समझके बा विभागे विभागे है। प्रकोके विभागे एक 'बाबू-सत्तान' (पञ्चकारी प्रतिनिधि वा Lieutenant Governor) है। प्रकोके विद्या लो पुन कई एक लन्दे (विद्या) में विभागे है। प्रकोके लन्देका विर कई एक 'मन्त्रि' (परगना वा मण्डल वा लन्दे) में विभागे है। बानियत पोर सिवाके शासन-कर्ताको उपाधि 'पाया' है, बाबू प्रभृतिके शासकोको उपाधि 'लै' है। पायाके लन्देमें सामरिक, दोबानी, फोबदारो पोर राजस-विभागका पूरा पञ्चकार है। पायाका पञ्चोन्वय शासनकर्ताकोके ऊपर प्रभुत्व है लन्दे, जिन्को 'वज केवल नाममात्रके सिन्के है।

बाबूके पञ्चकोके प्रधानता दो भागमें बटे है— तुर्की पोर राजा। सुसत्तान लोय (तुर्की) लन्दे परकी, लोयलियाको सुसत्तान पात्रेनिवालो सुसत्तान पोर लोयलियाको सुसत्तान (नाबारलतः तुर्की कहजाते है। जिन्के विदेशी भाग लो 'रावा' नामसे पुकारे जाते है।

राजस-भोसत्तान लो तुर्की पञ्चकोके लुरानीय जातिको दो एक भाग है। पञ्च-माहरनर, लैनिवा कामान प्रभृति लोके दो लो लोय प्रधान पञ्चकोके है। हिरोहीतके पञ्चमें वर्तमान किञ्च लन्देके लैनिवा-पञ्चमें 'लन्देको नामके एक जातिको लन्दे है। इस जातिको लन्देका नाम 'लन्देके पञ्चमें 'तुर्की' कह कर लैनिवा है। जिन्के लन्दे 'तुर्की' (Turk) कहा है। लन्दे नामके एक लन्देको लन्देकोके प्रादिम जाति लन्दे लो पञ्च-माहरनर तथा पारलमें लन्दे है। तुर्की पोर लन्दे

देश नीं बात चौथी वा पांचवीं शताब्दीके प्रारम्भमें यूरोपमें विज्ञापित हुई। इनके कई मो वप पड़ले चीना लोग इस विषयका कुछ कुछ हाल जानते थे।

तुर्कीके कई एक प्राचीन वंश-विभाग हैं—(१) ओयुज (२) सेलजुक और (३) ओसमान-ली।

(१) ओयुज—प्रवाद है, कि तुर्किस्तानमें (मध्य एशियाके तूरान देशमें) ओयुजखां नामके एक पराक्रान्त तुर्की नरपति रहते थे। उनके पिताका नाम कारा खां था। ओयुजखां इब्राहिमके समरामयिक थे। इनका राज्य इनके कई एक उत्तराधिकारियोंमें विभक्त हुआ। पूर्वाञ्चलमें तोन श्रॉनि चीन तक अपना राज्य फैलाया और पश्चिमाञ्चलमें दूसरे तीनखांश्रॉनि श्रु और जकजरतिस नदीके चारों ओर राज्य विस्तार किया था। इनमेंसे प्रथम खां पार्वतोय खां नामसे विख्यात थे। ये तुर्कमान (वर्तमान काम्पोयन-भागर-तोरवर्ती तुर्की) जातिके आदि पुरुष थे। द्वितीय खां सामुद्रिकखां नामसे मशहूर थे। ये ही सेलजुकोंके आदिपुरुष माने जाते हैं। तृतीय खां खर्गीय खां नामसे विख्यात थे। ये कायि जातिके आदि पुरुष रहे। इसी कायि जातिसे ओसमान-ली तुर्कीको उत्पत्ति हुई है। ओयुज लोग बहुत काल तक पारस्यके साथ लड़ाईमें उलझे रहनेके कारण ७११ ई०में अरबके साथ विद्रोहमें निग्न हो गये। अरबोंने इस समय बुगार और समरकन्द जय किया। बुगराखां शरुनने ८८८ ई० में चीन तक अपना राज्य फैलाया। बाद अन्तर्विद्रोहसे सेलजुकीं प्रबल हो कर इनका राज्य जोत लिया।

(२) सेलजुक—१० वीं शताब्दीके अन्तमें सेलजुकींके अधिपति प्रबल हो उठे। इनके पौत्र तुघरिल बेग ११ वीं शताब्दीके मध्यभागमें एक स्वाधीन राजा थे। इस समय बोगटादमें खलोफा अलोकायम राज्य करते थे। उनके पुत्र बेसानिरि पिह-राज्य जय करनेको इच्छासे सेलजुकपति तुघरिलसे मारे गये। खलोफानि सेलजुकपतिको अपना रक्षक समझ कर उन्हें अमौरउल्-उमरा-ई (राजाधिराज) की उपाधि दी, और उनको बहनसे आपने विवाह किया तथा अपनी लड़कीसे उनका विवाह करा दिया।

१०६८ ई०में तुघरिल बेगका भतीजा अलप-आस

मलान राजा हुए और उन्होंने खलोफा कायमको एक कन्याके साथ दिवाह किया। उन्होंने पारस्यके उत्तर-पश्चिमांश, आर्मेनिया, जर्जिया, मेमोपोटेमिया और सिरिया आदि देशोंको फतह किया। १०७१ ई०में उन्होंने ग्रीक सम्राट् रोमेनसको पराजित कर उन्हें कैद कर लिया। इनके पुत्र मालिकशाहने एशिया-माइनरका अधिकांश जय किया। इसके बाद १३० वर्ष तक इस वंशके राजा अत्यन्त पराक्रान्त रहे। इन्होंने पश्चिम एशियाके प्रायः समस्त भाग अधिकार कर लिये थे। सेलजुकींके अन्तिम राजा द्वितीय अलाउद्दीन १२०७ ई०में सुगलींके हाथ बिनष्ट हुए। इनके पीछे इनका राज्य कई एक सदरींने आपसमें बांट लिया। तुर्किस्तान देगा। इन लोगोंके समयमें कौन नगरमें राजधानी थी।

(३) ओसमान-ली-सुलेमान शाह कायि जातिके राजपुत्र थे। १३ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें वे खुरासानके अन्तर्गत महान् नामक स्थानमें राज्य करते थे। चङ्गेज खांके भयसे वे १२३४ ई०में ५०००० लोगोंके साथ आर्मेनियाके मध्य आखुलत और आरजेनजान नामक स्थानमें जा कर रहने लगे थे। ७ वर्ष पीछे कौन नगरके सेलजुक राज अलाउद्दीनके खुरासान और खारिज्म अधिकार कर लेने पर वे पुनः स्वदेशको लौटे, किन्तु रास्तेमें जावेर शहरके निकट यफ्रेतिस नदी पार करते समय वे डूब मरे। उनके अनुयायियोंने वहाँ उनका एक समाधिमन्दिर निर्माण किया जो आज भी वर्तमान है। इन्हींके एक पुत्र अरतुवरिलने पश्चिम देशमें बान करनेके लिये कतसकल्प हो अलाउद्दीन सेलजुककी अधीनता स्वीकार की और सुगलींके साथ लड़ाईमें उन्हें सहायता पहुँचा कर उस युद्धमें जय लाभ की। इस पर अलाउद्दीनने सन्तुष्ट हो कर उन्हें अज़ीरा प्रदेशकी जागोर दी और उन्हें सामन्तराज स्वीकार किया। इसके सिवा अरतुवरिलने अलाउद्दीनको ग्रीक और सुगल-युद्धमें साहाय्य किया था। इस समय वे सेलजुक राज्यके पश्चिम सोमान्त-रक्षक कह कर सम्मानित हुए। १२८८ ई०में उनको मृत्यु हुई। इन्हींके पुत्रका नाम ओसमान था।

(११८८—११२६) - धोममानिने राजा जो कर घोष वाचिपिने माह नडाई करके लने धनेत्र खान कोत निवे। शिल्लुक-राज धमाउरोगको माह, जोमि पर धोममानिने शय्या-माहगरके नहुतके छोटे छोटे राज्यों पर अपना प्रभुत्व बसाया। १० वर्ष पीछे इन्होंने जहा पश्चिमादि किया। तुर्कीके नामातुकार हम प्रदेशके भावि जातीय तुर्ककोष धोममानिनी नामसे प्रसिद्ध हुए। ११२१ ई०में धोममानिनी तुर्कीके बसकोरघर पर कर बनस्थासिनेपोपक्षे निकटवर्ती प्रदेश पश्चिमादि किये, ११२६ ई०में इनको मृत्यु हुई। इनके बड़े सङ्घके उर का राजा हुए। धोममानि मरते समय उत्तरमें सिब्रिया, पूर्वमें म्यान्मिया, दक्षिणमें सिब्रिया और पश्चिममें मङ्गोलिया मदीके किनारे तक राज्यसोमा बढ़ा गये थे यद्यपि तुर्क साम्राज्यका सुवर्णयुग है। वर्तमान मिय मन्दाट, इन्कीके म योद्धव है।

(११२६—११३०) - उर खाने राजा जो कर अपने भाई धमाउरोगको प्रधान बकोरके पद पर नियुक्त किया। उर खाने अपने नाम पर सिद्धा बकानि तथा धृतता पकनेका आदेश दिया। केवल इन्कीने जो खानो मता पबलमन को। राज्यघासनके सिधे इन्कीने जो कामचारी नियुक्त किये, पात्र तथा तुर्की पदों पर कामचारी नियुक्त होते पा रहे हैं। इनको मासन-प्रवालो पर भी प्रबलित है। इन्कीने आखिरीदखो पायाहा करती हुए पक्षेके जो सतप रहनेके उद्देश्यके एक नियमित केन्द्रक सङ्घित किया। इस तरहको धिना यूरोपमें पक्षे सिधेने जो नियुक्त को धो, हम काममें प्रधान विचारक कारा बसोच केन्द्रकीने तुर्की सहाइ दी थी। इस संघटनको सिनिनेरो कहते हैं। इसीके वर्तमान तुर्ककोष सिनिनेरो (नवब्रिटन संघटन) मन्दीके उत्पत्ति हुई है। ११३० ई०में इने संघटनके से कर सिनिनेरोके युद्धमें सन्नाट करखानि अपने छोटे भाई आन्निवसको पराजित किया। इस नडाईमें तुर्कीने सिब्रिया कीता और वहां राजधानी स्थापित की। यह वर्ष बाद (११३६ ई०में) इन्कीने सिब्रिया दखल किया। ११३१ ई०में मन्दाट आन्निवसके एक सन्धि को जिसमें तुर्कीने अपना प्रथिमाका

राज्य कर लोको दी दिया। ११३० ई०में स्वयं उरखाने बसकोरघर पर कर घोषाराज्य पर आक्रमण किया। मन्दाट जन संघटनकीसमय में अपना कब्जा उरखानेको खाइ दो और (११३६ ई०में) वन्दी मान्य करनेको चेहा की, किन्तु कुछ पक्ष न निकला। उरखाने पुत्र धुममानिने ११३४ ई०में दादीनेसिध पर कर सिब्रिय दुर्ग पश्चिमादि किया। तुर्कीका यूरोपमें यद्यपि सबसे पहला पश्चिमादि या और तमीने यह लक्षके उत्तम है। मन्दाट जन संघटनकीसमय और लने एक सूखे कामाता आनिपोमोमसे बोच विद्रोह उपस्थित हुआ। उरखाने दादीनेसिधने द्वारा ब्रिजियोसि दुर्ग पर आक्रमण और पश्चिमादि किया। ११३६ को २३ वर्षको लक्ष्य में उरखानेको मन्दाट हुई। लनेके मरनेके बाद लनेका साखाय्य कई मागेमें बँट गया। प्रति विमानमें एक पाया नामक राजा हुए। वारसोच "पव माह" मन्दीके पाया मन्दीके उत्पत्ति है, जिसका पर्व "को पारस के शाहकी प्रधानता रहा करे" होता है।

(११३८—११८८) - उरखानेके बड़े सङ्घके सुर्धमान घोडेसि मिर कर मर गये सुतरी छोटे पुत्र सुराट राजा हुए। राजा कोनेके माह जो तुर्कीने प्रबलित कार मन्दाटन माहाय्य पश्चिमादि करनेका लयोग किया। ११६१ ई०में तुर्कीने आखिरीमोपक्ष पश्चिमादि किया और वहां राजधानी स्थापित की। इन्दि, बोसनिया, सर्भिया और बाल्कनियाने राजमण सुराटके विरुद्ध को गये। किन्तु वे लनेके सज तुर्कीके वारसे ११६१ ई०में पूर-उपने पराजित हुए। इस युद्धमें बूस, बुनगीरिया, माकिदोनिया, सिसानो और एपिरस तुर्कीके हाथ लगी। ११८६ ई०में सुराटने कारामानियानेके शिल्लुकराज धमा उरोगको बसोमूत कर अपने प्रधान राजाके जैसा कीकार किया। इतनेमें सर्भियाके राजा लाबारमने बोसनिया बुनगीरिया, इन्दिरो, पोलेन्ड और बाल्कनियाने राजापीको सहायता पा कर तुर्कीके विरुद्ध म रहे लन हो। ११८८ ई०में सर्भियाके दक्षिण कोलोवा नामक खानने सुराटके लक्ष्य नडाई कियी। नडाईमें लनेको लने लने लने। लाबारस के उर लने लने। धमाउरोगको राजमण मान लने। प्रधान

प्रधान कौटो शिविरमें हो सुराटके सामने लाये गये।

मिलीश कोविलेविच नामक सर्भियाके एक सेनापतिने सुराटके सामने साष्टाङ्ग टण्डवत् कर उनका पद चुम्बनादि किया और पोछे हठात् कमरमें एक तेज कुरी निकाल कर उनको छातोमें भोंक दो। सुराट मि'हासनमें नोचे गिर पडे और उसी समय सर्भियाके राजा लाजारसने अपने सेनापतिका शिर छेद डालनेको आज्ञा दो। उनके सामने ही यह कार्य किया गया। सुराटके मरने पर उनके बड़े लडके बयाजिद राजा हुए और उन्होंने सर्भियाको अपने राज्यमें मिला लिया।

(१३८८-१४०३)—बयाजिद सुराटके बड़े लडके थे। इन्होंने ओस्मान-नोमें सबसे पहले 'सुलतान की उपाधि ग्रहण की। सि'हासन पर बैठनेके साथ ही उन्होंने पहले अपने छोटे भाई याकुबका मिर काट डालनेका आदेश दिया। १३८१ ई०में उन्होंने कनस्तान्तिनोपल पर आक्रमण किया। इस समय कई एक फ्रांसीसी बोरोंने नगरको रक्षा की। पीछे सात वर्ष तक घेरा डाला गया। एशिया-माइनरमें बयाजिदने कारामानिया और कई एक सेलजुक राज्य जय किये। इस समय हङ्गेरि-राज सिगिस्मन्टने वागण्डो-पति जन, नेभाके काउण्ट और बुने हुए फ्रांसोसो अश्वारोही योडाओंको सहायतासे बयाजिद पर धावा किया। १३८६ ई०को निकिपोलिमें घमसान लड़ाई हुई। युद्धमें बयाजिदको ही जोत हुई। दूसरे वर्ष उन्होंने ग्रीकटेश पर आक्रमण किया, पीछे हङ्गेरि जोतनेका संकल्प किया था किन्तु तैमूरके अश्व-दय होने पर उन्होंने एशियाका अधिकार बचानेके लिये याता की। अन्तमें १४०२ ई०को अङ्गोराको लड़ाईमें वे तैमूरसे पराजित तथा बन्दे हुए। इसके दूसरे ही वर्ष पिसिदियाके आक शहरमें तातार-शिविरमें उन्होंने प्राणत्याग किया।

(१४०२-१४१३)—अङ्गोराके युद्धके बाद तैमूरने कारामानिया, अइदिन प्रभृतिके सेलजुक राजकुमारोंको पुनः पैतृक राज्यमें स्थापित किया। किन्तु वे आपसमें लड़ने लगे। इधर ओस्मानका सि'हासन लेकर सुलेमान, ईशा और महम्मद इन तीन पुत्रोंमें विवाद उपस्थित हुआ। अन्तमें सुलेमान यूरोपमें स्वाधोन हुए। ईशा

और महम्मदने सेलजुकोंको परास्त कर पिटाराण उधार करनेके बाद लुधामें ईशा और आमामियामें महम्मद स्वाधोन भावमें राज्य करने लगे। किन्तु महम्मदसे तीन बार परास्त हो कर ईशा कारामानियाको भाग गये। इसके बाद उनका नाम मदाके लिये लुग हो गया। बयाजिदके सूसा नामक और एक पुत्र थे। वे महम्मदके अधोन होनेसे सुलेमान पर आक्रमण करनेके लिये महम्मदद्वारा भेजे गये। १४१० ई०में सुलेमान परास्त हुए और रास्तमें उनका देहान्त हुआ। मुभा यूरोपमें तुर्कोंके अधिपति हुए। इस समय मुभा और महम्मदमें लड़ाई छिडो। करापू नदीके उत्पत्तिस्थानके समोप चामूरना जेतमें १४१३ ई०को सूसा सम्पूर्ण रूपमें पराजित हुए। सुतरा महम्मद अब एकमात्र सुलतान हुए।

(१४१३-१४२१)—रूपमें, गुणमें, शौर्यमें, वीर्यमें सब तरहसे महम्मद (१म)-ने ख्याति लाभ की। चामूरला जेतसे एशिया आकर उन्होंने सेलजुकोंको अपने अपने राज्यासे भगा दिया। १४२१ ई०में वे कनस्तान्तिनोपलमें सम्राट मानुषलसे जा मिले। यहाँ बहुत समारोहसे सम्राट ने उनका स्वागत किया। इसी वर्ष महम्मद अपने पुत्र (२य) सुरादको राज्य सौंप कर परलोकको चल बसे।

(१४२१-१४५१)—१८वर्षमें महम्मदके तीसरे पुत्र (२य) सुराद राज्यमि'हासन पर बैठे। महम्मदको मृत्युके बाद ही मुस्ताफा नामक बयाजिदके एक पुत्रने आ कर मि'हासनका दावा किया। सुरादने भिनिशके नौ-सेनापति अडरनोको महायतासे मुस्ताफाको पराजय तथा विनष्ट किया। १४४२ई०में हङ्गेरोके राजाके साथ उनका युद्ध छिडा। युद्धमें बहुतसी तुर्क-सेना निहत हुई। अन्तमें सन्धि हो जानेसे सब गड़बड़ौ जातो रहो। सुराद शान्तिप्रिय थे। हङ्गेरोके साथ सन्धि हो जाने पर वे ज्ञानचर्चाके लिये पुत्र महम्मदके ऊपर राज्यभार सौंप कर आप एशियाकी चले गये। किन्तु सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हो जानेके दश समाप्त बाद सुरादने सुना, कि हङ्गेरोको सेना उनके राज्य पर आक्रमण करनेकी आ रही है। उन्होंने बहुत जल्द समान्य आ कर हङ्गेरोके राजाको परास्त किया। इस युद्धमें हङ्गेरो-





वहुतसे हीप-इस युद्धमें तुर्ककी हाथ लगी। ड्रानसिलभानियाके राजा जापोलाको मृत्यु होने पर अट्रियाके राजा फाडि नगडने हज़ारों अधिकार किया। १५४१ ई०में हज़ार जौतनेके लिये सुलेमानने सेना भेजी। १५४७ ई०में अट्रियाके राजा बुडा वा ओफेन नगरके साथ हज़ारोंका अधिकारग छोड देनेकी बाध्य हुए। दो वर्षके बाद हज़ारों ले कर फिर लडाईं छिड़ी। अन्तमें १५६२ ई०को एक सन्धि हुई, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि समस्त हज़ारों राज्य तुर्कके अधोन ही, केवल उत्तर-हज़ारों राज्य अट्रियाके अधिकारमें रहे और वे उसके लिए तुर्क-पतिकी वार्षिक कर दें। इस सन्धिसे पहले सुलेमानके दोनों पुत्र सलोम और ब्याजिड सम्राटको मृत्युके बाद सिंहासनके लिए लड़ने लगे। कोने नगरमें दोनों भाइयोंका युद्ध हुआ। युद्धमें पराजित हो कर ब्याजिडने अपने चार पुत्रोंकी साथ ले पारस्य देशमें आश्रय लिया। सुलेमानहारा सलोम उत्तराधिकारो स्वीकार किये जाने पर पारस्यके राजाने ब्याजिड और उनके चारों पुत्रोंकी सम्राटके हाथ भौंप दिया। सुलेमानके आदेशसे १५६१ ई०में ब्याजिड पुत्र समेत मार डाले गये। इनके समयमें तुर्कको नौ-सेनाकी शूब चलो बनी थी। नौ-सेनाके अध्यक्ष सर्वदा इटालो, रोम और अफ्रिकाके बन्दरादि पर आक्रमण किया करते और रेगियो, सोरेण्टो, बूजिया, ओरान और सेजर्का हीप अधिकार भी कर चुके थे। १५६० ई०में जार्जिके निकट इटली और स्पेनको एकत्र सेना तुर्कको नौ-सेनासे परास्त हुई। एक दूसरो तुर्की सेना लोहित-सागर, पारस्यसागर और भारतसागरमें घूम करतो और पूर्त-गोजीके साथ इस दुलका सदैव युद्ध हुआ करता था। जार्जिके युद्धमें जय प्राप्त कर सुलतान सुलेमान मावटा जौतनेको अयसर हुए और १६६० ई०में एक बडो सेना साथ ले मावटाका अवरोध छोड कर हज़ारों युद्धमें जा पहुंचे। उस युद्धमें १६६६ ई०को सजिगीथ अधिकार करते समय वे परलोककी चल बसे।

(१६६६—१५७३)—सुलेमानके मरणके बाद उनके पुत्र २य सलोम राजा हुए। इन्होंने राजसिंहासन पर बैठते ही जेजिसेरियोंका एक विद्रोह दमन किया

और अट्रियाके राजा हितोय म्याक्सिमिलियनके साथ सन्धि स्थापन कर १५६२ ई०की सन्धिकी शर्तें रद्द कर दीं। पोछे १५७० ई०में इन्होंने अरबके अन्तर्गत अमेन प्रदेश और साइप्रस हीप अधिकार कर लिया। बाद १६७७ ई०में स्ये नियोंसे अफ्रिकाके अन्तर्गत टिउनिम दखल किया। १५७२ ई०में तुर्कको ऐसो प्रवल नौ-सेना भी लेपाण्टोको लडाईंमें अट्रियाके डन-नुअनहारा प्रायः ध्वंस हो गई।

(१५७४—१५८५)—२य सेलिमके पुत्र ३य सुराट राजा हुए। चिलदिरके युद्धमें तुर्क सम्राटने ऐरिवन, जर्जिया और टागिस्तान जय किया। क्रिमियाके खान इस समय रूस द्वारा आक्रान्त थे। तुर्कसेनापति ओसमान पाशा उनके सहायता पहुंचानेके लिए आगे बढ़े। १५८४ ई०के युद्धमें उन्होंने क्रिमिया पलटा लिया। इनके राजत्वका अन्तिम समय पारस्यके साथ लडाईंमें बीता। ड्रानसिलभानिया, मन्दोरिया, वाससिया प्रभृतिके राजाओंने इनकी स्वाधोनता स्वीकार की और यूरोपीय राजन्यवर्गके साथ कुछ कुछ सम्बन्ध रखा। इंग्लैण्डके साथ प्रथम वाणिज्य-व्यवसायकी सन्धि इन्हींके समयमें हुई थी।

(१५८५—१६०३)—तृतीय सुराटवाद उनके पुत्र महमद अपने १८ आता और ७ गर्भवतो विगमको मार कर राज्य सिंहासन पर बैठे। इनका समस्त राजत्व काल अट्रियाके साथ युद्धमें बीता, किन्तु किसी युद्धमें ये जय अथवा पराजित न हुए। सिजिलमण्ड नामक ड्रानसिलभानियाके राजा विद्रोहो ही कर पुनः उनके समी-भूत हुए और अधोनता स्वीकार की। इनके राजत्वकालमें एशियाके दिलहसेन विद्रोहो हुए थे।

(१६०३—१६१७)—तृतीय महमदके पुत्र प्रथम अहमद २४ वर्षकी अवस्थामें राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए। दिल होसेनके विद्रोहोंने पारस्यके प्रवल राजा शाह अब्बासको सहायतासे और भी विषम रूप धारण किया। १६१२ ई० तक यह युद्ध होता रहा। पितामहसे जोते हुए तीनों राज्य ये पारस्यके राजाको लौटा देनेमें बाध्य हुए। अट्रियाके सम्राट, हितोय रोड-लकने अन्यान्य राजन्यवर्गके साथ मिल कर हज़ारों पर

पाञ्चमय किया। बहुतसो वयसान लड़ाईयाँ हुईं।  
 चलते १६०६ ई०को पञ्चमदनी सिटमाडोरोक नामक  
 स्थानमें लडि कर लो। इस युद्धमें सुखतानने पश्चिया  
 को लसके अविजित लतार हङ्गेरोका कर छोड़ दिया।  
 इस समय निदारलण्डके माय कानिन्व स्थापित हुआ।  
 एबदम कोयाकने १६ वयस पीप्रिवासे साहस्य लगर  
 मूटा पीर ख स किया। सुखतान को पीर प्रिबवादी-  
 के हाथ कटपुलको लगेके से इस कारक इनके समयमें  
 तुलुपुत्र काबलान्यकी बरीह लति हुई से।

१६१० ई०में इनको खख सेने पर इनके माई प्रथम  
 (१) सुस्थापानि के नाम तक राज्य किया। अन्नापुर  
 कानियोके लड़क्यकने के वेद कर लिये गये से।

(१६११—१६१२)—प्रथम पञ्चमदनी युद्ध २४ वीसमान  
 राजा हुए। पोल्ण्डका युद्ध इनके राजत्वका  
 में प्रथम पीर प्रधान लटना वा। तुलुपुत्र लण्डाट कीत  
 दाकोके मिदा पीर दूसरो मुम्बागेसे विवाह करी कर  
 मकते से। इन मन्दाट ने बहु लियम लङ्गन कर प्रधान  
 वयस आरोको कन्वापोमिने तोनके साथ विवाह किया  
 इस कारक से प्रजाके चमोतिमाहन हो गये। डीनिनेर  
 कोम बिद्रोही हो गये। लकोने सुकतोके परामर्शने सुखतान  
 को कैद किया पीर लकके कुपरामर्शदातापोका मार  
 जाना। प्रथम सुस्थापान कारागारने मृग कर राज्याभि-  
 विह किसे गये किन्तु लक १५ वयस हो जानेसे दिनेय  
 पोसमानने माई लुपुत्रे सुराद शम्भुसिंहनाम पर गये।

(१६१२—१६१०)—चतुर्थ सुराद १२ वर्षको  
 पञ्चमानी राज्याभिविह हुए। प्रथम दस वर्ष तक लकको  
 माता लकको पमिमाविका की, दोसे से निहर तथा  
 कार्लटच बर्खाट निहने। इनके समयमें कोमदाईके ग्राह  
 बिद्रोही हुए पीर कोमदाद पारल्लक पचोन पा गया।  
 क्रिमियाके तातारोंने बिद्रोहो को कर लुकी सेनापति  
 कपुलान दायाको परास्त किया। माय केकु बजार  
 कोयाक इस समय बलवरसेके बिनाई लूट पाट मचाने  
 ली। तब डीनिनेरियोमि कातर हो कर अपनी बी बम  
 प्नालिनकोपके एक प मर्से पाग बना कर अन्नाटको  
 सेना दिया कि, 'पापको लखवारसे माहाय्यके लिपु राज्य  
 का बट पूर लकी हो मकीना' १६१२ ई०में इन कातके

सुख पन्नाट को बहुत उन्हाड हुआ। अन्नापुर म्नाम  
 कर से मैन्को संघर्षमें दलचित हुए। दो वर्ष बाद  
 पश्चियाको सुखपाया कर लकोने पार्सदम एरियन पीर  
 तात्रिकका लहार किया। १६१८ ई०में कोमदाद मो लवार  
 किया गया। इस युद्धमें ८० हजार मनुष्योंको जाने गईं  
 थीं। १६०८ ई०में पारल्लके साथ सन्धि को लई, त्रियमें  
 यह स्थिर किया गया कि कोमदाद राज्य तुलुपुत्रे पीर  
 एरियन पारल्लके पचोन कीया। इस अण्य म ३ बाद  
 अदेयको मोट पानिसे माय को मन्दाट को मृगु हुई।

(१६४०—१६४४)—चतुर्थ सुरादके बाद लकने माई  
 १५ वजायस राजा हुए। लकोने अपनी प्रथमप्रायमें  
 कोयाकके हाथने पाञ्चम जोत पीर भिजिगको लडाईमें  
 कनिहटा पक्षितार किया। राजा दिवरात मोलबिनाममें  
 लयी रहने से। डीनिनेरिडे बिद्रोहमें ये मार गये।

(१६४८—१६८०)—प्रथम इन्नाडिमका लुपुत्रे बाद  
 लकका मात-अपका लड़का अमुक मन्थन राज्यमि का  
 मन पर बैठे। १५ वयसको लो पीर इनको विता  
 मको इनको पमिमाविका की। लवागि पचवय में  
 डीया लकोर, डेर डिरने राज्यमें बहुत लड़कको पीर  
 लति हुई को। १६४८से १६५६ ई के मज १८ वार  
 प्रधान मको परिवर्तित हुए, चलते हुआ सुखताना  
 माह-विह अन्नापुरके पड़क्यकने मरो गईं। १६५६  
 ई में मन्थन डीनिनेरके प्रधान लकोर हो कर राज्यको  
 दुदगा पूर को। इन्नाडिमनामि लके राजा राजकोने  
 पश्चियाको लई एक डेग डे कर अन्नाट १५ वियो  
 पोल्डके साथ मोपय मधाम दिया। तुलुपुत्र सेनाने बहुत  
 से डेग दण्य किने। १६५४ ई०के एक युद्धमें तुलुपुत्र  
 सेना पराजित हुई। बाद सन्धि हो जाने पर इन्नाडिम  
 मानिया पीर हङ्गेरोके पीर मो लईएक प म पश्चिया  
 आन्नाडिमसुख हुए सुखतानने १६६८ ई०में पश्चिय-  
 ओत कर इसको लति पूरो की। १६७२ ई०में लकोने  
 पोल्डके बहुत प म अय किने। १६८२ ई०को लङ्गेरो  
 में बिद्रोह लपक्षित हुआ। लकोको सहायता देनेमें तुलुपुत्र  
 से साथ पश्चियाका पुनः युद्ध किया। १६८२ ई०में  
 प्रधान लकोर का सुस्थापानि २ काण सेना माय से  
 भिलेन्य लगर पचरोड किया, किन्तु काठण्ट लारसेम



१००३ ई०में एक सन्धि हुई। इस सन्धिमें सबकी यात्राएँ, शिवालय, कार्य ब्रेकिंग, रोग और निराश्रितों को मजबूत प्रदेय कृपादान, बंधनरत तथा दासिनी नियमों का बहिष्कार तथा सन्धिपूर्वक और शान्तिपूर्वक रूपान्तरण तथा सुदृढ साम्राज्यिक समस्त प्रोत्साहनात्मक मुक्त ईशान्याको उत्तर कर्ण पर्यन्त फैल गया था।

क्रिस्तिआके चौथे साबोजन हो गये। तीन वर्ष बाद पट्टियाको बुकोनिया छोड़ देना पड़ा। इसकी पीछे कृष्ण क्रिस्तिआ से किये जाने पर तुलुकमें प्रसंगान् मुक्त को तैयारियाँ होनी लगीं। क्विनिया भी पट्टियाको साथ मिल गया १००० ई०में यह युद्ध चारम हुआ। इस युद्धमें तुलुकमें पट्टियाको उत्तर अपना प्रमुख जमाया। किन्तु भी क्विनियाने पराजित हो गये। इसके बाद सुल्तानकी मृत्यु हुई।

(१०००-१००१)—उसके बाद उत्तरी सुल्तानके पुत्र उत्तरी सल्तान राजा हुए। इस समय इस और पट्टियामें लड़ाई बिल्कुल हुई थी। कई एक युद्धमें तुलुक पराजित हुए। इस युद्धमें तुलुक तब तक मजबूत हो आता किन्तु इसकी शक्ति, प्रसिद्धि और शक्ति इससे बढ़ने लगी। १००१ ई०में मिटाज्याने पट्टियाको साथ सन्धि स्थापन की, जिसमें तत्कालीन अपना जोबा युवा राज्य पुनः पाया। १००२ ई०का जेनेने क्विनियाके साथ सन्धि हुई। तुलुकने क्रिस्तिआका दाया छोड़ दिया और निरंतर नदी सोना राज्यके साम्राज्यमें निरंतरित हुई। इस समय बोनापार्टीने मिग्नर जेतन कर प्राप्तके साथ युद्ध मान दिया किन्तु इसकी शक्ति मजबूत कर १००३ ई०में तुलुकको प्रदान किया। १००० ई०में सुल्तान सल्तानने क्विनिया जेजलस और इसकी शक्ति साथ सन्धि कर पापोजन होवपनको हफ्त की। सुल्तान सल्तानने इस समय युरोपीय सैन्यसेन तथा सोबानी परिवर्तित की। इनमेंसे इज्जत और क्विनियाके बीच प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। प्राचीनकी उत्तरी जगहके इस और तुलुकमें १००१ ई०को लड़ाई बिली। इज्जतने तुलुकका मजबूत की। इस दासिनुके विनाश पराजित हो गये। जेनेनेरि और सुल्तानने मिल कर सुल्तानको राज्यपुनः और बंद किया।

(१०००-०८)—इसके बाद प्रथम पबदुल हामिदके पुत्र सुल्तान राजा हुए। उन्होंने उत्तरी सल्तानको सम्भारविधि परिवर्तानपुनः कर प्राचीन तथा पबनस्यन करके बिशेष टमन किया। इसने तुलुकको मिला पराजित हुई। इसका नामक प्रत्येक पाया सुल्तान के अंतर्गत मजबूत पाकर सुल्तानको राज्यपुनः करना था। काशबद उत्तरी सल्तानको इस बिशेषका मूल समझ कर सुल्तान सुल्तानने इसके भार हासनेकी शपथ दी; किन्तु वे ही बहुत जल्द पायाये राज्यपुनः हुए।

(१०००-१००१)—उसके बाद उत्तरी दितीय महसुद राजा हुए। इसने सुल्तान उत्तरी सल्तानको कारागारके सुल्तान किया। वे उत्तरीके मतासुमार राज्य करने लगे। जेनेने युरोपीय सैन्यस्य राज्यके भाग था ता शक्तिने तुलुकमें जिन सब सम्भारको प्राप्त स्वकता होयो, इह सुल्तान गये सुल्तानको उत्तरीके विषयमें उपदेश देने लगे। पाया सुल्तानका प्रधान बजोर हुए। सम्भारविधि पबनस्यन कर शिन्धियों पुनः बिशेषी हुए। बिशेषियोंने पनापुर पर पाबनस्य किया। राज्यको इज्जतीने किये प्रधान बजोरने राज्यपुनः सुल्तान जेनुक सुल्तानको मार डाला और पाप मो शिन्धियोंकी गुल्मीमें पद कर शक्ति को प्राप्त हुए। सुल्तान शिन्धियों महसुदने सममानका बंधन बतना कर प्राप्त पाया। उत्तरीने भी अपना सि हामन निरूपण करनेके किये जेनुक सुल्तानके मिदपुत्रको मरवा डाला। जेनेने क्विनियाको इच्छासुभा उत्तरीने सम्भार-प्रदा परिवर्तान को। वे इज्जतके साथ सन्धि करके क्विनियान साथ लड़ने लगीं। इस समय मज्जतने जेजलसस्य स्थापना हो गये। जेनेने उत्तरीके साथ हो कर १०१२ ई०को मुकार्टीने क्विनियाके साथ सन्धि करने लगे। प्रथम और कैसरीबियाके पुनः मज्जत देय बिन्धिविषय कुछ समय और दासिनुक का सुशास क्विनियाको देने पड़े। प्राचीने इस समय स्थापना पबनस्यन कर तुलुकको सन्धि कर इसने यज्जिनीन बना दिया। बहुतसे युरोपीय राज्य प्राचीन पक्षमें था गये। इज्जतके प्राचीन और क्विनियाकी शिन्धियोंने मिल कर १०२० ई०को नामारिआके य जेनेने तुलुकको शिन्धियोंको तरफ तरफ-मज्जत कर डाला। इस युद्धके

वाट शीम सम्पूर्ण रूपसे स्वाधीन हो गया। बर्मेरिया-राजवंशके उद्यो प्रथम राजा हुए।

१८०२ ई०के वाट प्रिन्सीपलकी टमन करते समय उन्होंने अपना शिव पत्नी श्रीम श्री ठ राजपुत्रियों की खोती हुए भी महसुद जेन्मोर्गोका मूलीच्छेद किया। ऐसा होनेसे तुरुष्कमें सबयुगका युत्पात हुआ। मलदेविया और बालामिया से कर बहुत दिनोंसे रुसके साथ भगवत् चल रहा था। १८२६ ई०में आक्र-वार्मिणकी सन्धिके अनुसार सब गडबडो दूर हो गई। इस समय महसुदने दल बल बहुत बढ़ा लिया। तब भी योवदा विवाह चल रहा था। यूरोपीय राजगण योवकी स्वाधीनताके पक्षपाती थे। महसुद यूरोपीय राजाओंको बुझको दे कर योवमें सुमलमान-अधिकार स्थायी करनेके लिये विग्रेय यत्नवान् हुए। १८२६ ई०में रुसके साथ सन्धि को गई। रुसके सेनापति डिविसने ( Dieb t-ch मामला नामक स्थानमें तुर्कमेनिकोंको पराजय कर शत्रियानापन अधिकार किया। इस समय पास्तिविच नामक एक दूबरे रुस-सेनापतिके आरजक पर आक्रमण किया। महसुदने आश्रियानोपनेमें १८२८ ई०की रुसके साथ सन्धि स्थापन की, जिससे योसराज्य निर्विवाद स्वाधीन हो गया। मलदेविया और बालामियाने स्वाधीन ग्रामन गति लाभ की। इससे सिया और कई एक ऐंग रुसके अधिकारमें आ गये। १८३१ ई०में सुलतानने इजिप्टके पागा महसुद अला पर धावा किया, किन्तु इस युद्धमें सुलतानकी सैन्य ही परास्त हुई। इसके दूसरे वर्ष इत्राहिम पागा कनस्तान्तिनोपलमें ६५ वींम दूर कुद्याया नामक स्थान तक अग्रसर हुए थे। १८३३ ई०में एक सन्धि को गई, जिससे सुहसुद अलाके सम्स्त मिरोवा-राज्य तथा इत्राहिम पागाने आटन का कर्त्तृत्व पाया। इस समय विजयी इत्राहिम पागाने हाथसे कनस्तान्तिनोपल बचानिके लिये रुस-सम्राट् निकोलसने जल्पयने एक सैन्य-दल भेजा। इसी कारण १८३३ ई०की आश्रिया स्की लेमिनमें एक सन्धि हुई, जिसमें यह स्थिर हुआ कि रुसका कोई विपक्ष-दलनेमिस पार कर न सकेगा। १८३५ ई०में तुरुष्ककी नो सेनाने विपक्षी अधिकार किया। इसके बाद सुलतान

महसुदने महसुद अलाकी टमन करनेके लिये पुनः नया लड़ाई आरम्भ कर दी; किन्तु १८३८ ई०की २४ वीं जूनको इत्राहिम पागाके निकट तुरुष्कको सेना सम्पूर्ण रूपसे पराजित हुई। उसके कुछ दिनोंके बाद ही महसुद को मृत्यु हुई।

२४ महसुदने पुत्र अबदुल मेजिट १६ वर्षकी अवस्थामें राज्य सिंहासन पर बैठे। इस समय वैजिब-युद्धमें पराजय, इपुटान पागाकी विश्वासघातकतासे महसुदअलाके नौ-रना-दलका नाश तथा विजयी इत्राहिम पागाके आगमनसे मानो तुरुष्क-साम्राज्य विनष्टना हो गया था। इस महसुदके समय सुलतानने अंग्रेजोंके साथ (नगडनमें १८४० ई०को १४ वीं जुलाईकी) एक सन्धि स्थापन की। सन्धिके अनुसार एक दल अंग्रेजों और फ्रांसोसों सेनेनाने आकर एकर, सिटन-ओर सिरोंयाके उपकूलवर्ती कई एक नगरअधिकार किये। इत्राहिम पागाने उक्त स्थान बाध्य हो कर छोड़ दिये। योव ही गान्ति विराजने लगे। महसुद अला वार्षिक कर दे कर पुत्रपानुक्रमसे पागा हो कर रहने लगे।

इस समय तुरुष्कके चौड़े सुमलमानोंने उत्पात मचाना आरम्भ कर दिया उन्होंने सोचा 'इस वार ऐसा मालूम पडता है कि सभी इसाईका अनुकरण करेंगे, पहिलेकी रीति-रिवाजि जाता रहेगो। सुतर्ग इस्त्लाम-धर्मको अवनति होगी।' ऐसा जान कर उन्होंने अस्त्र धारण किया। रशोद पागाने सबके सामने यह प्रचार किया, कि सुलतानके अधोल प्रजाके मध्य सभी धर्मके मनुष्य एक दृष्टिसे देखे जायंगे। सब कोई समानभावसे अपना-अपना धर्म पालन कर सकते हैं, विधर्मियोंके ऊपर अन्याय करके किसी प्रकारका कर नहीं लिया जा सकता है; किन्तु यह प्रस्ताव तुरुष्कके हृदय अमोर-उमराओंको अच्छा न लगा। अतः वे सबके सब अस्त्र-धारी प्रकाश करने लगे। इधर यूरोपीय तुरुष्कमें बहुतसो इसाई-प्रजा वास करती थी। वे भी अभी सुविधा पा कर अपना स्वार्थ-संरक्षणके लिये रुस-राजके हाथमें राज्य समर्पण करनेको प्रसुत हुए। इधर फ्रांस, अश्रिया और इंग्लैण्डके राजदूतगण तुरुष्कका

भारतमें जूयोम खोज रहे थे; किन्तु इस समय बुद्धिमान्  
 सुसत्तामन निरपेक्ष आराम प्रचार कर ईसाई प्रजाकी  
 मान्य किया। सत्राह में प्रथो मो युरोपीयगण चबहुन  
 सैत्रिदको समुपत-प्रकृतिसे बड़ाई किया करते हैं।  
 १८८८ ई०में इङ्ग्लोके प्रधान राजपुत्रोने पा कर सुस-  
 तानका पात्रय सङ्घ किया। पहिया पोर रुम सन्घाट्  
 में लके पकड़वा देनेका प्रतुतोष किया। किन्तु सुस-  
 तानने जनके प्रस्तावको उघिया करते हुए कहा "पात्रिन  
 प्रतुतोको रखा जाना जो हम लोयोका जातोवधम  
 है। प्राय विधर्जन करते हुए मो हम लोय जातोय  
 धर्मको रखा किया करते हैं।"

पहने रुमके साब तुर्कपणको कई एक सन्धि हुई  
 यो सको किन्तु लर्ममें रुमका जो साब भरपूर था।  
 रुम बराबर तुर्कपणके खपर लौक इति रखा करते थे।

तुर्कपणके धोम-समाप्रसुत ईसाइयो ने सुनानानके  
 विरुध रुम-रात्रके निवृत्त परिधोय किया। जारने  
 पूर्व मन्धिपत्रके विरुध मव ज्ञान ज्ञान कर तुर्कपणके  
 धार्यन्तरिक व्यापारमें इष्टकिय किया। रुमसेव्यने  
 का कर मसदेविया पोर यानाविया अधिकार कर  
 लिया। तत्र सुप्रतान मो निवृत्त रुमन सके। लमके  
 सेनापति समार पाधाने बसकान पोर दानिबुज नदी  
 तोरख दुम अधिकार कर लिये। इधर फ्रांसोको पोर  
 प रोजेनी-सेनाने बेसिक उपवावरमें पा कर लुडर  
 कासा। पञ्चर मारमें तुर्कपणने रुमके विरुध युद्ध-  
 बोधना कर दो पोर प रोजे तथा फ्रांसीसियो को मदद  
 देनेके लिये बुलाया।

आन्तार्मिषामें दोनो रुममें कई बार युद्ध हुए, प्रति  
 युद्धमें जो रुमसेव्य जारने लयो। नवम्बर मासमें रुमको  
 मो-सेनाने मिनासुपोल-बन्दरमें निवृत्त कर मिदुपके  
 राफो पर तुर्कीके युद्ध जकाको को मष्ट किया।  
 योके १८३७ ई०में रुमसेव्यने दानिबुज नदी पार  
 कर दोबराके दुर्ग पर पात्रमण किया। इस समय  
 इ बनेव्य-यो फ्रांसमें लड़ाई जिङ्गो हुई जो। १३ जून-  
 को रुमगण प्रथोम बिटा पोर इङ्ग्लोकी सेव्य मष्ट करने  
 से बाट निम्निकिया पर पात्रमण कर लौटे प रहे थे।  
 तुर्की-सेनाने मो दानिबुज पार कर रुमसेव्य-

का पोका किया। गिरगीशो नामक स्थानमें रुम-सेना  
 पराजित हुई। इस देगमें पहियाको सेनाने तुर्कपणके  
 अधिकारसुक्त को पव टैय रुमन बिडे थे, लके मो  
 प्रथो खोज दिने। इधो लीकमें प दण पोर फ्रांसीकोके  
 लङ्गोअज्ञान लङ्गसागरमें प्रवेश कर पोङ्गसा नगरक  
 खपर गोला बरमाने लगे। रुमके लङ्गोकाहाअने  
 पा उर मिनासुपोल बन्दरमें पावय किया था।  
 १८३७ ई०को १७वें सितम्बरको मासक विप्ल पात्रक  
 पोर मष्ट रामसेनके प्रथोममें प रोजो पोर फ्रांसोको  
 सेना क्रिमिया मष्टको लतरी। इस समय जो मोबक  
 तुर्क हुए थे, ने जो युरोपोव इतिहासमें क्रिमिया-समर के  
 नामसे प्रसिद्ध हैं।

२० वें सितम्बरको पात्रमामें तुर्क युवा। लुमार  
 मित्रिकोपके प्रथोम रुसको सेना सम्युक्त रूपसे परा-  
 जित हुई। बहुत मोत्र जो प रोजो पोर फ्रांसीकी सेना  
 में पा कर बासाहाना पोर कामिय बन्दर अधिकार  
 किया। २४वें सितम्बरको वे मिनासुपोलका दक्षि-  
 णम दक्कन कर बैठे। इस समय कठिन मोतके मिना  
 सुपोलके खपर प रोजो पोर फ्रांसोकी सेनाको तुर्कपण  
 रात्रके बचामिमें जो कष्ट सुभतता पड़ा था वह पकक  
 मोय है। मोतर पोर बाहर महाबलमानो रुमसेव्य  
 लके सेतो हुई है, रुम प्रगता गोरक बचानेके लिये प्राय  
 पचके बिटा पर रहा है। किन्तु लमके मामने सुडो  
 भर फ्रांसोको पोर प रोजो सेनाने तुर्क सेनाको सहा  
 यतासे रुमका वह नियुन गोरक मडोमें मिना दिया।  
 जनका काम बहावमें पात्रक प्रथ लगेय था। इस समय  
 तुर्क सेनापति समार पाधाने मो त्रिध तरङ्ग बुद्धिसत्ता  
 पोर निवृत्तताका परिषय देते हुए रुमसेव्यको धार  
 कर पराजय किया था वह तुर्कपणके पचमें महाभोरक  
 का विषय था; इसमें तनिध मो लन्देह लगे है। पचमें  
 फ्रांसको रात्रजानो पिरम नगरमें लम्बि हो जानेसे मव  
 मङ्कबङ्गो मर मित गई। तुर्कपणपतिने मसदेविया  
 पोर लङ्गणनरको उपह्वनवर्ती नदीके सुडाने तत्र समस्त  
 देग तथा निष्कार पोर दानिबुज नदीके उत्तारम कई एक  
 प्रदेय लौटा पाये।

१८५१ ई०में पचदुध पजोत्र मि हासन पर बैठे।

इनके समयमें मोगलनियो तुर्ककके अधीन राज्यरूपमें गिना जाने लगा। १८०६ ई०में अबदुल हमोद ( २५ ) राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इन्हींके समयमें विख्यात रूस और तुर्कका युद्ध आरम्भ हुआ था। रूसने अपना नष्ट-गौरव पुनरुद्धार करनेके लिये इस बार भोमबलसे तुर्क पर आक्रमण किया। बारबार रूसको जय होने लगे। अन्तमें तुर्कसराजने १८०८ ई०में रूसको बटम, कारस और आर्डाहन छोड़ दिये। वे रूसका युद्धव्यय २२ करोड़ रुपये देनेकी राजी हुए और उसीके अनुसार उन्हें प्रति वर्ष ३६८१८० रुपये रूस गवर्मेण्टको देने पड़ते थे।

तुर्क-राज्य पहले बहुत विस्तृत होने पर भी अभी इसका भूपरिमाण ६६५०० वर्ग मील और लोकसंख्या लगभग ४६६८००० है।

बीसवीं शताब्दीमें तुर्क—उन्नीसवीं शताब्दीके शेष भागसे ही तुर्कमें नव जागरणको आवाज उठी थी। तुर्कके युवक-सम्प्रदायने युरोपियोंके समक्ष यह प्रमाणित करना चाहा 'कि तुर्क बिलकुल मरा हुआ नहीं है—उसमें अब भी प्राण हैं।' अबदुल हमोदके शासनकालमें "नव तुर्की-सम्प्रदाय" नामसे तुर्कमें युवकोंकी एक संस्था स्थापित हुई थी। इन लोगोंका उद्देश्य था, कि अबदुल हमोदका उच्छेद कर तुर्कीका नवोन रोतिसे संगठन किया जाय पहले उन लोगोंने तुर्कीके सैन्यदलको वशमें किया। फिर १८०८ ई०को २२वो जुलाईको नियाजिबके अधिनायकत्वमें तत्कालीन तुर्की-गवर्मेण्टके विरुद्ध इन लोगोंने विद्रोहको घोषणा की। मनष्टि और अहिंसाके मध्यपथमें रोजना नगरमें ही प्रथम विद्रोह शुरू हुआ। इस आकस्मिक घटनासे रूस और इंग्लैण्डने फिर तुर्कीके बच-छस्तकेप करनेका साहस न किया। दूसरे दिन आनीयार-बेके सभापतित्वमें सैनिकोंकी 'एक और उन्नति-सम्मति को तरफसे नवोन राजतन्त्रको घोषणा हुई। उन लोगोंने सुलतानसे उक्त घोषणा मान्य करनेके लिए अनुरोध करते हुए यह भी सूचित किया, कि यदि घोष ही उन लोगोंके प्रस्ताव पर सुलतान सम्मति न देगे, तो दो और तीन नखर सेना कन्ष्टिनोपल

परिहार करनेके लिये अग्रसर होंगे। कुर्क भी ही, २८ तागोखकी अष्टुन हमोदने उन लोगोंके इस प्रस्तावको स्वीकार कर घोषणापत्रके द्वारा पूर्वतन १८०३के राजतन्त्रके माननेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि इस विद्रोहको सम्पूर्ण मरुल नहीं कहा जा सकता, तथापि इससे सुलतानका स्वच्छाचार बहुत कुछ प्रशंसित हुआ तारीख ६ अगस्तको शोक, अर्सेनियन, शेख उन इसलाम आदि मसजिद सम्प्रदायके प्रतिनिधियोंको ले कर एक नवोन 'कविनेट' ( मन्त्रिमन्त्र ) संगठित हुआ।

परन्तु नव्यतुर्की दलको विजय अधिक दिन तक निश्कण्टक न रहो। सुलतानके अनुचरगण अपनी पूर्वचमता प्राप्त करनेके लिए भरसक कोशिस करने लगे। इसलिये नव्यतुर्कीदलने अबदुल हमोदको सिंहासनसे उतार दिया और उनके कनिष्ठ भ्राता महम्मद रेगाट एफान्दोकी सुलतान गद्द प्रदान किया; परन्तु अबसे वास्तवमें नव्यतुर्कीदलके ख्यातनामा नेता आनीयार बे ही समग्र तुर्कीका शासन करने लगे।

इस समय मुस्ताफा कमाल पाशाने इच्छानुसार सैन्यसंस्कार किया। उनके आदिगसे अमंलग्न सैनिकोंमें संभवतःभावसे आधुनिक समर-विद्यासुमोदित तुर्की सेनाके लिए उपयोगी सूचक-कवाजाका प्रचलन हुआ। वे पहलेसे ही सेनाको युद्धोत्साहितको और दृष्टि रहते थे; नव्य-तुर्की-विप्लवके प्रथम वर्षमें उन्होंने सैनिकोंमें सैन्य-परिचालनमें अपना कृतित्व दिखा कर तत्कालीन प्रयोग तुर्की-सेनापतियोंको विस्मित कर दिया। १९१० ई०में कमाल पाशा समर-सचिवको अनुमति अनुसार प्राप्त गये और पिकडि में उन्होंने कौशलपूर्ण परिचालना द्वारा फ्रान्सको सहायता पहुँचाई। यही उन्हें फरासोसी जातिके आचार-व्यवहार और सेनाको युद्धनैतिके साथ विशेषरूपसे परिचित होनेका सुयोग प्राप्त हुआ था।

बल्कानके युद्धमें तुर्कीको बड़ी विपत्तिमें पड़ना पड़ा था, परन्तु आनीयार और कमाल पाशाने इस विपत्तिसे तुर्कीको रक्षा की थी। बुल्गेरियाके हाथसे आद्रिया-नोपलने तुर्कीको छोन लिया।

१८१४ ई०के अगस्त महौनेमें युरोपमें महायुद्धका सूत्रपात हुआ। तुर्कीके साथ इस युद्धका कुछ भी सम्बन्ध न

बा, परन्तु सुदृढ जर्मनेनि कूट-नीयकषे दुर्वल तुर्की को मो इम हुइमि लसोट किया। जर्मनोको तरफसे तुर्कके दुर्बलसेमि पयतोर्षे जोनिमि कमान पासाका पञ्चिम तिरुव मत बा। परन्तु अब तुर्कको वीपका दुई तब ल्धोनि लेन्वडसमि योम दिया। कुछ दिन बाद मिन्-सेनानि कनडैडिनोपलको थोरा पयसर जोनिनी बिटा की। इसमि प्रथम मेनापति विरुजित हो गये, परन्तु निर्भीक कमान पासाके लन समय प्रस्ताव किया कि 'सुखि तुर्क-परिचालकका मार दिया जाय।' ल्धोनि पयने लपर मार से कर प रोकी सेनाको पनाफोर्डमि इस तरह पराजित किया, कि समय जगत् लघु पनापुतिक घटनाको देख कर दम हो गया। इसमि सन् १८१० कि लनको इन विजयसे हो तुर्की-साम्राज्य निश्चित अंशसे पाससे बच गया। इसल बाद जर्मनेनि पञ्चम कर पानभार पोर कमान पासाको नामा विपदमि जाननेका प्रयत्न किया था।

परन्तु शीघ्र ही पुन तुर्कके जीवन-मरचको समझा उपजित हुई। कमान पासा कोमिय करने पर मो कुछ न कर सके। जर्मन लोग बोनदादने पराजित हो गये। १८१० ई०मि अब महाबुद्धका पयमान हुआ तब (३० फरवरीको) पर्मिटिमको मन्त्रिके पहुसर यदो मान-मन्त्र मेण्ड मित्र-मन्त्रिके समक्ष सन् १८१० ई०मे पान्त-समर्पण करकेके लिए बाध्य हुई। कनडैडिनोपल इस समय मित्रराजिके परिचारके बा। पोर पोर मानाटमि ५ देको सेनाने तथा इत्याम्बुनमि पारा मोको सेनाने गिबिर लखिबेस किया था। सुनतान इस समय प रोकोके यहाँ नजरबन्द थे। पर्मिटिमके समयमे हो मध्यमूमि हो रचाके लिए तुर्कीमि सर्वत्र सेमि छोटे छोटे दलोंका न यत्न ही रहा था। कमान पासा ने ल्धोनि कोटे कोटे टर्कीको एक इतर जातीय कडका रूप दे दिया। इनो समय पोसोम स्मरना पश्चिम कर किया। स्मरना तुर्कीको का एक प्रयोक्त्रनोड बादिन्-कोर था। कमान पासा प रोत्र पोर पोख मेनाका बाबा देनेके लिए पयसर हुए। तुर्कीको ने प्रथम सेनाको उपजितमि हो पश्चिम-पानातोनिवा पर कडा कर किया। पको पयारे १५ मो पयारीको सेनाको देन

ये पानोस इतर उद्विग सेनिको का प्रवचदन समझ कर डरके मारि खान जोड़ कर माग यहे।

१८१० ई०के फरवरी मासमि एशिया महाद्वारके दो आंगमि तुर्क के ल्धोमूत हुआ था। एक स्मरना पोर एडिनका पय बा। (प रोकोको सहायतामि प्रोक्त कोम इसो तरफ से) पोर दूसरा बोनदादका पय कडा उद्विग-सेना उपजित हो। तुर्कीका जातीय मन इन दोनों दलों के माझ पञ्चन होरता पोर सतकैताके साथ तुर्क ल्धोके लिए पयसर हो रको यो। कमान पासा इस समय तुर्कीजतिके पन्डर लदेसममे लाने के लिए मो बिटा कर रहे थे। ल्धोके निर्देशानुसार तुर्कीको राष्ट्रीय महासभा परिचालित होती थी। ल्धो न पहोरामि एक महासभा कर लसमि कुछ जातीय धर्म निर्धीत को थीं। जो मोषे सिधो जाती है -

१। जिन आनोमि परबवासियोको मखा पश्चिम है, उन आनोमे तुर्कीका दावा लड किया जायक। परन्तु तुर्कीके पबगिष्ट पय एक राष्ट्र एकल ति पोर एक धर्मको समष्टि समझे जायतो।

२। पश्चिम कूसके पश्चिमाभिगव पयने देगको रति कत कताके स बन्धमे विचार कर सकेमे। परन्तु पूव कूसके विपदमे कानै भा मधकता न मानो जायतो।

३। उद्विग पश्चि पुष्पने नयोम सुदुराकोके लिए जितनो मो यतं कायम को है के मान्य हो गो।

४। कनडैडिनोपल पोर ससुत्र-सदो (प्रवासियो) को बिना यतंके तुर्कीको को दे टंगा पड़ेना। हाँ, पश्चिमके कुमोरीके लिए क्यार्थ सद्रिष्ट शक्ति तम्बुडका ध्याय करल मान्य होना।

५। राष्ट्रीय पश्चिम पोर विचार म बन्धोप समस्त बावोमि तुर्कीको पानोनाको मानना पड़ेना। पय शब्दोमि यो ममभन पश्चिम कि तुर्कीके सिवा पय्याय देयोमि तुर्कबको बितनो भा प्रका है, उनको पानकत-शामन देना होना।

इसो बांधमि सुनतानने जर्मनको यन्त्रि कोडार कर लो जिससे जातीय दन पञ्चन सुख हो गया। १८११ ई०के जनवरामि पोर सेना हुड-यात्राके लिए प्रकृत हुई। कमान पासाके ल्धो पद पर बाबा पडु बाई



जिससे ग्रीकों को बड़ो सुसोवत मिलने लगी। उनके बहुतसे देग हस्तच्युत हो गये। इस युद्धके कारण जातीय दलको शक्ति भी बढ गई। तीन महिने की मोतर योद्धा लोग तुर्कीसे निकाल भगाये गये।

ग्रीकोंके भगाये जाने और स्मरनाके जातीय दलके अधिकारसे आ जानेसे एशिया-माइनरमें कमाल पाशाका प्रभुत्व अविश्वामयी हो गया था। इस समयमें ली कर सुलतान महम्मद अलीके भागने तक जिस फुरतीके साथ कमाल पाशाने समस्त प्रकार राष्ट्रीय प्रवेष्टाणों की थीं, वह यद्यथामें प्रगमनीय है। उन्होंने गोघ हो ग्रीस और कन्स्टैण्टिनोपल अधिकार करनेके लिए टार्टारनिस प्रगाली (समुद्रसंकट)की ओर सेना भेजी। सेनाके सन्धिके अनुसार तुर्कीका कोई कोई स्थान मित्रगतिके हाथ लग गया था। उन स्थानोंका नाम था निर्हन्द स्थान इन स्थानोंमें तुर्कीयोंकी प्रवेग करनेका अधिकार न था। परन्तु अपनी शक्ति पर भरोसा रखनेवाने विजयी कमाल पाशा सेना-सहित बल-पूर्वक उधर अग्रसर हुए जिसमें यूरोपीय राष्ट्र-समूह अत्यन्त चञ्चल हो उठे। फरानोसों और इटलीसेनाका बहा रचना अनायश्यक समझ वह पहलेसे ही बहासे घटा लो गई थी। मात घोड़े से अग्रं ज-मैनिक कुछ जंगीजहाजोंके साथ, तुर्कीको स्वाय-रनाके बहानेसे वहाँ पहरा दे रहे थे। कमाल पाशाको इस विजयसे इतने गूढको तमाम कूट-कल्पनाएं नष्ट होती देख, इटिश-मन्त्रियोंको मोतरा चीट पहुँचा। उन लोगोंने तुर्कीका अपवाद उड़ाया कि तुर्कीयोंने ग्रीकों पर अमानुषिक अत्याचार किया है तथा यूरोप और अमेरिकाकी सशस्त्र सहायताके पानेके लिए काग्रेस भी की; परन्तु फरानोसों अतुस-स्थान-समितिसे प्रमाणित हुआ कि तुर्की द्वारा अत्याचार किये जानेको अपवाद बिलकुल झूठी है।

इसी बोचमें जातीय पदातिक और अश्वारोही सेना चालकके पास पहुँच गई थी। कमाल पाशाने भी 'थ्रेस और कन्स्टैण्टिनोपल अधिकार करे'ग' ऐसी घोषणा कर दी। मध्य थ्रेस पर आक्रमण करनेके लिए भी तुर्कीसेना तैयार हो गई। लायड जार्जने अब चुप रहना उचित न समझा। इंग्लैण्ड तुर्कीके विरुद्ध युद्ध

करनेके लिए तैयार हुआ, परन्तु फ्रांस और इटलीने माफ कर दिया कि हम इसमें सहायता न देंगे। इधर फ्रान्को सोवियेट-गवर्नमेण्ट तुर्कीको न्याय्य हक दिखानेमें सहायक हुई। फिर एक महायुद्धको आगझामे सब चिन्तित हो उठे। अन्तमें मित्र-शक्तिके अनुरोधसे कमाल पाशाने 'निर्हन्द प्रदेश पर आक्रमण नहीं करेंगे' ऐसा प्रकट किया। आखिर एडोरा (तुर्की)-गवर्नमेण्टको स्वाधीनता सम्पूर्ण शक्तियोंके द्वारा स्वोक्त हुई। फिल हाल कमाल पाशा ही तुर्कीके सुलतान और अग्रंजोंके हैतगासनका अवसान कर एडोरा-गवर्नमेण्टको स्वाधीनतासे चला रहे है।

तुर्क गोड़—तुर्कगण्ड देखो

तुर्को ( हिं० स्त्रो० ) तुर्की देना।

तुरैया ( हिं० स्त्रो० ) तुर्ही देखो।

तुर्क ( हिं० पु० ) १ तुर्किस्तानका निवासी। २ तुर्कका निवासी, तुर्की का रहनेवाला।

तुर्कमान ( फा० पु० ) तुर्क जातिका समुच्च। २ तुर्की घोड़ा जो बहुत बलिष्ठ और साहसी होता है।

तुर्कसवार ( फा० पु० ) एक विशेष प्रकारका सवार। तुर्किन ( फा० स्त्रो० ) १ तुर्क जातिकी स्त्री। २ तुर्कको भौं।

तुर्किना ( हिं० स्त्रो० ) तुर्किन देखो।

तुर्की ( फा० वि० ) १ तुर्किस्तानका। ( स्त्रो० ) २ तुर्किस्तानकी भाषा। ३ तुर्किस्तानका घोड़ा। ४ तुर्कीकोसो ऐंठ, अकड़, गर्व।

तुर्घर खाँ—एक सुगल-सर्दार। १३०३ ई०में अलाउद्-दीन जब चितौर-आक्रमण करने गये थे, तब तुर्घर खाँने भारतवर्ष लूटनेको तैयारियाँ की थीं। १२००० अश्वारोही सेना ले कर दिल्लीके समीप जमुनाके किनारे जा कर इन्होंने पडाव डाला था। अलाउद्दीनको पहले ही मालूम हो गया था, वे शीघ्र ही राजधानीमें लौट आये। यद्यपि अलाउद्दीन तुर्घर खाँसे पहले ही राजधानीमें पहुँच गये थे, तथापि वे सेनाका राजताना छोड़ आनेके कारण अग्रसर ही कर तुर्घरसे युद्ध न कर सकें; सिर्फ दिल्लीके उपकण्ठके बाहर परिष्ठा खुदवा कर दो महीने तक बैठे रहे। सुगलीने बाहर रह

हर शहरमें रसद भिन्नता बन्द कर दिया और नगरके  
 उपबन्धमें बृट् मन्थाने लगी। १२०४ ई०में एक सुभक्त  
 मान पञ्जोरके बिसो पाचवें उद्घावित कीमती धुमन  
 कीमत सजसा हर गये और एकशारीरी विरायको  
 छोड़ कर भाग गये। तुर्करीकी इतने हर गये थे, कि हर  
 पक्ष चले तब लखो नै राष्टमें बहो भी पड़ा न  
 जाना जा।

तुर्करी (स० लि०) लख जि साया बा० चरी। इन्ता,  
 पञ्जुका मानेबाया भागा जो सामने बोधी जोरकी  
 और होता है।

तुर्करीतु (स० लि०) इय-परतु प्रपोदरादित्वात् साङ्ग।  
 इन्ता। तुर्करी देको।

तुर्करी (स० लि०) चतुर्णा पूरय चतुर यत् च भायय  
 सोय। चतुर्क, सीका।

तुर्करी (स० पु०) काकदानार्थं यस्मिन् समस जानने-  
 का एक शब्द।

तुर्करी (स० पु०) तुर्करी चतुर्कवर्णं इति च-प्लि।  
 चार वर्णका पद्य।

तुर्करी (स० श्लो०) तुर्करीय ज्ञान, नच ज्ञान जिसे सुनि  
 जो जाती है।

तुर्करी (स० पु०) चतुर्कान्त, चन्वासायन।

तुर्करी (स० पु०) १ छुट्टाकी लाम्बीको कट जो मरि पर  
 जो। २ अलग मोशबारा। ३ पग्लोकी लपर अगाने  
 का बादलेका गुच्छा। ४ पग्लोकी लड़ियो का गुच्छा।  
 यह लड़ियो आनके पास कटकता रहता है। ५ टोपी  
 धादिमें कमा हुआ पद इना। ६ पक्षियोंकी पीठो, गिजा।  
 ७ इगिजा, जिगारि। ८ मखानका लम्बा। ९ लटाकारो  
 तुर्करीय नामका पद। १० चातुक, कोड़ा। ११ पाठ  
 या लो चतुर्क लाम्बी एक प्रकारको तुलतुल। काङ्केकी  
 चतुर्क वर भारतवर्षके पूर्वके भागमें रहते है। पर  
 बरमिसेमें जोन और साइरियाको और चम्पी जाती  
 है। १२ एक प्रकारका बटेर, कुबको। (वि) १२ पञ्ज, त  
 चनीका।

तुर्करी (स० लि०) तुर्करी चतुर्क यत् च मन्त्री यत् ययो  
 इरादित्वात् साङ्ग। तुर्करी मन्त्रा।

तुर्करी (स० श्लो०) यत्तु का हि लन, पुञ्जलका भारना।

तुर्करी (स० पु०) तुर्करी, एक राजाका नाम। ये  
 ययातिके पुत्र थे। जहाँ तब सधय है देको तुर्करी  
 नामसे सुप्रसिद्ध है।

तुर्करी (स० चम्प०) पञ्जिक, निबट, पाठ।

तुर्करी (स० पु०) ययाति राजाके एक पुत्रका नाम। ययातिके  
 औरत और देवयानीके गर्भसे इनका जन्म हुआ जा।  
 एक दिन ययातिने इनको बुला कर कहा—“पुत्र ! बियव  
 भोगो वे सुमि पभो तब खरि नहीं करे है; इसलिय मैं  
 तुमसे यौवन पाचता हूँ। इकार बर तुम्हारे यौवनका  
 उपभोग कर मैं लडे फिर तुम्हें वापस कर पूजा।”  
 तुर्करीने उत्तर दिया—“वित्ता ! मैं तुम्हारा जनेको तैवार  
 नहीं हूँ।”

“य कामने बरौ पाठ। काममोगन्नाकिनी।  
 बहसाम्भरकी बुद्धिप्रवचनविनी ह” ( मात का० )

ययाति पुत्रका उत्तर सुन कर बहुत क्रुध हुए और  
 तुम्हको लक्ष्मी देव प्रकार भूमियाय दे जाया—

“मरे शरीरसे लक्ष्मणदेव करनी पर तुमसे सुमि पपना  
 यौवन न दिया; इसलिये तुम बहारी राजा जोधोने,  
 चर्कोको प्रजाका चर होया। और जिनमें चर्कोधर्मका  
 ज्ञान नहीं है, जो मतिमोमाचार, मांसमद्य, सबडा  
 पबदारप्रसन्न और तिरक योनि है, लक्ष्मीके तुम राजा  
 होधोने तथा माया प्रकारका कट पाधोने।”

( भारत न० ८४ )

तुर्करीका च ययिनत्वं विन्दुपुराणमें इस प्रकार  
 लिखा है—तुर्करीके पुत्र साङ्ग, लनके पुत्र मोर्मातु, लन  
 के पुत्र मेरुशब्, लनके पुत्र करभ्यम और करभ्यमके  
 पुत्र मन्त्रत थे। मन्त्रके छोटी मन्त्रान लन, इसलिय  
 लनके पुत्रव मीय दुष्मन्तकी पुत्रकपसे प्रच चिन्ता।  
 इस प्रकार ययातिके प्रसावने तुर्करीके च यने औरक  
 न यका प्रायय किया जा। ( विष्णु ४ अ०, १६ प० )

तुर्करी (स० पु०) वेदिक राजसेन, एक राजाका नाम।

तुर्करी (फा० लि०) बहा।

तुर्करी (फा० लि०) बहोर सम्राजका, बहवित्राज।

तुर्करी (फा० लि०) बहा जो जाना।

तुर्करी (फा० श्लो०) पञ्जता, खटार।

तुर्करी (फा० श्लो०) चोङ्के दार्तिमें बोट पा मैन  
 जमनेका रोग।

तुल ( हि० वि० ) तुल्य देखो ।

तुलहराय—मारवाडके एक राजपूत कवि । ये गीत कवित्तके कईएक ग्रन्थ बना गये हैं ।

तुलना ( हि० क्रि० ) १ तोलना जाना । २ उद्यत होना, उतारू होना । ३ गाड़के पहियेका झौंगा जाना । ४ पूरित होना, भगना । ५ नियमित होना, अंदाज होना । ६ ठोक अन्दाजके साथ टिकना । ५ तुल्य होना, तोलने बराबर उतरना ।

तुलना ( सं० स्त्री० ) १ नाट्य, समता, बराबरी । २ तारतम्य, मिलान ।

तुलनी ( हि० स्त्री० ) वह लोहा जो तराजू वा कांटेकी डालीमें सूईके दोनों तरफ लगा रहता है ।

तुलबुल्लो ( हि० स्त्री० ) जस्टवाजी

तुलभ ( सं० पु० ) तुरीण वेगेन भाति भाण्डम्य लः प्रायुधजोषि महर्षेड ।

तुलव—महाराष्ट्र सम्प्रदायी ब्राह्मण जातिका एक भेद । दक्षिण कनाडाके आस पास इस जातिका वाम है । वहाँ इनको स्थिति और आ तपट साधारण है । ये लोग कम पढ़े लिखे होते हैं ।

तुलवाइ ( हि० स्त्री० ) १ तोलनेको मजदूरी । २ पहियेकी झौंघनेको मजदूरी ।

तुलवाना ( हि० क्रि० ) १ तोल करना, वजन करना । २ गाड़के पहियेकी धूरीमें घो तेल आदि दिलाना, झौंगवाना ।

तुलमारिणी ( सं० स्त्री० ) तुरीण वेगेन मरति मृगिनिडोप् । तृण, घास ।

तुलसी ( सं० स्त्री० ) तुला माट्टश्वं स्यति नाशयति सोक गौरादित्वात् डीप् शकश्व्वा० । स्वनामख्यात वृक्ष । ( *Ocimum Sanctum* ) "तुलसी" को नामोत्पत्तिके विषयमें इस प्रकार लिखा है : इस अखिल मंसारमें जिस देवोको तुलना नहीं है, वही तुलसी नामसे प्रसिद्ध है । ( शब्दार्थचि० )

वृहद्धर्मपुराणके मतसे—तकारसे मरण और उकार युक्त होनेसे मृत समझा जाता है अर्थात् मृतव्यक्ति जिसके प्रभावसे "नरुति" अर्थात् दोषि पाता है, उसोका नाम तुलसी है । ( वृहद्धर्मपु० ७६३ )

पर्याय—सुभगा, तीव्रा, पावनी, दिग्ग, वक्रभा, सुरिञ्जा, सुरसा, कायस्था, सुदुन्दुभि, सुरभि, चटुपवी, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराचनी, श्यामा, मोरी, विदग्मञ्जरी, भूतशो, भूतपवी, पर्णोत्त, शुन्दा, कठिञ्जर, कुठेरक, वैष्णवी, पुष्पा, पवित्रा, माधवी, अमृता, पत्रपुष्पा, सुगन्धा, गन्धहारिणी, सुरवल्ली, प्रेतराचनी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि ।

शुद्धपत्र तुलसीके पर्याय—वरपत्र, जम्बोर, पत्रपुष्प, फणिञ्जक, अल्पपत्र, ममोकरण, महवक प्रस्थपुष्प । गन्धतुलसीके पर्याय—सुगन्धक, गन्धनामा, तोच्छगन्ध, गन्धफणिञ्जक, सुगन्ध, देवदुन्दुभि । विद्वगन्धके पर्याय—वैकुण्ठक, विद्वगन्ध, अल्पमानक । श्वेत तुलसीके पर्याय—अजक श्वेतपर्णांग, गन्धपत्र, कुठेरक, अस्त्रार्जक, तोच्छ, तोच्छगन्ध और सितार्जक ।

क्षुण्ण तुलसीके पर्याय—कृष्णार्जक, क्षुण्णवर्णी, सुरभि, कालमान, करालक, कालपर्णी, मानका, कालमानक और वर्वरी ।

वर्षरी तुलसीके पर्याय—सुरभि, सुरभिहोषा, सुरसा, अपेतराचनी, वर्वरी, करवी, तुङ्गे, वरपुष्पा और अजगन्धिका ।

गुण—कटु, तिक्तारस, हृदयघ्नो, उष्णवीर्य, दाहजनक, पित्तकारक, अग्निप्रदीपक एवं कुष्ठ, मृत्वकृच्छ्र, रक्तदोष, ण्णर्वशूल, कफ और वायुनाशक । शुक्र तुलसी और क्षुण्ण तुलसी दोनोंके गुण एकमे हैं ।

वर्षरी तुलसीके गुण—यह रुच, गीतवीर्य, कटुरस, विटाही, तोच्छ, रुचिकारक, हृदयघ्नो, अग्निप्रदीपक, लघुपाकी, पित्तवर्द्धक एवं कफ वायु, रक्त, कण्डू, कृमि और विषनाशक है । ( भावप्र० )

इसको उत्पत्तिका विवरण ब्रह्मवैवर्तपुराणमें इस प्रकार लिखा है—तुलसी नामको एक गोपिका गोलोकमें राधाकी सखी थी । एक दिन राधाने इसे क्षुण्णके साथ विहार करते देखे थाप दिया कि 'तू मनुष्य शरीर धारण कर ।' तुलसी यह थाप सुन कर बहुत दुःखित हुई और क्षुण्णके शरणमें पहुँची । क्षुण्णने उसे कहा, 'तू मनुष्ययोनिमें जन्म ले कर तपस्याके द्वारा मेरा अंश पावेगी।' थापके अनुसार तुलसी धर्मध्वज राजाके

घोरम घोर उनको जो मावबोधि गर्भसे आर्त्ति'क पूर्णिमा-  
के दिन उत्पन्न हुई। हम ई रूपको तुलना बिजोने नहीं  
हो सकते जो, इसीमें रहना नाम तुलना पड़ा। दोहे  
तुलना हममें आ कर बहोर लगना करने लगे। हमको  
गोरन तपस्यामें लगे उद्विग्न हो गये। जितना बहोर  
तपस्या हो सकते हो, तुलनामें एक हो न बोहे। हम  
तपस्यामें ब्रह्मा भी स्थिर न रह सके घोर तुलनाके निकट  
था कर जाने, 'तुलना : तुम अपना धर्मोत्तर कर मांगो।'

तुलनामें ब्रह्माके बहोर, 'प्रभो : यदि पाप मुझ पर  
प्रसन्न है तो बिना बरके भिये प्राचना करतो हूँ जो  
मुनिसे। पाप मर्त्य है, पापने छोड़ जात बिजो नहीं  
है। मेरा नाम तुलना गोपी है, मैं पक्षी गोपीकर्म  
रहती हूँ। एक दिन मैं गोविन्दके साथ विहार करती  
करने मूर्च्छित हो गई थी, निम पर भो मेरी इच्छा पूरी  
न हुई। उसी समय रात्रिघो राधा कहाँ पड़ प गई  
घोर घोर शब्दोंमें हम दोनोंको एक रूपको तो पनेक  
कट्टु बचन बड़े घोर मुनि प्राप दिया। बाद ब्रह्मने  
मुझसे कहा कि तू तपस्या करके मेरा चतुर्भुज पच  
दावेयो। पच मैं बर्फीका पति सख्यसे पाना चाहतो हूँ।

हम पर ब्रह्मा बोले, 'श्रीकृष्णके चहुँके रूपक सुदाम  
नामक गोपनि रात्रिकाके प्रापसे दानवद्वयमें अथ निवा  
है। महाब्रह्म उत्पन्न नाम है मोनोचर्म तुम अपने देव  
कर मोहित हो गई थी, पर रात्रिकाके भयसे कुछ कर  
न नहीं। धर्मो उसीको तुम पतिव्रत रूपसे पच कर  
दोहे रूप मिल जायग। नारायणके प्रापसे तुम एक  
हृदयमें परिचल हो कर समाधि पूजा घोर विष्टासना  
होओमो एक लक्ष पुष्पोंके प्रवाल घोर नारायणको प्राणा  
बिधा होओमो। बिना तुलना लगे पूजा लिप्यक्त हो न।  
तुलनाके ब्रह्माके मुखसे यह लुन कर कहा, 'पापने जो  
मुझ कहा वह बल हीन। जिन्नु जगको रतिसि में  
दात्र नहीं हुई, पतः म्नामसुन्दर दिगुत्र कुंठसे मिलने  
का इच्छा करतो हूँ। प्रापक प्रकाशसे उनका मिलना  
दुर्लभ नहीं है। जिन्नु धर्मो धरने पचसे मेरे को राधा  
का भय है उसे ही मोहन श्रीरतिसि।

ब्रह्मने शुकदाचार रात्रिकामन्त्र, पद्य, बचन, पादि  
पचसे ह दिये घोर 'तुम राधाको तरह हृदयमा घोषो दिवा

कह कर कि पचने व्यालको चत दिये। तुलना भी तपस्या  
को समात्र कर स्थिर चित्तने बैठे। कुछ समय बाद  
ब्रह्मने बधनासुन्दर महाब्रह्म नामक राधससे राधा  
विवाह हुआ। महाब्रह्मको कर बिना या कि बिना लम-  
को शोका मतोत्त मङ्ग दुए रूपकी मृत्यु न होनी।  
महाब्रह्मने अत्यन्त शोक कर देवताघोषा परिहार  
ऐन निवादा। जब देवता लौन कुछ भी उत्पन्न कर न  
सक, तब ही मरके सब ब्रह्मके पाठ गये। ब्रह्मा चर्के  
पचने माव ही कर शिबके पाम प्राये शिबको चर्के  
बैकुण्ठमें विष्णुके निकट ही मय। विष्णुने कहा, पाप लोण  
मिल कर महाब्रह्मके माव कुछ श्रीरतिसि, हम महाब्रह्मका  
रूप बारक कर तुलनाको सतोत्त मङ्ग करेने। दोहे  
महाब्रह्म पाप लोगीं हारा मारा भयया। 'यह कह नारा  
यणने तुलनाका सतोत्त मङ्ग किया। जब तुलनाको  
मानुस पड़ा कि ये नारायण हैं तब लमने लके प्राप  
दिया कि 'तुम प्यार हो जाओ।' व्यालको मृत्युके बाद  
तुलना नारायणके घोर पर स्थिर कर रीने लगे तब नारा-  
यणने कहा तुम यह शरीर छोड़ कर लप्योके समान  
मेरी प्रिया होओमो। तुलना शरीरके मङ्गको नदी  
घोर बंधसे तुलना छुट होना। उसी समय वेना ही  
गया। तबही बराबर शान्तामको पूजा होने लगे घोर  
तुलनादन लमके लपर चहुँके समा। बिना तुलनाके  
उनको पूजा नहीं होती।

( ३८२० श्लोक ० ११—२२ अ० )

इहहर्मपुराणके मतसे—प्राचोन आकर्म के नाम-  
पुरमें धर्मदेव नामक विष्णुभक्तिपरायण एक साहस्योक्त  
ब्राह्मण रहते थे। उनको शोका नाम पुत्रा था। इन्द्रा  
धर्मचारिणी घोर पतिव्रता थीं।

एक दिन धर्मदेव ब्राह्मणको समझिं जा कर लप्यका  
मुच मान कर रहे थे। इतर मोत्रनका समय कोम गया,  
इन्द्रा पचने बरके पच्यमान पतिव्रताकी पूजा करके मनो-  
हर के नामप्रियार पर पतिव्रताकी घोर भूमने चलो  
गई। इसी दोषमें धर्मदेव पचने कर प्राये घोर पत्नीको  
पुत्रासुत्र तथा चहुँका प्राण कर बहुत बिरह। इन्द्रा  
पर लज्जर पचनेके मात्र हो लकीने प्राप दिया कि 'तू  
पुत्राका हो कर अपना घर छोड़ कर घर

धूमतो फिरती है, इस कारण राजसीका शरीर धारण कर। हन्दा उसी समय राजमा बन कर पृथ्वी पर आई और सब जन्तुओंकी खानि लगी। किन्तु पूर्वसृष्टिके कारण वह गो, ब्राह्मण और वैष्णवाटिकी नहीं मारती थी। अनेक जीवोंके नष्ट हो जानेसे पृथ्वी अस्विमालिनी हो गई। जब हन्दाकी और कोई जन्तु न मिला, तो उसने तीन दिन उपवास किया।

वेछे जीवोंके अन्वेषणमें वह कैलासजी गई और वहाँ भो शैवके प्रतिरिक्त और कोई मत्त न मिला। उसने सात दिन अनाहार रह कर शरीर त्याग दिया। एक दिन महादेव पार्वतीके साथ स्नान करके वहाँ पहुँच गये जहाँ हन्दाको लाश पड़ी थी। महादेव बोले, यह रूपवती हन्दा घमदेवकी पत्नी है। अभियापवश राजसीका रूप धारण करके भी उसने आज तक ब्राह्मणहत्या नहीं की है। अतः उसका शरीर निष्फल रहना उचित नहीं है। हमारे वचनाशुभर यह हन्दा पृथ्वी पर हलके रूपमें जन्म लेगी और सभीको प्रेमभाजना होगी। जब यह वृक्ष होवेगा, तब इसके पत्ते विष्णु पर चढाये जायेंगे। इसके पत्तोंके सिवा मणिसुक्ता आदि किसीमें भी विष्णुकी पूजा नहीं हो सकेगी, वृक्ष तुलसीके नामसे प्रसिद्ध होगा। पार्वती और हम इसके अधिष्ठात्री देवता होंगे।

तुलसी कार्तिक मासको अमावस्या तिथिमें पृथ्वी पर हलके रूपमें उत्पन्न हुई थी। ( बृहदपु० ८ श० ) तुलसीका माहात्म्य—कार्तिक मासमें तुलसीदलसे जो नारायणको पूजा करते एवं दर्शन, स्मरण, ध्यान, प्रणाम, अर्चन, रोपण तथा सेवन करते हैं, वे कोटिसहस्र युग तक स्वर्गपुरीमें वास करते हैं। जो तुलसीका वृक्ष रोपते हैं, उनका पुण्य उतनाही युग सहस्र वर्ष विस्तृत हो जाता है जितना उसका मूल फैलता है। तुलसीदलसे जो नारायणको पूजा करते हैं, उनके जन्मार्जित सभी पाप जाते रहते हैं। अतः तुलसीको गन्ध जिस और ले जाते हैं, वही दिव्य पवित्र हो जाती है। तुलसीके वनमें पिष्ट्याह्न करनेसे पिष्टगण बहुत पसन्न होते हैं। जिनके घरमें तुलसी-तमकी मट्टी रहती है, उनके घरमें यम-किङ्कर नहीं जा सकते। तुलसी-चूत्तिकासे लिप्त यदि

किसी मनुष्यका देहान्त हो, तो वह कितना ही पापों क्यों न हो, तो भो धनकिङ्करगण उसमें समोप जानिको बात तो दूर रहे, उसे देख भी नहीं सकते। जा तुलसीके मूलमें टोप टान करते हैं, उन्हें विष्णुपद प्राप्त होता है। जिसके घरमें तुलसीकानन है, उसका घर तोय स्वरूप है तथा नमंदा और गोशवरोमें स्नान करनेसे जो फल मिलता है वही फल तुलसीवन संसर्गमें है। जो तुलसी मञ्जरी द्वारा विष्णुका पूजन करते हैं, उन्हें फिर गर्भवाम-यन्त्रणा नहीं भुगतनी पड़ती अर्थात् उन्हें मोक्ष मिलता है।

पुष्करादि तोय, गङ्गादि सरित्, वासुदेव आदि देवता सर्वदा तुलसीदलमें वास करते हैं।

जहाँ केवल एक तुलसीका वृक्ष है, वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि त्रिदश अवस्थित हैं।

तुलसी पत्रमें केशव, पत्नीयमें प्रजापति, पत्रदलमें शिव सब समय रहते हैं। इसके पुष्पमें लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री, चन्द्रिका और शची आदि देवियां तथा शाखामें इन्द्र, अग्नि, शमन, वरुण, पवन और कुबेर आदि देवगण अवस्थित हैं। आदित्यादि यह, वसु, मरु और देवर्षि विद्याधर, गन्धर्व आदि समस्त देवयोजिन तुलसी-पत्रमें रहते हैं।

जो ब्रह्मास्त्रमासमें तुलसीका वृक्ष रोपते हैं, उन्हें अश्वमेधका फल मिलता है। तुलसीके समान पुष्प और सुक्तिप्रद वृक्ष और दूसरा कोई नहीं है।

तुलसी छाशमें रख कर यदि कोई भिव्या शपथ करे अथवा भिव्या वचन बोले, तो जब तक चौदहों इन्द्र रहेगी, तब तक उसे बार बार कुम्भीपाक नरकमें रहना होगा।

तुलसीचयननिषेध—पूणिमा, अमावस्या, हादमी और संक्रान्तिमें तुलसी नहीं तोड़ना चाहिये। तेल लगा कर मध्याह्नस्नान किये बिना निशि और सन्ध्या कालमें एवं रात्रिवास परिधान कर जो तुलसीदल तोड़ते हैं, वे हरिका मस्तक छिदन करते हैं।

तुलसीचयनविधि—मध्याह्नस्नान कर और पवित्र वस्त्र पहन कर तुलसीदल तोड़ना चाहिये। तुलसीदल इतने आहिस्ते आहिस्ते तोड़े जिससे कि शाखा हिलने

के पाँच । मांसादि टट खाँसे मङ्गापाप होता है । तोड़ने पर पहले भस्मपूर्वक मिश्रितकृत मन्त्रपाठ पाठ कर तीन बार तातो बकानो चाँदिये घौर तब धोरे घोर तोड़ना चाँदिये । तोड़नेका मन्त्र—

“मातस्तुभ्यि । योगिन्द्रवृक्षवागवदपारिणि ।  
 मा(त)वस्तु र्द्वारं विभोमि त्वां वनोदस्तु मे ॥  
 कुट्टये पारिवाताये ॥ उपमेति केचन ।  
 त्वना विना नैव एति विभोमि त्वामता हुने ॥  
 त्ववाविवा प्रदानये परवत् कर्म विष्णवे ॥  
 अतस्तुभ्यि हेमि त्वां विभोमि वररा मव ॥  
 वनोदस्तुभ्यं नरेमि वे हुवि वरेते ।  
 इन्द्रवस्तु वदमतास्तुभ्यि त्वां वयामर्हं ॥”

( किराणौगवार )

“तुलसीवस्तुवमादि वरा त्वं केचनविवा ।  
 केचनाने विभोमि त्वां वररा मव सोवदे ॥  
 त्वं वदमर्हये नरे । पूजयामि वना इतिम् ।  
 तत्वा कुन पदिवामि वनो मन्त्रविपादिनि ॥”

( लम्पु० )

इन सब मन्त्रोंका पाठ कर तुलसीद्वय तोड़ें घोर विष्णुको पूजा करे, तो कचकोटि फल मिलता है । हाथयो चाँदि त्रिविधोमें तुलसी चक्रमका निवेश है । विष्णु-पूजाके दिवसे एक हाथयो त्रिविधो कोड़ कर घोर सब निविद दिभोमि तुलसीद्वय तोड़ सकते हैं ।

( विष्णुवर्मोत्तर )

तुलसीका पाठका मन्त्रमन्त्र— मन्त्रेण विष्णु-भक्ति-परमेश्वर वैश्वदेवो तुलसीकाठको मासा चरम्य चारण करनी चाँदिये । जो तुलसीको मासा चारण करते हैं, उन्हें एक एक पर चरम्येक चक्रका एक पाठ होता है । तुलसीमासा वैश्वदेवोके चिह्नरूप है । पञ्च बचनानुसार, ब्राह्मणको काठकी मासा पहले यतिको किसी सवारो पर चढ़े घोर विषवाको चारपाई पर सोये हुए दिखे तो कश्चित् काम करना चाँदिये ।

“काष्ठमात्पावरं विद्वं व्रीहं चाम्रौहिन ।  
 कृतात्कां विषवां वद्वं बन्धेकं चम्यारिषेत् ॥”

( वद्वंभु० )

इस बचनके अनुसार ब्राह्मणको तुलसीमासा चारण

करना निविद है । इससे उत्तरमें वैश्वदेव कहते हैं—  
 तुलसीकाठकी मासाके विषा घोर घुसे काठको मासा निविद है । तुलसीमासा चारणका निविद है, यह इस बचनसे नहीं झटकता ।

स्नानार्थं पणितोका चक्रमा है त्रि यद्द विधीके निवि निविद है । इससे प्रमाणमें ये से बचन देते हैं—

“तुलसीवस्तुवदेव मात्पैव मव पुषिपः ।

विश्वं न च तत्तु चाप्यमासां गन्धपां कुन ॥”

( चरुवोत्तर० )

इसके विना घुसरोके मतसे—विष्णुकोचाविज्ञान विमोको इसका कारण करना उचित नहीं है ।

तुलसीका घाव—

“घुरां हुम्बन्धो विश्वपुत्रिणां विश्वपापयो ।

तुलसीयां वन्दित्वैव तुलसीं कृष्णवीर्यां ॥”

एतन्मासाच्च केतुत् त्वेन मासात्कृतुत ।

न वडेतां चतुश्च कोत्तरयेव चन क्मीत् ॥”

( ब्रह्मवैवर्तपु० )

जो यह घाव प्रति दिन पाठ करते हैं, उन्हें एक मेषयज्ञका एक मिलता है । तुलसीपत्रके पशिय-पूजा नहीं करने चाँदिये । ‘न तुलसीयाः विनामक’ (स्तुती)

दुष्कीविषाद और दुष्कीप्रसिद्धा विधि—पहले तुलसीद्वय करमें चक्रका किसी घुसरो प्रमद रोपते हैं । पीछे तीन वर्ष पूरे होने पर वहाँ एक वैदिका बनाते हैं । इससे चक्रकर विष्णुकाकर्म वा कानि कामकाके वैश्वदेवके लक्ष्यमें वहाँ मन्त्रप घोर कृष्णवैरो निर्मात्र करते हैं । यह प्रतिष्ठा पूर्वभारत में विविध प्रकारसे है ।

बाद मानिकर्म, भावकापन, इतिव्याह चाँदि विवाहविधिसे अनुसार सब काम करने पड़ते हैं । वैद वेदाङ्गपरय ब्राह्मणोंको कश्चित् नियुक्त करना चाँदिये और वैश्वदेवविद्यालय अनुहार नईनौकलन स्थापन करना चाँदिये । वहाँ मन्त्रपमें लक्ष्यो नारायणको मूर्ति स्थापन करने पड़ते हैं । सूर्यके चक्र होने पर दुष्मन्त्रमें मन्त्रपूर्वक विवाह कम नत् सब कार्य करके होम करना होता है । मन्त्र—

“जो वनो विष्णवेव नवः त्वता, नारायणव स्वादेः,

नारायण मोक्षिणव विश्वर्षे मनुस्तरणव विविक्काम वाम

नन्द श्रीवराय सुप्रोक्तेशाय पददत्तनामोय रामोदराय उपेन्द्राय  
 अग्निदत्ताः अश्विनाय अमन्दाय गन्धिने चक्रिरे विष्कट्सेनाय  
 वैश्वन्तःपर्वनाय मुह्यन्दाय अवोषजाय स्वाहा” इस  
 मन्त्रने शोभ करना चाहिये। बाद यजमानकी स्त्री  
 प्रोर सगीत वन्दुप्रार्थि साय मित्त कर इमका प्रदक्षिण  
 करत हैं। वेदिक पर तुलसीके पाण्डिपङ्गमें सूक्त,  
 गान्तिकाध्याय, जप और वैश्ववर्मन्त्रिताका पाठ भी  
 करना पड़ता है।

पोष्टे तरह तरहके मङ्गलवाच्य कर पूर्णाहुति देते  
 और तब अग्निमें कविधि समाप्त कर ऋत्विकोंको दक्षिणा  
 दे विटा करत हैं। इस प्रकार शिशुके साथ साथ  
 देवा तुलसीको अर्चना करनी पड़ती है। जो इस विधान  
 में तुलसी-प्रतिष्ठा, तुलसी-रोपण और तुलसीको सेवा  
 करत हैं, वे विपुल भोग प्राप्त कर सोच पाते हैं।

( हं सिद्धि० ०० वि० )

प्रत्येक मनुष्यको अपने घरमें कमसे-कम एक  
 तुलसीवृक्ष अवश्य लगाना चाहिये।

तुलसी कवि—हिन्दीके एक कवि। इनके पिताका नाम  
 यदुराय था। इन्होंने १६५५ ई०में कविमाला नामक  
 एक हिन्दो-ग्रन्थ रचा था। इस ग्रन्थमें पूर्ववर्ती ७५  
 कवियोंकी कविताएँ उद्धृत की गई हैं।

तुलसीदास ( सं० पु० ) तुलसीपत्र।

तुलसीदास ( हि० पु० ) एक आभूषण।

तुलसीदास—हिन्दुस्थानके सर्वप्रधान भक्त-कवि। किसीका  
 मत है, कि ये कनौजिया ब्राह्मण थे, और कोई इन्हे मरदू-  
 परीण ब्राह्मण बतलाते हैं। कनौजिया ब्राह्मण मित्रा-  
 हृत्तिमें बड़ो नफरत रखते हैं; पर तुलसीदासने अपनी  
 कवितामें लिखा है—“जायो कुल-मंगल” अर्थात् “जिस  
 कुलमें माँगनेकी प्रथा है, उस कुलमें मेरा जन्म हुआ”।  
 इसमें उन्हे कनौजिया न ममक सरयूपारीण समझे तो  
 कोई आपत्ति नहीं। इनकी दुबे उपाधि थी और गौव  
 परागर। वि० सं० १५५८में इनका जन्म हुआ था। पहली  
 बहुतसे हिन्दुओंको ऐसी चहा थी, कि ‘जो ज्योष्टाके  
 अन्न और सूनाके प्राग्भ्रमें अमृतमूल ( गरुड ) में जग्म-  
 पश्य करता है, वह पित्रहन्ता और अत्यन्त नीच-हृदय  
 होता है। ऐसे पुत्रको त्याग देना जो उचित है, यदि

को हवग त्याग न सकें, तो कम-से-कम आठ वर्ष तक  
 उसका मुँह तो देखना ही नहीं चाहिए।’ यह ज्योतिष-  
 का आदेश है।

तुलसीदासका जन्म भी उक्त अमृतमूल नक्षत्रमें हुआ  
 था। सम्भवतः इसीलिए उनके पिताने उन्हे त्याग दिया  
 था। उस समय ऐसे बच्चोंको पालनेके लिए अन्य गृहस्थ  
 भी तैयार नहीं होते थे। श्रीभाग्यवग तुलसीदास एक  
 साधुके हाथ पड़े गये थे। कविवरने अपनी विनयपत्रिका-  
 में लिखा है—

‘जननी जनक तजो जनमि करम विनु विविहूँ गिरल्यो अबढेरे।’

अर्थात् जनमनेके बाद मातापिताने मुझे छोड़ दिया  
 था; विधिने भी मेरा भाग्य अच्छा नहीं किया; इसीलिए  
 मुझे छोड़ दिया है।

वे साधु ही तुलसीदासके गुरु थे; उन्हींकी सङ्गतमें  
 तुलसीदासने भारत भ्रमण किया था और उन्हींसे उन्हे  
 आध्यात्मिक शिक्षा मिली थी।

इनके कवित्त-रामायणके पढ़नेसे मालूम होता है  
 कि इनका यथाय नाम रामजीला था; पिताका नाम  
 आकाराम शुक्, माताका हलसी, पत्नीका रत्नावली,  
 श्वसुरका दीनचन्दु प ठक और पुत्रका नाम तारक था।  
 शैशवावस्थामें ही पुत्रको च्युत हो गई थी। जैसा कि  
 कविवरने स्वयं लिखा है—

‘दूबे कातमगम है, पिता नाम जगजान।

माता हूलसी कहत सब, तुलसी है सुन कान ॥

प्रह्लाद उचारन नाम करि, गुरुको सुनि ए साध ॥

प्रगट नाम नहि कहत उग, कहे होत अराध ॥

दीनचन्दु पाठक कहत, चसुर नाम सब कोइ ॥

ग्लाबलि तिय नाम है, सुत तारक गत सोई ॥”

बहुतोंका विश्वास है, कि तुलसीदासका यह नाम  
 उनके गुरुका दिया हुआ है। इनके जन्मस्थानके विषयमें  
 भी माना मत हैं। कोई कहते हैं कि टोषावके अन्तगज  
 तरो नामक स्थानमें इनका जन्म हुआ था तो कोई इस्ति-  
 नापुरमें बतलाते हैं, कोई चित्तकूटके निकटवर्ती हाजि-  
 पुरका इनकी जन्मभूमि मानते हैं तो कोई वांदा जिलेमें  
 यमुनाके किनारे राजपुर नामक स्थानमें इनका जन्म  
 हुआ बतलाते हैं। परन्तु आनुसङ्गिक प्रमाण द्वारा यही

अनुमित होता है कि तब राम जो इनको अपना मुनि है ।  
 बान्धावस्थामें इनोंने गूकत्वमेव ( बत'साध शोर  
 नामक ज्ञानमें ) विद्याभ्यास किया था । परन्तु यहां से  
 स स्तन मायामें विधिय पाण्डित्य प्राप्त न कर सके थे ।  
 साधुओं केपाये ब्रह्मसमय विद्वद्वचनमें रह कर इनोंने  
 मामूली हिन्दो शौर उर्ध्व' बोध लो लो । इनको बनाये  
 हुए रामायणमें उत्तरकाण्डके मङ्गलाचरणके श्लोकको  
 पढ़नेसे मात्स्य होता है कि स स्तनमायामें इनका विधेय  
 दक्ष न था ।

तुलसीदासके अपदेहाका नाम था नरहरि । रामा  
 नन्दमें किञ्च प्रकार रामानुजके विमिष्टान्देतमतका प्रचार  
 किया था, तुलसीदास उस पर तबसे बहुत कुछ पच  
 पाते थे । ये नहर बारागो मैथिलीको तरह है तथाद को  
 नहीं मानते थे । पद्योपामें इनकी 'रसात' ब्राह्मण'के  
 नामसे प्रसिद्धि है । जर्षीमें गङ्गाचार्य प्रकृतित वैदाल  
 के पद'नशादका निर्विधियाहैत नामसे उल्लेख किया  
 है । इनको रामायणमें कई जगह गङ्गाचार्य का मत  
 पञ्च किया गया है । गङ्गाचार्यके ब्राह्मणों इनोंने  
 'राम'के नामसे प्रसिद्ध किया है ।

गङ्गाचार्यके अनुयायी प्रसिद्ध मधुसूदन बरस्वतो  
 तुलसीदासके एक मित्र थे ।

रामानुजके जो सुखपरम्पराएं प्रकृतित हैं, उनमेंसे  
 दो तात्त्विकाओंमें तुलसीदासका नाम पाया जाता है ।  
 यथा—

- १ रामानुजस्वामी २ गङ्गाचार्य, ३ कुटीयाचार्य
  - ४ मोक्षाचार्य, ५ परागाराचार्य, ६ बाबाचार्य, ७ लोका
  - चार्य, ८ देवाचिदेव, ९ शैलेशाचार्य १० पुत्रबोत्तमाचार्य
  - ११ गङ्गाचार्य, १२ रामेश्वरानन्द १३ शारानन्द, १४
  - देवानन्द १५ ज्ञानानन्द १६ ज्ञानानन्द १७ निरव्यानन्द,
  - १८ पूषानन्द, १९ ज्ञानानन्द २० चर्मानन्द, २१ हरिबली-
  - नन्द, २२ राघवानन्द, २३ रामानन्द, २४ सुखरामानन्द,
  - २५ माधवानन्द, २६ मरिचानन्द, २७ लक्ष्मीदास, २८
  - गोपामोदास, २९ नरहरिदास शौर ३० तुलसीदास ।
- तुलसीदासके प्रथम दोनवस्तु श्रीरामचन्द्रजीके  
 कपाहक थे । इनकी वात्सिका कथा, तुलसीदासके  
 - शाव विवाह होनेके बाद भी, बहुत दिनों तक पित्तके

धर रहते थीं ये भी रामचन्द्रजीको मक्ति करती थीं ।  
 यथासमय रजावली अपने पतिके घर या नहर रहने  
 लगी । उनका एक पुत्र हुआ । तुलसीदास शोको छोड़  
 कर अथमर मो न रह सकते थे । ये पञ्चम स्तन जो  
 बने थे । एक दिन तुलसीदासकी पत्नी पतिसे बिना  
 पूछे जो अपने मायके चले गीं । इतने तुलसीदासकी  
 बड़ी चिन्ता हुई, मैं तुल्य को पकड़े पोछे पोछे रोके गये  
 शौर रास्तेमें एक पत्रक लिया । उस पर रजावलीने  
 कहा—

'अब न अबत जायुं पौरै जायेहु पाव ।  
 पिक पिक देहे नेमको बरा कहीं न पाव ॥  
 अतिबर्षन देह मय तानई धैषी प्रीति ।  
 पेशी नौ लीराम परैं श्रेष्ठ न ली बरपीति ॥" \*

श्रीको मोडो मन्त्र नामे तुलसीदासकी पाछे चल  
 गई । उन्होंने फिर शोको तरह ताका मा नहीं ।  
 रजावली नहीं आगते थीं, कि इस जगसा जातये इनके  
 आसोके इत्यमें गङ्गी श्रेष्ठ पदु'सेवा । उन्होंने तुल्यके  
 दासको यहाँ डहरा कर इनसे आशापदिधि लिखे बहुत  
 कुछ पाय'ना लो; परन्तु कुछ पल न हुआ । जलो  
 मय तुलसीदास राम नामको ध्यायन मान-अन्यासो  
 जो गये ।

ये पत्रके तो पद्योपामें पौर फिर आसोमें बहुत  
 दिनों तक रहे । एसे बोधमें ये मधुरा हत्यायन कुछ  
 देस प्रयाग शौर सुखबोत्तमसिद्ध दर्शन कर आये ।

रजावलीमें दृष्टस्वायका छोड़नेके बाद अपने पति  
 तुलसीदासको एक पत्र लिखा—

'कहिरी लीनी कनक ली, रहत कविन वंन तोर ।  
 नाहि क्येका वन नहीं, अवत बडे हर श्रेष्ठ ॥"  
 पत्रार्थ—कनकवरपी चौबकटि में, सविद्योके साथ  
 रहतो ह । मैरो ज्ञानो कटे रहका सुनि कर नहीं, कर  
 रही बातका है कि तुल्य' कोई दूसरो लो न सि ली ।'

\* मधुसूदन शौर कविमातुल्य काक संस्कृत प्रथममें लिखा  
 है।—तुलसीदासकी रायी वाक्यमें देह कर पीहर का रही थी,  
 बाईमें गङ्गीसे पतिकी पीछे पीछ जाते देह नर पल कही थी ;  
 वस्तु अशोभ्याने देही निम्नदर्शी है कि, तुलसीदासके इतरान  
 बहुत बने वर कयों लीये वच रोहे कहे थे ।



तुलसीदासने इसका उत्तर दिया—

“कटे एक रघुनाथ संग, बाधि जटा मिर केग ।

इत तो चाखा प्रेमरस, पत्नीके उन्देश ।”

कैसे मधुर बात है। पतिका उत्तर पा कर रत्नावली निश्चिन्त हो गईं। जी भरके पतिको प्रशंसा करने लगीं।

वर्षों बोट गये। तुलसीदास इस समय यादवधर्म पदापण कर चुके थे। उन्हें घर-दार कुछ भी स्मरण न था। नाना स्थानोंमें पर्यटन करते हुए दैवयोग वे अपने सुसराल पहुँचे और अतिथि बन कर एक दिन वहीं रहे। उन्हें याद हो न गी कि यह उनको सुसराल है। उन्होंने वृद्धावली उनका प्रतिदिनकार करने शुरू। उन्होंने भी अपने पतिको न पहचाना। उन्होंने तुलसीदासके लिए आधाराटिको व्यवस्था कर दी। तुलसीदास स्मार्त-वैष्णव थे, वे अपने हाथमें रमोई बनाने लगे। दो एक बात सुन कर रत्नावलीने अपने पतिको पहचान लिया। उन्होंने अपने मनका भाव छिपा कर कहा—‘प्रापको मिर्च ला दूँ।’ तुलसीदास बोले—‘बुरत नहीं, मेरो भोलोमें है।’ रत्नावली बोली—‘तो क्या जरासा कपूर ला दूँ?’ तुलसीदासने कहा—‘वह भी मेरो भोलोमें है।’

इसके बाद माधो, पतिसे कुछ न कह कर उनके चरण प्रक्षालनके आगे बढीं। परन्तु तुलसीदासने निषेध कर दिया, जिससे उनको मनस्का मना सिद्ध न हुई। उस दिन रातको उन्हें नीन्द भी न आई। मिर्च यही चिन्ता थी—‘किस तरह मैं हृदयेश्वरकी पादसेवा कर सकूँगी?’ वही सोचा-विचारके बाद नियय किया कि जो अभी जरा जरासे चोर्जोकी भी त्याग नहीं कर सके हैं, वे क्या अपने धर्मपत्नीको मंत्रथा त्याग सकते हैं? दूसरे दिन प्रातःकाल आ कर उन्होंने पतिसे पूछा—‘देव! आपने क्या सुझे पहचाना?’ तुलसीदासने उत्तर दिया, ‘नहीं।’ रत्नावलीने फिर पूछा, ‘प्रापको क्या यह भी नहीं मालूम कि आप किसके घर ठहरे हुए हैं?’ उत्तर मिला, ‘नहीं।’ फिर पूछा, ‘इस स्थानका नाम जानते हैं?’ इसका भी उत्तर मिला, ‘नहीं।’ फिर रत्नावलीने धीरे धीरे अपना पूरा परिचय दे कर उनसे

सहको प्रार्थना की। परन्तु तुलसीदास किमो प्रकार भी राजी न हुए। रत्नावलीने बड़े दुःखके साथ कहा—

“खरिदा नरी कपूरको उचिन न पिय प्रिय म्याग ।

कौ गरिया मोहि गेटिके धनल हरो अतुराग ॥”

अर्थात् जब तुम्हारे भोलोमें कपूर ले कर कपूर तकको स्थान मिल गया, तब प्रियतम! स्त्रोको त्याग देना उचित नहीं। या तो मुझे भी भोलोमें रख लो जिए, अथवा (सर्वत्यागी हो कर) उस भगवानमें अनुराग लो जिए।

स्त्रोको बात सुन कर माधु तुलसीदासको आनन्दय हुआ। उन्होंने मान लिया कि उनको भवेदा उनको स्थाने अधिक ज्ञान प्राप्त किया है। फिर क्या था, तुलसीदास सर्वत्यागी हो गये—भोलो एक ब्राह्मणको दे दी।

तुलसीदास, वलिया जिलेके अस्तगत भगुके आश्रम, हंसनगर, पारागिया (पारागरोय) प्रादि पुण्यस्थानोंके दर्शन करते हुए गायघाटके राजा गभोरदेवकी पातिथ्यता पर मग्न हो कुछ दिन वहीं रहे। वहाँसे ब्रह्म-ग्वरनाथ नामक महादेवके दर्शन करनेके लिये पारा जिलेके ब्रह्मपुरमें गये। वहाँसे वे काण्ड-ब्रह्मपुर गये, यहाँके अधिवासियोंकी राक्षसो नोतिको देख कर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। यहाँ महारु नामके एक अहोरेने तुलसीदासकी बहुत सेवा की थी। अहोरेको सेवामें खुश हो कर उन्होंने उससे कुछ सांगनेके लिए कहा। दरिद्र अहोरेने प्रार्थना की—‘भगवान् पर मेरो पूर्ण-भक्ति रहे और मेरा वंश दीर्घजोयो हो, इतनी हो मेरो प्रार्थना है।’ तुलसीदासने कहा,—‘यदि तुमने (वा तुम्हारे परिवारमेंसे और किसोने) चोरो न की हो, अथवा किमोके मनको कष्ट न दिया हो, तो तुम्हारा अभिप्राय सिद्ध होगा।’ वलिया और शाहाबाद जिलेके लोग अब भी इस किस्वदन्तिको कह करत हैं, तुलसीदासकी बात सच्ची निकली।

काण्डमें तुलसीदास बेलापतीत नामक स्थानमें बसे गये। यहाँ पण्डित गोविन्दमिश्र नामक एक शाक-होषी ब्राह्मण और रघुनाथमिश्र नामक एक शत्रियने बड़े आदरसे इनको अपना अतिथि बनाया था। उनसे

अथनामुसार बेनापतौतका नाम रघुनाथपुर प्रसिद्ध हुआ। यहाँ जिस बीरारे पर से बैठे जाते थे उसको धर भी मोम मन्त्रिकों निगाहसे देखते हैं। रघुनाथपुर से निकटवर्ती आठव ग्राममें जोरावराम ह नामक एक कर्मियने हमसे दोषा पढ़ाय को सो।

तुलसीदास पहले पयोध्यामि या कर कुछ दिन समाप्त-वैश्वदेवे रूपमें रहे थे। उस समय भगवान रामचन्द्रने उनको सङ्गमें दयाँ न दिये और भावामें रामायण लिखनेका पाठ्य दिया। १६११ म वत्समें इन्होंने रामायण लिखना प्रारम्भ किया। परन्तुकाण्ड समाप्त होनेके पक्षसे दो बैरागी वैश्वदेवि उनका मतभेद हो गया। वे भाव को कर कामो चले पाये। मोहावर्द्ध कुच्छके पास पञ्चाशटमें रहना छेगा था। यहीसे १६०० म वत्समें इन्होंने श्रमशाम किया। जहाँ से रहते थे उससे पासका बाट भव मो 'तुलसीघाट' कहलाता है। जमसे पास ही उल्ल कवि द्वारा प्रतिष्ठित एक इतुमानका मन्दिर है।

आयोमें हमसे विषयमें बहुतमो विचलदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं—

सुना जाता है, कि रामायण समाप्त होनेके बाद, एक दिन तुलसीदास मन्त्रिकविद्या-घाटमें खान कर रहे थे। इतनेमें एक स सङ्गके आनकार पण्डितने या कर उनसे कहा,—“पाण्डु पापतो म सङ्गत जानते हैं फिर भावामें रामायण क्यों लिखो।” तुलसीदासने जँम कर उत्तर दिया—“मिरो भावा निनास तुल्ल है यइ मैं मानता ह पर कह पापके 'शायिआवर्धन' को पपिया पतिह प मोमें उत्तम है।” पण्डितने कहा—“कैसे ?” तुलसीदासने उत्तर दिया—

“ममिमानन निह वारै वृत्र भयी निहारी।  
या छौरिब का नमरिब कइइ विवेक विधारी ॥”

जन्मभाम दुल्ल एक पच्छे कवि से हिन्दुकी कविता इनकी बहुत पच्छो होती थी। एक दिन कुछ पण्डितोंने उनसे म सङ्ग भावामें कविता बनानेके लिए कहा। इस पर से बोले—“मैं तुलसीदासके पूछ कर उत्तर दूँगा।” तुलसीदासके पूछने पर उनसे उत्तर दिया—

“का नाका का संकल्प हीह जादिये सोच।  
कान तु बावहि जानरी का छरि करै कुवाँच ॥”  
जिनो मयय कुछ कञ्चित तुलसीदासको मारते पाये थे। उनसे उनको रक्षाके लिए प्रसन्न न कर कहा था—  
“बावराहमिने कबर रचनी नहु दिशि चोर।  
इकठ दवादिपि सेठिये कतो बिच्छोरि शिरीर ॥”

तुलसीदासके अथनामुसार इतुमानमें दसन दिये। उनसे उस मोम पाकारको देख कर कञ्चित मोम मूर्तिन का कर निर पड़े।

पञ्चदश वादयाइते रात्रभ-पश्चिम टोड(मल तुलसी दासके एक परम मित्र थे। १६४६ म ०में टोडरमनको मरुत होने पर, उनके आरपाव' तुलसीदासने निम्न लिखित दोहरे रचे थे—

“महले वारो नरको मरका बरक महीर।  
तुलसी वा कपिछकमें बनबै योहरहीर ह  
तुलसी राम कबेइयो तिर कर बली मार।  
योहर करे व काव हू काग कर रहेव उदार ॥  
तुलसी उर थाव विमल टोडर तुलसन काग।  
बसुकि तुल्येव लीपिये उमनि हमनि अतुलाम ॥  
रायकाग टोडर बने तुलसी नबैइ मिरीष।  
जिबै मीठ पुवीन विनु वही बहो संकेष ॥”

पञ्चदश मानसि ह और जगत्सि ह पादि विन्दु रात्रकुमारगव पञ्चर दन्ते मिना करते थे। एक दिन जिनोने तुलसीदासके पूछा—“इहू पादमो पापके पाप क्यों पाते हैं ?” तुलसीदासने इसका उत्तर दिया—

“इहै न हूरी कौदुइ के काई किंहे काव।  
को तुलसी मर गो लियो राम मीवमिवाव ॥  
वा पर माने इह पुनि मृपटी एये पाव।  
ते तुलसी उव गम विनु ते अब राव उहार ॥”

इम प्रकार तुलसीदासके सम्बन्धमें और मो बहुतमो विचलदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं। 'बनारसी विद्याम' नामक हिन्दो अंमयन्में कविबर बनारसोदासको जोबनोमें लिखा है कि “म ० १६००में जिस समय तुलसीदासका मरीरपात हुआ था, उस समय कौनकवि बनारसोदास को पाण्डु ३० वर्षकी थी। भावामें तुलसीदासके भाव बनारसोदासको मीट हुई, तुलसीदासने रामायणकी

एक प्रतिनिधि करा कर उन्हें उपहारस्वरूप दो। इसके २।३ वर्ष बाद दोनोंका पुनः समागम, हुआ। तो तुलसीदासने रामायणकी मोन्दर्य विषयमें उनसे प्रश्न किया। बनारसोदासने उसी समय यह कविता रच कर सुनाई—

“विराजै रामायण पद मांदि ॥

मरमी होय मरम सो ज्ञाने, धूरष जानै नहि, विराजै ॥

धातमगम ज्ञानगुन लक्ष्मन गीता सुमति गनेत ।

शुभयोग धावरदल-में डेत, वर विवेक रचयेत; विराजै ॥

ध्यान धनुष टकार शोर सुनि, गई विषयदिनि (१) माग ।

मई मरम मिय्यामत लुट्टा, उठी धारणा धाम, विराजै ॥

जरे अज्ञान माव राक्षस कुल, लरे निहान्तिन सूर ।

जूझे रागद्वेष सेनापति संसे गष्ट चक्षुः, विराजै ॥

विलसत कुम्भकरण भवविभ्रम, पुलकिन मन दरपाय ।

यकित उदाय धीर महिषावण, सेतुवन्ध समभाव; विराजै ॥

मुछित मन्दोदरी दुरागा, सजग चरन रुनुमान ।

घटी चतुर्गत परगति सेना, लुटे ठरक गुण धान, विराजै ॥

निरखि सकति गुग चक्रवदभुन, उदय विभीषण दान ।

फिरै क्वन्ध महीरावणकी, प्राणभाव शिरहीन; विराजै ॥

‘इह विधि सकल साधुपदभन्तर होय मरुज संग्राम ।

यद विवहारदष्टि रामायण, केवल निधय राम ॥

विराजै रामायण ॥”

तुलसीदास यथायथ में हिन्दुके महाकवि थे। उनको रचनाका माधुर्य, निपिचातुर्य और आध्यत्मिकभाव मन्त्र-विश्व अत्यन्त प्रशंसनीय है। हिन्दुभाषा-भाषी प्रति उच्च राजा महाराजाओंमें से कर दोन दरिद्र भिक्षुक तक तुलसीदासके दोहोंका पाठ करती है। इनके नामसे बहुतसे ग्रन्थ प्रचलित हैं, किन्तु वे सभी इन्हींकी निखनो-से निकले हुए हैं या नहीं, इसमें सन्देह है।

निम्नलिखित ग्रन्थ खाम उन्होंके रचे हुए समझी जाते हैं,—

१ रामलोला नहछू, २ वैराग्यसन्दोपनी, ३ वरवे रामायण, ४ पार्वतीमङ्गल, ५ जगन्कीमङ्गल, ६ रामाज्ञा (ये छ ग्रन्थ छोटे छोटे हैं), ७ दीहावली वा सतभङ्ग, ८ कवित्त रामायण वा कवितावली, ९ गोत-रामायण

वा गीतावली, १० लखावली वा लख-गीतावली, ११ विनयपत्रिका, १२ रामचरितमानस। अन्तमें छ ग्रन्थ बड़े बड़े हैं। रामचरितमानस सबसे बड़ा ग्रन्थ है और यह मानमें बड़ा 'तुलसीरामायण' नामसे प्रसिद्ध है।

तुलसीद्वारि—यिगावपत्तन जिनात्मगत वस्तार राज्यको एक विमल गिरिमाना। यह अपना १८' ४' ३०" और देगा ८१' ३०" से ८२' ४०" पूर्वमें अवस्थित है। इसकी ऊँची चोटोका नाम तुलसी है। जो समुद्र पृष्ठसे ३८२८ फुट ऊँची है।

तुलसीदेवा (मं० ली०) तुलसी देवि तुष्यगन्धत्वात् द्विप षण्, तत-टाप्। वर्वरा, वन तुलसी।

तुलसीपर्व (मं० ली०) तुलस्या. पर्व इ-तत्। तुलसीको पत्तो।

तुलसीपुर—१ अयोध्याके गोगटा जिलेके अन्तर्गत एक परगना। इसके उत्तरमें हिमालय, दक्षिणमें बनारस-पुर परगना, पूर्वमें पारनाला नदी और बाराणस जिला है। इस स्थानका प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोरम है। उत्तरभागमें पहाड़के ऊपर गयमें टंका रचित विन्दोर्ण वनविभाग है और उसके बाद से छोटे छोटे पहाड़ोंसे घिरे हुए ऊँचे नीचे भूमिखण्ड हैं। यहाँके जमीन उत्तम होने पर भी जनवायु बहुत अस्वास्थ्यकर है। इसी कारण यहाँ बहुत कम मनुष्य बसते और उतना अच्छा कृषिकार्य भी नहीं होता है।

परगनेका प्रधान पशु जलोय है किन्तु यहां धानकी फसल अच्छी होती है। इसके निवा जी, गेह और उरद भी कम नहीं उपजते। यहां हिन्दुओंको संख्या हो सबसे अधिक है जिनमेंसे धारु जातिका नाम हो उल्लेखयोग्य है। धारुलोग तूराणी जातिके जैसा होने पर भी ये अपनेकी चितौरके राजपूत कुलोद्भव वतनाते हैं।

अधिक दिनकी बात नहीं है, कि तुलसीपुर परगनेका अधिकांश हो शानवनसे टका हुआ था। बीच बीचमें दो एक घर धारु अपने अपने मदारके अधीनमें वहाँ स्थायी-भावसे रहने लगे। ये सब धारु-मदार दो प्रकारके कर देते थे। एक कर 'दखिनाहा' वा दक्षिणांशमें बलरामपुरके राजाकी और दूसरे 'उत्तराह' वा उत्तरांशमें देह राजाकी मिला करता था।



एकत्र ही रहे हैं, उसमें यद्यो प्रतीत होता है कि उन पर श्रीग तुलसीवादे पर शीघ्र ही आपत्ति आनेवाली है। यह विचार कर उन्होंने ब्रिटिश-पक्षमें मिलनेके लिए दूत भेज दिया। १८१७ ई०, ताराख २० दिसम्बरको प्रातः कालके समय बालक महारराव तम्बूके बाहर खेल रहा था, उसी समय शत्रु लोग कुम्हारकी पकड़ कर ले गये और एक टल मैनिकीनि आ कर तुलसीवादेकी घेर लिया। तुलसीवादेने आसन विपट्ट देख उन लोगोंमें मावधान रखनेके लिए कहा और तिरस्कार भी किया। परन्तु किमाने भी उनको बातपर ध्यान नहीं दिया। अन्तमें रत्नक लोग तुलसीवादेको पाल्कोमें बंधा कर शिवा नटोके किनारे ले गये और उसका शिर काट कर नदीमें फेंक दिया।

तुलसीवाम ( हि० पु० ) अग्रहणमें होनेवाला एक प्रकारका मण्डन धान। इसका चावल बहुत सुगन्धि होता है और कई माल तक रह सकता है।

तुलसीमाला ( सं० स्त्री० ) तुलस्याः माला। तुलसीकी माला। तुलसी देखो।

तुलसीवन ( सं० पु० ) १ तुलसीके वृक्षोंका समूह, तुलसीका जङ्गल। २ हृदावन।

तुलसीविवाह ( सं० पु० ) तुलस्याः विवाहः। तुलसीका विवाह। तुलसी देखो।

तुलसीश्याम—जूनागटके अन्तर्गत उना वा उन्नतनगरमें प्रायः ११ कीस उत्तरमें अवस्थित एक पुण्यस्थान। यहां विष्णु, शिव और हनुमानके अनेक मन्दिर तथा चण्ड प्रस्त्रवण हैं। यहां आकर वैष्णव लोग हाथमें विष्णुके शङ्ख और चक्रका धाप देते हैं।

तुला ( सं० स्त्री० ) तोल्यतेऽनया तुल-भङ्। १ मादृश्य, तुलना, मिलाना। २ गृहका दारुबन्ध काष्ठ, घरका बोम। ३ मान, तोल। ४ शत पल परिमाण, प्राचीन कालकी एक तोल जो १०० पल या पाँच सेरके लगभग होती थी। ५ भाण्ड, घनाज आदि नापनेका बरतन। ६ राशि विशेष, ज्योतिषको चारह राशियोंमेंसे सातवीं राशि। मोटे हिसाबसे दो नक्षत्र और एक नक्षत्रके चतुर्थीय अर्थात् सवा दो नक्षत्रको एक राशि होती है। चित्रा नक्षत्रके शेष ३० दण्ड और स्वाती तथा विशाखाके भाग्य ४५ दण्ड तुलाराशि होती है। इसकी स्वरूप संज्ञा

तुला पुण्य, घर, नानावण, सं, अणुसंभाव, पक्षिमें टिगाका स्यामी वायु प्रकृति विक्रम, वरगून्ध, वनचारो, भल्पस्तोमद्रमिथ, भल्पमन्तान मंग्या, शूद्रवर्ण, उग्रभ-भाव, दिनपला, द्विष्ट, समान योग गिघिनाहृ है।

( नीलकण्ठतात्र० )

यवनेश्वरके मनमें—पुण्यधर, पुण्य, उद्याह, आमि, कटि, वस्ति देग, बोधि वि तयस्थान, नगर, पेण-शिनादि, पथ, गुरुगण, धनगार पर्याधिवाम पर्यात् मिन्दूका आटिके ऊपर, वा गृहके ऊपर, एवं गय्यको भूमि, पहाडका पार्श्व, पर्यंतकी चूटा वृक्ष, मृगया स्थान, उत्तम वायु आदि तुला गन्धमें हैं

( भट्टीत महेश्वर गयनेश्वर । )

इस सब संज्ञाओंमें नाना प्रकारका गणनाएँ को जा सकता है। जिन तरह, सत यन्त्रोंके प्रयोगनामें यह राशि किस स्थानमें अवस्थित है, उसका ज्ञान हो जाता है एवं उस राशि द्वारा जिन तरह शरीरका विभाग है, उस उस स्थानमें प्रकीर्ण रहनेसे ज्ञानादिके विद्वान् तथा ग्रहोंके बलाबलमें उस उ० अद्भुतप्रत्यक्षको ज्ञानि या टोबल इत्यादि जाना जाता है।

इस राशिका आकार तराजू लिए हुए मनुष्यका मा है। इसके अधिपति देवताका भी आकार शस्य-दहन तुलावान् पुरुष जैसा माना जाता है। यह राशि कृष्ण वर्ण और लज्जिय है।

तुलाराशिमें जिनका जन्म होता है, वह देवता, ब्राह्मण और साधुओंको अचं नामें रत, बुद्धिमान्, पवित्र, श्रीविजित, उन्नतदेह और उन्नत नामिकायुक्त, क्लेश, चञ्चलगाय विशिष्ट, घटनमाल, पथ युक्त, होनहार, क्रय-विक्रयमें कार्यकुशल, रोगो, बन्धुओंका उपकारो, क्रीडो, बन्धु द्वारा निन्दित एवं बन्धुसे परित्यक्त होता है।

( हृदयवाक्य )

कोष्ठोपदोपके मतसे तुलाराशिमें जिनका जन्म होता है, वह प्रतिगय दोषोंताविज्ञान, शिथिल गात्रविशिष्ट, अर्थादि द्वारा बान्धवोंका परितोषकारक, अत्यन्त वधु भाषी, ज्योतिः यज्ञ और भृत्योंका अनुरक्त होता है।

कोटोप० ) राशि देखो।

तुलाई ( हि० स्त्री० ) १ रुईसे परिपूर्ण दोहरा कपडा;

हुत्कार । २ तोपनी वा काम वा भाव । ३ तोपनीको मङ्ग-  
दूरी ।

हुताश्रावरी—श्रावरी नदीका उत्पत्तिस्थान । जून  
राज्यके पश्चिम सहायद्रिचा को पश्चिम हिमालय नामके  
प्रसिद्ध है उसीके ऊपर पश्चात् १२ २३ १०" उ० पौर  
देगा ०३ ३४ १०" पू०के मध्यविरुद्धि बाद देगल भाग  
मण्डलमे २ कोसको दूरी पर हुताश्रावरी प्रवाहित है ।  
व्यक्ति स्थानके निष्कट एक बहुत पुराना देवमन्दिर है ।  
देव दर्शन करनेके लिए श्रावरी तीर्थगतो यहां पाते  
हैं । हुताश्रावरीके पनेक महाशय्य पावे जाते हैं जिन  
मेंसे कोई तो पश्चिमपुराणोव, कोई ब्रह्मके बर्तनपुराणोव  
पौर फिर कोई ब्रह्मके बर्तन पुराणोव नामके प्रसिद्ध  
हैं । अत्रपुराणमें लिखा है कि हुताश्रावरी या श्रावरी  
नाममें बर्तन पुराणोव पाते हैं । उस समय यहां श्राव  
करनेके प्रथम एक मिसरी पौर मत्र पाव जाते रहते हैं ।

एच महीमें जूनके प्रायः हर एक घरसे एक एक  
मनुष्य महाश्री पूजा करने पाते हैं ।

मन्दिरकी देखरेखाके लिए बर्तनके कोरसे बापिक  
२३२० मिसरी हैं ।

हुताश्रुट ( व० सी० ) हुताश्रावरी ६०० मी० हुताश्रानका  
श्रुट तीर्थमें बरकर । हुताश्रावरी श्रुट यत्र । हुताश्रावरी श्रुट  
बारक शोध, तीर्थमें बरकर करनेवाला, श्रावरी मारने  
वाला मनुष्य ।

हुताश्रोडि ( स० जो० ) हुताश्रावरी श्रुटके श्रुट-श्रुट ।  
१ म.पुर । हुताश्रावरी श्रुटके श्रुट-श्रुट । २ मानमेंद, एक  
तीर्थका नाम । ३ तरावुको उड़ोके दोनों कोर जिनमें  
एकको कोरको बँको रहती है । ४ पर्वत का नाम ।

हुताश्रीव ( स० पु० ) हुताश्रावरी परिसरका श्रुट देव ।  
हुताश्रीव ।

हुताश्रा ( हुताश्रा ) आर्यावाङ्मयके अन्तर्गत भावनागर  
राज्यका मध्यस्थित एक प्राच्यरेण्डित नगर । यह पश्चात्  
२१ ३१ ३३" उ० पौर देगा ०२ ३ ४० पू० पश्चात्के  
ठासुवा नाम पर स्थित है । इसके चारों पौर पञ्चाल  
सुन्दर पौर मिस्रमे पुञ्ज कुच पर्वत के मन्दिर हैं ।  
पश्चात्के मिस्र पर प्रसिद्ध हुताश्रावरीको मन्दिर  
पौर एक सुन्दर सतीवर विद्यमान है । मिस्रको तीर्थ

यात्रो हुताश्रा देवोका दर्शन पौर सतीवरमें श्राव करने  
के लिए यहां पाते हैं । सुन्दर पुराणोव हुताश्रावरीके  
देव भागको कथा विधीयकपके बर्णित है । यहांके  
पश्चात् पर खोदी हुई पनेक गुहा हैं जिनमें १२२३ ई०  
तक पौर श्रुटके लोग रहते थे ।

हुताश्रापुर—( हुताश्रापुर ) १ ईदराबाद राज्यके पोसमाना  
बाद जिलेका पूर्वोत्तर भाग । यहांको लोकसंख्या ६०३३  
पौर मूरविमात्र ३११ बर्तनीय है । इमें दो महर पौर १३  
पाम लगते हैं । २ उच्चतासुका एक महर । यह पश्चात्  
१२ १ उ० पौर देगा ०३ ३ पू०के मध्य योतापुरके  
३० कोस पौर पोसमानाबादके १५ कोस दूरमें अव  
स्थित है । लोकसंख्या ६६१२ है । यहां एक मुसल  
मन्दिरेका पश्चिम, एक पश्चिम, बाबावट, बाबा बहल  
पौर एक स्कूल है । यह व्यवसाय-१ एक प्रधान है मू है ।  
पश्चात्के मीथे हुताश्रावरीको एक मन्दिर है जहां  
दुर्गापूजाके समय दूर दूर देगोंके प्रायः दूधे यात्रियोंका  
समागम होता है । बर्तन है कि सतारा पौर कोश्यापुरमें  
राजापोंके उच्च मन्दिरका निर्माण किया है । प्रति  
महाश्रावरीको यहां श्राव जाते हैं ।

हुताश्री—तत्पौरके विधीयकाको एक प्रसिद्ध राजा । इमें  
१०६३ ई० १००० ई० तक राज्य किया था । इमेंके निम्न  
लिखित पत्र रहे हैं—१ आदिर्बर्मसार स पत्र, २ इन्-  
द्रुच वीजानिधि ( ज्योतिष ) ३ अन्वयरीसारविधि ४  
मन्वयाक्षसारस पत्र ५ राजवर्मसारस पत्र, ६ राम  
ध्यान, ७ वाकशास्यत पौर स ज्योतिसारास्यत ।

हुताश्री पश्चात्—प्रसिद्ध महापट्ट वस्तु कनोको प दोषाका  
एक पुत्र । कनोकोके नामा इन्के उत्पत्तिके पंथके  
पौर महापट्टके बहुत व्यस्त हो गये थे । पश्चिम  
बर्तन गवर्मेण्ड पौर महापट्टके पालने मिस्र कर  
हुताश्रीको पराप्त किया था ।

हुताश्रुट ( स० पु० ) हुताश्रावरी । मानदण्ड, नापने  
को उड़ो ।

हुताश्रान ( स० जो० ) हुताश्रावरीके मानने दान । हुता  
श्रावरीके महाश्रावरी एक प्रसारका दान जिनमें  
जिमी मनुष्यको तोपके बराबर दण्डका दान होता है ।  
यह लोक महादानोंमेंसे एक है । हुताश्रावरीके देव ।

तुलाघट ( स० पु० ) तुलायै तोलनायै घटः । तुलाघार  
दण्ड, तराजूको डोडो जिममें रम्भो बंधो रहती है ।

तुलाधर ( स० पु० ) तुलाया स्नान दण्डस्य धरः घृ-अच् ।  
१ वाणिजक, वनिक धर्मापुरुष । २ तुलारागि । ३  
सूय । ४ तुला गुण, तराजूकी डोरी । ( त्रि० ) ५ तुला-  
दण्ड धारक, तराजूकी पकड़नेवाला ।

तुलाधर ( स० पु० ) तुला घृ-अण् । १ तुलारागि । २ तुला-  
गुण, तराजूकी डोरी जिममें पलड़े रखे रहते हैं । ३  
वाराणसीनिवासो एक व्याध । यह सदा माता पिता-  
को सेवामें तत्पर रहता था, इसी पुण्यमें यह मर्त्यदर्शी  
हृषी था । कृतबोध नामक एक व्यक्ति जब इनके सामने  
आया तब इसने उसका समस्त पूर्व हृत्तान्त कह सुनाया ।  
इस पर उस व्यक्तिने भी माता पिताकी सेवाका व्रत ले  
लिया । ( बृहदश्व० ३ अ० ) ४ वाराणसी निवासो वणिक,  
इहाँमें महर्षि जात्रलिको मोक्षधर्मका उपदेश दिया  
था । ( भारत १२।२६० अ० )

तुलापरोक्षा ( स० स्त्रो० ) अभियुक्तोंका एक परोक्षा ।  
प्राचीन कालमें यह अग्निपरोक्षा विप-परोक्षादिके  
समान प्रचलित थी । इसको परोक्षा इस तरह थी - एक  
खुले स्थानमें यज्ञकाष्ठको एक बड़ोसे तुला खडो को  
जातो और चारों ओर तोरण आदि बांधे जाते थे । फिर  
मन्त्र-पाठ पूर्वक देवताओंको पूजा करते थे और अभि-  
युक्तोंको एक बार तराजूके पलड़े पर बिठाकर सटो आदिमें  
तोल लेते थे । फिर उसे उतार कर दूसरी बार तोलते  
थे । यदि पलड़ा कुछ झुंक जाता था, तो अभियुक्त दोषो  
समझा जाता था ।

तुलापुरुषकच्छ ( स० पु० ) एक प्रकारका व्रत । इसमें  
पिण्याक ( तिलकी खली ), भात, मूठा, जल और सत्,  
इसमेंसे प्रत्येकको क्रमशः तीन तीन दिन तक खा कर  
पन्द्रह दिनों तक रहना पड़ता है । यमने इसे २१  
दिनोंका व्रत लिखा है । इसका पूरा विधान याज्ञवल्क्य,  
हारीत आदि स्मृतियोंमें पाया जाता है ।

तुलापुरुषदान ( स० स्त्रो० ) तुलापुरुषस्य तुलास्थित पुरुष-  
भारसम परिमित द्रव्यस्य दानं इ त्व् । पौंड्र्य महादानके  
अन्तगत दानविशेष, सोलह प्रकारके दानोंमेंसे  
एक दान । यह सब दानोंसे प्रधान और आदिदान है

तथा यह अयन, विपुयमंक्रान्ति, व्यतीपात, दिनचयं,  
युगादि, मन्वन्तरादि, संक्रान्ति, योगभाषो, हाटयो,  
अष्टका आदिमें किया जाता है । मंसार-भयभोरुको  
तीर्थ, गृह, वन, तड़ाग अथवा मनोज्ञ स्थानमें यह  
महादान करना होता है । ओषध अथवा है, धन  
अत्यन्त चयन है । ऐसा जान कर इस दानमें श्राय डाले ।  
पुण्यतिथिमें ब्राह्मणको निर्दिष्ट कर मण्डप प्रसन्न करे  
और उसमें मात हाथ तोरण एवं चारों ओर चार कुण्ड  
और पूर्णकुम्भ स्थापन करे । इसके पूर्वोत्तरमें एक हाथ  
को वेदो बनावे इस वेदोमें यज्ञादि ब्रह्मा, गिव,  
अथुत आदि देवताओंको पूजा फल, वस्त्र और मानामें  
करने होते हैं । ब्रह्मा, गिव और अथुतको पूजा  
प्रतिमामें तथा अन्य देवताओंको पूजा स्थानमें  
करते हैं ।

मान, इन्द्रो, चन्द्र, देवदारु, ओषधी और विल्व  
आदि लकड़ियोंको एक तुला बनानो होता है । तुला-  
दण्डको ऊँचाई ५ हाथ और चौथमें चार हाथका  
फामला रहे । तुलाको सोकर लोहेको होने चाहिये ।  
उसे सुवर्ण युक्त रखमाना, मान्यविनेपन आदिमें विभू-  
पित कर उसमें पाँच रत्नको पाँच पताका लगा देने  
चाहिये ।

इस दानमें विधान दस वेदविद् ब्राह्मण नियुक्त रहे ।  
श्रवणो होनेसे पूर्वको और यजुर्वेदो होनेसे दक्षिणको  
और, सामवेदो होनेसे पश्चिमको और तथा अथर्ववेदो  
होनेसे उत्तरको और दो ब्राह्मणोंको रखना होता है ।  
पौंड्रे विनायकादि लोकपाल आदित्य आदि ऋषयण,  
ब्रह्मा आदि देवताओंको पूजा करते और स्व स्व मन्त्र  
द्वारा होम चतुष्टय जपसूक्त आदि यजमानके माथं गया  
विहित मन्त्र द्वारा करते हैं । पौंड्रे दे ता और ऋत्विकों-  
को हेमभूषण दान देते हैं । जापकण्ठ शान्तिक  
अध्यायका जप करते और आदि अन्त और मध्यमें ब्राह्मण  
स्वस्तिवाचन करते हैं ।

वाट तीन बार तुलाकी प्रदक्षिण कर पुष्याशुक्रि ले  
इस मन्त्रसे उसे आमन्त्रण करते हैं—

“नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिस्व शक्तिमास्थिता ।

शक्षीयूता जगद्धामा निर्मिता विश्व योनिना ॥”

दृष्ट वर वर्यानि तथा मृतपदादि च ।  
 धर्मि बन्धुवा मन्वे र्नाशितानि वयमिते ॥  
 तं तुके कर्त्तव्यं वा प्रमाणादि कौटिल्या ।  
 मां तोह्यन्ती संकाया दुःखदय नयोऽनु ते ॥  
 वयो वमस्ते मे विद् । तुमुपुत्रवर्षस्य ॥  
 एवं हरे त्त्वं स्वाध्यायमात्रमात्रं च कारकावधत् ॥  
 पुत्र अतमवापाय इत्यादिवाचनं पुनः ।  
 पुन प्ररुषिष इत्यः तां तुभामास्तेषुपुत्र ॥  
 च सुहृत्पदाः वरवी धर्मवत्पुत्रवृत्तिः ।  
 वर्यं वाचमावादान ईम मूर्धेयं संपुत्र ॥”

इमं मन्त्रं पाठ्ये वाटं ब्राह्मणवर्ग्यं दानं द्रव्यको  
 तरात्रुषि पत्रके पर रक्षते धोरं पितरं मित्रमिच्छिनं मन्त्रं  
 पठते ॥

“वमस्ते वाभी मृगानां वाकोभूते वयस्यि ।  
 जितामहेन ईद्वित्त्वं मित्रिणा परमेष्ठिनः ॥  
 त्वमा पुन वमत् सर्वं पशुस्वायन्मनुजमम् ।  
 सर्वैर्द्विगताममृतान्मे वमस्ते विरचयामि ॥”

यद्य मन्त्रं पठ्यं चरं तरात्रु परते दान-द्रव्यको लोचि  
 उतास्ते धोरं चरमें पाशा सुषको देति, पाशमें दूरी दूरी  
 को बाट देते हैं । तुलासित द्रव्यको अधिक प्राय तब  
 चरमें लको रचना चाहिये ।

तुलादानमें तरात्रुषि एक पत्रके पर दान करनीकाना  
 बैठता है धोरं दूरी पत्रके पर लकोको तोलके बराबर  
 पाना चांदो चादि द्रव्य रखे जाते हैं ।

इत्यभियोगसे तुला बनानेमें ये सब फल मिलते हैं ।  
 जो मनुष्य पट्टातुको तुला बनाते, वे मन्थन, वादिच  
 धोरं चादिच समो पापनि मुक्त होते हैं एवं जितने दिन  
 वे मन्त्र कानु रखेगो, उतने सो चादिच बर्यं अर्थलोकमें  
 वाय करतें हैं । पीछे पुष्पाद्यत होने पर भी तब  
 जन्ममें जन्म भित्ति एवं धन-प्राप्त्य द्वारा मन्त्रं होती हैं ।  
 जो लोनेको तुला बनाते, उनके पूर्वके इत्यं सुषय एक  
 पीछेके दम सुषय उदार पाति हैं तथा पाप मो अर्थगामो  
 होतें हैं धोरं लको मो दृष्टिज्ञाको प्राय लको होतें । जो  
 चांदोको तुला बनाते, वे अर्थपामो होतें हैं धोरं धृत्वी  
 पर राका जो कर जन्म पश्य करतें हैं । सुषयं चारो

कुष्ठ-रोको चादि मन्त्रपातकपदा मनुष्य मो मान्यको  
 तुला बना करनिधाय होती हैं तथा अर्थलोकमें वाय  
 करतें हैं ।

वादिचो तुला बनानेमें इन्द्रका पद, सोहसे उत्तम  
 ज्ञान ज्ञान, पोतनने अर्थं सोहसे दन्धवं सोहसे वाय  
 रनिधे चन्द्रका मातृभ्य ज्ञान, सोसे तिरको धोरं सेलको  
 तुला बनानेमें धरोको धोरं तुल्यो होती हैं ।

जितने प्रकारके दान हैं उनमेंसे तुलादान जो सर्व  
 प्रधान है । जोवन चारच वर पत्रके मनुष्यको यद्य  
 दान करना उचित है । विमर्शके पट्टकार सुषयौदि  
 तुलादान प्रथम विधि है । ( दमकाया )

२ वतभेद एक प्रकारका व्रत जो १५ वा २१  
 दिनां तक करना होता है ।

१५ दिन माध्यव्रतमें विष्णुका मंडि मन्त्रा जन्म धोरं  
 सन् प्रबन्धे लोच लोच दिन या कर रचना पड़ता है ।  
 २० दिन माध्यव्रतमें पूर्वोक्त ३ द्रव्य तोलदिन करके १५  
 धोरं धिय ५ दिन तक वासुदेवका अर्घ्य उपवास करना  
 पड़ता है ।

तुलाप्रपत्र ( स १० ) तुला प्र-पत्र पत्र । तुलादण्ड,  
 तरात्रुषि व को दूरी होतें ।

तुलाप्रगाथ ( स ० पु ) तुला-प्रपत्र पत्र । तुलादण्ड  
 तरात्रुको होतें ।

तुलाबोज ( स ० जो ० ) तुलायां तोलनपत्र बोज १ तत् ।  
 तुला तु वचाः बोज ओ तोलके ज्ञानमें पाते हैं ।

तुलाभवाको ( स ० जो ० ) गङ्गादिनिजपठे मत्तानुकार  
 एक नदी धोरं नदरोका नाम । तुल्यपुत्र ईको ।

तुलामान ( स ० जो ० ) तुलायां तोलनार्थं मान मोयनि-  
 र्निन मा करके च्युट । १ तुलादण्ड तरात्रुको होतें ।

२ वद्य पदात्र का मान जो तोल कर लिया जाय ।  
 ३ वाट, बटकरा ।

तुलायन्त्र ( स ० पु ० ) तुलायां यन्त्र १ तत् । तुलादण्ड  
 तरात्रु ।

तुलापट्टि ( स जो ० ) तुलायां पट्टि १-तत् । तुलादण्ड  
 तरात्रुषि व को दूरी होतें ।

तुलागाम शिवापति—यद्यपि वे ब्रह्मरुषे पत्निस  
 चिन्तु-प्राज्ञा गोविन्दचन्द्रके एक विपायी ना जपयलो



घे। विद्रोहमें पिताके सारे जानि पर तुलारामने पनाड पर जा कर आश्रय लिया और यहाँ वे अपना प्रभुत्व फ़ैलाने लगे।

१८२४ ई०में ब्रह्म-सेनाने आ कर जब अक्षरराज्य पर आक्रमण किया, तब उस समय तुलारामने उन लोगोंको कुछ सहायता की थी। १८२८ ई०में कछार राज्यको बाध हो कर तुलारामने लिए कुछ पावनेय भूभाग छोड़ देना पड़ा। १८३४ ई०में राजा गोविन्द चन्द्रकी हत्याके बाद तुलारामने महर और दयाग्न नदी-प्रन्तर्वर्ती तथा दयाग्न और कापिनो नदीको मध्यवर्ती भूमि गवर्मण्टकी छोड़ दे।

इसमें पहले तुलारामने 'सेनापति' उपाधि ग्रहण कर ली थी। उत्तरमें दयाग्न और जसुना नदी, दक्षिणमें महा नदी, पूर्वमें धनेश्वरो तथा पश्चिममें दयाग्न नदीको मध्य-वर्ती समस्त भूमि तुलाराम सेनापतिके अधिकारमें थी। इस स्थानका सरकारो कागजातमें 'तुलाराम सेनापतिका राज्य, वा 'महाल रङ्गिलापुर'के नामसे उल्लेख किया गया है।

तुलाराम पहले गवर्मण्टकी प्रतिवर्ष ४ हाथी (बादमें ४८० रु०) कर देते थे। अत्यन्त बृहद् हो जानेके कारण १८२४ ई०में इन्होंने अपने सम्पत्ति दोनों पुत्रोंको बाँट दी। १८५० ई०में इनकी मृत्यु हो गई। इनके बड़े लड़केका नाम था नकुलराम १८५७ ई०में नागाओंके विरुद्ध युद्ध करते समय मारे गये।

उमके बाद तुलाराम सेनापतिके राज्यमें नाना प्रकारको विशुद्धता होने लगी, जिसमें ब्रिटिश-गवर्मण्टने (१८५४ ई०में) तुलारामके परिवारके ५ व्यक्तियोंको कुछ लापरवाज जमीन और सामान्य वृत्ति ठहरा कर समस्त भूभाग उत्तर-कछारमें शामिल कर लिया। उस समय उक्त भूभागका परिमाण १००० वर्ग सोल था।

तुलावत् (स० त्रि०) तुला विद्यतेऽस्य तुला-मतुप, मस्य वः तुलाधारी, तराजू पकड़नेवाला।

तुलावा (हि० पु०) गाढोको एक लकड़ो। इसके सहारे गाढो खडो करके धुरीमें तेल दिया जाता है और पहिया निकाला जाता है।

तुनाम्व (हि० स्त्री) तुलार्यं तोलनार्थं स्रव। तुना-दण्डस्थित स्रव, तराजूको रथो जिसमें पलड़े बंधे रहते हैं।

तुनि (स० स्त्री०) तुरि-य्य ल। १ तुरो, जुलाहोंको कूँची। २ चित्रकरकी वृत्तिका, चित्र बनानेको कूँची।

तुनिका (स० स्त्री०) तोलयति मष्टयं गच्छति तुल वाह्यनकात् इकन् सव कित्। १ खञ्जनपत्रो। २ तुनि, कूँची।

तुनित (स० त्रि०) तु,म-तत्-करोतीति विच्-कर्मणि क्त। १ परिमित, तुला कृपा। २ बराबर, समान।

तुनिनो (स० स्त्री०) तु,ममस्ति फलेऽस्याः तु,म इति डोप्, ष्यो० ड्रवः। शात्मनो, मेमरका पेट।

तुनिकना (स० स्त्री०) तुनि तुलयुक्तं फलं यस्या-ष्यो० ड्रवः। शात्मनी, मेमरका पेट।

तुनो (स० स्त्री०) तुरो रम्य ल। तन्मवायको तुरो, जुलाहोंको कूँची।

तुनो (हि० स्त्री०) छोटा तराजू, काँटा।

तुलुव (स० पु०) दक्षिणके एक प्रदेशका प्राचीन नाम। यह मद्राडि और मसुट्टेके बीच पहा १०' २७' से १३' १५' उ० और टिगां ७४' ४५' से ७५' उ० पु० कन्याणपुर और चन्द्रगिरि दोनों नदियोंके किनारे अवस्थित है। मद्राडिखण्डमें यह स्थान "तौलव" देश नामसे प्रसिद्ध है।

"ततः पश्चाद्विभिन्ने ह्यदरे दृष्टवान्मुनिः।

नानाफलप्रसवणैर्नानादन्द्रसमुभिः॥

अवतीर्थ ददर्शय तौलव देशमुत्तमम्।

तत्क्षेत्रं प्राप्तवान रामो मेधावी भृगुनादनः॥

महालिङ्गेश्वर मय्यक् पूजयामास शाकतः॥"

(उत्तरार्द्ध २१। ५३-५०)

इस स्थानके पधिसामो भी मद्राडिखण्डमें "तौलव" नामसे मशहूर हैं। (मद्रादि २। ५। १) आजकल इस प्रदेशको उत्तर कनाटा कहते हैं। स्कन्दपुराणके 'तुलुवनाद उत्पत्ति' नामक ग्रन्थमें इस स्थानका माहात्म्य वर्णित है।

इस प्रदेशमें तुलसीवा प्रचलित है। समयसम चार भाग मनुष्य वह भाषा बोलते हैं। यह प्रथम द्राविड भाषाओंमें तुलु भी एक है। इस भाषामें कोई अन्य भाषा तक नहीं बनाये गये हैं। मल्लबान्म परवा बनाड़ो पर्यन्तमें जो इस भाषाके सिद्धमेंका नाम बिदा जाता है।

बनाड़ोके इतिहासके साथ तुलुका इतिहास मिला हुआ है।

तुलु (हि० जो०) घियाव इत्यादिकी व को हुई धार जो कुछ दूर पर जा कर पड़े।

तुलुपुसा (स० जो०) तुला घोर उपतुला, पतुलुमागका नाम तुला घोर खतोड भावका नाम उपतुला है।

“मरुति तुलुपुसां मूळ पादेन पादेन।”

(हरदकशिला ५३१०)

तुलु (स० लि०) तुलना संबंधित शब्द। नौशेचमेंही। वा ११५१) भाद्रपद, बराबरी। इससे सफल पर्याय—सम, मद्रप, सद्रप, मद्रक, साधारण समान, समर, समित घोर कल्प। इनके उत्तरपरदेमें रक्षमिसे तुलुभाषक होता है। निम, बहाय, मोक्षाय प्रतोकाय, लयमा, मूल, रूप, कल्प प्रम, से मो तुलुबंध पर्याय है।

२ समान, बराबर। (पु०) ३ अनामक्यात मन्थक।

तुलुकांशिक (Equiangular) जिध क्षेत्रके घट कोन बराबर हों।

तुलुपत्र (स० पु०) तुलु आनाति तुलु-पा-ख। तुलुपत्रानी, बराबर बराबर जाननासे।

तुलुता (स० जो०) तुलुका भाव तुलु तन्-द्वय। १ काद्रय। २ समता, बराबरी।

तुलुदर्यंग (सं० लि०) तुलु दर्यंग धन, बहुरी०। समान दर्यंग।

तुलुपान (स० जो०) तुलु सख पान। क्रांतिके सोचोंके मात्र मिनतुलु कर जानापीना।

तुलुपदानयथ्य (स० पु०) बह मय्य शिषमें याथाथ घोर क् ध्याय बराबर हो।

तुलुवन (न० लि०) तुलु वन यत्न। १ समपत्ति कल्प, समान नाशतवाना। (जो०) तुलु वनी कामका०। २ समान वन, बराबर घोर।

तुलुभावन (स० जो०) तुलु भावन। एक प्रकारको राशिका मिलाव।

तुलुमूल्य (स० लि०) तुलु मूल्य यत्न। १ समान मूल्य निर्दिष्ट, बराबर दामबाजा। २ समान बराबर।

तुलुयोगिता (स० जो०) कात्यायनद्वारविधिय, एक धनद्वार जिधमें प्रतुनों या उपतुलाका धर्मात् बहुतरि कपरियों या उपमानोंका एक हो कम बतलाया जाय।

तुलुयोयो (स० लि०) लमान सम्बन्ध यथैवाना।

तुलुकप (स० लि०) तुलु रूप यत्न। एकद्रप मद्रप। तुलुहति (स० लि०) तुलु हतिवत्क। एक प्यवसायो, एक रोचकारके।

तुलुगन (सं० लि०) तुलु कोषार्थ-यत्न। बराबर बराबर। तुलुहति (स० लि०) तुलु पाहतिवत्क। सहायकति, जो देखमेंसे एकमे हों।

तुलुस (स० पु०) कपिमिद, एक कपिका नाम। तुलु-पर देके।

तुलु (स० पु० जो०) तवति द्विगति रोनात् तु शकु-११२२। १ कदाप रक कर्षका रस। २ कायमेद एक प्रकारका ज्ञान। ३ पादक, परहर। ४, नदियों घोर सतुलुके तटपर जोमिवाका एक पीवा। इससे एक इसमोंके समान होते हैं जिन्के जामिसे परपीका तुलु बतुता है। ५ पत्रातकृत् गवि, बह गाय जिसके शीघ नहीं निबसे हो। (लि०) ६ कपाव कपेका। ७ तिष्ठ गोता। ८ प्रसुकोन, बिना दाड़ो मूकका।

तुलुबाधनाक (स० पु०) तुलुबा कपाय याकलाक कामका०। कायमेद काक ज्यार, काक तुलुरो। पर्याय—तुलुबा, कपायबाधनाक, रक्षयावनाक, मोहित कुन्दु मूक धान्य। बह मूक—कपाय, कप्य, निरेक संपाकी, नातनायक, बिदाको घोर घोषकारक है।

तुलुविधा (स० जो०) तुलुबा कपायरीकपयना तुलुब-उन्। १ योपइहतिवा मोपोकप्यन। २ पादका, परहर।

तुलुरो (स० जो०) तुलुबा जिघां गिलात् होव। १ पाठकी परहर। २ कायमेद एक प्रकारका ज्ञान। तुलु यत्न कारक, मपु, तीक्ष्ण कल्पकोर्ष, धमि कारक घोर कप, विध, रक्ष, कप्य, कृष्ट घोर कोपगत

रोगनाशक है। ३ सौराष्ट्रसृत्तिका, गोपोचन्दन।  
 पर्याय—सृत्, सौराष्ट्रो, सृत्त्रा, आमङ्ग, मसो, सुराष्ट्रजा,  
 सृत्तानक, कानी, सृत्तिका, सृत्त्या, काचो, सुजाता।  
 गुण—यह तिक्त, कटु, कपाय, उष्ण, लेखन, चक्षुको हित-  
 कर, आहो, छद्दि और पित्तके लिये जृम्भानाशक है।  
 तुवरोसृत् (सं० स्त्री०) सौराष्ट्रसृत्तिका, गोपोचन्दन  
 तुवरोगिम्ब (सं० पु०) तुवर्या इव गिम्बा फलत्वक  
 यस्य। चक्रमर्दहृत्, चक्रवहका पेड़, पवार।  
 तुवि (सं० स्त्री०) तुम्बी पृषो० साधुः। १ तुम्बी,  
 तुम्बी। २ बहुशब्दार्थ, जिसके कई अर्थ हैं।  
 तुविकूर्मि (सं० त्रि०) बहुकूर्मा, युद्धमें अनेक प्रकारके  
 काम करनेवाला।  
 तुविग्र (सं० त्रि०) १ प्रभूतगमन, बहुत जल्द जानि-  
 वाला। २ बहुत जोरसे शब्द करनेवाला। ३ बहुत  
 खानेवाला।  
 तुविग्राम (सं० त्रि०) बहुग्रामक, जोरसे पकड़नेवाला।  
 तुविग्र (सं० त्रि०) पूर्ण शोध, बहुत प्रगंसनीय।  
 तुविग्रिव (सं० त्रि०) विस्तीर्णकम्बर, जिसका कंधा  
 बहुत मजबूत हो।  
 तुविजात (सं० त्रि०) १ शोजलो, ताकतवर। २ जो  
 बहुतको रक्षाके लिये उत्पन्न हुआ हो। ३ जिससे बहुतों  
 को उत्पत्ति हो। यहाँ तुविजात इन्द्रका विशेषण है।  
 तुविश्व (सं० त्रि०) तुवि बहु युष्मन् धनं यस्य।  
 प्रभूतधनन्, जिसके पास बहुत धन हो।  
 तुविन्मन् (सं० त्रि०) प्रभूत वलयुक्त, जो बहुत ताकत  
 रखता हो।  
 तुविप्रति (सं० त्रि०) १ बहुप्रतिगन्ता, बहुतोंसे भेंट  
 करनेवाला। २ बहुतोंसे मुकाबला करनेवाला।  
 तुविवाच (सं० त्रि०) बहुपोडक, बहुतोंकी कट पह-  
 चानेवाला।  
 तुविब्रह्मन् (सं० त्रि०) बहुस्तोत्र, जिसके अनेक  
 स्तोत्र हैं।  
 तुविमद्य—द्वीमद्य श्रेयो।  
 तुविमन्यु (सं० त्रि०) प्रहृदमति, जिसका पका विशार  
 हो।  
 तुविस (सं० स्त्री०) तु-वृद्धी पूर्वो वा इति किव।

१ वृद्धि, बढ़तो। २ प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान। ३ बल, ताकत।  
 तुविम्ब (सं० त्रि०) जिसके वरमनेमें बहुतोंका अनिष्ट हो।  
 तुविराधम् (सं० त्रि०) प्रभूत धनयुक्त, धनी, जिसके  
 पास खूब ढोलत हो।  
 तुविवाज (सं० त्रि०) प्रभूत वलयुक्त, वलयवान्, ताकत-  
 वर।  
 तुविग्रम (सं० त्रि०) बहु सुखयुक्त, सुखी, जिसे यथेष्ट  
 आराम हो।  
 तुविग्रम (सं० त्रि०) बहुबल, वलयवान्, ताकतवर।  
 तुवियवम् (सं० त्रि०) बहु अन्नयुक्त, जिसके पास बहुत  
 अनाज हो।  
 तुविष्टम (सं० त्रि०) बहुतम, बलौ, ताकतवर, जोरा  
 वर।  
 तुविष्मत् (सं० त्रि०) तुविष्-मतुप्। १ प्रज्ञावान्, बुद्धि-  
 मान्। २ जोरावर।  
 तुविश्वणम् (सं० त्रि०) प्रभूतधनियुक्त, जिससे बहुत  
 शब्द निकलता हो।  
 तुविश्वणि (सं० त्रि०) महाशब्दयुक्त, जिससे खूब आवाज  
 आती हो।  
 तुविश्वन् (सं० त्रि०) बहु शब्दयुक्त, जिसमें बहुत शब्द हैं।  
 तुवीमद्य (सं० त्रि०) प्रभूत धनयुक्त, बहुत धनी।  
 तुवीरव (सं० त्रि०) बहु शब्दयुक्त, जिसमें बहुत आवाज  
 हो।  
 तुवीरवत् (सं० त्रि०) तुवो मत्वर्थोयो रः ततो मतुप्  
 मस्य व। बहु स्त्रीत्युक्त, जिनमें अनेक स्त्री हैं।  
 तुवरोजस् (सं० त्रि०) तुवि श्रोजः यस्य। बहुबलयुक्त,  
 बहुत बलयवान्, जो खूब ताकत रखता हो।  
 तुगियार (हि० पु०) पश्चिम-हिमालयमें होनेवाला एक  
 भाड़। पुरानो इसके छिलकेसे रस्सियाँ बनाई जाती हैं।  
 तुप (सं० पु०) तुप क। १ धान्यत्वक्, अन्नके ऊपरका  
 छिलका, भूमो। २ विभोतकवृत्त, बहेडेका पेड़।  
 ३ अंडके ऊपरका छिलका।  
 तुपग्रह (सं० पु०) तुपेण गृह्यते ग्रह कर्मणि अप्।  
 अग्नि, आग।  
 तुपज (सं० त्रि०) तुपे जायते जन-ड। तुपजात अग्नि  
 प्रभृति, वह आग जो भूसीसे निकली हो।

तुषारव्य (स० श्लो०) तुषारत धान्य । सतुषारव्य, क्षिप्रका सचित धान ।

तुषार (स० पु०) तुष परति चतुस्रति स-पच । पाच भूयोके शोच बहुत को शोरे धनतो है इमोसे तुषका नाम तुषार रखा गया है ।

तुषारक (स० पु०) तुषक धानक । १ तुषजातधमि, भूयोको धान, करनीको पंच । २ तुषामिमें पाकदाह रूप प्रायश्चित्तनियोग, भूयो वा पाच प्सको धामि भस्म होनेको क्षिप्रा को प्रायश्चित्तने लिए को आतो है । कुमारिभइ तुषामिमें जो भस्म जो कर मरे से ।

तुषार्य (स० श्लो०) तुषक धान्य । १ तुषोदक एक प्रकारको काँचा को भूयोमहित छुटे हुए ओको सड़ा कर भगाप जाती है । शुच-धमि हीनिकारक, हृदयपाको, तोष्य, लक्ष्मण्य, पाचक, रक्षितजनक एवं पाच्य, क्षिप्रि और वक्षिगत भूयविनाशक है ।

तुषार (स० पु०) तुषकधमि मज्जात् तुष-पार्य । उपरा वरक । इ० ३।११८ । १ हिम वरक । २ हिमकच, पाच्य ।

विश्विरचयति जो तुषारको उत्पत्तिका प्रथम कारण है । रातको धूमो परको समी वसु अब धपना तेज विश्वोर्ष कर वासुरासिको धपेका पश्चि ठक्यो जो आतो है तब चारो ओरको वासुइ धमर्गत बनोय भाष्य धमीभूत हा कर तुषारके विन्दुके रूपमें उबरे ऊपर कम आतो है ।

उष्णताका जितना ही ऊँच होता है, वासुपयिमें उतना ही कम वाप्य रहती है धर्मत्तु उतना ही कम वाप्य द्वारा वासुरासि परिविन्न होती है । उत्तर दिने समयमें जो वाप्य रहतो है, रातमें कुछ कुछ योतक हो कर यदि वह उससे परिविन्न हो जाय तो योतकप्रवादे क्षयति जो उतके पन्थमत कुछ वाप्य धमी जो कर तुषारके रूपमें परिचल जो जाती है । वासुमें जितना ही पश्चि वाप्य रहती है उतना ही कम यदि वह उष्ण्यो हो जाय तो तुषार बनता है । इस देवमें योषकासमें दिनको वासुरासि बहुत वरम रहतो है, किन्तु रातको उतको उष्ण्यो नहीं रहतो, एते कारण धमामें शिबी हुई है । वाप्यमो तुषाररूपमें परिचल नहीं जोतो

है । जिन अब वासुर्षोको विश्विरचयति प्रथम रहतो है, वे रातको कुछ योतक जो आतो है । यको कारण है कि इन सब वासुयो वे ऊपर कुछ तुषार कम आता है । समो वासु द्रव्यो को विश्विरचयति बहुत कम है, धूमोके वनके ऊपर उतना तुषार नहीं बनता, किन्तु मही, काँच, वायु, उष्णपत्र पथम पादि द्रव्योमें विश्विरचयति पश्चि है इस कारण उतके ऊपर तुषार भी पश्चि कम आता है उष्ये उष्ण्योउतने तेज विश्विरचयो तथा तुषारउत्पत्तिका प्रतिबन्धकता जोतो है । जब पाकायमच्छय मेवाच्छय रहता है, तब वह भूपृष्ठ तेज-विश्विरच द्वारा उतना उडा नहीं हो सकता, क्योंकि मेवाकनयोते तेज विबीच जोता हुआ उससे ऊपर गिरता है । यको कारण है, कि मेवाक्युच रात्रिमें उतना तुषार नहीं पड़ता । विस्वत मावाविधिउ उष्ण्ये तबे मो तुषार नहीं बननीका यको कारण है । अब वासु धूमो चालसे बहतो है, तब वह वासु पश्चि उँचो हो आतो है और तुषारोत्पत्ति बहुत कुछ व्यादा हो जाती है । क्योंकि उतना ही कम योतक होनेसे वासु वाप्यकक्षक परिविन्न हो आतो है । नदासे मसुइ तक धमो बननायका पन्थकर्षो तेज धूमोके तुषके धपकवसुइय माथाकारमें ऊपर जा कर जो बन गिरता है उषे तुषारक कम /रहि है । यह तुषारक कम वाप्योके सिधे तो पश्चि कर है, पर उष्ण्ये सिधे विश्वि रूपकारक है । साधमजामके मतसे इससे शुच-योतक कच, वासुर्षक, पित्तनामक, एक कच, लक्ष्मण्य, कष्टरौन, मन्थानि, मंद और गलगाछादि रोगनामक । ( भावप्रक० ) ३ योतकस्यम् । ४ अपूर्वमिह, एक प्रकारका अपूर, शोनिया अपूर । १ देवमेव, विमानकच उत्तरका एक देव । शोच शोर्षके पन्थीमें यह देव तोषारि नामसे प्रसिद्ध है । ७ तुषारदेवोइव जाति, तुषारदेवमें वधेकाको जाति । प्रजातस्त्रिविधो मतातुषार यह जाति मधकातिकी एक माथा है । एको मतान्दोमें वन शोर्षीमें भारतवर्षमें प्रथि कर धमिक क्षार्गा पर पाकमच किया था । ( जि० ) ८ योतक धर्मवुच, धूममें वरपकी तरह उष्ण ।

तुषारकच (स० पु०) तुषारका कच । १-३।११८ । त्रिमकच ।

तुषारकर ( सं० पु० ) १ हिमकर, चन्द्रमा । २ कर्पूर-भेट, एक प्रकारका कपूर ।

तुषारकाल ( सं० पु० ) तुषारस्य कालः इ-तत् । शीतकाल ।

तुषारकिरण ( सं० पु० ) हिमकिरण, चन्द्रमा ।

तुषारगिरि ( सं० पु० ) हिमालय ।

तुषारगौर ( सं० वि० ) तुषारवत् गौरः । १ जो हिमसा उजला हो । ( क्लो० ) २ कर्पूर, कपूर ।

तुषारनविहार—प्रतापगढ़ जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन शहर । श्रयोध्याके मध्य यह स्थान बहुत प्राचीन और सुप्रसिद्ध है । सुमलमानोंके शासनकालमें यह जिलेका प्रधान शहर था । अज्ञा भो यह स्थान सूबा-विहार नामसे मशहूर है । गङ्गाके प्राचीन तलके ऊपर यह नगर बसा है । नगरके पश्चिमामें ऊँचे मटोके स्तूप हैं, जिनमेंसे कहीं कहीं खोद कर प्रत्नतत्त्वविद् कनिष्ठम साहवने बड़ी 'बडो ईंटे' निकाली थीं । उनके मतानुसार चीन परिव्राजक यूएनचुअङ्गने जो श्रयोमुख वा हयमुख नामक स्थानका उल्लेख किया है वही यह तुषारन-विहार हो सकता है । यहाँ पहले बौद्धमतका प्राधान्य था । अभी भी यहाँके बुद्ध और बुद्धिकी मूर्ति प्रसिद्ध हैं । ऐसा अनुमान किया जाता है, कि पहले इस स्थानकी तुषाराराम-विहार कहते थे, उसीके अपभ्रंशसे तुषारन-विहार नाम पड़ा है । यहाँका अष्टभुजाका मन्दिर उल्लेखयोग्य है ।

तुषारभाषाण ( सं० पु० ) १ ओला । २ हिम, बरफ ।

तुषारमूर्ति ( सं० पु० ) तुषारः मूर्तियस्य । हिमकर, चन्द्रमा ।

तुषाररश्मि ( सं० पु० ) तुषारः रश्मियस्य । हिमकर, चन्द्रमा ।

तुषाराद्रि ( सं० पु० ) तुषारस्य अद्रिः । हिमालय पर्वत । इस पहाड़ पर बहुत बरफ गिरता है, इसीसे इसका नाम तुषाराद्रि पड़ा है ।

तुषाराम्बु ( सं० क्लो० ) नौहातका जल, कुहरेका पानी, शोष ।

तुषित ( सं० पु० ) तुष्यति तुष वाहलकात् कितच् तावका-दित्वात् इतच् वा । १ गणदेवताभेट, एक प्रकारके

गणदेवता । इनकी मंत्र्या वारह है, किन्तु मन्वन्तर के भेटसे इनके नाम बटला करते हैं । इनके नाम ये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, चक्षु, श्रोत्र, रस, घ्राण, स्पर्श, बुद्धि और मन । ( मारुन्दगी )

चातुपमन्वन्तरमें तपित नामक वारह देवताओंमें वैश्वतमन्वन्तरके श्राने पर मनुष्योंकी भलाईके लिये अदितिके गर्भमें जन्म लिया था, वैश्वतमन्वन्तरमें ये हाटग आदित्यके नामसे प्रसिद्ध हुए थे । ( हरिवंश ३४० )

इनके नाम इस प्रकार हैं—तोष, प्रतोष, भद्र गान्धि, इडम्पति, इध, कवि, विभु, स्वाहा, सुदेव और रोचन । कोई कोई तो इनकी मंत्र्या ३६ और कोई १२ बताते हैं । किसीने इनको दम्प्रकार मामाना की है—एक एक मन्वन्तरमें १२, इस द्विमात्रगे तीन मन्वन्तरमें ३६ हुए । इसी अभिप्रायसे "पट्टनिशत वृषिता मता" ऐसा लिखा गया है । २ विष्णु । ( भारत गान्धि ३८४० )

३ बौद्धमतानुसार एक स्वर्गका नाम ।

४ जैनधर्मानुसार ब्रह्मलोकको दिशाओंमें रहनेवाले सारम्भत आदित्य आदि आठ प्रकारके लौकान्तिक देवोंमेंसे एक । ये तीर्थङ्करोंके तपकृत्यात्मके आते और उनके धैर्यका अनुमोदन करते हैं । ( तन्त्रार्थसूत्र ४१२५ ) तुपोदक ( सं० क्लो० ) तुपादुत्तिष्ठति उद-स्या-क । तुपोदक, काजी ।

तुपोदक ( सं० पु० ) तुपस्य उदकं, इ-तत् । १ तुषार, छिलके समेत कूटे हुए जीको पानोमें सड़ा कर बनाई हुई काजी । यह अग्निटीमिकारक, हृदयग्राहो, तोष्य, उष्यवीर्य, पाचक, रक्तपित्तजनक एवं पाण्डु, कृमि और वास्तगत शूलनाशक है ।

सौवीरक भी तुपोदकके समान गुण-सम्पन्न है । कच्चे अथवा पके जीको भूसी निकाल कर जो काजी बनाई जाती है, उसीको सौवीर कहते हैं । सौवीर और तुपोदकमें भेट यहो है कि छिलके समेत जीको काजीका नाम तुपोदक है और बिना छिलकेकी काजीका नाम सौवीर । सौवीर देखो ।

तुष्ट ( सं० वि० ) तुष कत रि-क्त । १ नन्तोपयुक्त, तृप्त । २ प्रसन्न, राजी, खुश । ( पु० ) ३ विष्णु । ये ही एक मात्र आनन्दस्वरूप और आनन्दाश्रय है, इसीसे तुष्ट शब्द कहनेसे विष्णु का बोध होता है ।

तुष्टि (सं० षो०) तुष्ट-प्राये जिन् । १ तोय, मन्तोय, वृत्ति  
२ तुष्टिमत् । यह तुष्टि जो प्रजाशक्तो है, चार पाधा  
जिन्ध पौर पांच बाहु । ( वाचस्पत्य० ३१ )

पाध्यात्मिक तुष्टियां ये हैं—प्रकृति उपादान, काव  
पौर माय्य । पाध्यात्मिकका चर्च पाध्यात्मिक है । प्रकृति  
मगुण है वा निगुण यह समो तत्त्व प्रकृतिके जो काव  
है । यह ज्ञानमेव जो तुष्टि होतो है, कर्म प्रकृत्याप्य तुष्टि  
कहते हैं ।

उपादान—कोई कर्मो तत्त्वाको न जान कर केव  
उपादान पदक कहते हैं यद्यत् सव्यासमे विवेक होता  
है ऐसा समझ सव्यासमे जो तुष्टि होती है, उसे उपा  
दानाप्य तुष्टि कहते हैं ।

काव—काव वा कर पाप ही विवेक वा मोक्ष प्राप्त  
को जायगा । अतः तत्त्वाभ्याम निम्नवोजन है विना जो  
ज्ञानता है चार जो इसमें समुद्र रहता है; इन प्रकारको  
तुष्टिको कावाप्य तुष्टि कहते हैं ।

माय्य—माय्यमेवोना तो मोक्ष जो ही जायगा, विसो  
तुष्टिको माय्याप्य तुष्टि कहते हैं । ये चार प्रकारको  
तो पाध्यात्मिक तुष्टि हुई ।

पच बाहु तुष्टिका विषय कहते हैं । पाच विषयोंको  
विरहित्ये जो मन्ध, अय, पय, रस पौर मन्धरुप पांच  
प्रकारकी तुष्टियां उत्पन्न होती हैं कर्मे बाहुतुष्टि कहते  
हैं । चर्जन रहस्य, धय, सङ्ग पौर विना इन पांच  
विषयोंके विरक्त पदार्थ इनमें प्रसन्नका दीप देख कर  
तनमे विरक्त जो अग्निका नाम यह पाच तुष्टि है ।

( वाचस्पत्य० )

तुष्टि पाध्यात्मिकादिने भेदने ८ प्रकारको है चार  
पाध्यात्मिकी तुष्टि पौर पांच बाहुतुष्टि । पाठमायमे या  
पाठ्यतुष्टिके पदक कर्नका नाम पाध्यात्मिक है । प्रकृति  
विवेकज्ञानकी जो मुक्ति कहते हैं इन चारक प्रकृति  
को उपाध्य है । प्रकृतिक विना पौर दूसरा उपाध्य भी  
नहीं है ऐसा मोक्ष कर जो तुष्टि होतो है उसे प्रकृति  
तुष्टि कहते हैं इसका नाम चर्च है । जनधारण पौर  
न स्यात्प्रतिनिधा विवेकमे मुक्ति नहीं है; यद्यो मुक्ति  
के प्रतिधारण है, ऐसा समझ कर पनेच ज्ञतो को ज्ञाते  
हैं पौर समुद्र रहते हैं । इस प्रकारकी तुष्टिका नाम

उपादानतुष्टि है; यद्योको मन्त्रि कहते हैं । ज्ञतो जो  
तुष्टे हैं, ममय वा कर सुख जो जायगे, विसो तुष्टिका नाम  
जान है; यद्योको पौध कहते हैं । माय्यमे रहनेके मुक्ति  
पदक होतो विसो तुष्टिको माय्य कहते हैं; इसका नाम  
तुष्टि है ।

रहनेके विना विषयकावजनित ३ प्रकारकी तुष्टि हैं,  
जिनका विवरण इस प्रकार है—

जनोपाजन कर्नमेव बहुत कह होता है । अतः धन  
का कोई प्रवीजन नहीं, विना जान कर जो मन्तोय रखा  
जाता है, उसे पारतुष्टि कहते हैं । जनको रक्षा  
करना पौर जो कर्मिन है विना जान कर विषयपरि  
त्यागपूर्वक समुद्र रहनेमें जो मन्तोय है, उसका नाम  
मुपागतुष्टि है । धनके नाश जो अग्नि बहुत कुछ  
जाता है समना नहीं रहना जो पक्ष्मा है विमो तुष्टि  
को पारपातुष्टि कहते हैं । जो जो मोग करते हैं,  
जो जो रहना बहुतो जातो है अतः भीम मो दुःख-  
दायक है । उसका ज्ञान करना जो योग है । इस  
प्रकार स्याय तुष्टिके जो मन्तोय उत्पन्न होता है उसे  
पनुत्तमाशुतुष्टि कहते हैं । विषय सम्यक्मे हि सादि  
माना प्रकारके दीप होते हैं परन्तु विना दूसरेको कह  
दिये कुछ नहीं मिथ्या यह जान कर विषय विमुक्त  
होनेमें जो मन्तोय है, उसे उत्तमाशुतुष्टि कहते हैं । ये  
जो ८ प्रकारकी तुष्टियां प्राणयनिको उद्योगक वा कर्त  
नक हैं । इनके मद्यो रहनेके प्राणनायक पौर योग-  
नायक विषयके समो प्रतिपाद प्रसन्न ही जातो हैं ।  
( वाचस्पत्य० ) । तुष्ट-कत्तरि टप् । १ गोवादि भोजन  
माद्यकापीमेव एव माद्यकाका नाम । उन्नेवना हेतो ।  
इ ज्ञानविषय । ( वैश्याग० १।१३।१२ ) इ क मधि पाठ  
माद्यमेविसि एव ।

तुष्टिकर ( न० जि० ) तुष्टि करोति तुष्टि कर्त्त । मन्तोय  
कर, वृत्तिकर्त्तक ।

तुष्टिकर्त्त ( न० जि० ) तुष्टोनां कर्त्तक इत्यत् । मन्तोय-  
जनक, वृत्तिकर ।

तुष्टिमत् ( स० जि० ) तुष्टिस्त्यप्यत्र तुष्टि मत्तु । १ तोय  
सुख समुद्र । ( पु० ) २ उपविनेके सुत क सकि मर्द ।  
( भाग० ८।२।३२४ )

तुट्ट ( स० पु० ) तुष वाहुलकात् तुक् । कर्ण स्थित मणि, वह मणि जो कानमें पहनी जाती है ।

तुथ ( स० पु० ) तुथ कर्त्तरि क्यप् । मन्हाटिव, शिव ।  
तुष्टिमुष्ट देखो ।

तुस ( स० पु० ) तुष ष्टपो० यस्य सत्व । तुष, भूषो ।

तुमो ( हिं० स्त्री० ) अन्नके ऊपरका छिलका भूषो ।

तुम्भ ( स० स्त्री० ) तुम-भ । रीणु, धूल, गर्द ।

तुहमंत ( हिं० स्त्री० ) तोहमत देखो ।

तुहर ( स० पु० ) तुह-वाहु० करण् । कुमारानुचरभेद, कुमारके एक अनुचरका नाम ।

तुहार ( स० पु० ) तुह-वाहु० आरन् । कुमारानुचरभेद, कुमारका एक अनुचर ।

तुहिन ( स० स्त्री० ) तुहतेऽनेन तुह इन्न् गुणे कर्तृ ऋचश्च । वैशितुगोङ्गं स्वध । उण् २।५२ । १ डिम, वरफ । २ चन्द्रमाका तेज, चांदनी । ३ तुपार, कुहरा, पाना । ( त्रि० ) ४ शीतल, ठंडा ।

तुहिनकण ( स० पु० ) तुहिनस्य कणः, इ-तत् । हिम-कण, वरफ ।

तुहिनकर ( स० पु० ) तुहिनं करोऽस्य । १ चन्द्रमा । २ कर्पूर, कपूर ।

तुहिनकिरण ( स० पु० ) चन्द्रमा ।

तुहिनकिरणपुत्र ( स० पु० ) तुहिनकिरणस्य पुत्रः इ-तत् । १ चन्द्रपुत्र, बुध । इन्हीने ताराके गर्भ से जन्मग्रहण किया था । तारा देखो ।

तुहिनगिरि ( स० पु० ) हिमालय पर्वत ।

तुहिनगु ( स० पु० ) तुहिनाः गोयं स्य । शीत, चन्द्रमा ।

तुहिनदीधिति ( स० पु० ) चन्द्रमा ।

तुहिनद्युति ( स० पु० ) चन्द्रमा ।

तुहिनरश्मि ( स० पु० ) तुहिन, चन्द्रमा ।

तुहिनशैल ( स० पु० ) तुहिनस्य शैलं इ-तत् । हिमालय पर्वत ।

तुहिनशि ( स० पु० ) चन्द्रमा ।

तुहिनशिर्तेल ( स० स्त्री० ) तुहिनशिर्तेलं इ-तत् । कर्पूर-तेल, कर्पूरका तेल ।

तुहिनाचल ( स० पु० ) हिमालय ।

तुहिनाद्रि ( स० पु० ) हिमालय ।

तुहिनाशु ( स० पु० ) १ चन्द्रमा । २ कर्पूर-।

तुहुण्ड ( स० पु० ) १ दनुवशके एक दानवका नाम ।

यह दानव बहुत पराक्रमी था । ( भारत आदि ६५ अ० )  
२ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम । ( भारत आ० १८६ अ० )

तू ( हिं० सर्व० ) १ एक सर्वनाम । यह उस पुरुषके साथ आता है, जिसे संबोधन करके कुछ कहा जाता है । ( हिं० स्त्री० ) २ कुर्त्ताको तुलानिका शब्द ।

तूँ ( हिं० सर्व० ) तू देखो ।

तूँवड़ा ( हिं० पु० ) तूँवा देखो ।

तूँवना ( हिं० स्त्री० ) तूमना देखो ।

तूँवा ( हिं० पु० ) १ कड़ुआ गोल कद्दू, तितलीको ।  
२ कद्दूको खोखला करके बनाया हुआ बरतन । इसे प्रायः साधु अपने साथ रखते हैं, कमण्डल ।

तूँवो ( हिं० स्त्री० ) १ कड़ुआ गोल कद्दू । २ कद्दूकी खोखला करके बनाया हुआ बरतन ।

तूँटना ( हिं० स्त्री० ) टूटना देखो ।

तूण ( स० पु० ) तूण्यते पूर्यते वाणैः तूण पूरणी घञ् ।  
१ वाणाधार, तीर रखनेका चींगा, तरकम् । पर्याय—  
उपासङ्ग, तूणीर, निपङ्ग, इयुधि, तूणो । २ चामर नामक वृत्तका नाम ।

तूणक ( स० स्त्री० ) छन्दोविशेष, एक प्रकारका छन्द ।  
इसके प्रत्येक चरणमें १५ अक्षर होते हैं, पहलीसे ले कर एक एकके बाद एक एक गुरु रहता है ।

तूणक्षेत्रेड ( स० पु० ) वाण, तीर ।

तूणधार ( स० पु० ) तूणं धारयति धारि-अन् । तू-धारो, वह जो तीर धारण करता हो ।

तूणव ( स० पु० ) तूणस्तदाकारोऽस्त्यस्य केशादित्वात् व, तूणं तदाकारं वाति वा-क इति वा । तूणाकार वाद्यभेद, एक प्रकारका बाजा जिसका आकार तूणसा होता है ।

तूणवध ( स० पु० ) तूणवः वाद्यभेदं धमति धा-क ।  
तूणव वाद्यकारक, वह जो तूणव नामका बाजा बजाता हो ।

तूणवत् ( स० त्रि० ) तूण अस्यग्रं मतुप् मस्य व । १ तूण युक्त, धानुष्क, जो तीर चला कर अपनी जोविका चलाता हो ।

तुवि ( स० पु० ) दल वैकी ।  
 तुविच ( स० पु० ) तुवीच वैकी ।  
 तुविन् ( स० पु० ) तुवपटा क्षतिरप्यस्ति तुव इति ।  
 मन्दीवृष, तुलना पीड । पर्याय—तुवो जगूच पापोन,  
 तुविच, कच्छक कुठिण, क्षालकच, मन्दिवृष मन्दच ।  
 तुव—यह कटुपाक, कषाय मज्ज, क्षय तिष्ठ, मोतक  
 बमकारक, प्रच, कृष्ट और अक्षयितनायक है । ( सि० )  
 २ तुवमुच, जो तरकय जिबे हो ।  
 तुवो ( स० जो० ) तुवनी पुर्यसे पाचं तुव कम वि  
 बज् गोरादित्वात् जोय । तुव तरकय । २ जोकोहच  
 मोलका पोषा । ३ वातगोमर्दिग । ४ ममिं मुत्रामयवे  
 पाचवे दट्टं उरता है और गुदा एक पीड, तब पीसता  
 है । मसहार और मूत्रामयवे पाससे विदना उपप  
 जोकर बहुत यीर पक्षाययं चले जानेको प्रसिद्धो  
 कहती है ।  
 तुवो ( स० पु० ) तुवो तुव इव कायति के-क । मन्द  
 वृच, तुलना पीड ।  
 तुवोर ( स० पु० ) तुवते पूवति बाचोः तुव बाहुलकात्  
 ईम् । तुव तरकय ।  
 तुवोरवत् ( स० सि० ) तुवोर पपकबं मत्तुप् मज्ज न ।  
 तुवोरवारी, जो तीर चला कर पपको जोविषा निर्वास  
 करता हो ।  
 तुव ( स० जो० ) तुव एवो साहु । तुव तुतिघा,  
 मोमायोना ।  
 तुवो ( पा० जो० ) १ एक प्रकारका छोटा घुच या तोता ।  
 इसको भोज पोको, वरदन ईयगो और पीर इरे जोति  
 है । २ बनारो दोपमे भारतवर्षमें पानेवालो एक  
 प्रकारको छोटी सुन्दर चिड़िया । इसको जोही बहुत  
 मज्ज होती है । इसे लोय वि करोंमें पावते है । ३ एक  
 प्रकारको छोटी चिड़िया । इसका रंग मटमैसा होता है ।  
 इसको बोमो मो बहुत मोमो है । जाइमें यह सारे भारत-  
 वर्षमें पाई जाती है पर गामियोंमें कहर-काप्पोर तुविं  
 प्दान पादिओ और चमो जाती है । ४ एक प्रकारका  
 बाबा वा बिनीना जो सुइवे मत्राया जाता है । ५ एक  
 छोटी टैंटीदार चिड़िया जो महाको बनो होती है दो  
 जिससे लड़के सेकते है ।

तुवुजान ( स० पु० ) तुवु बनवा तुवादिवात् पम्पास  
 होयः बाहु० बनोप । चित्र तीरी ।  
 तुवुत्रि ( स० जो० ) तुवुत्रि चने वाने वा तुवुत्रि-चि द्विबे  
 तुवां पम्पासटोर्षं बाहु बनोपय । १ विम तीरी ।  
 २ दाता ।  
 तुवुव्यमानच ( स० पु० ) तुवु कसबि मागत् द्विब पम्पास-  
 दोर्षं वाहुमकात् बनोप तबामूताः पवति दोप्यते  
 चम पच् । विम, तीरी ।  
 तुवुम ( स० सि० ) तुद पच् दिलो पम्पासदोषः एवो  
 साहुः । तुवुं कच् दो ।  
 तुद ( स० पु० ) तुदति तुद क एवोदरादिवात् दोर्षं ।  
 १ तुवुवृच, तुतका वेङ्क, मज्जतु । २ इसा नामका  
 एक वेङ्क, इसी कोई कोई पाख विप्यस मो कहते है ।  
 पर्याय—तुद, तुवपूव मज्जक जमदाव । पबे तुद  
 पनच तुच—यह तुद, मज्जुरक मोतकोर्षं और पित्त  
 तथा बाहुनायक है कच् तुदकनवे तुच—यह तुद,  
 कारक, बमकारक, लक्ष्योयं और रक्षयितकारक है ।  
 तुदा ( पा० पु० ) १ राशि, ठीर । २ बोमाका चिञ्च  
 चहम्पो । ३ मडोका वह टोना जिस पर तोर, बन्दूक  
 धादिमे निघाना मवाना सोजा जाता है ।  
 तुदा ( स० जो० ) ईयमिद एक ईयका नाम ।  
 तुद ( वि० पु० ) १ तुवका एक वेङ्क । २ तुव नामका  
 नाच कपड़ा ।  
 तुना ( वि० सि० ) १ तुना, उपकना । २ पङ्का न रच  
 सक्क, निरना । ३ यम पात होना, गमं निरना ।  
 तुनोर ( वि० पु० ) तुवीर ईको ।  
 तुकान ( पा० पु० ) १ कायति ईति, प्रकय पाकन ।  
 २ इन्पमुका । ३ उपद्रव, मज्जका मज्जिका, कषाद ।  
 ४ क वानेवाको बाहु । ५ बाहुर्षं वेगका कपडन,  
 पाँचो मटिका । ६ विवांमचरुल चापं पोरसे प्राञ्ज  
 ७ ५ जोय बाहुमप्यकचे पञ्ज ( चिरा तुपा ) है । यह  
 बाहुनामि नामा कायकोमि मज्जदा कच्छत रहती है । जब  
 यह कोमल और मन्द मन्द कहतीचि परिक तरइके सुमभि  
 श्रुयोको ही कर चलती है, तब ममोको पानन्दित कर सुनो  
 है । बहुत समय यह बाहुनामि नामा तरइके मवाना  
 विब कारकोमि निनीकित हो कर मोपच प्रमज्जमदप



वेगसे प्रवाहित होता है एवं कभी कभी क्षणमात्रमें अधिक दूर तक विस्तृत स्थानके वृक्षोंको उन्मूलित, मकानोंको छिन्न भिन्न, वधानोंको तहस नहस, नाव आदिको भग्न और यानवाहनादिको छिन्न भिन्न कर डालता है। इस वेगवान वायुमण्डलको लोग तूफान कहते हैं। हिन्दुओंके पुराणादि ग्रन्थोंमें ४८ पवनोंका उल्लेख है। वे पवन कभी कभी एक एक और कभी कभी सब मिल कर तूफान पैदा करते हैं। चीनके अधिवासियोंका विश्वास है कि टाइफून ( किजय अर्थात् तूफानको अधिष्ठात्री देवोक्ती अनेक सन्तान ) कभी कभी भिन्न भिन्न दिशाओंमें जानेवाले तूफान रूपी अपनी सन्तानको ले कर क्रोडा करतो हैं, वही घूर्ण वायु अथवा टाइफून है।

तूफान जैसा उत्पात मचाता है उसमें पहलेहीसे सावधान रहने पर बहुत अनिष्टसे बच सकते हैं। यूरोपके पण्डित वायुमान-यन्त्रके द्वारा अनेक तूफानको सम्भावना निश्चय करते हैं। पहले सभी देशोंमें कितने लक्षणोंको तूफानके पूर्व लक्षण बतला कर विश्वास करते थे तथा उसोके द्वारा तूफान और वृष्टिका निर्णय करते थे। उदय और अस्तकालमें सूर्यको कान्ति, मेघका वर्ण और वायुकी गति आदिके द्वारा अब भी अनेक तूफान और वृष्टिको सम्भावना को जाती है। सार यह है कि ये सब मितान्त असूलक नहीं है।

वायु और प्रलय शब्द देखो।

यूरोपीयोंके प्रयत्नसे पृथ्वीके प्रायः सभी स्थानोंमें वायुकी गति और दाब-निर्णय, वृष्टिपरिमाण प्रभृति विषय देखनेके लिए यन्त्रादि आविष्कृत हुए हैं। इन यन्त्रोंकी सहायतासे तथा प्राकृतिक विज्ञानादिके द्वारा उन्होंने तूफानके प्रकृतत्व, उत्पत्ति, गति, विस्तार और पूर्व सूचना आदिको मालूम किया है। किन्तु अब तक सब स्थानोंके वायविक परिवर्तनादिकी तान्त्रिका पर्याप्त रूपसे प्राप्त न होनेके कारण इनका सूक्ष्म तत्त्व अभ्रान्तररूपसे प्रतिपादित नहीं हुआ है। यूरोपके विद्वानोंने बहुत परिचायोंके द्वारा तूफानकी उत्पत्ति, प्राकृतिक गति, और व्याप्ति प्रभृति जिस प्रकार निर्धारण को है, उसका मूल समं नोचे लिखा जाता है।

पृथ्वी यदि निश्चला होती और सर्वत्र समान उष्ण होतो तो वायुमण्डल भी निश्चल होता तथा वायु-प्रवाह होता ही नहीं, किन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है। पृथ्वीके गोलत्व हेतु निरक्षरेखाके उभय पाखंडती कितनेही स्थानोंमें लम्बरूपसे पतित होता है, सुतरा दोनां मेरुप्रदेशको अपेक्षा निरक्षरंश अधिक उत्तम होता है। इससे निरक्षरंशमें भूषुष्टसंलग्न वायुराशि भी उत्तम होनेके बाद लघु ही कर ऊपर उठ जाती है एवं पाखंडतीको अपेक्षा शीतल वायु आ कर उसका स्थान पूर्ति कर देता है। इस प्रकार पृथ्वी पर नियत उत्तर और दक्षिण प्रदेशसे वायुराशि निरक्षरंशको और तथा वायुसागरके ऊपरी भागमें निरक्षरंशसे वायुराशि दोनां मेरुप्रदेशको और प्रवाहित होती है। पृथ्वी यदि निश्चला रहती तो वायुराशि ठोक उत्तर और दक्षिणाभिमुख बहती, किन्तु पृथ्वी मेरुदण्डके ऊपर पश्चिमसे पूर्वको और वेगसे आवर्तन करती है, सुतरा भूषुष्टका वायु प्रवाह ठोक सरलतासे नहीं आता। इसी प्रकार निरक्षरंशके उत्तरभागमें वायु प्रवाह ठोक उत्तरसे नहीं आ कर उत्तर-पूर्व दिशासे तथा निरक्षरंशके दक्षिण-भागमें पूर्व-दक्षिणसे आता है। किन्तु भूषुष्ट पर स्थल और जलराशिका असमान संस्थान, सुदीर्घ और अल्प पर्वतोंके अवस्थान इत्यादि कारणोंसे वायुराशि उक्त समस्त नियमोंके बंधवर्ती न हो कर अनेक स्थानोंमें परिवर्तन ही जाता है। इसी प्रकार वाणिज्य वायु, मौसम वायु ( Monsoon ) प्रभृति वायुप्रवाह उत्पन्न होता है। इसका विस्तृत विवरण वायुप्रवाह तथा तत्सद शब्दमें लिखा जायगा।

किसो स्थानको वायु किसो कारणसे उत्तम होने पर विस्तृत होती है सुतरा लघु ही कर ऊपर उठ जाती है तथा चारों ओरसे वायुराशि इस स्थानाभिमुख दोड़ती है। ये समस्त विभिन्नमुखी वायु एकत्र संघुष्ट हो कर घूमतो हुई गमन करती हैं, इसी घूर्णयमान वायुको घूर्णवायु कहते हैं; इसका व्यास कभी कभी कई गजका हो जाता है। उस समय यह अत्यल्प भूभागके ऊपरसे घूमता हुई भोषण वेगसे गमन करती है किन्तु कभी कभी इन समस्त घूर्णवायुका व्यास

१ मोसमे १०००-१२०० मील पर्यन्त हो जाता है। इन समस्त प्रकाशयुक्त वृष्यवायु के किन्तु निम्नतः वायु प्रायः स्थिर रहती है, किन्तु परिधिहीन तरफ वायुप्रवाह मोक्ष तुलान रूपमें प्रकाशित हो कर उच्च धोर मज्जान प्रादिको मध्य धोर पर चार चार इतना है। माहृततल्लय पत्रितो मे निम्न पत्रिया है, कि कम भोग दिन वड़े वड़े तुलानो को देखते हैं ये एक एक प्रकाशयुक्त वृष्यवायु मात्र है। ये समस्त वृष्यवायु १ मे १३० मील विद्यत स्थान तक फैल कर वृमने वृमती गमन करतो है। उसमें ४०० मे ६०० मील इतना तुलान वृष्यवायु हो पत्रिक है। इस प्रकार एक एक वृष्यवायु २१२० पर्यन्त विद्यमान रहतो है तथा जो जो मील स्थानमे खपर हो कर गमन करतो है, व मरीचीमें इन सबको मारिओन (Cyclone) कहते हैं। इन समस्त वृष्यवायुको परिधि को अट्टिवात्त कहते हैं। किन्तुल्लय विन्दुकुल यान्तमावाप्य होता है। समस्त चारो धोर चक्राकारमे तुलान प्रकाशित होता है। वृष्यवायु चमनेके समय एक को कानमें चनेक कानमें विभिन्न सुषो तुलानको उत्पन्न करते करते परस्पर होतो है। पक्षी वी बड़ा जा बुझा है, कि किन्तुल्लयमें वायु प्रायः स्थिर रहती है, सुतरां जिस स्थानके खपर हो कर किन्तु जाता है, वहाँ पक्षी एक धोरमे तुलान बनता है। वैसे कुञ्जशान यान्त रह कर फिर ठोस विपरोत दिशामे तुलान पाता है।

जिस स्थानके खपर हो कर किन्तु आया वहाँ पक्षी धोर चमनेमे हो विपरोत दिशामे तुलान होगा तथा बोचमे किन्तु चमनेके समय बड़ यान्त रहेगा। यदि एक वृष्यवायु का किन्तु अन्तर्गते उत्तर हो कर पश्चिमामिसुख आय, तो वहाँ पक्षी उत्तर पश्चिममे तुलान बड़ेगा, बाद बड़ वायु पश्चिम धोर अन्तर्गते पश्चिम पश्चिममे बड़ कर मीप हो लाबमे।

तुलान एक समयमें जितने स्थानमें फैल कर रहता है, उमेशी तुलान प्रकाश वृष्यवायुका आकार बड़ मकती है। यह स्थानस्थान ठोस मोस नहीं होता। किन्तु जो समय उत्तरे धामामको नाई है। वृष्यवायुकी उपेक्षा बड़ा स्थान दोतोन गुना बड़ा होता है। जिस दिशामें वृष्यवायु गमन करतो है उमेशी दिशामें सुख स्थान

विद्यत रहता है। वृष्यवायु गमनपत्रके साथ समस्तोप चरके पत्रस्थान करता है। उल्लामास जितना स्थान होता है उतना ही तुलानका त्रिज पत्रिक होता है। वपुत क्कामोके वरी स्थानस्थ वृष्यवायु विद्ययक स्थितमे हो नियम मोके दिग्गजाके जाते हैं।

१। अक्षावायु निरक्षदेयमे दोनो क्षान्तिवृत्त पर्यन्त मध्यवर्ती प्रदेशमें निरक्षरेखाके निकटवर्ती बाधित्य वायु प्रवाहके कारणकालमें ग्रीतकासके समय किन्तु मोसुमवायुके परिवर्तनके समय उत्पन्न होतो है। विपुत्र प्रदेशमें कालो तुलान नहीं होता है। कालो कोरै तुलान विपुत्ररेखाके धारमे नहीं दिशा जाता, वर-रसको दोनो दिशाधोमे एक हो क्षान्तिमामि परस्पर १०१२ पर्यन्त मध्यमें तुलानका एक हो समयमें प्रकाशित होना सुना गया है। दोनो योन्वाइमें वृष्यवायु प्रथम भागमें पश्चिमामिसुख धोर मीष भागमें पूर्वामिसुख गमन करतो है। सर्वत्र हो उमेशी मति निरक्षदेयमे वक्राकार हो कर मीषको तरफ हो जाती है।

२। उनको मति दिग्गमावाप्य है पर्याप्त किन्तुके चारों धोर अट्टिवात्तक प्रकाशित रहता है, फिर इनो प्रकार आवर्तन करते करते वृष्यवायु परस्पर हो जातो है। उत्तर गोन्वाइमें यह आवर्तन दक्षिणी धोरमे बायीं तरफ पर्याप्त चक्रको सुई जिस तरफ वृमतो है उमके ठोस विपरोत दिशामें रहता है। दक्षिण-गोन्वाइमें यह आवर्तन चक्रकी सुईके अनुकूल होता है।

उमेशी वृष्यवायुका गमनपत्र एक विप्लोच केपकोही नाई है। इसका गिर पश्चिमदिशामें तथा दोरीं वायु पूर्वदिशामें विद्यत रहतो है। यह गिर उत्तर-गोन्वाइमें माघ १० धोर दक्षिण गोन्वाइमें माघ २६ रेखाधोको क्षिप्रो धायोत्तररेखाको पर्याप्त करता रहता है।

३। अक्षराचर निरक्षरेखाके निकट विप्लोच केपको के पूर्वप्रान्तमे सुई परलुट क्षान्तिको (Declination of the sun) समपरिमाण पश्चिमाधो अक्षमागत उत्पन्न होती है इसी प्रकार पश्चिमको धोर प्राप्ति जाती चमनेमे गोप स्थानका प्रदक्षिण करके पूर्वामिसुख गमन करतो है। मीष भागमें यह अन्तर्गते निरक्षरेखाके धूर चमी जातो है। जोन-धामरके पक्षमे तुलान समस्त ठोस

विपरोत हैं अर्थात् गमनकालमें निरन्तररूपके निकटवर्ती रहते हैं।

४। समस्त घूर्णवायुओंकी गति पृथ्वीके अनेक स्थानोंमें भिन्न भिन्न रूपमें होती है, यहाँ तक कि एक ही स्थानमें एक ही ऋतुमें भिन्न भिन्न हो जाती है। पश्चिम भारतीय होपपुञ्जमें और उत्तरी-अमेरिकामें उसकी गति घण्टेमें ८ मोलसे १३ मोल तक होती है। दक्षिण-भारत महासागरमें इसकी गति १० मोलसे कम २ मोल तक होती है। वंगोपसागरमें उसका परिमाण घण्टेमें २से ३८ मोल, चीनसागरमें ७से २४ मोल तथा प्रशान्त महासागरमें १०से २४ मोल तक होता है। कोई कोई घूर्णवायु तो इतनी धीमी चलती है, जिसकी भ्रमसे स्थिर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार घूर्णवायुका तूफान बहुत काल तक एक ही दिशासे प्रवाहित होता रहता है।

५। इन समस्त भ्रंभावायुका व्यास ५००।६०० मील तक और कभी कभी १००० मील अथवा उससे भी अधिक हो जाता है ! गमन-कालमें कभी आकुंचित अथवा कभी प्रसारित होता है, तथा आकुंचनकालमें यह अति भीषण वेगशाली हो जाता है। पश्चिम भारतीय होपपुञ्जमें इस वायुका व्यास प्रायः १०० अथवा १५० मोली है, किन्तु अटलाण्टिक महासागरमें आते ही वह प्रसारित हो जाता है, उस समय कभी कभी इसका व्यास १००० मोल पर्यन्त हो जाता है। बङ्गोपसागरमें सभी भ्रंभावायुओंका परिमर प्रायः ३०० वा ३५० मोल है। कभी यह ६०० मोल और कभी १५० भी हो जाता है, शिपोक्त समयमें तूफानका वेग भीषण रूपसे बढ़ता है। अरबसागरमें उसका व्यास २४० मोलसे अधिक नहीं होता, ऐसा बड़तीका अनुमान है। चीन-सागरके सभी टाइफुनका व्यास ६०।७० मील तक होता है।

घूर्णवायु आवर्तन करते करते गमन करते हैं। सुतरां भट्टिकाचक्रकी वायुकी गति और घूर्णवायुकी गति एक ही दिशामें होती है, वहाँ तूफान सबसे प्रबल रहता है। जहाँ परस्पर विपरोत है, वहाँ इसकी गति मन्द हो जाती है। ये दोनों विन्दु गमन-पथके दोनों पार्श्व परस्पर विपरोत भागसे रहते हैं, फिर घूर्णवायु पहले पश्चिमकी ओर और पीछे तेजोहीन हो

कर पूर्वकी ओर गमन करतो है। यही कारण है, कि उत्तर गोलार्धमें अग्रगामी घूर्णवायुकी दक्षिणदिशाका तथा दक्षिण-गोलार्धमें वाई दिशाका तूफान सबसे तेज होता है।

तूफानके समय वायु जिस दिशासे प्रवाहित होती है, वास्तवमें उसी दिशासे तूफान नहीं आता, अर्थात् घूर्णवायुकी गति उस दिशासे नहीं होती। पहले ही कहा गया है, कि इससे चारों ओर सभी दिशाओंसे वायु प्रवाहित हुआ करता है। इस भट्टिकाचक्रका जो अंश जिस स्थानके ऊपर हो कर जाता है, उस अंशमें वायु जिस दिशासे बहती है उसी स्थान पर और उसी दिशासे तूफान बढ़ता है। ऐसा भी हो सकता है कि यदि पूर्व-दिशासे तूफान आवे तो उस हालतमें वायुका वेग पश्चिम और दक्षिण आदि दिशाओंसे हो सकता है।

घूर्णवायुकी गति घण्टेमें २से ४० मोल तक होती है, कभी कभी उससे भी अधिक हो जाती है। इसके द्वारा तूफानका वेग नहीं समझा जा सकता। भट्टिकाचक्रका आवर्तवेग इसकी अपेक्षा बहुत अधिक है। इसलिए तूफानका वेग कभी कभी घण्टेमें ८०।८० मोल तक हुआ करता है।

अनेक समय क्षुद्र क्षुद्र घूर्णव गुण प्रबल तूफान उत्पन्न करके बहुत अनिष्ट करतो है। इनका व्यास कई गजसे १ मील वा उससे भी कुछ अधिक हुआ करता है। ये अधिक देर तक नहीं ठहरतो, किन्तु इनका तेज बढ़ा हो भयानक होता है। दो चार घण्टोंमें ही ये वृक्ष, मकान, मनुष्य, पशु, जो कुछ सामने आता है, उसे नष्ट-भष्ट कर डालती हैं।

ये सभी तूफान स्वभावतः कई घण्टों तक एक स्थान पर विद्यमान रहते हैं, किन्तु अनेक स्थानोंमें ८।१० वा उससे भी अधिक दिनों तक प्रबल तूफान प्रवाहित होता है। यह तूफान घूर्णवायुसे उत्पन्न नहीं होता, पृथ्वी पृष्ठस्थ सामयिक वायु-प्रवाहसे उत्पन्न होता है। इसी प्रकार वाणिज्य-वायु पश्चिमकी ओर आमेजन नदीके प्रान्तसे प्रवाहित हो कर आन्टिज पर्वतके निकट प्रबल होतो तूहूई फानके रूपमें परिणत हो जातो है। पार्वत्य प्रदेशमें सामयिक वायुप्रवाह निर्भिन्नतया चलने नहीं पाता,

सुतरां बहू प्रतिफल हो कर जगह जगह तूफान उत्पन्न  
 कर देता है। फिर उत्पन्न बाहुके कुछ क्षणों पर अर्धगमन-  
 काक्षमें प्रवाहके द्वारा पर्वत पर आनेसे यदि बहू बहावके  
 मोतप्रवाहसे फिर मोतक, जनीमूल, चौर गुद को जाय  
 तो पश्चिम भारतके आरब बहू पर्वतपाय को कर बंधने  
 नीचेको चौर बहती है। इसको प्रकार एक न्यायमें १०।१२  
 दिनतक एक को दिग्गने मोपय तूफान होता रहता है।

तूफानको उत्पत्तिबं लब्धभ्रमे पश्चिममें मतमद है।  
 फोकेहर टेकर (Faylor) साहबका मत है, कि खानीय  
 तापके कारण जब किधी स्थानकी वायु खपर जाती है तब  
 चारों ओरसे वायुप्रवाह इस स्थानपर दौड़ जाता है। उत्पन्न  
 परस्पर प्रतिघातसे चौर पृथ्वीके घात नके लिए बूबं वायु  
 उत्पन्न होती है। फिर कितने पश्चित यह कहते हैं कि  
 परस्पर विपरीतगुणो दो वायुप्रवाहके बंधनसे यह  
 उत्पन्न होता है। सि० ब्लान्फोर्ड (Blanford) कहते हैं  
 कि किसी कारण किसी स्थान पर वायुमें रहनेवाली  
 उत्तरादि जनीमूल को कर बीचमें परिवर्तित हो जाती है  
 चौर बहावका वायुप्रवाह पवनत हो जाता है। सुतरां  
 चारों दिग्गक्षमें रहनेवाली वायु इस स्थानके घातित हो  
 कर तूफान उत्पन्न करती है। सेवोक सिद्धान्त को  
 बहुत तब कोच प्रतीत होता है। पनेक प्रकारको परो  
 चाको द्वारा पश्चित मोन इस सिद्धान्तको फोकार कर  
 रहे हैं। जिस जिस स्थान पर वायुशक्तिको दाव प्राप्तका  
 होता है, चारों ओर रहनेवाला पवित्र दावतुल्य स्थानके  
 इन पल्पदावतुल्य न्यूनता पर वायुको गति प्रुपा करती  
 है। यदि चारों दिग्गक्षोंमें रहनेवाली वायुशक्तिको दाव  
 थोड़ो थोड़ी बढतो जाय, तो वायुप्रवाह चोरे चोरे घमन  
 करता है, चौर यदि जमीपर्वोंमें पवित्र दावतुल्य प्रदेश  
 रहे तो वायुशक्ति बंधने दौड़ती है। जहाँ भी इसका  
 क्लिब्रम नहीं देखा जाता। किसी स्थान पर वायुप्रवाहके  
 द्वारा Barometer पारदको चवनति देखने पर जब समय  
 यदि पारबर्नो दिग्गक्षमें उन्नति हुई हो तो कमभन्ना  
 चाहिये, कि मोन हो तूफान पानिवाला है। ताबिक  
 मोन हकी उत्पत्ति तूफान चादिबा पाममन पक्षसे हो  
 थान कर मायमान हो जाती है तथा पनेक दुर्घटनाओंके  
 दावसे जाच पाते हैं।

जिन जगह समुद्रोंमें तूफान पोर उद्वि चादि प्रुपा  
 करती है, उन सब समुद्रोंमें ही कर यदि निरापद जाना  
 चारों तो पक्षसे वायुमानप्रवाहके पारदको उन्नतिको पोर  
 उत्पन्न करण पक्षक कर्तव्य है। परोचा द्वारा प्रमापित  
 प्रुपा है कि पोरप्रवाहका बसके निचटवर्ती स्थानमें  
 जब पन्धस पारदको पवनति होती है, तभी तूफान  
 पाता है। जमी जगह पारदको यह पवनति २३ इंच  
 तक प्रुपा करती है। तूफानके किन्दसकमें हो पवनति  
 सबसे पवित्र होती है। बहुतांका कहना है, कि समी  
 तूफान क्षमकपमे प्रवाहा एक पार्श्वमें कुछ ठेका मिरदक  
 के चारों ओर चकर लगाते हुए जाते चौर तब बूबंके  
 कारण किन्द्रापसारिणो शक्तिसे द्वारा किन्द्री वायुशक्ति  
 परिधिको चौर घमन करती है। किन्द्रकन पर पारदको  
 चवनति एव प्रामाण्य पर उन्नति होनेका प्रभो कारण  
 है। बहुतेषी क्षोम २४में चापति दिक्क कर कहते हैं,  
 कि तूफान बार बार चकर लगा कर नहीं आता। समी  
 समय इनको किन्द्रामितुण दौड़नेकी प्रवृत्ति देखी जाती  
 है। है बह भी कहते हैं, कि जब किन्द किन्द्रापसारिणो  
 शक्तिसे यह पवनति उत्पन्न होती है, तब उत्पन्ना परि  
 मांघ बहुत बढ जाता है। क्वीकि तूफानका व्यास ४००  
 मोन है चौर प्रामाण्यमें यह कप्यमें ७० मोलके किन्दके  
 प्रवाहित होता है तो भी इसको किन्द्रापसारिणो शक्ति  
 कन्दक पारदको दुर्घट रहके पक्षिक पवनत नहीं कर  
 उन्नती। किन्दु वर्षस एक इंच वा उन्नते भी पवित्र  
 पवनति होते देखी जाती है।

को कुछ हो तूफानके पक्षे तथा समकालमें वायु  
 शक्तिको चापको घमनता प्रबुद्ध वायुमानप्रवाहक पारद  
 एक बार तब चौर एक बार नीचा होता रहता है। इस  
 लिए पन्धस पारदका इस प्रकार कन्दक देख कर कम  
 भन्ना चाहिये कि तूफान पक्षकप्रवाहो है। १८७० ई०के  
 चक्रुवर माधमें चीनशाहरमें जिस तूफानके मोलकुच्छा  
 नामक सुहनीका कक्षमें ४०० गई को, उस तूफानके पार  
 दके पक्षे हो २४ कप्ये तक वायुमानप्रवाहक पारद  
 कन्दक प्रुपा था। जिसो हूबरे बहावने इस दुर्घटनाके  
 उद्धार पाया था, उसीके उन्नितित ताबिका पावी  
 गई है।

तूफानके शेष हिस्से पहले ही यन्त्रमें पारदकी उन्नति देखी है। पिडिंग्टन साहब कहते हैं, कि यही निदर्शन तूफानमें पड़े हुए नाविकोंके निराश हृदयमें आशंका सञ्चार करता है।

किसी किसी तूफानके समय पारदकी उन्नति और अवनति अत्यन्त धीरे धीरे और किसी समय अत्यन्त शीघ्र शीघ्र हुआ करती है। जितना शीघ्र यह परिवर्तन होता है, तूफानका प्रकोप भी उतना ही अधिक बढता है। तूफानके वेन्द्रके किसी स्थान पर आनेके ३ से ६ घंटे पहले ही पारद सहसा अवनत हो जाता है। तूफानके प्रकोपके अनुसार इस अवनतिका तारतम्य होता है। इसका वेग जब अत्यन्त अधिक होता है, तब यह अवनति २॥ इंचसे अधिक हो जाती है, अर्थात् यन्त्रस्य पारद २८.८ इंचसे २६.३० इंच पर्यन्त उतर जाता है।

तूफानका पूर्वलक्षण—तूफान आनेके पहले वायु नियल और सूख रहती है, निःश्वास प्रश्वासमें कष्ट मालूम पडता है। उसके बाद उच्छ्वस्यमानावसे एक एक दिशासे मन्द मन्द वायु प्रवाहित होती है। तदनन्तर एक घण्टा वा उससे भी अधिक काल तक शान्ताभाव लक्षित होता है तथा उसके बाद ही उस दिशासे प्रबल तूफान उठने लगता है। तूफानके साथ साथ प्रायः विद्युत्, वज्राघात, मेघ और वृष्टि सङ्घटित रहती है। तूफानके पहले तापमानयन्त्रमें तापको अधिकता देखी जाती है। इसके आनेसे ही ताप घट जाता है तथा मेघ और वृष्टि होने लगती है। तूफानके बाद शीतका अनुभव न हो कर यदि फिर गरमो मालूम पड़े तो समझना चाहिये कि शीघ्र ही और एक तूफान आवेगा। बड़े बड़े तूफानके समय समुद्र उद्वेलित और उच्च तरङ्गाकारमें बहुत वेगसे लहराता है और कभी कभी आस पासके देशोंकी भी प्राणित कर डालता है। यह तरङ्ग दो प्रकारकी होती है—एक तो समय घूर्णवायु द्वारा विताडित हो कर इसके आगे आगे चलती है और दूसरी घूर्णवायुके चारों ओर रहनेवाले भाटिका चक्रसे सभी दिशाओंमें उद्वेलित होती है।

भूमण्डलके किस प्रदेशमें कब किस दिशासे तूफान आता है यह अब तक अच्छी तरह स्थिर नहीं हुआ है।

पश्चिम-भारतीय होपमुञ्जमें वर्षाके शेष हो जाने पर मृग जब मस्तक पर आ जाती है, तभी प्रायः तूफान होता है। अटलाण्टिक महासागरके उत्तरीय भागमें जून मासके ले कर दिसम्बर तक तूफानका समय है। विशेषतः अगस्त मासमें दो कई बार तूफान आता है। दक्षिण भारत महासागरमें नवम्बरसे जून पर्यन्त तूफानका समय रहता है, जिसमें जनवरी और मार्च मासमें सबसे अधिक तथा जून और नवम्बर मासमें अल्प हुआ करता है। बङ्गोपसागरमें अक्टूबर और नवम्बर मासमें अर्थात् प्रबल उत्तर-पूर्व मोसुम वायुके समयमें ही प्रायः तूफान होता है। तद्विषय दक्षिण-पश्चिममें मोसुम वायु रहनेके समय अर्थात् मई और जून मासमें भी तूफान हुआ करता है। चीनसागरमें सर्वत्र जूनसे नवम्बर मासके मध्य तक तूफानका प्रकोप है जिसमेंसे सितम्बरमें सबसे अधिक और जून मासमें कम होता है। अरवसागरमें दोनों प्रकारकी मोसुम वायुके समयमें ही तूफान होता है।

१८ वीं शताब्दीके प्रारम्भसे भारतवर्ष और उसके निकटवर्ती समुद्रमें जो भोपण तूफान हो गया है, उसका विवरण अनेक अर्थों में पुस्तकोंमें वर्णित है। हेनरि पेडिंग्टन (Henry Piddington) साहबने, १८२८से १८५१ ई० तक पर्यन्त जो तूफान हुए हैं उनका विवरण लिखा है। इन्होंने पहले पहल स्थिर किया था कि भारतवर्ष और निरक्ष-रेखाके उत्तरके समुद्रोंमें जो तूफान आता है, वहाँ मवल चक्रवत् परिभ्राम्यमान घूर्णवायु है। उन्होंने सभी तूफानोंका वेग तथा चलनेका रास्ता भी स्थिर किया है।

मन्द्राजके १०८ मील उत्तरसे ले कर १२० मील दक्षिण तकके स्थानोंमें तूफानका प्रकोप अत्यन्त अधिक है। १७४६ से १८८१ ई० पर्यन्त १७ भोपण तूफान हुए थे जिनसे बहुतेकोंकी हानि हुई थी।

बङ्गोपसागरमें जो भोपण तूफान हो गये हैं, पेडिंग्टन आदिको पुस्तकोंमें उनमेंसे १३के उल्लेख है। ब्लानफोर्ड साहबने हिसाब लगा कर देखा है, कि जनवरी मासमें २, फरवरीमें ०, मार्चमें १, अप्रैलमें ५, मईमें १७, जूनमें ४,

जुलाईमें २ चंपलमें २, मितम्बरमें १ चम्बरमें २० नवम्बरमें १४, पौर डिम्बर मासमें १ तूफान होतें हैं। इनमेंसे नवम्बरके चणोन्के मिय तक कितने तूफान पातें हैं वे जो अजोयमागरके दक्षिणार्धमें पावहर रहतें हैं, मई पौर जून तथा अक्षर पौर नवम्बर मासके प्रथम मसाहमें प्रजागत सागरके उत्तर भागमें तूफान होतें हैं। मध्यमर्धे मसममें पश्चिमी दक्षिण-पश्चिम मोड़मबाबुके समय बसो बसो उत्तर भागमें तूफान होता है जो कि विन्तु बसको सख्या बहुत कम है।

अतान टेन्गरी वङ्गोपसागरके तूफानके विषयमें हमो प्रकार लिखा है। किओ अहात्रके दिने जो तूफानमें पड़नेसे पहले एक दिग्गिने जने तूफान पा बेरता है उनके कुछ देर बाद बाहु शाल मास धारक खरनो है तथा पाबाय निम्न हो जाता है। तदनन्तर विपरीत दिग्गिने फिर मोपक तूफान पाता है। इन समय भट्टिकाधीनी यति पूर्वोक्त नियमासुक्तों पश्चिमी तूफान पूर्वके, दक्षिणार्धमें पश्चिमसे पौर पश्चिमाधमें उत्तरसे प्रवाहित होता है। वे तूफानपुर्ये प्राय दक्षिण-पूर्व कोचने उत्तरपश्चिम कोचको पौर जाता है।

मन्द्राज पौर इससे चतुर्पाद्यवर्ती खानिमें अनेक बार मोपक तूफान हो गये हैं। इन मसो तूफानोंको तापाटक तूफानु है जो पूर्व-दक्षिणको पौरसे उत्तर पश्चिमको पौर बहुत शीघ्रसे बहते हैं। जब यह किनारे पड़ते हैं, तब इसकी बति परिवर्तित हो कर पश्चिम वा उत्तर-पश्चिमको पौर हो जाती है। इसका प्यास प्राय १४० मोन है पौर इसका पावर्तन चणोके कठिने विपरीत दिग्गिने रहता है।

१७४१ ई०में १ चम्बरको टीम्बर रात्रिके समय मन्द्राज नगरमें एक मोपक तूफान पाया था। इन समय पारम्भ शिवायति कार्बीइने मन्द्राज नगर पर पश्चिमातर कर बहा २१ दिन तक ठहर गया था। पोतके पाष्यमें बहुतसे जड़ो अहात्र तथा भाईं हो। प्राय सभी भय्य पौर अलमन्न हो गयो थी। तोन नावोंमें सवमम १२ इज्जर मसुध है, उनको मो खानि मई।

१७८६ ई०की १२वीं पौर १३वीं चणोन्को रात्रिके समय अहात्रके निकट तूफान पाया था। यह तूफान

उत्तर-पश्चिमको पौरसे प्रवाहित हुआ था पौर दो दिन तक एक जो गतिसे बहता रहा था। पेशोके अहात्र पाटोन्गोके बहुत समोप जो अलमन्न हो गया था किबक मास १२ मनुनीने उन अहात्रके रचा पाई थी। देको कोटके समोप जो मसूर नामक अहात्र टूट पड़ गया पौर उसमेंसे १२० अम'पारो सुख पौर पारोको अक्षमें डूब मरे। बिण्टुमिड कोटके निकट जो इष्ट दक्षिण अक्षमोके दो बड़े अहात्र पौर समो कोटो कोटो काशियाम नदकट हो गई थीं।

१७५९ ई०को ११वीं चम्बरको एक भयानक तूफान बठा था। १७६१ ई०को १मो अलवरोका पुदि चोरोमें जो मोपक तूफान पाया था, उसमें कितने पहा रैत तो डूब मरे पौर कितनो ने बहुत सुखदिवसे पावक रचा था। ८ प मरेओ अहात्रोंमें किबक बार अहात्र चक यवे पे पौर टूटपड़ गये। विन्तु के किओ प्रकार अलमन्न होनेसे बचें है: निडकामक प्रसूति १ अहात्र तोरमें निचित हुए एक मिय १ अहात्र डूब गये। ११०० सो पारोहियो मिय किबक मास ७ युरोवियन पौर ७ दिग्गिण मनुष्य मरे है।

१७७२ ई०में २१वीं चम्बरको मन्द्राजमें प्रथम तूफान हुआ था। इन समय पोताष्यमें कितने अहात्र नहर नगावे है, वे मसो विनष्ट हो गये।

१७८२ ई०में उत्तर पश्चिममें तूफान पारम्भ हुआ था। दूसरे दिन प्रातःकालमें १०० देगोय पोत तोरमें निकित हुये। इन्हीं घण्टाविपतिके दो अहात्र कुछ निकित हो कर बड़े अहात्रे बसईं पड़के। इन समय कैटर पलाक अताइगने बहुत स्थक प्रशानि मन्द्राज नगरमें पाष्य लिया था। तूफानके बाद जो पकड़ुबटना हुई थी। नगरमें शिकाटनिने उन लोकोके अहात्रो दूर करके निवे घण्टासाज तक किया था।

१७८१ ई०को २० वीं चम्बरको प्रथम तूफान हुआ था। इस समय बाहुमानपक्षमें पारटको सकति २८ ४१२ इचने कम लगीं थी।

१८११ ई०को २रो मईको मन्द्राजमें जो मोपक तूफान पाया था, उससे प्राय: अताधिक अहात्र पौर कोटो कोटो पोतादि नष्ट हुए है। किबक दो अहात्र मसुध

में पड़ कर बच गये थे। इस तूफानके तेजसे समुद्रकूलसे प्रायः ४ मील तकको भूमि ३६ हाथ जलके नीचे चली गई थी।

१८१८ ई०को २४वीं अक्तूबरको मन्द्राज नगरमें उत्तरसे तूफान आया था। क्रमशः तूफानका वेग बढ़ि होकर एक चार रुक गया, छठात् दक्षिणकी ओरसे फिर पहलके समान प्रबल तूफान आया। यह पूर्ण वायु मन्द्राज नगरसे पश्चिमाभिमुख आई थी। वायुमानयन्त्रसे पारा २८°७८ इञ्च तक चढ़ गया था।

१८२६ ई०को १०वां अक्तूबरको मन्द्राज नगरमें उत्तरसे तूफान आया था। अपराह्न चार बजेके समय वायु उत्तर-पश्चिम तथा उत्तरदिशामें प्रवाहित हो कर आध घण्टा तक ठहरी, अनन्तर सायंकाल ७ बजेके समय द्विगुण वेगसे दक्षिणकी तरफसे तूफान आने लगा, इस समय वायुमानयन्त्रमें पारा २८°१८ इञ्च चढ़ा था। पूर्ण वायु नगरके ऊपर हो कर चलती थी।

१८४६ ई०की २५वीं नवम्बरको जो तूफान हुआ था, उससे मन्द्राजके मानमन्दिरके वायु गतिपरिमापक यन्त्रादि नष्टभ्रष्ट हो गये थे।

१८६४ ई०की १ली नवम्बरको समुद्रोपत्तनमें जो भयानक तूफान आया था, उसके प्रकोपसे समुद्र स्फोट हो उठा था। उपकूल भागमें १२।१३ मील तक और कहीं कहीं तो १७ मील तक प्रायः ७८० वर्गमील स्थान प्रभावित हो गया था। इस भोषण प्रभावमें प्राय ३०००० मनुष्य यमपुरको सिधारे थे।

भटिका द्वारा सुन्दरवनकी बड़ी हानि हुई थी। १५८५ ई०में हरिणघाटा और गङ्गाके मध्यवर्ती स्थानमें अर्थात् वर्तमान समय बरिशाल और बाखरगञ्ज जिला तूफानके द्वारा ताड़ित समुद्रकी तरङ्गोंमें प्रभावित हो गया। चन्द्रद्वीप देखो। उसके बाद ही मग और पोतुंगो जलुटेरेनि नगरको तहस नहस कर डाला। १६२२ ई०में यह देश फिर जलप्रावित हो गया। उसमें प्रायः १०००० मनुष्योंने प्राण त्याग किये तथा कितने गृहादि नष्ट हो गये।

एक अंग्रेजी सामयिक पत्रमें लिखा है, कि १७३१ ई०में कलकत्तेमें एक भोषण तूफान हुआ था। इस

तूफानसे समुद्रमें ऐसी भोषण तरंग आई थी, कि कलकत्तेको प्रभावित कर दिया था। उसमें प्रायः ३०००० प्राणो मर गये थे। १७३६ ई०में लक्ष्मोपुरके निकट मेघना नदीका जल ६ फुट ऊंचा हो गया था। १८३१ ई०के प्रबल तूफानसे कलकत्तेके चारों तरफ ३०० ग्राम और प्रायः ११ महस्र मनुष्य बह गये थे।

१८३३ ई०के प्रबल तूफानसे सागरदीप १० फुट नीचे जलमें डूब गया था तथा यहांके समस्त मनुष्य और यूरोपके तत्त्वावधारकगण नष्टभ्रष्ट हो गये थे।

१८५८ की कलकत्तेमें एक प्रबल तूफानने बहुतसे मनुष्योंको नष्टभ्रष्ट कर दिया।

१८६४ ई०को ५वीं अक्तूबरको रात्रिमें समुद्रसे एक भोषण तूफान कलकत्तेके ऊपर होकर गया। इस तूफानमें बहुतसे टोमर और ६०।७० सहस्र मन बोभा लादनेवाले जहाजोंमेंसे कुछ तो टूट टाट गये, कुछ तोरमें निजिम हुए और जनमें डूब गये। प्रायः ३०० मील तकके गृहहत्तादि मिलकुल धरागायो हो गये। यह तूफान आन्दमान होपके निकट उत्पन्न हो कर उत्तर-पश्चिमके सम्मुख वालेखर और द्विजलोके निकट उपकूल-भागमें प्रतिहत हुआ था। बाद वहसे यह ५ अक्तूबरकी कलकत्ता आया और कुप्यानगर तथा वगुड़ाके ऊपर हो कर गाड़ी पहाड़ पर जा पहुँचा। इस तूफानके प्रकोपसे बहुत अनिष्ट हुआ था। सागरने ३० फुट ऊँचा तरंगित हो कर भागोरघोके उभयकूलवर्ती प्रायः ८ मील पर्यन्त स्थानको जलप्रावित कर दिया। कलकत्ते और हबड़ेके प्रायः १८६४८१ मकान बह गये। मेदनीपुर जिले और सुन्दरवनमें इससे भी अधिक हानि हुई थी। यहाँ तककि जिलेके प्राय ३॥ अंश अधिवासी तूफानके प्रकोपसे बह गये थे। अभी बहुत रुपये खर्च करके २५।३० वर्षके कठिन परिश्रमके बाद जलप्रावनके हाथसे सुन्दरवन प्रादि स्थानको रक्षा की गई है। तूफानके समय कलकत्तेमें जिस तरह बहुतसे अधिवासियोंको अकाल-मृत्यु हुई है, उसका उल्लेख करते हुए बालफोर साहबने लिखा है, कि गङ्गा यदि टेम्स और लगुनसे कम अधिवासोयुक्त हो कर कलकत्ता होती, तो पृथ्वीके चारों ओर झांझकारकी ध्वनि सुनाई पड़ती तथा लिसवनका

शु कर्म इत्यादि दुर्वटनाये जो इतिहासमें इतनी प्रसिद्ध हो गई हैं, वह कल्पवृक्षों के तुलानके विषय कथातः नामने बहुत सुख गिने जाते। इस तुलानमें प्रायः २०००००० घोर ०००००० मनुष्य मर चुके थे।

मेवना नदीके सुभानास्थित श्योप, साहवाजपुर, इतिहा प्रमृति काव्यके तथा कारियलमें सुशोभित समी होवको मो तुलानके पनेक बार जनि पशु को जो। ये होव कल्पके बहुत अर्थमें प्रचलित है। इस विषये जो कुछ जनि हुई वह विषय तुलानमें जो। बाबुराघिके प्रसाधारण शाल्म नाम घोर पाशाघको जालिमा द्वारा बहकिके पचिवासी पक्षिमें जो तुलान पागमन मालूम कर लक्ष्मी हैं। बिन्दु १८०६ ई०के १२वें पक्ष भरको तुलान सहजा उत्तरकी घोर पाया। दूनरे दिन पर्याप्त पहलो मखम्बर की बहुत धनमें बहने लगा। अरार बहुत जपा उर पाया। इसके बाद पश्चिम दक्षिणके बीनसे भारी-तुलान पा जानेसे १००० १३ पुटतक मागतरण बढ़ गई। ३ बजे तक कम बढ़ता रहा, पोछे धीरे धीरे घटने लगा, इसमें प्राय १६१००० मनुष्योंके प्राण गये थे।

तुलानी (पा० वि०) १ लक्ष्मी, कपटूकी बयेंका करनी बाना, खनाटो। २ झूठा बरह सनानिवाका तीव्रमत जोड़नेवाला। ३ उर पक्षण्ड।

तुहर (म० पु०-खो०) तु कियत् तु उ उका पय वा १ पर हवी० पय व। १ पत्रातपुत्र पय, बिना लीगका बेन बूका बेन। २ वे दाड़ीमू बका मनुष्य। ३ पक्षक पुटय का लघय। ४ कपाय रय क्षैना रय। (त्रि०) १ कपायरमनुष्य जिसमें क्षैना रय हो।

तुमझूर—तुमझूर रैनी।

तुमझो (हि० खो०) १ तुमो। २ पयोंके बजामिका तुमो का बना कृपा एक प्रकारका बाबा।

तम-तडाक (पा० खो०) १ तडक मड़क, मान मोकत पाल बान। २ बनावट, डसक।

तुमन (हि० लि०) १ बईके मारिके मटे हुए रैनीको कुछ पनय पनय करमा, कचेइना। २ बज्यो पज्यो करना। ३ हाथके मचनना मनना इनना। ४ रदय्य योमना योम जोमना, बातको कचेइना।

तुमार (ख० पु०) १ बातका व्यर्थ बिपार, बातका बर्तव्य।

तुमारिया दूत (हि० पु०) धूम मधौन कता कृपा दूत। तुय (स० खो०) तोब धवोदरादिल्यात् मातु'। १ अर, पानो। २ छिय, तिजो।

तया (हि० खो) कानो मरखी। तुर (म० वि०) तुर-कल-रि-द्वि-र। १ विपमुक, ति-र (खो०) २ वेग, तिजो।

तुर (स० खो०) तुयेंते सुख तुर बज। १ माघमिद, एक प्रकारका बाबा ममारा। २ तुरको नामका बाबा, तुरको।

तुर (हि० खो०) १ तुमाइके बरघेको मज-ईकमत्र कम्बो एक लकड़ो। इनमें तानो खपटी जाती है। इसके दोनो निरो पर दो चूर घोर चार टिट होती हैं मपिटनो पचिवाका। २ जनानी पानकोके चारों घोर ब जो हुई एक रखो। यह इकाये परदा उर जानिके बचातो है। ३ धरहर।

तुरत (हि० पु०) एक प्रकारका पसी।

तुरना (हि० पु०) एक बिड़ियाका नाम।

तुरान (पा० पु०) पारमिके उत्तरमें प्रचलित मध्य पयिया-का नारा भाग। यह तुर्क, तातारी, मुगल पानि जातिकीका निवास स्थान है।

ईरान पश्चात् पारमदेशके उत्तर घोर उत्तर पूर्वमें प्रचलित मध्यपयियाके समस्त देशको पारमो लोग 'तुरान' कहते हैं। जिस तरह हिन्दू पार्य घोर कोष्ठ ये दो मध्य व्यवहार करते हैं, वसी तरह पारमो 'ईरान' घोर 'तुरान' करते हैं। तुरानदेशके जोनोंको तुरानो कहते हैं।

पाशाक्य आतितखबिन्दु कुभीरका मत है, कि मङ्गो कीय (त्रापतवर्षीय) जातिका पादि कामरुबान श्रीजर नै पङ्के पनर्गत पनर्दाह पर्वत पर वा। यहदि है उत्तर घोर मध्य पयिया तथा महा नदीके उत्तरपट्टेग तक का बने। बर्तमान समयमें तुइम तुर्को, मुगल, जोम पादि जातियां रने बड़ो तुरानो जातिका माया कहकाती हैं।

प्रायैतिहासिक कालमें एक दन घोर जनि जो हिमानयके से कर पनटाय तकको इइतु पर्वतमानाको पचिबका प्रदेशमें नाम भरतो हो, वह प्राचीन ममपु



मिव । तूलस्फोटनार्थं धनुः, रुई धुननेका यन्त्र, धुनको, फटका ।

तूलग्रन्थिसमा ( मं० स्त्री० ) ऋषि नामकी श्लेषध ।

तूलचाप ( मं० पु० ) तूलाय तूलस्फोटनाय चाप इव । तूलकामुक, धुनकी ।

तूलत ( हिं० स्त्री० ) लहाजकी ग्लिंग या कठहरकी छड़में लगी हुई एक खुट्टी जिममें किसी उतारे जानीवाले भरी बोझमें बंधो रखी अटका दी जाती है ताकि बोझ धीरे धीरे उतर जाय ।

तूलता ( हिं० स्त्री० ) समता, बराबर ।

तूलना ( हिं० स्त्री० ) १ धूरेमें तेल देनेके लिये पहियेकी निकाल कर गाडोकी किसी लकडोकी सहारेपर ठहराना । २ पहियेको धुरीमें तेल या चिकना देना ।

तूलनालिका ( मं० स्त्री० ) तूल-निर्मिता नालिका । पिच्छिका, रुईकी पोली वत्ती जिसमें कातने पर बढ बढकर सूत निकलता है, पूनी ।

तूलनाली ( मं० स्त्री० ) तूलनिर्मिता नाली । पिच्छिका, पूनी ।

तूलपिचु ( मं० स्त्री० ) पिच-कुन तूलप्रधानः पिचुः । तूल हच, रुईका पीटा ।

तूलफल ( मं० पु० ) अर्कहच, अकवनका पेड़ ।

तूलफला ( मं० स्त्री० ) शालमली हच, सेमरका पेड़ ।

तूलमूल ( मं० स्त्री० ) काश्मीरकी चन्द्रभागा नदीके किनारेका एक देश ।

तूलवती ( मं० स्त्री० ) हचविशेष, नील ।

तूलहच ( मं० पु० ) तूलस्य हचः । शालमलीहच, सेमरका पेड़ ।

तूलशर्करा ( मं० स्त्री० ) तूलस्य शर्करैव । कार्पासबोल, कपासका बीया, विनौला ।

तूलसेचन ( मं० स्त्री० ) तूलस्य सेचनं इत्यत् । तूलसूत्र कर्त्तन, रुईसे सूत कातनेका काम ।

तूला ( मं० स्त्री० ) तूल-अच् ततः टाप् । कार्पासी, कपास ।

तूनि ( मं० स्त्री० ) तूल-इन् सच कित् । इगुषव कित् । उप् ४ । ११६ । चित्रकारकी बर्तिका, चित्रकारीकी कूची ।

तूलिका ( मं० स्त्री० ) तूलिरेव स्वार्यं कन् । चित्रकारोपकरण, रंग भरनेकी कूची । पर्याय—इपिका, इपौका, तुलि, तुली । २ द्रव सुवर्णपरीचार्थं शलाका, गला हुआ सोना परखनेकी वत्ती । ३ गलाया हुआ सोना टारनेका बरतन । ४ बीरणादि शलाका, लालटेन आदिको वत्ती । तूल-ठन् कापि अतइत् । ५ प्रथ्योपकरणविशेष, तोशक । तूलिनो ( मं० स्त्री० ) तूलोऽस्त्यस्या इनि-डोष् । १ शालमली-हच, सेमरका पेड़ । २ लक्ष्मणाकन्द । ( त्रि० ) ३ तूल-युक्त, जिसमें रुई हो ।

तूलिफला ( मं० स्त्री० ) तुलि तूलवत् फलं यस्याः । शालमलीहच, सेमरका पेड़ ।

तूली ( मं० स्त्री० ) १ नीलहच । २ रंग भरनेकी कूची । ३ लुलाहोका लकडोका एक यन्त्र । इसमें कूचीके रूपमें खड़े ऋद्धे रेडि जमाए रहते हैं ।

तूवर ( मं० पु० ) तु-वाहुलकात् वरच्, दोषश्च । १ तूवर-शब्दार्थ । २ कषाय रस, कसैला रस । ( त्रि० ) ३ कषाय-रसयुक्त, जिमका रस कसैला हो ।

तूवरक ( मं० पु० ) अजातशुद्धपशु, डूंडा बैल, बिना सींगका बैल । २ वे-दाड़ीमुँकका मनुष्य । ३ कषाय-रस, कसैला रस ।

तूवरिका ( मं० स्त्री० ) तूवर सञ्ज्ञायां कन टाप् अतइत् । १ आढ़की, अरहर । २ सौराष्ट्रसत्तिका, गोपोचन्दन । तूवरो ( मं० स्त्री० ) तूवर गौरा० डोष् । १ आढ़की, अरहर । २ सौराष्ट्रसत्तिका, गोपोचन्दन ।

तूष्णींशोल ( मं० त्रि० ) तूष्णीं शोलं यस्य । मौनावलम्बो, मौन, चुप । इसका नामान्तर तूष्णिक है ।

तूष्णोक ( मं० त्रि० ) तूष्णीं शोलं यस्य । शौलेको मलोपध । पा ५।३।७२ इति वार्तिकोक्त्या रुः मलोपध । मौनी, मौन साधनेवाला ।

तूष्णीका ( मं० अथ ) तूष्णीम् का । अकच प्रकरणे तूष्णीमः का वक्तव्यः । पा ५।३।७२ । इति वार्तिकोक्त्या कां । मौन, चुप ।

तूष्णीम् ( मं० अथ ) तूष् वाहुलकात् नोम् । मौन ।

तूष्णीभूद ( मं० पु० ) तूष्णीं भू घञ् । मौनावलम्बन, निस्तम्बता, सदाटा ।

तूष्णीभूत ( मं० त्रि० ) तूष्णीं भू-क्त । मौन, चुप, शांत ।

खन ( हि० पु० ) १ मूर्खी, मूना। २ हिमास्य पहाड़ पर काश्मीरसे ले कर नेपाल तक पाई जानेवाली एक पहाड़ी बस्तीका खन, पयम पयमोना। यह बस्ती पहाड़के बहुत ऊंचे ज्वाल पर पाई जाती है। यह काश्मीरसे ले कर मध्य एशियामें चलकर ईरान तक फैले ज्वालमें पाई जाती है। इरानके शरीर पर बने बने सुस-यम रोशनीको बड़ी मोटी तह होती है। इसकी मोतरो खनको काश्मीरमें पसलो उस वा पयम कहते हैं। यह दुगालेमें दिया जाता है। इससे ऊपरकी खन वा रोए-सि या तो रक्षियां बांटी जाती हैं या पर् नामका कपड़ा बुना जाता है। ३ इसकी खनका जमाबा हुआ वह बल या मजदा।

खसदान ( हि० पु० ) खारखस।

खना ( हि० पु० ) खोबर, मूसी।

खयी ( हि० वि० ) १ खसके रगका, खर खई। ( पु० ) २ खर का या स्लेटके रगकी तरहका एक रंग।

खदा ( स० स्त्री० ) तुम-बाहुनका तन् शीर्षक। १ रेश्, बून। २ कटा। ३ चाप, बनुप। ४ सुस पदार्थ, चप, कपिचा।

खदब ( स० स्त्री० ) खद माने खुद। हि सन्, जमान, खतस।

खद ( स० पु० ) खद-पच। खदप खदि।

खदाब ( स० पु० ) खद-बाबन्। खदिमेद, एक खदिका नाम।

खदि ( स० पु० ) खद-रन्। खसदखुबे सुस एक खदिका नाम।

खद ( स० स्त्री० ) खद-ब हुयो० साहू। जातीफन, काय पन।

खदा ( हि० स्त्री० ) खद देवी।

खद ( स० स्त्री० ) निरुखाबर्बा जमाहार, निरु खबो पन वा खब समानका सन्सारक। समान दिनता और समान खदखबे मीन खद।

खद ( स० स्त्री० ) खदति भरती खद-वम् वा खद-बद बकारलोपक। खदे को रकारक। ३ न श्च। नकादि, नरखट घास पादि। पर्याय—खदुन, निच पट, खेद वृषि और ताखन। खदखन खय मिषा० खद।

१ ताब। मय खदादिबो खद ईनेसे खयेय सुख होता है। खनिहादि पद नचलो में खरके लिये खद और काठ पाहरक नहीं खरना चाहिये। पाहरक खरनेसे खनि खोरमव, रोम, राजकोड़ा और बल खय होता है। ३ गन्धद्रव्यविषय, रामखपूर। पर्याय—खदख, खद, सुगन्ध सुगीतन।

खदब ( स० स्त्री० ) खद खदखबे खन्। १ खदखद, खोड़ी घास। २ खोनाक खेना खान।

खदखब ( स० पु० ) खदखिम खबोख्य। खदिमेद एक खदिका नाम।

खदखखद ( स० स्त्री० ) खदखाना ममूखः खददिलखत् काखद। खदखमूख, वासका टेर।

खदखोय ( स० वि० ) खद मखबे-ब नाकादिलखत् कुख। खदखम, जो वासके लयना हो।

खदखुदुम ( स० स्त्री० ) खद खदुत खुदुम। सुपन्ध द्रव्य-मेद, एक सुय पित वास, रोहिच वाब। पर्याय—खद खद, खद, खदखोखित, खदपुथ मन्धाखित खदिय, खदखोर, खोखित। खद-यख खदु खद, खद, वाहु, खोख, खदु, खोख और खामदोपनामक तथा परममाखर है।

खदखुटी ( स० स्त्री० ) खदखददिलखत् कुटी। खदखददित खद, खद खर जो खदके खाना रचना है। पर्याय—खदखान।

खदखुटीरक ( स० स्त्री० ) खदोखः। खदखिमित खद, पर्याय खर।

खदखुद ( स० स्त्री० ) खदखामि, वासका टेर।

खदखुम ( स० पु० ) खदखय खुम। खदतखुमो, खदेद खद, खदखीकी।

खदखेतको ( स० स्त्री० ) खदखोखन। १ खदखोर मेद एक खदोखका तोखर।

खदखेनु ( स० पु० ) खदेनु खेदुखिब। १ खदखय, खदि। २ ताखदस, ताखका पिह।

खदखेनुख ( स० पु० ) खदखेद खदोखे खन्। खद, खद। खदखेनर ( स० स्त्री० ) खदखुदुम, रोहिच खान।

खदखद ( स० पु० ) खदुद खद, खदुदका एक खदोखका खदका। २ खोदमेद, खोका।

खदखन्धा ( स० स्त्री० ) खदखन्धो खद। खदो, वासपर्याय।

दृग्गोधा (सं० स्त्री०) दृग्गस्य गोधेव सुद्रत्वात् । १ चित्र-  
क्रील, छिपकली । २ दृग्जलौका, एक प्रकारकी जोक ।

दृग्गौर (सं० की०) सुगन्ध द्रव्यभेद, एक सुगन्धित  
घास; रोहिंस घास ।

दृग्गग्रन्थि (सं० स्त्री०) दृग्गमिव ग्रन्थिर्यस्य । स्वर्ण जीवन्ती  
वृक्ष ।

दृग्गग्रही (सं० पु०) दृग्गं गृह्णाति दृग्ग-ग्रह-गणि  
मणिविशेष, एक रत्नका नाम, नीलमणि । पर्याय—शुका-  
पृष्ठ, दृग्गमणि ।

दृग्गचर (सं० पु०) दृग्गेषु चरति चर-अच् । १ गोमेद-  
मणि । (ति०) २ दृग्गचारिमात्र, दृग्ग चरनेवाला ।

दृग्गजम्बन् (सं० त्रि०) दृग्गं जम्भो भक्षं यस्य । जम्भा-  
सुहरितदृग्गसोमेभ्यः । पा० ४।१।२५ । इति निपात-  
नात् साधुः । १ दृग्गभक्षक, घास चरनेवाला । दृग्ग-  
मिव जम्भो दण्डी यस्य । २ दृग्ग तुल्य दन्तयुक्त, जिम-  
के दांत-घासके रंगसे हीं ।

दृग्गजलायुका (सं० स्त्री०) दृग्गकारा दृग्गजाता वा  
जलायुका । जलौकामेद, एक प्रकारकी जोक ।

दृग्गजलूका (सं० स्त्री०) जलौकामेद, एक प्रकारकी  
जोका ।

दृग्गजलौका (सं० पु०) जलौकाविशेष, एक प्रकारकी  
जोका ।

दृग्गजलौकान्याय (सं० पु०) दृग्गजलौकाके समान ।  
नैयायिक लोग इस वाक्यका प्रयोग तभी करते हैं, जब  
उन्हें आत्माके एक शरीर छोड़ कर दूसरे शरीरमें जाने  
का दृष्टान्त देना होता है । जिस प्रकार जोका जल-  
में वहते हुए तिनकेके अग्रभाग तक पहुँच कर जब  
दूसरा तिनका पकड़ लेती है तब पकड़लेकी छोड़ देती है,  
उसी प्रकार आत्मा जब दूसरे शरीरमें जाती है तब पकड़-  
की परिव्याग कर देती है ।

दृग्गजाति (सं० स्त्री०) दृग्गमेव जातिः । उलपादि  
खड्ग ।

दृग्गजीवन (सं० त्रि०) दृग्गेन जीवति जीवन-ल्युट् ।  
जो प्राणी घास खाकर जीवन धारण करते है ।

दृग्गज्योतिष (सं० स्त्री०) दृग्गेषु मध्ये ज्योति-  
ष्यभूतः । तिष्ठती लता ।

दृग्गता (सं० स्त्री०) दृग्गमिव तायने ताय-क्तिप् । १ धनुं  
चाप, क्रमान । २ दृग्गत्व दृग्गका भाव ।

दृग्गदुङ्ग (सं० पु०) वडव म्नि ।

दृग्गद्रुम (सं० पु०) दृग्गमिव रुमः असारत्वात् । १  
नारिकेल, नारियत । २ ताल, ताड़का पेड़ । ३ गुवाक,  
सुपांग । ४ तालो, एक प्रकारका छोटा ताड़ । ५ केतकी ।  
६ खजूर, खजूरका पेड़ । ७ हिन्यान । इसके निर्यासके  
गुण यह शोथल, लघु, मोहन, वज्रकारक, हृद्य, दृग्गा  
श्रीर सन्तापनाशक है ।

दृग्गधान्य (सं० स्त्री०) दृग्गवहलं धान्यं । १ धान्य-  
विशेष, तिन्नोका धान । २ तिन्नोका चावल । ३ सार्वा ।

दृग्गध्वज (सं० पु०) १ ध्वज, वाँस । २ तालवृक्ष, ताड़का  
पेड़ ।

दृग्गनिम्ब (सं० पु०) दृग्गाकारः निम्बः । नेपालनिम्ब,  
चिरायता ।

दृग्गप (सं० पु०) दृग्गं पाति पा-क । गन्धर्वभेद, एक  
गन्धर्वका नाम ।

दृग्गपञ्चमूल (सं० स्त्री०) दृग्गरूपाणां पञ्चाणां मूलं । पञ्चाङ्ग-  
विगिट पाचन । कुश, काश, शर, दम्भे, इक्षु ये पाँच  
दृग्गपञ्चमूल है । शालि, इक्षु, कुश, शर और काश ये  
भी पाँच दृग्गपञ्चक है । इनके मूलके गुण—यह दृग्गा,  
दाह, पित्त, अस्वक् और मृदनाशक है ।

दृग्गपति (सं० पु०) राजघास, काला कर्पूर ।

दृग्गपत्रिका (सं० स्त्री०) दृग्गस्यैव पत्रमस्त्यस्याः उन्-  
टाप् । इक्षुदर्मदृग्ग, एक प्रकारकी घास ।

दृग्गपत्रो (सं० स्त्री०) दृग्गमिव पत्रमस्याः ङोप ।  
दृग्गपत्रिका, एक प्रकारकी घास ।

दृग्गपटो (सं० स्त्री०) दृग्गस्यैव पादोऽस्याः भ्रन्त्यलोपः  
ङोपि पञ्चावः । दृग्गतुल्य मूलयुक्त लता, वह लता  
जिसको जड़ घासकी जैसी होती है ।

दृग्गपाणि (सं० पु०) ऋषिभेद, एक ऋषिका नाम ।

दृग्गपोड (सं० स्त्री०) दृग्गस्यैव पोडा यत्र । शुभभेद,  
एक प्रकारकी लताई ।

दृग्गपुष्प (सं० स्त्री०) दृग्गस्य पुष्पमिव । १ दृग्ग कुङ्कुमः,  
दृग्गं शर । २ अन्त्यपर्णी, गठिवन ।

दृग्गपुष्पिका (सं० स्त्री०) सिन्दूरपुष्पी-नामक घास ।



तृणस्कन्द ( सं० पु० ) तृणमिव स्कन्दति स्कन्द-अच् ।

तृणवत् चञ्चल स्वभावयुक्त, जिमका स्वभाव तृणसा चंचल ही ।

तृणस्पर्शपरिपह ( सं० पु० ) जैनधर्मानुसार मुनियोंके लिए आवश्यक पालनोप वाईस परिपहोंमेंसे एक मार्ग चलते समय कांटे या काँच आदिसे चरण विद्ध होने पर भो मुनिगण उस क्लेशकी वीतराग भावसे सहन करते हैं, उसे दूर करनेका कोई प्रयत्न नहीं करते । इसीका नाम तृणस्पर्श परिपह है ।

तृणहर्म्य ( सं० पु० क्लो० ) तृणाच्छादितो हर्म्यः । तृण-युक्त भट्टालिका, वह भट्टारी जिसके ऊपर खड़का घर बना हुआ है ।

तृणाक्षिप ( सं० पु० ) तृणरूपः अड क्षिपः । मन्यानक तृण, एक प्रकारकी घास ।

तृणाग्नि ( सं० पु० ) तृणजातः । अग्निः । तार्ण । अग्नि, घास फूसकी आग; कसौकी आँच ।

तृणाञ्जन ( सं० पु० ) तृणमिव अञ्जनः । ककलास, गिर-गिट ।

तृणाटवो ( सं० स्त्री० ) तृणप्रसुरा अटवो । तृणमय वन

तृणाब्ज ( सं० क्लो० ) तृणेषु आढ्य । पर्वतजात तृण, वह घास जो पहाड़ पर उगो है ।

तृणादि ( सं० पु० ) तृणकी आदिमें रख कर सप्रत्यय निमित्त पाणिनि-उक्त गण विशेष । तृण, नड़, मूल, वन, यण, वर्ण, विल, मूल, फल, अर्लुन, अर्ण, सुपर्ण, वन, चरण, वसु ये तृणादि हैं । ( पाणिनि )

तृणान्न ( सं० क्लो० ) तृणस्य तृण घान्यस्य अन्नं । तन्त्रि चावलका भात ।

तृणासन्न ( सं० क्लो० ) त्रिमसं, तृणवल्ली तीर्थं ।

तृणास्र ( सं० क्लो० ) तृणेषु अस्त्रःसवण तृण, नोनिया, अम स्त्रीनो ।

तृणारणिन्याय ( सं० पु० ) न्यायमेदं, श्रीर तृण अरणा रूप सतन्त्र कारणाके समान व्यवस्था । यों ती अन्निक पैदा होनेमें तृण और अरणा दोनों कारण हैं पर परस्पर निरपेक्ष अर्थात् अलग अलग कारण हैं । अरणिसे अग्नि उत्पन्न होनेका कारण दूसरा है और तृणमें अग्नि लगानेका कारण दूसरा ।

तृणावत् ( सं० पु० ) तृण आवत् यति भ्रमयति-मा-वृत्-णाच्-भ्रण । १ घाल्यारूप वातमसृह, धूण वायु, बवंडर ।

२ कंशराजके एक दैत्यका नाम । एक दिन कंसने इसे योक्ष्णको मारनेके लिये गोकुल भेजा था । चक्रवात ( बवंडर ) का रूप धारण कर इसने गोकुलमें दमकल मचा दिया । धूलसे सबको आँखें बन्द हो गईं तथा इसके घोर गर्जनसे सब टिगार गूँज उठीं थे । यह असुर वालक क्ष्णको कुछ ऊपर भो ले गया था । वहाँ योक्ष्ण इतने भारो हो गये कि भूरिभार सहन करना उसके लिये दुःसाध्य हो गया । धीरे धीरे वायुवेग घटने लगा । इससे उस दैत्यको योक्ष्ण और भो पर्वतके समान मानूम पड़ने लगे । योक्ष्ण उसका गला पकड़े हुए थे । इस कारण वह उर्ध्वे झोड़ भो नहीं सकता था । अधिक समय तक गला पकड़े रहनेके कारण वह चेष्टाशून्य हो गया और उसकी दोनों आँखें बाहर निकल आईं । पोछे वह अथवा शब्द करता हुआ गतासु हो कर योक्ष्णको साथ लिये व्रजमें गिरा । आकाशसे गिला पर गिरनेके कारण तृणावर्तकी हड्डी चूर चूर हो गई और वहीं पञ्जातकी प्राज्ञ हुआ ।

( भाग० १०।७ अ० )

तृणावस्रोतोर्थ ( सं० क्लो० ) तोर्थविशेष, तृणामल तोर्थं ।

तृणासृज ( सं० क्लो० ) तृणेषु असृगिव रक्तत्वात् । तृण-कुडम, रोडिस घास

तृणाधा ( सं० स्त्री० ) तृणविशेष, एक प्रकारकी घास ।

तृणेषु ( सं० पु० ) तृणमिक्षुरिव मसुररसत्वात् । वल्लभा, सागिवागी ।

तृणेन्द्र ( सं० पु० ) तृणा इन्द्रश्च । तृणराज, ताड़का पैड़ ।

तृणीत्तम ( सं० पु० ) तृणेषु उत्तमः । उखवल तृण, जखल घास ।

तृणोत्थ ( सं० क्लो० ) तृणकुडुम, रोडिस घास ।

तृणोद्भव ( सं० पु० ) तृणेषु उद्भवति उद भू-अच् । १ नोवार धान्यमेद, तीनो धान, पस ही । २ तृणजात अग्नि, घास फूसकी आग । ( त्रि० ) ३ तृणजात मात, जो केवल घाससे उत्पन्न हुआ है ।

तृणोत्प ( सं० क्लो० ) उत्पन्न तृण, एक प्रकारकी घास ।

तृणोत्का ( सं० स्त्री० ) तृणजाता उत्का । तृणजा उत्का, घास फूसकी मशाल ।



तृपल (सं० त्रि०) तृप्यति-तृप-कलः । कल्पतृपच । वण्  
 १।१०६ । क्षिप्र, तेज, चञ्चल ।  
 तृपना (सं० स्त्री०) तृपन-टाप् । १ लता । २ विफला ।  
 तृपलप्रभर्मन् (सं० त्रि०) १ प्रस्तरादि द्वारा प्रहारकारक,  
 जो पत्थर आदिसे चोट करना हो । २ क्षिप्र प्रहारकारक,  
 जो बहुत तेजीसे मारता हो ।  
 तृपाना (सं० स्त्री०) तृप-कानच् । लता ।  
 तृप (सं० त्रि०) तृप-क । १ तृपियुक्त, तुष्ट, अवाया  
 हुआ, जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो । २ प्रसन्न, खुश ।  
 तृषा (सं० स्त्री०) तृष-टाप् । गायत्रीमैद, एक प्रकारकी  
 गायत्री ।  
 तृषा (सं० स्त्री०) तृष-टाप् । गायत्रीमैद, एक प्रकार-  
 को गायत्री ।  
 तृषाण (सं० त्रि०) तृषः अंशुर्ग्यस्य । तर्पितावयव,  
 जिसका शरीर तृष हो गया हो ।  
 तृषि (सं० स्त्री०) तृष-क्लिन् । भजणादि द्वारा भाकांक्षा  
 निवृत्ति, इच्छा पूरी होनेसे प्राप्त शान्ति और आनन्द,  
 संतोष । इसके पर्याय—सौहित्य, तर्पण, प्रोषण और  
 असितम्भव हैं ।  
 तृषिकर (सं० त्रि०) तृषिं करोति क्ल-ट । प्रीतिप्रद,  
 आश्वादनकर, खुश करनेवाला ।  
 तृषिदा (सं० स्त्री०) तृषिं ददाति टा-क-टाप् । गायत्री-  
 मैद, एक प्रकारको गायत्री । तृषा देखो ।  
 तृषिन् (सं० त्रि०) तृषोःस्त्वस्य तृष षिनि, सुष्वादिभ्यश्च  
 पा ५।१।११ । तृषियुक्त, प्रसन्न, खुश ।  
 तृषिमत् (सं० त्रि०) तृषिः विच्यते अस्य तृषि-मत्तुप् ।  
 १ तृषियुक्त, आश्वादिविशिष्ट । ( स्त्री० ) २ उदक, जल ।  
 तृप् (सं० त्रि०) तृप-क्तु । तृषिशील, खुश रहनेवाला ।  
 तृप् (सं० पुं०) तृप्यन्तेन तृप-रक् । स्थापितबोधि । उण्  
 २।१३ । १ छत, घों । २ पुरोडास । ( स्त्री० ) ३ दुःख,  
 तकलीफ । ( त्रि० ) ४ तर्पक, तृप् करनेवाला ।  
 तृप्तालु (सं० त्रि०) तृप् दुःखं न सङ्घने प्रसङ्घने तृप्तालु ।  
 दुःखासहन, जो दुःख सङ्घ न कर सकता हो ।  
 तृफना (सं० स्त्री०) तृफ्यति षोड्यति तृफ्-कलच् टाप् ।  
 विफला, हड, बहेड़ा आंवला ।  
 तृफू (सं० स्त्री०) तृफति षोड्यति तृफ-ज । सर्प जाति,  
 एक प्रकारका सांप ।

तृफ्काटि (सं० पुं०) धातुगणविशेष । तृफ्क, तुन्फ,  
 टन्फ, षन्फ, गुन्फ, उन्फ, शन्फ ये सब धातु तृफ्काटि  
 हैं ।

तृप् (सं० स्त्री०) तृप्-क्लिप् । तृपा देखो ।

तृपा (सं० स्त्री०) तृप-टाप् । १ भाकांक्षा, इच्छा, अभि-  
 लाषा । पर्याय—इच्छा, स्पृहा, ईहा, तृष्, वाञ्छा,  
 निष्ठा, मनोरथ । २ पिपासा, प्यास । ३ कामकथा,  
 कामदेवको लड़को । ४ नाइलो हल, कलिहारो ।  
 ५ लोभ, लालच ।

तृपाभू (सं० स्त्री०) तृपायाः भूरुत्पत्तिस्थानं । क्लोम,  
 पेटमें जल रहनेका स्थान ।

तृपालु (सं० त्रि०) पिपासित, प्यासा ।

तृपावान् (सं० त्रि०) पिपासित, प्यासा ।

तृपास्थान (सं० पुं०) क्लोम, पेटमें जल रहनेका स्थान ।

तृपाह (सं० स्त्री०) तृपा इत्सि हन्-ड । १ जल, पानो ।  
 २ मधुटिका, एक प्रकारको सौंफ ।

तृपित (सं० त्रि०) तृपा जाता अस्य तारकादित्वादितच् ।  
 १ तृषान्वित, प्यासा । २ तुम्ब, लोभो, लालचो ।  
 ३ इच्छुक, अभिलाषो ।

तृपितोत्तरा (सं० स्त्री०) तृपित उत्तरो यस्याः । अमन-  
 पर्षोर्विच, पटसन ।

तृपु (सं० स्त्री०) तृ-सृक् एपोदरादित्वात् साधुः । १ क्षिप्रता,  
 तेजो, शोभता । ( त्रि० ) २ क्षिप्रतायुक्त, तेज ।

तृपुच्यवस् (सं० त्रि०) तृपु च्यवः यस्व । क्षिप्रगमनयुक्त,  
 बहुत तेज चलनेवाला ।

तृपुच्यत् (सं० त्रि०) तृपु-च्युत्-क्लिप् । क्षिप्रगमनशील,  
 जो तेजीसे चलता है, जिसकी गति बहुत तेज हो ।

तृष्ट (सं० त्रि०) तृष्-क वेदे बाहुलकात् इहभावः । १  
 दाहजनक । २ तृपित, प्यासा ।

तृष्टामा (सं० स्त्री०) तृष्टं दाहं अमयति गमवति अम-  
 षिच्-अच् । नदी, दरया ।

तृष्यत् (सं० त्रि०) तृष्यति भाकांक्षति तृष नञिङ् ।  
 १ तुम्ब, लोभो । २ तृपित, प्यासा ।

तृष्या (सं० स्त्री०) तृप न, सच कित् । १ पिपासा, प्यास ।  
 पर्याय—उदन्धा, तृप्, तर्प, तृषा, तर्पण । ( णट्प्रभ )  
 २ लिप्सा, लोभ, लालच । ३ अमात्र अभिलाष । ४ रोम-

सिद्ध, एक बीमारी । इसका विषय सुश्रुतमें इस प्रकार लिखा है—

अस्थ्याग्नेः क्षति न हो कर यदि फिर फिर जनको पाषाणां बनो रङ्गे तो र्वे उष्णा कहते हैं । पच स चोम, मोह, अम, मद्यगन्, एव चक शुक्ल तप्य पौर बट भ्रूय मोहन; धनुष्यत, कङ्कन तथा ताप इन सबोंके द्वारा पित्त पौर वायुकी उद्वि हो कर अनाय वातुवाहो ममो स्त्रीतोको दूषित करतो है । इन सब स्त्रीतोको राह दूषित हो जानिसे पञ्चम उष्णा उत्पन्न होतो है । इसको उत्पात्तिसे घात भेद है—वायुसे, पित्तसे श्लेष्मि, चतुसे चरुसे ( कानुचय ), धामसे तथा कटु, तिक्त प्रादि मोहन करनेसे ।

ताप, पोष्ट कष्ट एवं सुखाका लक्षणा, दाह, सन्नाय, मोह अम, बिनाय पौर मन्नाय ये सब उष्णासे पूर्व-लक्षण हैं । विशेषतः वायुसे उत्पन्न उष्णामें सुखमीन; ग्रहदेय ( कपासकम् ), गिरीदेय तथा गणदेगमें पोड़ा स्तोतयवका चक्रोच, सुखाका वैश्व्य पौर वीतन अन्वयी इच्छा होतो है । सूच्छा मन्नाय, चरुचि, सुखमीय पोत निद्र, पञ्चला दाह शीतामिन्नाय, सुखको तिक्तता पौर कष्टसे सुमोहम है सब पित्तसे उत्पन्न उष्णासे लक्षण हैं । अमरान्मके कष द्वारा लङ्गत हो जाने पर लघुको वायु चक जाती है जिससे लक्षणाहो स्तोतयव दूषित हो कर शुष्क उष्णा उत्पन्न करता है ।

निद्र, देहकी शुद्धता सुखको मधुरता शोतन्धर, वसन, पश्चि से सब कषसे उत्पन्न उष्णासे लक्षण है । शोचितके कारण पोड़ा वा शोचितके निरनेसे उष्णासे सब लक्षण पाते जाने पर भी पश्चि कषको पाषाणां नहीं रहते । इसको रङ्गसे उत्पन्न उष्णा कहते हैं । रस प्रादि शत्रु चय होनेसे जो उष्णा पैदा होतो है, दिनरात बार बार लक्ष वेीन पर मो लक्षको शक्ति नहीं होतो । र्वे कोई कोई शान्तिपातिल उष्णा कहते हैं । धामक उष्णामें त्रिदोषके लमी लक्षण दोष पड़ते हैं । इनके निवा इपुम्न, निष्कोचन पौर शरारमें भवनाद प्रादि लक्षण मो उत्पन्न होते हैं । पतिमय खेड, पक्ष वा लघुच पात्रका शुष्कता चक जानिसे मो उष्णा पैदा होतो है, र्वे शोचनेसे उत्पन्न उष्णा कहते हैं । तच्चाते मनुष्य यदि

शौच, मानसिक क्रियाहोन पौर बहिर हो तथा उत्पन्नो लोम निश्चल नई हो, तो रोमको पसाच समझना चाहिये । (इभ्युव इतत्पन्न ४६ व०) साधनकार्यमें इसका विषय इस प्रकार लिखा है—

मप, परिव्रम, नम चय तथा पित्तमहीच दू ३ जानिसे पित्त पौर वायु दूषित हो कर अघरको पौर चसा जाता है पौर तासुमें पूर्व चर पिपासा उत्पन्न करता है । पच, कष, धामरुसे दूषित रोम अक्षमाहो स्त्रीतोको दूषित कर उष्णा उत्पन्न करता है । उष्णासे मात भेद है—वातत्र, पित्तत्र कषत्र, चतत्र चयस धामत्र, पौर पचत्र । सुश्रुतके 'बहिष्करकीट' ; र्वसे बहु-कषमका क्षान होनेसे कारण चरुके मत्तानुसार जिहा, हृदय, गणदेय पौर छोम ( सूत्राधार )को बोध होता है पश्चात् उष्णा होनेसे समय होय र्वीं पच जानिसे रहता है ।

उष्णाका सामान्य लक्षण—उष्णसे उत्पन्न होने पर शोमे ताप, पोष्ट, कष्ट पौर सुखमें शिदना तथा कषन पैदा होती है; एवं सन्नाय, मोह अम पौर मन्नाय भी होता है ।

वातत्र उष्णाका लक्षण—वातसे उत्पन्न उष्णारोममें सुखमें मस्तिता पौर विरसता, ग्रह ( कपासक ) पौर मष्टकमें शिदना होतो एवं रस पौर चम्बुवादिचमपी बन्द हो जातो है ।

पित्तत्रका लक्षण—पित्त उष्णारोममें सुखमें, पचसे पश्चि, मन्नाय दाह, रक्षाच पञ्चम सुखमीय, शोतल शिदनामिन्नाय, सुखको तिक्तता पौर रुपां निश्चलनेके भेसा मास म पड़ता है ।

कषत्रका लक्षण—कषसे उत्पन्न उष्णारोममें पापसे पाप दूषित कष अट्टगन्धिका पाषाणादन करता तथा पचक उष्णाको रोह देता है । कष चक्रक तथा लन वाहो स्तोतको पोच कर कष-कष, उष्णा उत्पादन करती है । इस रोममें निहाविच देहमें शुक्ल सुखमें मधुरता पौर उष्णापोहित शक्ति कञ्चना क्षय हो जाता है ।

चतत्रका लक्षण—यज्ञादि द्वारा चत मनुष्यको शो शिदना तथा रस निःसरणके कारण उष्णा उत्पन्न होती है, अथको चतत्र उष्णा कहते हैं ।



क्षयजका लक्षण—रसक्षयप्रयुक्त जो दृष्या उत्पन्न होती है, उसे क्षयज दृष्या कहते हैं। क्षयज दृष्यारोगमें रोगी दिनरात सभो समय जब पी कर भो दृमिलाभ नहीं कर सकता तथा रसक्षयके सभी लक्षण दिखनाइ देते हैं। कोई कोई इसे साक्षिपातिक दृष्या भी कहते हैं।

रसक्षयका लक्षण—रसक्षय होने पर हृदयमें वेदना, कम्प, मुखशोष, हृदयमें शूल, शोष और शून्यता होती है।

श्रामजका लक्षण—श्रामज दृष्या साक्षिपातिक दृष्याकी भाँई लक्षणयुक्त होती है। इसमें हृदयमें वेदना, निष्ठोषन और शरीरमें भ्रवसत्रता होती है।

भ्रजजका लक्षण—हिनगंधद्रव्य, अन्न, लवण और कट, रसयुक्त द्रव्य तथा गुरुद्रव्य सेवन करनेसे शोष ही दृष्या उत्पन्न होती है। इस दृष्याकी भ्रजज दृष्या कहते हैं।

उपसर्ग दृष्याका लक्षण—जिस दृष्यामें रोगीका स्वर क्षोण हो जाता है, मूर्च्छा और क्लान्ति भानि लगती है तथा मुखशोष, हृदय-शोष और तालुशोष हो जाता है उस घातु-शोषणकारी दृष्याकी कष्टसाध्य समझना चाहिये।

दृष्यारोगका उपसर्ग और अरिष्ट—ज्वर, मोह, क्षय, कास और श्वासादियुक्त अत्यन्त मुखशोषादि कठिन उपद्रव्ययुक्त रोगीसे कृग और वमिवेगसे कातर वे सब लक्षण रोगीको मृत्युके कारण हैं।

दृष्याकी चिकित्सा—वातज दृष्यारोगमें वायुनाशक अथवा कोमल, लघु और शीतल द्रव्योंसे चिकित्सा करानो चाहिये। वातज दृष्यारोगमें गुड़मिश्रित दही खाना प्रशस्त है। पित्तज दृष्यारोगमें मधुर और तिक्तप्रयुक्त द्रव्य तथा तरल और शीतल द्रव्य हितकर है। मोया, पित्तपापड़, वाला, धनियाँ, खसकी जड़ और श्वेतचन्दन जमीके मिश्रित परिमाण दो तोलेकी दो सेर पानोमें उवानते हैं। जब पानी जल कर एक सेर बचता है, तो उसे उतार लेते हैं। ठण्डा करके सेवन करनेसे पिपासा दाह और ज्वर घट जाता है। ८ तोले लाईका चूर्ण-की ३८ तोले उषण जलमें डाल कर एक रात रख छोड़ते हैं। दूसरे दिन उसमें मधु ४ भागा, गुड़ ४ भागा, गान्धारोफलचूर्ण ४ भागा और चीनी ४ भागा मिला कर सेवन करनेसे पैत्तिक दृष्या जाती रहती है।

घ्राट्ट वस्त्रोंकी शय्या पर सोनेसे तथा उनसे शरीर टकनेसे दृष्या और उग्र दाह दूर हो जाता है। द्राक्षा, इक्षुरस, दुग्ध, यष्टिमधु, मधु और नौलोत्पल इन सब द्रव्योंको पीस कर जलके साथ उसे नाक द्वारा पीनेसे कठिनसे कठिन दृष्या नष्ट हो जाती है।

अनार, सेव, लोध, कैथ और खट्टा ( नीवू ) इन सब-को एक साथ पीस कर मस्तक पर लेप देनेसे दृष्या जाती रहती है।

ठण्डा जल भर पेट पी कर पान और अल्प मधु खा कर वमन करनेसे दृष्या प्रशमित हो जाती है। धनिये-के काढ़ेकी चीनोके साथ प्रति दिन सवेरे पीनेसे दृष्या और दाह जाता रहता है। अँवला, पद्ममूल, कुट, लाधा, बटरीहक इन सबको चूर्ण कर मधुके साथ गोली बनाते हैं। वाट उस गोलीको सुबसे रखनेसे प्यास और दारुण मुखशोष नष्ट हो जाता है। क्षयज दृष्यामें बरा बरा भाग जलमिश्रित दूध वा मांस रस अथवा अमम परिमाणका मधुमिश्रित जल हितकर है। श्रामज दृष्यामें विरल और वचका काय सेवन करना चाहिए। अधिक खाने पर यदि दृष्या उपस्थित हो जाय तो वमि करनेसे इसका प्रतिकार होता है। इस प्रक्रिया द्वारा क्षयज दृष्याके सिवा अन्य प्रकारके दृष्यारोग भी अच्छे हो जाते हैं।

मूर्च्छा, वमि, अनाह, रक्त पित्त और मदात्यय रोगी-को एवं रमण और मथाकर्षित व्यक्तिको शीतल जल पिलाना चाहिए। हितकर अन्न और शोषधद्वारा दृषित व्यक्तिको दृष्या दूर करना कर्त्तव्य है, क्योंकि दृष्याकी शान्ति होनेके बाद अन्य रोगकी चिकित्सा की जा सकती है। दृष्यातुर मनुष्यको यदि जल न मिले तो वह उल्काट व्याधियुक्त वा मरणापन्न हो जाता है। दृष्यासे मोह और मोहसे जीवननाश होता है, इसी कारण हर हालतमें जल देना उचित है। भोजन न करनेसे भी जीवन धारण हो सकता है, किन्तु दृष्यातुर मनुष्यको जल न मिले तो शोष ही उसको मृत्यु ही जाता है।

( भावप्र० दृष्याधिकार )

दृष्याक्षय ( सं० पु० ) दृष्यायाः क्षयो यत्र । १ शान्ति । दृष्याके नहीं रहने पर आत्मी सुखी रहता है । दृष्यायाः

संघ ३-तत् । २ पिपासाशय, व्यासका दूर होना ।  
 व्यास (स० त्रि०) व्यास इति व्यास-इन्द्र-इन्द्र । १ कल,  
 पानी । २ व्यासानामक, जिससे व्यास जातो रहतो हो ।  
 व्यास (स० पु०) व्यासा मृत ३ तत् । पिपासाशय,  
 पिपासाकातर, वह जो व्याससे छटपटता हो ।  
 व्यास (स० पु०) व्यासाय परि ३-तत् । १ पर्यट,  
 पित्तपापडा । (त्रि०) २ व्यासानामक, व्यास दूर करनी  
 बांछा ।  
 व्यास (स० पु०) व्यासायाः भासुत् ३-तत् । पिपासा-  
 युक्त वह जिसे व्यास लगे हो ।  
 व्यास (स० त्रि०) व्यासा भस्मार्थे भासु । १ द्यवित  
 व्यासा । २ लुब्ध, लालची, सोतो ।  
 वे (स० पञ्च०) १ लया, गुमथे ।  
 वेरस (त्रि० वि०) वेरस देको ।  
 वेरसर्वा (त्रि० वि०) वेरसर्वा देकी ।  
 वेरस (त्रि० वि०) १ जो बीमसे तोन पबिह हो । (पु०)  
 २ वह स क्या जो बीम और तोनत योवने बनो हो ।  
 वेरसर्वा (त्रि० वि०) जो क्रमसे वेरसर्वा ज्ञान पर  
 पढ़ता हो ।  
 वेरसा (त्रि० पु०) वह कबकी जो वेरसाकुमें पढ़के  
 मोचे सनो रहतो है ।  
 वेरसासि (त्रि० पु०) वेरसासि देको ।  
 वेरसासिर्वा (त्रि० वि०) वेरसासिर्वा देको ।  
 वेरसासो (त्रि० वि०) १ जो विगतोमें वेरसासिसे एक  
 पबिह हो । (पु०) २ वह स क्या जो वेरसासिसे तोन  
 पबिह हो ।  
 वेरसासोसर्वा (त्रि० वि०) जो क्रमसे वेरसासिसे ज्ञान पर  
 पढ़ता हो ।  
 वेरसासि (त्रि० वि०) वेरसासि देकी ।  
 वेरसासिर्वा (त्रि० वि०) वेरसासिर्वा देको ।  
 वेरसासो (त्रि० वि०) १ जो विगतोमें तोपसे ज्यादा होई ।  
 (पु०) २ वह स क्या जो तोस और तोनसे योवने बनो  
 हो ।  
 वेरसासो (त्रि० वि०) जो क्रमसे वेरसासिसे ज्ञान पर  
 पढ़ता हो ।  
 वेरसासि (त्रि० पु०) वेरसासि और वेरसासिसे जनी कबकीमें

मिक्केबाका एक दि'सक पढ़ । यह बिहो या चोरे  
 को जातिखा होता है । वह चोर मवहरतामें एक मेर  
 चोर चोरेसे कम नहीं है । बिन्तु यह चोरेसे छोटा  
 होता और चोरेको तरह हमकी मरदन पर भी चवास  
 नहीं होती । यह चार पांच फुट लम्बा होता है । इस  
 के शरीरका रङ्ग कुछ दोसापन लिए भूरा होता है । इस  
 जातिसे कुछ ज्ञानवर काबि २ मर्षी भी होते हैं ।  
 तेरु (त्रि० पु०) मारतमप, बड़ा बरंसा और पूर्व-  
 बड़ासके पहाड़ों और कङ्करीमें होनेवाला एक प्रकारका  
 वृक्ष । पुराना ज़ोमि पर इससे शोरकी लकड़ो  
 बिन्तुस कासो हो जातो है जो बाजारमें पावबूके  
 नामसे बिकतो है । इससे पर्त मन्तोतर, मोचदार,  
 चुरदुर और महुके पत्तो की तरहके पर छंथे मुकोसे  
 होते हैं । इसका बिलका काका होता और जलानेसे  
 चिड़चिड़ाता है । २ इसी पिकुका पत्र । यह मीरुको  
 तरहका बड़े रज्जा होता है । जब यह पत्र पत्रता है,  
 तब इसका रंग पीला हो जाता और जलानेसे जलमें जाता  
 है । इससे कबि पत्रसे शुच-खिन्ध, कबेला, इकवा,  
 मसरोबक, मोतक, पबचि और वातोलेपककारण ।  
 पर्त पत्रसे शुच-भापो, महर, कफकारी और पिर,  
 रकरोम तथा वातनायक । ३ एक प्रकारका तरबूक  
 जो बिच और पजारमें पाया जाता है ।  
 तेग (प० शो०) कष्ट, तलवार ।  
 तेवहादुर (सैवहादुर)—बिच-कन्दायसे ठई शुच, इठि  
 शुच हरगोबिन्दके पुत्र । हरगोबिन्दके तोन बिलोके पांच  
 पुत्र थे, जिनमें रामोहरीके गभके ज्येष्ठपुत्र सुवदन हुए  
 थे और नामको गभसे तेवहादुर । पिताको जोवित  
 पबजामे जो सुवदनकी पत्न हो गई; परन्तु उनसे पुत्र  
 हरदाय पर हरगोबिन्दका बड़ा बँह था । इहाँ हर-  
 दायको हरगोबिन्द अपनी मरी दे गये । इस पर नामकोमें  
 पतिसे जामने पपना दुःख प्रकट किया । मरते समय हर  
 गोबिन्द नामकोसे कह गये कि "भविष्यमें तेवहादुर  
 को दो मरी मिलेगा । तुम मरे इस कबक (तामोस)  
 को रक दो । जब तेम शुच होगा, तब उसे देगा"  
 शुच हरदायके भी दो पुत्र थे—रामदाय और हर  
 बिन्दन । हरदायके बाद हरबिन्दन भी कम उमरमें शुच को

गये। इनको चंचककी बीमारोसे मीत हो गई। मरते समय वे अपने शिष्योंसे कह गये कि 'जाओ, तुम्हारे गुरु विपागानदीके किनारे बकाला ग्राममें हैं।'

तैगवहादुर बहुत दिनों तक पटनेमें थे, उसके बाद नाना स्थानोंमें घूमते हुए गोविन्दबालके पास बकाला ग्राममें पहुँचे और वहीं रहने लगे। हरकिसनको श्रुतिके बाद उनके अनुगत शिष्योंने तैगवहादुरको अपना गुरु बना लिया। किन्तु मोक्षियोंने हरकिसनके भ्राता रामरायको गुरु बनानेका निश्चय कर लिया था। उनके प्रयत्नसे रामराय टिकीमें गुरुपद पर अभिषिक्त हुए। उस समय हरगोविन्दके एक प्रधान शिष्य मकवनगाह टिकीमें ही थे, इनका मित्र-मन्मदाय पर अच्छा प्रभाव था। अब मकवनगाह भी गुरुवास्यको सुपिड करनेकी इच्छामें बकाला पहुँचे और तैगवहादुरको गुरु मान कर उन्हें नजराना भेंट किया। परन्तु तैगवहादुरने उसे ग्रहण नहीं किया, कहा—'मुझे क्या देते हैं ? जो राजा है उन्हें नजराना देजिए।' अन्तमें माता और मकवनगाहकी कोशिशसे तैगवहादुर गहो पर बैठे। माताने उन्हें ब्रह्म कवच और हरगोविन्दकी तलवार ला कर दी। तैगवहादुरने कहा—'इनको लेने लायक मैं नहीं हूँ। आप लोग मुझे तैगवहादुर ( महायोगी ) समझते हैं, मगर मेरा नाम है देव-वहादुर ( अर्थात् पाकस्थलका रक्षक )।'

तैगवहादुरके अन्तिम वाक्य पर तमाम मित्र समाज उन्हें शक्तिकी दृष्टिमें देखने लगे और उन्हेंकी सिध्द-धर्मका रक्षक मानने लगे। थोड़े ही दिनोंमें उनके सैकड़ों शिष्य बन गये। अब तैगवहादुर पितासे भी अधिक प्रसिद्ध हो गये।

पहले इन्होंने मोक्षियोंके लच्छेदका विचार किया था, किन्तु मकवनगाहके कहनेसे शान्त हो गये। अब वे महा आह्वारसे समय बिताने लगे। हजारों बुढ़सवार इनको आज्ञा पाननेके लिए मगध तैयार रहते थे। शिष्योंके उपहारोंमें इनके पास यथेष्ट धन भी संचित हो गया था, जिससे कर्तारपुरमें इन्होंने एक सुदृढ़ दुर्ग बनवाया। वहाँ इनकी धर्मसभा संस्थापित हुई। रामराय अब तक कोई बहाना ढूँढ़ रहे थे, उन्होंने मौका जान दिल्लीखर और हजिवको खबर दी कि

'तैगवहादुरने आपसे साथ गवतुना करनेके लिए दुर्ग बनवाया है, गोत्र हो उनका दमन करना चाहिये।' दिल्लीके दरबारमें तैगवहादुरको एकदल लानेके लिए परवाना निकला। तैगवहादुर अपने परिवार-सहित टिकी पहुँचे और वज्र जयपुरराजके प्रासादमें ठहरे। जयपुरराजने उनकी तरफमें वादशाहकी खबर दी, कि 'तैगवहादुर एक शान्त एवं शिष्ट फकीर हैं, उद्यत पाना या राज्यका पनिष्ट करना उनका उद्देश्य नहीं है। नाजा तोश्रोंमें भ्रमण करना ही उनका उद्देश्य है।' कुछ भौं हो, इस बार जयपुरराजके प्रयत्नसे तैगवहादुर जान जान बच गये। फिर वे जयपुरके राजाके साथ बहानामें चले गये। थोड़े ही दिनोंमें ही परिवार-सहित रहने लगे। यहाँ इनको पयो गुजगेने भावी मित्र-गुरु प्रसिद्ध गोविन्दसिंहका प्रसन्न किया। पटनामें तैगवहादुर करीब पांच-छ वर्ष थे, उनका अधिकांश समय पूजा और ध्यानमें व्यतीत होता था। यहाँ उन्होंने मित्रोंको धर्ममार्ति मित्रानेके लिए एक विश्वामय स्थापित किया।

अनन्तर ये अपने देश लौट आये। फर्रुख-राज देको-साधयमें, ५०० रु० दे कर, इन्होंने पानन्दपुरमें थोड़ोमा जमीन खरोदी, जिसमें मखेरवास नामक नगर बसाया। अब भी यह नगर मौजूद है, मित्र लोग उसे पवित्र मानते हैं।

बहानामें एक उदासोनेसे इन्होंने कुछ उपदेश ग्रहण किया था। उस उपदेशके प्रभावसे ये पञ्चाश पदुँघते ही एक डकैत बन गये। हाँसो और शतद्रु, नदीके मध्यवर्ती समस्त भूभाग इनके उपद्रवोंसे तंग हो गया। बहुतसे गृहस्थ घर छोड़ कर भगने लगे। इसी समय आदम हाफिज नामक एक धर्मध्वजो भी तैगवहादुरके साथ ही लिया। सुगल वादशाहके पंजिसे वर्चनके लिए बहुतसे भागे वा कुपे हुए व्यक्तियोंने भी इनका साथ दिया। घोर घोर तैगवहादुरका दल यमनचारी हो गया। बादशाहने इनके दमनके लिए फौज भेजी। उसके साथ इनका एक छोटा-मोटा युद्ध भी हो गया। आखिर तैगवहादुर कैद कर लिये गये। दिल्ली जानेसे पहले वे गोविन्दको अपने पद पर अभिषिक्त कर गये। भविष्यमें ये ही गुरु गोविन्दसिंह नामसे प्रसिद्ध हुए हैं। तैगवहा-

'पुराके दिक्को जावे जाने पर, पौरहजरेने उनवे धर्म-  
विषयक बहुतमी बातें पूछी । अन्तमें उनोंने तिगवहा-  
दुरकी सुमनमानधर्म पद्य वरमिसे लिखे पादिय दिया ।  
परन्तु तिगवहादुरने सुमनमान होना खोजार नहीं किया ।

पहली बन्ने खारागारमें रक्ता गया पौर सुमनमान  
बनानेके लिये जायो त व किया गया । अन्तमें तिगवहा-  
दुरने बादयाहको कहनवा मेंका कि "हरवारमें में  
पपनी एक करामत दिखाना चाहता हूँ ।"

पौरहजरेने उन्को दरवारमें जात्रि होनेके लिये हुक्म  
दिया । तिगवहादुरने एक कागज पर कुछ लिखा पौर  
उमें अर्थ पर रक कहा—"भरै हूँ मन्त्रके प्रभावके बडा  
बुधा मिर कुछ कावया ।" उन्कोने उधो समय बजादे  
मिरको धनय कर उमिसे लिय कहा । भरै दरवारमें तिम  
बहादुरका मिर बहूके पलग हो गया । मन्त्री बड़ी  
पाहयने यह कामअभी पौर हाँट जाती, उस पर लिखा  
हा—"मिर दिया, पर सर न दिख" पर्यात् मन्त्रक  
दिया पर अनभी बात न दो । १६०१ ई०में यह बटना  
हुई थी ।

तिगवहादुरने यह तरक ११ वर्ष ७ माघ २१ दिन गुप्त-  
पाई को हो । निटंको बादयाहने उन्को बन्त उनकी  
दिहकी राष्ट्रमें कि क देनेके लिय हुक्म दिया । दिक्को  
बासो बिपीमें शुद्धे पवित्र मन्त्रकका दाह किया पौर  
यहाँ एक समाधि मन्दिर बनवा दिया । मन्त्रनयाहको  
कोशियने मन्त्रवीचिध (वा भ्राह्मदार) उनके उध मन्त्रक  
होन घरोरको पानन्दपुरसे पावे । बहा गुप्त मोनिन्दने  
महा ममारोहके फिलाका लब्धदिहिक काय समाह  
किया । पानन्दपुरमें तिगवहादुरके स्मरणार्थ एक बड़ा  
मन्दिर बनवाका गया ।

पव भी सिध पन्वदाह तिगवहादुरको "यह बादयाह"  
कह कर उनका लूब सम्मान करता पौर भक्ति दिव  
जाता है ।

दिवा (म० को०) तिज-पुर्ति स अथ न । पयबिह देयता  
मैद, एक मामान्य देयताका नाम ।

दिवा (प० सु०) १ कड, चिड़ा । २ दरवाजेको ई ट प्यर  
मयो पादिये बड करनेको किया । ३ कुन्नीका एक  
दाब या पेश । दहाका दूधरा नाम कररिया है ।

तिहकुमका—दक्षिण खानाहाका एक पाम । यह कामर  
मोड़के ८ मोन उत्तरमें मसुष्टि बिनारी पवस्थित है । यहाँ  
रखेर राजा पौंका बनाया हुआ एक पुराना किला है ।  
जिलेके प्रवेशद्वार पर एक चर्खाटो गिफालेख देणमें  
पाता है ।

तेहरर—मपुरा जिलेमें पेरिय कुलमके पापबोध पूर्वमें  
पवस्थित एक सुप्रखान । यहाँका सुब्रह्मण्यका मन्दिर  
बहुत पुराना है । मन्दिरमें बहुतमे गिफालेख विद्य  
मान है ।

तेहरर—तिबेथेति जिलेके पत्तार्पत तेहरर तासुकका  
एक महर । इसका दूसरा नाम पाङ्कवारतिव मनरो है ।  
यह पचा० ८ ३१' ७०" पौर देगा० ७८ ७१' ५०" तुत  
कुड़ोके १८ कोन दक्षिण-पश्चिममें तथा तासुकपूर्वो नदोके  
दाहिने बिनारी पवस्थित है । यहाँ तेहरर सरोवरके  
बनबमें एक गिफालेख मौजूद है ।

तेहामि—मन्त्राजक तिबेथेति जिलेका एक तासुक । बड  
पचा० ८ ४८' पौर ८ ८' ७०" तथा देगा० ७७ ११' पौर  
७० १८' पूर्वमें पड़ता है । मूरिमिाव १७४ बर्गमील  
पौर लोकासंख्या प्राय ११४ ४३० है । इतमें तोन महर  
पौर ८२ ग्राम बयते हैं ।

२ तिबेथेति जिलेके रथी नामके तासुकका एक  
महर । यह पचा० ८ १८' ७०" पौर देगा० ७७ १८' ५०"  
तिबेथेति महरके ३३ मोलकी पूरो पर पवस्थित है ।  
लोकासंख्या लगभग १८१२८ है ।

दक्षिणकायो मन्त्रके पपन्व मथे तेहामि नाम पड़ा  
है । यहाँके पयिहायो हथ श्यामको कायोके जैसा  
पवित्र समझते हैं । यहाँका बिष्णुनाथनामोका मन्दिर  
प्रसिद्ध है । इसके सिवा पौर भी कई एक गिफालेख हैं  
जिनमे कायो विष्णुनाथनामोका मन्दिर बहुत सुन्दर  
दोख पड़ता है । यहाँके जलपुण्यमें उक्त मन्दिर तथा  
यहाँके तोर्जाका माहात्म्य लिखा है । इन पव मन्दिरोंमें  
पाण्डुरराजापौंके समयमें उन्कोर्ष बहुतमे गिफालेख  
देके जाते हैं ।

बिषो धमय यह दक्षिणकायो दुर्गमें कुर्ग प्रासाद पादि  
के सिवा हुआ हा । पतिगारोके सुदखानमें के पव तहथ  
नहथ कर जाती नये ।

तेजल (तेजल) — मन्त्राज प्रदेमके वैष्णवोंको एक योनी ।  
 सक्त प्रदेमके वैष्णवगण दो मन्त्राजोमें विभक्त हैं—एक  
 बटगम या सप्तस्येदी और दूसरा तेजल या दक्षिणस्येदी ।  
 रामानुजके समय ये लोग एक ही मन्त्राजगणक थे ।  
 उससे बाद रामानुजके गिण मतवतममूर्ति या शाशाज  
 मतिके मतानुसार्यो तेजल और रामानुजके अन्य गिण  
 वेदान्ताचार्य या वेदान्तादिगिकके अनुगतों लोग बटगम-  
 नामने प्रसिद्ध हुए । किमो किमोका कहना है, गिणोंको  
 पुरानी वेदान्तादिगिकके यह प्रमाण किया गया कि "मे  
 दक्षिणालयके साक्षात्कृतके आधार सातशतक मन्त्रोपन  
 करने और दक्षिणालयके सप्तस्येदीके मतानुसार्यो मन्त्र  
 धर्मको पुनः प्रतिष्ठाके गिण भगवानुदासा प्रेरित हुआ  
 है ।" बटगमोने सगका मत मान लिया, पर तेजलोमें  
 किमानें भी नहीं माना । इसलिये दोनों दलोंमें विषम  
 विरोध बढ़ा ही गया । परन्तु दोनों मन्त्राज विष्णुके  
 उपासक हैं । बटगम लोग विष्णुकी भाँति विष्णु मूर्तिकी  
 शक्ति और उपासना प्रभाव भी मानते हैं, किन्तु और  
 किमो भी विषयमें उसको कमशोभना शोकार नहीं  
 करते । इसी मतमें टकी नै कर दो टकीमें विरोध और  
 विषम विद्वेष बढ़ा ही गया है । इस विषयमें चर्च  
 यादानुवाद भी हो चुका है ।  
 इसके सिवा तिलकमेयके विषयमें भी बहुत गान्  
 वितण्डा हुआ करता है । तेजलोमें तिलकमें सिंहासन  
 होता है, पर बटगमोमें नहीं पाया जाता । दोनों को  
 दल अपने अपने तिलककी शास्त्रमन्मत और विधानयुक्ति  
 तिलककी शास्त्रविरुद्ध सिद्ध करनेको चेष्टा करते रहते  
 हैं । कभी कभी इन विषयोंसे कर मझाई भी हुआ  
 करता है ।  
 बटगम और तेजल दोनों विरुद्धवादी होने पर भी  
 एक जाति होनेसे परस्पर विवाह सम्बन्ध होता है ।  
 तेज ( हि० पु० ) तेज देवा ।  
 तेज ( फा० वि० ) १ तोष्य धारका, जिसको धार देने  
 को । २ जो धननेमें बहुत तेज हो । ३ जो काम करनेमें  
 पुरतोना हो । ४ तोष्य, तोष्या, भावदार । ५ बट-  
 मुख्य, महंगा । ६ उग्र, प्रचण्ड । ७ जिसमें भारी प्रभाव  
 हो । ८ जिसको बुद्धि बहुत तोष्य हो । ९ जो बहुत  
 चञ्चल या चपल हो ।

तेज पुत्र ( मं० पु० ) तेजसा पुत्रः । तेजसागि, चाभावा  
 समूह ।  
 तेजःकल ( मं० टी० ) तेजसे कलारूप तेजः कल्पति वा कल-  
 पते । तत्समिदु एक पंथका नाम, तेजःकलः । पार्थिव —  
 बटुकल, शास्त्रात्मिकल, मानकल, मन्त्रकल, मन्त्रकल,  
 तत्समल । मुद्र—यह कर, तोष्य कृतक, दोषक,  
 पातयं या और परगिनानुसक्त मन्त्राजगणका नाम है ।  
 तेजःकर — गान्धिवरके एक गण । इसका रूपस नाम  
 द्वाकारण या । भा करि परगाय पाटिके द्वास्मि तेज-  
 वरणाजा विष्णुत धारणाविका विनी है । देवमाके  
 राजा मन्त्राजकी कलाके नाम इसका विवाह हुआ था ।  
 मन्त्राजके जोई पुत्र न था, इसलिये दोनों तेजकाकको  
 ही अपना गण ले लिया । तेजकाकके विषयमें बहुत-  
 शय, टाल साधन और जगल लक्ष्मिदु रूपमें जो सिद्धा  
 किया है, वह यद्यो न नहीं मान्य म दलता ।  
 देवा गान्धिवर, पुन १०२, भाग १ ।  
 तेजसागो ( हि० वि० ) तेजसा, प्रताप ।  
 तेजल ( मं० पु० ) तेजयति गार्थं धर्ममिति वा तेज-  
 लियन्तु । १ यंग, काम । २ सुख, मूर्त । ३ भद्रसुख,  
 गमवार, मरपत । ( टी० ) ४ दोषक, दोष करने या  
 तेज उत्पन्न करनेका कियाया भाग । ५ भोजन ।  
 ६ शठाई । ७ विरके धारका मुष्ण ।  
 तेजलक ( मं० पु० ) तेज दिव, क्, मन्त्राजो कल या ।  
 मरपत, मरपत ।  
 तेजलाय ( मं० पु० ) तेजल धारणा यत् । सुख यत्,  
 मूर्त ।  
 तेजलाय ( मं० पु० ) सुख यत्, मूर्त ।  
 तेजलो ( मं० पु० ) तेजल-लोभा उद्यो । १ मूर्त ।  
 २ धारका, यत्, याव । ३ तेजोयते, तेजल । ४ श्रुति  
 धर्मो, मानक गयो ।  
 तेजपत्ता ( हि० पु० ) टारपीनीको जातिका एक पंथ ।  
 मन्त्रतमें इसका नाम तमाल है और चंगरेजो उद्भिद्  
 गार्थोमें Cinnabomum Tamar. । इसमें चतुर्मास  
 किया जाता है, कि यह मन्त्रक उद्भिद्गार्थोके तमाल  
 जातीय हर्षोके चरुगर्भ है । चंगरेजो उद्भिद् गार्थोमें  
 इसका दूसरा नाम Cassia Inguet वा Cassia, Cinn-  
 mom है ।

तेजपत्ता की प्रकारका बीता है—तेजपत्ता (Cinnamomum Tamla) और राम तेजपत्ता (Cinnamomum Obtusifolium)

तेजपत्तों का पोषा चर्बिल बढ़ा नहीं होता। जिस ज्ञान पर कुछ समय तक चर्बी बर्षों को कर पोषि हुए पड़तीं ही, वहाँ यह पिक चर्बी तरह बढ़ता है। हिमालय में पूर्वांश में यह १ से ७ हजार फुटकी चर्बाई पर पाया जाता है। नहुता, दारचिञ्जि, काँबड़ा चर्बिया, चाँसिया, जङ्गदेम और चन्दामन बीपमें यह बहुत उपलब्धता है। मिन्धुषे जिन्गारै से कर द्युतु ६ जिन्गारै तक भी इसका पिक नहीं करीं देखनेमें पाता है। चर्बनिया और चाँसियामें इसकी बीता होती है। इसमें बीतको घात घात फुटका पूरी पर बोते हैं। पोषा जब पाँच वर्षका हो जाता है, तब उसे दूसरे ज्ञान पर रोपा देते हैं। अब तक इसमें पोषे छोटी रहते हैं, तब तक विशिष्ट रखाकी धारण्यता होती है। हुए पादि से चर्बामिसे लिए लगे भ्राङ्गिबोंकी चापमें रख देने हैं। पाँचवें वर्षमें अब यह दूसरे ज्ञान पर रोया जाता है तभी इसमें पत्तों चाममें चामि योग्य हो जाते हैं।

इसकी ज्ञान और पत्तियाँ दोनों ही चाममें माई जाती हैं। दारचीनीकी माई तेजपत्तोंको ज्ञान भी सुसम्भित होती है और बहुत कुछ दारचीनीके साथ मिश्रतो सुकतो मो है। चाममें एक प्रकारका तेल और धातुन तथा पत्तियोंमें एक प्रकारका रस बनाया जाता है।

जाब 1—दारचीनीकी माई इसमें बड़ पीर मोटी चाँसियोंके साथ मिश्रण कर लगे दारचीनीको तरह चाममें लाते हैं। दारचीनीको पपिचा इसकी ज्ञान पतली होती है लगे पर उस तरह मिश्रण नहीं होते, धरन्तू कीक मोसलस केना रहते है। दारचीनीकी शाकका ऊपरी भाग यन्पूर्वक जितना काट कर धमग कर दिया जाता है, उतना हममें नहीं। इसी कारण इसमें कई जगह ऊपरी भाग भी बना हुआ रोप पड़ता है। इसकी शाका या बड़की ज्ञानकी पपिचा मूलतन्तुको ज्ञानमें दारचीनीको मध्य चर्बिल रहते है। अचिदुर प्रान्तमें पोषिका ज्ञान न लेकर मूल

तन्तुकी शाक हो की जाती है। तेजपत्तोंकी शाकका सुप मो दानचोनेके रोसा है, लेकिन उतना छाछट नहीं। जिस मूलतन्तुको शाकका सुप दारचीनीको दरोका देखनेमें पाता है। चोनेके चाप्टन, जलजला और बन्दई पादि ज्ञानमें इसका पूरु व्यवसाय होता है।

तेज—इसको शाकका ऊपरी भाग को काट कर पसग कर दिया जाता है, चर्बोसे एक प्रकारका सुगन्ध तिल बनता है। १० डेर ज्ञानमें लयमन 10 छटाक तिल निकलता है। यह तिल देखनेमें ज्ञान, पोतवप तबा दारचीनीके समान गन्धविशिष्ट होता है, जिन्धु सुगन्ध दारचीनीके तेलके कुछ होन है। २५ तेलके ज्ञान कर सातुन (Military soap) बनाया जाता है।

हूड और फण—इसका जल पीर एक जेक चर्बहु कैसा होता है। जल बढ़ने लगे दिया जाता। यह मो ज्ञानको माई सुचर्बिष्ट है। प्राचीन चाममें जिपे जड (Hippoceras) नामक सुगन्ध मध्य रमोसे बनाया जाता था। य रोपमें यह Caslabud नामसे पीर बन्दई में ज्ञानी नागञ्जिरके नामसे मयङ्कर है। चीन और दक्षिण भारतवर्षमें यह बन्दईकी भेजा जाता है। 'चीना' पीर 'मसकारी नामसे इसमें दो भेद हैं। दक्षिण प्रदेशमें सुसलमान मोम व्यवसायियों सुसम्भित करमेंसे जिपे इके मनासेकी तरह चाममें जाते है।

एण—तेजपत्तोंकी पत्तियाँ धाराचरता भारतवर्षमें शाक तरहकी पादिमें मसारीको तरह जालो जाती हैं और पोषणके चाममें मो माई जाती हैं। प्रति चर्ब ज्ञानपरिष पमजल तक पीर नहीं लगे फातुन तक इसकी पत्तियाँ मोड़ी जाती हैं। साबरक जलोसे प्रति चर्ब पीर सुगन्ध तबा पुर्बक जलोसे प्रति दूसरे चर्ब पत्तियाँ की जाती हैं। प्रबन्ध जलोसे प्रति चर्ब १०से २५ डेर तक पत्तियाँ निकलतो हैं। जीठका रस बनानेमें समय इसकी पत्तियोंकी बड़, बड़ेका पीर पाँचनेके साथ मिश्रा होते हैं जिन्धे रस प्ला हो जावं। इसी ज्ञेय्यसे प्रतिचर्ब १००१०० मय पत्तियोंकी रामनकी पीर धरदाके मध्यवर्ती ज्ञानोंसे रण लगे होती है।

औरव—इसकी ज्ञान और पत्तियाँ बात रोममें चर्बजक चर्बमें एक छदामय पीर चामायावने। ६३३

पत्तियां ही व्यवहृत होती हैं। इसीम लीग सूत्रच्छ, ज्रीहा, उदरामय, पेटव्यथा, सर्पदंशन और अफीमके विषमें इसकी पत्तियोंका प्रयोग करते हैं। इसके फल और फल लवङ्गके बदले व्यवहृत होते हैं। और तंलमें सिर-दर्द, अधकपायी जाती रहती है। पीपल, मधु और तेजपत्तोंका अचलेह सेवन करनेसे खांसी, सरटी और खांम दूर हो जाती है। यदि प्रसवका स्वाव दूषित हो कर अधिक गिरने लगे, तो इसके पत्तोंका चूर्ण गिला देनेसे अच्छा हो जाता है। वैद्यगण भी बहुतसे ज्वरोंकी ओषधमें इसकी पत्तियोंका व्यवहार करते हैं। जापानमें एक अण्णिका तेजपात है जिसके मूलतन्तुमें यथेष्ट कपूर निकलता है।

बहुतोंका मत है, कि यह पेड़ भारतवर्षका आदिम पेड़ नहीं है। पहले पहल चीन देशसे यह रूस देशमें आया था। और अभी इसका प्रचार बहुत दूर तक हो गया है। किन्तु यह ठीक प्रतीत नहीं होता। क्योंकि तेजपत्तोंका व्यवहार भारतवर्षमें बहुत पहलेसे था। इसीके जन्म पहलीमें भी इसके पत्ते भारतवर्षसे युरोपमें भेजे जाते थे। झिनीने मालवथम (Majabathrum) नामक जिस पत्रका उल्लेख किया है, वही भारतीय तमाल पत्रम् शब्दका अपभ्रंश है। चीनमें प्रति वर्ष लगभग दस लाख रुपयेकी काल और पत्तियां इस देशमें आती हैं और अरब, पारस्य तथा तुर्क देशोंमें प्रायः लाख रुपयेका द्रव्य भी जा जाता है।

तेजपत्र (सं० स्त्री०) तेजयति-तिज-णिच्-अच्-तेजं-पत्र-मस्य। खनामस्यात पत्र, तेजयति। पर्याय—गन्ध-जात, पत्र, पत्रक, त्वरूप, वराङ्ग, भृङ्ग, चोच, लकट। गुण—यह कफ, वायु, अग्नि, हृत्सास और अरुचिनाशक है। भावप्रकाशके मतानुसार—यह लघु, उष्ण, कटु, खाद, तिक्त, रूक्ष, पित्तल, कफ, वात, कण्डू, आम और अरुचिनाशक है। तेजपत्ता देखो।

तेजपाल—गुजरातके एक विख्यात मन्त्री। अश्वराजके पुत्र, वसुपालके भाई, चौलुक्यराज वोरधवलके वन्धु और प्रधान मन्त्री। इनकी स्त्रीका नाम था अनुपमा और पुत्रका लावण्यनिह। जैनधर्मके ये प्रधान उस्ताह-दाता थे। १२ वीं शताब्दीमें तेजपाल और वसुपाल

प्रचुर रूपसे व्यवहार कर भर्तुट भीर गिरना पडाङ्के ऊपर तोर्यङ्गोंके उद्देश्यसे कई एक सुन्दर भीर सुरभ्रम लैन-मन्दिरोंका निर्माण कर गये हैं। भाव और वस्तुपाल देखो।  
तेजपुर—१ ग्रामामके दरंग जिनिका प्रधान नगर और मटर। यह अक्षा० २६° ३७' १५" उ० और देशा० ८२° ५३' ५" पू०में ब्रह्मपुत्रके उत्तरो किनारे भरलो और ब्रह्मपुत्रके सङ्गम स्थान पर अवस्थित है।

इस नगरको वनावट अच्छी है दो छोटे छोटे पहाड़ोंके मध्य ममतल जेवके ऊपर नगर बसा हुआ है। यह बहुत प्राचीन नगर है। इसके पास ही गिम्पनैपुण्ययुग प्राचीन देवालयका भग्नावशेष पेटा जाता है। किमो किमो प्राचीन भग्न मन्दिरमें शिमानिख है। देवदेवो सुसनमानोंके उत्पातसे इन मन्दिरोंका मत्थानाग हो गया है।

प्रवाद है—यहा वाण राजाके माय श्रीकृष्णका युव हुआ था। यहां राजकीय कार्यालय, कारागार, अंगरेजी विद्यालय और टाटव्य चिकित्सालय है। दिनों दिन इस शहरकी उन्नति देखी जाती है। वाणिज्य-व्यवसाय भी दिन दूना और रात चौगुना बढ़ रहा है।

२ बंवरुके अन्तर्गत महोकाटिका एक छोटा राज्य। तेजवल (हि० पु०) हरिहार तथा उसके पास के ग्रामोंमें अधिकतासे होनेवाला एक कांटेदार जङ्गल है। इसका छिलका लाल मिर्चकी तरह बहुत चर-परा होता है। पहाड़ी लोग दाल मसाले आदिमें इसको जड़ मिर्चकी तरह काम लाते हैं। इसकी जड़को छाल चवानेमें दांतका दर्द जाता रहता है। गुण—यह गरम, चरपरा, पाचक, कफ और वातनाशक तथा श्वास, खांसी, हिचकी, और बवासीर आदिका नाशक है।  
तेजन (सं० पु०) तेजसि प्रतिशयेन पालयति शिवका-निति तेज-बाहुलकात् कलच्। कपिञ्जल पत्नी, चातक, पपोहा।

तेजवती (सं० स्त्री०) तेजोवती, तेलवत्।

तेजवन्त (हि० वि०) तेजवान् देखो।

तेजवान् (हि० वि०) १ तेजस्वी, जिसमें तेज हो। २ वीर्यवान्। ३ बली, ताकतवान्। ४ कास्तिमान्, चमकोला।

ब्रह्म (स० ब्र०) निश्चयति वेद्यतेऽनेन वा तिस्र-पद्यन् ।  
 दैवि, भास्वि, प्रथम दमक । २ प्रमाय रोष दाह । ३  
 पराङ्मन शौर, वल । ४ रेतस, शुद्ध जोड । ५ उज्ज  
 भास्वि, शरीरको प्रथम दमक । ६ नवगीत, मन्त्रान,  
 मोनो । ७ वज्रि पत्नि पाग । ८ सुवर्ष, सोमा । ९  
 मन्त्रा । १० पित्त । ११ पश्चिमेव पौर पयमानादि  
 पयमण्यय मायकका गुणमेत । पर प्रबुध पश्चिमेव  
 पौर पयमानादि प्रायनाय पौर मन्त्र नहीं करनीका  
 नाम तेज है । १२ माय रमादि शुक्लाक्तः धातुका तेज  
 पदाह ।

गर्भोत्पत्तिरु ममय मोक्षवातु जब पश्चिमाय जब  
 धातुके माह मिन्नतो है तब मम गौरवर्ष पौर जब  
 पार्थिव धातुके माह मिन्नतो है; तब कल्पवर्ष हो जाता  
 है । पश्चिमाय प्रयो पौर पाकाय धातुके माह मिन्नते  
 मे कल्पवर्षमाय पौर पश्चिमाय प्रयोय तदा प्लवाय धातु  
 के माह मिन्नते मोरवर्षमाय हो जाता है । संनधातु प्रमा  
 इन्द्रियविदे माह जब नहीं मिन्नतो, तब ज्ञान ब्रह्मक  
 शीचितते माह मिन्नते क्वाच विलके माह मिन्नते  
 चतु दोतवर्ष, चक्वाके माह मिन्नते द्वाकाच पौर धातु  
 के माह मिन्नते विहताय होता है । (इन्द्रिय वरीत्याय)

१३ प्रागन्व्य माहम । १४ परामिभय सामय्य । तेज  
 रदनेने दूनीका पराप्त करनीकी सामय्य रखती है ।  
 १५ मन्त्र का पनमिमाकाय जब गुण त्रिमने मन्त्र विज्ञ  
 नहीं प्राक् कर लकता । १६ पप्रतिहतायल जब पाका  
 जिमे उक्त बन नहीं कर सकते । १७ चेतन्यात्मक  
 ज्योतिः । १८ सत्वगुणज्ञान सिद्धदेह, सत्वगुणने उत्पन्न  
 सिद्ध शरीर । १९ पयका वैम पीके को चनेको तीरो।  
 जोड़ोका कामाभिष स्युरव (दिनाय) हो तीर है । यह  
 तीर दो प्रकारका है, मततोक्षित पौर मयोक्षित । जोड़ी  
 को चनाके बिना जो कामाभिष स्युरव होता है उको  
 का नाम सततोक्षित तेज है । चातुके पयना मय  
 दिग्गमानेने जो स्युरव होता है उसे मयोक्षित तेज  
 कहते हैं । ( योग्याय )

२० पद्ममहाभूतका क्षतोप भूत, पांच महाभूतमिने  
 तोहरा भूत । इसका व्यय उत्प, रूप द्वाक पौर भास्वर है ।  
 किन्ती बहुत व्यर्थ करनीके जो उच्यता मान म पकता

है, उसका नाम तेज है । यह तेज, मन्त्र पौर तन्मायके  
 माय रूप तन्मायने उत्पन्न हुआ है । उको कारण तेजने  
 तीन गुण है मन्त्र, प्रमाय पौर रूप । ( वाक्यर० )

प्राय पौर वैमिदिक दशमने मतके यह दो प्रकारका  
 है—निष्क पौर पत्नित्वा । परमाद्युत्पत्ति निष्क है पौर कार्य  
 रूप पत्नित्वा । यह पत्नित्वा पद्योत् कार्यरूप तीर शरीर  
 इन्द्रिय पौर विपयके शिदके तीन प्रकारका है । शरीर  
 तेज पादित्वाको द्विमे प्रसिध है, इन्द्रियतेज रूपयाइक  
 चतु है पौर विपयतेज चार प्रकारका है—भूमि दिव्य  
 चोटीय तथा पाकरज । भूमि पत्नि प्रकृति है, दिव्य  
 विद्युत्पादि है मुक्तद्रव्यके परिपाकका कारण चोटीय  
 है पौर उदरमें जो तेज है उसने मुक्तद्रव्य परि  
 पक हो कर शरीर पुट होतो है । पाकरज सुवर्षादि  
 है । इसका मम, रूप द्रवत्व प्रकृत्ययोगित्वा है । उचका  
 गुण—स्वयं, सक्षमा, परिमाण, पृथक्त्व सयोग,  
 विमाय, परत्व अपरत्व, रूप, द्रव्य वैत तीरका द्रवत्व पौर  
 नैमित्तिक है, किन्तु यह सांख्यिक द्रव पदार्थ नहीं है,  
 निमित्तके निय हो द्रव्य हुआ करता है ।

रूप, स्वर्गैन्द्रिय पाक, मन्त्राय तोप्यता, वर  
 (मोरादि) भास्विप्यता, पमयं, श्रेय पौर माहम ये सब  
 तेजके गुण हैं चर्वात् तेजके ये सब उत्पन्न होते हैं ।  
 शरीरमें तीर पदाह है इसीने प्राची रूपवान् दर्शनैन्द्रिय-  
 नम्यक प्रकृति सुचरिमिह होते हैं पौर उसीने मुक्त  
 द्रव्य मो भक्तो भांति परिवर्त हो जाता है । २१ तेजयो  
 उपचारक कारण तेजत् मन्त्रके तेजकोका बीच होता  
 है । ( वाक्य अनुवा० )

तित्रमि व—प्रसिध मिष-वेनापति । ये गीह्वाद्यायक य  
 म उत्पन्न हुए हैं । इनका प्रकृत नाम त्रिराम पौर  
 इनके पिताका नाम त्रिराम या । जे महाराज रचजित्  
 नि इके विद्याया पुयाक्षसि इके भतीजे हैं । सुमानसि व  
 रचजितमि इके यहां हारपातकका काम करत हैं ।  
 सुमानसि इने पाद्या निदे बिना कीर्त मो रचजित  
 नि इने सुनाकात नहीं कर सकता या । जब जमी कीर्त  
 म श्याम काजि रचजितमि इके सुनाकात करना चाहते  
 हैं तब सुमानसि इको बहुत रुपये दाय समते हैं । इस  
 प्रकार पुयाक्षसि व कीर्त कीर्त बहुत धनो हो गये पौर



सिखराज्यमें एक प्रधान व्यक्ति समझे जानी लगी। मेरठ में उनका आदि निवास था। वहमें उन्होंने तेजगामकी सिख-दरवारमें बुलावा भेजा। १७१६ ई०में, तेजगामने सिखधर्म ग्रहणकर अपना नाम तेजसिंह रखा। अपने चचाको तरह वे भी धीरे धीरे सिख-दरवारमें गण्यमान्य हो उठे।

१८४५ ई०की २१ सितम्बरको जवाहरसिंहको हत्याके बाद मंहागनो भिन्दन लालमिंहको प्रधान वजोर और तेजसिंहको प्रधान सेनापति बना कर राज्य चलाने लगीं। किन्तु लालमिंह और तेजसिंह पर खालसा सेना बहुत विरक्त थी। अनेक कारणोंसे वह विरक्ति-भाव क्रमशः बढ़सुन होने लगा। इस समय खालसा-सेनाकी क्षमता भी कुछ बढ गई थी। सभी राजपुरुष उससे डरा करते थे। इस कारण तेजसिंह खालसा-सेना के पराक्रमकी खबरें कर डालनेके लिये नाना प्रकारको चेष्टाएं करने लगे। लालमिंहने भी इस पद्धत्यन्तमें हाथ दिया। इन्होंने यह स्थिर कर लिया कि ब्रिटिश सेनाके सिधा खालसा सेना किमोत्रे भी विदलित नहीं हो सकती। उन्होंने दरवारमें यह घोषणा कर दी कि अंगरेजी सेना शतशु नदी पार कर सिख राज्य पर आक्रमण करनेकी आ रही है। इस समय उन्हें भी ब्रिटिशराज्य पर धावा मारना उचित है। एक दिन दरवारमें प्रधान सिख-योद्धाओंके सामने टीवान दीननाथने कई एक मिथ्या पत्र पढ़ कर यह कहा, कि माहभूमिकी रक्षाके लिये सभी सभोको अस्त्रधारण करना उचित है। महाराणीकी इच्छा है, कि राजा लालमिंह वजोर और तेजसिंह प्रधान सेनापति हों।

स्वदेशानुरागी खालसा सेना यह सुन कर उत्तेजित हो उठी। इस समय राजा लालमिंहको वजोर और तेजसिंहको सरदार बनानेमें किसीने आपत्ति न की। नीचाशय तेजसिंहने अभी खालसा-सेनाके ऊपर अपना आधिपत्य पा कर उन्हें धंस करना चाहा। बिना किमो कारणके सिखयुद्ध छिड गया। जहाँ-जहाँ खालसा सेनाके साथ ब्रिटिशसेनाका संसर्ग था, वहाँ दुर्मति तेजसिंहने विस्वासघातकता करनेमें कोई कसर उठा न रक्खी, किन्तु सिखसेनाने इस और तनिक भी ध्यान न दिया। बार

बार अपने सरदारकी कूटनीति देख कर भी वह जैसे वीरता दिखलाती आ रही थी, वह अत्यन्त प्रशंसनीय थी। जहाँ अंगरेजोंको जोतको कुछ भो आशा न थी, तेजसिंहको विश्वासघातकतासे बड़ा उन्होंने बहूतोंकी खुनखुरावों कर जय प्राप्त कर लो। जिस फिरोजशाहके युद्धमें सिख सेनाकी सम्पूर्ण रूपसे हार हुई थी, जिस विख्यात युद्धमें अंगरेजो सेनानायकोंने स्वदेशमें सम्मान प्राप्त किया था, वह युद्ध केवल इसी दुर्लभ तेजसिंहको विश्वासघातकतासे समाप्त हुआ था। उस युद्धमें तेजसिंह बस हजार पदाति और पांच हजार अश्वारोही सेनाओंके साथ उपस्थित थे।

उन्होंने अपने आखिरी लालमिंहकी पराजय देखी थी, लेकिन वे कुछ भो सटत न पहुँचाई। वे परिश्रान्त और निरुपाय ब्रिटिशसेनाको अवस्थासे भी अच्छी तरह जानकार थे। उनकी सभी योद्धा युद्ध करनेके लिये उत्तेजित हो गए थे, लेकिन कापुरुष तेजसिंह विस्वासघातकतासे उन्हें मुन्नाविमें डाल कर शतशु नदीके पार लौटा लाये। अन्तमें जब उन्हें तेजसिंहको चालवाजो अच्छो तरह मालूम हो गई, तब वे दाँत पौस कर रह गये। प्रथम सिखयुद्धके बाद तेजसिंहने ब्रिटिश-शिविरमें जा कर गवर्नर-जेनरलसे मुन्नाकात की और मन्थि करनेकी कष्टा, किन्तु बड़े लाटने उनका प्रस्ताव नामंजूर कर दिया। अन्तमें सिखसेनाके भयमें तेजसिंह दहल उठे। कब कोन आ कर उनका प्राण ले लोगा, इस आशङ्कासे उन्हें रातकी नोंद नहीं आतो थी। उन्होंने किसी ज्योतिषीके कहनेसे निरापट रहनेके लिए एका अद्भुत दुर्ग बनवाना विचारा था। जो कुछ ही, अन्तिम दशामें वे मानसिक दुःखसे ही पञ्चत्वकी प्राप्त हुए थे।

यदि सरदार तेजसिंह पदपदमें विश्वासघातकता नहीं करते, तो सिखयुद्धका इतिहास भिन्नरूपसे लिखा जाता। सिखयुद्ध दो।

तेजसिंह — १ प्रोम्वाटवंशोय एक सामन्त। इनके पिताका नाम विजयसिंह और पितामहका नाम विक्रम था। इन्होंने देवपालसूति नामक एक ज्योतिष्य रचा है।

२ सुन्दे लखण्डवासी एक कवि। ये जातिक कायस्थ थे। ये दफतरनामा ग्रन्थ बना गये हैं

तेजसी—मारवाड़के एक राजपूत कवि । इनकी ममो कविताए सराहनीय होती थीं ।

तेजस्वर ( म० त्रि० ) तेजः करोति छट । तेजोद्धि कारक, तेज बढ़ानेवाला ।

तेजस्व ( म० त्रि० ) तेजसि साधु-यत् । १ तेज साधन । ( पु० ) २ महादेव ।

तेजस्य ( म० पु० ) महादेव, यिव ।

तेजस्वत् ( म० त्रि० ) तेजस् परस्परैर् मत्तुर् मया व । तेजो-  
हुक्, तेजसे तेजसुत् ।

तेजस्वतो ( म० षो० ) गुणवर्माहो बन्वा । कषापरित्-  
सागर्तं इमको कषा इम प्रकार निषो है—

उत्कृष्टिनेर्मां पादिस्येन नामक एक राजा थे । एक दिन  
ससेन्ध मन्नाथे जिहारे दहन रूढ़ि थे । उस प्रदेयके शुच  
बसा नामक कियो बनी स्थितिसे तेजसे नामकी एक

कन्या थी । गुणवर्माने पादिस्येनको उपसुक्त कर आन  
पपनी लक्ष्मीका विवाह उनके साथ कर दिया । राजा

तेजस्वतोके रूप धोर शुच पर मोहित हो राजकार्य मो  
भूल गये थे । कुछ दिन बाद इनके घरमें एक कन्या

उत्पन्न हुई । राजा तेजस्वतोके रूपसे इतने मुग्ध हो गये  
थे कि एक दण्ड भी उन्हें पलग नहीं रख सकती थी । एक

दिन राजाने उन्हें डायो पर चढ़ा धोर पाप छोड़े पर  
चढ़ गन् राजा पर चढ़ाई करनेके लिये प्रयत्न किया ।

राष्ट्रमें मरिचोको श्रुत करनेके लिये राजाने बहुत तेज  
से पपना छोड़ा छोड़ा । सुहर्ष मर्में छोड़ा पांकीको

घोट हो गया । अनेक अनुसन्धान करने पर मो जब  
राजा न मिले तब परमत्त्वमय मरिचोको राजधानी

बापिस पाये । जब राजा दिग्भ्रान्त हो निव्याटकीके  
प्रम्य जा पहुँचे । पाप बहुत बडे थे, चला छोड़ेको पपनी

इच्छानुसार चलने दिया । छोड़ा मो पपनी क्षातोय मुदि  
के बन्धे राजाकी उत्कृष्टिनेर्मां धोर से बना । इसी

प्रमय रात हो गई, नगरका दरवाजा बन्द हो गया ।  
राजा मो छोड़े पर धूमते धूमते चक हो गये । अज्ञानके

निष्ठ हान्द्वे ब्राह्मणोका एक मांथ था, वहाँ राजा  
पकण्मात् जा पहुँचे । मांथके बीच एक मन्दिर था । जब

राजा मन्दिरमें प्रवेस करने लगी तब यहाँके लोगोंने क्षाय  
इमका विवाद हुआ । इसी बीचमें विदूषक नामक एक

ब्राह्मण वहाँ पाये धोर मध्यदिग दिख कर उनीने राजा-  
को पायव दिया । विदूषकने पपनी तपके प्रभावसे धमि  
से एक चड पाया था ।

विदूषकने परिचारक द्वारा राजाकी सेवा दहन  
कराई धोर सोनेको एक लपटा खान मो दिया । उनकी

ग्रोर रचाके लिये पाप रात भर कपती रूढ़ि । सुबह होने  
पर राजा छठ कर क्या देखते हैं, कि विदूषक छोड़ेको

ममो मर्ति मजा कर सामने मड़ा है । राजा छोड़े  
पर सवार हो पपनी नगरको लोट पाए । राजाकी दिख

कर रामके भान्दका पारावार भरडा । राजाने कृत-  
ज्ञताके उपकार स्वरूप विदूषकको एक सो गाँवका

पाचिपक धोर राजधोरोद्धिय पर्यंथ किया । विदूषकने  
पपनी धारी सम्पत्ति मन्दिरके ब्राह्मणोको दे दो । कुछ

दिन बाद ब्राह्मण मोन विदूषकको पपात्र कर पापसमें  
भ्रमरुने लगी । इस बीचसे चल्हार नामक एक स्थिति

वहाँ पा पहुँचे धोर बोले, 'तुम मोमीमें एक नायकका  
होना थायम्भ है, चला तुमसेवे जो पचिपक पाचने है,

वहो इस नायका नायक होना । तब समीने नायक  
होनेको पपनी पपनी इच्छा प्रकट की । इस पर चल्हार

ने उन सोयेसे कहा, देको । अज्ञानमें तोन धोर शून्य  
मरे पड़े हैं, तुमसेवे जो इनको नाक काट कावेना,

वहो नायकके योग्य होगा । यह काम करनेमें धोर समाने  
तो पपनी चमिच्छा प्रकट की, मगर विदूषक बिस्कुस लेवार

हो गये । पीछे विदूषकने पचिपक कपुके से दो पदरे  
रातको अज्ञानको धोर प्रकान किया । वहाँ उन्हें

बहुत कर मासुम हुआ धोर जब वे तोनी सुर्दके पास  
पहुँचे तो वे भूत विद्याक बन कर उन्हें सुद्विप्रहार

करने लगी । तब विदूषकने भूतका श्रेय दूर करनेके लिये  
तलवारसे वार किया धोर तोनीको नाक काट कपड़े में

बाँध ली । पीछे जोटने समय से क्या देखते हैं, कि एक  
मनुष्य सबके ऊपर बैठ कर जप कर रहा है । विदूषक

यह काण्ड श्रिपडे देखने लगे । कुछ क्षाचके बाद पान  
नय्य सब भूतके रूपमें जो कर कुम्हार करने जमा

त्रिमके हमके मुहसे धमि धोर मासिडे सरको निकलने  
लगी । योगीने मरपी कर्मानों धोर कसकर उसे तमाका  
माता । बाद जब सब छड कर चला हो गया । दोयो

उसके कंधे पर चढ़ लिया और वह धीरे धीरे चलने लगा। विदूषक भी अनागत रूपसे उसके पीछे पीछे जाने लगे। क्षणभंगुर वे दोनों एक काल्यायनीके मन्दिरमें पहुँचे। योगीने शवको छोड़ कर मन्दिरमें प्रवेश किया। विदूषक मन्दिरकी भोतमें कान लगाये खड़े रहे। कुछ काल बाद देववाणी हुई, यदि तुम अभिलषित वर चाहते हो, तो आदित्यसेनाको एकमात्र कन्याकी इमें उपहार दो। यह सुन कर योगी फिर वेतालके महारि नर्मापयसे चला टिये। विदूषकने मोचा कि मैं अवश्य हो प्रतिपालक को कन्याको रक्षा करूँगा। ऐसा मोचते हुए वे हाथमें-तलवार लिये उभो जगह खड़े रहे। योगी जब राजकन्याको ले कर वहाँ पहुँचा तब विदूषकने उसे कतल कर डाला। तब फिर देववाणी हुई, 'विदूषक! यह योगी महावेताल और सर्पपनिह था, केवल पृथ्वी और राजकन्या मशीगकी कामना आज उसकी जाती रही। तुम इन सब सर्पोंकी ग्रहण करो। इन्हींके प्रभावसे आज रातकी आकाशमार्गसे अमोघ टेशकी पहुँच जावेगी।' यह सुन विदूषकने सर्पोंकी ग्रहण कर राजकन्याकी अपनी गोदमें बिठा लिया। पीछे देववाणी हुई, 'मामके अन्तमें फिर यहाँ आ जाना।'

विदूषकने प्रणाम कर आकाशपथसे राजपुरकी ओर प्रस्थान किया। कुछ समय बाद राजकन्या वर पर पहुँच कर जब विदूषकने उसे अपनी छाट पर सुला दिया, तब वह बोली, 'भार्य! आप यहाँसे न जायें नहीं तो भयसे मेरा प्राणान्त होगा।' विदूषक भी वहीं पड़ रहें। सुबहकी जब ये सब बातें राजाकी मालूम हुईं, तब उन्होंने विदूषकको पुरस्कारस्वरूप अपनी कन्या दे दी। जब महीना शेष होनेकी चला, तब राजकन्याने देववाणीकी बात विदूषकको याद दिला दी। विदूषक फिर श्मशान गये और काल्यायनीके मन्दिरके समोप जा कर बोले, 'मैं विदूषक आ गया।' मन्दिरके भीतरसे आवाज आई, 'भीतर चले आओ।' भीतर जा कर विदूषकने देखा कि वहाँ सुन्दर वासभवन है और एक अशामान्य रूपवती कन्या बैठी हुई है। पूछनेसे पता चला, कि यह विद्याधरकी कन्या है और उसका नाम है भद्रा। पीछे उसके अनुरोधसे विदूषकने उसका

पाणिग्रहण किया और दोनों वहीं रहने लगे। इधर दूमरे दिन राजकन्या स्वामीको न देख कर व्याकुल हो गई। कई दिन बीत गये, तो भी उनका कुछ पता नहीं। मकरे जब चिन्तित हो गये। पीछे भद्राने अपनी महारि योगेश्वरसे सुना कि विद्याधरगण इसके लिए उस पर बहुत क्रुद्ध हो गये हैं।

इस पर भद्राने विदूषकसे कहा, 'आप यहाँ ठहरिये। मैं पूर्वसागरके पार कर्कोटक नदीके पार्श्वस्थित गोतोटा नदीके दूर किनारे उद्योगिकि मिहाश्रमकी जाती हूँ।' इतना कह उसने यादगारोंमें अपनी सुंदरी उन्हीं दे दी और आप उक्त स्थानकी चली गई। विदूषक भी पागल जैसे, 'हा भद्रे।' करते हुए उस घरसे निकल पड़े। पीछे राजा आदित्यसेनने एवो भवभ्यामें देख इनको चिकित्सा कराई। दुःसाध्य रोग समझ कर एवं चिकित्सकोंकी सलाह ले कर राजाने उन्हें यथेच्छ व्यवहार करनेका अधिकार दिया। विदूषक भद्राको तलाशमें निकले। दिन रात पूर्वदिशाकी ओर जाते जाते एक दिन वे शामकी पोण्ड्रवर्धन नगरमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक राजमकी परामर्श कर देवसेन राजाकी दुःखनिधिका नामक कन्यासे विवाह किया। पीछे वे वहाँसे ताम्रनिग नगरकी चले गये। यहाँ स्कन्ददास नामक वर्णिकके साथ उन्होंने समुद्रपथसे यात्रा की। कुछ दिन बाद स्कन्ददासका जहाज समुद्रमें डूब गया। इस पर बहुत दुःखित हो कर बोला, 'जो मुझे इस विपद्से उबार करेगा, उसे मैं अपना आधा धन और कन्या दूँगा।' विदूषकने स्कन्ददाससे कहा, 'कमरमें रखो बांध कर यदि प्राय मुझे समुद्रमें गिरा दें तो मैं आपका यह शकट दूर कर सकता हूँ।' विदूषकने वँसा ही किया, किन्तु स्कन्ददासने रुपये देनेके भयसे उनको बन्धन रखी काट दी। जिससे वे नोचे समुद्रमें गिर पड़े और अपने घरकी राह लो। जब विदूषक बहुत मुशकिलसे समुद्र पार कर गये, तब देववाणी हुई, 'विदूषक! तुम धन्य हो। जिस स्थान पर तुम लाये गये हो, इसका नाम नगराज्य है। यहाँसे पूर्वकी ओर सात दिनका रास्ता तै करके बाद ही कर्कोट नगर पहुँचोगे।' तदनुसार सातमें दिनमें वे कर्कोटनगर



तेजोराशि ( मं० पु० ) तेजसां राशिः । तेजःपुत्रं, तेजका मसृह ।

तेजोरूप ( मं० क्ली० ) तेजः सर्वप्रकाशकं चैतन्यं रूपं यस्य । १ ब्रह्म । ये ज्योतिरूप प्रकाशात्मक हैं, ब्रह्मका स्वरूप ज्योतिरूपप्रथम प्रकाशित होता है । तेजसा रूपः । २ जो अग्नि या तेजरूप हो ।

तेजोवत् ( मं० वि० ) तेजस अत्यन्तं मनुष्यस्य वा । तेजयुक्त, जिसमें तेज हो ।

तेजोवतो ( मं० स्त्री० ) तेजोवत् डोप । १ गजपिप्पली । २ चविका, चय्य । ३ मन्वाज्योतिष्मती, मानक गनो । तेजस्वती देखो । ४ अग्निका विमान ।

तेजोविट् ( सं० वि० ) जिसमें तेज वा टोमि हो । तेजोविन्दु ( मं० पु० ) एक उपनिषद्का नाम । तेजोविन्दुपनिषद् ( सं० स्त्री० ) उपनिषद्भेद, एक उपनिषद्का नाम । नारायणने इसको टोपिका रचो है ।

तेजोवोज ( मं० क्ली० ) मज्जा । तेजोवृक्ष ( मं० पु० ) क्षुद्राग्निमय वृक्ष, छोटी परणोका वृक्ष ।

तेजोवृत्त ( सं० क्ली० ) तेजसो वृत्तं, ६-तत् । बोधानुरूप । तेजोवृद्धा ( सं० स्त्री० ) तेजः ह्ययते स्पृहते धी-क । १ तेजोवतो, तेजवल । २ चविका, चय्य ।

तेतालीस ( हिं० वि० ) तैतालीस देखो ।

तेतीस ( हिं० वि० ) तैतीस देखो ।

तेदनी ( मं० स्त्री० ) देवताभेद, एक देवताका नाम ।

तेन ( मं० पु० ) ते गौरी न शिवो यत्र । गानाद्रभेद, गानका एक शब्द ।

“तेनेति शब्दस्तेन स्यात् मंगलानां प्रदर्शकः ।”

ते और न ये दो शब्द मङ्गल प्रदर्शक है । ते शब्दसे गौरी और न शब्दसे हरका बोध होता है । इसीसे तेन शब्द माङ्गलिक है । गानके पहले हर-गौरीका प्रसाद प्राप्त करनेके लिये यह शब्द उच्चारण किया जाता है ।

तेनसेरिम—ब्रह्मदेशका एक विस्तोर्ण विभाग । यह अक्षा० ८° ५८' से १८° २८' उ० और देशा० ८५° ४८' से ८८° ४०' पू०में अवस्थित है । इसके उत्तरमें अपर वरमा, पूर्वमें करेजी और श्याम, पश्चिममें पेगु विभाग और बङ्गालकी खाड़ी तथा दक्षिणमें मलयप्रायोद्वीप है ।

भूपरिमाण ४६७३० और लोकसंख्या प्रायः ११५८५५८ है, जिनमें बोहोको संख्या अधिक है । इस विभागके अन्तर्गत अमहट्ट, तापय, मार्गुइ, शयेगिन, तोङ्गू, मौनमेन और मानउइन शंभूभाग नामके ७ जिले हैं । इसमें ४६६३ ग्राम और ८ शहर लगते हैं ।

२ उक्त तेनसेरिम विभागके मार्गुइ जिलेका प्रधान शहर । यह अक्षा० ११°११' से १३° २८' उ० और देशा० ८८° ५१' से ८८° ४०' पू०में अवस्थित है । भूपरिमाण ४०३३३ वर्ग मोन और लोकसंख्या प्रायः १००१२ है । छोटा और बड़ा तेनसेरिम नदोके मध्य पर मार्गुइ नगर-से २० कोम दक्षिण-पूर्वमें पड़ता है । इसके चारों ओर पहाड और जङ्गल हैं । एक समय यह नगर उन्नतिते ऊँचे शिखर पर पहुँचा हुआ था । ब्रह्म और श्याम-राजाका वार वार प्राक्रमण होते रहनेसे अन्तमें यह नष्ट होन ही गया है ।

१३३३ ई०में श्यामवासियोंने बहुत यत्नसे यह नगर निर्माण किया । अबसे बड़े बड़े पत्थरके स्तम्भ पूर्वगौरवका परिचय दे रहे हैं । स्तम्भमें यद्यपि कोई लिपि उत्कीर्ण नहीं है, तो भी ब्रह्मदेशके लोगोंका कहना है कि नगरको भावो उन्नतिके लिये देवतापार्के प्रीत्यर्थ यहाँ एक रमणीको जोधन्त समाधि हुई थी । अब भी नगरके चारों ओर प्रायः ४ वर्गमोन स्थान मटोकी टोवारसे घिरा हुआ है । १०५८ ई०में ब्रह्मदेशके राजा अर्लपयाने यह नगर अधिकार किया और शासनकर्ता की तेजतनवारके आघातसे बहुतसे अधिवासियोंकी जानें गईं । उसी समयसे श्यामवासियोंने इस स्थान पर देखल करनेके लिये कई बार चैटा को धो । शहरको पूर्व ओर जातो रही और अब एक सामान्य ग्रामसा हो गया है ।

मार्गुइ जिलेमें दो नदियोंके आपसमें मिल जानेसे इसका तेनसेरिम नाम पड़ा है । यह नदो प्रायः टाई सी मोन जा कर समुद्रमें गिरो है । इसके बहुतसे सुहाने हैं ।

३ उक्त मार्गुइ जिलेके इसी नामके शहरका एक ग्राम । यह अक्षा० १२° ६' उ० और देशा० ८८° ३' पू० वही और छोटी तेनसेरिम नदियोंके सङ्गमस्थान पर अवस्थित है । किसी समय यह ग्राम बहुत समृद्धशाली था इसमें केवल एकसो घर रह गये हैं ।

तेनाली—१ मन्नायके धन्वर्तत सुन्दर जिलेका एक तालुक। यह पचा० ११ ३३' से ११ २५' ७०" और देगा० ८० ११' से ८ ३६' पू० में मध्य जम्मा नदीके बाएँ किनारे अवस्थित है। मूपरिमात्र ६६६ वर्गमील और क्षेत्रफल ५८८१२० है। इसमें कुल ११० ग्राम समीप हैं। राजस्व प्रायः १३०१००० रु० का है। जम्मा नदीसे जो नहर काटो गई है, उससे जलका काम चलाता है। यह तालुक उस प्रायमें सबसे बड़ा है।

२ उत्तर तालुकका एक शहर। यह पचा० १६ ११' ७०" और देगा० ८० १८' पू० में अवस्थित है। क्षेत्रफल १०२०६ है। इस्ट-कोस्ट-रेलवे (East Coast Railway) के कुछ कार्गोके यह शहर दिनों दिन बहुत तरकी कर रहा है। यहाँका मन्दि (बहुत प्राचीन है) और जसमें बहुतसी शिल्पकृतियाँ हैं। इसी शहरमें विद्ययनरके राजा जम्मादेवके समाधिनिर्माणमें रामनिजमका जन्म हुआ था।

मिन्टुकेड़ा—मध्यप्रदेशमें मरसि शहर जिलेका एक नगर। यह पचा० २३ १०' ७०" और देगा० ७८ १८' पू० गान्धर बाड़ा रेल-स्टेशनसे ११ कोस दूरमें अवस्थित है। यह नगरसे एक कोसको दूरी पर कोङ्किको ज्ञान है।

मिम (म० पु०) तिम-जन्म। पार्श्वमाव, पार्श्वता गोत्राण।

मिमन (म० ज्यो०) तिम-जन्म। १ पार्श्वबरच, गोत्र-करनेको जिया। २ पार्श्वन, पचा हुआ मोक्षण।

मिमनी (म० ज्यो०) तिमन-जोष। सुकोमेंद बुद्धि।

मिमरु (मि० पु०) मीरूका हथ, पानमूसका पिक।

मिरच (मि० पु०) अतिबौनीका बोधवार।

मिरच (मि० ज्यो०) मयोत्तमो, बिषो पपको मिरचकी तिथि।

मिरच (मि० वि०) १ जो मिनतीमें सम्ये तोन पबिब हो। (पु०) १ वच य ज्ञा जो दम और तोनके योगसे बनी हो।

मिरचवा (मि० वि०) जो ज्ञामसे मिरचके ज्ञान पर पके।

मिरची (मि० ज्यो०) बिषो मनुष्यको मरुके दिनसे मिरचकी तिथि। इसमें पिच्छदान और श्राद्धप्रयोग करके दाह करनीवाला और भतकसे करके सोम युद्ध होती है।

मिरा (मि० ज्यो०) मन्मथ सुवन, एकवचन मन्मथकारक सर्वप्रथम।

मिरि—१ पञ्जाबके कोषाट जिलेको एक तहसील। यह पचा० २२ ४८' से २३ ३३' ७०" और देगा० ७० ११' से ७२ १' पू० में अवस्थित है। मूपरिमात्र १६१६ वर्ग मील और क्षेत्रफल प्रायः ८३१३६ है। इसमें कुल १६६ ग्राम समीप हैं। तहसीलको प्रायः जममा ८१०००, बन्को है। यहाँ सुदृशिय लकड़का प्रातिभा वाम है। लकड़े उद्योग का मध्यप्रदेशमें हदिय गवर्मेण्टको जियो मन्नाईमें सहायता पकूवाई जो, इनो पर गवर्मेण्टने खाँको मिरि तहसील आनोरके तीर पर दे दो है।

२ लकड़तहसीलका एक शहर। यह पचा० २१ १८' ७०" और देगा० ७१ ०' पू० में अवस्थित है। यहाँ प्रायः काठे भात उद्योग मनुष्यका काम है। आनोरदारका पानाद इसी नगरमें है। इससे बिना बहाँ और मी बहुत जो मसजिद तथा सुन्दर पहाडिकार्ये हैं। नगरके बोचमें बाजार, पान्थनिवास, बागा, विद्यालय और शौचालय हैं।

मिरितोरी—कोषाट जिलेको एक नदी। मीरचईसे दो कटि छोटे स्रोत निकल कर मिरिनकरसे १ कोस दूरमें है एक दूरमें मिम गये हैं। उसो जगह यह नदी मिरितोरी नाम धारण कर पूर्वको और बहतो हुई मिसु नदीमें जा मियो है। जिन पहाडोके यह नदी बहतो है, प्रायः लकड़े समीप जममाको ज्ञान है।

मिरिदान—धर्मिक नामक दक्षिण महाराष्ट्रामें धन्व-यत एक नगर। यह पचा० १६ १०' ७०" और देगा० ७१ १ पू० जम्मा नदीके दक्षिणे किनारे अवस्थित है। क्षेत्रफल प्रायः ६११६ है। पूर्व समवर्तमें यह शहर चारी और दोवारसे विरा था। अब जो दुर्गके प्राकारका मन्मावमें दिखनेमें आता है। यह शहर वाचिचका मन्त्र है। यहाँ साङ्गो कोतो और पच्छे थच्छे जम्मा तैवार होती हैं। यहाँके ११८० ई० में बनी हुए मनुष्यको और मगवान् मेमनाक सामीके सौमन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ विद्यालय और चिचिष्ठालय भी हैं।

मिरनगर १ मध्यभारतके पैना राज्यको एक तहसील। यह पचा० २३ ३२' और २३ ११' ७०" तथा देगा० ८१

१६ और ८१ ५८० में अवस्थित है। भूपरिमाण ८१६ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १०५१५४ है। इसमें एक शहर और ५०५ ग्राम लगते हैं। पन्ना पर्वत इसे दो भागोंमें विभक्त करता है। टतोन्व नदी तन्मीलके मध्य हो कर बहती है यहाँको आग्र तीन लाख रुपयेमें अधिककी है।

२. उक्त तन्मीलका एक शहर। यह अक्षा० २४° ५८' ३०" और देशा० ८१° ४१' ५०" के मध्य अवस्थित है। लोकसंख्या १५८३ के लगभग है। यहाँ एक स्कूल और एक चिकित्सालय है।

तेवारा -पालनपुरके शासनाधीन एक देगीण राज्य। इसके उत्तरमें दिवदर, पूर्वमें कांकरेज, दक्षिणमें राधनपुर और पश्चिममें भारत राज्य है। भूपरिमाण १२५ वर्गमील और लोकसंख्या लगभग ८ हजार है। यहाँको जमीन समतल है, मटीकाली और बालू-मिश्रित है। वर्षाभरमें केवल एक फसल होती है। २० से ५० हाथ नीचे धरती खोदने पर जल मिलता है।

पहले यहाँ वधेला राजपूत लोग राज्य करते थे। १७१५ ई०में नवाब कमालउद्दौलखाने इसे अधिकार किया। उस समय यह राज्य राधनपुरके नवाबके शासनाधीन था। मित्तु प्रदेशमें सुमनमानका एक टन आ कर नवाबके यहाँ बुइसवारमें भर्ती हो गया। उनमेंसे बलुचवाँ प्रधान थे। १८२२ ई०में पालनपुरके सुपरिण्टेण्डेण्टने बलुचवाँको यह स्थान प्रदान किया। तभीसे बलुचवाँके वंशधर यहाँ राज्य करते आ रहे हैं।

तेल ( हि० पु० ) तेल देवो।

तेलकूपी—मानभूम जिलेकी दामोदर नदीके किनारे अवस्थित एक ग्राम। यहाँ बहुतसे सुन्दर, सुदृश्य और सुवहलू प्राचीन देवमन्दिर हैं। ये सब मन्दिर कब बनाये गये हैं, उसका ठीक पता नहीं चलता। उक्त मन्दिरोंमें शिवमन्दिर ही अधिक है, इसके बाद विष्णुमन्दिर और तब सूर्यमन्दिर। इतने प्राचीन मन्दिर रहने पर भी गिलालेख अधिक देखनेमें नहीं आते। केवल ही जगह ही प्रखर देखे जाते हैं और वे भी १०वीं शताब्दीके प्रतीत होते हैं। राजा मानसिंहने भी कई एक मन्दिर निर्माण किये थे। दामोदर नदीकी बाढ़से यहाँके प्रायः

सभी ईंटोंके बने हुए मन्दिर बरबाद हो गये हैं। किन्तु प्रस्तरनिर्मित मन्दिरोंमें अधिकार्ग मटीके नीचे देव गये हैं। यहाँ भगवान् महावीरस्वामीके उद्देश्यसे बनाया हुआ एक अति प्राचीन जैनमन्दिर है, जिसे स्थानीय लोग वीरूपका मन्दिर कहते हैं। प्रायः सभी मन्दिर वर्णिकोंके यत्नसे बनाये गये हैं। प्रवाद है, कि राजा विक्रमादित्य दुर्गमके आता-पोवरमें म्वाल करनेके पहले यहाँ आ कर तेल लगते थे, इसीसे इस स्थानका नाम तैलकूपो या तैलकूपो पड़ गया है।

तेलगू ( हि० स्त्री० ) तैलंग देशको भाषा।

तेलङ्ग ( म० पु० ) १ तैलङ्ग देश। २ तैलङ्ग देशके मनुष्य।  
त्रिलङ्ग देश।

तेलवाड़े ( हि० पु० ) १ तेल लगाना, तेल झलना। २ विवाहकी एक प्रथा। इसमें शधु पक्षवाले जनवासेमें वरपक्षवालोंके लगानेके लिए तेल भोजते हैं।

तेलसुर ( हि० पु० ) चट्टग्राम और मिनहटके जिलोंमें होनेवाला एक जंगली वृक्ष। यह बहुत ऊँचा होता है। इसके डोरकी लकड़ी कड़ी और सफेदो लिए पीली होती है। इसके लकड़ी नाव बनानेके काममें आते हैं।

तेलहंडा ( हि० पु० ) मटीका बड़ा बरतन जिसमें तेल रखा जाता है।

तेलहंडो ( हि० स्त्री० ) मटीका छोटा बरतन जिसमें तेल रखा जाता है।

तेलहन ( हि० पु० ) वे बीज जिनसे तेल निकलता हो।

तेला ( हि० पु० ) तीन दिनरातका उपवास।

तेलिन ( हि० स्त्री० ) १ तेलको स्त्री। २ एक बरमाती कोड़ा। यह कोड़ा जहाँ शरीरसे छू जाता है, वहाँ काले पड़ जाते हैं।

तेलिनर ( हि० पु० ) काले रंगका एक पत्थर। इसके सारे शरीर पर सफेद बुँदकियाँ या चित्तियाँ होती हैं।

तेलिया ( हि० वि० ) १ जो तेलको तरह चिकना और चमकोला हो। ( पु० ) २ वह रंग जो काला, चिकना और चमकोला हो। ३ इसी रंगका घोड़ा। ४ एक प्रकारका ववूल। ५ एक प्रकारको छोटी मकली। ६ तेलिये रंगका कोई पदार्थ या जानवर। ७ सीगिया नामक विष।

तेलियापाई ( हि० पु० ) निवृत्त देणे ।

तेलियाकत्या ( हि० पु० ) एक प्रकारचा कत्या । इतका भोततो भाव आसि र मका होता हे ।

तेलियाकाकरणे ( हि० पु० ) कावापत्रने निसे यज्ञरा खदा र म ।

तेलियाकुमैत ( हि० पु० ) र घोड्या एक र ग । यह पहिले कावापत्र निसे भात या कुमैत होता हे । २ रमो र गका घोडा ।

तेलियागुणे—मथ्याम परमनेके पन्नांत एक परवना घोर जमो परमनेके मथ्य एक गिरिवज तेलियागुणे गिरिवजके उत्तारमें राजमहज घोर दक्षिणमें गज्जा हे । पूर्व समयमें गज्जा घोडे पात्रमन्ने गोडराज्यको वचानेके निसे यह ज्ञान काममें लाया जाता वा ।

तेलियागर्जन ( हि० पु० ) बर्जन देणे ।

तेलियापानो ( हि० पु० ) एक तरडका पानो त्रिमहा ज्ञाद बद्ध साग घोर बुग मान्य म पडता हे ।

तेलियासुरग ( हि० पु० ) तेलिसुरविठ देणे ।

तेलियासुहामा ( हि० पु० ) एक प्रकारचा बद्ध चिकला सुहामा ।

तेलो - हिन्दुधर्मको एक जाति त्रिमयी यचना शुद्धीमें होती हे । इन जातिके लोग प्रायः नारे मारतवर्षमें जेने हुए हे घोर मरतो, तिख घाति घेर कर तेन निकालनेका व्यवसाय करी हे । बुद्धदात्मके दिख ज्योम इन लामोका कथा कथा जन पहचन नहीं करने । इन जातिको उत्पत्ति के विवरमें मतभेद पाया जाता हे । मित्रापुरके तेलियो-वा कहना हे जि प्राचीन समयमें किमो मनुष्यके लोन पुत्र थे । लखके घोर बोई मर्यात् तो सो नहीं देवन बावन मरुपके पीडु थे मरते मस्य लखने लडकोमि जन्मे पन्नामें बराबर बराबर बांड लेनेको कथा । बावन पीडोके लोन समान भाव वा नहीं मरते, वमनिसे के लखको पैदावार को पावममें बांड लेनेको राको हुए । एवने तो लखको पत्तिया धे नीं घोर बच भइ-भूजा नामने प्रसिद्ध हुआ । पात्रतक मो इन जातिके लोग भाइमें पतिवा बनावे हे । लूननेके लखके जून निसे घोर मर बचकार कहलाने लमा । तोमनेके लखके बाइ दा ( गुनेदा ) निसे घोर यही तेमो नामके प्रसिद्ध हुआ हे । पानु यह कहा तक सख हे, कइ नहीं मरने ।

इन जातिने कईएक विभाग हे, जेमे—व्याहुत, भैसवार, जोगपुरिया जमोजिया मधुरिया राडोर, योवा प्लम लमरो पाटि । मिर्जापुरके तेमो व्याहुत, जमोजिया योवाप्लम घोर पाटिवाहा जेभोलुद्ध हे । ये लोव विशेषता भै स पर मान ज्ञाद कर पपनो कोकिया निर्वाह करते हे । बनारसमें व्याहुत जमोजिया जोग पुरिया, योवाप्लम, बनरमिया भैसवार भोजौरिया, गुना हरिया घोर गुणजानी जेभोके तेमो रहते हे । इनमें गुणजानी सबसे निष्ठत मममें जाते हे । जोगपुरिया तेमो तेनका व्यवसाय न कर देवन, टानका व्यवसाय करते हे । यह व्यावात्र राडोर परनामो हेको भैसवार योवार मधुरिया घोर मियाल तेमोका तथा बलीमें व्याहुत, जोगपुरो, जमोजिया, तुकिया घोर सेठवार तेलियाका नाम हे । इनमेंमे मैनपुरोके तेलिया ज्ञान सुरके परनामो, रमाहाबाद के सुरिया भूमो घोर लमितपुरके जातरा, मिर्जापुरके माइर भरनिया दक्षिणाहा गोरलपुरके मिर्जाकोतिया, भडौं बखे भडौंकेिया प्रताप मरके मरमपुरो तेमो सबसे धीठ माने जाते हे । ये लोव निष्ठत-मन्मथोके माघ बादान-यदान नहीं करते । पिता घोर माताको तपके काममें कम तोन पोटा तत्र जब भीडे लमन्थ नहीं कहरना तमा बिबाह स्थिर करते हे ।

एक जेभोके हिन्दुधर्मके समान इन जातिमें मो बिबाह नियम प्रचलित हे । व्याहुत तेमोका जोड़ कर प्रायः समो तेना बिधवा बिबाह करती हे । रबीर्यमने पडके को मरुजिया व्याको जातो हे जेकिन सुवचको लमर लमतक २० । २२ बयको नहीं होती तप तत्र लमका बिबाह मरु होता हे । विधवा बिधवा पपने देवरके वा बिबाह कर विमो हे । पुत्रय लव पपनो खोका चान चानन बाराव देवता पपना लखमें दूसरा हो बोई लुख पात, तो लवे स्वाम मजता हे । इन जातिके बोई बोई नाम इराब पोते तथा मखनो माय पादि फाते हे । इन लोवाके पुणेहित निषयकोक ब्राह्मण होते हे, जो तेलिया-शामन कहलाते हे । एव जेभोके हिन्दुधर्म के मा घे लोग मो सिध, वामो, दुगा पाटि देवदेविघोको पूजा बिद्या करते हे । इन जातिके लोग बड़े कहेए



होते, कौमा ही बनो होने पर भी उसकी कृपणता नहीं जाती। इस पर एक मगल भी प्रचलित है—“तेला खसम किया रुखा गार्थे।”

बंगालमें दो प्रकारके तैलजोषो या तैलो पाये जाते हैं—तेला और ‘कोलू’। इनकी उत्पत्तिके विषयमें दो प्रवाद प्रचलित हैं,—

(१) महादेव मर्षदा भ्रम लगा कर रहते थे, मद्यमा एक दिन उन्हें तैल लगानेको इच्छा हुई। इच्छा होनेके साथ ही उनके दाहिने हाथके पयोनेमें एक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ। यहो पुरुष तैलजोषे खादिपुरुष रूपनारायण या मनोहरपाल थे। शिपका गरण कर इन्होंने पहले पहल योन्त्र बनाया। कोई कोई ऐसा कहते हैं, कि पहले कोल्हमें टा घैल जोते जाते थे और उनको प्राणोमि चंधोटो नहीं लगाया जाता था। ‘कोलू’घोनि एक घैल जोमना और उसको प्राणोमि चंधोटो बांधना शुरू कर दिया, जिसमें ये पतित हो गये।

(२) एक दिन भगवतोंने खानडे समय जल्दो मन कर, उम उवटनमें दो पुरुषोंको सटि को पोर इनमें शोध हो तैल बना मानि। लिए कहा। एक पुरुष घटत हो जल्दो तैल बना कर ले पाया पोर दूसरेता उममें दूनी देर हो गई। भगवतोंने टैरोका कारण पूहा। तो उमने उत्तर दिया कि ‘पेपणोमें तखको भिगो कर तैल संग्रह किया था, इसमें देर हो गई।’ तो जल्दो पाया था, उसने कहा ‘मैंने पेपणोके नीचे एक छेद कर दिया था जिसमें सूत्राधारको तरफ तैल चापने चाप टपकता था, इसलिये जल्दो भा गया।’ भगवतोंकी क्रीध पा गया। सूत्र-निर्गमकी भांति जो तैल सजित हुआ है, वह उनके लिए लाया गया, यह बात उन्हें मद्य न हुई। उन्होंने जेपोल्ल व्यक्तिको अभिशाप दिया, जिसमें यह पतित हो गया।

इनमेंमें प्रथम व्यक्ति तैलघोके खादिपुरुष थे और द्वितीय व्यक्ति ‘कोलू’घोकि। बंगालमें ‘कोलू’ लोम तैलकार और विशुद्ध तैलो लोम तैलिक कहाने है। सिरी देवो। बंगालके तैलियोंमें दो प्रधान त्रेणो विभाग है—एक एका-दशतैली और दूसरा द्वादशतैली। इन त्रेणी-विभागोंके

मध्यमें एक प्रवाद है कि—खादि तैलो मनोहरपाल व्यापारी बन कर नाश टैलीमें पाय दृष्य वेचनेके लिए गये थे। इनको दो लिया थीं। मद्यमा एक दिन यह गर गुजर पाई कि मनोहर मर गये। इस मद्यरते पार्थ की प्रोका पर्योम पन्द्रहारादि जाग टिमें और विधवांग मद्य रहने लगी, परन्तु कनिशाको इस मद्योद पर विग्राम मरुपा पोर इनलिय यह मद्यपार्थी भांति रहने लगी। कुछ दिन बाद जब मनोहर घर लौटे, तो भ्रम पूर हो गया। इस टोने लियोंने गर्भ प्राप्त मद्यमा टा मद्यर चेलियोंमें भंड गई। यह ट पयोनी मद्यान एका-दशतैली कहलाने भन पोर कनिशाकी द्वादशतैली।

पूर्व-यज्ञालम पोर एक त्रेणो तैला रहते हैं, जो ‘घानी’ या ‘गाहुपा’ कहाने हैं। इनका कोन्ड ‘कोलू’घोनि कोन्डमें भिन्न प्रकारका होत है। उममें तैल उपकनेके लिए छेद नहीं रहता।

यज्ञानमें ‘भनातैलो’ पोर ‘कोलू’घोनि मिया अन्य तैलो ( एकादश, द्वादश खादि ) कोन्ड नहीं समाने। अभिशाप लोम पनात्र योन्त्रका मद्यपनी करते हैं। कोई कोई घौना या सुहुका रीजवार भी करते हैं पोर कोई कोई टाल-पापनका दूकान भी।

तैलियोंमें जो लोम तैल देवते हैं, वे सिर्फ तिनमें ही तैल निकालते हैं। अन्यथा करने पर जतिष्कृत क्रिये जाते हैं। ये लोम तैल चरनेके लिए दो प्रकारके कोन्डघोनिमें क्रियाका भी व्यवहार नहीं करते। पहले तिनका उरा उद्यानते हैं पोर फिर सुमनमानोमि कूटवा नेने हैं। ये तिनको कूट कर सिर्फ टिनका घनग कर देते हैं; उमके बाद तैलो लोम सगे एक बहे मद्योके घरतनमें डाल कर ऊपरमें गरम पानी छोड़ देते हैं। बारह घण्टे भोगनेके बाद सबेरे एक बापकी घोटनी-में घोटेते हैं। फिर उममें थोड़ासा गरम पानी छोड़ देते हैं पोर कुछ देर तक योही रहने देते हैं। उमके बाद ही पानीके ऊपर तैल घटने लगता है, जिसे कपडेमें उठा कर अन्य पावमें निचोड लेते हैं।

जो लोम ऊपर निचे घनुमार तैल बनवाते हैं, वे बंगालमें मच्छूद्र समझे जाते हैं। युक्तप्रदेशमें जो लोम उक्त प्रकारसे दूसरोमें तैल कुटवा कर तैल बनाते हैं, वे

भी चन्द्राम्ब तेलिबोधि खेठ माने जाते हैं। वे लोग चण्डेको विद्वह बौद्ध समझते हैं।

ब्रह्मकर्म खानमैदके कारण धोर भी चण्डेक अर्थात् पाई जाते हैं धोर लक्ष्मी बहुलको रिमी भी हैं, जिनमें परस्पर ब्याह-व्याहो नहो होतो।

दाक्षिणात्यमें सतारा जिलेमें तेलिबोधि दो विमान हैं—एक निड्रायत धीर घूमना मराठा। इन लोग मं परस्पर ब्याह-व्याहो वा खाना-योगा पादि नहो होतो। वे लोग तिल, मारिबल धोर चण्डे बौद्धे सेन निजामती हैं तथा तिल धोर चण्डे बोधा करती हैं। निड्रायत काम टेवताको नहो पूजते। अहम ब्राह्मण लोग इनके पुरोहित हैं। मराम्ब तेली मराठापुत्री हिन्दू हैं। खिड्वा गतोके विवाहकी रीति प्रायः कुम्बयोके समान है। वे लोग रणसला खोखो चार दिन तक नहो करी। इह जिलेके तेलीखोय सुरदेको गाकते हैं धोर इय दिनका चण्डोच मानते हैं। वे जातीय श्वनसाबके सिवा अन्य किसी प्रकारका गोब्रमार नहो करती।

पूजा जिलेके तेली ग्रामवारो सोमवारो परदेगी धोर खिड्वावत इन चार अर्थात् चिन्तित विमल हैं। ग्रामवारो गेर भोमवारो सेको लक्ष दो वारोंको खोई भी काम नहो करती। इन लोगका पाचार कुम्बिकी बोला है। परस्पर-खाना योगा वा व्याहो-व्याह नहो होतो। ब्रह्मकेके घर 'बाग' (बोहल) बसता है समो मङ्ग-परिच्छेदकारी है। खिड्वा पति सुन्दरो होतो हैं, माये पर धूम नहो लगातीं। वे लोग मारियन तिल, योगा वादाम (मू गकको) मरसो पादिका तिल निजा करती हैं। इनमें स्मार्त हैं तथा मन्थपति माधति पादि धरदेवताभो हैं। शैशोव ब्राह्मणगण इनका धोरो हिन्दू करती हैं। बधा जोर पर पांचवे दिन वे 'सद् पाई' (पठो) देकोको पूजा करती हैं। १२वें या १३वें दिन बधोका नामकरण होता है। रकोइयाने पक्षे लक्ष्मिकीका विवाह नहो होता धोर पुत्रकोका विवाह २०१२ वर्षकी अवस्थामें होता है। विधवाकोका धरजा भी इनमें प्रचलित नहो है। वे सुरदेको बसते हैं धोर इय दिनका चण्डोच मानते हैं। खिरामिन तिल-प्रकारके इनका जातीय व्यवसाय बिलकुल नहो

नहा है। पच से गाडी चलाते तथा खेतोबापो धोर मङ्गदूरो करती हैं। बहुतेसे मांस-मच्छो धोर मराम्ब मो दीते हैं।

पञ्चमदावाद जिलेको तेजोवाति कुम्बो जातिका पच समभो जाती है। तैलकारका व्यवसाय करनेके कारण जो मायद से पतित हुए जेमि। इनमें दिवाकर, दोन्वे, मायकबाङ्ग, खोबखे, मंगर, सेकन्दार, काठेबाङ्ग धोर वल्लु बज्जर—ये पाठ विमान हैं। इनमें परस्पर एक दूसरेसे भादो-व्याह नहो होता। वे लोग चण्डोके सिवा मराम्ब मद्दक लुङ्गती हैं, पर दाङ्गो धोर मूडे नहो लुङ्गती। इनका व्यवसाय पूजाके तेलिबोधि समान है। वे बौद्ध हैं धोर मोयो ब्राह्मण लोग इनका धोरोहिन्दू करती हैं।

माचोन हिन्दू-माछोमें तेलीके विपक्षमें इय प्रकार पाया जाता है। मनुष्य जितामें खिडा है—

"सूताकम्बवला केवेरे व थोमियम्।" (४,८४)

पर्यात् जो पदमारचमंसिख्यवशीभो है जो तिलादि बौद्धोसे तेल निजाक कर बैठते हैं पर्यात् तैलिक हैं, मन्थविधेता शीथिल धोर विद्याकी पायवे जो जौनिका िबाई करती हैं, लने दान सेनिका निये है। धारण—'इयसुवाकम चक इयककमोचक' (इय इय) पर्यात् इयसुवाकम वा मन्थविधेतारिं जो दोय है, यको दोय चककम वा तैलिकमें है।

वाङ्मयकम्बपितारिं खिडा है—

"खिड्वाइतिगोखे व रणा थोमिप्रभिरणम्।

इयमथ व मोच्यन सेमथिदिचसथा" (४२,६३)

पर्यात् पिण्ड, मिथ्यावादी, धार्मिक वा तैलिक, बन्दे धोर धोमनिख्यदी, इन लोगका पच न खाना धार्मिक।

विष्णुसंजितारिं इय प्रकार खिडा है—

"लक्ष्मीविधोमिचकींकिचकनियेवका" (३१,१६)

पर्यात् चमार, शीथिल, तैलिक धोर मच्छवोतकारी (धोको) इन लोगका पच धमक है।

तिल (म० सु०) इयपिद, एक राजाका नाम।

तेली बो (चि० खो०) तैल रचनेको जोडो प्याको, मसिका।

तेवट ( हि० स्त्री० ) सात टोर्घ अथवा १४ लघु मावाओं का एक ताल।

तेवन ( म० स्त्री० ) तेव भावे ल्युट। १ क्रीडा, खेल।  
२ क्लिकानन, प्रमोदकानन।

तेवर ( हि० पु० ) कुपित दृष्टि, क्रोधभरो नजर। भ्रुकुटी, भौंह।

तेवरो ( हि० स्त्री० ) १ ककड़ी। २ खीरा। ३ फूट।

तेवरा ( हि० पु० ) दूनमें वजाया हुआ रूपक ताल।

तेवरना ( हि० क्लि० ) १ भ्रममें पडना, मन्देहमें पडना।  
२ विस्मित होना, आश्चर्य करना। ३ मूर्च्छित हो जाना, बेहोश हो जाना।

तेवरी ( हि० स्त्री० ) त्वारा देखा।

तेवहार ( हि० पु० ) शौहार देखा।

तेवार ( तेवार ) मध्य भारतका एक छोटा ग्राम। यह जञ्जलपुरसे ६ मोल पश्चिम, बम्बईके रास्ते पर अवस्थित है। यहाँके अधिकांश अधिवासो पत्थर काट कर अपनी जोविका निर्वाह करते हैं। प्राचीन नगर करणवेलके ध्वंशावशेषसे तथा मन्दिरोंसे जो ये लोग पत्थर काट लाते हैं। इस गाँवके पूर्वमें बाल-सागर नामक एक सुन्दर बड़ा तालाब है। सोढ़ियाँ चौकोन पत्थर और लोहेकी बनी हुई हैं। तालाबके बीचमें एक छोटा होप है। उस होप पर एक आधुनिक मन्दिर विद्यमान है। गाँवके पश्चिम प्रान्तमें एक बड़े वृक्षके नीचे कारुकाय विग्रह बहुतसे छोटे छोटे पत्थरके खण्ड एकत्र हैं। उनमेंसे अधिकांश अच्छे दिखाई पडते हैं। और बहुतसे टूट फूट भो गये हैं। ये सब पत्थरके खण्ड करणवेल नगरके ध्वंशावशेषसे लाये गये हैं। इस ग्रामके दक्षिण-पश्चिम पाव कामकी दूरी पर प्राचीन करणवेल शहरका खण्डर अवस्थित है। एकत्र पत्थरोंमेंसे एकमें "वज्रपाणि" बुद्ध मूर्ति खोदी हुई है। वह एक चौकोन पत्थर पर उल्कोर्ण है। इसके पीछे "ये धर्म हेतु" इत्यादि लिखा हुआ है। चन्द्रातपके नीचे वज्रपाणि उपाविष्ट हैं। इनके बायें बगलमें वज्रधर मनुष्य मूर्ति और दहिने बगलमें हाथ जोड़े हुई एक मनुष्य मूर्ति नीचे सुटनेके बल बैठो हुई है। बोहमंठके नीचे एक लम्बा चौड़ी गिलान्तिपि है। इसके अलावा एक दूसरी प्रतिमा भी एक बड़े

पत्थर पर गीटी हुई है। शय्या पर एक पुरुष-मूर्ति मोड़े हुई है, जिसका दहिना घुटना ठठा हुआ है और उस पर चायां हाथ रखा हुआ है। दहिना हाथ मिरके ऊपर है। मूर्ति के चारों बगल बहुतसे मनुष्य मूर्तियाँ हाथ जोड़े खड़ा हैं। मिरके निकट हाथ जोड़े हुए एक स्त्री मूर्ति बंठी है और परेके नीचे पुरुष मूर्ति खड़ा है। इनके भी पीछे गिलान्तिपि दो पंक्तियाँ हैं किन्तु उनके अन्तर प्रायः लुप्त हो गये हैं। मोड़े हुई मूर्ति का आकार पुरुषका ही है पर भी शामके लोग उन्हें विपुरा देवी कहते हैं। और भी एक पुत्तलिकाकी प्रतिमा है। ये कुम्भोर पर चढो हुई चार हाथवान्ठो देवी मूर्ति हैं। स्थानीय मनुष्य "नर्मटा माई" नामसे इनकी पूजा करते हैं। जायट यह किमो प्राचीन मन्दिरकी गद्दाकी प्रतिमा हैं। इसके सिवा शिव, कृष्ण और भैरवाडिको मूर्तियाँ भी हैं। एक बड़ी गिला पर उलंगिनो गोपियोंसे विरो रङ्ग दंशोवदन कृष्णकी मूर्ति बसा हो खूबसे खोटी हुई है।

जैनोंके दिगम्बर सम्प्रदायकी आदिनायको मूर्ति का गिलाफलक भी विद्यमान है।

करणवेल और तेवार ग्राम बहुत प्राचीन कालमें इतिहास पुराणादिमें मगहर है। इन दोनों ग्रामका प्राचीन नाम विपुर नगर है, जहाँ किसी समय चेदि राजाओंकी राजधानी थी। कहा जाता है, कि महादेवने जिस जगह विपुरको मारा था, वही जगह विपुर नामसे विख्यात है। नर्मटाके उत्पत्ति-स्थलस्य प्रदेशमें पहले पौराणिक युगमें प्रबल पराक्रान्त है जयवंशके राजा राज्य करते थे। चेदिराज्य भी यहाँ तक विस्तृत था। महाभारतमें उपरिचर, शिशुपाल, भोसक आदिके नाम पाये जाते हैं। उपरिचर वसुदेव राजधानीका नाम महाभारतमें नहीं है, किन्तु शुक्ति नदीके किनारे अवस्थित था ऐसा लिखा है। कालक्रमसे चेदिराज्य दो भागमें विभक्त हुआ एक भाग महाकौशल कहलाया जिसका राजधानी मणिपुरमें थी। दूसरा भाग चेदि नामसे ही मगहर था और उसको राजधानी वर्तमान तेवारीवा विपुर नगरमें थी। जैमकोपमें विपुरनगरका दूसरा नाम चेदिनगरो लिखा है। चेदि नाम क्यों पड़ा इसका पता नहीं

धनता । कनिष्ठस्य मांशुमि अनुमान किया है, कि मन्त्रि  
पुर राजाको बहुतको विद्यादाके नामसे 'विद्याहरी' उच्य  
"बहु" "दोदम" "विने" "देव" शिक्षा व्याकरण हुआ है, किन्तु  
यह बुद्धि स मत मतो नही होता । जन्मे मन्त्रि उच्य-  
मोक्षा "योगिन्" मन्त्र मो. सिदि कहलाता है, किन्तु हम  
कीर्तिसे क्यामले "योगिन्" साक्षित मन्त्रका ही उच्य है ।  
संज्ञामारत पत्रमिथे काग काग है, कि मन्त्रिपुर कनिष्ठ  
राजके पञ्चम था । रत्नपुरके सिखालेखमें कच्छपुरीके  
राजा काकभ सुदयवाचिपति नामसे उल्लिखित हैं । कनि  
ष्ठमन्त्रि अक्षयुरि मन्त्रका मूल भक्तुसम्मान करसे हुए हम  
उपाधिसे इसे "कुक्षयुर" मन्त्रका उपाकर अनुमान किया  
है ।  
अनुपुरि रेको ।

मन्त्रि मन्त्रि नाममें यह भी बहुतसे सम्भावयेय बहू  
हैं, किन्तु सिवाके कोमोने उक्त स्थानसे फलर पादि  
ना कर प्राप्तेन कोर्ति का मिय कर जाना है । तोबा  
रके १० मोच पूर काकोनराय पत्रमें सिन्धुमामने एक  
गुहा है । यहाके शीम हम गुहाको कनियाका कर यहा  
करती हैं । हम मुहाके २०० फुटकी दूरी पर दो  
पहाडिकाचोंका सम्भावयेय विद्यमान है । अरु वरा  
मदेकी गाँई दीक्ष पढता है बेवम स्तंभकी पंक्ति पर  
की छत सो, यह पत्र नहीं हैं । इसके चारों ओर घूम कर  
एक छोटे पहाड़ सरोखे दस स्तूपके निचट जाना  
चोता है । इसका ऊपरी भाग समतल, प्रथम तला  
ई टोंके पाण्डुरदिन है । यह स्तूप बड़ा इतिहासके  
नामसे मगधर है । यहाको ईडे नवमग ६ फुट  
सर्की चौको हैं ।

पश्चात्त छोटे छोटे पहाडोंके ऊपर भी वही तरह  
बहुत सा ईडे की दीख कर अनुमान किया जाता है, कि  
एक समय यह सब जग प्राचीर हाय मन्त्रवृत्तेके विरा  
हुया था । एक जगह छोटे दुर्गका सम्भावयेय भी  
दीर्घमि जाता है । इसको दोबारे छोटे छोटे पत्थरके  
क शीमे बनी हो । इसके ताम ओर बगवन्ना नामको  
छोटे नदी चारों ओर घूम रही है । अटोके किनारे  
पहाडका उच्छा दुर्गम है । यहा एक बड़ी प्रतिमा है  
जिसके तीन सप्टक हैं । हर एक सप्टक पर बड़े  
बड़े टोपे हैं । मन्त्रि मन्त्रि तोग तोग पाखे हैं ।

बाजे मुक्को विद्या सत्यंया रहो है । प्रतिमा सिक्क  
१ फुट का थी है ओर सप्टका निम्नोम (बमर तब) दूट  
फुट गया है । इसके समोप एक विष्णोके मन्त्रमि  
अन म भित हो कर एक छोटा तासाध लीका जो गया  
है । यह सिक्के निचट एक पवित्र पुष्करिणी है ओर  
समके निचट मो प्यरमूर्ति का पोट पर लक्ष्मी सिद्धि  
येप चरचमे "ईमानसि व मूर्ति कपडित" लिखा  
हुया है ।

तेवार ( वि० वि० ) १ तोग परत किया हुआ, तोग कप  
टका । २ बिषला एक लाव तोग प्रतिमा हो । १ जो  
हो कर हो कर फिर तोसरो बार किया गया हो ।  
तेवारना ( वि० जि० ) १ तोग लपेट या परतका करना ।  
२ मूर्ति पादि दूर करनेके लिये जिना कामका तीवरी  
बार करना ।

तेवार ( वि० पु० ) कीरर रेको ।

सिवा ( वि० पु० ) १ शोक गुप्ता । २ पञ्चद्वार, शिको ।  
सिधो ( वि० वि० ) १ शोध जिस्मि गुप्ता हो । २ पणि-  
मानो बम हो ।

तोताकोस ( वि० वि० ) ते टाकीव रेको ।

तेसोस ( वि० जि० ) ते शोध रेको ।

ते ( च० पु० ) १ मोमसा निचटण, फौसका । २ पूर्ति,  
पूरा करनेको किया । ( वि० ) १ जिस्का फौसका  
हो गया हो । २ समाप्त, जो पूरा हो चुका हो

तेवासन ( स० पु० ) तिक्कण शब्दों गोसापण तिक्क-  
णम् । तिक्कण शब्दिके म शब्द ।

तेवासनि ( स० पु०-ली ) तिक्कण शब्दों गोसापण बुवा  
तेवासनि-क्क । तिक्कण शब्दिके बुवा म शब्द ।

तेस ( स० पु० ) तिक्कण भाव तोतातन, चरपराहट ।

तेसवासन ( स० पु० ) तोसवास शब्दों मोशापण । तोस-  
पण । कत्तादिभ्यः ण् । वा १।१।१० ) तोस्य शब्दिके  
म शब्द ।

तेस्य ( स० ली० ) तोस्यका भाव तोस्य कण् ।

१ तोस्यता, तिजो । २ चोरेता, कडाई, उच्छती ।  
३ कूरता, निडुरता वैरचना ।

तेसाना ( वि० पु० ) उरकाना रेको ।

तेसरा ( च० ली० ) तिक्कण भाव तिक्कण-पणम् ।  
तिक्कणता, प्रकरता तीक्ष्णता ।

तैजसित्व ( मं० स्त्री० ) एक प्रकारको छोटी याणा ।  
 तैजस ( मं० स्त्री० ) तैजसी विकारः तैजस-पण ।  
 १ घृत, घी । २ धानु द्रव्यमात्र । ( मन्त्र ५।१।११ ) ३ नीच  
 विशेष । ( भारत ८।४६।१०३ )

४ मास्वीकृत रजोगुणोत्पन्न एकादशेन्द्रियादि ।  
 "सात्विक एकादशकः प्रवर्तते वैकारादृष्टकारणम् ।  
 भूतादिस्तन्मात्रः सतामसस्तैः सहादुभयम् ॥"  
 ( सांग्रहका० २५ )

वैकृत ( अर्थात् सात्विक अहङ्कार ) ने एकादशक  
 ( अर्थात् एकादश इन्द्रिय ), तामसमे तन्मात्र और तैजसमे  
 दोनों दो प्रवर्तित होते हैं । अहङ्कारका जब सात्विक  
 अंश प्रबल होता है, तब उसको वैकृत संज्ञा मिलती  
 है, फिर उसे सात्विक अहङ्कार कहा जा सकता है ।  
 इस वैकृत ( सात्विक ) अहङ्कारसे ही एकादश इन्द्रियों-  
 को उत्पत्ति हुई है । इनमेंसे इन्द्रियोंमें मत्वांग  
 अधिक होनेके कारण वे अपने विषयको ग्रहण करनेमें  
 समर्थ होते हैं । तामस भूतादिमे तन्मात्र दृशा है  
 अर्थात् जब तम द्वारा सत्व और रजः अभिभूत होता है,  
 तब तम अहङ्कारको तामस कहते हैं । साम्याचार्योंने  
 इस तामस अहङ्कारको भूतादि कहा है । भूतादिमे  
 पञ्च तन्मात्रकी उत्पत्ति होती है । तैजसमे इन दोनों  
 ( अर्थात् एकादश इन्द्रिय और पञ्च तन्मात्र )-का प्रयत्न न  
 हुआ है । रज द्वारा जब सत्व और तम अभिभूत होता  
 है, तब वह अहङ्कार ही तैजस संज्ञा पाता है । पूर्वोक्त  
 सात्विक अहङ्कार जब वैकृत ही कर एकादश इन्द्रियों-  
 की उत्पन्न करता है, तब उसे तैजस अहङ्कारकी महा-  
 यता लेनी पड़ती है । सात्विक निष्क्रिय है, तैजस  
 अहङ्कारके साथ बिना मिले उसमें कार्य करनेकी शक्ति  
 नहीं आती । इसलिये तैजसके साथ मिल कर एका-  
 दश इन्द्रियोंकी उत्पन्न करता है । इसी तरह भूतादि  
 तामस अहङ्कार भी निष्क्रिय है, वह तैजसके साथ  
 मिल कर तन्मात्रोंकी उत्पन्न करता है । इसलिये  
 तैजसमे ही इन दोनों ( एकादश इन्द्रिय और पञ्च  
 तन्मात्र ) की उत्पत्ति होती है । तैजस ही एकमात्र  
 इनकी उत्पत्तिमें कारण है । तैजसको सहायताके  
 बिना सत्व और तम कोई भी कार्य नहीं कर सकते ।  
 ( सांग्रहका० )

५ पराक्रम । ६ शरीरकी यह शक्ति जो आश्राकी  
 रस और रमकी धातुमें परिणत करती है ।

( पु० ) ७ सूक्ष्म शरीर व्यष्ट परिणत चैतन्य । ( तन्मात्राणां )  
 ८ समन्वित एक प्रयत्नका नाम । ( प्रसादपु० ११ प० )  
 ९ अष्ट तैजस चर्मनैवामा चोद्गा । १० भगवान् । ११ एक  
 प्रकारको गारारिक शक्ति । यह शक्ति आश्राकी रसमें  
 और रमकी धातुमें परिणत करता है । ( वि० ) १२ तैज-  
 सव्यामी, तजमे उपाय ।

तैजसावसर्त्तनी ( मं० स्त्री० ) आश्राकी सहायक शक्ति,  
 शक्ति जो तैजसको सहायक करती है । सूक्ष्म, चोटो माना  
 गन्तव्यको शक्ति ।

तैजसी ( मं० स्त्री० ) शक्तिप्रियता  
 तैतल ( मं० पु० ) शक्तिभेद, एक शक्ति का नाम ।  
 तैतिष्ठ ( मं० स्त्री० ) तित्तिष्ठा शीलमण्य, तित्तिष्ठा एकादि  
 त्वात् ष । तित्तिष्ठाशोभ, समाशान ।

तैतिष्ठ ( मं० पु० स्त्री० ) तित्तिष्ठ शक्ति, गोष्ठापस्य  
 गर्गा शक्ति । तित्तिष्ठ शक्ति संश्रय ।  
 तैतिर ( मं० पु० स्त्री० ) तैत्तिर शक्ति मापुः । तित्तिर  
 पत्नी, तातर । २ शक्ति, गोष्ठा ।

तैतिल ( मं० पु० ) १ शक्ति, गोष्ठा । ( स्त्री० ) २ शक्ति  
 करणोंमेंसे शोभा करण । कर्मित उद्योगिके मतमें इस  
 करणमें मनुष्यका जन्म होनेमें यह कर्माकुशल, रूपवान्,  
 यत्ना, गुणो, सुगोल शोभा कामी होता है । ३ शक्ति ।

तैतिलन ( मं० पु० ) शक्तिप्रवर्त्तक शक्तियोंका प्रवर्त्तक ।  
 तैत्तिर ( मं० स्त्री० ) तित्तिरिणा मन्मथः तित्तिर-अष्ट ।  
 अयुदात्तादे रम् । वा १।२।४४ । १ तित्तिर पत्नी, तातर ।  
 २ शक्ति, गोष्ठा ।

तैत्तिरि ( मं० पु० ) १ कुकुरवंशके एक राजाका नाम ।  
 २ शक्तिभेद, अष्ट शक्तियोंके प्रवर्त्तक एक शक्तिका  
 नाम ।

तैत्तिरोय ( मं० पु० ) तित्तिरिणा प्रोक्त शक्तियुक्ते क्व ।  
 तित्तिरोय प्रोक्त समस्त शास्त्राध्यायो । यह शब्द बहु-  
 यचनान्त है ।

इसके सम्बन्धमें भागवतादि पुराणोंमें इस प्रकार लिखा  
 है—एक बार वैशम्पायनने ब्रह्महत्या की । उसके प्राय  
 श्चित्तके लिए उन्होंने अपने शिष्योंको यज्ञ करनेकी आज्ञा

हो धोर बभ गिया तो यत्र बरनेके लिए प्रस्तुत हो गये, पर यात्रनदन्व प्रस्तुत न हुए। इस पर बैगम्या यन्ने कहा हुम हमारी गिन्यता छोड़ दो। यात्रनव प्रने 'बै' का हो 'होना' यह कह कर जो कुछ उनसे पढ़ा जा सक सम्भव दिया। पन्थाय्य सङ्घपात्रिणि तोतर बन कर उस बमनको चुग लिया। इसी कारण उनका नाम तैत्तिरोय पड़ा। बहुरेंद पन्थने दिष्टुठ विरथ देयो। २ इसी शाखाका उपनिषद्। यह तीन मार्गोंमें विभक्त है। पहली भागका नाम स हितोपनिषद्। दूसरी भागका रथ धोर पद्यैतनाद मन्त्रयो वार्ति है। दूसरी भागका नाम पानन्वन्को धोर तोमैका बहुबन्को है। इन दोनों कथित मार्गोंको वाच्यो उपनिषद् भी कहत है। तैत्तिरोय उपनिषद्में केवल ब्रह्मविद्या पर जो विचार नहीं किया है, बल्कि मृत्ति या ति धोर इतिहास व यन्त्रो भी बहुत सो वार्ति है। इस उपनिषद् पर स करायं का बहुत पण्डित मायत है।

तैत्तिरोयक ( स० पु० ) तैत्तिरोक काबे कन्। तैत्तिरोय शाखाका अनुयायो वा पढ़नेवाला।

तैत्तिरीय ब्राह्मण ( स० पु० ) ब्राह्मणसुबेदोय ब्राह्मण। मिथ मिथ प्रकारके सपुत्रदेयसि पूज है।

तैत्तिरोया ( स० श्लो० ) तित्तिरिवा प्रोवा कन् टाप। यज्ञ-बेदको एक शाखाका नाम। यज्ञरेंद देयो।

तैत्तिरोयारण्यक ( स० पु० ) तैत्तिरोय शाखाका आरण्यक पद्य। इस पद्यमें बानप्रस्थोंके लिए उपदेश है।

तैत्तिरोयोपनिषद् ( स० श्लो० ) उपनिषद्भेद, एक उपनिषद्का नाम।

तैत्तिरि ( हि० पु० ) तैत्तिर देयो।

तैत्तिर ( स० वि० ) निपत, मिथुन सुकररं।

तैत्तिरतो ( हि० श्लो० ) निपुति, सुकररं।

तैत्तिरुक् ( स० श्लो० ) तित्तिरुकेन स स्मृत कोपवायात् पच्। १ तित्तिरुके स स्मृत व्याख्यानदि, यज्ञ व्याख्यान बिलमें हमसी दो गई हो। २ तित्तिरुकेविद्या, हमसी का रक।

तैत्तिरि ( स० पु० ) तित्तिरिभक् पच्। नेत्ररोग भेद, पापको एक विमारी। श्लिष्ट देयो।

तैत्तिरि ( स० श्लो० ) तैत्तिरो रोगोऽप्याह कन्। तित्तिर रोपुक्, ब्रिचको तित्तिर रोप दुका हो।

तैया ( हि० पु० ) सडोका छोटा बरतन। इसमें छोपो कपड़ा धावनेके लिए र व रखते हैं, पहर।

तैवार ( स० वि० ) १ दुबस्त, ठोका, मंड। २ छपत, तत्पर, सुस्तीद। ३ प्रस्तुत, मोडूद। ४ ब्रह्मसुष्ट, मोटा ताजा।

तैवारो ( हि० श्लो० ) १ दुबस्तो, २ तत्परता, सुस्तीदो। ३ शरीरको सुष्ठता, मोटाई। ४ समारोह, हुमनाम। ५ सजावट।

तैर ( स० श्लो० ) तोरे भवा पच्। कुण्डल, हुमना।

तैरको ( स० श्लो० ) तोरे नमति नम ड, फाबं पच फ्रिवां मोरादित्वात् कोय। चुप नियेय, एक प्रकारका चुप। इसके पयाय—त रथ, तैर, कुमोको धोर राजद। इसके मुप—यह विधिर तिज, ब्रह्मनायक धोर पद्य पच दे है।

तैरना ( हि० श्लो० ) १ पानोके ऊपर उहरना, उतराना। २ शरीरका पय स जानन कर पानोमें बनना, प रना तरना।

तैरक ( स० श्लो० ) तिरिवादिद तिर्यक् पच तन्वात् तिरवादेश। तिर्यक् आति मन्त्रयोय।

तैरार् ( हि० श्लो० ) १ तैरनेको शिवा। २ तैरनेके बद्धमें मित्तनेवाला बन।

तैरक ( हि० वि० ) तैरनेवाला, जो पच्छो तरक तैरना जानता हो।

तैराना ( हि० श्लो० ) १ तैरनेका नाम बियो वृषने के बराना। २ हुमाना, बमाना, मोटना।

तैरं ( स० श्लो० ) तोरिं दोपते कायं वा व्युद्घादित्वात् पच्। १ यह कथ जो तोरंमें किया जाय। २ तोरंमें देनि योच्य। ३ तोरं मन्त्रयो। ४ यह प्रयादि जो तोरं करुप किसी दूसरे जानने जाता है।

तैरिं ( स० श्लो० ) तोरिं सिद्धान्तविषय निज पद्यति सिदादि क्त। १ तीरं सिद्धान्तमिथ, याज्ञकार कथित कथाद पादि। तोरिं श्लिष्ट कच् वा। सिद्धान्तमिथ, जो सिद्धान्त जानता हो। तोरिं मन् ठच्। ३ तोरिं भव, जो तोरिंमें उत्पन्न हो।

तैर्यं ( स० श्लो० ) तोरं पद्घादित्वात् पच्। तोरं बमो पादि, जो तोरंके निरुत हो।







किरातित्त ( चिरायता ), तिनिग, विभीतक, नारिकेल, कोल, गोलु जवन्तो पियान, कर्बंटा, सूर्यवक्त्रो, त्रपुप, एर्वाचिक, ककामिक, कुष्माण्ड आदिका तैल मधुर वायु और पित्तको शान्त करनेवाला, श्रौतवोर्य, चक्षुके लिए अहितकर, मन्सूत्रजनक और अग्निमान्यकर होता है। मधुक, गम्मारो और पलाशका तैल मधुर, कषाय और कफ पित्तको शान्त करनेवाला है।

तुरवक और भजातकका तैल—उष्ण, मधुर, कषाय, पोष्टिमे तित्त, कटु एवं कुष्ठ, मेद, मेद, और कृमिका नाशक तथा कर्ष्व और आग्नेयभागके दोषोंको दूर करनेवाला है।

सरल, देवदाक, गण्डोर, शिंसपा और अगुरु इनके सारभागका तैल—तित्त, कटु, कषाय, दूषित व्रणोंका शोथक तथा कृमि, कफ, कुष्ठ एवं वायुको शान्त करनेवाला है।

सुम्बो, जोषाम्ब टन्तो, द्रवन्तो, श्यामा, समला, नालिकम्पिन्न और अङ्गिनोका तैल—तित्त, कटु, कषाय शरीरके अधोभागके दोषोंका नाशक तथा कृमि, कफ, कुष्ठ और वायुको शान्त करनेवाला एवं दूषित व्रणोंका संशोधक है।

यवतित्तका तैल—सत्र दोषोंको शान्त करनेवाला, ईषत् तित्त, अग्निदाहिकर, लेह्यन, पथ्य, पवित्र और रसायन है।

एकैपिका (वक्पुष्प)-का तैल—मधुर, अति शोथल, पित्त शान्तिकर, वायुप्रकोपक और श्लेष्मावर्हक है।

आम्बवोजका तैल—ईषत् तित्त, अति सुगन्धित, वात श्लेष्माशान्तिकर, रुच्य, मधुर, कषाय और इसके रसका भाति अतिशय पित्तकर है।

जिन फलोंका तैलो का उल्लेख किया गया है, वे फल भी तैलकी तरह वायुशान्तिकर हैं। सब तैलो में तिलका तैल ही उत्कृष्ट है। तैलके सहस्र कार्यकारो और उभो प्रकार सुगन्धित होनेके कारण ही अन्यान्य तैलोंमें तैल स्वोकार किया जाता है।

वाग्भटका कहना है, कि जिस चीजसे जो तैल उत्पन्न होता है, उसमें उस चीजके गुण विद्यमान रहते हैं। इसलिए तैलोंके गुण नहीं लिखे गये हैं, उनके

गुण उपादान-कारणके सहस्र समझ लेना चाहिए। शरीर पर तैल लगानेसे शरीर सुलायम रहता है, कफ और वायु नष्ट होते हैं, धातु पुष्टिकर होती है, तैल शीर वर्ण प्रमन्न रहता है, पैरोंके तलवे पर तैल मलनेसे खूब नींद आती है, आखोंकी तरावट पड़चती है और पादरोग नष्ट होता है; परन्तु कफरोगोंके लिए यह अनिष्टकर है। शरीरमें तैल मल कर स्नान करनेसे बल बढ़ता है। लोम-कूप एवं शिराओंके मुखमें तैल प्रविष्ट होनेसे नाड़ी तुम रहती है। तैल-द्वारा मन्सूत्रको भोगा रखनेसे शिर शूल, मांस-लोहित और गंजरोग नहीं होता, प्रत्युत केश घने, मजदूत और काले होते हैं तथा इन्द्रियां प्रसन्न और सुख-युक्त रहता है। कानमें तैल डालनेसे कर्णरोग नष्ट हो जाता है। मर्दन वा लगानेके लिए सरसोंका तैल ही सबसे उत्तम है।

तैल-पक्क खाद्यके गुण—विदाहो, गुहपाक, परिपाक-में कटु, उष्ण, वायु और दृष्टिके लिए अहितकर, पित्त-कर एवं त्वक्-दोषोत्पादक है। तैलपक्क मांस सुखप्रिय, रुचिकर एवं लघुपाक होता है।

तैल जितना पुराना होता जाता है, उसमें उतनी ही गुणीकी वृद्धि होती है। ( भावप्र०, सुश्रुत, द्रव्यगु० )

प्रातःस्नान ( सूर्यादयसे पहले ), व्रत, आद, हादश और ग्रहणके दिन तैल नहीं लगाना चाहिए।

‘प्रातःस्नाने त्वे प्रादे द्वादश्यां प्ररुणे तथा।

मद्यलेपसमे तैले तस्मात्तैलं विवर्जयेत् ॥’ ( कर्मलोचन )

उक्त श्लोकमें तैलका निषेध किया गया है। तिल-तैलपर, अर्थात् पूर्वाक्त कार्योंमें तिलका तैल नहीं लगाना चाहिए।

छत, सर्पपका तैल और पुष्यवासित तैल तथा पक्क तैल शरीर पर न लगाना चाहिए, क्योंकि इन तैलोंका लगाना दोषावह है। ( तिथितत्त्व )

बार विशेषमें तैल ग्रहणका फल—रविवारको तैल लगानेसे हृदयका विनाश होता है, सोमको कीर्तिलाभ, मङ्गलको मृत्यु, बुधको पुत्रलाभ, वृहस्पतिवारको अर्थ नाश, शुकवारको शोक और शनिवारको तैल लगानेसे दोर्घायु प्राप्त होती है। ( उद्योतित्त्व )

घो मलनेकी अपेक्षा तैल मर्दन करनेसे दु गुना फल होता है।





बैर उक्तो मोक्षमा कर देती है। योग्य करके जो कुछ हमें खानेको दिया जाता था उसे जो वे खुशो से खा लीते थे। चायेशाममें पनेक धार्मिक मनुष्य पाया करते हैं। एक दिन किसी बसो व्यक्तिसि २० अरर मोनेका एक कक्षक स्वामोकोके वासमें पटना दिया। कामोके मुग्धोने उने टेक कर मोचा कि बटि स्वामोको गराक विना कर वैरोय कर दे तब यह कक्षक हम मोनेके हाथ लग जाय। यह जोष कर लक्ष्मी स्वामोको को अरु होनम गारा विना दो, बिन्नु हमने स्वामोको का कुछ मो पलिट न हुआ। दोहे इन्होंने कथ्य अपने हाथने कोनेका कक्षक खोम कर उन दुष्टोको दे दिया।

स्वामोको मर्बटा नमे कुमते खिरती है। एक दिन पुनिस लक्ष्मी पक्षक कर मत्रिहुंटेके नामने ली गई। माहबने न गा कुमनेने मना बिधा पौर कथा 'यदि तुम कपडा नहीं पहनेते, तो हम अपना काना तुम्हें विना हेंगे।' इन पर स्वामोको बोले 'पहने तुम हमारा काना पाओ, तब हम तुम्हारा खायेंगे।' माहबने कह पूछा कि तुम्हारा काना क्या है? तब स्वामोको उन्को समय मन्त्र जात कर उसे खाने ली। यह मन्त्र कर माहबको घाल हुआ पौर उन्कोने स्वामोकोको डोड़ कर बंधकता मन्त्रक बरनेको अनुमति हो।

दयानन्द नरवतीने बिबो समय चायेशाममें पाकर हिन्दू ईशदेविदोके समारंभका प्रमाण देने हुए तदा पुरा बादिको निम्न करती हुए जनताको अपने मतमें पण्टा लिया पौर "एकविवाहितावद्" यह मत मर्बसाधारणमें प्रचार किया। पन् यह हुआ कि बहुतने जोय मन्त्र गुप्यको नाई अपने घरको निम्न करने ली। दिशो दिन दयानन्दका एक कुट होने लगा। बाट स्वामोकोके मिथो न यह क बाट हमें कह सुनाया। इन पर स्वामो कोने एक कामधे टे, कहुं पर कुछ निय कर उसे अपने मिथ मन्त्रमहाद काकुने हाथ दशानन्दके पास भिन्नया दिया। कामत्र पढ़ कर दयानन्दने हमो समय कामो धाम छोड़ दिया। कामत्र पर जो कुछ लिया था वह दयानन्द पौर स्वामोकोके पतिरिद कोई नही ज्ञान बलता था।

१८०२ गतान्दोमें कामोशामने पक्षकको गर्भमें लेकर स्वामोने "बाट" नामक एक पत्रका विवनिष्ट कायित बिदा। हमके कुछ दिन बाद इन्कोने पक्षककोके लपर, जिन पात्रममें ये रहते थे उन पात्रममें, बहुत ममारोवने के निष्ठुंखर नामक एक बुरी विवनिष्टको पलित्त को। मन्त्रप्रसाद काकुने लक्ष्मी केवक निवृत्त हुए। इन पात्रममें स्वामोकोका एक मूर्ति भी बिधमान है। कामोशामो महा शामोनेय उन मूर्ति का मन्त्रपूर्वक दण्ड न करती है।

महाका मैनिष्ठुवामोने नेहकाव करनेके १२ दिन पहने मन्त्रु का ज्ञान अपने भिक्का ले कह दिया था। जिन घरमें ये रहते थे, उन घरके ममी द्वार बन्द करार कर पाप समाधिप्य हुए थे। कामपूर्व होने पर लक्ष्मीके पक्षमें टरबात्रा खोला गया पौर पाप बाहर निकल कर शोमसन पर बैठे। दोहे इन्कोने पात्राको परलक्ष्मी मोन कर शरोरत्वाय किया।

१८०८ प्रकाशोमें पोषणका एकादशोके दिन लक्ष्मी समय स्वामोकोने अपना कनेकर धाला था।

इनका बनाया हुआ "महाकाव्यकावलो" नामक एक पत्र मिलता है जिसमें निम्नलिखित कपदेयपूर्व विषय लिपे हुए हैं—

बन्धनमोचकाव्य, विहविन्दुकाव्य, कपदेयकाव्य, जोष, इष्टीकाव्य, मन्त्रकाव्य, जीवामुचकाव्य, शानुभूति काव्य, ममाविवाक्य, पष्ट लक्ष्मकाव्य, पु निष्ठुलक्ष्मकाव्य, खोनिष्ठुलक्ष्मकाव्य, नपु लक्ष्मकाव्य, च, लक्ष्मकाव्य काव्य, पन्नाकाव्य पौर बिदेयकाव्य।

स्वामोकोने दीर्घजीवन मोन कर जीवामुक्ति प्राप्त किया। जो सुख पुत्रय थे। मिथयक लक्ष्मी रिताय बिगई-यारक ज मा मानते थे। इन महापुत्रयक स्वकपया कर्न कामा पन्नाथ है। इनको छत्राने कितने दो मोनोंमें दुमाथ शीतोके पत्रिके कुटकारा पाया है। जिनमें दो मोनेने इनका मिथयक नाम कर अपनेको कथ्य लमभा है।

इनके मिथयक (इदेयको नाई इनका मो नाम कनेके अरथ किया करती है।

तैलकोरिका (क० खो०) तैल कोरपनि पुर-लक्ष्मी

पुष्यो साधुः । तैलपायिका, तैलिन नामका कीडा ।  
तैलचौरिका ( स० स्त्री० ) तैलस्य चौरिकेव । तैलकीट,  
तैलका कीडा ।

तैलत्व ( स० स्त्री० ) तैलस्य भावः तैलत्व । तैलका भाव  
या गुण ।

तैलद्रोणी ( स० स्त्री० ) तैलपूर्णा द्रोणी मध्यलो० क० ।  
प्राचीन कालका काठका एक प्रकारका बड़ा पात  
जिसकी लम्बाई आदमोकी लम्बाईके बराबर हुआ करते  
थी । इसमें तेल भरकर चिकित्साके लिये रोगी लिटाए  
जाते थे और सड़नेसे बचानेके लिये मृतशरीर रखे जाते  
थे । इस पातमें लेटे रहना—वातरोग, व्याधि, कुष्ठ-  
रोग, पङ्गु, वाघियं मिनमिन, गदगद, हृन्वङ्गस्तथ्य,  
पृष्ठप्रचलित, पवन, श्रावकम्प, श्रीवाभङ्ग, अपतन्त्र, ज्वर,  
रुधिर, मूत्रकृच्छ्र और वस्ति आदि रोगोंमें हितकर है ।  
राजा दशरथकी मृत्यु होने पर उनका शरीर कुछ समय  
तक तैलद्रोणीमें रखा गया था । तैलद्रोणीमें मृत शरीर  
रखनेसे जल्दी सड़ता नहीं ।

“तैलद्रोण्यां तदामारवाः संवेश्य जगतीपतिं ।

राहुः सर्वाण्यप्यादिष्टाश्चक्षुः कर्माण्यनन्तरभू ॥”

( रामा० २।१६।१४ )

तैलधान्य ( स० स्त्री० ) तैलोपयोगि धान्यं । तैलोप-  
योगी सतुष शस्य, धान्यका एक वर्ग जिसके अन्तर्गत  
तैलों प्रकारको सरसों, दोनों प्रकारको राई, खस और  
कुसुमके बीज हैं ।

तैलनिर्यास ( स० पु० ) गन्धराज ।

तैलनी ( स० स्त्री० ) तैलकृष्ट, खली ।

तैलपक ( स० पु० ) तैलं पिवति पाक । तैलपायिका,  
तैलिन नामका कीडा । तैल चुगानेवाला दूधरे जन्ममें  
तैलपायिका-योनिमें जन्म लेता है ।

तैलपर्णक ( स० पु० ) तैलोक्तमिव पर्णं यस्य कप ।  
यन्व्यपर्णं वृक्ष, गठिवन ।

तैलपर्णिक ( स० स्त्री० ) तैलं तैलयुक्तमिव पर्णमस्य  
वा तिलपर्णी वृक्ष उत्पत्तिस्थानत्वेनास्यस्य ठन् । १ हरि-  
चन्दन, लालचन्दन । २ चन्दनमीद, एक प्रकारका  
चन्दन । पर्याय—श्रीखण्ड, चन्दन, भद्रश्री, तैलपर्णी,  
गन्धमार, मलयज और चन्द्रयति । ३ वृक्षविशेष एक  
प्रकारका पेड़ ।

तैलपर्णी ( स० स्त्री० ) तिलपर्णं वृक्षे जातः तत्र जातं  
इत्यण् ततो ङीप् । १ चन्दन । २ श्रीवाम, मलईका  
गोद । ३ मिन्नक, शिमारम या तुक्क नामका गन्धद्रव्य ।

तैलपा ( स० स्त्री० ) तैलं पिवति पा-क टाप । तैल-  
पायिका, तैलका कीडा ।

तैलपायिका ( स० स्त्री० ) तैलं पिवति पा-ण्डुक् टापि  
अतइत्वं । कोटविशेष, भोगुर, चण्डा । पर्याय—योणो,  
तैलचौरिका, तैलपा, तैलाम्बुका और खला धारा ।

तैलपायो ( म० पु० ) तैलं पिवति पा-णिनि । तैल-  
पायिका, भांगुर ।

तैलपिञ्ज ( स० पु० ) तिलपिञ्ज, बंभा तिलवृक्ष ।

तैलपिपोलिका ( स० स्त्री० ) तैलप्रिया पिपोलिका ।  
पिपोलिकामेद, एक प्रकारकी चोटी । पर्याय—उदया  
और कपिजाङ्गिका ।

तैलपिष्टक ( स० पु० ) तैलस्य पिष्टकः । तैलकृष्ट,  
खली ।

तैलपीत ( स० द्वि० ) पीतं तैलं येन, समासे पर-  
निपातः । पीततैलक, जिसने तैल पीया हो ।

तैलफल ( स० पु० ) तैलप्रधानं फलं यस्य । १ इडुदो ।  
२ विभीतक, बहेडा ।

तैलभाविनी ( स० स्त्री० ) तैलं भावयति सद्गन्धं  
करोति भू-णिच्-णिनि ङीप् । जातोपुष्प वृक्ष, चमेलोका  
पेड़ ।

तैलमर्दन ( स० स्त्री० ) तैलस्य मर्दनं । शरीरमें तैल  
लगानेकी क्रिया ।

तैलमाली ( स० स्त्री० ) तैलाना माला समूहो यत्र ततो  
ङीप् । वर्त्ति, तैलकी बस्ती, पलोता ।

तैलम्पाता ( स० स्त्री० ) तिलपातोऽस्यां वर्त्तते तिलपात-  
ञ् सुम् । स्वधा ।

तैलयन्त्र ( म० पु० ) तैलमदनार्थं यन्त्रं । तिलादि  
निष्पीडनार्थं यन्त्रमेद, कोल्ह ।

तैलवक ( स० पु० ) तैलुत्पत्तस्य विषयो देशः राजन्यां  
बुज् । तैलराजाका देश ।

तैलवल्ली ( स० स्त्री० ) तैलाक्तं वल्ली । लघुशतावरो, शत,  
मूलो ।

तैलसाधन ( स० स्त्री० ) तैलं साधयति सुगन्धो करोति-



तीरघार—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यका एक जिला । यह अक्षांश २५° ४८' और २६° ५२' उ० तथा देशांश ७७° ३३' और ७८° ४२' पूर्वके मध्य अवस्थित है । भू-परिमाण १८०८ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः ३६८४१४ है । यहाँके प्रधान अधिवासो तीर ठाकुरके नाम पर ही जिलेका नामकरण हुआ है । इसमें गोडद नामका एक शहर और ७०४ ग्राम लगते हैं । यह चार परगनोंमें विभक्त है, अर्थात्, गोडद, जोरा और नूरावाद । राजस्व ६११२००० रु० का है ।

तीक ( सं० लो० ) तीति पूर्यति गृहं तु-वाहुलकात् क । १ अपत्य, लडका वा लडकी । २ गिर, बालक, बच्चा । ३ त्र्योक्षणचन्द्रके सवाग्रामेंसे एक ।

तीकक ( सं० पु० ) चापयज्ञो, नोनकण्ठ ।

तीकरा ( हिं० स्त्री० ) एक प्रकारकी लता । यह प्रायः अफोमके पौधों पर लिपट कर उन्हें सुखा देती है ।

तीकवत् ( सं० त्रि० ) तीकं विद्यतेऽस्य तीक-मतुप् मस्य व । पुतादियुक्त, जिसके पुत्रपौत्र हों ।

तीकन ( सं० पु० ) तक्रन्ति हसन्ति आनन्दिता भवन्ति लोका अनेन तक्र-वाहुलकात् म भोत्वञ्च । १ हरिहर्ण अपक्व यव, हरा और कच्चा जौ । २ हरिहर्ण, हरारंग । ३ मेघ, बादल । ( लो० ) ४ कर्णमल, कानकी मैल । ५ नवप्रकृष्ट यव, जौका नया अद्भुर । ६ पन्नवयुक्त अद्भुर, वह अंकुर जिसमें पत्ते निकल गये हों ।

तीकन ( सं० लो० ) तीक-मनिन् प्रयोटरादित्वात् अत-चत्वं । १ नवप्रकृष्ट यव, जौका नया अंकुर । २ अपत्य, लडका, लडकी ।

तीटक ( सं० लो० ) १ हादशाचरपाट छन्द, वारह अक्षरका वर्णवृत्त । इस छन्दके प्रत्येक चरणमें १२ अक्षर होते हैं । २ शङ्कराचार्यके चार प्रधान शिष्योंमेंसे एक । इनका दूसरा नाम नन्दोश्वर था ।

तीटका ( हिं० पु० ) तीटका ० लो ।

तीड ( हिं० पु० ) १ तीडनेकी क्रिया । २ नदी आदिके जलको तेजधारा । ३ दुग की दोवारों आदिका वह अंग जो गोलको मारने टूट फूट गया हो । ४ प्रतिकार, मारक । ५ दड़ोका पानो । ६ कुशोका एक पेच जिससे कोई दूसरा पेच रद हो । ७ वारं, भौंक, दफा ।

तीडजोड ( हिं० पु० ) १ युक्ति, चाल । २ चट्टे बट्टे लड़ा कर काम निकालना ।

तीडन ( सं० लो० ) तुड भावे ल्युट् । १ सेटन, छेद करनेकी क्रिया । २ टारण, चोरने या फाड़नेका काम । ३ झिंमन, मारनेका काम ।

तीटना ( हिं० क्रि० ) १ भग्न, विभक्त या खण्डित करना । २ किमो वस्तुके अंगको किमो प्रकार अलग करना । ३ किमो वस्तुका कोई अंग बेकाम करना । ४ किसी संगठन व्यवस्थाको नष्ट कर देना । ५ खरोदनेके लिए किसी पशुका दाम बटा कर निश्चित करना । ६ सेंध लगाना । ७ किसीका कुमारोत्पन्न भ्रू करना । ८ चोख दुर्बल करना । ९ निश्चयके विरुद्ध आचरण करना । १० दूर करना, अलग करना । ११ स्थिर न रहने देना, कायम न रहने देना ।

तीडल ( सं० लो० ) तन्वमेद, एक तन्व ।

तीड़ा—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत नोनगिरिनिवासी एक असभ्य जाति । किसीका मत है, कि तामिल 'तीरवम्' वा तीरम् शब्दसे तीड़ वा तीड़ा शब्द निकला है जिसका अर्थ है पशुपाल वा यूथ ।

तीड़ोंके मतानुसार इनके चार पाँच यूथ हैं जिनमेंसे दो तो निःश्रेय प्रायः हैं ।

इस जातिके लोग दोखनेमें लम्बी, शरीरानुरूप गठन, बलिष्ठ तथा स्वाधोन प्रकृतिके होती हैं । नाक लम्बी, ललाट चौड़ा, गण्डस्थल गोल, दिवुक और भौंके बाल खूब काले होते हैं । दोखनेमें मानो ये पायात्व सभ्य जातिको एक शाखा हैं । इन लोगोंका जैसा स्वभाव है, वैसे ही पोशाक भी है, पर कुछ विशेषता है । ये लोग एक कपड़ोको दोहरा कर पहनते हैं । स्त्री पुरुष दोनों ही सिर पर पगड़ो धारण करते हैं ।

तीड़ालोग स्वभावतः बहुत अपरिष्कार रहती हैं । स्त्री बहु विवाह कर सकती हैं । अक्सर दो चार भाई-में एक स्त्री रहती हैं ।

सवेशो आदिका पालन करना ही इन लोगोंका प्रधान उपजीविका है । ये साग प्रधानतः दूध, दही, घी और नाना प्रकारके दलहन अनाज खा कर रहते हैं ।

ये लोग घने जङ्गलमें रह बना कर रहती हैं जिसे

मच्छ' वा 'मजत' कहते हैं। प्रति मच्छमें पाँच पाँच बार रहते हैं। त्रिभुजमें तोन तो रहते हैं मिय, एक वृष इहो रक्खने मिय पौर शीप एक म्बानेके मिये। ये सब बार खूने बागामी र गये होय पवुनी हैं। हरएक बार १० फुट ल या १२ फुट लम्बा पौर ८ फुट चौड़ा रहता है। धामी घर बाँसके बने होते पौर धममें गोबर का मिय दिया रहता है। घरका मोतरो भाग ६ मी लम्ब 'बाघ तब' चोड़ा होता है। बीचमें दो फुट ल या म्होका बबूनवा रहता है जिम पर हरिच या मँसने पमका पयवा चडाई बिबाा कर मोते हैं। कमरे पश्चिमको पौर म्हो पौर म्होके चारों तरफ पमका रहता है। दूधका घर मकने बना होता है। यह घर टटियामे दो बरा बर भागीमें बिसन्न रहता है। एक भागमें दूध बी पादि रसे जाते पौर दूसरमें कम मोमाँडे दूधदेवताको पूजा होती है।

तोड़ा ( वि० पु० ) १ मीने पाँचो पादिचो मिबरी। यह मच्छेदार पौर चोड़ो होतो है। यह तोड़ा धामपूषको तरङ्ग पवननेके काममें जाता है। इसके कई मीड हैं। कोई कोई रसे पैरों हाथों या गलेमें पहनते हैं। कामो कामी बिपायो शोग पपयो पयकोडे खपर चारों पौर भी तोड़ा कपेट सिते है। २ रुपये रक्खेको टाट पादिचो बेनी। ३ तट, बिनारा। ४ बड़ मँदान को नदोके मङ्गम पादि पर कामू म्हो कामो कोमिडे बारब बन जाता है। ५ चाटा, कमी, टोडा। ६ रको पादिबा खर। ७ भाचका एक दुबका। ८ बरको लम्बी लकड़ो, हरिस। ९ खमोला, पमोला। १० एक प्रकारकी पाय चोमो को प्राय मिस्रोको तरह होती है पौर उसमे घोमा बनाते हैं। ११ बड़ लोडा बिमके पकमक पर मारनेके पाय निबनतो है। १२ तीन बार तक म्बाई कुई मे ख।

तोड़ाई ( वि० स्त्री० ) दुवई रकी।

तोड़ागा ( वि० स्त्री० ) दुवागा देवी।

तोड़ो ( स० स्त्री० ) तुड़-पच् गौर' कीय'। १ तीन भागम धाममे ट. एक प्रकारका धान। २ बमभारामकी स्त्री। इसका पद प म पौर न्याप म्भम है।

तोड़ो ( वि० स्त्री० ) एक प्रकारकी मरसी।

तोतई ( वि० वि० ) त्रिसका र म तोमिडे १ गमा हो, धानी।

तोतर गो ( वि० स्त्री० ) एक प्रकारकी बिड़िया।  
तोतरा ( वि० वि० ) तोवका देवी।  
तोतरामा ( वि० स्त्री० ) दुतलगा देवी।  
तोतमा ( वि० वि० ) १ अघट बोमनेवाका, जो तुतमा कर मोबता हो। २ बिममें उबारब बाफ साप न हो।  
तोतम् ( स० पद्य० ) तु-बाहुनबाय्। १ खचम। २ ल, तुम।

तोता ( प्रा० पु० ) एक प्रसिद पयो। इसके शरीरका र म बरा पौर पाँच नाल होतो है। इसकी तुम खोडो होती है। पौर पैरोंमें दो, पाँच पौर पैजे दो इस प्रकार चार प गु सियां होतो हैं। बड़ मनुष्योंको मोमोका पनुकरब पक्यो तरह कर मबता है। इसको बोको बबुन मोठी होती है, इसोमिडे खोज रसे पयमे धरमें पावती है। पौर छोटे मोटे पद तथा "राम राम" सिबाने हैं। इसके कई मंड हैं, जिममेंसे पवित्राय एक जारि पौर कुछ मांस भी खाते हैं। तोतको लम्बाई कमसे कम तीन फुटकी होतो है। कुछ ऐसे मो तोते हैं जिमका खर बहुत कट्ट, पमिय होता है। भर पौर मदाका र ग प्राय एकसा हो होता है। पमेरिखामे कई प्रकारके तोते मिकते हैं। कोरामन खातिकनुरो, काकालूपा पादि तोते भी खातिके हैं। जिम तरह दूसरे दूसरे पाकसू पयो पयने मालिखके यइने भाव काम पर फिर मोट प्यते हैं उस तरह तोते बूट काम पर फिर खमी पयने-पाकनेवालेके पास नहीं पाते। इसलिये तोता खनन पयो बड़छाता है। २ बन्धुबाा थोड़ा।

तोताबन्न ( प्रा० पु० ) तोतेकी तरह पाँचे फिर सिने-वाका यह भी बहुत है-सुटीमत हो।

तोतपत्रयो ( प्रा० स्त्री० ) किमुटीवतो, बैबमाई।

तोताराम—हिन्दो तथा प र्थीकी एक प्रसिद बिबान्।  
१ इनका जन्म स बत् १८०४में बायल्लुसुमें हुआ था। कुछ दिन मरप्यारो मोखरी करके इन्हीं पलीगाइमें बका-मत जमाई। बकावतमें इन्के खासी पामदमो होतो थी। इन्हीं कुछ दिन 'भारतवन्धु' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकामा था। किटो-इत्यान्त नामक गाठकपत्र इन्हींका बनाया हुआ है। पाप'बाभमोकीय रामावचका राम रामायण नामक एक उषया क्ख्य होवा भीमाइनें



घनाते थे, लेकिन वह अधूरा छो रह गया। संवत् १८५८में आपका देहान्त ही गया।

तोती (फा० स्त्री) १ तोतेको माटा। २ उपपत्ती रखने। तोत (सं० स्त्री०) तुष्यते ताडयतेऽनेन तुद-ट्टन्। गवादि ताडनदण्ड, बह ढटो या चाबुक आदि जिससे जानवर हॉके जाते हैं।

तोतवेत (सं० स्त्री०) विष्णु दण्ड, विष्णुके हाथका दण्ड। तोद (सं० पुं०) तुद-भावे घञ्। १ व्यथा, पीडा, तकलीफ। (वि०) तूदतीति तुद-अच्। २ पीडादायक, घट्ट पंहु-चानिवाला।

तोदन (सं० स्त्री०) तुष्यतेऽनेन तुद-करणे ल्यट्। १ तोत, चाबुक, कोडा। २ व्यथा, पीडा। ३ फलवृक्षविशेष, एक प्रकारका फलदार पेड़। इसके फलके गुण-कपाय, मधुर, रूच कफ और वायुनाशक।

तोदपत्ती (सं० स्त्री०) तोदं तोदकं पत्तमन्या० गौर्गाडोप्। कुधान्यभेद, एक प्रकारका खराब धान।

तोदरो (फा० स्त्री०) एक प्रकारका बड़ा कंटोना पेड़ जो पारस देशमें पाया जाता है। इसमें पत्तने हिलकवाले फूल लगते हैं। इसके बीज शोषधोपयोगी होनेके कारण भारतवर्षके बाजारोंमें आकर बिकते हैं। ये बीज तीन प्रकारके होते हैं, लाल, सफेद और पोले। बीजोंका गुण—रक्तशोधक, पीष्टिक और बलवर्धक है। इनके सेवनसे शरीरका रंग खूब खुल जाता तथा चेहरका रंग लाल हो जाता है।

तोटी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका खाल।

तोत्रूर—महिसुराजिलाके अन्तर्गत औद्दरपट्टम् तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १२° ३३' ८" और देशा० ७६° ३८' पू०के मध्य औद्दरपट्टम्से १० मील उत्तरपश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ६४३ है। १३५८ ई०को बनाई हुई यहाँ एक सुसलमान मस्जिद है। इसके पास ही मोती नामका एक तालाब भी है। इसका प्राचीन नाम तोन्दनूर है। आधुनिक नाम १७४६ ई०में दक्षिण-प्रदेशके सूबेदार द्वारा रखा गया है।

तोप (सु० स्त्री०) एक प्रकारका बहुत बड़ा अस्त्र। यह प्रायः दो या चार पहियोंको गाड़ी पर रखा रहता है। इसमें ऊपरकी और बन्दूकको नलीको 'नाई' एक बहुत

बड़ा नल लगा रहता है जिसमें छोटे छोटे गोले रख कर युद्ध समय गज्रुओं पर चलाये जाते हैं। गोले चलानेके लिये नलीके पिछले भागमें बारूद रख कर पत्तीने आदमे आग लगा दी जाती है। तोपके कई भेद हैं—छोटो बटो, मैदानो और जहाजो। प्राचीन कालमें खन दो प्रकारकी तोपें काममें लाई जाती थीं, एक मैदानो और दूसरी छोटी उनमें खींचनेके लिये बैल या घोड़े जोते जाते थे। इसके सिवा और एक प्रकारकी तोप होती थी जिसके नीचे पहिये नहीं रहते थे। इस प्रकारकी तोपें बोटों, जटों या हाथियों पर रख कर रणभूमिमें पहुँचाये जाते थीं। आजकल यूरोप आदि देशोंमें बहुत बडो बडो जहाजो, मैदानो और किले तोडनेवाली तोपें तैयार होती हैं। उनमेंसे किसी किसी तोपका गोला ७५ मील तक जाता है। और एक प्रकारकी तोपें हैं जो बाइमिन्लिन, मोटरों और हवाई जहाजों आदि परसे चलाई जाती हैं। इनका मुह ऊपरकी ओर रहता है। किसी प्रसिद्ध पुरुषके आगमन पर अथवा किसी महत्वपूर्ण घटनाके समय बिना गोलेके बारूद भर कर गन्ट किया जाता है।

तोपखाना (फा० पुं०) १ तोपें तथा उनका कुल सामान रहनेका स्थान। २ गाड़ियों आदि पर लदोदुई युद्धके लिये सुसज्जित चारमे आठ तोपोंका समूह।

तोपचो (सं० पुं०) वह जो तोप चलाता हो, गोलन्दाज।

तोपचोनी (हिं० स्त्री०) चोपचोनी देगी।

तोपड़ा (हिं० पुं०) १ एक प्रकारका कवुतर। २ एक प्रकारको मक्खो।

तोपा (हिं० पुं०) एक प्रकारकी सिलाई जो एक टाँकेमें की हुई रहती है।

तोपाना (हिं० स्त्री०) तोपखाना देखो।

तोपाम (हिं० पुं०) वह जो भाड़ू देता हो, भाड़ू वरदार।

तोफगी (फा० स्त्री०) अच्छापन, समझा होनेका भाव, खूबी।

तोवड़ा (फा० पुं०) चमड़ेया टाट आदिका थैला। इसमें दाना भर कर घोड़ेके खानेके लिये उसके मुँह पर बांध दिया जाता है।

तोमर ( घ० खो० ) पश्चात्ताप, मविष्यते दुःखं न करति को प्रतिष्ठा ।

तोम ( वि० पु० ) समूह डेर ।

तोमड़ो ( डि० खो० ) दुबड़ी रेको ।

तोमर ( म० पु० खो० ) ह्युपति विनमिता तुल्य बाहुल्यवात् पर प्रथमेन साधुः । १ प्राचीन मारतोय सुह यन्त्रविद्येय, मामिको तरङ्गका एक प्रकारका पत्त त्रिमला म्यनहार प्राचीन ज्ञानमें होता था । चक्रतो बीजोमें इसे यंत्र ला या थापन कहते हैं । यह थापन दो प्रकारका होता है, एक दण्डमय और दूसरा लोहमय । इसके तोम में द हैं, उत्तम, मध्यम और पथम । पाँच हाथका उत्तम साढ़े चार हाथका मध्यम और चार हाथका पथम माना गया है । इसी प्रकार छह उगनीश तोमर उत्तम, साढ़े पाँच उगनीशका मध्यम और पाँच उगनीशका पथम है ।

२ ह्युपत्येय दण्डविद्येय यह बरखा त्रिमको मुठ बाँधती हो । ३ अनपदविद्येय, एक दीयका नाम । ४ इसी दीयके पवित्राणो । ५ विद्वान् ह्युगगलोड, ८ पत्तरकुड ह्युविद्येय, एक प्रकारका ह्यु त्रिसमें विषय ८ सामाये रहती हैं ।

तोमर—राजस्थानका एक प्राचीन राजपूत क्षत्रिय राजर्षय । इस खण्डेई राजपूत पर प्राय नहीं बराबर हैं । पागरेमें प्राय तोम जगार और बाँदा, झंसी तथा पश्चात्तापमें बहुत पोढ़े घर हैं । राजपूतानेमें से लीन तुयार नामके प्रसिद्ध है । यह नाम किय प्रकार पड़ा, इसका कोई ऐतिहासिक सूत्र नहीं मिलता । अनुन पत्रकको पाहन-५ पत्रकमें तुयार व प्रका उल्लेख है । कनिङ्कम साहबने बीकानेर, गढ़वान कुमापून और म्कानिपरदेई इन विषयमें जो सब ह्युनिमित्त इतिहास पादि क व ह किये हैं उन सबको मिला कर गदि टीका थाय तो पर, पत्रकमका निष्पन्न होके प्रतीत होता है । अनुनपत्रकमें मत्तानुसार दिहोमें तुयारव शीर्षे निष्पन्न विहित राजगण राज्य कर गये हैं ।

नाम	उत्तमरीएव सुहृद, राज्य	व० म० वि०
१ पत्रकपाल	०१११।०	१८।०
२ बाहुदेव	०१११।०	१८।१।०
३ यादव	००११।१०	२१।१।०

४ पवित्रीपालमक (ह्युवी)	०८।०।१६	१८।१।०
५ जयदेव	०१।१।१०	१०।०।२०
६ बीर वा जोरपात	०१।१।११	११।१।०
७ उदयराज	०१।१।१२	२।०।११
८ विजय वा मक	००।१।०।२१	२।१।११
९ विजय वा पनेक	०८।०।१।६	११।१।१६
१० रिचपाल	०१।१।१।२२	२।१।१३
११ सुहृदपाल वा धनेकपाल	०१।१।०।२०	२।१।१३
१२ मोपाल वा महीपाल	०१।१।१।१	१८।१।१३
१३ मकलचपाल	०८।१।१।१६	११।०।१०
१४ जयपाल ( २५ )	१००।१।१।१६	१।१।१३
१५ कुमारपाल	१०२।१।१।२८	२।८।१।१०
१६ पत्रकपाल ( २८ )	१०२।१।१।१०	२।८।१।१०
वा पनेकपाल ( २८ )		
१७ निजपाल } विजयपाल }	१००।१।१।१३	२।१।१।६
१८ महीपाल	११०।१।१।१३	२।१।१।१३
१९ पत्रकपाल ( २५ ) वा पत्रकपाल	१११।१।१।१३ पश्चात् ( १११।१।१।१८ )	२।१।१।१३

प्रवाद है कि तोमरव शीय पत्रकपाल नामक एक राजाने प्राचीन दिल्ली का ह्युदप्रसन्न नगरका पुनरुद्धार किया था । स वत्पतिहाता विजयमदिहके बाद ०८२ वर्ष तक दिल्ली नगर विजयुक्त पत्रक था । अन्तमें, ०१६ ई०में तोमरव शीय पत्रकने इसे पुनः बसाया । शीय हैको ।

१८ पत्रकपालके परवर्ती कई एक राजाओंकी राजधानी दिल्लीमें ही थी । पोहे न मालूम क्यों कि राजधानी उठा कर कबीर ने गये । मध्यमूदके ऐतिहासिक पोहोके कबीरमें तोमरव शीय राजा जयपालका उल्लेख कर गये हैं । पत्रकपालके १३ पोढ़ी मीचे थे । ८१३ ई०में यह दुर्घटना सुनवमान भोयोनिह मसुदो इन दीयमें पाये थे, तब उन्होंने मो कबीरमें तोमर व शीय राजाको राज्य करति देखा था ।

किरिपत्तका कहना है कि कबीरराज जयपाल मध्यमूद मजकोड़े १०१० ई०में पत्रक को कर लने पचोम हो गये थे । उनके पीछे कबीर राजगण सुहृदमालोके

ह्रायसे कन्नौजका उद्धार करनेके लिए जयपालके विरुद्ध हो गये। १०२१ ई०में महम्मूदको जब यह खबर मिली तब वे पुनः इस ट्रेणको लौटे, लेकिन उनके आनेके पहिले ही जयपाल मार डाले गये थे। पीछे १०२२ ई०में महम्मूदका जब कन्नौज पर अधिकार हो गया, तब तोमरवंशीय राजकुमारने वहाँसे ३ दिनके रास्तेसे दूर गङ्गाके पूर्वीय किनारे वारि नामक स्थान पर राजधानी स्थापित की। मुसलमानोंके दो बार आक्रमणसे कन्नौजको रक्षा नहीं होनेसे हो जहाँ तक समझते हैं कि जयपालके परवर्ती कुमारपाल वारि नामक स्थानमें राजधानी उठा ले गये थे। इस समय कन्नौजके राठौर राजवंशके प्रतिष्ठाता चन्द्रदेवने पुनः कन्नौज राज्यका मुसलमानोंके कबलसे उद्धार किया। चन्द्रदेवके पुत्रपौत्रादिके राज्या-रोहणके विषयमें जो खोदितलिपि मिली है, उससे जाना जाता है कि चन्द्रदेवके पुत्र मदनपाल १०८७ ई०में राजा थे। इस हिसाबसे १०५० ई०में चन्द्रदेवका राजा होना स्वीकार किया जा सकता है। उस समय तोमरवंशीय द्वितीय अनङ्गपाल राज्य करते थे। शायद उन्होंने दिल्ली नगरमें फिरसे राज्यस्थापन और लालकोट नामका दुर्ग स्थापन किया था। लालकोटका भग्नावशेष अब भी विद्यमान है। दिल्लीके विख्यात लोहस्तम्भमें एक खोदित लिपि है जिससे अनङ्गपाल द्वारा लालकोटका बनाया जाना साबित होता है। उसमें "संवत् दिहलो ११०८ अनङ्गपाल वहि' लिखा है; अर्थात् ११०८ संवत्में (१०५२ ई०में) अनङ्गपालने दिल्लीको बसाया। फिर कुमायूँके ग्रन्थमें लिखा है—“कि दिल्लीका कोट कराया लालकोट कहाया।” यानि दिल्लीका दुर्ग निर्माण कर उसका नाम लालकोट रखा। लालकोट नाम कुतुब-उद्दौनके समय तक प्रचलित था वह इस वचनसे प्रमाणित होता है। “लालकोट तथा नगारो बाजतो आ” कुतुब-उद्दौनने यह नियम चला दिया था, कि लालकोटकी सौमाके अन्दर कोई नगाड़ा नहीं बजा सकता। यही नियम कनिं हम्के समयमें भी प्रचलित था। अनङ्गपाल लालकोटके मध्य ‘अनङ्गपाल’ नामक १६८ फुट लंबा और १५२ फुट चौड़ा एक जलाशय और २७ देवमन्दिर बनवा गये हैं। अनङ्गपालका जब कुतुब-मीनार बनाते

समय सूख गया है। अब केवल शून्य गर्भमात्र रह गया है। उक्त मन्दिर भी मुसलमान तहस नहस कर डाले गये हैं। दुर्गका अंश विशेष अभी पूर्ववत् दृढ़ है। इन्होंने बलरामगढ़ जिलेमें अनेकपुर नामका एक नगर भी बसाया था। यह नगर आज भी उमो नामसे ग्रामके रूपमें वर्तमान है। इनके पुत्र सूर्यपालने अनेकपुर नगरके समीप १०६१ ई०में सूर्यकुण्ड नामका तालाब खुदवाया जो अब भी मौजूद है। इनके तेजपाल (विजयपाल) नामका एक पुत्रने गुड़गांव और अलवारके बीच तेजोया नगर, दूसरे एक पुत्र इन्द्रराजने ‘इन्द्रगढ़’, रङ्गराजने अजमेरके निकट तारागढ़ और अचलराजने भरतपुर तथा आगराके बीच “अचिव” वा अचनेर नामका नगर स्थापित किया। द्रोपद नामका इनके और एक पुत्र थे जो अंसि वा हांसोमें रहते थे। इनके एक पुत्र शिशुपालने शोर्प वा शिशवल स्थापन किया जो अभी गिरसोपाटन नामसे मगहर है। ये सब प्रवाद यदि सत्य तो कह सकते हैं, कि द्वितीय अनङ्गपालका राज्य उत्तरमें हरासीने ले कर दक्षिणमें आगरा, पश्चिममें अलवार और अजमेरसे ले कर पूर्वमें सन्भवतः गङ्गा नदी तक विस्तृत था।

दन्त-कहानीमें तोमरवंशीय कर्णपाल नामका एक विख्यात राजाका नाम पाया जाता है। इनके भी कुछ लहकें थे। वे भी नगगटि स्थापन कर गये हैं। इनमेंसे एकका नाम था बचटव। इन्होंने नरनोलेके समीप ‘बाघौर’ और अजमेर-टोडाके समीप ‘बाघौरा’ वा ‘बाचौरा’ नगर स्थापित किया, इसी प्रकार नागदेवने अजमेरके निकटस्थ ‘नागौर’ और ‘नागद’, कृष्णरायने ‘किशनगढ़’ ब्रानिलरायने अलवारके पश्चिम ‘नारायणपुर’, श्यामसिंहने अलवार और जयपुरके बीच ‘अजवगढ’ और हरपालने अलवारके पश्चिम ‘हरसौरा’ और उत्तरमें ‘हरसोली’ नगर स्थापित किया है। इसके सिवा अलवारके उत्तरपूर्वमें जो ‘बहादुरगढ़’ है, वह स्वयं कर्णपालका बसाया हुआ है।

कुतुब-मीनारसे एक कोस दूर महीपाल नामका ग्राम भी इसी वंशके राजा महीपालकी कीर्ति है। इस वंशमें महीपाल नामके दो राजा हो गये हैं, उनमेंसे यह

विजय की कीर्ति है, नहीं बह धरने।

दिल्ली के इतिहास-परिचय में गुजरावती का सोमरावती नामका एक त्रिणा है। वहाँ पात्र भी एक सोमराव श्रेय कादार रहते हैं। सोमपुर और स्थानियरने श्रेय सोमर मद्र का गुजरावती नामका जो एक त्रिणा पौर दुर्ग है, वहाँके जमींदार भी इनो सोमराव श्रेय हैं।

दिल्लीय चमणपालके बाद तीन सोमराव राजा दिल्ली में राज्य कर गये हैं। उनमेंसे पश्चिम उत्तरीय चमणपाल चक्रवर्तिकाके समयमें चौहान विजयनदेवने दिल्ली पर अधिकार किया था। जिन हमसे मतामुनार यह चटना ११३१ ई०में चटो।

विजयनदेवके पुत्र सोमरावने उत्तरीय चमणपालको बन्धाने विहाय किया था। इसीके गर्भमें सुविस्तार कुचौराव का राज पिछोरका जन्म हुआ। ११६८ ई०में ये शासन करने लगे लिये गये।

स्थानियरने प्रायः दो शासनकाल एक सोमर के श्रेय राज्य किया था। सुहागिया का वर्षमान सोमरावके जमींदार पदमेंको दिल्लीके चमणपालके व शहर बलनाते हैं। एक व श्रेय इतिहास-लेखक जिन चक्रवर्तिय सोमर के श्रेयो पाण्डु व श्रेयन के श्रेय कर रचने कर गये हैं। राजपूत लोग भी श्रेय खोजार करते हैं।

जिन हम आजकलके १८६७-६९ ई०में वहाँके जमींदारोंके एक व श्रेयिका मिना जो। मिनागिर्तमें भी स्थानियरका ८ सोमर-श्रेयिके नाम पाये गये हैं। चक्रवर्तिय इतिहासके भाव मिल कर जिन हमने स्थानियरकी सोमरावके व तानिका हम प्रकार स्थिर को है।

नाम	ई०सम्
नरपाल	१०८१
मदनपाल	११०३
चक्रवर्तिय	११३०
रत्नसिंह	११३१
श्यामचन्द्र	११०२
पचनचन्द्र	१२००
सोमराव	१०२३
मदनपाल	१२३०
श्रेय	१२०३

कुमारसिंह	१२००
चाटमदेव	११२३
ब्रह्म	११३०
राजा सोरसिंह देव	१३०३
उदारावदेव, विजयदेव और लक्ष्मीन	१२००
मन्वन्तदेव	१३१८
दुर्गसिंह	१३२३
कीर्तिराय या कीर्तिसिंह	१३३३
कलाचक्रवर्तिय या कलाचक्रवर्तिय	१३०८
मानसिंह	१३८६
विजयराटसिंह	१३१६

राजा सोरसिंह देव ने कर विजयराटसिंह तक जो पदार्थमें स्थानियरके राजा हुए। विजयदेव समय १३१८ ई०में वहाजिम मोदीने स्थानियर पर अधिकार किया। पीछे यह राजवंश व जमींदारोंके रूपमें गिन जाना गयी। उन राजाओंके बाद यह राजवंश पदमें और भी कई एक राजाओंके नाम, "मिनागिर्त है, जैसे—

श्यामराव	१३१६
शान्तिसिंह	१३१६
श्यामराव	१३८३
व रामराव	१६३०
चक्रवर्तिय	१६००
बाद सोमरावके व श्रेयिकाओं के पौर नाम हैं—	
विजयसिंह	१०१०
श्रेयसिंह	

मन्वन्त चक्रवर्तियने स्थानियरके जयमें सोरसिंह देव स्थानियरके स्थानियर राजा हुए। यह सब इतिहास मिनागिर्त का कहना है, किन्तु १३१३ ई०में चक्रवर्तियके मन्वन्त देव, सुता कागर्तिका चक्रवर्तिय और चक्रवर्तिय को मन्वन्त देव दो चक्रवर्तियों का १०१० वष का कार्य पढ़ता है। चक्रवर्तिय इनका समय जयमें करके समय कहा है कि दिल्लीमें मन्वन्त देव का शहर है। फिर यह सब पदों कहते हैं कि मिनागिर्तका प्रधान मन्वन्त देव। इन दोनोंका नाम ने कर कई विचार किया गया, जो देना चक्रवर्तिय होता है, कि चक्रवर्तिय, त सुभके भारत का जयमें जयमें कुछ पहले चक्रवर्तिय हुए। देना

समय सिकन्दर, हुमायूँ और नसरत दिल्लीको अधिपत्य पानेके लिए आपसमें भगड़ रहे थे।

वीरसिंह ग्वालियरके उत्तर दन्दरोली नामक स्थानके जमींदार थे। ये ही बादशाहके प्रधान वजोरेके कित्तौ कार्यमें नियुक्त हो कर उनके पास रहा करते थे। इसी अवसरमें उन्होंने बादशाहसे ग्वालियरके दुर्गको अधि-क्षता और शासनकत्त्व प्राप्त किया था। फजल अली कहते हैं, एक सैयद उस समय ग्वालियर-दुर्गके अधिपति थे, वे दुर्गका अधिकार छोड़ देनेको राजी न हुए। अन्तमें वीरसिंहने सैयद और उनके सेनापतियोंके निमन्त्रण कर भोजनमें अफाम मिला दी। नगामें जब वे बेहोश हो गये, तब वीरसिंहने उन्हें कैद कर दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया।

वीरसिंह आदि कई एक पुरुष दिल्लीके अधीन रह कर खिज़िर खाँको कर देते थे। वीरसिंहके बाद विरम-देव राजा हुए। गिलगलिपिमें इसका प्रमाण है; किन्तु खड्गरायके ग्रन्थमें राजा उदारगणका नाम मिलता है। ये वीरसिंहके भाई थे, यथार्थमें ये राजा हुए वा नहीं इसका कोई प्रमाण नहीं है। विक्रमदेवके बाद गिलगलिपिमें गणपतिदेवका नाम पाया जाता है। लक्ष्मीसेनके राजद्वाराप्रामिका कोई प्रमाण नहीं है, केवल खड्गरायके ग्रन्थमें उनके नामका उल्लेख है।

१४२४ ई०में दुर्गसिंहके राजा होने पर मालवके होसदशाहने ग्वालियरका अवरोध किया। अन्तमें दिल्लीसे सुवारकशाहने आ कर उन्हें परास्त किया। सुवारक शाह दुर्गसिंहसे कर वसूल कर दिल्लीको वापिस आये थे। पोछे १४३२ ई० तक उन्होंने कर न दिया। और तब सुलतान महमूद बहुत विगड़े और स्वयं बहुत सी सेनाओंकी साथ ले ग्वालियर पर धावा मारा। जब दुर्गसिंहने उपायका रास्ता न देखा, तब उन्होंने अपनी राजधानीको सम्राट्को ओघागिसे-वचनेके लिए मालवके अधिष्ठत नरवर दुर्गको जा घेरा। सम्राट्को सेना ग्वालियरको छोड़ नरवरदुर्गको रक्षाके लिए चल पड़ी। दुर्गसिंह नरवर दुर्गमें परास्त हुए। वे निराश हो कर ग्वालियर आये और सम्राट्को सेना विजयो होकर दिल्लीको वापिस चली गई। ग्वालियर कुशलसे बच

गया। दुर्गसिंहके दोष राजत्वकालमें ही ग्वालियरके पार्वतीय भास्करकर्माका मृत्युपात हुआ। उस समय इनकी चमता उत्तर-भारतमें बहुत प्रसिद्ध थी। समय समय पर दिल्ली, जौनपुर और मालवके सुभलमान राजगण ग्वालियरसे सहायता लेते थे।

दुर्गसिंहके बाद उनके लड़के कोर्त्तिमिंह राजा हुए। इन्हींके समयमें पार्वतीय गुहामन्दिरका काम समाप्त हुआ। ये पहले जौनपुरके साथ मिल कर दिल्लीके प्रति विगड़ाचरण करते थे। पर इनके लड़के कोर्त्ति-राय और पृथ्वीरायने दिल्लीका पक्ष अवलम्बन किया था। बहलोल लोदी और जौनपुरके राजा महम्मद गर्कीके साथ जो युद्ध हुआ, उसमें पृथ्वीराय फते खाँ हाजोके हाथमें मारे गये। पोछे कोर्त्तिरायने फते खाँको परास्त कर उसे कैद कर लिया और मिर काट कर बहलोलकी उपहारमें भेज दिया। १४६५ ई०में जौनपुर-पति हमेन गर्कीने एक बड़त् सेनाको साथ ले ग्वालियर दखल किया। कोर्त्तिराय मन्थि करके कर देनेको राजी हुए और जौनपुरका पक्ष ग्रहण किया। जौनपुरपतिको माताके मरने पर कोर्त्तिरायके पुत्र कल्याणमल्ल जौनपुरमें शास्यताको रक्षा करने आये थे। १४७८ ई०में बहलोल रावरी नामक स्थानमें हुसेन गर्कीको सम्पूर्ण रूपसे परास्त कर ये ग्वालियर पहुँचे। कोर्त्तिमिंहने तुरंत हो लाखों रुपये, तम्बू, घोड़े, जूट आदि भेट दे कर उनकी अधो-नता स्वीकार कर ली और बाद उनके साथ कल्यों पर चढ़ाई करनेके लिए चल दिये। १४७९ ई०में कोर्त्तिमिंहको मृत्यु हुई। पोछे कल्याणमल्ल राजा हुए। इनके थोड़े राजत्वकालमें कोई उल्लेखयोग्य घटना न हुई। १४८६ ई०में कल्याणमल्लके पुत्र मानसिंह राजा हुए। ये सिंहासन पर बैठते न बैठते बहलोल लोदीसे आक्रान्त हुए। पोछे उन्होंने ८० लाख रुपये दे कर उनसे छुटकारा पाया। १४८९ ई०में बहलोलकी मृत्यु होने पर सिकन्दर लोदीने सम्राट्को कर ग्वालियरराज मानसिंहको पोशाक आदि भेंटमें दीं। मानसिंहने भी अपने भतीजेके साथ एक हजार सेना और उपहार द्रव्यादि भेज कर सम्राट्को संवहना की। १५०१ ई०में नेहाल नामक एक दूत दिल्लीको भेजा गया।



वंशीय धीरने जब ग्वालियरके अफगान शासनकर्ता तितर खाँकी बहुत तंग किया, तब वावरने रहोमदाद नामक एक सेनापतिको उनके विरुद्ध भेजा। रहोमके आनि पर तितर खाँका मन बदल गया और उन्होंने रहोमको दुर्गमें प्रवेश न होने दिया। किन्तु महम्मद गाउम नामक एक व्यक्तिने कौशलसे रहोमदादने दुर्गपर अधिकार कर हो लिया। १५२७ ई०में राजा मङ्गलरायने (मङ्गलदेव) ग्वालियरको अवरोध किया। ये कौत्सिमिंहके छोटे लड़के माने जाते थे। तोमरगढ़के अन्तर्गत धुव्यारो, अस्ता आदि १२० ग्रामोंके ये जमींदार थे। इनकी वंशान्वली आज भी उक्त ग्रामोंमें है। ग्वालियरके अवरोधमें ये कृतकार्य न हुए।

सम्राट् हुमायुँ १५४२ ई०में ग्वालियरके दुर्गमें रहते थे। इस समय राजा विक्रमके पुत्र रामसहायने ग्वालियरके दुर्गको अपने अधिकारमें लानेके लिये उनसे प्रार्थना की, किन्तु व्यर्थ हुई। इस पर वे बहुत दुःखित हुए और शेरशाहके साथ मिल गये। बाद इन्होंने शेरशाहके सेनापति सुजा खाँके साथ युद्धमें जा कर मालव फतह किया।

फेरिस्ता कहते हैं—१५५६ ई०में सम्राट् अकबरके प्रधान मन्त्रो वैराम खाने ग्वालियरके शासनकर्ता सुहेल खाँके विरुद्ध सैन्य भेजनेका उद्योग किया। सुहेल खाने यह सम्राट् पाकर उक्त रामसहायको लिख भेजा कि “आपके पूर्वपुरुष ग्वालियरके राजा थे। कालक्रमसे यह अभी मेरे हाथ है। सम्प्रति सुगल बादशाह चढ़ाई करने आ रहे हैं। हममें उतनी शक्ति नहीं कि उन्हें रोकें। आप यदि सुझे कुछ अर्थ प्रदान करें, तो मैं अपने हाथसे ग्वालियरराज्य दे सकता हूँ।” यह सुनकर रामसहाय ग्वालियरकी चल पड़े; किन्तु एकबाल खाँ नामक ग्वालियरके एक निकटवर्ती जमींदारने सैन्य संघर्ष कर रास्तेमें ही रामसहायको परास्त किया। रामसहाय परास्त होकर मौरके राणाके राज्यमें भाग गये। फजल अली नामक एक ऐतिहासिकका कहना है, कि शेरशाहके पुत्रके भरने पर ग्वालियर बहवल नामक एक क्रीतदासके हाथ लगा। सम्राट् अकबरके समयमें रामसहायने राजपूतोंकी सहायतासे ग्वालियर पर चढ़ाई कर दी।

सुगलसेनापति कावा खाँ ग्वालियरको रक्षाके लिये भेजे गये। रामसहायके साथ कावा खाँका युद्ध हुआ। तीन दिन तक युद्ध चले रहनेके बाद कावा खाँको ही जीत हुई। अकबर जब चित्तौरमें बैरा डाले हुए थे (१५६८-६९ ई०), तब उस युद्धमें ग्वालियरराज शालिवाहनको (रामसहायके पुत्र) रक्षा मिली थी। शालिवाहन किसी शिशोदोय राजकुमारोका पाण्डित्यकर राणाके पाम ही रहते थे। ग्वालियर अकबरके अधीन होने पर भी शालिवाहन राजपूत-राजसभामें ग्वालियरके राजा कह कर सम्मानित होते थे।

पोहे रोहितान्तकी खोजिलिपिसे जाना जाता है, कि शालिवाहनके श्यामसहाय और मित्रसेन नामक दो पुत्र थे। ये दोनों कालक्रमसे अकबरकी अधीन काम करते रहे। १६३१ ई०में श्यामसहायकी मृत्यु हुई। मित्रसेन सुगलके अधीन ग्वालियर-दुर्गके अध्यक्ष हुए। इसके मिथा मित्रसेनका और ज्ञान मानुस नहीं। श्यामसहायके वंशधर तोमरगढ़की जमींदारी और नाममात्र ‘ग्वालियर-राज’ को उपाधि लेकर सन्तुष्ट थे। श्यामसहायके दो पुत्र थे—मंग्रामसिंह और नारायणदास। मंग्रामको १६७० ई०में ‘ग्वालियरराज’की उपाधि मिली और उनके पुत्र राजा क्षणसिंहकी १७१० ई०में मृत्यु हुई। क्षणसिंहके पुत्र विजयसिंह और हरिसिंहने उदयपुरमें आश्रय लिया। विजयसिंहका निःसन्तान अवस्थामें १७८२ ई०को उदयपुरमें देहान्त हुआ। हरिसिंहके वंशधर अब भी उदयपुरमें हैं। इनको एक दूमरी शाखा आज भी तोमरगढ़की जमींदारी भोग करती है।

तोमरग्रह (सं० पु०) तोमरं गृह्णाति ग्रह-अच्। तोम-रास्त्रग्राहो, वह योद्धा जो तोमर अस्त्र ले कर लड़ता हो।

तोमरधर (सं० पु०) धरतीति धरः धृ-भच् तोमरस्य धरः। १ अग्नि, भाग। २ तोमरधारी योद्धा।

तोमराण (सं० पु०) काश्मीरके एक राजाका नाम। ये सक्षिय राजाके पुत्र थे। (राजतर० ५। २३७)

तोमरिका (सं० स्त्री०) तोमर संघायां कन् स्त्रियां टाप् अतइत्वं। तुवरिका, गोपीचन्दन।

तोय (स० झी०) तु-बिच् तथे पूर्वो याति या-ञ् वा तन्वते-  
ङ्ङिच्सक्येः तु यत् निपातनात् साङ्गः । १ अल, पातो ।  
२ पूर्वापाङ्गा नद्यत । ३ अन्वत्यानये षोडा ष्वात् ।

तोयकर्म (स० झी०) तोयेन क्रमः । तयञ्च ।

तोयकाम (स० पु०) तोय क्रम कामयति कर्म-बन्धु ।  
१ परिष्वाद्य ह्य, एक प्रकारका शैत को मरुद्धि समुप  
वत्यत होता है । बानोर । (त्रि०) २ अस्मिन्मापुञ्ज,  
को बन्धु साङ्गता हो ।

तोयकृष्ण (स० पु०) तोयक कृष्ण इव । शैवान, धिबार ।

तोयकृष्ण (स० झी०) तोयेन तोयमात्रपानिन कृष्ण  
ईत । अस्मिन् पानक्य प्रतारिणिय, एक प्रकारका व्रत  
त्रिचसे अलं सिधा पोर कुञ्ज पाङ्गा यद्वच नहीं बिवा  
जाता । यह व्रत यक मरुद्धि तक् २रगा होता है ।

तोयक्रीडा (स० खी०) तोयका क्रीडा इ-तत् । अक-  
लीडा ।

तोयकर (स० त्रि०) तोये कसे विचरति कर यत् । अक-  
र ।

तोयक (स० त्रि०) तोये जायति अक-क । अकक, को  
अकसे उरयत होता है ।

तोयविन्ध (स० पु०) तोयस्य विन्धयत् । मीवीपन,  
षोसा ।

तोयद (स० पु०) तोय ददाति दा यत् । १ मेष, बादक ।  
२ सुस्तक, नागरमोबा । (झी०) ३ हुत, चो । (त्रि०)  
४ विधिपूर्वक करदाना, को विधिपूर्वक अक देता है ।  
अकदान करमिने पञ्जत पञ्ज होता है । पचदान  
करका मानो प्राचदान करना है । प्राचदानसे पचिञ्ज  
पोर कुञ्ज नहीं है, बिन्दु अकसे बिना पचादि भो उमि  
अनकनहो है इसीसे अकदान को सबसे अधिक माना  
गया है । अकदाता सब प्रकारको कामना पोर कौर्ति  
साम कर पचयस्यगं को प्राप्त होती है पोर अनसे सब  
जाने रहते है । (माध्य कान्ठिपर्व) ।

“षोडशे मनुजकाङ्गः । स्वर्गं यथा महापुटे ।

अकनान् कामजायति श्रेयसिभक्तवतीन् यद्वा ॥”

(भारत प्रतियप०)

तोयदाकर्म (स० पु०) तोयदस्य पापमा इ-तत् । मीवा-  
यन्, बर्वाङ्गत्, वरसत् ।

तोयदर (स० पु०) चरतीति चट् इ-यच् तोयन्य इर ।  
१ मेष, बादक । २ सुस्तक, मोबा । ३ सुमियथ  
याक एक प्रकारका साय ।

तोयदार (स० पु०) तोयार्ता चारु यत् । १ मेष,  
बादक । २ सुस्तक, मोबा । चारि मार्गे यच्  
तोयसा चारः । ३ अकनवयञ्च ।

तोयदारा (स० खी०) अकतकति, अकको चारा ।

तोयसि (स० पु०) तोयानि बोयन्ते इत्य चा-बि । मसुद्र,  
सागर ।

तोयविप्रिय (स० खी०) मीचाति प्रो-च तोयवि प्रियो  
यस्य । सवद्, सौ म ।

तोयनिधि (स० पु०) तोय निधोयसीस्मिन् तोय-  
नि-चा बि । मसुद्र ।

तोयनौषी (स० खी०) तोय चसुद्रोदथं नोबोय बज्जाः  
भार्ये न कप्य । पुञ्जे ।

तोयपर्षी (स० खी०) १ आचविमिथ एक प्रकारका  
जान । २ कारबेक कता करैसा ।

तोयपायाचकसन (स० खी०) क्यर कपडा ।

तोयपिप्ली (स० खी०) अकपिप्ली ।

तोयपुष्पो (स० खी०) तोयेन बहुमनदानिन पुष्पाप्स-  
द्या । पाटकाङ्ग, पाङ्ग ।

तोयप्रहा (स० खी०) तोयपुष्पो ईकी ।

तोयप्रसादन (स० खी०) प्रसादयति प्र-सट्-बिच ष्युट्  
तोयप्र प्रसादन । अतकपञ्ज, निर्मंको । यह अक  
अकसे विस मरेदि अन् परिष्कार हो जाता है ।

तोयप्रसादनकर्म (स० खी०) तोयप्रसादनाय कर्म ।  
अतकपञ्ज निर्मंकी ।

तोयप्रहा (स० खी०) तोयप्रवाह कर्म यथाः । १ अक,  
कताविमिय तरवृजको बंस । २ इवाँच, अकको ।

तोयप्रभारो (स० खी०) असापामार्ग एक प्रकारको  
पौषक ।

तोयसक (स० खी०) चसुद्रया धिन ।

तोयसुच (स० पु०) तोय सुचति सुच-बिच । १ अक  
सुच, मेष, बादक । २ मस्तक, मोबा ।

तोयस्य (स० खी०) १ आचधानार्ग चटो यन्वियेय  
कान्ठयच अकयकी । चटीरन् देको । २ अकयन्-  
मिद, पुषारा ।



“इक दीनी अधीनी करै बतियां जिनकी कटि छीनी छगमें करै ।  
इक दोष धरै अपसोष भरै इक रोसकै नैन ललामें करै ॥  
कहि तोप जुटी जुग जंघनसो उर दे भुज ह्यामैं सलामैं करै ।  
निज अम्बर मांग कदम्ब तरे प्रज वामैं कलामैं मुलामैं करै  
तोतनमैं रविको प्रतिविम्ब परै किरनैं सो घनी सरसाती ।  
भीतर हूँ रहि जात नहीं भँ बियाँ चक्रवौं घ हँ जात है राती ॥  
भेठि रहौ वलि कोठरिमें कहि तोष करौं दिनती बहुभांती ।  
सारसी नैन है आरसी सो अँग काम कइ कधि धामैं जाती ॥  
तोपयितव्य (सं० त्रि०) तुप-णिच्-तव्य । तोपणोय, खुग  
करने योग्य ।

तोपल (सं० पु०) १ कंसके एक असुर मल्लका नाम ।  
धनुषमें श्लोकपुत्रने इसे मार डाला था । (स्तो०) तोपं  
लूनाति लू बाहुलकात् ड । २ अस्त्रभेद, मूसल ।  
तोपाम—पञ्चावके अन्तर्गत हिसार जिलेका एक ग्राम ।  
यह हाँसो नगरसे २८ मील दक्षिणमें अवस्थित है । यहा  
बालुकामय समतल चेतसे ८० फुट ऊँचे एक पहाड  
पर बौध और वैष्णवोंके यत्नसे कई एक उल्लोर्ण शिला-  
लेख है । प्रवाद है, कि पतियालेके अमरसिंहने तुपाम  
पर्वत पर एक दुर्ग निर्माण किया था । किन्तु दुर्ग न  
देखनेसे मालूम होता है, कि यह दुर्ग अमरसिंहसे  
पहले बनाया गया था । अमरसिंहने इसका केवल  
संस्कारकिया है ।

कोई कोई अनुमान करते हैं, कि यह तुपार  
जातिका एक सद्धाराम था जिसे तुपाराराम कहते थे ।  
उसके अपभ्रंशसे तुपाम या तोपाम नाम हुआ है ।  
तोषित (सं० त्रि०) तुप-णिच्-क्त् । लप्, तुष्ट ।  
तोपिन् (सं० वि०) तुयतोति तुप-णिनि । तुष्टकारक,  
जो लप् करता हो ।  
तोष्य (सं० त्रि०) तुप-ण्यत् । तोपणीय, तुष्ट करने  
योग्य ।

तोहफगी (फा० स्त्री०) भलाई, अच्छापन ।  
तोहफा (अ० पु०) उपायन, उपहार, भेंट ।  
तोहमत (अ० स्त्री०) मित्या अभियोग, झूठा कालङ्क ।  
तोहमतौ (अ० वि०) झूठा अभियोग लगानेवाला ।  
तोहान—१ पञ्चावके हिसार जिलेके अन्तर्गत फतहा-  
बाद तहसीलकी एक उप-तहसील । इसका भूपरि-

माण ४२० वर्ग मील है । इसमें ११७ ग्राम लगते हैं ।  
राजस्व लगभग ८६०००) रु० का है ।

२ उक्त उप-तहसीलका एक ग्राम । यह अक्षा० २८°  
४३' ३०" और देशा० ७५° ५५' पू० हिसार शहरसे ४०  
मील उत्तरमें अवस्थित है । लोकसंख्या लगभग ५८३१  
है । किमो समय इसको गिनती अच्छे ग्रहरोंमें होती  
थी । कहते हैं, कि दिल्लीके तीसरा राजा अनङ्गपालने  
इसे बसाया था और चौहान राजाने इसे तहस नहस  
कर डाला । १३८८ ई०में इसो स्थान पर तमूरसे जाट  
लोग परास्त हुए थे ।

तौकना (हिं० क्रि०) तौकना देखा ।

तौम (हिं० स्त्री०) धूपसे उत्पन्न प्यास जो किमो भाति  
न बुझे ।

तौसना (हिं० क्रि०) गरमके कारण अन्तर्गत होना या  
भुलस जाना ।

तौभा (हिं० पु०) अधिक ताप, कढ़ी गरमी ।

तौक (अ० पु०) १ एक प्रकारका गहना जो हँसुलीके  
आकारका होना और गलेमें पहना जाता है । यह  
पटरोको तरह कुछ चौड़ा होता और उसके नीचे घुंघरू  
आदि लगे होते हैं । २ इसी आकारको हत्ताकार  
पटरो या मेडरा । इसको तौल हँसुलीसे बहुत भारी  
होती है । यह अघराघो या पागलके गलेमें पहनाया  
जाता है जिमसे कि वह अपने स्थानसे हिल न सके ।  
३ पक्षियों आदिके गलेमें इसो आकारका प्राकृतिक  
चिह्न । ४ चपरास, पटा । ५ कोई गोल घेरा या  
पदार्थ ।

तौक्षिक (सं० पु०) धनु राशि ।

तौग्र (सं० पु०) तुग्रके पुत्र ।

तौचा (हिं० पु०) सिर पर पहननेका एक प्रकारका  
गहना ।

तौजा (अ० पु०) १ विवाहादिमें खर्च करनेके लिये  
खेतिहारोंकी पेशगीमें दिये जानेका द्रव्य, वियाहो ।  
(वि०) २ हाथउधार । दस्तगर्दी ।

तौजी (अ० स्त्री०) वह हिसाव जिसमें प्रजाका नाम,  
जमीनकी तायादाद और जमाबन्दो आदि लिखी रहती है ।

तीतातिक (सं० स्त्री०) तुतातभट्टेन निवृत्तं तुतात-

दृष्ट । गुतात्ममहाका दमनयाप्य, 'कुमारिणः श्राव ।  
 तोतातिन—सुप्रसिद्ध कुमारिणमहाका नामान्तर । माघवा  
 चार्यने सर्वकर्मण सचरमि इमी नामधि कुमारिणके  
 वचन उद्धृत किये हैं । इसके पक्षे कुमारिणमह शब्दमें  
 कुमारिणके धर्ममतको विस्तृत बान्धवना को गई है ।  
 उन शब्दमें लिखा है, कि कुमारिण पांचवीं यतान्दोमें  
 प्रादुर्भूत हुए थे, किन्तु पाञ्चलके प्रभावसे उनका  
 १ नौ यतान्दोमें बहुत परवर्ती होना जान पड़ता है ।

जैन-परिभाषक इत्थिञ्ज ७ नौ यतान्दोमें भारत  
 वर्ष धारि थे । उनके मतानुसार वाक्यप्रदीपके रचयिता  
 मठहरिणि ६१० ई०में अपने मानवलोका समाप्त को ।  
 कुमारिण का रचित मोमासाचार्यके वाक्यप्रदीपके  
 पत्रिक जगद वचनोद्धार और उक्तको समझीबना कर  
 गये हैं ।

प्रसिद्ध हि० नौमाचार्य समस्तमह ज्ञानोने पार  
 मोमाचार्यमें पक्षधरों सर्वज्ञता प्रतिपादन को है । जैन  
 प्रवचनार पञ्चसहस्रके पञ्चमते नामक पारमोर्माकाको  
 टीकामें लिखा है कि पक्षधरों लिखो इन्द्रियग्रामको  
 पाचम्यकता नहीं है । उद्योका प्रतिवाद कुमारिणने  
 किया है । यहाँ समस्तमहका मुख और पञ्चसहको टोका  
 उद्धृत कर दिखवाते हैं—

“सुप्रसिद्धिपूर्वा अस्वका कल्पयिता ।”  
 ( स्वामी समस्तमहकाव्य )

पञ्चसहस्रके प्रथमो टोकामें 'पक्षधरि' पर्याय 'कास  
 विशिष्टवि' पततोत्त' लिखा है । कुमारिणने समस्तमह  
 चार्यका मूल यौ पञ्चसहस्रके टोका उद्धृत कर इस  
 प्रकार प्रतिवाद किया है—

एव ये कैवल ज्ञानमिन्द्रियवर्षेणः ।  
 सुप्रसिद्धिपूर्विका नीरस परिबलिस्तम् ३  
 न ते उद्योगाद्यधिनेत्र न वेद्योग्यो विना ।  
 एष्यान्दोपि न उद्योग्यो बुद्धु चरिचद प्रवर्तते ३”  
 ( तानवादि ४ )

किर दि० का प्रवचनार विद्यामन्दिने श्रोत्रवापिर्कर्म  
 कुमारिण महाका स्त उद्धृत कर लिखा है—

“उत्ते बहुबुद्धवकारि भट्टन  
 कैवळ कैवळ ज्ञानमिन्द्रियवर्षेणः ।  
 सुप्रसिद्धिपूर्विकेन सुखनीलस रैरद ॥”

कुमारिणके तन्त्रवापिर्कर्म कई जगह इसी प्रकार  
 पञ्चसहस्रको पद्यमो व्याख्याकी कथा और उनका प्रति  
 वाद दोष पड़ता है । दूसरे पक्षमें विद्यामन्दि मो मक  
 सङ्घटकेका मतम समन करते हुए निम्न पद्यवस्तो पत्रमें  
 कई जगह कुमारिणका तोर प्रतिवाद कर गये हैं । इस  
 प्रकार पञ्चसहस्रके और विद्यामन्दिने समवस्था निरूपण  
 को जानिये ही हम निम्नलिखे कुमारिणका प्रकृत  
 समय फिर कर सकते हैं ।

८६१ पक्षमें पञ्च शर्माटोमाचार्य लिखित पादि  
 पुराणमें तथा ८८२ पक्षमें सोमदेवने अपने सम्यक्निब  
 चम्पूमें पञ्चसहस्रके दोषको योच प्रभावमाश्रयित् माना है ।  
 फिर जिनवेनाचार्यने ७५० पक्षको जैन-पादिपुराणमें  
 पञ्चसहस्रकेका नामोर्द्धेय किया है । जिनवेनाचार्य राट्ट  
 छूटाराज १म पयोबबर्षके हुए थे । उन्होंने पादिपुराण  
 में एक जगह प्रभावम्भके चन्द्रोदय नामक व्याय-पत्रका  
 उल्लेख किया है । प्रभावम्भने अपने व्यायङ्गमुचचन्द्रोदय  
 में और विद्यामन्दिने पद्यवस्तो पत्रमें अपनेको पञ्चसह  
 स्रकेका शिष्य बतलाया है । इस प्रभावम्भने वाचमज्जको  
 कादम्बरो और मनुहरिका वाक्यप्रदीप उद्धृत किया है  
 फिर दि० जैनप्रवचनार ब्रह्ममिन्दपत्रने लिखा है पञ्चसह  
 स्रके राट्टछूटाराज ( १म ) छप्परपत्रके प्रथमामधिक थे ।  
 गुजरातसे पाविष्कृत राट्टछूटाराज इतिदुर्बके तास  
 यासनसे जाना जाता है कि ६७१ पक्षमें ये राज्य करी  
 थे । पोछे उनके बचा छप्परपत्र उल्लेखिकारी हुए ।  
 जिनवेनाचार्यने छप्परपुराणमें लिखा है, कि ७५१ पक्षमें  
 छप्परपत्रके पुत्र ब्रह्मराजको राजगणेशे मिली ।

पक्षे ही लिखा जा चुका है, कि इत्थिञ्जके मता  
 मुधार ६१० ई०में वाक्यप्रदीपके रचयिता मठहरिको  
 पञ्चु हुई । कुमारिणने वाक्यप्रदीपका शोक उद्धृत लिखा  
 है । पञ्चसहस्रके शिष्य प्रभावम्भ और विद्यामन्दि  
 दोनों जो कुमारिणके तन्त्रवापिर्कर्मको पाशोपना कर गये  
 हैं । फिर कुमारिणने मो पञ्चसहस्रके पद्यमतोके पत्रिक  
 पत्रन उद्धृत किये हैं । किन्तु पञ्चसहस्रके नहीं मो  
 कुमारिणके मतका प्रतिवाद नहीं किया । इस दिशाके  
 कुमारिण धर्मकोति और वाक्यप्रदीपके रचयिता मठ-  
 हरिके परवर्ती, पञ्चसहस्रके प्रथमामधिक और उनके

विषय विद्यानान्द तथा प्रभाचन्द्रके कुछ पूर्ववर्ती होते हैं। - अकलह देव राष्ट्रकूटके राजा कण्णराजके समग्रमें ( ६०५ शकके बाद और ७०५ शकके पहले ) विद्यमान थे। सुतरा कुमारिलभट्टने भी उसी समय आन्विर्भूत हो कर वैदिक धर्मका प्रचार किया था।

तौतिक ( सं० स्त्री० ) १ मोतो। २ शक्ति, मोतीको सोप। तीदो ( सं० स्त्री० ) विपनाशक वृक्षभेद, घृतकुमारो। तोन ( हिं० स्त्री० ) गाग दुहते समय उसके बच्चेको उनीके अगले पैरमें बांधनेकी रस्ती।

तीनो ( हिं० स्त्री० ) १ रोटी से कनिका छोटा तथा तई तबो। तीन देखो।

तीवा ( हिं० स्त्री० ) तीबा देखो।

तौम्बरविन् ( सं० पु० ) तुम्बरुना कलाप्यन्तेवासिना प्रोक्षामघीयते इति। तुम्बु प्रोक्त शाखाध्यायो, तुम्बुरु प्रोक्त शाखाका अध्ययन करनेवाला।

तीर ( सं० स्त्री० ) यागभेद, एक प्रकारका यज्ञ।

तीर ( अ० पु० ) १ चरित्र, चालचलन, चलढाल। २ अवस्था, दशा, हालत। ३ तरौका, टंग। ४ प्रकार, भाति, तरङ्ग।

तीरा ( हिं० पु० ) वह रस्ती जिससे मथानी मथी जाती है, नेली।

तीरयान ( सं० स्त्री० ) तूर्ण यानमस्या शृषोदरादित्वात् साधुः। तूर्णगमनयुक्त, बहुत तेजीसे चलनेवाला।

तीरत्रयस ( सं० स्त्री० ) तीरत्रयसा अङ्गिरसा दृष्टं सास-अण्। सामभेद, एक प्रकारका साम।

तीरात ( हिं० पु० ) तीरेत देखो।

तीरायनिक ( सं० त्रि० ) तुरायणं यज्ञं वर्त्तयति तुरायण-ठञ्। तुरायणयज्ञकारि, जो तुरायण यज्ञ करता हो।

तीरेत ( अ० पु० ) यहदियोंका प्रधान धर्मग्रन्थ। यह हजरत नूसा पर प्रगट हुआ था। इसमें सृष्टि और आदमकी उत्पत्ति आदि विषय लिखे गये हैं।

तीर्य ( सं० स्त्री० ) तूर्य सुरजादो भवं तूर्य-घण्। तूर्य-वाद्य, ढोल मंजीरा आदि बाजे। २ ढोल मंजीरा आदि वजानेकी क्रिया।

तीर्यत्रिक ( सं० स्त्री० ) त्रयोशाः यस्य त्रिसंख्यायां कान् तीर्योपलक्षितं त्रिकं। समुद्रित नृत्य गीत और नाच, नाचना, गाना और बाजे वजाना आदि काम। मनुने इसे कामज व्यसन कहा है और त्याज्य बतलाया है। ( मनु० ७।४० )

विष्णुष्टयः याः देवालयमें नाच, गान और बाजे वजानेसे पुख्य होता है और अन्तमें विष्णु लोकको प्राप्ति होती है। ( बराहपुग० )

तोल ( सं० स्त्री० ) तुना एव स्वार्थे अण्। स्वार्थिकाः प्रत्ययाः क्वचित्-निद्रवचनानि अतिवर्त्तन्ति इत्युक्तेः देवतादिवत् क्लोषता-। १ तुला, तराजू। ( पु० ) २ तुलाराशि।

तौल ( हिं० स्त्री० ) १ किसो पदार्थके गुरुत्वका परिमाण, वजन। २ तौलनेकी क्रिया या भाव।

तौलकर ( सं० त्रि० ) तौलं करोति क-ट्। परिमाणक, तौलनेवाला।

तौलना ( हिं० क्ति० ) १ वजन करना, जोखना। २ साधना, ठोक करना। ३ तारतम्य जानना, मिलान करना। ४ गाड़ीका पहिया औरगना, गाड़ोके पहिएमें तेल देना।

तौलवाइं ( हिं० स्त्री० ) तौलाइं देखो।

तौला ( हिं० पु० ) १ मटोका बरतन जिससे दूध मापा जाता है। २ अनाज तलनेवाला मनुष्य, बया। ३ तविया। ४ मटोका कमोरा। ५ महुएकी शराव।

तौलाइं ( हिं० स्त्री० ) १ तौलनेकी क्रिया या भाव। २ तौलनेके बटलेमें दिये जानेका धन, तौलनेको मजदूरी।

तौलाना ( हिं० क्ति० ) तौलनेका काम किसी दूसरेसे कराना।

तौलिक ( सं० पु० ) तुल्या तुलिकया जीवति तुलि ठकं। १ चित्रकार। २ ब्रह्मपुराणोक्त वर्षे संकर जातिसेट। तिली देखो।

तौलिकिक ( सं० पु० ) तुलिकया जीवति तुलिका-ठकं। चित्रकार। संस्कृत पर्याय—रत्नाशोष, चित्रकृत, तौलिक।

